अवतारचरित्र भाषा,

कवि बारहटनरहरिदासजीकृत छंदरचना

जिसमें चौबीसों अवतारोंकी कथा है

नाका मुद्रकने

पंडित श्रीधर शिवलालजीके

छापकर प्रसिद्ध किया.

आवृत्ति दूसरी.

श्रावण शुद्ध द्वितीया रविवार तारीख १३ आगष्ट सन १८९३

शके १८१५ संवत १९५०

॥ श्रीः ॥

अथ अवतारचरित्र प्रारंभः।

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ प्रथमगणेशस्तुतिलिष्यते॥ ॥ छंद गुणसाटक॥ ॥ गुंडादंड प्रचंडमेकदशनंमदगंधगल्लस्थलं॥ सिंदूरारुणतुंडमंडितमुखंभृंगस्यगुंजारवं॥ यंफरसंक रधारसारसगणंप्रारंभअग्रेसुरं॥ तंसततंसदबुद्धिसेवसफलंवरदाइलंबोदरं॥ १॥ ॥ अ थसरस्वतीस्तुति॥ ॥ याधवलंगिरवासवेसबरणीहंसावरंवाहिनी॥ याधवलंअवतंस अंगअमलंकरवीणबाणीबरा॥ याधवलंवसनाविसालनयनीस्यामंचसरलंकचा॥ साअ नुकंपिसरस्वतीसुबदनाविद्यावरंदाइनी॥ २॥ ॥ अथगुरुदेवस्तुति॥ ॥ यंप्रथमंगुरु देवसेवसुहृदंविद्यायप्राप्याम्यहं॥ श्रीमतयज्ञसुदीक्षितंगिरिधरंतंसंप्रसादेवरं॥ तद्रिष्टंस तपंथकाव्यकरणंविघ्नस्यहरणंपरं॥ श्रीसुरसेव्यपदारविंदविमलंसरणागतंयास्यहं॥ ३॥ ॥ अथगुणआर्या॥ ॥ गणपतिगहरग्यांनगुनअप्यन॥ सरमतिसुदातिसुमत्तिसमप्य न॥ गुरुपरसादपाइगुरुज्ञानं॥ भूतभावजुगजुगतिबषानं॥ ४॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ इ कसमयशेषसज्यासमान॥ हरिसयनकरतवलअप्रमान॥ धरिभुवनचतुरदसउदरवास॥ सोभयेशेषसज्यानिवास॥ बहुकालभयेतिहिंठांवितीत॥ मनमोहरहितमायाअजीत॥ वि सतारविश्वकारणविष्यात॥ परब्रह्मभयेजागर्त्तप्रात॥ ॥ ५॥

॥ अथ प्रथम ब्रह्माअवतार वर्णनं॥



छंदपधरी॥ ॥ हरिधरनचित्तलीलानियान॥ चतुराननउपजेनाभिथान॥ विधिभये जापतिअतिप्रतिष्टि॥ सोसृजतभयेमानसीसृष्टि॥ नवद्रव्यबीजनिर्मानकीन॥ वरबढ

तपिताश्रद्धानवीन ॥ भूगगनतेजजलबायुजान ॥ मनकालरुहिपरप्रातप्रान ॥ जुगचारिर चेविधिबलनिधान ॥ कृतत्रेताद्वअकलिप्रतान ॥ प्रगटेसुप्रथमकृतयुगपुनीत ॥ क्रमयुक्त भयेपरब्रह्ममीत ॥ सतत्रेताद्वापुरयुगसुभाइ ॥ त्रयभयेएकपरमहिंसहाइ ॥ तहांबढेधरम भांतिनअनेक ॥ सतसीलसुकृतविद्याविवेक ॥ तिहिसमयधरम चलिचहुंपाइ ॥ सविसेष रिषनिवरन्योबनाइ ॥ त्रयजुगनिसहजमतएकप्रीति ॥ कलिकुद्धभयेरचिप्रथकरीति ॥ म तथपहिंत्रिजुगकलिकरहिषंड ॥ बिपरीतबिरुद्धबाटेअषंड॥इकओरत्रिजुगकलिएकआप ॥ समतानहीपावतदुषबियाप ॥ कलिरहेसाजिकहुगौनथान ॥ विनसमयवृथाकरिवौविधान॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कलिकेसंगीकलिबिना । हियविषाददुतिक्षीन ॥ करकरातअतिजितहितित । ज्यूंबिनुनीरहिमीन ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ तबभयेषीनदुतिदुषिततताप ॥ क्षयरोगउपजि उरसहिनदाप ॥ उत्तमदवारपावहिनजान ॥ उरपापशूलबाढेअमान ॥ अकुलाइपापभय सोकलीन ॥ कलिसरनजाउयहमंत्रकीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जिहिरानीनिरलज्जता । जाकै अपजसपूत ॥ कलिसोराजाओरको । मंत्रीकपटअभूत ॥ १ ॥ यहसमाझकलिकेसमझि अरुआपनौंसुभाई ॥ सफलकरणअभिलाषसब । कीनौगवनबजाई ॥ २ ॥ ॥ छंदप धरी ॥ कलिद्वारपुकार्यौआंनिपाप ॥ सरनागतपावैअभयछाप ॥ प्रतिहारतहुइहबसहु मान ॥ कोउदीनपुकारतद्वारथान ॥ लीनैवकारतिहिथलसमीप ॥ थितसिंघासनजहांकलि प्रथीप ॥ सादरनिहारिआवतजुपाप ॥ भहराइसभासभउठेआप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कलिकौंअघवंदनकरै । तैनकदइबताइ ॥ सभानिहारिविचारिसव । अधरमबैठेआ इ ॥ ॥ कलिरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कोदेशबंसबलनामकर्म ॥ मनकादुसो कअरुकहहुमर्म ॥ ॥ पापउवाच ॥ ॥ डार्यौअकासअरुधर्यौभूमि ॥ अबकठि नभूमिअरषिअगूमि ॥ उरसहिनजातभौदुषअसेस ॥ फटहीनभूमिकीजैप्रवेश ॥ अ रिवृद्धिदेषिसुनिअप्रमान ॥ कछुअजहुंआँषिफूटैनकाम ॥ ॥ कलिरुवाचा ॥ ॥ नि जपरनिवेदहुवेगिमित्र ॥ इलिंकालआहिएईचरित्र ॥ ॥ पापउवाचा ॥ ॥ जोपूछ तहोमोहिदुष्षभेव ॥ छिनकीजेद्रिष्टिप्रसाददेव ॥ मनराजभयेवलअप्रमान ॥ सुभअसु भहेतवेतानिदान ॥ तिहिबरिउभयवामाअनूप ॥ निरवृत्तिप्रवृत्तिइतिनामरूप ॥ प्रिय प्रियापरसपरमिलिप्रकृत्ति ॥ रसरासिरमैंमनरतिविरत्ति ॥ मनतैंजुभयेद्वैउभैवंस ॥ ध र्मोअधर्मइहिंनामअंस ॥ करमाअकरमभयउभयभ्रात ॥ निरवृत्तिपरवृत्तिमनमानता त ॥ भ्रातासुधर्ममोपित्रियजात ॥ मातासुविद्यसुभकरमतात ॥ पूछीजदेवममममेता त ॥ अंबाअविद्यदुःकर्मतात ॥ कर्मादिभयेधर्माधिकार ॥ दुःकर्मआदिहमपापसार ॥ बलवंडवीरमोहिपापनाम ॥ करुनासविरोधीमित्रकाम ॥ प्रभुहोइजहामेरोप्रचार ॥ छि नमांझकरौंसोदेशछार ॥ इहिंभांतिभईजबवंसवृद्धि ॥ इकगेहवासविगर्योप्रसिद्धि ॥ हम वेनवसहियेकत्रथान ॥ मतभयेविरुद्धवलअप्रमान ॥ हमथपहितासवेनथपिदेहि ॥ वेत जहितातिहिमराषिलेहि ॥ पितुदेहिदुषवेअतिअसंक ॥ हमपिलेतनहिसवाहिससंक ॥ स्व छंदजातमनकहुसुभाइ ॥ करमादिकरोकततत्राहिआइ ॥ लेपेलोकारायाहमांझ ॥ निकस

ननहींदेहिभोरसांझ ॥ मनमावतनहिश्रवकासकोइ ॥ पुनिमारनकाजेंजतनहोइ ॥ पितुव चनभंगवेकरतपूत ॥ अनसस्त्रवधककहियेश्रभूत ॥ मनपस्योमहासंकटसपेद ॥ कर्मादि मंत्रपुनिलह्योभेद ॥ पुत्रघातजानिकरमादिपूत ॥ उरश्रासमनहिउपज्योश्रभूत ॥ ॥ म नउवाच ॥ ॥ पुनसाइकह्योमननिरसनेह ॥ करमादिवसहुद्विजदीनग्रेह ॥ उपधांनपत्र फलभक्षमान ॥ जलपात्रसरितसज्यापषान ॥ करपात्रग्रहुतुमपंचग्रास ॥ सबदिवसश्रस नलगिरहनिरास ॥ त्रिणडासनश्रासनऊर्धपाइ ॥ सुनिग्रहपरनसालासुभाइ ॥ नैरासरह हुसंपतिविहीन ॥ गतमोहमानभिक्षाश्रधीन ॥ समब्रह्मचर्यश्रंतरश्रकाम ॥ वनमांझश्र केलेरहितवाम ॥ नषदानवृद्धिछुरकरमहीन ॥ नितश्रंगरागभसमीनवीन ॥ हिमशशिरका लनिरवसनजाहु ॥ पुनिग्रीषमपंचानलतपाहु ॥ वरषाविशेषजलधारसीस ॥ यहदईपिता पुत्रनिश्रसीस ॥ रिषनगनदंडधारिश्रनाथ ॥ सवजनमहोहुतुमउनहिसाथ ॥ ॥ पापउ वाच ॥ ॥ दोहा ॥ कर्मादिकनिसत्रासह्वै । दीनैपितानिवास ॥ तेवैंश्रकर्मादिकनिहम । कीनैमंत्रप्रकास ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकसमयदेषिमनमोहलीन ॥ कहुदेहुवासहमप्रानि तकीन ॥ सबश्रानिश्रकरमादिकसुभाइ ॥ करजोररहेथितएकपाइ ॥ श्रविवेकश्रसगतश्र नाचार ॥ श्रतिसयश्रनीतिश्रनरथश्रपार ॥ इत्यादिसबेलीनेसंभारि ॥ श्राज्ञाश्रधीनापित हेतकारि ॥ पितभयेप्रसन्नहमश्रनुजदेषि ॥ सुतहोहुवृद्धिकलिजुगविशेषि ॥ इहिभांतिपि ताहमप्रण्णकीन ॥ दिगविजयहोहुबरहमाहिदीन ॥ मनकलहवढतदेप्योश्रमान ॥ थित करेपुत्रतबउभयथांन ॥ इहिभांतिपिताकीनौंविभाग ॥ कछुहमहिउनहिनहीलागभाग ॥ सतकरमगयेतबरिषनिवास ॥ उनमध्यमानिहितचितप्रकास ॥ सानंदरहहिंरिषिकरम साथ ॥ गावतसप्रेमहरिचरितगाथ ॥ परचारकरेहमभूप्रदेश ॥ सुषबासहेतदेसनिविदेस प्रतिपुरुषनजेजगजनपुनीत ॥ वेकरहिंनेकहमसोनप्रीत ॥ दीजाहिंकँणटहमेजाहिहार ॥ स्वस्थांनकहुनपावहिंसंचार ॥ निसिबसेसुतनहमपंथजात ॥ पुरजारछारसोइकरतप्रात ॥ बिपरीतचरितव्हैगयेबिसाल ॥ सहिरहिनसकेहमपरमसाल ॥ षिनद्वयबिचारहमयहैकी न ॥ पैसमयपाइपरनैप्रवीन ॥ साहाइहीनहमप्रबलसत्र ॥ तबमौनिसाजिउठिचलेश्रत्र ॥ हमभजतटेरियोंकह्योराज ॥ कविजीतिश्राहिराजाधिराज ॥ तबदईचुनौतीतुमहीतेरि ॥ हमकहिनसकतलघुमुषहिफेरि ॥ यहभइविपतिहममांझदेव ॥ सोलाजप्रभुहिहमकरहिसे व ॥ ॥ कलिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर्त्तुश्रकर्त्तुसमर्थहरि । श्ररुश्रन्यथाप्रकार ॥ ग्रावतिरैश्रसत्रिसतुरे । सोकारनकरतार ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उरसोककछुजिनकर हुमित्र ॥ इहिंकालश्राहिएहीचारित्र ॥ सुषहोततिनहिफिरिहोइदुःष ॥ यहजानिसोकतजिये विदुष ॥ चंद्रायणा ॥जहांरविहोतउदोततहांतमनाहिंबल॥ बासुरभयेबितीतसुनिसचयरा त्रिभल॥धीरगहोउरवीरनदुषहिंरच्चनां ॥ परिहांश्रपनीबेरसुनाटिकनच्चनां ॥ १॥जिमग्रीष मकेश्रंतसुबर्षाश्राइहै ॥ वर्षाहोतवितीतसीतसमदाइहै ॥ योंहीजुगश्रनुसारश्रनुक्रमलेषि है ॥ परिहांकबहुसुदृष्टिदईबहमहुतौदेषिहै ॥ २ ॥ जोनपित्यावहुमोहितोश्रापविचारियें ॥ सुषकेगयेनिदानसुदुःषनिहारियें ॥ फिरित्योंहीश्रनयासवहुरिसुषपाइयें ॥ परिहांकोधवि

रोधनिवारिनसोकबटाइयें ॥ १ ॥ छंदभुजंगी ॥ ॥ भयोदुःषतोकोंसुमैंदुष्षपायो ॥ बडेभा
गमेरेइहांतूजआयो ॥ सदाहेतकारीसुसुभावतेरो ॥ करूंतोहिमोसोफिरैंद्योसमेरो ॥ ॥ पा
पउवाच ॥ ॥ बलीविक्रमीउद्यमीमोहिजानौं ॥ सदाधरमद्वेषीकुकरमेंसथानौं ॥ यहैनेम
सांचौसनोदेवमेरे ॥ तकौदेहआवैकहूंकाजतेरे ॥ बडेसत्रुसठ्ठनतेज्योवचोहौं ॥ सुतोस्वामि
कैकाजदेहीसच्योहौं ॥ कलिरुवाच ॥ ॥ चलैवायुजैसोगहैओटतैसो ॥ सोइसूरसाम
र्थितेदेहकैसो ॥ छंदमुडिल ॥ ॥ एकवातहमसुनीअनैसी ॥ सुनियैंमित्रकहूंतोहितैसी
सौअवहैंहैंकहतसमूल ॥ सुधिआयेवाढतउरसूल ॥ ॥ पापउवाच ॥ ॥ पूछीपापस
विस्तरबात ॥ काअनिष्टभवितव्यसुतात ॥ ॥ कलिरुवाच ॥ फेरिकहतकलिसुनिआप
मित्र ॥ जोकछुहोनेअहितचरित्र ॥ ह्वैहैंमहाबनारप्रबोधी ॥ धरमसहाइकपापविरोधी ॥
तेसबमारिदुष्टसंघारिहै ॥ धरमनिरंतररष्याकरिहैं ॥ मायारहितनिरंजनस्वामी ॥ अषिल
चराचरअंतरजामी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विसवउनिरचितनिगमहित । अचलितज्योतिअ
षंड ॥ एकएककचकूपजिंहिं । कोटिकोटिब्रह्मंड ॥ १ ॥ ॥ पापउवाच ॥ ॥ छंदमुडिल ॥
॥ भूतअषिलब्रहमंडनिवासी ॥ रोमकूपब्रहमंडप्रकासी ॥ रोमकूपब्रहमंडसमेहै ॥ तेअव
तारउदरकिहिलैहै ॥ ॥ कलिरुवाच ॥ ॥ दीननचावतत्यौंत्योंनाचैं ॥ सेवकसं
गफिरेंहितसांचे ॥ कारनपाइसुदेहहिधारैं ॥ काजभयेनिजलोकविहारैं ॥
॥ पापउवाच ॥ ॥ कलिअवनीपक्षपायहकीजे ॥ दासजांनिमोत्यौंद्रिगदीजे ॥ सोप्रसं
गसबिमोघनिदानौं ॥ अनुक्रमसौंअवतारबषानौं ॥ ॥ कलिरुवाच ॥ ॥ मोहिनसक
तिइतीसुनिमित्रा ॥ तिहिवरनौंअवतारचरित्रा ॥ नेतिनेतिजिहिनिगमबषानैं ॥ कहिता
कौअनुक्रमकोजानैं ॥ नहींअवतारअनुक्रमदीनौं ॥ कारनपाइरूपसोइकीनौं ॥ आदिम
ध्यअवसाननजाकौ ॥ कैसेंकहूंअनुक्रमताकौ ॥ जगहीमांझजगततैंन्यारा ॥ पलहिसमेटै
पलहिपसारा ॥ कीटगयंदएककरितोलै ॥ बाहरिनाचैंभीतरिबोलै ॥ आहिप्रगटपैंकोइन
पावै ॥ सोपावैसोफेरिनआवै ॥ जाकीमायाजगतभुलाना ॥ सिवबिरंचिहुपारनजाना ॥ की
टीकुंजरसाथिपुकारा ॥ प्रथमकीटकीहोतसँभारा ॥ नितनवीनजाकोजसगावै ॥ सेषसह
समुषओरनआवै ॥ अगमअगाधनिरंतरलेषौ ॥ जोकछुहोइचरित्रसोदेषौ ॥ ॥ कलिरु
वाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कलिअरुपापप्रसिद्धहै । इहँविधिव्हैएकत्र ॥ मनमनसेमरमन
मिले। सहजसुहाएमित्र ॥ ॥ इतिकलिजुगपापसंबाद ॥ ॥ कुंडलियौ ॥ ॥ वासकियो
अग्यातमहि ॥ कलिसंजुतपरिवार ॥ जबजैसोकछुदेषिवौ ॥ तैसोतबहिविचार ॥ तैसो
तवहिविचारकछुअवकासजुपैहैं ॥जीतिसबैसंसारमहामनमोदबढैहै ॥ सुभटवंधुसुतत्रीय
साजसेवकसंगलीनैं ॥ सहचरिसमृधसमेतवासअग्यातजुकीनैं ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥
॥दोहा॥चारनग्यातिसुवारहट । नरहरिमतिअनुसार ॥ मैंसायरपैरनलयो ।कहनचरितअ
वतार ॥ १ ॥ रुद्रसुपंचविरंचिचव। सेषसहसमुषसंग ॥ नितरसनाजसकहतनव । और
नलहतअभंग ॥ २॥ रसनाएकसुस्वादरत । सबदिनरहतसुषेद ॥कीनौंकतिहिहारिजसक
हुं । बरनतनेतिसुबेद ॥ ३ ॥ जोआपनअसमर्थव्है । कहियेमतिअनुसार ॥ पावनदीनद

यालप्रभु । कृतमानवकरतार ॥ ४ ॥ जथासकतिनरहरिसुकवि । कहिअवतारसरूप ॥ जिहिंजिहिंग्रंथनिजेसुनें । रिषप्रनीतअनुरूप ॥ ५ ॥ नरहरिप्रभुअवतारभो । अवनिउधारनहेत ॥ निरमूलनदितजातकुल । देहसत्यमयश्वेत ॥ ६ ॥ ॥छ॥

॥ अथ प्रथम श्वेतवराह अवतारचरित्र प्रारंभः ॥



॥ छंदपधरी ॥ ॥ परपुरुषकालइकचित्तप्रकास ॥ बपुधरनचह्योमायाविलास ॥ हरिप्रियाआइतबतिहिनिकेत ॥ हरिचरनलीनहरिदरसहेत ॥ जुगद्वारपालजयविजयनाम ॥ करजोरिरहतनितिसहतकाम ॥ करकससुभावप्रतिहारकर्म ॥ कीनौनिषेधजान्योंनमर्म ॥ मुसकाइकह्योतबजगतमात ॥ करकससुभावफललहहुतात ॥ पुनिभयौकालजबकछुबितीत ॥ पगधारेसनकादिकपुनीत ॥ कृतगमनमध्यदरसीत्रिकाल ॥ छटिकानिरोधकीयद्वारपाल ॥ थितहोहुछनकइहिंठाँरिषीस ॥ जोलौंसुधिपावहिजगतईस ॥ मुनिभयेतबैक्रोधाइमांन ॥ पुनिदयोश्रापदुःसहनिदांन ॥ कृतदुष्टजाहुतुमभूनिकेत ॥ अवतरहुजोनिआसुरअचेत ॥ मायाअजीततवप्रभुमुरारि ॥ सनकादिकसनमुखपाउधारि ॥ आदरअसेषकीनौंअनंत ॥ सुभदरसदयोलषिपरमसंत ॥ अर्घादिकवंदनप्रसन्नकीन ॥ अभिलाषपूरिप्रभुबिदादीन ॥ दारुनसरापभौद्वारपाल ॥ भयेचित्तभ्रमितबपुअतिबिहाल ॥ ॥प्रतिहारउवाच ॥ जयविजयआनिहरिप्रनयकीन ॥ अवतरनभूमिहमआयदीन ॥ सुभछूटतहैप्रभुचरनसाथ ॥ अपराधविनाममभयेअनाथ ॥ जगदीसकरहुगतिदीनजानि ॥ तिहिहोइनहिनप्रभुदरसहानि ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ सनकादिदयौजोव्हैसदाप ॥ सोभयेविनांमिटिहैनआप ॥ अवतरहुग्रेहकस्यपरिषीस ॥ दितिगरभहोहुदानवअधीस ॥ सुधिलैहुंगर्भसुस्थानमीत ॥ पुनिदैहुंदरसनजगपुनीत ॥ भूलोकजाइअवतरहुआप ॥ तुमछठैंजनमहमसूंमिलाप ॥ अत्यंतविरोधहुजबैमोहि ॥ तीसरैजनमतोमिलनहोहि ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ होनीहोइसुह्वैरहैं ॥ नांहिनटरैनिदान ॥ भूतभविष्यतवर्त्त
मन। पूछहुवेदपुरान ॥ छंदपधरी ॥ यहकहतजोतिनिकसीअनंत॥ सांतदीपसेरहेसंत॥
कश्यपप्रजापउरसानुकूल ॥ सोजोतिआनिप्रगटीसमूल ॥ दितिनामदक्षपुत्रीसुदेस ॥ सु
भप्रियाप्रांनकस्यपरिषेस ॥ अतिभयौप्रियाव्याकुलितअंग ॥ उरछिद्योजबहिवाननिअनं
ग ॥ अकुलाइआइत्रियपीयसमीप ॥ रितुजाचिउठीअसमयरिषीस ॥ हासंध्याजद्यपिअ
सुरकाल ॥ रितुदानदयौप्रियह्वैकृपाल ॥ दितिदुष्टगरभासिसुधरेदोइ ॥ सतवरषवीतिपु
निप्रसवहोइ ॥ तिहिकालदयोदरसनअनंत ॥ निजबाचाप्रतिपालननिमंत ॥ हिरनाक्षह
रिनकस्यपबलिष्ट ॥ जोडुवाअसुरप्रगटेप्रतिष्ट ॥ सोभयेदेहपरवतसमांन ॥ अतिदुष्टकर
मबलअप्रमान ॥ राज्याभिषेकहिरणाक्षकीन ॥ निजधरेछत्रचामरनवीन ॥ थितभयेराज
आसुरअजेय ॥ तिहिंसमयअनयप्रगटेअमेय ॥ तीरथसुतप्यव्रतहोमदान ॥ मषविप्र
वेदसुनियेनकान ॥ ओषधीवनसुरगोअदृष्ट ॥ निरबीजभईछितिसुन्यनिष्ट ॥ जबकोपि
असुरमूलकसतूल ॥ सबलईकाढिपृथ्वीसमूल ॥ थितकरीरसातलभूप्रचंड ॥ बलबिं
वनयोतिहिठांअषंड ॥ सुरसाललीयेआसुरसमाज ॥ उनलोककरतनिसंकराज ॥ म
षभागरहतभयेसुररिषस ॥ सुरबढीतवैचिताअसेस ॥ पुनिगयेसबैमिलिब्रह्मथान ॥
॥ दुषकहेदुसहआपुननिदांन ॥ बिधिकरतजोगधारनसवेय ॥ उद्धसितभ्रूकुटिरो
माउद्वय ॥ सुभघ्रांनदछिनसुछमसरीर ॥ अंगुष्टमात्रवाराहवीर ॥ निजरूपब्र
ह्मवाराहनाम ॥ अवतारभयोप्रभुधरमधाम ॥ वेदमयजग्यवाराहवीर ॥ सुभवृ
द्धभयेअनुक्रमसरीर ॥ वपुबढ्यौमनहुंपतात्रिवथार ॥ संजुक्तरोमतीक्षनसुढार ॥ सासि
द्वैजउभयडढढासरूप ॥ ज्वलनेत्रबानिघुरघुरसजूप ॥ स्वाभावसिद्धसूकरप्रकास ॥ भुव
फिरहिंकरतआघ्रांननास॥ तबगंधज्ञाननिसचयसुभाइ॥जलमगनभईपृथ्वीसपाइ॥षरनषू
रपरप्रलयवारिधविहार॥आछोटछटाजलसुरउधार ॥ तलदेसजाइवाराहदेव ॥उरबीउधार
कीनौअजेव ॥ सितदाढअग्रभूयहप्रमांन ॥ गजदंतअंतकर्दमसमान ॥ हिरनाक्षजुद्योतव
आनिजुद्ध॥क्रोडावतारहरिभयेक्रुद्ध ॥ प्रतिद्वंदहोतहरिअसुरपरब॥संभ्रमितभयेतहांलोक
सरब ॥ जुद्धकरतसहसगतसाठिकल्प ॥ यहभईक्रोधक्रीडाअनल्प ॥ निग्रहेदैत्यमायाअ
नूप॥ रदअग्रराहिभुवतिलसरूप ॥ उद्धारिदेवबलअप्रमान॥थितकीनरतनगरभासथांन ॥
महासक्तिध्यानतहांकृतमुरारि ॥ जयसबदसिद्ध चारनउचारि ॥ आछादितभौसुररथअ
कास ॥ सुरपुहपवृष्टिकीनीसहास ॥ किनौपुरानवाराहदेव ॥ अध्ययनकरतभयेरिषिसभेव
विधिश्राद्धहव्यकव्योविलास॥संतोषपोषपितृगनप्रकास॥अंनादिबीजओषधअपार ॥ सो
कियेप्रगटआसुरसँघार ॥ पूजाहरितीरथमषप्रसाद ॥ विधिजुगतहोतसबानिरविषाद ॥ इ
हिहेतआदिवाराहआप ॥ सुरथपेअखिलआसुरउथाप ॥ बाराहतबैनिजपुरविहार॥ प्रभुक
रतभयेलीलाअपार ॥ दोहा ॥ विमलविहारवराहप्रभु । सागरपैठसहास ॥ असुरहत्योहि
रनाक्षरन। कीनोपुहाविप्रकास ॥ १ ॥ कवित्त ॥ विमलरूपवाराहविसद ॥ बल
तेजबिराजित ॥ कर्म्महव्यकव्यादिअगतिगतिहेतउपार्जित ॥ सुरसुधारषितहरषपारअ

वतारअजोनीय ॥ तपविधानमषहोमदानपुहविपरकासकीय ॥ अद्यअसुरग्रासितमानु षअवनि ॥ कोउसहाइताहिनकरन ॥ उद्धारमूलनरहरिसुकवि ॥ सितवराहअसरनसर न ॥ इतिश्रीआदिवाराहअवतारचरितसपूर्णम् ॥ भाषाबारहटनरहरदासेनविरचितं ॥

॥ अथ द्वितीय सनकादिक अवतारचरित्र प्रारंभः ॥



छंदपधरी ॥ ॥ सनकादिआदिउतपतिसरूप ॥ नैष्टिकब्रह्मचारीअनूप ॥ श्रेष्टासनत पक्तब्रह्मसंत ॥ अषिलेसपुत्रभयेतबअनंत ॥ विग्रहविभागाकियचवप्रकार ॥ सनकादि कऊपजेजोगसार ॥ दोहा ॥ सनकसनंदनद्वैभये ॥ तीजेसनतकुमार ॥ चोथेभयेसनात ना ॥ आदिपुरुषअवतार ॥ १ ॥ आतमतत्वप्रनष्टभौ ॥ पहिलेहोसंसार ॥ सोविचारकरि विसतर्यो॥ब्रह्मचर्यअधिकार ॥ २ ॥ पांचबरसकेबालसम ॥ मतिअविकारसरीर ॥ उपजे उतपतिमानसी ॥ सृष्टिविहारसधीर ॥ ३ ॥ तीनलोकआगमनिगमभूतभविष्पतग्यान ॥ नरहरिप्रभुअवतारभए ॥ सनकादिकभगवांन ॥ ४ ॥ ॥ इतिश्रीसनकादिकअवतार चरित्रसंपूर्णम् ॥ ॥ बारहटनरहरदासेनविरचितं ॥

॥ अथ तृतीयो जग्यअवतार प्रारंभः॥

——०:❋:०——

छंदपधरी ॥ ॥ मनुसुताभईआकूतिनांम ॥ रुचिपानिग्रहनकियधर्मधाम ॥ तिहिंउदरज ग्यअवतारलीन॥मषकरमअषिलविसतारकीन ॥ भरतारजज्ञदक्षनाभाज ॥ संतोषपोषम खसुरसमाज ॥ सुरगनसमेतकियतपविशेष ॥ इंद्राधिकारपायौअसेष ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वायंभूमनुराषियो ॥ कीनौअसुरसंघार ॥ जग्यपुरुषहरिअवतरे॥कहिकारनसंसार ॥१॥



नरहरिप्रभुमहिमाअमित । धरमसुधाइनिदान ॥ निजइच्छालीलाकरी । जग्यपुरुषभगवान ॥ २ ॥ इतिश्रीतृतीयोजग्यअवतारचरित्रसंपूर्णम् ॥ ॥छ॥

॥ अथ चतुर्थो नरनारायण अवतारचरित्रप्रारंभः ॥

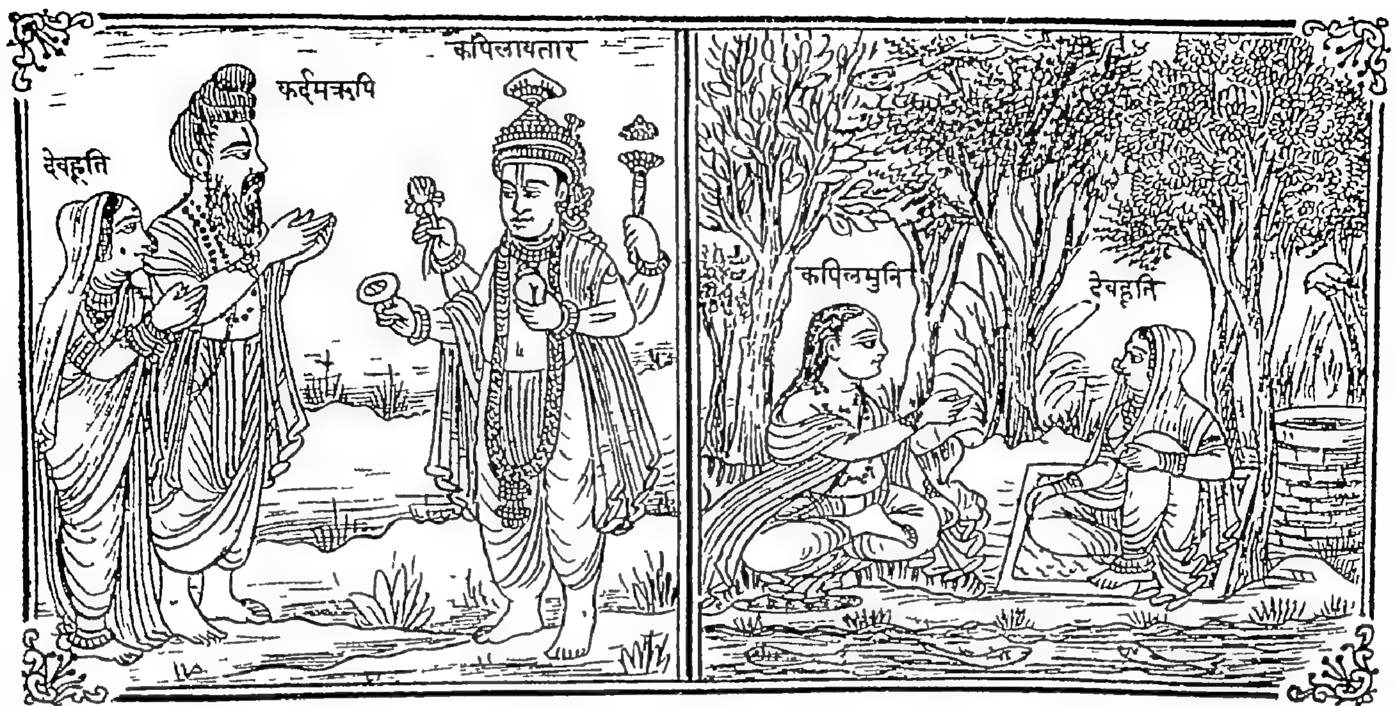


दोहा ॥ ॥ ब्रह्माकोसुतमानसिक । भयोधर्मइहिनाम ॥ दक्षप्रजापतिकीसुता । मूर्त्तिभईतिहिबांम ॥ छंदपधरी ॥ पितुभयेधरममूरतिसुमात ॥ उपजेनरनारायनविष्यात ॥ तेबैठिबदरिकाश्रमप्रवीन ॥ भवभूतहेततपउग्रकीन ॥ नरनारायनतपबलप्रभाव ॥ आनंदभयेत्रयपुरअमाव ॥ समसहस्त्रबर्षउपवासासिद्ध ॥ फलमात्रकीनपारनप्रसिद्ध

सो उग्र तपस्या मुनि सुरेस ॥ इद्रासन कंपित भौ असेस ॥ इहिसमय इंद्रपठयो अनंग ॥ भय टरै सोहि तप सिद्ध भंग ॥ मिलि मदन मित्र माधव समान ॥ आरंभचमूसजिअप्रमान ॥ अनिमेषवधूधरिअग्रभाग ॥ वनिसेनत्रिविधमारुतविभाग ॥ इहिभांतिबदरिकाश्रमसमीप ॥ मनमुदितआइमनमथमहीप ॥ वनफूलिलतातरुपुहपपात ॥ मारुतसुगंधिचलिअकस्मात ॥ इहिरूपभयोआगमअनंग ॥ उद्दीपनउपजेअंगअंग ॥ दृढमुष्टिधारटंकारदीन॥ कोदंडवानसंधानकीन ॥ आकर्षणवशिकारकअनंत ॥ उन्मादकउद्रावणसोषअंत॥एबानलगेप्रभुअंगअंग ॥ पालिभयेमकरध्वजनिषंग ॥ भेदनिकटाछअरुहाउभाउ ॥ सुररमनिथकीकरिकारिउपाउ॥ निर्बीजगएउद्यमअनेक॥ उपचारमारनहिफुरतएक ॥ अहुत्यौमनोजकरिकरिउपाधि ॥धारणाध्याननहिटरिसमाधि ॥ उरकामत्रासउपज्योअनंत ॥ मतिक्रोधदृष्टिज्यारैमहंत ॥ वमभएषिसानैमदनजांनि ॥ आदरप्रभुकीनेग्रेहआंनि ॥ करजोरिकामतवप्रणयकीन ॥ अपिलेसअपिलमायाअलीन ॥ जितकांमक्रोधतुमनितजयंत ॥ अविकारपुरुषविलुआदिअंत ॥ उतपत्तिवृद्धिभवभूतअंत ॥ सवइच्छारावरीपरमसंत ॥तुमकरहुक्रोधकिहिंपरिक्रपाल॥ वहुदोषपितानहिहनतवाल॥जेतरहिकामसागरसुजान ॥ गोपदगक्रोधबूडहिअग्यान ॥ तिहिदीनदेपिप्रभुभएदयाल॥ कारुण्यरूपसंततिकृपाल ॥ संग्यासहस्रवनितासुरूप ॥ अपिलेससंगदेषीअनूप ॥ अपसरासहितविस्मितअनंग ॥ अद्भुतरसउपज्योअंगअंग ॥ उर्वसीनामअपछराएक ॥ वासवकहँपठईकरिविवेक ॥ सोकस्यौविदाउर्वसीसंग ॥ इंद्रकहुआनिदीनीअनंग ॥ इंद्रउरउपजिआनंदअपार ॥ सोभईत्रियासुरपुरसिंगार ॥ सुरराजलष्योअवतारसिद्ध ॥ परब्रह्मपुरुषपूरणप्रसिद्ध ॥ वहजांनिइंद्रप्रभुपासआइ ॥ सविशेषदंडवतकियसुभाइ ॥ मैंमूढदेवजान्यौनमर्म ॥सोछमहुभयोमोतैंअकर्म ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नरहरप्रभुअवतारभौ। नरनारायणदेव ॥ दुस्तरतपबलजीतिजग। आपुनरहेअजेव ॥ १ ॥ इतिश्रीनरनारायणअवतारचरित्र बारहट नरहरदासविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ ७ ॥

अथ पंचम कपिलावतार चरित्र प्रारंभः

॥ कवित्त ॥ ॥ ब्रह्मसुवनतपतेजभयोकर्दमद्विजमुनिवर ॥ मनुतनयाइकदेवहूतिकृततासुग्रहनकर॥ कपिलदेवतिहिउदरभयौअवतारसुपंचम ॥ सांख्ययोगसद्ध्योकठिनजित्तयोकालक्रम ॥ उपदेसब्रह्मविद्याअखिल, कस्यौमातुकारनकरन ॥ उत्पन्नसिद्धपूरसरस्वती, प्रभुनरहरअसरनसरन ॥ १ ॥ प्रगटदेषिपुहवीपवित्र, सोरौंपुरविसमल॥ देवदेवकपिलावतारतहाँकस्योतपोथल ॥ बैठततपयौंकह्योविघ्नजोकरहिध्यांनमह ॥ सोममदाष्टिकृशांनुभस्मव्हैहैततछिनतह ॥ तपकरतवितीत्यौंसत्ययुगअरुत्रेताआरंभयौ ॥ दिवसेसवंसराजासगरतवहिअयोध्यातप्पयौ ॥ २ ॥ नृपबाहुकरनभिरतपिसुनसौंभयोपराजय ॥ भुवनछांडिलैभांमविकलचित्तगहनवासगय ॥ तहाभयोपंचत्वत्रियासहगमनविचारीय ॥ सासगर्भपतिव्रतानियतलषिगुरहिनिवारीय ॥ गुर्विणीजांनिसौतिनिगरलद्वेषभाइताकहँदयो ॥ जन



म्योसुपुत्रतागरलयुतसगरनामतातैंभयो ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ व्याहीसुसगरतबउभ यबांम ॥ निजप्रियाकेसिनीसुमतिनाम ॥ संततिहितसेयोतिनऋषीस ॥ अतिप्रसन्नउर्व दीनीअसीस ॥ उच्चस्योवचनकेसिनिएहु ॥ दुववंसतिलकमलपुत्रदेहु ॥ वरमांगिसुमति तहाँकरिविवेक ॥ अवहोहिपुत्रमेरेंअनेक ॥ संतानहेतसासिसूरसाषि ॥ भवतथाअस्तुयों उर्वभाषि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जुगभईगर्भथितित्रियनिजानि ॥ मुनिवरप्रसादमनमो दमांनि ॥ उपज्योअसमंजसपुत्रएक ॥ केसिनीफलेवंछितअनेक ॥ जहांभयोगर्भपूरनस जीव ॥ दसमासप्रसवहुवबसदईव॥तूंबरीसुमतिइकजनीतत्र ॥ उपज्योसवनिसंदेहअत्र ॥ आराधिद्विजहिमांगेअनेक ॥ इहिठोरनपायोपुत्रएक ॥ सोफटितुंबरीयावलिसनेह ॥ देषे सुबालतिलमात्रदेह ॥ सुतसाठिसहससंख्यासनाम ॥ तेधरेमांझघृतकुंभताम ॥ प्रतिकुंभ पुत्रसबवृद्धिपाइ ॥ साहसीसूरउपजेसुभाइ ॥ विक्रमीबलीअतिकायवीर ॥ नितकूपषोदि कढढहितनीर ॥ नृपसगरसुकृतअन्नेककीन ॥ शतवाजिमेधसंकल्पलीन ॥ क्रतुहोनलगे आरंभकाज ॥ संभारसारमुनिवरसमाज ॥ पटयज्ञबांधिछूटहिपवंग ॥ अनुसरहिसंगर क्षकअभंग ॥ इच्छासुफिरहिहयअवधिअंत ॥ प्रतियज्ञथानआपाहिपरंत ॥ जबभयेनिना नूयज्ञजानि ॥ मनइंद्रडस्योअतित्रासमानि ॥ क्रतुसतमकाजआरंभकीन ॥ मषपट्टबांधि हयमूंकिदिन ॥ कीयतासअश्वरक्षककुमार ॥ सुतसहससाठिसंन्नद्धसार ॥ तिहिअश्वहर नकहइंद्रआप ॥ वनसंगफिरतमनदुषवियाप ॥ योंतकतइंद्रइकदिवसआइ ॥ पुज्जयोदाव तहँसमयपाइ ॥ करिबेसविपर्जयहस्योबाजि ॥ भयटस्यो शक्रलैगयोभाजि ॥ गहनवनग त्तंदुर्गमगँभीर ॥ धरिकापिलदेवतहांध्यानधीर ॥ लैअश्वतहांवांध्यौलुकाइ ॥ पुनिगयोइंद्र निजपुरपलाइ ॥ सेवकपुकारकुँवरनिसुनाइ ॥ वाजीनलहतमनुगौविलाइ ॥ सवकालकह तयौपरमसाध ॥ वलवानदेवमायाअवाध ॥ उठिचलेकुँवरमनक्रोधआंनि ॥ जरतेकृशा

नघृतदयोजांनि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ क्रोधवंतदिगअंतशोधलीनौवसुमत्तीय ॥ कहुनवाजिकरचह्योछोहदरहतितिहिछत्तीय ॥ षोजतहयपितिषनतकख्योसागररत्नाकर ॥ षारनीरगंभीरगहरदनुदेवनिदुस्तर ॥ परिवेषषोदिपृथ्वीप्रवल नयोउदधिजिनानिम्मेयो ॥ पुरतिहुँप्रसिद्धभुजवलप्रवलभूतभविष्यतलौंभयो ॥ ॥ छंदपधरी ॥ संक्रम्योसेनषोजतसुभाइ ॥ पुहवीपवगपदचिन्हपाइ ॥ तवकुंवरआइतिहिविवरतीर ॥ भयछांडिगर्त्तपैठेगंभीर ॥ सबहिनलैआयोकालसंग ॥ तिनलह्योतहांबांध्यौतुरंग ॥ तहांदेषिध्यानजुतकपिलदेव ॥ भनिगह्योगह्योपायोनभेव ॥ असिचोरविवरअंतरअगाध ॥ सजिमौंनमूंदिचषभएसाध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पदलातहन्योंमुनिभोप्रवोध ॥ कालानलउपज्योदृष्टिक्रोध ॥ उठिअग्निनेत्रजन्माअसेष ॥ सवकरेकुँवरभस्मावशेष ॥ कवित्त ॥ ॥ तहांवीत्योवहुकालपुत्रहयसोधनपायो ॥ यज्ञसमयटारिजाततातमनसंभ्रमछायो ॥ कियसंकल्पविकल्पकछुनउद्यमवनिआवत ॥ किहुनथानतिथिहोताचित्तदशहूंदिसिधावत ॥ सबसुभटमंत्ररिषिसगरसौंकरिविचारनिरधारकीय ॥ किज्जियेसोधकारनकवनकुँवरसेनकाहाँसंक्रमीय ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वरवीरसगरसुतजुतविवेक ॥ असमंजसजेठोपुत्रएक ॥ असमंजसकैसुतअंशुमान ॥ गुणवंतसूरवहुचित्तज्ञांन ॥ सोकपिलदेवपहमुक्किसाध ॥ अतिदीनभाषिकिनौआराध ॥ तहांभयौदेवसुप्रसन्नतास ॥ परिपाइअश्वजाच्योप्रकास ॥ लैअश्वअजोध्यापुरीआइ ॥ सविशेषकह्योकारनसुनाइ ॥ सुनिवह्योसोकनहीउरसमात ॥ जुगजुगप्रमानछिनएकजात ॥ सुतजरेयज्ञविगस्योसमूल ॥ सुनिसगरनृपतिउरउठतसूल ॥ विधिवेदधर्मकृतजुतविवेक ॥ नृपसगरदानमषकीयअनेक ॥ असमंजकुँवरउरबढिविराग ॥ तिहिपितासंगकृतराज्यत्याग ॥ दिनशोधिपुत्रकहँराज्यदीन ॥ कुँवरजुतसगरबनवासकीन ॥ यौंकरतराज्यनृपअंशुमान ॥ प्रगट्यौदिलीपतासुतप्रमान ॥ तवभयोभगीरथपुत्रतास ॥ पावनजलकीनेंभूप्रकास ॥ प्रतप्योजुभगीरथपुण्यरूप ॥ जगजेठभूपधुरधर्म्मजूप ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ नृपतिभगीरथइक्ककालहयजानयातजहां ॥ गलीमध्यपनिहारिधकालगिकुंभगिस्योतहां ॥ तिहिचंडीत्तम्मुषामर्म्मछिदबचनसुनाए ॥ जरेपितामहअनलज्वालसोगतिनमिलाए ॥ दुर्बचनवानलाग्योदुःसहमनसंभ्रमहिअसझ्झयो ॥ अंतविषादउपज्योअमिततबहितपोवनतक्कयो ॥ १ ॥ वैठितपोबनराजध्यानविश्वंभरधरयो ॥ मनवाचाकायकसमेततहांतपअनुसरयो ॥ कछुककालवित्तयेदेवदरसनतहँपायो ॥ उरअंतरअभिलाषअंकसोप्रभुहिसुनायो ॥ प्रभुकहिप्रवाहगंगाप्रगटजौतिहिथँलजलवित्थरहि ॥ अपमृत्युमरेपुरुषाअखिलततोअधोगतउद्धरहि ॥ २ ॥ पुनिराजासुरसरितहेतकाननतपकीनो ॥ तहांमंदाकिनिप्रसन्नहोइवांछितवरदीनो ॥ मातत्रिपथगामिनीषेत्रसूकरपाउधारहु ॥ ममपूरबजेअगतिपातअंबसेचउधारहु ॥ अतितेजतपनआकासतैकोममधाराधारिहै ॥ जौजांहिरसातलभेदिजल, कहिकिहिभांतिनिकारिहै ॥ ३ ॥ वहुरिराजवनवैठिउग्रतपकस्योअषंडित ॥ शंभुहेतसविशेषछद्ममायाछलछंडित ॥ तवदयालत्रिपुरारिदीनभागीरथदेष्यो ॥ अरगमगंगतरंगविश्वहितकाजविसेष्यो ॥ शिवदयोवच

नअभिलाषसुनि। इछाजुतजलअनुसरहु ॥ पावनप्रवाहममसीसपारि। आंनिस्वर्गतैंउत्तरहु ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजासंभुप्रसन्नकरि। परमइष्टवरपाइ ॥ प्रणपतिगंगासैंप्रगट। कीनीसबसमुझाइ ॥ १ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ माताहरजटजूटमहँ। परहुप्रवाहपुनीत ॥ मुहिमदनारिसंतुष्टमन। वाचादईविनीत॥ २॥ हेजननीतवतेजजल। सुकोबसहनसमथ्थ ॥ इक्कपिनाकीविनुअवर। उद्यमसबअक्रियथ्थ ॥ ३ ॥ गंगात्रयपुरगामिनी। शिवशिरकरहु प्रवेष ॥ मातदयेववरदानमुहि। सोसबफलहिअशेष ॥ ४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गंगतरंगअनंतगति। अतिआवर्तअथाह ॥ परेआनिशिवसीसपर। पसरेपुन्यप्रवाह॥५॥ भ्रमतरहेकछुकालभव। जटाजूटजलजाल ॥ पावतनहिनप्रवेशपथ। अमितभईअघसाल ॥ ६॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ अनंगारसौंनृपतियह। विनतीकरीविशेष ॥ पातकहरनपुनीतपथ पुहवीहोइप्रवेष ॥ ७ ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ जिहिकारनकीनैंजतन। जलपावनलैजाहु ॥ आगैंनृपतुमअनुसरहु। पाछैंचलैप्रवाहु ॥ ८ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जूटछोडिजनहेतमुक्तकीयजटामहेसर ॥ तिहिपथगंगतरंगप्रगटविथुरेपुहमीपर ॥ भूपभगीरथअग्रभागपाछैंजलपावन ॥ जन्हुकरतजहँजज्ञजापवहिंथलभयोआंवन ॥ मिलिजलअपारसंभारमष, विमलधारजान्यौंवहन ॥ सबमुनिबिचारिरिषिराजसौंकारिपुकारलग्गेकहन ॥ १ ॥ तबैजन्हुकृतकोपगंगकरअंजुलिआंनी ॥ लैमेलीमुषमांझरहेअवसेषनपानी ॥ करजोरेकारनसुनाइनृपविनातिकीनी ॥ जांनिजगतउद्धारहेतमुनिआज्ञादीनी ॥ निकसेतरंगगंगातदिन जंघाफारिपवित्रजल ॥ जगभयोनावजाह्नवी वेदविदिततबतैंविमल ॥ १ ॥ सुरसरितालियैसंगराजचाल्यौसुभगीरथ ॥ परेहाडजलपरसप्रानउद्धरेजातपथ ॥ इहिविधिपुण्यप्रवाहकरतपावनपृथ्वीतल ॥ जहांसगरसुतजरेतहांविथुरेमहाजल ॥ कृतधन्यभगीरथसुरकहत कुलकलंककाहांतेकरे ॥ इक्ष्वाकुवंशध्वजअवतर्यो अषिलअधोगतउद्धरे ॥ २॥ इहिप्रकारकपिलावतारसिद्धेशसुरेसुर ॥ दुर्गमतत्वउपदेशतप्योतपउग्रनिरंतर ॥ बर्णाश्रमकरिकरिविभागकृतनिर्णयकिन्नो ॥ उत्पथजनअनुसरतनिगममारगकहदिन्नो ॥ परलोकदांननरहरसुप्रभु कृतघनजिहिपावनकरे ॥ परब्रह्मआदिपूरनपुरुष। अषिलजगतहितअवतरे ॥ ३ इतिश्रीकपिलदेव अवतारचरित्र संपूर्णम् ॥ ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ दत्तात्रेय अवतारचरित्र प्रारंभः ॥

——०:❋:०——

कवित्त ॥ ब्रह्मप्रजापतिसुवनअत्रिऋषिभयोमहातप ॥ पुरीअलर्कावासनित्यतहैंकरतयोगजप ॥ अनुसूयात्रियातासमहापावनपतिव्रत्ता ॥ समतादयासुभावसदानिवहीसुरसत्ता॥ जिहिंनियतअगरक्षानिमित्त अंगरागसीताहिंदयो ॥ तिहिंतपप्रभावआजन्मलौं भामिनिकलुषनभिद्दयो ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तपकर्योअतृऋषित्रियसमेत ॥ व्हैएकाचित्तपरब्रह्महेत ॥ तपकरतबीतजबकछुककाल ॥ हीयदरसदेवआरतदयाल ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ जिहिंकाजअतृतुमतप्योताप ॥ आनंदसाहितवरकहहुआप ॥ अंजुलिपसारिद्विजकह्योएहु ॥ तवसदृशदयाकारिपुत्रदेहु ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ निश्चयसैंबोले

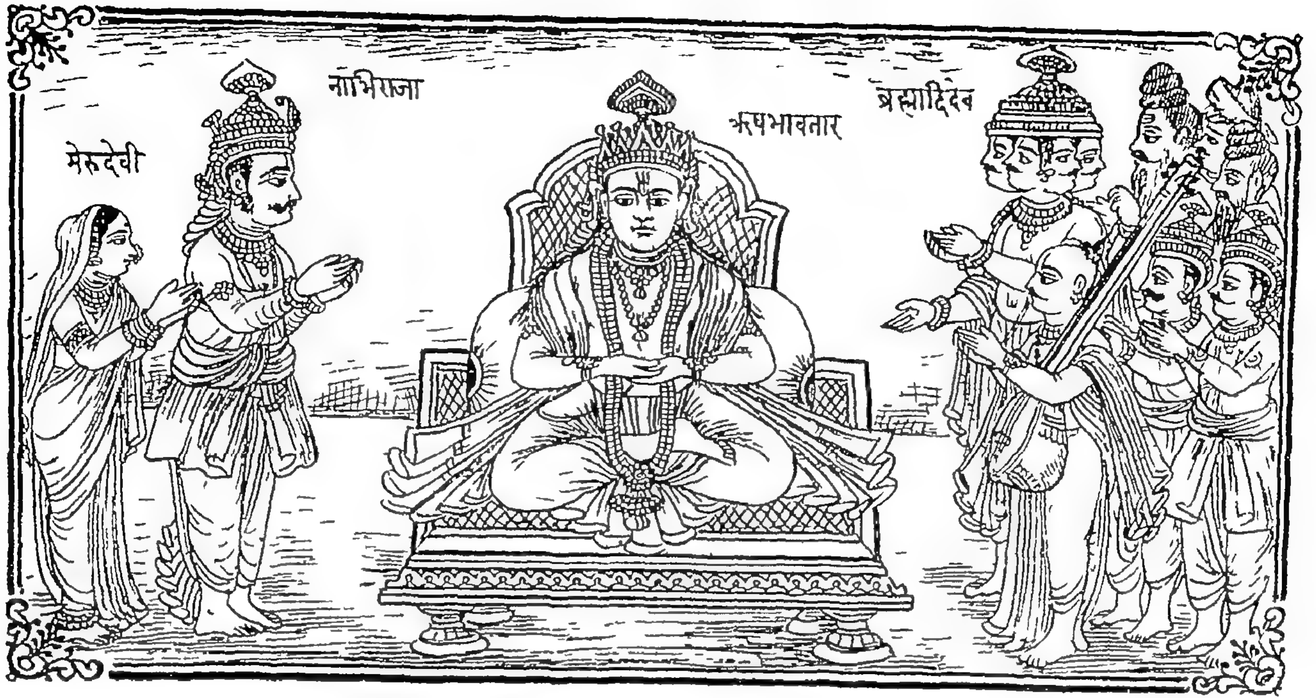


हितनिधान ॥ मैएकअवरनहीमोसमांन ॥ ॥ अतूरुवाच ॥ ॥ वरपाइअतृकहिविनय बानि ॥ अषिलेसतुमहिअवतरहुआंनि ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ अंसावतारतवउद रआइ ॥ सुतव्हैहुंदत्तात्रेयसुभाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ देवाचरिपहिदेवाधिदेव ॥ अन दृष्टभयेमायाअभेव ॥ अनुसूयागर्भसुरन्नआइ ॥ प्रगटेदत्तात्रेयअवधिपाइ ॥ आजन्मउ पजिवैराग्यअंग ॥ भयेजोगसिद्धवाचाअभंग ॥ मनहाथसिद्धमहसाअमेय ॥ योगेशभये मायाअजेय ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहस्राअर्जुनराजतब। सेवाकरीअषंड ॥ पाईसिद्धिसमृ द्धितिहि। योगभोगबलबंड ॥१॥ मुनिप्रसादप्रहलादनृप। साधभयेसबसिद्ध ॥ जिहिविद्या आन्वीषिकी। पाईपरमप्रसिद्ध ॥ २ ॥ ॥कवित्त॥ ॥उर्वीवायुअयासआपहुतभुकशशि दिनकर ॥ अजगरशलभकपोतसिंधुमधुकारिकमधुकर ॥ मृगझषगजापिंगलाकुररअर्भक कौमारी ॥ सरकृतविषधरउर्णनाभअंगीभयकारी ॥ द्वादशसदूणजिहिंगुरुकरे, लेषितत्वस बगुनलयौ ॥ संसारहेतनरहरसुकबि, दत्तात्रयअवतारभयौ ॥ इतिदत्तात्रेयअवतारचरित्रं बारहटनरहरदासविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथ सप्तम ऋषभावतारचरित्र प्रारंभः ॥

—०❀०—

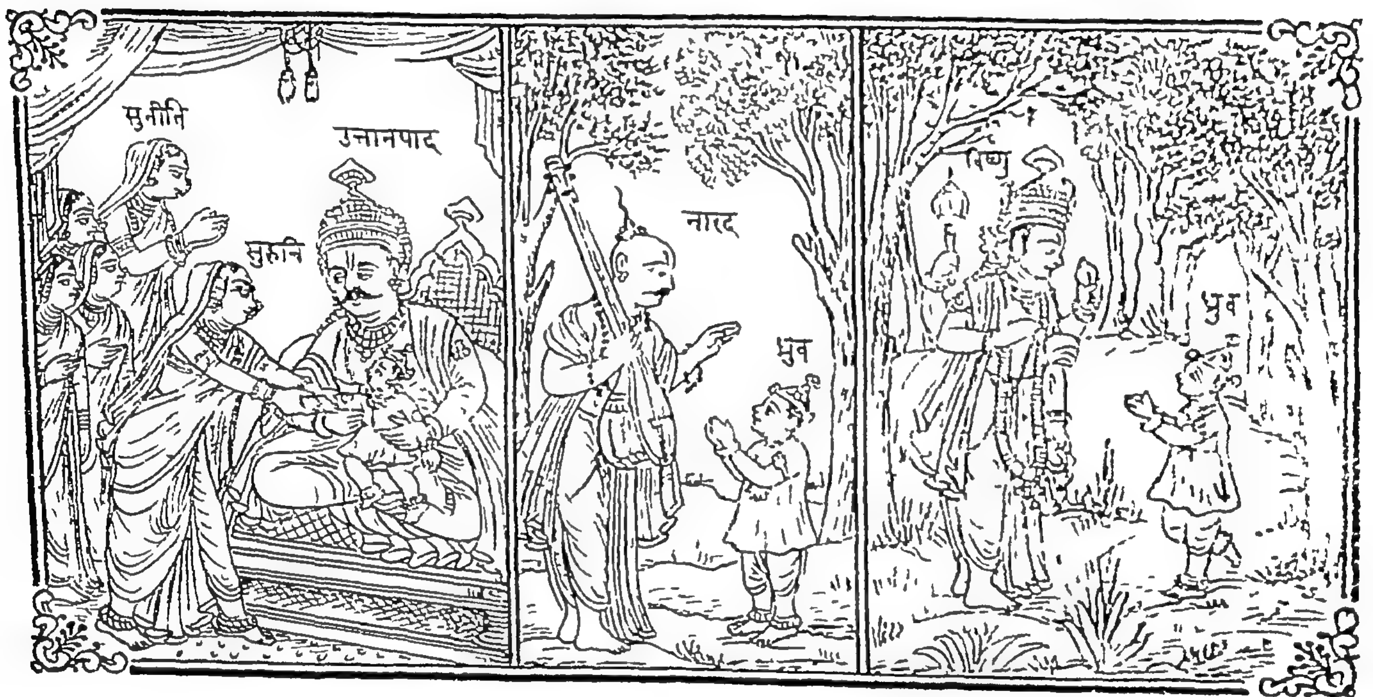
॥ छंदपधरी ॥ महिभयोनाभिराजासमृद्ध ॥ तिहिप्रियामेरुदेविप्रसिद्ध ॥ ताकुषिभयेपु त्रअप्रमेव ॥ देवाधिदेवभएऋषभदेव ॥ कुंवरपनसाधनकस्योकाय ॥ परब्रह्मकृपातैंसिद्धिपा य ॥जमरहेदेवअवधूतजीव ॥ देषहिसुअषिलप्रांणीदईव॥ सबकालअहिंसाधर्मसाधि ॥ अ नभोगरहेवराजितउपाधि ॥ उपद्रष्टावर्णाश्रमअहिंस ॥ हितअयनबतायोपरमहंस ॥ कवि त्त ॥ ॥ अअनावृष्टिइककालभईसबहीमहिमंडल ॥हाहाभूतजगत्तभएजलठौरमहाथल॥ तबैरिषभआतमायोगमायाविस्तारीय ॥ मेघमालअजनाभनांमवर्षाकृतभारीय ॥ उतप



नअन्नअवनीअमित, सुष्यचराचरजीवसब॥अनिमिषनागरउच्चरीय, तीनिलोकजयकारत
ब॥ १॥ छंदपधरी॥ ॥मनचिंतिनाभिराजामहीस॥ सुतऋषभदेवधरिछत्रसीस॥
जुवराजकस्योसुतउग्रजान॥ निर्घोषबजेमंगलनिसांन॥ नृपनाभिसमयइहिजुवतिसंग॥
उद्यानवसेवैराग्यअंग॥ भोऋषभदेवराज्याभिषेक॥ आचारनीतिक्रमविधिअनेक॥ क
छुकालऋषभवर्जितबिकार॥ चितलाइब्रह्मभयब्रह्मचार॥ गुरुदेवपाइआज्ञासज्ञान॥ पु
निकस्योगृहस्थाश्रमप्रमांन॥ विधियुक्तमंगलकीनेविवाहु॥ निजत्रियाजयंतीऋषभनाहु॥
सबभांतिप्रियाप्रियमिलिसुभाव॥ भवभोगविलसिअनेकभाव॥ पुनिप्रसवजयंतीअवधि
पाइ॥ शतपुत्रभयेअपनेसुभाइ॥ पाटैतभरततिनमहप्रचंड॥ खितिभयोनांमतिहिभरत
षंड॥ निजआठअनुजभएबलनिधान॥ नवषंडनामतिनकेनिदांन॥ योगेंद्रभयेतबसा
धियोग॥ भुविभ्रमतरहेतजिराजभोग॥ अरुहुतेबयासीपुत्रओर॥ थितब्रह्मकरमजुत
ठौरठौर॥ इहिभांतिकरेवसुधाविभाग॥ वृद्धाश्रमउपज्योनृपविराग॥ भावीकभरतकहँरा
ज्यदीन॥कुलमोहछांडिउठिगवनकीन॥ मिलिआतमपरमातमांझ॥ समकालभेदनहीभो
रसांझ॥ जडमूकप्यासनहीषुधाजाहि॥ तपसीतमेघव्याप्यैनताहि॥ अनमोहिअजाची
अनायास॥ समदृष्टिसदाशुभसावकास॥ सुषदुःखअव्यापितसहजसाध॥बलवंतकरहि
विषयादिबाध॥ अमतहीपुरीषनहिसौचभेद॥ अतिमलिनअंगआतमअषेद॥ १॥छंद
भुजंगी॥सुगंधंविगंधंनअस्तूतिगारी॥ बिभेदंनसत्रुंनमित्रंविचारी॥ नमहिमानमायान
मद्दंनमोहं॥नरंगंविरंगंनदायानद्रोहं॥नसीतंनतापंनसंगंकुसंगं॥नभावंनभिष्यानअंगंअ
नंगं॥सुखंभूमिसज्यानडासंनवासं॥ग्रहेबाहँआनैततौपंचग्रासं॥समंविषमंभूमिपंथंसह
ज्जं॥ वसन्नंदिगंवीतरागंविलज्जं॥विमोहंविदेहंनइंद्रीविकारं॥अघानैंरहैंनित्तिवातंअहारं॥
विलेपंनश्रीषंडआगीविचारं॥धरीपुष्पमालागलैविष्पधारं॥प्रकासीजुनिंदामहामोदपावे॥

हसैतालदेआपआैरेहसावै ॥ अलेपंअछेपंरहैअप्रकासं॥निरापेक्षनिर्बंधनग्रंनिरासं॥ अनाजूतअवधूतमयाअतीतं ॥ अमोहँअछोहँअद्रोहंअभीतं॥ अनामंअकामंअठामंअजेयं ॥ अनाधारआकारमहिमाअमेयं ॥ पशूवृत्तिलीनैभषेषानपानी ॥ विचारंप्रचारंविहारंविमानी ॥ **कवित्त** ॥ ऋषभदेवअवतारभएअवधूतअसंगी ॥ मोहमानमदमारिअंगतैंभएअनंगी॥वर्जितविषयविकारसीलसंतोससहजसम॥दयारूपनिजदेहदीनवत्सलआतमदम॥ परब्रह्मपरमपावनपुरुष, अविकारीआनंदमय॥ पूरणप्रसिद्धनरहरसुप्रभु, जयतिजयति ऋषभेसजय ॥ २ ॥ ॥ इति श्रीऋषभदेवअवतारचरित्रं संपूर्णम् ॥ ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम ध्रुववरद अवतारचरित्र प्रारंभः ॥



॥ **दोहा** ॥ ॥ आगमनिगमनितैंअगम । आषिलउदारअपार ॥ सुनहुकहतनरहरसुकवि । ध्रुववरदअवतार ॥१॥ स्वायंभूमनुब्रह्मसुत,भएप्रातिष्टप्रजाप ॥ तासुतनृपउत्तांनपद । राषीपुहमीप्रताप ॥ २ ॥ रांनीप्रथमविवाहिता । भईसुनीतिइहिनांम॥तासगर्भसंभूतध्रुव । भयौभक्तिविश्राम ॥ ३ ॥ परमसुभागनिलघुत्रिया। रांनीसुरुचिसरूप ॥ तासुलडंतौपुत्र भौ। उत्तमकुँवरअनूप ॥ ४ ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ एकसमयउत्तानपादसिंघासनबैठे ॥ मुहँआगेदोऊकुमारषेलतलघुजेठे ॥ रांनीसुरुचिसमीपराजअतिप्रांनपियारी ॥ लीयौउठाइउत्तमकुमारनृपभरिअँकवारी ॥ध्रुवनिकटआइजवआपतै,पितागोदबैठतभयौ ॥ करिकुटिलदृष्टदुर्बचनकहि, तवहिसुरुचिनिवारियौ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ पितगोददेषिउत्तमकुमार ॥ तहांकरयोध्रुवबैठनविचार ॥ जवनिकटसिंघासनगयोबाल ॥ जननीसपत्निउरउठीझाल ॥ ॥ **सुरुचिरुवाच** ॥ ॥ करिभृकुटिबंकबोलीकरूर ॥ दुर्भगासुवनध्रुवरहहुदूर ॥ उपज्योदुर्भागिनिउदरदीन ॥ कृतछत्रयोगकोउतैनकीन ॥ जोहोतोध्रुवममउदरजात ॥ बनिबैठतासिंघासनविष्यात ॥ जिहिकूषिभयोतुवजन्मजांनि ॥ षितिपरभवभाजनदुष्षषांनि ॥

जद्यपिकुलउत्तमछत्रजाति ॥ राजपदयोगनहींजन्नराति ॥ १ ॥ कविरुवाच ॥ इहसुन तध्रुवपरजरयोअंग ॥ भौक्रुद्धमनहुचांप्योभुजंग ॥ निस्वासवदनजलधारनैन ॥ उपज्यौ क्रोधानलउरअचैन ॥ इहिदसाअवतदृगअश्रुधार ॥ जननीपहँआयोध्रुवकुमार ॥ देष्यो सुनीतिध्रुवमुषमलीन ॥ ग्रहीभुजाप्रेमजुतगोदलीन ॥ ॥ सुनीतिरुवाच ॥ ॥ मतकर हुरुदनदुषहोतमोहि ॥ सिरपरहुवज्रजुनसहततोहि ॥ किंहुंदुष्टकह्योदुर्वचनकोइ ॥ सोकह हुपुत्रराषोनगोइ ॥ जेकहेसुरुचिदुर्बादजाल ॥ सबिशेषसुनाएहृदयसाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातातबैसुनीतिध्रुव । सुतकहंकरतप्रबोध ॥ सुषदुषअपनेकर्मफल । कहानिरर्थकक्रोध ॥ ॥ १ ॥ पुत्रनमैंतैसोभज्यो । दीनानाथदयाल ॥ तातैंएपरभवअसह । सहियतअंतरसाल ॥ ॥ २ ॥ विनुबदलैउपकारिहरि । करतदीनसौंदेव ॥ करिहैंदुषनिर्मूलसोइ । सुषनिधानप्रभु सेव ॥ ३ ॥ करिधीरजमनवचनक्रम । निजसरूपधरिध्यान ॥ आपतकालअधीरव्है । कर तरुदनअग्यान ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सुरअसुरादिकसिद्धयक्षगंधर्वमहामुनि ॥ जप तपसंजमनियमकरतमषदानग्यानगुनि ॥ अपनेकरग्रहिशस्त्रसीसकाटतसंकरहित ॥ भै रवादिघटभंगकरतैंअवरौंअंगकित ॥ जिहिंक्रियासकलभवभूतजग, जाचतदृष्टिप्रसादजी य ॥ सोभजहुपुत्रजाकेसरन, संततचरननिवासश्रीय ॥ २ ॥ दोहा ॥ जातैंपरमनिधानप द । पावतहैंसंसार ॥ सोईप्रभुकारनकरन । अनंतभजहुअविकार ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उत्तानपादभुवपतिनरेस ॥ इहिंभजनभयोआषंडलेस ॥ मनुस्वायंभूपितुपितमहीप ॥ पृथ्वीप्रभुत्वपायोप्रदीप ॥ प्रपितामहतेरोविधिविनीत ॥ पदलह्योप्रजापतिअतिपुनीत ॥ तुवजन्नभयोतिहिउच्चवंस ॥ पदलहहुउच्चप्रथवीप्रसंस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ध्रुवसुन्यो तबाहिजननीप्रबोध ॥ करिनिश्चयनिकस्योविगतक्रोध ॥ ध्रुवचल्योबनहितपहितविशेष ॥ मगमांझमिल्योनारदमुनेस ॥ परिक्रमणध्रुवकीनैंप्रणाम ॥ मुनिपूछेकहौनिजवंशनाम ॥ नारदउवाच ॥ सेवकसहाइविनुताततमात ॥ क्यौंबालअकेलौबनहिंजात ॥ ॥ ध्रुववा क्यं ॥ ॥ हूंजातबनहितपकाजदेव ॥ भूपसुतकहेदुषरोषभेव ॥ सबकहेमातलघुबचनसू ल ॥ जेलगेहृदयविषबांनतूल ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ पंचवर्षवयपेषिध्रुवसौं कह्योब्रह्मसुत ॥ अल्पदेहवयअल्पअतिहिअमरषकतउपजत ॥ समयनआतसदमनदे हपोषतकेएदिन ॥ लाडजननिपितलहनबाललीलासुषसेवन ॥ वृद्धहुंमुनिनितपसाविषम अतिदुरंतातिहिअनुसरन ॥ वयबुद्धिसुबलगुरगम्यविनु, किहिविधितिहिचाहतकरन ॥ ३ ॥ ॥ यहदइवीगतिअगमदेवऋषिमुनिनहुंदुस्तर ॥ अतिसूछमअप्रमेयवचनमनकर्मअगो चर ॥ ब्रह्मरुद्रसनकादिसकलषोजतनहिपावत ॥ इंद्रियनिग्रहकरततदपिनिधारिनआवत ॥ जिहिनेतिनेतिभाषतनिगम, अबलौंकोऊनअनुसरयो ॥ तागतिहिलहहिकिंहिंभांतितू, वृ थाबालहटहीपरयो ॥ ४ ॥ पंचअनलजलपंचसीतपंचनितपसाधत ॥ ग्रीषमवर्षासिसिरएक आसनआराधत ॥ कोउअधोमुखउर्द्धपाइलंबितधूमासन ॥ छुतपिपासभएरहितरहतके वलपवनासन ॥ इहिदसाकल्पवीततअनंत, तउनदरसतजोतितिंहि ॥ अतिदुराराध्यत पसाअगम, तिहिसाधैगौजतनकिंहि ॥ ५ ॥ दोहा ॥ ॥ जोगजुगतिअतिकठिनहै ।

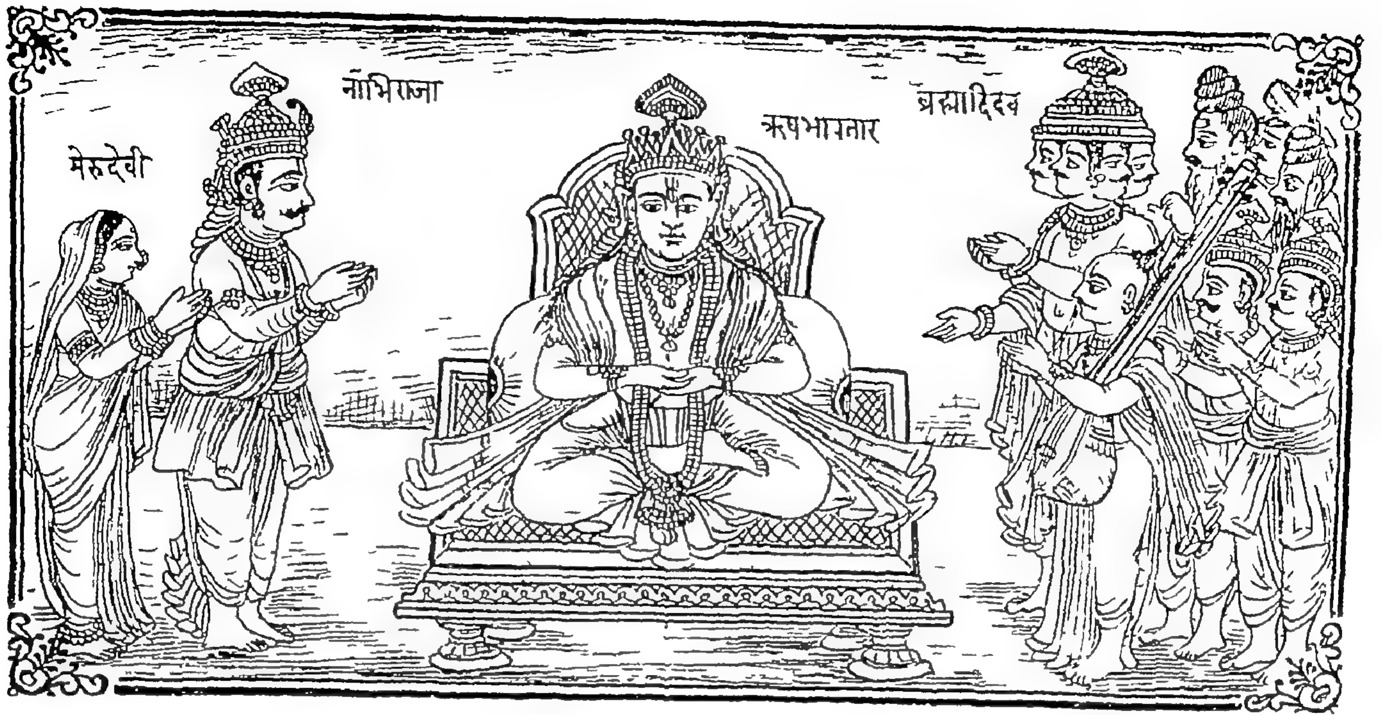


हितनिधान ॥ मैएकअवरनहीमोसमांन ॥ ॥ अत्रुरुवाच ॥ ॥ वरपाइअतृकहिविनय
वानि ॥ अषिलेसतुमहिअवतरहुआंनि ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ अंसावतारतवउद
रआइ ॥ सुतव्हैहुंदत्तात्रेयसुभाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दैवाचारिपहिदेवाधिदेव ॥ अन
दृष्टभयेमायाअभेव ॥ अनुसूयागर्भसुरत्नआइ ॥ प्रगटेदत्तात्रेयअवधिपाइ ॥ आजन्मउ
पजिवैराग्यअंग ॥ भयेजोगसिद्धवाचाअभंग ॥ मनहाथसिद्धमहमाअमेय ॥ योगेशभये
मायाअजेय ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहस्राअर्जुनराजतव। सेवाकरीअषंड ॥ पाईसिद्धिसमृ
द्धितिहि। योगभोगबलवंड ॥१॥ मुनिप्रसादप्रहलादनृप। साधभयेसबसिद्ध ॥ जिहिविद्या
आन्वीषिकी। पाईपरमप्रसिद्ध ॥ २ ॥ ॥कवित्त॥ ॥उर्वीवायुअयासआपहुतभुकशशि
दिनकर ॥ अजगरशलभकपोतसिंधुमधुकारिकमधुकर ॥ मृगझषगजापिंगलाकुररअर्भक
कौमारी ॥ सरकृतविषधरउर्णनाभअंगीभयकारी ॥ द्वादशसदूणजिहिंगुरुकरे, लेषितत्वस
बगुनलयौ ॥ संसारहेतनरहरसुकबि, दत्तात्रयअवतारभयौ ॥ इतिदत्तात्रेयअवतारचरित्रं
बारहटनरहरदासविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथ सप्तम ऋषभावतारचरित्र प्रारंभः ॥

——०❋०——

॥ छंदपधरी ॥ महिभयोनाभिराजासमृद्ध ॥ तिहिप्रियामेरुदेविप्रासिद्ध ॥ ताकुषिभयेपु
त्रअप्रमेव ॥ देवाधिदेवभएऋषभदेव ॥ कुंवरपनसाधनकर्योकाय ॥ परब्रह्मकृपातैंसिद्धिपा
य ॥जमरहेदेवअवधूतजीव ॥ देषहिसुअषिलप्रांणीदईव ॥ सबकालअहिंसाधर्मसाधि ॥ अ
नभोगरहेवरजितउपाधि ॥ उपद्रष्टावर्णाश्रमअहिंस ॥ हितअयनबतायोपरमहंस ॥ कवि
त्त ॥ ॥ अअनावृष्टिइककालभईसबहीमहिमंडल ॥हाहाभूतजगत्तभएजलठौरमहाथल॥
तबैरिषभआतमायोगमायाविस्तारीय ॥ मेघमालअजनाभनांमवर्षांकृतभारीय ॥ उतप



अअन्नअवनीअमित, सुष्यचराचरजीवसब॥अनिमिषनागरउच्चरीय, तीनिलोकजयकारत
ब॥ १॥ छंदपधरी ॥ ॥ मनचिंतिनाभिराजामहीस ॥ सुतऋषभदेवधरिछत्रसीस॥
जुवराजकस्योसुतउग्रजान ॥ निर्घोषबजेमंगलनिसांन॥ नृपनाभिसमयइहिजुवतिसंग॥
उद्यानवसेवैराग्यअंग ॥ भोऋषभदेवराज्याभिषेक ॥ आचारनीतिक्रमविधिअनेक॥ क
छुकालऋषभवर्जितबिकार ॥ चितलाइब्रह्मभयब्रह्मचार ॥ गुरुदेवपाइआज्ञासज्ञान॥ पु
निकस्योगृहस्थाश्रमप्रमांन ॥ विधियुक्तमंगलकीनेविवाहु॥ निजत्रियाजयंतीऋषभनाहु॥
सबभांतिप्रियाप्रियमिलिसुभाव॥ भवभोगाविलसिअनेकभाव ॥ पुनिप्रसवजयंतीअवधि
पाइ ॥ शतपुत्रभयेअपनेसुभाइ ॥ पाटैतभरततिनमहप्रचंड ॥ खितिभयोनांमतिहिभरत
षंड ॥ निजआठअनुजभएबलनिधान ॥ नवषंडनामतिनकेनिदांन॥ योगेंद्रभयेतबसा
धियोग ॥ भुविभ्रमतरहेतजिराजभोग ॥ अरुहुतेबयासीपुत्रओर ॥ थितब्रह्मकरमजुत
ठौरठौर ॥ इहिभांतिकरेवसुधाविभाग ॥ वृद्धाश्रमउपज्योनृपविराग ॥ भावीकभरतकहँरा
ज्यदीन॥कुलमोहछांडिउठिगवनकीन ॥ मिलिआतमपरमातमांझ॥ समकालभेदनहीभो
रसांझ ॥ जडमूकप्यासनहीषुधाजाहि ॥ तपसीतमेघव्याप्यैनताहि ॥ अनमोहिअजाची
अनायास ॥ समदृष्टिसदाशुभसावकास ॥सुषदुःखअव्यापितसहजसाध॥बलवंतकरहि
विषयादिबाध ॥ भ्रमतहीपुरीषनाहिसौचभेद॥ अतिमलिनअंगआतमअषेद॥ १ ॥छंद
भुजंगी ॥सुगंधंविगंधंनअस्तूतिगारी ॥ बिभेदंनसत्रुंनमित्रंविचारी॥ नमहिमानमायान
महंनमोहं॥ नरंगंविरंगंनदायानद्रोहं॥नसीतंनतापंनसंगंकुसंगं॥नभावंनभिष्यानअंगंअ
नंगं॥सुखंभूमिसज्यानडासंनवासं॥ ग्रहेबांहँआनैततौपंचग्रासं॥समंविषमंभूमिपंथंसह
ज्जं॥ वसन्नंदिगंवीतरागंविलज्जं॥विमोहंविदेहंनइंद्रीविकारं॥अघानैंरहैनित्तिवातंअहारं॥
विलेपंनश्रीषंडआगीविचारं॥ धरीपुष्पमालागलैविष्पधारं॥प्रकासीजुनिंदामहामोदपावै॥

हसैतालदेआपऔरैहसावै॥ अलेपंअछेपंरहैअप्रकासं॥निरापेक्षनिर्बंधनअंनिरासं॥ अना
जूतअवधूतमयाअतीतं॥ अमोहँअछोहँअद्रोहंअभीतं॥ अनामंअकामंअठामंअजेयं॥
अनाधारआकारमहिमाअमेयं॥ पशूवृत्तिलीनैभषैषानपानी॥ विचारंप्रचारंविहारंविमा
नी॥ कवित्त॥ ऋषभदेवअवतारभएअवधूतअसंगी॥ मोहमानमदमारिअंगतेंभएअ
नंगी॥वर्जितविषयविकारसीलसंतोससहजसम॥दयारूपनिजदेहदीनवत्सलआतमदम॥
परब्रह्मपरमपावनपुरुष, अविकारीआनंदमय॥ पूरणप्रसिद्धनरहरसुप्रभु, जयतिजयति
ऋषभेसजय॥ २॥ ॥ इति श्रीऋषभदेवअवतारचरित्रं संपूर्णम् ॥ ॥ ७॥

॥ अथ अष्टम ध्रुववरद अवतारचरित्र प्रारंभः॥



॥ दोहा॥ ॥ आगमनिगमनितैंअगम। अषिलउदारअपार॥ सुनहुकहतनरहरसुक
वि। ध्रुववरदअवतार॥१॥ स्वायंभूमनुब्रह्मसुत,भएप्रतिष्टप्रजाप॥ तासुतनृपउत्तांनपद।
राषीपुहमीप्रताप॥२॥ रांनीप्रथमाविवाहिता। भईसुनीतिइहिनांम॥तासगर्भसंभूतध्रुव।
भयौभक्तिविश्राम॥ ३॥ परमसुभागानिलघुत्रिया। रांनीसुरुचिसरूप॥ तासुलडंतौपुत्र
भौ। उत्तमकुँवरअनूप॥ ४॥ ॥ कवित्त॥ ॥ एकसमयउत्तानपादसिंघासनबैठे॥ मुहँ
आगैदोऊकुमारषेलतलघुजेठे॥ रांनीसुरुचिसमीपराजअतिप्रांनपियारी॥ लीयौउठाइ
उत्तमकुमारनृपभरिअँकवारी॥ध्रुवनिकटआइजवआपतै,पितागोदबैठतभयौ॥ करिकुटि
लदृष्टदुर्बचनकहि, तवहिसुरुचिनिवारियौ॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ पितगोददेषिउत्तमकुमा
र॥ तहांकस्योध्रुवबैठनविचार॥ जबनिकटसिंघासनगयोबाल॥ जननीसपत्निउरउठीझा
ल॥ ॥ सुरुचिरुवाच॥ ॥ करिभृकुटिबंकबोलीकरूर॥ दुर्भगासुवनध्रुवरहहुदूर॥ उप
ज्योदुर्भागिनिउदरदीन॥ कृतछत्रयोगकोउतैनकीन॥ जोहोतोध्रुवममउदरजात॥ बनि
बैठतसिंघासनविष्यात॥ जिहिकूषिभयोतुवजन्मजांनि॥ षितिपरभवभाजनदुषषांनि॥

जद्यपिकुलउत्तमछत्रजाति ॥ राजपदयोगनहींजन्मराति ॥ १ ॥ कविरुवाच ॥ इहसुन तध्रुवपरजरयोअंग ॥ भौंकुद्धमनहुचांप्योभुजंग ॥ निस्वासवदनजलधारनैन ॥ उपज्यौ क्रोधानलउरअचैन ॥ इहिदसाअवतदृगअश्रुधार ॥ जननीपहँआयोध्रुवकुमार ॥ देष्यो सुनीतिध्रुवमुषमलीन ॥ ग्रहीभुजाप्रेमजुतगोदलीन ॥ ॥ सुनीतिरुवाच ॥ ॥ मतकर हुरुदनदुषहोतमोहि ॥ सिरपरहुवज्रजुनसहततोहि ॥ किंहुँदुष्टकह्योदुर्वचनकोइ ॥ सोकह हुपुत्रराषोनगोइ ॥ जेकहेसुरुचिदुर्बादजाल ॥ सबिशेषसुनाएहृदयसाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातातबैसुनीतिध्रुव । सुतकहंकरतप्रबोध ॥ सुषदुषअपनेकर्मफल । कहानिरर्थकक्रोध ॥ ॥ १ ॥ पुत्रनमैंतैंसोभज्यो । दीनानाथदयाल ॥ तातैंएपरभवअसह । सहियतअंतरसाल ॥ ॥ २ ॥ विनुबदलैउपकारिहरि । करतदीनसौंदेव ॥ करिहैंदुषनिर्मूलसोइ । सुषनिधानप्रभु सेव ॥ ३ ॥ करिधीरजमनवचनक्रम । निजसरूपधरिध्यान ॥ आपतकालअधीरव्है । कर तरुदनअग्यान ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सुरअसुरादिकसिद्धयक्षगंधर्वमहामुनि ॥ जप तपसंजमनियमकरतमषदानग्यानगुनि ॥ अपनैंकरग्रहिशस्त्रसीसकाटतसंकरहित ॥ भे रवादिघटभंगकरसैंअवरौंअंगीकृत ॥ जिहिंक्रियासकलभवभूतजग, जाचतदृष्टिप्रसादजी य ॥ सोभजहुपुत्रजाकेसरन, संततचरननिवासश्रीय ॥ २ ॥ दोहा ॥ जातैंपरमनिधानप द । पावतहैंसंसार ॥ सोईप्रभुकारनकरन । अनंतभजहुअविकार ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उत्तानपादभुवपतिनरेस ॥ इहिंभजनभयोआषंडलेस ॥ मनुस्वायंभूपितुपितमहीप ॥ पृथ्वीप्रभुत्वपायोप्रदीप ॥ प्रपितामहतेरोविधिविनीत ॥ पदलह्योप्रजापतिअतिपुनीत ॥ तुवजन्मभयोतिहिउच्चवंस ॥ पदलहहुउच्चप्रथवीप्रसंस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ध्रुवसुन्यो तबाहिजननीप्रबोध ॥ करिनिश्चयनिकस्योविगतक्रोध ॥ ध्रुवचल्योबनहितपहिताविशेष ॥ मगमांझमिल्योनारदमुनेस ॥ परिक्रमणध्रुवकीनैंप्रणाम ॥ मुनिपूछेकहौनिजवंशनाम ॥ नारदउवाच ॥ सेवकसहाइविनुतातमात ॥ क्यौंबालअकेलोबनहिंजात ॥ ॥ ध्रुववा क्यं ॥ ॥ हूंजातबनहितपकाजदेव ॥ भूपसुतकहेदुषरोषभेव ॥ सबकहेमातलघुबचनसू ल ॥ जेलगेहृदयविषबांनतूल ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ पंचवर्षवयपेषिध्रुवसौं कह्योब्रह्मसुत ॥ अलपदेहवयअलपआतिहिअमरषक्रतउपजत ॥ समयनआतमदमनदे हपोषतकेएदिन ॥ लाडजननिपितलहनबाललीलासुषसेवन ॥ वृद्धहुंमुनिनितपसाविषम अतिदुरंतातिहिअनुसरन ॥ वयबुद्धिसुबलगुरगम्यविनु,किहिविधितिहिचाहतकरन ॥ ३ ॥ ॥ यहदइवीगतिअगमदेवऋषिमुनिनहुंदुस्तर ॥ अतिसूछमअप्रमेयवचनमनकर्मअगो चर ॥ ब्रह्मरुद्रसनकादिसकलषोजतनहिपावत ॥ इंद्रियनिग्रहकरततदपिनिर्धारनआवत ॥ जिहिनेतिनेतिभाषतनिगम, अबलौंकोऊनअनुसरयो ॥ तागतिहिलहहिकिंहिंभांतितू, द्व थाबालहटहीपरयो ॥ ४ ॥ पंचअनलजलपंचसीतपंचनितपसाधत ॥ ग्रीषमवर्षासिसिरएक आसनआराधत ॥ कोउअधोमुखउर्द्धपाइलंबितधूमासन ॥ छुतपिपासभएरहितरहतके वलपवनासन ॥ इहिदसाकलपवीततअनंत, तउनदरसतजोतितिंहि ॥ अतिदुराराध्यत पसाअगम, तिहिसाधैगौजतनकिंहि ॥ ५ ॥ दोहा ॥ ॥ जोगजुगतिअतिकठिनहै ।

तपसाधनदुष्पार ॥ तातैंफिरिघरजाहुध्रुव । नारदकह्योविचार ॥ १ ॥ वालअवस्थापोषि
तन । बलविक्रमजबहोइ ॥ समयपाइउद्यमकरत । तबफलपावतकोइ ॥ ११ ॥ सुपदुषक
र्माधीनसब । रेबालकअग्यान ॥ सोबितुभुगतइनाटरै । यहैंजुनिगमनिदान ॥ १२ ॥
॥ ध्रुवउवाच ॥ मैंगृहछांड्योनेमकरि । क्यौंफिरिजाउंग्रेह ॥ बचनतुमारौसीसपर । मन
उपज्योसंदेह ॥ १३ ॥ प्राणीतनपोषनकरत । आसाबढतविसाल ॥ आंनिअचानकबीच
हि ॥ झपटिजातलैकाल ॥ १४ ॥ छत्रियगृहअवतारमम । स्वायंभूमनुवंश ॥ करिप्रातिज्ञा
क्यौंनजौं ॥ सुनिमुनिजगतप्रसंस ॥ १५ ॥ तुमजानतछत्रियधरम । महाकठिनव्यवहार ॥
वचनभंगतैंदेवऋषि ॥ हैउपहास्यसंसार ॥ १६ ॥ मेरेकर्मउद्योततें । पायोदरसनआज ॥
तुमविअंगजितविस्वहित । विगतमोहऋषिराज ॥ १७ ॥ निंदितकर्म्मजुआचरै । तिहिंवर
जैसंसार ॥ मुनिवरजतशुभकृतकरत । यहननीतिव्यवहार ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ जब
देष्यौबालकसदृढ । उरअषंडविश्वास ॥ नारदपरमप्रसन्नव्है । साधुसाधुकैतास ॥ १९ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुप्रसन्नभएनारदऋषीस ॥ दृढहोहुभक्तिदीनीअसीस ॥
श्रीवासुदेवमंत्रोपदेश ॥ ऋषिकह्योध्रुवहिकरुणाविवेश ॥ नारदउवाच ॥ ॥ हैमधुव
नपावनजमुनकूल ॥ तहांवसतकृष्णआनंदमूल ॥ ध्रुवकरहुध्यानतुमउहांजाइ ॥ निजरू
पस्यामदीनौंबताइ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उंनमोभगवतेवासुदेवायविशं
भर ॥ द्वादशअक्षरमंत्रकह्योउपदेशमुक्तिकर ॥ नारदअंतर्ध्यानभयेध्रुवआएमधुवन॥तर
णिसुताकेतीरदेषिवैठेतपसाधन ॥ तरुलतापुंजगुंजतमधुप, नाचतमत्तमयूरजहँ ॥ धरिनि
जसरूपउरध्यांनजुत, कीनौंजोगारंभतहँ ॥६॥ प्रथमबैठिएकाग्रचित्तव्रतमासफलासन ॥
पुनिठाढेरहिउभयपाइपल्लवकृतभछन ॥ तृतियमासजलपानरहेइकपाइनिरंतर ॥ चोथेप
वनअहारचरनपल्लवटेकेधर ॥ पंचमैंमासिसोउतजिपवन, पदअंगुष्ठआधारयो ॥ धसि
गईधरनिइहिंओरजब । दुतियओरउत्तरभयो ॥ ७ ॥ सहिनभारवसुमतियहोतअधउर्द्धम
नहुंतुल ॥ तिहिनिहारिलोकेशभएभयसंकुलव्याकुल ॥ सुरसमाजसुरराजगएहरिसरनत
तछन ॥ भूमिचालभवभूतहालसबकह्योनिवेदन ॥ ब्रह्मांडडोलडिगमगतगिर,पवनरुद्धवि
थक्योगवन ॥ अदभुतचरितउलटतअवनि, कहिनजातकारनकवन ॥ ८ ॥ ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देषिदसायहसुरनकी । हसिबोलेविश्वेश ॥ मैंपायोभयहेतसब।
भयनकरहुलोकेश ॥ २० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकराजपुत्रतपकरतबाल ॥ सहिनहिन
सकतभौभूमिचाल ॥ विधिवतविधांनतिहिंसकलकीन ॥ मनवाचकर्मभयोमोहिलीन ॥
तजिभीतभावथिरकरहुचेत ॥ हैनांहिअवरकोउभीतिहेत ॥ सबकरिहूंताकेअर्थसिद्ध ॥ त
पसाफलदेहूंजगप्रसिद्ध ॥ निजलोकजाहुतुमलोकनाथ ॥ सबलोककरहुरक्षासनाथ ॥
करिदरसनवंदनव्हैसकाज ॥ स्वस्थानसिधारेसुरसमाज ॥ कविरुवाच ॥ श्रीनाराय
णकरुणानिवास ॥ परब्रह्मपधारेध्रुवजुपास ॥ कमलायतलोचनकमलपानि ॥ जगदीसक
रीसुधिदासजानि ॥ ध्रुवदेहदमितदेष्योसधीर ॥ परब्रह्मसहतनहींदासपीर ॥ मनलभ्रम
भ्रभयोकृष्णमांझ ॥ शिशुसमझिपरतनहीभोरसांझ ॥ यहदसाभयोबालकबिदेह ॥ मन

भावसहितहरिसौंसनेह ॥ ह्वैदीपकआभाएकदीस ॥ इहिभांतिमिल्योमनदासईस ॥ गरु
डध्वजठाडेअग्रआनि ॥ ध्रुवध्यानमग्ननहीपरतजानि ॥ ध्रुवमुषहरिफेर्योशंखशुद्ध ॥ ग
तजोगसुनिद्राभौप्रबुद्ध ॥ प्रभुपरेदष्टतबभुजाचारि ॥ वनमालमुकटजुतहरिमुरारि ॥ वपु
स्यामपीतअंबरविसाल ॥ मकराकृतकुंडलतुलसीमाल ॥ आनंदमग्नध्रुवदरसपाइ ॥ बि
धियुक्तकरीकरुनाबनाइ ॥ ॥ ध्रुवस्तुति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ उँकारअपारअखिलआधा
रअनामय ॥ आदिमध्यअवसानअसमसमआतमअव्यय ॥ एकअनेकअनंतअजित
अवधूतअनोपम ॥ अनिलअनलआकासअंबुअवनीमयआतम ॥ उतपत्तिनासकारन
अतुल,ईसअधोगतउद्धरन ॥ अधमध्यउर्द्धव्यापितअमित,तुमअनंतअसरनसरन ॥ पर
मधामपरज्योतिपरमआनंदपरमेशर ॥ परहितपरकृतपरमपूज्यपरब्रह्मजोगपर ॥ परआ
तमपरतत्वपरमपदप्रीतिपरोदय ॥ परमारथपरश्रेयपरमरिधिप्रकृतिपराशय ॥ परनिधि
सिद्धिपरब्रह्मपन, परमपुरुषपरधामपति ॥ परध्यानग्यानपरहेतप्रिय, परमपतितहूंपरमग
ति॥१०॥ निराकारनिर्लेपनिगमहितनिकटनिरंतर ॥ निर्विकारनिरधारनित्यनवधावसनर
हर ॥ निरालंबनिर्गुननिरीहनिरवद्यनिरंजन ॥ निर्बिग्रहनिहचलनिधांननिहकलनाराय
ण ॥ निर्बोधनिराकृतिनाथनिज,निगमहेतनिर्नासनित॥निग्रहननागनगउद्धरन,नमस्का
रनवरूपनित ॥ ११ ॥ जयतिजयतिजगदीशजगतकारनजोगेश्वर ॥ जगजितजगहित
जगन्नाथजगजोतिजगतगुरु ॥ जगनिवासजगस्त्रजनजगतपोसनजगनासन ॥ जगतत
रनजगसरनजगतमंडनजोगासन ॥ जगबंधुजगतपितजगतनिधि, जयोजगतकारनकर
न ॥ जगपावनजगतानिधानजस, सदासुकविनरहरिसरन ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
॥ दोहा ॥ श्रीभगवंतप्रसन्नव्हे । बोलेदीनदयाल ॥ जिहिइछातपसाधियो । सोफलमां
गहुबाल ॥ २१ ॥ ॥ ध्रुवउवाच ॥ ॥ व्हैसनाथध्रुवसबकह्यो । कटेअकर्मकलेश ॥ मन
इच्छापूरनभई । दीनबंधुदेवेश ॥ २२ ॥ सुरसिद्धनिदुर्लभदरस । सोमैंदेष्योंआज॥सबैमनो
रथसिद्धिमम । भएसुमंगलकाज ॥ २३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ फेरिकह्योकरुणाउदधि ।
दीनबंधुजगदीस ॥ लीजेवांछितराजसुष । आषंडलअवनीस ॥ २४ ॥ ॥ ध्रुवउवाच ॥
॥ राजश्रीकेबंधतें । छोडतहैंहरिनाम ॥ सोहरिदरसनपावहूं । बंधनपरेनस्याम ॥ २५ ॥
राजश्रीयाविलासमैं । सुद्धरहेनहींचेत ॥ देवदेवपतिराजहै । सबअनर्थकौहेत ॥ २६ ॥ ॥
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सबदिनराहिहैशुद्धमति । मनगतिमिलिहैमोहि ॥ राजकरतहूरा
जके । बंधनपरेनतोहि ॥ २७ ॥ दिव्यवर्षनवचोकतुम । सहसकरहुगेराज ॥ पाछैलहि
होउर्द्धगति । सबसरिहैमनकाज ॥ २८ ॥ होतदसाजोमुनिनकौं । तपबलभएविदेह ॥
व्हैहैदसासुराजमैं । तवध्रुवनिःसंदेह ॥ २९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ध्रुवकेसबसाधनफ
ले । दयोदरसभगवान ॥ मनबंछितबरदानदै । हरिभएअंतरध्यान ॥ ३० ॥ ध्रुवचलेज
वग्रेहकौ । बीचपंथमहँजात ॥ आंनिमिलीतहांराजश्री । मनबंछितसबबात ॥ ३१ ॥ रा
जथानउत्तमकुंवर । गोआषेटकहेत ॥ तहाँयक्षनिसौंजुद्धभौ । आपपर्योरनषेत ॥ ३२ ॥
रानीसुरुचिकुंमारदुष । कीनौंअगनिप्रवेश ॥ तवराजाउत्तानपद । भयोविरागविशेष ॥

॥ ३३ ॥ ध्रुवआएयेहीसमय । राजामिल्योप्रहास ॥ तिलकछत्रपुत्रहिंदयो । आपगयो वनवास ॥ ३४ ॥ वर्षअठारेसहसदुव ॥ ध्रुवकीनौंभूराज ॥ भुक्तेकोटिकइंद्रसम । सबसु षसाजसमाज ॥ ३५ ॥ अवधिपाइनिर्वाणपद । पायोप्रगटनरेस ॥ सबलोकनकेसीसपर पृथ्वीपुण्यप्रदेस ॥ ३६ ॥ सोध्रुवदेषहुविश्वसब । बहुकल्पांतरवित्त ॥ करजोरेदरसनकर त । नमस्कारकरिनित्य ॥ ३७ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सहसवर्षछत्तीसराजनिहकंटककरयो । जाकैनीतिप्रभावधर्मचहुपदअनुसरयो ॥ राजयोगसद्धयोकहूंअनुरागनकीनौ ॥ ज्योंजल जलजसंयोगचरनपंकजाचितदीनो ॥ सुरगनसहायनरहरसुकवि, जयजयजयजगदीस जय ॥ ध्रुववरदनामजगउद्धरन, इहिकारनअवतारभय ॥ १३ ॥ इतिश्रीध्रुववरदनांम अवतारचरित्रं बारहटनरहरिदासविरचितं संपूर्णम् ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम पृथुअवतारचरित्र प्रारंभः ॥



कविरुवाच ॥ दोहा ॥ अथप्रारंभअनंतप्रभु । कहिहूंपृथुअवतार ॥ दीनदयालषयार षल । सुषदायकसंसार ॥ १ ॥ स्वायंभूमनुवंसमहँ । भयोअंगअवनीस ॥ जाकेतेजप्रभा वजग । सासनमानतसीस ॥ २ ॥ पटरानीनृपअंगके । भईसुनीथानांम ॥ पतिव्रतालाव न्यजुत । सकलगुननिकोधाम ॥ ३ ॥ ताकेउदरहिंऊपज्यो । अघमयवेणकुमार ॥ सातौंसे वतदुर्व्यसन । नीतिरहितसविकार ॥ ४ ॥ एकसमयतिहिबापसौं । मिथ्याभाषणकीन ॥ जानिअधर्म्मीपुत्रकों । नृपमनभयोमलीन ॥५॥ छत्रियकुलअवतारलै । मिथ्यावादीसोय॥ वेदपुराननिमहुकह्यो । नरकविलासीहोय ॥ ६ ॥ ॥ राजोवाच ॥ पुत्रहिदेष्योदुष्टमति राजाकह्योरिसाइ ॥ जापापीयादेसतैं । मोहिनवदनादिषाइ ॥ ७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ वे णुनिकास्योदेसतैं । कयोअनादरराज ॥ मुहलैनिकस्योतिहिंसमय । सबैतजेसुषसाज ॥८॥ गयोवेणकहुंवनगहन । तहांतपसाधनकीन॥प्यासछुधानिद्रारहित । भयोध्यानलौ

लीन ॥ ९ ॥ राजाअंगहिकालबहु । राजकरतगयेवीत ॥ उपज्यौमनवैरागतब । छुटीराज
सौंप्रीत ॥ १० ॥ एकसमयगतअर्द्धनिसि । निकस्यौराजाअंग ॥ किंहूंनजान्यौंकितगयो ।
सबैग्रेहतजिसंग ॥ ११ ॥ सेवकमंत्रीसुभटजन । खोजतरहेदिगंत ॥ कहूंनपायेसोधनृप ।
भएमलीनमनसंत ॥ १२ ॥भईअराजकभूमितहँ । भयत्रासितभवभूत ॥ ग्रसेसोकसौंवस
नग्रह । सबैविगतसुखसूत ॥ लोकदशाअवलोकिकैं । रानीपरमकृपाल ॥ भृगुहिआदि
दैअवरऋषि । बोलिलएतत्काल ॥ १४ ॥ कीनीपूजाजोरिकर । वंदनवारंवार ॥ देसअ
राजकलोकदुष । कहेसबैव्यवहार ॥ १५ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ सचिवबंधुसामंतशु
भ । उत्तमअंत्यजलोग ॥ ऋषिनकह्योएपूछिसब । पुनिचिंतबहुप्रयोग ॥ १६ ॥ इनि
सबहिनकेलेहुमत । करहुमंत्रनिर्धार ॥ पाछैंषोजहुवेणुकौं । चहुंदिसिपठवहुचार ॥ १७॥
सबकेसंमतसौंमिल्यौ । कीजेकाजविशेष ॥ रानीसोपैंहोतदढ । यहैनीतिउपदेस ॥ १८ ॥
पितानिकास्योदुष्टगति । यहजानतसबकोइ ॥ पापीराजाकेंभए । महाअनिष्टैंहोइ ॥ १९ ॥
अंगवंसमहअवरकोउ ॥ छत्रीरह्योनआहि ॥ सहजसुभावजुवेणके । तुमहूजानतताहि
॥ २० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अर्थीदोषनदेषही । अनहितगनैंनकोइ ॥ भोआतुरयौं
हीकहै । जोभवतव्यसुहोइ ॥ २१ ॥ दुषीजुहाहाभूतसब । लोकनिकरीपुकार ॥ कोऊसा
धुअसाधुहू । कीजेनृपनिर्धार ॥ २२ ॥ सबमिलिकीनौंमंत्रयह । रिषिसोजोरेहाथ ॥ लेआ
वहुनृपवेणकहुं । कीजेभूमिसनाथ ॥ २३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जिहिवनसाधतवेणुतप ।
भृगुतहांगएऋषीस ॥ उनवंदनकीनैविविधि । इनसुभदईअसीस ॥ वेणहिकारिउपदेश
रिषि । लेआएगहिबाँह ॥ मात्तसुनीथासौंमिल्यौ । ग्रहग्रहभएउछाह ॥ २५ ॥ वेदमंत्र-
जुतवेणकहँ । भृगुकीनौंअभिषेक ॥ पर्योगतनृपताप्रगट । अवनिछत्रतप्योएक ॥ २६ ॥
छंदपधरी ॥ पायोसुपीठपत्तनप्रदेस ॥ इकछत्रतपैअवनीनरेस ॥ सेन्यासमर्थचतुरंगसा
जि ॥ वरवीरसुभटरथसगजवाजि ॥ अनुसरतउग्रसासनअषंड ॥ दीजियतनहींअपराध
दंड ॥ लुंटाकचोरलंपटकुलोक ॥ जहांतहांविलीनसत्रवशशोक ॥ विषवदनगंधमूषकवि
लात ॥ इहिभांतिगएषयषलअरात ॥ ऋद्धिपाइनिःकंटककरतराज्य ॥ संगदुष्टभृत्यसेव
कसमाज ॥ मदअंधभयोअंकुसअमांन ॥ ईशत्वमानिआपहिअग्यांन ॥ दोहा ॥ सुरा
पानपलभोजनहु । वेश्यादूतविलास ॥ आषेटकदुर्वृत्तक्रम । परत्रीयसेवप्रकास ॥ १ ॥ छं
दपधरी ॥ ॥ सठकरतसातदुर्विसनसेव ॥ द्विजमांनतनांहिनगुरुनदेव ॥ अतिउग्रतेज
तैंअहंकार ॥ विपरीतगर्वबाढ्योविकार ॥ छलवचनउचारतमर्मछेद ॥ भवनांहिसाधअन
साधभेद ॥ चितवसतझूठहठअनाचार ॥ अविवेकअसंगतमुषउचार ॥ निकसैपुरबाहि
रजबनरेस ॥ सुनिशब्दहोतहाहंतदेस ॥ निर्घोषपटहकृतधर्मनास ॥ सिरजतउपाधिनितन
वसहास ॥ मषहोममिटैपूजामहंत ॥ सुरविप्रसुरभिसनमानसंत ॥ वलिअनलनेमतपभ
एवाध ॥ सबभूमिकर्मप्रगटेअसाध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेकृतनिंदितनृपतिकहँ । तेसबसे
वतराज ॥ तातैंहाहाभूतजन, बाढतशोकसमाज ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नितनेमअ
ग्निहोत्रीद्विजात ॥ विपरीतिकर्मातिनसुनीबात ॥ द्विजगएतबैमिलिभृगुनिकेत ॥ अवनीस

लीन ॥ ९ ॥ राजाअंगहिकालबहु । राजकरतगयेबीत ॥ उपज्यौमनवैरागतब । छुटीराज
सौंप्रीत ॥ १० ॥ एकसमयगतअर्द्धनिसि । निकस्यौराजाअंग ॥ किंहूंनजान्यौंकितगयो ।
सबैंग्रेहतजिसंग ॥ ११ ॥ सेवकमंत्रीसुभटजन । खोजतरहेदिगंत ॥ कहूंनपायेसोधनृप ।
भएमलीनमनसंत ॥ १२ ॥भईअराजकभूमितहँ । भयत्रासितभवभूत ॥ ग्रसेसोकसौंवस
नग्रह । सबैविगतसुखसूत ॥ लोकदशाअवलोकिकैं । रानीपरमकृपाल ॥ भृगुहिआदि
दैअवरऋषि । बोलिलएतत्काल ॥ १४ ॥ कीनीपूजाजोरिकर । वंदनवारंवार ॥ देसअ
राजकलोकदुष । कहेसबैव्यवहार ॥ १५ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ सचिवबंधुसामंतशु
भ । उत्तमअंत्यजलोग ॥ ऋषिनकह्योएपूछिसब । पुनिचिंतबहुप्रयोग ॥ १६ ॥ इनि
सबहिनकेलेहुमत । करहुमंत्रानिर्धार ॥ पाछेंषोजहुवेणुकौं । चहुंदिसिपठवहुचार ॥ १७॥
सबकेसंमतसौंमिल्यौ । कीजेकाजविशेष ॥ रानीसोपैंहोतदढ । यहैनीतिउपदेस ॥ १८ ॥
पितानिकास्योदुष्टगति । यहजानतसबकोइ ॥ पापीराजाकैंभए । महाअनिष्टैंहोइ ॥ १९ ॥
अंगवंसमहअवरकोउ ॥ छत्रीरह्योनआहि ॥ सहजसुभावजुवेणके । तुमहूजानतताहि
॥ २० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अर्थीदोषनदेषही । अनहितगनैंनकोइ ॥ भौआतुरयौं
हीकहे । जोभवतव्यसुहोइ ॥ २१ ॥ दुषीजुहाहाभूतसब । लोकनिकरीपुकार ॥ कोऊसा
धुअसाधुहू । कीजेनृपनिर्धार ॥ २२ ॥ सबमिलिकीनौंमंत्रयह । रिषिसोजोरेहाथ ॥ लेआ
वहुनृपवेणकहुं । कीजेभूमिसनाथ ॥ २३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जिहिवनसाधतवेणुतप ।
भृगुतहांगएऋषीस ॥ उनवंदनकीनैविविधि । इनसुभदईअसीस ॥ वेणहिकरिउपदेश
रिषि । लेआएगहिबाँह ॥ मात्तसुनीथासौंमिल्यौ । ग्रहग्रहभएउछाह ॥ २५ ॥ वेदमंत्र
जुतवेणकहँ । भृगुकीनौंअभिषेक ॥ पर्यागतनृपताप्रगट । अवनिछत्रतप्योएक ॥ २६ ॥
छंदपधरी ॥ पायोसुपीठपत्तनप्रदेस ॥ इकछत्रतपैअवनीनरेस ॥ सैन्यासमर्थचतुरंगसा
जि ॥ वरवीरसुभटरथसगजवाजि ॥ अनुसरतउग्रसासनअषंड ॥ दीजियतनहींअपराध
दंड ॥ लुंटाकचोरलंपटकुलोक ॥ जहांतहांविलीनसत्रवशशोक ॥ विषवदनगंधमूषकवि
लात ॥ इहिभांतिगएषयषलअरात ॥ ऋद्धिपाइनिःकंटककरतराज्य ॥ संगदुष्टभृत्यसेव
कसमाज ॥ मदअंधभयोअंकुसअमांन ॥ ईशत्वमानिआपहिअग्यांन ॥ दोहा ॥ सुरा
पानपलभोजनहु । वेश्यादूतविलास ॥ आषेटकदुर्दृत्तक्रम । परत्रीयसेवप्रकास ॥ १ ॥ छं
दपधरी ॥ ॥ सठकरतसातदुर्विसनसेव ॥ द्विजमांनतनांहिनगुरुनदेव ॥ अतिउग्रतेज
तैंअहंकार ॥ विपरीतगर्वबाढ्योविकार ॥ छलवचनउचारतमर्मछेद ॥ भवनांहिसाधअन
साधभेद ॥ चितवसतझूठहठअनाचार ॥ अविवेकअसंगतमुषउचार ॥ निकसैपुरबाहि
रजबनरेस ॥ सुनिशब्दहोतहाहंतदेस ॥ निर्घोषपटहकृतधर्मनास ॥ सिरजतउपाधिनितन
वसहास ॥ मषहोममिटैपूजामहंत ॥ सुरविप्रसुरभिसनमानसंत ॥ बलिअनलनेमतपभ
एवाध ॥ सबभूमिकर्मप्रगटेअसाध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेकृतनिंदितनृपतिकहँ । तेसवसे
वतराज ॥ तातैंहाहाभूतजन, बाढतशोकसमाज ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नितनेमअ
ग्निहोत्रीद्विजात ॥ विपरीतिकर्मतिनसुनीबात ॥ द्विजगएतबैमिलिभृगुनिकेत ॥ अवनीस

विष्णुद्रोहीभ्रष्टमति । सुरनिंदकसविकार ॥ ताकेमारेदोषनहि । यहजूवेदबिचार ॥ ५१ ॥ ब्रह्मविरोधकपापनृप । आपभयोभगवंत ॥ शापदयोभृगुयौंकह्यो । इहिछिनियाकोअंत ॥ ५२ ॥ सिंहासनतैंनृपगिरयो । प्रानगएतजिदेह ॥ करेसुपावैकर्मफल । निश्चयनिःसंदेह ॥ ५३ ॥ भृगुमुनिनिकसेशापदे । वेणमरयोसविकार ॥ तैंहीछिनरनवासमहँ । व्हैरह्योहाहाकार ॥ ५४ ॥ मातसुनीथावेणुकी । करिकरिकहेविलाप ॥ प्राणीपावतकर्मफल । होतनमिथ्याशाप ॥ ५५ ॥ मृतककलेवरलेधरयो । तैलद्रोणिकामांहि ॥ राणीविद्याजोगतैं । कृमिगतविगरयोनांहिं ॥ ५६ ॥ ॥ छंदपधरि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नृपमरयो अराजकभयोदेश ॥ अवनीअनर्थप्रगटेअसेस ॥ परत्रियाशक्तवित्तापहार ॥ जनहतकपाशधारकजूवार ॥ विश्वासघातवेश्याविहार ॥ परनिंदकतस्करपापचार ॥ निसिभित्तिभेददिनपरतधार ॥ गोहरणकरतपुरदेतजार ॥ वाणिज्यकृषीपशुपाललोक ॥ सुनिदेषिचरितभयेभयससोक ॥ सबभएदीनसीदंतसाध ॥ आचारभ्रष्टउमगेअसाध ॥ कृषिरहितभूमिबाढिवनविसाल ॥ निर्झरनिकरेबहुनालपाल ॥ अतिवृष्टिहोतजहाँतहाँअशेष ॥ बनभईनईसरिताविशेष ॥ हाहापुकारसंसारहोइ ॥ करतारबिनारक्षकनकोइ ॥ कछुकालदसाइहिभाँवितीत ॥ भयत्रसितवर्णचारयौंसभीत ॥ इकसमयलोकसबजुरेआनि ॥ मिलिमंत्रकरयोमनत्रासमानि ॥ भृगुसरणचलहुकरिदासभाउ ॥ सुनिदुषितसाधकरिहैंसहाउ ॥ सरस्वतीतीरषितिपुण्यषेत ॥ भृगुकरतयज्ञतहांमुनिसमेत ॥ जनभएदीनऋषिअग्रजाइ ॥ वंदनप्रनामकीनैंबनाइ ॥ डारतउसाससरोवतदुषार ॥ करित्राहित्राहिकीनीपुकार ॥ ॥ लोकाऊचुः ॥ भयशोकउदधिबूडतबिहाल ॥ दुषभयोसरनआएदयाल ॥ दोहा ॥ ॥ भईदशाजोदेशकी । विनाराजऋषिराज ॥ प्राणविनाज्यौंदेहपै । कोऊसरतनकाज ॥ ५७ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ रह्योनराजाअंगकी । संततिछात्रिकोइ ॥ अवरवरनकहँराजकौं । हमपैंतिलकनहोय ॥ ५८ ॥ वेणुपतनभोकर्मवस । करियेकवनउपाइ ॥ पुत्रनराजाकेभयो । दयोसरिरजराइ ॥ ५९ ॥ ॥ लोकवाक्यं ॥ ॥ लैराष्योहैतेलमहँ । दह्योनअग्निसरीर ॥ परमसाधुपदधारियैं । हरियैंजनकीपीर ॥ ६० ॥ लोकविलोक्योदुषितजब । मुनिबरभएदयाल ॥ कष्टनिवारनविश्वको । आएतैंहीकाल ॥ ॥ रानीवाच ॥ ॥ भृगुपदधारेराजगृह । रानीकरेप्रनाम ॥ मुनिवरतुमहीतैरहैं । यहबूडतधनधाम ॥ ६२ ॥ शापअनुग्रहजोग्यतुम । यहदैवतअधिकार ॥ दंडदयाकरिकरतहै । यहैवेदव्यवहार ॥ ६३ ॥ भृगुसुनिरानीकेवचन । समझिलोककीत्रास ॥ जहांकलेवरवेणुकौ । आएतहांसहास ॥ ६४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ भुवसोधिजथाबिधिवेदजानि ॥ आसनदर्भादिकरचेआनि ॥ वपुमृतकधरयोतापरविशेष ॥ उच्चारमंत्रकीनेअसेष ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जंघामथतसुवेणुकी । उपज्योबाहुकराज ॥ तिहितैंवंशनिषादभौ । करतजथाकुलकाज ॥ करेजुवेणअकर्मकृत । अघमयतिनकोअंश ॥ पहिलैहीवाहुकपुरुष । प्रगट्योपापप्रसंस ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ऋषिमथतप्रथमजंघानरेस ॥ प्रगट्योनिषादप्रतिभूप्रदेस ॥ लघुअंगथूलमस्तकललाट ॥ कचकपिलअंगकारेकुघाट ॥ वैगंधदेहचषअरुणवांन ॥ वांणीकरालकर्क

शाविधान ॥ परहिंसकपरवित्तापहार ॥ परद्रोहप्राणघातकप्रकार ॥ विपरीतकर्मगतिध
र्म्मबाध ॥ इहिंरूपउपजिअंत्यजअसाध ॥ कंदरागूढपर्वतप्रकास ॥ ऋषिदयेतिनहिवन
गहनबास ॥ प्रथमहिंअकर्मकृतजेप्रमाद ॥ नृपपापअंशउपजेनिषाद ॥ पितिचंडालजे
अधमष्याति ॥ जगभएउनहीतेंनीचजाति ॥ अघनिकसिवेणभौशुद्धअंग ॥ अन्हवाइदे
हसोउदकगंग ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दछनभुजमंथानकस्योजववेणकलेवर ॥ अतिउदारअं
सावतारपृथुभएपुरुषपर ॥ वामबाहुकेमथतअर्चिप्रगटीत्रीयअद्भुत ॥ पतिव्रतालक्ष्मीप्र
तछिलछिनगुनसंयुत ॥ अँगअँगचिन्हदेषेअसम, कीयविचारनिश्चेकस्यो ॥ भवभूतस
कलमानहुअभय, अषिलईसप्रभुअवतस्यो ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रभुचरनपद्मरपाप्र
कास ॥ करशंखचक्रअरुगदातास ॥ प्रतिपाललोकएऋपिप्रसंस ॥ विश्वेस्वरप्रगटेअंगवं
स ॥ निश्चयजुतदर्शनकरहुनेम ॥ परब्रह्मभजहुएसहितप्रेम ॥ भईदेहवृद्धिपूरनप्रमान ॥
महिमायहदइवीहैअमांन ॥ पृथुअर्चिअंगपूरनप्रतछि ॥ लषिकीनैवंदनविष्णुलछि ॥ इ
हिसमयबजेदुंदुभिअकाश ॥ पुनिभईपुहपवरषाप्रकाश ॥ ब्रह्मादिदेवऋपिपितरआइ ॥
गंधर्वगांनकीनौसुभाई ॥ सुरकन्यानाटककृतप्रसिद्ध ॥ जयसबदकहतचारनसुसिद्ध ॥ ब्र
ह्मादिकवंदनकृतविशेषि ॥ दाहिनैंहस्ततहांगदादेषि ॥ भुजवांमशंषचक्रादिभाव ॥ पद्मा
कृतिरेषामध्यपाव ॥ सुरनिश्चयकीनौमांनिसीस ॥ अवतारभयौत्रयलोकईश ॥ सुरमुनि
निकस्योराज्याभिषेक ॥ विधितिलकछत्रचामरविवेक ॥ सुरआंनिआंनिअपनैंसुभाय ॥ प
रब्रह्मभेदकृतवंदिपाय ॥ सिंघासनहिममयसाहितसाज ॥ वैश्रवणदएविधिविविधिराज ॥
जलपूरणतागृहछत्रजाल ॥ विधियुक्तवरुणदीनैविशाल ॥ कीरतिमयमालाधर्मदेव ॥ वि
जनादिकचामरदीयसवेव ॥ कृतदंडनीतिमयधर्मकाज ॥ रत्नमयमुकुटदीयदेवराज ॥ स
रस्वतीमालमुक्तासुरेश ॥ दीयब्रह्मकवचब्रह्माविशेष ॥ दीयचक्रसुदर्शनचक्रपांणि ॥ अ
व्ययश्रीलक्ष्मीदईआंनि ॥ दीयषडगरुद्रदशचंद्रहास ॥ अंबिकाचर्मशतशसिप्रकास ॥
ताररथविश्वकर्मासतेज ॥ शशिसुधासीरसागरसुसेज ॥ दीयअग्निधनुषअजगवअनूप
॥ रविदएकिरणमयबाणरूप ॥ पदत्राणजोगमयभूप्रकास ॥ शुभसुमनवृष्टिदीनीअका
श ॥ जलचरनिचर्मअनभेद्यजांनि ॥ अतिगंधवनस्पतिदएआनि ॥ अनदृश्यगमन
आकाशचारि ॥ रथमारगसरितनिदीयनिहारि ॥ मनिदईप्रकासविशमुषनिमानि ॥ अ
नछेद्यचक्ररथगिरनिआनि ॥ कामनासफलताकामगाव ॥ सबसिद्धिकलपतरुमनिसुभा
व ॥ दईवत्तदएदेवनिप्रदीप ॥ मुनिदएमंत्रआसिषमहीप ॥ इत्यादिभेटदीयसबनिआ
नि ॥ मनवाचकर्मपृथुलईमांनी ॥ स्वस्थानगएब्रह्मादिदेव ॥ पृथुकरतराजअवनीअ
जेव ॥ समधर्मनीतिजुतविधिविशेष ॥ इहिंभांतितपतआषंडलेस ॥ दिनएककृषीमिलि
राजद्वार ॥ सबकहेनृपहिउर्वीप्रकार ॥ षितिरहीअराजककछुककाल ॥ वनगहनवृछबा
ढेबिसाल ॥ रजवृष्टिवातबसहोतरेन ॥ सबभएषेत्रथलमयसुषेन ॥ जलबरषिनिरंतरज
लदजाल ॥ षितिभएभयांनकनराषाल ॥ इहिहेतरहतअवनीअजोत ॥ हमभएनिरुद्यम
कछुनहोत ॥ पृथुराजसुनीजबजनपुकार ॥ आरंभकस्योलीलाउदार ॥ गिरकंदरनिर्झरव

नगहीर ॥ नदबिषदनिरंतरबहतनीर ॥ दिगविजयकाजप्रभुकीयप्रयान ॥ समभूमिकरौं थितिथांनथांन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अगमदेषिथलदीर्घ्यभयोअचिरजअवनीपति ॥ विमलव्यालसरिताविसालतरलतामइषिति ॥ धनुषअग्रपरबतढहाइनदभरेनिरंतर ॥ थल विथारतिहिंथानपूरीकीयषेतसुषद्धर ॥ समकरेषेत्रवनकाटिसब,उपजअन्नऔषधअतुल॥ पशुपालकृषीनिजवृत्तिपर, सुगमजथाउद्यमसफल ॥ २ ॥ कृतविभागवसुमतीयखंडवहुदेशसुपत्तन ॥ नगरग्रामअन्नेकविसदवाटिकसुखदवन ॥ आषेटकउद्यानथानकीनेगिरकंदर ॥ जलनिधानसरवरसुकूपवापीसोभावर ॥ बनधातरतनआकरविमल, वधिअपार व्यवहारविधि ॥ संसारजथाअभिलाषसुष, सेवतगृहग्रहअष्टसिधि ॥ ३ ॥ जिहिंजिहिं थलमिलेदुष्टजातिउतपातउग्रकीय ॥ जज्ञवाधसंताइसाधसंभारछीनिलीय ॥ दीनत्रिया द्विजगउबालहत्याजहंकिन्नीय ॥ अवनिभारआक्रांतभईतिहिंशोणितभिन्नीय ॥ हयमेध आदिदैमषहवन, भयेपुन्यमयअखिलभुव ॥ पृथुनृपतिसोधिजबशुद्धकीय, पृथीनाम तहांप्रगटहुव ॥ ४ ॥ व्हैप्रसन्नतबपृथीकह्योपृथुसौंयहकारन ॥ तुमअनंतअवतारअषिलभूवभारउतारन ॥ धेनरूपहूंधरौंप्रगटभवइछापूरन ॥ करहुवच्छकोउएकसबैहोइकाजसंपूरन ॥ करिहोबिचारानिर्धारकारि, जगतहेतदोहारजब ॥ संसारसुषदसंभारासिद्धि, अऊंरतनमयद्रव्यसब ॥ ५ ॥ भयोवछसुरराजपृथीमिलिधेनदयापर ॥ दुहनहारसबदेवतहां रिषिजक्षतपेसुर ॥ पितरसिद्धगंधर्वजोगसाधकद्विजदानव ॥ राक्षसअसुरपिसाचनागभवभूतसुमानव ॥ सतपुरुषसूरजेसाधनर, वर्णचारिनिजवृत्तिकर ॥ एइदुहतरतनगर्भाअवनीं, पुरुषसिंघउद्योगपर ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जथाकांमनांसिद्धिसुष । सबपाएसंसार ॥ पृथुप्रसादपृथ्वीदुही । पुण्यप्रकारअपार ॥ ७ ॥ शुभतटप्राचीसरस्वती । ब्रह्मावर्तसुषेत ॥ पृथुप्रभुराजस्थानतहां । भयोसुधर्मसमेत ॥ ८ ॥ दंडअसाधनिसाधसुष । दीनैंजथाप्रकार ॥ वेदप्रणीतजुराजविधि । कीनीप्रथीप्रचार ॥ ९ ॥ भयोअवधिकालातिक्रम । जान्योपृथूनरेस ॥ पायोपूरनराजपद । अरुदैवतअशेष ॥ १० ॥ नृपउपज्योवैराग्यमन । भयेवनवासविचार ॥ पुत्रहिदीनौंतिलकतब । अपनेहाथउदार ॥ ११ ॥ भयोनृपतिविजिताश्वतहां । राजश्रीपदपाइ ॥ रांनीअर्चिसमेतपृथु । वासकरयोवनआइ ॥ १२ ॥ कारितपस्याउग्रतहां । दंपतिसंजुतनेम ॥ इंद्रियनिग्रहदेहदम । पारब्रह्मसौंप्रेम ॥ १३ ॥ राजाजोगअभ्यासजुत । भयेजोतिमहलीन ॥ रानीअग्निप्रवेशकारिधर्मपतिव्रतकीन ॥ १४ ॥ ॥ अगमजोगअभ्यासकारि,कीनैंप्रानप्रयान ॥ पृथुपरलोकप्रवेशभौ । रानीअर्चिसमान ॥ १५ ॥ वाजेगगननिसानतब । सुमनवृष्टिआकाश ॥ आनंदेब्रह्मादिसुर । नृपवैकुंठनिवास ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दैवभावनृपदादिदाससत्रुनिसौंदेष्षीय ॥ प्रभुप्रतापअवचिंतवयरवसक्रोधविशेष्षीय ॥ दयादंडअनुसारदेवदानवप्रमानकीय ॥ इहिकारनअंसावतारभुवभारविनासीय ॥ जिहिंआदिनमध्यनअंतकहुं,कविनरहरयौंवेदकहि ॥ पृथूभयौदेवत्रइलोकपति, महाराजअवतारमही ॥ ७ ॥ इतिश्रीपृथुअवतारचारित्रंवारहटनरहरदासेनविरचितंसंपूर्ण ॥

॥ अथ दमश हयग्रीव अवतारचरित्र प्रारंभः ॥



॥ दोहा ॥ अबकहिवोहैकर्मजुत । सुषदसाधुसंसार ॥ जिहिंकारणभुवलोकमौ । हयग्रीव अवतार ॥ १ ॥ ब्रह्माकोवासरप्रलय । भयोअवधिवसआंनि ॥ रजनीमुखकीनोसयन । समयकमलभूजांनि ॥ २ ॥ पृथ्वीपसरेप्रलैजल । नासभयोजगजंत ॥ ज्यौंनटसाजसमेटिसब । सोइरहतदिनअंत ॥ ३ ॥ बाढ्योफेनतरंगवस । मिलिजलमलसविकार ॥ तातैंउपज्योअसुरइक । अश्वाननआकार ॥ ४ ॥ जिहिंहिमक्रांतिसरीरसब । पर्वतससतनमान ॥ ततछनवृद्धिविसालकरि । पूरनभयोप्रमांन ॥ ५ ॥ धर्मविरोधकपापमय । भयौविग्रहविस्तार ॥ बुद्धिविक्रमव्यवसायजुत । मायारचतअपार ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ इकसमयवहैआसुरअसंत ॥ सुखनिद्रागतजहांब्रह्मसंत ॥ विधिआननसोंआननमिलाइ ॥ सोवेदश्वासपीनैंसुभाइ ॥ जबभएउदरगतनिगमचारि ॥ लेगयोदुष्टसबहिंनसँभारि ॥ वेदनिप्रभाउआसुरविशेष ॥ अभिलाषसिद्धिपावतअसेस ॥ विचिप्रलयनीरमंदिरविसाल ॥ सोबसैअसुरतहांसुरनिसाल ॥ नहिनिगमससमावतअप्रमान ॥ निश्वासउदरचढिउद्धमान ॥ मुखउगिलिवेदतबअसुरमूढ ॥ गृहमांझिधरेकरिजतनगूढ ॥ विधिनिशाबीतिजागेविनीत ॥ दिनप्रलयअवधिवशभौवितीत ॥ अहकल्पसृष्टिउपराजिदेव ॥ मषकरतभएमहिमाअमेव ॥ पितकह्योजबैआज्ञाप्रसाद ॥ मिलिपुत्रभएसबअप्रमाद ॥ अधिकारजथाक्रमनामअंक ॥ आरंभयज्ञकीनौंअसंक ॥ मुनिभएपितहिंपूछताविधांन ॥ थितब्रह्मपुत्रसबथानथान ॥ सविशेषनिगमलेगोनिलाज ॥ दिगमूढब्रह्मभएसरिनकाज ॥ विनुवेदबतावैकहाविधांन ॥ मखबाधभयोचिंताअमान ॥ पाषानमइप्रतिमाप्रमांन ॥ यौंभएब्रह्मसूझैनआंन ॥ उरमांझवेदखोजतअनंत ॥ पावतनलेसकहुंपरमसंत ॥ भएब्रह्मविकलचितवारवार ॥ करतारत्राहिकीनीपुकार ॥ तुमदीनबंधुदेवाधिदेव ॥ भवभूतलख

तइछानभेव ॥ सबकालकरतकारनसमर्थ ॥ जिहिभाइभजेतिहिंलहेतत्थ ॥ रखपालवेदरा जाधिराज ॥ अनसहनअवस्थापरीआज ॥ दुखबांनिब्रह्मजबसुनीदेव ॥ इहिंसमयआ निप्रगटेअजेव ॥ कृतअर्चापूजाकमलजात ॥ विधिवारवारवंदनाविष्यात ॥ देवाधिदेवदी ननिदयाल ॥ करुणानिधानबोलेकृपाल ॥ सबविधिविरंचितुमधर्मसेत ॥ कीनौंसुहिसुमरन कवनहेत ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ भगवंतहमनकहुलह्योभेद ॥ विश्वेसविष्णुकहांग एवेद ॥ दिगअंधभयोहुंजथाजंत ॥ करियेसहायअबरमाकांत ॥ तहांनारायणकरुणा निधान ॥ धरिदयाचितकृतयोगध्यान ॥ अज्ञातउदधिमहँअसुरएक ॥ अश्वाननअ घकारकअनेक ॥ लैगयौवेदहरसोनिलाज ॥ यौंकह्योविष्णुमैंलख्योआज ॥ विधिकह्यो जोरिकरविवसहोइ ॥ तुमतैंअगम्यनहीठोरकोइ ॥ कृतकरनअकारनश्रीयाकंत ॥ अ न्यथाकरनतुमहीअनंत ॥ तुमदएवेदमोकहँदयाल ॥ पुनिकरिहोतुमहीप्रनतपाल ॥ न हींहोतकर्मविनुनिगमनाथ ॥ असमर्थभएद्विजवरअनाथ ॥ विधियुक्तसुनीविधिदीनवा नि ॥ अखिलेशवढीउरदयाआनि ॥ अदभुतशरीरआकृतिअनूप ॥ हरिभएतहांहय ग्रीवरूप ॥ प्रभुकर्योअंबुधिनिमहँप्रवेश ॥ सामुव्हैअसुरआयोविशेष ॥ जातीस्वाभाव कीयनाकजोर ॥ कलुकालभयोसंग्रामघोर ॥ विग्रह्योदुष्टमार्योविशेष ॥ हयग्रीवदेव कृतविजयहेष ॥ प्रभुकर्योअसुरमंदिरप्रवेश ॥ आकर्षिवेदलीनेंअशेष ॥ निर्घोषदेवदुं दुभिनिनाद ॥ परपुरुषदयोदर्शनप्रसाद ॥ अंबुजभूदीनैनिगमआंनि ॥ बिस्तारविबु धजयजयतिबांनि ॥ मषजोगजापतपकर्ममंत्र ॥ सविशेषकरतमुनिगनसुतंत्र ॥ पृथ्वीसुध र्मप्रगटेप्रकाश ॥ वैकुंठनाथवैकुंठबास ॥ कवित्त ॥ इहिंप्रकारअखिलेशपुरुषहयग्रीवप्र गट्टीय ॥ दुष्टमारिसंघारिअसुरमायाओहट्टीय ॥ अमरवृंदआनंदनिगमहितरहत निरंतर ॥ विधिसनाथकृतविश्वनाथपरब्रह्मदयापर ॥ हतहयग्रीवआसुरअहि त, भयोअचिर्जत्रयलोकभुव ॥ उद्धारनिगमनरहरसुकवि, हयग्रीवअवतारहुव ॥ इतिश्री हयग्रीवअवतारचरित्रंबारहटनरहरिदासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ ६ ॥

॥ अथ एकादश कूर्म अवतारचरित्र प्रारंभः ॥

——०:❋:०——

॥ दोहा ॥ एकसमयसबदैत्यामिलि। कीनौंमंत्रविचार ॥ शुक्रहमारेकुलगुरु। तपबलबुद्धिअ पार ॥ १ ॥ तिहिंविद्यासंजीवनी। पूरनमंत्रप्रकाश ॥ गुरुप्रसादहमम्रत्यतैं। अभयभए विश्वास ॥ २ ॥ अबपौरुषकरियेप्रगट। सुरसुरराजसंघार ॥ वासकरहितिहिंठाँविमल। इंद्र लोकलैमारि ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सवैदनुजसन्नद्धव्है। आनिलगेसुरधाम ॥ तहां महादुःसहभयो। देवासुरसंग्राम ॥ ४ ॥ जोइदानवरनमहाँगिरैं। शुक्रजिवावैताहि ॥ सौ इआंनिभारतभिरैं। शस्त्रअस्त्रसंबाहि ॥ ५ ॥ महाजुद्धकलुकालभौ। आसुरघटैनकोई ॥ घटनलगेसंग्रामसुर। रहेसोचवसहोइ ॥ ६ ॥ सुरनिकसेसंग्रामसब। लयोसरनविधिजाय ॥ कर्योब्रह्मउपदेशतव। करिहैविष्णुसहाय ॥ ७ ॥ देवगयेहरिकेसरन। दुःखनिवेद्योतत्थ ॥ तुमदयालत्रैलोक्यपति। कारनकरनसमत्थ ॥ ८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ मंत्रस

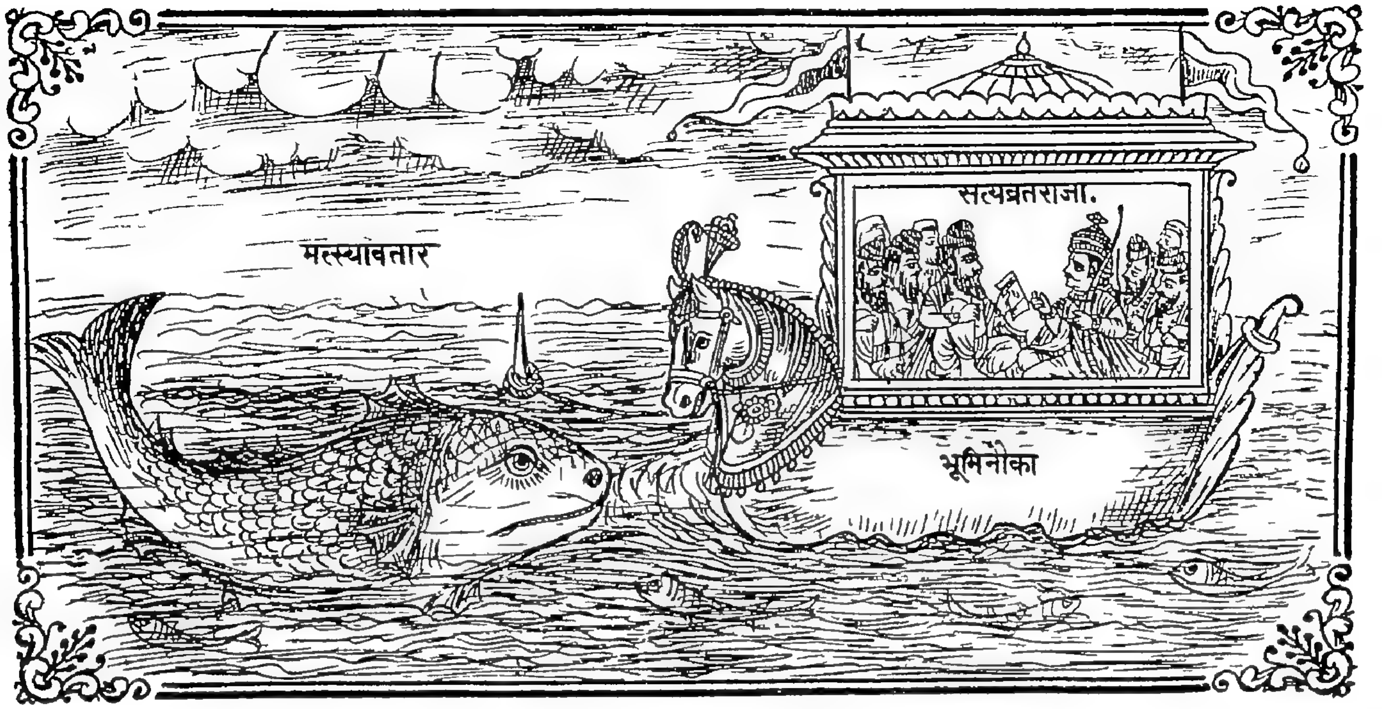


जीवनशुक्रपहैं । तातैंवैवलवान ॥ संधिउचितबलवानसौं । मंत्रकह्योभगवान ॥ ९ ॥ अ
मृतपयोनिधिमांझहै । काढहुकरिमंथान ॥ सुधातुमारैकरचढै । तो तुमउनाहिसमान ॥ १०
॥ उनकैबलसंजीवनी । तुमहिसुधाबलहोई ॥ जाइकरौयहसंधितब । सिद्धिकाजसवकोइ
॥ ११ ॥ स्वामिदैतनिकौहुतौ । जहांविरोचनराज ॥ दूतपठाएसुरनितहँ । संधिकरनकैका
ज ॥ १२ ॥ दूतबिरोचनसौंकह्यो । तुमउनएकहिवंश ॥ तातैंअपनैंवंशमह । नहीविरोधप्र
ससं ॥ १३ ॥ अवतोकरीयैसंधियहै । दोउमिलिवलअप्रमान ॥ सुधापयोदधिमांझहै ।
काढहिंकरिमंथान ॥ १४ ॥ मानिविरोचनमंत्रयहै । उत्तरदयोविचारि ॥ जौकछुनिकसैंउ
दधितै । लेसमभागसंभारि ॥ १५ ॥ हमहिंतुमहिंसमभागसव । बलविक्रमव्यवहार ॥
जहांघटहुंगेकाजतैं । तहांजुद्धनिर्धार ॥ १६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ देवदनुजयौंकरिक
रि । संधिप्रवलमतिठानि ॥ आपमांझमिलिएकव्है । उद्यमकीनौंआंनि ॥ १७ ॥ मिलिस
बदैत्यमहावली । मंदरलयोउठाइ ॥ अर्धपंथमहलैधस्यो । करिकरिचित्तकषाइ ॥ १८ ॥
दैवइहांतैलैचलौ ॥ मँदराचलअनुमान ॥ अर्धभागहमतुमसकल । करिवोवचनप्रमान
॥ १९ ॥ बलउद्यमकरसुरथके । मँदरउठैनमूल ॥ तबहरिकोसमरनकस्यो । जाहिनकोउस
मतूल ॥ २० ॥ आएदीनदयालप्रभु । तिहिंछनदेवसहाइ ॥ मंदरराष्योउदधितट । गरुडपृ
ष्टिधरिताहि ॥ २१ ॥ गिरिमेषलयोजनसहस । सहसऊर्द्धचालीस ॥ मंदराचलपरमानइ
ह । सोभाअमितसुदीस ॥ २२ ॥ नेत्रकाजमनुहारकारि । आंन्यौवासुकिनाग ॥ सुरासुर
नितासौंकह्यो । लीजहुअमृतबिभाग ॥ २३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिसुनहुकमठअव
तारहेत ॥ कृतरूपअतुलबलधर्मकेत ॥ इहिसमयदेवदानवबालिष्ट ॥ मिलिकरतभएक्री
डाप्रतिष्ट ॥ समुद्रमथनकीनौसमत्थ ॥ उद्धराहिरत्नचौधैंसुतत्थ ॥ नेतौसुकस्योवासुकि
निहारि ॥ मंथानदंडमंदरविचारि ॥ पयमाझधस्योपर्वतविशेष ॥ सोभयोलीनदेष्योअसे

स ॥ जातीस्वभावयहउपलजांन ॥ जलमांझधर्‍योबूडतनिधांन ॥ तहांभयनिरुद्यमदैत्य देव ॥ पैनिधिअगाधपावहिनभेव ॥ सुरअसुरभएआतुरसषेद ॥ करजोरिकर्‍योकरुणानि वेद ॥ कीजेसहायराजाधिराज ॥ कैभंगहोतहैंदेवकाज ॥ सवकालभएतुमसुरसहाइ ॥ जो तीस्वरूपप्रभुजांनराइ॥ हरिभएतबैकमठावतार ॥ वपुवृद्धमहापयनिधिविहार ॥ प्रभुधारि पृष्टपर्वतअपार ॥ उद्धर्‍योदेवकूर्मावतार॥ आवर्तअंगवासुकिसमूल ॥सोभयोकूटकरिवंग तूल ॥ धारिपूछदेवसमदेवराज ॥ बलिआदिमुषहिआसुरसमाज ॥ विषज्वालनागमुषतै विसेस ॥ अतिधूमयुक्तनिकसीअसेस ॥ तिहिजरेअसुरतनभएस्यांम ॥ तेशुक्रजिवाएमं त्रताम ॥ परचंडभ्रामितमंदरप्रकास ॥ उछलहिपयोनिधिपयअकास ॥ झषचढिजुषसत पैगोलमांझ ॥ पयरुद्धअर्कजनुभईसांझ ॥ कृतपृष्टिमनहुकंडूयमान ॥ निद्रागतभएकरु णानिंधान ॥ सुरअसुरकरतक्रीडासमान ॥ मथिकर्‍योषीरसागरमँथान ॥ प्रगट्योहलाह लप्रथमकाल ॥ त्रैलौकजरतज्वालाकराल ॥ देवनिपुकारकीयासिवदयाल ॥ मुषमांझधर्‍यो विषमुंडमाल ॥ प्रभुरोक्योसोग्रीवाप्रदेश ॥ भएनीलकंठतवतैंभवेस ॥ पुनिकढीमथत हालाप्रताच्छि ॥ मृतकुंभभयोसोइसुरअपच्छि ॥ पुनिनिकासिकनकघटअमृतपूर ॥ सोल योछीनिअसुरनिसमूर ॥ संग्रामउदितभएउभयसत्थ ॥ शस्त्रायुधसंयुतभटसमत्थ ॥ नि र्घोषप्रतिंचासंषनाद ॥ विपरीतविरुद्धबाढ्योविवाद ॥ तहांकर्‍योसुरनिसमरनसशोक ॥ तुमहोसहायस्वामीत्रिलोक ॥ आकासवांनिप्रभुकर्‍योएह ॥ मायाप्रपंचरचिहैंसंदेह ॥ यौं कहतमात्रइकत्रियाआइ ॥ सुंदरस्वरुपसोभासुभाइ ॥ मिलिकह्योतवैदानवसमाज ॥ क हांवसतकौनतुमकहाकाज ॥ नितमेरोरविमंडलनिवास ॥ कन्यास्वइच्छविहरतअकाश ॥ त्रैलोक्यगमनमेरोस्वतंत्र ॥ महिदेषतडोलतन्यायमंत्र ॥ फलभागकरेपहिलैंप्रमान ॥ मिलिकर्‍योषीरसागरमथान ॥ लालचवसव्हैसवभागलेहु ॥ देखहुबिचारनहींनीतियेहु ॥ उपजेदोउकस्यपवंसआद ॥ दनुदेवविहितनांहिंनविवाद ॥ वंसजबएकबाढ्योविरोध ॥ हूंपुहमिआइकारनप्रबोध ॥ विश्वासकरहुमेरोविचार ॥ समभागसबनिदेहूंसंभार ॥ सु निदैत्यतहांबोलेसहास ॥ तुमवरौहमहिंउपजैविसास ॥ कन्यातबबोलीसानुकूल ॥ मम वचनभंगनहीकरहुमूल ॥ तौवरौंतुमाहिहूंव्हैसुतंत्र ॥ मेरैयहइच्छामूलमंत्र ॥ निर्धारवचन कीनौंसनेम ॥ प्रगट्योविसासदुहघांसप्रेम ॥ तवकह्योमोहनीवचनतास ॥ दोउकलश देहुउपजैविसास ॥ आसुरनिदएदोउकुंभआइ ॥ सोसुराअमृतपूरितसुभाइ ॥ जहांथ क्योकाजमोहनीजांनि ॥ मृत्तिकाकनकघटलएमांनि ॥ मोहनीरूपअदभुतमुरारि ॥ सुरहेतदैतमनमोहकारि ॥ मुषदेषिअसुरभयमोहलीन ॥ तहांथक्योकलहपुनिप्रण तकीन ॥ अमृतविभागहूंकरतआज ॥ थितथानहोहुदोऊसमाज ॥ भएअसुरभिन्नपंकति प्रमान ॥ गतमोहमनहुप्रतिमापषान ॥ १ ॥ सबकियैविवसमायासमत्थ ॥ सुरलैहिसु धामुखदैत्यसत्थ ॥ इकराहुनामआसुरअमान ॥ हरिकपटलह्योतिहिगंधज्ञान ॥ सुररूपकर्‍योतिहिसुरसमांन ॥ थितभयौदेवपंकतिसुथान ॥ जवपियौराहअ मृतसुजान ॥ मिलिदयोसोधशशिसूरमांनि ॥ प्रभुअसुरजांनिकीनौंप्रहार ॥

सिरछिंद्योचक्रअनदृष्टिसार ॥ तवदैत्यजीयौन्हैषंडदोइ ॥ सिरभयोराहुधडकेतसोइ ॥ पैमख्योनहिंअमृतप्रभाव ॥ भयौसूरचंद्रसौंवैरभाव ॥ सुरअसुरसुधामदपानसंग ॥ अभिलाषपूरिरसमत्तअंग ॥ सागरमंथाफिरिकरतसोइ ॥ हितआपआपउनमत्तहोइ ॥ ॥ सुरभएप्रबलपदअमरपाइ ॥ धनरतनलैंहिंअसुरनिधकाइ ॥ निकसेपिनाकशशिशिवनिहारि ॥ सोइधनुषतीलकलीनैंसंभारि ॥ श्रीसंखकौस्तुभमणिसमेत ॥ हरिधरतभएप्राचीनहेत ॥ आभूषनआयुधप्रीयाआदि ॥ उरपांणिवामअँगधरिअनादि ॥ मातंगतुरंगमधेनुकाम ॥ तरुरंभधन्वंतरिवैद्यनाम ॥ षटरतनदएइंद्रहिविशेष ॥ इंद्रासनभूषितभयौअशेष ॥ पुनिनिकस्यौवाडवप्रलयरूप ॥ यहदैवचरितमायाअनूप ॥ भूगगनधरहिवाडवभयांन ॥ प्रज्वलहिज्वालतपअप्रमान ॥ सुरअसुरगिराप्रतिप्रणकीन ॥ कहाधरहिविषमवाडवनवीन ॥ वाणीसुदयोउत्तरविचारि ॥ मूंकियेफेरिपयनिधिमझारि ॥ सबसमझिउदधिमहँधख्योसोइ ॥ कृतकर्मदैवमेटैनकोइ ॥ प्रज्वलहिज्वालजलअषिलजंत ॥ उरउदधितापबाढ्योअनंत ॥ तवउदधिगिराप्रतिप्रणतिकीन ॥ नहीसख्योपरतवाडवनवीन ॥ विधिसुताप्रसन्नन्हैतहांविचारि ॥ दीयसागरमहँकुंडलसुडारि ॥ इहिंमध्यभागजलवीचआइ ॥ सोइतहांदग्धन्हैहैंसुभाइ ॥ सरस्वतीआपश्रीयदीयसहास ॥ हमतुमहिंनहींएकत्रवास ॥ छुटभयोपयोनिधिभयोछाछि ॥ सबलएरत्नसुरअसुरसाछि ॥ उद्धरेरत्नक्रीडाउदार ॥ हरिकख्योतहांकमठावतार ॥ सोअमृतकछुउवख्योजुसेष ॥ लेचल्योइंद्रनिजपुरविशेष ॥ आसुरनिइंद्ररोक्योअमांन ॥ हमजीयतलेइकोअमृतआंन ॥ जाजुल्यसुरासुरभयोजुद्ध ॥ कछुकालअमृतकारनसक्रुद्ध ॥ आसुरीबिरोचनसुताएक ॥ अतिकायउपद्रवजुतअनेक ॥ त्रीयदीर्घजिव्हानामतास ॥ गजइंद्रहिंधाईकरनग्रास ॥ गजसक्रसहिततिहिंग्रसतजांनि ॥ प्रभुदुःसहचक्रमोष्योसुपांनि ॥ उत्तमांगछिंद्योपरिसिंधुआइ ॥ सोकख्योभस्मवाडवसुभाइ ॥ रणअजिरविरोचनगिख्योराज ॥ बलिकुंवरसहितआसुरसमाज ॥ करिसक्रसमरआसुरसंघारि ॥ लैगयौसुधासुरपुरसंभारि ॥ तिहिंकालशुक्रआएऋषीस ॥ गुरुदीनीसंजीवनिअसीस॥रणभूमिनपायोसीसराज ॥ परलोकविरोचनकख्योकाज ॥ सबअंगलहेसंग्रामठौर ॥ बलिकुंवरजीयोपुनिअसुरऔर ॥ मिलिशुक्रअसुरसुरभयअमान ॥ लैगएबलिहितबसुतलथान ॥ तवदयौवलिहिलैतिलकछत्र ॥ तिहिंसमयराजबलिकरतत्र ॥ सुरअसुरगएनिजधामताम ॥ क्रीडानिवर्तभईलब्धकाम ॥ तहांकथ्योकमठकूरमपुरान ॥ कृतस्तुतिसिद्धचारनसमान ॥ इहिकारनकछपरूपकीन ॥ निजरतनचतुर्दशलीयनवीन ॥ प्रभुभएतबजोतीप्रवेश ॥ सुरलोकबजेंदुंदुभिअसेस ॥ ॥ दोहा ॥ आपुनकछपरूपन्हे । नरहरवपुविस्तार ॥ अद्रिभ्रमायोपृष्टिपर। उदधिमथ्योअनपार ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ चारणसिद्धप्रसिद्धजपतजाहिंकीर्त्तिनिरंतर ॥ कमठपृष्टिकाठिन्यभ्रमणक्रतकूटचक्रवर ॥ उदधिदुग्धउच्छलियअनिलबलमिलितअच्छगल ॥ जनुसषेदकरुणानिवेदकारणादिविमंडल॥अद्भुतचरितविक्रमअतुल,कीर्त्तिसुकविनरहरिसुकहि॥सबकालविजयपंजरसरन, मांगतचरननिवासमहि॥१॥इतिकूर्मअवतारसं० ॥

॥ अथ द्वादश श्रीमत्स्यावतारचरित्र प्रारंभः ॥



॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ नरहरिप्रभुकारननिखिल।सुनहुजथाक्रमसंत ॥ पृथ्वीराखीप्रलयतैं। भएमीनभगवंत ॥ १ ॥ द्राविडदेसनरेसभयो। सत्यव्रतइहिंनाम ॥ वेदप्रणीतविधांनमय। सकलधर्मकोधाम ॥ २ ॥ राजनीतिजुतव्रतनियत। ब्रह्मपरायणवीर ॥ छत्रीधर्ममर्जादछिति । विजयीसमरसधीर ॥ ३ ॥ ब्रह्माकोवासुरप्रलय। समयनिकटभयोत्र्प्रांनि ॥ नृपतपअवधिसुदूरितब। प्रभुचितचिंतामांनि ॥ ४ ॥ भावीबसब्रह्माप्रलय।कबहूटरैनसोइ ॥ भक्तिपरायनसत्यव्रत ।सुक्योंप्रलयबसहोइ ॥ ५ ॥ जोहैहैमिथ्यासकल । व्रतसंयमतपदान । अरुउपहास्यजुभक्तिको । निसचयहोइप्रमांन ॥ ६ ॥ भावीमिथ्याहोइनही। भक्तिननिंदैकोइ ॥ अबतोयहकरिवोउचित । नृपतिहिरक्षाहोइ ॥ ७ ॥ कारनकरनसमर्थहरि । कीनौंयहानिर्धार ॥ जिनतैदुःकरनांहिंकछु । वेदधर्मव्यवहार ॥ ८ ॥ सरिताद्राविडदेसमहँ । कृतमालातिहिनाम ॥ करतनृपतितहँनित्यकृत । विविधनीतिविश्राम ॥ ९ ॥ तहांकियमज्जनसत्यव्रत । नृपजपकरयोसनेह ॥ तर्पणजलकरगतभयो । सफरस्वयंभूदेह ॥ १० ॥ अतिसूछमतनकनकमय। पुटअंजुलीगततास ॥ रक्षारक्षाबारद्वै । बोल्योसफरसत्रास ॥ ११ ॥ बालसरीरविलोक्तितहां। व्हैदयालनरनाथ ॥ लैमेल्योजलपात्रमहँ । हितकरिअपनैहाथ ॥ १२ ॥ मीनअनुक्रमबृद्धिवस । नहितिहिपात्रसमात ॥ तवैधरयोजलकलससो । तहांपैवृद्धिविख्यात ॥ १३ ॥ लैराख्योसरसरितमहँ । विग्रहवढ्योविशेष ॥ कहुसमातनसफरसो । विस्मयभयोनरेस ॥ १४ ॥ नाहिंपराकृतजतुयह । कछुकारनइहिंठौर ॥ मनसंकल्पविकल्पनृप । उपजतहेतनऔर ॥ १५ ॥ वोल्योमीनप्रवीनयों । नृपतिसुनहुनिर्धार ॥ अद्यावधिदिनसातवै । व्हैहैप्रलयससार ॥ १६ ॥ अवनृपयहकरिवोउचित । मीनदेवकहिमर्म ॥ विश्वबीजराषहुविदित । ओषधअन्नसोधर्म ॥ १७ ॥ नावकरहुउर्व्वीनि

खिल। लैबांधद्रुममश्रृंग ॥ मुनिसमाजजुतबैठितुम। सकलचराचरसंग ॥ १८॥ कविरु
वाच ॥ ॥सुन्यौंनृपतिवृत्तांतसब। मच्छकह्योजोआहि ॥ कृतमालासरिताविषय। दयेसु
मीनप्रवाहि॥ १९॥ नदीसंगमिलिसफरीरितिहँ। सागरकर्योप्रवेश ॥ जोजनलक्षसुशृंगभ
ए। विग्रहवृद्धिविशेष ॥ २०॥ मत्स्यदेवज्योंज्योकह्यो। सोइनृपकर्योप्रमांन ॥ भावीप्र
लयसुनाटरै। सोइच्छाभगवान ॥ २१ ॥ छंदपधरी ॥ जबभईअवधिपूरनप्रमान॥
भोप्रलयनीरबाढेभयान॥ नृपकरीनावपृथ्वीप्रसिद्ध ॥ सबचढेचराचरअमरसिद्ध ॥ औ
षधीअन्नतृणवनअपार ॥ सोविश्वबीजराष्योसंसार ॥ जहांभयोअवनिजलबिंबजानि ॥
विश्वंभरसौंकहिदीनबांनि ॥ तुमदीनबंधुदेवनिदयाल ॥ करतारकरहुरक्षाकृपाल ॥ तहां
महामछअनमानअंग ॥ शुभलक्षलक्षजोजनसुश्रृंग ॥ इहिसमयदयोप्रभुदरसआइ ॥
सोइसफररूपवेदनिसहाइ ॥ प्रभुदरसदेखिसंजुतसनेह ॥ दैवीसुसक्तिभईराजदेह ॥ आ
ज्ञासुदैवअहिशेषआइ ॥ सत्यव्रतनृपतिकारनसहाइ ॥ कृतशेषमईरज्वाविशेष ॥ इक
ओरबांधिपृथ्वीअशेष ॥ अहिद्वितीयओरविस्तारअंग ॥ सोलयोबांधिसुरसफरश्रृंग ॥
सोईश्रृंगबद्धऐंचीसुभाइ ॥ अवनीसुप्रलयजलउपरआइ ॥ वहिंप्रलयकालकेमहाव्रात ॥
पृथ्वीसुडोलज्यौंनलनिपात ॥ उरलोकत्रासउपज्योअमेव ॥ दीयअभयसमयतिहिमच्छ
देव ॥ प्रभुकर्योसत्यव्रतसौंप्रकास ॥ हमकरहिविमलवारिविधिविलास ॥ निसिभईब्रह्म
तहांकर्योसैन ॥ जलप्रलयतरंगनिउठ्यौफैन ॥ अनमोघदैवइच्छाअमांन ॥ प्रभुधरहिं
चितसोइहैंप्रमान ॥ जलमलसुफेनभयौएकजोग ॥ उपज्यौसंषासुरअप्रयोग ॥ सुरसत्रुउ
पजिसोपापसंग ॥ उद्यमअनर्थअघरूपअंग ॥ सुषनिद्रावसजहांब्रह्मसाध ॥ इहिंठौर
आइआसुरअसाध ॥ विधिस्वासपीयेसंयुक्तवेद ॥ भूकमलनपायोदुष्टभेद ॥ जबभइब्रह्म
रजनीवितीत ॥ विधिप्रलयवीतिजागेविनीत ॥ चितकर्योप्रातसंध्याविचार ॥ दिगमूढभए
सृष्टासंसार ॥ उरमांझवेदषोजतअसेष ॥ सून्यभौहृदयपावतनलेस ॥ विधिकर्योमीनस
मरनविसास॥ततकालआईप्रभुहरनत्रास॥धरिसछदेवतहांजोगध्यान ॥ गएनिगमस्वास
संगलह्योज्ञान ॥ मीनउवाच ॥ लैगयोसंखआसुरनिलाज ॥ वहिंमारिआनिहुवेदआ
ज॥ भौधर्मविरोधीपापभीन ॥ लैवेदभयोंजलजलधिलीन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लैग
योअसुरजलनिगमजानि ॥ धरभएधर्मअवछिन्नतामसुनि ॥ येनहोमजपमंत्रजाग ॥
भएदुषितदेवपावहिंनभाग ॥ प्रतिपालधर्मदेवाधिदेव ॥ इहिंसमयमच्छकोपेअजेव ॥ ज
लथाहलीनतबमीनजाइ ॥ जुधरच्योसंषआसुरजगाई ॥ कछुकालभयोक्रीडासजुद्ध ॥
कारणाभूतभएमीनक्रुद्ध॥तबमार्योसंषासुरपछारि ॥ सविशेषवेदलीनैसंभारि ॥ सोकरेप्र
गटलैभूनिकेत ॥ शुभनिगमबीजऔषधसमेत ॥ दोहा ॥ शंखोवाच ॥ शंखकह्योत
हांविष्णुसौ। मोहिहत्योंहैमीन ॥ यहगतिकरहुदयालअब। रहौंचरनआधीन ॥ १ ॥
॥ ॥ श्रीमीनोवाच ॥ ॥ तवगतनीरन्हवाइमुहि । सेवैंसाधसुजान ॥ मनसावाचा
मांनिहू। पूजावहैप्रमांन ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वेदपषालेविमलजल । द्विज
निअंबुदीयआनि ॥ पीयोनउदरप्रसंगमल। विप्रनकरीगलानि ॥ ३ ॥ चवमुखसोजल

चारनहि। दयायुक्तलैदीन ॥ प्रीतसहिततिहिपानकीय। बाढतबुद्धिप्रवीन ॥ छंदपधरी ॥
ब्रह्माहिपढाएवेदआनि ॥ मनुमूढबालअध्ययनमानि ॥ प्रभुकथ्योतहांमछापुरान ॥ सुप
ढाइब्रह्मपुत्रनिप्रमान ॥ विधिविनयकस्योसनकादिसाथ ॥ दुखदेवनिवास्योदयानाथ ॥
सबकालसबनितुमहौसमान ॥ भवभूतहेतकरुणानिधान ॥ स्वस्थानब्रह्मसनकादिसंग ॥
सुप्रसन्नगएगावतप्रसंग ॥ करजोरिसत्यव्रतप्रणतकीन ॥ प्रभुदेहुचरनसंगमप्रवीन ॥
भगवांनमनिकारिकह्योंभाइ ॥ जगराजभोगनृपकरहुजाइ ॥ सुखराजकरहुममप्रगटसंत॥
अवतारचरित्रमहिमाअनंत ॥ नृपताविलासकछुकालनेम॥ पुनिमिलहुजोतिदैवीसप्रेम॥
प्रभुपाइसेषआज्ञाप्रसाद ॥ मंदिरपतालगयौअप्रमाद ॥ सुरबजेदेवदुंदुभिप्रकास ॥ पुनि
भईपुहपवर्षाप्रकास ॥ इहिंकारणभौमछावतार ॥ जगजीवकरनउद्धारसार ॥ ॥ दोहा ॥
वेदसहायकविश्वहित। प्रभुअवतारप्रमान॥अंतर्ध्यानअनंतगति।भएमीनभगवान॥२२॥
इहिंविधिसफरस्वरूपहरि। कीनौंब्रह्मसहाय।। शंखासुरसोनिग्रह्यो। आनेवेदछुडाय॥२३॥
सत्यव्रतकृतराजसुख। पूरनअवधिसुपाइ ॥ करनीजोगअभ्यासकरि। जोतिमिलेपुनिजा
इ ॥ २४ ॥ निगमहेतनरहरसुप्रभु। मच्छदेवमुखमित्र ॥ विसददेहव्यवसायजुत। चंच
लअचलचरित्र ॥२५॥ इतिश्रीमत्स्यावतारचरित्रंबारहटनरहरिदासेनविरचितंसंपूर्णम्॥

॥ अथ त्रयोदश नृसिंहअवतारचरित्र प्रारंभः ॥



॥ दोहा ॥ ॥ नरहरिप्रभुनरहरिभए। लीलाअगमअपार ॥ सुखदायकअनुक्रमसाहि
त ॥ सुनहुयथाविस्तार ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हिरणाक्षमरतइक
अनुजभ्रात ॥ कहुंवच्योहिरण्यकस्यपविख्यात ॥ सोभयोभूमिभूवैप्रतिष्ट ॥ समसुभटस
चिवअरुबंधुइष्ट ॥ वसुधाप्रभुत्वपायोविवेक ॥ भुवभयोताहिराज्याभिषेक ॥ बलवंतअसु

रसाहसअसंष ॥ सुरसालधरनइंद्रादिध्वंष ॥ तिहिंप्रियाकयाधूधर्मवाम ॥ त्रियधास्योगर्भ
सुरलताम ॥ धृतगर्भभएकछुदिनवितीत ॥ नृपचह्योहोततबजगतजीत ॥ यहिउपजिज्ञा
नअसुरअजेय ॥ द्दढकरैदेहतपबलसतेय ॥ विधिनिमित्तकरनवनतपविचार ॥ गौनिक
सिराजतजिराजभार ॥ सबसुभटभृत्यमंत्रीसुजान ॥ शुभकरतराजकारिजसुथान ॥ नृप
गयौसुमंदराचलनिकेत ॥ तहांदेषिठौरजलतरुसमेत ॥ विधिसहितकस्योतहांतपविचा
र ॥ धरिध्यांनरहतभएनिराधार ॥ भूचरनऊर्द्धभुजामिलितनेत॥जडभएदेहजागर्त्तचेत ॥
तपकस्योउग्रधरिएकध्यांन ॥ मनवाचकर्मग्रहिब्रह्मज्ञान ॥ यहगईकथासुरपुरअसेस ॥
सोभयौदुचितसुनिकैंसुरेस ॥ शुभनगरहिरण्यकस्यपसुथान ॥ परचक्रइंद्रआयोप्रमा
न ॥ पुरजारिसुभटआसुरसँघारि ॥ सबलएकाढिहयगयसंभारि ॥ प्रजलूटिफारिभौंडार
पाट ॥ शुभरतनद्रव्यलीनैसंघाट ॥ पुनिग्रहिकयाधूप्रियाराज ॥ शुभगर्भवतीविचत्रीय
समाज ॥ लैचल्योकयाधुहिपकरिइंद्र ॥ तहांमिलेबीचनारदमुनींद्र ॥ ॥ नारदोवाच ॥
इंद्रसौंकह्योनारदसभेव ॥ इहिगर्भपुत्रहैंरत्नदेव ॥ जयविजयअंसयहगर्भराज ॥ निःशे
षकरतआसुरसमाज ॥ प्रतिहारअंसवपुधरिपुनीत ॥ निर्वंशहेतनिशिचरअनीत ॥ शुभ
गर्भजतनकीजैसुरेस ॥ सुरकाजशीघ्रव्हैहैंअसेस ॥ ॥ इंद्रोवाच ॥ ॥ वसुकह्योतबैना
रदविनीत ॥ प्रतिपालकरहुरिषितुमप्रनीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लेगएकयाधुहिंसु
निनिकेत ॥ हितकरततासपुत्रकाहेत ॥ ज्ञानोपदेशऋषिकरहिनित्त ॥ शिशुग्रहैगर्भअंतर
सुचित्त ॥ कवित्त ॥ नहिचूकैनिजधर्मकीटकुंजरसमलेखै ॥ हांनिवृद्धिनहिभेदब्रह्ममय
विश्वसपेखै ॥ उरउपजैअद्वैतवादहरिजोतिप्रकासै ॥ कामक्रोधमदमोहलोभतृष्णातजि
नाशै ॥ लघुआपसवनिगुरुकरिगिने, संततसतसंगतिगहै ॥ सुनिपुत्रिकरनकारनलषै,
ब्रह्मज्ञाननारदकहै ॥ ११ ॥ छंदपधरी ॥ सोरह्योनहींउरजननिलेश ॥ शिशुभयोब्रह्म
ज्ञानीसुदेश ॥ त्रियगर्भसपूरणभयोताम ॥ पहुंचायदईरिषिराजधाम ॥ सोरठा ॥ माता
लह्योनलेस,नारदकेउपदेशकों ॥ उंपजीभक्तिअशेष. गर्भब्रह्मज्ञानीभयौ ॥ २ ॥ दोहा ॥त
हांगर्भमोक्षसुभयो । पूरीअवधिप्रकाश ॥ परमभागवतपुत्रभौ । जिहिंहरिकोविश्वास ॥३॥
॥ छंदपधरी ॥ तिहिंपुत्रनामप्रल्हाददीन ॥ वपुवढैनित्यपौरुषप्रवीन॥सोरह्योरूपअंतरस
माइ॥विचिदयोगर्भनारदबताइ ॥ संसारसकलअंधारधाम ॥ मणिदीयप्रगटइकरामनाम॥
मनजानियहैहरिनाममोह ॥ बलछद्मतासुलागैनछोह ॥ बनिकैरैकुंवरनिजपुरविहार ॥
शिशुगनैसकलमिथ्यासंसार ॥ कछुकालभयोनृपतपकरंत ॥ सुधिकरीब्रह्मनिजजांनिसंत॥
आरूढहंसबिधिआयआप ॥नवलह्योसीततपजलवियाप ॥ पलरुधिरदीवषायोप्रचारि ॥
दलदर्भनिकासिअंगनिविदारी ॥ आवासकीनसिरशकुनिआइ ॥ सोरह्योजीवअस्थिनि
समाइ ॥ इहिंदसानिरीष्योतपअषंड ॥ करउर्द्धरह्योमनुकाठदंड ॥ भरिब्रह्मकमंडलसलि
लभूरि ॥ छिरक्यौसरीरपलरुधिरपूरि ॥ नृपजग्योजोगनिद्रानिवारि ॥ चढिदृष्टिब्रह्मतहां
वदनचारि ॥ यज्ञोपवीतचववेदवानि ॥ आरूढहंसजलपात्रपानि ॥ आनंदउदितनृप
करीटेक ॥ अभिलाषदैवपूरनअनेक ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ विधिकहतभएनृपकोविचा

र ॥ जिहिंहेतसध्योवनजोगसार ॥ ॥ हिरण्यकश्यपउवाच ॥ ॥ इकआहिचित्तचिं
ताअमान ॥ तिहिंहेतधरयोमैंब्रह्मध्यांन ॥ निजभाग्यमोहितुमदरसदीन ॥ परवाचसृष्टि
करताप्रवीन ॥ ब्रह्मोवाच ॥ जिहिंकाजआनिवनदम्योंदेह ॥ फललेहुनृपतिसोनिस्संदेह
दैत्यउवाच ॥ मोहिहोतकृपाजोविधिकृपाल ॥ मागौंसुलहूंवाहनमराल ॥ जौदीजैवाचा
जलजजात ॥ सविशेषकरौविनतीसुतात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ शिवविष्णुब्रह्मवाचा
सुदीन ॥ करजोरिदैत्यतबप्रणतिकीन ॥ ॥ दैत्योवाच ॥ ॥ जुधजीतिसकैमोसौनदेव ॥
संसारसकलमुहिकरैसेव ॥ निसदिवसमरौनाहिदयानाथ ॥ घरआंगनमेलैअरिनहा
थ ॥ मोहिभिदैनशस्त्रास्त्रअंग ॥ नरअमरजुरैमोसौंनजंग ॥ शुभरथीअश्वगजचढि
समूर ॥ सोईअंगघाउघालैनसूर ॥ मुहिअंतमिलैनहीछांहघाम ॥ सज्जाअरूढ
नहीविध्नताम ॥ आकाशधरनिगिरिजलनअंत ॥ सोदेहुंमोहिवरपरमसंत ॥ व्या
पैनअंतकरवर्णचारि ॥ पशुपक्षिसाकिनमन्मुखानिहारि ॥ विधितथाअस्तुकहिवदनचा
रि ॥ आरोहिहंसानिपुरपधारि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तवदैत्यगयोनिजराजधांन ॥ सुत
मिल्योआंनिदलबलसमांन ॥ उरधारिलयोतहांकुंवरराज ॥ सबनगरबजेवाजित्रसमाज ॥
उत्साहभएआसुरअवास ॥ नृत्यादिगीतनानाविलास ॥ प्रह्लादशहिततवगृहपधारि ॥
न्योछावरिकीनीअसुरनारि ॥ तहांसुनीइंद्रकीनीअनीत ॥ उरबढ्योक्रोधआसुरअमीत ॥
आसुरीसृष्टितबरचीऔर ॥ ब्रह्मादिरुद्रठयेठोरठोर ॥ दिग्पालधनवंतरिआदिदेव ॥भवभ
योविश्वकरमासभेव ॥ तिहिंरोषकरेधर्मावलीन ॥ पैतप्योअसुरभुवपापभीन॥नवषंडडंड
तिहिंभरहिआनि ॥ करजोरिरहतनृपसंकमानि ॥ तपहोमदानमषमिटैताम ॥ सुरअंसर
हितभएदुष्पदाम ॥ गोविप्रतिलकयज्ञोपवीत ॥ अपमानहोततुलसीअतीत ॥ सेवानदेव
आतिथ्यसाध ॥ इहिभांतिभएधरधर्म्मबाध ॥ झालरीघंटसुनियैनकांन ॥ द्विजदेवदुखित
अतिदीनमांन ॥ भूभईपापपीडितसपूर ॥ निरबीजगईग्रासितअंकूर ॥ छितिभईजबैभार
आक्रंत ॥ अवतारधरनचाह्योअनंत ॥ इहिभांतिहिरण्यकस्यपनृपाल ॥ सोकरैराजसुररा
जसाल ॥ इहिकर्मकालकछुभोअतीत ॥ अंकुरेपापनिजकृतअभीत ॥ उपजीकुवधिआसु
रअसाध ॥ सुतदेषिउरप्रल्हादसाध ॥ इकसमयराजमनचिंतकीन ॥ पशुप्रायनृपतिवि
द्याविहीन ॥ असुरादिपुरोहितमतिअषंड ॥ सुतशुक्रउभयमर्कारुशंड ॥ ॥ राजोवाच॥
॥ यहजांनिबोलद्विजनिर्विषाद ॥ प्रल्हादकरहुविद्याप्रसाद ॥ आसुरीधर्मविद्याउदार ॥ सो
पढहुजलसंजुतकुमार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कृतचर्चितकुंकुमअषितभाल ॥ लैचलेकुं
वरकहँचट्टसाल ॥ उपधानअरुणआवृतअनूप ॥ आरोहद्विरदरवितिमररूप ॥ निजशि
शुनिगईलैगुरुनिकेत ॥ त्रियदैत्यमानमंगलसमेत ॥ प्रल्हादसहितचट्टासमाज ॥ चटसा
लभएप्रापतसकाज ॥ जबभएकुंवरगुरुचरनलीन ॥ विप्रनिअसेषआसिपसुदीन॥कीयदा
नमानमंगलविधान ॥ सारदापूजिगणपतिसमान ॥ ऊँनमोसिद्धिअक्षरअनाद ॥ प्रल्हाद
पढतभएनिर्विषाद ॥ लिषिदएजथाक्रमशिशुनिअंक ॥ सोपढतसबैचट्टनिसंक ॥ तहांवे
ठिशंडमर्कासुभाई ॥ विचधरेजुश्रेष्टासनबनाइ ॥ करछटीत्रासआसुरकुमार ॥ सवपढत

आपसंथासुढार ॥ गुरगम्यसबनिभौअक्षरज्ञान ॥ प्रल्हादकरीसुधिगर्भथान ॥ उप
देशकरयोऋषिगर्भवास ॥ सोज्ञानपरमविद्याप्रकास ॥ जोकह्योहुतोनारदऋषीस ॥
सोनामपढ्योपदवंदिसीस ॥ विचिगर्भदईनारदवताई ॥ सोइहदयरहीमूरतिसमाइ ॥
करचारिसुभगतनसघनस्याम ॥ सविसालनेत्रवैजंतिदाम ॥ गदाशंषचक्रनीरजसनाल॥
आजानभुजाकंधरविसाल॥वामांगरमाउरमणिविकास॥शुभपीतबसनरथगरुडजास॥
यहदसाभईशिशुउरउदोत ॥ मनहाथभएज्योंमुनिनिहोत ॥ वाचासुकर्ममननिर्बिषाद ॥
उररम्यौस्यामअद्वैतवाद ॥ करलिषैकुवरहरिहरिसुअंक ॥ शुभथानपढैहरिहरिनिसंक ॥
॥ ॥ प्रल्हादउवाच ॥ ॥ सबसषापढहुहरिहरिसँभारि ॥ हरिपढतनआवैजन्महारि ॥
हरिनामशुभगनौकासंसार ॥ हरिपढहुहोहुभवजलधिपार ॥ हरिनामप्रीतिलावहुसुमीत॥
हरिआहिअषिलमायाअजीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ शुभनामकुंवरचट्टासमेत ॥ ह
रिहरिजुपढैलिषिपरमहेत ॥ सुनिभएशंडमर्कोसक्रुद्ध ॥ विकरालदंतवाणीविरुद्ध ॥ वैवर्ण
देहवैगंधतास ॥ आरक्तनेत्रउत्तंगनास ॥ कर्कसकरालभाषाकुचाल ॥ जिव्हाप्रलंबरजति
लकभाल ॥ फरकंतअधरश्रमजलसरीर ॥ कृतऊर्द्धरोमअंतरअधीर ॥ कुलगुरूअसुरवेम
हाकाय ॥ जाजुल्यभएकोनिकटजाय ॥ चर्मिकापानिदोरेकुचाल ॥ भयभीतभएतवगिरे
बाल ॥ तिहिचर्मकरयोकुंवरहिप्रहार ॥ फिरलगीतांहिभूल्योसंभार ॥ तिहिंचोटभयोविंव्ह
लद्विजात ॥ करिस्वस्थचित्तभोकरतबात ॥ ॥ गुरूवाच ॥ ॥ कुलदैत्यधर्मनांहिनकुमा
र ॥ यहकौनपाठकाढ्योकुचार ॥ हरिनामकहैंइहिंवंशकोइ ॥ नृपहतैताहिनिः संकहोइ ॥
वहनामकहावतहैमुरारि ॥ सुरहेतकइकआसुरसंघारि ॥ प्रपितामहतेरेजेछितीस ॥ सब
मारिभयोहैंआपईस ॥ हरिनामलेइकोउअसअज्ञान ॥ तूंकुंवरराजथंभननिदांन ॥ तव
पिताभ्रातअग्रजअजेय ॥ हरिणाक्षनामबलअप्रमेय ॥ तिहिंधरीभूमिसप्तमपयाल ॥ आ
खंडलेससुरपतिहिंसाल ॥ हरिहत्योताहिमसकासमान ॥ तूंलेतनामजाकौअज्ञान ॥ नृप
हत्योचहततिहिंवैरभ्रात ॥ तैंहेंजुकरयोवहमाततात॥ खलजीयतवासजोनिविषाद ॥ धिग
तासजन्मयहपरमवाद ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाकहँअरिविस्मरनहोइ । जोनहिंअरिउरसाल॥
ताहिजनैंप्रल्हादसुनि । वृथाभयोश्रमबाल ॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभसामदामअ
रुभेददंड ॥ गुरुदईकुंवरशिष्याअषंड ॥ इहिंपाठबच्योहूंकुंवरआज ॥ पुनिपढतसुन्यौंक
हिदेउँराज ॥ द्विजदयोबोधहितचितबडाइ ॥ प्रल्हादभयोगजसौचप्राइ ॥ गजमज्जनकृत
गजभ्रृतसंवारि ॥ छिनबीचपरैपुनिमिलैछारि ॥ त्रियलेईऔंचिद्दगलाजलीन ॥ प्रियामिल
हिंजाइपुतरीप्रवीन ॥ इहिंभांतिकुंवरचितमिलिअनंत ॥ पयपयहिंनीरनीरहिंमिलंत ॥ ॥
चट्टावाक्यं ॥ ॥ सबबैठिजाइचट्टासुथान ॥ प्रल्हादभएपूछतिनिदान ॥ काहिदैंनकहत
गुरनृपहिंबात ॥ भयहोतसुनतकंपितसुगात ॥ सोकहहुजिहिंनगुरुसुतरिसाहिं ॥ जिहिप
ढतहैंहिसुप्रसन्नराइ ॥ ॥ प्रल्हादउवाच ॥ ॥ कोराइकाहिसुप्रसन्नकाम ॥ सुप्रसन्नक
रहुजिहिंरामनाम ॥ जिहिंरोमकोटब्रह्मांडवास ॥ भुवभंगहोतत्रयपुरविनास ॥ ब्रह्मादिक
रततिहिंचरनसेव ॥ दगसूरचंद्रदेवाधिदेव ॥ यहजांनिपढहिंहमरामनाम ॥ करुणानि

धानसबसरहिकाम ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रटएकउठीधुनिरामनाम ॥ प्रज्वल्योसुन
तगुरुहृदयताम ॥ किलकारिउठ्योसंडाकुचीत ॥ भुवगिरेसबैबालकसभीत ॥ सानंदपढ
तप्रल्हादसूर ॥ गुरुत्रासचित्तआनेनमूर ॥ ॥ गुरूवाच ॥ ॥ करिकोपसंडबोल्योकराल ॥
तैंसबैविगारेअसुरबाल ॥ रिपुनामलेतकतबारबार ॥ यहछांडिकुविद्याकुलकुठार ॥
कविरुवाच ॥ यौंकहतमात्रसंडासुभाइ ॥ नरनारिमिलेशतजूथआइ ॥ आएजुदुष्टआ
सुरअभीत ॥ आसुरीसबैबैसीअनीत ॥ सोकहतगुराहिशिशुमारिमारि ॥ यहमूढलगाव
तवंशगारि ॥ यौंकहतचलेनरनारितांम ॥ उठिगएसंडमर्कासुधाम ॥ सबिषादग्रेहआएसु
विप्र ॥ सबमिलीआनिजुवतीसछिप्र ॥ निश्वासआंसुधाराजुनैन ॥ यौंदेषिसंडमर्काकुचै
न ॥ सबभईतहांजुवतीसत्रास ॥ पुनिरहीघेरिछांडहिनपास ॥ ॥ जुवतिरुवाच ॥ ॥
कछुभएआजअतिराजक्रुद्ध ॥ बढिपर्योकिधौंकाहूविरुद्ध ॥ अपमानभयोकछुराजद्वार ॥
दिनफिर्योकिधौंतिहिंदुषदुषार ॥ किहूंलईवृत्तिसकईछुडाइ ॥ द्विजजुवतिदुचितपूछतिसु
भाई ॥ ॥ द्विजोवाच ॥ ॥ कहाकहैंकछूकहिबेनजोग ॥ उरउठतिसूलअतिअप्रयोग ॥
॥ विपरीतभईइकआंनिबात ॥ सोदहतनहिनअंतरसमात ॥ युवतिरुवाच ॥ ॥ पै
अंतकहैंबनिहैंकृपाल ॥ सहिजातनहिनहमपरमसाल ॥ ॥ द्विजोवाच ॥ ॥ फलल
ग्योनृपहिइकबहुतकाल ॥ पठयोसपढावनचट्टसाल ॥ कुलअसुरउचितविद्याकुमार ॥
सबताहिपढावनकह्योसार ॥ सोलईएकद्वैवारसंथ ॥ पुनिग्रह्योकुंवरविपरीतपंथ ॥ यहसु
नैराजजोअनाचार ॥ करिहैनशंकहतिहैकुमार ॥ भवतव्यकछुयहबुद्धिवियाप ॥ अनकहैं
शंककहिजेतपाप ॥ शिशुहतैराजहमअजसहोइ ॥ पदछेदकरतसठसुकरसोइ ॥ यहभई
आनिचिंताअशेस ॥ कछुबनतनाहिनकारनविशेष ॥ सोग्रह्योएकवहिनामसार ॥ कैउप
जिकछुकृत्याकुमार ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनतविप्रवनिताअपार ॥ चटसालगईजहां
नृपकुमार ॥ द्विजत्रीयामिलिसबपाईसोध ॥ प्रल्हादकरतिशिष्याप्रबोध ॥ स्त्रियऊचुः ॥
कहिदैंनकहतगुरुनृपहिभेद ॥ तिहिंहोतहमहिंसुनिपरमषेद ॥ नृपहतैतोहिसंदेहनाहि ॥ य
हहोइप्रलयपुनिकहांजांहि ॥ मुषकवनदिषावहितबहिरानि ॥ अबछांडिपुत्रबिपरीतवानि
॥ ॥ प्रल्हादोवाच ॥ ॥ सबसुनहुमाततुमहृदयसुद्ध ॥ विपरीतबांनिजिहिंहारिविरुद्ध ॥
मोहियहैंबांनिउद्धारमूल ॥ सोतजौंनहीहैप्रांणतूल ॥ यहबांनिरहहुपैंजाहुप्रान ॥
निजबुद्धियहैमेरैनिदान ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ सुरनामलेततुमवारवार ॥ तिहिंका
जकहातुह्मारोकुमार ॥ सुरअसुरजबैप्रतिजुद्धहोइ ॥ सुरविजयपराजयअसुरसोइ ॥ सुर
पुष्टहोहिंमषभागपाइ ॥ मषबाधकरैनिस्सेसराइ ॥ तुमपढतअबैजोब्रह्मज्ञान ॥ जज्ञाधि
कारतामहिंविधान ॥ तुमपढहुअसुरविद्याप्रवीन ॥ दनुहोहिवृद्धिसुरपरहिषीन ॥ आगम
सुनिगमजलथलअकास ॥ पातालगमनसीषहुप्रकास ॥ छलबलरुधनुर्विद्याप्रवीन ॥ वस
करनजुद्धमायानवीन ॥ परकायगमनआकर्षप्रान ॥ छलवादपुत्रपढियैसुजान ॥ एसबैपढ
हुविद्याअषंड ॥ सुरराजनवावहुलेहुदंड ॥ प्रल्हादउवाच ॥ प्रल्हादबोलितबभक्तमोर ॥
हमतुमहिनांहिबकवादठौर ॥ मोहिलगतसुविद्यायहैमाइ ॥ जिहिपढेवंसनहीनरकभाइ ॥

मुहिसवैअविद्याअपरसूझ ॥ ग्रहिहूंजोनारदकह्योगूझ ॥ ॥ कविरउवाच ॥ ॥ सोर
ठा ॥ सबैरहीसमझाइ । बालकमूलनमानहीं ॥ जलहीतैंउपजाइ । ज्यौंजलकमलनभी
जई ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जेरंगेस्यामसुंदरसुरंग ॥ फिरिचढतनहिंतिहिंआनरंग ॥
त्रियजाइकह्योतबप्रियनिकेत ॥ प्रल्हादनछांडतब्रह्महेत ॥ गुरपुत्रशंडमर्कागदीर ॥ पुनि
आनिबोलिअंतरअधीर ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ मतिदेहिकुंवरअवदोसमोहि ॥ करता
रभयौप्रतिकूलतोहि ॥ हमकहतनृपहिअपडरडराइ ॥ विनुकहैंनिकासेदेसजाइ ॥ ॥ प्र
ल्हादउवाच ॥ ॥ तुमकहहुराजपरजहिंनिसंक ॥ मैंपढेउभयअद्वैतअंक ॥ सोतजोंना
हिंजोतजहिंप्रान ॥ यहसुनहुशंडमर्कानिदान ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ कुंडलिया ॥ मूढ
षिजावहिराजमत, जोपैंतुवबलवंत ॥ वाकेचलिबैंभ्रूलता, तेरोव्हैवोअंत ॥ तेरोव्हैवोअंत
द्वारवाकेगजगाजे ॥ देशकोशरथवाजिसुभटबहुसेनासाजे ॥ अरुवनिताशतजूथदंडसुरपु
रकोआवे ॥ दुष्टअसुरजिहिंदासमूढमतताहिषिजावे ॥ १ ॥ ॥ कुंवरोवाच ॥ ॥ छंदभु
जंगी ॥ कहामत्तमातंगजोद्वारगाजे ॥ वर्नीहेमजंजीरघंटाविराजे ॥ मदंमोपदंतावलीशु
भ्रसोहे ॥ भएकर्णसंगीजुभ्रंगीविमोहे ॥ शतंमेठघेरैंचलेआपरंगे ॥ पदंलोहजंजीरअैंचे
अभंगे ॥ वृथाएविनारामसंदेहनांहीं ॥ सबैनष्टजेहैंमनोअभ्रछांही ॥ कहावाजिवेगीवंधेवा
जिसाला ॥ जरंजीनराजैमणीकंठमाला ॥ महातेजताजीसुषंवागसाचैं ॥ चढंपीठिपीठं
थितंथालनाचै ॥ धरावायुधावैतिरच्छेसरक्के ॥ मनोफाललांगूलशाषाफरक्के ॥ सबैमृत्तिका
पिंडभूमीसमैंहे ॥ जगन्नाथद्वेषीभएअंतजैहे ॥ कहासिंदनंसंगसोभायमानं ॥ जटेहेमहीरं
नगंमुक्तमानं ॥ रसंरेसमंपट्टपूरेप्रमानं ॥ सबैरामहीनंसुमिथ्याबषानं ॥ कहासूरसामंतसे
वासयानें ॥ सजेदेहआयुद्धसन्नद्धसानें ॥ कहाद्वारनीसांनवाजैबधाए ॥ जिनैंगर्जतैमेघ
गर्ज्जालजाए ॥ कहाआतपत्रंजलद्दंसमानं ॥ समंदंडसोभातडित्तंलजानं ॥ कहासिंहपी
तंसुवर्णबनाए ॥ कहाचामरंश्वेतचहुघाचलाए ॥ कहाकोशधान्यंधनंअप्रमानं ॥ बनैदेस
वासंउदैअस्तमानं ॥ कहासेजसंप्यासुषंभोगसाजे ॥ वृथागीतनृत्यादिनानाविराजे ॥ क
हामंदिरंसप्तथानंअवासं ॥ बिनारामनामैसबैसून्यवासं ॥ कहादूतमंत्रीचलैचित्तलीनै ॥
कहासेनचतुरंगसंगप्रवीनै ॥ कहाकोटदुर्गंअगंजीतराजे ॥ सबैरंध्रकंगूरजंबूरसाजे ॥ ज
टेद्वारकप्पाटसारंजंजीरं ॥ निभैंषित्तिषाईभरीनित्यनीरं ॥ कहाभूपभूपंसतंसभ्यसोहे ॥ क
हादासखावाससेवादिमोहे ॥ कहावर्णच्यार्यौंप्रजावाचकारी ॥ कहापाटनंहाटवाणिज्यचा
री ॥ कहाद्यूतलीलारमैथानथानं ॥ वृथालक्षकोटीशदीपंध्वजानं॥कहाभांमग्रामीनडोलैवि
राजी ॥ समंहेममुक्ताजुशृंगारसाजी ॥ कहादुर्गमअद्रिउत्तंगथानं ॥ समंवारणंव्याघ्रजं
तूभयानं ॥ कहाभूमिआरण्यवृक्षंबनाए ॥ मृगंसावजंभेटआषेटभाए ॥ सरंसारसंअंबु
अंभोजफूले ॥ कहागुंजपुंजंरसंभृंगझूले ॥ कहातोयतेजंनदंद्वीपवानं ॥ महामच्छकच्छं
तटंपोततानं ॥ कहासागरंऔरकित्तीकियानं ॥ महाग्राहआवर्त्तजंतूभयानं ॥ कहाषानि
वैरागरंषोदिकढे ॥ नगंलालहीरामणीमोलबढे ॥ कहावाटिकावृक्षसौमैसुहाए ॥ रहैंनि
त्यफूलेफलेचित्तभाए ॥ समंअंगसोरंपिकंमोररौरं ॥ कृतंनिर्झरंसीतछायासजोरं ॥ कहाकू

पवापीसुढारंसवारी ॥ हिमंतारकुंभंभरैनीरनारी ॥ कहाछैलछाकेरमैंवारनारी ॥ विलासै रमैंसेजद्रव्याधिकारी ॥ कहाप्रेमवंतींप्रियाजूथपाए ॥ रसैंरूपकीरासिषेलैंषिलाए ॥ प्रिया मुग्धमध्याजुप्रौढाप्रमानं ॥ समंषोडसाभूषनंमोहमानं ॥ निजंनायकाअष्टभोगंअघानं ॥ अकंवाससौगंधरूपंसमानं ॥ सतंजूथदासीशुभंसेवसाजे ॥ बनेउच्चआवाससज्याविराजे ॥ कहाआपअैश्वर्यकीनैंकहाए ॥ बडीजोबडाईकहाविरदपाए॥ कहाभाटभाव्यौंकरैदानदीनैं॥ कहाआपत्रैलोक्यकौराजकीनैं ॥ विनाभक्तिएतेअनित्यंबषानैं ॥ सुहूंएकनारायणौंनित्यमा नैं ॥ सबैपाठझूठौपढैतूंजुशंडा ॥ यहैनर्ककोमूलदेष्योअषंडा ॥ ॥ गुरूवाच ॥ ॥ कहावंश विख्यातजैतैंबडाई ॥ कहारामनांमैंरटैसोभपाई ॥ कहाबापअज्ञातजैंदुष्षदीनैं ॥ कहाशत्रु कौनांमसानंदलीनैं ॥ कहाशत्रुसेवाकीयेधर्ममानैं ॥ कहाआपनौंधर्मसोहीनजानैं ॥ कहा शत्रुशोषीगिनैंमित्रदोषी ॥ कहाधर्मबाधीभयेपापपोषी॥ कहाबापअपमानअरुराममानैं॥ कहाधूरिपीलैंकहाछारिछानैं ॥ ॥ प्रल्हादोवाच ॥ ॥ कहामूढशंडाद्विजातीकहाए ॥ छक र्मभएऔत्रिसंध्याअन्हाए ॥ कहादेवअध्येनउपवीतधारैं ॥ शतंपुस्तकंपाठटीकासवारैं ॥ कणेछारदेषेकरैमूढमोही ॥ जथाभावव्हैहैंसबैसिद्धितोही ॥ ग्रहैबालज्ञानैंसुतूंअज्ञजाने ॥ बडेबंसबोरैंननर्कंबषानैं ॥ कहासेतमाथेकहाबालदेही ॥ भयोरामद्वेषीरुरामैंसनेही ॥ महा मूढभोवृद्धसोप्रेतलेषो ॥ भयोबालज्ञांनीवहैवृद्धदेषो ॥ हुतेपाद्उत्तान वृद्धंनृपालं ॥ ध्रुवं पांचवर्षैहुतेदेहबालं ॥ कहोकौंनबूझ्योतसौकौनिदानं ॥ इहांज्ञाननीकोकिधौंवैबषानं ॥ ॥ ॥ शंडोवाच ॥ ॥ दोहा ॥ दासभयौतूंशत्रुकौ । मेटिपिताकीकान ॥ जौया तैंदुषऊपजै । मेरौदोषनमनि ॥ ६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गुरुसुतयौंकहिग्रह गए । उरअंतरसविषाद ॥ सबनारीएकत्रव्है । पूछतिगतिप्रल्हाद ॥ ७ ॥ द्विजोवाच ॥ ॥ कुंडलिया ॥ श्वानपुच्छकीवक्रता अरुप्रल्हादकौभाव ॥ कोटिजतनकहिकहिथ के नैंकुनतजतसुभाव ॥ नैंकुनतजतसुभाव वंसमहँपोइबनाई ॥ पुनिजुरहीषटमास निकासि वांकीवंकियाई ॥ जुक्तिअनेकनहमकह्यो सोसबमान्योतुच्छ ॥ अपनौंभाव नछांडही जैसेंश्वाकीपुच्छ ॥ कविरुवाच ॥ छंदपधरी ॥ तबशुक्रवंशकीजेकल त्र ॥ सबजातभईप्रल्हादजत्र ॥ पुनिकुंवरआनिघेरयौसुभाइ ॥ तेकहनलगीबातैंबनाइ ॥ ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ मतिपुत्रजरावैजरैदेह ॥ मतिरामनाममुषफेरिलेह ॥ तुवआस करैंसबवंशआज ॥ तोहिदेषिप्रफूलितहोइराज ॥ तूंहोहिराजथंभनकुंमार ॥ सुरराजसाल सुरपुरउजार ॥ सुरहोंहिषीनआसुरंसहाइ ॥ अबकरहुकुंवरसौपैंउपाइ ॥ जबभयोजन्मते रोकुंमार ॥ नृपग्रेहबजेसानंदथार ॥ सुप्रसन्नरहैतोसोजुतात ॥ मुषलौंनउतारैदेषिमात ॥ दुषतेरैंहमकौंहोतदुष्ष ॥ सुषतोहिहमहिंसबपरमसुष्ष ॥ जाजुल्यतेजनृपआतिसवंक ॥ सो प्रानहनतनहींकरतसंक ॥ पितुवचनपुत्रजोकरैंभंग ॥ पितृवधकनामपावैअभंग ॥ पितु मातपुत्रजौदेइसुष्ष ॥ सोदेहधन्यकहियेविदुष्ष ॥ सुषहोइनपतिपरिवारसर्व ॥ सोपाठप ढहुतुमकुंवरअब्ब ॥ नवषंडदंडमांगहुनवाइ ॥ सुरराजसुरनिसंकामनाइ ॥ कीजैविवाहम नमोदकारि ॥ सुरअसुरनागकन्यासवारि ॥ वनिताविवाहकरियेविलास ॥ सौगंधसेजउत्त

मअवास ॥ प्रतिघोसकरहुनवरसप्रचार ॥ वनिताअनेकमुग्धाविहार ॥ यहवचनकह्योत्रि यवारवार ॥ करश्रवनमूंदिबैठ्योकुमार ॥ ॥ प्रल्हादउवाच ॥ ॥ इकरामनामकारनउ धार ॥ विनभक्तिवृथाजीवोसँसार ॥ यहजांनिपरतमोहिजगअंधार ॥ विषयादिकआसी पुषविचारि ॥ जगमिथ्याहैत्रईलोकराज ॥ सबबंधुआहिसंपतिसमाज ॥ कहाबैठंसिंघास नबनाइ ॥ सिरछत्रकहाचामरचलाइ ॥ कहाभुवनबनाएसप्तथान ॥ सुषसेजकहासौगंध समान ॥ कापुरुषप्रीतिजिहिंनासहेत ॥ शतपुत्रकहाजौजससमेत ॥ कहाआपबनैअरु त्रीयबनाई ॥ सुंदरसरूपमुग्धासुभाइ ॥ सौगंधकहाषोडससिंगार ॥ बहुरंगवसनपहिरं सुढार ॥ कहाभंजनअंजनतिलकतेल ॥ तांबूलकहारतिरंगपेल ॥ पदनूपुरकाशब्दायमा न ॥ छुद्रघंटिकहारत्ननिसमान ॥ नगजटितकहाकरवलयनेक ॥ अरुकहाकंठभूषनअने क ॥ श्रुतिकहाहेमकुंडलसमाइ ॥ बहुमूल्यनासमुक्ताबनाइ ॥ उपमाकहाषंजननैनमीन ॥ करभालकहाराचितिलककीन ॥ लटछूटिकहाचंचलसुदेस ॥ सुभसरलकहाजोपासकेस ॥ आवरनकहापटवासअंग ॥ मातंगचालअंगानिविभंग ॥ इहिंरूपकहाजोप्रियरिझाइ ॥ सबआहिअंतभूमीसमाइ ॥ त्रियआहिसबैनिंदितसुरूप ॥ परिकौंनकढैतिहिंमोहकूप ॥ त्रियरूपरसेवासबछितीस ॥ भएरंध्रसहसतनआपसीस ॥ पुनिहुतेब्रह्मइहिरूपलीन ॥ भौ पंचममस्तकआपभीन ॥ इकहोत्रिसंकुरघुवंशराज ॥ इहिमोहभएसबभ्रष्टकाज ॥ पौलस्ति हुतेअतिबलप्रवीन ॥ द्दगदोषबंससबनासकीन ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तो कहंसूझ्योतत्वयह । कीजैकहाकुमार ॥ जौपैंत्रियनिंदितमहा । क्योंव्याहतसंसार ॥ ८ ॥ तुमवृक्षनिहींउपजते । विनागर्भधृतमात ॥ यहउपदेसनतबकस्यो । जबव्याह्योतवतात ॥ ९ ॥ ॥ प्रल्हादोवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गुरुवधूकरतमिथ्याविवाद ॥ गुणकटुक बोधमधुरोसवाद ॥ जोसुन्यौंहुतोमैंगर्भग्यान ॥ तिहिंबिनानसूझतिमोहिआन ॥ मोजन निकह्योनारदप्रकाश ॥ सोतत्वग्रह्योमैंगर्भवास ॥ मतओरत्रीयातत्वहिविरोध ॥ सोलेहु नैंकममजननिसोध ॥ वहरातनहिनगजउदरवास ॥ ज्यौंफलकपित्थनिकसतप्रकाश ॥ त्यौंनाहिनरहतत्रियउदरग्यान ॥ सुरगुरुदेइसिष्यासुजान ॥ मोतुमहिनहींनवकवादठौ र ॥ हमभएअंधसूझैंनओर ॥ कुंडलियो ॥ कूकरसूखोहाडज्यौं, चावतहैस्वछंद ॥ तारूफूव्योकोरतिहिं, चलेरुधिरकेवृंद ॥ चलेरुधिरकेवृंद,अस्थिलोहौंलपटानौं ॥ ताकहचा टतश्वांन, लीयेएकांतसयांनौं ॥ त्यौंहीकामीपुरुषप्रेमजुतरहतविषयपर ॥ नहींअघातन हींतजतहाडसूकोज्यौंकूकर ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जोतुमजुबतीरूपवषानो ॥ तिन केमोपहसुनौंनिदानो ॥ जिहिंतनमज्जननवसतसाजै ॥ जापटतररंभादिकलाजै ॥ जिहि सिरमांगसुहागसंवारहिं ॥ धूपितकेशपासविस्तारहिं ॥ मध्यविभागमांगमुक्तागन ॥ ऋषिपंकतिमानहुनभअंगन ॥ सैंदुरमांगभरीशुभकारा ॥ रवितनयाबिचसरस्वतिधारा ॥ बनिपाटीपुनिआसितविसाला ॥ स्यामजलदशशिउपरसुढाला ॥ वैनीकुसुमकुरंबिबनाइ ॥ नागनिमनहुपयोनिधिन्हाइ ॥ जिहिसिरलटापासिमुकरावति ॥ रसवसकैंप्रियपाइलगाव ति ॥ मनमीननिअलकावनिसीसी ॥ कैचितपथिकपांसिपसरीसी ॥ राजतिमनिमयटी

काअैसो ॥ भामिनिभालभागमिलिजैसो ॥ कुंकुमबिंदुदेतछबिअैसी ॥ अर्धचंद्रपरवूढ नवेसी ॥ जिहिमुषभ्रुववल्लीनर्त्तावहि ॥ अलिसुतसेझ्झूझतछबिपावहि ॥ स्वर्णरेषत्रयअकु टीऐसे ॥ राजतिबीचकरतिसीजैसे ॥ जिहिंनाशावेसरिछबिछावत ॥ मुषमुक्तागहिशुकछिट कावत ॥ जिहिमुषश्रवनमुक्तमनमोहै ॥ स्वातिबूंदमुक्ताफलसोहै ॥ कुंडलकनकविरा जितकैसें ॥ ससिपारसुजुगदिनकरजैसें ॥ जिहिमुषसुभगकपोलसुहाए ॥ मानहुकनक तबकसेताए ॥ जेदृगविसदबंकरतनारे ॥ मीनमृगजषंजनगतहारे ॥ पुनिअंजनअंजित चषकोरे ॥ मदनविशिषमानहुँविषबोरे ॥ करतकटाक्षश्रवनलगकैसे ॥ उछलमीनजलबा हिरजैसें ॥ शुभगसुरूपइतेपरसोहै ॥ तरुणाकहातरुणिमनमोहै ॥ जिहिमुषमध्यदशन यौंलसै ॥ जनुविकसेदाडिमसेहसैं ॥ सहजरागअधरनिअरुनाए ॥ मानहुपानपानसेषाए ॥ सहजसुगंधस्वासछबिछावत ॥ मानहुंफूंकैमदनजगावत ॥ जिहिमुषबानीमधुरवषानौं ॥ मोहनिमंत्रपढतिसीमानो ॥ जिहिमुषचिबुकबिंदुबनिऐसो ॥ मानहुचंद्राहरदजैसो ॥ कंठपोतिशोभतिसविशेषा ॥ राजतरुद्रगरलकिरेषा ॥ पुनिउरमुक्ताहारसुहावही ॥ मेरहु तेसुरसरिअधआवही ॥ ग्रीवासुमनमालसविसाला ॥ मदनसदनमनुवंदनमाला ॥ वनि ताअंसविशेषबषानौ ॥ धियभुजलतापीठसेमानौं ॥ जेकरकमलकमलछबिदेंहीं ॥ उठत विरहउदधिग्रहिलैंहीं ॥ भुजजुगउर्द्धअलसबसजूटति ॥ छूटतिमनहुतडितसीतूटति ॥ करचूरीवलयादिकराजति ॥ मानहुंमदनफंदसेसाजाति ॥ करपल्लवमुद्राजुतमोहै ॥ चंपक लीसालंकृतसोहै ॥ पल्लवजातअरुणसुभऐसैं ॥ मकरकेतरथनोदनजैसें ॥ कुचकठोरकरि कुंभविराजत ॥ सुंढिभावरोमावलिसाजत ॥ उरजउत्तंगवनतजुगअैसे ॥ प्रियअभिला षअषिलफलजैसें ॥ चोलीउरजबनाउबनाए ॥ कामकलहभवकषचकसाए ॥ तबबनि असितकंचुकीतूटी ॥ कनकरेषधरिकामकसोटी ॥ पृष्ठिभागसोभायौलागति ॥ कामपाठ पाटीअनुरागति ॥ निम्ननाभिसरप्रियमनलोभा ॥ त्रिवलितरंगअतुलत्रियशोभा ॥ कटि मणिजटितमेखलाराजहि ॥ समतारहितसिघगणलाजहि ॥ जेनितंबकदलीसमलीनै ॥ जेपदकमलकमलछबिछीने ॥ एडीअरुणविराजतिअैसैं ॥ कदलीदंडतरनारगजैसे ॥ नू पुरध्वनिकिंकिणिरवराजै ॥ कामद्वारमनुमंगलबाजै ॥ गजगति चलतपतिहि अति भावति ॥ रतिमानहुंरतिमंदिरआवति ॥ जिहितनपुष्पाभूषणधारी ॥ मनहुंवसंतपु रीसुखकारी ॥ जिहितनसहजसुवाससुहाई ॥ मलयवातमनुचलिउपराई ॥ जिहितनव सनविराजितऐसें ॥ दामिनिजलदलपेटियजैसे ॥ तनबहुरंगवसनफहरावहि ॥ वातविधू तजलदसेधावहि ॥ जिहितनरतितैंछबिअधिकाहीं ॥ गतिहिविलोकिमराललजांहीं ॥ भू षणवसनबनीपीयप्यारी ॥ जिहिंसमग्रमूरतिसुखकारी ॥ नवसतसाजमिलनमनभावन ॥ मनुमनमथगृहरतिकरिआवन ॥ जिहितनपरसिप्रीयसुखबाढत ॥ जेमिलिविरहनाटसल काढत ॥ जेतनपतिसज्जाअनुसरही ॥ हावभावसंजुतमनहरही ॥ राजतनषछतप्रियअ नुरागन ॥ कंचनस्तंभखचितमाणिकगन ॥ सुंदरतनश्रमकंकणसोहै ॥ मेरुशृंगजनुओ सविमोहै ॥ जानतसवैसुखदजुवतीतन ॥ पतिअभिलाषकरतपरिपूरन ॥ जिहिंसतचर

नपलोटहिदासी ॥ देखतिहिहोइसौतिउदासी ॥ तुमजुवतीतनअंगविशेषे ॥ निंदितना सहेतमैंदेषे ॥ जेतनप्रियसोप्रीतिवढैहै ॥ सोपैंअंतछारामिलिजैहै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जैसेगंधविगंधमिलि । निकसतहैसबठौर ॥ देखोमहिमापवनकी । आपुन औरैऔर ॥ १० ॥ त्यौंहीसिसुप्रल्हादसिष । सबहिनकीसुनिलेत ॥ आपअसंगअलिप्त रहि । नहिछोडतहरिहेत ॥ ११ ॥ इहँविधिप्रश्नोत्तरभए । गुरुपतनीप्रल्हाद ॥ उठिगव नीघरिआपनैं । पतिहीमिलीसविषाद ॥ १२ ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ द्वि जपूछिउठोत्रियकोविचार ॥ कछुमानतहैशिष्याकुमार ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ समझाइक ह्योहमग्यानगूढ ॥ नहिंहोयएकतैदोईमूढ ॥ दोहा ॥ ॥ जोभावीसोहोइहै । नृपहिकहो समझाइ ॥ कहाकटारीचूकीहै । पेटलियैपतराइ ॥ १३ ॥ कहिजैप्रियतुमराजसौं । औरफे रसोबात ॥ जामैयहबालकजियै । व्हैनपरैउतपात ॥ १४ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ छंदसुरल ॥ तुमधौकहोकहाहमकहे ॥ जिहिमैराजारोषनगहे ॥ ॥ स्त्रियउचुः ॥ ॥ ज्ञातातत्वभयो यहबाल ॥ भाग्यतिहारेवढेनृपाल ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ अंततिहारौत्रियकोग्यान ॥ ऐसीकहैतजीयकीज्यान ॥ हमकहिहैंसुधीसमुझाइ ॥ जोहोनीसोहोउबजाइ ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ षंढारोषचढ्योअसराल ॥ अतिआतुरआयोचटसाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बा लबिलोक्योपढतगुरु । रामनाममनिःशंक ॥ विधिनालिषेसुनाटरै । लिपिललाटपटअंक ॥ ॥ १५ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मैंवरजोबालकबहुतवार ॥ नहिंतजतकुवि द्याकुलकुठार ॥ यहज्ञानछांडिअजहूंअज्ञान ॥ एकटुकभएक्यौंतोहिप्रान ॥ हमपाइधरत हुइजेकृपाल ॥ तूंकुंवरकुवरमनितजिकुचाल ॥ ॥ कुंवरउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहा करौंविधिनिर्म्मयो । एकैप्रानअजान ॥ षंडाहरिकेनामपर । वारिदेउंशतप्रान ॥ १६ ॥ ॥ ॥ षंडोवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ उठिचलहुबुलावैतोहिराज ॥ अबकहाहमहीवकवा दकाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनतऊठगवन्योकुमार ॥ सानंदजातपितपहसुढार गुरुदूरमिलेतबदौरिआइ ॥ प्रतिपरगबालजलचढतजाइ । गुरुगयौलियैजहांअसुरराइ ॥ शुभपाणिपट्टिअपनेंसुभाइ ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ गुरुकह्योतबैनृपसोंसुनाइ ॥ यहबाल कनाहिनपढतराई ॥ हमरहेजतनकरिकरिअनेक ॥ यहकुंवरनछांडतआपटेक ॥ अबहम हिदोषनाहिननरेस ॥ हमसबैकह्योकारणविशेष ॥ समझाइकह्योआपुनसयान ॥ जोपुत्रत जैयहब्रह्मज्ञान ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ नृपकह्योतबेपुत्रहिंरिसाइ ॥ तैंपढ्योकहामोकहँसु नाइ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नृपनिकटगयोबालकसधीर ॥ प्रल्हादनामहरिभक्तवीर ॥ ॥ बालउवाच ॥ ॥ मैंपढ्योउभयअक्षरअनूप ॥ शुभरामरामहरिहरिसुरूप ॥ ॥ राजो वाच ॥ ॥ एकोनपढाएतोहिअंक ॥ सोकहोपुत्रमोसौंनिसंक ॥ ॥ बालउवाच ॥ ॥ यहमोहिदयोनारदबताइ ॥ मनवाचकर्महमपढतराइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनत दैतपरजर्योअंग ॥ घृतभयोमनहुंहुतभुकप्रसंग ॥ करखड्गउठ्योआसुरकरूर ॥ सोग्र ह्योबीचमंत्रीसमूर ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ यहपढ्योभूलिअज्ञानआज ॥ अपराधछम हुराजाधिराज ॥ द्विजसुरभिबालत्रीयअबधदेव ॥ यहसुन्योशुक्रपहँपरमभेव ॥ यहजानि

कहतहमफेरिराज ॥ करजोरीतिहारेश्रेयकाज ॥ पुनिकरहुकृपाइतनीकृपाल ॥ इकवारपढा वहुफेरसाल ॥ यहपढैफेरितौदंडदीज ॥ कुलपाठपढेतोकृपाकीज ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ यहवैठ्यौहैमुषकालमांह ॥ इहिमृत्युबुलाईदैजुबांह ॥ तुमजाहुसचिवजहांकुंवरमात ॥ स मझाइकहोसबविवरीबात ॥ दुषवाइकहौतुमजातदूत ॥ मगछांडिकूपदिनपरतपूत ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ लैगयोतहांमंत्रीसत्रास ॥ प्रल्हाददहिनिजजननीत्रवास ॥ सबदयोक याधूहिंसाचिवसोध ॥ पुनिकरतभईपुत्रहिंप्रबोध ॥ बैठारिग्रंकसिरसूंघिमाइ ॥ सुतदेतभ ईशिष्यासुभाइ ॥ सक्रोधरूपनृपकोसंभारि ॥ द्रगभरतकयाधूदेतढारि ॥ राणीवाक्यं ॥ सुरभजतकछुनाहिनसुभाउ ॥ तुमउनहींनिरंतरवयरभाउ ॥ निसिदिवसपढैतूंशत्रुनाम ॥ तिहिनामपुत्रतोहिंकौनकाम ॥ देवासुरजुद्धनिसुनहुगीत ॥ सुरहोतविजयदनुपराजीत ॥ नितपढतजहीतूजानिइष्ट ॥ तिहिमार्योसंखासुरबलिष्ट ॥ तवपिताभ्रातहरिणाक्षनाम ॥ इहिंहत्योजाहितूंकहतराम ॥ तूंलेइवैरकेदासहोइ ॥ इहिकर्मभलोकहिहैनकोइ ॥ तूंपढत ब्रह्मविद्यानुकूल ॥ कछुगइअसुरविद्यासमूल ॥ कुलवधूवहैकुललाजलीन ॥ सोपुत्रपिता आज्ञाअधीन ॥ मातंगरहैअंकुशहिमांनि ॥ निर्मुल्यवहैगजतिलकजांनि ॥ कलअगर ईषकसीयैअसेस ॥ रसबासचढैबानीविशेष ॥ ॥ पुत्रउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैंक सिराखेप्रानमम । जोतिहिमिलेअभंग ॥ रंगेजुस्यामसुजानरंग । चढतनआनहुरंग ॥ ॥ १७ ॥ कहाबहुतबकवादलगि । मातासुनह्नानिदान ॥ मैंपायेहरिनामनिधि । दएबधाई प्रान ॥ १८ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ राणीवाक्यं ॥ ॥ तूंकहावैरलैहैअभूत ॥ जोभयोशत्रुसेवककपूत ॥ दुषबचनकहतरानीसुदेस ॥ सुतहेतइतैउतभ्रयनरेस ॥ गतिभइ छछूंदरिसर्पग्रास ॥ चषभंगतजैभषवपुविनास ॥ कुलराजसदामंत्राधिकार ॥ हमकहाकहैंतुम बुद्धिसार ॥ धनप्रानइहैमेरेकुमार ॥ सोआहिअंधछटिकाअधार ॥ धरिबांहतुमहिंसोंपतप्र धान ॥ सोकरहुभंगनहिंहोंहिप्रान ॥ किहिभांतिजियतरहिहैकपूत ॥ तबदानतिहारोमनहुंदूत मौवचनमंत्रिकहियेमहिप ॥ प्रज्वलतमनहुभयौंसांतदीप ॥ मृतगर्भभयोकैगर्भमोच ॥ कै भयोनष्टफलकहासोच ॥ इहिषोजपरहुमतआपराइ ॥ कुलभोकलंककरविषहिषाइ ॥ नहि कटतअंगअतिउपजिव्याधि ॥ पितवासपरैसिसुनहिउपाधि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ लै गयोदूतशिशुनृपनिकेत ॥ सविनीतवचनकहीसहितहेत ॥ पुनिकह्योसचिवरानीकहाव ॥ तिहिभयोकछुकसात्विकस्वभाव ॥ ॥ राजाउवाच ॥ ॥ नृपकह्योषंडमर्कासुटेरि ॥ ले जाहुसठहीचटसालफेरि ॥ आसुरीधर्मविद्याअपार ॥ अध्ययनकरावहुगुरुकुमार ॥ यह पढैकुविद्याफेरिमूढ ॥ ततकालकहहुमोसौंअगूढ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लिषिदईजाइ पाटीद्विजात ॥ प्रल्हादछुइमनुअग्निगात ॥ उठिगएतबैरनिवासराज ॥ भ्रकूटीकुटिलचष रक्तसाज ॥ पुनिकीनआनिरानीप्रसंस ॥ थितसेजजुक्तछत्रावतंस ॥ ॥ राणीवाक्यं ॥ अपराधनहिनममप्राननाथ ॥ हतकंठकरतवहमूढहाथ ॥ सुषभयोशत्रुवहिंमित्रषेद ॥ अ वलंबधारसोइकरतछेद ॥ यहभयोएककुलमाहिंकपूत ॥ सिसुहतैंपापउपजैअभूत ॥ पारि येनषोजवाकेकृपाल ॥ मुहँआसितदेहुदेसाहिं निकाल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विषरोषझा

रिसविनीतवाम ॥ मनुगरुडमंत्रअहिकरविराम ॥ पुनिद्वितीयद्योसगुरुप्रातकाल ॥ द्विजभ
एआनिथितचट्टसाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सिशुकैएकअधारहरि । झषपानीकीरीति ॥ जो
जलमीनहिपरिहरे । छांडैप्रानप्रतीति ॥ १९ ॥ पितावंधुपरजनतज्यो । माततज्योप्रल्हा
द ॥ सोहरिदृढकरिसंग्रह्यो । देषौप्रेमप्रसाद ॥ २० ॥ पढैनिरंतरनामहरि । अंतरपरनन
देह ॥ मनमिलिगोजलदुग्धलौं । बालकभयोविदेह ॥ २१ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ फरकंत
अधरद्विजसुन्योफेरि ॥ सिशुरामरामयहकह्योटेरि ॥ सुनिउठ्योतबैशंडाअसंक ॥ करच
र्मिसिशुहिमारतनिसंक ॥ कैछांडैमूरखरामनाम ॥ कैयाहिमारिडारौसुठाम ॥ करभएका
ठनहीचलतपाइ ॥ जलमिलितनेत्रनाहिदेषिजाइ ॥ तारूसजिंव्हमिलिदंतवास ॥ श्रुतना
सरुद्धनहीस्फुरतस्वास॥अकुलाइगिर्योगुरुलूठतभूमि ॥ अदभूतभयोसिसुरहेझूमि ॥ कछु
कालगएभौद्विजहिचेत॥उठिगयोदौरिछितिपतिनिकेत ॥ करपाघफिकारेमूढविप्र ॥ वृत्तां
तकहतराजहिसुछिप्र ॥ ॥ गुरुउवाच ॥ सुतरटतरामरामहिविशेष ॥ हमदेहिव्यथासं
थानरेस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रज्वल्योराजद्विजकहतवार ॥ आरक्तनेत्रक्रुद्धाधिकार ॥
ग्रहिलाउछुमैहूंसबैटेक ॥ यौंकहतदुष्टदौरैअनेक ॥ ग्रहिलयोअसुरबालहिउठाइ ॥ पट्टि
कापानिहरिरटतजाइ ॥ जबभयोदृष्टगोचरनरेस ॥ प्रल्हादकरतचिंताविशेष ॥ ॥ प्र
ल्हादउवाच ॥ ॥ कुंडलिया ॥ ॥ मोहिभरोसोस्यामको, सोमिथ्यानहिहोइ ॥ दीन
सहायकदुष्टहा, विरुदकहावतसोइ ॥ विरुदकहावतसोइ दीनदासनिरपवारे ॥ तहांप्रग
टेतिहिंरूप जहांजिहिंभाइसंभारे ॥ एसबकीटपतंग सोरसठकरतसरोसो ॥ सोमिथ्यान
हिहोइ मोहिजोस्यामभरोसो ॥ मेरेस्यामअधारहै, मनतूंरहीनिचिंत ॥ एसबबातावर्तु
लौ, तूलउडैहैअंत ॥ तूलउडैहैअंत कहूंपुरषोजनपैवो ॥ भक्तिविरोधीहोय इनहिसुज्यौंहै
जैवो ॥ प्रभुएहैस्वरसंगनेक आतुरकैटेरैं ॥ हूंसबतैबलवंत स्यामआधारसुमेरैं ॥ ॥ छं
दपधरी ॥ कविरुवाच ॥ ॥ त्रिणकूटमिलेआसुरअज्ञान ॥ प्रल्हादवन्हिकणकास
मान ॥ यौसूझिपरतिसबहीनिबाल ॥ प्रगट्योमनुआसुरप्रलयकाल ॥ करिचापबाणनृप
अतिसक्रुद्ध ॥ प्रहलादअग्रठाढोप्रबुद्ध ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ तबताहिभएपूछतनृपा
ल ॥ अबपढ्योसुमोहिसुनाउबाल ॥ प्रल्हादउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैंजुपढ्योइ
कनामहरि । तुमहिंसुनायोसब्ब ॥ वहैनिरंतरपढतहूं । कहातवैकहाअब्ब ॥ २१ ॥ कवि
रुवाच ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनतदैत्यधनुयुक्तबान ॥ आकर्षिकर्योलैंनिकटकान ॥
॥ राजोवाच ॥ ॥ अबबोलिछुडावैतोहिमूढ ॥ जिहिजपतनिरंतरज्ञानगूढ ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ नृपबानदेषिसिसुभयोत्रास ॥ हरिहृदयमाझमतछुवैतास ॥ राजोवाच ॥
॥ ॥ उरवेधकरौतोहिबानबाल ॥ प्रतिपालकरैबोलहुसुलाल ॥ निसद्योसजपततुमजास
नाम ॥ अबकहौकहांपैठेसुस्याम ॥ यहजानिकहतहमतोहिधूत ॥ अजहूंमतछांडहिप्रा
नपूत ॥ सबशत्रुपरोसीलगीआगि ॥ तबषनतकूपषठनीरलागि ॥ देष्योनकहुंतूंजपत
जास ॥ पातालबसैकैधौंअकास ॥ अनदृष्टभज्योतैरामदीन ॥ मुहिछांडिछत्रधारैप्रवीन
॥ सठभजैमोहिभजिकालजाइ ॥ जोरह्योआनिसिरपरभ्रमाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबहूं

काटौंसीसतुहि । लीनैषग्गदुधार ॥ अतिबलजाकेफूलते । कीजैताहिपुकार ॥ २२ ॥ ॥ छंदपधरि ॥ अबहमहुंदेषैनेकताहि ॥ आरतिसहाइजिहिबिरदआहि ॥ ॥ बालकउवाच ॥ तबकहूंटेरिजोहोइदूरि ॥ प्रभुजोतिरहीप्रतिघटानिपूरि ॥ दोहा ॥ वहजगमैंवहि मांझजग । बीजफलहिफलबीज ॥ जौंविद्युतमहजलवसै । जैसैजलमहिंबीज ॥ २३ ॥ वहरक्षकभक्षकवहै । वहैउपाजकमूल ॥ सोईमोहिछुडाइहै । औरनजिहिसमतूल ॥ २४ ॥ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सबदेखिसुनैमैंविधिविचार ॥ वहिविनाआहिसोइनहिंसँसार ॥ पातालसप्तजिहिचरनथान ॥ अरुकुक्षसप्तसागरप्रमान ॥ भुजमूलजासशुभगिरिनिशृंग ॥ दशदिसाजासुश्रवनसुअभंग ॥ शसिसूरवन्हिजिहिनेत्ररूप ॥ आकाशलिंग जिहिंपरमरूप ॥ जलपात्रपवित्रजिहिजलदजाल ॥ वसुमतीपीठबैठकविसाल ॥ नक्षत्रजालजिहिपुँहपमाल ॥ अरुवदनवदेवानीरसाल ॥ अष्टादशवनाजिहिंरोमराजि ॥ अरुव्योमजासमस्तकविराजि ॥ विनुमीचमोहिनाहिमरनदेत ॥ त्रिणरेणुतूलहूखबरिलेत ॥ विधिसचिवजाहिशिवदंडधारि ॥ कुतवालधर्मराजहिनिहारि ॥ सुरराजसहितसुरकरहिसेव ॥ प्रभुदीनबंधुदेवाधिदेव ॥ गजकीटतराजूएकमाह ॥ हरितोलिनीबाहैकर्षिबांह ॥ जिहिरच्यौविसदवैराटरूप ॥ ब्रह्मांडकोटिप्रतिरोमकूप ॥ तोसेअनेकतिहिमांझकीट ॥ निजईसकहतसीसाहिकिरीट ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बलबंडअसुरउरकोपकीन ॥ सुतसोक भयोअतिमनमलीन ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ असपुत्रविनाहैसुषअसेष ॥ इहिभएभएमुहिंदुखविशेष ॥ पछितातहिरन्यकश्यपअपार ॥ इहिभएबजेफूटहुसुथार ॥ विषअमृत वृक्षनहिभेदकोई ॥ फललगैतबाहिनिर्द्धारहोई ॥ कछुजानिपरतनहिबालकाल ॥ वंसावतंसकोउहोतसाल ॥ धिकमोहित्रियाकरग्रहनकीन ॥ धिककामभयोजिहिंरतिअधीन ॥ जोजानिपरैयहजन्मकाल ॥ कछुपापनहीअसहतेबाल ॥ कैराषनहारहिवोलिपूत ॥ सुबताइ कहांवहहैकपूत ॥ हूंतोहिजरहूअग्निमाह ॥ पुनिबोरिदैउँजहाँजलअथाह ॥ अहिमंकागिराउंगिरिउतंग ॥ गजमर्दकराऊंअंगअंग ॥ सोषनलैहैशोषिप्रान ॥ वहबोलतोहिराषैनिदान ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ जिहिंनाममर्त्यमृत्युलोकवास ॥ नृपगर्वकहाअवदेहतास ॥ सौगंधपुष्पसज्यासहास ॥ आभूषनभोजनरतिविलास ॥ सतजुवतिभजहिउरचरणधारि ॥ अरुपीयतसबैजलवारिवारि ॥ जिहिचलतबिछावहिसीसवास ॥ जिहिंदेहकरतमज्जनखवास ॥ जिहिदेहकाजतुमबह्यौगर्व ॥ सुनुताकेकहूंनिदानसर्व ॥ कैजारिअग्निउडिछारजाइ ॥ महिषोदिगढतदीवकमिलाई ॥ कैभूमिलुठतजहांनर्कजाल ॥ श्वागहतशिषासूकरशृगाल ॥ वपुदेतस्वजनजलमहँबहाइ ॥ कैखातकहूंकृमिकुलअघाइ ॥ मलमात्रदेहतिहिंकहामोह ॥ हैनासहेतजद्यपिससोह ॥ प्रभुजोतिरहीघटघटसमाई ॥ वहिजोतिलषैसोइस्वर्गजाइ ॥ मोहिरक्षवहैकहजोतिमूल ॥ सोईभासततोहीमहँसमूल ॥ जलथलअकासागिरिवसतसोइ ॥ भुवभूतरहीसोइजोतिभोइ ॥ जोलषैनिकटतातैनदूर ॥ जोकहैदूरतिहितजैदूर ॥ मनवाचकर्महरिचरनमूढ ॥ सोसेइकहौंतोहिज्ञानगूढ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हरिकर्ताहर्तासुहरि । हरिरक्षकसंसार ॥ हरिही

तैंसबऊपजै । हरिहीमँहसंचार ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हौंबच्यौ सहीमैंपुत्रजानि ॥ तूंचढ्ढतगयोसिरमेटिकानि ॥ अबमोहिकरावतशत्रुसेव ॥ मैंस बैदंडछाडेजुदेव ॥ कैपढैअसुरविद्याअज्ञान ॥ गजपासरुदाऊंहतौप्रान ॥ बालकउवाच ॥ ॥ कोपढैपढावैकैहैकौंन ॥ कुलकाहिअसुरविद्यासुकौंन ॥ गजकौनमरैमारैसु काहि ॥ कोप्रानइहांदेईसुकाहि ॥ शतकुंभभरेजलपूरथान ॥ शशिभावभएप्रतिविंबआन ॥ घटनष्टभएजलसूंनिवास ॥ कहचंद्रवहेएकैप्रकास ॥ यहजानिसमझिअजहूंमदंध ॥ वहजोतिगएतनभूसमंध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ यहसुनतबातपरजरिभुवाल ॥ आरूढबातजनुज्वलनजाल ॥ जरिचरनलोहहथकरीहाथ ॥ जलबोरिदयोसिसुकरिअनाथ ॥ जलजासमीनपावहिनथाह ॥ मातंगवुडहिजुतमकरग्राह ॥ ॥ दोहा ॥ पानिपिसूनपिसाचवन । पावकप्रलयप्रहार ॥ सुप्तप्रमत्तअरिष्टभय । दीनहिंदैवअधार ॥ २६ ॥ आठजामहरिनामरत । बालरह्योजलबीच ॥ कालग्रस्यौसौरोसबस । जग्योनिसाचरनीच ॥ २७ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तिहिआनिदरसदीयप्रातकाल ॥ सवसचिवजहांखलसुभटजाल ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ हसिकह्योराजसिसुषबारिलेह ॥ बहिगयौकिधौंकहुंतरतदेह ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यौंकहतदौरिआसुरअपार ॥ तहांगएजहांजलथितकुमार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तहँदेष्योअद्भुतचरित । सिसुबैठौजलजीति ॥ पारब्रह्मप्रल्हादप्रभु ॥ ऐसिप्रीतप्रतीति ॥ ॥ छंदपधरी ॥ तजिगयोनीरचहुओरपास ॥ जलमाझभयौथलसावकास ॥ हथकरीझरीअरुपैंजंजीर ॥ शुभपीतबसनपहिरैसधीर ॥ आचर्चितचंदनअंगराग ॥ पटभालतिलकशिरबनीपाग ॥ सबअंगशंखचक्रादिअंक ॥ सोबालदेषिप्रफुल्लितनिसंक ॥ चरजाइकह्यौनृपसोंविचार ॥ उरअसुरसूलउपजेअपार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसेप्रभुहिविसारिसठ । जिहिजगजोतिअगूढ ॥ आपुनभौडराचिलकलौ । ईसकहावतमूढ ॥ २८ ॥ प्रभुऐसेकौंपरिहरै । आपकहावतराइ ॥ करवीतूंबीदुष्टमन । नैकुनतजतसुभाइ ॥ २९ ॥ बालबच्यौजलथलभयौ । आसुरधर्यौअज्ञान ॥ पुनिअपनीजीयकीपरी । कांपनलागेप्रान ॥ ३० ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहदेवकवनअवतर्योआइ ॥ सुतकालरूपउपज्यौसुभाइ ॥ आकृतिसुभावनहिंअसुरबंस ॥ यहकपटभेषकोउअमरअंस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिभांतिअसुरउरमानिहारि ॥ सिसुलेहुकह्योजलतैनिकारि ॥ तब काढिलयोजलमग्नबाल ॥ नृपअग्रकह्योलैताताकाल ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ तबदेषिबालबोल्योनृपाल ॥ विचिधरहुअग्निज्वालाविसाल ॥ सठधूतकहिजुअनुक्रमसमेत ॥ जलमाझभयौथलकवनहेत ॥ जलजंतुप्रबलआवर्तग्राह ॥ मदमोखमीनपावहिनथाह ॥ दृढलोहपाइहथकरीहाथ ॥ छुटिगईसबेक्यौंएकसाथ ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ तैंबांधिमोहिजलमाझदीन ॥ करतारतहांममजतनकीन ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ कहिमूढजलहिकरतारकौथ ॥ तूंआहिउपासतसंकटचौथ ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ अष्टमीचोथिजानौंनआल ॥ परब्रह्मएकजानौंकृपाल ॥ मैंटौनाटामननहिनसाधि ॥ आकर्षदृष्टिबंधनउपाधि ॥ हूंएकउपासतरामनाम ॥ अरिष्टनिवारतवहैस्याम ॥ सबठौररह्योजलथलसमाइ ॥ वहि

बिनाआइसोइविनसिजाइ ॥ ॥ राजोवाच ॥ दोहा ॥ ॥ मोभ्राताहरिणाक्षनृप। हो ऊंपैबलवंत ॥ जुगबीतेइहिंठामसत। नहिदेष्योभगवंत ॥ ३१ ॥ बालहिछायाकालकी। भयौअनौषैज्ञान ॥ वापीसरवरनदविसद। कूपहिमैभगवान ॥ ३२ ॥ ॥ बालउवाच ॥ कालग्रह्योसोजानिजै । निकटनसूझतजाहि ॥ घटहीमहँबोलतप्रगट । अजौंनदेष्योताहि ॥ ३३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुनिलेहप्रथमनामाधिकार ॥ पुनिनिहतमोहिमतकरैवार ॥ इकनामद्विजातीअजामेल ॥ आजन्मभयोधर्महीअमेल ॥ तिहिंभजेअंतहरिपुत्रहेत ॥ गतिउर्द्धभईमनवचसमेत ॥ सुकनिसापढावतबारनारि ॥ हरिहेतभईसुरपुरविहारि ॥ वयपांचवर्षध्रुवतत्वसूझ ॥ पदउच्चलह्योदेषहुअगूझ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उरअसुरवचनलगिवज्रतूल ॥ सठभयोकोपतनमनहिसूल ॥ घृततैलतूलकाष्टजुसमान ॥ ग्रहरच्यौदुष्टभूतलभयान ॥ चहुंओररराखिआसुरअभूत ॥ मतनिकसिजाइकहुव्हैकपूत ॥ भ्रुवसंगकीननृपचषकरूर ॥ उचकाइलयौबालकसमूर ॥ आकर्षिदुष्टआसुरअनिष्ट ॥ प्रल्हादकस्यौतिहिग्रहप्रविष्ट ॥ दोहा ॥ राजाकीभगिनीजुदुष्ट। ढुंढानामअसाधि ॥ अगनिबंधअभ्यासबहु। साधितमंत्रउपाधि ॥ ३४ ॥ सोलैबैठिगोदमहि। प्रल्हादहिंतिहिंग्रेह ॥ लाइदईचहुघांअगनि । ज्वालकरालअछेह ॥ ३५ ॥ तहांलागीढुंढाजलन । विफलभएसबमंत्र ॥ बलछूटैप्रहलादकौ । लीनौसरणस्वतंत्र ॥ ढुंढावाक्यं ॥ संगतिसाधअसाधके। सदाहोतशुभकाज ॥ मेरेछूटेमंत्रबल। कोउफुरतनहीआज॥३७॥ ॥ बालकउवाच ॥ इहँदिनतेरीमान्यता। व्हैहैजगतअशेष ॥ जोकोउतोकहँपूजिहैं बढिहैआयुविशेष ॥ ३८ ॥ इहविधिप्रषणोत्तरभए। ढूंढाअरुप्रल्हाद ॥ बालहिंछियोनतापतन। वहैजरीसविषाद ॥ ३९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ परजल्योअनलगतिप्रलयकाल ॥ जाजुल्यगगनमिलिज्वालमाल ॥ आसुरीअसुरधिरिजूथआइ ॥ सबव्योमरह्योसुररथनिछाइ ॥ जबलग्योजरनमंदिरसुभाइ ॥ भूगगनभईधुनिहाइहाइ ॥ सुराऊचुः ॥ ॥ ससिसूररहेरथऐंचिहाथ ॥ दुषदीनसहतक्योंदयानाथ ॥ सुरनादभयोहाहाअकाश ॥ हरिराषिलेहुशिशुदुषितदास ॥ हरिकहियतुविरदअनाथनाथ ॥ यहकस्योसबनिबालकअनाथ ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वासुदेवगोब्रह्महित। संततदीनसहाइ ॥ दुषीभएदुषदीनकैं। अग्निभईजलप्राइ ॥ ४० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ज्वालाकरालजबमिटीजानि ॥ टारतअंगारनृपआपआनि ॥ पुनिभयौअनलज्वालाप्रकास ॥ कछुअसुरजरेनृपहेजुपास ॥ जबटारिकरेपछहाँअंगार ॥ जबहरितबीचबैठोकुमार ॥ वपुपीतवसनअरुतिलकभाल ॥ तुलसीदलमालाउरविसाल ॥ आसुरीजोनिसंसर्गपाप ॥ जरिगएसबैशिशुभौनिपाप ॥ तनताइकढ्यौजनुस्वर्णशुद्ध ॥ प्रहलादअमलदेषतप्रबुद्ध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तादिनतैपूजितभई । ढूंढाहोरीनाऊँ ॥ देषहुद्वेषीसाधुको। गारिलहतसबठांऊँ ॥ ४१ ॥ जालनबैठीगोदिलै। बालहिघातविसास ॥ सोप्रतिसंवतजालियतु। पात्रभईउपहास ॥ ४२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ खलसकलडरेभौकुशलबाल ॥ निहचैनृपसूझ्यौआपकाल ॥ कुलअसुरहोतअतिशयसकोप ॥ प्रहलादबदनत्यौंचढतओप ॥ नृपदेखिपुत्रमनमालेनकीन ॥ रिपुफेरि

जियौमनुव्हैनवीन ॥ आकाशभएजयजयासद्द ॥ सुरभयोहर्षआसुरविमद्द ॥ सुरलोकबज
दुंदुभिअपार ॥ सुरवधूवृष्टिकीयपुहपसार ॥ गंधर्वकरतरंभादिगान ॥ धिककहहिवंसआ
सुरअज्ञाँन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तृणनहींतूटतवज्रतैं । जोजमकरैप्रहार ॥ भक्तजरैक्यौंअ
ग्नितैं । जिहिंरक्षककरतार ॥ ४३ ॥ अबजुसाधुहरिभक्तिसौं । रहिवोचित्तलगाइ ॥ देषहु
जलमहँथलभयो । अनलभयौजलप्राइ ॥ ४४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नृपलयोनिकटबा
लकहकारी ॥ करजोरिरह्योसन्मुषनिहारि ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ वलिकहादईयहकौन
मंत्र॥जिहिभईअग्निसीतलस्वतंत्र ॥ क्यौंहुयेहरितजवअग्निमाह ॥ कछुपढ्योकिधोंसेलूषि
पांह ॥ कोउवीरकिधोंआराधकीन ॥ जिहिंबच्योअनलज्वालाअधीन ॥ ॥ बालकउवा
च ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिदेषैसुमरनकरै । स्यामविनासुरआन ॥ गरिफूटोजरिजाहुसो ।
रसनालोचनकान ॥ ४५ ॥ हरिकीएकउपासना । मेरैंसुनिभूपाल ॥ ज्यादिनऔरउपासि
ये । तबहीपहुंचैकाल ॥ ४६ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ क्यौंहुंनहोतउरदयारा
ज ॥ चहुंऔरदुष्टआसुरसमाज ॥ गिरिएकविकटओघटउतंग ॥ आकाशलगेअतिअग
मशृंग ॥ तरुलताअरुझितअप्रमान ॥ भयजंतुतहांकंदरभयान ॥ गुंजारसिंघप्रातिशब्द
होत ॥ पहुंचैनचित्तपक्षीकपोत ॥ नृपदयोतबैआइसरिसाइ ॥ सिसुडारिदेहुपर्वतचढाई ॥
लेगएदुष्टबालहिअनेक ॥ गिरिसीसअसुरसबगहैंटेक ॥ सुररथनिभयोसौभितअकास ॥
हाहंतवाणिकरुणाप्रकाश ॥ आकर्षिकंठशिशुदयोडारि ॥ हरिग्रह्योबीचकंदुकनिहारि ॥ गि
रिमूलधस्योसानंदबाल ॥ शिशुशीर्षवर्षिसुरसुमनजाल ॥ शिशुडारिदयोजबसुन्योराज ॥
सानंदचल्योजहांभृतसमाज ॥ गिरिमूलआइदेष्यौंनृपाल ॥ शिशुपढतरामरामहिंरसाल
मनअसुरनहिंनचिंतासमाइ ॥ इहिप्रानलेंउकोनहिउपाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ डारिदियौ
शिशुसैलतैं । झेलिलियौहरिबीच ॥ प्रभुजाकेरक्षकभए । कोबपुरानृपनीच ॥ ४७ ॥ ॥
॥ छंदपधरी ॥ लैगयोराजशिशुराजद्वार ॥ सबलएबोलितहांसर्पद्वार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
सर्पलपेटेकंठकर । तहांठाढोशिशुफूलि ॥ मानहुंचंदनवृक्षसौं । रहेभुजंगमझूलि ॥ ४८ ॥
छंदपधरी ॥ ॥ नहिंडस्योसर्पजबभक्तबाल ॥ तबछुटीजियनआसानृपाल ॥ जबफुरतक
छुनाहिनउपाइ ॥ तबसंधिविचारनलगेराइ॥फुसलाइबुलायोनिकटबाल॥तहांलगेदैनशि
ष्याभुवाल ॥ राजोवाच ॥ वसकर्मऔरआकर्षमंत्र ॥ सुतपढहुअसुरविद्यास्वतंत्र ॥ बा
लकउवाच ॥ कोअसुरअसुरविद्यानरेस ॥ मोहिकाजकहापढिवौविशेष॥ मोहिलागतवि
द्यासबैसूल॥इकरामनामउद्धारमूल॥सोपढतराइहुंसहितहेत॥दिनरातिनअंतरपरनदेत॥
कौसिद्धकौनसाधकस्वरूप॥कोविद्यअविद्याकौनभूप॥सविशेषरहीघटघटसमाइ ॥ स्वच्छं
दजोतिआरतसमाइ॥हूंदेखततोहिनपरतसूझ॥अतिवृद्धराजतौऊअबूझ॥ राजोवाच॥
अनबूझबिचारहूंताहिपूत ॥ कुलद्रोहरतजहिमतअभूत ॥ सानंदपढतजोशत्रुज्ञान ॥ क
लपाठलगतकरुवोनिदान ॥ तूंप्रेतलगेसीकहतबात ॥ वाताविशेषकैसन्निपात ॥ जोभजै
मोहिमनवाचलाइ ॥ तोकरौंवेगिमोसोंबडाइ ॥ रथकरीअश्वसेवकसमाज ॥ अर्धासनचा
मरछत्रसाज ॥ हिमग्रेहराजछितिअर्धदेहुं ॥ मुषकालमाझतैंकाढिलेहुं ॥ बालकउवाच॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तोसोतूंहिहोइन्नृप । मोहिनतोसौकाम ॥ मोकहाखैंचिवढाइहै । हूं तोनहिमृतचाम ॥ ५० ॥ मोकहँकहाबढाइहै । तूहीनासहिलीन ॥ हूंबाढ्यौभगवंतकौ । जगजाकेआधीन ॥ ५१ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ एरचितउच्चहिममयअवास ॥ परवालथं भकलसोप्रकास ॥ शुभजुवतिसेजमनसिजविलास ॥ तोसहितसबैहैकालग्रास ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ नृपग्रेहभयोतूंपुत्रआइ ॥ कन्यानभईसात्विकसुभाइ ॥ धिकतोहिजन्मस ठनष्टधूत॥कुलगारिलगावतिकाकपूत ॥ अजहूंजुसमझिभजमोहिआज ॥ जोवढ्योचहत शिरछत्रसाज ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बढ्योबढ्योनृपकाकहैं । सूझतना हिनिदान ॥ सोईबाढिवौजानितूं । जोउरबाढैज्ञान ॥ ५२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ संतोषस हितमनमानमारि ॥ कृष्णाभिलाषगुनगर्वगारि ॥ मनमोहअहंपदकरैनास ॥ सानंदरहै समसावकास ॥ सतसीलसुकृतगहिसाधुसंग ॥ परदारद्रव्यछांडैप्रसंग ॥ सुखसोकनबा ढैलब्धहांनि ॥ लघुरहैआपगुरुसबनिमानि ॥ उरसूझिपरैजबतत्वज्ञान ॥ सबराजरंकपे खैसमान॥गजकीटहोइजबएकइष्ट ॥ भवभूतगनैकरिपरमइष्ट ॥ निर्जीतशत्रुनिर्वैधनेह ॥ निस्सेषफिरैजलथलविदेह ॥ निर्लोभनिर्भयनिर्दोषनित्य ॥ हरिविनासकलमानैअनित्य ॥ षटचारिएकजबलहैतत्व ॥ पुनिहोइविमलमायाविरक्त ॥ वपुपंचभूतपिंडीबनाइ ॥ तूंका हिबढावनकरतराइ ॥ कछुमेरौमोमहँनाहिनराज ॥ तुमकाहिबढावनकहतआज ॥ तुमहूं तोछिनछिनघटतजात ॥ ताकौंकछुकरियेजतनतात ॥ व्हैहैनकछूबलघटैदेह ॥ यहसम झिकरहूंस्यामहिसनेह ॥ तुममोहिदिषावतराजलोभ ॥ सुनिलीजेताकेछद्मछोभ ॥ मन मोहलीनमायामदंध ॥ बहुभजहिताहिजेपासबंध ॥ सबकालरहैमनद्रोहलीन ॥ छनछन हिसूलबाढैनवीन ॥ अपमानअविद्याअनाचार ॥ सबदेषहुराजहीमैप्रकार ॥ पापानुराग धर्मांदहार॥शतनकैहेतनृपतासँसार ॥ सकलंकराजतवनकैरूप॥ कोदेखिपरैतिहिंपापकू प ॥ ॥ कविरुवाच ॥ सबथक्योराजकहिकहिसमूल ॥ प्रहलादएकमानीनमूल ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ नृपकह्योटेरितवपापतोहि ॥ तूंमरतबालनहीदोसमोहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ मुखरक्तविकटभृकुटीविरूर ॥ कृतकोपनेत्रलोहितकरूर ॥ विपरीतरूपवारणविशाल ॥ मातंगमँगायौतबनृपाल ॥ प्रभुवचनलीनसतपीलवान ॥ करवांसचरषिगजघोरि थान ॥ अतिकष्टसाधिवारणअभीत ॥ बैठारिझारिवचननिविनीत ॥ कृतबद्धकंठघंटास जोप ॥ पौंतारिचढ्यौगजभृतसकोप ॥ अंकुशअसंकवाचाअलीन ॥ कारिणीअनेकआव रितकीन ॥ घेर्यौपाहारजनुपीलवान ॥ खूनीमतंगभोजगभयान ॥ गजजूथमध्यमदगज गहीर ॥ जमरूपचल्यौऐंचतजंजीर ॥ जनकरेसूनन्नृपद्वारजाति ॥ जाजुल्यमनहुंजमकी जमाति ॥ इहिरूपभयौनृपदृष्टिआइ ॥ दृगसैनकरीतामससुभाई ॥ गजपेल्योजबप्रहलादओर ॥ भजिचलेलोकसबठौरठौर ॥ बैठोनिसंकप्रहलादबाल ॥ आनैनचित्तसिरभ्र म्योकाल ॥ गजभयौआनिसिसुचरनलीन ॥ करतारदीनरक्षाजुकीन ॥ गजलयौतबैग जभृतउतारि ॥ उरचरनचापिमस्तकउषारि ॥ दोहा ॥ हरिसबकेसंकटहरन । बालक हरिकोदास ॥ वंदिचरनप्रहलादके । गजफिरिचल्योप्रकास ॥ ५३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥

॥ नृपतबैमहलतैंउतरिआइ ॥ पुनिकरतहिरन्यकस्यपउपाइ ॥ तबबोलिपूछिमंत्राधिकार ॥ ॥ यहबालमरहिकोनैप्रकार ॥ इकअसुरनामशोषनकहाइ ॥ परदेहपबनव्हैपैठिजाइ ॥ उरपैठिप्रानसोषेअशेष ॥ भजिजातमूवैअज्ञातभेष ॥ संशोषनवोल्यौतबैराइ ॥ चरचले सुनतिअतिगतिपलाइ ॥ संशोषनपतनीसिरफिकारि ॥ सविषादजातवहराजद्वारि ॥ मि लिगईबीचिवहचरनिवाम ॥ सबिषादकरीनृपअग्रताम ॥ दुषकोनआइत्रियराजद्वार ॥ विपरीतवेषपूछहुंविचार ॥ पतिमोरबलीसंशोषनाम ॥ इहिंकुवरहत्योसोमध्यधाम ॥ बल वंतउहांअरुइहांबाल ॥ प्रह्लादचरितअदभुतभुवाल ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ मैजातन दैष्यौदेजुपीठि ॥ तबकहांहत्योइहिअसुरढीठि ॥ तबबोलिपरोसीअसुरराइ ॥ सबभेदसब निपूछ्यौसुभाइ ॥ प्रहलादरूपअतिवलयचारि ॥ संशोषनमाख्योभूपछारि ॥ शतषंडक ख्यौनाहिभईबार ॥ यहअबहिमारिआयोकुमार ॥ करजोरिरह्योसन्मुखसुबाल ॥ सक्रोध ताहिपूछतनृपाल ॥ छलकोनकह्योतैंकहहिधूत ॥ मातंगसहसजिहिंबलअभूत ॥ आसुरी धर्मविद्याअजेय ॥ वहसबैपढ्यौमोहिपरमप्रेय ॥ किहिभांतिहत्योतैंवहकपूत ॥ यहहोत मोहिअचरिजअभूत ॥ ॥ बालउवाच ॥ ॥ यहमर्मनसुइयोअजहुंराइ ॥ जोभयोवृद्ध अरुवनीआइ ॥ वहस्त्रजैसैंघरेवहैएक ॥ सोरह्योपूरिघटघटअनेक ॥ घटपोषिविनासैव हैसोइ ॥ तिहिलागिकहाअबकरैकोइ ॥ दिनदिव्यरूपप्रभुतुहिनदीस ॥ छतनेत्रअंधभौं तूछितीस ॥ षुनसाइउव्यौनिसिचररिसाइ ॥ जबभएसबैनिःफलउपाइ ॥ मुहबांधिपस्यो तबसईसांझ ॥ दैपाटअकेलौभुवनमांझ ॥ निसिचारिजामसोचतनृपाल ॥ इहिभांतिभ योतहांप्रातकाल ॥ नृपआइतबैशुभसभाथान ॥ अकुलाइनगरसबफिरीआन ॥ कोउअ सुरजाहुमतआपकाज ॥ आज्ञाप्रमादयहकह्योराज ॥ इहिभांतिफिरैटेरतअछोप ॥ कृत आहिभयाअतिराजकोप ॥ दरबारनऐहैआजकोइ ॥ नृपहतैताहिनिःसंकहोइ ॥ राजासु बैठिदरबारताम ॥ मिलिसचिवसुभटभृतठामठाम ॥ नृपभईतबैआज्ञासुफेरि ॥ थलएक रचहुआरण्यघेरि ॥ प्राकारओटकछुबरनसूझि ॥ हितअहितसबैतिहिठामबूझि ॥ आर ण्यमांझग्रहरचिअनूप ॥ जटिपाटथंबपाषाणजूप ॥ मिलिअसुरखोदसबवृक्षमूल ॥ चहुंओरकख्यौचौगानतूल ॥ चवदिसाथानजोजनसुअंत ॥ तहांसूझिपरेचींटीचलंत ॥ बैशाखमासशुभशुकलपक्ष ॥ प्रारंभचतुर्दशितिथिप्रतक्ष ॥ सिंघासनचामरछत्रसाज ॥ तिहिग्रेहभयोथितिआनिराज ॥ सन्नद्धबद्धआसुरसहाइ ॥ सबमिलेआनिअपआपभा इ ॥ वानीविलासकर्कसविडंब ॥ कालीकरालजिव्हाप्रलंब ॥ पर्वतनिदेहचषअरुणकूप ॥ गिरिगुहानाशश्रुतिसूपरूप ॥ कृतकालदंतमानहुकुदाल ॥ मुखमूछगर्दभापूछमाल ॥ सि रकेसउर्द्धकपिलेकुसाजि ॥ विटकोडरोमतनरोमराजि ॥ भुजदीर्घमनहुंतरुषासभाई ॥ अ हिषंडकरनिपल्लवकुभाइ ॥ षरनषरमनहुंषरषुरीलेषि ॥ वपुचर्म्मचर्म्मगोधाविशेषि ॥ गज चरणचलतगतिउंटगाज ॥ कारेकुरूपकर्कसकुसाज ॥ सिरलीपिअरुणचंदनसुभाइ ॥ अ सवनैसुभटमुंडनिमुंडाइ ॥ तेशुभटशस्त्रअस्त्रनिसजूप ॥ बिचिकरीएकपंकतिविरूप ॥ ति हिपारपंतिपाइकप्रकाश ॥ करफरीषग्गकूदहिसहास ॥ विचमल्लभुजाकंधरविसाल ॥ अ

स्फोटकरहिंबोलहिंकराल ॥ गजफिरैसप्तआवलिगजंति ॥ प्रजदुष्टरहेकरजोरिपंति ॥ संचारनहिनजहांपवनसूझ ॥ यौंकह्योदुष्टमंडलअगूझ ॥ अरुमिलीदुष्टजुवतीनिजाल ॥ विकरालरूपरतिछुधितबाल ॥ मंत्राधिकारमतिभएभूल ॥ सिरपरीकालछायासमूल ॥ थिततहांनृपासननृपमलीन ॥ वरदयोब्रह्मसौंभयोषीन॥मतिघटीभयौउरउलटग्यान ॥ घटपापभरुयौभुवभारमान ॥ असदीसहिरनकस्यपनरेस ॥ दढग्रहेमनहुंकरकालकेस ॥ धरभईजबहिभाराजुक्रांत ॥ मतिचालभयोआसुरअमंत ॥ विहसांहिमलिनअंतारिजुवाम ॥ कवहूंनभईतेतृप्तिकाम ॥ नृपकह्योतबैप्रतिहारटेरि ॥ यहकहोबचनसबहीनिफेरि ॥ इहिमंडलआवैअवरकोइ ॥ विनुअसुरदेवमानुषजुहोइ ॥ धरिलेहुअचानकताहिअंक ॥ यहभयोनृपतिआइसनिसंक ॥ कुलधर्ममिटतजुनकरिउपाइ ॥ धिकतासजनमयौंकहतराइ ॥ प्रहलादहततजोराषिलेहि ॥ ममशत्रुजुवाकहँजानदेइ ॥ जिहिमाझिहोइहरिभागिजाइ ॥ सकुटुंबहतौतिहिंकहतराइ ॥ निजदाउपरेहरिपकरिदेहु ॥ बलकरैसबैमिलिमारलेहु ॥ हुँशियाररहहुआयुधसजाइ ॥ मतिशत्रुकहूंहैभागिजाइ ॥ सबभयोजबैमंडलसुरक्ष ॥ प्रहलादबुलायौतबप्रतक्ष ॥ नृपदुष्टविदाकिनेअपार ॥ करिजतनघेरिलावहुकुमार ॥ प्रहलादप्रतहितिनकह्योजाइ ॥ चलिकुंवरबुलावततोहिराइ ॥ प्रहलादगयौतबग्रेहमात ॥ हूंजातबुलायौवेगितात ॥ ॥ रानिवाक्य ॥ ॥ तबकह्योजननितवविजयहोहु ॥ सोपढहुपिताजिहिंकरैमोहु ॥ ॥ प्रल्हादउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हुंनहीचाहतइहिजनम । मातपिताकोमोहु ॥ स्यामसनेहीउरवसत । तासौंनिश्चलहोहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यौंकहिचल्योप्रणामकारि । मातासौंप्रहलाद ॥ जाकोसाहसजगविदित । उदितभयौउदमाद ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सिसुचल्योदुष्टपहुँचैनआइ ॥ सोगयोबीचमंडलसुभाइ ॥ नृपअग्रभयोकरजोरिबाल ॥ करधनुषबानसंजुतनृपाल ॥ अतिरूपबालसोभाउदार ॥ पुनिभक्तभेषकीनैकुमार ॥ हरितिलकभालउरतुलसिमाल ॥ वपुपीतवसनरंजितविशाल ॥ परिवेशराहमनुशशिसमीप ॥ अंधारबीचजनुरविप्रदीप ॥ त्रिणकोटमध्यकैअग्निज्वाल ॥ विचअसुरलष्योयौंपरतबाल ॥ सुरलोकसुनीजबयहअनीति ॥ सुरचढेसवैहरिभक्तप्रीति ॥ इंद्रादिविमाननिगगनछाइ ॥ सुरआइसबैअपनेंसुभाइ ॥ रविचंद्ररहेथितद्वैप्रकास ॥ अरुपवनगवनविथक्योप्रकास ॥ पसुपक्षिकरतकरुणापुकार ॥ करतारकरहुरक्षाकुमार ॥ आकाशछयौजनुजलदजाल ॥ बनिरहेदेवसिंदनविसाल ॥ धिक्कारकहहिसबअसुरजाति ॥ यहपुत्रहतनक्यौंउरसमाति ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ करधनुषतानिबोल्योकरूर ॥ जिहिकरतपैजसोकहाक्रूर ॥ अबलेहुबेगिरक्षकबुलाइ ॥ यहहनतबानउरवेधिजाइ ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जोपशुहैइततेरयौं । करिऊठेहंभार ॥ अदभुतजोतिअनंतप्रभु । घटघटमहँकरतार ॥ मोमहँतोमहँकाठमहँ । गजकीटीमहँसोइ ॥ ताकहँटेरिबुलाइयें । जासौंअंतरहोइ ॥ मोकहसूझतमोरप्रभु । सबहीघटसंबंध ॥ तोहिनसूझतिबावरे । आंषिनहिंछतअंध ॥ ॥ राजावाज ॥ ॥ तूहमहीकहँगुरुभयो । झूठबतावतसार ॥ अपनोप्राननराखही । मारतपाइकुठार ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ दसमासरह्योतूउदरकूप ॥ पुनि

भयोजनमसुंदरसुरूप ॥ लेगोदलडायौमाततात ॥ कुलधर्मग्रहेंयहहोइविख्यात ॥ लैतोहि
पठायोचट्टसाल ॥ कुलपाठतज्योतोहिसूझिकाल ॥ यहसैसवजैहेंअवहिमूढ ॥ पुनिआनि
होइजोबनारूढ ॥ सुखसेजतरुणिसौगंधवास ॥ गजवाजसुभटसेवाविलास ॥ सुखकरहुकुंव
रधरिछत्रसीस ॥ हठछांडिक्यौंनहूजैछितिसि ॥ बालकउवाच ॥ कासुंदरिमंदिरसेजवा
स ॥ गजवाजिकहानृपताविलास ॥ सिरछत्रकहात्रैलोक्यराज्य ॥ बहुसुभटकहाजोसेवसा
ज ॥ नृपभएभक्तिजेद्वेषिकारि ॥ जगगएजुवालौंजनमहारि ॥ राजोवाच ॥ तिनहारि
जनमसुनिधूतबाल ॥ कुलपाठलग्योजिहिपरमसाल ॥ जिहिंकरीशत्रुसेवासहास ॥ जेभ
येशत्रुकेदीनदास ॥ कुलपाठतज्योपढिशत्रुज्ञान ॥ तेहारिगएजगजन्मजान ॥ जलमांझर
हतजेसीतकाल ॥ पंचागनितापहिउष्णकाल ॥ वर्षाऋतुमंदिरछांडिजाँहि ॥ गरिदेहतज
लहिमअद्रिमाँहि ॥ अद्धासौंषोडसदानदेहि ॥ हयमेधकरैदिक्षाजुलेहि ॥ करकंठकाटिअर्पे
हिंमहेस ॥ तबहोहिचक्रवर्तीनरेस ॥ करिउग्रतपस्याधूम्रपान ॥ तबसीसछत्रधारतनिदा
न ॥ सुखसबैकहततूंविषकपूत ॥ नृपग्रेहजन्मभयोवृथाधूत ॥ सठकीटछहातोहिराजका
ज ॥ तुहिदेखिलगतकुलअसुरलाज ॥ बालकउवाच ॥ छितिनृपतिकहाजोविजयकीन ॥
भरिअवनिकहाजोदंडलीन ॥ अरुकहालह्योजोइंद्रराज ॥ हरिविमुषलगावतिकुलहिलाज ॥
हरिविमुषहोहिजेनृपकहाइ ॥ जगजीयतजनमजैहैगवाइ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ हमजी
यतपुत्रजनमहिगमाइ ॥ सिरधरैछत्रतेलगतपाइ ॥ सुनिजैनकहूंदेषैनकोइ ॥ तिहिंकरत
सेवतुमप्रसन्नहोइ ॥ अबजन्मातिहारोधन्यपूत ॥ जोभयौशत्रुसेवककपूत ॥ ॥ बालक
उवाच ॥ ॥ हौंऊंजुकहतमानुषीदेह ॥ दुर्लभ्यराजनाहिनसँदेह ॥ प्राचीनपुन्यतुमल
हीसोइ ॥ सोइकरहुजतननहींनासहोइ ॥ नहिछूटजतनकरिहोनृपाल ॥ इकवीशचोक
अमिहौविहाल ॥ भवभूतहोतसबगर्भवास ॥ सहिदुसहदुःखछुटतप्रकास ॥ उतपत्तिसब
निजलबूंदएक ॥ पुनिवरणरंगआकृतिअनेक ॥ अधवदनऊर्ध्वपदस्वासरुद्ध ॥ गतिए
कराजरंकनिप्रबुद्ध ॥ जिहिंजठरज्वालसबजरतजाइ ॥ तूंनहिनजख्योकाकैप्रभाइ ॥ जिहिं
काढ्योज्वालकरालमाझ ॥ सोविसरयोसूझिनभोरसांझ ॥ लगिपवनभयोसोछुधालीन ॥ क
रताराविसारिजिहिंमोषकीन ॥ जबचल्योपाइलगिखेलबाल ॥ तजिछुधाप्यासशिशुसंगजा
ल ॥ पुनिभयोजबैजोबनप्रकाश ॥ तारुण्यतेजविषयाविलास ॥ अभिषेकभयोभुवपति
कहाइ ॥ धरिछत्रसीसचामरचलाइ ॥ यहदेहराजजिहिकुलअधीन ॥ शृंगारकरतनितप्र
तिनवीन ॥ तनछांडिजबैहरिजोतिजाइ ॥ कहिछियाछियासबकुलघिनाइ ॥ प्रतिघौसपी
यतजेनीरवारि ॥ करिताहिनिगोडीदेतजारि ॥ जिहिदेषिगर्वतोहिभयोराइ ॥ गजवाजि
आमनहींसंगजाइ ॥ सौगंधचढताजिहिवारवार ॥ सोदेहीव्हैहैअंतछार ॥ षट्रसनिदेह
पोषतभुवाल ॥ कैतासअघैहैस्वानस्याल ॥ ॥ कुंडलिया ॥ ॥ बैसेप्रभुहिविसारकरि,
पूजतआनसुरूप ॥ अंधअंधकेकंधचढि, घौसपरतसठकूप ॥ घौसपरतसठकूपगर्भकौवा
सनजानैं ॥ जिहिंकाढ्योवहिकष्टताहिनाहिंनैकपिछानैं॥ पुनिएहैंवहघोसजुतेदुषदेषेजैसैं ॥
आपुभएअवईसआहिविसरयोप्रभुवैसैं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ जबसु

नैममर्मछिदवचनराइ ॥ अतिकोपचढ्योउरअसुरआइ ॥ करिक्रोधकह्योनृपवचनएह ॥ तोहिराषैताकहँबोलिलेहु ॥ तबरक्षकदेषेहमहुताहि ॥ किहिरूपरंगअरुकोनआहि ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ तुबदाष्टिछईहैकालभूप ॥ भवभूतवहैवाकोस्वरूप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जलथलकाठपषानमहँ । हैप्रभुहीकोवास ॥ घटघटप्रातिबिंबितभए । आपुनवसौंहिअकास ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ हरितूंजुकहतपाषानमाहि ॥ यहथंभकछूपाषाननाहि ॥ पाषानमझहरिबसतआहि ॥ यहथंभबुलावहुवेगिताहि ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मेरोप्रभुयाथंभमहँ । सोमिथ्यानहिंहाहि ॥ मनवचकर्मबुलाइहू । दरसनदैहैमाहि ॥ ॥ राजोबाच ॥ ॥ सोमनवचकरिवोकहा । मरतेहूंजुनहाइ ॥ तबदरसनकरिहौकहा । उरलैहूसरपोइ ॥ गणबिदेशनिबंधुसब । तरुणीतज्यासनह ॥ कूपनिसीपशुमरिगए । दूधनिवरसहुमेह ॥ मैंमाख्योउरऐंचियह । बानप्रानलेजाइ ॥ तबयोहरेकरैवेकहा । मूवेवैद्यजुआइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वैशाखशुक्लचौदासविनाल ॥ रविहोतअस्तगतसंधिकाल ॥ प्रहलादकरीकरुणापुकार ॥ थहराइथंभतबपरिदरारथरहरतथंभडगमगितगेह॥हलहलितभूमिडरिअसुरदेह ॥ कसमसितकमठफणलसितशेष ॥ उरपरियत्रासआसुरअसेस ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ भुवभारउतारतप्रभुप्रवीन ॥ हरिइतौझेरकबहूनकीन ॥ यहमूढदिषावतमोहित्रास ॥ अबदेहुदरसकरुणानिवास ॥ दखदीनहरनदेवाधिदेव ॥ सबकालकरतरुद्रादिसेव ॥ पितुमाततज्योहूंकरिअनाथ ॥ काव्हैहैंमोहिदीननाथ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ घनाक्षरी ॥ ॥ अखिलजगतसबआपनैकरमबांध्येनाचतहैताहीदैदैतुमहिनचाइवौ ॥ कर्त्तुअकर्त्तुनाथअन्यथासमर्थ हरिविग्रताहुमनभेनमनकोबहाइवा॥अतिहरसिकरमारसजोरहतरसेयेहैतउचितपैविरदविसराइवौ ॥ मोहूसेपतितनकीपुकरजोनलगैतोछांडिदेहुपातितउधारनकहाइवौ ॥ कविरुवाच॥छंदपधरी ॥ यहकहतगर्जपहुंचीअकाश॥इंद्रासनडोल्योअतिसत्रस ॥शिवटर्योजोगानिद्रासनंध॥ मदसुकितभएदिग्गजमदंध॥दिगपालचाकितब्रह्मंडडोल ॥ अकवकितअमरनहींफुरतबोल॥थकिरंभनतेगईतालचूकि॥मुषहासत्रासनिस्वसमूकि॥जयजयनृसिंहसुरभयोउचार॥ब्रह्मादिलख्योभुवटखोभार॥थहराइघोषतबफट्योथंभ॥अवतारभयोनरहरिअसंभ॥ कटकटहिदशनदष्ठाविकास॥शशिसूरज्वलनत्रयचषप्रकाश॥ कृतजृंभप्रदीपितमुषकरालसारक्तदिव्यजिव्हासचाल । कृतभृकुटिकुटिलवंकटसकोप ॥ उद्धसितसटावपुपीतओप ॥ खरनखरवज्रपरकरउठाइ ॥ आछोटआमेतशिरपूंछआइ ॥ धूंकारशब्दगर्जितसघोर ॥ विकरालरूपनरसिंधवीर ॥ प्रभुउचकिहिरनकस्यपपछार ॥ धरिगोदभएथितमेहद्वार ॥ दनुउदरशिखरनखरनाविदारि॥ आनंदसुरनिजयजयउचार॥ तहांकरीदैवक्रीडासुतंत्र ॥ आदौलहारउरअसुरअंत्र॥ आसुरसंघारिमायाअनूप ॥ हरिभएकालभगवानरूप ॥ रक्तलिप्तवदनकरअरुणरंग ॥ भृकुटीविलासत्रयलोकभंग॥ आसुरीगर्भस्त्रावितअपार ॥ शिशुकरतसभयहाहापुकार ॥हामाततताततातेतिहोइ ॥ कहूंशष्टआनत्रातानकोइ ॥ वृषभासनबंछितमौविलास॥ शुभरचितसगणनाटकसहास॥ करडमरुडाकहरसमरक्रूद्ध॥ ष

रषरिहियंत्रजुग्गिनिमसुद्ध ॥ वेतालतालमिलिहि कवीर ॥ गुरप्रेतयक्षगर्जिनगहीर ॥ डाकिनीडाकत्र्यंबकतहक्क ॥ गोमायुचिल्हगृध्रग्गहक्क ॥ आनंदेनारदअंगअंग ॥ यहमिल्यो आनिअवसरअभंग ॥ ऐरावतआरुहइंद्रआइ ॥ वरकुसुमवरषिदुंदभिवजाइ ॥ शुभकरतअमरकन्यासुगान ॥ नृत्यादिगीतवाजेतविधान ॥ गधर्वकरतनाटकसुगेय ॥ उच्चारविरदतुंबुरुअजेय ॥ दिग्गजारूढदिगपालआइ ॥ सबकरतशब्दजयजयसुभाइ ॥ पगधारिहंसवाहनप्रकास ॥ शुभदेषित्र्यक्रीडाविलास ॥ चववेदउक्तहितमंत्रचीन ॥ मुषचारिउचितआसिषसुदीन ॥ तेतीसकोटिसुरकहततामे ॥ भुवभाररह्योप्रभुधर्मधाम ॥ ऋषिकहतभएआनंदएव ॥ जगजयतिजयतिनरसिंघदेव ॥ सकुटुंबहिरणकस्यपसमूल ॥ हरिक्रोधानलजरिसलभतूल ॥ कछुबचेभाजिआसुरकुचार ॥ निरलेपकर्योप्रभुभूमिभार ॥ भयभीतभएऋषिदेवभूप ॥ शुभनिकटआइकमलासुरूप ॥ दंडवतकीनकरुणादेपाइ ॥ भएसांतरूपनरहरिसुभाइ ॥ शुभसूरकोटिदीपितशरीर ॥ वपुवृद्धिविमलनरसिंघवीर ॥ नरसिंघदेवबैठारिअंक ॥ तबभक्ततिलकबालकनिसंक ॥ चाटतनृसिंघनिजरस निबाल ॥ दनुदुष्टहत्योनरहरिदयाल ॥ वर्षासुहोतसुमन निअकास ॥ लैअमरचमरढालतसहास ॥ तहांधर्योछत्रप्रहलादसीस ॥ दीयतिलकआपत्रैलोक्यईस ॥ ॥ श्रीनृसिंहोवाच ॥ ॥ नृपताविशेषछितितोहिदीन ॥ पुनिहोइचित्तजाचहुप्रवीन ॥ ॥ प्रल्हादउवाच ॥ ॥ मुषचारिरटतविधिचारिवेद ॥ सोउनेतिनेतिगावतसभेद ॥ इंद्रादिसबसुरसत्यलीन ॥ नितनिहिसूझिमायानवीन ॥ व्हैध्यानावस्थितदंडधारि ॥ दिगवासभयेमुषमेकचारि ॥ त्रयनेत्रदेषिजलथलअकाश ॥ निर्धारपारपायोनतास ॥ ऋपिवसतसघनउद्यानतीर ॥ जलपत्रमंत्रपोषतसरीर ॥ हगमूंदिरहतरतएकध्यान ॥ पैदेवनहिनपायोनिदान ॥ भुवभ्रतभ्रमतजतिजोगसाधि ॥ अष्टांगउपासतनिरुपाधि ॥ अरहंतसिद्धसाधकअनेक ॥ वेउनैबतावतहेतएक ॥ षटकर्मत्रिसंध्यान्हाइविप्र ॥ सोइजोतिफिरतिषोजतसछिप्र ॥ जुगसहसरसनानितनामजोर ॥ आराधरोषनहींलहनओर ॥ तुमरहितआदिमध्यावसान ॥ कारणाभूतकरुणानिधान ॥ दुर्लभ्यजोतितुमदेहधारि ॥ मुहिदीनदरसदीनोंमुरारि ॥ गहिबांहमोहिबैठारिगोद ॥ मनबंछितपायोंसहितमोद ॥ अभिलाषसबैपूरेअनंत ॥ सिरधर्योहाथमोहिकर्योसत ॥ करजोरियहैजाचतकृपाल ॥ दृढभक्तिदेहुदीननिदयाल ॥ नितरहैनैननवदरसलीन ॥ प्रभुसुजससुनौंश्रवननिप्रवीन ॥ नितनामरटैरसनानवीन ॥ अरुरहैहस्तवंदनअधीन ॥ सिररहैनमस्कृतचरनसंग ॥ पुनिभालदेशपदरजप्रसंग ॥ शुभजोतिरहहुहरिउरसमाइ ॥ प्रभुकरौंशतनिपरिक्रमणपाइ ॥ छविसंगरहहुचितबेदसाषि ॥ भवतथाअस्तुनरसिंघभाषि ॥ कीनौंपुराणनरसिंघदेव ॥ निजवक्रजगतउद्धारमेव ॥ सबआइनिकटतबसुरसमाज ॥ सानंदकहतमहिमासकाज ॥ ॥ छंद भुजंगी ॥ ॥ ब्रह्मस्तुति ॥ ॥ नमोदेवनारायणंनारसिंघं ॥ नमोदेवनारायणंवीरसिंघं ॥ नमोदेवनारायणंक्रूरसिंघं ॥ नमोदेवनारायणंदिव्यसिंघं ॥ नमोदेवनारायणंव्याघ्रसिंघं ॥ नमोदेवनारायणंपूछसिंघं ॥ नमोदेवनारायणंपुरुषसिंघं ॥ नमोदेवनारायणंरौद्रसिंघं ॥ न

मस्तेनमोभीषणंभद्रसिंघं ॥ नमस्तेनमोविज्वलंनेत्रसिंघं ॥ नमस्तेनमोवंदितंभूतसिंघं ॥ नमस्तेनमोनिर्म्मलंचित्तसिंघं ॥ नमस्तेनमोनिर्जितंकालसिंघं ॥ नमस्तेनमोकलिपर्तकल्प सिंघं ॥ नमस्तेनमोकामदंकामसिंघं ॥ नमस्तेदयारूपदुष्टांतसिंघं ॥ नमस्तेनमःकालभ गवानसिंघं ॥ नमस्तेनमःभूपभुवनैकसिंघं ॥ नमस्तेहितंरूपप्रल्हादसिंघं ॥ नमस्तेनमस्ते तिलक्ष्मीनृसिंघं ॥ ॥ रुद्रस्तुति ॥ ॥ नमस्तेनमोहेमकश्यप्यदाहं ॥ नमस्तेनमोहेमप्रल्हा दचाहं ॥ नमस्तेनमोकोटिसूर्यप्रकाशं ॥ नमस्तेनमोभूमिभारंविनासं ॥ नमस्तेनमस्तेसुरं हेतकारं ॥ नमस्तेनमस्तेतिअसुरंषयारं ॥ इंद्रस्तुति ॥ नमस्तेहितंचेतदीनंदयारं ॥ नमस्ते कृतंरूपथंभंविहारं ॥ नमस्तेनवारंनपारंअभीतं ॥ नमस्तेनमस्तेतिमायाअतीतं ॥ दि क्पालस्तुति ॥ नमस्तेअपारंअधारंअनाथं ॥ नमस्तेप्रचारंविकारंप्रमाथं ॥ नमस्तेसधीरंउ रंदीनपीरं ॥ नमस्तेहितंगोद्विजंधर्मधीरं ॥ ऋषिस्तुति ॥ नमस्तेअक्रेयंअजेयंअनाद्यं ॥ नमस्तेअलिप्तंअछिप्तंअवाद्यं ॥ नमस्तेसकर्तुंअकर्तुंसनाथं ॥ नमस्तेअरूपंसरूपंअनाथं ॥ नमस्तेसमोहंअमोहंमनित्यं ॥ नमस्तेसविद्यंअविद्यंअमृत्यं ॥ नमस्तेअकासंअवासंअजेयं ॥ निराकारनिर्धारमानंअमेयं ॥ अवामंअकामंसकामंउदासी ॥ वयंकोटिब्रह्मांडरोमंसुवासी ॥ स्वरंमेघओघंजितंगर्जसिंघं ॥ नमस्तेनमस्तेनमस्तेनृसिंघं ॥ कुंडलिया ॥ उद्धास्योप्रल्हा दहरि,अवनीभारउतारि ॥ श्रीनृसिंघसुरसंघसब,प्रभुवयकुंठपधारि ॥ प्रभुवयकुंटपधारिदेव दुदुंभिदिविबाजत ॥ गानकरतगंधर्वतानरंभादिकसाजत ॥ वामांगसंगकमलाविमलआर तबंधुमुरारि ॥ विरुदभयौजुगजुगविदितहरिप्रहलादउधारि ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अतिदु खितकयाध्रूवहांआइ ॥ रणअजिरपरयोजहांअसुरराइ ॥ उरलग्योजननिप्रहलादआंनि ॥ सविशेषकरतिकरुणासुवानि ॥ ॥ राणिवाक्य ॥ ॥ विलाप ॥ ॥ कहिसाधुसाधुपुत्रहिस मात ॥ तवज्ञानधन्यजिहितस्योतात ॥ सठयाहिकहांयहगतिसभव ॥ धरिदेहहत्योनिजकर निदेव ॥ धर्मिष्टभयोसुततूंसधीर ॥ सबछुट्योमरणजामणसरीर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गतिजै सीयादुष्टकहै, हुईनकाहुहोति ॥ तोहितहरियहदेहधरि, मारिमिलायोजोति ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रियनिकटकयाधूतबहिआइ ॥ नृपचरननरहीमस्तकलगाइ ॥ ॥ कुंडलिया ॥ सतरानैंवीत्योसमय,वृथाकस्योनृपरोस ॥ आपकमायेकर्मतें,अबकिहिं दीजेदोस ॥ अबकिहिंदीजेदोसआपुहिकर्मकमाए ॥ सबदिनजानैंएकएककैंपंथनधाए ॥ पुनिलागेपछितानप्रानजबभएबिरानैं ॥ तबउघरीसबआंषिसमयबीतेसतरानैं ॥ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ प्रियजोतिनसुझीतुमाहिआनि ॥ परगासिरहीगजाक्रिमिप्रमानि ॥ वहमा हिदईनारदबताइ ॥ शिशुग्रहीगर्भगतचित्तलाइ ॥ अपडरडराइनहींकहीतोहि ॥ मैंजा निकहूंतोहतेमोहि ॥ यहभयौब्रह्मज्ञानीसपूत ॥ फलभयौतासतुमकहँअभूत ॥ तुमपंथ वुहारतनकेजान ॥ सबकरेवाधसद्रातिविधान ॥ सुतभयौसाधुजिहँतत्वसूझ ॥ इहिंगर्भमा झसुतिग्रह्योगूझ ॥ शुभपंथग्रह्योइहिंबालवेष ॥ तुमत्रासदईयाकहँअसेष ॥ तुमहतन प्रानयाकेविचारि ॥ प्रभुभएप्रगटतहांथंभफारि ॥ रावरेहुतेकृतनकेयोग ॥ सुतसाधुल ह्योकिहुंकर्मजोग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातैंसंततसेइजैं, साधुसंगमनलाइ ॥ जैसेजावै

संगतैं, कूकरगंगान्हाइ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पतिनाहिंनसुझ्योतत्वज्ञान ॥ हरिभक्ति प्रगटनहींवधेप्रान ॥ सांष्यजोगनहींसचिसुमेध ॥ विधिजुक्तनकीनैवाजिमेध ॥ सतसंगभज्योनहिचित्तलाइ ॥ वसगर्वसर्वहारेबजाइ ॥ उदयास्तराज्यसुरअष्टसिद्धि ॥ गजवाजिसाजिसुषनवैसिद्धि ॥ इहिंगर्वनसूझेतुमहिस्याम ॥ प्रियचलेअकेलेछांडिधाम ॥ दोहा ॥ कहैकयाधूछांडिहरि, नर्कपरहुजिनिकोइ ॥ आनदेवकेसेवकहि, निश्चैमुक्तिनहोइ ॥ ध्रुवबालकहींउद्धस्यो, तिहिंउरधपदपाइ ॥ टेकरहीप्रहलादकी, कीनोंस्यामसहाइ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कीनौराजहिमृतकक्कत, प्रेमजुक्तप्रहलाद ॥ भारटस्योभुवलोकको, वासवटरेविषाद ॥ होतदुखीदुखदीनके, संततडोलतसाथ ॥ संकटहरतअनाथके, देषहुआपअनाथ ॥ हेमकसिपरिपुसंघस्यो, कस्योभक्तउद्धार ॥ इहिंकारननरसिंघप्रभु, भूमिभयोअवतार ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रहलादभयौराज्याभिषेस ॥ इकछत्रतप्योअवनीनरेस ॥ गोवेदविप्ररतनीतिभाइ ॥ तिहिंराजधर्मचलिचहुंपाइ ॥ रसअवतिअवनिओषधअसेष तरुलताफलहिफूलहिविशेष ॥ प्रतिग्रेहहोहिपूजाप्रसाद ॥ झल्लरिझनंकशुभसंषनाद ॥ कीर्तनकथामषवेदवाद ॥ परित्यागकीयेलोकनिप्रमाद ॥ इकछत्रराजप्रहलादकीन ॥ पुनिब्रह्मज्ञानसाध्योप्रवीन ॥ शुभरीतभांतनितप्रतिनवीन ॥ पुरिभएअमरहरिभक्तिलीन ॥ तिहिंपुत्रविरोचनदयौराज ॥ सिरधस्योछत्रशुभतिलकसाज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनतकथाप्रहलादकी, नहिसाधहिप्रीतिप्रकास ॥ ताकौंठौरनलोकत्रय, जाहिनहींविश्वास ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ जादिनआनउपाइथकेसबतादिनभाइसहाइकरैगो ॥ शोकअलोकविलोकित्रिलोकरह्योभवपूरसुदूरिटरैगो ॥ जैसेंचढेगजराजकीपीठित्यौंकुकरवादिहिभूसिमरैगो ॥ जौंकरुणामयस्यामकृपातौकहाजगकीअकृपाविगरैगो ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ इहिंप्रकारअवताररूपअदभुतजुधास्यौ ॥ कोटिवज्रनखकठिनउदरहरिणाकुसफास्यौ ॥ उद्धास्योप्रहलादराजमहिमंडलदीनौं ॥ अरुकीनौंअसुरेसदासअपनोकरिलीनौं ॥ यहभयौविरदजुगजुगविदित, विश्वसुजसविस्तारियौ ॥ नरसिंघदेवनरहरिसुकवि, अवनीभारउतारियो ॥ ॥ इतिश्रीनरसिंघअवतारचरित्रंसंपूर्णबारहटनरहरिदासेनविरचितं ॥ ॥ ७ ॥

॥ अथ चतुर्दश वामनावतार चरित्र प्रारंभः ॥

———०:※:०———

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबवामनअवतारकृत, सुनहुसंतमनभाइ ॥ बलिबांधतवपुविस्तस्यो । तिहुंपुरमैंनसमाइ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कारणस्वरूपहरिकमठकीन ॥ मथिषीरउदधितहांरतनलीन ॥ सबरतनजथाविधिसुरतिपाइ ॥ सुरलोकभयौभूषितसुभाइ ॥ भएरूपमोहनीभवभुलाइ ॥ इच्छासुआपहरितहांआइ ॥ दानवअमाइप्रभुसुरादीन ॥ पूरनप्रसादसुरसुधापीन ॥ पुनिरह्योसेषसोअमृतपाइ ॥ लेचल्यौशक्रसुरपुरसुभाइ ॥ आसुरलिइंद्रघेस्योअमान ॥ हमजीयतलेइकोअमृतआन ॥ जाजुल्यसुरासुरभयोजुद्ध ॥ कछुकालअमृतकारनसुकुद्ध ॥ रणझूझिविरोचनपस्योराज ॥ बालकुंवरसहितदानवसमाज ॥ जबुजुद्धशक्रदानवसंघार ॥ लेगयोसुधासुरपुरसुढार ॥ रणभूमिशुक्रआयोऋषीस ॥



तहांदीनीसंजीवनिश्रसीस ॥ रणभूमिनपायोसीसनाम ॥ पंचत्वविरोचनभयोताम ॥
सवश्रंगलहेजिहिठौरठौर ॥ वलिकुंवरजीयोश्ररुश्रसुरश्रौर ॥ रणझूझिविरोचनसुजस
लीन ॥ सोतिलकछत्रलैबलिहिदीन ॥ गुरुराजशुक्रभयसक्रमान ॥ लैगयोबलिहितबसु
तलथान ॥ धर्मिष्टभयोबलिछत्रसाज ॥ श्राखंडलेसराजाधिराज ॥ राज्याभिषेकबलिभ
योजानि ॥ सबभएदैत्यएकत्रश्रानि ॥ बलिसभानृपासनबलनिधान ॥ थितभयेजथाक्र
मसुभटश्रान ॥ गुरुराजसभातिहिंशुक्रश्राइ ॥ वलिदईमध्यबैठकबताइ ॥ शि
ष्टासनशुक्रहिश्रग्रदीन ॥ तबसुभटभएसबमनमलीन ॥ उठिगएसुभटकाहिसुरनि
साल ॥ द्विजकरिहैंदिगविजयीनृपाल ॥ गुरुराजलग्योतबछोभचित्त ॥ इकराजजज्ञ
करिबोउचित्त ॥ श्रप्रगटरहैवलिकछुककाल ॥ मषकय्योशिशिषिष्टोमापताल ॥ तिहिश्र
ग्निकुंडरथनिकासिएक ॥ तनत्राणसहितश्रायुधश्रनेक ॥ गुरुकय्योबलिहिप्रातिनिर्विषाद
॥ दिगविजयहोहुतवमषप्रसाद ॥ रथचढेराजतिहिविजयकाज॥सन्नद्धबद्धशस्त्रास्त्रसाज ॥
तिहिंरथारूढदेषैनकोइ ॥ यहहनैसबनिनिरस्संकहोइ ॥ नृपजीतिसबैबलिबलनिधान ॥
भुवलोकलयोभुजबलप्रमान ॥ वसकय्योनाममंडलश्रशेष ॥ प्रतिजुद्धसमनकोउश्ररिविशे
ष ॥ यहसुनीसुरनिजवदुसहबात ॥ तबभौविषादनहींउरसमात ॥ सबलगेश्रमरतहांतजन
लोक ॥ सुनिइंद्रबढ्योउरश्रतुलसोक ॥ सक्रादिसभयमिलिसुरसमाज ॥ कश्यपप्रजापपहँ
गएसकाज ॥ कारणनिवेदकश्यपहिकीन ॥ दीयबिदासबनितहाँश्रभयदीन ॥ उपदेसक
स्योकस्यपसँकेत ॥ व्रतकरहुश्रदितितुमविष्णुहेत ॥ पतिवचनप्रियाश्राज्ञासुपाइ ॥ सवि
शेषकय्योपयव्रतसुभाइ ॥ जवभयोवर्षव्रतकरतजान ॥ विधियुक्तजथाथितिएकथान ॥ ॥
॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हरिदयौतहांदरसनदयाल ॥ हमवचनलेहुव्रतफलविशाल ॥ ॥
॥ श्रदितिरुवाच ॥ पुनिकह्योश्रदितिहरिसौंप्रकाश ॥ बलिभयौविजयसुरपतिहित्रास ॥

॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ हरिभएसदयतहांकरिसुभाइ ॥ हूंसदाश्राहिधर्म्महिसहाइ ॥ वलि महाबलीश्ररुधर्मधीर ॥ प्रतिजुद्धनहिनसमकोउवीर ॥ तबउदरश्रनुजश्रवतरौंश्राइ ॥ व्हैइंद्रश्रातकरिहौंसहाइ ॥ वरपाइश्रदितिउपजोविसास ॥ हरिभएतबैनिजपुरनिवास ॥ ॥ कविवारुच ॥ ॥ बलिलयोजबैबलइंद्रथान ॥ इंद्रादिभएपालायमान ॥ सुरभजेसबैत जिथानथान ॥ कविकह्योमंत्रबलश्रेयमान ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ छलबलहिउपार्जतभुव नरेस ॥ श्रक्षयनहोतवेदोपदेश ॥ धर्मबललेताछितिनृपातिकोइ ॥ श्रनेककलपश्रक्षयसु होइ ॥ शतजज्ञाकियेसुरराजहोत ॥ सुरलोकतबैनृपताउदोत ॥ धर्माधिकारउरज्ञानदी प ॥ बलिमहाचक्रवर्त्तीप्रथीप ॥ जिहिंग्रेहसमृद्धिसुरपतिसमान ॥ धर्माधिकारबलश्रप्र मान ॥ तिहिंसमयसुबलिउद्यमप्रवीन ॥ शतजज्ञकरणसंकल्पकीन ॥ मषहोतभएनानाप्र कार ॥ सबभांतिवश्यकीनोसँसार ॥ दनुदेवमनुजसासनश्रधीन ॥ इकऊनसविधिशतज ज्ञकीन ॥ यहभईजबैसुरलोकबात ॥ श्रतिदुसहइंद्रउरनहिसमात ॥ तहाँभयोभीतवास वसतेष ॥ श्रतिबलिश्रसुरकृतमषविशेष ॥ पुरब्रह्मगएवासवपुनीत ॥ सबकह्योविधिहि कारणविनीत ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ परचंडदैत्यश्ररुमषप्रसाद ॥ दिगविजितभयोव हनिर्विषाद ॥ सुरलोककाजवहजतनकीन ॥ शतजज्ञभयोतिहिएकहीन ॥ श्रारंभमयो तिहिमषसमूल ॥ सहिजाहिनहिनहमउरहिसूल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विधिशक्रभ एश्रारुहविमान ॥ कृतगमनजहांकरुणानिधान ॥ परब्रह्मदेवपोंढेपुनीत ॥ जलतलपर चितमायाश्रजीत ॥ धुनिवेदकरीतहांब्रह्मश्राइ ॥ सुनिजगेसेषसाईसुभाइ ॥ ॥ श्रीभ गवानुवाच ॥ ॥ तुमश्राइब्रह्मवासवसमेत ॥ मोहिसुखप्रबोध्योकवनहेत ॥ ॥ विधि रुवाच ॥ ॥ निजदासप्रभुहिकरुणानिवेद ॥ विधिकहतभएभयशक्रभेद ॥ लोकेशथ पेतुमलोकलोक ॥ स्वच्छंदबसतश्रपश्रापश्रोक ॥ मृतलोकतपतबलिदैत्यराय ॥ धर्मा धिकारमषबलसहाय ॥ सोलयोचहतश्रबइंद्रथान ॥ इकन्यूनभएशतमषविधान ॥ श्रारं भभयौतिहियज्ञकाज ॥ मनहोतछुभिततिहिदेवराज ॥ सुरलोकहोतश्रासुरसँचार ॥ यह जानिकरीप्रभुसौंपुकार ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ धार्मीकराजरतवेदनीत ॥ किहिं हेतहतौंबलिजगपुनीत ॥ मर्जादवेदलंघहिनमूल ॥ संततसहायहूंतिहिसमूल ॥ ॥ विधि रुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उपजैज्ञानपिसाचकहँ । जोबगुलात्रिणषाय ॥ ताकेलीनैंरचित नहिं । तजिबोदेवसहाय ॥ ॥ श्रीहरिःऊवाच । इहांनकारनवर्णेकौं ॥ जोउरतत्वप्रका श ॥ हूहितबांध्योभक्तिकै । डालतश्रवनिश्रकास ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ जोहितबांधेभ क्तिकै । डोलतहोमहराज ॥ करिवोशक्रसहाइश्रब । श्रापथपेकीलाज ॥ संततदेवसहाइ तुम । श्रारतबंधुउदार ॥ सुरपतितुमहीकरिथप्यो । श्रारतकरतपुकार ॥ रचेसुइछालोकत्र य । कृतलीलाविस्तार ॥ लोकम्रजादाटरतहरि । करिहोतुमहिविचार ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिभांतिब्रह्मवसुकरिविचार ॥ पुनिगएतबैनिजपुरसुढार ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ हरिभएतहांचिंततविशेष ॥ श्रपराधविनांश्रनउचितद्वेष ॥ ॥ श्री हरिरुवाच ॥ ॥ नृपबलिपुनीतवैदिकप्रभाउ ॥ किंहिंहेतहोयतिहिंवैरभाउ ॥ वसुभा

तहोइलघुब्रह्मचारि ॥ तबविहितकछूकरिवोविचारि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कस्यपऋ
षीसपितअदितिमात ॥ वसुअग्रजहरिभएअनुजभ्रात ॥ नभमासद्वादशीशुक्लपक्ष ॥
मध्यान्हजनमवामनप्रतक्ष ॥ इहिंभांतिइंद्रभ्राताअनूप ॥ हरिभएविश्ववामनस्वरूप ॥
प्रारंभकस्योबलियज्ञकाज ॥ शुक्रादिसचिवआसुरसमाज ॥ विधिसहितहोततहांमषविधा
न ॥ हव्यादिहोमद्विजवेदगान ॥ यज्ञासनबैठेवलिपृथीप ॥ संज्ञावलिवामाअँगसमीप ॥
॥ दोहा ॥ ॥ कोऊजाचतआइकछु । वंछितदेतछितीस ॥ कल्पलताजुतकल्पतरु । देहधरे
जनुदीस ॥ कारणवामनरूपकरि । हरिआएबलिद्वार ॥ कौतुकहितसँगनगरके । डोलतलोक
अपार ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहिसमयआयवामनअनूप ॥ शुभशांतब्रह्मचारीसरूप ॥ स्व
पुतात्रिपुंड्रद्वादशससोह ॥ उपवीतकंठमनरहितमोह ॥ कुशदंडअक्षमालाप्रकाश ॥ करवा
मकमंडलसावकास ॥ कौपीनमौंजीकटिप्रदेश ॥ मेषलाअजिनशोभितसुदेश ॥ घनस्याम
शुभगसुषवेदचारि ॥ वानीविलासश्रुतमोहकारि ॥ यष्टिकाधारजर्जरसरीर ॥ सिरहोतकंप
अंतरसधीर ॥ ॥ प्रतिहारउवाच ॥ ॥ नृपगुदरकीनप्रतिहारजाय ॥ वामनस्वरूपद्विजद्वा
रआय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ थलजज्ञलएवामनबुलाय ॥ नृपनिकटतबैद्विजदेवआय ॥ आ
सिषसुदीनवामनअनेक ॥ दृढभक्तिहोहुसंजुतविवेक ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ कोआपुनकहिजे
अतिथिभेव ॥ हूंआहिअपूरवब्रह्मदेव ॥ स्वछंदवासठिककवनठाम ॥ छितिअषिलब्रह्मसर्जि
तसुधाम ॥ सबकालकवनरक्षकसुरूप ॥ भवसमझहुमोहिअनाथभूप ॥ कोबंसपिताउतप
त्तिकाल ॥ मोनहिनतासससमरननृपाल ॥ अभिलाषकवनचितधरिअभेव ॥ फललेहुकरहुपू
रनसुदेव ॥ भूस्वर्णरत्नसज्यासुग्रेह ॥ कन्याहयवारणगोसदेह ॥ अरुमहादानषोडससवा
स ॥ भूमीसभौमपत्तनविलास ॥ जुतदेशद्वीपषितिषंडलेहु ॥ तहांकरहुराज्यआसिषसुदेहु ॥
वामनउवाच ॥ त्रयपरगभूमिममदेहुमोहि ॥ स्वस्थानवसौंनिर्भीतहोहि ॥ बलिरुवाच
॥ ॥ जाचनाकीनकाअलपदान ॥ मोदेतभूमिकहात्रिपदमान ॥ दातासुषेत्रअरुपात्रकाल
॥ अनुसारिहिजाचहुतातकाल ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ यहवचनतुमहिहैयुक्तभूप ॥
प्रहलादपितामहधर्म्मरूप ॥ तुमदेतअधिककछुनाहिनराज ॥ त्रैलोकसहितसंपतिसमा
ज ॥ संतोषसहितअपनैप्रमान ॥ मांग्योनरेसदीजैसुदान ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ भू
जदपिप्रयोजनहैऋषीप ॥ तौदेसखंडलीजैसुद्वीप ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ नवषंडसप्त
द्विपनिसमेत ॥ लोभीनकरैसंतोषलेत ॥ जबभयौअसंतोषीद्विजात ॥ तबब्रह्मतेजतिहि
छांडिजात ॥ मोहिआहिप्रयोजनइतैराज ॥ संतोषमानिलैहूंसकाज ॥ द्विजदयाजुक्तजोदे
इराइ ॥ भूवहैमोहित्रैलोक्यभाइ ॥ ॥ शुक्रउवाच ॥ ॥ कुलगुरुशुक्रदर्शीत्रिकाल ॥
तिहिंकह्योनाहियहद्विजनृपाल ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ नृपगुरूतबैपूछ्यौसहास ॥ को
आहिकहौअनुक्रमप्रकाश ॥ ॥ शुक्रउवाच ॥ ॥ धरिकपटदेहहरिसुरसहाइ ॥ तवय
ज्ञविगार्योचहतराइ ॥ मांगततपैडछितिकाजओक ॥ छलसाजिछीनिलैहैत्रिलोक ॥ पुनि
कहोकिहुनदीनौबताइ ॥ कृतहास्यरूपसुरपतिसहाइ ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ छिनमांझि
कोटिब्रहमंडदेहि ॥ असभाग्यसुमोपहभीषलेहि ॥ ॥ शुक्रउवाच ॥ ॥ छलछीनिलैहि

छितिराजसाज ॥ तिहिंदएधर्मकोमहाराज ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाचक हरिसौकपटजुत । हूंनिहकपटैंदेत ॥ याकौशुक्रविशेषफल । वेदविमलकहिदेत ॥ आपुन हरिद्विजरूपधरि । अरुसुरराजसहाइ ॥ मोसौसुकृतिऔरको । जापहिभिक्षकआइ ॥ अग्निजरावतद्रव्यबहु । मषकीजतहितदेव ॥ हाथमांडिअबलेतहै । हरिदेवनकेदेव ॥ ३ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ ॥ उत्तरतटनदनर्मदा । क्षेत्रतहांभृगुकच्छ ॥ तहांकरतबलि राजतब । पावनजज्ञप्रतछ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गुरुलष्योतबैनृपनियमकीन ॥ तबभ यौआपजलपात्रलीन ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ द्विजलेहुस्वस्तिकरिकह्योराज ॥ संकल्पकरत हमपुण्यकाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ संकल्पहेतबलिकरपसार ॥ जलपात्रशुक्ररुंधित दुवार ॥ जलचलतनहिनकृतरुद्धधार ॥ हरिकह्योतबैकुशकरिप्रहार ॥ द्विजदाननिवा रनफलसुपाइ ॥ भएकाणगुरुतहांदुष्टभाइ ॥ जलमेलिहस्तसंकल्पकीन ॥ बलिभूमित्रिपद वामनहिदीन ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ भरिपैंडलेहुनिजपदद्विजात ॥ स्वस्थानभूमिजोमनसु हात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वपुबढ्योतहांवामनविराट ॥ सुरराजकाजकृतकपटठाट ॥ हरि कंठग्रहणभृगुत्रियाकीन ॥ अनदष्टचक्रतिहिसीसछीन ॥ पुनिआनिलगेकरअसुरओर ॥ तेउमारिपछारेठौरठौर ॥ पदएकपूर्वपछिमप्रजंत ॥ दुवआदिदछिनउत्तरदिगंत ॥ क्र मतृतीयभूमिइकचरनदीन ॥ ब्रहमंडछिद्योइकऊर्ध्वकीन ॥ परब्रह्मचरनदरशनजुपाइ ॥ विधिकरीतहांपूजाबनाइ ॥ सपुनीतकमंडलसलिलआनि ॥ कृतअर्घपाद्यविधिआपपा नि ॥ सोचल्योनीरहरिचरनसंग ॥ त्रैलोकगमनपावनतरंग ॥ तिहिरंध्रभयोगंगाअ वतार ॥ भवभूतकरतउद्धारसार ॥ भूगगनअंतभौअर्द्धपाइ ॥ पुनिरह्योअर्धतबपूछि राइ ॥ ॥ वामनउवाच ॥ अबनृपतिबतावहुठौरकोइ ॥ त्रयपरगजहांपूरणसुहोइ ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ छितिदईतुमहिवामनविनीत ॥ मोसीसधरहुअबपदपुनीत ॥ ॥ वा मनउवाच ॥ नृपरहतअर्द्धपदभूमिसेष ॥ क्यौंहोइसीसपूरनविशेष ॥ बलिरुवाच ॥ द्विजभूमिसबैममसिरअधीन ॥ तुमअर्धपरगसंदेहकीन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ हरिधस्यो चरणजबचांपिसीस ॥ बलिगएसुतलदानवअधीस ॥ बलिसाधुसाधुकहिसुरसमाज ॥ तहांकरीसुमनवर्षाविराज ॥ प्रभुकह्योतहांवामनपुरान ॥ धरिनामत्रिविक्रमबलनिधान ॥ बलिराजभएमनकाजसिद्ध ॥ पुनिकरतभएविनतीप्रसिद्ध ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ वर देहुयहैहिताचितसमोइ ॥ हरिचरनदरसअंतरनहोइ ॥ ॥ वामनउवाच ॥ ॥ बलि अटलराज्यतवसुतलहोहु ॥ पुनिलेहुमांगिजिहिमनहुमोहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बलिभ एतहांहरिचरनलीन ॥ करजोरसमुषव्हैप्रणतिकीन ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ वरदेहुइहै देवाधिदेव ॥ सबकालरहूंरतचरनसेव ॥ ॥ वामनउवाच ॥ ॥ प्रभुकह्योतहांकरुणाप्र कास ॥ मैंरहूंग्रेहतवचतुर्मास ॥ तेतीसकोटिसुरसहिततास ॥ धरिगदासुवसिहूंद्वार धाम ॥ बलिधन्यधन्यतवसत्यबोल ॥ उच्चर्योकह्योनिसचेअडोल ॥ हूंछलनलग्योहो तोहिराज ॥ सोछल्योमोहितैसत्यसाज ॥ ममअगमप्रबलमायाअपार ॥ विश्वहुदुरं ताकोविधार ॥ करतारनपायोपारकोइ ॥ सत्यबललईतैंजीतिसोइ ॥ विश्वासघातमैं

कपटकीन ॥ नहिकस्योतदपिनृपमनमलीन ॥ यहसुतलराज्यसुरपुरसमान ॥ चिर
जीवकरहुबलिबलनिधान ॥ सुषसमृधिइंद्रकीइहांआइ ॥ सोकरहुभोगहमहैंसहाइ ॥
॥ रानीवाक्यं ॥ रानीतबबानीकहिरसाल ॥ तुमदेहुलेहुतुमहींदयाल ॥ दातानपा
इहांनहींकोइ ॥ कीनौंसुभयौंकरिहौसुहोइ ॥ विंझ्यावलिपायोवरविनीत ॥ सौभाग्यऽमरपद
वीपुनीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिसमयशुक्रकृतमनमलीन ॥ हितस्वामिकरतममन्त्र
हितकीन ॥ दैहरिहिश्रापकरिहूंकुदाउ ॥ भगवंतलह्योकविचित्तभाउ ॥ कृतवामनशुक्रहि
समाधान ॥ एकाक्षतदपितुवसमनआन ॥ अज्ञातज्ञाततुवसमुहआइ ॥ सबतासअशु
भन्हैहैसुभाइ ॥ ब्रह्मादिविनयकीनैविशेष ॥ आकाशबजेदुंदुभिअसेष ॥ प्रभुकस्योविम
ललीलाविलास ॥ ब्रह्मादिसहितवैकुंटवास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कस्योअनुग्रहइंद्रको । अरु
बलिकोउद्धार ॥ कीयैअभयसुरलोकसब । भोवामनअवतार ॥ १ ॥ जाकेकाऊनाहिप्रभु ।
ताकोंकरतसहाय ॥ सेवककेसेवकभए । नरहरिप्रभुहिसुभाय ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अदि
तिकुक्षिअवतारभएकस्यपप्रजेसपित ॥ दीर्घसहोदरदेवराजलघुभ्रातधर्म्महित ॥ ब
ढ्योविसदविग्रहविराटनिग्रहदैतेसुर ॥ करतवाधसुरकाजकस्योएकाक्षअसुर ॥ गुरुति
हुपुरनमाताविष्यातातन, ब्रह्मचारकृतव्रतवरन ॥ कारणसोइवामनरूपकीय, सदासुकविन
रहरिसरन ॥ इतिश्रीवामनअवतारचरित्रं बारहटनरहरिदासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ ५ ॥

॥ अथ पंचदश हरिअवतार गजमोक्षक चरित्र प्रारंभः ॥



॥ कवित्त ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुहवित्रिकूटाचलप्रसिद्धसवजंतुसुसंगम ॥ योज
नअयुतउत्तंगअयुतमेषलाअनूपम ॥ महाशृंगत्रयमिलितहेमअरुतारलोहमय ॥ दु
ग्धसिंधुकेमध्यरतनशुभधातसुसंचय ॥ तरुलतानिरंतरफूलफल, विमलनीरनिर्झरवहत ॥
गंभीरगुफाचहुंओरगिरि, सुषनिवासऋषिवररहत ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गंधर्व

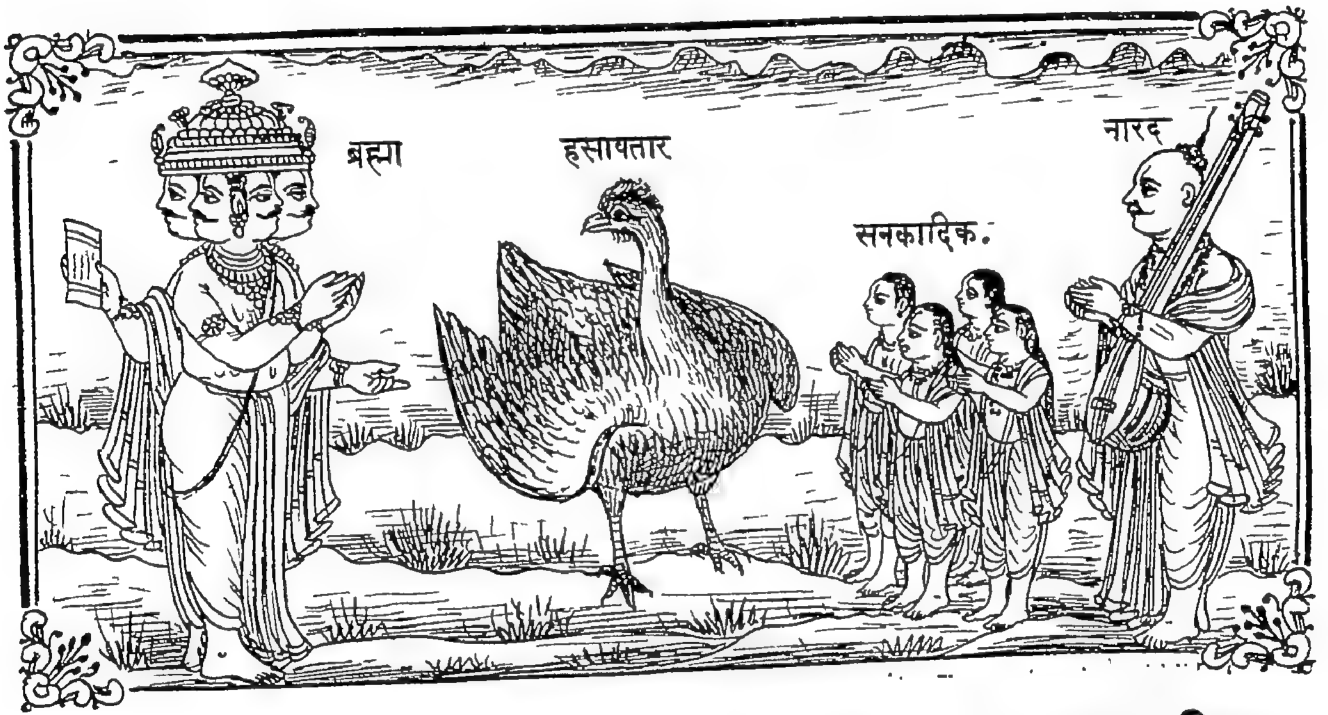
सिद्धचारणसज्ञान ॥ मिलिकहतसुजसमहिमाअमान ॥ विद्याधरकिन्नरगनविवेक ॥ निजभावकैअस्तुतिअनेक ॥ मिलिगानताननूपुरसतूर ॥ प्रतिशिष्टगुहाझंकारपूर ॥ उरगादिजंतुआश्रितअपार ॥ सुषलहतजथावंछितसुढार ॥ हुंकारशब्दासिंघादिहोत ॥ आरण्यजंतुपक्षीकपोत ॥ निर्झरनिपूरबादिसरितनीर ॥ सुररमनितहांमज्जतशरीर ॥ सोभासुसहजसोगंधसंत ॥ आमोदप्रसरदसदिगनिअंत ॥ मिलिअनिलचलतसौरभअमान॥ सबकालसुषदपर्वतसुथान ॥ पर्वतसमीपइकवनपुनीत ॥ सोवरुणदेवरक्षितविनीत ॥ ऋतुवंतनामसोवनविसाल ॥ सबकालफलितफूलितरसाल ॥ ॥ छंदहनूफाल ॥ ॥ सरएकतिहिंवनमाँह ॥ अतिअमलनीरअथाँह ॥ मर्यादमणिमयमूल ॥ कणरत्नवालुककूल ॥ तरुवल्यवल्लीयताम ॥ घनछांहअमहतधाम ॥ वनकनककमलविराजि ॥ रविउदितप्रफुलितराजि ॥ अमिनिकरभृंगियभृंग ॥ उनमत्तरत्तअनंग ॥ झंकारपुहपनिझूल ॥ भरअमितअलिरसभूल ॥ तहांलताकुमुदिनितंत ॥ बहुकुसुमनिसिविकसंत ॥ सौगंधसीतसुमंद ॥ अतिपवनत्रिविधअनंद ॥ मिलितरलतंडवमोर ॥ चित्तमत्तचक्कचकोर ॥ सरहंससारससंग॥ तहांनीरविविधतरंग ॥ जलजंतुअगणितजाति ॥ तहांवसतभांतिविभाति ॥ भवनक्रचक्रभयान ॥ मिलिग्राहतंत्रअमान ॥ कृतकमठकरकल्लोल ॥ तरिमीनटोलनिटोल ॥ जलबुरगदादुरजीव ॥ सबबसतअपनीसीव ॥ बनमहिषखडगवराह ॥ अतिप्रबलअभयअग्राह॥ चमरीसुगवमृगचित्र ॥ वनसिंघसरभविचित्र ॥ भवजीवअनअनभांति ॥ नहिजानितियेगजाति ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्रविडदेससविशालप्रगटइकवसतपृथ्विपर ॥ ऐरावतीअनूपपुरीवसिवर्णच्यारिवर ॥ सबसमृद्धिसंयुक्तनिरतनिजकर्मनिरंतर ॥ इंद्रद्युम्नतहांराजकरतनृपधर्मधुरंधर ॥ आज्ञाअषंडजुतदंडजग,देसकोसचतुरंगदल ॥ भगवंतपरायणदृढभगति,तपतएकरविचक्रतल ॥ २ ॥ एकसमयनितकर्मकरतबैठोदिव्यासन ॥ मौनव्रतसंयुक्तनेत्रमिलितत्वपरायन ॥ लग्योध्यानएकाग्रचित्तमनवाचकर्मजुत ॥ सिषासूत्रकरतुलसिमालरसरूपसांतरत ॥ आसनदृढआहारदृढ,साधनदृढएकांतमह ॥ निस्सीममिल्योपरब्रह्ममन, मिलितनीरज्योंनीरमह ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ निजवसतकुलाचलतपनिधान ॥ आयेअगस्तिसोइसिषिसमान ॥ नहींकस्योद्वारपालकनिषेध ॥ आएजुमध्यमुनिवरसुमेध ॥ जिहिंग्रेहकरतनितकृत्यराज ॥ अनवारितआयोद्विजसमाज ॥ भयौआवनकुंभजअकस्मात ॥ नृपध्यानावस्थितनहिंनज्ञात ॥ असमयनहिवंदनअर्घ्यदीन ॥ मुनिभयोअपूजितमनमलीन ॥ उरबढ्योक्रोधऋषिराजआनि ॥ आरक्तनेत्रमुषविषमवानि ॥ अतिक्रोधकंपरोमांचअंग ॥ परजल्योअनलजनुघृतप्रसंग ॥ ॥ अगस्त्योवाच ॥ ॥ मुनिकह्योभएनृपमदाअंध ॥ वनकरीमत्तजैसैंविबंध ॥ नृपहोहुजाइवनगजविसाल ॥ मदअंधरहहिसबसर्वकाल ॥ कबहूनहिताहिनभेदकोइ ॥ हटएकभजहुमदबिबसहोइ ॥ नृपलष्योभूतभावीनिदान ॥ मानीसुदैवमायाअमान ॥ सुनिउठ्योराजकंपितसरीर ॥ अनसहतश्रापअंतरअधीर ॥ कीयराजतहांबंदनअनेक ॥ विस्तारविनयवानीविवेक ॥ ॥ इंद्रद्युमनउवाच ॥ ॥ प्रभुकरहुदंडअथवाप्रसाद ॥ मैलयोधारिसिरअप्रमाद ॥ हूहुतोध्या

नपरसुषनिधान ॥ ग्रहकाजव्यग्रनाहिनगुमान ॥ ऋषिसिषवततुमहीधर्मरीति ॥ अनस
मुझिआपदीयोअनीति ॥ जोकरैबडेविधिअविधिजानि ॥ सोलईसबैमैंसीसमानि ॥ ॥
॥ **कविरुवाच** ॥ दीनतादेषिऋषिभएदयाल ॥ कीनीअनीतिसोबह्योकाल ॥ ॥ ऋ
षिरुवाच ॥ नृपदंडदयोहमनिरपराध ॥ सोभएलजितमनसमुझिसाध ॥ समभाष
कह्योकुंभजसधीर ॥ विनुभुगतैआपनटरैवीर ॥ कछुकालवितैंहोमहाकाय ॥ तुमअवसि
कुंजरीजोनिआय ॥ कारिहोहरिससमरनअंतकाल ॥ तद्रूपसुहैहोतिहींकाल ॥ ॥ **कविरुवा
च** ॥ ॥ गवन्योअगस्तिदेआपग्रेह ॥ दिनतैंहीछूटीनृपतिदेह ॥ पृथ्वीपभयोगजअव
धिपाइ ॥ सोजन्मत्रिकूटाचलसुभाइ ॥ शतपंचकारिणिवल्लभासंग ॥ मदमत्तझरितघूमत
मतंग ॥ संष्यासहस्त्रगजजूथसाथ ॥ निसदिवसकरतक्रीडासनाथ ॥ मदगंधलुब्धअलिभ्र
मतमत्त ॥ गुंजारशब्दतटश्रवणरत्त ॥ षट्रितुअनेकसुषकरतषेल ॥ मनमथविलासरति
रमणिमेल ॥ क्रमयुक्तआइतहांउष्णकाल ॥ जलसुधाअनिलभएअनलज्वाल ॥ ऋतुवंत
वरुणवनसघनछाहँ ॥ मातंगजूथतिहिंरहतमाहँ ॥ जलपानसमयगजजूथजांनि ॥ मिलि
गएसरोवरतृषामानि ॥ सबपैठिदुरदअपनेसुभाइ ॥ जलपानकरेसरमध्यजाइ ॥ मिलिके
लिसलिलआंदोलमान ॥ मनुभयोवहुरिसागरमथान ॥ जलजीवविकलकलपंतजान ॥ थल
परेआनपावहिनथान ॥ अंतकसरूपजलग्राहएक ॥ आवरितत्रीयापरिजनअनेक ॥ तिहि
समयरह्योसोवतनिसंक ॥ विधिलिषितअंकवसादिवसवंक ॥ जलहलतजानित्रीयपुत्रजा
इ ॥ जाजुल्यग्राहजमसौंजगाइ ॥ इहिठौरउपद्रवहोतआज ॥ कहुंचलहुअंतसबछांडिका
ज ॥ सुनिअरुणनेत्ररसनासचाल ॥ कोप्याकृतांतजनुप्रलयकाल ॥ उठोजंभातअ
रसातअंग ॥ संचरयोअनलमिलिअनिलसंग ॥ उठिचल्योदैवप्रेरितअसंक ॥ अन्यथा
नहिनविधिलिषतअंक ॥ दारुणसुग्राहगजराजदेषि ॥ विस्तारकरेतंताविशेषि ॥
पदलएबांधिचार्योंप्रकास ॥ पसरेज्यौंतंतावरुणपास ॥ कृतबद्धग्राहतंताकरूर ॥
संग्रह्योराहमनुद्विरदसूर ॥ जबबद्धचरनबसभयोजानि ॥ ऐंच्योसुग्राहउरक्रोधआ
नि ॥ गजतीरनीरदिसिऐंचिग्राहु ॥ बलमल्लहोतज्यौंजुद्धबाहु ॥ गजग्रह्योदेषिगज
जूथगाजि ॥ सबलगेआनिबलबुद्धिसाजि ॥ द्वैसहसदुहुदिसिकरतदाउ ॥ संग्रह्योनाथकी
नौंसहाउ ॥ गजगिलेग्राहआछोटगोम ॥ बसवातपत्रज्यौंभ्रमितव्योम ॥ प्रतिजुद्धहो
तगजग्राहपूर ॥ उछलहिसलिलनहिसूझिसूर ॥ मथिदेवदनुजगजग्राहमान ॥ शुभ
षीरसिंधुसरभएसमान ॥ जलउछलिगगनभ्रममीनजाति ॥ विपरीतकालवरत्योविभाति
॥ दिनहोतनिसाबढितमदिगंत ॥ विपरीतगतागतजलवहंत ॥ भयभीतजंतुजलथलभ्रमं
त ॥ तनभएषीनजान्यौंजुगंत ॥ जुतछुधातृषाभएदीनजीव ॥ दिनप्रलयदीसरक्षकदई
व ॥ जलबिंबभयौथलथलनिजाइ ॥ सरनीरउछलिनाहिनसमाइ ॥ यौंभएवर्षदशशतावि
तीत ॥ भवभूतचराचरसबसभीत ॥ पतिबद्धशोकबाढ्योअपार ॥ करित्राहित्राहिकरणी
पुकार ॥ गिरजंतुद्विरदजलजंतुग्राह ॥ थकिघटतबढतबलजलअथाह ॥ विनभक्षवर्षग
जसहसवीति ॥ बलभएभंगउरचढेभीति ॥ भयभईजीवितासासुभंग ॥ अतिविव्हलवारण

अंगअंग ॥ छूट्योकुटुंबबलभएछीन ॥ देष्योगजेसअतिहीनदीन ॥ गजषैंचिकस्योजल मग्नग्राह ॥ थललगतनाहिंपगजलअथाह ॥ करिराजसुजानौंअंतकाल ॥ सुधिभयोज न्मपूरबसुढाल ॥ अनमग्नरह्योजबसूंडिअंत ॥ मुष्टिकामात्रदेषतमहंत ॥ ॥ गजउवाच ॥ ॥ वदित्राहित्राहिवारणविहाल ॥ करतारकरहुरक्षाकृपाल ॥ आनंदअश्रुरोमनिउभा र ॥ करिराजकरिहरिहरिपुकार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुखसेजसयनकमलासमान ॥ निद्रावसहेकरुणानिधान ॥ वैकुंठविष्णुलीलाविलास ॥ ब्रह्मादिकहूंअनगम्यवास ॥ ॥ ॥ कवित्त ॥ विषमदीनआधीनवानिजबसुनीविश्वंभर ॥ अतिअसमयआतुरअनंत प्रभुउठेदयापर ॥ करदक्षनलीयचक्रवामकरवसनविराजित ॥ ज्यौंपायौंबाहनविशेष त्यौंचढेदीनहित ॥ पलमाझिलक्षजोजनपुहवि, गरुडचलतसंपातिगति ॥ सोइजांनिवी चछाढ्योसिथिल, आपुनदौरिदयालअति ॥ १ ॥ कालअलपपथअधिकजगतपतिअं तरजानीय ॥ प्रेरिअतुरनिजपाणिप्रगटविस्तारप्रमानीय ॥ मुष्टिमात्रमातंगसूंझिजब लहीसलिलसिर ॥ हस्तवामसंग्रहीयऐंचिकाढ्योगजआतुर ॥ करचक्रग्राहदुवखंडकी य, कृतत्रिलोकजयजयकरीय ॥ हरिनामलेतगजराजाहित, यौंनरहरप्रभुउद्धरीय ॥ २ ॥ ॥ सवइया ॥ ॥ ग्राहग्रह्योबहुकालभयो, बलहीनभयौंजलथाहनपायौ ॥ पूतप्रियापरिवा रनप्रीतम, प्रीतिछुटीभयौंदेहपरायौ ॥ स्यामसुजानहकारसुन्यौं, निजनाममतंगरिकार लौंनायौ ॥ आनिअचानकहींइहिंवीच, छुटेनहिंप्रानगजेंद्रछुडायौ ॥ १ ॥ थिरवाससदा सुविलासथली. सुषहेतहुतेतहांदुष्षसमानौं ॥ मैंगलमंथमहामदमोकल, वारिधस्योतहां तंत्रवधानौं ॥ वातभईत्रैलोकविचित्र, सदादुषमोचनस्यामसयानौं ॥ औररचीविधिऔरैं भई. गजग्राहग्रह्योसोइग्राहग्रहानौं ॥ २ ॥ अनक्रेयसदामनवाचअगोचर, जानैनवेदब तावहिजैसे ॥ उपहारललैउपकारकरैंकृत, ऊपरकृत्यसुदेवहिंकैसे ॥ भवभूतनिसंकटआ निभएतहां, कारणरूपधरेप्रभुतैसें ॥ उपकारविनाउपकारकरै, हरिदीनसौंदेवदयालहैऐसे ॥ ३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ आपदग्धगंधर्वविसदतनग्राहमहाबल ॥ अवधिअंतलौंअभ यषेत्रतिहिंतालवस्योषल ॥ भयोचक्रहतदेहफेरिअपनौंपदपायौ ॥ गावतगुनहरिगीत सहितसुखग्रेहसिधायौ ॥ हूहूजुनामगंधर्वहोद्विज, ऋषीदेवलश्रापदीय ॥ वहुकालरह्यो जडकर्मवस, ग्राहजोनातिहिमुक्तइय ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हरिगमनअचानकलषिनहे त ॥ चिंतवनकरतकमलासुचेत ॥ सुषसयनसमयअवलौंसधीर ॥ इहिंभांतिउठेकबहुन अधीर ॥ विस्मयमनउपजतवारवार ॥ वल्लभाभईसंभ्रमविचार ॥ जेरहतनिरंतरनिकट दास ॥ प्रभुगमनहेतजानिनप्रकास ॥ उठिगयोसंगआतुरअनंत ॥ सबमिलेजाइहरि परमसंत ॥ विधिरुद्रइंद्रदिगपालदेव ॥ अद्भुतकर्मदेष्योअजेव ॥ इहिसमयपुहपवर्षाअ काश ॥ सुरबजेगगनदुंदुभिप्रकास ॥ गुनप्रासिद्धसिद्धचारनसुगीत ॥ जसपढतवानिजय जयअजीत ॥ सुरवधूविविधनाटकसुजान ॥ गंधर्वकरतसुरतानगान ॥ इभदेहपलटिभ यौविष्णुप्राप ॥ सबपरेदुष्षभयेमुक्तश्राप ॥ भुजचारिपीतपटतिलकभाल ॥ मणिहृदयसु भगउरतुलसिमाल ॥ शुभबर्णस्यामआयुधअभंग ॥ सारूप्यमुक्तमिलिचल्योसंग ॥ ॥

॥ दोहा ॥ करिवंदनप्रमुदितकह्यो। ब्रह्मादिकसुरसिद्ध ॥ वेदविदितअवतैंअवनि। हरिअवतारप्रसिद्ध ॥ भूतभविष्यतवर्तमन। अद्भुतचरितअनंत ॥ दीनानाथदयालहरि। सबकहींहैंसुरसंत॥ सुरसमूहजुतगजसहित। हरिवैकुंठपधारि ॥नरहरिप्रभुगावतनिगम। चरितविदितजुगचारि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इंद्रद्युम्ननृपएकश्रापहतभयौसुसिंधुर ॥ वारणवनसरवरविशालग्रासितभयौआतुर ॥ इहिंअवसरप्रभुआनिविषमजलग्राहविदार्यौ ॥ तंत्रीजोनिसेटर्यौअंतगजराजउधार्यौ ॥ अषिलेसविरदकीनौंअतुल, भयौप्रसिद्धत्रैलोक्यभुव ॥ कारुण्यरूपनरहरिसुकवि, हरिप्रसिद्धअवतारहुव ॥ ॥ इतिश्रीहरिअवतारगजमोक्षचरित्रंबारहटनरहरिदासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

अथ षोडश हंसावतार चरित्र प्रारंभः ॥



॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ एकसमयविधिलोकविधि। बैठेसभाबनाय ॥ सनकादिकनारदसहित।सबसुतबैठेआय॥ १ ॥ सकलसभासदवंदना।करिबैठेस्वस्थान ॥ होनैलगीतहांगोष्टी। तत्वज्ञानविज्ञान ॥ २ ॥ तहांनारदसनकादिसौं। कह्योप्रष्णसानंद ॥ दीर्घजांनितपसाअतुल। विद्याजुतजगबंध ॥३॥ तबसनकादिकप्रष्णतिहिं। करिकरिरहेविचार ॥ तदपिनउत्तरऊपजत। नहिंपावतनिर्धार ॥४॥ दीनदृष्टिसनकादितब। चितयौंपितकीओर ॥ ब्रह्मारहेविचारतऊ। उत्तरलहतनठौर ॥५॥ चिंतावस्थितविधिभए। जगतपितामहनाम॥ प्रष्णोत्तरउपजतनहीं। लघुताव्हैहैताम ॥६॥ विधिरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मुहिदयौपितामहपदमुरारि॥ चववेदवानिवसवदनचारि ॥उत्तरकछुनायौतदपिअंत ॥ उपहास्यजगतव्हैहैअनंत ॥ हरिविरददीनबंधूदयाल॥सबकालकरतसबकीसँभाल ॥ दुषहोतदीनकैंदुषीदेव॥ भवसाधकहतयहपरमभेव॥ यौब्रह्मकह्यौसमरनअनंत ॥ कीरयेसहायममरमाकंत ॥ विधिकियनिवेदआतमविषाद ॥ परपुरुषकरहुशिष्याप्रसाद ॥ ॥ कविरुवाच ॥

उतपत्तिस्वयंअन्नाथनाथ ॥ वपुधर्‍यौहंसवैकुंठनाथ ॥ मायाअजीतइच्छासुरारि ॥ परत्र ह्महंसतहांपांवधारि ॥ ब्रह्मादिकरेपूजनबनाइ ॥ कारणाभूतप्रभुहंसकाइ ॥ जोकर्‍योप्र षणनारदऋषीस ॥ उत्तरसोइदीनौजगतईस ॥ ॥ हंसउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ माया ब्रह्मविभागकरि । कोटिनिरूपणकीन ॥ भिन्नाभिन्नबताइकैं । तादृशउत्तरदीन ॥ ७ ॥ जै सैछायादेहसौं । रहतिनिरंतरसंग ॥ त्यौंहीमायाब्रह्मको । देष्यौप्रगटप्रसंग ॥ ८ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ब्रह्मादिकचीन्हौविमल । स्वयंब्रह्मविश्वेस ॥ अपनैंअपनैभावजुत । अस्तुतिकरीअसेस ॥ ९ ॥ दुषटार्‍यौउपदेसदै । धरिवपुदयानिधान ॥ हंसरूपअवता रहरि । पुनिभएअंतर्ध्यान ॥ १० ॥ समाधानकियद्विजनिकौ । चिंताहरीअपार ॥ का रणइहिंनरहरसुकवि । भयौहंसअवतार ॥ ॥ इतिश्रीहंसअवतारचरित्रंबारहटनरहरि दासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथ सप्तदश मन्वंतरावतार प्रारंभः ॥



॥ दोहा ॥ कविरु० ॥ ब्रह्माकेसुतउपजे।सनकादिकतपसिद्ध॥सृष्टिकरनआज्ञादई । वैनटि गएप्रसिद्ध ॥ १ ॥ तहांविधिआज्ञाभंगतें । रोसबढ्योउरआइ ॥ तिहिंछनफूटीभृकुटित हां । क्रोधनअंगसमाइ ॥ तिहिंभृकुटीपथरुद्रतहां । भएक्रोधमयदेह ॥ पंचाननप्रतिमा प्रगट । समअंगुष्टअरेह ॥ ३ ॥ ताहीछनतनरुद्रकौं । बाढ्योजथाप्रमान ॥ पितुआगैंतब जोरिकर । ठाढेजोगनिधान ॥ ४ ॥ आज्ञादीनीब्रह्मतब । सहितविवेकविचार ॥ सृष्टिउपाज हुशंभुतुम । विश्वविविधविस्तार ॥ ५ ॥ छंदवेताल ॥ विपरीतचरितपिसाचअंतरभूतप्रे तभयावनै ॥ वेतालनिशिचरविकटषेचरदुसहरूपडरावनैं ॥ जाजुल्यजक्षजमातिजहँत हँजगतअनहितजानियै ॥ मायाअनेकसुमानसीयहरुद्रसृष्टिप्रमानियै ॥ जीयहतकजा ठरपापसंजुतकपटजुद्धबहुवपुकरे ॥ विश्वासघातअमापविग्रहविश्वद्रोहीविस्तरे ॥ वैलक्ष

करपदवदनवाणीरंगआकृतिआनसी ॥ पलपिसितरुधिरसरीरपोषकमालिनउतपतिमान
सी ॥ सोदेषिब्रह्मासृष्टिसंभवभयत्रसितव्याकुलभए ॥ सुरसिद्धजोगीजतीतापसआतुर
ब्रह्मापहँगए ॥ भवसृष्टिकर्म्मचरित्रभयजुतकमलभूआगेंकहे ॥ सुरसिद्धमुनिमुनित्रास
सबविधिब्रह्मचकिथकिसेरहे ॥ विधिबोलिरुद्रहिकह्योअपनीसृष्टिपूरणकीजियै ॥ सुरसि
द्धसाधकब्रह्मसृष्टिहिअभयदानसुदीजियै ॥ तबरुद्रबचनप्रमानपितकौंकह्योअपनेंगृह
गए ॥ तहँभएब्रह्माचित्तसंभ्रममहातपसाधतभए ॥ कछुकालसाधीउग्रतपसागगनवानी
तहँभई ॥ करिदेहनूतनतजहुजीरनदैवयहआज्ञादई ॥ विधिधर्योविग्रहद्वितीयततछि
नद्विधापहिलोतनभयो ॥ तिहिदेहदक्षणभागतैतबमनुस्वयंभूनिर्म्मयौ ॥ अंसावतारउ
बारअद्भुतप्रथममनुतेईभए ॥ विष्यातबुद्धिबलअतुलविक्रमजगतदुषदायकजए ॥ वि
धिअर्धभागजुसेषविग्रहअषिलमतियोंअनुसरी ॥ तिहितैंभईगुणशीलसंजुतसत्यरूपासुं
दरी ॥ अषिलेसलक्ष्मीऔंसउपजैउभयवरवरनीभए ॥ अतिकरेविमलविवाहउच्छवदेषि
सुरमुनिमनरए ॥ पतिस्वयंभूमनुप्रियापावनसत्यरूपासुंदरी ॥ मैथुनीसृष्टिअमेयम
हिमाविसदतनतैंविस्तरी ॥ तहांस्वयंभूमनुपाइपदवीकरतसृष्टिप्रमानए ॥ सुतभएद्वै
अरुतीनिकन्यापरमधर्मनिधानए ॥ प्रथमप्रियव्रतपुत्रलघुउत्तानपादअनूप ॥ देवहूति
प्रसूतिअरुआकूतिअतुलितरूप ॥ भवसृष्टिभूतपिशाचनिर्भयकरतअतिउत्पात ॥ ब्रह्म
सृष्टिसभीतभाजतषोजिषोजिसुषात ॥ यहसुनीब्रह्मअनीतिअतिसयचित्तबहुचिताभरे ॥
दैतिलकचामरछत्रमनुतहांस्वयंभूअधिपतिकरे ॥ तेलगेषानपिशाचमनुकहांनिकसिकहुं
अग्यातगौ ॥ कंदरागूढसुमेरकीतहांमहातपसाधनलगौ ॥ कछुकालवीतिदयालके
शवप्रगटतहांदरसनदयौ ॥ तिहिंठोरस्वायंभूतहांमनुविष्णुसौंयहवीनयौ ॥ प्रभुस्वर्ग
अरुभूलोकमोतैंकरतरक्षानाबनैं ॥ तुमअनंतअजेयअद्भुतजोग्यहितकृतकारनैं ॥ वरदयो
विष्णुप्रसन्नमनुकहँभूमिरक्षातुमकरौ ॥ स्वर्गकौंहमजतनकरिहैंचित्तचिंतापरिहरौ ॥ ॥
॥ दोहा ॥ स्वायंभूमनुकौंदयो । मनवंछितवरदान ॥ दीनानाथदयालपुनि । हरिभए
अंतर्ध्यान ॥ मनुआएभुवलोकफिरि । करतभएसुषकाज ॥ अतुलिततेजप्रतापअति ।
सहितसमृद्धिसमाज ॥ रुचिनामामुनिवरभयो । विद्याब्रह्मविनीत ॥ ताकेंगृहआकूतितिय ।
पतिव्रतासुपुनीत ॥ जन्मउदरआकूतिके । अनंतअंसअवतार ॥ जज्ञनामसोइंद्रभो । रुद्र
सृष्टिषयकार ॥ इंद्रस्वर्गरक्षाकरी । स्वायंभूभुवलोक ॥ सृष्टिबधीतहांमैथुनी । अपनैंअ
पनैंओक ॥ स्वायंभूमनुमनुभए । यज्ञनामसुरराज ॥ मन्वंतरयहप्रथमभौ । जानतसा
धुसमाज ॥ इहिमन्वंतरकेविषय । भयोजज्ञअवतार ॥ धर्मनिरूपणमषक्रिया । कीनेंब
मप्रकार ॥ १ ॥ दूजोमनुअवतारभौ । स्वारोचिषइहिनाम ॥ अग्निपितास्वाहाजननि ॥
विमलनीतिविश्राम ॥ इंद्रभयोविभुनामतब । स्वर्गलोकरषवार ॥ दयाधर्मउपदेशकर
भएऋषभअवतार ॥ २ ॥ तीजोउत्तमनाममनु । पिताप्रियव्रतराज ॥ समतानाममाता
तिहिं । सुषसंतानसमाज ॥ इंद्रभयौतहांसत्यजित । विधिजुतस्वर्गविहार ॥ नरनारायण
तिहिसमय । भएउग्रअवतार ॥ ३ ॥ चौथोतामसनाममनु । पृथुख्यातितिहिंतात ॥ के

तुमतीमाताभइ। विमलविश्वविष्यात ॥ इंद्रभयौतृदिवेंद्रतहां। दुष्टनिदंडप्रचार ॥ दीन उद्धरणदुषहरण। श्रीहरितहांअवतार ॥ ग्राहग्रह्योगजराजजल। कीनोदीनपुकार ॥ वल विक्रमकरिहीनभौ। मोष्यकर्योतिहिंवार ॥ ४ ॥ पंचममनुरैवतभयौ। तामसकौलघुभ्रात ॥ पितामातवेईभए। विश्वविदितयहबात ॥ इंद्रभयौविभुदूसरौ। ताकेसमयविशेष ॥ नामभयौअवतारतहां। श्रीवैकुंठसुरेश ॥५॥ षष्ठममनुचाक्षुषभयौ। पितासुचक्षुपुनीत ॥ मातापुरहूताप्रगट। वैभवभोग्यविनीत ॥ इंद्रभयौद्रुमनामतब। श्रीकच्छपअवतार ॥ क्षीरउदधिमंथनकिय। काढेरत्नउदार ॥ षटवितीतमनुएभए। अपनीअपनीवार ॥ वर्तमानभवतव्यजे। कहिवेजथाप्रकार ॥ ६ ॥ वैवस्वतमनुसातऔं। विवस्वानपितुतास ॥ अरुमातासंज्ञाभई। पुहविप्रसिद्धप्रकास ॥ नामपुरंदरइंद्रतहां। श्रीवामनअवतार ॥ तीनपरगकृतमेदिनी। बलिछलबंधनहार ॥ वैवस्वतमनइंद्रजुत। वर्तमानसंसार ॥ कहिवेअबभवतव्यजे। मनुचासवअवतार ॥ ७ ॥ मनुसावर्ण्यभविष्यैंहै। वैवस्वतकेभ्रात ॥ विवस्वानतेईपिता। सोपैसंज्ञामात ॥ अष्टममनुयहजानिवौ। अरुबलिनामाइंद्र ॥ जोन्हैहैंनभभूमिगत ॥ त्यौंकहिहैमनइंद्र ॥ ८ ॥ नवमदक्षसावर्ण्यमनु। पितावरुणसप्रहास ॥ श्रुतनामातहांस्वर्गपति। पंडितकहतप्रकास ॥ ९ ॥ दशमब्रह्मसावर्ण्यमनु। उपश्लोकपितुताहि ॥ इंद्रनामतहांविश्वसृज। अषिलप्रसिद्धसुआहि ॥ १० ॥ नामधर्मसावर्ण्यमनु। एकादसमउदार। पिताअनागतविश्वविदित। धर्मसेतअवतार ॥ ११ ॥ मनुजबन्हैहैंद्वादशम। रुद्रसावर्ण्यसुनाम ॥ देवानुषताकौपिता। इंद्रनामऋतुधाम ॥ रक्षकवेदमजादके। विविधधर्मविस्तार ॥ नामसुधामातिहिंसमय। प्रभुन्हैहैंअवतार ॥ १२ ॥ देवसावर्ण्यत्रयोदशम। देवहोत्रपितुजान ॥ इंद्रदिवस्पतितासमय। रविअवतारप्रमान ॥ १३ ॥ इंद्रसावर्ण्यचतुर्दशम। बृहत्सेनतिहिंतात ॥ श्रुतसुचिनामाइंद्रतहां। न्हैहैविश्वविष्यात ॥ द्विजसुरभीमषदीनके। करिहैंजतनअपार ॥ सुनियतन्हैहैतिहिसमय। बृहद्भानुअवतार ॥१४॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अपनेंअपनेंसमयविहिततपतेजराजबल ॥ धर्मनीतिदिविलोककरतरक्षामांहिमंडल ॥ तिहिप्रसादमषभागसकलनिरभयसुरपावत ॥ आपआपनेकाजलोकलोकेशचलावत ॥ विस्तारसृष्टिविधिनिर्विघन, जिनिअनेकदुर्जनजए ॥ कहिसप्तदूननरहरसुकवि मन्वंतरअवतारभए ॥ ॥ इतिश्रीमन्वंतरचतुर्दशअवतारचरित्रंबारहटनरहरदासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथ अष्टादश धन्वंतरिअवतारचरित्र प्रारंभः ॥

———०:❀:०———

॥ दोहा ॥ आमयक्षयकारकअषिल। करनविश्वउपकार ॥ तंत्रमंत्रओषधीशास्त्र। रचेचारिउपचार ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दनुदेवउभयबलअप्रमान ॥ मिलिकर्योदुग्धसागरमथान ॥ उच्छलेफेणकणिकाअकास ॥ तेभएरोगपृथ्वीप्रकास ॥ जगवातपित्तकफहतकजंत ॥ इत्यादिप्रगटआमयअनंत ॥ चिंत्यौतबआगमज्ञानचेत ॥ हरिजानिविश्वएनाशहेत ॥ परब्रह्मलह्योरोगनिप्रभाव ॥ भवभूतहेतकृतदयाभाव ॥ ते



जमयपुरुषएकप्रगटताम ॥ कलकुंभसुधापूरितसकाम ॥ वपुस्यामपीतवसनविसाल ॥ कमलाइतलोचनतिलकभाल ॥ कुंडलकिरीटमणिमयप्रकास ॥ कचकुंचितसोभितअसिततास ॥ अतिसुंदरआकृतिविष्णुअंस ॥ सबअंगचिन्हसोभावतंस ॥ तेजमयधनवंतरिनामतास ॥ विख्यातवैद्यविद्याविलास ॥ नाडिकाकालऔषधगिनान ॥ वसवर्तरोगनासकविधान ॥ आमयविभागकीनैअपार ॥ प्रगटेसुग्रंथविश्वोपकार ॥ शुभतंत्रमंत्रऔषधसुभाइ ॥ विधिशस्त्रक्रियादीनीबताइ ॥ पुनिधातकर्ममूलीप्रचार ॥ कीनैप्रकारजगपरुपकार ॥ परब्रह्मभएपृथ्वीप्रकास ॥ निजनामधनवंतरिरोगनास ॥ दीनैवताइएतत्वदाउ ॥ भावनासिद्धिविश्वासभावु ॥ ॥ धन्वंतरिरुवाच ॥ ॥ निर्लोभवैद्यरहिवोनिदानसोइसफलहेतवैदकविधान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिदयाजगतउपदेसकीन ॥ जगदीसभएपुनिजोतिलीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नरहरप्रभुइहिहेतभए । धन्वंतरिअवतार ॥ तिहिंप्रसादभयरोगतैं । सबनिर्भयसंसार ॥ ॥ इतिश्रीधन्वंतरिअवतारचरित्रंवारहटनरहरदासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ १८ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

॥ अथ एकोनविंशति परशुरामावतारचरित्र प्रारंभः ॥

——०:❋:०——

॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ द्विजरामसुनहुअवतारहेत ॥ कृतकर्मउग्रजिहिंधर्मसेत ॥ कुसभएनृपतिइकसोमवंस ॥ सुतभयोकुशिकपुहवीप्रसंस ॥ तिहिंकस्योमहातपपुत्रकाम ॥ सुतहोइइंद्रसमधर्मधाम ॥ यहकथासुनीजबइंद्रआप ॥ तपविघ्नकरतभयौअतिसताप ॥ कीनैसुरेसउद्यमअशेष ॥ तपभंगहोतनाहिननरेस ॥ सुरराजगएतबगुरुनिकेत ॥ हठकहेसकलतपभंगहेत ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ करिजतनविघ्नमैंबहुतकीन ॥ नृपरहतनिरंतरध्यानलीन ॥ ॥ गुरुःउवाच ॥ ॥ गुरुकह्यौइंद्रसौगूढग्यान ॥



मिलिनृपहिकरहुमैत्रीसमान ॥ दढतपनिहारितवदेवराज ॥ कुशिकसौंकरीमैत्रीसकाज ॥
कुसिकसौंसक्रयहप्रषणकीन ॥ कामनाकवनतपव्रतसुलीन ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ निर्धा
रकह्योउत्तरनरेस ॥ सुतहोहुआनिमेरेसुरेस ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तपपूरनकरिराजतुव । सुष
भोगवहुसरीर ॥ ममअंसावतारसुत । तेरेव्हैहैधीर ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यौंकहि
इंद्रस्वस्थानगो । राजाआयौग्रेह ॥ रसविलाससुषराजके । भुगवतसहितसनेह ॥ २ ॥
अवधिपाइसुतऊपज्यो । राजागाधिपुनीत ॥ अंसभयौसुरराजको । विद्यानीतिविनीत ॥
॥ ३ ॥ कन्याउपजीगाधिके । सत्यवतीइहिनाम ॥ सुंदरतासोभासहित । समगुनलक्षनधा
म ॥ ४ ॥ ब्रह्माकौसुतभृगुभयो । शुक्रभयोभृगुग्रेह ॥ ऋषिरिचीकताकेभयो । महातेजबल
देह ॥ ५ ॥ ऋषिरिचीकनृपगाधिकी । कन्यायाचनकीन ॥ राजकह्योऋषिराजसौं । हूंहूंव्रत
आधीन ॥ ६ ॥ ॥ गाधिरुवाच ॥ ॥ हयसहस्रशशिक्रांतितन । शामकर्णशुभरूप ॥
इतेसमर्प्येंआनिमोहि । कंन्यावरैअनूप ॥ ७ ॥ मैयहलीनोएकव्रत । सोमिथ्यानहिहोइ ॥
जोयहपनपूरनकरै । सत्यवतीपतिसोइ ॥ ८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबरिचीकगएवरुण
पहँ । यहजाचन्याकीन ॥ शामकर्णलक्षनसहित । हयसहस्रतहँदीन ॥ ९ ॥ आनिदएह
यगाधिकहँ । कीनौवचनप्रमान ॥ सत्यवतीसंकल्पकरि । दीनीकन्यादान ॥ १० ॥ मुनि
कृतकन्यापाणिग्रह । लैआएनिजग्रेह ॥ कर्माचारगृहस्थके । निवहतनियतसनेह ॥ ११ ॥
॥ सत्यवतीअनपुत्रता । कछुभौकालवितीत ॥ अंतरदुषभरतारसौं । विनयौपरमविनीत
॥ १२ ॥ सत्यवतीकीमाततव । आपअपुत्राजानि ॥ जाचन्याजामात्रसौं । पुत्रीमुषहिप्र
मानि ॥ १३ ॥ पुत्रहेतत्रियसासुकै । कीनैयज्ञविधान ॥ मषप्रसादमुनिमंत्रजुत । द्वैचरुक
रेसमान ॥ १४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ चरुभएसपूरनमंत्रजोग ॥ ऋषिप्रेमयुक्तकीनैंप्र
योग ॥ त्रियहेतकह्योजोचरुसुतंत्र ॥ तिहिंब्रह्मसक्तिमेलीसुमत्रं ॥ स्वस्रुनिमित्तचरुकृत

सतेज ॥ तिहिक्षत्रसक्तिदीयरुद्रतेज ॥ चरुभएसिद्धपूरणप्रभाव ॥ सोसांतउग्रसंजुतस्व
भाव ॥ ॥ रिचीकउवाच ॥ ॥ संध्यासनानसरितासनेम ॥ ऋषिकह्योजातपरब्रह्मप्रेम ॥
॥ पुनिआइसुदेहूंचरुपुनीत ॥ विधिजुक्तहोहतुमहूंविनीत ॥ योंकहिरिचीकगएनित्यकाज
सानंदसरितसंजुतसमाज ॥ ऋषिरहेकालकछुसरिततीर ॥ आतुरस्वभावत्रियभइअधीर
॥ पुनिपुत्रमनोरथसिद्धिपाइ ॥ अंबासमेतमषशालआइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सत्यवतीकी
माततहां । कीनौचित्तविचार ॥ मुनिजुकह्योनिजत्रियनिमित्त । यामहंकछुअधिकार॥१५॥
सत्यवतीकेनिमित्तचरु । कीनौहुतोऋषेस ॥ मातासोचरुआपलै । कीनौभक्षअसेष॥ १६ ॥
॥ शेषरह्योचरुपुत्रिका । भक्षनकह्योसमूल ॥ विधिकेअंकनअन्यथा । भावीटरैनमूल ॥
१७ ॥ करिआएऋषिनित्यकृत । चरुनहिपाएथान ॥ सत्यवतीसौंतिहिंसमय । पूंछतभ
एनिदान ॥ १८ ॥ प्रियादयौतबप्रीयकौं । उत्तरप्रेमप्रसिद्ध ॥ भक्षकरेहमयज्ञचरु । होहु
मनोरथसिद्ध ॥ १९ ॥ ॥ सत्यवतीउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तत्कालगर्भथिति
भईसताप ॥ मुनित्रीयाकष्टउपज्योअमाप ॥ अबहीमोहिउपज्योकष्टआइ ॥ शुभगर्भहो
तपूरणसुभाइ ॥ ॥ रिचीकउवाच ॥ ॥ कहिविप्रभईविपरीतकोय ॥ कल्याणहेतनहीं
कष्टहोय ॥ ॥ सत्यवतीउवाच ॥ ॥ चरुकह्योविपर्जयहमअचेत ॥ त्रियजातिनजान्यों
हितकुहेत ॥ ॥ रिषिरुवाच ॥ ॥ तबहोइआत्रिसात्विकसुभाय ॥ अतिघोरकर्म्मसुतहो
यआय ॥ ॥ स्त्रीउवाच ॥ ॥ भर्ताहिकह्योअतिसभयभाज ॥ सुतघोरकर्ममोहिकौनका
ज ॥ ॥ ऋषिउवाच ॥ ॥ प्रियदयौवचनरमणीप्रसिद्ध ॥ सुतहोइसांतस्वाभावसिद्ध ॥ तव
पौत्रजदपिभृगुकुलपुनीत ॥ होयउग्रघोरकर्माअभीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मुनिमंत्रउदक
पायौप्रकास ॥ त्रीयसांतरूपभयौगर्भवास ॥ भयोपुत्रअवधिपरमानपाइ ॥ जमदग्निमहा
सात्विकसुभाइ ॥ राजाएकरेणुकधर्मधाम ॥ पुत्रिकातासुरेणुकानाम ॥ जमदग्निऋषिहि
सौंदईदान ॥ रेणुकाबेदसंजुतविधान ॥ तिहिभईगर्भथितिसमयपाइ ॥ द्विजवंशतदपि
दारुणसुभाइ ॥ दशमासवीतिभयौजन्मदेव ॥ अवतारपरशुधारणअजेव ॥ इहिका
लदुष्टछत्रीअनीत ॥ भुवकरीभारपीडितसभीत ॥ अवतरेईसतिहिसमयआइ ॥ श्रीपर
शुरामउर्व्वीसहाइ ॥ विधियुक्तकरीसेवाविशेष ॥ शिवदईधनुर्विद्याअसेष ॥ सस्त्रास्त्रब्र
ह्मविद्यासमान ॥ अध्ययनासिद्धिपाईप्रमान ॥ तपकरैपरशुधरगंगतीर ॥ सात्विकसुभा
वबैठेसधीर ॥ जमदग्निअग्निहोत्रीद्विजात ॥ प्रातिदिवसकरतक्रतुसमयप्रात ॥ रेणुका
नित्यपतिव्रतनेम ॥ पटकलसनीरआनतसप्रेम ॥ इकदिवसआइगंधर्वराज ॥ सुरस
रितविबुधकन्यासमाज ॥ तिहिनामपद्ममालीप्रसिद्ध ॥ संजुतविलाससुषसकलसि
द्ध ॥ बंधानराजवाजित्रविवेक ॥ अपछराकरतनाटकअनेक ॥ अवगाहगंगजल
अंगअंग ॥ मिलिकरतमनहुक्रीडामतग ॥ इहिसमयरेणुकानीरआइ ॥ गंधर्वदेषि
सबसुषसुभाइ ॥ मनचकितकरतचिंतवनमूल ॥ सुषतहांजहांहरिसानुकूल ॥ वसुधाहैं
एऊदेहवांन॥सोदेहधरतमहूँअज्ञान ॥ सौगंधवस्त्रसज्यानसैन॥ चितनेमकर्म्मजुतनहिनचै
न ॥ तांबूलरत्नभूषणनतेल ॥ श्रृंगारनहिनसुषसमयषेल ॥ नृपग्रेहजन्महमव्रथापाइ

व्रतनियमतपहिजैंहैंविहाइ ॥ मनसोचरेणुकाकत्थौमांहि ॥ नितचीरकलसजलरहतनांहि ॥ पटपात्रनीरनहींचलतपेषि॥ भयभीतहोतविस्मयविशेषि ॥जबकालअतिक्रमभयौजानि॥ पुनिआइग्रेहतरिक्तपानि ॥ जुगहस्तजोरिपतिअग्रजाइ ॥ कहांनीरकह्यौभर्तासुभाइ ॥ पटपात्रआजआवैनआप॥मृदकलसकहौआनौंअमाप॥त्रियवचनसुनतअमभयौआइ॥ पतिध्यानदृष्टिकारनसुपाइ ॥ गंधर्वदेषिसंपतिसमाज ॥ इँहिचित्तअभागीचल्यौआज ॥ विभवचारभावतिहिंउपजिवाम ॥ मुनिकरेरोषचषरक्तताम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वसुमन आदिजुपंचसुत । पिततबलीनैंटेरि ॥ मस्तककाटहुमातकौ । उत्तरदेहुनफेरि ॥ २० ॥ तबपांचहुपुत्रानिवचन ॥ फेरिकह्योदुषरोइ ॥ ऐसोपापअकर्मयह । हमपहँतातनहे इ ॥ २१ ॥ परशुरामतिहिंछनसुतप । करतसुरसरीतीर ॥ मुनिजमदग्निसकोपमन । बोलिलयौरणधीर ॥ २२ ॥ पिताभक्तिदारुणप्रकृति। आयोपरशुउभारि ॥ पितदीनीआज्ञाप्रगट । मातभ्राततवमारि ॥ २३ ॥ काटेसीसकुठारकरि । फेरनपूछीबात ॥ पृथ्वीतललोटतपरे । पांचभ्रातअरुमात ॥ २४ ॥ ॥ जमदग्निरुवाच ॥ ॥ भयोप्रसन्नऋषिजमदग्नि । कीनीआज्ञासिद्ध ॥ जोकछुइच्छाचित्तमहँ । माँगहुपुत्रप्रसिद्ध ॥ २५ ॥ ॥ परशुरामउवाच ॥ ॥ जोरिकह्यौकरपरसुधर । व्हैआधीनजुआप ॥ जननिसहोदरजीउठैं । मुहिनलगैवधपाप ॥ २६ ॥ तहांजिवाएमृतकसब । ब्रह्मतेजऋषिराज ॥ मानहुसोवतसोउठे। करतभएगृहकाज ॥ २७ ॥ फेरिकह्यौतहँपरशुधर । मेरेनियमअभंग ॥ कबहुनजननीजनककी । करिहूंआज्ञाभंग ॥ २८ ॥ जननीक्षत्रप्रभावजुत । उपजैवैरअपार ॥ कबहूंआज्ञादेहिमुही । तुमहुंहतौंनिर्द्धार ॥ २९ ॥ तुमतेंदैवीशक्तिकरि । सबैंजिवाएआज ॥ इनपहजौतुमनाजिऔ । सबकेहोंहिअकाज ॥ ३० ॥ तातैंजुक्तननिकटतब । अंतररहिहहुंजाइ ॥ होइप्रयोजनमोहिलंगि । लीजहुवेगिबुलाइ ॥ ३१ ॥ यौंकहिकीनौरामतब । आश्रमगंगातीर ॥ तपव्रतसंजमनियमजुत । करतभएतहांधीर ॥ ३२ ॥ हैहयवंशप्रसिद्धमहँ । भयौराजतिहिंवार ॥ नामसहस्राजुर्ननृपति । विद्याबलविस्तार ॥ ३३ ॥ दत्तात्रेयआराधकीय । पदवंदनकरिसीस ॥ सेवाहैहयराजसैं । प्रसन्नभएजगदीस॥ ३४॥ तिहिविद्याआन्विषिकी । दीनीसहितविशेष ॥ तातैंजलथलगगनपथ । पायौंनृपतिप्रवेस ॥ ३५ ॥ रिपुकरिसमरअजयता । दुहुँदिसहाथहजार ॥ जोगसक्तिअघटितश्रिया । पाएएकहिवार ॥ ३६ ॥ कंन्यारेणुकनृपतिकी । व्याहीहैहयराज ॥ परमप्रियापटरागिनी ॥ सोभासीलसमाज ॥ ३७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकद्यौससबलहैहयनरेस ॥ वनगहनचल्यौमृगयाविशेस ॥ वनितासुसंगसंजुतविवेक ॥ यौंकरतउचितक्रीडाअनेक ॥ थलजलविहारपर्वतसुथान ॥ कंदराविविधनिर्झरनिवान ॥ सरवरनिविमलपंकजविकास ॥ वनकुसुमात्रिविधमारुतसुवास ॥ गंधर्वकरतसंगीतगान ॥ सुरसरसतानवाजित्रविधान ॥ ऋतुऋतुविलासवैभवविशेष ॥ उदभवअनंगविलसतअसेष ॥ सेन्यासमूहचतुरंगसंग ॥ अन्नेकसुभटजोधाअभंग ॥ मृगयाविलाससंजुतसधीर ॥ तिहिसमयआइसुरसरितितीर॥ जमदग्निकरततपतहांद्विजात ॥ बनविमलतपोथलजगविष्यात ॥ चवडोलस्थितरांनीरु

राज ॥ देष्योमुनिआश्रमवनविराज ॥ थलरम्यदेषिरानीसुथान ॥ यहकह्योकौनकोतप
निधान ॥ नृपदुष्टभावउत्तरसुदीन ॥ मनगर्वतर्कअंतरमलीन ॥ इहांवसततिहारीबहिनआ
ज ॥ मिलिचलहुदेषिसंपतिसमाज ॥ दोहा ॥ ॥ सेन्याद्वारेराषितब । आपगयेमुनिग्रे
ह ॥ मिलेपरसपरमोदमन । संजुतहिताहिसनेह ॥ ३८ ॥ पूजेविहितप्रसन्नमन । पर्णकुटीबै
ठारि ॥ कीनैप्रश्णोत्तरकुशल । विविधसप्रेमविचारि ॥ ३९ ॥ क्षनअंतरहैहयनृपति । आ
ज्ञायाचनकीन ॥ यहसुनिऋषिपत्नीतबै । मनमहँभएमलीन ॥ ४० ॥ ऋषिरुवाच ॥
॥ फेरिकह्योतहांजमदग्नि । राषहुधर्महमार ॥ वनफलभोजनजलविमल । करियेअंगीका
र ॥ ग्रहआएआतिथ्यक्रम । जोनकरैगृहवान ॥ धर्मविपर्जेयहोइतब । तुमसबजानत
सयान ॥ ४२ ॥ ॥ नृपउवाच ॥ ॥ नृपतिकह्योकछुहास्यजुत । वचनअहंकृतिफे
रि ॥ मेरेसैन्यअसंख्यहे । मुनिदेषहुहियहेरि ॥ ४३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ महापुरीमा
हिष्मती । जिनकैराजस्थान ॥ तिनकैअचिरजकौननृप । जोदलमिलिअप्रमान ॥ ४४ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबराजाऋषिराजकौं । कीनौंवचनप्रमान ॥ सरितातटपटग्रेहकरि ।
नृपगएमध्यस्थान ॥ ४५ ॥ कामधेनुजमदग्निकै । हविष्मतीइहिनाम ॥ पर्णशालथिति
पूजियत । देयसुवंछितकाम ॥ ४६ ॥ दीयभोजनअसनविविधि । हैहयराजबुलाय ॥ सौं
सामंतससैन्यतब । मुनिग्रहबैठेआय ॥ ४७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इच्छासुकरेभोजन
अनेक ॥ मिष्टान्नपानविंजनविवेक ॥ मृगमदकपूरतांबूलतेल ॥ सुभसेजसयनसौगंधमे
ल ॥ भइइच्छापूरनभांतिभांति ॥ षलनृपतिवधीतिहांचित्तषांति ॥ नृपभयौमहाअचिर
जनिदान ॥ पुनिपूछिसबैसेवकसुजान ॥ ॥ नृपतिउवाच ॥ ॥ भंडारकवनदेषौसुभा
इ ॥ इच्छामनजहांतैंवस्तुआइ ॥ ॥ सेवकउवाच ॥ ॥ देषीयकांतहमनृपदयाल ॥ इक
सुरभीबांधीपर्णसाल ॥ कहीयतयाऋषिकैकामगाउ ॥ यहसिद्धिसबैताकौप्रभाउ ॥ ॥ नृ
पतिउवाच ॥ ॥ मंत्राधिपतिनसौंकहिमहीस ॥ इहिसुरभिकाजजाचहुऋषीस ॥ ॥
॥ मंत्रीउवाच ॥ तबसचिवकह्योजेमुनिरिसाइ ॥ नृपकह्योततौलीजेछुडाइ ॥ ॥ क
विरुवाच ॥ ॥ प्रभुचलेजबैमुनिविदापाइ ॥ सोधेनुसचिवजाचीसुभाइ ॥ ॥ ऋषिरु
वाच ॥ ॥ ईश्वरतुमहयगयगृहअनेक ॥ यहमेरैबछीयाआहिएक ॥ गहिहूंनसचिवसो
दैउगाइ ॥ प्रतिदिवसपीयतजलदरसपाइ ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ सोकह्योसाचिवनृपसौं
सुनाइ ॥ गहिदेतनहिंनजमदग्निगाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बलकर्षिऋषिहिदेमहारेस ॥
लेगयोहैहयनरेस ॥ ऋषिरामरामकहिकीनीपुकार ॥ धरिकोपगुआयौपरशुधार ॥ परशुरा
मउवाच ॥ तुमबोल्यौकारनकवनतात ॥ सोकहहुमोहिजोविषमबात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
कृतसुन्यौदुष्टछत्रीजुकीन ॥ भृगुवंसतिलकतहांरोसभीन ॥ मेषलाअजिनमौंजीसमान ॥
वैषमकुठारकरधनुर्बान ॥ जटतिलकदर्भउपवीतजोग ॥ भवभारउतारनरहितभोग ॥
जुतब्रह्मचर्यउरक्रोधज्वाल ॥ क्रमजोगपहुंचिमनुप्रलयकाल ॥ आवर्तवातचलीअ
सहमान ॥ नभरेणुरुद्धसूझैनभान ॥ नक्षत्रदिवसउल्मुकनिहारि ॥ चढगगनगृ
ध्रपंछीमचारि ॥ पलचारनषीकुलमिलिअपार ॥ शब्दायमानधावतसुढार ॥ वैता

लवीरमिलिप्रेतवृंद ॥ उरबढ्योमहाजोगनिअनंद ॥ हैहयदलदेषतअशुभहेत ॥ विपरीत निमित्तचलबिचलचेत ॥ उरविकासिसूरअंतरअनंद ॥ विस्मोहपरेकातरनिवृंद ॥ पुरध सतराजहैहयप्रवीन ॥ द्विजराजपष्टतहांहाकदीन ॥ सुनिवचनफिरयोसंग्रामसूर ॥ कर सहससजेआयुधकरूर ॥ मिलिभयौमहाभारतभयान ॥ उमगेसुवीरमनआसमान ॥ इहि ओरपरशुधरएकआप ॥ दससप्तउतहिषोहनिसदाप ॥ मुषमारमारसंघारसूर ॥ सोरह्यौशब्दब्रह्मंडपूर ॥ इकपरतसूरघाइनिअधाइ ॥ उठिउठिकबंधइकभिरतआइ ॥ दल चालभूमिभयकालदीस ॥ हयमदमतंगमिलिगरजहीस ॥ दिगदंतिभीतादिगपालडोल ॥ कठमठितकमठनहींरहतकोल ॥ डगमगतअचलथिरचरउदास ॥ पुनिपवनगवनविथक्यौ प्रकास ॥ करसहसछेदिकर्कसकुठार ॥ शिरकाटिरामसैन्यासँघार ॥ मिलिमांसशोणिकर्द ममहीस ॥ दिनप्रलयकारथिरचरनिर्दीस ॥ सतरहअक्षोहिनिपरेसूर ॥ प्रभुहेतसिद्धपौरु षसपूर ॥ सबश्रोणलिप्तरणभूविहार ॥ करऊर्ध्वघोरधाराकुठार ॥ थितअग्रेकामधेनाअ भीत ॥ जुधअजिरविराजतअरिअजीत ॥ इहिदेषिरूपब्रह्मादिआइ ॥ शुभकरीपुहपव र्षासुभाइ ॥ वाणीसुविबुधजयजयविशेष ॥ सानंदबजेदुंदुभिसुरेश ॥ निःसंकमारिहैहय नरेश ॥ पुरपरशुरामकीनौप्रवेश ॥ जयपायमहासंग्रामजीत ॥ पितदईआनिधेनूपुनीत ॥ तपकरनगएफिरिरामताम ॥ करिनियमकहुंबैठेअकाम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहस्राअर्जु नकेसुबन । सोपितबैरसँभार ॥ दिनकछुबीतेदुष्टता । बढीकुकर्मविचार ॥ ४८ ॥ कोपेहैह यराजके । सुतआएदलसाजि ॥ ततछनआश्रमगंगतट । बेढ्योमिलिगजवाजि ॥ ४९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ जमदग्निनियमजुतध्यानजाप ॥ इहिसमयकरतबैठेअपाप ॥ चषमुद्रित मिलिपरब्रह्मचेत ॥ आनंदमग्नउद्धारहेत ॥ व्रतमौनजुक्तवरजितविवाद ॥ मुनिबैठेसमये अप्रमाद ॥ अनसमयदुष्टछत्रीअनीत ॥ जमदग्निहतेतिनक्रोधजीत ॥ हाहंतशब्दऋषि ग्रेहहोइ ॥ रेणुकासहितसबउठेरोइ ॥ सुनिदुसहरुदनद्विजरामदेव ॥ अतिवेगतहांआए अजेव ॥ सुनिक्षत्रकर्मदारुणदुरंत ॥ तहांरामनियमलीनौतुरंत ॥ षलरुधिरपूरितटनीवि ख्यात ॥ तिहिंपैठितिलंजुलिदेउंतात ॥ संकलपकर्योसुरनरप्रसिद्ध ॥ सोइजामदग्निसंग्रा मसिद्ध ॥ दैअग्निदाहपितक्रियाकाज ॥ सबकरहुअनुजमिलिकुलसमाज ॥ दैआज्ञाबंधु निरामदेव ॥ उठिचलेआपसायुधअजेव ॥ हियभयौकठिनआयुधप्रहार ॥ तिहिंकरतति क्षधाराकुठार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामआइमाहिष्मती । कहेजुवचनकराल ॥ पुत्रसुहैहय राजके । आनिभिरेततकाल ॥ ५० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ संग्रामभयौदारुणसकोप ॥ र णवीरजुरेतहांपैजरोप ॥ मचिमारपरसपरअतिअमान ॥ भारथभयौभूतलभयान ॥ द्वि जरामहतेरिपुसुवनदोइ ॥ सामंतसूरसैन्यासमोइ ॥ मारेअसंष्यक्षात्रियअमान ॥ रणभरे रुधिरनिर्झरनिवान ॥ तिहिपैठिकर्योतर्पनसुतात ॥ विस्तरीलोकत्रयनियमवात ॥ मस्तक निअद्रिकीयपुरीमाहि ॥ जगजीवदेषिभयत्रस्तजांहि ॥ इहिभांतिसोधिउर्वीअभीत ॥ निर्मूलकरेक्षत्रीयअनीत ॥ भयेकोपअनलएगर्भश्राव ॥ अंकूरछेदसंततिअभाव ॥ इक वीसबेरदैदुसहदाउ ॥ भूवकरीनिक्षत्रीबैरभाउ ॥ दीनीलैविप्रनिउदकदान ॥ भूमीसभौम

थितिराजथान ॥ प्रतिजुद्धरुधिरतर्पनप्रकार ॥ धरिकोपवैरकृतपरशुधार ॥ इहिभांतिदई
लैलैअमाप ॥ पृथ्वीसुगँवाइलोभपाप ॥ परसपरकरेविप्रनिविरोध ॥ इकवीसवारखोईअ
बोध ॥ इकसमयमिलेक्षत्रियअशेष ॥ बढिविप्रनिसौंविग्रहविशेष ॥ धरपरसहुतेकहुंध्यान
लीन॥कृतसुनेबहुरिछत्रीजुकीन ॥ आतुरअभीततबरामआइ ॥ संग्रामरच्यौदारुणसुभाइ
॥ विपरीतबीरक्रीडाविशेष ॥ दिवदेवचकितभएचरितदेष ॥ द्विजरामदीपअरिशलभआ
इ ॥ अनसंख्यपरेघाइनिअघाइ ॥ पलचारग्रीधआहारपाइ ॥ सबभएत्रिप्तअपनैसुभाइ॥
कुरुषेत्रभूमिसंग्रामकीन ॥ वहचलीश्रोणसरितानवीन ॥ भरिरामकुंडरुधिरनिभयान ॥ प
रसधरपैठिकंठहिप्रमान ॥ तिहिरुधिरकरेतर्पनपुनीत ॥ विष्यातबातत्रयपुरविनीत ॥ इहिं
समयपिताजमदग्निआइ ॥ सबपितरयुक्तसात्विकसुभाइ ॥ ब्रह्मादिदेवमुनिगनविशेष ॥
दारुणविलासपितभक्तिदेख ॥ सुभभईसुमनवर्षाप्रकास ॥ सरसिद्धशब्दजयजयसहास ॥
॥ ॥ **पितरउवाच** ॥ ॥ भएपितापितरसंतुष्टभाउ ॥ सुतहोहुअबैसात्विकसुभाउ ॥ क
रियेनिवर्तक्रीडाकराल ॥ सुषभएहमहिमिटिवैरसाल ॥ ॥ **परशुरामउवाच** ॥ ॥ परसु
धरकह्योपितसौंसप्रीति ॥ ऋषिजानतहोतुमधर्म्मरीति ॥ रिणछुट्योमोहितुममिट्योरोष ॥
सोवचनदेहुसंजुतसंतोष ॥ पितुकरीपुत्रवाचाप्रमान ॥ अरुकहेअहिंसाकृतविधान ॥ अ
तिरोषजदपिसुतंहोइअनेक ॥ अनुसरहुअहिसाधर्मएक ॥ सुतधन्यधन्यपौरुषसुभाउ
॥ तपकरहुविगतव्हैवैरभाउ ॥ सुरपितरगएस्वस्थानसंग ॥ परशुधरकहतपौरुषप्रसंग
॥ अतिआतुरआएइहींकाल ॥ द्विजरामद्विजनिघेरौदयाल ॥ दसहूदिसजाचकविप्रदी
न ॥ प्रभुपरशुरामबोलेप्रवीन ॥ अन्हवाइरुधिरबेरांइकीस ॥ छितिदईतुमहिंहतिहति
छितीस ॥ दिगअंतलहीतुमपृथ्वीदान ॥ निजअसंतोषसोगइनिधान ॥ धरिविप्रआप
आपहिविरोध ॥ इकवीसवेरषोईअबोध ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ स्वस्तिसमयद्विजमहासूरम
हिमाप्रसिद्धमहि ॥ रणहिदीनअरधीनकर्मजुतमर्मनिगमकहि ॥ विषमपरस्परवैरदुतीय
सुषदेषिमहादुख॥असहमानउत्कर्षआनमिलिहोतमलिनमुष॥तिहिंनाहिनपृथ्वीजोग्य,
तुमभिक्षापररहिउदरभर॥ द्विजरामकह्योयहद्विजनिसौं, प्रभुतातदपिविरोधपर ॥ १ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ यौंकहिरामसुसांतमन । विरतचलेवनवास॥ वैरविरोधविहा
इसब । पूरणदयाप्रकास ॥ ॥ **कवित्त** ॥॥ परशुरामपृथ्वीपवित्रपरिक्रमणप्रकासीय
॥ गयेपुण्यकालतीरथप्रासिद्धक्रमनेमजुक्तकीय ॥ सांतभावअनुसरीयदयादीक्षापितुदि
न्नीय ॥ मनवचकर्मविशुद्धबुद्धिकरुणारसभिन्नीय ॥ वनगहनमहेंद्राचलविमल, स
रितातटआश्रमसुषद ॥ नितब्रह्मचर्यसंजमनियम, प्रभुसाधतचिरंजीवपद ॥ २ ॥
ब्रह्मवंसअवतरनदुष्टक्षत्रीकुलदारन ॥ जटातिलकजग्योपवीतकृष्णाजिनधारण ॥ दर्भ
मौंजिमेषलाधनुषतूणीरविशिषधर ॥ धाराघोरकुठारविसमविश्वेसवहतबर ॥ अवतरन
मरनवर्जितअनंत, जरारहितइंद्रियविजित ॥ तपकरतअतुलत्रैलोक्यपति, ध्यावतसुरउ
द्धारहित ॥ ३ ॥ ब्रह्मग्रेहपरब्रह्मधर्योनिजदेहधर्महित ॥ मातबंधुपितुवचनहतेतउपा
पअलेपित ॥ कर्मक्षत्रद्विजदेहब्रह्मचारीव्रतधारीय ॥ कीयनिक्षत्रइकवीसवार, भूवभार

उतारीय ॥ कृतचरितकहेनरहरसुकवि, विमलकीर्तिजगवित्थरीय ॥ त्रैलोकनाथभृगुकुल तिलक, कारणइहिंअवतारकीय ॥ इतिश्रीपरशुरामअवतारचरित्रबारहटनरहरदासेनवि रचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथ विंशतितम श्रीवेदव्यासावतारचरित्र प्रारंभः ॥



॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मद्रिकेतगंधर्वइक । प्रियामद्रिकानाम ॥ ब्रह्मश्राप हतकर्म्मवस । सफरमिथुनभएताम ॥ १ ॥ ॥ गंधर्वीउवाच ॥ ॥ श्रापसमयद्विज सौंत्रिया । कह्यौवचनयहरोइ ॥ लीनौसीसचढाइहम । श्रापमोक्षकबहोइ ॥ २ ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ सफरीवीरजमनुजभजि । पुत्रीगर्भनिवास ॥ तबैमिथुनतुमजालपरि । पंचतलहहुप्रकास ॥ ३ ॥ कन्यानिकसेउदरतव । रहैसुझींवरग्रेह ॥ तबतुमपावहुआप पद । फिरिगंधर्वीदेह ॥ ॥ मद्रिकावाक्यं ॥ ॥ कह्यौबहुरियौमाद्रिका । झींवरनीचसु भाउ ॥ तातैंजोकन्याकरै । कोऊकर्मकुभाइ ॥ ५ ॥ सोफलपहुंचैमातापित । यहजानतस बकोइ ॥ तौंहमकेसेपदलहैं । श्रापमोक्षक्योंहोइ ॥ ६ ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ फेरिक ह्योद्विजप्रसन्नव्है । नगरहुसोचविचार ॥ सोकन्यानृपग्रेहगत ॥ करिहैधर्मप्रकार ॥ ७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ देहतजीगंधर्वतब । मीनभएजलमाँह ॥ करतविहारजुकर्मबस । जमुनापुण्यप्रवाह ॥ ८ ॥ वसुनामाकोउकुंवरसौ । गिरिकावामातास ॥ पितआज्ञाततका लगौ । बनआषेटविलास ॥ ९ ॥ ताकीवामारितुसमय । शुकसौंदयौसंदेस ॥ मृगया जंतुनकरचल्यौ । क्रीडासक्तविशेष ॥ १० ॥ नलिकावीरजमेलितहां । सोदीनीशुकहाथ ॥ काजसुफलशुकफिरिचल्यौ । मारगगगनसनाथ ॥ ११ ॥ तरणिसुताकेमध्यतट । जब निकस्योशुकआनि ॥ भक्षभोगताभावतैं । झपट्यौबीचासिचानि ॥ १२ ॥ तहानलिकाअ धमुषभइ ॥ बीजगिरयौजलबीच ॥ गंधर्वीसफरीगिल्यौ । जबनियरानीमीच १३ ॥ तिहिं

गर्भस्थितकन्यका । मछगंधाशुभरूप ॥ लिषिललाटपटनांटरै । जोविधिलिषीअनूप ॥ १४ ॥ माछीमाखोजालतहां । मीनमिथुनपरिबंध ॥ सुषदुषभुक्तैंजीवसम । सबैकर्मसंबंध ॥ १५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ माछीलैआयौसफरयेह ॥ लेशस्त्रविदार्यौउदरदेह ॥ तब निकसीकन्याअतिअनूप ॥ सबअंगअंगसुंदरसुरूप ॥ यहदेषिअसंभववातएक ॥ उत्पन्न भएअचरिजअनेक ॥ वहहुतोअपुत्रिकामीनमार ॥ सोपोषिपुत्रिकाकरिसुढार ॥ सबदेह मच्छसौरभसुभाइ ॥ मछगंधानामासोकहाइ ॥ अतिसुंदरअतुलितरूपअंग ॥ अदभूतम नहुसैन्याअनंग ॥ पितुनामसंभारतिसमयप्रात ॥ मछगंधारूपनतनसमात ॥ इहिसमय पराशरपाउधारि ॥ यहनावमांझकन्यानिहारि ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ दैछोरिनावजलमाँ झडारि ॥ उठिमाछिनिमुहिसरिताउतारी ॥ मछगंधाउवाच ॥ ॥ द्विजछनकविलंबहु इहांदेव ॥ षिनआवतपुरुषाकरहिषेव ॥ ॥ पराशरोवाच ॥ ॥ अवकासविलंबनमो हिआज ॥ करिवौआवश्यकवेगिकाज ॥ ॥ कन्याउवाच ॥ ॥ मततापसकल्पहित्रा समानि ॥ वहिआगैकीनीनावआनि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बैठेमहर्षिनौकाविलास ॥ तिहिंकीनौखेवाततकाल ॥ सुंदरीदेषिकन्यासरूप ॥ यौवनारूढमनमत्थजूप ॥ मुनिभईतबै मनमत्थमार ॥ दुःसहनवाननिकसेदुसार ॥ बहुभयौऋषिहिकामोदबोध ॥ प्रियवचनक ह्यौकन्याप्रबोध ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ मारतअनंगइहिसमयमोहि ॥ तिहिताक्यौसुं दरिसरणतोहि ॥ रतिदानदेनदषेत्ररंग ॥ इकद्विजरुकरबाधाअनंग ॥ ॥ कन्याउवाच ॥ ॥ तबकह्योमीनगंधासुताइ ॥ इककन्याहूंअरुदिवसआहि ॥ यहउचितनांहिंकर्महिकुअं क ॥ कन्यातनसैंचढितहैकलंक ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ऋषिंविषमकुहरकीनौविथार ॥ त आकासभयौदिगअंधकार ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ मुनिकह्यौभजहुइहिद्वीपमोहि ॥ ततकालदेउंनतश्रापतोहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ कुललाजजदपिपितमातकानि ॥ जियडरी आपभयदुसहजानि ॥ कन्यानहींउत्तरफेरिकीन ॥ द्विजराजतहांऋतुदानदीन ॥ प्रियवच नपरासरभएप्रसन्न ॥ मागहुवनितावरइच्छमन्न ॥ ॥ कन्याउवाच ॥ ॥ कन्यावरह जानैनकोइ ॥ दुर्गंधनसैंनिंदानहोइ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ पसरैसुगंधजोजनप्रमान ॥ तुं वजोजनगंधानामजान ॥ वनिताविशेषवैभवविशाल ॥ कन्यावरहौतबसर्वकाल ॥ यहग र्भधरहुइहिद्वीपआज ॥ कृतसफलहोहुमनइछकाज ॥ त्रिणडासिपर्णआछादिताम ॥ धरि पुत्रतहांसोगईधाम ॥ शुभस्यामवर्णसुंदरसरीर ॥ सोजातमात्रउठिगौसधीर ॥ स्वयंसिद्ध सात्विकसुभाव ॥ परपुरुषमहादैवतप्रभाव ॥ तपकह्यौसुथलकहूंबैठिताम ॥ आराधअनंत अंतरअकाम ॥ बिनुअसनपानवासनविहीन ॥ नितवढतदेहपौरुषनवीन ॥ अतिसहे कष्टषटारितुअभंग ॥ उतपन्नसिद्धितहांअंगअंग ॥ यहपुरुषब्रह्मअंसावतार ॥ सुप्रसन्न भयेहरिकियसंभार ॥ इकदिवसआनिहरिदरसदीन ॥ परब्रह्मअषिलकरुणाप्रवीन ॥ वि ष्णुतहांकह्यौवरमांगिव्यास ॥ जिहिंकाजतप्यौवनगहनवास ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ करतारजानिजबसानुकूल ॥ मोहिदेहुवेदविद्यासमूल ॥ ऋषिपुत्रकह्यौराजाधिराज ॥ यह जाचतहूंवरदानआज ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ परब्रह्मकह्यौतहांहसिप्रवीन ॥ कतजात

मात्रतपउग्रकीन ॥ वरलेहुविविधिसुषभोगव्यास ॥ विस्ताररराजवैभवविलास ॥ ॥व्यास उवाच ॥ ॥ सुषसंपतिमेरैंयहसभेव ॥ दीजैदयालदेवाधिदेव ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ द्विजदीनोइछादानदेष ॥ व्यासत्वविश्वव्हैहैविशेष ॥ तबवेदचारिवानीविलास ॥ पूरनपुराणकरिहोप्रकास ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वरवंछितदैव्यासकहँ । सदासहायकसंत ॥ भगतवछलतिहिछनभए। अंतध्यानअनंत ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ धर्म्मनिरूपनकस्यौमहाभारथमुषभाष्यौ ॥ वेदविभागविचारविधूरविमंडलराष्यौ ॥ वेदव्यासविष्यातकृष्णद्वैपायनकहयौ ॥ तीनभुवनतपसिद्धिलोक ॥ अमरपदलहयौ ॥ कृतकीर्तिकहीनरहरसुकवि,आपशक्तिमनुअनुसस्यौ ॥ अवतारअंसअषिलेषकौ,व्यासनामजगविस्तस्यौ ॥ १ ॥ इति श्रीवेदव्यासअवतारचरित्रंबारहटनरहरिदासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ ७ ॥

इति चतुर्विंशतिअवतारचरित्रे

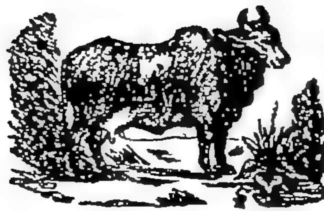
प्रथमभागः

समाप्तः

पंडित श्रीधर शिवलाल

ज्ञानसागर छापखाना

(मुंबई.)



॥ श्रीः ॥

श्रीगणेशायनमः ।

॥ अथ एकविंशतितम रामावतारचरित्र प्रारंभः ॥



॥ गाथा ॥ ॥ आरंभेअग्रेशंवदनसिंदूरअरुणबिछरीयं ॥ वाहनआपुविचित्रंवरदाता बुद्धिलंबोदर ॥ १ ॥ स्वेतगिरिवाससकलस्वेतंवसनायविमलशशिवदनी ॥ हंसरथवीण हस्तासदविद्यादानिसरस्वती ॥ २ ॥ मूलशक्तिमहामायाज्वालाननाजोतिजालप्या ॥ नग रकोटनिवासंजगजेतावंदिजगजननी ॥ ३ ॥ सहसकरसप्रहासंउदितंअसुरनासतमअषि लं ॥ प्रतिमाअकेयपुरुषंभयहंतादेवभासकरं ॥ ४ ॥ ॥ शिवस्तुति ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ ॥ घनाछरी ॥ वृषभकौवाहनबिछांवनौहेलोमविषविषईतुचाकौवासक्रोधकेनिकेतहैं ॥ आसीबिषभूषनभषनबिषबंधुभालामंगलतिलकसर्वमंगलासहेतहैं ॥ बिषयविनाशवेषर हतविषैहीरतशूलऔकपालइहिंसंपतिसमेतहैं ॥ देषौधौंअभूतभूतनाथएकौपलभजेरिझ मर्त्यनामानिअमर्त्यपददेतहैं ॥ १ ॥ भोरेभूलिजातभवभोगदेदेभोरहीलोभोरीगोरिभवा केसुमानभारीयतुहैं ॥ तपकीअतुलताईतेजकीतरलताईपनकीपवित्रताईपारपारीयतुहैं ॥ रतिहूंसौंरत्तऔविरतिसौंविशेषरतआरतपुकारसुनिउरधारीयतुहैं ॥ कासीनाथकासीसाव कासीहूनहोतनैकहांसीभजैवासीतैबिसासीतारियतहैं ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जटाजूट सिरगंगचंद्रशेषरचषहुतवह ॥ गरलकंठअहिहारमुंडमालाविषभषह ॥ डमरूसूलकप्पा लपानिधनुबानप्रकाशित ॥ वपुविभूतिअवधूतसिंघगजचर्मसुवासित ॥ वामांगसिवावा हनवृषभ, जयतिजयतिशंकरअजर ॥ रघुनाथचरितकृतध्यानहीत, सुमतिदेहुदाहकसम र ॥ १ ॥ ॥ अथस्वायंभूमनूतपस्याप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याज्ञ वल्क्यमुनिइकसमय। उरआनंदसहास ॥ भरद्वाजसौंयहकथा। कहीजुप्रेमप्रकास ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥ स्वायंभूमनुसमयपाइतपसाधनकीनैं ॥ पतिव्रतासुपुनीतसत्यरूपासँगलीनैं ॥ जहांनैमिषारण्यपरमपावनथलपायौ ॥ धेनुमतीसरितासुतीरमनुध्यानलगायौ ॥ तबद्वादशअक्षरमंत्रतहां, जपतानिरंतरसमजुगाति ॥ मनुदंपतिमहासंतोषमिलि, भईमूलपल्लवभुगति ॥ २ ॥ पुनिछांडेफलमूलपत्रजुगलछुधासुजित्तीय ॥ एकबारिआधारवर्षषटसहसजुवित्तीय ॥ वर्षलक्षइकछोढिवारिवातासनकीनौं ॥ अयुतवर्षरहिनिराहारतजिपवनसुदिन्नौं ॥ इकपाइरहेठाढेअवनि, अस्थिमात्रअवशेषतन ॥ सोइउग्रजोगमनुसद्धयौ, मिलिसमकायकवाचमन ॥ ३ ॥ तदपिनश्रद्धाघटतरहतरतध्याननिरंतर ॥ अनतदेखितापसअनन्यप्रभुभएदयापर ॥ विमलहोतआकासवानिमनुमाँगिमाँगिमुष ॥ सुनतसपुष्टसरीरभएसबरोमरोमसुष ॥ आनंदमग्नमनुउच्चस्यौ, प्रभुतुमदातापरमपद ॥ शिवकाकभुसंडिजुउरवसत, सोइदरसनदीजैसुषद ॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जगहेतजगतपतिजगनिवास ॥ श्रीरामरूपवेदनिप्रकास ॥ शुभस्यामदेहनीरदसमान ॥ परिधानपातबिद्युतप्रमान ॥ रत्नमयकनकभूषनरसाल ॥ मकराकृतिकुंडलमुक्तमाल ॥ कटिषीनसिघतनकसिनिषंग ॥ आरंभविश्वजेताअनंग ॥ सारंगवामकरनमितसोह ॥ मिलिदक्षनभ्रामितविशिषमोह ॥ शुभआदिशक्तिवामांगसंग ॥ अविलोकिउदितसुषअंगअंग ॥ यहरूपदेषिमूरतिउदार ॥ मनुकरेंदंडवतनमसकार ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ हरिलयोबांहिधरिमनुउठाइ ॥ वरलेहुहेतजिहितपेआइ ॥ ॥ मनुरुवाच ॥ ॥ मनुकह्योदेवममसरेकाज ॥ सबभएमनोरथसफलआज ॥ करजोरिकह्योसौंरमाकंत ॥ अभिलाषएकअंतरअनंत ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ हरिकह्योतबैकरिपरमहेत ॥ मनुमांगहुसोइछासमेत ॥ ॥ मनुरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वायंभूमनुतिहिसमय । प्रगटकह्योवरपाय ॥ तुमसौमेरैंपुत्रहोय । तिहिहितलेउँलडाय ॥ २ ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ पुनिहरिकह्योप्रसन्नव्हे । सतरूपासौंएहु ॥ जोअभिलाषचित्तमहँ । तुमहूमागिसुलेहु ॥ ३ ॥ सत्यरूपाउवाच ॥ ममभर्तमांग्योजुबर । सोइहूंमांगतदेव ॥ दीनानाथदयालतुम । जानतअंतरभेव ॥ ४ ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ तबहरिपरमप्रसन्नव्हे । दियबंछीतबरदान ॥ ऐसोहीव्हेहैंअवसि । मनुकीजेपरमान ॥ ५ ॥ ॥ कवित्त ॥ व्हेदयालदेवाधिदेववरदानदयौतब ॥ कछुककालमनुपदविशालसुषकरहुभोगसब ॥ अवधिपायअवधेसप्रगटव्हेहौपृथ्वीपाति ॥ तबतवगृहअवतारआनिलेहूंनरआकृति ॥ तिहिसमयजोगमायाअजित, बैदेहीव्हेहैविमल ॥ मनुकरहुइहोनिर्धारमन, सबैहौहिसाधनसफल ॥ ५ ॥ इतिस्वायंभूमनुवरलब्धं ॥ ॥ अथरावणपूर्वजन्मप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबरावणपूरबजनम । सुनहूजथाक्रमसाध ॥ द्विजसरापहतज्योंनृपति । आसुरभयोअसाध ॥ १ ॥ केकैनामादेसइक । भूतलवसतअभीत ॥ सत्यकेतराजातहां । राज्यकरैरिपुजीत ॥ २ ॥ ताकेपुत्रप्रसिद्धद्वे । भएविश्वविष्यात ॥ जेठोभानुप्रतापअरु । अरिमर्दनलघुभ्रात ॥ ३ ॥ सत्यकेतुनृपवृद्धभो । राज्यपुत्रकहँदीन ॥ विमलचित्तवैराग्यजुत । वानप्रस्थव्रतलीन ॥ ४ ॥ भानुप्रतापसुनृपतिभो । आसमुद्रअवनीस ॥ धर्मप्रवर्तेंअषिलभूव । जगजनदेतअसीस ॥ ५ ॥ ताकोमंत्रीधर्म्मरुचि । नीतिनि

पुणनिस्संक ॥ इंद्रीजितिनिर्लोभअति । एकस्वामिहितअंक ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकसमयराजदलबलहिंसाज ॥ करिमंत्रचढ्योदिगविजयकाज ॥ अनेकशत्रुमारेसंग्राम ॥ निस्सेषलएधनधराधाम ॥ दिगअंतकरिआज्ञाअषंड ॥ भइकामदुघापृथ्वीप्रचंड ॥ कृतमहादानमषहोमकीन ॥ नितहोतपुन्यनिसचयनवीन ॥ आषेटचढ्योनृपएककाल ॥ जनजंतुविविधसँगसुभटजाल ॥ आरण्यजीवमारेअमान ॥ विंध्याचलवनवाजतनिसान ॥ पहिलेइकआसुरकालकेत ॥ परतापभानसौंजुद्योषेत ॥ सतपुत्रअसुरदसबंधुताम ॥ सोमारिलएराजासँग्राम ॥ सुतबंधुगिरेसैन्यासमेत ॥ करमीडतभाग्यौकालकेत ॥ वनमाझरहैआसुरविशेष ॥ वसमायाकरैअनेकवेष ॥ अटवीजिहिंहौआसुरअमान ॥ भयौआवनतहांप्रतापभान ॥ सोभयौअसुरसूकरस्वरूप ॥ उठिचल्यौनिकटआगैअनूप ॥ नृपलग्यौपीठिसूकरनिहारि ॥ संधानबानधनुषसँभारि ॥ दुरिजातनिकटदरसैदुरंत ॥ इहिंभांतिकरैमायाअनंत ॥ नृपएकआपकोउसंगनाहिं ॥ मेल्योवराहवनगहनमाहि ॥ थलतहांविवरपर्वतअथाह ॥ वनपाइविवरगतभौवराह ॥ देष्यौपदचिन्हसुविवरद्वारि ॥ नृपफिर्योगर्तदुर्ग्गमनिहारि ॥ तहांभयोतृषातुरभूपतास ॥ नहींपायौषोजतजलनिवास ॥ भूवलीनीछीनिप्रतापभान ॥ नृपगयौभाजिइकत्रासमान ॥ भयसौंनकहुंरहसकतिभूप ॥ ऋषिवेषवसैतहांकपटरूप ॥ २० ॥ नृपभानतासतपथलनिहारि ॥ वनभ्रमततहांउतर्योविचारि ॥ मुनिकपटवेषबैठ्योमहंत ॥ नृपकरेदेषिवंदनअनंत ॥ नृपभानसोनचीन्हौनिदान ॥ अतिपरीविपतिभयौरूपआन ॥ नृपभानपिछान्यौंतिहिंनरेस ॥ उरवैरभावउपज्योअसेस नृपभानकह्योसोजानिसंत ॥ उरतृषामोहिउपजीअनंत ॥ तबकपटीदीनौजलबताइ ॥ पीनोजलराजाअश्वपाइ ॥ नृपआयौफिरकपटीनिवास ॥ हयबांधिआनिबैठ्योसहास ॥ ॥ कपटमुनिरुवाच ॥ ॥ भानसौंकह्यौतबकपटभेष ॥ अस्तमितभयौदिनकरअसेष ॥ जोजनतूंवसत्तरिनगरजान ॥ निसिसयनइहांकीजैनिदान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ नृपभानतहांबैठेनिशंक ॥ कपटीदीयआसनभूप्रजंक ॥ ईश्वरीप्रबलइछाअनंत ॥ अनचिंतअसंभवमिलैअंत ॥ ॥ कपटीवाच ॥ ॥ कपटीमुनिपूंछ्योद्रोहकाम ॥ मुहिकहौकृपाकरिआपनाम ॥ तवचिन्हचक्रवर्तीसुचार ॥ वनभ्रमतअकेलेकिहिविचार ॥ ॥ ॥ नृपभानुउवाच ॥ ॥ भूवराजातपतप्रतापभान ॥ मंत्रीहूंताकोजीयसमान ॥ मृगयाहितभ्रमिउद्यानमांझ ॥ सेवककहूंभूलेहोतसांझ ॥ मैभाग्यजोगप्रभुदरसपाइ ॥ सबभांतिकृतारथभौसुभाइ ॥ तहांकह्योभानकरजोरितास ॥ प्रभुआपुनकोकहीयैप्रकास ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अवनीसग्रह्योविश्वासएक ॥ यहकपटबातमिलवैअनेक ॥ छत्रियनरेसजुतकपटशत्र ॥ तिहिंजरतनेत्रनृपदेषितत्र ॥ ॥ कपटीवाच ॥ ॥ कपटीतबबोल्योकपटलीन ॥ हूंनिर्धनभिक्षुकथानहीन ॥ तउचिन्हतिनाहिनन्नृपतितास ॥ वसभयोभानमायाविलास ॥ ॥ भानुउवाच ॥ ॥ करजोरिभानपुनिप्रणतकीन ॥ तुमवीतरागाविषयाविहीन ॥ तउकहहुनामकरिकृपानाथ ॥ हितजुक्तसीसममधरहुहाथ ॥ कपटीवाच ॥ ॥ वसभयौशत्रुजानौविशेष ॥ बाचादैबोल्योकपटवेष ॥ जनसंगभएतपध्यानजाइ ॥ इहिंभी

तिरह्योएकांतश्राइ ॥ भौमनप्रसन्नतुवभक्तिभाउ ॥ राषिहौंनहींतोसौंदुराउ ॥ ममनामएक
तनसुनहुमूल ॥ तनदेषतहूंसबब्रह्मतूल ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ पुनिनृपतिभानपूंछ्योनिपाप
॥ इहिनामश्रर्थमुनिकहहुश्राप ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥ यहश्रषिलसृष्टिउपजीश्रनादि ॥
उहिसमयभयौममजन्मश्रादि ॥ दूसरोभयोनहींफिरिदेहु ॥ एकतननामकौश्रर्थएहु ॥ तप
तेंकछुदुर्लभनाहितंत ॥ सिद्धांतकहतयहसाधुसंत ॥ विधिभएसृष्टिकर्ताविधान ॥ प्रतिपा
लविष्णुपृथ्वीप्रमान ॥ तिहिंविश्वविनाशकशिवविष्यात ॥ तपबलश्रगम्यकछुनहिनता
त ॥ श्राजन्मकरेमेंतपश्रषंड ॥ जितभयौप्रबलमायाप्रचंड ॥ ॥ कविरुवाच ॥ उतपत्ति
प्रलयवातैंश्रसेष ॥ वसकह्योभानकहिकहिविशेष ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥ नृपलग्यो
प्रकासनश्रापनाम ॥ तिहिंवीचबोलिकपटीसुताम ॥ श्रबलोंदुराउकीनोंश्रज्ञान ॥ भुवप
तितूश्राहिप्रतापभान ॥ तवपिताभयोनृपसत्यकेत ॥ हूंतृकालज्ञगुरुकृपाहेत ॥ पुरुषनहिं
करतनिजगुनप्रकास ॥ श्रनगम्यनमोतैंभूवश्रकास ॥ श्रभिलाषचित्तनृपमागिश्राज ॥
करिहूंसबतेरेसफलकाज ॥ ॥ भानुउवाच ॥ ॥ नृपभानुकह्योतबयहनिदान ॥ प्रभुमा
गतहूंश्रभिलाषप्रान ॥ श्ररिकरिश्रजेयश्ररुश्रजरश्रंग ॥ समरजितश्रमरदुषरहितसंग ॥
निष्कंटकएकहिंछत्रनाथ ॥ सतकल्पराज्यभुक्तौसनाथ ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥ कहित
थाश्रस्तुकपटीकरूर ॥ सबव्हैहैबंछितकाजपूर ॥ बसतेरैजगहोइहैविशेष ॥ कालादिश्रषि
लप्रानीश्रसेष ॥ द्विजविनासबैतोहिभरहिदंड ॥ एरहहिंश्रजिततपबलश्रषंड ॥ जोहोहि
विप्रतुवबसिनरेस ॥ तौब्रह्मविष्णुतुमहींमहेस ॥ निश्चयद्विजश्रापहिंहोइनास ॥ विधिहरि
हरहूंतबनहींविनास ॥ कैबातपरैयहछठैकान ॥ नृपमरनतबहितेरोंनिदान ॥ ॥ नृपतिउ
वाच ॥ ॥ निर्णयफिरिपूछ्योनृपतिभान ॥ वसहौंहिविप्रकहीयेविधान ॥ ॥ कपटीउ
वाच ॥ ॥ इनहैबसिकारकबहुउपाव ॥ सोपैंदुरंतदुस्साध्यदाव ॥ ॥ नृपतिउवाच ॥
॥ प्रभुकरहुवहैसाधनप्रसाद ॥ बसहौंहिंबिप्रजिहिंनिर्विषाद ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥
ऋषिकह्योफेरितबकपटरूप ॥ भोजनासक्तहैविप्रभूप ॥ हूंकरौंपाकविधिजुक्तवानि ॥
श्रापुनपुरसावहुराजश्रानि ॥ सोकरहिंविप्रभोजनसहास ॥ वसहौंहिनियतमानहुंविसा
स ॥ इकश्रानिकठिनपुनिबनीश्राहि ॥ मनतर्कवितर्कनिपरह्योताहि ॥ श्राजन्मसुनहुनि
श्चयनरेस ॥ मैंकह्योनांहिपत्तनप्रवेस ॥ तुवनगरगएविनुसर्वतंत्र ॥ किहिंभांतिहोइसाधन
सुमंत्र ॥ ॥ नृपतिउवाच ॥ ॥ मुनिसुनहुवेदमर्जादमूल ॥ तजिबौंश्रंगिकृतलघुनथू
ल ॥ सिषिधूमकूटत्रिणनीरफेन ॥ सिरकियैंबहतज्यौंधरनिरेन ॥ ८० ॥ करग्रह्योमोहितु
मदयाकीन ॥ निर्वाहसबैंतुमहीश्रधीन ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥ करियैजुगुप्तसाधन
सकाम ॥ तबहोइसिद्धिसोइतंत्रताम ॥ होइप्रातभूपतुमजाहुग्रेहु ॥ द्विजलक्षनिमंत्रणजाहि
देहु ॥ पर्यंतमासद्वादशसप्रेम ॥ नितितिनहिजिमावहुसहितनेम ॥ मषहोमकरहितेद्विजसमू
ल ॥ सुरहौंहिंतबहितुमसानकूल ॥ सुनिगुप्तबातइकनृपसहास ॥ इहिंरूपनश्राऊंतुवश्रा
वास ॥ यातैंमुहिउपजीबुद्धिएक ॥ इहिंहोइसिद्धिसाधनश्रनेक ॥ श्रादिकुलपुरोहिततुवजु
श्राहि ॥ तपबललैश्राऊंइहाँताहि ॥ तबदेहूंमेरोरूपतास ॥ हौंकरिहुंरूपवाकौप्रकाश ॥ हूं

आवूंप्रोहितरूपहोइ ॥ कृतइहिंममचिन्हैंजनकोइ ॥ पर्यंतवर्षंतवरहूंपास ॥ प्रोहितहिंइहां राषौंप्रकास ॥ साधनमोहिदुर्लभनहिंसंसार ॥ कारिजतुवकरिहूंइहिंप्रकार ॥ आजतैंतुम हिंदिनतृतियआनि ॥ प्रोहितस्वरूपमिलिहूंप्रमानि ॥ पहिचांनिमोहिवातनिप्रकास ॥ एकांतबोलिलीजहुअवास ॥ निर्द्धारकरहुनृपतुवनिकेत ॥ तपबलपहुंचैहूंहयसमेत ॥ अबसेष रहीअबनिसाआइ ॥ सुषसयननृपतिकरियेसुभाइ ॥ भयेखेदखिन्नमृगयाभ्रमंत ॥ तहां निद्राबसनृपहयतुरंत ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ कपटीकोमित्रजुकालकेत ॥ निसचरतबआयौमुनिनिकेत ॥ जोभयोविसदराक्षसवराह ॥ छलछिद्रपाइकीनौउछाह ॥ सुतबंधुवयर राक्षससँभारि ॥ चितकपटीमिलिनृपबधबिचारि ॥ **कालकेतउवाच** ॥ ॥ कहिकालकेत यौंकपटकार ॥ बधशस्त्रउचितनाहिनविचार ॥ जोहींनतदपिनृपक्षत्रिजाति ॥ अतिलघुकरिगनियैंनहिंअराति ॥ शीर्षावशेषजोराहुशत्र ॥ तउकरतग्रहणशशिसूरतत्र ॥ निहचैंसुषहीहोइशत्रुनास ॥ सुनीयेंमतमेरौसावकास ॥ निर्मूलशत्रुकुलकरिनिशेष ॥ वासुरचतुर्थमिलिहूंविशेष ॥ ॥ **कपटीउवाच** ॥ ॥ कहिकालकेतसौंकपटरूप ॥ भवहौहुविजयतवअसुरभूप ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ करिराक्षसमायाकालकेत ॥ ॥ मेल्योनृपमंदिरहयसमेत ॥ रानीढिगसयनकराइराज ॥ बिचवाजिसालबांध्योसुबाज ॥ सोआनिपुरोहितग्रहसपाप ॥ आकर्षिद्विजहिलैगयोआप ॥ तहांकरीभूतमायाअभूत ॥ धरिवेषपुरोहितआपभूत ॥ तहांदयौआपनौरूपजाहि ॥ करिभ्रमितसुराष्योकंदराहि ॥ कृतताकौरूपसुकालकेत ॥ तिहिसेजसयनकीयसुषसमेत ॥ निसिकछुकसेषजाग्यौनृपाल ॥ त्रीयग्रेहआयलषितातकाल ॥ उठिबाहिरआयोनृपअज्ञात ॥ तैंहीहयचढि वनभयोजात ॥ काहूनहीजान्यौंयहप्रकार ॥ दिनमध्यआइफिरिराजद्वार ॥ करिसभासुभटमंत्राधिकार ॥ सिघासनबैठौनृपसुढार ॥ क्रमजुक्तदेषिसंपतिअनेक ॥ कृतसभाविसर्जनजुतविवेक ॥ त्रयदिवसतहांजुगसमवितीत ॥ पुनिभयोसभाथितनृपपुनीत ॥ मुनिकपटसुमहिमालग्योमोह ॥ बसभयोनृपतिमायाविमोह ॥ प्रतिमाजुपुरोहितअसुरपाप ॥ इहिंसमयआनिदीयदरसआप ॥ नृपनमसकारकीयसहितनेम ॥ प्रोहिततहांआसिषदीयसप्रेम ॥ उठिभानतबैएकंतआप ॥ प्रोहितस्वरूपलियबोलिपाप ॥ नृपतहांकरेसंकलपनेम ॥ पूजाद्विजभोजनलक्षप्रेम ॥ आज्ञानृपप्रोहितदईएहु ॥ दिनलक्षनिमंत्रणद्विजनिदेहु ॥ भावीसुप्रबलनृपलषिनभान ॥ आरंभआंनकछुहोइआन ॥ प्रोहितनृपसासनजबाहिपाइ ॥ सकुटुंबविप्रनिमतेसुभाइ ॥ मायाप्रपंचविधिविधिबनाइ ॥ कीयपाकअसुरधरिविप्रकाइ ॥ दससप्तद्रव्यभोजनसुदेश ॥ अनेकस्वादव्यंजनविशेष ॥ पशुमांसविविधरांधेप्रकार ॥ तिनमाझविप्रआमिषविकार ॥ जबभईरसोईसिद्धजानि ॥ इहांविप्रनिमंत्रितमिलेआनि ॥ नृपभानसविधिद्विजपदपखारि ॥ बैठारितबैपंकतिबिचारि ॥ अरुपरशनृपतिवैढौअधीन ॥ परुसारपाकआएप्रवीन ॥ इहिंबीचभईआकाशबानि ॥ हैभोजनकीनैधर्महानि ॥ विप्राभिषरांधेइहांबनाइ ॥ जोब्रह्मभषैसोईनरकजाई ॥ यहसुनतविप्रऊठेरिसाइ ॥ वसभावी विप्रनिसरापदीनैविशेष ॥ सकुटुंबहोहुराक्षसन नृपहिंनबचनआइ ॥ ॥ **द्विजाऊचुः** ॥ ॥ विप्रनिसरापदीनैविशेष ॥ सकुटुंबहोहुराक्षसन

रेस ॥ भुवदेवमांसतवहोहुभक्ष ॥ पुनिकरहुपापपृथ्वीप्रतक्ष ॥ इकवर्षमाझतवनासहोइ ॥ कदातरहहुजिनवंसकोइ ॥ पापिष्टकरैहौभ्रष्टविप्र ॥ प्रभुभएधर्मरक्षकसछिप्र ॥ नृपरह्योठग्योसोकछुनजानि ॥ निर्द्धारभईफिरिगगनवानि ॥ निर्दोषनृपतिनिश्चयनिपाप ॥ अपराधविनाद्विजदयोश्राप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भौविस्मयसुनतप्रतापभान ॥ नभगिरादैवइछानिदान ॥ अवनीसपाकमंदिरहिंआइ ॥ नहिंप्रोहितपाकनपात्रपाइ ॥ कारनविप्रनिसौंप्रगटकीन ॥ मूर्छागतभोनृपमनमलीन ॥ ॥ द्विजाऊचुः ॥ ॥ द्विजकह्योभानुसौंव्हैदयाल ॥ भावीबलिष्टमानहुभुवाल ॥ निर्दोषभानुतूनिसंदेह ॥ अनसमझिश्रापहमदयोएह ॥ सबकहतसुरासुरवेदसंत ॥ अन्यथाहोइनहींशापअंत ॥ पृथ्वीसुरव्हैहोजुक्तपाप ॥ अवधिलैंशापभजिहौसुआप ॥ श्रीरामवाणहतसमरसिद्ध ॥ पुनिमिलहुजोतिदैवीप्रसिद्ध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सबगएविप्रदीनोसशाप ॥ प्राणीकृतभुक्तहुपुन्यपाप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रोहितभानुनरेसकौ । श्रेहदयोपहुंचाई ॥ कालकेतमुनिकपटसौं । जपजुतमिल्योसुजाइ ॥ प्रीतमकेअरुआपनै । लीनैवयरविशेष ॥ केकैदेसनरेसकौ । षोयोवंशअसेष ॥ ८ ॥ दुस्सहभानुप्रतापकौ । दीनौश्रापद्विजात ॥ अतिअनीतिजुतबातयह । भईविश्वविष्यात ॥ ९ ॥ षलदुर्जनअरुमक्षिका । इनकेसिद्रसुभाव ॥ छिद्रहिंताकतरहतनित । देतसमयपरदाव ॥ वैरीभानुनरेसके । एकैभएअनेक ॥ जहांतहांतैंसमिटिसब । कियउद्यमजुतटेक ॥ ११ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ आगैनृपतिप्रतापभानुजिहिंपरभवदीनौं ॥ राक्षसमनुजअनेकराजमिलिमंत्रजुकीनौं ॥ शत्रुसेनचतुरंगसाजिपरिहंससभारीय ॥ चहूंओरचठिसींमवैरविग्रहविस्तारीय ॥ दहुंदिसिप्रचंडअनपारदल, धरमस्वामिरषपालधर ॥ दिनफिरेसुभटनृपभानुके, परेवीरसंग्रामपर ॥ १ ॥ वर्षएकवरवीरविषमसंग्रामजुवित्तीय ॥ षलषुटेषगधारकरीरविमंडलकित्तीय ॥ सुभटमंत्रिसुतबंधुसहितसेन्याचतुरंगीय ॥ पर्योसुनृपतिप्रतापभानुभाराथअभंगीय ॥ उबर्योनवंसअवशेषइहिं, कोउअबजलअंजुलिकरन ॥ नहिंटरतदैवइच्छानियत, भौमदीपइहिंविधिमरन ॥ २ ॥ रावननृपतिप्रतापभानुकुंभसुआरिमर्दन ॥ मंत्रिधर्मरुचिधर्ममूलव्हैहैंसुबिभीषन ॥ अवरसुभटसेवकअनेकअवतरहिंजथाक्रम ॥ आकृतिदेहउतंगमहावैकृतिअधपातम ॥ परितापप्रानहिंसकपतित, विश्वद्रोहमनमथविवस ॥ अविवेकजोनिराक्षसअधम, एभविष्यहैअवधिवस ॥ ३ ॥ इति रावणपूर्वजन्मसंपूर्णम् ॥

॥ अथ रावणादिकजन्म प्रारंभः ॥

———०:❀:०———

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावणादिकौजन्मअब । कहिहौंमतिअनुसार ॥ जिहँकारनभुवभरहरण । भौरामाअवतार ॥ १ ॥ कृतजुगविषयपुलस्त्यऋषि । साधनतपसातंत ॥ आयोभूमिसुमेरकी । थलदेष्योएकंत ॥ २ ॥ तपहितकर्योनिवासतहां । वनबिचित्रविस्तार ॥ सरसरोजफुल्लियसुषद । मत्तमधुपगुंजार ॥ ३ ॥ तहांसाधनकियउग्रतप । भयोब्रह्मचितलीन ॥ धारणजोगसमाधिधरि । मनआसनदृढकीन ॥ ४ ॥ तहँरा

जातृणबिंदुकौ। पत्तननिकटप्रसिद्ध॥ वर्णचतुरतामहँबसत। सबसानंदसमृद्ध॥ ५॥ किन्नरसुरमुनिकन्यका। गंधर्वीशुभगान॥ तिहिंसरवरआईतबहि। करतविलासविधान॥ ६॥ तैनाचतगावतहसत। वाजितविविधवजाइ॥ क्रीडतिदैकरतालिका। धरतिपरसपरधाइ॥ ७॥ कोलाहलकृतकन्यका॥ आश्रमकीढिगआइ॥ अंतरायभयौध्यानमहँ। कह्योपुलस्तिरिसाइ॥ ८॥ ॥ पुलस्तिउवाच॥ ॥ रेपापिनिममदृष्टिपथ॥ इहांजुन्हेहैंआइ॥ गर्भवतीसोकन्यका। व्हैहैंसहजसुभाइ॥ ९॥ कविरुवाच॥ ॥ तबवेकन्याभयत्रासित। आपआपगृहआइ॥ भेदनकाहूसौंकह्यौ। लघुवयरहीलजाइ॥ १०॥ कन्यानृपतृणबिंदुकी। अबरैदिनअज्ञान॥ षेलतनिभर्यआनिसो। विनुजानैंवहबात॥ ११॥ परीसुदृष्टिपुलस्तिकें। अकस्माततहांआइ॥ गर्भस्थितिताकहँभई। भावीप्रबलसुभाइ॥ १२॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ वैवर्णलग्यौतनहौनवाम॥ तबगर्भसुलक्षनप्रगटिताम॥ अंबाविलोकिसविकारअंग॥ पतिसौंनिवेदिपुत्रीप्रसंग॥ नृपलष्योतवैकरिजोगध्यान॥ मुनिकृतसदोषयहसत्यमान॥ तृणबिंदुतहांधरिगूढज्ञान॥ पुलस्तिहदईपुत्रीप्रमान॥ नितकरैभर्तृसेवासनेम॥ पतिव्रतापरमसाध्वीसप्रेम॥ ॥ मुनिरुवाच॥ ॥ तबव्हैप्रसन्नबोलेपुलस्ति॥ सुनिप्रियेकहूंइकबचनसत्ति॥ इकव्हैहैतेरैसुतअजेव॥ दुववंसवृद्धिकारककुदेव॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ दोहा॥ ॥ ताकेपुत्रप्रसिद्धभौ। विश्वश्रवाइहिंनांम॥ विद्याजुतलक्षनविमल। तेजस्वीअभिराम॥ १३॥ ऋषिपुलस्तिकौपुत्रअरु। ब्रह्मपौत्रबगान॥ ताकहँकन्याआपनी। भरद्वाजदइआन॥ १४॥ सोव्याहीविश्वश्रवा॥ मिलिआनंदअमेव॥ ताकेपुत्रकुबेरभौ। जोउत्तरदिगदेव॥ १५॥ विधिनिमित्तकीयवैश्रवण। उग्रतपस्याआनि॥ मनसंजमआतमदमन। जलतपसीतनजानि॥ ॥ १६॥ छंदपधरी॥ ॥ जीयसाधिजोगसहिदुषजाल॥ दीयदरसनभएब्रह्मादयाल॥ ॥ ॥ विधिउवाच॥ ॥ वैश्रवणमागिविधिवाचदीन॥ कारणजिहिंतपसाउग्रकीन॥ ॥ ॥ कुबेरउवाच॥ ऐश्वर्यदेहुदैवतअनंत॥ अक्षयधनेसपदअवधिअंत॥ पदवीधनेसभौदिसापाल॥ दीनौविमानपुष्पकदयाल॥ कविरुवाच॥ पायौकुबेरपृथ्वीप्रताप॥ अंबुजभवगएस्वस्थानआप॥ इकदिनकुबेररथचढेआय॥ पितवंदनकीनेदरसपाय॥ कुबेरउवाच॥ वैश्रवणकह्योपितसौंसप्रीत॥ वरदयोमोहिब्रह्माबिनीत॥ विश्रामबताहुकोउविख्यात॥ तहांवसौंजाइनिर्भीततात॥ पिताउवाच॥ इकदुर्गपुरीलंकाअनूप॥ सोरचितविश्वकर्म्मांसुरूप॥ वनगहनत्रिकूटाचलविसाल॥ प्राकारकनकथंभाप्रवाल॥ पाथोनिधिपरिषागहरपूरसंचारतहांइकप्रभासूर॥ निर्म्मयोहुतौराक्षसनिवास॥ तेगएसुतलभजिविष्णुत्रास॥ सोआहिसुन्यदुर्गमसुथान॥ तहांपुत्रवासकरियैप्रमान॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ पितुवचनपाइआज्ञाप्रवीन॥ निर्भयधनेसतहांवासकीन॥ संपतिसबअक्षयसुषसमाज॥ रसभोगकरैतहांयक्षराज॥ ॥ दोहा॥ ॥ माल्यवानराक्षसअधम। अवनिसुतलतैंआइ॥ संपतिसुषवैश्रवणके। लंकविलोकेजाइ॥ १७॥ राक्षसथानकसुरनिपहँ। देषतउपज्योद्वेष॥ सत्रुभावतैतिहिसमय। बाढ्योदुःषविशेष॥ १८॥ षलजबदेषैआनसुष। अंतरजरैअपार

॥ ताकैविघ्नविशेषकहँ। करैअनेकप्रकार ॥ १९ ॥ माल्यवानफिरिग्रेहगो। करनकुबेरअका
ज ॥ कन्याअपनीकैकसी। लैआयोनिरलाज ॥ २० ॥ ॥ माल्यवानउवाच ॥ ॥ तिहि
षलकन्यासौंकह्यौ। भईसजज्ञाभाम ॥ विधिनातीविश्वश्रवा । ताकहँभजहुसकाम ॥२१॥
तबतुवपुत्रकुबेरसौं । होहिमहाबलवंत ॥ छीनिलैहिंसोसुरनिपहँ। भुवलंकापर्यंत ॥२२॥
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिमंत्रपठाईकन्यकाहि ॥ जयहोहुपुत्रितहाँ
शीघ्रजाहि ॥ कैकसीआइतबऋषिनिकेत ॥ सेवासुकरैमनक्रमसमेत ॥ पौलस्त्यसमयइ
काचित्प्रकास ॥ सौजग्योजोगनिद्रानिवास ॥ कैकसीअग्रठाढीकुमारि ॥ व्हैरहीअधोमु
खमुषनिहारि ॥ यौवनागमनउद्भवअनंग ॥ उफनातजुसोभाअंगअंग ॥ पदनषनिलि
षतरेषाप्रमांन ॥ लज्जाभिलाषभयमिलिसमान ॥ ॥ विश्वश्रवाउवाच ॥ ॥ मुनिक
ह्योताहिलषिलज्जमान ॥ आगमनकौनकारनउद्यान ॥ ॥ कैकसीउवाच ॥ ॥ सर्वज्ञ
सदाप्रभुपरमसंत ॥ अज्ञातकछूतुमतेनअंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ व्हैध्यानावस्थि
तऋषिसहेत ॥ चित्ताभिलाषत्रीयलष्योचेत ॥ ॥ ऋषिउवाच ॥ ॥ आज्ञासुदईपौ
लस्त्यएव ॥ हैपुत्रदुष्टव्हैहैंअदेव ॥ ॥ कैकसीउवाच ॥ ॥ प्रभुहौंहिदुष्टतुमतैंजुपूत
॥ आवैनचित्तयहअसंभूत ॥ ॥ ऋषिउवाच ॥ ॥ कीयजाचन्यातैंअसुरकाल ॥ बल
समयहोइमिथ्यानबाल ॥ सुतव्हैहैंतृतीयसुभावसिद्ध ॥ परब्रह्मभक्तपावनप्रसिद्ध ॥ ॥
॥ कविरुवाच ॥ तिहिंभईगर्भथितिद्विजप्रसाद ॥ बसअवधिप्रसवभौनिर्विषाद ॥ जेहै
जातमात्रभएअशुभजाल ॥ ब्रह्मांडडोलथिरचरविहाल ॥ आकृतअसाधआतमअनीत
॥ भूवकंपभएत्रयलोकभीत ॥ उत्पातहोतदुर्निमित्तआनि ॥ जबभयोजन्मरावनसुजानि
॥ विग्रहअमानअरुभुजावीस ॥ स्वाभावदुष्टदसबनैसीस ॥ ४० ॥ बलअमितदेहधर
धर्म्मबाध ॥ अतिकुंभकर्णउपज्योअसाध ॥ अनतृप्तकामअघरूपआप ॥ पुनिसूर्पनखा
पुत्रीसपाप ॥ उत्पन्नविभीषणशुभसुभाउ ॥ भगवंतपरायणभक्तभाउ ॥ यौउतपतिराव
णकुंभआप ॥ पिसितासनब्राह्मनमनुषयाप ॥ होइतासवृद्धिजगनासहेत ॥ मिलिबढत
रोगज्यौंवपुसमेत ॥ परितापविश्वहिंसकसुप्रान ॥ अनुभवअनीतिबलअप्रमान ॥ वैश्र
वणचढ्योपुष्पकविमान ॥ पितुदर्शनहितआगमप्रमान ॥ कीनैंकुबेरतहांनमसकार ॥
पुनिदएपिताआसिषअपार ॥ वैश्रवणदेषिअतितेजवंत ॥ कैकसीउपजिअमरषअनंत
कैकसीउवाच ॥ सोगईपुत्ररावणसमीप ॥ ममसौपिपुत्रभौंमहमहीप ॥ उरउठतअग्नि
वसवैरभाव ॥ सुषआंनअसहसबत्रीयसुभाव ॥ सुतकरहुजतनतुमव्हैसदाप ॥ यातैंवि
शेषअतिहोहुआप ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ अंबानचिंततुमरहहुअंत ॥ अबहमहं
करैउद्यमअनंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रावणसबंधुतबछोडिराज ॥ गोकर्णगयोतप
करनकाज ॥ अपनैसुभाइत्रयबंधुताम ॥ कृतनियमजोगसाधतसकाम ॥ एकाग्रचित्तर
हिएकपाइ ॥ पंचासवर्षशतगतसुभाइ ॥ सबभाइसध्योतपध्यानसेव ॥ दीयदरसविभी
षणब्रह्मदेव ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ चितहेतकह्योविधिवदनचारि ॥ वरमागिविभीष
णमनविचारि ॥ ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥ मांग्योसुविभीषणपरमप्रेम ॥ नितरहैबुधि

रतधर्मनेम ॥ इच्छाअधर्मउपजैनआइ ॥ ऐश्वरीभक्तिसबदिनसुभाइ ॥ सोइहोहुकह्यो विधिदयासंग ॥ अरुअजरअमरआतमअभंग ॥ सबफलेजानिसाधनसुभाइ ॥ उठि तबैविभीषणतपविहाइ ॥ भयवर्षअयुतजबतपवितीत ॥ ब्रह्मातबदरसनदीयविनीत ॥ सरस्वतीप्रेरितहांसुरसमाज ॥ इहिंदुष्टहृदयमुखवसहुआज ॥ वाणीतबकीयजिंव्हाप्रवेस ॥ सुनजानिकुंभयहछलसुरेस ॥ उरबस्योकुंभअभिलाषआनि ॥ विधिकह्योमांगिसोइ मोदमानि ॥ ॥ कुंभकर्णउवाच ॥ ॥ वर्षएकमांहभोजनविशेष ॥ षटमासनींदसो ऊंअसेष ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ ब्रह्मावरदीनौलहिविसास ॥ यहयौंहींव्हैहैंअनायास ॥ पुनिदेववृंदआनंदपाइ ॥ संसारअहितटरिगौसुभाइ ॥ ॥ देवाऊचुः ॥ ॥ यहजाठ रकरतौंनितआहार ॥ सहजहींनासपावतसंसार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सरस्वतीब्रह्म आयेसस्थांन ॥ करिविविधविश्वरक्षाविधान ॥ इहांउग्रतपतरावणअषंड ॥ कृतअग्रज्वलि तअतिअग्निकुंड ॥ जबदिव्यसहसइकवर्षजांहि ॥ मस्तकइकहोमतअनलमांहिं ॥ एका सनबैठेतपअपार ॥ नवसहसवर्षगतनिराहार ॥ आहुतिदसमसिरसमयआइ ॥ सोउसी सलग्योछेदनसुभाइ ॥ निःकोषषड्गजबलयोपानि ॥ तबबोलीब्रह्मआकासवानि ॥ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ मामेतिवाचवाहनमराल ॥ तेहींआनिदरसदीयतातकाल ॥ दससीस मांगिविधिवाचदीन ॥ निर्द्धारजुमनइछानवीन ॥ सुप्रसन्नदेषिजबब्रह्मसंत ॥ तबकह्यौ दसाननहृदयतंत ॥ सुरअसुरयक्षतारक्षसाथ ॥ नहींनागहुकरिममअंतनाथ ॥ ममभ क्षभूतमानुषमहीप ॥ सोगनतनाहिंहमबलसमीप ॥ अमरत्वअभयजलथलप्रकास ॥ पातालगमनमांगतप्रकास ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ विधितथाअस्तुकहिविमलवानि ॥ मननिश्चयसोदससीसमानि ॥ काटेजुसीसतेहोमकीन ॥ नवअक्षयव्हैहैंफिरिनवीन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ योकहतमात्रअक्षयअनूप ॥ शिरभएप्रगटसुंदरसुरूप ॥ आश्रम सबंधुदशकंधआइ ॥ प्रफुलितस्वइछबरदानपाइ ॥ विष्यातभईत्रैलोकवात ॥ सुरसाध सिद्धकाहुनसुहात ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दससिरकोनानौंदुसट । माल्यवानातिहिनाम ॥ सोसु निआयोसुतलतें । सहितकुटंबसवाम ॥ २३ ॥ असुरप्रहस्ताहिआदिदै । संगमारीचसुबाहु ॥ आनिमिल्यौदौहित्रकहँ । सिंघभयोससनाहु ॥ ॥ माल्यवानोवाच ॥ ॥ तिहिषलरावन सौंकह्यौ । हमछांडीजबलंक ॥ सोगढपायोसून्यतहा । वसतकुबेरनिसंक ॥ २५ ॥ छलबलअ थवासामकरि । लीजैवेगिछिडाइ ॥ राक्षसकोवहदुर्गहै । देववसेतहांआइ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ तबरावनउत्तरदयौ । तुमजानतसबरीति ॥ जेठेबंधुकुबेरसौं । नांहिनउचितअनीत ॥ ॥ २७ ॥ प्रहस्तउवाच ॥ ॥ तबैप्रहस्तनिसंकव्है । रावनसौंकहिबात ॥ राजाबलीसु सूरव्है । तिनकैंकैसेभ्रात ॥ २८ ॥ दोऊकस्यपकेसुवन । दानवदेवप्रतिष्ठ ॥ भूमिराजके काजसौं । अजहूंलरतवलिष्ठ ॥ २९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रावनसुन्योप्रहस्तमत । लोभअनर्थवढाइ । जेठोभ्रातनिकासिकैं । लंकालईछिडाइ ॥ ३० ॥ रावनतहांकुटंबजुत । आनिवस्योगढलंक ॥ सबराक्षसमिलिराज्यदिय । कृतअभिषेकनिसंक ॥ ३१ ॥ रावन कीबहिनीतिहां । विद्युतजिंव्हानाम ॥ कालषंजकौंतिहिसमय । व्याहिदईवरवाम ॥ ३२ ॥

॥ छंदपधरी ॥ ॥ पितुसौंकुबेरकीनीपुकार ॥ वृत्तांतकह्योसबबारबार ॥ जबपिताकुबेर हिंदुषितजानि ॥ उपदेसकर्योमनमोदमानि ॥ दुषतेरौंहरिहैंशंभुदेव ॥ सुतकरहुप्रेमजुत जाइसेव ॥ मनधरिविसासपितवचनमानि ॥ उग्रतपकर्योकैलासआनि ॥ हरिदेवतबैसुप्र सन्नहोइ ॥ शुभसषाआपनौंकर्योसोइ ॥ अलकापुरिउत्तरदिशिअजेय ॥ सोरचितविश्वक र्म्मासप्रेय ॥ पुरवासदयोशिवहैदयाल ॥ दीनोंधनेसपददिशापाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व सिकुबेरअलकापुरी । रावनलंकनिवास ॥ इहिविधिभूमिविभागभौ । सहितप्रतापप्रकास ॥ ३३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कस्यपपितुदनुमातउदरमैंभयोनिशाचर ॥ सबअसुरनितिहिं दईविश्वकर्मापदवीवर ॥ ताकीकन्याअतुलरूपनामामंदोदरि ॥ गुनलक्षनविद्याप्रवीणत्रै लोकहिसुंदरि ॥ सोवनिताव्याहीरावनहिं,संगअमोघदीनीसकति ॥ वरवरनिभोगविलस तविविधि,पृथ्वीकंटकलंकपति ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दैत्यविरोचनदौंहिता । वृतज्वाला तिहिंनाम ॥ कुंभकरणतिहिंकरग्रहण ॥ कृतसुषवंछितकाम ॥ ३४ ॥ विदितनामसैलूषवि भु । गंधर्वनिकौंराज ॥ सरमाताकीपुत्रिका । साध्वीसुमतिसुलाज ॥ ३५ ॥ सोव्याहीजुवि भीषनहिं । आनंदबढेअनेक ॥ वरनीवरजोरीविमल । वनिज्यौंनीतिविवेक ॥ ॥ अथमे घनादजन्म ॥ ॥ दुष्टपुत्रमंदोदरी । जायोषलबलवंत ॥ अघकारकअनसंकअति । अ वधिअधर्मअसंत ॥ ३७ ॥ जातमात्रघननादतिहिं । कीनौंगर्जकराल ॥ मेघनादतातेंभ यो । नामसुरेसहिंसाल ॥ ३८ ॥ ॥ कुंभउवाच ॥ ॥ कुंभकह्योदसकंधसौं । निद्राबाध तमोंहि ॥ मुषमांग्योपायोसुमैं । कहाकहूंअबतोहि ॥ ३९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गुफा त्रिकूटाचलगहर । कृतअनेकप्राकार ॥ कुंभकर्णतहांसयनकीय । करिअहारअनपार ॥ ४० ॥ देवदनुजनरनागद्विज । त्रयपुरभयोसँताप ॥ सबहीकौंरावणससुत । पीडादेतस पाप ॥ ४१ ॥ सुन्योअधर्माचरणजब । रावणकोसविसेष ॥ पठएदूतकुबेरतहां । कहि कहिविनयअसेष ॥ ४२ ॥ ॥ कुबेरउवाच ॥ ॥ ब्रह्मवंशउत्पन्नविभु । कुलपुलस्तिज यकार ॥ तिनकहिंयुक्तनआचरन । अबनिअधर्माचार ॥ ४३ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ रावणसुनिउरपरजर्यो । असहमानअहमेव ॥ हमकौंउपादिष्टाभए । तुमकुबेरदिगदेव ॥ ४४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मिलिसैन्याकंटकक्रोधमानी ॥ अलका पुरघेर्योतबहिआनि ॥ निकस्योकुबेरमनत्रासमान ॥ तहांलयोछीनिपुष्पकविमान ॥ ति हिरथारूढजमवरुणजीति ॥ अतिकरनलग्योदशशिरअनीति ॥ जबघेर्योवासवलोकजाय ॥ इहांइंद्रकर्योसंग्रामआय ॥ देवासुरकीनौकछुककाल ॥ सोमेघनादसुनिभएसाल ॥ आयौतहांआतुरकुंवरआप ॥ दारुणसंग्रामकीनौसदाप ॥ लैचल्योबांधिइद्रहिंनिलाज ॥ दीनौछुडाइविधिदेवराज ॥ अतिबलीसमरकृतविजयअंक ॥ इंद्रजीतनामपायोअसंक ॥ इहांरावणगिरीकैलासआइ ॥ सबकरेशिवहिबंदनसुभाइ ॥ लीलाउठाइकैलासलीन ॥ पुनिधर्योफेरिपृथ्वीप्रवीन ॥ दीयश्रापजुनंदीगणसहास ॥ नरवानरकारितवहोइनास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुरीसुहैहयराजकी । माहिष्मतीप्रसिद्ध ॥ रेवातटभयदुरहित । सबकोउ वसतसमृद्ध ॥ ४५ ॥ सुंदरिशुभगसमूहसंग । नदक्रीडितनरनाह ॥ करसहस्रविस्तारवृत

पांनीरुकेप्रवाह्॥ ४६ ॥ दसशिरसंध्यामध्यदिन । विमलनदीतलबास ॥ प्रेमजुक्त
हरपूजहित । कीयपार्थिवीप्रकास ॥ ४७ ॥ पाणिलएजबऐचिनृप । चलेप्रवाहसपूर ॥
मिलितरंगशिवलिंगगत । कोपिउद्योषलकूर ॥ ४८ ॥ परयोझूझराक्षसनृपति । भूतलम
हाभयान ॥ कछुककरयोक्रीडाकलह । निसचरबंध्योनिदान ॥ ४९ ॥ आयोतहांपुलस्ति
ऋषि । सोयहसुनीसुभाइ ॥ करियाचन्यानृपतिकहँ । दीयदशकंधछुडाइ ॥ ५० ॥ ॥ छं
दपधरी ॥ ॥ जबगयौसुतलविजयीविहार ॥ दैत्यननिसुरोक्योदुरअचार ॥ दशसीस
इतैंउतबलिमदाप ॥ अनभंगमिलेदोउजुद्धआप ॥ दुहुओरकरेषलप्रबलदाउ ॥ निर्घात
पातघांइनिनिहाउ ॥ दैत्येसतहांराक्षसदबाइ॥ बलिलयौबांधिरावणाविदाइ॥ पौलस्तिथंभ
बांध्योसपाप ॥ अवासआइबलिविजयआप ॥ दशसीसर्वासभुजदेषिदेषि ॥ वनिताविनो
दउपजेविशेषि ॥ दैकवलहाथदैत्येंद्रदासि ॥ हनितालनचावतिकरतिहासि ॥ इहिंसमय
शुक्रबलिद्वारआइ ॥ षटथंबबद्धदेष्यौसुभाइ ॥ छुटकायदयौगुरुबंधछोरि ॥ बलतोलिलंक
आयौबहोरि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भयोनरेसप्रतापभानुरावणलंकेसुर ॥ अरिमर्दनभौकुं
भकर्णअलसिनिअग्रेसुर ॥ सचिवधर्मरुचिधर्मशीलभयोभक्तबिभीषन ॥ अवरजथाक्रम
सुभटशूर मायकमलीनमत ॥ द्विजश्रापदोषगतदुर्गतिहि, विश्वविनाशकबुधिविकल॥
राक्षसीजोनिभुगवतअभय, षरवाहननिर्लाजषल ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मनधनजोव
नराजमद । कुलदलबलइकठौर ॥ इनहींतैंउपजतअषिल । हेतअनर्थनऔर ॥ ५१ ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकसमयदशाननसभाआनि ॥ बैठौसबंधुसिरछत्रतानि ॥ सुतपौत्रस
भासदसचिवसंग ॥ अरुआइसुभटराक्षसअभंग ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ करिकोपक
ह्योकंटककरूर ॥ तुमसबैनिसाचरसमरसूर ॥ इकमूलमंत्रसोसुनहुआज ॥ हूंकहतनिशाच
रश्रेयकाज ॥ हमसौंहितकारीहर्षवंत ॥ सुप्रसन्नसदाशिवब्रह्मसंत ॥ इंद्रादिदेवहमशत्रुआ
दि ॥ असुरसुरवैरउपज्योअनादि ॥ इनकैसहाइहैविष्णुएक ॥ सोकरतअमररक्षाअनेक ॥
१२० ॥ वहविष्णुमरैजिहितिहिंउपाइ ॥ सबहोहिकाजअपनैसुभाइ ॥ विबुधकौमूलहैमषवि
धान ॥ निस्सेषविनासहुतेनिदान ॥ जबभागनपावहिंअमरजाति ॥ आपुहदीनव्हैहैंअरा
ति ॥ हीनबलपरहितबमारिलैहिं ॥ थलछोडिजाहिकैदंडदैहि ॥ विबुधतजिजाहिंजबदे
सवास ॥ तहांअसुरवसावहिअनायास ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सबदुष्टउठेयहमंत्रमांनि ॥
कृतधर्मबाधमषछांडिकांनि ॥ द्विजभोज्यश्राद्धजपहोमदान ॥ अरुपाठवेदशास्त्रजुपुरा
न ॥ गोब्रह्मतिलकयज्ञोपवीत ॥ अतिहोतसाधुतुरसीअनीत ॥ पुनिकरतध्यानमुनिजहां
पाइ ॥ दैअर्धचंद्रदीजतउठाइ ॥ प्रतिमाकरिषंडनपदप्रहारि ॥ आमूललेतदेवलउषारि ॥
रुधिरद्विजमांसआवहिंरसोइ ॥ हितजुक्ततासआहारहोइ ॥ अतिकोपचल्योरावणअसा
ध ॥ बलसाजिकरनधरधर्मबाध ॥ तहांअग्रभागधरिइंद्रजीत ॥ अन्नेकसंगसेन्याअभीत
इंद्रादिदेवदिगपालअंत ॥ तेकुंवरबांधिआनहुतुरंत ॥ दलचलतधसकिधरनीदिगंत ॥ प
र्वतनिश्रृंगढहिपरंत ॥ निसानगहरधुनिपरिनिहाव ॥ सुनिहोतअमरत्रियगर्भश्राव ॥ य
हलोकलोकजबबातआइ ॥ स्वस्थानसुरनिछांडेसुभाइ ॥ मिलिछिपेमेरुकंदरामांझ ॥ सुर

समयनजानतभोरसांझ ॥ दिगदेवलोकजबसुन्यदेषि ॥ वसगर्वहस्योरावनविशेषि ॥ अ
हमेवअसुरउपज्योअसेस ॥ सनमषनभयोकोउसुरसुरेस ॥ वैश्रवणसूरशशिवरुणवात ॥
जमअग्निकालकिन्नरावेष्यात ॥ मुनिजक्षसिद्धगंधर्वनाग ॥ भएविबुधषीनमषरहितभाग ॥
विधिसृष्टिभइवसवर्तमान ॥ कोउस्वतंत्रसुनियैनकान ॥ सबभांतिबुद्धिबलमंत्रसाधि ॥ ब
सकर्योविश्वउपजीउपाधि ॥ सुरयक्षनागकिन्नरनरेस ॥ गंधर्वदैत्यदानवगिरेस ॥ त्रीयव
धूशुभगकन्याजुतास ॥ बललेतछीनिजियलगतजास ॥ सुरद्वेषिदुष्टसेवकअसाधि ॥ अन्ने
करूपकारकउपाधि ॥ जहांसुनतसाधद्विजसुरभिसिद्ध ॥ पुरजारिदेतपत्तनप्रसिद्ध ॥ नि
र्मूलकेरेसबधर्मनास॥गुरुदेवनपूजाअतिथिग्रास ॥ जपजोगजुगतिगुरुगम्यज्ञान ॥ कहूं
नीतिनैकसुनियैनकान ॥ कोउकरैनमातापिताकानि ॥ जगभएभ्रष्टआचारजानि ॥ इहिंभां
तिधर्मगतआदिअंत ॥ भूभईतहांभाराजुक्रांत ॥ भुविभईधेनुरूपासभीति ॥ अतिअसह
मानरावनअजीति ॥ जबभईबिकलविव्हलविहाल ॥ सहिजातनहींउरपरमसाल ॥ सुरर
हेमेरुकंदरसमाइ ॥ अतित्रासजुक्तगौतहांआइ ॥ ॥ पृथ्वीउवाच ॥ ॥ सबकहींअन
र्थजेभएसँसार ॥ भईदेवतासहूंदुषितभार ॥ चवषानिचराचरनहींविचार ॥ भुवकह्योअव
रमोहिसुगमभार ॥ विश्वासघातअरुस्वामिद्रोह ॥ मनकनकतेयकृतछेदमोह ॥ संसर्गीइ
नहिसुभावसिद्ध ॥ एपंचमहापापीप्रसिद्ध ॥ पापिष्टजहांएधरतपाय ॥ कंटकितकंपममहो
तकाय ॥ इनआदिअवरपापीअपार ॥ सबरह्योपूरिराक्षससंसार ॥ अवनिजबभइअघभ
रअधीन ॥ करिरुदनसुरनिसौंप्रणतिकीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लषचोरासीजीवजग । आ
कृतिदेहअमान ॥ तिनहिंवहतिनिस्संकहूं । मानतितूलसमान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
इंद्रादिकसबमिलिअमर । सँगवसुमतीससोक॥किन्नरजक्षगंधर्वमुनि । आएविधिकेलोक॥
॥ ५३ ॥ अवनीकौअरुआपनौं । सबदुषकह्यौसुनाइ ॥ ब्रह्मासौंवेधिविधिविवरि । इंद्रादि
कअकुलाइ ॥ ५४ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ तपसाफलपहिलौंतिनहिं । मैंदीनौंवरदान ॥
अबतौमेरौनाहिंबल । ब्रह्माकह्योनिदान ॥ ५५ ॥ दीनबंधुजाकोविरुद । अषिलविश्वआ
धार ॥ सदासहायकआपनैं । करियैतिनहिंपुकार ॥ ५६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ शिववि
रंचिसुरपतिसुरभि । कारणकरुणाकीन॥पाहिपाहिपूरणपुरुष । हमबुधिबलभएहीन ॥ ५७ ॥
॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ इंद्रादिककीआपदा । सुनिवैकुंठनरेस ॥ नभबानीनिर्धार
जुत । अभयदयौअषिलेस ॥ ५८ ॥ गगनगिरागोविंदतब । आज्ञादईउदार ॥ दिनमणि
बंसप्रसिद्धमहँ । लैहूंनरअवतार ॥ ५९ ॥ स्वायंभूमनुत्रीयसहित । तपसाध्योसुतहेत ॥
तिनहिंदयौवरदानमैं । मनक्रमवचनसमेत ॥ ६० ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मनुस्वायंभूदशर
थनरेस ॥ शतरूपाकौशल्यासुवेश ॥ तिहिंउदरजन्मलैहूंजुताम ॥ नरदेहनियतममराम
नाम ॥ अंसावतारत्रयअवरजात ॥ कयकेइसुमित्रातिनहिंमात ॥ मैथिलीसक्तिजुतधर्म
मूल ॥ सबअवनिभारकरिहौंअमूल ॥ प्रथममुनिदयोनारदसराप ॥ अवतारसफलसोक
रिहुंआप ॥ सुषवसहुशक्रतुमसुरसमाज ॥ करिहौंअसेषसबदेवकाज ॥ ॥ कविरुवाच
विबुधयंहसुनीआकासवानि ॥ विश्वासभयोमनमोदमानि ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ तिहिं

मध्यनवानरमनुजभाल ॥ विधिकह्योदयोमैंवरविसाल ॥ जगमांझअमरअवतरहुजाइ ॥ कपिभालविविधव्हैमहाकाइ ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ अंबुजभूभवस्वस्थानआइ ॥ पृथ्वी सुरहर्षितअभयपाइ ॥ मनमोदअमरविधिवचनमानि ॥ अवतरेकोटितेतीसआनि ॥ एकतेंउपजिअन्नेकअंग ॥ अवतरेरीछवानरअभंग ॥ अतिबलीमहाविग्रहअमेव ॥ अवतारजुद्धउल्बअजेव ॥ १७६ ॥ ॥ **अथहनुमंतउतपत्ति** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ वनविशालऋतुपर्णइक। तहांपर्वतश्रीकंठ ॥ चंद्रसरोवरसुषदशुभ। द्रोणागिरीउपकंठ ॥ १ ॥ तिहिंवनकन्याअंजनी। तपसाधतशिवहेत ॥ महातापसीसांतमति। साध्वी सत्यसुचेत ॥ २ ॥ एकसमयअतिबलअनिल। घामश्रमिततहांआइ ॥ सरसमीपछायासघन। कीनौसयनसुभाइ ॥ ३ ॥ कामोद्दीपनतेतहां। रेतपातभौवात ॥ मेल्यौजतनलपेटिसौं। मध्यकमलकेपात ॥ ४ ॥ चंचलजातिसुभावतें। सोवीरजनहिंजानि ॥ मुषमैंमेल्योअंजनी ॥ भयोउदरथितिआनि ॥ ५ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ कछुभएजबैबासुरवितीत ॥ फिरितहांपवनआयोपुनीत ॥ पत्रपुटपवनढूंढतप्रकास ॥ अनलहेंतासमनभयोउदास ॥ ॥ **अंजनीवाक्यं** ॥ ॥ अंजनीकह्योतुमकोनआहि ॥ किहिंकारनषोजतफिरतकाहि ॥ ॥ **पवनउवाच** ॥ ॥ ममबीर्यबांधिपुटकमलपत्र ॥ तिहिंषोजतसोहमधरयोअत्र ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ कहिइतोपवनपुनिगवनकीन ॥ अंजनीतहांमनभौमलीन ॥ सोसुनिअकर्ममनभौसंताप ॥ तबउदरहिंफारनलगीआप ॥ ॥ **श्रीशिवउवाच** ॥ ॥ विश्वेश्वरबोलेगगनबानि ॥ रेहनुमतहनुमतमहाहांनि ॥ यौंकहतमात्रतहांअग्रआइ ॥ शिवदेवकह्योनिश्चयसुनाइ ॥ उपजैममएकादसमअंस ॥ तूवगर्भप्रबलपृथ्वीप्रसंस ॥ श्रीरामभक्तसाहससधीर ॥ विष्यातनामहनुमंतवीर ॥ तवपुत्रग्यारवौरुद्रताम ॥ सुरकाजसिद्धिकारिहैसँग्राम ॥ ॥ **अंजनीवाक्यं** ॥ ॥ निर्दोषदोषममलग्योदेव ॥ अंजनीकह्योप्रभुटरैएव ॥ केसरीनामकपिमहाकाय ॥ सोकरतसंभुसेवासुभाय ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ इतहितपस्विनिअंजनी। उतकेसरिकपिराज ॥ हरआज्ञापाणिग्रहण। कर्योधर्मसुरकाज ॥ ६ ॥ तपसासेवाफलतबहि। पायोदुहुनिप्रासिद्ध ॥ भवप्रसादत्रैलोकभए। सबहर्षितसुरसिद्ध ॥ ॥ ७ ॥ अवधिपाइअंजनीउदर। महावीरहनुमंत ॥ अमरसहाइकअवतरयो। विष्णुभक्तबलवंत ॥ ८ ॥ १२ ॥ ॥ **इतिहनुमंतउत्पत्ति** ॥ ॥ **अथवालिसुग्रिवोतपत्ति** ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ मध्यजुशृंगसुमेरको। शतयोजनविस्तार ॥ ब्रह्मसभाताकैविषय। बैठतनित्यविहार ॥ १ ॥ एकसमयसुरसिद्धजुत। बैठेसभाबनाय ॥ ब्रह्मज्ञानचर्चाविमल। होनलगीसुषदाय ॥ २ ॥ चतुराननकौचित्ततहां। भयोब्रह्ममहँलीन ॥ अश्रुचलेआनंदमय। सोकरअँजुलिकीन ॥ ३ ॥ विधिसोअपनौंअश्रुजल। करतेदीनौडारि ॥ भूमिपरतबानरभयौ। विजयनामअविकारि ॥ ४ ॥ विधिआज्ञावसविजयतहाँ। वसिसेवाहितवीर ॥ नितदरसनवंदननिरत। रहतध्यानजुतधीर ॥ ५ ॥ इकदिनअर्थअहारके। विजयभ्रमतवनमाह ॥ तहांवापीसुंदरसुषद। देखीउदकअथाह ॥ ६ ॥ तिहिवापीवानरतृषित। ऊपरठाढीआन ॥ मुहझांक्यौजवनीरमहँ। भौप्रतिबिंबप्रमान ॥ ७ ॥

असहमानअतिदर्पतैंवानरजानिविशाल॥ भावीबलअतिक्रोधभ्रम । कूदिपरयोततकाल ॥ ८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ बापीप्रभावदैवीसुबारि ॥ नरपरैमध्यसोहोतनारि ॥ तिहिंप रयोमांझकपिविजयतेष ॥ वनितासुभयोअदभुतविशेष ॥ बारितैंनिकसतिहिसमयवाम ॥ तहांरहीबैठिलज्जितसुताम ॥ इहिसमयआइबासवविनीत ॥ तहांकरीब्रह्मपूजापुनीत ॥ बासुरहिमध्यसंध्याविसेस ॥ सोबापीतिहिआयोसुरेस ॥ सुरराजत्रीयादेषीसुभाइ ॥ उरव ढीविथामनमथ्थआइ ॥ भयोवीर्यपातपीडितविअंग ॥ सोवीर्यधरयोवालनिप्रसंग ॥ वीर जतिहिंउपज्योमहावीर ॥ धरिवालिनामकपिराजधीर ॥ मिलिसभाब्रह्मदिनकरसनेम ॥ पदपूजनकीनैसहितप्रेम ॥ नित्यकृत्यहेतआयेदिनेस ॥ प्रभुकरयौतवैवापीप्रवेश ॥ वापि कामध्यदेषीसुवाम ॥ मिहरतहांभयोउद्बोधकाम ॥ स्मरवसभयोतहांरेतश्राव ॥ सोधरयो ग्रीवसुंदरिसुभाव ॥ सुग्रीवउपजितिहिंवीर्यसाथ ॥ सोरामसखाव्हैहैसनाथ ॥ दैवीप्रभाव सुतभयेदोय ॥ सुंदरिसलज्जतहांरहीसोय ॥ प्रतिमास्वरूपअपनौप्रभात ॥ फिरिभयविज यवानरविष्यात ॥ विधिलोकआइतबविजयवीर ॥ सुतउभयअग्रविलसतसधीर ॥ ॥ वि जयउवाच ॥ ॥ करजोरिब्रह्मसौंप्रणतिकीन ॥ प्रभुदेहुवासथानकप्रवीन ॥ ॥ विधि रुवाच ॥ ॥ विधिकह्योकिष्किंधापुरीवीर ॥ शुभरचितविश्वकर्मासधीर ॥ वनसफलविष मपर्वतविशाल ॥ निर्झरनिनीरषितिवहतषाल ॥ तुमवसहुवालिसुग्रीवतत्र ॥ एकविजयसे वममरहहिअत्र ॥ २० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विसदमध्यब्रह्मांडवारजेरीछसुवानर ॥ अ मरअवनिअवतरेप्रगटसबभूमिकाजपर ॥ अतिविग्रहआकृतिअनेकभवरहितकालभय॥ जूथपजूथअभंग जुद्धजगविदितअसुरजय ॥ आज्ञाअधीनतवअनुसरहि, सेवपराय नकपिसकल ॥ भोगवहुजाइप्रभुताअभय, किष्किंधानगरीअकल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मा अपनौगणविबुध । इनकैंसँगदियोएक ॥ इनकहसुरसंमतअषिल । करहुराजअभिषेक ॥ ९ ॥ ब्रह्माकोगणबालिकह । लैआयोकैलास ॥ विधिआज्ञाहरसौंबिवरि । कारणकह्योप्र कास ॥१०॥ हरपठयोहनुमंततहां । वालिसहायकबीर ॥ किष्किंधापरवेसकीय । समसुग्री वसधीर ॥ ११ ॥ अंबुजभवकोदूतवह । इंद्रलोकतबआइ ॥ सुरपतिआगेंसबकहे । विधिकेवचनबनाइ ॥ १२ ॥ इंद्रादिकसुरमुनिसकल । आनिभयेएकत्र ॥ कपिवलिहिदीनौ तिलक । किष्किंधापुरछत्र ॥ १३ ॥ तबतारारोमातरुणि । सुंदरिउभयसुजान ॥ वालिवि वाहीविजयसुत । विलसतमदनविधान ॥ १४ ॥ ताराउदरतहां । अंगदभयोकुमा र ॥ महाप्रभाविकवीरमहि । अतुलअमरअवतार ॥ १५ ॥ सबैअकंटकराजसुष । कर तबालिबलबंड ॥ सेवकजूथपजूथसँग । आज्ञाआनअषंड ॥ १६ ॥ वालिसुग्रीवमहाबली । इंद्रअर्कअवतार ॥ भिरनअसुरषजुवातभुज उछवजुद्धअपार ॥ १७ ॥ किष्किंधापुर वालिकृत । रीतिसहितप्रतिराज ॥ प्रतिदिनपृथ्वीपरिक्रमण । करतसुभोजनकाज ॥ १८ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ संध्याहितबालीमौनसाधि ॥ सोकरतध्यानकहूंलगिसमाधि ॥ दिग विजयकाजरावणदुसंत ॥ आरंभअटनकृतअवनिअंत ॥ इहिंसमयआइकंटकअसाध ॥ बलकर्षिसीसकपिकरनबाध ॥ करवामगह्योकपिअसुरकंध ॥ मेल्यौसुकांषलैमदाअंध ॥

संध्याकरिऊर्थ्योबालसंत ॥ दीनीपरिकर्माभूदिगंत ॥ पृथ्वीविजेतकेबांधिपानि ॥ अंगदके क्रीडाकाजआनि ॥ लटकाइदयौपलनानिलाज ॥ सोदेषिहसतत्रीयगनसमाज ॥ बालिसौं करीभाइपविनीत ॥ भयोजीभजातनिशिचरअनीत ॥ छुटकाइदयौछलबंधछोरि ॥ मुस कातगयौमूछनिमरोरि ॥ इहिंभांतिअमरअवतरिअसेष ॥ बालीमुषभालुभूतलविशेष ॥ ॥ ३० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ असुरसंतापितअवनिभारपीडितसभातिभय ॥ धेनुरूपातिहि धस्योमनसिचिंतेकरुणामय ॥ नारायणआकाशबानिअवतरनकह्योनर ॥ देवसबैधारिदेह रीछव्हैहैंबरबानर ॥ आज्ञाअनंतउपजेअमर, महाबीरविक्रमअमित ॥ श्रीरामचंद्रअव तारसंग, नियतनिहारतपंथनित ॥ २ ॥ ॥ इतिश्रीबालीप्रमुषभालोत्पत्तिः ॥ ॥ अथ राजादशरथोत्पत्ति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजाअजअवधेसकें। स्वायंभूमनुआइ ॥ दशर थव्हैकेअवतरे ॥ तपसाकोफलपाइ ॥ १ ॥ उत्तरेसकोसलनृपति। तिहिपुत्रीअभिराम ॥ शतरूपाअवतारभो । कौशल्याइहिनाम ॥ २ ॥ राजादशरथधर्मधुर । कोशलदेसन रेस ॥ ताकहव्याहीविधिजुकत । कौशल्याशुभवेश ॥ ३ ॥ अतिप्रसिद्धपावनपुरी। सं जुतसुषनिसमृद्धि ॥ धर्म्मउपासकलोकसब। नितसनमुषनवनिद्धि ॥ ४ ॥ द्वादशद्वादश कोसलौं। चहुंघाँचारिबजार ॥ सारधपंचसुमध्यभुव। विसदजुरतहटवार ॥ ५ ॥ दशपंचा परिवेषदढ । पत्तनकोटप्रमान ॥ चहुंदेशिदीरघद्वारचव । वज्रकपाटविधान ॥ ६ ॥ षाई जलपूरितविषम। गृहजलजंतुअगाध ॥ मीनकमठभेकीमकर। सूंसिग्राहअनसाध ॥ ७ ॥ मृ द्धिकोटनृपसंदिरनि। आसपासउत्तंग ॥ शृंषलशूलकपाटसँग। चारिपौलचतुरंग ॥ ८ ॥ छंदउधोर ॥ जलपूरपरिषाजोप ॥ जनुअंबुसागरओप ॥ विचिराजधामविकास ॥ मनुउदि तसेकैलास ॥ नगविविधईंटानियकंक ॥ आकारकुंदनमंक ॥ परबालथंभनिपाट ॥ कृतमलय अगरकपाट ॥ मानिनीलषूंभीमान ॥ शुभसिरालालसमान ॥ रविसामक्रांतरसाल ॥ जहांमीन जालनिजाल ॥ कृतकाचअंगनकाम ॥ बहुरंगधामनिधाम ॥ वनवातपथविस्तार ॥ प्रतिग्रेहवि विधप्रकार ॥ नगरचितप्रतिमानेक ॥ तरुलतागुलमअनेक ॥ भवभूतअनअनभांति ॥ वनिचि त्ररंगविभाति ॥ गृहगृहनिगोषउतंग ॥ रचिजवनिकाबहुरंग ॥ ध्वजकलसअंकितधाम ॥ दिग विजयचिन्हविदाम ॥ पटलोमसूत्रप्रकार ॥ प्रतिधामबिछेअपार ॥ गृहगृहनिदीपप्रगास ॥ तपरतनमणिमयतास ॥ नगषचितकनकानियंक ॥ प्रतिधामधामप्रजंक ॥ बनिसेजउ ज्वलवान ॥ सुषषीरफेनसमान ॥ राजाधिराजसमरथ्थ ॥ सुषभोगनृपदशरथ्थ ॥ नितव सतगृहनवनिद्धि ॥ अनुकूलअष्टसुसिद्धि ॥ रसविविधरतिरनिवास ॥ वनिताविवेकविला स ॥ नरदेवपुत्रीनाग ॥ शुभसेवनृपतिसभाग ॥ मुगधासुमध्यामान ॥ पुनिप्रगल्भासप्र मान ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तीनपचासविवाहिता। नृपकन्यासमनाम ॥ सोभागुनयु तसुंदरी। ज्यौराजतरतिकाम ॥ ९ ॥ तिनमहँपटराणीसुत्रय। नितपातिव्रतनेम ॥ कहीसु मित्राकैकयी। प्रियकौशल्याप्रेम ॥ १० ॥ अवरदासिकासहसइक। निकटवर्तिनीनारि ॥ विविधसेवविश्वासवस। अतिप्रवीनअधिकारि ॥ ११ ॥ चेरीचतुरअनेकचित। यौराजत रनिवास ॥ मानहुंरतिकौनगरसौं। सुषसंजुतसविलास ॥ १२ ॥ कलाकुशलजेकामिनी।

गानतानसंगीत ॥ मूरतिधारैरागमनु । वाजितनृत्यविनीत ॥ १३ ॥ समयसमयसुपस
प्तस्वर । रसषटत्रिंशतिराग ॥ नितनवनवनाटकनिषल । सेवतनृपतिसभाग ॥ १४ ॥ ॥
॥ छंदउद्धोर ॥ ॥ बामनैंकुबजेवृद्ध ॥ प्रतिहारषंढप्रसिद्ध ॥ रनिवासरक्षकराज ॥ कंचु
कीचातुरकाज ॥अतिविसदसभाअवास ॥ प्राकारविविधप्रकास ॥ परिवेषपौलिप्रचंड ॥ मु
षथंभतोरणमंड ॥ थितसूलश्रृंषलथाट ॥ उद्घाटवज्रकपाट ॥ पटवस्त्रविविधविछाई ॥ वि
चिपीठनृपतिबनाइ ॥ शुभछत्रचामरसंग ॥ अद्वैतउज्वलअंग ॥ भृतनिकटवर्तीभूप ॥
जेराजमनुअनुरूप ॥ गुरुवामदेववसिष्ठ ॥ समधर्मकर्मनिसृष्ट ॥ पुनिआठमंत्रिप्रमान ॥
सबनीतिधर्मसुजान ॥ ॥ अथाष्टमंत्रीनामानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सिद्धारथसाधकअ
रथ । धृष्टिविजयजयपेषि ॥ पालकधर्मअसोकपुनि । बडौसुमंत्राविशेषि ॥ १५ ॥ देशकोश
दलदंडदम । दानाधिक्षसदूत ॥ द्वारपालदैवज्ञदढ । अधिकारीअनुभूत ॥ १६ ॥ रथगज
हयगोरसवती । पतिअधिकारप्रमान ॥ कविपौराणिकभिषजकुल । मागधनर्तकमान ॥
१७ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ सुरनागनरवससेव ॥ दिगविजितदशरथदेव । कृतराजभूमिसुर
क्ष ॥ ऐश्वर्यइंद्रप्रतक्ष ॥ पुरतासधर्मप्रकास ॥ सबबसहिवर्णसहास ॥ थितवाणिकविक्रय
वंत ॥ जनुश्रियासचिवलसंत ॥ उदघटहिहाटकपाट ॥ ज्यौंधामसेधनराट ॥ कोटीसध्व
जीअनेक ॥ बनिलक्षदीपाविवेक ॥ बहुकर्मकारबजार ॥ आसक्तकुलअधिकार ॥ पुरवाटि
कासुषपुंज ॥ जुतबहुलकुंजनिकुंज ॥ तरुलताकल्पसुतत्र ॥ सबपुहपफलनिविचित्र ॥ सर
कूपवापीसंग ॥ जलजंत्रचलततरंग ॥ मिलिभ्रमरभ्रमरीमत्त ॥ गुंजारसौरभरत्त ॥ पशु
वृद्धिपशुपतिपाइ ॥ सबसुषीअभयसुभाइ ॥ वसिकृषीकुलसविवेक ॥ अतिउपजअन्नअ
नेक ॥ मनचिंतवर्षहिमेह ॥ सबधर्मवृद्धिसनेह ॥ कहूंशोकदुषनहीसंग ॥ आनंदमनअ
नभंग ॥ पुरचहूंओरप्रकाश ॥ वनगहनवागाविलास ॥ नदमहासरयूनाम ॥ उद्धारजग
अभिराम ॥ मिलिविसदपर्वतमाल ॥ वनलतावृक्षविशाल ॥ नितचलतानिर्झरनीर ॥ गि
रिअगमदरिगंभीर ॥ आषेटजंतुअपार ॥ प्रतिदिवसमिलतप्रकार ॥ मृगराजगर्जेसमू
र ॥ प्रतिसबदकंदरपूर ॥ वनमाहिषषड्वराह ॥ गजछऋतुमत्तअथाह ॥ गिरिगवयच
मरीगाव ॥ शतजूथजूथसुभाव ॥ मृगाचित्रसौरभमान ॥ वनशशकअनअनवान ॥ सा
रंगकृष्णानिसंग ॥ रुरुझांषसाषाश्रृंग ॥ कपिभालजूथपजूथ ॥ वनसरभविविधवरूथ ॥
जेनषीश्रृंगीजीव ॥ दंतीजुश्रृष्टिदईव ॥ जलथलनिगिरिचरजाति ॥ व्योमचरवन्यविभा
ति ॥ वनवासिवासविवेक ॥ कहुंकोलभिल्लअनेक ॥ आषेटहितनरइंद ॥ वनजंतुवृंदनि
वृंद ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उतपत्तिषानिरतननिअनेक ॥ बहुरंगजातिभातिनि
विवेक ॥ षितिताम्रतारमयकनकषानि ॥ वैरागरबज्राकरवषानि ॥ अन्नेकधातुमयषान
आन ॥ बहुरंगसंगसौगंधवान ॥ पयचलतअषयनिर्झरपहार ॥ वारनतहांमज्जतजल
विहार ॥ चहुओरदेशपर्वतनिचाउ ॥ विस्तारविमलवनवनबनाउ ॥ सरिताअनेकतीर
थसुथान ॥ मुनिवृंदवासतहांपुन्यमान ॥ स्वाध्यायनिरततापससप्रेम ॥ तपजापहोमम
षनित्यनेम ॥ सरसीविसालजलजंतुसंग ॥ नीरजविकासनानाविहंग ॥ पत्तनअनेकष्ट

संध्याकरिऊथ्योबालसंत ॥ दीनीपरिकर्माभूदिगंत ॥ पृथ्वीविजेतकेबांधिपानि ॥ अंगदके क्रीडाकाजआनि ॥ लटकाइदयोपलनानिलाज ॥ सोदेषिहसतत्रीयगनसमाज ॥ बालिसों करीभाइपविनीत ॥ भयोजीभजातनिशिचरअनीत ॥ छुटकाइदयोछलबंधछोरि ॥ मुस कातगयोमूछनिमरोरि ॥ इहिंभांतिअमरअवतरिअसेष ॥ बालीमुषभालुभूतलविशेष ॥ ॥ ३० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ असुरसंतापितअवनिभारपीडितसभातिभय ॥ धेनुरूपतिहि धर्योमनसिचिंतेकरुणामय ॥ नारायणआकाशबानिअवतरनकह्योनर ॥ देवसबेधरिदेह रीछव्हैहैंबरबानर ॥ आज्ञाअनंतउपजेअमर, महाबीरविक्रमअमित ॥ श्रीरामचंद्रअव तारसंग, नियतनिहारतपंथनित ॥ २ ॥ ॥ इतिश्रीबालीप्रमुषभालोत्पत्तिः ॥ ॥ अथ राजादशरथोत्पत्ति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजाअजअवधेसकें । स्वायंभूमनुआइ ॥ दशर थव्हैकेंअवतरे ॥ तपसाकोफलपाइ ॥ १ ॥ उत्तरेसकोसलनृपति । तिहिपुत्रीअभिराम ॥ शतरूपाअवतारभो । कौशल्याइहिनाम ॥ २ ॥ राजादशरथधर्मधुर । कोशलदेसन रेस ॥ ताकहव्याहीविधिजुकत । कौशल्याशुभवेश ॥ ३ ॥ अतिप्रसिद्धपावनपुरी । सं जुतसुषनिसमृद्धि ॥ धर्म्मउपासकलोकसब । नितसनमुषनवनिद्धि ॥ ४ ॥ द्वादशद्वादश कोसलों । चहुंघाँचारिबजार ॥ सारधपंचसुमध्यभुव । विसदजुरतहटवार ॥ ५ ॥ दशपंचा परिवेषदृढ । पत्तनकोटप्रमान ॥ चहुंदेशिदीरघद्वारचव । वज्रकपाटविधान ॥ ६ ॥ षाई जलपूरितविषम । गृहजलजंतुअगाध ॥ मीनकमठभेकीमकर । सूंसिग्राहअनसाध ॥ ७ ॥ मृ द्धिकोटनृपमंदिरनि । आसपासउत्तंग ॥ शृंषलशूलकपाटसँग । चारिपौलचतुरंग ॥ ८ ॥ छंदउधोर ॥ जलपूरपरिषाजोप ॥ जनुअंबुसागरओप ॥ विचिराजधामाविकास ॥ मनुउदि तसेकैलास ॥ नगविविधईंटनियकंक ॥ आकारकुंदनमंक ॥ परबालथंभनिपाट ॥ कृतमलय अगरकपाट ॥ मनिनीलषूंभीमान ॥ शुभसिरालालसमान ॥ रविसामक्रांतरसाल ॥ जहांमीन जालनिजाल ॥ कृतकाचअंगनकाम ॥ बहुरंगधामनिधाम ॥ वनवातपथविस्तार ॥ प्रतिग्रेहवि विधप्रकार ॥ नगररचितप्रतिमानेक ॥ तरुलतागुलमअनेक ॥ भवभूतअनअनभांति ॥ वनिचि त्ररंगविभाति ॥ गृहगृहनिगोषउतंग ॥ रचिजवनिकाबहुरंग ॥ ध्वजकलसअंकितधाम ॥ दिग विजयचिन्हविदाम ॥ पटलोमसूत्रप्रकार ॥ प्रतिधामबिछेअपार ॥ गृहगृहनिदीपप्रगास ॥ तपरतनमणिमयतास ॥ नगषचितकनकनियंक ॥ प्रतिधामधामप्रजंक ॥ बनिसेजउ ज्वलवान ॥ सुषषीरफेनसमान ॥ राजाधिराजसमरथ्थ ॥ सुषभोगनृपदशरथ्थ ॥ नितव सतगृहनवनिद्धि ॥ अनुकूलअष्टसुसिद्धि ॥ रसविविधरतिरनिवास ॥ वनिताविवेकविला स ॥ नरदेवपुत्रीनाग ॥ शुभसेवनृपतिसभाग ॥ मुगधासुमध्यामान ॥ पुनिप्रगलभासप्र मान ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तीनपचासविवाहिता । नृपकन्यासमनाम ॥ सोभागुनयु तसुंदरी । ज्योंराजतरतिकाम ॥ ९ ॥ तिनमहँपटराणीसुत्रय । नितपातिव्रतनेम ॥ कहींसु मित्राकैकयी । प्रियकौशल्याप्रेम ॥ १० ॥ अवरदासिकासहसइक । निकटवर्तिनीनारि ॥ विविधसेवविश्वासवस । अतिप्रवीनअधिकारि ॥ ११ ॥ चेरीचतुरअनेकचित । योंराजत रनिवास ॥ मानहुंरतिकौनगरसों । सुषसंजुतसविलास ॥ १२ ॥ कलाकुशलजेकामिनी ।

गानतानसंगीत ॥ मूरतिधारैरागमनु । वाजितनृत्यविनीत ॥ १३ ॥ समयसमयसुपस
प्तस्वर । रसषटत्रिंशतिराग ॥ नितनवनवनाटकनिषल । सेवतनृपतिसभाग ॥ १४ ॥ ॥
॥ छंदउद्धोर ॥ ॥ बामनैंकुबजेवृद्ध ॥ प्रतिहारषंढप्रसिद्ध ॥ रनिवासरक्षकराज ॥ कंचु
कीचातुरकाज ॥ अतिविसदसभाअवास ॥ प्राकारविविधप्रकास ॥ परिवेषपौलिप्रचंड ॥ मु
षथंभतोरणमंड ॥ थितसूलशृंषलथाट ॥ उद्धाटवज्रकपाट ॥ पटवस्त्रविविधबिछाई ॥ वि
चिपीठनृपतिबनाइ ॥ शुभछत्रचामरसंग ॥ अद्वैतउज्वलअंग ॥ भृतनिकटवर्तीभूप ॥
जेराजमनुअनुरूप ॥ गुरुवामदेववसिष्ठ ॥ समधर्मकर्मनिसृष्ट ॥ पुनिआठमंत्रिप्रमान ॥
सबनीतिधर्मसुजान ॥ ॥ अथाष्टमंत्रीनामानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सिद्धारथसाधकअ
रथ । दृष्टिविजयजयपेषि ॥ पालकधर्मअसोकपुनि । बडौसुमंत्रविशेषि ॥ १५ ॥ देशकोश
दलदंडदम । दानाधिक्षसदूत ॥ द्वारपालदैवज्ञदढ । अधिकारीअनुभूत ॥ १६ ॥ रथगज
हयगोरसवती । पतिअधिकारप्रमान ॥ कविपौराणिकभिषजकुल । मागधनर्तकमान ॥
१७ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ सुरनागनरवससेव ॥ दिगविजितदशरथदेव । कृतराजभूमिसुर
क्ष ॥ ऐश्वर्यइंद्रप्रतक्ष ॥ पुरतासधर्मप्रकास ॥ सबबसहिवर्णसहास ॥ थितवणिकविक्रय
वंत ॥ जनुश्रियासचिवलसंत ॥ उदघटहिहाटकपाट ॥ ज्यौंधामसेधनराट ॥ कोटीसध्व
जीअनेक ॥ बनिलक्षदीपविवेक ॥ बहुकर्मकारबजार ॥ आसक्तकुलआधिकार ॥ पुरवाटि
कासुषपुंज ॥ जुतबहुलकुंजनिकुंज ॥ तरुलताकलपसुतत्र ॥ सबपुहपफलनिविचित्र ॥ सर
कूपवापीसंग ॥ जलजंत्रचलततरंग ॥ मिलिभ्रमरभ्रमरीमत्त ॥ गुंजारसौरभरत्त ॥ पशु
वृद्धिपशुपतिपाइ ॥ सबसुषीअभयसुभाइ ॥ वसिकृषीकुलसविवेक ॥ अतिउपजअन्नअ
नेक ॥ मनचिंतवर्षहिमेह ॥ सबधर्मवृद्धिसनेह ॥ कहूंशोकदुषनहीसंग ॥ आनंदमनअ
नभंग ॥ पुरचहूंओरप्रकाश ॥ वनगहनवागाविलास ॥ नदमहासरयूनाम ॥ उद्धारजग
अभिराम ॥ मिलिविसदपर्वतमाल ॥ वनलतावृक्षविशाल ॥ नितचलतनिर्झरनीर ॥ गि
रिअगमदरिगंभीर ॥ आषेटजंतुअपार ॥ प्रतिदिवसमिलतप्रकार ॥ मृगराजगर्जेसमू
र ॥ प्रतिसबदकंदरपूर ॥ वनमाहिषषड्वराह ॥ गजछऋतुमत्तअग्राह ॥ गिरिगवयच
मरीगाव ॥ शतजूथजूथसुभाव ॥ मृगचित्रसोरभमान ॥ वनशशकअनअनवान ॥ सा
रंगकृष्णानिसंग ॥ रुरुझांषसाषाशृंग ॥ कपिभालजूथपजूथ ॥ वनसरभविविधवरूथ ॥
जेनषीशृंगीजीव ॥ दंतीजुभृष्टिदईव ॥ जलथलनिगिरिचरजाति ॥ व्योमचरवन्यविभा
ति ॥ वनवासिवासविवेक ॥ कहुंकोलभिल्लअनेक ॥ आषेटहितनरइंद ॥ वनजंतुवृंदनि
वृंद ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उतपत्तिषानिरतननिअनेक ॥ वहुरंगजातिभातिनि
विवेक ॥ षितिताम्रतारमयकनकषानि ॥ वैरागरबज्राकरवषानि ॥ अन्नेकधातुमयषान
आन ॥ बहुरंगसंगसौगंधवान ॥ पयचलतअषयनिर्झरपहार ॥ वारनतहांमज्जतजल
विहार ॥ चहुओरदेशपर्वतनिचाउ ॥ विस्तारविमलवनवनबनाउ ॥ सरिताअनेकतीर
थसुथान ॥ मुनिवृंदवासतहांपुन्यमान ॥ स्वाध्यायनिरततापससप्रेम ॥ तपजापहोमम
षनित्यनेम ॥ सरसीविसालजलजंतुसंग ॥ नीरजविकासनानाविहंग ॥ पत्तनअनेकष्ट

थ्वीप्रमान ॥ चववर्णवासअतिचैनमान ॥ द्विजपुंजकर्मजुतअतिनदीन ॥ नितअनल होत्रविद्यानवीन ॥ जुतस्वाभिधर्मक्षत्रीसधीर ॥ गुनवंतसूरदातागहीर ॥ व्यापारनिपुण बहुवणिकवृंद ॥ उपराजकपोषकधनअनिंद ॥ दिनकथाकीर्तनदेवद्वार ॥ झालरीघंटसु रझणत्कार ॥ पशुपालकरतपशुनिकरपोष ॥ घनहोतप्रातमंथानघोष ॥ अन्नेककृषीकृषी कर्मश्रास ॥ अतिउपजअन्नबर्षौविलास ॥ त्रयवर्णसेवरतशूद्रतत्र ॥ प्रभुतत्परसाधक इहपरत्र ॥ अतिनिपुनविविधसिल्पाउदार ॥ अर्थीस्वकर्मकारकअपार ॥ वारणजुमत्त षड्ऋतुविनीत ॥ अनुसरतअचलजंगमअभीत ॥ करिणीअनेकआवृतसकोप ॥ बगपं तिदंतउज्जलसओप ॥ प्रतिरंगरेषमुषसक्रचाप ॥ मनुजलदध्वजाधरितडितधाप ॥ सिं दूरसीसविथुरेसुरंग ॥ आकासमनहुआगमपतंग ॥ मदरेषअसितअविरलअनूप ॥ गुं जारमधुपकृतकर्णजूप ॥ ॥ मदझरततलनिलागेमतंग ॥ निर्झरनिनीरमनुगिरिउतंग ॥ घहरातसघनजनुऋतुगंभीर ॥ मदमोषघोषगर्जनिगहीर ॥ प्रतिरंगवसनवासितजुनाग ॥ वर्षाकिविविधबद्दलविभाग ॥ घंटासुघोषघूघरनिनद्द ॥ हिमतारलिप्तजंजीरहद्द ॥ जु तरंगरंगचामरसजोप ॥ आवरितपुहपतरुसक्तओप ॥ नगजटितकनकबंगरीअनूप ॥ राजंतरदनिकरवलयरूप ॥ मातंगफिरतमोकलमदंध ॥ शतभारसारशृंषलसबंध ॥ दु स्साध्यऊर्ध्वकरझरतदान ॥ प्रेरितपहारमनुपीलवान ॥ शतमेठघिरेचरषीसुरंग ॥ इहिं रूपद्वारआवहिंअभंग ॥ कहुँभिरतमत्तवारणसक्रुद्ध ॥ जाजुल्यमनउंपर्वतनिजुद्ध ॥ क रिहोतकहुघूरदौरकोप ॥ आरूढपवनजनुजलदओप ॥ विरदैंतकरीकोउगढबिदार ॥ पै बद्धमनहुंघूमतपहार ॥ ॥ हयवर्णन ॥ ॥ असिलसितवाजिसालाअनेक ॥ विधिजु क्ततेजलक्षनविवेक ॥ प्रतिषेत्रषंडसंभवपवंग ॥ अन्नेकरंगआकृतिउतंग ॥ अतिसजबके ऊसनर्तकअनूप ॥ रहवालकेउकसुषचालरूप ॥ धावंतसजवकेउपक्षिधाप ॥फरकंतफाल केउमहिअमाप ॥ मृगगहतकंठकेउधनुषमेल ॥ मिलिजातअनिलसगवागमेल ॥ हिमघटि तजीननगजटितओप ॥ जरतारजीनमुषमलसजोप ॥ ४० ॥ सुषवागडोरिरेसमसुरंग ॥ प्रतिवाजसजसोभितसुचंग ॥ स्यंदनअनेकविजयीसँग्राम ॥ सन्नाहसस्त्रअस्त्रनिसनाम ॥ रथराजकेउकसुषसेजसाज ॥ हिमरचितषचितमणिनगविराज ॥ कोउजुक्तवृषभकोउजुक्त वाजि ॥ वारणसजुक्तकोउरथविराजि ॥ अतिकरभभारवाहकअमेव ॥ मदमत्तगरजधूंकार मेव ॥ जेचलतदंडयोजनसमाज ॥करभीअनेकहितराजकाज॥सतजूथसंगवामीसमर्थ्थ॥ अतिवेगवंतवाहकसुअर्थ्थ ॥ मणिरत्नहेमबहुमूल्यमान ॥ महिकोषधान्यधनअप्रमान ॥ सौगंधवस्त्रशालाविराज ॥ शुभअस्त्रशस्त्रशालासमाज ॥ अन्नेकभोज्यशालाअनूप ॥ भव त्रितृप्तहोतअन्नेकभूप ॥ पलत्रिधाद्विधामिलिअन्नपूर ॥ समपंचसाकषट्रससमूर ॥ घृतएक विविधिरचनाविधान ॥ दशसप्तविधाभोजननिधान ॥ अनिवारितभोजनकरतआनि ॥ अन्नेकमनुजमनमोदमानि ॥ षटदरसभासषटमिलिमहंत ॥जयकीर्तिजपतदशरथजयंत॥ अन्नेकदानपावतअनेक ॥ विद्याप्रमानगुनविधिविवेक ॥ चतुरंगचलतदलसूरचित्त ॥ न वभूमिदुर्गवसहोतानित्त ॥ तजिजातराजदुर्गनिदिगंत ॥ तेलहतअभयत्रिणगहतदंत ॥

उदयास्तराज्यमहिमाअमेव ॥ दिगविजितततपतदशरथनृदेव ॥ सिंघासनचामरछत्रसाज ॥ आज्ञाअषंडराजाधिराज ॥ उद्यमप्रयानदलबलअपार ॥ विस्तारसंधिविग्रहविचार ॥ ॥ महिदुर्गदंडआज्ञाअभंग ॥ अतिदयाप्रतिज्ञाअंगअंग ॥ बहुबंधुसंगविरुदैतवीर ॥ सबभाइनिआइसर्बससधीर ॥ अवनीविलासक्रीडाअनेक ॥ अनभंगतपतसत्रएक ॥ प्रभुकृपापात्रजसजपतजानि ॥ विद्याधरचारणासिद्धवानि ॥ १२३ ॥ ॥ इतिराजादशरथोत्पत्ति ॥

॥ अथराजादशरथराणीकैकेयीवरदानप्रसंग ॥

॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दक्षिणदेसजयंतपुर । तहाँसबलदनुजात ॥ करतराज विख्यातकुल ॥ अमितध्वजलघुभ्रात ॥ १ ॥ तैंप्रपंचमायाप्रबल ॥ कर्मअसाधसक्रोध ॥ जातिस्वभाविकइंद्रसौं । उपज्यौबैरविरोध ॥ २ ॥ देवासुरकलुकालभौ । इंद्रपराजयपाइ ॥ नृपदशरथकौचिंतवन । कीनौहेतसहाइ ॥ ३ ॥ देवराजसौंदशरथहिं । प्रगटपुरातनप्रीति ॥ गजहिधुरंधरहोतगज । राजनीतियहरीति ॥ नृपमृगयारतजिहिसमय । कैकेयीस्त्रीसंग ॥ आतुरआयोइंद्रतहां । वनहींभयोप्रसंग ॥ ५ ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ सुरपतिजाचन्याकरी । करियैदेवसहाइ ॥ राजादशरथसुनतही । चलेनिशानबजाइ ॥ ६ ॥ संवरदानवदशरथहिं । भयोभयानकजुद्ध ॥ बिषमपरस्परबीरबर । करतप्रहारसक्रुद्ध ॥ ७ ॥ नृपरथअक्षाकीलतहां । गिरीअलब्धसुजानि ॥ करअंगुरीकृतकैकेयी । रंध्रनिवेसितआनि ॥ ८ त्रीयकरपल्लवछिद्रथित । पतिदेष्योतिहिंकाल ॥ विस्मयगतिअतिप्रेमजुत । भयोनृपालकृपाल ॥ ९ ॥ प्रथमकहूंकन्यासमय । कैकेयीवयबाल ॥ महाविरूपसुतपविमल । द्विजदेष्यौइककाल ॥ १० ॥ वसनमलीनसषीनवपु । बढेविसदनषबाल ॥ कीनैवंदनजोरिकारि । द्विजसोईभयोदयाल ॥ ११ ॥ दियविद्यासंजीवनी । देषिभक्तिद्विजराज ॥ सोकन्यालीयमानिशिर । करेसफलमनकाज ॥ १२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सोईराषिगूढविद्याविलास ॥ कीयसमयपाइरानीप्रकास ॥ जबभएअंशुमालीअदृष्ट ॥ अपआपसंभारतबंधुइष्ट ॥ निसिभईजुद्धक्रीडानिवर्त्त ॥ रणषेतरहेदलरोषरत्त ॥ धारमरेकोउसुरषेत ॥ अन्नेकगिरेघाइनिअचेत ॥ रणअजिरसस्त्रहतदेषिराइ ॥ कैकईकर्योकरपरसकाइ ॥ क्षतळूवतमात्रवनिताविशेष ॥ निस्सेषभईपीडानरेस ॥ पुनिगिरेदेषिसबसुभटसूर ॥ संजीवनिमंत्रसुजापिसमूर ॥ इहिसमयजिवाएसुभटआन ॥ संजीवनिविद्याबलबिधान ॥ उठितबैराजदसरथअभंग ॥ अतिबढ्योक्रोधनसमातअंग ॥ तेउठेसबैसंग्रामसिद्ध ॥ प्रभुअग्रआनिठाढेप्रसिद्ध ॥ निसिरच्यौजुद्धदशरथनरेस ॥ परव्युहमध्यकीनौप्रवेश ॥ षयकरेअसुरषलमारिषेत ॥ संवरसबंधसेनासमेत ॥ सबदैत्यमारिकीनौसंघार ॥ कोउगयेभाजिपैंनिधिनिपार ॥ संग्रामजैतबाजेनिसान ॥ बनिरहगगनविबुधनिविमान ॥ संतुष्टभयोजीत्योसंग्राम ॥ वैचित्रकर्मपतिदेषिवाम ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ कीयप्रथमजुरक्षारथप्रमान ॥ अरुमृतकजिवाएवीरआन ॥ कृतकरेउग्रत्रीयउभयकाज ॥ अबलेहुउभयवरदानआज ॥ ॥ रानीवाक्यं ॥ ॥ स्यामाप्रमालकृतपतिसमीप ॥ मागौंतबदीजहुवरमहीप ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ अतिप्रेमप्रियापियकह्योएहु ॥ होइइच्छामनमहँतबहिलेहु ॥ ॥ कबिरुवाच ॥

॥ सुरपतिसहायकीनौनरेस ॥ दिग्विजयकरिआयोस्वदेश ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महातृवक्रा
मंथरा । धात्रीवृद्धावेस ॥ कैकेयीहितकारिणी । सबगृहकाजप्रवेश ॥ १३ ॥ ॥ रानीवा
क्यं ॥ ॥ कारणदुववरदानकौ । दशरथनृपज्यौंदीन ॥ रानीधात्रीसौंरहसि । कह्योंजथाक्र
मकीन॥१४॥मातारापेगूढमैं । न्यासभूतनिर्धार ॥ बातहृदयगतरापिवी । अपनेबुद्धिउदार॥
॥ अथश्रवणतापसबधप्रसगप्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहविधिदश
रथनृपतिभुव । राजकरतजगजीत ॥ वंसविभावसुअजसुवन । गावतत्रयपुरगीत ॥ १ ॥ एक
समयकछुकालगत । आषेटकनृपआइ ॥ बैठेतमसासरिततट । स्थानअदृष्टबनाइ ॥ २ ॥
दंपतिवृद्धनिकुंभमुनि ॥ श्रवणपुत्रतिनसंग ॥ विधिकृतसमयनिशीथवन ॥ तृषाविकलभ
एअंग ॥ ३ ॥ श्रवणगयौतबकलसलै।सरिताजलकैंकाज ॥ पूरितकुंभजुशब्दभौ।जान्योंनृ
पगजराज ॥ ४ शब्दवेधदशरथतहां।इषुमोष्योधनुतानि ॥ सोलागतबोल्योश्रवण।हाहा
हतइहिंबानि ॥ ५ ॥ सुन्योंनृपतिमानुषशबद।उठिआतुरतहांआइ ॥ द्विजहत्याभयत्रास
तैं।रह्योमनसंभ्रमछाइ ॥ ६ ॥ ॥ श्रवणउवाच ॥ ॥ तबहीबोल्योश्रवणमुनि । वैश्यपुत्रहूंराजा
अंधाममातापिता । आयौहौंजलकाज ॥ ७ ॥ आतुरजललैजाहुवे । विकलतृषामयव्याप॥
कैमारिहैअपमृत्युबस । नातरुदैहैश्राप ॥ ८ ॥ करहुविशल्यमहीपमुहि । इहांउपचारनआ
न ॥ काढतहीसरश्रवणके । कीनौप्राणप्रयाण ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ लैगयोनृपति
जबकुंभनीर ॥ सुनिआहठबोल्योमुनिसधीर ॥ ॥ अंधउवाच ॥ ॥ रेपुत्रश्रवणआयो
सुदेस ॥ इहींसमयकह्योकोशलनरेस ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ मैंहत्योश्रवणबनजंतुजानि
अपराधभयौअज्ञातआनि ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ हापुत्रपुत्रकहिविषमवानि ॥ मूर्छा
गतआतमदुषमानि ॥ अपराधविनाहमकीयअनाथ ॥ हतपुत्रतहांगाहिचलहुहाथ ॥ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ तिनहिंनृपगएलैसरिततीर ॥ जहांपर्योश्रवणसरहतसरीर ॥ दंपति
अंधतहांपुत्रदेषि ॥ उरलाइविकलविलपतविशेषि ॥ उठिदईजलांजुलिसुतहिअंध ॥ सं
सारछुट्योसाचौसबंध ॥ बससोकपितामाताविशेष ॥ सुतसंगकर्योहुतभुकप्रवेश ॥ ॥
अंधदंपत्युवाच ॥ ॥ दुखपुत्रतज्योंज्यौंहमजुदेह ॥ सुतशोकमरहुनृपनिः सँदेह ॥१०॥
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दयोश्रापमुनिदंपती । जरतअनलतनज्वाल ॥ इहिंप्रकारतापसश्रवन।
भयौअचानककाल ॥ १० ॥ इतिश्रवणबधप्रसंग ॥ ॥ अथअंगदेशअनावृष्टिप्रसंग
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अंगदेशचंपापुरी । लोमपादनृपतास ॥ अनावृष्टि
द्वादशबरष । भईभवभूतविनास ॥ १ ॥ चिंतातुरतबलोमनृप । भयोदीनआधीन ॥ कहूंन
पावतथाहकछु । तातैंचित्तमलीन ॥ २ ॥ त्रिकालज्ञदइवज्ञद्विज । तेबोलेइककाल ॥ कार
णचिंतादेशकौ । तिनहिकह्योभुवपाल ॥ ३ ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ द्विजनिकह्योतबनृप
तिसौं । औरउपायनकोइ ॥ शृंगीऋषआवैइहां । तौपैवर्षाहोइ ॥ ४ ॥ ऐसीहैभवतव्यता ।
निसचयअंगनरेस ॥ नासहोइदुर्भिक्षतौं । वरषहिदेवविशेष ॥ ५ ॥ कस्यपदेवप्रजापकौ ।
पुत्रविभांडकनाम ॥ नियतकर्मतपसानिरत । वननिर्जनविश्राम ॥ ६ ॥ शृंगीऋषीताकौ
सुवन । ब्रह्मचर्यवसबाल ॥ रहतसदाअध्ययनरत । पितुआज्ञाप्रतिपाल ॥ ७ ॥ ॥ नृप.

उवाच ॥ ॥ लोमपादनृपगुरुसचिव । बोलिकह्यौयहमंत्र ॥ किहिविधिआवैश्रृंगिऋषि । वसतउद्यानस्वतंत्र ॥ ८ ॥ ॥ गुरुमंत्रिउवाच ॥ ॥ देहतजैकैआपदे । तातैंडारियतराइ ॥ बलकरिनावैविप्रवह । करिवोएकउपाइ ॥ ९ ॥ पढवहुवारविलासिनी । वेषविचित्रवनाइ ॥ कारणहेतउपायकरि । ल्यावहिमोहलगाइ ॥ १० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नृपतहांपठईनाइका । दयोमानबहुदान ॥ सोआज्ञावससुंदरी । पनकृतकस्योप्रयान ॥ ११ ॥ तेमुनिवेषबनाइत्रिय । गईजहांऋषिश्रृंग ॥ करेपरसपरनमस्कृत । उपजेसुषअंगअंग ॥ १२ ॥ आवनगमनजुवेषइहिं । कछुकदिवसतिनकीन ॥ विविधसाजिभूषनवसन । नागरिरूपनवीन ॥ १३ ॥ समयपाइसोसुंदरी । याहिलह्योएकंत ॥ विधिजुतकीनीवंदना । भयौमिलापमहंत ॥ १४ ॥ त्रियरसअनुभवनाहितिहिं । श्रृंगीऋषिअनसंग ॥ कृतआकृतनरनारिके । प्रेमनपढेप्रसंग ॥ १५ ॥ तातैंकाठपषानत्रिय । तादृशसूझततताहि ॥ देष्योअद्भुतरूपारिष । रह्योचकितमुषचाहि ॥ १६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ देष्योसुरूपनूतनद्विजात ॥ विस्मयगतपूछतभयोवात ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ कृतकवनआपआनीसुकौंन ॥ मोहिकहियैकारणछांडिमौन ॥ ॥ स्त्रियोवाच ॥ ॥ त्रियरत्नजंतुहमभोग्यसाज ॥ बल्लभानाममुनिजनसमाज ॥ संभ्रमितजंतुजंगमअसेष ॥ वसहोहिहमहिदेषतविशेष ॥ मनमथविलासवंछितप्रमान ॥ हमदाताचितामनिसमान ॥ तनपरसतममत्रिणअनलतूल ॥ मदनामयपावतनाशमूल ॥ ॥ ऋषिशृंगिरुवाच ॥ ॥ ममइहांनिकटआश्रममहंत ॥ सुषवसतपितातहांवृद्धसंत ॥ प्रभुतहांपावधारहुपुनीत ॥ विधिजुक्तकरहिंआतिथिविनीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वनजंतुविविधसेवितविशाल ॥ ऋषिश्रृंगितपोथलजलरसाल ॥ सुंदरीचलीऋषिश्रृंगिसंग ॥ मातंगगमनिउदभवअनंग ॥ झंकारहोतनूपुरनिनद्द ॥ सौगंधभ्रमरगुंजारशब्द ॥ इहिंभांतितपोथलत्रीयाआइ ॥ ऋषिकरीसुषदपूजासुभाइ ॥ अर्घासनदीनैविप्रआनि ॥ वनितासुबैठिमनमोदमानि ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ मुनिदएआनिफलविविधमूल ॥ कीरयैवनभोजनसानुकूल ॥ अनेकस्वादमोदकअनूप ॥ ऋषिअग्रधरेत्रीयअमृतरूप ॥ ॥ स्त्रियोवाच ॥ ॥ एआहिहमहूंपहँफलअनेक ॥ कीरयैऋषिभक्षनजुतविवेक ॥ परस्परकरौभोजनप्रमान ॥ विस्तारप्रेमचर्चाविधान ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ श्रृंगीऋषिपूछीत्रियसुभाइ ॥ सबकहौमर्मअपनौंसुनाइ ॥ कोकर्मभजनविद्यासकौन ॥ मुनिदेवउपासतकवनमौन ॥ ॥ स्त्रियोवाच ॥ ॥ भवकामरूपहमपरमभेव ॥ दिनरातिउपासितमदनदेव ॥ २० ॥ नितपाठप्रेमविद्याप्रमान ॥ नवरसनिक्रियाअनुभवनिधान ॥ इहिंरसनलह्योजिहिंस्वादआनि ॥ जगजतुजनमतिहिंवृथाजानि ॥ ॥ ऋषिशृंगिउवाच ॥ ॥ सिषजानिपढावहुपाठसोइ ॥ रसस्वादजन्मजिहिंसफलहोइ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वसभयौविप्रजान्यौविशेष ॥ अबलानिफलेसाधनअसेष ॥ मिलिबैठिरहसिवनगहनमांहि ॥ आवैसुभांडतबभागिजांहि ॥ मुनिबँध्यौत्रियायौंचितमोह ॥ छलकरतविविधतहांछद्मछोह ॥ अहिहावभावरसतानगान ॥ वनिताकटाक्षलीलाविधान ॥ मानिनीचलतउठिप्रेममत्त ॥ ऋषिलगतसंगतहांरूपरत्त ॥ तहांग्रहतदौरिअंचलद्विजात ॥ मुरिहस

॥ सुरपतिसहायकीनौनरेस ॥ दिगविजयकरिआयोस्वदेश ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महातृवक्रा मंथरा । धात्रीवृद्धावेस ॥ कैकेयीहितकारिणी । सबगृहकाजप्रवेश ॥ १३ ॥ ॥ रानीवाक्यं ॥ ॥ कारणदुववरदानकौ । दशरथनृपज्यौंदीन ॥ रानोधात्रीसौंरहसि । कह्यौजथाक्रमकीन॥१४॥माताराषेगूढमैं । न्यासभूतनिर्धार ॥ बातहृदयगतराषिवी । अपनेबुद्धिउदार॥

॥ अथश्रवणतापसबधप्रसगप्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहविधिदशरथनृपतिभुव । राजकरतजगजीत ॥ वंसविभावसुअजसुवन । गावतत्रयपुरगीत॥ १ ॥ एक समयकछुकालगत । आषेटकनृपआइ ॥ बैठेतमसासरिततट । स्थानअदृष्टबनाइ ॥ २ ॥ दंपतिवृद्धानिकुंभमुनि ॥ श्रवणपुत्रातिनसंग ॥ विधिकृतसमयनिशीथवन ॥ तृषाविकलभएअंग ॥ ३ ॥ श्रवणगयौतबकलसलै । सरिताजलकेंकाज ॥ पूरितकुंभजुशब्दभौ । जान्योनृपगजराज ॥ ४ शब्दवेधदशरथतहां । इषुमोष्योधनुतानि ॥ सोलागतबोल्योश्रवण । हाहा हतइहिंवानि ॥ ५ ॥ सुन्योनृपतिमानुषशबद । उठिआतुरतहांआइ ॥ द्विजहत्याभयत्रासतें । रह्योमनसंभ्रमछाइ ॥ ६ ॥ ॥ श्रवणउवाच ॥ ॥ तबहीबोल्योश्रवणमुनि । बैश्यपुत्रहूंराज । अंधाममपातापिता । आयोहौंजलकाज ॥ ७ ॥ आतुरजललैजाहुवे । विकलतृषामयव्याप ॥ कैमारिहैअपमृत्युबस । नातरुदैहैश्राप ॥ ८ ॥ करहुविशल्यमहीपमुहि । इहांउपचारनआन ॥ काढतहीसरश्रवणके । कीनौप्राणप्रयाण ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ लैगयोनृपति जबकुंभनीर ॥ सुनिआहठबोल्योसुनिसधीर ॥ ॥ अंधउवाच ॥ ॥ रेपुत्रश्रवणआयो सुदेस ॥ इहींसमयकह्यौकोशलनरेस ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ मैंहत्योश्रवणबनजंतुजानि अपराधभयौअज्ञातआनि ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ हापुत्रपुत्रकहिविषमवानि ॥ मूर्छागतआतमदुषमानि ॥ अपराधविनाहमकीयअनाथ ॥ हतपुत्रतहांगहिचलहुहाथ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तिनाहिनृपगएलैसरिततीर ॥ जहांपरयोश्रवणसरहतसरीर ॥ दंपति अंधतहांपुत्रदेषि ॥ उरलाइविकलविलपतविशेषि ॥ उठिदईजलांजुलिसुतहिअंध ॥ संसारछुट्योसाचोसबंध ॥ बससोकपितामाताविशेष ॥ सुतसंगकरयोहुतभुकप्रवेश ॥ ॥ अंधदंपत्युवाच ॥ ॥ दुखपुत्रतज्योज्योंहमजुदेह ॥ सुतशोकमरहुनृपनिः सँदेह ॥ १० ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दयोश्रापमुनिदंपती । जरतअनलतनज्वाल ॥ इहिंप्रकारतापसश्रवन । भयौअचानककाल ॥ १० ॥ इतिश्रवणबधप्रसंग ॥ ॥ अथअंगदेशअनावृष्टिप्रसंग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अंगदेशचंपापुरी । लोमपादनृपतास ॥ अनावृष्टि द्वादशबरष । भईभवभूतविनास ॥ १ ॥ चिंतातुरतबलोमनृप । भयोदीनआधीन ॥ कहूंन पावतथाहकछु । तातेंचित्तमलीन ॥ २ ॥ त्रिकालज्ञदइवज्ञद्विज । तेबोलेइककाल ॥ कारणचिंतादेशकौ । तिनहिकह्योभुवपाल ॥ ३ ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ द्विजनिकह्योतबनृप तिसौं । औरउपायनकोइ ॥ शृंगीऋषआवैइहां । तौपैवर्षाहोइ ॥ ४ ॥ ऐसींहैभवतव्यता । निसचयअंगनरेस ॥ नासहोइदुर्भिक्षतौं । वरषहिदेवविशेष ॥ ५ ॥ कस्यपदेवप्रजापकौ । पुत्रविभांडकनाम ॥ नियतकर्मतपसानिरत । वननिर्जनविश्राम ॥ ६ ॥ शृंगीऋषीताकौ सुवन । ब्रह्मचर्यवसबाल ॥ रहतसदाअध्ययनरत । पितुआज्ञाप्रतिपाल ॥ ७ ॥ ॥ नृप

उवाच ॥ ॥ लोमपादनृपगुरुसचिव । बोलिकह्योयहमंत्र ॥ किहिविधिआवैश्रृंगिऋषि । वसतउद्यानस्वतंत्र ॥ ८ ॥ ॥ गुरुमंत्रिउवाच ॥ ॥ देहतजेंकैआपदे । तातैंडारियतराइ ॥ बलकरिनावैविप्रवह । करिवोएकउपाइ ॥ ९ ॥ पठवहुवारविलासिनी । वेषविचित्रवनाइ ॥ कारणहेतउपायकरि । ल्यावहिमोहलगाइ ॥ १० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नृपतहांपठईनाइका । दयोमानवहुदान ॥ सोआज्ञावससुंदरी । पनकृतकस्योप्रयान ॥ ११ ॥ तेमुनिवेषबनाइत्रिय । गईजहांऋषिश्रृंग ॥ करेपरसपरनमस्कृत । उपजेसुषअंगअंग ॥ १२ ॥ आवनगमनजुवेषइहिं । कछुकदिवसतिनकीन ॥ विविधसाजिभूषनवसन । नागरिरूपनवीन ॥ १३ ॥ समयपाइसोसुंदरी । याहिलह्योएकंत ॥ विधिजुतकीनीवंदना । भयोमिलापमहंत ॥ १४ ॥ त्रियरसअनुभवनाहितिहिं । श्रृंगीऋषिअनसंग ॥ कृतआकृतनरनारिके । प्रेमनपढेप्रसंग ॥ १५ ॥ तातैंकाठपषानात्रिय । तादृशसूझततांहि ॥ देष्योअद्भुतरूपरिष । रह्योचकितमुषचाहि ॥ १६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ देष्योसुरूपनूतनद्विजात ॥ विस्मयगतपूछतभयोवात ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ कृतकवनआपआनीसुकौंन ॥ मोहिकहियेकारणछांडिमौंन ॥ ॥ स्त्रियोवाच ॥ ॥ स्त्रियरत्नजंतुहमभोग्यसाज ॥ बल्लभानाममुनिजनसमाज ॥ संभ्रमितजंतुजंगमअसेष ॥ वसहोहिहमहिदेषतविशेष ॥ मनमथविलासवंछितअमान ॥ हमदाताचिंतामनिसमान ॥ तनपरसतममत्रिणअनलतूल ॥ मदनामयपावतनाशमूल ॥ ॥ ऋषिशृंगिरुवाच ॥ ॥ ममइहांनिकटआश्रममहंत ॥ सुषवसतपितातहांवृद्धसंत ॥ प्रभुतहांपावधारहुपुनीत ॥ विधिजुक्तकरहिआतिथिविनीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वनजंतुविविधसेवितविशाल ॥ ऋषिश्रृंगितपोथलजलरसाल ॥ सुंदरीचलीऋषिश्रृंगिसंग ॥ मातंगगमनिउदभवअनंग ॥ झंकारहोतनूपुरनिनद ॥ सौगंधभ्रमरगुंजारशब्द ॥ इहिंभांतितपोथलत्रीयाआइ ॥ ऋषिकरीसुषदपूजासुभाइ ॥ अर्घासनदीनैविप्रआनि ॥ वनितासुबैठिमनमोदमानि ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ मुनिदएआनिफलविविधमूल ॥ कीरयैवनभोजनसानुकूल ॥ अन्नेकस्वादमोदकअनूप ॥ ऋषिअग्रधरेत्रीयअमृतरूप ॥ ॥ स्त्रियोवाच ॥ ॥ एआहिहमहूंपहँफलअनेक ॥ कीरयैऋषिभक्षनजुतविवेक ॥ परस्परकरोभोजनप्रमान ॥ विस्तारप्रेमचर्चाविधान ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ श्रृंगीऋषिपूछीत्रियसुभाइ ॥ सबकहेमर्मअपनौंसुनाइ ॥ कोकर्मभजनविद्यासकौंन ॥ मुनिदेवउपासतकवनमौन ॥ ॥ स्त्रियोवाच ॥ ॥ भवकामरूपहमपरमभेव ॥ दिनरातिउपासितमदनदेव ॥ २० ॥ नितपाठप्रेमविद्याप्रमान ॥ नवरसनिक्रियाअनुभवनिधान ॥ इहिंरसनलह्योजिहिंस्वादआनि ॥ जगजतुजनमतिहिंवृथाजानि ॥ ॥ ऋषिशृंगिउवाच ॥ ॥ सिषजानिपढावहुपाठसोइ ॥ रसस्वादजन्मजिहिंसफलहोइ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ॥ वसभयौविप्रजान्यौविशेष ॥ अबलानिफलेसाधनअसेष ॥ मिलिबैठिरहसिवनगहनमांहि ॥ आवैसुभांडतबभागिजांहि ॥ मुनिबँध्यौत्रियायौंचितमोह ॥ छलकरतविविधतहांछद्मछोह ॥ ग्रहिहावभावरसतानगान ॥ वनिताकटाक्षलीलाविधान ॥ मानिनीचलतउठिप्रेममत्त ॥ ऋषिलगतसंगतहांरूपरत्त ॥ तहांग्रहतदौरिअंचलद्विजात ॥ मुरिहस

तनसोभातनसमात ॥ इहिंभांतिपरसपरमिलतग्रानि ॥ वदिकामवचनकलकंठवानि ॥ ब
निबैठित्रीयापरिषदबनाइ ॥ इकसमयमिल्योऋषिश्रृंगग्राइ ॥ तहांहोनलगेघनगगनघोर
मिलिमत्तमयूरीशब्दमोर ॥ विस्तारजलदविद्युतविलास ॥ प्रतिदिगानिदुरतकरिकरिप्रका
स ॥ तरुलतागुल्मकुसुमिततमाल ॥ मधुमत्तभ्रमतामिलिमधुपमाल ॥ उद्दिपनमनमथस
मयएह ॥ नरनारिनियतबाढतसनेह ॥ समभागभयैंरजवीर्यसंग ॥ उतपन्नहोतजेपुरुष
अंग ॥ पौरुषप्रभावनाहिनप्रसंग ॥ इहिंकालतिनहुंव्यापतअनंग ॥ उत्तरदिगआतुर
अनिलआइ ॥ सविसेषसीतव्याप्यौसुभाइ ॥ आसाअदृष्टमिलिअंधकार ॥ कीयतडितग्र
चानकचमत्कार ॥ आलिंगित्रीयात्रीयआपआप ॥ उरलगीचरितवनिताअमाप ॥ इकत
हांत्रीयामुग्धाअनूप ॥ ऋषिकंठलगीउठिकामरूप ॥ उरमिलतत्रीयासुनिवसअनंग ॥ भ
यौब्रह्मचर्यव्रततहांभंग ॥ तबपर्‍योप्रेमपासीद्विजात ॥ ग्रसिकामरोगवैवर्णगात ॥ पाएसु
भांडजबचिन्हपूत ॥ संभ्रम्योचित्तजान्योकुसूत ॥ ॥ सुभांडउवाच ॥ ॥ नियराइपुत्र
पूछ्यौनिदान ॥ आयोममआश्रमकवनआन ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ ऋषिश्रृंगकह्यौ
पितुसौंबिराम ॥ मुनिआएइहांत्रियरत्ननाम ॥ आतिथ्यकर्‍योमैंविधिअनेक ॥ वनभोज
नदीनैंजुतविवेक ॥ ॥ सुभांडउवाच ॥ ॥ श्रृंगीऋषिसौंकहिपितुसुभाइ ॥ तेबसतक
हांमुनिमुहिबताइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लैगयोजहांसुंदरिसमाज ॥ वनआनसभावनि
ताविराज ॥ भयचकितभईजुवतीसभीत ॥ विधिजुक्तकरेवंदनविनीत ॥ ॥ सुभांडउवा
च ॥ ॥ पूछ्यौसुभांडमुनित्रियसमाज ॥ आवनबनकारनकहौआज ॥ ॥ स्त्रियोवाच ॥
वनितासुकह्यौकारनविशेष ॥ दुर्भिक्षघोरभयौअंगदेश ॥ पठईहमराजालोमपाद ॥ मुनि
श्रृंगहिआनौअप्रमाद ॥ ॥ दोहा ॥ पितुरुवाच ॥ ॥ इहांसुतविरहामयग्रसित । उ
हांउग्रवहकाज ॥ श्रृंगीऋषिहिविचारितब । दईबिदाऋषिराज ॥ १७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥
पितुदीनीआज्ञामर्मपाइ ॥ अबपुत्रजाइकरियेंउपाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोचल्यो
पिताआज्ञाऋषेस ॥ दिनकछुइकपहुंच्योअंगदेस ॥ अबलानिकरेउद्यमअनंत ॥ आन्यो
तपसीइकवर्षअंत ॥ सामुंहैंआनिनृपप्रजासाथ ॥ सबिशेषकरीपूजासनाथ ॥ अर्घासन
दीनैंविधिअनेक ॥ विस्तारपाकसज्याविवेक ॥ आरंभयज्ञशुभलग्नआइ ॥ संभारपारपूजा
सुभाइ ॥ क्रतुइंद्रदेवहितसांगकीन ॥ निर्घोषगगनघनमिलिनवीन ॥ अतिवृष्टिदेवकीनीअ
सेस ॥ दुर्भिक्षनासभोअंगदेस ॥ नृपलोमपादपुत्रीअनूप ॥ सांतानामसुंदरीसुरूप ॥ दि
यश्रृंगऋषिहिकन्यासुदान ॥ कीयपाणिग्रहणपूजाप्रमान ॥ अतिसुषदसंगपरिकरअपार
विधिजुक्तदासदासीबिहार ॥ ऋषिश्रृंगराषिसुप्रसन्नराज ॥ शुभहोतपुन्यचर्चासमाज ॥
॥ ६५ ॥ दोहा ॥ दुर्भिषद्वादशवर्षकौ । सोषोयोऋषिश्रृंग ॥ महाभयोशुभकालमहि ।
तिहुंपुरप्रगटप्रसंग ॥ १८ ॥ इतिअंगदेशअनावृष्टिसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथ श्रीरामचंद्रजन्मप्रसंग ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पारब्रह्मनरहरप्रभू । त्रेतायुगअवतार ॥ पित
सासनवसप्रेमपन । वेदधर्मविस्तार ॥ १ ॥ सूरजवंससहायसुर । कुलरावनषयकार ॥ व्है

हैभारबिनाशभुव। अबरामाअवतार ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ एकछत्रअवधेसभुवन दशरथनरेसभय ॥ जहँजहँरणझुज्झयोजगतअनभंगभयौजय ॥ देशकोशदृढदुर्गदान दमदंडदयादल ॥ परिभवप्रगटप्रयानबंधुसबसिद्धिबुद्धिबल ॥ आज्ञाअषंडउदयास्तलौं, मिलित्रिलोकआवागवन ॥ बैदिकप्रभाववर्जितव्यसन, राजतनृपजगतीरवन ॥ १ ॥ बिषमअपुत्रिकवीरवर्षनवशहसजुवित्तिय ॥ वेदप्रणीतविधानकरेजयसंजुतकित्तिय ॥ विपुलआयुवित्तयौजानिअवशेषअल्पजब ॥ जीयनआसपुजइयअवधीनियरानलगीअव ॥ बिषमयसुगंधभोजनवसन, द्यौसनिसादुषअनलदहि ॥ नैरासाचितवसशोकनृप, बातचक्र्यौंतूलवहि ॥ २ ॥ दिवसइक्कदशरथनरेसकुलपुज्यग्रेहगय ॥ निजअपुत्रताजानिभूपभयभीतचित्तभय ॥ जन्मजातनिस्फलद्विजातदुखआननबुज्झइ ॥ ज्यौंबूडतसागरजिहाजअवलंबनसुज्झइ ॥ संसारसून्यलागतसकल, छीजतजुगजुगइक्कछिन ॥ सुनिजैवसिष्टसिद्धांतयह, वृथाराजसुषपुत्रविन ॥ ३ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सनत्कुमारजुब्रह्मसुत। तापहँसुन्यौंनरेस ॥ शृंगीऋषिकरिकाजहे। व्हैहैंउग्रविशेष ॥ रौरवद्वादसवर्षकौं। अंगदेसजबहोइ ॥ शृंगीरिषिकृतजज्ञतें। नामहिपावैसोइ ॥ ४ ॥ राजादशरथकर्मवस। रहिअपुत्रबहुकाल ॥ शृंगीऋषिमषजबकरै। फलपावैततकाल ॥ ५ ॥ एकारजभवतव्यवस। दोऊअवधिनरेस ॥ तिनमहँप्रथमप्रमानभौ। व्हैहैंद्वितीयविशेष ॥ ६ ॥ पुनिवसिष्ठमुनिदिव्यदग। अंतर्गतकहिएह ॥ पुत्रचारिव्हैहैंप्रगट । देवब्रह्ममयदेह ॥ ७ ॥ मायाजोगविदेहग्रह। पुनिव्हैहैंउतपत्ति ॥ अवनीभारविनाशहित। सोनृपजानहुसत्ति ॥ ८ ॥ अबजिहिंआवैशृंगरिषि। करियैवेगउपाइ ॥ संततिकारजसिद्धकौं। समयबन्योसोइआइ ॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आज्ञापाइवसिष्ठकी। दशरथकरयोप्रयान शुभदिनसगुनमनाइसब। चलेबजाइनिसान ॥ १० ॥ अंगदेशअवधेसजब। आयौसुनिअंगेस ॥ सज्जनसंबंधीसषा। आदरकरेअशेष ॥ ११ ॥ नृपआएचंपापुरी । परिकरइंद्रप्रमान ॥ कौशल्यादिकसंगत्रिय। कीयआतिथ्यअमान ॥ १२ ॥ विनुसंततिचिंताविषम ॥ उरहिजुव्यापतआइ ॥ सोदशरथनृपलोमसौं। सबैकहीसमझाइ ॥ १३ ॥ सुतअभावऋषिशृंगसौं। दोउनृपव्हैदीन ॥ करिप्रणामतहांजोरिकर। कारणप्रगटजुकीन ॥ १४ ॥ छंदपधरी ॥ ऋषिभौदयालदुषसुनतराज ॥ संगउभयनृपतिकीयचलनसाज ॥ सकुटुंबचल्योनृपलोमसंग ॥ आनंदबढ्योदशरथअभंग ॥ ऋषिशृंगसंगमिलिउभयराज ॥ अतिहर्षअयोध्यापुरीआज ॥ सालंकृतकीनौंनगरसाजि ॥ वाजित्रसमंगलगृहनिबाजि ॥ मिलिअंतःपुरजुवतीसमाज ॥ शृंगारसेजसौगंधसाज ॥ सांतासहितऋषिशृंगराइ ॥ पूजाप्रसन्नकरिलगेपाइ पुनिबोलसुहृदनृपकरिप्रसंस ॥ वरबीरधीरनिर्मलसुवंस ॥ अंगाधिपतीमिथिलेसआइ ॥ समकासिराजकेकयसुभाइ ॥ अरुदाक्षणात्यसौवीरदेश ॥ सौराष्ट्रसिंधुपतिनरनरेश ॥ तहांआइधर्ममूरतद्विजात ॥ सोवरेवेदविद्याविष्यात ॥ वरिगुरुवसिष्टअरुवामदेव ॥ जाबालिजुक्तकस्यपकुदेव ॥ पृथ्वीसुसोधपुरुषहिप्रमान ॥ सरयूनदउत्तरतटसुथान ॥ क्रतुवाजिमेधआरंभकीन ॥ द्विजजथाजोगअधिकारदीन ॥ सबकरेआनिसंभारसिद्ध ॥ पुरनिहुं

भएआनंदप्रसिद्ध ॥ पटबंधवाजिपृथ्वीप्रवेश ॥ दलसंगस्वइच्छाफिरतदेस ॥ अमिअश्व मासद्वादशसुभाइ ॥ आगमवसंतथलजज्ञआइ ॥कृतअनलज्वलितवधवाजिकीन॥देवनि असेषआहुतीदीन ॥ सुरभएतृप्तहयमेधसिद्ध ॥ प्रभुपुन्यलाभपृथ्वीप्रसिद्ध ॥ कियद्वितीयजज्ञआरंभकाज ॥ संभारसारजुतहोमसाज ॥ तहांहोनलग्योमषअग्निहेत ॥ शुभवेदगानमंत्रनिसमेत ॥ यौंहोतअमृतआहुतिअपार ॥ प्रतिदिवसहोमनानाप्रकार ॥ विधिजुक्तवर्षवीत्यौविशेष ॥ आहुतीदईपुरनअसेष ॥ तहांधरैदेहस्वाहासमेत ॥ उत्पन्नअग्नितब अग्निषेत ॥ थितक्षीरसपूरितकनकथाल ॥ करधरैवर्णज्वालाविसाल ॥ द्विजगुरुवसिष्ठहि थालदीन ॥ पुनिपुरुषकुंडपरवेसकीन ॥ गुरुअर्धभागपायसपवित्र ॥ कोशलसुतहिसौंद यौतत्र ॥ जोरह्योअर्धअवशेषआन ॥ थितथालकह्योसोउभयथान ॥ केकयीसमर्पितएक कीन ॥ द्वैअंससुमित्रहिद्वितीयदीन ॥ सांगतासिद्धमषभयौसकाम ॥ विधिजुक्तदानदीय नृपसवाम ॥ दशलक्षसपरिकरधर्मधेन ॥ सोपूजिविप्रदीनीसुषेन ॥ दशकोटिस्वर्णमयपूर्णदान ॥ मिलिरजतकोटिदशचोकमान ॥ द्विजवंदिचरणकीयविदादेव ॥ जिगअंतकरे मज्जनअजेव ॥ क्रमजुक्तत्रियनिपयभक्षकीन ॥ निसचयभईगर्भस्थितिनवीन ॥ प्रतिगर्भ अवधिवसवृद्धिपाइ ॥ समअंगरूपलक्षनसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रसवकालनिर्विघ्न भौ । तहांदशमासवीतीत ॥ जगतआसविश्वासजुत । प्रभुआगमनपुनीत ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अवधिपाइउत्पन्नग्रेहअवधेसअवधिपुर ॥ पितुदशरथपृथ्वेसधर्मरथभारवहनधुर ॥ पतिव्रतासुपुनीतमातकौसल्यारानी ॥ हंसवंसअवतंसजातिक्षत्रियजगजानी ॥ खलगएअस्तमिततिमिरषय, हितउदोतरघुवंसहुव ॥ परब्रह्मपरातमपरपुरुष, भयौराम अवतारभुव ॥ ४ ॥ ऋतुवसंतमधुमासमिलितपषस्वेतमध्यदिन ॥ अमृतसिद्धिजुतजोगनछत्रअभिजितउत्तरायन ॥ मेषभानुवृषसौमबुधकन्याकर्कटगुरु ॥ सफरशुक्रसंक्रमणशेषग्रहपंचउच्चवर ॥ शुभसगुनभएनरहरसुकवि, जातुधानउरपरजरे ॥ काकुस्थवंस नवमीसुतिथि, रामचंद्रप्रभुअवतरे ॥ ५ ॥ अर्कवंशआकाशअवधिवित्तियअरुणोदय ॥ कौशल्याप्राचीसुरामरविप्रगटजगतजय ॥ समयनिशाचरतिमिरकीर्तिदिगकिरण प्रकाशिय ॥ दुष्टकुमुदसंकुरीयसत्रुनाक्षत्रविनासिय ॥ नरहरकविचकवाजसजपत, असुरचकोरसतापउर ॥ दशवदनघूकमनुमूकहुव, प्रफुल्लितसुरपंकजत्रिपुर ॥ ६ ॥ अवधि शशिरअवसानजन्मआगमजगजानिय ॥ अमरवृंदआनंदनिषिलबनपुहपनिधानिय ॥ कंटकभयभरटरीयसीतदाहकनहिसज्जइ ॥ संतकमलविगसंतकीर्तिकविकोकिलकिज्जइ ॥ मुनिमधुपमालग्गवतमुदित, वेदनीतित्रयवातवहि ॥ जगप्रगटरामऋतुराज्यज्यौं, मिलिउछवआमोदमहि ॥ ७ ॥ मषनिसानधुरगजआसघनघटाबंधिउर ॥ मिलेमनोरथ जलदसंतचातकरटआतुर ॥ सुरसिषंडिमनमुदितज्यौंतिविद्युतआभासीय ॥ किर्तिसारितवित्थरीयविदुषमुषसिंधुविलासीय ॥ वर्षासुकनकबुंदनिवढीय, वैरिविनासजवासबन ॥ मिटिचिंतारौरवनृपतिमन, रामस्यामघनआगमन ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ मंगलवंदनमाल, विमलथालगृहगृहवजे ॥ सुरनरसवदरसाल, जयजयजयरघुकुलतिलक ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ विबुधनिसानप्रकासबजि । सुमनवृष्टिसंसार ॥ तीनलोकआनंदहुव । रामचंद्रअवतार ॥ १६ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ कौशल्योवाच ॥ ॥ परमातमाजुअनादिपौरुषसत्यरूपसनातनं ॥ नीलोत्पलदलस्यामसुंदरपीतवासनभासनं ॥ दृगअंतअंबुजअरुणआभामकरकुंडलशोभए ॥ मणिजटितकनककिरीटमंडितअलकअलिमनछोभए ॥ भुजचारिसंयुतचारिआयुधहृदयमनिसोभासनैं ॥ केयूरमुक्तामालकंकणविविधभूषनतनवनैं ॥ गणईशकोटिनिअग्रवर्तीकुलअमरवंदनकरैं ॥ वनमालउरमिविचित्रविभ्रांतिहासचंद्रकचितहरैं ॥ कटिसिंधमंडितहेमकिंकिनिनवलझंकतनूपुरे ॥ जोतिमयनषअरुणराजितरूपअद्भुतनरहरे ॥ सोदेषिकौशलसुताविस्मितभईचित्तअमावहीं ॥ आनंदधाराअश्रुअविरलप्रमथाहनपावहीं ॥ करजोरिकरिकरिपरमकरुनावारवारबषानहा ॥ अभिलाषपूरणभएअपनैंजन्मसाफलजानहीं ॥ तुमपारब्रह्मअपारप्रभुतापरमधांमप्रमानियैं ॥ जगकरनपोषनसरनजगजितजगनिवाससुजानियैं ॥ रविकोटिप्रगटप्रकाशराजितईशकोटिमहेश्वरा ॥ विधिकेटिकोटिनिविश्वस्रजतकालकोटिभयंकरा ॥ हयमेधकोटिअधर्महंतामरुतकोटिमहाबली ॥ शशिकोटिजगदानंदस्वामीकोटिसुरनगनिश्चली ॥ वैश्रवणकोटिधनेशवैभवशक्रकोटिविलासनं ॥ त्रैलोकवंदितपदमपदसेइकोटितीर्थनिवासनं ॥ सरपंचकोटिनिअतुलसुंदरषिमाकोटिवसुंधरा ॥ सामुद्रकोटिगंभीरशोभाकोटिचंद्रभयंकरा ॥ वपुकोटियज्ञपुनीतपूजादेवदेवदयालभौ ॥ शुभदृष्टिकोटिकसुधाश्रावकपरमगतिदायकप्रभो ॥ ब्रह्मांडकोटिसविपुलविग्रहविमलजसजगविस्तरे ॥ कामधुककोटिककामदाताविश्वजितविश्वंभरे ॥ १४ ॥ ॥ कचकूपजिहिब्रह्मंडकोटिनिनियतनिषिलनिवासए ॥ सोइअमितविग्रहममउदरगतप्रेमभावप्रभासए ॥ यहचरितलोगविडंबनालगिकरतकारणहेत ॥ निगमगावतनेतिनितमनवाककायसमेत ॥ १६ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ आदिमध्यअवसान, रहितअसंभवरूपयह ॥ पूरनप्रेमप्रमान, विश्वंभरममजियवसहु ॥ २ ॥ रहतिस्वइच्छाचारि, जोयहदुस्तरसुरनिहू ॥ सोहिव्यापैनमुरारि, मायात्रिश्वनिमोहनी ॥ ३ ॥ विश्वात्मनसविशेष, रूपअलौकिकरावरो ॥ अवअद्भुतअविशेष, करियैअंतर्ध्यानक्रम ॥ ४ ॥ बालभावरघुवीर, अषिलईससोइअनुसरहु ॥ सुंदरस्यामसरीर, देवमनुजपावहिदरस ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ ॥ माताजोअभिलाषतुम । बंछितवेदाविधान ॥ सोसंपूरनअवधिवस । व्हैहैप्रगटप्रमान ॥ १७ ॥ तुमकीनौजिहिहितेतप । दंपतिवनदमिदेह ॥ मातारूपअभूतमम । देष्योनिस्संदेह ॥ १८ ॥ अंबाजोसंवादयह । करैपाठनिस्काम ॥ सोलहिहैसारूप्यता । अंतकालममनाम ॥ १९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कौशल्याहिप्रबोधकरि । बालभावअनुसार ॥ रुदनकरनलागेरहसि । नरहरकेनिस्तार ॥ २० ॥ सोसुनिआईमातसब । वंसजुवतिवानिवृंद ॥ बालकरूपनिहारिनिज । उरनिबढेआनंद ॥ २१ ॥ जुवतिनिकीनीआरती । बालकविमलवधाइ ॥ हर्षितव्हैसबलेतहैं ॥ वारंवारबलाइ ॥ २२ ॥ दईवधाईदशरथहि । दासिनिदूबवँदाइ ॥ भूपतिआनँदमग्नभौ । मृतकप्रानसेपाइ ॥ २३ ॥ समयजानिगुरुबिधिसँयुत । देवजथाबलिदीन ॥ श्राद्धनांदीमुषसहित । जातकर्मसबकीन ॥ २४ ॥ मंग

लदुंदुभिगोगगन। वाजेएकहिवार ॥ नरपुरसुरपुरनागपुर। उछवभएअपार ॥ २५ ॥ आ
नंदमग्नजुलोकयह। जुक्तिनवाहूजान ॥ एकअहोनिसिइहिसमय। निकस्योमासप्रमान ॥
२६ ॥ बासरअंतरअवधिवस। गानभएशुभगीत ॥ सांतरूपकेकयसुता। जायोपुत्रपुनीत
समयप्रसूतासुंदरी। भईसुमित्राभाम ॥ सूरसुलक्षनउभयसुत। महाधर्मकेधाम ॥ २८ ॥
करेतिनहूंकेजातकृत। जथावेदविधिजानि ॥ तबतैंदिनदिनसुषअमित। वसेअवधिपुरआ
नि ॥ २९ ॥ जबवितीतभएदिवसदस। गुरुवसिष्ठद्विजआइ ॥ देपादारघुपूजिनृप। वंदन
करेबनाइ ॥ ३० ॥ वेदप्रणीतसहोमविधि। करीजथाक्रमकाज ॥ नामकरणनिर्विघ्नभौ। सु
रसंतोषसमाज ॥ ३१ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ महिदेवनिकौंग्राम, सासनदीनेइकसहस ॥
रत्नस्वर्णअभिराम, गावबसनअनकोगनैं ॥ कौंसल्यासुतराम, कैकेयीसंभवभरत ॥ सौमि
त्रेयीसुनाम, लक्ष्मनशत्रुघनउभयसुत ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ इकदिवसकोशलसुताहि
तअतिकुंवरतनमज्जनकरे ॥ सौगंधलेपनवसनभूषनविविधअँगअँगविस्तरे ॥ पयपानदै
पीयूषपुरनसुषदपलनालैधरे ॥ तबमंदमंदझुलाइमातारामनिद्रावसकरे ॥ पुनिमातजाइ
अन्हाइमंदिरसुकृतनित्याहिअनुसरी ॥ कुलदेवदेव्याअर्चनाकरिकृतविहितपूजाकरी ॥
सुभआइजननीपाकसालारामरूपविलोकयो ॥ तहांकरतभोजनदेषिबालकभयचकितवि
स्मयभयो ॥ पुनिगईफिरिजहांपुत्रपलनामाझकीनैंसैंन ॥ तहांरामपायोसुषहिसोवतउप
जिचित्तअचैंन ॥ उरकंपरोमउभारअतिसयअसनमंदिरआइ ॥ तिहिंभांतिभोजनकरत
तिहिंठांपुत्रबहुरयौपाइ ॥ भयधरकिछतियांउपजिमनभ्रमधरतनाहिनधीर ॥ अवलोकिदु
हिठांरूपएकैंसोचसून्यसरीर ॥ जबरामव्याकुलजानिजननींदीर्घरूपदिखाइ ॥ कचकूपप्रति
ब्रह्मांडकोटिनिमंदमुषमुसकाइ ॥ रविसोमशिवविधिशक्रदिगपतिदेवदानवभूतजे ॥ योगे
शमुनिवरसिद्धचारणउदधिभूअगजगतजे ॥ अनगानितकालजुकर्मगुनगातिसकलज्ञान
सुभाइ ॥ मायाप्रबलमनवचअगोचरदेषिसंभ्रमपाइ ॥ तनपुलककंपितनयनमुद्रितभ्रमि
ताचित्तसभीत ॥ इहिंदसाजननीछुभितदेषीहसिकह्योमषमीत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहचरितमातदेष्योजुआज ॥ सर्वथागोप्यकरिवौसकाज ॥ ॥ क
विरुवाच ॥ ॥ करिमंत्रजननिसौंयहकृपाल ॥ बहुरयौंभयेअंतर्ध्यानबाल ॥ यहचरितकि
हूंजान्यौंनआन ॥ परब्रह्मप्रबलमायाप्रमान ॥ अनुसरेबाललीलाअनंत ॥ सुषदेतकुटुंब
पितमातसंत ॥ अवधूतधूरिधूसारितअंग ॥ परब्रह्मविगतमायाप्रसंग ॥ किलकारिभजत
कबहुंसकोप ॥ उरुवानिमत्तमातंगओप ॥ वससमयअन्नप्रासनविधान ॥ गुरुकह्योकर्मनें
गमनिदान ॥ हठिमातगोदलीनैंसहेत ॥ दधितंदुलमिलिमुषकवलदेत ॥ भुवक्रीडासक्त
सुचलतभाजि ॥ वदनदधिलिप्तउरकरविराज ॥ हठिष्टिदोरिजननीसहास ॥ परतधरलो
टिरोदतप्रकास ॥ पुनिलैउछंगअन्हवाइपूत ॥ यौंकरतबाललीलाअभूत ॥ बनुबालवसन
भूषनविहार ॥ हरिकरजवक्रउरमुक्तहार ॥ कचस्यामसघनवक्रितवरूथ ॥ जनुघेरिजलज
मिलिभृंगजूथ ॥ पदरुणितहेमनूपरप्रहास ॥ हठिचलनिमंदकिलकनिसहास ॥ इत्यादि
बाललीलाअपार ॥ विस्तरहिदेहिंसुषवारवार ॥ जबभयौसमयगुरराजजानि ॥ आरंभक

ल्यौसबसौजश्रानि ॥ शुभलग्नशोधिपंचांगशुद्ध ॥ पुनिहोमवेदमंत्रनिप्रबुद्ध ॥ क्रमजुक्तसु
चूडाकर्मकीन ॥ द्विजपोषतोषबहुदानदीन ॥ ब्रह्मादिश्रगोचरमनासिवानि ॥ जिहिंजोति
फिरतषोजतनजानि ॥ सोईमनुजदेहधरिब्रह्ममूल ॥ नृपश्रजिरकरतक्रीडानुकूल ॥ यौंखेलत
बालापनविहाइ ॥ श्रतिचंचलशैशवदसाश्राइ ॥ शुभस्यामगौरसुंदरसुरूप ॥ उत्तमांग
काकपक्षाश्रनूप ॥ कौपीनपट्टपरिधानकीन ॥ वनिमध्यदेशमौंजीनवीन ॥ जग्योपवीतगुरु
मंत्रजाप ॥ श्राज्ञानृपदईवसिष्ठश्राप ॥ श्रध्ययनहेतगुरुगेहश्राइ ॥ ऊंनमोसिद्धसंथासु
पाइ ॥ मनबाललगेविद्यानिमाझ ॥ संथानवजाचतभौरसांझ ॥ गुरगम्यभयेजबश्रक्षर
ज्ञान ॥ सबग्रंथपढेपूरनप्रमान ॥ जुगजुगमनिगमजिहिंस्वासजानि ॥ संथाहिलेतपट्टि
कापानि ॥ पढिक्षात्रधर्मविद्याप्रकास ॥ संग्रामसिद्धिश्रायुधश्रभ्यास ॥ जलतरनमल्लवि
द्याश्रजेव ॥ श्राषेटकर्मपौरुषश्रमेव ॥ ग्रहिचापबानकटिकसिनिषंग ॥ श्रभ्यसतमनुहुंध
न्वीश्रनंग ॥ जमदाढषडगशक्तीसजोप ॥ श्राकर्षचर्मवरवीरश्रोप ॥ श्रारूढश्रश्वविद्याश्र
पार ॥ वाजीसुज्ञानगतचितविकार ॥ वयज्ञातिसहजविद्याविलास ॥ सँगराजपुत्रषेलहिस
हास ॥ श्रनुसरहिरामनृपनीतिश्रंग ॥ समप्रीतिश्रनुजसेवतसुसंग ॥ शुभरामलषनमि
लिप्रेमसिद्ध ॥ पुनिभरथशत्रुघनपनप्रसिद्ध ॥ पितमातचित्तजिहिंमोदपाइ ॥ संक्रमतरा
मतेहीसुभाइ ॥ श्रनुसासनबंधुनिदेतश्राप ॥ यहपरमधरमनहिंलगतपाप ॥ नितसुनत
धरमशास्त्रनिनिदान ॥ पुनिप्रेमनेमसंजुतपुरान ॥ उठिप्रानपितादरसनहिंश्राइ ॥ पूज्यगु
रुद्विजनिकेलगतपाइ ॥ प्रतिदिवसजननिमंदिरसप्रेम ॥ मिलिकुंवरकरतभोजनसनेम ॥
सबसचिवसुभटकविसूरसंग ॥ पुरराजकाजपरिषदप्रसंग ॥ इहिंभांतिहोतवासरवितीत ॥
परिचारधर्मपृथ्वीसप्रीत ॥ इतिश्रीरामचंद्रजन्मसंपूर्णम् ॥ १३५ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ श्रथ सीताजन्मप्रसंग प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कालांतरनरनाथकोउ । मृगयासक्तमहीप ॥ वसत
जहांमुनिवृंदवर । गौतिहिथानसमीप ॥ १ ॥ ध्यानावस्थितमुनिहुतौ । नृपसत्कारनकी
न ॥ तातैंदुष्टसुभावजुत । मनकियक्रोधमलीन ॥ २ पठएनृपतिश्रनीतभृत । कोपश्ररु
णकृतनैंन ॥ श्रंसहमारीश्रवनिको । श्रानहुभरिजुगएन ॥ ३ ॥ पापिनमांग्योश्रंसनृप ।
सोसुनिबोलेसिद्ध ॥ काढतषष्ठाश्रंसहम । संमतवेदप्रसिद्ध ॥ ४ ॥ तहांउपद्रवकस्योतिन ।
मुनिनिमहादुषमानि ॥ रुधिरनिकास्यौदेहतैं । भरिघटदीनौंश्रानि ॥ ५ ॥ श्रग्रधस्योघ
टश्रनुचरनि । रुधिरपूरश्रघरूप ॥ ताकेदेषतमात्रतहां । भयोकालवसभूप ॥ ६ ॥ ता
हीसमयवसिष्ठतहां । श्राइमिल्योऋषिराज ॥ देष्योदुष्टाचारश्रति । श्ररुभवतव्यश्रकाज
॥ ७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ तबबोलिसचिवपुरलोकतास ॥ कहि
यौंवसिष्ठनिकसेप्रकास ॥ बलछांडिचरनलैजाहुबाल ॥ कैवंसनाशहैहैश्रकाल ॥ ॥ क
विरुवाच ॥ ॥ नृपपुत्रगएतबऋषिनिकेत ॥ मिलिसबैराजजुवतीसमेत ॥ ॥ रानी
वाक्यं ॥ ॥ सौदीनवानिव्हैकरीसेव ॥ दीयदंडश्रनुग्रहकरहुदेव ॥ मुनिश्रग्ररुधिरघट
धस्योमूल ॥ कृतदोषहरहुव्हैसानुकूल ॥ सप्रसन्नभएमुनिटस्योश्राप ॥ बहुकरतदेषिश्रबला

विलाप ॥ जबबच्यौवंसभावीविनाश ॥ अतिहर्षबालत्रीयगएअवास ॥ मुनिभएसबैमिलिमनमलीन ॥ कुंभसोइनिवेसितभूमिकीन ॥ अनमोघरुधिरहैब्रह्मअंस ॥ पुत्रिकाउपजितिहिजगप्रसंस ॥ पूरनसरीरभयौअवधिपाइ ॥ तिहिंबालसबदकीनौंसुभाइ ॥ ऋषिलयौकाढिसोघटसुरूप ॥ निकसीअजोनिकन्याअनूप ॥ कृतजातकर्ममुनिवरप्रकास ॥ शुभदेवमतिदयौनामतास ॥ तिहिंउपजिउग्रवैराग्यताम ॥ व्रतब्रह्मचर्यआचर्यौवाम ॥ आबालब्रह्मचारिनिअरेह ॥ दैवहींतिहिअर्पितकीनदेह ॥ तपसिनिसमूहमिलितपतिताप ॥ वर्षानसीतग्रीषमवियाप॥अतिकरतिकष्टयद्यपिस्वअंग ॥ स्वाभाविकसोभाबढतिसंग ॥ वनसघनसुषदआश्रमविराज ॥ शुभसंगतहांसाध्वीसमाज ॥ इकसमयतांदशशिरअभीत ॥ अतिबलीअसुरआयौअनीत ॥ तिहिंजानिअजोनिभगीताम ॥ बसभीतविवरगतभईवाम ॥ पापिष्टहारपदचिन्हपाइ ॥ सोउधस्यौविवरअपनैसुभाइ ॥ उठिरोमत्रीयाकंपितसरीर ॥ अकुलाइधरकिछतियांअधीर ॥ स्वाभावजोतिनमौप्रकास ॥ तहांदेषिअधमदशवदनतास ॥ बलकर्षिकरवोतपभंगबाल ॥ सोदुष्टअसुरषलसुरनिसाल ॥ वपुसस्त्रछेदकीनौविशेष ॥ त्रीयरुधिरपात्रपूर्यौसतेष ॥ सषिहुतीतापसीएकसाथ ॥ हठिरुधिरपात्रातेहिंदयौहाथ ॥ वेतिकासरितउपकंठवीर ॥ सजनीभुवगाडहुघटसधीर ॥ पुनिकह्योदशाननसौंप्रकास ॥ निस्सेषकरौतवबंसनास ॥ अवतारद्वितियइहिलोकआनि ॥ कुलराक्षसषेउंछांडिकानि ॥ यौंकहतमात्रतनउठीआगि ॥ ज्वालाकरालब्रह्मांडजागि ॥ भईभस्मसुक्रोधानलसुभाइ ॥ हीयसोकलोकभइहाइहाइ ॥ तिहिंरुधिरपात्रवेतिकातीर ॥ सषिभूमिगाडिराष्यौसधीर ॥ रुधिरतिहिंउपजिकन्यासुरूप ॥ अवतारजोगमायाअनूप ॥ शुभअंगसत्यलक्षनसुभाइ ॥ इहिसमयरमाअवतरीआइ ॥ क्रतुकाजजनकआरंभकीन ॥ प्रभुबोलिसकलमंत्रीप्रवीन ॥ संभारसिद्धहूवजज्ञसाज ॥ भूवशोधिपूछिद्विजवेदभाज ॥ मषकाजकरतषितिसोधमूल ॥ तहांषोदिअवनिइकपुरुषतूल ॥ मिलितहांराजरानीसमेत ॥ कनकमयजोतिहलतूनिकेत ॥ हलसीतअग्रतबअटकहोइ ॥ सहकन्यानिकस्यौपात्रसोइ ॥ भयौतहांमहाविस्मितजुभूप ॥ सोअतुलदेषिकन्यासुरूप ॥ आनंदपुहपवर्षाअकास ॥ पुनिभईगगनवानीप्रकास ॥ पोषहुविदेहपुत्रीसप्रेम ॥ निर्धारनिगमकरिसहितनेम ॥ कारनयहउपजीदेवकाज ॥ राखियेजतनमिथिलेसराज ॥ हलसीतामुषप्रगटीप्रकास ॥ तिहिंनिकस्यौसीतानामतास ॥ करिजातकर्मनानाप्रकार ॥ वाजित्रगानमंगलविथार ॥ नृपग्रेहबढीकन्याअनूप ॥ साक्ष्यातचिन्हलक्ष्मीसुरूप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दक्षप्रजापति मषविषै । भौसुरसंकरजुद्ध ॥ शस्त्रास्त्रप्रहारसौं । करतपरसपरक्रुद्ध ॥ ८ ॥ क्रोधादिकहरदक्षकहँ । सुरनिसमेतसंघारि ॥ उपजीचित्तगलानिइहाँ । दयौंपिनाकहिडारि ॥ ९ ॥ चापसुपैमिथुलेसकैं । अंगनपर्योजुआनि ॥ उठैनपुरुषअनेकहूं । मनरहैलज्जामानि ॥ १० ताहिदिनतैंवहचापतहँ । पर्यौरह्योथलपाइ ॥ सुरनरआसुरहूंसबल । ठेलिनसकैंउठाइ ॥ ११ ॥ कालांतरतहांजानकी । उपजीरूपअनूप ॥ कन्याराजाजनककैं । प्रगटरमाअनुरूप ॥ १२ ॥ सीतासतव्रतसंजुगत । हरकोधनुषनिहारि ॥ प्रतिवासरपूजतप्रतछि । मनक्र

मवचनविचारि ॥ १३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रतिदिवसधनुषश्राकर्षिपानि ॥ व
हिठामसुचौकादेतिश्रानि ॥ पुनिधारिपिनाकपूजतिसप्रेम ॥ निर्द्धारसहितयहनित्यनेम ॥
इकदिवसदेषिसोजनकश्राइ॥सीताजुचापपूजतिसुभाइ ॥ चितमहँविदेहतहांकीयविचार॥
विधिनीतधर्ममयव्यावहार ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ कन्याबलद्दिगुणितहोइकंत ॥ सं
जोगबनैसुषकहतसंत ॥ कृतनेमजनकहितकन्यकाहि ॥ ऐंचैपिनाकसोइवरैयाहि ॥ पनक
रैपूर्णमेरौपुनीत ॥ सोवरैसुषहिकन्यकासीत ॥ ५२ ॥ ॥ इतिसीताजन्मकथनसंपूर्णम् ॥

॥ अथ राजादशरथगृह मुनिविश्वामित्र आगमनम् ॥

॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ ॥ विटपसघनबनजलविमल। पुन्यतपोथलपाइ ॥ विश्वामि
त्रपवित्रमुनि। श्राश्रमकीनौश्राइ ॥ १ ॥ होततत्वउपदेशतहां। संजुतऋषिनिसमाज ॥
जपतपसंजमनियमजिय। करतजथाक्रमकाज ॥ २ ॥ तिहिंकाननअंतरवसत। महादुष्ट
मारीच ॥ सहोदरसंगसुबाहुसौं। निलजनिशाचरनीच ॥ ३ ॥ समयइकक्रतहांगाधिसुत।
क्रतुउद्यममनकीन ॥ सोधितपोथलभूमिशुभ। प्रारंभकर्यौप्रवीन ॥ ४ ॥ श्राचार्यहोता
श्रषिल। पूजिविप्रपरिचार ॥ बैठिमुखासनश्रापमुनि। सिद्धभयेसंभार ॥ ५ ॥ कुंडप्रदी
पितअगनिक्रत। विप्रनिवेदविधान ॥ मंत्रजथाविधिवेदमय। गिराप्रगटभएगान ॥ ६ ॥
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सोसुनतमात्रश्रासुरअसाध ॥ बहुनिसिचरपठएजज्ञबाध ॥ क्र
तुजथाउपद्रवश्रानिकीन ॥ वसमांसश्रोणवर्षानवीन ॥ व्हैवृष्टिपांशुउपलनिप्रहार ॥ म
षरह्योनहिनसहिजातमार ॥ वससोकभएऋषिविश्वमित्र ॥ चितभ्रमितदेषिश्रासुरचरि
त्र ॥ मुनिचलेसंगमिलिद्विजसमाज ॥ अजतनयजहांराजाधिराज ॥ श्रतिभीतश्रयो
ध्यापुरीश्राइ ॥ सोराजद्वारपहुंचैसुभाइ ॥ प्रतिहारनृपहिगुदर्यौपुनीत ॥ मुनिश्रायेवि
श्वामित्रमीत ॥ सामुव्हैश्राइदशरथनरेस ॥ परिपाइकर्योमंदिरप्रवेश ॥ तहांप्रथमप्रेम
जुतपूजपाइ ॥ शुभअर्घकीनपूजासुभाइ ॥ पटकूलदएश्रासनप्रमान ॥ निजकुशलप्रश्ण
कीनेनिदान ॥ सुतचारिचरनलाएऋषीस ॥ श्रानंदपाइदीनीअसीस ॥ पुनिएकपाइठा
ढेप्रवीन ॥ करजोरिनृपतितहांप्रणतिकीन ॥ राजोवाच ॥ ॥ पृथ्वीप्रभावपूरनपवित्र॥
मुनिकहोश्रागमनहेतमित्र ॥ ममग्रेहभयोपावनमहंत ॥ सोकहिजैकारनपरमसंत ॥
॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ अवधेससुनहुंजिहिंकाजश्राय ॥ सबभांतिसदातुममषसहाय ॥
हमकरतयज्ञनृपधर्महेत ॥ तहांदुष्टनिसाचरदुःखदेत ॥ नहींहोतयज्ञपूरननरेस ॥ बिघ्न
बहुकरतराक्षसविसेस ॥ इकमाँगतहैहमदानश्राज ॥ जसलेहुदेहुराजाधिराज ॥ ॥ रा
जोवाच ॥ ॥ तबदयौवचननिश्चयनरेस ॥ सोइधन्यतुमहिदोजेऋषेस ॥ ॥ ऋषिरु
वाच ॥ ॥ संगचलहिरामलक्ष्मणसहाइ ॥ शुभहोहियज्ञपूरनसुभाइ ॥ एराजकुंवरपठ
वहुअभीत ॥ तौहोइनासनिसचरअनीत ॥ करिश्रवनवचनजबयहनृपाल ॥ सरसेलगि
अक्षरहृदयसाल ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ राजादइश्राज्ञामंत्रीराज ॥ सबसेनकरहुचतुरं
गसाज ॥ मिलिसुभटशूरदलबलसमेत ॥ हमचलिहौविश्वामित्रहेत ॥ ऋषिरुवाच ॥
॥ ॥ मैपर्वसमयजाच्यौमहीप ॥ सोदियेबनैसुनिवंसदीप ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ कर

जोरनृपतितहाँप्रणतिकीन ॥ यहसर्वतुमहिश्राज्ञाअधीन ॥ धनदेशकोशप्रभुताप्रजंत
मनहोइसुपैलीजैमहंत ॥ संक्रम्योचतुर्थाश्रमसुभाइ ॥ अवसेषआयुकछुरह्योंआइ ॥ पु
निकरेश्रृंगिऋषिमषप्रयोग ॥ सुतभएरामकिहुंकृतसंयोग ॥ सोउकाकपक्षधारीकुमार ॥
ममआहिअंधछटिकाअधार ॥ दुस्साध्यजुद्धराक्षसदुरंत ॥ तुमत्रिकालज्ञजानतसुतंत
आकर्षमुष्टिआयुधअभ्यास ॥ प्रभुबालकहांजानहिंप्रयास ॥ क्रीडासरधनुहींकरतकेलि
मार्गणअजततृणलाषमेलि ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ विषवदनसिंघवरक्षत्रबाल ॥ लघु
करिनइतेगनियहिनृपाल ॥ विषविक्रमअनमिततेजवंत ॥ स्वाभावसिद्धएकहतसंत ॥
॥ राजोवाच ॥ ॥ हठछांडिकाजकीजैऋषेस ॥ हमचलतहिसँगसेन्याविशेष ॥ मषक
रहिपूर्णखलमारिषेत ॥ तजिशोककरहुविश्वासचेत ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥
॥ विमलदेसभुविवंसप्रगटगुरुराजवहैपुर ॥ सोसमाजसोइसाजसदापूजितसौपैसुर ॥ ह
रिश्चंद्रममवचनलागितनविक्रयकरयो ॥ अषयवचनरषयोनीचमंदिरजलभरयो ॥ वि
त्थरीयकीर्तित्रयपुरविमल, सत्यधर्म्मेतिहिपाइसिधि ॥ तिहिराजबैठिदशरथनृपति, वचन
भंगनहींवेदविधि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गाधिसुवनकेतिहिसमय। क्रोधा
रुणहगदेषि ॥ गुरुवसिष्ठअवधेससौं। विनतीकरीविशेषि ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ तपब
लविश्वामित्रके। रामसरिहैंसबकाज ॥ जयजुतजसजुतकुशलसौं। वेगिमिलहिंगेराज ॥
॥ ८ ॥ मुनिकोमनहैराममय। जानहुनियतनरेस ॥ तातेंविश्वामित्रकों। राषहुवचनविशेष
॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आज्ञामानिवसिष्ठकी। कीनौंनृपतिप्रमान ॥ भोजनभाउ
प्रभावुजुत। मुनिहिदएबहुमान ॥ १० ॥ रामलषनतहांबोलिनृप। विमलअंकबैठारि ॥
दीनैविश्वामित्रसंग। करनेजग्यसवारि ॥ ११ ॥ दीनैविश्वामित्रकैं। नृपतिलगेउठिपाइ
॥ कंठस्वासउरकंपअति। नैनरहेजलछाइ ॥ १२ ॥ गएरामतबमध्यगृह। मातहिनाय्यौ
सीस ॥ लैबलाइउरलाइतब। दीनीजयतिअसीस ॥ १३ ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि।
शिशुनिचलेलैसंग ॥ जैसैंबालकसिंघके। आगेचलतअभंग ॥ १४ ॥ सबआयुधवि
द्यासमर। दईशिशुनिद्विजदेव ॥ सस्त्रअस्त्रधारनसुकर। जुद्धजईअनजेव ॥ १५ ॥ वि
द्याबलीजुअतिबली। देवनिर्मितादोइ ॥ कछुकपंथजबअनुक्रमिय। रामहिदीनीसोइ ॥
तिहिविद्याबलजोगतें। व्यापिनछुधापिपास ॥ आगैगंगापारकीय। कौशिकपंथप्रकास
॥ १७ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ कौशिकश्रीरघुनाथसौं। कहतकथामगजात ॥ अद्भु
तसुनिसुनिहोतहैं। हर्षवंतदोउभ्रात ॥ १८ ॥ ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ ॥ सरविधिनिर्मि
तमानसिक। सिषरविषैकैलास ॥ तातेंचलीतरंगिनी। सरयूनामप्रकास ॥ १९ ॥ ताकेदक्ष
णतटविषय। वनइकरम्यविसाल ॥ भिल्लभयानकजंतुकरि। सेविततरलतमाल ॥ २० ॥
इककरूषमालवदुतिय। तहांवसतशुभदेश ॥ परमभावतेंइंद्रके। विरचितदेवविसेस ॥ २१ ॥
॥ नामसुकेतसुयक्षइक। मनअनपुत्रमलीन ॥ तादुषब्रह्माहेततिहिं। नियततपस्याकीन ॥
२२ ॥ दीनौताकहदरसविधि। कारनपूछिकृपाल ॥ कहीसुकेतअपुत्रता। सहिनजातउरसा
ल ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ विधिकह्योदेषितिहिंदुषवियाप ॥ तवपूर्वउ

पार्जितप्रबलपाप ॥ तिहिंदोषनप्राप्यतिपुत्रतोहि ॥ मनवाचजुपूछतहेतमोहि ॥ ॥ ता
डिकाउत्पत्ति ॥ ॥ पुत्रीइकव्हैहैंअवधिपाइ ॥ सोदुष्टमहापापनिसुभाइ ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ तबउपजीकन्याअधमताम ॥ निर्लाजनिठुरताडिकानाम ॥ ॥ ताडकाउवा
च ॥ ॥ करजोरिब्रह्मसौंप्रनतिकीन ॥ दारुणसुभावयक्षतादीन ॥ सुरजोनियक्षसात्विक
सुभाउ ॥ भयहोहिकुटुंबमोहिदुष्टभाउ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निर्बलविरंचिवहजानिना
रि ॥ वारणसहस्रबलदीयविचारी ॥ आश्रमअगस्त्यकैनिशाआइ ॥ सोलह्योजोगनिद्रा
सुभाइ ॥ दारुणपसारिमुषव्हैसदाप ॥ वहलगीअगस्त्यहिषानआप ॥ तपबलअगस्ति
तबलषीतास ॥ पापिनिहिंश्रापदीनौप्रकास ॥ वैकृत्यरूपविपरीतवेष ॥ राक्षसीभईसोकर्म
रेष ॥ तजिजक्षजोनिप्राणीसताप ॥ पिसितासनविग्रहमहापाप ॥ दुष्टासुउपद्रवकरतिदे
श ॥ वसुधाकरूषमालवविसेस ॥ विपरीतकर्मवासवविचारि ॥ मालवतैंकाढीतबहिमारि
॥ ताडकाउवाच ॥ वासवपहँमांग्योतिहिविसेस ॥ सुषवासथानदीजैसुरेस ॥ ॥ ऋ
षिरुवाच ॥ ॥ तबइंद्रबतायोवनजुताहि ॥ अबआजइहांतैंनिकटआहि ॥ ॥ दोहा ॥
॥ जोजनअर्धप्रमानजिहि । वनदयौइंद्रबताइ ॥ जंतुलहहुतिहिमध्यजोइ । भक्षनकरहुसु
भाइ ॥ २४ ॥ तातैंजंतुनजाततहां । कोऊकैहूंकाल ॥ महाभयानकलोकमहँ । वनताडका
विसाल ॥ २५ ॥ वहैपंथहैनिकटअब । भूमिअल्पबहुभीति ॥ तहांवसतिवहताडिका । अ
तिआसुरीअनीति ॥ २६ ॥ मारगद्वितीयसफेरमहि । नियततहांभयनांहिं ॥ करहुविचार
कुमारतुम । जिहिपथआश्रमजांहि ॥ २७॥ ॥ रामउवाच ॥ ॥ सोसुनिविश्वामित्रसौं ।
रामकहीहंसिबात ॥ तुमहिकहाद्विजराजडर । निकटपंथचलुतात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ त
बआएवनताडिका । विश्वामित्रबिचारि ॥ सभयपंथयहदाशरथि । चलियेसूरसंभारि ॥ ३० ॥
सोसुनिरामसबंधुतहँ । लीनैचापचढाइ ॥ कृतटंकारवपानिचके । सबहिनघोषसुनाइ ॥
३१ ॥ सुनतमात्रसोताडका । पंथनिरोध्योआनि ॥ घोरारवकीनौसयन । विषमभयानकवा
नि ॥ ३२ ॥ रामबानसंधानकीय । निसचयदेषीनारि ॥ कहतअवध्यजुसाधुकुल । सरमो
ष्योनसंभारि ॥ ३३ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ जानेरामससोचजब । तहांबोलेऋषिराज ॥
याकोकछुबिचारनहीं । करिवौहैसुरकाज ॥ ३४ ॥ प्रथमहुतीएकपापिनी । दीरघजिव्हानारि
॥ दैत्यविरोचनकीसुता । मारीचक्रमुरारि ॥ ३५ ॥ बहुरचौमाताशुक्रकी । दुष्टाचारनिदेष ॥
सोपैचक्रअदृष्टसौं । वामनहतीविशेष ॥ ३६ ॥ सहसमत्तगजजोरसौं । सदाकरतद्विजदोष
तातैंराघववेगियह । मारिमिलाबहुमोष ॥ ३७ ॥ सुनतमात्रसरताडिका । उरमहँहनीअसा
ध ॥ वमतरुधिरगतप्रानभई । विप्रधर्मकीबाध ॥ ३८ ॥ प्रथमापिसाचीपापिनी । श्रापद
ग्धभइभाम ॥ मुक्तारामप्रसादसौं । भइयक्षीनिजनाम ॥ ३९ ॥ श्रापविमुक्तासुंदरी । यक्षी
देहसुपाइ ॥ रामहिकीनैपरिक्रमण । पायौस्वर्गसुभाइ ॥ ४० ॥ इतिताडकावधसंपूर्णम् ॥

॥ अथ विश्वामित्रआश्रम आगमनं ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकरजनिअंतरतहां । आएसमयप्रभात ॥ चारनसिद्धप्रसिद्धसो । बन
सेवितविष्यात ॥ ४१ ॥ देषितपोवनरामतहां । उपज्योसुषअपार ॥ डोलतमानहुसिंघहै ।

जोरनृपतितहाँप्रणातिकीन ॥ यहसर्वतुमहिश्राज्ञाअधीन ॥ धनदेशकोशप्रभुताप्रजंत
मनहोइसुपैलीजैमहंत ॥ संक्रम्योचतुर्थाश्रमसुभाइ ॥ अवसेषआयुकछुरह्योंआइ ॥ पु
निकरेंशृंगिऋषिमषप्रयोग ॥ सुतभएरामकिहुंकृतसंयोग ॥ सोउकाकपक्षधारीकुमार ॥
ममआहिअंधछटिकाअधार ॥ दुस्साध्यजुद्धराक्षसदुरंत ॥ तुमत्रिकालज्ञजानतसुतंत
आकर्षमुष्टिआयुधअभ्यास ॥ प्रभुबालकहांजानहिंप्रयास ॥ क्रीडासरधनुहींकरतकेलि
मार्गणश्रजततृणलाषमेलि ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ विषवदनसिंघवरक्षत्रबाल ॥ लघु
करिनइतेगनियहिनृपाल ॥ विषविक्रमअनमिततेजवंत ॥ स्वाभावसिद्धएकहतसंत ॥
॥ राजोवाच ॥ ॥ हठछांडिकाजकीजैऋषेस ॥ हमचलतहिसँगसेन्याविशेष ॥ मषक
रहिपूर्णखलमारिषेत ॥ ताजिशोककरहुविश्वासचेत ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥
॥ विमलदेसभुविवंसप्रगटगुरुराजवहैपुर ॥ सोसमाजसोइसाजसदापूजितसौंपेसुर ॥ ह
रिश्चंद्रममवचनलागितनविक्रयकरयौ ॥ अषयवचनरष्षयोनीचमंदिरजलभरयौ ॥ वि
त्थरीयकीर्तित्रयपुरविमल, सत्यधर्म्मतिहिपाइसिधि ॥ तिहिराजबैठिदशरथनृपति, वचन
भंगनहींवेदविधि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गाधिसुवनकेतिहिसमय। क्रोधा
रुणहृगदेषि ॥ गुरुवसिष्ठअवधेससौं । विनतीकरीविशेषि ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ तपब
लविश्वामित्रके। रामसरिहैंसबकाज ॥ जयजुतजसजुतकुशलसौं । वेगिमिलहिंगेराज ॥
॥ ८ ॥ मुनिकोमनहैराममय । जानहुनियतनरेस ॥ तातेंविश्वामित्रकों । राषहुवचनविशेष
॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आज्ञामानिवसिष्ठकी । कीनौंनृपतिप्रमान ॥ भोजनभाउ
प्रभावुजुत। मुनिहिदएबहुमान ॥ १० ॥ रामलषनतहांबोलिनृप । विमलअंकबैठारि ॥
दीनैविश्वामित्रसंग । करनेजग्यसवारि ॥ ११ ॥ दीनैविश्वामित्रकें । नृपतिलगेउठिपाइ
॥ कंठस्वासउरकंपअति । नैनरहेजलछाइ ॥ १२ ॥ गएरामतबमध्यगृह । मातहिनायौ
सीस ॥ लैबलाइउरलाइतब । दीनीजयतिअसीस ॥ १३ ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि ।
शिशुनिचलेलैसंग ॥ जैसैंबालकसिंघके । आगेचलतअभंग ॥ १४ ॥ सबआयुधवि
द्यासमर । दईशिशुनिद्विजदेव ॥ सस्त्रअस्त्रधारनसुकर । जुद्धजईअनजेव ॥ १५ ॥ वि
द्याबलीजुअतिबली । दैवनिर्मितादोइ ॥ कछुकपंथजबअनुक्रमिय । रामहिदीनीसोइ ॥
तिहिविद्याबलजोगतें । व्यापिनछुधापिपास ॥ आगेगंगापारकीय । कौशिकपंथप्रकास
॥ १७ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ कौशिकश्रीरघुनाथसौं । कहतकथामगजात ॥ अद्भु
तसुनिसुनिहोतहैं। हर्षवंतदोउभ्रात ॥ १८ ॥ ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ ॥ सरविधिनिर्मि
तमानसिक । सिषरविषैकैलास ॥ तातैंचलीतरंगिनी । सरयूनामप्रकास ॥ १९ ॥ ताकेदक्ष
णतटविषय । वनइकरम्यविसाल ॥ भिल्लभयानकजंतुकरि । सेविततरलतमाल ॥ २० ॥
इककरूषमालवदुतिय । तहांवसतशुभदेश ॥ परमभावतेंइंद्रके । विरचितदैवविसेस ॥ २१ ॥
॥ नामसुकेतसुयक्षइक । मनअनपुत्रमलीन ॥ तादुषब्रह्माहेततिहिं । नियततपस्याकीन ॥
२२ ॥ दीनौताकहदरसविधि। कारनपूछिकृपाल ॥ कहीसुकेतअपुत्रता । सहिनजाततउरसा
ल ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ विधिकह्योदेषितिहिंदुषवियाप ॥ तवपूर्वउ

पार्जितप्रबलपाप ॥ तिहिंदोषनप्राप्यतिपुत्रतोहि ॥ मनवाचजुपूछतहेतमोहि ॥ ॥ ताडिकाउत्पत्ति ॥ ॥ पुत्रीइकव्हैहैंअवधिपाइ ॥ सोदुष्टमहापापनिसुभाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबउपजीकन्याअधमताम ॥ निर्लजनिठुरताडिकानाम ॥ ॥ ताडकाउवाच ॥ ॥ करजोरिब्रह्मसौंप्रनतिकीन ॥ दारुणसुभावयक्षतादीन ॥ सुरजोनियक्षसात्विकसुभाउ ॥ भयहोहिकुटुंबमोहिदुष्टभाउ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निर्बलविरंचिवहजानिनारि ॥ वारणसहस्त्रबलदीयविचारी ॥ आश्रमअगस्त्यकैनिशाआइ ॥ सोलह्योजोगनिद्रासुभाइ ॥ दारुणपसारिमुषव्हैसदाप ॥ वहलगीअगस्त्यहिषानआप ॥ तपबलअगस्तितबलषीतास ॥ पापिनिहिश्रापदीनौंप्रकास ॥ वैकृत्यरूपविपरीतवेष ॥ राक्षसीभईसोकर्मरेष ॥ तजिजक्षजोनिप्राणीसताप ॥ पिसितासनविग्रहमहापाप ॥ दुष्टासुउपद्रवकरतिदेश ॥ वसुधाकरूषमालवविसेस ॥ विपरीतकर्मवासवविचारि ॥ मालवतैंकाढीतवहिमारि ॥ ताडकाउवाच ॥ वासवपहँमांग्योतिहिविसेस ॥ सुषवासथानदीजैसुरेस ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ तबइंद्रबतायोवनजुताहि ॥ अबआजइहांतेंनिकटआहि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जोजनअर्धप्रमानजिहि । वनदयौइंद्रबताइ ॥ जंतुलहहुतिहिमध्यजोइ । भक्षनकरहुसुभाइ ॥ २४ ॥ तातैंजंतुनजाततहां । कोऊकेहूंकाल ॥ महाभयानकलोकमहँ । वनताडकाविसाल ॥ २५ ॥ वहेपंथहेंनिकटअब । भूमिअल्पबहुभीति ॥ तहांवसतिवहताडिका । अतिआसुरीअनीति ॥ २६ ॥ मारगद्वितीयसफेरमहि । नियततहांभयनांहिं ॥ करहुविचारकुमारतुम । जिहिपथआश्रमजांहि ॥ २७ ॥ ॥ रामउवाच ॥ ॥ सोसुनिविश्वामित्रसौं । रामकहींहंसिबात ॥ तुमहिकहाद्विजराजडर । निकटपंथचलुतात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबआएबनताडिका । विश्वामित्रबिचारि ॥ सभयपंथयहदाशरथि । चलियेसूरसंभारि ॥ ३० ॥ सोसुनिरामसबंधुतहँ । लीनैचापचढाइ ॥ कृतटंकारवपानिचके । सबहिनघोषसुनाइ ॥ ३१ ॥ सुनतमात्रसोताडका । पंथनिरोध्योआनि ॥ घोरारवकीनौसयन । विषमभयानकवानि ॥ ३२ ॥ रामबानसंधानकीय । निसचयदेषीनारि ॥ कहतअवध्यजुसाधुकुल । सरमोष्योनसंभारि ॥ ३३ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ जानेरामससोचजब । तहांबोलेऋषिराज ॥ याकोकछुबिचारनहीं । करिवौहेसुरकाज ॥ ३४ ॥ प्रथमहुतीएकपापिनी । दीरघजिव्हानारि ॥ दैत्यविरोचनकीसुता । मारीचक्रमुरारि ॥ ३५ ॥ बहुरयोंमाताशुक्रकी । दुष्टाचारनिदेष ॥ सोपैचक्रअदष्टसौं । वामनहतीविशेष ॥ ३६ ॥ सहसमत्तगजजोरसौं । सदाकरतद्विजदोष तातेंराघववेगियह । मारिमिलाबहुमोष ॥ ३७ ॥ सुनतमात्रसरताडिका । उरमहँहनीअसाध ॥ वमतरुधिरगतप्रानभई । विप्रधर्मकीबाध ॥ ३८ ॥ प्रथमापिसाचीपापिनी । श्रापदग्धभइभाम ॥ मुक्तारामप्रसादसौं । भइयक्षीनिजनाम ॥ ३९ ॥ श्रापविमुक्तासुंदरी । यक्षीदेहसुपाइ ॥ रामहिकीनैपरिक्रमण । पायौस्वर्गसुभाइ ॥ ४० ॥ इतिताडकावधसंपूर्णम् ॥

॥ अथ विश्वामित्रआश्रम आगमनं ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकरजनिअंतरतहां । आएसमयप्रभात ॥ चारनसिद्धप्रसिद्धसो । बनसेवितविष्यात ॥ ४१ ॥ देषितपोवनरामतहां । उपज्योसुष्षअपार ॥ डोलतमानहुसिंघद्वै ।

क्रीडतराजकुमार ॥ ४२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मुषकमलकमलदलनेत्रमान ॥ सायुध सकोपभएसावधान ॥ विस्तीर्णवक्षकंधरविशाल ॥ आजानभुजाउत्तंगभाल ॥ द्वात्रिंश तलक्षनजुक्तदेह ॥ सुभपुरुषसिंघसादरसनेह ॥ कोदंडबानकरकटिनिषंग ॥ मनुभएउ भयअंगीअनंग ॥ चषअरुनस्यामघनतनविशाल ॥ पटपीतकसेकटितटसुढाल ॥ बीरासनबैठेउभयवीर ॥ सायधसकोपउच्छवसधीर ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ ऋषिराज सरिसतवकह्योराम ॥ करियेद्विजयज्ञारंभकाम ॥ सबआचारजहोतासुतंत्र ॥ मुनिकरहु वेदउच्चारमंत्र ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ समसांतरूपकौशिकसुभाइ ॥ बिचिबैठेश्रेष्ठासनबनाइ ॥ सप्तत्रकसहस्त्रऋत्विजसमान ॥ जेनिपुनवेदविद्याविधान ॥ प्रारंभयज्ञतबअभयपाइ ॥ सजिचापबानरघुवरसहाइ ॥ कृतवेदोध्वनिमध्यान्हकाल ॥ जाजुल्यकुंडउठिअनलज्वाल ॥ द्विजदेतमंत्रआहूतिदान ॥ निर्घोषभईधुनिसामगान ॥ दिगरहेपूरि तहांवेदनाद ॥ मारीचसुन्योसोअप्रमाद ॥ मिलिअनुजसंगआसुरसमाज ॥ मारीचकरतभौंकृतअकाज ॥ तहांआस्थिरुधिरवर्षासिहोत ॥ तमप्रसरिगगनटरिरविउदोत ॥ बिनुभल्लरामसंधानबान ॥ तिहिंकस्योमोषआकर्णतान ॥ मारीचबातसरपंषमारि ॥ आमितअकासभूल्योसंभारि ॥ मेल्योशतजोजनउदधिमांझ ॥ सोविव्हलसूझिनभौरसांझ ॥ सरअनलद्वितीयमास्योसुबाहु ॥ भयोभस्मइंद्रअमरनिउच्छाहु ॥ सबलषनसेषनिसचर संघारि ॥ निस्सेषकरेरणषेतमारि ॥ आकासछयोसुररथनआइ ॥ शुभभईपुहुपबर्षासुभाइ ॥ निर्घोषदुंदुभिगगननाद ॥ वदिसिद्धसुचारनजयतिबाद ॥ निसदिवससप्तरहि सावधान ॥ एकासनसाधेधनुषबान ॥ वयसप्तवर्षरघुवीरवीर ॥ संघारअसुरकीनोसधीर ॥ मषभयेतहांपूरनसमूल ॥ सुनिअसुरउरनिबढिपरमसूल ॥ उठिरामलषनसरिता अन्हाइ ॥ सबनित्यकर्मकीनेसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौशिकभक्तिप्रभावकी । महिमा बरनिनजाइ ॥ यज्ञपुरुषनरदेहग्रह । भोजनकरतसुभाइ ॥ ४४ ॥ त्रितीयदिवसकरजोरिकहि । ऋषिवरसौंरघुनाथ ॥ आज्ञादीजेअवधिकहँ । गवनकरहिअबनाथ ॥ ४५ ॥ कौशिकतबरघुवीरसौं । जाच्यौसहितसनेहु ॥ कछुदिनदिनकरकुलतिलक । दुर्लभदरसन देहु ॥ ४६ प्रेमजुक्तरघुनाथतहां । रहेकमलदलनैन ॥ राजनीतिमतधर्मयुत । सुनतबढ ताचितचैन ॥ ४७ ॥ ॥ अथजनकधनुषयज्ञारंभ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तिहिसमयसोधिशुभलग्नताम ॥ कीयधनुषजज्ञउद्यमसकाम ॥ आरंभस्वयंवररचिउच्छाहु ॥ बोलेनरेंद्रआजानबाहु ॥ सबबोलितहांमुनिवरसमाज ॥ कृतविविधमंचतहँनृपाति काज ॥ दानवजुदैत्यराक्षसदुरंत ॥ सबआइदेवद्वेषीअसंत ॥ पुनिमनुजवीरराजाअपार ॥ मिलिमहासूरसुंदरकुमार ॥ इत्यादिआइभुवपतिअनेक ॥ विवसायजुक्तविक्रमविवेक ॥ अतिदुष्टदसाननआइआप ॥ दुस्साध्यबाणआयोसुदाप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पत्रीविश्वामित्रकहँ । पठईजनकनरेस ॥ धनुषयज्ञआरंभइहां । पाउंधारुऋषिईस ॥ ४८ ॥ कौशिकतबश्रीरामसौं । पूछयौसहितसनेह ॥ धनुषयज्ञकौतुकचलहि । देषहिग्रेहविदेह ॥ ४९ ॥ गुरुआज्ञारघुनाथतहां । पौरुषकरीप्रमान ॥ उषासमयअतिहर्षसौं । कीनौप्रगटप्रयान ५०

॥ धनुषयज्ञमिथिलापुरप्रतिगमन ॥ ॥ अहल्यापूर्वप्रसंग ॥ ॥ छंदवे ताल ॥ ॥ तबआइकौशिकसुरसरीतटबिमलथलजुविशेषयौ ॥ तरलतामंजरपुहप फलजुतरहितजनअवरेषयौ ॥ त्रिणगुल्मपल्लवविपुलसंकुलगौतमस्याश्रमगनै ॥ वनजं तुवर्जितपक्षिमृगगनभृंगपुंजनगुंजनै ॥ ॥ रामउवाच ॥ ॥ तिहिंदेषिश्रीरघुनाथ विस्मितबचनकौशिकसौकह्यौ ॥ यहपुन्यजलतटविमलपावनथलसुनिर्जनक्यौरह्यौ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ पुनिकह्योकौशिकसुनहुरघुवरपुरावृत्तजुमैसुनै ॥ भवतव्यदैवीप्र बलमायानियतनिगमागमगुनै ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजसुताइकसुंदरी । नामअ हल्यातास ॥ ताकेलक्षनरूपगुन । तीनहुंलोकप्रकास ॥ ५१ ॥ ताकोनारदइंद्रपहँ । दर्ण नकस्योविशेष ॥ सोसुनिसुरपतिकोंभयो । श्रुतअनुरागअसेष ॥ ५२ ॥ द्विजइकगोतम सूपद्यौ । विद्यावेदविलास ॥ देतभयोगुरुदक्षना । सुनिमुनिनव्योसहास ॥ ५३ ॥ ॥ गु रुरुवाच ॥ ॥ दीनीविद्याधर्ममैं । ताकोकछुनलेत ॥ पुत्रचलहुगृहआपनै । शुभकल्या नसमेत ॥ ५४ ॥ ॥ शिष्यउवाच ॥ ॥ शिष्यकह्योऋषिराजसौं । मनक्रमबुद्धिसमोइ ॥ धर्म्महिविद्याजोपढै । ताकीसिद्धिनहोइ ॥ ५५ ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ आग्रहदेष्योशि ष्यकै । मुनिमाग्योहितमानि ॥ आहिअहिल्यानृपसुता । देहुदक्षनाआनि ॥ ५६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ शिष्यगयौसोनृपतिपह । कीयजाचन्याआइ ॥ दीजैकन्यादानहं । गुरुहितमागतराइ ॥ ५७ ॥ तेहीसमयसुरेसतहां । आइअहल्याहेत ॥ पुत्रीमांगीनृपति पहँ । मनक्रमवचनसमेत ॥ ५८ ॥ द्विजकोजान्योश्रापडर । इंद्रमहाभयआहि ॥ दोऊ वातदुरंतअति । रह्योनृपतिचकिचाहि ॥ ५९ ॥ ॥ नृपउवाच ॥ ॥ कीयनिर्द्धारवि चारकरि । दुहूनिउत्तरदेइ ॥ करैजुपृथ्वीपरिक्रमण । सुषैअहिल्यालेइ ॥ ६० ॥ भूमंडल करिपरिभ्रमण । पहिलैआवहिकोइ ॥ द्विजअथवादेवेशमहं । कन्यापावैसोइ ॥ ६१ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कस्योप्रमानजुबचनकौ । उठिगवनेअकुलाइ ॥ उभयमुषीसुरभी जुइक । प्रसवसमयद्विजपाइ ॥ ६२ ॥ दीनीताहिप्रदछना । विप्रसहितविश्वास ॥ सिद्धि काजभएनृपतिसौं । प्रथमहिमिल्योप्रकास ॥ ६३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ऐरावतआरु हइंद्रआइ ॥ सोमिल्योनृपहिसात्विकसुभाइ ॥ तहांवहैआनिदेष्योद्विजात ॥ संभ्रम्योच त्तनहींदुषसमात ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ उच्चस्योइंद्रयहअप्रमान ॥ ऐरावततेंकोसजब आन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कियविदाविदुषनिर्द्धारकीन ॥ पदचिन्हजाइदेषहुप्रवीन ॥ जबदेष्योतिनभूगोलजाइ ॥ पदचिन्हविप्रगजअग्रपाइ ॥ तिनआइजथाविधिधर्मतंत ॥ विस्तारसहितसबकहिवृतंत ॥ तबगएसबैब्रह्मानिकेत ॥ सोकहीवातकारनसमेत ॥१००॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ विप्रसौइंद्रउपज्योविवाद ॥ मिथ्यानहोइवेदनिमृजाद ॥ परिवेषउभय मुषिगोप्रमान ॥ सोसत्यभुमंडलकेसमान ॥ नैगमविचारविधिकहिनिदान ॥ द्विजदेहुजाइ कन्यासुदान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ द्विजताहिअहल्यादानदीन ॥ कन्याविवाहगौत महिकीन ॥ लैगएव्याहिगौतमस्वग्रेह ॥ नितबढतअमितदंपतिसनेह ॥ पुन्यप्रभावगात मप्रकास ॥ तहांसतानंदभौपुत्रतास ॥ सुंदरीपाइनाहिनसुरेस ॥ पूर्वानुरागहोउरप्रवेश ॥

मानसिकविथाउपजीअमान ॥ अहल्याविनुआवैचितनआन ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ सु
रराजकहीससिसौंसमूल ॥ करियैसहायव्हैसानुकूल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इकनिसा
गोतमाश्रमहिआनि ॥ ठगकर्मकस्योदुहुंकपटवानि ॥ विधुताम्रचूडवानीविष्यात ॥ परगा
सकरीज्यौंकरतप्रात ॥ सोसुनतउठ्योगोतमसुभाइ ॥ आन्हिकहेतजलतीरआइ ॥ ऋषि
रूपकस्योतबदेवराज ॥ कीनोप्रवेसमुनिगृहअकाज ॥ गौतमबिचारितहंनक्षत्रज्ञान ॥ जि
यभईकछूविपरीतजान ॥ पुनिआनिकस्योमंदिरप्रवेस ॥ अपनैसुरूपदेष्यौसुरेस ॥ ॥
॥ गोतमउवाच ॥ पापिष्टकवनतूंप्रगटिपाप ॥ सबकरौंभस्मकैंदेउंश्राप ॥ सारूप्यदेह
मेरोसुभाइ ॥ अनसमयअधर्मद्विजगेहआइ ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ भामिनीचौरबो
ल्योसभीत ॥ हुंइंद्रकामकिंकरअनीत ॥ मैदुष्टकर्मआचस्योदेव ॥ अबत्राहित्राहिअघ
कुलअजेव ॥ ॥ गोतमउवाच ॥ ॥ मुनिभयोतहांक्रोधायमान ॥ दारुणसरापदीनौनि
दान ॥ आकारलुब्धजिहिभौअधीर ॥ सोचिन्हसहसहोइतवसरीर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
दशसतजुभइतहांजोनिदेह ॥ आकृतिअसभ्यफलकर्मएह ॥ भगवानइंद्रभयौगयौ
भाजि ॥ कीनौंकुकर्मजिहिंअंगकाजि ॥ अतित्रासत्रीयाकंपितअधीर ॥ रोमांचदेहदृगश्र
वतनीर ॥ इहिंदसाअहिल्यालषीआप ॥ सक्रोधदयौगोतमसराप ॥ ॥ गोतमउवाच ॥
पापिनीउपलमयदेहपाइ ॥ सिलहोहिइहांवर्जितसहाइ ॥ अनजंतुअजनवनरहहुएह॥सब
कालसून्यभयनिसंदेह ॥इकसहसवर्षसहिकष्टअंग ॥ अतिसीततापवर्षाअभंग ॥ दिनकर
नबंसरघुपतिदिनेस ॥ पथजातकरहिंइहिवनप्रवेस॥ अषिलेसछुवहिशिलचरनआइ ॥ शु
भदेहफेरिपावहिसुभाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दारुणसरापभइसिलादेह ॥ सोचलेप्रानछूटे
सनेह ॥ अन्यत्रवसेऋषिजाइआप ॥ शिलभईत्रियाभुक्तेजुशाप ॥ ॥ विश्वामित्रउ
वाच ॥ ॥ अषिलेसछुवहुअबचरनअंग ॥ सोतजैअहल्याउपलसंग ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ यौसुनतअधोगतकेउधार ॥ पदपरसकस्योलीलाअपार ॥ सोभईत्रियात
जिपापशुद्ध ॥ परतक्षअग्रठाढीप्रबुद्ध ॥ निजरूपकह्योगोतमसनेम ॥ प्रतिमासोइदेषीस
हितप्रेम ॥ १३६ ॥ ॥ अहिल्याउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ नीलजलदतनस्याम
मंदमुखहासविलासित ॥ वसनपीतकौसेयकनककुंडलमकराकृत ॥ उरविसालउत्तंगभा
ललोचनकमलाइत ॥ कटिनिषंगकरधनुर्बानभुजजानुप्रलंबित ॥ सप्रसन्नवदनसानु
जसदय, श्रीयसेवितअसरनसरन ॥ अवलोकिअहिल्याउच्चरीय, हरित्रिलोकसंकटहर
न ॥ १ ॥ जिहिंपदरजपावनप्रसिद्धबंछितविरंचिवर ॥ जिहिंपदरजपावनप्रसिद्धहितप
रमइच्छाहर ॥ जिहिंपदरजपावनप्रसिद्धइंद्रादिउपासत ॥ जिहिंपदरजदरसनउपायभ
वसिद्धअभ्यासत ॥ अपकर्मभोगभुगवतिअखिल, पतिसरापशिलभुवपरिय ॥ तिहिंरज
प्रसिद्धपावनपरसि, हूंअधगामिनिउद्धरिय ॥ २ ॥ जिहिंहरिपदपंकजप्रसंगगंगापुनीत
गति ॥ जिहिंजलमंजनउर्द्धलोकपापिष्टहुपावति ॥ जिहिंहरिनिजनाभिसरोजब्रह्माउतप
तीय ॥ जिहिपदपंकजरजपुनीतषोजतश्रुतिषंतीय ॥ तेइराममनुजविग्रहअतुल, भवममद्ध
गगोचरभए ॥ तिहिंभाग्यमोरमहिमाअमित, जिहिंअनेकसुकृतीजए ॥ ३ ॥ जिहिंना

मामृतसाररसिकजनउरमहधारे ॥ जिहिंअवतारचरित्रविचित्रसुरलोकविहारे ॥ सुरमु
निनारदसेषसिद्धसनकादिसुगावत ॥ प्रतिदिनजसनवनवप्रकारतऊओरनआवत ॥ धरि
मनुजदेहधरनीधरन, मुहिहितइहिंपदचारमहि ॥मिलिउग्रपुराकृतकर्ममम,करिवंदनमुनि
नारिकहि ॥ ४ ॥ सोइयहपुरुषपुरानपरमआतमपरमेश्वर ॥ स्वयंजोततनसृजतलोकली
लाविमोहकर ॥ आपएकअन्नेकरूपमायाप्रतिबिंबित ॥ विधिभवविष्णुहिनामभेदतेइहोत
विश्वहित ॥ विग्रहस्वतंत्रदरसतविपुल, पदपंकजश्रियउरपरस ॥ आक्रमितजेनएकेनइ
ल, ऋषितेइध्यावतजोगरस ॥ ५ ॥ रामजगतत्वंआदिभूतजीवनिजगताश्रय ॥ सर्वप्रा
णआसक्तएकभासतअनेकमय ॥ ऊँकारअपाररामत्वंवचनअगोचर॥बाचकबचननिभेद
जगतमयत्वंजगदीश्वर ॥ कृतकारणकारिजकर्तत्वं, तिहिंफलसाधनभेदभव॥त्वंरामएकभा
सितअषिल, तनमायाअन्नेकतव ॥ ६ ॥ तवमायामोहितजुबुद्धितवतत्वनजानत ॥ हेमा
यनपरमीशमूढतोहिमानुषमानत॥ज्यौंआकासअग्राहबिमलभासतबहिरंतर ॥ अचलअ
संगतनित्यशुद्धबुद्धसबसमसर ॥ जोषितामूढअज्ञानजुत, हुंनवतत्वजानतहरे ॥ तसमात
रामतुवचरनाचित, कोटिकोटिवंदनकरे ॥७॥ तवनमामिपुरुषेसभगतवछलभयहंता ॥ श्री
नारायणऋषीकेशअनवद्यअनंता ॥ यत्रतत्रदेवाधिदेवअहमपिउतपत्तीय ॥ तवपदपंकज
भगतिनियमजुतहोहुसुनित्तिय ॥ सुरसेव्यसदाअसरनसरन, अधमउधारनअद्वितीय ॥
देवेशदीनबंधूसदय, पावनपतितअनाथप्रिय ॥ ८ ॥ भवभयनाशनएकभूपरविकोटिप्र
काशं ॥ करधृतशरकोदंडनीलघनआभाभासं ॥ कनकरुचिरपटपीतरतनमनिकुंडलराजि
त ॥ अमलकमलदलनेत्रबाहुआजानुविराजित ॥ सानुजसहायरघुवीरसोइ, अस्मदेहत्रि
यउद्धरीय ॥ मिलिप्रेमअहल्यागोतमहिं, कहिस्तोत्रबंदनकरीय ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥
यहजुअहल्याकृतस्तोत्रजोपढैभक्तिजुत ॥ महापापतिहिंमुचहिमुक्तिसायुज्यशुद्धमत ॥
हृदयनिवेसितरामपुत्रकामनाप्रकासै॥ संबच्छरफलसिद्धिहोइवंध्यत्वविनासै ॥ सुषलाभम
नोरथफलहिसब, ताकेरामप्रभावतहाँ ॥ ततकालदेतदरसनतिनहि, जोइसुमिरतजिहिहे
तजहां ॥ १० ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ ॥ ब्रह्मघातगुरुतल्पगामतेयीसुरापप्रीय ॥
मातभ्रातपितबालमारजिहिंकामविकलजीय ॥ स्वामिद्रोहविश्वासहिंसपथहतकपापपर ॥
गोत्रीयमारकुदानग्राहदवदारुकुकृतकर ॥ नितयहस्तोत्रजपिहैंनियम, सोपरलोकहिसा
धिहै ॥ पुनितासकहाकहिबोप्रगट, आचारीआराधिहै ॥ ११ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिं
प्रकारकोशलकुमाररिषिनारिउधारीय ॥ इंद्रदोषपतिश्रापरोषशिलदेहसुधारीय ॥ पावन
पदरजपरसिपापपरहरपुनीतभय ॥ सुमनिवरषिसुरगगनवानिजसगावतजयजय ॥ जि
हिंचरनसरननरहरसुकवि, ग्रहिभवबंधनछेदगनि ॥सोइरामकरनकारनसमर्थ,महाबाहुअ
वतारमनि ॥ १२ ॥ इतिअहल्योद्धरणं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गौतमआश्रमतैंगमन । कौशि
ककखौसकाम ॥ प्रीतसहितमिथिलापुरी । सानुजसँगरघुराम ॥ १ ॥ श्रीरघुनाथहिजेस
गुन । भएनगरपरवेस ॥ तिनकेप्रगटप्रभावकहँ । कहिनसकतसुरसेस ॥ २ ॥ जबहिसुन्यौ
राजाजनक । आगमविश्वामित्र ॥ सादरआएसामुहैं । पाइनलगेपवित्र ॥ ३ ॥ ॥छ॥

॥ अथ मिथिला आगमन ॥

॥ दोहा ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ पूछेंजनकनरेसतहां। मुनिवरविश्वामित्र ॥ को एदेषतबालवय। पूरनपुरुषपवित्र ॥ ४ ॥ ॥ कौशिकउवाच ॥ ॥ बोलेविश्वामित्र तब। सुनियैमैथिलराज ॥ एसुतदशरथनृपतिके। मैंआनेमषकाज ॥ ५ ॥ इनहीमारी ताडका। पंथपापिनीवाम ॥ तातेंआगमभौतबाहि। सिद्धासुरनकेकाम ॥ ६ ॥ पुनिमम आश्रमहेतमष। मार्‍यौसबलसुबाहु ॥ विनफलसरमारीचमुनि। दयौउडाइसुदाहु ॥ ७॥ आवतऋषित्रीयउद्धरी। परसतपदरजराम ॥ पतिकहमिलीअपापव्है। निगमसाषिशुभ नाम॥८॥ बचनजुविश्वामित्रमुनि। कहेनृपहिसुषकंद॥ सुनतलगेपीयूषसम। उरउपजआे नंद॥९॥ ॥कविरुवाच॥ ॥जथाधर्मविधिवेदजुत। पूजाकरीसप्रेम॥ भोजनभावजुभ क्तिसौं।नितनवहोतसनेम॥१०॥ समयपाइसानुजसुषद। देषननगरनरेस ॥ कौशिकआ ज्ञापाइप्रभु,पत्तनकर्‍यौप्रवेश॥११॥ पीतवसनतनस्यामघन। भुजआजानुविशाल॥ शर धनुपानिनिषंगकटि। बोलतबचनरसाल ॥१२॥ जहांरामरविवंसरवि। निकसतबिजित मनोज ॥ तहांतहांपुरनारिके। उरविकसितअंभोज ॥ १३ ॥॥ छंदपधरी॥॥ शिशुमि लतआनिअन्नेकसाथ ॥ शुभदर्सकरतषेलतसनाथ॥ सरवरसकूपवापीसुथान ॥ सुषछांह लतातरवरसमान ॥ अन्नेकवागरचनाअशेष ॥ बरबीररामदेषतविशेष ॥ तबआइकुसु मवाटिकातीर ॥ शुभछांहश्रमितबैठेसधीर ॥ तरलतातरलसंकुलतमाल ॥ नानानिकुंज बैठकविसाल ॥ अनअनविहंगकूजतिअनेक ॥ वित्थरहिविविधिवानीविवेक ॥ मिलिमद नमत्ततंडवितमोर ॥ साषानिसाषकलकंठसोर ॥ अन्नेकरंगआकृतिआराम ॥ तरलताकु सुमभरनमितताम ॥ रसलुब्धसुमनमंजररसाल ॥ मकरंदमत्तमिलिभ्रमरमाल॥ चहुंओ रमधुपगुंजारचोप ॥ प्रतिपत्रनिउलहतअरुणकोप ॥ रसरूपस्वादअन्नेकरंग ॥ फलभार नमितसाषाउतंग ॥ बिचबागसरोवरबनिविशाल॥ जलविमलप्रफुल्लितकमलजाल ॥ म णिमयमजादसोपानमूल ॥ कलहंसकोकगनसानुकूल ॥ तिहिंसरसमीपशुभकेतसंग ॥ गौरीदेवालयअतिउतंग ॥ ॥ छंदवेताल॥ ॥ तहांजननिआज्ञापाइसीयतबगौरिपूज नकहँचली ॥ संगवैसवंसाविचित्रतासमआनिआनिमिलिअली ॥ तिहिंवाटिकासररसलि लसषिसबविविधिविधिमज्जनकरे ॥ पदधौतपरमपवित्रसीयपुनिअंगअद्भुतआवरे ॥ अ स्यरसकीयप्रासादप्रविसनधूपदीपककरधरे ॥ नैवेद्यपूजाकरीनिगमध्यानगौरीउरधरे॥ अ नुरूपअपनेवंसवयवरकाजजाचन्याकरी ॥ परदक्षनादेपरमहितचितपूजिदेवीपांपरी ॥ त हांनित्यनेमसप्रेमसीताकरिप्रनामअनेक ॥ मिलिअलीसंकुलनिकसिमठतेबढीलाजविवे क ॥ सखिएकदेषतिकुसुमसोभादोषिवनरघुवीर ॥ पुनिआइआतुरजानकीपहँअतिहिप्रेम अधीर ॥ ॥ सखिउवाच ॥ ॥ तिहिंकह्योराजकुमारसुंदरस्यामगौरसुरूप ॥ इहिबाग हैहूदेषिआइपुरुषसिंघअनूप ॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ सबसषीसुनिलैगईसीताहिहर्षजुत तिहिंकुंज ॥ जहाँरामलछमनबनहिविहरतपरमसोभापुंज ॥ तहांआनिदेषेस्यामसुंदररा मराजीवनैन ॥ आनंदउरनसमातअतिसयवरनजातनवैन ॥ कोउकहतिसपीएपुरुषपूर

नदेहधरैदयाल ॥ मिथिलेसकेकोउकृतपुरातनविमलफलेविसाल ॥ कोउकहतभएअनंग
अंगीद्विधासुंदरदेह ॥ नहींटरतसोभानिरषिनियतसुनैनउरझेनेह ॥ इहिंभांतितर्कअनेक
अद्भुतरजातिउपमासार ॥ बुद्धिबलकरिसिंधुशोभानहिंनपावतपार ॥ अलिओटनिरखे
जानकीरघुवंसराजकुमार ॥ अनमोघचक्षूरागउपज्योअग्रकृतअनुसार ॥ जोगमायामैथि
लीअरुरामब्रह्मअनादि ॥ विधिलेषजोगप्रयोगसबबनिअंकटरहिनआदि ॥ ॥ दोहा ॥
॥ सषीउवाच ॥ ॥ एकसषीऔसेंकह्यो। सबनिसुनाइप्रकार ॥ एसुतदशरथनृपतिके।
कोशिकमषरषवार ॥ १४ ॥ इनहिंअहल्याउद्धरी। सतानंदकीमात ॥ आएविश्वामित्रसं
ग। सुनीनगरविष्यात ॥ १५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नारदवचनसंभारिसिय। पुनिपुनि
चितइसप्रेम ॥ लज्जाभयसजनीसकुच। नयनरागउरनेम ॥ १६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
पूजीगौरीप्रेमसों। सीतासषीसमाज ॥ मंगलगानविधानजुत। फिरिआईग्रहराज ॥१७॥
॥ वनउपवननिविलासकर। रामआवस्वस्थान ॥ कीनैविश्वामित्रकहँ। वंदनविविधविधा
न ॥ १८ ॥ वामअंगवैदेहिके। दक्षनअंगजुराम ॥ भावीसूचितसकलशुभ। फुरकनलगे
सकाम ॥ १९ ॥ शुभवासुरपूरवप्रहर। कीनोसभाबनाउ ॥ राजाराजकुमारतहां। बोलेराना
राउ ॥ २० ॥ सतानंदकहँतिहिसमय। पठएजनकविदेह ॥ आनहुंविश्वामित्रमुनि। सम
आदरससनेह ॥ २१ ॥ आगैंहिआएरंगभुवि। नगरनिवासीलोग ॥ धनुषयज्ञउछाहअ
ति। रामदरससंजोग ॥ २२ ॥ बालतरुणअरुवृद्धजन। नेहसहितनरनारि॥ जथाजोग्यबैठे
सकल। अपनोठौरविचारि ॥ २३ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ शुभसीयव्याहउछाहसबसंभा
रसारसुसिद्ध ॥ निजकाजतत्परनारिनरप्रभुहेतबुद्धिप्रसिद्ध ॥ नृपबंधुमंत्रीयसुहृदसाजन
देसदेससमागता ॥ गुरुविप्रपूज्यअनेकक्रमगतसुकविपंडितसंजुता ॥ कुलमान्यमागध
वंससूचकबंदिजनवानीवरा ॥ पुनिसिद्धचारनविश्वपूजिततत्वसाधनतत्परा ॥ मिलिब्रह्म
क्षत्रियवैश्यशूद्रसुनिपुनविद्याआपुनै ॥ वनद्वीपदेशबिदेशवासीयकर्मकारककोगुनै ॥ सम
सजनसंकुलविपुलसोभापरमसुषमिथिलापुरी ॥ सबसिद्धिऋद्धिसमृद्धिसंजुतकोउनपुरस
मताकरी ॥ मिलिगगनघनइवत्रिदशस्यंदनविविधरंगविराजहीं ॥ विधिविष्णुशंभुसुरेश
सुरगनसोमसूरसमाजहीं ॥ जलअनिलअनलदिगेसजोगीयजक्षमनमथलौंजुरे ॥ ऋ
षिसिंधुगिरितरुसरितितीरथसुरसुरभिमाणिसंचरे ॥ जमपितरगजमुखसेषसारदचारिषा
नचराचरा ॥ जलगगनभूचरभूतजेतेव्रतीतापसविस्तरा ॥ ऋतुनक्षत्रग्रहदिसदिवसअं
बुदसोमवल्लीयसंग ॥ जेईजोतिवंतअनंतवनजुतवेदनागविहंग ॥ गंधर्वकिन्नरअपछरा
गनतानगानसुताल ॥ आकासवाजित्रव्याहआगमनवजंतविविधविशाल ॥ आसुरअ
साधअभीतअतिसयदैत्यदानवदुष्टजे ॥ आकासछायोरथनिअनगनभावअपनैजेभजे
॥ इत्यादिअखिलअनंगअंगीयब्रह्मसृष्टिजुविस्तरे ॥ मषधनुषसीताव्याहमंगलधर्म
कारनतनधरे ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ विक्रमविशेषदेशदेसकेअसेषबलजितेमेरु
मेषलासमुद्रमध्यजाएहैं ॥ विधिकिसृष्टिउपजेजेब्रह्मांडवीचवासीपंचभूतकीप्रवृत्तिराज
पदपाएहैं ॥ कौतुकनिमित्तकोउबाहुबलकाजवीरजाहिजैसीभावनाभरोसामनभाएहैं ॥

पावनपिनाकमषदेषनप्रसिद्धपृथ्वीऐसैअवनीससीतास्वयंबरआएहैं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कनकघटितनगमनिजटित । विविधमंचबिस्तार ॥ आनिजथाक्रमबैठिनिन्ह । राजराज कुमार ॥ २४ ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि । सानुजरघुवरसंग ॥ सादरबोलेरंगभुवि । राजा जनकअभंग ॥ २५ ॥ सतानंदऋषिकौशिकहि । कीनीप्रणातिअनेक ॥ सीयस्वयंवरध नुषमष । आनेविहितविवेक ॥ २६ ॥ सबहिनतेऊपरसुषद । उच्चमंचइककीन ॥ रामसहि तकौशिकतहां । बैठेपुन्यप्रवीन ॥ २७ ॥ ज्यौंबालकमृगराजके । बैठेअग्रविशेष ॥ मृगप तिविश्वामित्रमुनि । अतितपतेजअसेष ॥ २८ ॥ ॥ छंदरसावली ॥ ॥ रामरूपदेषत सबैसुरनरसुषपावहिं ॥ चितआनंदसमोहबढिनहीपलकलगावहि ॥ स्यामवरणतनजलद स्यामनहिसमतापावै ॥ मकराकृतकुंडलकपोलछबिअतुलितछावै ॥ सोभाअमितसुरूप देषिमनलजितमनोजा ॥ कचकुंचितभृंगावलीदृगशरदसरोजा ॥ उच्चभालनाशाउतंगही रारदराजै ॥ मुषप्रसन्नमिलिमंदहसवरअधरविराजै ॥ अतुलकंधआजानुबाहुप्रभुउरअ तिपीना ॥ कंबुकंठहारावलीवनमालनवीना ॥ नाभिसरोजत्रिरेषमध्यछविअद्वयकीनी ॥ रो मावलीसवीर्यजंत्रजनुरक्षादीनी ॥ कटिमृगराजनितंबपीनपटपीतजुबंधे ॥ जंघावृत्तससो भजानुशुभसमसबसंधे ॥ चरनकमलसुरसेविताजुसुरसरितनिवासा ॥ सरणागतपंजरवि जयबहुविघनविनासा ॥ नषसुंदररत्नोपमाजुतेजनिछविछीनैं ॥ पदतलअसणाकाररेषव ज्रांकुशलीनै ॥ पारंगतविद्याप्रवीनदसचारिनिदाना ॥ श्रोताधर्महिसावधाननितबेदपुरा ना ॥ कटिकेहरिभाथाकसेकरधारिकोदंडा ॥ इषुअमितकरदक्षनापौरुषहिप्रचंडा ॥ द्वात्रिं शतलक्षनसुदेससवअंगनिसोहैं ॥ पुरुषसिंघदेषतसप्रेममनवृत्तिविमोहैं ॥ ॥ छंदाद्विअ क्षरी ॥ ॥ जिहिंइच्छाकरिदेषेजैसी ॥ तिनकहसफलभावनातैसी ॥ रामनृपनिइहिंरूपनि हारे ॥ मानहुंदेहवीररसधारे ॥ षलषत्रिनिरघुवरअसदेषे ॥ रसभयानजनुवपुहिविशेषे ॥ सजनविलोकितरामसनेही ॥ हैमनुधरेकरुनरसदेही ॥ समधिनिउररराघवयौंसोहत ॥ म नहुंहास्यरसविश्वविमोहित ॥ जगजनजीयअद्भुतरसभारी ॥ सिलतेंभईदिव्यतननारी ॥ रसश्रृंगारसारअवरेषै ॥ देहधरैजुवतीजनुदेषै ॥ गलतगलानिअपौरुषआए ॥ अवनीप निबैभछउपजाए ॥ असुरदैत्यजेदनुजअभागे ॥ तिनररसरौद्रकालसेलागे ॥ संतनिउरयौं रघुपतिसोहे ॥ महासांतरसतनमनमोहे ॥ विदुषनिमनरघुनाथसुहाए ॥ विसदविराटरू पसेआए ॥ जोगतत्वसेजोगिनिजानै ॥ चिदानंदमयप्रभाप्रमानै ॥ भक्तनिउररघुवरयौं भ्राजत ॥ इष्टदेवसमसुषउपराजत ॥ सासुससुरयौरामसपेषे ॥ अतिबल्लभसुतसमअवरे षे ॥ देषेसुरनिरामसुषदाइक ॥ सबनिसदाशुभकाजसहाइक ॥ प्रजाप्रसंसिपरमसुषपाव त ॥ अवलोकितनहिनैनअघावत ॥ १६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जिहिजिहिजैसोभावरामर घुवीरनिहारैं ॥ तैसीइछातिनहिसफलभईकृतअनुसारैं ॥ साधुनिशुभआगमनषलनिषय कालउपज्जीय ॥ दुष्टनिआसाभंगभएमुषमलिननिलज्जीय ॥ नवरससुरूपरघुवंशमणी,स बनिचित्तसंचारकीय ॥ जयजयतिरामरघुवंसरवि, अषिलचराचरउच्चरीय ॥ १ ॥ ॥ छं दघनाक्षरी ॥ ॥ एकजिहिंजानेताहिएकैजोतिभासेआपजानतअनेकताहिअनेकैजना

एहै ॥ निकटनिहारेताहिप्रगटेनिकटनाथदेवथंभफारिनरसिंघव्हैदिषाएहै ॥ दूरिजिनजा नेतिनैदूरिहीविडारिदीनेसुलभनिहारेताहिसुलभैसुहाएहै ॥ आरतपुकारसुनिअनंगीयों अंगीहोतप्रभुविद्याइंद्रजालकोनैधोपटाएहै ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बालविभूषनतनविम ल। यमअद्वैतजुरूप ॥ सोभितबैठेनृपसभा। अषिलेश्वरअनुरूप ॥ २९ ॥ ॥ साधुनृप उवाच ॥ ॥ रामविलोकिनरेससब। उरचिंततिअविकार ॥ इनकहँप्रापतविजयजस। नि गमयहैनिरधार ॥ ३० ॥ भरमराषिचलियेभवन। अंतअकारजहोइ ॥ इनकेरहतअसेषब ल। कन्यालहैनकोइ ॥ ३१ ॥ जेअविवेकीअंधउर। नृपबोलेअभिमान ॥ हमहिहोतबल वानको। पावैकन्यादान ॥ ३२ ॥ हमहिभरोसोबाहुबल। एजानहुविधिअंक ॥ कालहुसौं जीतैसमर। कन्यावरहिनिसंक ॥ ३३ ॥ ॥ साधुनृपउवाच ॥ ॥ जेनृपवेदमजादमह। हसिबोलेसुनिबात ॥ कहागालमारतवृथा। अरुमनलडुवाषात ॥ ३४ ॥ मृगतृष्णाज्यौं बावरे। थलदेषतजलभाइ ॥ भरमहिभ्रमतदिगंतल्यौं। मरिहौंसहजसुभाइ ॥ ३५ ॥ जग तपिताजगदीसए। कोशलराजकुमार ॥ सीताजगदंबासती। निगमकहतनिर्द्धार ॥ ३६ ॥

॥ अथ रावणबाण आगमन ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भुजावीसदससीसमहाराक्षसषलरावण ॥ हैकंट कत्रैलोकसहजसुरराजसतावन ॥ सहसबाहुदितिवंससमरविजयीबानासुर ॥ तीनलोकभव भूतजिनहिदेषतउपजतसुर ॥ दोउदुष्टदेवदोषीअदय,पृथ्वीविदितपौरुषप्रबल ॥ सुनिहो तस्वयंवरसीयको, आएतिहिछनयज्ञथल ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असुरअसाधअसं षअति। दोउविलक्षणदेह ॥ अवचिंतितआएअशह। सर्वनिभएसंदेह ॥ ॥ लोकउ वाच ॥ ॥ रावनबानबलिष्टअति। कहतयहैसबकोइ ॥ जोदुहुनिऐंच्योधनुष। महाउप द्रवहोइ ॥ ३८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तिनहिविलोकिसशोकतहां। भएनिराशन रेस ॥ आयेमंगलजानिइहां। उपजेविघनविशेष ॥ ३९ ॥ सज्जनराजसमाजमहँ। आए असुरअनीत ॥ नरनारीहाहाकरत। हरिहरिहैविपरीत ॥ ४० ॥ रावनउवाच ॥ ॥ मो हिबतावहुनृपसुता। पहिलैदेषौंताहि ॥ पाछैतोरिपिनाककहँ। कन्याजाउंविवाहि ॥ ४१ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ बानकह्योदशकंठसुनि। पहिलैचापचढाउ ॥ पनपूरनकरजनक कौ। जसलेलंकाजाउ ॥ ४२ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रावनबातसुबाणकी। सुनीनकी नीकान ॥ षुनसानेअतिचित्तमहँ। बहुरयौंबोलेबान ॥ ४३ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ क वित्त ॥ ॥ रेरेशठदशकंधछांडहठगर्वनकीजै ॥ बचनभंगकेहोतजगतगरूवत्तनछीजै ॥ तूपुनीतपौलस्तिवंसउपज्योअधिकारी ॥ सोकरियैपरमानबातजोमुषहिउचारी ॥ व्रतली नौजनकविदेहजो, सोपैसिरैचढाइयै ॥ कहुपहिलैकैसैंनृपतिकी, पुत्रीदेषनपाइयै ॥ ॥ रा वनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ममभुजबलकीबातसुनि। महिमाअतुलअपार ॥ नव ग्रहपाइनिहेठिनित। सुरसेवतदरबार ॥ ४४ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ बाणकह्योदशसी ससौं। बहुमुषरसनापाइ ॥ अपनीकीरतिआपुही। कहतबढाइबढाइ ॥ ४५ ॥ ॥ राव णउवाच ॥ ॥ तबफिरिरावणबाणकहं। उत्तरदयौसदाप ॥ बहुतबाहुजुतदेषियत। अ

पावनपिनाकमषदेषनप्रसिद्धपृथ्वीऐसेअवनीससीतास्वयंबरआएहै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
कनकघटितनगमनिजटित । विविधमंचबिस्तार ॥ आनिजथाक्रमबैठेतिन्ह । राजाराज
कुमार ॥ २४ ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि । सानुजरघुवरसंग ॥ सादरबोलेरंगभुवि । राजा
जनकअभंग ॥ २५ ॥ सतानंदऋषिकौशिकहि । कीनीप्रणतिअनेक ॥ सीयस्वयंवरध
नुषमष । आनेविहितविवेक ॥ २६ ॥ सबहिनतेऊपरसुषद । उच्चमंचइककीन ॥ रामसहि
तकौशिकतहां । बैठेपुन्यप्रवीन ॥ २७ ॥ ज्योंबालकमृगराजके । बैठेअग्रविशेष ॥ मृगप
तिविश्वामित्रमुनि । अतितपतेजअसेष ॥ २८ ॥ ॥ छंदरसावली ॥ ॥ रामरूपदेषत
सबैसुरनरसुषपावहिं ॥ चितआनंदसमोहबाढिनहीपलकलगावहि ॥ स्यामवरणतनजलद
स्यामनहिसमतापावै ॥ मकराकृतकुंडलकपोलछबिअतुलितछावै ॥ सोभाअमितसुरूप
देषिमनलजितमनोजा ॥ कचकुंचितभृंगावलीदृगशरदसरोजा ॥ उच्चभालनाशाउतंगहीं
रारदराजै ॥ मुषप्रसन्नमिलिमंदहसवरअधरविराजै ॥ अतुलकंधआजानुबाहुप्रभुउरअ
तिपीना ॥ कंबुकंठहारावलीवनमालनवीना ॥ नाभिसरोजत्रिरेषमध्यछविअद्वयकीनी ॥ रो
मावलीसवीर्यजंत्रजनुरक्षादीनी ॥ कटिमृगराजनितंबपीनपटपीतजुबंधे ॥ जंघावृत्तससो
भजानुशुभसमसबसंधे ॥ चरनकमलसुरसेविताजुसुरसरितनिवासा ॥ सरणागतपंजरवि
जयबहुविधनविनासा ॥ नषसुंदररत्नोपमाजुतेजनिछविछीनै ॥ पदतलअसणाकाररेषव
ज्रांकुशलीनै ॥ पारंगतविद्याप्रवीनदसचारिनिदाना ॥ श्रोताधर्महिसावधाननितबेदपुरा
ना ॥ कटिकेहरिभाथाकसेकरधरिकोदंडा ॥ इषुअमितकरदक्षनापौरुषहिप्रचंडा ॥ द्वात्रिं
शतलक्षनसुदेससबअंगनिसोहैं ॥ पुरुषसिंघदेषतसप्रेममनवृत्तिविमोहैं ॥ ॥ छंदहिअ
क्षरी ॥ ॥ जिहिंइच्छाकरिदेषेजैसी ॥ तिनकहसफलभावनातैसी ॥ रामनृपनिइहिरूपनि
हारे ॥ मानहुंदेहवीररसधारे ॥ षलषत्रिनिरघुवरअसदेषे ॥ रसभयानजनुवपुहिविशेषे ॥
सजनविलोकितरामसनेही ॥ हैमनुधरेकरुनरसदेही ॥ समधिनिउरराघवयौंसोहत ॥ म
नहुंहास्यरसाविश्वविमोहित ॥ जगजनजीयअद्भुतरसभारी ॥ सिलतेंभईदिव्यतननारी ॥
रसशृंगारसारअवरेषै ॥ देहधरेंजुवतीजनुदेषै ॥ गलतगलानिअपौरुषआए ॥ अवनीप
निबैभछउपजाए ॥ असुरदैत्यजेदनुजअभागे ॥ तिनरसरौद्रकालसेलागे ॥ संतनिउरयौं
रघुपतिसोहे ॥ महासांतरसतनमनमोहे ॥ विदुषनिमनरघुनाथसुहाए ॥ विसदविराटरू
पसआए ॥ जोगतत्वसेजोगिनिजानै ॥ चिदानंदमयप्रभाप्रमानै ॥ भक्तनिउररघुवरयौं
भ्राजत ॥ इष्टदेवसमसुषउपराजत ॥ सासुससुरयौंरामसपेषे ॥ अतिबल्लभसुतसमअवरे
षे ॥ देषेसुरनिरामसुषदाइक ॥ सबनिसदाशुभकाजसहाइक ॥ प्रजाप्रसंसिपरमसुषपाव
त ॥ अवलोकितनहिनैनअघावत ॥ १६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जिहिजिहिजैसोभावरामर
घुवीरनिहारें ॥ तैसीइछातिनाहिसफलभईकृतअनुसारे ॥ साधुनिशुभआगमनषलनिषय
कालउपज्जीय ॥ दुष्टनिआसाभंगभएमुषमलिननिलज्जीय ॥ नवरससुरूपरघुवंशमणी,स
बनिचित्तसंचारकीय ॥ जयजयतिरामरघुवंसरवि, अषिलचराचरउच्चरीय ॥ १ ॥ ॥ छं
दघनाक्षरी ॥ ॥ एकजिहिंजानेताहिएकैजोतिभासेआपजानतअनेकताहिअनेकैजना

एहै ॥ निकटनिहारेताहिप्रगटेनिकटनाथदेवथंभफारिनरसिंघव्है दिषाएहै ॥ दूरिरजिनजा नेतिनैदूरिहीविडारिदीनेसुलभनिहारेताहिसुलभैसुहाएहै ॥ आरतपुकारसुनिअनंगीयों अंगीहोतप्रभुविद्याइंद्रजालकोनेधोपटाएहै ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बालविभूषनतनविम ल। यमअद्वैतजुरूप ॥ सोभितबैठेनृपसभा। अषिलेश्वरअनुरूप ॥ २९ ॥ ॥ साधुनृप उवाच ॥ ॥ रामविलोकिनरेससब। उरचिंततिअविकार ॥ इनकहँप्रापतविजयजस। नि गमयहैनिरधार ॥ ३० ॥ भरमराषिचलियैभवन। अंतअकारजहोइ ॥ इनकेरहतअसेषब ल। कन्यालहैनकोइ ॥ ३१ ॥ जेअविवेकीअंधउर। नृपबोलेअभिमान ॥ हमहिहोतबल वानको। पावेकन्यादान ॥ ३२ ॥ हमहिभरोसोबाहुबल। एजानहुविधिअंक ॥ कालहुसौं जीतैसमर। कन्यावरहिनिसंक ॥ ३३ ॥ ॥ साधुनृपउवाच ॥ ॥ जेनृपवेदमजादमह। हसिबोलेसुनिबात ॥ कहागालमारतवृथा। अरुमनलडुवाषात ॥ ३४ ॥ मृगतृष्णाज्यौं बावरे। थलदेषतजलभाइ ॥ भरमहिभ्रमतदिगंतल्यौं। मरिहौंसहजसुभाइ ॥ ३५ ॥ जग तपिताजगदीसए। कोशलराजकुमार ॥ सीताजगदंबासती। निगमकहतनिर्द्धार ॥ ३६ ॥

॥ अथ रावणबाण आगमन ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भुजावीसदससीसमहाराक्षसषलरावण ॥ हैकंट कत्रैलोकसहजसुरराजसतावन ॥ सहसबाहुदितिवंससमरविजयीबानासुर ॥ तीनलोकभव भूतजिनहिदेषतउपजतसुर ॥ दोउदुष्टदेवदोषीअदय,पृथ्वीविदितपौरुषप्रबल ॥ सुनिहो तस्वयंवरसीयको, आएतिहिछनयज्ञथल ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असुरअसाधअसं षअति। दोउविलक्षणदेह ॥ अवचिंतितआएअशह। सर्वनिभएसंदेह ॥ ॥ लोकउ वाच ॥ ॥ रावनबानबलिष्टअति। कहतयहैसबकोइ ॥ जोदुहुनिऐंच्योधनुष। महाउप द्रवहोइ ॥ ३८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तिनहिविलोकिसशोकतहां। भएनिराशन रेस ॥ आयेमंगलजानिइहां। उपजेविघनविशेष ॥ ३९ ॥ सज्जनराजसमाजमहँ। आए असुरअनीत ॥ नरनारीहाहाकरत। हरिहरिहैविपरीत ॥ ४० ॥ रावनउवाच ॥ ॥ मो हिबतावहुनृपसुता। पहिलैदेषौंताहि ॥ पाछेंतोरिपिनाककहँ। कन्याजाउंविवाहि ॥ ४१ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ बानकह्योदशकंठसुनि। पहिलैंचापचढाउ ॥ पनपूरनकरजनक कौ। जसलेलंकाजाउ ॥ ४२ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रावनबातसुबाणकी। सुनीनकी नीकान ॥ षुनसानैअतिचित्तमहँ। बहुरयौंबोलेबान ॥ ४३ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ क वित्त ॥ ॥ रेरेशठदशकंधछांडहठगर्वनकीजे ॥ बचनभंगकेहोतजगतगरूवत्तनछीजे ॥ तूपुनीतपौलस्तिवंसउपज्योअधिकारी ॥ सोकरियैपरमानबातजोमुषहिउचारी ॥ व्रतली नौजनकविदेहजो, सोपैसिरैचढाइयै ॥ कहुपहिलैकैसैंनृपतिकी, पुत्रीदेषनपाइयै ॥ ॥ रा वनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ममभुजबलकीबातसुनि। महिमाअतुलअपार ॥ नव ग्रहपाइनिहेठिनित। सुरसेवतदरबार ॥ ४४ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ बाणकह्योदशसी ससौं। बहुमुषरसनापाइ ॥ अपनीकीरतिआपुही। कहतबढाइबढाइ ॥ ४५ ॥ ॥ राव णउवाच ॥ ॥ तबफिरिरावणबाणकहं। उत्तरदयौसदाप ॥ बहुतबाहुजुतदेषियत। अ

तिबलव्हैहोआप ॥ ४६ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ रावणमेरोबाहुबल । सुन्यौअबहुलौं नांहि ॥ सबतेदशगुनअवणज्यौ । जरठाश्रमदिनजांहि ॥ ४७ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ हूंजब हींजबजातपितापदवंदनपावन ॥ महादानिदैतेसनिरषिमुषपापनसावन ॥ तबदेषेवलतो लिसपतपातालनिवासी ॥ तहाँतहाँकरलहिटेकछोनिराषीछतनासी ॥ सहसफनभारटा र्योसहजलोक, लोकमहँजसलयौ ॥ कोजानैकोतुकबारकै, शेषसहाइकहूंभयो ॥ ३ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ हंसिरावनतबकह्योबानतुमआहिमहाबल ॥ सहजबाहसंग्रामसूर बहुसंगदैतदल ॥ बलिसोराजाबहुतकालहैसुतलनिवासी ॥ पितातुह्मारोकरहुआनिभूतल हिविलासी ॥ शतयज्ञसपूरणबटुकहित, तीनपैडअभिलाषियै ॥ छितिमंडलदीनौदछना, सोनिगमागमसाषियै ॥ ४ ॥ ॥ वाणउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अग्रजबंधुकुबेरको । तुमघरलयौछिडाइ ॥ सोहमयहँकरतनबनै । वेदमजादविहाइ ॥ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ संषासुरहिरनाक्षमुरहुमधुकैटभमारे ॥ हिरनकशिपुइत्यादिसबलकोगनैसँघारे ॥ जिंहभु जसरननिसंकवसतत्रैलोकचराचर ॥ कमलाकुचकुंकुमसुगंधवासितविचित्रवर ॥ बलिस र्वसुदीनोधर्मवस, उच्चरिवचननषंड्यौ॥ सुरपतिसहायसोई हाथहरि,ममपितुआगैमंडयौ॥ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ तुमहुंसुन्योभवचक्रवलि । द्विजहिदक्षनादीन ॥ उरउपज्योहैसांतरस । रहतब्रह्मपदलीन ॥ ४९ ॥ प्रगटपराक्रमआपनै । सबजानतसंसार ॥ चापचढावतदुह निबल । अबव्हैहैनिर्द्धार ॥ ५० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुन्योजुरावनबानव्रत । सब नृपभएसत्रा ॥ कन्याप्रापतिकोगनै । छुटीजियनतनआस ॥ ५१ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ बानकह्योदशकंधसों । राक्षसधनुषचढाइ ॥ कहतेंओरनआइहे । बातबनाइबनाइ ॥ ॥ ५२ ॥ रावनउवाच ॥ कायरहोक्योजाइहुं । मैबांध्योसुरराज ॥ पहिलेकन्यादेखिहौं । पुनिकोदंडहिकाज ॥ ५३ ॥ बानउवाच ॥ ॥ बानकह्योतबरावनहिं । यामहकौनस वाद ॥ झूठमनोरथमनहरष । करतवृथाबकवाद ॥ ५४ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ बो लिनजानतबानतूं । विधिविवेककीबात ॥ हमहिनकहिआवतभिया । जैसीतोहिसुहात ॥ ॥ ५५ ॥ करिहूंजैशीमैंकही । चित्तनआवैआन ॥ करिहैकोउमोसेंकहा । सुनियहबान निदान ॥ ५६ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ आगेहैहयराजनैं । जोकीनीतुममाहि ॥ वै सीहीव्हैहैंअबै । सोसुधिहैकिधोनांहि ॥ ५७ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भूतनाथजुतभूतसगनवासुकिगनेससंग ॥ सुरसरिपावकवृषभशूलअदभुतविभूतअंग ॥ सर्वमंगलासाहितवासकैलासविराजित ॥ सुरवनजंतुसमेतसकलसोभानगसाजत ॥ ली नौउठाइगिरिगेंदलौ, सोजानतसुरनरसकल ॥ त्रैलोकविदितमेरेअतुल, बाननजानतबा हुबल ॥ ६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तजिबिबादलंकेसतब । विविधविषम सुनिवानि ॥ मारिमसूसामनहिमन । आनिछुयोधनुपानि ॥ ५८ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ बाणकह्योपौलस्तिसौं । तुमबलअतुलितअंग ॥ ऐसैंकर्षहुमुष्टिकर । होइपिनाकनभंग ॥ ॥ ५९ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जैसैंइतउतविषयवस । चलैनजोगीचित्त ॥ तजतनठोर पिनाकत्यौं । रावनभयोकुचित्त ॥ ६० ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ जीरनधनुषमहेसकौ ।

हूंतोरेंगोतानि ॥ कहीयतवांनमहाबली । तुमधौंदेषहुआनि ॥ ६१ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ बाणधनुषसालागए । कीयैप्रणामप्रयोग ॥ मेरेगुरुकोचापयह । मोहिनछुयबेजोग ॥६२॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भयौषिसानौंलंकपति । गगनगिरायौंहोइ ॥ धनुषनंटरिहैंठौर तैं । कष्टकरहुजनकोइ ॥ ६३ ॥ सरमासरमीसुनतसो । दशशिरगयोषिस्याइ ॥ करिवं दनविशिषासनहि । बानगएसुषपाइ ॥ ॥ इतिरावणबाणसंवादसंपूर्णम् ॥ ॥ ६४ ॥

॥ अथ धनुषजज्ञप्रकर्ण प्रारंभ ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ जातहिराक्षसदैत्यके । सबहिनटर्योकलेश ॥ ज्यौंरविश शिउपरागतैं । उग्रहहोतविशेष ॥१॥ राजाजनकविदेहतब । बंदीजननिबुलाइ ॥ धनुषज ज्ञपनआपनौं । तिनहिंकह्योसमुझाइ ॥२॥ सुमतिविमतिदोउभाटशुभ । सुकविमहामति शुद्ध ॥ राजसभाकेमध्यसो । ढाढेआनिप्रबुद्ध ॥३॥ छंदद्विअक्षरी ॥ सुमतिविमततिहाँभु जाउठाई ॥ कह्योजनकपननृपनिसुनाई ॥ शंभुधनुषजोइभूपचढावै ॥ सोजससंयुतकन्या पावै ॥ दोहा ॥ पूछतविमतिविशेषसौं । सुमतिकहतसमुझाइ ॥ राजनिकेवर्णनसकल । सबनिसुनाइसुनाइ ॥ ४ ॥ विरदगोत्रजेजगविदित । देसवंसगुणग्राम ॥ विक्रमदान जुवीरता । निजभुजबलदलनाम ॥ ५ ॥ प्रगटसुनतजसआपनौ । सूरउठतसुषपाइ ॥ परिकरबांधिलपेटिपट । सनमुषइष्टमनाइ ॥ ६ ॥ तमकितमकिनृपतेजसौं । धरत चापकरधाइ ॥ नेकहुंउठतनभूमिते । फिरिफिरिबैठतआइ ॥ ७ ॥ मंचनिबैठिमहीपजे । बोलतबचनविशेष ॥ परसिगिरीसपिनाकभए । नरपौरुषनिस्सेष ॥ ८ ॥ ॥ छंद वेताल ॥ ॥ तबसहसदसभटमहाभूवपतिअनषिउठिइकवारहीं ॥ सौरेषप्रविसेधनुषसा लाआनिचापअढारहीं ॥ नहिंटरतशंभुपिनाकज्यौंविधिलिषितअंकललाटके ॥ मह सतीमननहींचलतइतउतठएलंपटठाटके ॥ मुनिशंभुकोमनमदनकेवसभयौनहिनसु भावही ॥ भस्मावशेषअनंगभौसोइपुनिहूंदेहनपावही ॥ अवनीपश्रीहतभएउठिउठि यौसउडुगनमानियै ॥ वैराग्यविनुज्यौंविषयरसवसजरठजोगीजानियै ॥ सन्यासपद ज्यौंभेषसाजैसषीमुग्धासंग ॥ जहाँ जात तहाँ तहाँ घटत महिमा अंग विवस अनंग ॥ उपहास्यभाजनभएअवनिपचापकेढिगआइ ॥ कोगनैमुरवोजुक्तकरिवौसकेभूनछिडाइ ॥ पुनिभाटबोलेजनकपनमषसिद्धिपैंनहींपाइ ॥ भूवचक्रकेअवनीपआएभएभांडसुभाइ ॥ सुरभक्तिसक्तिनकर्योसाधनदयौंनहींवरदान ॥ पुरुषसेमषसालपैठेफिरेबनिताबान ॥ तुम गर्भेहतकिनभयेजननीजनेथालबजाइ ॥ वृथाश्रमतिनिकर्योजुवतिनिवयसुरूपविहाइ ॥ वरुविहितबंध्याकुक्षवनिताआवगर्भसुहोइ ॥ ममजनहिपौरुषरहितपुत्रहिअलभयौवनषो इ ॥ इत्यादिवचनप्रहारअसहनकरतबंदीजनकिते ॥ बलछांडिसीसनवाइबैठेजुरेमषभूअ वैजिते ॥ जुगडारिधुरताजिअवनीजोवैधवलबैठिअधीर ॥ कछुसिद्धिनांहिप्रहारकीनैविग तपौरुषवीर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुमतिरुवाच ॥ ॥ सुमतिविमतिहसिकैंकह्यो । नृपनिसु नाइसुनाइ ॥ चापुनचाढ्योषरचढे । आपुनइहिंमषआइ ॥ ९ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ राजनकीदेषीदसा । जनककह्योसविषाद ॥ देषोमहिमाकालकी । मिटिपौरुषमर्जाद ॥१०॥

भूपजितेभूगोलके । बलनिधानवरवीर ॥ आएपुरुषजुधनुषमष । चलेओढिसिरचीर ॥ ॥११॥ त्रिदशदैत्यधरिमनुजतन । आएनृपतिअसेष ॥ भएनिरुद्यमतेजहत । तिनहुनकछू विशेष ॥ १२ ॥ चापचढावनकोगनै । सकेनअवनिछिडाइ ॥ भइउर्वीनिर्वीरअब । क ह्योजनकअकुलाइ ॥ १३ ॥ जोजानतनिर्वीरभूव । तौनकरितपनएहु ॥ पावकप्रजलतग्रे हसब । तबकहँपईयतमेहु ॥ १४ ॥ रहीकुंवारीकन्यका । लिषतविरंचलिलार ॥ पनकीनौ जोपरहरौं । तौउपहास्यसंसार ॥ १५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जनकबचनसुनिलषनतहँ । क्रोधअरुनचषकीन । मानहुप्रजलतअनलमहँ । नाइअमृतघृतदीन ॥ १६ ॥ ॥ लक्ष्म णवाक्यश्रीरामप्रति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ देवदेवरघुवीरकह्योलक्ष्मनतवाकिकर ॥ मे रुमहीधरकितियमात्रजीरनपिनाकहर ॥ देंआज्ञाअषिलेसदासबलकौतुकदेषहु ॥ जोअ क्षरहूंकहतसाररेषासंपेसहू ॥ आकर्षिनवाइचढाइचलि, निहचैऐंचिनसाइहूं ॥ कहमुषसौं जोतपति करौं, तौनहिवीरकहाइहूं ॥ १ ॥ ॥ लक्ष्मणवचनजनकप्रति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लक्ष्मनसुनिनिर्वीरभुव । रोषारुणकियनैन ॥ जनकहोतरघुरामजहां । नाहिंउचितयहबैन ॥ १७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ फुरतअधररोमांचभुज । लषनरिसौंहैरूप ॥ रामनिवारे सैनकरि । सभयजानिभवभूप ॥ १८ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ कोसिकउवाच ॥ ॥ सो समयदेषिविशेषकौशिकहर्षउरनसमावही ॥ हसिकह्योमुनिमिथिलेससौंधनुरामदेष्योचा हहीं ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ पुनिदयोउत्तरजनकमुनिप्रतिकालदंडहिकोगनैं ॥ अति वज्रतेजकठोरशिवधनुअद्रिमानसुआपनैं ॥ पनगेसप्रतिमाजिहिप्रतिंचाकोनातिहिंगौरव कहै ॥ त्रैलोक्यकेसुरअसुरभुवपतिदेषहारेउरदहै ॥ करिवदनआदिजुविश्वकर्माकोटिमिलि उद्यमकरैं ॥ भवभूतनाथसमाथविनुसोटिक्यौंषितितैंनाटरैं ॥ सबद्वीपकेअवनीपसुरन रहारहाररहेहियें ॥ तिलमात्रपैनहींटस्यौतिनपैंकरनिकरष्योपनकीयें ॥ मुनिभएमनत्र तभंगमेरेराजकन्यायौंरही ॥ चितबढिजोअप्रयोगचिंताकठिनसोनपरैकही ॥ मुनिसंग लाएबालकनितुमकीयेमषजयटेक ॥ महिरावरेतपतेजमहिमाकहिनजातअनेक ॥ ऋषि देषितपबलजनकहर्षितरामवयलषिउरडरै ॥ पुनिशंभुचापसंभारिकर्कशपनकठिननहिंत जिपरै ॥ चितभयौचलदलपत्रज्यौंचलतदपिमंत्रिबुलाइकैं ॥ नृपकह्यौमिलिजनजूथआ नहुईसचापउठाइकैं ॥ शतघंटाहिममयमनिनिसोभाआवरितपटअंग ॥ जयपाइसमर अनेकजातेंईसदहनअनंग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पंचसहसनरमिलिप्र बल । विधिआकर्षिविशेष ॥ राजसभामहलैधर्यो । शंभुचापसविशेष ॥ १९ ॥ विश्वा मित्रविलोकिवर । रामचंद्ररणधीर ॥ भृकुटित्रिरेषाफरकिभुज । शुभरोमांचशरीर ॥२०॥ ॥ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ ॥ श्रीरामप्रति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पंथभयानकवनप्रवेस ताडकानिषाती ॥ शत्रुसुभुजसेन्यासमेतछेद्योसरछाती ॥ विनुफलसरकेपंषवातमारीचहि मार्यौ ॥ वारिसिंधुकेबीचनीचसतजोजनडार्यौ ॥ जिहिधनुषकरेएतेविजय, सोदीजैसौं मित्रिकर ॥ रघुवीरवीरत्रिभुवनविदित, हरषिचढाबहुचापहर ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क विरुवाच ॥ ॥ रघुपतिविश्वामित्रके । सुनेबचनसप्रशंस ॥ मनुउदयाचलमंचपर । उठे

उदितहरिहंस ॥ २१ ॥ कटितटबांध्योपीतपट । भुजबलरामउचार ॥ क्रमनिचलेमृगरा
जकी । कोशलराजकुमार ॥ २२ ॥ देषिसरासनशंभुको । रामचलेइहिभांति ॥ ज्योंमृग
पतिमनमोदजुत । पाइदुरदमदपांति ॥ २३ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ पुरलोकतरकवित
रककरिकरिविविधबातबनावहीं ॥ दशकंधबाणहिआदिदैनृपगएहारिसुभावहीं ॥ ॥ सी
तावाक्यं ॥ ॥ मनहोतसीताअतिहिविस्मयसभयनारिसुभाउ ॥ करकमलकोमलराम
केअतिचापकठिणचढाउ ॥ ॥ रानीवाक्यं ॥ ॥ जानकीरूपविलोकिजननीरामवयस
निहारहीं ॥ कठिनताभवचापकीअरुब्रतबिदेहविचारहीं ॥ मुषसर्पज्यौंग्रहिगंधमूशीमन
हिसोभसमाज ॥ वपुनासभषचषनाशवितजैउभयहेतअकाज ॥ अनचढैधनुसीताअनू
ढारहैयहनिर्धार ॥ करिभंगव्रतजोव्याहकीजैसुजसतउनसंसार ॥ ॥ सषीउवाच ॥ ॥
यहसुनतकोउसहचरिसयानीनियतउत्तरदीन ॥ रामहिबिलोकितबालरानीमननकरहुम
लीन ॥ मुनिअगस्तिसरीरसमताउदधिकतयउपजात ॥ एकहीअंजुलिकरेअचवनबात
जगविष्यात ॥ सुरलोकतमरविबिंबप्रतिमानियतनहिनप्रमान ॥ अतितेजबलअंधारअ
तुलितनाशहोतनिदान ॥धनुबानकोमलपुहपकेधीरअतनधन्वीएक॥ चवषानिबसकीनैंच
राचरअंगप्रबलअनेक॥मृगराजभुजबलगजहिमारतमांसराशिनमानिये ॥मातंगअंकुस
समनप्रतिमाबसतथापिबषानिये॥ मुनिबीजअक्षरमंत्रमहिमावससुरासुरवीर॥ देवीनराम
हिबालदेषहुस्वयंजोतिसरीर॥सषिवचनसुनिरनिवाससबकेबढ्योउरबिश्वास॥त्रैलोकप्रभुह
रिकरहुतेसीअखिलपूजहिआस ॥कविरुवाच॥ करवामरामउठाइहरकोदंडचाढिकठोर॥
धरिमध्यभागजुमुष्टिधारणअरुचितईदुवओर॥करसव्यकैज्याकर्षकीनौंकठिनधनुटंकार ॥
सोसुनतसत्यानंदउरआनंदउपजिअपार ॥ दोहा ॥कोलकमठअहिपतिअवनि। सावधान
दिगदेव ॥ कहिलक्ष्मनहरिचापकह । सज्जतरामसभेव ॥ २४ ॥ तहांप्रतिंचावानजुत ।
करिनिसचयरघुनाथ ॥ काकपुषीआकर्षकृत । देषतसभासनाथ ॥ २५ ॥ ऐंचिकस्योवि
शिषासनाहि । मंडलकर्णसमान ॥ टूट्योमध्यमृणालज्यौं । भोआघातभयान ॥ २६ ॥
॥ कवित्त ॥ ॥ सुरसरितासरवरसमुद्रमर्जादयमुक्कीय ॥ डरदिग्गजडगमगीयकमलभव
ध्यानजुचुक्कीय ॥ धरनिधूजिधसिगईप्रबलपब्बयविहारपरि ॥ मिहिरवाजिछुटिमग्गप्रगट
दिगदेवकंपपरि ॥नागेससेषफनमालनमि, कोलकमठक्रमतज्जयौ॥रघुवीरवीरत्रैलोकपति,
जिहिछिनभवधनुभज्जयौ ॥ ३ ॥ भयविस्मितत्रयभुवनसगनशंकरसमाधिटरि ॥ अष्ट
कुलाचलविचलपनगबधिरत्वकंपपरि ॥ कालदंडपरचंडपस्योजमहत्थविछुट्टीय ॥ रविश
शिग्रहरथरुध्दतेजआफालितहुट्टीय॥ दिगचक्रडोलब्रहमंडडिगि, भुवनत्रयजयजयभयो ॥
दशरथकुमारशिवचापदलि, भवदुर्लभजगजसभयौ ॥ ४ ॥ लसितसप्तपातालप्रलयघ
नगर्जयमुक्कीय ॥ करतगानबंधानतानरंभादिकचुक्कीय॥ भएमलीनमदअंधविष्णुनिद्रासु
विवज्जीय ॥ परिमुहपरावनसपापतपपीठवितज्जीय ॥ द्रिगबामफुरकिपरसद्धरन, महामो
दवैदेहिमन ॥ काकुस्थजदिनिनरहरसुकवि, धरिभंज्यौभूतसधन ॥ ५ ॥ सुरसुरेशटरि
शंकरजनीचरशंकउपज्जीय ॥ परीलंकआतंककंककंटकमनसज्जीय ॥ सुषउपजेसज्जनस

मूहदुर्जनदुषभारीय ॥ विकसिजनकसहवामनगरआनंदनिहारीय ॥ मुनिभएमहाकौशि कमुदित, कीर्तिकविनरहरकरीय ॥ त्रयपुरप्रसिद्धअवधेशसुत, विजयकथाजगविस्थरीय ॥ ६ ॥ भीमनादधनुभंगभयौभवभीतिउपन्नीय ॥ तिहिंपूरितदिशिविदिसिमहाप्रलयाक्र तमन्नीय ॥ अमरवृंदआनंदइंद्रकारिजभयौ आगमविबुधलोकमंगलविधान ॥ मान्यौनि गमागमशुभभईगगनवरषासुमन, सुरनिसानवज्जसधन ॥ कहिजयतिजयतिरघुनाथकी, कविनरहरमिलिमोदमन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उभयटूकअवधेससुत । करिडारयौकोदंड ॥ मानहुपर्वतवज्रहत । भयौमध्यजुगखंड ॥ २८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुरलोकबजेदुं दुभिअशेष ॥ विस्तारनगरवाजित्रविशेष ॥ नभभूमिमिलतनिसाननद्द ॥ सुरनरसमाज जयजयासद्द ॥ आनंदकुसुमवर्षाप्रकास ॥ उछवअनेकअमरनिअवास ॥ गंधर्वकरहि किन्नरसुगान ॥ तहांनचतिविविधसुररमणितान ॥ गावहिंसुगीतत्रीयग्रेहग्रेह ॥ नवनव उत्साहसीतासनेह ॥ अतिहर्षजूथजुवतीअपार ॥ दिसिदिसितैंआवतराजद्वार ॥ ह्तिवं तनारिनरभीरहोइ ॥ कहूंनगरपंथपावैनकोइ ॥ नृपरमनिउदितआनंदनेह ॥ मानहुंकृषि सूषतवर्षिमेह ॥ द्विजराजहिआज्ञाजनकदीन ॥ पुत्रीपुनीतआनहुप्रवीन ॥ दिनशु भतबप्रोहितसतानंद ॥ आएरनिवासहिजुतआनंद ॥ आज्ञागुरुसीतदईआइ ॥ पु त्रिकाचलहुसुभसमयपाइ ॥ गुरुबधूअग्रकीनीसज्ञान ॥ पुनिचलीकुंवरिसीताप्रमान ॥ आवरितसंगजुवतीअनेक ॥ विस्थरहिविनयवानीविवेक ॥ सौभाग्यवतीआरतीसाज ॥ मुक्ताअवेहकुंकुमसमाज ॥ दधिदूबसूतनेतनिसमेत ॥ व्हैदीपकमंगलकलसहेत ॥ शु भगानजुवतिउछवअसेष ॥ विस्तारद्रव्यमंगलविशेष ॥ इहिंभांतिकुंवारिमषथानआ नि ॥ पुहपावलिलीनैंकमलपानि ॥ शुभलाजसकुचभयमिलितसंग ॥ आनंदअंग उद्भवअनंग ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सतानंदवाइकसुपद । कह्यौसीयहिशुभका ल ॥ पुत्रीतुममेलहुप्रगट । रामकंठजयमाल ॥ २८ ॥ सोसुनिरामसमीपासिय । ने हसहितनियराइ ॥ सोभासकुचनिगूढसुष । यहकाहुनकहिजाइ ॥ २९ ॥ मनुमाला भुजमैथिली । विहितउठाइविसेस ॥ करतसनालसरोजकरि । रविहिंअर्धराकेश ॥ ३० ॥ सीताजयमालासमय । पतिउरमेलिसप्रेम ॥ शुभलछनरोमांचसंग । निरषतछविहिसनेम ॥ ३१ ॥ देषनकौअकुलातदग । अतिहितलाजअधीन ॥ पटपरवसजुगजालपारे । मा नहुंतरफतमीन ॥ ३२ ॥ मेलीजयमालामुदित । सियपियकंठसनेह ॥ प्रतिघरघरआनं दपुर । दूधनिवरषेमेह ॥ ३३ ॥ दुलहिनिदूलहरावके । लैमेलीजयमाल ॥ एकहिंबेरांगोग गन । वाजितबजेविसाल ॥ ३४ ॥ ब्रह्मादिकआनंदबढि । धनुषजज्ञजैराम ॥ मंगलगा नविधानमहि । त्रयपुरधामनिधाम ॥ ३५ ॥ सषीसिषावतिसीयकह । प्रभुपदपरसहुपानि ॥ करनपसारतिसकुचकछु । गोतमत्रियगतिजानि ॥ ३६ ॥ सोरहस्यकाहुनसमझि । मनहुंरा मुसकान ॥ त्रिकालज्ञतबहेतिहिं । सतानंदसकुचान ॥ ३७ ॥ सुमनवरषिसुरहियहरषि । बहुरेव्योमविमान ॥ अपनेअपनेलोकप्रति । करेप्रवेसप्रमान ॥ ३८ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ षलनृपप्रसंग ॥ ॥ सीयरूपछाबिहिनिहारिनृपसठभरमहीमनारिसभरे ॥ उठिसजेअंग

सनाहअद्भुतकोपविनुअर्थहिकरे ॥ नृपबालदोउधरहुबलहीछीनिकंन्यालीजियै ॥ कोस
कैवरिहमजीयतकुंवरिहिकहतबिक्रमकीजियै ॥ कहावांसजीरनभंगकीनैकौनबरिकहाइ
हैं ॥ तबबदहिक्षत्रीजनकपुरतेजपैसीयलैजाइहैं ॥ व्हैहैविदेहसनेहवसजोइनशिशुनि
कीऔर ॥ मारिहैबंधुसमेतरनमिलिजयेकरिहैजोर ॥ ४० ॥ ॥ धर्मज्ञनृपतिउवा
च ॥ ॥ सोसनयभूपअनीतिसुसुनिनृपहिंउतरदीन ॥ छत्रीकहाइगवाइबलछविमन
नहोतमलीन ॥ धिक्कारतुमहिंजुसस्त्रधारनवृथागालवजाइ ॥ गएलाजनाकपिनाककेसं
गबलविधानविहाइ ॥ तिहिसमयकितगईसूरतायहअबजुप्रगटीआनि ॥ मुषभएकारेर
हततदपिनमौनलज्जामानि ॥ ज्योंचहतस्वानशृगालशशमृगराजबलिबसमोह ॥ सबभाँ
तिभाँतिनिसंपदासठलहतक्योंशिवद्रोह ॥ मिलिकरतवायसज्यौंमनोरथवैनतेयविभाग ॥
हरिविमुषजैसैंपरमपदचहभक्तिबिनुहतभाग ॥ जसबहतजैसैंलोभलोलुपपतितमहिमापुं
ज॥ कामीनलहिअकलंकतागरूवत्तमुक्तागुंज॥सौमित्ररोषजुप्रलयपावकपरिनहोहुपतंग॥
दग्धव्हैहोसकुलदलदिनत्रिणनिकरदवदंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अपनेंअ
पनेंभावभजि। भूपगएउठिभौन ॥ जगजेतारघुवीरविनु। कन्याव्याहैकौन ॥ ३९ ॥ जलनि
धिसंसयजानकी। मगनहोतमनमारि॥ कल्पलताअवलंबज्यौं। पाएराममुरारि॥ ४० ॥ ज
नकपुरीनरनारिके । साधनफलेसुभाइ ॥ जनमदरिद्रीविकलज्यौं । प्रगटमहानिधिपाइ
॥ ४१ ॥ इतिश्रीरामचंद्रमषविजयशिवधनुर्भंगप्रकरणंसंपूर्णं ॥ ॥ ६९ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ परमरम्यमिथिलापुरी । सबसंसयमिटिसूल ॥ वाजि
त्रगानविधानबढि । घरघरमंगलमूल ॥ १ ॥ बैठेसजनसमाजतहां । मुनिवरविश्वामि
त्र ॥ राजाजनकविदेहतब । प्रगटीकथापवित्र ॥ २ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ कौशि
कसुनियेहेताजिहिं । रह्योचापममग्रेह ॥ सोईअबवृत्तांतसब । कहियतनिःसंदेह ॥ ३ ॥
॥ परमधामकैलासप्रभु । एकसमयसुषअंग ॥ अग्रनिवेसितईसकै । सतीरहीतहाँसंग
॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वहिसमयशंभुलागीसंमाधि ॥ एकासनबैठेध्यानसाधि ॥
चषमिलितजोगनिद्रासचेत ॥ व्हैगएविदेहमनब्रह्महेत ॥ संबतसहस्रगतअसीसात ॥
विश्वेसजुक्ततपसाविष्यात ॥ शिवछुटीतहांतालीसंभारि ॥ जागेसुजोगनिद्रानिवारि ॥
॥ सतीवाक्यं ॥ ॥ मनमुदितसतीकीनैप्रनाम ॥ मुषधन्यधन्यकाहिधर्मधाम ॥ ॥ ज
नकउवाच ॥ ॥ परतक्षप्रजापतिपदहिपाइ ॥ अतिगर्वबढ्योउरदक्षआइ ॥ क्रतुविहि
तदक्षआरंभकीन ॥ संभारविविधनिर्मितनवीन ॥ करिसिद्धद्रव्यमषहोमकाज ॥ सबबो
लिविभागीसुरसमाज ॥ भृगुआदिआइमुनिवरसुभाइ ॥ विस्तारजज्ञकीनोबनाइ ॥ ति
हिसमयदक्षपुत्रीदयाल ॥ कैलासशंभुबैठेकृपाल ॥ आकाशवहतसुररथअसेष ॥ विस्ता
रगानकिन्नरविशेष ॥ सुररमणिचित्तनाटकसहास ॥ आनंदनाददुंदुभिअकास ॥ ॥
॥ सतीवाक्यं ॥ प्रभुकहोकहायहअप्रमाद ॥ नभमंडलकोलाहलसनाद ॥ ॥ श्रीशिव
उवाच ॥ ॥ कह्योफेरितवसुनहुभाम ॥ मषउछवहैतवपितुसधाम ॥ सुरजातबुलाए
मषप्रकास ॥ संगहोतगगननाटकसहास ॥ ॥ सतीवाक्यं ॥ ॥ मुहिकरहुदेवआज्ञा

महेस ॥ पितुग्रेहजज्ञकरीहुप्रवेस ॥ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ ॥ यहसुनहुसतीकारनअ काज ॥ हमसमयसुभाइकसुरसमाज ॥ आगमनदक्षतहांदेवआन ॥ उठकस्योसबनि आदरसमान ॥ पाउधारिदक्षतबतहांप्रमान ॥ हूंध्यानसंगअनसावधान ॥ उठिसक्यौ नहिंतिहिंअवसआप ॥ परजस्यौचित्ततातेंप्रजाप ॥ हमसौतिंहिंकारनरहितहेत ॥ मन मलिन कीनपरिजनसमेत ॥ गुरुस्वामिमित्रजोपिताग्रेह ॥ अनमोहत्यागिसिद्धांतए ह ॥ अनमंत्रणगमननउचितआज ॥ क्रतुपिताग्रेहतउकोनकाज ॥ पितुमातायद्यपिपर मप्रेय ॥ सनमानविनाजैबोनश्रेय ॥ तिहिंठौरगमननहींजुक्ततोहि ॥ मनवाचकर्म्मपूछै जुमोहि ॥ हठत्रीयाकबहुनहींदूरहोइ ॥ कोटिजोकरैउपदेसकोइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ न्यौ तिवुलाएदक्षसब । ओरसुताजामात ॥ तुमहीवांचेयज्ञते । तहांकहाअबजात ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ मनवचनजदपिवरजीमहेस ॥ पितग्रेहतदपि कीनौप्रवेश ॥ शिवसेवकपठएसतीसंग ॥ अतिसावधानसंनादअंग ॥ शिवसेवगप्रवि सीसतीआइ ॥ सबमिलीविमनदासीसुभाइ ॥ मंदादरकीनौपितामात ॥ वसक्रोधकुस लपूछीनबात ॥ ॥ बंधुबहिनीवाक्यं ॥ ॥ भगिनीसतर्ककहिबंधुभाम ॥ गंगाधरछां डेकवनग्राम ॥ हैकुशलवृषभविषसूलसेष ॥ मृगचर्मवाघवारनविशेष ॥ कनकवनभस्म मानुषकपाल ॥ करदंडज्वालितमंगलकराल ॥ स्वपताशशिभूतपिशाचसाथ ॥ मेषलीझो लिकापंचमाथ ॥ आवरनपट्टकोपीनअंग ॥ आरक्तनेत्रअलसातअंग ॥ उनमत्तबीज भृंगीअहार ॥ विषअमलचढावतवारवार ॥ संसारमोहवर्जितप्रसंग ॥ अतिग्रहेऔंघघूमत अभंग ॥ इहिंछविसौनाएइहांआज ॥ कीयजुक्तहोतहांसीअकाज ॥ सुनितर्कहास्यज हांतहांसभेद ॥ मषसालसतीआईसषेद ॥ कृतकुंडअनलप्रज्वलितकीन ॥ विधिजुक्तद्र व्यआनेनवीन ॥ सबहोताऋत्विजसावधान ॥ गावहिशुभसाषावेदगान ॥ अधिकारीम षअहिअमरआइ ॥ सबग्रहतभागअपनेसुभाइ ॥ आहूतिदानदीजतअशेष ॥ विधि जुक्तहवनसुरमुषविशेष ॥ विधिरुद्रविष्णुविनुविबुधवृंद ॥ आएसकाममषहितअनिंद ॥ दीजतसबहिनमषअंसदान ॥ कहूंरुद्रनामसुनियेनकान ॥ सोअनाचारदेष्योअश्रेय ॥ मनसतीक्रोधबढीअप्रमेय ॥ रोमांचकंपतननयनरक्त ॥ वैकृत्यवदनजीवितविरक्त ॥ उच स्यौसतीवसरोषआप ॥ शिवद्रोहीपावहुफलसपाप ॥ धरिदक्षसुताअखिलेशध्यान ॥ निहचैयहवरजाच्यौनिदान ॥ वरदानयहैमांगतविशेष ॥ भर्तारहौंहिभवभवभवेश ॥ यौंकहतमात्रअँगअँगकराल ॥ कोपानलप्रगट्योप्रलयकाल ॥ तजिदेहप्रानकीयगमन ताम ॥ भस्मावसेषरहिरुद्रभाम ॥ हाहारवतहांत्रैलोकहोइ ॥ करीयैसहाइकरतारकोइ ॥ कहाजाइपुकारहिरमाकंत ॥ त्रातानअवरतुमविनुअनंत ॥ शिवछुटीजोगनिद्रासमाधि ॥ आकारप्रलयजानीउपाधि ॥ यहकहीरुद्रसौंगननिआइ ॥ प्रभुजरीसतीअतिदुषपाइ ॥ भूतेशभएतबप्रलयभाइ ॥ कर्षिजटापटकीसुभाइ ॥ भयोजटाजन्मतवबीरभद्र ॥ अतिही असाधअमरनिअभद्र ॥ अन्नेकवीरसेन्याअसंत ॥ अतिकोपचल्योजनुकल्पअंत ॥ विध्वं सजज्ञतिहिंकस्यौवीर ॥ सिरछेदभिन्नकीनौसरीर ॥ सुरनिकरमारिकीनौसंघार ॥ भाज्यौ

सुरेसतजिराजभार ॥ सबऋत्विजहोताकर्कैसोध ॥ कृतनाशश्रादिभृगुश्रातिहिक्रोध ॥ ई
सविनुसुरनिग्रहिजज्ञश्रंस ॥ तेमारिवीरकीनैविधुंस ॥ द्विजदीनैभवविनुहोमदान ॥ निरसं
कवीरतेहतिनिदान ॥ ब्रह्मांडडोलचलिप्रलयबाइ ॥ इंद्रादिश्रमरविधिलोकश्राइ ॥ कीनी
पुकारसुरगनप्रकास ॥ निर्धारहोततवसृष्टिनास ॥ कृतकोपबीरमषनाशकीन ॥ लहिदक्ष
प्रजापतिमारिलीन ॥ करीयेप्रसांतविधिरुदकोप ॥ प्रभुहोतवेदमरजादलोप ॥ इंद्रादिब्र
ह्मकैलासश्राइ ॥ शिवश्रग्रदुष्षबरन्यौसुभाइ ॥ ॥ रुद्रोवाच ॥ ॥ सुनिब्रह्मस्तुतिचिं
तासुरेस ॥ सप्रसन्नदईश्राज्ञामहेस ॥ विधिजाइजिवावहुविबुधवृंद ॥ श्रधिकारदेहुदक्ष
हिश्रनिंद ॥ कमलभवश्राइतबदक्षलोक ॥ संग्रामदेषिउरबढ्योशोक ॥ पलचरनिदक्षसुरमृत
कपाइ ॥ षनिसीससबनिकेगएषाइ ॥ क्योंजीयहिंविनामस्तककबंध ॥ सिरगएदेहझूटोस
मंध ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ श्रंबुजभवश्रजकमलश्रानि ॥ जोरयौसुकलेवरदक्षजानि
॥ करपरसिब्रह्मतबमृतककाइ ॥ जगविदितदक्षलीनैजिवाइ ॥ पुनिद्वितीयश्रजोमुषनाम
पाइ ॥ स्वस्थानदक्षबैठेसुभाइ ॥ श्रनेकजंतुशिरठएठौर ॥ भृगुश्रादिदेवद्विजजियेश्रोर ॥
उत्तमांगश्रानश्ररुश्रानश्रंग ॥ सुरजीयेविलक्षनवदनसंग ॥ क्रोधवससंभुकीनौश्रकाज ॥
मारेजस्वसुरसालकसमाज ॥ भृगुश्रादिकरयौहोतानिभंग ॥ संघारदेवभयोदक्षसंग ॥ कृ
तनिंदितकारजाविवसक्रोध ॥ पुनिभएदयालउपज्यौप्रबोध ॥ उपजीगलांनिउरशंभुश्रानि
॥ डारयौपिनाकग्रहिप्रबलपानि ॥ भयोदेवराजषष्ठमाविदेह ॥ तिहिंसमयधनुषपरयौतासग्रेह
॥ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ ॥ शिवकह्योचापराषहुसंभारि ॥ हैन्यासभूतमेरौनिहारि ॥ ॥
जनकउवाच ॥ ॥ बहुकालभएइहिंठांवितीत ॥ प्रभुभयोसफलधनुमषपुनीत ॥ कारन
पिनाकश्रागमनकाज ॥ ऋषिकौशिकसुंकहिजनकराज ॥ इतिसतिदाहदक्षयज्ञविध्वंस ॥
॥ जनकउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौशिककारणधनुषकौ । श्रापुनसुन्यौश्रसेष ॥ श्र
बसीताउतपतिशुभ । वरनतहोंसविशेष ॥ १ ॥ एकसमयहमजज्ञथल । सुद्धकरतसहवा
म ॥ हलसीताकेश्रग्रतैं । निकरयौकुंभसकाम ॥ २ ॥ तामहँपाईपुत्रिका । पूरनश्रंगप्रवी
न ॥ तातैंसीतानामतिंहिं । द्विजनिविचारसुदीन ॥ ३ ॥ कंन्यापूजतधनुषकहं । श्रहप्र
तिधरतिउठाइ ॥ कारनतिहिव्रतधनुषकौ । हमलीनौऋषिराइ ॥ ४ ॥ वरनीतैवरद्विगुन
बल । तवसंबंधसमान ॥ कीनौपनहमधनुषकौ । तातैंनियमानिदान ॥ ५ ॥ कोशिकसी
ताव्याहतब । रह्योधनुषश्राधीन ॥ तवश्रागमश्रवधेशके । कुंवरप्रमानसुकीन ॥ ६ ॥ प्र
भुरावरेप्रसादमम । पनपूरनतापाइ ॥ जनककह्योपनकौशिकहि । वचनविनीतवनाइ ॥ ७
धनुषभंगकृतमषजयौ । सीतावरीसुभाई ॥ रामचंद्रभवचंद्रकी । लेहुबरातबुलाइ ॥ ८ ॥
सीयस्वयंवरसफलभौ । हूंकृतकृत्यऋषीस ॥ श्रबजोश्राज्ञाहोइप्रभू । सोइप्रमानममसीस
॥ ९ ॥ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि । श्राज्ञादीनीएह ॥ चारयौसु
तश्रवधेसके । व्याहहुराजाविदेह ॥ ९ ॥ जनकउवाच ॥ कौशिकविश्वामित्रकौ । कीनौबचन
प्रमान ॥ सबैकुंवरदशरथसहित । न्यौतिबुलावहुजान ॥ १० ॥ त्रिकालज्ञदैवज्ञतब ।
बोलेविप्रविदेह ॥ शुभकारकपंचांगसुध ॥ दिव्यलग्नलिषिदेहु ॥ ११ ॥ पठएदूतजुश्रवधिपु

र। महीपालमिथिलेस ॥ शुभदिनचारिवरातसाजि । आवहुअवधिनरेस ॥ १२ ॥ विश्वामित्रहिआदिदै । प्रोहितगुरुसप्रवीन ॥ विविधपुराननिवेदमत । दिव्यलग्नलिषदीन॥ ॥ १३ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वासुरतीजैअतिसजव । पहुंचिदूतसुषपाइ । कुशलपत्ररघुवीरको । दयोवसिष्ठहिआइ ॥ १४ ॥ सिद्धिजोगअभिजितसहित । वहतहुतोतिहिंवार॥ तीनकालदरसीतबहि । कह्योवसिष्टविचार ॥ १५ ॥ पत्रलगनदशरथनृपहि । लैदीनै गुरराज ॥ रामचंद्रलक्ष्मनकुशल । सुनतफलेमनकाज ॥ १६ ॥ तबनरेससोपत्रलै । वेगिगएरनिवास ॥ पटरानीकुंवरनिकुशल । पूछतप्रेमप्रकास ॥ १७ ॥ ॥ कौशल्यादिकरानीवाक्यं॥ ॥कवित्त॥ ॥काकपक्षधरकुंवरकरनिक्रीडाधनुसाइक॥वेबालकराक्षसबलिष्टलरिवेनहींलाइक ॥ मुनिवरविश्वामित्रनृपहिंजाचन्याकीनी ॥ बचनसूरअरुसुरजबंसकहेनाहनकीनी ॥ लाडिलेरामलरिकालछन, विछुरेजबहिंअदृष्टवस ॥ निकसेनप्रानतिहिंछननिलज, तौअवकहाप्रतीतितस ॥ १ ॥ ॥ राजापत्रावलोकनं ॥ ॥ स्वस्तिश्रीदशरथनरेसअवधेसवीरवर ॥ हंसवंसअवतंसजोग्यशुभपत्रप्रेमपर ॥ लिषितजनकमिथिलेससहितबंधवकुशलीसब ॥ कोसदेशकुलकुशलअषिलरावरीचहतअब ॥ हितदीनीपुत्रीचारिहम, करहुव्याहुच्यारौंकुंवर ॥ सजकैवरातचतुरंगसंग, पाउधारहुममसीसपर ॥ २ ॥ सुनतपत्रसबत्रीयअशेषआनंदउपज्जीय ॥ ज्यौंसूषतधरधानगहरवर्ष्यौंघनगर्ज्जीय ॥ वसपिपासचातकविलापमिलिस्वातिनीरसुष ॥ जनमदरिद्रीमनहुसंगनवनिधिहिलहेसुष ॥ परजरतनगरग्रीषमप्रगटिघोरिघोरिबरषतसघन ॥ कहिनृपतिरामलछमनकुशलमिलिमाताआनंदमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजद्वारअरुनगरतैं । दूतनिपाएदान ॥ धातबस्त्रमनिगनविविध । मनबंछितसनमान ॥ १८ ॥ कुशलपत्ररघुवीरको । सबहित्रियानिसुनाइ ॥ पुनिबाहिरआएनृपति । बैठेसभावनाइ ॥ १९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ आएवसिष्टकुलपूज्यओर ॥ थितभएजथाक्रमठौरठौर ॥ बहुबंधुआइबिरदैतबीर ॥ सबसभामध्यबैठेसधीर ॥ मंत्राधिकारआएसुमंत ॥ सोसचिवस्वामिहितपरमसंत ॥ अरुचतुरअंगरक्षकअनेक ॥ व्यापारजुक्तविनयाविवेक ॥ नृपमान्यमहाजनपुरनिवास ॥ प्रजवर्णवर्णआएप्रकास ॥ तवबोलिसभानृपजनकदूत ॥ पूछतसप्रेमकुशलातपूत ॥ आनंदवचनसुनिसुनिअपार ॥ विधिपूछनलागेवारवार ॥ अविलोकिरहतजनदूतओर ॥ चाहतसकामज्यौशशिचकोर ॥ आनंदनगरघरघरअनेक ॥ वाजित्रगीतमंगलविवेक ॥ ॥ मंत्रिउवाच ॥ ॥ राजासौंविनयौंमंत्रिराज ॥ करीयैप्रभुआज्ञागमनकाज ॥ महिपालदयोआइससुमंत ॥ तुमसाधहुसबदिगविजयतंत ॥ प्रारंभउचितकरीयैप्रमान ॥ नहींकालविपर्जयविधिनिधान ॥ जिहिजोग्यजथाक्रमजानजंतु ॥ तिहिदेहुउचितमंत्रीतुरंतु ॥ सिविकागजहयरथसहितसाज ॥ करिविनयदेहुवाहनसकाज ॥ आवरनपट्टबहुमूल्यओप ॥ जुतअलंकारमनिरत्नजोप ॥ आमोदविधिसौगंधअंग ॥ सन्नाधसस्त्रअस्त्रानिसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सबराजसौजानिकसीसुभाइ ॥ पूरनभंडारविस्तारपाइ ॥ मिलिसकटभारवाहक

अमेय ॥ गजकरभवृषभवामिसवेय ॥ भरिकनकद्रव्यकोटनिभंडार ॥ तहांरूपजुसंख्या रहिततार ॥ कौशेयरोमकृतसूत्रशार ॥ भरिविविधरंगवस्त्रनिसभार ॥ भरियतअनेकसौ गंधभेद ॥ आयुधछतीसजूसनअभेद ॥ रसवतीनिपुनजेराजरीत ॥ भंडारभक्षलादेअभीत ॥ भरिभक्षराजभोजनसुभाइ ॥ वरनैसकोनसंष्यावताइ ॥ लैकनककलसनिकसेकहार ॥ परषहिजुनीरस्वादिनिप्रकार ॥ कोगनैवस्तुनृपयेहकाज ॥ सबकोसकोसरक्षकसमाज ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ शुभसाजवाजसमाजशोभाराजद्वारविराजहीं ॥ नगकनकजटितजराउजीननिभांतिभांतिनिभ्राजहीं ॥ जरतारवस्त्रसुजीनसंजुतपाटदोरिप्रमानियैं॥ सबतुरगदेषसुषेतसंभवजातिअनिअनिजानियै ॥ सुषवागसाचेनटतनाचेगमनपवननिसमगनै ॥ तिरछीजुतरकनिताडितकरकनिसबहींअंगसुहावनैं ॥ प्रतिरंगरंगपवंगपाटजुअंगअंगउतंगए ॥ आरोहस्वामिकअग्रगामीयचालतेजसुभंगए ॥ आरूढओपतसुभटसामतशस्त्रअस्त्रसपूरए ॥ वरवीरधीरजुवीरविद्यासाचबाचासूरए ॥ गजपुंजगाजतसघनलाजतछत्रतुछाकेछरहरे ॥ मदअंधमातेधापधातेजलदमानहुंजलभरे ॥ सिंदूरविथुरेअरुनसिरपरसेतचामरसोभए ॥ मदलेषआसितकपोलमंडितभ्रमरशौरभलौभए ॥ वनिदंतउज्जलकनकबंगरीजरीनगमनिजोपए ॥ आरक्तपीतअनेकआकृतिपताकाध्वजओपए ॥ मदगंधमैंगलसतानिशृंषललोहलंगरलग्गए ॥ दलअग्रदंतीयप्रबलपंतीयवहतमग्गअमग्गए ॥ मिलिज्वलितमंगलचरषिचंचलअमितयौंउपमाभनी ॥ घनघटाकारिमध्यचहुंघांदमकिमानहुदामिनी ॥ सजिसुभगस्यंदनसाजसंजुतबनैविविधबिछावनै ॥ परदापसारेपाटपटमयसुरंगरंगसुहावनै ॥ प्रतिरथनिकलसपताकध्वजप्रतिफबतिनभफहरावही ॥ जुतदरदहयवरवृषभजोतेधरासजवतिधावही ॥ कृतकनककिंकिनिशुभगधुनिसुनिमुनिसुरनमनमोहये ॥ समचलतजलथलअंतरिक्षहुसवहिभांतिनिसोहये ॥ शिबिकासुषासनजातिअनअनसयनसेजसुहावनी ॥ पटरोमवस्त्रसुरंगलपटीभूपसुषसंभावनी ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गजहयरथपयदलमिलिअगान ॥ निर्घातगगनबाजेनिसान ॥ कुलदेवदेविपूजासुकीन ॥ द्विजअर्चनकरिगोदानदीन ॥ द्विजगुरुवसिष्टअरुवामदेव ॥ जाबालिरुकात्यायनअजेव ॥ दीर्घायुमार्कंडेयद्विजात ॥ पुनिविश्ववांदिकस्यपविष्यात ॥ मिलिसुकविसिद्धिचारनसमान ॥ वदिवदिसूतमागधवषान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चढेवसिष्टसुनिष्टमति । रथजुअग्रगुरुराज ॥ दिव्यरथहिदशरथनृपति, चढेसकलसुभसाज ॥ ॥ २० ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इत्यादिचलेऋषिवरअनेक ॥ आरोहरथनिबनिएकएक ॥ सहभरतशत्रुघनछत्रसाज ॥ भएरथारूढराजाधिराज ॥ निर्घोषगगनदुंदुभिनिनाद ॥ विस्तारविबुधजयजयतिबाद ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लालगवाषनिजुवतिजन । गावहिंमंगलगीत ॥ देषिवरातजुअमितदल । बरषहिंपुहपसप्रीत ॥ २१ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ शुभसगुनहोतसकाम ॥ मिलिज्याहुदूलहराम ॥ समकलसजुवतिनिसंग ॥ अरुलएपुत्रउछंग ॥ सितसुरभिसमुषसवछ ॥ पयपानदेतप्रतछ ॥ मिलिपूरदधिघटमीन ॥ करउर्ध्वमदगजकीन ॥ द्विजहस्तसपुस्तकदेषि ॥ विस्तारशुभसविशेषि ॥ लैभक्षचापसली

र। महीपालमिथिलेस ॥ शुभदिनचारिवरातसाजि । आवहुअवधिनरेस ॥ १२ ॥ वि
श्वामित्रहिआदिदै । प्रोहितगुरुसप्रवीन ॥ विविधपुराननिवेदमत । दिव्यलग्नलिषदीन॥
॥ १३ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वासुरतीजैअतिसजव । पहुंचिदूतसुषपाइ । कुशलपत्रर
घुवीरको । दयौवसिष्ठहिआइ ॥ १४ ॥ सिद्धिजोगअभिजितसहित । वहतहुतोतिहिंवा
र॥ तीनकालदरसीतबहि । कयौवसिष्टविचार ॥ १५ ॥ पत्रलगनदशरथनृपहि । लैदीनै
गुरराज ॥ रामचंद्रलक्ष्मनकुशल । सुनतफलेमनकाज ॥ १६ ॥ तबनरेससोपत्रलै । वे
गिगएरनिवास ॥ पटरानीकुंवरनिकुशल । पूछतप्रेमप्रकास ॥ १७ ॥ ॥ कौशल्यादि
करानीवाक्यं॥ ॥कवित्त॥ ॥काकपक्षधरकुंवरकरनिक्रीडाधनुसाइक॥वेबालकराक्षस
बलिष्टलरिबेनहींलाइक ॥ मुनिवरविश्वामित्रनृपहिंजाचन्याकीनी ॥ बचनसूरअरुसुरजबं
सकहेनाहनकीनी ॥ लडिलेरामलरिकालछन, विछुरेजबहिंअद्दष्टवस ॥ निकसेनप्रानति
हिंछननिलज, तौअबकहाप्रतीतितस ॥ १ ॥ ॥ राजापत्रावलोकनं ॥ ॥ स्वस्ति
श्रीदशरथनरेसअवधेसवीरवर ॥ हंसवंसअवतंसजोग्यशुभपत्रप्रेमपर ॥ लिषितज
नकमिथिलेससहितबंधवकुशलीसब ॥ कोसदेशकुलकुशलअषिलरावरीचहतअब ॥ हि
तदीनीपुत्रीचारिहम, करहुव्याहुच्यारौंकुवर ॥ सजकैवरातचतुरंगसंग, पाउधारहुमम
सीसपर ॥ २ ॥ सुनतपत्रसबत्रीयअशेषआनंदउपज्जीय ॥ ज्यौंसूषतधरधानगहर
वर्ष्यौंघनगर्ज्जीय ॥ वसपिपासचातकविलापमिलिस्वातिनीरसुष ॥ जनमदरिद्रीमनहु
संगनवनिधिहिलहेसुष ॥ परजरतनगरग्रीषमप्रगटिघोरिघोरिबरषतसघन ॥ कहि
नृपतिरामलछमनकुशलमिलिमाताआनंदमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
राजद्वारअरुनगरतैं । दूतनिपाएदान ॥ धातबस्त्रमनिगननिविविध । मनबंछितसनमा
न ॥ १८ ॥ कुशलपत्ररघुवीरको । सबहित्रियानिसुनाइ ॥ पुनिबाहिरआएनृपति ।
बैठेसभावनाइ ॥ १९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ आएवसिष्टकुलपूज्यओर ॥ थितभ
एजथाक्रमठौरठौर ॥ बहुबंधुआइबिरदेतबीर ॥ सबसभामध्यबैठेसधीर ॥ मंत्राधि
कारआएसुमंत ॥ सोसचिवस्वामिहितपरमसंत ॥ अरुचतुरअंगरक्षकअनेक ॥ व्यापा
रजुक्तविनयाविवेक ॥ नृपमान्यमहाजनपुरनिवास ॥ प्रजवर्णवर्णआएप्रकास ॥ तवबोलि
सभानृपजनकदूत ॥ पूछतसप्रेमकुशलातपूत ॥ आनंदवचनसुनिसुनिअपार ॥ विधि
पूछनलागेवारवार ॥ अविलोकिरहतजनदूतओर ॥ चाहतसकामज्योंशशिचकोर ॥
आनंदनगरघरघरअनेक ॥ वाजित्रगीतमंगलविवेक ॥ ॥ मंत्रिउवाच ॥ ॥ राजा
सौंविनयौंमंत्रिराज ॥ करीयैप्रभुआज्ञागमनकाज ॥ महिपालदयौआइससुमंत ॥
तुमसाधहुसबदिगविजयतंत ॥ प्रारंभउचितकरीयैप्रमान ॥ नहींकालविपर्जयविधिनि
धान ॥ जिहिजोग्यजथाक्रमजानजंतु ॥ तिहिदेहुउचितमंत्रीतुरंतु ॥ सिबिकागजहयर
थसहितसाज ॥ करिविनयदेहुवाहनसकाज ॥ आवरनपट्टवहुमूल्यओप ॥ जुतअलंका
रमनिरत्नजोप ॥ आमोदविधिसौगंधअंग ॥ सन्नाधसस्त्रअस्त्रानिसंग ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ सबराजसौजनिकसीसुभाइ ॥ पूरनभंडारविस्तारपाइ ॥ मिलिसकटभारवाहक

अमेय ॥ गजकरभवृषभवामिसवेय ॥ भरिकनकद्रव्यकोटनिभंडार ॥ तहांरूपजुसंख्या
रहिततार ॥ कौशेयरोमकृतसूत्रशार ॥ भरिविविधरंगवस्त्रनिसभार ॥ भरियतअनेकसौ
गंधभेद ॥ आयुधछतीसजूसनअभेद ॥ रसवतीनिपुनजेराजरीत ॥ भंडारभक्षलादेअ
भीत ॥ भरिभक्षराजभोजनसुभाइ ॥ वरनैसकोनसंष्याबताइ ॥ लैकनककलसनिकसेकहा
र ॥ परषहिजुनीरस्वादिनिप्रकार ॥ कोगनैवस्तुनृपग्रेहकाज ॥ सबकोसकोसरक्षकसमा
ज ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ शुभसाजवाजसमाजशोभाराजद्वारविराजहीं ॥ नगकनक
जटितजराउजीननिभांतिभांतिनिभ्राजहीं ॥ जरतारवस्त्रसुजीनसंजुतपाटदोरिप्रमानियैं ॥
सबतुरगदेषसुषेतसंभवजातिअनिअनिजानियै ॥ सुषवागसाचेनटतनाचेगमनपवननि
समगनै ॥ तिरछीजुतरकनितडितकरकनिसबहींअंगसुहावनैं ॥ प्रतिरंगरंगपवंगपाटजु
अंगअंगउतंगए ॥ आरोहस्वामिकअग्रगामीयचालतेजसुभंगए ॥ आरूढओपतसुभ
टसामतशस्त्रअस्त्रसपूरए ॥ वरवीरधीरजुवीरविद्यासाचबाचासूरए ॥ गजपुंजगाजतस
घनलाजतछत्रऋतुछाकेछरहरे ॥ मदअंधमातेधापधातेजलदमानहुंजलभरे ॥ सिंदूरविथु
रेअरुनसिरपरसेतचामरसोभए ॥ मदलेषअसितकपोलमंडितभ्रमरशोरभलोभए ॥ व
निदंतउज्जलकनकबंगरीजरीनगमनिजोपए ॥ आरक्तपीतअनेकआकृतिपताकाध्वजओ
पए ॥ मदगंधमैगलसतनिशृंषललोहलंगरलग्गए ॥ दलअग्रदंतीयप्रबलपंतीयवहतम
ग्गअमग्गए ॥ मिलिज्वलितमंगलचरषिचंचलअमितयौंउपमाभनी ॥ घनघटाकारिम
ध्यचहुंघांदमकिमानहुदामिनी ॥ सजिसुभगस्यंदनसाजसंजुतबनैविविधबिछावनै ॥ प
रदापसारेपाटपटमयसुरंगरंगसुहावनै ॥ प्रतिरथनिकलसपताकध्वजप्रतिफबतिनभफह
रावही ॥ जुतदरदहयवरवृषभजोतेधरासजवतिधावही ॥ कृतकनककिंकिनिशुभगधुनि
सुनिमुनिसुरनमनमोहये ॥ समचलतजलथलअंतरिक्षहुसवहिभांतिनिसोहये ॥ शिबि
कासुषासनजातिअनअनसयनसेजसुहावनी ॥ पटरोमवस्त्रसुरंगलपटीभूपसुषसंभावनी
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गजहयरथपयदलमिलिअगान ॥ निर्घातगगनबाजेनिसान ॥
कुलदेवदेविपूजासुकीन ॥ द्विजअर्चनकरिगोदानदीन ॥ द्विजगुरुवसिष्टअरुवामदेव ॥
जाबालिरुकात्यायनअजेव ॥ दीर्घायुमार्कंडेयद्विजात ॥ पुनिविश्ववंदिकस्यपविष्यात ॥
मिलिसुकविसिद्धिचारनसमान ॥ वंदिवंदिसूतमागधवषान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चढेवसि
ष्टसुनिष्टमति । रथजुअग्रगुरुराज ॥ दिव्यरथहिदशरथनृपति, चढेसकलसुभसाज ॥
॥ २० ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इत्यादिचलेऋषिवरअनेक ॥ आरोहरथनिबनिएकएक ॥
सहभरतशत्रुघनछत्रसाज ॥ भएरथारूढराजाधिराज ॥ निर्घोषगगनदुंदुभिनिनाद ॥
विस्तारविबुधजयजयतिबाद ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लालग्वाषनिजुवतिजन । गावहिंमंग
लगीत ॥ देषिवरातजुअमितदल । बरषहिंपुहपसप्रीत ॥ २१ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥
शुभसगुनहोतसकाम ॥ मिलिव्याहुदूलहराम ॥ समकलसजुवतिनिसंग ॥ अरुलएपुत्र
उछंग ॥ सितसुरभिसमुषसवछ ॥ पयपानदेतप्रतछ ॥ मिलिपूरदधिघटमीन ॥ करउ
र्ध्वमदगजकीन ॥ द्विजहस्तसपुस्तकदेषि ॥ विस्तारशुभसविशेषि ॥ लैभक्षचाषसली

ल ॥ शुभदिसाआइसुशील ॥ कृतसबदक्षनकाग ॥ भयौनकुलदरससभाग ॥ तहां लोवआइसुषेत ॥ दिशिदरसपुनिपुनिदेत ॥ मिलिदाहिनैमृगमाल ॥ समशृंगआइ सुढाल ॥ षेमंकरीसुभथान ॥ तरुशिषरबोलिविधान ॥ वरशब्दश्यामावाम ॥ तरुहारि तबैठीताम ॥ उठिपवनत्रिविधअनंद ॥ सौगंधसीतसमंद ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ज थामनोरथसगुनशुभ । भएअषिलभुवपाल ॥ संषनगारेसघनसे । बाजतचलेविशाल ॥ ॥ २२ ॥ विधिहरिहरगौरीसगुरु॥ महागनेसमनाइ ॥ वनीजानरघुवीरकी ॥ कापहँबरनी जाइ ॥ २३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभदिवससगुनदिगविजयसाधि ॥ आनंदसमूह वर्जितउपाधि ॥ चतुरंगचमूसजिजानचारि ॥ सक्रमीयवारिमग्गहविचारि ॥ ॥ छंद वेताल ॥ ॥ गजअश्वकरभनिलदेअगनितवजतमंगलवाजनै ॥ सहनाइभेरीयसमर शृंगाझांझिडिंडिमिकोगनै ॥ पंचसबदतालमृदंगपूरनवांसतंत्रीबज्जए ॥ गंधर्वकिन्नरगु नीगाननिसकलमंगलसज्जए ॥ नीसानधुनिगजघंटगर्जनिविजयचहुंदलछज्जये ॥ तिहि पूरिभूनभअंतरालयजनुघनाघनगज्जए ॥ निर्घातव्हैजुतशब्दनिसचलचमूचतुरंगनिच ली ॥ पातालपर्वतमालपृथ्वीअष्टआसाआकुली ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गरजगयंदनिसान धुनि । हयहेषारवहोइ ॥ वातपराईआपनी । कहीनसमझतकोई ॥ २४ ॥ सुरदुंदुभि नीसानसुर । बजतवारहीवार ॥ वरषिसुमनहरषतविबुध । इंद्रउछाहअपार ॥ २५ ॥ सेतबंधाएसरितसब । बासबाससुषवृंद ॥ कोरराषेसंजुतसकल । असनआदिआनंद ॥ २६ ॥ कुलमंडनरघुरामकी । जहाँजहाँवसाहिवरात ॥ तहांतहांसबसंपदा । धरीवि देहविष्यात ॥ २७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ संक्रमिप्रयानदिनचारिसेन ॥ शुभसीमआ इमिथिलासुषेन ॥ इकठीबरातसबभईआइ ॥ तहांशुभटवीरअपनेसुभाइ ॥ दौरेजुब धऊवासमयदेषि ॥ वेगजुतमिलेजनकहिविशेषि ॥ देदूतवधाईपाइदान ॥ प्रभुनिकट जानआईप्रमान ॥ संक्रम्योजनकचतुरंगसाजि ॥ वसप्रेमसामुव्हैजैंतवाजि ॥ अति वेगिनृपतिदुवअग्रआन ॥ परसपरभेटिप्रीतमप्रमान ॥ मिलिउभयराजसमधीसमोह रसविनयकरेपुनिरथारोह ॥ ४० ॥ नवनेहसहितदुवदलनरेस ॥ पुरकव्योमध्यमिथि लाप्रवेस ॥ मिलिआएजनवासैंमहीप ॥ दासीनिसजेआरतीदीप ॥ उछाहकलसआ एअनेक ॥ वनितासगानमंगलविवेक ॥ दिव्यासनदशरथबैठदेव ॥ सजिहेमछत्रचा मरसभेव ॥ ॥ विश्वामित्रजनकप्रतिवचन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विश्वामित्रविदेह राजसौंकह्योविचारीय ॥ जथावंसव्यवहारकरहुसबविधिसुषकारीय ॥ वेदविदितआचा रबूझिगुरुबंधुमंत्रिवर ॥ मंगलगानविधानकलसतोरनउछवकर ॥ सबबोलिसचिवसेवक सहित, देवसुआज्ञादीजियै ॥ जिहिंहोइनाहिनकालातिक्रम, काहुविलंबनकीजियै ॥ ४ ॥ ॥ इतिश्रीरामचंद्रवरात ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ राजादशरथमिथिलाआगमन ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामलषमनदशरथदरस । देषनकैंहँअकुलाँहि ॥ ॥ वडीसकुचअरुप्रेमवस । प्रगटकहिनगुरुपांहि ॥ १ ॥ ऋषिवरविनयविवेकलषि ।

सुषपायोसज्ञान ॥ पुत्रचलहुअवधेशपहँ । मिलियैजुतसन्मान ॥ २ ॥ आएविश्वामि
त्रतब । जनवासैसुषपाइ ॥ सुनतमात्रदशरथससुत । आपुनसनमुषआइ ॥ ३ ॥
विश्वामित्रहिसामुंहे । आएअवधिभुवाल ॥ थाहतसेसुषसिंधुमनु । लीयेसंगदोउबाल
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पाउधारितहांकौशिकपुनीत ॥ आगेसुरामसानुजअभीत ॥
अवधेसऋषहिसामुंहेआइ ॥ कीनैप्रणामदंडवतकाइ ॥ पितचरनलगेराघवप्रकास ॥ उर
लाइलएसानुजसहास ॥ अवधेसरामलएकंठलाइ ॥ शवसेसरीरमनुप्रानपाइ ॥ पुनिरामव
सिष्टहिलगेपाइ ॥ लीनैआसिषदेउरलगाइ ॥ तहांरामहिभेटेभरतभ्रात ॥ सुषसागरना
हिनउरसमात ॥ विधिजुक्तपररुपरमिलेवीर ॥ सबजीवएकअरुचवसरीर ॥ सानुजरघु
वीरहिमिल्योसाथ ॥ हितमनहुंमहानिधिचढीहाथ ॥ शुभसभाबैठिसाजनसमाज ॥ ऋ
षिराजसहितराजाधिराज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुतमिलिदशरथजिहिंसमय । बढिसुषसिं
धुसुभाइ ॥ उपज्यौआनंदकालइहिं । जौकाहुनकहिजाइ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुतबै
ठिपिताआगैसनेह ॥ धारेसुधर्मजनुदिव्यदेह ॥ ॥ सतानंदआगमन ॥ ॥ तहांसता
नंदमंत्रिनसमेत ॥ जनवासैआएहीयनिहेत ॥ सबउचितमंगलिकवस्तुसाजि ॥ विह
सितवितानीसानवाजि ॥ विधिमंगलगावहिंजुवतिवृंद ॥ उरबढेसकलजाचकअनंद ॥
सबसाजदेषिकोशलनरेस ॥ समतानलहतिसंपातिसुरेस ॥ मिलिसुतनिर्सहितनृपकीय
प्रणाम ॥ दीयसतानंदआसीसताम ॥ ॥ सतानंदउवाच ॥ ॥ मिलिमासमार्गशिर
लग्नलेष ॥ गोधूलसमयहिमऋतुविशेष ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ शुभसमयसबकल्यान
संजुतनिकटआइनरेस ॥ गुरुसहितग्रेहविदेहकैअबकरहुपुन्यप्रवेश ॥ कुलधर्मविधिव्य
वहारकरिकीरगुरवसिष्टहिअग्रकै ॥ सुतबंधुसाजनसचिवसेवकसाधुसंगसमग्रकै ॥ रथ
द्विरदहयसमसाजराजतबीरबहुआरुहबनै ॥ तहांवाजिघोरनिसानजिततितघनघुमरमा
नहुंघनैं ॥ सुषदेषिसंपतिभाग्यशोभाअमरपतिअवधेशकै ॥ मुषसहसशेषविसेषिमाहि
मासमनकोऊकहिसकै ॥ सबछयोगगनअदभूतअनंगनविबुधसिंदनिवनिरहे ॥ सुरर
मनिनाटककृतकुतूहलजांहिंकविकापहकहे ॥ दुवनृपतिसंपतिदेषदेषिसुअमरआनंदित
भए ॥ रचनाअलौकिकरीतिराजसवारवारहिंवर्णये ॥ पुरजुवतिलाजसुजालजालिनिसु
षवरातसपेषए ॥ निजभाग्यरामविलोकिरूपहिलाभजन्मसुलेषए ॥ इहिंसमयअवधि
नरेशआवनभयोग्रेहविदेहकों ॥ सुषदेषिसंपतिजनकसोभानियतहरषेनेहकों ॥ नृपद्वार
तोरणरचितनिसचलविविधऊर्द्धविशेषए ॥ सोवंदनाकरिरामसानुजप्रगटमध्यप्रवेशए ॥
तहांकलससनमुषआनितरुनीबनीसुंदरवृंद ॥ आरोपितिहिंठाँकनकआसनबैठिवरजग
वंद ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पौंषेदूलहप्रेमपट । अग्रसुवासनिआनि ॥ ताछनकौसुषसुरस
गन ॥ विधिहुनसकतिबषान ॥ ६ ॥ जुगमनरेसुरबंधुजुत । मिलेसहितउन्माद ॥ जैं
सैंजलनिधिविमलजल । मिलतमुक्तिमरजाद ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ सुषरामचंद्रवि
लोकिसबहिनअमितउरआनंदभए ॥ सारंगकंठसुस्यामतातनवसनतडितविराजए ॥ वि
धिवदनदिनकरतेजविभ्रतनैंनजलजसुहावनैं ॥ आजानुबाहूसिंघकटितटविपुलछबिदूल

हवनै ॥ वपुव्याहउचितरचेविभूषनवसनदिव्यविशेषए ॥ बनिमौरनगमनिकनकविरचितअमितछविअवरेषए ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रामचंद्रभवचंद्रदेषिइंद्रहिअनंदभय ॥ सहसविलोचनसफलजानिमनमानिब्रह्ममय ॥ दुस्सहगोतमश्रापश्रापचिंतयौअनुग्रह ॥ महाअहितहितमानिअमरप्रतिकह्योरहसियह ॥ कृतकामविवसिनिंदितकस्यौ, द्विजसुधन्यममश्रापदीय ॥ इहिंसमयदेषिअवधेससुत, लोचनछनजुगलाभलीय ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभरचितपट्टमंडपसुथान ॥ अतिहीउतंगलगिआसमान ॥ कृतकाचलितअंगनअनूप ॥ अन्नेकरंगअन्नेकरूप ॥ अधउर्द्धकनकघटपंतिओप ॥ जुतहरितवांसअवलंबजोप ॥ कनकमयकदलिरचिकाचरंग ॥ फलपत्रजुक्तओपतउतंग ॥ रुकममयरचिततहांवृक्षराजि ॥ विधिअंगरंगमीनाविराजि ॥ त्वचपल्लवमंजरपुहपतास विधिसुषदविविधकृतमसुवास ॥ अन्नेकरतनमयफलअनूप ॥ राजतप्रमानजिहिंरंगरूप ॥ करिमोतिनिंकेतरुगुछकीन ॥ नहींचीन्हिपरतरचनानवीन ॥ जुतमानरंगजिहिंठौरजोग ॥ प्रतिमासुवृक्षकृत्रिमप्रयोग ॥ सोधरेसकलसुस्थानसंग ॥ उतपन्नबाटिकामनुअनंग ॥ जुततरुतरुविविधविहंगजाति ॥ सबवातजोगकूजतसुभाति ॥ वंदनसुमालगृहगृहविराजि ॥ रतिकामवागमनुलताराजि ॥ कनकमयथंभतोरनजुकीन ॥ निर्मितमयूरतहाँतहाँनवीन ॥ बनिकलसपताकाध्वजअवास ॥ उत्तंगअषिलचुंबितअकास ॥ प्रतिद्वारबांधितोरनप्रसिद्ध ॥ सोदेषिविमोहितअमरसिद्ध ॥ जोतिमयरतनदीपकसंजोइ ॥ हसतमनुधामपरकासहोइ ॥ वेदिकारचीतमंगलविधान ॥ पुरयेसुचौकमुक्ताप्रमान ॥ कुंकुमसुरंगजुतअषितकीन ॥ प्रज्वालिधरेदीपकप्रवीन ॥ धरिरंगपट्टआसनसुधारि ॥ चहुंओरबनीचौरीजुच्यारि ॥ प्रतिचौरीशुभमंगलप्रवेस ॥ ऋत्विजतहांकीनैगुरुऋषेस ॥ सौभाग्यवतीश्रृंगारसाजिविधिजुक्ततहांजुवतीविराजि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवथलथलमंगलउचित । बारोटिव्यवहार ॥ करिचौंरीपरवेसकीय । चाखौराजकुमार ॥ परेपट्टमयपांवडे । नेगीआएलैन ॥ वरकन्याचिरजीवने । लगेअसीसनिदैन ॥ ॥ इतिचौरीप्रवेस ॥ ९ ॥

॥ श्रीरामविवाहप्रारंभ ॥

॥ बैठेमंडपमाझबनि । चाखौंदूलहुआनि ॥ होनलगेवेदनिविहित । जथाजोग्यकृतजानि ॥१०॥ उभयनरेससबंधुइहां।अद्भुतमंडपआइ॥दिषियतमानहुइंद्रद्वै । सुरसमाजसमुदाइ ॥११॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभघटितहेमआसनसुरंग ॥ अनमोलजटितनगअंगअंग ॥ निजवैठितहांदसरथनरेस ॥ साजिसीसछत्रचामरसुदेस ॥ विष्यातवीरभवहंसवंस ॥ आवरितदिव्यवस्त्रावतंस ॥ ओपतसबंधुतहांजनकआप ॥ प्रतिआसवैठेजुतप्रताप ॥ आराध्यसिद्धपरसिद्धआनि ॥ विद्याधरचारनविदुषजानि ॥ अधिकारीमागधसूतआइ ॥ सबकवितावंधूजनसुभाइ ॥ जाबालिअत्रिगोतमद्विजात॥ तहांभरद्वाजकस्यपविष्यात ॥ इत्यादिपूज्यऋषिवरअनंत ॥ महिमासुकर्मअतुलितमहंत ॥ दोहा ॥ कुलपूजितरघुवंसके । जहांवसिष्टऋषिराज ॥ वामदेवमिलिव्याहके । करतजथाक्रमकाज ॥ १२ ॥

वंदितवंसविदेहके। सतानंदसविशेष ॥ वेदप्रणीतविवाहविधि।आश्रितकाजअशेष॥१३॥
करनसमर्थजुसृष्टिकह । मुनिवरविश्वामित्र ॥ अधिकतेजतपसाअतुल। तिनकेअमितच
रित्र ॥ १४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ कीनेंवसिष्टआरंभकाज । विस्तारअनलवेदीविराज ॥
दैसमिधउचितआहुतीदीन। कृतवेदविहितआरंभकीन ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ सबऋषि
निपूजिसनेह ॥ विधिजुतराजविदेह ॥ पुनिवामदेववसिष्ट॥परिपाइपूजिप्रतिष्ट॥देवसनभू
षनदान ॥ सबभांतिकृतसनमान॥ अर्चेसुअवधिनरेस ॥ सौगंधद्रव्यसुदेस ॥ सबहंसबंसी
साथ ॥ हितपूजिजोरेहाथ ॥ ॥ द्विजवेषब्रह्मादिकआगमनं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वि
धिहरिहरदिगनाथसब। दिव्यप्रभावदिनेस ॥ आएव्याहउछाहवस । साजिकपटद्विजवे
स ॥ १५ ॥ संपतिसोभासुषसमय। देषिविविधव्यवहार ॥ मंडपवेदेशिकमिसहि । आइ
मध्यअनिवार ॥ १६ ॥ निरषिअपूरबद्विजतिनहि। आसनउचितबिछाइ ॥ पूजाअर्चाप्रे
मपर। करीविदेहबनाइ ॥ १७ ॥ रामचंद्रजानैरहसि। देवकपटद्विजदेह ॥ कीनीपूजामान
सिक ॥समयविचारिसनेह ॥१८॥ पहिचानतअपनेनपर ॥ सबभएविवससनेह॥ रामस्व
रूपपीयूषरस। देषतभूलेदेह ॥ १९ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ शु
भसमयकह्योवसिष्ठऋषिवरसतानंदहिप्रेमसौं ॥ करिबसनभूषनजुक्तकन्यासबाहिआनहुषे
मसौं ॥ ॥ ब्रह्माणिआदिलेदेवस्त्रीआगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विधिविष्णुरु
द्रहिआदिदैसमविबुधवनितातनबनी ॥ तिहिसमयअंतःपुरप्रवेसितकपटवेषजुकारनी ॥
छबिरामदूलहसीयदुलहिनिव्याहुदेषनव्याकुली ॥ कृतकपटरूपअनूपकामिनिमांझरनि
वासहिमिली ॥ इहिबीचगुरुरनिवासअंतरसतानंदसुआइ ॥ विधिसहितलग्नविशेषवे
लासबनिकहीसुभाइ ॥ तहांसुनतरानीविप्रवानीसुषनचित्तसमावहीं ॥ वरविप्रत्रीयकु
लवधूवृद्धाअतिप्रफुल्लितआवहीं ॥ नृपनारिकारिकुलरीतिनैगमविहितकर्मविशेषए ॥ इ
हिंसमयव्ययजोपुन्यआश्रितलक्षआढकलेषए ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सजिमज्जना
दिषोडशसिंगार ॥ विधुवदनविलोकितवारवार ॥ लषिसोभाजननीलोनलेति ॥ न्यो
छावरिदीनवधूनिदेति ॥ निमिवंशनिमंत्रितमुष्यनारि ॥ अवलोकिसीयहिजलपीयतिवा
रि ॥ नृपरानीदीयआज्ञासनेम ॥ पधरावहुदुलहिनिसहितप्रेम ॥ गुरुवधूसमंगल
गानगीत ॥ पधराइसीयहिमंडपसप्रीत ॥ आवरितमानजुवतीअनेक ॥ बिचचलीकुंव
रिगजगतिविवेक ॥ निरषनसुषमिलिचलिंअमरनारि ॥ कृतकपटरूपत्रीयमोहकारि ॥इहिं
भांतिकुंवरिमंडपहिआइ ॥ समजुवतिवृंदमंगलसुभाइ ॥ तहांप्रेमजुक्तकन्यापुनीत ॥ सं
गरामचंद्रबैठारिसीत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुतासीलध्वजजनककी । सियाअजोनियजा
नि ॥ भईउर्मिलाऔरसी। विश्वविदितशुभवानि ॥ २० ॥ हुतीकुशध्वजभ्रातकौं । द्वैपुत्रि
कासुदेश ॥ महासुलछनमांडवी । श्रुतिकीरतिसमवेस ॥ २१ ॥ सीतारामसमर्पितासा
ध्विउर्मिलाशेष॥ भरतमांडवीरिपुघनहि । श्रुतिकीरतिसविसेष ॥ २२ ॥ तबबैठारेक्रम
जुगत। वरकन्यागुरुवाम ॥ तहांवसिष्ठसुनिष्टमति । करतभएशुभकाम ॥ २३ ॥ ॥ छं
दपधरी ॥ ॥ तहांप्रथमसविधिपावकपुजाइ ॥ गुरुदुहुदिसकेधुनिवेदगाइ ॥ सुरपू

जिसबैंगोरीगनेस ॥ आचारहोनलागेअसेस ॥ आएजुदेहधरिविप्रवेद ॥ आनंदबढत साषाअषेद ॥ मधुपर्कआदिमंगलसमूल ॥ कृतहोनलगेसबसानुकूल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजजनकपटरागिनी । मिलिगुरुजुवतिसमाज ॥ आईमंडपमांझतब । कंतसमीप सकाज ॥ २४ ॥ जोरिगांठराजाजनक । पटरानीसपुनीत ॥ ज्यौंहिमगिरिमयनावती । रुद्रव्याहरसरीती ॥ २५ ॥ वामअंगबनितावनी । दक्षिनराजविदेह ॥ निकटवेदिकेआ इनिज । दंपतिसहितसनेह ॥ २६ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कोपरकनकअग्रलैधर यो ॥ जालीजतननगनिमनिजरयो ॥ कनककुंभजलजनकमंगाए ॥ सुचिसुगंधबहुविधि निबनाए ॥ अगमनिगमकहीसबहीमा ॥ श्रीरामचरनोदकमहिमा ॥ रामचरनकरजन कपषारे ॥ जेसदेवसंकरउरधारे ॥ जेपरसेभईगंगपुनीता ॥ विबुधविदितत्रैलोकविनीता जिहिरजपरसतगोतमनारी ॥ सिलतनतजिसदगतिहिसिधारी ॥ जिनकेध्यानविवसमु निजोगी ॥ विषयविजोगसाधुसंयोगी ॥ नभफूव्योपदनषाहिप्रहारा ॥ तिहिंमगसुरसरि ताअवतारा ॥ जेभुजगेसशेशासिरसोभित ॥ लाभसकेलिलेतमनलोभत ॥ जेकमलाकु चकुंकुममंडित ॥ वंदितसुरनरपापविषंडित ॥ जेपदविधिविशेषउरधारे ॥ परमसनेहवि देहपषारे ॥ पादोदकजेसुरनिपियारे ॥ जनकसवामसीसलैधारे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जन कभएकृतकृत्यतहां । रामचरनजलसीस ॥ धारतवरषेसुरसुमन । दीनीऋषनिअसीस ॥ २७ ॥ जलकरअंजुलिरमानिजुत । जनकग्रहेशुभजोग ॥ सीतारामसमर्पिता । पूरन मंत्रप्रयोग ॥ २८ ॥ चरनपषारेवरनिके । कृतकन्यासंकल्प ॥ दीनीविधिजुतशुभदिव स । विगतअनेकविकल्प ॥ २९ ॥ वरवरनीसिरमौरबनि । मनमुक्तामयमानि ॥ जान हूंसोभाजगतकी । एकठौरभईआनि ॥ ३० ॥ वरकन्याजुतवेदविधि । करकरग्रहनजु कीन ॥ उभयउत्तरीयओरतहां । द्विजनिग्रंथशुभदीन ॥ ३१ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ प्रतिग्रेहद्वारनिवेनुपरदारीझरंगसुरंगए ॥ तिनमध्यनिरषतिराजरमनीअतिप्रमोदितअं गए ॥ सौभाग्यवंतीजुवतिअतिसुषगीतमंगलगान ॥ दृगदीर्घतहांसकटाक्षडोलतजा लमीनसुजान ॥ गृहजालरंध्रनितरुनिजोवतिगोषगोषनिगाइ ॥ प्रतिशब्दमिलिझंकार पूरितसौधसौधसुभाइ ॥ दिसिदिसिनिसंकुलजूथदासिनिनवउछाहनिहारही ॥ मुषगा नमंगलविपुलमिलिमिलिविविधतर्कविथारही ॥ ॥ अथगोत्राचारकथनं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गोत्राचारवासिष्टगुर । कहतभएशुभकाज ॥ सुनतजथाविधिपुन्यसुष ॥ मुनिवर राजसमाज ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ बढिवेदस्मृतिविचार ॥ इहांचल्योसाषोचार ॥ भवभूतहरिभगवंत ॥ इकसमयदेवअनंत ॥ प्रभुशेषफनपर्यंक ॥ सुषसयनकीनानिःसंक ॥ बढिप्रलयजलतिहिवार ॥ अतिसयअगाधअपार ॥ थितना भिकूपसुथान ॥ मिलिपंकनीरप्रमान ॥ करतारनाभीकूप ॥ उतपन्नकमलअनूप ॥ कृत वृद्धिवसतिहिकाल ॥ समसलिलनालविसाल ॥ जलअंतनालसुजाइ ॥ सोईकमलविक सिसुभाइ ॥ अद्वितीयपंकजएक ॥ आमोदप्रसरअनेक ॥ तिहिंकमलतेअवतार ॥ अनजोनिब्रह्मउदार ॥ उत्पन्नविस्मयआप ॥ मनभ्रमितभौअनमाप ॥ अवकौनहूंकहा

आइ ॥ ममकौनधौंपितमाइ ॥ कोवर्णनामविशेष ॥ उरबढ्योभ्रमजुअशेष ॥ बिचकम लनीलबिसेस ॥ पुनिकस्योछिद्रप्रवेश ॥ बहुगएकल्पविहाइ ॥ पैनालअंतनपाइ ॥ प्रभुनाभिरंध्रप्रचार ॥ विचउदरगौतिहिवार ॥ भववीतितहांभ्रमंत ॥ तउउदरपाइन अंत ॥ विधिभएभ्रमतविहाल ॥ निकसेसुपथतिहिंनाल ॥ गतगर्वभौतहांज्ञान ॥ महिमासुजानिअमान ॥ बलबुद्धिगतज्यौंबाल ॥ कृतदीनतातिहिंकाल ॥ प्रभुदीनबं धूदेव ॥ अनवद्यअमितअजेव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मूलवरनधरिषोडसम । इकस मबीतियआनि ॥ साधहुआपुनजतनसौं । विष्णुकह्योनभवानि ॥ २ ॥ छंदउधोर ॥ विश्वाससुनिनभबाच । सोइंकमलभूग्रहीसाच ॥ तिहिंकमलबैठिसुताम । कृतध्यानसविधिअकाम ॥ मनलगीजोगसमाधि । सबक्षुधातृष्णासाधि ॥ समभावइंद्रीयसोध । बहु उपजिअंतरबोध ॥ परपुरुषध्यानसप्रीत । वसतपहिकल्पवितीत ॥ ॥ छंदपधरी ॥ सोइजानिसंतमनबचसमेत ॥ हरिदयौदरशतपउग्रहेत ॥ तिहिछनविदेहगतिलषिअनं त ॥ करपरसकस्योतबरमाकंत ॥ चेतनासक्तिभईवदनचारि ॥ निजरूपसगुननयननिनिहारि ॥ आनंदअश्रुरोमांचअंग ॥ उरउपजिभावसात्विकअभंग ॥ देवाधिदेवविधि नामदीन ॥ पददयौसृष्टिकरताप्रवीन ॥ विधिभएप्रजापतिचितविचार ॥ उतपन्नतेज मिटिगोअंधार ॥ नवद्रव्यबीजउतपत्तिनाम ॥ तहांभएचराचरजीवताम ॥ महिवातग गनजलतेजमेल ॥ खंभूमिसलिलचररचितषेल ॥ धरिकालमूलअरुजीवधात ॥ विस्ता रसृष्टिवेदनिविष्यात ॥ चत्रषानिभूतभवअसीचारि ॥ वसकर्मभोगसुषदुषविचारि ॥ विस्तारविश्वमायावियाप ॥ अरुरहतिसबनितेंदूरिआप ॥ कृतउर्ध्वपाइपदब्रह्मलोक ॥ सबबसतब्रह्ममयसुरअसोक ॥ चववदनवेदवानीसुचारि ॥ कृतकर्मलोकउद्धारकारि ॥ उपजेमरीचिविधिउदरआइ ॥ सुतभएतासकस्यपसुभाइ ॥ कस्यपप्रजापउरसानुकूल ॥ विवस्वानभएमनुधर्ममूल ॥ मनुवैवस्वतभएमहीपाल ॥ विस्तारवंसतनतेविसाल ॥ इक्ष्वाकुभएआषंडलेस ॥ सुततिहिंविकुक्षउपज्योविसेस ॥ उपजेककुत्स्थअतिबलअभीत ॥ पुनिभएअनेनाप्टथुपुनीत ॥ भएविश्वरंध्रसुतचंद्रवीर ॥ युवनाश्वधर्मसावससुधीर ॥ बृहदश्वकुवलयाश्वकविनीन ॥ उपजेदृढाश्वतिहिंसुतअभीत ॥ हरिजश्वभएसुतपुन्यहेत ॥ महिभएनिकुंभदलछलसमेत ॥ वरवीरभएनृपवर्हणाश्व ॥ समधर्मकर्मराजाकृशाश्व ॥ सेनाजितभएयुवनाश्वसूत ॥ पृथ्वेसमांधातासपूर ॥ पूरूकुशपुत्रत्रसदस्युपाइ ॥ अनरण्यग्रेहहर्यश्वआइ ॥ अरुणाहिनिबंधनपुत्रनाम ॥ सत्यव्रतनृपातित्रिशंकुताम ॥ चववेदसहायकहरिश्चंद्र ॥ अवतारसत्यअवनीशइंद्र ॥ रोहितनरेसभएहरितराज ॥ चंपकसुदेवभुवछत्रभ्राज ॥ पुनिविजयभरूकट्टकभएवीर ॥ बाहुकसुधर्मजुतसगर धीर ॥ असमंजसराजाअंशुमान ॥ प्रगटेदिलीपभूयवैप्रमान ॥ क्रमनृपतिभगीरथउग्रकीन ॥ पुहवीसुआनिगंगाप्रवीन ॥ श्रुतभएनाभपुनिसिंधुद्वीप ॥ अयुतायुप्रगटेपुरपृथ्वीप ॥ ऋतुपर्णभएमहिसर्वकाम ॥ तहांभएसुदाससौदासताम ॥ अश्मकपुनिमूलकभएआप ॥ दशरथजुऐलबिडदुसहदाप ॥ विश्वसहभएषट्वांगवीर ॥ भएदीघबा

हुरघुअजसधीर ॥ दशरथद्वितीयभयौविश्वदेव ॥ सविशेषसुरासुरकरतसेव ॥ राजाधिराजसुतरामचंद्र ॥ अवतारकुंवरपुहमीशइंद्र ॥ इक्ष्वाकुवंशवरन्योअशेष ॥ वरवृद्धिहोहुवैभवविशेष ॥ जोरीवरवरनीचिरंजीव ॥ दिनदिनप्रतापरक्षकदईव ॥ ॥ दोहा साषोचारवसिष्टशुभ । वर्णिकह्योरघुवंस ॥ पुन्यपराक्रमतेजपन । पृथ्वीप्रगटप्रसंस ॥ ॥ ३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ निराकारनिर्लेपनियतनिरवद्यनिरामय ॥ निहकलंकनिःसंकनाथनरसिंघनिपुननय ॥ नीरधिजातानारिनेहवामांगनिरंतर ॥ निगमहेतनिर्वसकरे निस्सेषनिशाचर ॥ त्रैलोक्यराजदाताअतुल, दीनसहाइकदुष्टदम ॥ सोइवंसधन्यनरहरसुकवि, जिहिसुरामलीनौजनम ॥ २६३ ॥ इतिश्रीरामचंद्रसाषोचार ॥ शीलधजउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहितबशीलध्वजजनक । सुनहुंवसिष्टऋषेस ॥ कहहुहमारोकरिकृपा । वरनिमिवंसविशेष ॥ १ ॥

॥ अथजनकगोत्राचारकथनं ॥

॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ कह्योवसिष्ठविदेहसौं । विवरिसविस्तरवात ॥ सुनहुभएनृपमूलसौं । जेतवकुलविष्यात ॥२॥ वैवस्वतमनुकैभए । नृपइक्ष्वाकुसुनीत ॥ तिनतेबाढ्योवंसवर । परमपुन्यसौंप्रीत ॥ ३ ॥ कुलमंडनइक्ष्वाकुकै । निमिभयौपुत्रनरेस ॥ सोबहोतअवनीतप्यौ । दुर्गमदलबलदेस ॥ ४ ॥ उपज्यौपर्वतनेमिमह । कोउकारनपाइ ॥ तातैपायोनामानिमि । सबैसमृद्धिशुभाइ ॥ ५ ॥ राजानिमिकैंपुत्रभौ । महावीरमिथिनाम ॥ प्रगटकरीमिथिलापुरी । धनपूरनधरधाम ॥ ६ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ मिथिपुत्रजनकविदेह ॥ भएउदावसुदिविदेह ॥ नृपनंदिवर्धननाम ॥ पुनिभएसुकेतजुताम ॥ भएदेवरातसुभाइ ॥ इहिंग्रेहशिवधनुआइ ॥ पुनिबृहद्रथकुलदीप ॥ भएमहावीर्यमहीप ॥ भएसुधृतराजनरेस ॥ दुतिधृष्टकेतसुदेश ॥ दिविदरशहर्यश्वदेह ॥ मरुसदासुकृतसनेह ॥ भवभौप्रतीपकभूप ॥ अरुकृतिरथजुअनूप ॥ भयेदेवमीढदयाल ॥ विश्रुतसुबाहुविसाल ॥ भयोमहाधृतजुमहीप ॥ पुनिकृतिरातपृथ्वीप ॥ नृपमहारोमानाम ॥ धनस्वर्णरोमाधाम भएऱ्हस्वरोमाराज ॥ भवजनकसंज्ञाआज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ताकैसीलध्वजजनक । अनुजकुशध्वजएक ॥ विद्याविनयविवेकविधि । करतसुधर्मअनेक ॥ ७ ॥ आगैंकहीयैनामए । पाछैजनकप्रमान ॥ यहसंज्ञानिमिवंशनृप ॥ प्रगटसुलोकपुरान ॥ ८ ॥ पावनसीतापुत्रिका । रामचंद्रजामात ॥ सीलध्वजफलसुकृतकौ । पायौविश्वविष्यात ॥९॥ कृतजुतदोउवंसके । शाषोचारसुनाइ ॥ होमजथाविधिहोनलगि । शुभविवाहसुषपाइ ॥ १० ॥ कहेवंसनरहरसुकवि । आपसुनैअनुसारि ॥ विवसभूलछमिजैविदुष । सज्जनपढहुसंवारि ॥ ११ ॥ ॥ इतिश्रीनिमिवंशवर्णनं ॥ इतिवंशकीर्तनं ॥ ॥ ॥छ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ करग्रहनआदिसुकृत्यकरिकरिशतानंदवसिष्ट ॥ पुनिवामअंगनिआनिवामांगिलहिमनइष्ट ॥ परिक्रमणमंगलभाँवरिपरपानिकर्षतिपानि ॥ पतिअग्रदुलहनिघृष्टिपावनिप्रीतवृद्धप्रमानि ॥ तहांदईविप्रनिपूरनाहुतिवेदविधि भएव्याहु ॥ भुवगगनधुनिजयजयतिभाषाउरअशेषउछाहु ॥ सुरसुमनवरषेहीयनिहरषे

विबुधदुंदुभिबाजहीं ॥ मिलिगानतानानिऋपछरागनगगनमंडलगाजहीं ॥ नृपद्वारवा
जिनिसाननिर्भरनभधरासंनाद ॥ पुनिलहेजाचकदानरपूरनविहिसिजयजयवाद ॥ उर
जनकअतिआनंदउपजेनयनसुषजुनिहारि ॥ कृतकुलाचारसवामकोनैवारिपीनेवारि ॥
नृपजनकबहुरीपाटरागिनिपरमआनंदपाइ ॥ गनिसिद्धिसबजनुबांधिगाठिहिआपनैगृह
आइ॥ दोहा ॥ ॥ ज्योंहिमगिरिगिरिजाहरहि । श्रियाहरिहिजलरासी ॥ त्योंविदेहराम
हिदई । सीतासबसुषरासि ॥ १ ॥ सिविकाआरूहरामसीय । यौंजनवासैंआइ ॥ मकर
ध्वजरतिव्याहमनु । जयनिसांनबजाइ ॥ २ ॥ कूंवरकहतजनवासकह । मिलिसुषमंगलमू
ल ॥ नभनिर्घोषनिसानधुनि । सुरगनवर्षतफूल ॥ ३ ॥ जनवासेदुलहनिसजुत । दूलहु
सबैसिधाइ ॥ दशरथनृपतिविदेहतब । विदाकैरेपरिपाइ ॥ ४ ॥ सबैबिलोकिविवाहसुष ।
उमगतदेतअसीस ॥ अतिआदरआनंदसौं । डेरनिगएऋषीश ॥ ५ ॥ सुषहिविहानीसर्व
रि । दिनकरदरसनदीन ॥ सुरपूजानितकृत्यसब । लोकजथाक्रमकीन ॥ ॥ अथजन
कप्रसंसा ॥ ॥ जनकविदेहसनेहसौं । संजुतऋषिनिसमाज ॥ जनवासैंअवधेसपंहं ।
आएसमयसुसाज ॥ ७ ॥ सनमुषआएअजसुवन । प्रेमसहितपधराइ ॥ धर्मसत्यमनुदेह
धरि । बैठेसभाबनाइ ॥ ८ ॥ सतानंदउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तबसतानंदसब
हितसुनाइ ॥ यहकहीविहितविनतीबनाइ ॥ तुमसबैब्रह्मऋषिवरविनीत ॥ पाउधारेइहिं
ठांजगपुनीत ॥ निमिवंससरिसतुमकृपाकीन ॥ नहिंबरनिजाइइकमुषनवीन ॥ ॥ जनक
उवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ साधतसिद्धसमाधिजोगआराधतजोगी ॥ तउनहींदरसन
होतरहतनितविषयवियोगी ॥ रूपनरेषविसेषआदिअवसाननआवत ॥ निगमागमहूंपुरा
नकोउनकहूंहेतबतावत ॥ जोवसतनिरंतररुद्रजीय, जुनजानीमुषचारिजुत ॥ सोईजोति
देहधारेसगुन; सबनिदिषाईगाधिसुत ॥ १ ॥ जिनकेकुलतपतेजपुन्यजलवसुहविहारिय॥
जिनकेसत्यसदेहअवधिसुरलोकसिधारीय ॥ जिनकेसुतपदरजहिपाइशिलत्रीयतनपा
यौ॥ हरधनुभंज्योजीतिजज्ञवरसुजसचढायौ जिनआसुरसमरअनेकजय,ऋषिसुरेसरक्षा
करिय ॥ महिमाप्रसिद्धजिनकीअमित, हमकौंअमरनिउद्धरिय ॥ ॥ राजादशरथउ
वाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ दुर्लभ्यहमहिरावरीदासि ॥ पुनिदीनीपुत्रीरूपराशि ॥ र
विवंससरिसतुमजनकराज ॥ कीनौजुअनुग्रहव्याहकाज ॥ पूरनप्रमोदसगपनप्रमानि ॥
जुगभएराजमनुयकजानि ॥ ॥ भरद्वाजउवाच ॥ ॥ सुषदुष्षजएतुमएकसंग ॥ नृप
ताअरुपायौपदअनंग ॥ कोउएकबडोकुलमहकहाइ ॥ कुलकरतगर्वतिहिंवचनकाइ ॥ प्र
तिपुरुषनितुमराजापुनीत ॥ गावतजसजिनकेसिद्धगीत ॥ कोउहोतसुषीइहिंलोकएक ॥
उहिंलोकनिरयविलसतअनेक ॥ दुषसहितकोउइहिंलोकदेह ॥ सोउहांस्वर्गभुकततसनेह
॥ दुवलोकसहितकोउगारिदीन ॥ भवभएभ्रष्टअघजालभीन ॥ प्रतिलोकलोकमहिमाप्र
काश ॥ मिथिलेशनकीसमसावकाश ॥ सवैया ॥ जोगहुंभोगसंयोगवियोगकेपूरनपुन्यप्र
योगप्रकासे ॥ राजससात्विकभावनिकेसुषकष्टकरेरिपुरोरविनाशे॥ रससस्वादअनेकविषादवि
नापदवीजुगसाधिप्रमोदप्रभासे ॥ अदभुतचरित्रविदेहनिकेसुनिदेवअदेवनरेससभासे ॥

॥ १ ॥॥ जाबालिरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मनिजोतिजदपिअतिअप्रमान ॥ दिनकरसंयोगबाढतनिदान ॥ नितहुतेनिशाकरवंदनीय ॥ लहिशंभुभालमहिमासुलीय ॥ सुरसरितपवित्राहीशुभाइ ॥ पदवामनपावनताहिपाइ ॥ निमिवंशहुतीमाहिमविशेष ॥ सीयआगमपुनिबाढीअशेष ॥ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतशुभजनकनरेसके । वेदविदितविष्यात ॥ सीतापावनपुत्रिका ॥ जगकर्ताजगमात ॥ ९ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जनकनृपतिअवधेसजुत । मंदिरआनिमहीप ॥ बैठेभोजनशालबनि । अषिलसंगअवनीप ॥ १० ॥ बैठिजथाक्रमपांतिबहु । बर्णचारिशुभवेस ॥ आसमुद्रजाचकअवर । वरनिनजाहिविशेष ॥ ११ ॥ जनकचरनअवधेसके । पुत्रनिसहितपषारि ॥ अनमोलिकआसनउचित । जथाजुगतबैठारि ॥ १२ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रतनजटितचोकीजुकनककरि ॥ धोयनृपतिदशरथआगेंधरि ॥ मनिमयथालविमलविस्तीरन ॥ तापरधरेमध्यबेलागन ॥ स्वर्णरजतमयथालसुहाए ॥ भूपनिअग्रधरेमनभाए ॥ परुसनलगेसुवारसपावन ॥ भोजनसतरहविधिमनभावन ॥ अरुमिष्टान्नविविधिबहुआए ॥ जेजुवतिनिबहुभांतिबनाए ॥ समघनसारअनेकसुगंधनि॥ बंछितस्वादअनेकभांतिबनि ॥ पांतिपांतिक्षनमहंपरुसारौ ॥ पूरनभयौअमृतपनवारौ ॥ थितचवकुंवरपिताइकथालहि ॥ करतभएभोजनशुभकालहि ॥ दासीजूथजूथमिलिदिशदिस ॥ बनीसिंगारवनाइनेहबस ॥ गारितर्कजुतगीतसुगावति ॥ सोदशरथसबनृपनिसुनावत्ति ॥ ॥ दासीवाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गावैहिंगारिदशरथकुमार ॥ शुभपितासुजससुनीयेसुढार ॥ बहुबीरबिडारेछीनिबाम ॥ कुकलत्रकरिसोईविवसकाम ॥ यहकर्मकख्योदशरथअभूत ॥ पितुकीरतिसुनहुंसुतसपूत ॥ कछुताहूकेसुनियेसुभाइ ॥ हमजथाशक्तिवरनहिंबनाइ ॥ ताकेकोजानैचरिततंत्र ॥ मानैनहिंकाहूजंत्रमंत्र ॥ उरनहिनदयादुषदेषिआन ॥ सुषमानतकरिश्रोणीसनान ॥ ॥ छंदसारसी ॥ ॥ कुकलत्रकीनीरसहिभीनीनितनवीनागरी॥ मनविश्वमानीजगतजानीअतिहिलक्षनआगरी॥कोगनैकीनैनितनवीनैपतिजुअवसरपाइकै ॥ कृतकर्मताकेविषमवांकेसबैकहैसुनाइकै ॥ परपुरुषप्यारीनिलजनारीसुनहुदूलहसांवरे ॥करनीकुलच्छनमिलितनमनरत्तपित्तसौरावरे॥ दिविरत्नदेहीरूपरेहीनित्यनवनवजोवनी ॥ गिरिरेषकज्जलवसननिधिजलअरुनकंचुकिअनतनी ॥ वनिनीललहंगामोलमुहंगाअतिहिपतिरतिआतुरी ॥ उपरैनिसोहैमननिमोहैचित्तचंचलचातुरी ॥ नागेशफनमनिसेजसुषगानिसहजसौरभसुंदरी ॥ दिसउदयपदधारिअस्तशिरकरिभोगजुतनितरसभरी ॥ हठलग्योहरिणयरीझिसिषनषकपटहरनजुतिहिंकीयौ ॥ कृतगुप्तपापीसुतलथापीलाभदेयततिहिंलियौ ॥ तिहिकालतिहिथलबढिप्रलयजलउपजअन्नअोषधी ॥ मिटिमषनिचर्चाअमरअर्चाब्रह्मउरचिंतावधी ॥ लिषिअषिलईश्वरप्रभुदयापरविषदजज्ञवराहव्है ॥ वारिधिविहारीयधरउधारीयछनकहींरहिअग्रछै ॥ नृपवेणुनवलापाइप्रबलाभामकरिकछुभोगई ॥ भवपापभीनीमहमलीनीभारपीडततहँभई ॥ ऋषिशापरौरवदाहमनुदववेणूंजारिवित्तयौ॥ सोउभुगतिभांज्योजातछांज्योचलतनैकुनाचि

त्तयौ ॥ बहभईविव्हलमिलितअघमलरसनिग्रासियौहींरही ॥ प्यारीपराईपृथुजुपाईसहित आदरसंग्रही ॥ तवहियोहरष्योप्रेमपरष्योसुद्दिताकीनीसवै ॥ शृंगारसाजेबजेबाजेतिहि नृपतिमुक्तितवै ॥ परलोकपायौअनअघायौपृथुहुछांडीप्रीतिसौं ॥ नहिंशोककीनौमनमली नौनियतनेहअनीतिसौं ॥ तिहिंसमयजुतपहिरणकस्यपदैत्यअतिबलदेषिकै ॥ परग्रेह पैसीअजहुंवैसीवपुसुरूपविशेषकै ॥ तसरसहिरातीमदनमातीताहिनहींइकछनतज्यौ ॥ अनयासपायोप्रियपरायोभांतिभांतिनिसौंभज्यौ ॥ अतिगर्वयाकैचित्तताकैअनाचारजु आदस्यौ ॥सुतहतनिसाधहिअनपराधहिकर्मअंगीकृतकस्यौ ॥ अनरतप्रवेसैअतिअनेशे सर्वव्यापकक्यौंसहै ॥ दीनहिदुषारेलषिमुरारेकरतरक्षानितरहौ॥थिरफारिथंभायहअचंभा निकटप्रगटेनरहरी ॥ प्रहलादराष्यौसुरनिसाष्यौवातनिगमनिविस्तरी ॥ भइषेदषीनी छिनिमलीनीदैवहरिचंदहिदई ॥ सबसारदीनैनितनवीनैभूपतिनहूभोगई ॥ दुष्टासुदे षीविधिविशेखीउदकजुतद्विजअर्प्पई ॥ पृथ्वीपवित्रहिविश्वामिपहिहरिश्चंद्रसमर्प्पई ॥ द्वि जदीनजान्योमननमान्योबलीबलिदेपतिवस्यो ॥ सोषीनतापसविरतिकेवसआजन्मव्रत आचस्यो ॥ परपुरुषपावनभएबावनबचनछलविस्तारयौ॥महिनृपदमापीडरेपापीभृगुसुव नविनुचखभयौ ॥ नृपनियमनाध्योबलिसुबांध्योअषिलभुवअपनाइकै ॥ कृतकपटकरनी लईधरनीदईइंद्रहिआयकै॥तिहिइंद्रत्याग्योमननिलाग्योसुन्योहैहयअतिबली॥वासववि गोयोदुषनिरोयौचित्तचापलउठिचली॥वरवस्योअर्जुनमिलितनमनसहसबाहुसुजानयौ ॥ तिहिंमनजुमानीपाटरानीमोहमयरसमानयौ ॥ छविमदसुछाक्योहितनताक्योजमदगनि मुनिमारयौ ॥ तपअगनितिहिंछनरोषधीरमनपरसुरामसुजारयौ ॥ वरवयरबांध्यौनि यमनाध्यौछत्रिकुलबलछेदयौ ॥ रुधिरनिन्हवायोनिगमगायोद्विजनिमहिमंडलदयौ ॥ कृतपितरअर्प्पनरुधिरतर्प्पनरहेसरसरिताभरे ॥ इकईसवेरांअमरआनंदकुसमजयवर्षा करे ॥ दुष्टाविशेषीद्विजनिदेषीनीतिधर्मनजोइहै ॥ रहिहैनराषीसहजसाषीबलहिजाइवि गोइहै ॥ इकईसवारीचितविचारीमुनिनिछांडीमाषकै ॥ याकेअलौकिकरावणादिकउरर हेअभिलाषिकै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ साकुवामविक्रमसहित । कुंवरपितातवकीन ॥ करी विनाहिस्वतंत्रअब । राषहुवचनअधीन ॥ १३ ॥ अमतरहीभवभूपभजि । पैनहि थिरतापाइ ॥ अबदशरथअवधेसकै । सदारहोसुषदाइ ॥ १४ ॥ त्यौंकरिराषहुआज तै । याहिनपावैओर ॥ नित्यरहोनृपग्रहनियत । रामकुंवरकुलमौर ॥ १५ ॥ तर्क भेददासिनितहां । गाइसुनाईगारि ॥ रीझेराजाराजऋषि । रहेविवेकविचारि ॥ १६ ॥ करीप्रगटनरहरसुकवि । रामरिझावनकाज ॥ दीनीहसिहासिभक्तिदृढ । सूरवंशसिर ताज ॥ १७ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जालगवाषनिपथजुवतीजन ॥ देषतिसुष दूलहनृपदरसन ॥ सुनिसुनिसौधगवाषनिसुंदरि ॥ हँसतिपरसपरकरतालीकरि ॥ वर निविलोकतिदूलहनिवनिवनि ॥ सकुचतितर्कगारिसबसुनिसुनि ॥ भोजनमनवंछितआ नंदभरि ॥ करेआचमनषरिकाकरिकरि ॥ आएबीराविविधबनाए ॥ सौमृगमदघन सारसुहाये ॥ सौधातेलअनेकसुगंधानि ॥ वारवारचरचेसमधीबनि ॥ कुंकुमसौरभ

॥ १ ॥ ॥ जाबालिरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मनिजोतिजदपिअतिअप्रमान ॥ दि
नकरसंयोगबाढतनिदान ॥ नितहुतेनिशाकरवंदनीय ॥ लहिशंभुभालमहिमासुलीय ॥
सुरसरितपवित्राहीशुभाइ ॥ पदवामनपावनताहिपाइ ॥ निमिवंशहुतीमाहिमविशेष ॥
सीयआगमपुनिबाढीअशेष ॥ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतशुभज
नकनरेसके । वेदविदितविष्यात ॥ सीतापावनपुत्रिका ॥ जगकर्ताजगमात ॥ ९ ॥
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जनकनृपतिअवधेसजुत । मंदिरआनिमहीप ॥ बैठेभोजन
शालबनि । अषिलसंगअवनीप ॥ १० ॥ बैठिजथाक्रमपांतिबहु । बर्णचारिशुभवेस ॥
आसमुद्रजाचकअवर । वरनिनजाहिविशेष ॥ ११ ॥ जनकचरनअवधेसके । पुत्रनिस
हितपषारि ॥ अनमोलिकआसनउचित । जथाजुगतबैठारि ॥ १२ ॥ ॥ छंदद्विअ
क्षरी ॥ ॥ रतनजटितचोकीजुकनककारि ॥ धोयनृपतिदशरथआगेंधरि ॥ मनिमय
थालविमलविस्तीरन ॥ तापरधरेमध्यबेलागन ॥ स्वर्णरजतमयथालसुहाए ॥ भूपनि
अग्रधरेमनभाए ॥ परुसनलगेसुवारसपावन ॥ भोजनसतरहविधिमनभावन ॥ अ
रुमिष्टान्नविविधिबहुआए ॥ जेजुवतिनिबहुभांतिबनाए ॥ समघनसारअनेकसुगंधनि॥
बंछितस्वादअनेकभांतिबनि ॥ पांतिपांतिक्षनमहंपरुसारो ॥ पूरनभयौअमृतपनवारो ॥
थितचवकुंवरपिताइकथालहि ॥ करतभएभोजनशुभकालहि ॥ दासीजूथजूथमिलिदिश
दिस ॥ बनीसिंगारवनाइनेहवस ॥ गारितर्कजुतगीतसुगावति ॥ सोदशरथसबनृपनि
सुनावत्ति ॥ ॥ दासीवाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गावैहिंगारिदशरथकुमार ॥
शुभपितासुजससुनीयेसुढार ॥ बहुबीरबिडारेछीनिवाम ॥ कुकलत्रकारिसोईविवसकाम ॥
यहकर्मकरयोदशरथअभूत ॥ पितुकीरतिसुनहुंसुतसपूत ॥ कछुताहूकेसुनियेसुभाइ ॥
हमजथाशक्तिवरनहिंबनाइ ॥ ताकेकोजानैचरिततंत्र ॥ मानैनहिंकाहूजंत्रमंत्र ॥ उर
नहिनदयादुषदेषिआन ॥ सुषमानतकरिश्रोणीसनान ॥ ॥ छंदसारसी ॥ ॥ कुकल
त्रकीनीरसहिभीनीनितनवीनागरी॥ मनविश्वमानीजगतजानीअतिहिलक्षनआगरी॥को
गनैकीनैनितनवीनैपतिजुअवसरपाइकै ॥ कृतकर्मताकेविषमवांकेसबैकहैंसुनाइकै ॥ पर
पुरुषप्यारीनिलजनारीसुनहुदूलहसांवरे ॥ करनीकुलच्छनमिलितनमनरत्तपित्तसौंरावरे॥
दिबिरत्नदेहीरूपरेहीनित्यनवनवजोवनी ॥ गिरिरेषकज्जलवसननिधिजलअरुनकंचुकिअ
नतनी ॥ वनिनीललहंगामोलमुहंगाअतिहिपतिरतिआतुरी ॥ उपरैनिसोहैमननिमोहैचि
त्तचंचलचातुरी ॥ नागेशफनमनिसेजसुषगानिसहजसौरभसुंदरी ॥ दिसउदयपदधारिअ
स्तशिरकारिभोगजुतनितरसभरी ॥ हठलग्योहरिणयरीझिसिषनषकपटहरनजुतिहिंकी
यौ ॥ कृतगुप्तपापीसुतलथापीलाभदैयततिहिंलियो ॥ तिहिकालतिहिथलबढिप्रलयजलउ
पजअन्ननओषधी ॥ मिटिमषनिचर्चाअमरअर्चाब्रह्मउरचिंतावधी ॥ लिषिअषिलईश्व
रप्रभुदयापरविषदजज्ञवराहव्है ॥ वारिधिविहारीयधरउधारीयछनकहींरहिअग्रहै ॥ नृप
वेणुनवलापाइप्रबलाभामकरिकछुभोगई ॥ भवपापभीनीमहमलीनीभारपीडततहँभई ॥
ऋषिशापरौरवदाहमनुदववेणुंजारिवित्तयो ॥ सोउभुगतिभांज्योजातछांज्योचलतनैकुनाचि

त्तयौ ॥ बहमईविव्हलमिलितअघमलरसनिग्रासियौहींरही ॥ प्यारीपराईपृथुजुपाईसहित आदरसंग्रही ॥ तबहियोहरष्योप्रेमपरष्योसुद्धिताकीनीसबै ॥ शृंगारसाजेबजेबाजेतिहि नृपतिमुक्तितबै ॥ परलोकपायोअनअघायौपृथुहुछांडीप्रीतिसौं ॥ नहिंशोककीनोमनमली नोनियतनेहअनीतिसौं ॥ तिहिंसमयजुतपहिरणकस्यपदैत्यअतिबलदेषिकै ॥ परग्रेह पैसीअजहुंबसीवपुसुरूपविशेषकै ॥ तसरसहिरातीमदनमातीताहिनहींइकछनतज्यौ ॥ अनयासपायोप्रियपरायोभांतिभांतिनिसौभज्यौ ॥ अतिगर्वयाकैचित्तताकैअनाचारजु आदस्यौ ॥सुतहतनिसाधहिअनपराधहिकर्मअंगीकृतकस्यौ ॥ अनरतप्रवेसैअतिअनेशो सर्वव्यापकक्यौंसहै ॥ दीनहिदुषारेलषिमुरारेकरतरक्षानितरहौ॥थिरफारिथंभायहअचंभा निकटप्रगटेनरहरी ॥ प्रहलादराष्यौसुरनिसाष्यौबातनिगमनिविस्तरी ॥ भइषेदषीनी छिनिमलीनीदैवहरिचंदहिदई ॥ सबसारदीनेनितनवीनेभूपतिनहूभोगई ॥ दुष्टासुदे षीविधिविशेखीउदकजुतद्विजअर्प्पई ॥ पृथ्वीपवित्रहिविश्वमिपहिहरिश्चंद्रसमर्प्पई ॥ द्वि जदीनजान्योमननमान्योबलीबलिदेपतिवस्यो ॥ सोषीनतापसविरतिकेवसआजन्मव्रत आचस्यो ॥ परपुरुषपावनभएबावनबचनछलविस्तारयौ॥महिनृपदमापीडरेपापीभृगुसुव नविनुचखभयौ ॥ नृपनियमनाध्योबलिसुबांध्योअषिलभुवअपनाइकै ॥ कृतकपटकरनी लईधरनीदईइंद्रहिआयकै॥तिहिइंद्रत्याग्योमननिलाग्योसुन्योहैहयअतिबली॥वासववि गोयोदुषनिरोयौचित्तचापलउठिचली॥वरवस्योअर्जुनमिलितनमनसहसबाहुसुजानयौ ॥ तिहिंमनजुमानीपाटरानीमोहमयरसमानयौ ॥ छबिमदसुछाक्योहितनताक्योजमदगनि मुनिमारयौ ॥ तपअगनितिहिंछनरोषधीरमनपरसुरामसुजारयौ ॥ वरवयरबांध्यौनि यमनाध्यौछत्रिकुलबलछेदयौ ॥ रुधिरनिन्हवायोनिगमगायोद्विजनिमहिमंडलदयौ ॥ कृतपितरअर्प्पनरुधिरतर्प्पनरहेसरसरिताभरे ॥ इकईसवेरांअमरआनंदकुसमजयवर्षा करे ॥ दुष्टाविशेषीद्विजनिदेषीनीतिधर्मनजोइहै ॥ रहिहैनराषीसहजसाषीबलहिजाइवि गोइहै ॥ इकईसवारीचितविचारीमुनिनिछांडीमाषकै ॥ याकेअलौकिकरावणादिकउररर हेअभिलाषिकै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ साकुवामविक्रमसहित । कुंवरपितातवकीन ॥ करी विनाहिस्वतंत्रअब । राषहुबचनअधीन ॥ १३ ॥ भ्रमतरहीभवभूपभजि । पैनहि थिरतापाइ ॥ अबदशरथअवधेसकै । सदारहोसुषदाइ ॥ १४ ॥ त्यौंकरिराषहुआज तैं । याहिनपावैंओर ॥ नित्यरहोनृपग्रहनियत । रामकुंवरकुलमौर ॥ १५ ॥ तर्क भेददासिनितहां । गाइसुनाईगारि ॥ रीझेराजाराजऋषि । रहेविवेकविचारि ॥ १६ ॥ करीप्रगटनरहरसुकवि । रामरिझावनकाज ॥ दीनीहसिहसिभक्तिदृढ । सूरवंशसिर ताज ॥ १७ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जालगवाषनिपथजुवतीजन ॥ देषतिसुष दूलहनृपदरसन ॥ सुनिसुनिसौधगवाषनिसुंदरि ॥ हँसतिपरसपरकरतालीकरि ॥ वर निविलोकतिदूलहनिवनिवनि ॥ सकुचतितर्कगारिसबसुनिसुनि ॥ भोजनमनवंछितआ नंदभरि ॥ करेआचमनषरिकाकरिकरि ॥ आएबीराविविधबनाए ॥ सौमृगमदघन सारसुहाये ॥ सौंधातेलअनेकसुगंधनि ॥ वारवारचरचेसमधीवनि ॥ कुंकुमसौरभ

नीरअनेकन ॥ गहिगहिनावतसीसाअनगन ॥ करिअर्चापूजासबक्रमक्रम ॥ पहुंचा येजनवासैप्रीतम ॥ विविधविलासअनेकबनाई ॥ सौरतजुतसुषसेजसुहाई ॥ भूपरजनिसु षसज्जासोए ॥ सीतलपंषापवनसंजोए ॥ नृपतिविदेहपरमसुषपाए ॥ अपरदिवसजनवासै आए ॥ पूजिवसिष्टप्रवरऋषिपावन ॥ भूषनवसनदएमनभावन ॥ द्रव्यअनेकजथा क्रमदीनै ॥ करिमनुहारिप्रसन्नसुकीनै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कामदुघासीदुग्धदा । चा रिलक्षदईधेन ॥ तरुनासपरिवर्णश्रुत । संजुतवचनसुषेन ॥ १८ ॥ आनंदभयौअ सेषउर । सिद्धिभएसबकाज ॥ डेरैविश्वामित्रकै । आएमैथिलराज ॥ १९ ॥ पूजा अर्चादानपन । सबविधिसहितसनेह ॥ वंदिचरनकीनेविदा । विश्वामित्रविदेह ॥ २० ॥ ॥ कौशिकदशरथनृपतिकह । मिलिगनईसमनाइ ॥ उत्तरपर्वतकहँचले । हृदयध्यानर घुराइ ॥ २१ ॥ पधराएतबअवधिपति । मंदिरजनकमहीप ॥ चार्यौपुत्रसुअग्रचलि । ज्यौंदीपहिप्रतिदीप ॥ २२ ॥ आएग्रेहविदेहकै । समसुतबंधुसमाज ॥ राजश्रीरचनारु चिर । रीझैकोशलराज ॥ २३ ॥ बैठेसभाविदेहबनि । अरुराजारघुवंस ॥ द्रव्यअसं ष्यादाइजै । पूरनप्रगटप्रसंस ॥ २४ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ पर्यंकहेमसुरत्नमनिमय जटितरंगअनेकजे ॥ शुभरंगरंगअनेकसज्यारीझपटवस्त्रनिरजे ॥ कौशेयदोरिनिकसेकूं टसुविविधअतिशोभावनी ॥ फबिरहेजटितजराइहुंदामध्यसारिमुक्तामनी ॥ तिनबैठिराघ वसीयासंजुतसविधिपुनिदुलहूसबै ॥ इकहोतन्यौछावरिअसंषितसजनसुषदेषतसबै ॥ अन्नेकद्रव्यजुरत्नअगणितगंधवस्त्रसुकोगनै ॥ मनइच्छजेजेवस्तुमंगलविमलकारिजहि तबनैं ॥ परिचारिकानितानिकटवर्तिनि नियतमनअनुगामिनी ॥ सतचारिवसननिस जितसुंदरसुंदरीहितस्वामिनी ॥ इकलक्षपतनीआनअर्पितविमलबुधिविस्तार ॥ व्यापा रगृहकृतचित्तचातुरिप्रीतजुक्तप्रचार ॥ पुनिअष्टकोटिजुप्रभुपरायनदानदीनैदास ॥ सब काजसाधकसाधुसंततसावधानसहास ॥ गजअयुतकारिणीजूथसंजुगकनकमयकिंकिनि कसी ॥ मदमत्तगुंजतमधुपमालाश्रवनतटसौरभवसी ॥ बनिनियुतअश्वसुषेत्रसंतवज टितजानजराइजे ॥ अन्नेकसाजविराजेअद्भुतजिनाहिंगतिमारुतलजे ॥ शुभसुषदसहस पचीसस्यंदनसाजसंजुतसोभनैं ॥ जिनवाजिजवजुतवृषभजोतेबलीकिंकिनिसोवनैं ॥ श तसहससुरभीसुरसुरभिसीदिव्यवर्णादुग्धदा ॥ सहवच्छघंटाकनकसाजितसैन्यशुभदरस नसदा ॥ चौडोलसिबिकासुषसुषासनडोलिकादिसुदेस ॥ अन्नेकआकृतिजातिअनअन पुरुषजुक्तप्रवेस ॥ विधिपूर्वदीर्घ्यजुकनकवासनठौरठौरनिलैठए ॥ सबसमृद्धिदेषिविशेष सोभाभूपसुरअचिरजभए ॥ २० ॥ प्रतिदेससंभवकरभप्रबलीयअंगगिरिउनमान ॥ मु षफेनउजलझरतमदजलमत्तछकृतिअमान ॥ करिसकटसकटीभारवाहकवृषभवामीबहु बनै ॥ सषसौंजसंजुतविहितसाजैआनिथलथलआपनै ॥ कोगनैमहिषीकरभिकुललौं जितेक्रीडाजंत ॥ पदचारपक्षीबलकपटआषेटनिपुनअनंत ॥ पुनिकरीपूज्यवसिष्ठपूजा वामदेवसवाम ॥ वस्त्रादिभूषनविहितवानीकृतप्रमानसकाम ॥ पहिरायदशरथनृपतिपा वनपरमप्रीतिहिपांपरे ॥ मनुहारिकरिकरिअमितमहिमाभूपमनआनंदभरे ॥ रघुवंस

आदिअनेकराजाविमलमध्यवरातजे ॥ सनमानवसनविशेषसौंरभाजिहिसुचित्तसुहातजे ॥ मिलिसिद्धचारनसूतमागधदएवंछितदान ॥ करिभगतिअतिमनुहारिकीनीसबहिविधि सनमान ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सकलवरातीसंगके । लघुदीरघजेलोग ॥ पहिराए पाटंबरनि । जुतआदरजिहिंजोग ॥ २५ ॥ द्रव्यअनेकनिदाइजे । सौंसनमानसनेह ॥ ज्योंविभूतित्रयलोककी । दीनीजनकविदेह ॥ २६ ॥ इति० ॥ ॥ ॥

॥ अथनारदजनकप्रतिप्रबोधपुराप्रसंग ॥

॥ जनकउवाच ॥ दोहा ॥ बैठेपरिषदपुन्यतहां । औररहस्यजुएक ॥ संजुतप्रेमवसिष्टसौं । कहतविदेहविवेक ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ इकसमयआयनारदऋषेस ॥ हसकरिबिविधि पूजाविशेष ॥ वीनासनादतिजुक्तहाथ ॥ गावतअनंतकृतचरितगाथ ॥ सबभाइभएजब सानुकूल ॥ मुहिकह्योगोप्यसुनिमंत्रमूल ॥ कारुण्यरूपहरिदेवकाज ॥ रावनवधषोवतस कुलराज ॥ मायातनमानुषधरिसुरारि ॥ विबुधहितरामप्रगटहिविचारि ॥ दशरथसुतरघु वंशहिदयाल ॥ चववंधुउपजिषेचरषयाल ॥ प्रगटिहैजोगमायापुनीत ॥ तवग्रेहसुलछननना मसीत ॥ हरिप्रियाललितप्राचीनहेत ॥ तिहिंवरिहैराघवजससमेत ॥ पुनिकहेहमहिपरब्र ह्मराम ॥ भवतव्यश्रियातवसुताभाम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकसमयहममषअवनि । करि लांगलसुधकीन ॥ ताकैसीताअग्रतैं । पुत्रीप्रगटिप्रवीन ॥ १ ॥ तातैंसीतानामतिहिं । पा योलोकप्रकाश ॥ चंद्राननिमृगलोचनी । विमलसुलछनवास ॥ २ ॥ निश्चयममपटरागनी । तवहींसमरपीताहि ॥ करिपोषीसोकन्यका । हेतजुक्तचितचाहि ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मुनिकहेहमहिउपदेसमंत्र ॥ तेंदेवीइच्छामिलेतंत्र ॥ कृतभएमनोरथसफलकाम ॥ राजत एकासनसीयाराम ॥ कौशिकप्रसादसबसरेकाज ॥ जन्महमकृतारथभएआज ॥ १२ ॥ कु लदेव्यपूजानिमित्तराम ॥ रनिवासप्रवेसजुगौरस्याम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ समयसुसाधी सबधुशुभ । रामआइरनिवास ॥ करनजथाविधिव्याहकृत । विदाहोनसबिलास ॥ १ ॥ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांसतानंदप्रोहितजुआइ ॥ कुलदेवदेवपूजाकराइ ॥ पुनि करेकृत्यवेदनिप्रणीत ॥ शुभकारनसबविधिरामसीत ॥ कृतसांगसबैसंपूर्णकीन ॥ द्विज सतानंदकहदानदीन ॥ न्योछाबरिकरिकरिजनकनारि ॥ छविनिरषिपीयतिजलवारिवा रि ॥ पुनिपुनिउरलावतिपुत्रिकानि ॥ शुभदेतिजुशिष्याप्रेमसानि ॥ गुरुसासुस्वसुरसे वासनेह ॥ दिनकरहुनउत्तरफेरिदेहु ॥ गुरुसषीवचनवसरहिसज्ञान ॥ दीजैसबहिनकह मानदान ॥ पतिव्रत्ताचित्तअनुसरहुप्रेम ॥ नितरहहुवचनआधीननेम ॥ मिलिवारवार सिरसूंघिमाइ ॥ आसीसदेतछतियनिलगाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चूरासिंदुरमांगचि र । सदासोहागनिहोहु ॥ लौनपरहुतिहिनैननित । जोताकैछलछोहु ॥ २ ॥ दईअसी सअनेकइहां । अरुनिवछावरिवारि ॥ बदतिदेषिविछुरनविषम । नासिरजहुविधिना रि ॥ ३ ॥ विछुरतसीताप्रेमवस । विकलसकलरनिवास ॥ दारुनतिहछिनकीदसा । कहि कोसकैप्रकास ॥ ४ ॥ रामगमनसुनिनारिनर । भएमनविकलमलीन ॥ तरफरातजित तिततकत । ज्योंजलहीनेमीन ॥ ५ ॥ जन्मदरिद्रीकल्पतरु । पतितउर्धपदपाइ ॥ दीरघरो

गीअमृतज्यौं । सुषहीलहतसुभाइ ॥ ६ ॥ त्यौंहमदरसनरामको । पायौपुन्यप्रकास ॥
कहतसकलममजीयकरहु । नितसियसहितनिवास ॥ ७ ॥ अश्वारोहितछबिअमित । दु
लहूडरेनिआय ॥ पुरजनजुवतीप्रेमपद । लेतविलोकिबलाय ॥ ॥ ८ ॥ छंदपधरी ॥ ॥
ऋषिकरेविदासबजनकराज ॥ सबभांतितोषिसंजुतसमाज ॥ जाचकनिदानलहिजथा
जोग ॥ पुनिपढतसजयकीरतिप्रयोग ॥ निरघोषनगरनभवजिनिसान ॥ सुरसुमनवर
षिहरषितसमान ॥ विधिजुक्तिविविधिदुंदुभिबजाय ॥ पुरचलेअमरआनंद पाय ॥ नृप
दुहुनिबजेनीसाननाद ॥ बढिविश्वविदितजयजयतिवाद ॥ कृतलोककोलाहलगमनका
ज ॥ शुभलदेसकलडेरासमाज ॥ चवडोलउठीदुलहनीचारि ॥ वाहननिसकलदासीवि
चारि ॥ भएरथारूढदशरथनरेस ॥ सुतआपआपरथचढिसुदेस ॥ पुनिजथाजोगगुरुबं
धुजान ॥ सबसुभटसूरअपनेसमान ॥ भुवगमनकुलाहलभयोभूरि ॥ प्रतिसब्दरहेदिसि
विदिसिपूरि ॥ हयहेषारवगजगरजहोइ ॥ सुनिपरेगिरिनिनिर्घोतसोइ ॥ इहिभांतिचलेद
सरथअभंग ॥ मिलिपवनरेनमुद्रितपतंग ॥ शीलध्वजनृपकुशकेतसाथ ॥ हितचलतप
यादेजोरिहाथ ॥ मिलिअमितनेहजुतजुगमहीप ॥ पहुंचाइजनकबहुरेपृथ्वीप ॥ रसरह्यौअ
षिलचलिअवधिराइ ॥ वाजित्रजैतमंगलबजाइ ॥ ॥ दोहा ॥ निसचयजहांदशरथनृ
पति । वसिहैपंथप्रयान ॥ तहाँतहाँसबैसमृद्धि सुषापठएजनकप्रमान ॥ ९ ॥ शुभहि
साधिआनंदसौं । भूपचलेशुभभाइ ॥ पावनमिथिलापुरहुते । इहांजोजनत्रयआइ ॥ १० ॥

॥ अथभार्गवागमनं ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पृथ्वीसचालउलकानिपात ॥ विदिशानिदि
शाबढिविषमवात ॥ उडिपांशुभस्मवर्षाअकास ॥ अनिमित्तहोतसबअनायास ॥ उ
डुदरसदिवसआसाअंधार ॥ उतपातहोहिदारुणअपार ॥ बढिविषमधूमसंकुलविसा
ल ॥ प्रातिकूलपक्षकूजतकराल ॥ दिनमणिसुमहापारिवेषदेषि ॥ पक्षीअसौम्यदिगग
मनपेषि ॥ मातंगअंगगतिमदहिमुक्ति ॥ भएसाधभावगएदानसुक्ति ॥ मृगमालशु
भनिसूचकअशेष ॥ परिक्रमणकरेदक्षनप्रवेस ॥ ॥ नृपतिरुवाच ॥ ॥ अनिमि
त्तदेषिसबअवधिईश ॥ सनमुषवसिष्टपूंछेऋषीश ॥ यहकहाजानिनहींपरतआज ॥ उत
पत्तिकछुकारनअकाज ॥ भयहोतचित्तअतिभ्रमितभीत ॥ उपजैअरिष्टकछुअबअचीत
॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ बोलेवसिष्टतबविहितवानि ॥ अनिमित्तभएइहिसमयआनि
॥ मृगभएजुदक्षनशुभदमूल ॥ सबमंगलसूचकसानुकूल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यौं
कहतमात्रअवनीअशेष ॥ साकंपगईधसिनमितशेष ॥ मिलिचलेसमुषमारुतसमूह ॥
जुतरेणुडगतपर्वतनिजूह ॥ अवछन्नकरीरजचमूआनि ॥ जननिकटतदपिकोउकिहिन
जांनि ॥ ॥ जामदग्निरूपं० ॥ ॥ कैलासमानकोपाधिकार ॥ वैकृत्यवेषभृकुटी
विकार ॥ अपतासपुष्यउत्फुल्लनास ॥ उपवीतदंडकुशसावकास ॥ मौंजाजिनमेषलम
नमलीन ॥ काषायवसनकौपीनकीन ॥ पदतलीपुटितवर्जितउपान ॥ सुव्रणसरीरपर्व
तसमान ॥ करवामचापदक्षिनकुठार ॥ धृतवानपृष्टितूनीरधार ॥ २० ॥ उरसिलाम

नहुघनघटितधाइ ॥ वपुविसिषपरसुघर्षतशुभाइ ॥ प्रज्वलितचेततपतेजपूर ॥ सामर्थि
अनुग्रहश्रापसूर ॥ मुषचारिवेदपाठकअमोह ॥ छबिमनहुप्रलयपावकसछोह ॥ द्विजप्रां
शुघनाभानीलदेह ॥ जर्जरितअस्थिक्षतजुतअछेह ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जिहिंहैहयकु
लकेतमारिअर्जुनमहिलिन्नीय ॥ अषिलश्रोणअन्हवाइउदकभूदेवानिदीन्नीय ॥ इहिं
प्रकारइकवीसवारवसुमतिनिर्वीरा ॥ रोषज्वालजरिगर्भजालभईअघनिअधीरा ॥ पितु
वयरभरीरिपुहरीप्रबल, कुंडलरुधिरतर्पनकरन ॥ मृगगनमहीपमृगराजमनु, निकट
आइफरसद्धरन ॥ १ ॥ जटाजूटचुंचिचअजेयइषुकंकपत्रचल ॥ पृष्टिउभयतूनीरभस्म
लांछितवक्षस्थल ॥ अंशाथितहरिचर्मअक्षमालाअवलंबित ॥ करकुठारकोदंडलियेपै
पिलसुकर्मजुत ॥ पितुवंशविहितउपवीतपन, मातृवंशआयुधमहत ॥ अदभूतवेषलोच
नअरुण, कोपवचनआएकहत ॥ २ ॥ घटितशस्त्रघनघाइसमरउरपीठउपलसम ॥ क
ठिनघोरधाराकुठारतिहिंकरततिष्षक्रम ॥ ब्रह्मचर्यआजन्मब्रह्मविद्याव्रतधारीय ॥ जय
जन्माज्याघातविषमभूचक्रविहारीय ॥ जमदग्निवयरअंतरज्वलित, कृतकुठारउधृतकर
म ॥ वनगजमहीपमृगयाव्यसन, मिलेकालभगवानमम ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वामदे
वद्विजआदिदे । सबमुनिवरनिसमाज ॥ विधिवंदनकीनैविहित । जामदग्निऋषिराज
॥ १ ॥ ॥ परशुरामउवाच ॥ ॥ कापरकोपकृतांतकृत । जिहिंधनुभग्नभवेश ॥ ताके
दंतनिमध्यतट । पापीचहतप्रवेश ॥ २ ॥ पैच्योकिंहिंत्र्यंबकधनुष । वामदेवमुनिराउ ॥
कैछितिनिक्षत्रीकरौं । कैतिहिवेगिबताउ ॥ ३ ॥ ॥ वामदेवउवाच ॥ ॥ कठिनशरा
सनशंभुको । तोर्योरामकुमार ॥ मषजयराष्योजनकपन । सीताबरीसुढार ॥ ४ ॥ ॥
जामदग्निउवाच ॥ ॥ वामदेवमुनिसोंचिहसि । फिरिपुंछयोद्विजराम ॥ जिहिंभंज्योमा
हेसधनु । सोधौकेसोराम ॥ ५ ॥ ॥ वामदेवउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सरएक
कर्योताडकानास ॥ त्रीयहतिकोविक्रमकीनतास ॥ सेन्यासुबाहुमारीचसंग ॥ अतिब
लीदुष्टराक्षसअभंग ॥ मार्योसुबाहुमसकासमान ॥ मारीचउडायोवायुवान ॥ मषरक्षा
कीनीअसुरमारि ॥ कौशिकहिरामआनंदकारि ॥ पदरजपुनीतपरसतसपाप ॥ गतिउर्द्ध
अहल्यालहीआप ॥ कृतचापभंगकोशलकुमार ॥ सोइरामचंद्रसंविदितसार ॥ ॥ पर
शुरामउवाच ॥ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जुधनुचढावतजटाधारश्रमहोतदंडद्वै ॥ दानवरा
क्षसदैत्यदेवछोंहेनसकछे ॥ मिलिसहस्त्रछत्रीयमहीपइकसाथउठाईय ॥ नहिनमुक्तितिहि
अवनिगएबललाजगँवाईय ॥ करिरहेबलीभूववचनके, सबविक्रमसुनसज्जयो ॥ पिषहु
जुकालमहिमाप्रबल, भूपबालनरभंजयो ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मानिअहिंसाधर्ममैं ।
मृगयातजीमहीप ॥ भवक्षात्रिनिपायोअभय । प्रगटेपापपृथीप ॥ ६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥
करतशत्रुषयकालकोउजुछांड्योकिहुंकारन ॥ बालकवृद्धअवध्यतहांबलहीनषीनतन ॥
पुनिसोइअवसरपाइकरतबलवृद्धिहिक्रमक्रम ॥ जैसैकणिकावन्हिबढतदावानलवैषम ॥
अनुसरौंधर्महिंसाअषिल, वसुधाकरौंनिछत्रिसब ॥ धिकदयाजुकरीयैशत्रुसौं, यहौंपरि
ष्योसत्यअब ॥ ५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबरथतैंदशरथनृपति । उत

रिमहाभयमानि ॥ कीनौअग्रवसिष्टकह । आराधेतहांआनि ॥ ७ ॥ त्राहित्राहिअवधेस
तब । हाथजोरिकहिएहु ॥ मुहिपुत्रनिकोपेपुरुष । देवदक्षनादेहु ॥ ८ ॥ आएरामसबं
धुइहां । वंदनकरेविशेष ॥ रोषानलजनुजरतसौं । दारुनरूपसुदे ॥ ९ ॥ भृगुपति
अतिकोपाहिभरे । ऐसीदईअसीस ॥ होअपराधकरुद्रके । समरअजयचढिसीस ॥ १० ॥
रामकुमारविलोकितहां । कीयद्विजरामविचार ॥ शंभुसरासनमदनमनु । तौख्यौवयरवि
कार ॥ ११ ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भरतहिभंजूरोषभारपितुवयरप्र
कासो ॥ तलिहूंआरिहातेंलतेषतितिहिअघहिनत्रासौं ॥ लक्षमांडिलक्ष्मनहिमुहिभरिवानप
मुक्कउं ॥ श्रोणाकुंडभरिसमरक्रीयातर्पननहिचुक्कउं ॥ कर्कशकुठारमुषरामकर, त्रिनसमा
नकरितोरिहौं ॥ इहिंसमयनावअवधेसकी, शोकसमुद्रहिबोरिहौं ॥ ६ ॥ ॥ लक्ष्मनउ
वाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आपबडपनआपनौ । किनराषहुऋषिराज ॥ कैसेबोलतहैकुव
च । काइहाँभयौअकाज ॥ १२ ॥ तुमजुकहतनिक्षत्रमें । वसुधाकीयबहुवार ॥ तिनमहँ
नृपदशरथतनय । कोउहोरामकुमार ॥ १३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ द्विजरामवचनसु
निसुनिसदाप ॥ इहाँहसिकैबोलेलषनआप ॥ नितबालकेलिधनुहीनवीन ॥ करऐंचिरा
मबँहुषंडकीन ॥ छनकख्योनांहितुमइतौछोह ॥ मनुधनुषइहींकछुअधिकमोह ॥ ॥ द्वि
जरामउवाच ॥ ॥ बतकहीकरतअतिनृपतिबाल ॥ कोप्योंकृतांतसूझैनकाल ॥ ॥ ल
क्ष्मनउवाच ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ यहकर्मरीतिविरोधअविहितहमतुमहिंजुधहोइ ॥
हरधनुषटूट्यौछुवतहींवहँकाकरैअबकोइ ॥ जिनकेअनुग्रहकौमनोरथसबैकरतसंसार ॥ ति
नसौंजुविग्रहयहैअविहितअजसहोइअपार ॥ करवंदिलीनेअछतजिनकेकरतवहुकल्या
न ॥ तनसमरसक्षतकीयेतिनकेनयविरोधानिदान ॥ पदउदकजिनकेनित्यपीनैकर्मनांशत
शोक ॥ करशस्त्रतिनसौंसामुहैकरिलोकलोकअलोक ॥ द्विजदेवतिनसौंदासभावहिपरमक
रुनाप्रीति ॥ जयदक्षनांकैभक्तिजानहुअन्यथाअनरीति ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ सब
सस्त्रजुततुमसूरसंभवसबलसैन्यासंग ॥ मरनकेभयसंत्रसतमुषआपटारतअंग ॥ छितिच
क्रकहींयतबडेछत्रीयसमरपंडितसूर ॥ किहुंभांतिकोटिनिजतनकीजैमीचटराहिनमूर ॥ १ ॥
॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ गुरुद्रोहअंगीकारकबहुनकरतबडेकहाइ ॥ जगप्रगटआपुनआ
पनैज्यौंमारिअग्रजमाइ ॥ जिनकख्योतुमभूवचक्ररणजयएकविंशतिवार ॥ किहिभांति
चलिहैरावरेकरकंठशिशनिकुठार ॥ ॥ परशुरामउवाच ॥ ॥छितीक्षत्रीयगर्भछेदेहुंवहैद्वि
जराम॥अबजरठतरुनैबालजेतेसबहतौसंग्राम॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ किहिवानिबोलत
हौबडेकुलप्रगटजन्महीपाइ॥ विस्तारतामसविसमवैकृतिभेषसात्विकभाइ॥ तुमआपनैमु
षकहतमुनिमैहयौहैहयराज॥पितुवैरदीरघअलपधनुअपराधपैंजुअकाज॥ श्रीषंडषंडहूजुग
मघर्षतउठतअनलअमान॥मतकरहुविषबकवादहमसौंननहिनश्रेयानिदान॥ परशुराम
उवाच ॥ यहकह्यौनीकौभरततैसिद्धांतसत्यसुभाउ॥ आपनैतनतेजुअमरषअनसवागउ
ठाउ ॥ वचिहोजुक्यौंहूंतितिहिअगनितेजीयतभावीजोग॥तबपूछिहूंरनरामसौंगुरुचापभंगप्र
योग ॥ कुंडली ॥करिहूंषंडनतेइकरगभवधनुजिहिंकृतभंग ॥ कहोइनहिलागैकहासुभ

टबापुरेसंग॥सुभटबापुरेसंगईसआज्ञावसआए॥दंडपात्रजोइकरैदोषजुविधिवेदबेताए॥
दुलहुअरुबालअवध्यदिनदोषतदपिनाहिनडरौ॥ करुणातजिरामकुमारकेकरतेइषंडनक
रौ॥ ॥शत्रुघ्नउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥तबरिपुघनबोलतधमकि। सरकोदंडसंभा
रि॥मुनिब्राह्मनघरहैजनम। बोलहुनैकविचारि॥१४॥कहतनिछत्रीतुमकरी। वसुधा
वारहिवार॥सोछांडौअबवैरलै। करियैसज्जकुठार॥१५॥त्रयबंधुनितवरोषजुत। करे
धनुषटंकार॥रामविप्ररक्षककस्यौ। नैननसैननिवार॥१६॥ ॥भार्गवउवाच॥ ॥
॥कवित्त॥ सुनिरघुवीरसमुद्रशीलितटदीर्घ्यवंशतव॥बेलालक्षनसुधावानिकृतषर्गत
कासिअब॥भृकुटिविकारजुभ्रमणसरितामिलिसुभटसनेहीय॥लहरिपुन्यविषरोषरतनगु
नजुनअनरेहीय॥तवबंधुतिमिंगिलक्षुद्रतेइ, जरिजरिजैहैलोकजम॥ मर्जादकोपछाडव
जुमम, कस्यौ चहतअवलोमक्रम॥७॥॥श्रीरामसानुनय॥ ॥छंदपधरी॥ ॥
करजोरिरामतबप्रणतिकीन॥मनदेववृथाकरीयनमलीन॥पादपजोटूटैअवधिपाइ॥वा
ताहिकाकहीयैविधिबनाइ॥जीरनपिनाकटूट्यौअजांन॥नहीटरतकहूंभावीनिदान॥वि
धिअंकनचूकतकिहूंधान॥प्रभुजानतनिगमागमपुरान॥टूट्यौनजुरैकोदंडतास॥वसभा
वीशिवधनुभौविनाश॥ ॥भार्गवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥मुनिभृगुवंसप्रसिद्धिम
हि। परशुरामयहनाम॥तुहूंकहावतरामतौ। सजिमोसौसंग्राम॥१७॥ ॥कवित्त॥
रेकाकुत्स्थनिशंकश्रवनअजहूंनहींसुनयौ॥जिहिक्षत्राधमपितृछेदहैहयरनहनयौ॥ताअ
मरषसागरतरंगनिस्तारबंधुभय॥विषभावधित्रयसप्तक्षत्रप्रतिरोहकरेक्षय॥ तिहिवसा
श्रोणआमिषलिपत, रहतनिरंतरसोसरसु॥अरित्तरसमूहदावाअनल, प्रबलघोरधारापर
सु॥८॥जिहिंअर्जुनदशशतअसाध्यभुजदंडभयंकर॥रेवानीरप्रवाहरुद्धसहवासकेलि
पर॥तहांदशकंधमदांधआनिजुधद्वंद्वसुजुर्‍यौ॥धनुषगुननिबंधयोकोपकरतलमुहकुर्‍यौ॥
हैहयाधीशसोइषेतहानि, पिताघातअमरषप्रबल॥ कृतपर्वतेइभुजषंडकर, वेदकीर्तिगा
वतविमल॥९॥विषमसप्तत्रयवारमहीकिन्नीकर्दममय॥नृपतिमांसवसपंकसलिल
मिलिश्रोणसरितनय॥वरनितासवैधव्यदानिबालावृद्धावधि॥नियतनित्यनिर्दयाशत्रुकु
लाशधर्मसधि॥भुजमूलसिस्वरभूवपाल, भवविधिघातसन्नादवर॥जमदग्निसुवनसोईहूं
अजय, धाराघोरकुठारधर॥१०॥ ॥श्रीरामचंद्रउवाच॥ ॥तुमजुस्वस्तिहमस
स्त्रअभयअहनिशाअभ्यासहि॥विमलवेदरसवीरप्रकृतिअनयासप्रकासहि॥कृष्णाजि
नतनकवचकसततुमहमहूसकारन॥पैपिलवहतविप्रक्षप्रगटसरदंडप्रचारन॥नवगुनप्र
सिद्धउपवीतनित, विषमएकगुनचापबल॥संग्रामकरनद्विजदीनसौं, कोउनसुरइक्ष्वाकुकु
ल॥११॥ ॥परशुरामउवाच॥ ॥रेक्षत्राधमविप्रजानिमोहिभूलतभोरे॥हौं
जैसौद्विजदीनअवनसुनिलैमतमोरे॥समरकुंडहुतभुकसुरोषसमिधाचतुरंगीय॥षादिर
श्रुवाकुठारसजयधनुबानसुसंगीय॥पृथ्वीशप्रबलसंपुष्टपशु, सदाहोमकीनैसुभट॥संग्राम
जज्ञदीक्षितसुहूं, परशुरामब्राह्मनप्रगट॥१२॥तबकुलभौमूलकमहीपराजारघुवंशीय॥
तिहिंसभूमिभुग्गईयपाइपूरनपरसंसीय॥छत्रीवधव्रतलयौहमजूपितवयरप्रमानीय॥हूं

ठाढौसंग्रामषेत्रजाचतजुधजानीय ॥ सोगयौभागिजुवतिनिसरन, तेइभईतनत्रांनतहँ ॥ बिथरयौनामनारीकवच, मानितदिनसंसारमहँ ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुजुतिहा रौगाधिसुत । ममकुठारभयमानि ॥ तबवाच्यौक्षत्रियत्वतजि । आपभयौद्विजआनि ॥ १८ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पुहपहारसप्रहास कंठकिनपरहुंकु ठारा ॥ तनभूषनमनिमयअतुलदुरधरसरधारा ॥ चित्रसालवरुचिताचढतनहींहोताविम नचित ॥ बिमलअंगसौरभविलेपहुतभुकहूपरमहित ॥ सिरचढहुलोकअपलोकसम, कोउ बसूरकातरकहइ ॥ सबभाइभक्तिद्विजवंशसौं, व्रतराविवंसीनिर्वहइ ॥ १४ ॥ ॥ छंदउ धोर ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ रेरामरविकुलबाल ॥ घरपीसियाघरघाल ॥ सविनयमोहि सुनाय ॥ तूंकहतबातबनाय ॥ धनुभंगजीरनजान ॥ मृतबध्यौगर्वअमान ॥ नहींसंकमेरी कीन्ह ॥ चितभूतनाथनचीन्ह ॥ अपराधउपज्यौआइ॥सौईटरैनाहिनसुभाइ ॥ वीयदैकुठार हिबाहु ॥ जससहितपुनीघरजाहु ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ ह्वधनुषटूटनहार ॥ सबजो गमिलिसंसार ॥ बहुकालगतिबलवान ॥ नहिसुझिदेवनिदान ॥ इहांहोनहारसुहोइ ॥ क हाकरैताकहंकोइ ॥ कहैकुलिशशतत्रिणअंग ॥ भवकुलीशत्रिणज्यौभंग ॥ अबगुनीआन हुंकोइ ॥ सिवधनुषसंधईसोइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रहिहैनहींभवतव्यता । कोटिनिकरहुउपा इ ॥ रहनहारसोइपैरहै । जानहारसोइजाइ ॥ १९ ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ दुष्टक्षत्रिकु लसौंदया । काहूकरैप्रकार ॥ भवसोइफलभोगवै । हैताकहँधिकार ॥ २० ॥ जोउबरयौछल छद्मकिहूं । सबकोहोतसंघार ॥ करौनाशसोइसोधिकै । अदयधर्म्मअनुसार ॥ २१ ॥ ॥ छं दपधरी ॥ ॥ सुनिराजपुत्रसह बंधुसाथ ॥ हठिसजहुबानकोदंडहाथ ॥ सरछोडतहौंअबप्रा नछेद ॥ वधबालनसहुकिनलोकवेद ॥ मुकहुहथ्यारहाथनिसमेत ॥ षगचापसाधिकैमंडहु षेत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ भृगुनंदबानछोडहुभयान ॥ सनमुषहिसहूंपुहपनिस मान ॥ करिरोषकंठवाहहुकुठार ॥ हमयहैनाहिंतुमसौंहथ्यार ॥ टूट्यौपिनाकपरसताहिपानि जीरनघुनव्रनमयमैनजानि ॥ लघुदोषकरतद्विजअधिकदाप ॥ आचारनीतितुमपढेआ प ॥ हमाविप्रजानिजोरतजुहाथ ॥ मनवाचनवांहिअग्रमाथ ॥ दानवदइत्यनरनागदेव ॥ सिरनावहिकाहूनकरहिसेव ॥ करषग्गपचारैरनहिकोइ ॥ हठलागिलरहिकिनकालहो इ ॥ संकहिद्विजकेसुरभीप्रसंस ॥ हमजमहूनत्रासहिवंसहंस ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ निर्वीरकर्‌यौमैभुवनिकेत ॥ हटलागिलागिपितुवयरहेत ॥ जिहिंदईतुमहिविद्याअजान ॥ निहचैसुनिताहूंकेनिदान ॥ कौशिकजोतेरोगुरुकहाइ ॥ सोइव्राह्मनव्हैबांच्यौसुभाइ अनवध्यबाणममगनहुंएह ॥ द्विजसुरभिनपुंसकबालदेह ॥ अरुनारिदीनरोगीअनाथ ॥ हथियारडारिजोरेजुहाथ ॥ तूंबालकहासहिहैसुताप ॥ अमरममवानभयभजेआप ॥ रे बालछांडिबातानिबनाउ ॥ जीयलैकठाइकरग्रेहजाउ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करकाटेविनुरेकु वर । निहचैछाडौनाहिं ॥ वातओरअज्ञानवस । मनचिंतैमनमाहि ॥ २२ ॥ ॥ श्री रामउवाच ॥ ॥ व्रह्मतजजवहींवध्यौ । जामदग्निजीयजान ॥ जोभवतव्यसुनाटरै । देष्यौरामनिदान ॥ २३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कर्‌यौभंगकोदंडदाहतवडरमैदिन्नो ॥

त्रिणप्रमाणतक्कयौकल्हुनतेरौभयकिन्नौ ॥ देवदैत्यराक्षसनृसबआषंडलआए ॥ मैंतेइकी
नैविमदसबैंनिजग्रेहसिधाए ॥ अजहूंयहठाढौरणअजिरविषमकरौंसंग्रामवर ॥ श्रीराम
कह्यौद्विजरांमसौं ॥ सज्जहुघोरकुठारशर ॥ १५ ॥ महिमंडलडगमगहुविसदविधिसृष्टि
विनासहु ॥ लोकत्रयकिनचलहुसप्तमिलिसिंधुसमासहु ॥ तजहुभोगिभुवभारडरहुदि
ग्गजगिरिडोलहु ॥ अंधकारदिसिविदिसिबढहुमौतीभयबोलहु ॥ डगडोलईसत्रासनअ
डिग, भरममुक्किधसिजाहुभूव ॥ बैकल्पछांडिहोइयेविहित, सावधानजमदग्निसूव ॥
१६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कुंडलियाछंद ॥ ॥ आकंपीयअगजगअवनिव्रतालिन्नौ
संग्राम ॥ हाहारवत्रैलोकहुवरनरोषेदोउराम ॥ रनरोषेदोउरामअसुरसुरत्रासउ
पज्जीय ॥ इकधनुषटंकारइक्कफरसाकरसज्जीय ॥ इक्कपीतपटकसीयइक्कजटजूटसुथं
प्पीय ॥ वातप्रलयवित्थरीयअवनिअगजगआकंप्पीय ॥ २ ॥ ॥ विधिरुवाच ॥
॥ उपजिपरीविपरीतयहमहिसुरनरभयमानि ॥ अनचिंतितयाहीसमयविमलभईन
भवांनि ॥ विमलभईनभवानिब्रह्मकरिविनयनिवारीय ॥ निषिलसृष्टिममनाशवा
रिअर्णवजुविचारीय ॥ भृकुटिरेषभुवभंगसुकरतुमआयुधसज्जीय ॥ महीभारमुकिहैं
सृष्टिविपरीतउपज्जीय ॥ ३ ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महारुद्रएहीसमय।
आनिकह्यौउपदेस ॥ विधिरचनायहविनशिहैं । विग्रहतजहुविसेष ॥ २४ ॥ एक
जोतिस्वछंदतुम । भासितहोभवभूत ॥ आपुनमांझविरोधयह । अनुचितकर्मअभूत
॥ २५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ द्विजरामसुनहुधर्माधिकार ॥ रघुरामसदावर्जितवि
कार ॥ तुमआदिअंतअवसानएक ॥ आकाररचतकारनअनेक ॥ दुवदेहनामएकैद
याल ॥ षितिधर्महेतषेचरषयाल ॥ आयुर्बलछुव्योधनुषअंत ॥ सोइटूव्योअवसरपा
इतंत ॥ रघुरामनियतनिर्दोषनिंत्ति ॥ अविकारअंगपूरनप्रकृत्ति ॥ अनवयअमलतु
महोअनंत ॥ आगमहूंनिगमनहीआदिअंत ॥ विभुवयरनेहवर्जितविकार ॥ भवभू
तहेतभुवहरनभार ॥ आपुनपैचानहुंसमयआज ॥ करीयेविचारअबदेवकाज ॥ तजी
यैविरोधनहींसमयतास ॥ समभाउसदातुमसावकास ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥
॥ रोषपटलद्विजरामके । रहेछोहउरछाय ॥ अनिलशंभुउपदेसज्यौं । बादलगएविलाय
॥ २६ ॥ दुहुरामउपदेसदे । जुद्धनिवारिसुजान ॥ कहिजयरघुद्विजरामकृत । हरभए
अंतरध्यान ॥ २७ ॥ ॥ परशुरामउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पूरववृत्तांतअपनौ
प्रकास ॥ सोपरसरामकीनौसहास ॥ सुनिरामरह्यौहुंध्यानसाधि ॥ आषेटछत्रिछांडीउ
पाधि ॥ तुमकह्यौतंगहरधनुषतानि ॥ महसब्दसुन्यौमैंक्रोधमानि ॥ यहदेवसरासन
करहुसाज ॥ अपनौबलतेजादिषाउआज ॥ ॥ दसरथउवाच ॥ ॥ सोसुनतआ
इदशरथनरेस ॥ भयजुक्तकह्यौसौभार्गवेस ॥ ऋषिवंसउपजितुमपरशुराम ॥ तजि
क्रोधसांतव्रतलयौताम ॥ कश्यपहिदईउर्वीअशेष ॥ वैराग्यनेमलीनौविशेष ॥ आकृति
विरोधअतिक्रोधअंग ॥ प्रभुजानतसबनैगमप्रसंग ॥ इहिंबालप्रतक्षाकौनअर्थ ॥ सुर
राजहितुमपूछनसमर्थ ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ कीनौनचित्तदरशरथकहाऊ ॥ राम

सौंकहतसात्विकसुभाऊ ॥ द्वैधनुषरस्त्रसुनिरामदेव ॥ उपराजिविश्वकर्माअजेव ॥ अम
रनिमिलिशंभुहिदयोएक ॥ विष्णुहिदीयदूजोजुतविवेक ॥ भगवंतधनुषदीनोअभूत ॥
भृगुपुत्ररिचीकहिन्यासभूत ॥ जमदग्निहिदीनोपिताजानि ॥ इनलयोमहामनमोदमा
नि ॥ हूंजापकरतअन्यत्रजाइ ॥ हैहयाधीशइहिंसमयआइ ॥ तिहिंकामदुघालगिपाप
कीन ॥ जमदग्निमारियहधनुषलीन ॥ लैगयोदुष्टतबधनुषधेन ॥ संग्रामविनापाएसुषे
न ॥ मोहिभयोदुष्षदारुनअमेय ॥ तबगयोचक्रतीरथसतेय ॥ विष्णुहितकरयोमैतप
विशेष ॥ इंद्रीयनिदमनसाधनअशेष ॥ अषिलेशाचित्तव्यापकअनतं ॥ ममममर्मजानिव
रदीयमहंत ॥ जिहिंहेतदम्योआतमद्विजेस ॥ विधसबैसिद्धिव्हैहैविशेष ॥ ममअंशतेज
तवमांझआन ॥ करिहेप्रवेशपूरनप्रमान ॥ मिलिजुद्धहैहयाधीशमारि ॥ पृथ्वीनिक्षेत्र
करिहौपचारि ॥ देद्विजनिवेरइकवीसदान ॥ मंत्रनिप्रयोगजुतउदकमान ॥ भरिरुधिरकुं
डतरपनसभेव ॥ करिहौतुमदारुणकर्मदेव ॥ तवउपजैतुमकहसांतभाउ ॥ देपृथ्थीकस्यप
हिपूजिपाउ ॥ जुतसाधुभावतपकरहुजाइ ॥ सबकाजसफलव्हैहैसुभाइ ॥ व्हैत्रैताजुगरा
मावतार ॥ तबदरशनहुदेहौउदार ॥ उहांलैहौअपनोतेजअंश ॥ पुनिसाधुभावव्हैहोप्रसं
॥ भार्गवउवाच ॥ छंदउधोर ॥ देमोहिवंछितदान ॥ हरिभएअंतरध्यान ॥ प्रभुकृपा
मैवरपाइ ॥ सबकाजसाधिसुभाइ ॥ षलहयोहैहयषेत ॥ लहिसुरभिचापसमेत ॥ वेइविष्णु
तुमअवतार ॥ भवभूमिटारनभार ॥ यहविष्णुचापअजेव ॥ दिगविजितलीजैदेव ॥ क
विरुवाच ॥ हरिलयोरामसुहाथ ॥ सबतेजचापहिसाथ ॥ द्विजरामपरिभवदीन ॥ कोदंड
इषुजुतकीन ॥ कर्णाततानिकराल ॥ कहिपरशुधरहिकृपाल ॥ अनमोघसरममआहि ॥ क
हिविप्रछेदौकाहि ॥ धुरधर्मरामसधीर ॥ वधविप्रउचितनवीर ॥ यहनीतिजानिअषेद ॥ द्वि
जरामगतिकृतछेद ॥ पुनिचिरंजीवितपाइ ॥ इहिहेतभृगुपतिआइ ॥ भार्गवउवाच ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ स्वयंविष्णुरामतुमवेदसाषि ॥ भवकंजसकतनहीचरितभाषि ॥ हैज
न्मभारभूवहरनहेत ॥ सबभाईसर्वसत्तासमेत ॥ ममभाझहूतौतवतेजमूल ॥ सोइलयो
आजतुमसानुकूल ॥ मुहिभएसबैअबसफलकाम ॥ विस्मयटरिजानैब्रह्मराम ॥ तुमदेवप्र
कृतिपारगपुनीत ॥ विधिवदनअगोचरविभुविनीत ॥ उतपत्ति १ स्थिति २ तनवृद्धिता
स ३ समता ४ बलइंद्रियहानि ५ नाश ६ जगमायातवषट्भावजान ॥ एइसवैनशतसं
भवअज्ञान ॥ विष्णुतुमसदावर्जितविकार ॥ उतपत्तिआदिअंतनअधार ॥ जलविमल
जथामलफेनजाल ॥ विस्तारधूमअनलहिविसाल ॥ आधारतुमहिमायाअमान ॥ सब
काजअजतिसंज्ञासुजान ॥ मायावृतजौलहुलोकमानि ॥ जगदीशनतौलौंतुमहिजानि ॥
अविचारसिद्धिउतपत्तिएष ॥ वैरोध्यअविद्यविद्याविशेष ॥ देहादिअविद्याकृतदुराश ॥
तिहिंमिलिप्रतिबिंवितहोततास ॥ चितसक्तिजीवसंगमसुढार ॥ सोइजीवनामयहनिगम
सार ॥ मनप्रानदेहआपनैमानि ॥ अनबुद्धिवढतअभिमानआनि ॥ तिहिआपकर्त्तभुक्ता
कहाइ ॥ सुषदुष.पात्रतौलौंसुभाइ ॥ नहीआतमकहसंसृतिविनाश ॥ बुद्धितेंज्ञानलहिल
षैतास ॥ हठसंगचित्तअविवेकहोइ ॥ संसारीजीवहिकहैसोई॥जडचित्तहोतजवसमाजोग

॥ वसतासचित्तचेताहिवियोग ॥ उपजैजडत्वजडसंगआनि ॥ जलअनलसजुग यहनियतजानि ॥ तबसाधुसंगजौलौंनताहि ॥ उत्पत्तिसुषतौलौंनआहि ॥ संसारदुष जालौघसाथ ॥ ननिवर्तैतौलौंनरअनाथ ॥ सतसंगज्ञानउपजैविस स ॥ तबछनछनमाया तजैतास ॥ उपजैकुसंगदुर्बुद्धिआइ ॥ सोइतबप्रसादनाशैसुभाइ ॥ प्रगटेतबपूरनज्ञान प्रेम ॥ निहचैसुमुक्तिपावैसनेम ॥ तस्मातभक्तितबरहिततास ॥ शतकोटिकल्पवेदनिवि सास ॥ जीवैतथापिनहिमुक्तिजोग ॥ पावैनसुष्षकौनहूंप्रयोग ॥ तवचरणभक्तितातैंबिचा रि ॥ मुहिजन्मजन्मदीजैमुरारि ॥ जेरहितअविद्यासंगजोग ॥ लीलातवगावतइतरलोग ॥ भवसिंधुतरततेउसुभाऊ ॥ पुनिसकुलजातकौसौकहाउ ॥ जगनाथनमस्तेजगनिवास ॥ कारुण्यनमस्तेसावकास ॥ नमस्तेभक्तिभावनअभीत ॥ श्रीरामनमस्तेनाथसीत ॥ इ क्ष्वाकुवंसवनकंजभानु ॥ दनुवंशगहनदाहनकृशानु ॥ कर्त्तारसुरभिसुरहेतकार ॥ महि माअमेयजयमोहहार ॥ जयविनयसीससागरसुरेस ॥ जयदीनबंधुसोभासुदेस ॥ जयवि जितअंगकोटिकअनंग ॥ उतपत्तिस्थितिलयकरअभंग ॥ सोआदिमध्यअवसानएक ॥ इंच्छाविहारमायाअनेक ॥ जयमहारुद्रमानसमराल ॥ पितिधरनकरनषेचरषयाल ॥ सुषरसनिएकमहिमाअमान ॥ हूंकितककहौंकरुनानिधान ॥ वसरोषकछुबोल्यौकुवानि ॥ छमिजैदयालमोहिदीनजानि ॥ मैंकरेपुन्यजगजयतिकाज ॥ तवबानप्रवेसहूंअषिलआ ज ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तहांभएप्रसँनरघुवीरताम ॥ करिहूंतबपूरनचित्तकाम ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ द्विजरामकह्यौदेवाधिदेव ॥ अतिकर्‍यौअनुग्रहजोअजेव ॥ निजसाधसंगउपजैसनेम ॥ परब्रह्मजुतवपदपद्मप्रेम ॥ प्रतिदिनस्तोत्रयहकरौजाप ॥ आचरिजुक्तसपवित्रआप ॥ विज्ञानभक्तिबाढौविशेषि ॥ परिणामतुमहिसमरनसपेषि ॥ इतिपरशुरामकृतस्तोत्रसंपूर्ण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामअषिलभवईशअब । माँग तयहैमुरारि ॥ पानिजोरिद्विजपरसधर ॥ वचनकहेसविचारि ॥ २८ ॥ सानुजरामसरू पशुभ । सीतासहितसुहास ॥ वेदसहाईककरहुविभु । विष्णुचित्तममवास ॥ २९ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तबरघुवीरप्रसन्नतहां । तथाअस्तुकहितास ॥ जोकछुमनअ भिलाषद्विज । पूरनहोहुप्रकास ॥ ३० ॥ जलजुतनैनसुरामजुग । भवकरुनारस भीन ॥ वारवारअतिप्रीतिवस । निजआलिंगनदीन ॥ ३१ ॥ करिपरशधरपरिक्र मण । भांतिभातिशुभभाषि ॥ चलेमहेंद्राचलअचल । हृदयरामछबिराषि ॥ ३२ ॥ वाजेगगननिसानवर । गनगंधर्वसगान ॥ पुहपवृष्टिकीयरामपर । सुरसुरराजसमान ॥ ३३ ॥ मुनिजुसिद्धचारनमहंत । देषिचरितरघुदेव ॥ करेप्रयानसुथानकह । जय जसकहतअजेव ॥ ३४ ॥ कह्यौपरशुरघुरामको । विश्वविदितसंवाद ॥ करीकीर्तिनरह रसुकवि । पूरनरहितप्रमाद ॥ ॥ इतिश्रीरामचंद्रपरशुरामसंवादसंपूर्णम् ॥ ६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दीयपरिभवद्विजरामरामविक्रमअभूतकीय ॥ श्रीनारायनधनुषतेजजुतहेलमात्रलीय ॥ सुरसिद्धनिसुषदयौजनकनराषियज्ञजय ॥ म हिमहीपमथिमानभक्तत्रैलोकअभयभय ॥ पुरघातबातचढिगगनषिति, अंशुमानतिहिं

सौंकहतसात्विकसुभाऊ ॥ द्वैधनुषरत्नसुनिरामदेव ॥ उपराजिविश्वकर्माअजेव ॥ अम
रनिमिलिशंभुहिदयौएक ॥ विष्णुहिदीयदूजौजुतविवेक ॥ भगवंतधनुषदीनौअभूत ॥
भृगुपुत्ररिचीकहिन्यासभूत ॥ जमदग्निहिदीनौपिताजानि ॥ इनलयौमहामनमोदमा
नि ॥ हूंजापकरतअन्यत्रजाइ ॥ हैहयाधीशइहिंसमयआइ ॥ तिहिंकामदुघालगिपाप
कीन ॥ जमदग्निमारियहधनुषलीन ॥ लैगयौदुष्टतबधनुषधेन ॥ संग्रामविनापाएसुषे
न ॥ मोहिभयौदुषदारुनअमेय ॥ तबगयौचक्रतीरथसतेय ॥ विष्णुहितकर्यौमैंतप
विशेष ॥ इंद्रीयनिदमनसाधनअशेष ॥ अषिलेशाचित्तव्यापकअनंत ॥ ममममंजानिव
रदीयमहंत ॥ जिहिंहेतदम्यौआतमद्विजेस ॥ विधसबौसिद्धिव्हैहैविशेष ॥ ममअंशतेज
तवमांझआन ॥ करिहैप्रवेशपूरनप्रमान ॥ मिलिजुद्धहैहयाधीशमारि ॥ पृथ्वीनिक्षेत्र
करिहौपचारि ॥ दैद्विजनिवरइकवीसदान ॥ मंत्रनिप्रयोगजुतउदकमान ॥ भरिरुधिरकुं
डतरपनसभेव ॥ करिहौतुमदारुणकर्मदेव ॥ तवउपजैतुमकहसांतभाउ ॥ दैपृथ्वीकस्यप
हिपूजिपाउ ॥ जुतसाधुभावतपकरहुजाइ ॥ सबकाजसफलव्हैहैसुभाइ ॥ व्हैत्रैताजुगरा
मावतार ॥ तबदरशनहुंदेहौंउदार ॥ उहांलैहौंअपनौतेजअंश ॥ पुनिसाधुभावव्हैहोप्रसं
॥ भार्गवउवाच ॥ छंदउधोर ॥ दैमोहिवंछितदान ॥ हरिभएअंतरध्यान ॥ प्रभुकृपा
मैंवरपाइ ॥ सबकाजसाधिसुभाइ ॥ षलहयौहैहयषेत ॥ लहिसुरभिचापसमेत ॥ वेइविष्णु
तुमअवतार ॥ भवभूमिटारनभार ॥ यहविष्णुचापअजेव ॥ दिगविजितलीजैदेव ॥ क
विरुवाच ॥ हरिलयौरामसुहाथ ॥ सबतेजचापहिसाथ ॥ द्विजरामपरिभवदीन ॥ कोदंड
इषुजुतकीन ॥ कर्णाततानिकराल ॥ कहिपरशुधरहिकृपाल ॥ अनमोघसरममआहि ॥ क
हिविप्रछेदौकाहि ॥ धुरधर्मरामसधीर ॥ वधविप्रउचितनवीर ॥ यहनीतिजानिअषेद ॥ द्वि
जरामगतिकृतछेद ॥ पुनिचिरंजीवितपाइ ॥ इहिहेतभृगुपतिआइ ॥ भार्गवउवाच ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ स्वयंविष्णुरामतुमवेदसाषि ॥ भवकंजसकतनहीचरितभाषि ॥ हैज
न्मभारभूवहरनहेत ॥ सबभाईसर्वसत्तासमेत ॥ ममझहूतौतवतेजमूल ॥ सोइलयौ
आजतुमसानुकूल ॥ मुहिभएसबैअबसफलकाम ॥ विस्मयटारिजानैब्रह्मराम ॥ तुमदेवप्र
कृतिपारगपुनीत ॥ विधिवदनअगोचरविभुविनीत ॥ उतपत्ति १ स्थिति २ तनवृद्धिता
स ३ समता ४ बलइंद्रियहानि ५ नाश ६ जगमायातबषट्भावजान ॥ एइसवैनशतसं
भवअज्ञान ॥ विष्णुतुमसदावर्जितविकार ॥ उतपत्तिआदिअंतनअधार ॥ जलविमल
जथामलफेनजाल ॥ विस्तारधूमअनलहिविसाल ॥ आधारतुमहिमायाअमान ॥ सब
काजअजतिसंज्ञासुजान ॥ मायावृतजौलहुलोकमानि ॥ जगदीशनतौलौंतुमहिजानि ॥
अविचारसिद्धिउतपत्तिएष ॥ वैरोध्यअविद्यविद्याविशेष ॥ देहादिअविद्याकृतदुराश ॥
तिहिंमिलिप्रतिबिंबितहोततास ॥ चितसक्तिजीवसंगमसुढार ॥ सोइजीवनामयहनिगम
सार ॥ मनप्रानदेहआपनैंमानि ॥ अनबुद्धिबढतअभिमानआनि ॥ तिहिंआपकर्त्तभुक्ता
कहाइ ॥ सुषदुषःपात्रतौलौंसुभाइ ॥ नहींआतमकहसंसृतिविनाश ॥ वुद्धितेंज्ञानलहिल
षैतास ॥ हठसंगचित्तअविवेकहोइ ॥ संसारीजीवहिकहैसोई॥जडचित्तहोतजवसमाजोग

॥ वसतासचित्तचेताहिवियोग ॥ उपजैजडत्वजडसंगआनि ॥ जलअनलसजुग यहनियतजानि ॥ तबसाधुसंगजौलौनताहि ॥ उत्पत्तिसुषतौलौनआहि ॥ संसारदुष जालौघसाथ ॥ ननिवर्तैतौलौंनरअनाथ ॥ सतसंगज्ञानउपजैविस स ॥ तबछनछनमाया तजैतास ॥ उपजैकुसंगदुर्बुद्धिआइ ॥ सोइतबप्रसादनाशैसुभाइ ॥ प्रगटेतबपूरनज्ञान प्रेम ॥ निहचैसुमुक्तिपावैसनेम ॥ तस्मातभक्तितबरहिततास ॥ शतकोटिकल्पवेदनिवि सास ॥ जीवेतथापिनहिमुक्तिजोग ॥ पावैनसुष्षकौनहूंप्रयोग ॥ तवचरणभक्तितातैंबिचा रि ॥ मुहिजन्मजन्मदीजैमुरारि ॥ जेरहितअविद्यासंगजोग ॥ लीलातवगावतइतरलोग ॥ भवसिंधुतरततेउसुभाऊ ॥ पुनिसकुलजातकौसौकहाउ ॥ जगनाथनमस्तेजगनिवास ॥ कारुण्यनमस्तेसावकास ॥ नमस्तेभक्तिभावनअभीत ॥ श्रीरामनमस्तेनाथसीत ॥ इ क्ष्वाकुवंसवनकंजभानु ॥ दनुवंशगहनदाहनकृशानु ॥ कर्त्तारसुरभिसुरहेतकार ॥ महि माअमेयजयमोहहार ॥ जयविनयसींससागरसुरेस ॥ जयदीनबंधुसोभासुदेस ॥ जयवि जितअंगकोटिकअनंग ॥ उतपत्तिस्थितिलयकरअभंग ॥ सोआदिमध्यअवसानएक ॥ इच्छाविहारमायाअनेक ॥ जयमहारुद्रमानसमराल ॥ पितिधरनकरनषेचरषयाल ॥ सुषरसनिएकमहिमाअमान ॥ हूंकितककहौकरुनानिधान ॥ वसरोषकछुबोल्यौकुवानि ॥ छमिजैदयालमोहिदीनजानि ॥ मैकरेपुन्यजगजयतिकाज ॥ तवबानप्रवेसहूंअषिलआ ज ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तहांभएप्रसँनरघुवीरताम ॥ करिहूंतबपूरनचित्तकाम ॥ ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ द्विजरामकह्योदेवाधिदेव ॥ अतिकर्योअनुग्रहजोअजेव ॥ निजसाधसंगउपजैसनेम ॥ परब्रह्मजुतवपदपद्मप्रेम ॥ प्रतिदिनस्तोत्रयहकरौजाप ॥ आचरिजुक्तसपवित्रआप ॥ विज्ञानभक्तिबाढौविशेषि ॥ परिणामतुमहिसमरनसपेषि ॥ इतिपरशुरामकृतस्तोत्रसंपूर्ण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामअषिलभवईशअब । माँग तयहैमुरारि ॥ पानिजोरिद्विजपरसधर ॥ वचनकहेसविचारि ॥ २८ ॥ सानुजरामसरू पशुभ । सीतासहितसुहास ॥ वेदसहाईककरहुविभु । विष्णुचित्तममवास ॥ २९ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तबरघुवीरप्रसन्नतहां । तथाअस्तुकहितास ॥ जोकछुमनअ भिलाषद्विज । पूरनहोहुप्रकास ॥ ३० ॥ जलजुतनैनसुरामजुग । भवकरुनारस भीन ॥ वारवारअतिप्रीतिवस । निजआलिंगनदीन ॥ ३१ ॥ करिपरशधरपरिक्र मण । भांतिभातिशुभभाषि ॥ चलेमहेंद्राचलअचल । हृदयरामछबिराषि ॥ ३२ ॥ वाजेगगननिसानवर । गनगंधर्वसगान ॥ पुहपवृष्टिकीयरामपर । सुरसुरराजसमान ॥ ३३ ॥ मुनिजुसिद्धचारनमहंत । देषिचरितरघुदेव ॥ करेप्रयानसुथानकह । जय जसकहतअजेव ॥ ३४ ॥ कह्योपरशुरघुरामको । विश्वविदितसंवाद ॥ करीकीर्तिनरह रसुकवि । पूरनरहितप्रमाद ॥ ॥ इतिश्रीरामचंद्रपरशुरामसंवादसंपूर्णम् ॥ ७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दीयपरिभवद्विजरामरामविक्रमअभूतकीय ॥ श्रीनारायनधनुषतेजजुतहेलमात्रलीय ॥ सुरसिद्धनिसुषदयौजनकनराषियज्ञजय ॥ म हिमहीपमथिमानभक्तत्रैलोकअभयभय ॥ षुरघातबातचढिगगनषिति, अंशुमानतिहिं

अंतरीय ॥ घनसेनिसानघुमरतसघन, रामअवधिपथसंचरीय ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शुभवेलापंचांगसुध । अवधिनिकटदलआइ ॥ दूतनिअगनितदानलहि । सुषआगमन सुनाइ ॥ १ ॥ पाटंबरमंदिरप्रगट । बहुछारोबाजार ॥ छिरकिसुगंधनिपंथसब । उठिआ मोदअपार ॥ २ ॥ सातदिवसमगसंक्रमीय । दलबललर्लीयेविशेष ॥ पुत्रवधुनिसुतअवधि पुर । आएअवधिनरेस ॥ ३ ॥ ध्वजापताकागृहधवल । कनककलसशुभकाज ॥ द्वारद्वारतो रनउदित । विसदसुथंभविराज ॥ ४ ॥ कलसआरतीसाजकृत । वनिवनिजुवतीवृंद ॥ मंग लगानउछाहमन । आगमरामअनंद ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ निजग्रेहआइदशरथनरेश ॥ पुत्रनिसवामकीनौप्रवेश ॥ शुभसाजसबैविस्तारसार ॥ द्विजमिलेजथाक्रमराजद्वार ॥ कु लदेवपूजिआचारकीन ॥ द्विजगुरुवसिष्टविधिदानदीन ॥ मिलिसुतनिमातआनंदमूल ॥ सबनाशेसंवायविरहशूल ॥ नीसाननगरघरघरनिनाद ॥ वरिषामिलिमारुतजलदवाद ॥ विस्तारहोतमंगलविधान ॥ पाएमनुबिछुरेदेहप्रान ॥ आवासउच्चचढिजुवतिजाल ॥ तन दामिनिदुतिपटजलदमाल ॥ सबग्रेहग्रेहप्रगटेसुगंध ॥ अलिनिकरभ्रमतसौरभनिअंध ॥ बहुरंगरंगउडतेअबीर ॥ नभमाझमनहुवादरसनीर ॥ सुषग्रेहरामवैदेहिसंग ॥ अतिहि विलासज्यौंरतिअनंग ॥ वैकुंठविष्णुमनुश्रीयविलास ॥ तेइभेदजानरसभोगतास ॥ मिलि बंधुच्यारिजीयएकमूल ॥ सबहिनसौंराघवसानुकूल ॥ नितकृत्यनियतजुतसावधान ॥ न हींटरतनीतिमारगनिदान ॥ पितुतासदेषिहर्षहिअपार ॥ क्रीडासुधर्मलक्षनकुमार ॥ वन रामकरतसानुजबिहार ॥ आषेटधर्मक्रीडाउदार ॥ नितगावतहैजिहिंलोकनाथ ॥ सानं दरहसिरमनीनिसाथ ॥ श्रीरामसीयबामांगसंग ॥ अविलोकिअमरआनंदअंग ॥ नित्यश्रीनिगमहितनिर्विकार ॥ विस्तारनिरवधिविभववार ॥ नैराशानियतकरुनानिधा न ॥ मायानुसारकारनप्रमान ॥ सोइधारिदेहमानुषसँसार ॥ अषिलेशाकरतलीलाअ पार ॥ २० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ बालकेलिरघुवीरकर्मविक्रमअभूतकीय ॥ तारिवा नताडकासुभुजसंग्रामससुसंधीय ॥ मषरष्याकौशिकमुनीशाशिलतेत्रीयाकिन्नीय ॥ धनु षभंजिसीयवरीछोहभृगुपतिगातिछिन्नीय ॥ पुरअवधिआइपूरनपुरुष, भवअनकेसुषभु गईय ॥ काकुत्स्थवंसउद्योतकर, कीर्तिसुकविनरहरकहीय ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ कहेचरितरघुवीरके । बालकांडशुभवेष ॥ विघनहरनमंगलकरन । भौसंपूर्णअशेष ॥५॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेपौरुषेयरामायणेमाहामुक्तिमार्गेश्रीरामजन्मोत्सवबालकांडसंपूर्ण ॥

॥ अथ अजोध्याकांड प्रारंभ ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मुनिनारदआगमन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकसमयमंदिरअ जिर । सीयासहितश्रीराम ॥ सिंघासनसुंदरसुषद । मनुबैठेरतिकाम ॥ १ ॥ मनिमय डांडीसितचमर । सीतापानिसवाल ॥ विमलविलोकितविधुवदन । वारिजनयनविसाल ॥ २ ॥ शशिनिभउज्जलफटिकतन । वीनाकरवरवानि ॥ तिहिंअवसरविधिलोकतैं । नारदउतरेआनि ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ दरसनहिमात्रउठिरामदेव ॥ अषिलेस आइसन्मुषअजेव ॥ कीनैससीततहांनमस्कार ॥ करजोरिकह्यौदसरथकुमार ॥ कारिअ

र्घपूजाविधिवतअनेक ॥ विधुवदनबचनबोलेविवेक ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तवद
रसनदुर्लभजगतदेव ॥ हसेसंसारिनिसुनहिभेव ॥ मनरहतसदाविषयानिमांझ ॥ सु
षराजसइच्छाभोरसांझ ॥ ममउदितपुराकृतभएअभीत ॥ तुमदीनौदरसनजगपुनीत
कृतकृत्यभएहमसकलकाज ॥ मुनिकहहुआगमनहेतआज ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
दाशरथिभगतवछलदयाल ॥ कामोहतुमहिदरशीतृकाल ॥ करिकृपारामतुममोहकारी
शुभवचनकहेलोकानुसारि ॥ जाजगतआदिभूताअजेय ॥ सामायातवग्रहणोसप्रेय ॥
तबजोगहोतउतपत्तितास ॥ ब्रह्मादिप्रजामायाविलास ॥ सामायातवआश्रमसंसार ॥
तृगुणातमभासतिसहजसार ॥ सात्विकरजतामसगुणानिसंग ॥ सितअरुणआसित
आभासअंग ॥ त्रयलोकगृहस्थितसास्वतंत्र ॥ महग्रेहनाहिनवसजंत्रमंत्र ॥ त्वंराम
विष्णुसीयश्रियावाम ॥ भवरामभवाजानकीभाम ॥ विधिरामब्राह्मीसीयविशेषि ॥ र
विरामप्रभामैथिलीपेषि ॥ शशिरामरोहणीसियासंग ॥ शक्रतुमशचीसीताशुभंग ॥ तु
मअनलसीयस्वाहाप्रकार ॥ सेवतसुभाईपतिव्रतसार ॥ यमजदपिरामतुमसंजमदेव
॥ संयमनीसीताकरतिसेव ॥ नैऋतिरामतुमजगतनाथ ॥ सर्वथातामसीसीयासाथ ॥
वरुणतुमरामलोचनविशाल ॥ भार्गवीजानकीतिलकभाल ॥ अनिलतुमसर्वगतअंग
अंग ॥ सदागतिसुषदवैदेहिसंग ॥ वैश्रवणरामसंग्रामवीर ॥ संपदासर्वसीतासरीर
॥ तुमरुद्रनिषिलभवभूतनाश ॥ सीतारुद्राणीजुतसहास ॥ सबपुरषनामसोइतवस्व
रूप ॥ जोषितादेहमायासजूप ॥ निहचैत्रिलोकतवमयनिदान ॥ इहांनास्तिकिंचितहे
तआन ॥ गतमायातवसंगउदितज्ञान ॥ महतत्वहोतएकत्रभान ॥ कारणजुहेतबुधि
अहंकार ॥ मिलिप्राणपंचइंद्रियप्रचार ॥ इनहोतप्रगटसोइदेहआहि ॥ तबजन्मम्
त्युसुषदुषताहि ॥ इनतेजबविछुरतप्राणआप ॥ पुनिब्रह्मवहेनहीकछुवियाप ॥ सब
सहतजीवइतहीनिसंग ॥ अक्रेयअग्राहीवहअभंग ॥ तुमकरिप्रतिष्ठसाजीवजोति ॥
हेतवसतुमाहिंमहलीनहोति ॥ तस्मात्सर्वकारणत्वमेव ॥ दुषसुषनसैजबचीन्हिदेव ॥
भ्रमहोतरजुज्योंभुजगभाइ ॥ छनरहतदृष्टिअज्ञानछाइ ॥ उपजेप्रबोधछांडेअनीति ॥
भ्रमटरैरजुवहनाहिनभीति ॥ अज्ञानहेतदेषतअनेक ॥ उरचषप्रकाशतबतुमहीएक ॥
दुषसुष्षविभागीयहैदेह ॥ निर्धारजीवसौंनहींसनेह ॥ यहमोहिअनुग्रहकरहुआज ॥ भ
गवंतहौउंतबभक्तिभाज ॥ तवनाभिकंजउतपन्ननाथ ॥ सुतकंजभयौब्रह्मासनाथ ॥ मम
जनकसुयेब्रह्मामहंत ॥ अबमोहिपौत्रजानहुअनंत ॥ आनंदसलिलचलिदृगनिओर ॥
चाहतमुषमुनिज्यौंशशिचकोर ॥ पुनिकह्योफेरिनारदप्रकाश ॥ पठयौहूंब्रह्माप्रभुहिपाश
रावणवधकारणजन्मराम ॥ तुमलयोप्रतिज्ञाजुक्तताम ॥ जुवराजपिताकरिहैअजेव ॥
दिनव्हैहौराज्याशक्तदेव ॥ पुनिहातिहैकौरावणसपाप ॥ अषिलेशप्रातिज्ञाकरीआप ॥
वरदयोमोहिभुवहरनभार ॥ करीयेप्रमानदशरथकुमार ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥
नारदसौरघुवरकहिनिदान ॥ मैंकरीप्रतिज्ञासोप्रमान ॥ कछुकालआहिअवरोधकाज ॥
देहूंसुषदेवनिदेवराज ॥ दशचारिवर्षतपहितसुदेश ॥ पुनिकरिहौंदंडकवनप्रवेश ॥ मै

थिलीव्याहनारदमुनेश ॥ आसुरअमूलकरिहौंअसेस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोइमा निवचननारदसहास ॥ पदवंदिचलेसुरपुरप्रकाश ॥ ४१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिप्रबोध रघुवीरकह । विधिकेवचनविधान ॥ हरषवंतहरिगुनगुनत । नारदगएस्वस्थान ॥ ४॥ ॥ इतिश्रीरामप्रतिनारदप्रबोधसंपूर्ण ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथश्रीरामजुवराज्यतिलकोत्सवप्रारंभ ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ केकयदेशनरेशके । मंत्रीबुद्धिनिवास ॥ भरतकुमारहि लैंनकों । आएअवधिप्रकाश ॥ १ ॥ पितआज्ञालेप्रेमपर । भरतशत्रुघनसंग ॥ मातुलगृ हगिरिवज्रतहां । आसंमुदितअभंग ॥ २ ॥ संवतएकअनेकसुष ॥ विलसेरामाविलास ॥ जौभव्रतव्यसुनाटरै । आनिमिलैअनयास ॥ ३ ॥ सिंघासनथितइकदिवस । राजतअव धिनरेश ॥ मुकरमांझदेषेअमल । शिरकपोलसितकेश ॥ ४ ॥ वर्षअयुतनृपताविलसि । अवधिनिकटततआइ ॥ उचितबुद्धिउतपन्नयह । भावीहेतसुभाइ ॥ ५ ॥ तैसीहीउपजैसु मति । संगउद्यमबढिसोइ ॥ तैसोमिलैसहायतहां । जैसीहोनीहोइ ॥ ६ ॥ ॥ छंदउधो र ॥ ॥ इकसमयदशरथराइ ॥ अतिभक्तिगुरुगृहआइ ॥ एकांतबैठअभंग ॥ पुनिकहत ग्रेहप्रसंग ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ द्विजसुनहुइकगुरुदेव ॥ भवममजुअंतरभेव ॥ सुषवि भवराजअशेष ॥ सबमुक्तिहमसविशेष ॥ कीयसमरअमरसहाय ॥ प्रभुतासुकीरतिपाय ॥ विधिवेददानविधान ॥ सबकरेद्विजसनमान ॥ अबआहिइच्छाएक ॥ अभिलाषफलहिअ नेक ॥ जुवराजपददैराम ॥ हमकरहिकछुविश्राम ॥ हमतिलकनिजकरदैहिं ॥ इहिंजन्म कौफललैहि ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ पुनिकीयवसिष्टप्रमान ॥ मतिधन्यदेवसुमान ॥ यहसबनिकैअभिलाष ॥ भवसुनतहमजनभाष ॥ सोईकहततूमअवधेश ॥ निरधारकरहु नरेश ॥ यहदेषिअमितउछाहु ॥ सबलैहिलोचनलाहु ॥ धरिछत्ररामसधीर ॥ बनितिलक रघुकुलवीर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मनमंत्रकीनप्रमान ॥ नृपग्रेहआइनिदान ॥ तहांबो लिमंत्रीसुमंत ॥ तिहिंकहेसबमनतंत ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ अबकरहुउद्यमएहु ॥ जुव राजरामहिदेहु ॥ सबकरहुसाजैसिद्ध ॥ परमानवेदप्रसिद्ध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोइ करेमंत्रिसुजान ॥ विस्तारविहितविधान ॥ संभारवेदप्रसिद्ध ॥ सबहोनलागेसिद्ध ॥ ॥ छंदपधरी ॥ शुभकन्याषोडशसुंदरीय ॥ कनकनगजटितशृंगारकीय ॥ जलतीरथपू रितउचितजानि ॥ इकसहसकनकघटधरेआनि ॥ त्रयसिंघचर्मसिषनषसमेत ॥ हिमदंड छत्रशुभचमरषेत ॥ मृत्तिकाउचितफलपत्रमूल ॥ संभारसिद्धसुरसानुकूल ॥ गजचतुर्दंत भूषितउतंग॥ गुंजतकपोलमदमत्तभृंग॥ वाजीशुभलक्षनतनविशाल॥ स्वर्णमयसाजमनि मुक्तमाल॥ सबवृक्षपुहपफलजुक्तसाज॥ विधिविधिअनेकमंगलविराज॥ प्रतिग्रेहमालवं दनप्रमान॥ विस्तारविविधबांधेवितान॥ गृहकलशपताकाध्वजउतंग ॥ बनिद्वारद्वारतोर नबिहंग॥ देवालयपूजाबलिजुदीन॥ कृतजुक्तनगरसुरप्रसंनकीन ॥ किन्नरमिलिगंधर्वगा नकार॥ नर्तकीवारमुष्याविहार॥ अन्नेकभांतिवाजित्रआनि॥ बहुमिलेवजंत्रीविमलवानि॥ गजहयरथपयदलमिलिअगान॥ निर्घोषबहुलबाजतनिसान॥ व्हैनगरमहोछवग्रेहग्रेह॥

शुभतिलकरामदरशनसनेह ॥ गृहगृहप्रतिजुवतीकरतगान ॥ विस्तारविविधमंगलविधा
न ॥ मनिरतनदिव्यमुक्तानिमाल ॥ स्वर्णमयविविधभूषनविशाल ॥ द्विजवरवसिष्टगुरुवा
मदेव ॥ अन्नेकसिद्धमुनिगनअजेव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वेदउक्तअभिषेकविधि । सबैसिद्ध
संभार ॥ आनिकरेएकत्रतब । राजतराजदुवार ॥ ७ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ कह्योन
रेशवसिष्टकहँ । सौसन्मानसनेह ॥ रामतिलकजुवराजकौ । दिव्यमुहूरतदेहु ॥ ॥ वसिष्ठ
उवाच ॥ ॥ प्रातवितीतैंद्वैप्रहर । करहुमुहूरतकाज ॥ कह्योवसिष्टविचारकरि । रामति
लकजुवराज ॥ ९ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ दशरथनृपआज्ञादई । गुरअंतहप्पुरजाई ॥ कौ
सल्यासौंसबकहहु । मंगलविधिसमझाइ ॥ १० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामचंद्रसीता
सहित । जहांविराजतजानि ॥ तबवसिष्टदरसनतहां । अनिवारितदियआनि ॥ ११ ॥ सी
तारामसुजानसंग । आपुनसनमुषआइ ॥ करुणाजुतदंडौतकृत । पुनिधोएगुरुपाइ ॥ १२ ॥
॥ रामउवाच ॥ ॥ सिंघासनदैस्वर्णमय । गुरुहिरामगुनग्राम ॥ करअंगुलिजुगजोरि
कहि । धन्यआजममधाम ॥ १३ ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ सबबिधिमानिवसिष्टसुष । जग
कर्ताजीयजान । लोकधर्म्मउपदेसलगि । प्रभुसोइकहतप्रमान ॥ १४ ॥ ॥ छंदवेताल ॥
परमातमातुमपुरुषपूरणस्वयंसिद्धसुरूप ॥ साधहितसुरकाजसाधनभएरघुकुलभूप ॥ तुम
अमितमायामनुजतनधरिदेवदीनदयाल ॥ लंकेशवधहितजनमलीनौषलसमूलषयाल ॥
यहमंत्रहैअतिगूढआपुनदियौविधिवरदान ॥ अन्यत्रनहींउघाटिवौअबनाथनिगमनि
दान ॥ पुनिसुनहुरघुकुलतिलकपूरनपुरुषरामप्रवीन ॥ नृपपुरोहितपदहिनिश्चयमानिक
र्म्ममलीन ॥ मैंसुन्योआगैब्रह्मकेमुषवेदविदितविचार ॥ इक्ष्वाकुकेकुलरामआपुनलैंहिंगे
अवतार ॥ तानिमितअंगीकारकृतमैपुरोहितपदपाय ॥ प्रभुभएमेरेकाजपूरनसबैआजसु
भाय ॥ अषिलेशइछाएकअबउरमांझउपजतआन ॥ तवमहामायामोहनीममनहिनव्या
पनिदान ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ यौंहीजुन्हैहैदेवइच्छाऋषिकरहुनिर्धार ॥ मा
यानव्यापैतुमाहिंमतुमसदासुद्धसंसार ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ पितुदेहिगौजुराज
पदतबप्रातअवसरपाइ ॥ शुभजोगवीतेमध्यसंध्याशुद्धलग्नसुभाइ ॥ पृथ्वीसुकरीयौपृथ
कसज्यासयनव्रतउपवास ॥ तहांरहहुसंजमानियमजुततुमब्रह्मचर्य्यविलास ॥ दोहा ॥
करिप्रबोधरघुवीरकहँ । गुरुअंतहपुरआय ॥ रानीकौशल्याहितहँ । सबवृत्तांतसुनाय ॥ १५ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ कुलदेवनिपूजाकरति । कौशल्याशुभकार ॥ दानहोमसन्मानद्विज ।
जथावंशव्यवहार ॥ १६ ॥ ॥ इंद्रादिकउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रामहौहिजुवराजबनै
कैसेंबनजैबौ ॥ बिनुवनवासविशेषहरनसीताक्यौंव्हैबौ ॥ जोनरहरनसीयहोइआताईक्यौंरा
वन ॥ विनादोषवधविप्रपुरुषकरिहैनहींपावन ॥ वधविनादुष्टदशवदनकै, सुरकारिजकैसैस
रै ॥ सुरकहतदेविसरस्वतिसुनहु, अवनिभारक्यौऊतरै ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहिअवसरइंद्रा
दिकनि । सोचबढ्योउरसोइ ॥ पावहिरामजुराजपद । हरनसीतक्योंहोइ ॥ १७ ॥ अबतातैंनि
रधारयह । करियैकछुछलकाज ॥ जांहिरामवनवासाजिहि । रोषछांडितजिराज ॥ १८ ॥ शक्रप
ठाईसरस्वती । करनदेविसुरकाज ॥ कीजैविघ्नविशेषकारि । रामातिलकजुवराज ॥ १९ ॥ म

महात्रिवक्रामंथरा । कैकेईकीधाय ॥ ताकेउरअज्ञाततव । सरसैरहीसमाय ॥ २० ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ आवतिकुबजाराजगृह । सोभानगरनिहारि ॥ पूछ्यौउच्छवकौनय ह ॥ मंगलगृहगृहद्वारि ॥ २१ ॥ जिनकहँपूछयौतिहिंकह्यौ । रामतिलकजुवराज । सोव्है हैमहुरतसुषद । दीयबिहानगुरुराज ॥ २२ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उपज्यौदासी दाहउर । मनुसुनिआगममीच ॥ ज्यौंकपिलागेकूंछरा । नाचनलागीनीच ॥ २३ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ नारीसुभावयहजगनिदान ॥ उतकर्षनहिनसहिसकतिआन ॥ सुनिरामति लकउपज्यौंसँताप ॥ विनुअग्निजरतिमंथराआप ॥ कांपतितनलोचनअरुनकीन ॥ भृकुटि कुटिलउरद्रोहभीन ॥ इहिंरूपकैकयीग्रेहआय ॥ वैरोधविसनबूढीबलाय ॥ निद्रावसतहांरा नीनिहारि ॥ पापनीरूदनकीनोपुकारि ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ इहिंसमयनींदआवति अज्ञान ॥ तोसीनमूढकोउप्रियाआन ॥ ॥ कैकेयीवाक्यं ॥ ॥ सोसुनतउठीरानीसषे द ॥ भयभीतभईपूछतिसुभेद ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ यहवातसुनोमैअतिअभूत ॥ प्रियराजदयौतबसौतिपूत ॥ शुभलग्नप्रातमंगलसमाज ॥ रघुरामसुपावैअवधिराज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ कैकेयीसुनतयहहर्षकीन ॥ दासीहिवधाइहारदीन ॥ ॥ कैकेयीवा क्यं ॥ ॥ मंथराकहौमनक्रमसमेत ॥ कीयहर्षठोरभयकवनहेत ॥ करजोरिरामबहुकरत कानि ॥ जननीतैंमोकहँअधिकजानि ॥ मंथरावाक्यं ॥ तबफेरिकह्यौमंथराताहि ॥ अव स्थाप्रौढबुधिबालआहि ॥ नृपग्रेहजन्मतदपिअज्ञान ॥ पानिग्रहनृपतिदशरथप्रमान ॥ पति देवप्रीयापतिएकप्रान ॥ पतिभ्रमरलताआसक्तआन ॥ तुमरूपगर्वनहींजानिताहि ॥ अन्य त्रआपमनअंतआहि ॥ सुषदेततुमहिज्यौंलौसमीप ॥ पलओटमित्रकाकैपृथीप ॥ तुवपु त्रपठेमातुलनिकेत ॥ तवसौतिपुत्रकहँराजदेत ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामचंद्रलक्ष्म नदुवै ॥ एकसहितमतचित्त ॥ पावैरामजुराजपद । लक्ष्मनमंगलनित्य ॥ २४ ॥ दासभा वभजिहैंभरत । नातरुदेशनिकारि ॥ कलुसपर्धाजोकरै । ततौंडारिवेमारि ॥ २५ ॥ जाए जननीएककै । जूझिमरतजगजंत ॥ अचिरजकाभ्राताउभय । विग्रहवादवधंत ॥ २६ ॥ एकहिकश्यपतेउपजि । दैत्यदनुजनरदेव ॥ अवरमातघरवैधइहि । अजहूंलरतअजेव ॥ २७ ॥ नातौप्रीतनकोउगनत । अवनिलोभउतपात ॥ एकमरतउपजैअवर । राजवैधनि सिरात ॥ २८ ॥ दासीव्हैहोदुःसहदुष । तुमकोशल्याग्रेह ॥ विनताकद्रूकीकथा । सुनिलैनि रसंदेह ॥ २९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ मंथरोक्तविनताकद्रूपूर्वप्रसंग ॥

॥ दोहा ॥ ॥ सुनहुकथाइकसुंदरी । सौतिनकीसविसेष ॥ मुषपीयूषउराविषमाविष । विग्रहवादविशेष ॥ १ ॥ उपजीइकमाताउदर । कद्रूविनतानाम ॥ दक्षप्रजापतिकीसु ता । ऋषिकस्यपकीवाम ॥ २ ॥ इक्कसमयआनंदअति । जवप्रसन्नप्रियजान ॥ निजमन वंछितभामिनी । दुहुंमांगेवरदान ॥ ॥ कद्रुवाच ॥ ॥ कद्रूमांगेजोरिकर । आकृतिविष मअभूत ॥ सहसनिसंष्याअतिसविष । पन्नगहौंहिममपूत ॥ ४ ॥ ॥ विनतावाक्यं ॥ ॥ विनतावरमाग्यौबहुरि । देहुपुत्रममदोइ ॥ नागादिकभवभूततिन । करैनसमताकोइ ॥ ५ ॥

॥ कस्यपउवाच ॥ ॥ दएवचनवरदानदुव । कस्यपप्रेमप्रकास ॥ ऐसेहीह्वैहैश्रव
सि । वामाकरहुविसास ॥ ६ ॥ तहांभावीवसगर्भस्थिति । भईउभयजबभाम ॥ कस्यपजुव
तीसौंकह्यौ । करीयोजतनसकाम ॥ अवधिसपूरनगर्भए । हितवंछियजबहोइ ॥ अंडविभे
दनआपतैं । करहुभूलिजिनिकोइ ॥ ८ ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ कस्यपत्रियनिप्रबोधक
रि । आपगएउद्यान ॥ तहांसाधनउग्रतप । वेदनिविहितविधान ॥ ९ ॥ छंदपधरी
॥ ॥ इहांकद्रूजुतउछवअनेक ॥ अंडाप्रसूतिभएसहसएक ॥ भौप्रसवबहुरिविनताशु
भाइ ॥ अंडाद्वैउपजेउदरआइ ॥ अंडासुधरेमृतकुंभआनि ॥ प्रतिरक्षवृद्धजुवतीप्रमा
नि ॥ शतपंचवर्षवीतेसुभाइ ॥ इहांसर्पआपबलनिकसिआइ ॥ कद्रूकेपूरनभएकाम ॥
पाएजुपुत्रबहुभुजगभाम ॥ इहांउपजिसोचविनताअनंत । किंवावरमिथ्याभयोकंत ॥
॥ ॥ विनतावाक्यं ॥ ॥ सुतसौंतिदेषबहुबढीसूल ॥ मैपायौएकुनपुत्रमूल ॥ ॥ मंथ
रावाक्यं ॥ ॥ कामनापुत्रनहींविलंबकीन ॥ इकअंडफोरिमनभौमलीन ॥ अर्धअंग
रहितजुतउर्द्धअंग । प्रगट्यौतिहिंअंडाअरुणपंग ॥ ॥ अरुणउवाच ॥ ॥ दुषभयौ
आपअर्धांगदेषि ॥ विनताहिअरुणबोल्योविशेषि ॥ अनअवधिफोरिअंडाजुआज ॥ कृत
आपकाजमेरौअकाज ॥ चितजननिकौनअपराधाचिन्ह ॥ किहिंहेतमोहितैंपंगकीन्ह ॥ अ
सहनग्रेहदासीहोहुआप ॥ परिभवबहुसाहिहौइहिंपाप ॥ पंचशतवर्षदाशत्वपाइ ॥ सुतद्वि
तीयमोषकरिहैसुभाइ ॥ वर्षसतपंचरक्षाविधान ॥ इहिंअंडप्रतक्षाकरिप्रमान ॥ यहद्विती
यअंडजिनिकरहुभेद ॥ वितुअवधिवितीतैंविरुधवेद ॥ अरुणकरिजननिउपदेसएह॥संक्र
म्योअर्कमंडलसदेह ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महापयोनिधिमथनमिलि ।
कीयसुरअसुरसमान ॥ रतनचतुर्दशकाढितहां । कीनेपुहविप्रमान ॥ १० ॥ अश्वनिक
सिउच्चैश्रवा । शशिआभीतनसेत ॥ अमिततेजविक्रमअतुल । शुभगुनलछनसमेत ॥
११ ॥ कस्यपऋषकीउभयत्रीय । इक्कसमयसुषसंग ॥ विसदगवाक्षविलासवस । बैठीग्रे
हउतंग ॥ १२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ बूझ्यौकरिकद्रूछलविधान ॥ विनताउच्चैश्रवा
कवनवान ॥ ॥ विनतावाक्यं ॥ ॥ उत्तरफिरिविनतादयौएह ॥ सर्वांगस्वेतहयका
संदेह ॥ ॥ कद्रूवाक्यं ॥ ॥ पणबांधिकह्यौकद्रूसपाप ॥ दैअमरवीचिअरुवांहआ
प ॥ जोकहैयाहिहयश्वेतकोइ ॥ हूंरहूंग्रेहतवदासहोइ ॥ हयभयौकृष्णजोदैवहेत ॥
करिहौंतोदाशीममनिकेत ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ क्रमपापधर्मपणदहुनिकीय ॥
भगिनीसपत्नीअरुतथात्रीय ॥ ॥ कद्रूवाच ॥ ॥ सुतबोलिलक्षसंष्यानिसाप ॥
यहकारनकद्रूकह्यौआप ॥ दासीत्वबांधिपनवचनदीन ॥ क्रीडायहविनताहमजुकीन
उच्चैश्रवजोहमस्वेतआहि ॥ तुमअंजनवर्णसुकरहुताहि ॥ अनकरैपुत्रछलकाजएह ॥
हूंह्वैहूंदासीसौतिग्रेह ॥ करिहैनकाजयहपुत्रकोइ ॥ मषसर्पदाहमहजरैसोइ ॥ करि
हैजन्मेजयसर्पसत्र ॥ तेनाशहिपैहैदग्धतत्र ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ यहसु
न्यौजबैविधिसर्पश्राप ॥ आएकस्यपगृहतबैआप ॥ समझाइकह्यौतहांसमाधान ॥
मतहोहुत्रीयासौंक्रोधमान ॥ जगअहितआहितेदुष्टजंतु ॥ तसवृद्धिश्रेयनाहिनपरंतु ॥

जिहिंहेतछीनषलहोतजांहि ॥ मानिवौश्रेयसोइविश्वमांहि ॥ विषहारमंत्रविद्याविधान ॥ पितदएकस्यपहिकरिप्रमान ॥ समझाइपुत्रकस्यपसहेत ॥ तबगएब्रह्मअपनैंनिकेत ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ कद्रूविनतादुहुंकृतानिदान ॥ पनयेहप्रातकरिहैंप्रमान ॥ एरहीसोइनिजग्रेहआइ ॥ पनबांधिसुभावीजोगपाइ ॥ उरसर्पत्रासउपज्यौअशेष ॥ सबकरतभएचिंताविशेष ॥ यहसमझिगएविषमुषअशेष ॥ ॥ कीयाशिषापुछिरोमानिप्रवेश ॥ प्रगट्योउच्चैश्रवआनरूप ॥ वैवर्णसितासितभौविरूप ॥ इहांकद्रुविनताउभयआइ ॥ पेष्योहयतबसुषशोकपाइ ॥ पनजीत्यौकद्रुकपटपाप ॥ अरुविनताहाखौबचनआप ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ कीनौप्रमानविनताअकोप ॥ लांछनहैसाधुनिवचनलोप ॥ पनकखौसाषिसुरसोईप्रमान ॥ मिथ्यानहोइअघत्रासमान ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ हठदुषसहतिसबसौतिग्रेह ॥ दाशत्वकर्मविनतासदेह ॥ परिभावसहितअतिव्रतविचारि ॥ मुषफेरिनबोलतिमानमारी ॥ दाशीत्वदुषदारुणदुसाधि ॥ पुनिकरतिसौतिनितनवउपाधि ॥ ॥ **अथगरुडजन्म** ॥ ॥ शतपंचवर्षवीतेसुभाइ ॥ उतपतिगरुडकौसमयआइ ॥ अवधिवसभएपूरणजुअंग ॥ भवतव्यहेतबलकीयअभंग ॥ तहांअंडतेजसहिसकिनतास ॥ पायौविहारफूट्योप्रकास ॥ महकायमहाबलअप्रमान ॥ प्रगट्योसुगरुडपृथ्वीप्रमान ॥ अग्निसमतेजतिहिंदेहआप ॥ सोकरतमहात्रैलोकताप ॥ सबदेवचराचरव्हैसषेद ॥ दहनपहगएअज्ञातभेद ॥ ॥ **सुराऊचुः** ॥ ॥ सुरकह्योअनलसौभयसमेत ॥ तुमविश्वहिजारतकवनहेत ॥ आपुनजुनीतिजानतअषंड ॥ अपराधविनादेवोनदंड ॥ ॥ **अग्निरुवाच** ॥ ॥ उत्तरतवदीनौअग्निग्रेह ॥ नहींकारनमेरौनिसंदेह ॥ विनतासुतउपज्योगरुडवीर ॥ सोमहातेजअनमितिसरीर ॥ तिहिंतेजवढ्योयहविश्वताप ॥ आराधिकरहुतिहिप्रसन्नआप ॥ सुरआइसबैजहांगरुडसाध ॥ अतिकाइतेजदेष्योअगाध ॥ ॥ **सुराऊचुः** ॥ ॥ सुरतहांप्रगटकीनौप्रसंस ॥ हूवधर्महेततुमब्रह्मवंस ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ सुरलोकगएसुरकाजसाधि ॥ इहांतापसमितभयौमिटिउपाधि ॥ शुभसांतरूपकरिलघुसरीर ॥ विनतापहआयौगरुडवीर ॥ ॥ **गरुडोवाच** ॥ ॥ मिलिहेतजुक्तपूछीजुमात ॥ यहदसाकवनतुमदुषदात ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ वृत्तांतकह्यौविनताविचारि ॥ हूंभईदासिपनवचनहारि ॥ कद्रूमिलिपुत्रनिकपटकीन ॥ हयरोमपैठिकृतवर्णहीन ॥ ॥ **गरुडउवाच** ॥ ॥ तबसुनीवातकहिगरुडताहि ॥ ॥ अपराधीमेरेसर्पआहि ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ मनगरुडसर्पअपराधमानि ॥ उपज्यौतिहिकारनवैरआनि ॥ तबतेविनतासुतव्हैसताप ॥ उरगनिभौभक्षनकरतआप ॥ दिनपुत्रनाशभयपाइभेद ॥ सुतशोकभईकद्रूसषेत ॥ अंगारगांठिबांध्योअसंत ॥ अतिदुस्सहजारेवसनअंत ॥ गतिसर्पगंधमूशीग्रसंत ॥ चषनाशतजेअरुभषैअंत ॥ गृहपैसगूढरोवतिअग्यान ॥ महिलाज्यौंतस्करशोकमान ॥ उद्यमबलनांहिनफुरतआइ ॥ परवोधसांपसूझ्योउपाइ ॥ ॥ **कद्रूवाच** ॥ ॥ कद्रूविनतासौंप्रणातिकीन ॥ पितुमातएकउतपतिप्रवीन ॥ तूंबहिनप्रानवल्लभसप्रीति ॥ अज्ञानजुक्तमैंकृतअनीति ॥ दासी

त्वतोहिदीनौकुदाइ ॥ हूंभईदोषभाजनसुभाइ ॥ दासत्वपक्षतोहिकरौदूर ॥ मंत्रइकजपै मानहुसमूर ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ कद्रूकेवचनविसासकीन ॥ विनतातबपूंछीविधि नवीन ॥ कहिकद्रूकारनकवनकाज ॥ दासत्वमिटैममदुषसमाज ॥ ॥ **कद्रूवाक्यं** ॥ ॥ मथिसिंधुसुरासुरलीयप्रमानि ॥ वहिअमृतकुंभमोहिदेहुआनि ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ सोफेरिकह्यौविनतासुभाइ ॥ वस्तुवहकहांहैसोबताइ ॥ ॥ **कद्रूवाक्यं** ॥ ॥ लव णोदधितटहैशवरलोक ॥ सबबसततहांप्राणिअसोक ॥ वनतामहँरहतनिषादवीर ॥ ति नकरिवहरक्षितसिंधुतीर ॥ एकांतठौरवहगूढआहि ॥ तातैंनहींजानतअवरताहि ॥ अ मृतघटधरयौतिहिठौरआनि ॥ मनइंद्रतहांनिर्भीतमानि ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ यह कारनविनताग्रेहआइ ॥ सबकह्योपुत्रगरुडहिसुनाइ ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ सोसुन तभयोसुषगरुडसंत ॥ अनलमनुपवनचढिबढिअनंत ॥ इकानेमषमात्रतहांगरुडआइ सबषोजनिषादनिगयौषाइ ॥ षाएनिषादजद्दपिनिसेष ॥ नहींविगतछुधातद्दपिविशेष ॥ तपकरतजहांकस्यपप्रजाप ॥ इहिसमयआइतहांगरुडआप ॥ पदपूजिपिताकीयनम स्कार ॥ महिवानिपूंछिग्रहव्यवहार ॥ ॥ **गरुडउवाच** ॥ ॥ कारणपितहिसबप्रग टकीन ॥ विनताहिपतिदाशत्वदीन ॥ ॥ **कस्यपउवाच** ॥ ॥ पितकह्योसुनतका रनप्रसिद्ध ॥ लैजाहुसुधाकृतकरहुसिद्ध ॥ ॥ **गरुडउवाच** ॥ ॥ हूंआहिछुधारतश्र मितआज ॥ सामर्थिनहींनकछुवसनकाज ॥ ॥ **कस्यपउवाच** ॥ ॥ ऋषिकह्योइ हांइकसररसाल ॥ वनलतागहनअतितरुतमाल ॥ मदमत्तदुरदइकमहप्रमान ॥ सर बरतिहिंआयौजलसनान ॥ दशजोजनदीरघतासदेह ॥ द्वादशलौलांबोनिस्संदेह ॥ लजपैठिकरतक्रीडासजोर ॥ आंदोलसलिलभौचहूंओर ॥ तहांरहतकमठइकमहाका य ॥ जलदोलसब्दताकहजगाय ॥ वपुऊंचौत्रयजोजनविथार ॥ कयपंचद्विगुणवर्तुला कार ॥ सबदुष्टपूर्ववैरानुसार ॥ अद्यावधिजूझतबलअपार ॥ सोकरहुजाइभक्षनसकाज ॥ रसनासस्वादकरिपक्षराज ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ यहसुनतहर्षषगराजहोइ ॥ स रआइलरततहांदेषिसोइ ॥ करनषरअग्रदूवग्रहनकीन ॥ लैगयौकमठगजगगनलीन ॥ कारनाभूतकिहूंसरितकूल ॥ सुरवृक्षहुतेतहांअतिसथूल ॥ संपातपक्षमारुतसचाल ॥ व नवृक्षगिरतकंपितविहाल ॥ ॥ **महावृक्षउवाच** ॥ ॥ गर्वजुतवृक्षइककहिगहीर ॥ वनत्रासदेतकतमहावीर ॥ वृक्षतिहिशतनिजोजनविथार ॥ साषाअनेकपल्लवसुढार ॥ म मसाषबैठिआनंदमान ॥ दिनकछुकभक्षकरियौनिदान ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ इकसा षअधोमुखलंबआप ॥ ऋषिवालषिल्यतहीतपतताप ॥ साषाश्रितेहेतसुतब्रह्मसंत ॥ अं गुष्टमात्रतनतपअनंत ॥ संष्याअठासीसहससोइ ॥ हठसाधतजोगविदेहहोइ ॥ तिहिंसा षबैठिषगराजतत्र ॥ सोपरीटूटिभूलुठतपत्र ॥ तिहिंडारचंचग्राहिउड्यौतास ॥ अतिवेगग रुडमारगअकास॥ विसदगिरिगंधमादनविष्यात ॥ तपकरततहांकस्यपस्वतात ॥ कीयपि तादेषितहांनमस्कार ॥ अवलोकिगरुडविक्रमअपार ॥ ॥ **कस्यपउवाच** ॥ ॥ पितक ह्योसुनहुइवसुतपुनीत ॥ इहिसाषालंबितहैअभीत ॥ ऋषिबालषिल्यजेउर्द्धरेत ॥ हैदुषित

जिहिंहेतछीनपलहोतजांहि ॥ मानिवोश्रेयसोद्यविश्वमांहि ॥ विपहारमंत्रविद्याविधान ॥ पितदएकस्यपहिकारिप्रमान ॥ समझाइपुत्रकस्यपसहेत ॥ तवगएत्रझअपनेंनिकेत ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ कद्रूविनतादुहुंकृतानिदान ॥ पनयेहप्रातकरिहेप्रमान ॥ एर हीसोइनिजग्रेहआइ ॥ पनबांधिसुभावीजोगपाइ ॥ उरसर्पत्रासउपज्योंअशेप ॥ सब करतभएचिंताविशेप ॥ यहसमझिगएविपमुपअशेप ॥ ॥ कीयाशिपापुछिरोमानिप्रवेश ॥ प्रगव्योउच्चेश्रवआनरूप ॥ वेवर्णासितासितभोविरूप ॥ इहांकद्रुविनताउभयआइ ॥ पेप्योंहयतवसुपशोकपाइ ॥ पनजीत्योंकद्रुकपटपाप ॥ अरुविनताहारयोंवचनआप ॥ ॥ विनतावाक्यं ॥ ॥ कीनोंप्रमानविनताअकोप ॥ लांछनहेसाधुनिवचनलोप ॥ पनकयो सापिसुरसोइप्रमान ॥ मिथ्यानहोइअघत्रासमान ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ हठदुपसह तिसबसौतिग्रेह ॥ दाशत्यकर्मविनतासदेह ॥ परिभावसहितअतिव्रतविचारि ॥ मुषफे रिनबोलतिमानमारी ॥ दाशत्वदुष्पदारुणदुसाधि ॥ पुनिकरातिसौतिनितनवउपाधि ॥ ॥ अथगरुडजन्म ॥ ॥ शतपंचवर्षवीतेसुभाइ ॥ उतपतिगरुडकौसमयआइ ॥ अ वधिवसभएपूरणजुअंग ॥ भवतव्यहेतवलकीयअभंग ॥ तहांअंडतेजसहिसकिनता स ॥ पायोंविहारफूट्योंप्रकास ॥ महकायमहावलअप्रमान ॥ प्रगव्योंसुगरुडपृथ्वी प्रमान ॥ अग्निसमतेजतिहिंदेहआप ॥ सोकरतमहात्रैलोकताप ॥ सबदेवचराचर व्हैसषेद ॥ दहनपहगएअज्ञातभेद ॥ ॥ सुराऊचुः ॥ ॥ सुरकह्योंअनलसौंभय समेत ॥ तुमविश्वहिजारतकवनहेत ॥ आपुनजुनीतिजानतअषंड ॥ अपराधविना देवोनदंड ॥ ॥ अग्निरुवाच ॥ ॥ उत्तरतवदीनोंअग्निऐह ॥ नहीकारनमेरौंनिसं देह ॥ विनतासुतउपज्योंगरुडवीर ॥ सोमहातेजअनमितिसरीर ॥ तिहिंतेजवढ्यो यहविश्वताप ॥ आराधिकरहुतिहिप्रसन्नआप ॥ सुरआइसबेजहांगरुडसाध ॥ अति काइतेजदेष्योंअगाध ॥ ॥ सुराऊचुः ॥ ॥ सुरतहांप्रगटकीनोंप्रसंस ॥ ह्ववधर्महे ततुमब्रह्मवंस ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ सुरलोकगएसुरकाजसाधि ॥ इहांतापसमित भयोंमिटिउपाधि ॥ शुभसांतरूपकरिलघुसरीर ॥ विनतापहआयोंगरुडवीर ॥ ॥ ग रुडोवाच ॥ ॥ मिलिहितजुक्तपूछीजुमात ॥ यहदसाकवनतुमदुष्पदात ॥ ॥ विनता वाक्यं ॥ ॥ वृत्तांतकह्योंविनताविचारि ॥ हूंभईदासिपनवचनहारि ॥ कद्रूमिलिपुत्रनि कपटकीन ॥ हयरोमपैठिकृतवर्णहीन ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ तबसुनीवातकहिगरुड ताहि ॥ ॥ अपराधीमेरेसर्पआहि ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ मनगरुडसर्पअपराधमा नि ॥ उपज्योंतिहिकारनवैरआनि ॥ तबतेविनतासुतव्हैसताप ॥ उरगनिभोंभक्षनकर तआप ॥ दिनपुत्रनाशभयपाइभेद ॥ सुतशोकभईकद्रूसषेत ॥ अंगारगांठिबांध्योंअसं त ॥ अतिदुस्सहजारेवसनअंत ॥ गतिसर्पगंधमूशीघ्रसंत ॥ चषनाशतजेअरुभषैअंत ॥ गृहपैसगूढरोवतिअग्यान ॥ माहिलाज्योंतस्करशोकमान ॥ उद्यमबलनांहिनफुरतआ इ ॥ परवोधसांपसूझ्योंउपाइ ॥ ॥ कद्रूवाच ॥ ॥ कद्रूविनतासौंप्रणतिकीन ॥ पितुमा तएकउतपतिप्रवीन ॥ तूंबहिनप्रानवल्लभसप्रीति ॥ अज्ञानजुक्तमैंकृतअनीति ॥ दासी

त्वतोहिदीनौकुदाइ ॥ हूंभईदोषभाजनसुभाइ ॥ दासत्वपक्षतोहिकरौदूर ॥ मंत्रइकजपै मानहुसमूर ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ कद्रूकेवचनविसासकीन ॥ विनतातबपूंछोविधि नवीन ॥ कहिकद्रूकारनकवनकाज ॥ दासत्वमिटैममदुषसमाज ॥ ॥ **कद्रूवाक्यं** ॥ ॥ मथिसिंधुसुरासुरलीयप्रमानि ॥ वहिअमृतकुंभमोहिदेहुआनि ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ सोफेरिकह्योविनतासुभाइ ॥ वस्तुवहकहांहैसोबताइ ॥ ॥ **कद्रूवाक्यं** ॥ ॥ लव णोदधितटहैशवरलोक ॥ सबबसततहांप्राणिअसोक ॥ वनतामहँरहतनिषादवीर ॥ ति नकरिवहरक्षितसिंधुतीर ॥ एकांतठौरवहगूढआहि ॥ तातैंनहींजानतअवरताहि ॥ अ मृतघटधर्योतिहिठौरआनि ॥ मनइंद्रतहांनिर्भीतमानि ॥ ॥ **विनतावाक्यं** ॥ ॥ यह कारनविनताग्रेहआइ ॥ सबकह्योपुत्रगरुडहिसुनाइ ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ सोसुन तभयौसुषगरुडसंत ॥ अनलमनुपवनचढिबाढिअनंत ॥ इकानिमषमात्रतहांगरुडआइ सबषोजनिषादनिगयौषाइ ॥ षाएनिषादजद्यपिनिसेष ॥ नहींविगतछुधातद्यपिविशेष ॥ तपकरतजहांकस्यपप्रजाप ॥ इहिसमयआइतहांगरुडआप ॥ पदपूजिपिताकीयनम स्कार ॥ महिवानिपूंछिग्रहव्यवहार ॥ ॥ **गरुडउवाच** ॥ ॥ कारणपितहिसबप्रग टकीन ॥ विनताहिपतिदाशत्वदीन ॥ ॥ **कस्यपउवाच** ॥ ॥ पितकह्योसुनतका रनप्रसिद्ध ॥ लैजाहुसुधाकृतकरहुसिद्ध ॥ ॥ **गरुडउवाच** ॥ ॥ हूंआहिछुधारतअ मितआज ॥ सामर्थिनहींनकछुवसनकाज ॥ ॥ **कस्यपउवाच** ॥ ॥ ऋषिकह्योइ हांइकसररसाल ॥ वनलतागहनअतितरुतमाल ॥ मदमत्तदुरदइकमहप्रमान ॥ सर बरतिहिआयौजलसनान ॥ दशजोजनदीरघतासदेह ॥ द्वादशलौलांबोनिस्संदेह ॥ लजपैठिकरतक्रीडासजोर ॥ आंदोलसलिलभौचहूंओर ॥ तहांरहतकमठइकमहाका य ॥ जलदोलसब्दताकहजगाय ॥ वपुऊंचौत्रयजोजनविथार ॥ कयपंचद्विगुणवर्तुला कार ॥ सबदुष्टपूर्ववैरानुसार ॥ अद्यावधिजूझतबलअपार ॥ सोकरहुजाइभक्षनसकाज ॥ रसनासस्वादकरिपक्षराज ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ यहसुनतहर्षषगराजहोइ ॥ स रआइलरततहांदेषिसोइ ॥ करनषरअग्रदूवग्रहनकीन ॥ लैगयौकमठगजगगनलीन ॥ कारनाभूतकिहूंसरितकूल ॥ सुरवृक्षहुतेतहांअतिसथूल ॥ संपातपक्षमारुतसचाल ॥ व नवृक्षगिरतकंपितविहाल ॥ ॥ **महावृक्षउवाच** ॥ ॥ गर्वजुतवृक्षइककहिगहीर ॥ वनत्रासदेतकतमहावीर ॥ वृक्षतिहिशतनिजोजनविथार ॥ साषाअनेकपल्लवसुढार ॥ म मसाषबैठिआनंदमान ॥ दिनकछुकभक्षकरियैनिदान ॥ ॥ **मंथरावाक्यं** ॥ ॥ इकसा षअधोमुखलंबआप ॥ ऋषिवालषिल्यतहींतपतताप ॥ साषाश्रितहेतसुतब्रह्मसंत ॥ अं गुष्टमात्रतनतपअनंत ॥ संष्याअठासीसहससोइ ॥ हठसाधतजोगविदेहहोइ ॥ तिहिंसा षबैठिषगराजतत्र ॥ सोपरीटूटिभूलुठतपत्र ॥ तिहिंडारचंचग्रहिउड्योतास ॥ अतिवेगग रुडमारगअकास॥ विसदागिरिगधमादनविष्यात ॥ तपकरततहांकस्यपस्वतात ॥ कीयपि तादेषितहांनमस्कार ॥ अवलोकिगरुडविक्रमअपार ॥ ॥ **कस्यपउवाच** ॥ ॥ पितक ह्योसुनहुइकसुतपुनीत ॥ इहिसाषालंबितहैअभीत ॥ ऋषिबालषिल्यजेउर्ध्वरेत ॥ हैदुषित

भएसाषासहेत ॥ इहांतेंहंजोजनलक्षएक ॥ हिमवंतअद्रिकंदरअनेक ॥ यहसाषाराषहुउ
हांआज ॥ सुपवालपिल्यपाहिसमाज ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ लैगयोतहांक्षणमात्रला
ग ॥ सापासुधरीकंदरसभाग ॥ गिरिशृंगबैठिहिमगरुत्मान ॥ मातंगकमठभुक्तेअमान॥
तहांभयौतृप्तजबवैनतेय ॥ उडिचल्यौगगनपथबलअमेय ॥ संघातपंपसुनिअमरधाम ॥
त्रैलोकभयोआकंपताम ॥ न्हैअकस्मातउतपातहेत ॥ सुरत्रासपर्योसुरपातिसमेत ॥ ॥
॥ देवाऊचुः ॥ चतुरंगचमूकलुनाहिचीन्ह ॥ कोऊशत्रुनदीसतकोपकीन्ह ॥ कहाअसंभा
वउतपातआज ॥ देवगुरुपूछितबदेवराज ॥ ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ ॥ गुरुकह्योबृहस्प
तिजोगज्ञान ॥ महिभयोजन्महेगरुत्मान ॥ कीयउद्यमअमृतहरनकाज ॥ तिहिंबढ्योतेज
उतपातआज ॥ संपातपंपतसवातसंग ॥ ब्रह्मांडडोलथिरचरविभंग ॥ सुरराजसुन्योअन
इष्टएह ॥ दुषबढ्योक्रोधनसमातदेह ॥ पठएजुइंद्रचतुरंगपूर ॥ सन्नाधबद्धसुरसमरसूर ॥
सुरआइतहांसबसावधान ॥ विस्तारअमृतरक्षाविधान ॥ सोरहेरोकिपथसुरसमूह ॥ पावैन
पवनविचिगवनव्यूह ॥ अप्रमानदेहइहिसमयआइ ॥ संक्रम्योगरुडअपनौसुभाइ ॥ सु
रसेनगरुडरोक्यौसक्रुद्ध ॥ जाजुल्यभयौबहुकालजुद्ध ॥ संपातपंषरजचढिअकास ॥ आ
छन्नभएसुरविगतआस ॥ दिगमूढभएदगअंधदेव॥ आवैनदृष्टिपगपतिअजेव ॥ नषचंच
पंपपूरनप्रहार ॥ संग्रामहोतसुरगनसंघार ॥ आकंपभयौअतिइंद्रलोक ॥ गएअमरभागि
अपआपओक ॥ सुरभएविकलतनसप्रहार ॥ धरजातनिरंतररुधिरधार ॥ सरिताजुचली
अतिश्रोणसंग ॥ तिहिंमहारौद्रअविरलतरंग ॥ सुरभएपराजितसमरसिद्ध ॥ पायौषगेश
तहांजयप्रसिद्ध ॥ थितभयौआइतबअमृतथान ॥ तहांभयौचक्रअयमयभयान॥ सोदेषि
गरुडकृतलघुसरीर ॥ विचपर्योकूदितिहिंचक्रवीर ॥ रहिभ्रमतचक्रबाहिरसचार ॥ धरि
तिष्षविविधत्रयघोरधार ॥ तहांमध्यसर्पद्वैदेषितास ॥ मुषविद्युतचषविषअभिवास ॥ दा
रुणाद्विजिव्हअनिमेषबान ॥ विषश्रवतनैनदाहकविधान॥ सोदृष्टिमात्रजारतसंसार॥ आ
कृतिअनिष्टाचितवेगचार ॥ आघातपंषकृतगरुडआइ ॥ सहवेगअनिलरजउडिसुभाइ ॥
आछन्ननेत्रअहिभएआनि ॥ सूझैनकछुतमगगनसानि ॥ भौवैनतेयअनदष्टभाइ ॥ इहां
अमृतकुंभलैगौउठाइ ॥ लैचल्योगगनमारगसलील॥ शुभसिद्धिहोतसाधनसुसील॥ मि
लिविष्णुगरुडकहंगगनमार्ग ॥ अतिवेगदेषिविक्रमअथाग ॥ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ ॥
विष्णुकहिधन्यतूंवैनतेय ॥ अभिइष्टमांगिअवरजअजेय ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ गरु
डवरतबैमाग्यौअभंग ॥ सर्वोपरिराषहुनाथासंग ॥ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ ॥ मांगिग
रुडहरिकहिसप्रेम॥ निर्धारचित्तवंछितसनेम ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ माग्योसुगरुडआ
नंदमान ॥ प्रभुकहूअमरविनुअमृतपान ॥ ॥ श्रीविष्णुरुवाच॥ ॥ इहांतथाअस्तुहरि
कह्योआप ॥ ममध्वजावसहुतुमबलअमाप ॥ सोमानिसाधुमनक्रमसमेत ॥ करतारभए
तबगरुडकेत ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ अतिहर्षवंतकहिगरुडएहु ॥ लक्ष्मीपतिकछु
वरतुमहिलेहु ॥ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ ॥ वरलयौविष्णुयहजगविराज ॥ रथहोहुह
मारेविहंगराज ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ परस्परलएवरजगपुनीत ॥ भएविष्णुगरुड

वाहनअभीत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आपुनहरिवाहनभयो । अरुहरिध्वजानिवास ॥ शुभ सेवकअग्रेश्वरी । हरिकीनोसहप्रहास ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उडिचल्योगरुडलहिवर अनंत ॥ सोपवनसपर्धाकरतसंत ॥ इहांइंद्रआनिपहुंच्योउदार ॥ पनगारिवज्रकीनोप्रहार ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ तबवज्रइंद्रलघुकुसुमतूल ॥ मोहिलग्योविथानहींउपजिमूल ॥ तद्दपिदधीचअरुवज्रतोहि ॥ कछुदेउमानमनआहिमोहि ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ इकपंषचंचग्रहिलइउषारि ॥ दीयमानइंद्रकहदईमारि ॥ तिहिंकहिसुपंषत्रयलोकताम ॥ निकस्योसुपर्णतबगरुडनाम ॥ इहांपख्योषिसानोइंद्रआप ॥ तारक्षमित्रकीयसहिनताप ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ मिलिसषाभएहमतुमसमान ॥ मुहिकहहुआपनोबलप्रमान ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ आतमबलविक्रमबुद्धिअंत ॥ सर्वथाप्रकासतनहिनसंत ॥ कहिहूंतथापिकिंचितजुकोइ ॥ हैपूछतजोतुममित्रहोइ ॥ भूगोलचराचरविसदवास ॥ इकपाइकर्षिउड्डोंअकास ॥ तोसेअनेकमिलिइंद्रमोहि ॥ जुतलोकप्रलंबितभलेजांहि ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ यहकहाअनतविक्रमविशेष ॥ संभवैसबैतुमकहषगेश ॥ निहचैकरिसुनायेधर्मनीति ॥ प्रगटहमकहतहैविश्वप्रीति ॥ तुमतोनहींपीवतअमृततास ॥ पुनिदैहोकद्रुकहप्रकास ॥ प्याइहेसुतोपुत्रनिपीयूष ॥ कद्रुजिहिउपजेसर्पकूष ॥ दुष्टवैअमरव्हैहैदुसाधि ॥ अहितोअनेककरिहैउपाधि ॥ देवनियहनातैअमृतदेहु ॥ लोकत्रयरक्षाधर्मलेहु ॥ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ वासबहिगरुडकहिजुतविवेक ॥ अमृतलगिहमहिहैकाजएक ॥ मम संगइंद्रमहिमाअमाप ॥ अग्यातरूपतुमचलहुआप ॥ करिकाजसिद्धिधरहूंएकंत ॥ तुमसुधाकुंभलैजाहुसंत ॥ करिहुंअबनाहिनषोजकोइ ॥ हरिजाहुअमृतलैअभषहोइ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ यहमंत्रइंद्रकीनोप्रमान ॥ आएजुसंगकरिरूपआन ॥ अमृतघटग्रेहकद्रुअसेष ॥ विनतारुगरुडआन्योविशेष ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ दासत्वछुव्योहमगरुडदाषि ॥ सोइकहिजुकद्रूदेवसाषि ॥ ॥ कद्रुवाच ॥ ॥ अपराधछमहुममबहिनएह ॥ होप्रानप्रियातुमनिस्संदेह ॥ शुभग्रेहजाहुअपनेसहास ॥ तुमभएमुक्तपनबंधतास ॥ ॥ ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ इहांअमृतपानकहंनागआइ ॥ शुभवचनगरुडबोलेसुभाइ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनहुमातभ्रातासकल । अमृतरनयहआहि ॥ कृत्यसुमज्जनदानकरि । आनिपीयहुपुनिआहि ॥ १४ ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ कुशडासनऊपरकलस । सुधाधख्योसुषसंग ॥ नागसमूहसुविमलनद । आएमज्जनअग ॥ १५ ॥ गरुडसिधारेआपग्रह । मोषबंधपनमात ॥ ताकतहुतोसुरेशतहां । तबपूजीसबघात ॥ १६ ॥ ॥ इंद्रलोकलैगोअमृत । कीयवासवसुरकाज ॥ सुजसभयोत्रयलोकसो । सुषभयोअमरसमाज ॥ १७ ॥ करिकरिमज्जननागकुल । गृहआएसुषजोग ॥ तहांनपायोअमृतघट । पूरनभएप्रयोग ॥ १८ ॥ कहीकथायनिमंथरा । सौतिनिकीसविषाद ॥ होतसुरासुरग्रेहहठ । विग्रहविषमाविवाद ॥ १९ ॥ इतिकद्रूविनताप्रसंगसंपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीराम वनवासप्रसंग प्रारंभ ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दिनकरकिरनमलीनदिवसअसमयउडुदरसन ॥

॥ क्रव्यकुलाहलकरतघरनिआसन्नजंवुघन ॥ फेरशब्दफेकारविपमबाढिवारअवारनि ॥
उलकादंडप्रचंडपतनवर्पारुतधारनि ॥ भवभूतभूमिकंपितसभय, प्रलयकालपरमानयौ ॥
उतपातहेतआगमअशुभ, हाजगदीशनजानयौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुबजेकानेपंजजे।
कुटिलकुजातिकुचाल ॥ त्रियाविशेपजुदाशिका । इनकेएईहाल ॥ १ ॥ आगेपाछे
सोचनही । करहिअनर्थउपाय ॥ इनकेवचनविलासमँहँ । जगतप्रलयव्हैजाय ॥ २ ॥
॥ ॥ छंदपध्धरी ॥ ॥ चितगिराइहांसुरकाजचिन्ह ॥ केकईहृदयपरवेसकीन ॥ तत
कालत्रियामतिफिरीतास ॥ मंथरावचनकीनोंविसास ॥ ॥ केकेयीवाक्यं ॥ ॥ क
हिजननिकरौंअवककवनकाज ॥ अवलंववुद्धिममदेहुआज ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥
मंथराबोलितवकपटमूल ॥ कुलदेवहोहुतवसानुकूल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा
॥ ॥ कैकेयीकन्यासमय । वचनातिरस्कृतकीन ॥ विप्रसाधुतिहिंरोषवस । द्रुपदआ
पतबदीन ॥ ३ ॥ वोलेवुद्धिअनीतिवस । पाइकुसंगप्रकास ॥ ममआपहिसबलीक
मह । व्हैहैतवउपहास ॥ ४ ॥ कैकेयीद्विजआपको । भावीजोगसुभाइ ॥ मिलिस
हायकमंथरा । अवसरवन्यौसुआइ ॥ ५ ॥ पायोदावजुआपनो । कुबजापापप्रका
स ॥ उपदेस्योस्वामिनिअहित । विग्रहविपतिविनास ॥ ॥ मंथरावाक्यं ॥ ॥ पारि
भवसौतिप्रतापकारि । तिहिंजीवनधिक्कार ॥ अहंकारसोआपनो । मारिवोमंगलचार ॥
७ ॥ दएहुतेवरदानद्वौ । नृपतोहिसहितसनेहु ॥ तैथातीराषैतदिन । हठकरिआजसुले
हु ॥ ८ ॥ वर्पचतुर्दशएकवर । वसहिरामवनवास ॥ भरतद्वितीयवरमाझभुवि । पावहि
राजप्रकास ॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कैकेयीहिप्रबोधकरि । कुबजागईनिकेत ॥ असं
भावनाअर्थअव । व्हैहैभावीहेत ॥ १० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दयावंतअतिधीरअपिलगुन
जुतआचारीय ॥ नीतिधर्मकारिनिपुनवेदविद्यासविचारीय ॥ सत्यविवेकसुशीलसरलशुभ
वाकसुसंगीय ॥ उच्चवंसउतपन्नविमलमतिविजितविअंगीय ॥ अतिदुष्टपरायणपापपना
संगतासजोअनुसरै ॥ दिनरातिताहिदुर्बुद्धिदे, क्रमहिआपजैसेकरै ॥ १ ॥ इतिरामातिलककवि,
ध्नोपदेशः ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मलिनवसनतनस्वासमुष । कुटिलतृरेषका
पाल ॥ भूषनतोरेसयनभूव । लोचनअरुनाविसाल ॥ ११ ॥ उर्ध्वरोमकंपतसतन । ढरतनयन
जलधार ॥ मिलिअगमवैधव्यमनु । व्हैविधिसूचनहार ॥ १२ ॥ तहांकुबजाउपदेसतै ।
बनीसबैविपरीत ॥ रामगमनराजामरन । शोकभरतदुषसीत ॥ १३ ॥ याकेग्रहएहीस
मय । सुषआगमअवधेस ॥ सनमुषनाईसुंदरी । पूरवजथाप्रवेस ॥ १४ ॥ ॥ राजो
वाच ॥ ॥ राजापूछीसहचरी । प्यारीकहाप्रवीन ॥ ॥ दासीवाक्यं ॥ ॥ क्रोधागार
प्रवेशकीय । दासीउत्तरदीन ॥ १५ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ क्यौंगई
वल्लभातिहिनिकेत ॥ ॥ दासीवाक्यं ॥ ॥ हमजान्योनाहिनदैवहेत ॥ सुनीयैनरेसता
पहसिधारि ॥ सबकारनसोंकहिहैसंभारि ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ नृपदेषिसूनैभवनानि
हँचैतहांबढीउरत्राश ॥ विधिजुक्तनाइसमुष्यवामापरमप्रेमप्रकाश ॥ पाहूनौसूनैग्रेहकौ
जोपैठिपुनिपछिताइ ॥ चित्तविकलचहुघांचकितचितवतबुधिवितर्कबढाइ ॥ भयउदधि

थाहतसेजुभामिनिग्रेहमहँदशरथगए॥ विपरीतवेषविलोकिवनि ताभीतिजुतविस्मयभए॥
॥ १ ॥ कवित्त ॥ ॥ नभईदेषीसुनीचित्तहूँवचनअगोचर ॥ असंभूतअनचिंतदेवदा
नवकरिदुस्तर ॥ नागसुरासुरनरनिग्रंथकाहूनहिगाई ॥ विद्यावसनविशेषब्रह्मवेदनिनब
ताई ॥ अभ्यासनअनुभवआपपर,पुस्तकपाठनपढ्हिहै ॥ माहिलाजुअसंभवबातमाहि. हेल
मात्रगढिकढ्हिहै ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तबनिकटवैठिकोशलनरेस ॥ वनिताहि
भएपूछतविशेष॥ ॥राजादशरथोवाच॥ ॥ भुवसयनकौनकारनजुभाम ॥ तवमौनमुंद
ममहोतताम॥ तवअहितकीनातिहिंकुप्योकाल॥ वधदंडपाइव्हैहैविहाल॥करिहूंअवध्यसो
वध्यकाज॥ जौवध्यजोग्यसोमुक्तआज॥ देहूंसमृद्धिदारिद्रदीन ॥ छनहींप्रभुत्वकिहिंकरौं
छीन॥ रविचक्रअधस्थजुभूमिराज॥ वसवरतीमेरेअषिलआज॥ प्राचीजुसिंधुसौवीरपेष
॥ सौराष्ट्रअवंतीलौंविशेष ॥ वंगांगमगधकोशलजुकाशि ॥ पुनिद्रव्यदेशऔरौप्रकासि
॥ मागहुसुदेशजोचित्तमांहि ॥ तवसपथनियतकरिहूंननाहि ॥ ॥ कैकेयीवाक्यं ॥ ॥
पतिसब्दसुनतबोलीप्रसंस ॥ तुमबचनसूररघुराजवंस ॥ वरदानदएव्हैविशेश ॥ मैंन्या
सभूतराषेनरेस ॥ सोदेहुअबैप्रियव्हैदयाल ॥ तुमरामसपथजोकरहुटाल ॥ राजोवाच॥
॥ ॥ प्यारीसुमांगिलीजैप्रकास ॥ शुभदिवसआजदेहूंसहास ॥ अभिषेकतिलकरघुराज
आज ॥ सबमिलेअतीमंगलसमाज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जोमनइच्छामानिनी । कहौप्रगट
तजिकानि ॥ मोहिशपथहैरामकी । जोनकरौंयहजानि ॥ १६ ॥ इहांषेचरगृहदेवए ।
साषीभूतसुभाव ॥ जोतूकहिहैसोकरौं । पाहनरेषप्रभाव॥ १७॥ ॥ कैकेयीवाक्यं ॥ ॥
॥ छंदपधरि ॥ ॥ वरएकचतुर्दशवर्षवास ॥ दंडकारण्यसेवहिउदास ॥ मुनिवेषधा
रिइहिलग्नमांहि ॥ जटजूटबांधिवनरामजांहि ॥ इच्छाजौआवहिअवधिअंत ॥ सेवहि
मनइछावनहिसंत ॥ दूजेवरभरतहिराजदेहु॥ संपदाभूमिदलबलसग्रेहु ॥ जनवाजि
पठइअतिवेगजानि ॥ इहिसमयभरतकहँइहांआनि ॥ संभारयहैशुभतिलकसाज ॥ अ
भिषेकमुहूरतसजहुआज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वचनलगेविषवानसे ।
षायहुहृदयदरार ॥ मानहुंपर्वतवज्रहत । भूपगिरेअसंभार ॥ १८ ॥ ॥ गाथा ॥ ॥
महदृक्षछिन्नमूलं । बहुशाखापत्रविथार ॥ पृथ्वीशअत्रनिपतनं । वामाबचवातविधूत
॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्याधिनिरागविमोहज्यौं । विवसहोतमृगवृंद ॥ सोगतिदशरथ
कीभइ । देषतमुसेनिरंद ॥ १९ ॥ हस्तिकुंभज्यौनषरहत । सिंघीकरतिसकाम ॥ कर्यो
अकारणनृपतिको । वचनमर्मछिदवाम ॥ २० ॥ सर्पहेरवांवीसमुष । पौंगीनादप्रकास॥
विषधरदारुणकरिबिबस । नगरनचावततास ॥ २१ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अनज्ञा
तकिरातीपासआनि ॥ ठगिबांधतिमृगज्यौंछद्मवानि ॥ कैकयीभांतितिहिंघातकीन ॥
नहींजानिनराधिपमोहलीन ॥ नगनतीत्रीयहठपतिविनास ॥ भावीबलिष्टश्रुतिस्मृतिभा
स॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूपहिगईबिभावरी । चार्योजामअचेत ॥ सज्याभूमीमृतकसे । उर्ध्व
उसासनिलेत ॥ २२ ॥ जबहीराजमूर्छाजगी । विषमरूपलषिवाम ॥ पुलकपसीनाकंपत
न । रटैरामहाराम ॥ २३ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ यहसबसंपतिराजसुष । धराअव

धिधनधाम ॥ मैभरतहिदीनैमुदित । मतपठवहियनराम ॥ २४ ॥ तैममराषेप्रानत ब । मरेतोमहँप्रान ॥ शशिवदनीअवसोकरहु । जिहिसबकोकल्यान ॥ २५ ॥ पुत्रब डौजुवराजपद । पावतवेदप्रमान ॥ हूंतौयातैंकरतहो । वनितानीतिविधान ॥ २६ ॥ भरतहिसंपतिराजभूव । रामहिरापहुग्रेह ॥ तुवमनवंछितसबनिसुष । अबकरीयैमत एह ॥ २७ ॥ रामनइच्छाराजकी । उदासीननितआहि ॥ सोनहीमायामोहवस । तूंकत काढतिताहि ॥ २८ ॥ ॥ कैकेयीवाक्यं ॥ ॥ पहिलेंकारिकैवचनपन ॥ मरतउठाई मोहि । अवजुकहतनृपओरसी ॥ हत्यादैहूंतोहि ॥ २९ ॥ उद्बंधनविषभक्षन । रसना छेदनदंत ॥ सस्त्रघातजलअग्निसंग । तजिहोंप्रानतुरंत ॥ ३० ॥ राजाकरनीरावरी । हम जान्यौअबहेत ॥ नैहरपठएभरतअरु । राजरामकहँदेत ॥ ३१ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहिंठौरउपजिदुषतुमहिंदेव ॥ भयछांडिकहहुधौंचितभेव ॥ कैमोहिविसाहीहाटमाझ ॥ बे टानभरतकैभईवांझ ॥ आगैदधीचशिविवाचदीन ॥ सोकरीसत्यनहीनाहिकीन ॥ म मैंछिदवचनसुनिरहेमोन ॥ जनुत्रियाजरेपरदेतिलोन ॥ ॥ राजाविलाप ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करियतहौकछुकछुभयो । मनसोचतमहिपाल ॥ जोगसिद्धकेसमयज्यों । कारिगयोचितनविहाल ॥ ३२ ॥ जैसैंगडूवाकेघडे । भई अचिंतितभेरि ॥ भूलेभूपसुबुद्धिबल । हाहाकृतहियहेरि ॥ ३३ ॥ उपजिअनिष्ट अनंदथल ॥ फुरतनवचनविधान ॥ ज्यौंवनविजुरीकेपरे । थकितविहंगमथान ॥ ३४ ॥ मनहींचेतअचेतछन । सोचतमोचतसास ॥ ज्योंवेलीघरीयारकी । बूडतित रतिविकास ॥ ३५ ॥ इहिंगतिविलपतभोरभौ । उघरेदेवदुहार ॥ संषादिकझालरि सबद । प्रगटिअनेकप्रकार ॥ ३६ ॥ प्रतिदिनअर्कप्रकासतैं । ज्योंवैभवव्यवहार ॥ शुभदजथाक्रमकर्मसब । राजतराजदुवार ॥ ३७ ॥ बंदीजनबोलहिबिरद । सूचक वंससुजान ॥ अपनैअपनैकुलकरम । सावधानसनमान ॥ ३ ॥ बालकवृद्धजुतरुनवय । नगरवासिनरनारि ॥ रामतिलकजुतरूपरस । चाहतचित्तविचारि ॥ ३९ ॥ निद्रालई ननेकनिस । पुरजनप्रेमप्रकास ॥ कबैंउदितव्हैहैअरक । कबपूजैउरआस ॥ ४० ॥ सुषहिविहानीसर्वरी । दिनकरदरसनदीन ॥ सुरपूजानितकृत्यसब । लोकजथाक्रमकी न ॥ ४१ ॥ सबसंभारसुसिद्धतहँ । विहितवसिष्टबताइ ॥ तबैसुमंतउछाहजुत ॥ अब निईशगृहआइ ॥ ४२ ॥ इहांसुमंतआदेसतइ । शुभबाजेनीसान ॥ मानहुंघुमरतघनस घन । पावसऋतुपरवान ॥ ४३ ॥ चारनसिद्धजुचतुरचित । ओपतिसभाउदार ॥ कीर्तिप्रकासतबिरदकहि । कुलवंदिनजयकार ॥ ४४ ॥ राजतभूषनवसनरंग । विक्रमवि नयविवेक ॥ रघुकुलमंडनवीरनर । आएबंधुअनेक ॥ ४५ ॥ विविधसुभटचतुरंगबनि । राजतराजदुवार ॥ हयहेषारवगजगरज । बढीएकहीवार ॥ ४६ ॥ इहांकैकेयीउरअमि त । बाढ्यौविषमविषाद ॥ सुनिनिर्घोतनिसानशुभ । अरुबंदिनजयवाद ॥ ४७ ॥ ॥ कैके केयीवाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कैकेयिपठइदाशीकुभाइ ॥ जयशब्दनिवारहुद्वार जाइ ॥ आदेसस्वामिनीसुनिअसंत ॥ तेगईद्वारदासीतुरंत ॥ बरजेनिसानमंगलनिधा

न ॥ जनभएचकितकछुअशुभजान ॥ अबचितप्रगटिपुरबातएह ॥ हैंपरीवीजजनुग्रेह ग्रेह ॥ मनशोचकरतमंत्रीसुमंत ॥ संचरेंकंकईभवनसंत ॥ भुवपरेनृपतिदेषेकुभाइ ॥ उर भयोत्राशअतिमंत्रीआइ ॥ समझ्योसुमंतयहमंत्रसार ॥ कैकेयीकयौकछुयहविकार ॥ रघुराजतिलकजुबराजरीति ॥ आक्षेपकीनआदरिअनीति ॥ करिजथाधर्मभृतनमस्कार ॥ जीवेतिवध्यौजयवारवार ॥ प्रभुदसादेषितिहिछनप्रधान ॥ परिविस्मयव्याकुलभएप्रान ॥ नहीपूछिसकतरहिसकतनाहि ॥ मंत्रीभयसोचतचित्तमांहि ॥ मानिनिलहिअंतरगति सुमंत ॥ इहिंसमयबोलिउठीअसंत ॥ कैकेयीवाक्यं ॥ राजानिसिविलपतरामराम ॥ जुगजु गसमबीतेचारिजाम ॥ कारनदुषहमहूनलष्योकोइ ॥ रजनीसबवितईरोइरोइ ॥ नृपहूनकह्यो कछुदुषनिदान ॥ हठिरामरामकहिकीयविहान ॥ रामहिलैआवहुमंत्रिराज ॥ कैकछुकआजउ पजैअकाज ॥ महिपालदसादेषतसुमंत ॥ तुमरामआनिमिलवहुतुरंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ सोसुनतमहामंत्रीसुजान ॥ संक्रम्यौकुंवरग्रहसावधान ॥ व्रतब्रह्मचर्यजुतरामवीर ॥ तिहिंसदनआइमंत्रीसधीर ॥ उठिरामकरेआदरअपार ॥ वंदनकृतमंत्रिसुवारवार ॥ ॥ ॥ सुमंतउवाच ॥ ॥ परधानरामसौंकहिसप्रेम ॥ नृपदरशनकहचलीयेसनेम ॥ वपुरामविविधभूषणबनाय ॥ शुभसभादरसदीनौसुभाय ॥ मिलिसषामित्रक्षत्रीयकुमार ॥ आरोहद्विरदरघुवरउदार ॥ सबचढेजथाक्रमजानसाज ॥ रथसूटसुआगेमंत्रिराज ॥ सबहिनकौआदरसमाधान ॥ रघुवीरकरतपुरजनप्रमान ॥ ॥ लोकउवाच ॥ ॥ सविषाददेषिमंत्रीसुमंत ॥ सोभएविमनजनसाधसंत ॥ सोचतजनमोचतउर्द्धस्वास ॥ उपजैअनिष्टकछुअनायास ॥ वाजतनिसानएकहीवार ॥ विनुहेतरहेकोधौंबिचार ॥ अ सिशोकलोकसबग्रेहग्रेह ॥ दुषसिंधुपरेउपजेसँदेह ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दिनकरदि नेशकुलराजद्वार ॥ इहांरामआनिउतरेउदार ॥ पारषदसवनिकीनेंप्रमान ॥ सनमानक रेरघुरामस्याम ॥ कैकेयीग्रहदशरथकुमार ॥ रघुवीरचलेसंगमंत्रसार ॥ ॥ श्रीरामउ वाच ॥ ॥ भयचकितभएग्रहदशादेषि ॥ विपरीतभावउद्वसविशेषि ॥ सबहेतविगत दाशीसमाज ॥ सनमुषनहींआवतिप्रेमसाज ॥ आवतिज्यौंआगेदिवसऔर ॥ ठाढीस त्राससबठौरठौर ॥ मंदिरजिहिंहैदशरथमहीप ॥ सुषपाइरामआएसमीप ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ भुविपरेदेषिदशरथभुवाल ॥ कैकेइनिकटकृत्याकराल ॥ दुषमग्नपितादश रथहिदेषि ॥ विपरीतिभईकछुचितविशेषि ॥ क्रोधानललोचनअरुनकीन ॥ मातातहां देषीतनमलीन ॥ कीनैपितमातहिनमस्कार ॥ वैकल्पहोताचितवारवार ॥ लषिरामरहेद सरथलजाइ ॥ उरशोकग्रसितनहींवचनआइ ॥ नरनाथअधोमुषश्रवतनैन ॥ नहींजा तबोलिचितअतिकुचैन ॥ निस्वासडारिअवनीनिहारि ॥ मुषमोनरहेनृपमानमारि ॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ रघुरामबोलितवधर्मरीति ॥ यहकहाआजजननीअनीति ॥ अपराधकहाहमतैजुआज ॥ जिहिंबोलेनहींराजाधिराज ॥ ॥ कैकेयीवाक्यं ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ रामवचनतुमसौंअहित । अबलौंकह्योनकोइ ॥ तातेंनृपतिसकोचतिहि । अवनिमौनरहेसोई ॥ ४६ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कैकेयीसौंरामकहि । कारनकवन

सकोच ॥ होंआज्ञावसपुत्रअव । प्रगटभलीवापोच ॥ ४७ ॥ ॥ केकेयीवाक्यं ॥ ॥
सुनहुरामकारनसकुच । सबैकहोंसमुझाय ॥ राजवचनपनराषिये । बुद्धिविकलपविहाय
॥ ४८ ॥ दएमोहिवरदानद्वै । आगैंअवधिनरेस ॥ मैथातीगपेमनहि । सोमागेसविशे
ष ॥ ४९ ॥ दंडकवनमहँचतुर्दश । वर्षवसहुतुमजाय ॥ अबवरदानजुएकयह । मोक
हँदीनोराय ॥ ५० ॥ दूजेवरमहइहिंदिवस । भरतहोहिभुवभूप ॥ पाइप्रगटजुवराजपद ।
विलसहिअवधिअनूप ॥ ५१ ॥ ॥ यातेंकरिवौपुत्रअव । पितकौवचप्रमान ॥ लह्योज
न्मरघुराजकुल । तुमहोनीतिनिधान ॥ ५२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पितुजीयतअपिलआ
ग्याअधीन ॥ सोइपुत्रपुत्रकहियतप्रवीन ॥ क्षयदिवसअसंष्याअन्नदेइ ॥ लापनिजिवाइ
जगसुजसलेइ ॥ देगयापेत्रपितुपिंडदान ॥ पुत्रतातवहिपावैप्रमान ॥ ॥ कविरुवाच ॥
॥ दोहा ॥ ॥ वनिताकेएसुनिवचन । उरपरजारिअवधेस ॥ जतनजतनमूर्छाजगी ।
उपजौशोकअसेश ॥ ५३ ॥ प्रियापिशाचीसीप्रतछि । बैठीसहितविकार ॥ भृकुटितिरे
षानचितिभ्रुव । लोचनचढेलिलार ॥ ५४ ॥ जोगरामउद्वेगजग । अरुविधवापनआप
॥ मानहुमीचमहीपके । पलपलगनतिसपाप ॥ ५५ ॥ वामाअदसासीविषम । निरषी
अवधिनरेश ॥ भावीशूचितअशुभभय । समझावतसविशेश ॥ ५६ ॥ ॥ दसरथउ
वाच ॥ ॥ अलपलाभपातकअतुल । सर्वैअनिष्टसुभाइ ॥ एकनहारूकेअरथ । गहि
कतकाटतगाइ ॥ ५७ ॥ मेरोजीवनमानिनी । निहचैजानहुनांहि ॥ काहुकारनदैवकृत ।
जबैरामवनजांहि ॥ ५८ ॥ ॥ केकयीवाक्यं ॥ ॥ दएमोहिवरदानद्वै । रामसपथक
हिराइ ॥ पनमिथ्याकीनैपरत । सुरनरनर्कसुभाइ ॥ ५९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंद
पधरी ॥ ॥ योंकहिरुभगौंहैबसनआनि ॥ पापिनीदएरघुनाथपानि ॥ सिरमानिलएमु
निपटप्रसंस ॥ वरवीररामरघुराजवंस ॥ एआदिमध्यअवसानएक ॥ इनकेचरित्रमाया
अनेक ॥ सुषदुष्षवनव्यापितभक्तिसाधि ॥ अषिलेसअनंतवर्जितउपाधि ॥ सुषराज्यभो
गजोगहुसमान ॥ अनुपमअनीहमाहिमाअमान ॥ उपराजिराषिभवकरहिअंत ॥ इच्छा
नभोगनृपताअनंत ॥ जेस्वयंजोतिभासतसुभाइ ॥ भवभूतमांझअनेकभाइ ॥ लषिकार
एकछुअवतारलीन ॥ महिभारहरणमारणमलीन ॥ सानंदसुतहिदेषेनरेस ॥ नाहिंवयर
राजइच्छाविशेस ॥ देषीअनीतिनृपत्रियादोष ॥ रामहितथापिकछुनाहिनरोष ॥ ॥ रा
जोवाच ॥ ॥ सुतसुनहुंकह्योकोशलनरेश ॥ विधिवेदटरतउद्यमविशेस ॥ मोहिराखहु
कारागारमांहिं ॥ हठिलेहुराजकछुदोषनांहि ॥ हूंपतितमहिलजितलषिनहेत ॥ चलचि
त्तभयौअंतरअचेत ॥ ठगवचनकहेत्रियकपटछानि ॥ उपज्योअनिष्टसोइमोहिआनि ॥
॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कष्टनृपहिहठकैकही । बनीआनिविपरीत ॥ वेद
विदितरघुवीरतहां । बोलेवचनविनीत ॥ ६० ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ कृतउचितयहदि
वशेशकैंकुलनाहिअवधिनरेस ॥ पृथ्वीसचूकैवचनपनपैप्रगटनिरयप्रवेस ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ करविविधमातपितहिवंदनरामराजीवनैन ॥ उठिचलेजननीग्रेहकौअति
चित्तबाढतचैन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गुरुवधूवाक्यं ॥ ॥ अनरथअनीतजब

सुनीएह ॥ गुरुबधूआईकैकयीग्रेह ॥ तेकरतभईउपदेसताहि ॥ अवनीशसुतातूं प्रगटआहि ॥ मनगनतिरामभरतहिसमान ॥ यहभईआजकछुबुद्धिआन ॥ अप राधरामकहाकर्यौआज ॥ जिहिदयौजोगतुमदेतराज ॥ नृपनीतितुमहुंजानतनिदान ॥ पितुराजलहैअग्रजप्रमान ॥ कृतनीतिविपर्जयतुमनिशंक ॥ अन्यथातदपिनही भालअंक ॥ यहहोइभरततैंनहिनआज ॥ रामहिनिकारिअरुलैहिराज ॥ सीतानत जैरघुनाथसंग ॥ यहसाररेषजानहुंअभंग ॥ जौराजछांडिवनरामजाहि ॥ निहचैतौ दसरथजीयहिनाहि ॥ उपजैअलाभतुमकहिअनेक ॥ यातैअलोककररहैएक ॥ भरतहिभूवदीनैराजभार ॥ ग्रहरहहिरामतवकाबिगार ॥ रामहिनहीलालचकछूराज ॥ कतकरतिलागिहठकुलअकाज ॥ भरतकहंदेहुजुवराजभाम ॥ मतथपहुजिहिनवनजाहि राम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हठकरिराषहुबांहग्रहि । रामचंद्रतजिरोष ॥ मंगलचारउछाहम न । सबकुलहोइसंतोष ॥ ६१ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कैकेयीगुरुत्रीयनिकोकाह्योनकी नौकान ॥ करमीजतिधिकधिककहति । ग्रहनिगईसज्ञान ॥ ६२ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ सुतरामकहँजुवराजपदशुभनिकटलग्निनिहारि ॥ कृतउचितकोशलसुताकुलगतिकरति मंगलकारि ॥ कुलदेवदेवीवंदनाकरिकौशल्यातिहिकाल ॥ द्विजदानविहितविधानवे दिकविबुधतोषविसाल ॥ ॥ छंदपधरी ॥ इहिसमयरामजननीअवास ॥ पाउधारिचित आनंदप्रकास ॥ कीयकोशल्याकहनमस्कार ॥ अंबाअसीसदीनीअपार ॥ ॥ कौशल्या वाक्यं ॥ ॥ हैलग्नसमयकबतिलकहोइ ॥ सुतकहहुसमंगलवचनसोइ ॥ पुत्रसबकरहुउ च्छवप्रयोग ॥ जिहिहोहिसगुनआनंदजोग ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ जननीहूंदंडकव नहिंजात ॥ पितआग्यादीनीहमहिंप्रात ॥ ॥ माताउवाच ॥ ॥ जुनसहैतुमहितिहि हृदयसाल ॥ कैंपरहुवज्रतिनसिरअकाल ॥ काकहतवचनअनहितकुमार ॥ सुनिवहतहीं यैंदुःसहदुसार ॥ कहींयैवनदंडककवनकाम ॥ राजाजिहिपठवततुमाहिराम ॥ ॥ श्रीरा मउवाच ॥ ॥ कैकयीमातकछुकपटकीन ॥ हैनृपतिताहिवरदानदीन ॥ सोहमहिदंडका रण्यवास ॥ इहिकालअवधिछांडहिअवास ॥ भरतकहदयौजुवराजभूप ॥ आषंडलेशनृ पताअनूप ॥ ॥ मातवाक्यं ॥ ॥ कैहोहुभरतजुवराजकाज ॥ ग्रहदुष्टपरहुसिरअबधि गाज ॥ वनसंगहमहिलैचलौवीर ॥ इहांरहिनजातआतमअधीर ॥ विनुतुमकादेषहिंवार वार ॥ तुमपुत्रअंधलकुटीअधार ॥ हमदेषहिसुतविनशून्यग्रेह ॥ निहचैउरफूटहिनिस्सं देह ॥ बनिहैनइहांरहिवोविहाल ॥ लैचलोसंगहमवनाहिलाल ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ ममसंगनचलिवौउचितमात ॥ पतिजीवनछांडिविश्वाहिविष्यात ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वामनवृद्धविरूपव्यसनदुर्वचनविरागी ॥ षलरोगीजडषंढअंधअँगहीनअभागी ॥ कलह कारकृतघातचौरनिर्धनीजुवारी ॥ वैसकपापीविलजवंसवहिकृतव्यभिचारी ॥ मृतहूंनतजै होइसहगमन, अंतअधोगतउद्धरै ॥ इत्यादिगुणअनेकजुत, पतिहिनारिपरहरै ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पतिऐसेहूपतिव्रता । नाहिनतजतिनिदान ॥ जीवतजीवैप्रीतिजुत । मानै प्रानसमान ॥ ६३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहराजजननितुमहीअधीन ॥ नहिनीतित

जैसुतमोहलीन ॥ साचौसुएकभर्तासनेह ॥ जिहिसंगदहतितिृयअगनिदेह ॥ पतिविना कछुनपरिवारप्रीति ॥ निरधारकहतयौनिगमनीति ॥ पतिदेवनामपतनीसप्रेम ॥ नित उचितकरतसेवासनेम॥ सबभाइसफलभर्तारसेव॥ दिनउचितकर्ममानतजुदेव॥पतिसेवा सदापतनीपुनीत ॥ गतिपावतगावतसुमतिगीत ॥ ज्यौवृंदापतिसेवाविशेष ॥ सबजोग भईपूजितअशेष ॥ दुषदेविकंतजोविनहुदोष ॥ सुषमानिसुलीजैउरसंतोष ॥ नहीतजति नारिस्मृतपतिसनेह ॥ तिहिंसंगदहतिचढिचितादेह ॥ जौजीयैकदाचितदैवजोग ॥ पतिव्र तहुसाधैएप्रयोग॥तजिमानग्यानवैभवविधान॥पोषतिव्रतसंजुतकष्टप्रान ॥ तजिखेलतेल सज्जातंबूल ॥ मानहिसुगंधउछवनमूल॥जलसीतलपाननउष्णन्हान॥पदचारपुहविवर्जि तउपान ॥ मुषमधुरउष्णभोजननमेल ॥ चाहैनाचित्तनवरंगचैल ॥ मनवाचकर्मधर्मेहिम्र जाद ॥ परिवारदयापूजाप्रसाद ॥ उपवासपर्वनित्तहितनवीन ॥ लज्जाअषंडसुतबचनली न ॥ इहिभांतिदमितइंद्रियअशेष ॥ वैधुर्य्यधर्मपालैविशेष ॥ वसअवसजीयैतौलौविदेह॥ हठितजैजोगअभ्यासदेह ॥ ॥ मातवाक्यं ॥ ॥ सुतसुनहुबचनमेरैसुजान ॥ सुरसा षिपितामातासमान॥ दशमासउदरधरिजाचिदेव॥ सुतजन्मवरशदशकरतिसेव ॥ हैअ धिकपितातैमातहेत ॥ सवभाइबाचमनक्रमसमेत ॥ ज्यौपितावचनराषहुप्रमान ॥ नहि माताबचनतजिवौनिदान ॥ कांताजितवातुलवृद्धकाल ॥ अनसोचवचनइनकेसुआल ॥ हठिलेहुराजनिस्संकहोइ ॥ करियैविचारइहिथलनकोइ ॥ हतिबंधुसदानृपभूमिहेत ॥ लोकहुंअलोकलैराजलेत॥ जोनीतिछांडिबोलैअन्याउ ॥ कीजैनकानताकोकहाउ ॥ भववे दधर्मयहहैअभूत॥ मितराजहिपावैबडोपूत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कुलकलंकचढैअ रुअजसअंग ॥ भवपितावचनसुतकरैभंग ॥ रविवंशमातयहनाहिरीति ॥ अबलो नभईऐसीअनीति॥ केकयीकरैछलवचनकाज ॥ अनजानिनृपतिवरदएआज ॥ मातान टरैभवतव्यमान ॥ सुषदुष्षकर्मफलहैसमान ॥ इहिठोरसोचकरिवौनआज ॥ करियैविचा रिअवअग्रकाज ॥ विपदावसहैअवधेशवीर ॥ सुधिलेहुजाइउनकेसरीर ॥ निर्धारचारिद शवर्षनेम ॥ पितवचनसिद्धिमिलिहैसप्रेम ॥ मनसोचकबहुकरियैनमाय॥ अबअवधिअं तमिलिहैंजुआय ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जलझंपनमंगलजलन । लगिपितवचनप्रमान ॥ अं बाबुद्धिअनीतिअब । अंगीकारनआन ॥ ६४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कौशल्यारघुवीरकर। बांधेरक्षाजंत्र ॥ जाहिनव्यापैविघनजग । जलथलअमतस्वतंत्र ॥ ६५ ॥ कौशल्यावाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अंबाअशेषदीनीअसीस ॥ सबहोहुसिद्धिजयचढहुसीस ॥ वामनजल रक्षकथलवराह ॥ मधुकैटभमर्दनपंथपाह ॥ वनअद्रिविषमनरसिंघवीर ॥ सबकालकरहिंर क्षासरीर ॥ डाकिनीभूतप्रेतनिडराइ ॥ हरिहोहुसदासन्मुषसहाइ ॥ दिगविदिगऊर्ध्वअधम ध्यदेश ॥ पुत्रवनसंगकेशवप्रवेश ॥ सुरप्रष्टसबऋषिवरसमाज ॥ कृतसिद्धिहोंहिसुतसफ लकाज ॥ त्रयदेवयक्षगंधर्वताम ॥ रहिहैतवरक्षाजुक्तराम ॥ निद्रावसजागतपथनिहारि ॥ मनवाचकर्मत्रातामुरारि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबरामआइसीतानिकेत ॥ दिनजथाध र्मउपदेशदेत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तुमप्रियारहहुममजननिपास ॥ विपदानिब

ढावहुएकवास ॥ तौंलौकरिसेवाएकतंत्र ॥ आवहिहमजोलौंअवधिअंत ॥ जानौतजनक कैग्रेहजाइ ॥ वैषमबियोगजातेविहाइ ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ सीतातबबोलीसावधा न ॥ विस्तारधर्मपतिव्रतविधान ॥ माताहिकह्योतुमधममूल ॥ सोसबैसुन्योंमैंसानुकूल ॥ रहिहूंनग्रेहसंगछांडिराम ॥ मनवाचनजैहूंजनकधाम ॥ पतिसंगनछांडौंतजौंप्रान ॥ नि र्धारयहैमेरौनिदान ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ सर्करकुशकंटकजुतसुभाइ ॥ पदत्राण विनापथगमनपाइ ॥ वनजंतुविविधषलजालव्याल ॥ राक्षसाघोररूपाकराल ॥ मनुजा मिषभोजनमनमलीन ॥ निर्दयीपापकर्तानवीन ॥ वनसिंघव्याघ्रसरभावराह ॥ अतिरौ द्रभालमहिषाअग्राह ॥ आरण्यकरीमदमत्तअंग ॥ मुनिमनुजभिल्लभिल्लीप्रसंग ॥ कंद रनिदंशमत्कुणकुजीव ॥ सुषधामतहांवसिवौसदैव ॥ परिधानपत्रत्रिणतल्पपाइ ॥ भुव सयनसहजसात्विकसुभाइ ॥ हठकटुकअम्लफलभक्षहोइ ॥ संदेहलाभअनलाभसोइ ॥ मिलिपावससहिवेसीसमेह ॥ दाहकतुशारऋतुशिशिरदेह ॥ तपिवौतहाँग्रीषमदुसहता प ॥ वसिवौसनेमवनदुषवियाप ॥ गजगमनिरहहुतस्मातग्रेह ॥ देषिहौवेगिममनिस्सं देह ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जथालाभसंतोषजिय । बनबसिहूंरघुवीर ॥ सबैकलेसविलाससम । सुषमानिहूंसरीर ॥ ६६ ॥ जोतिषविद्यानिपुनद्विज । कोकूसैस बकाल ॥ मोकहँदेषिविचारिमन । बोल्यौंबचनविलास ॥ ६७ ॥ सुनिबालेभर्तारसंग । तोहिव्हैहैवनवास ॥ अक्षरदैवनअन्यथा । सोकरिवौविश्वास ॥ ६८ ॥ आनिबन्यौसो इकालएह । विधिसूचितव्योहार ॥ स्वामिलएविनुमोहिसंग । बनैनआनविचार ॥ ६९ ॥ ॥ कंठछेदकैपाशक्रम । षोजिहलाहलखाउं ॥ तातैचलिहूंसंगतव । कैजमलोकहिजाउं ॥ ॥ ७० ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वल्लभात्रीयपुनिमुग्धवेश ॥ इनके दुरंतहठहैअशेस ॥ पतिजानिकह्योसियचलहुआप ॥ वनदुषदुस्सहसबदिनवियाप ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ पुनिकह्योसियासुनिप्राननाथ ॥ सबकाजसमंगलपतिहिसाथ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अथरामलक्ष्मनसंवाद ॥ ॥ इहांरामसुमित्राग्रेहआइ ॥ शेष हिप्रबोधकीनोसुभाइ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तुमरहहुग्रेहलक्ष्मनसुतंत्र ॥ मांनहुय हमेरौमूलमंत्र ॥ भरतजौकरहिकछुद्वेषभाउ ॥ जुगजननिसंगअन्यत्रजाउ ॥ पितुसेवजत नकरिवौप्रमान ॥ ममविरहपिताहैअसहमान ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ यहसुनतशे षकोप्यौकराल ॥ जारैत्रिलोकजनुरोषज्वाल ॥ उनमत्तभ्रांतचितनृपतिआज ॥ कैकेयीव चनवसकृतअकाज ॥ तिहिरोकिमारिभरतहिसभ्रात ॥ प्रभुदेषहुविक्रमभृत्यप्रांत ॥ अ भिषेकविघ्नतवकस्यौआहि ॥ तिहिहेतहतौंसकुटुंबताहि ॥ राजाधिराजतवतिलकराज ॥ अबकरिवौमोकहँजतनआज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तेवचनरामसुनिलषनवीर ॥ सोइकंठलाइबोलेसधीर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ सौमित्रिसुनहुरघुसारदूल ॥ जेजा नततवविक्रमसमूल ॥ नहींसमर्थशेषदेषहुसकाज ॥ इहिठौरअटकिरहिवौनआज ॥ देषी यतविश्वयहराज्यदेह ॥ उद्यमतौंजोपैसत्यएह ॥ अभोगआहिवारिदवितान ॥ सविलास तडितलेषासमान ॥ आयज्यौंअग्निअयतप्तअंग ॥ भवपरतबुंदजलहोतभंग ॥ अहिग

लस्थोपिज्यौंभेदआप ॥ तऊदंशउपेक्षाजुतसताप ॥ त्यौंलोकभोगतत्परनिलाज ॥ सोइ भोगअशास्वतनियतआज ॥ तनकष्टकरतइहांकर्मतंत्र ॥ तेइभोगअर्थअहर्निसिस्वतंत्र ॥ जोभिन्नदेहतैंपुरुषजोग ॥ भवइहांकोनकारिहेसुभोग ॥ पितमातभ्रातसुतदारसंग ॥ अन्नेकबंधुसंबधअंग ॥ जोंप्रजाजंतुबहुमिलतजाइ ॥ नदिदारुनिकरवारिहिबहाइ ॥ श्रीयचपलनियतछायासमान ॥ यौवनहिनीरलहरीसुजान ॥ सुषत्रीयामनहूंनिसिस्वप्नसूझ ॥ अल्पायुतदपिअहामितिअबूझ ॥ गंधर्वनगरसंसृतिगुमान ॥ भयरोगविषमसंकुलभयान ॥ अतिकष्टसहतआतमअगूढ ॥ ममतानहीछांडततदपिमूढ ॥ आदित्यगतागतअहनिअंत ॥ आयुर्बलछीजतजातअंत ॥ नरजन्मविलोकतजरानाश ॥ तद्यपिनहीमानतमूढत्राश ॥ सोइरात्रिवहेवहिदिवससोइ ॥ कृतकालवेगदेषैनकोइ ॥ छनहींछनआयुषहोतछीन ॥ नरआमकुंभजलजोनवीन ॥ रोगोघसपत्नाज्यौंरिसाइ ॥ प्रातिदिनसरीरप्रहरनउपाइ ॥ व्याघ्रीवअग्रवर्तिनिविशेष ॥ आतमहिजरातर्जतिअशेष ॥ सामिलीमृत्युसोंसावधान ॥ निसदिवससमयचाहातिनिदान ॥ उतपन्नदेहइहिंअहंभाव ॥ रविचक्रतपतराजारुराव ॥ इंहिंमानतहैनिर्भयअबूझ ॥ संज्ञासुभस्मविटनाहिसूझ ॥ त्वगमांसअस्थिनरक्तरेत ॥ संजोगमूत्रमलजलसहेत ॥ सविकारसदापरिणामसंग ॥ आपुनौताहिक्यौंकहैअंग ॥ बहुकालस्थिततद्यपिविनाश ॥ सबविदितअंतवहअग्नियाश ॥ सोदेहपाइतुमक्रोधसंग ॥ भवभूतहतनचाहतअभंग ॥ अभिमानदेहजोकरतआप ॥ सबदोषताहिउपजतसताप ॥ जिहिंबुद्धिदेहआपनौजानि ॥ मनवाचअविद्यावहैमानि ॥ ममदेहनाहिजिहिबुद्धिमानि ॥ जगताससुविद्यानियतजानि ॥अनविद्यासंसृतिहेतआहि ॥ तुमविद्यनिवर्तकगनहुताहि ॥ तातैनितविद्याजतनतंत ॥ अभ्यासतमुक्तिअर्थीमहंत ॥ क्रोधादिकआतमवैरकारि ॥ निर्धारतासक्रोधहिनिवारि ॥ हैक्रोधमुक्तिकहविघ्नहेत ॥ सोतजहुशेषमनवचसमेत ॥ जाकेप्रभावमनुजादजीव ॥ दुषदेतपितामातहिसदेव ॥ मनतापसर्वकहक्रोधमूल ॥ संसारक्रोधबंधनसशूल ॥ पुनितृष्णावैतरणीप्रमान ॥ संतोषसुनंदनवनसुभाव ॥ निस्सीमसांतिशुभकामगाव ॥ समसांतिअद्यतुमभजहुसोइ ॥ किहुकालशत्रुउपजैनकोइ ॥ मनप्राणदेहबुद्धिविषयमेल ॥ बुध्यादिविलक्षणहोतहेल ॥ अविकारनिराकृतिजोतिआप ॥ आतमाशुद्धअंतकअव्याप ॥ जबलौनजोतितनभिन्नजानि ॥ अंतकदुषतौलौंदेतआनि ॥ तस्मातसदातुमज्ञानवंत ॥ आतमहिभिन्नजानहुअनंत ॥ बुध्यादिबहिस्थितसर्ववीर ॥ सुषषेदरहितवर्तहुसधीर ॥ भुक्तियतपुराकृतअषिलभाव ॥ सुषदुष्षएवअपनैसुभाव ॥ परिहूंप्रवाहजोकार्यकीन ॥ नहींलिप्तरहैतिनतेअलीन ॥

॥ दोहा ॥ ॥ बाहिरसबकर्तृत्वतुम । जद्यपिवहतविशेष ॥ अंतरशुद्धसुभावजौ । अभिकर्मनालिपतअशेष ॥ ७१ ॥ यहहृदिभावजुआपनौ । सात्विककह्यौसुनाइ ॥ अंतरराषहुआषिल । सोतुमसबसुषपाइ ॥ ७२ ॥ जातेभवदुषजालकी । बाधाकबहुनहोइ ॥ वारिजपल्लववारिज्यौं । कर्मनव्यापैकोइ ॥ ७३ ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ लक्ष्मनरामप्रणामकारि । नयनानंदसनीर ॥ बोलेवचनीवनीतमै । सेवकसदासधीर ॥

॥ ७ ॥ मेरैअंतरगतभ्रमित । संशयहुतौसशूल ॥ दीनानाथदयालतुम । सोसबहरयौस मूल ॥ ७५ ॥ तुमजानतममस्वामिव्रत । सेवकबालसनेह ॥ कैचलिहूरघुरामसंग । कैह ठिछांडौंदेह ॥ ७६ ॥ इतिश्रीरामलक्ष्मनप्रतिप्रबोधस० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामचं द्रसियलषनसंग । आएमातनिकेत ॥ इहांआज्ञामाँगतउचित । हर्षगमनबनहेत ॥७७॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ मातप्रतिक्षाकरहुमम । आगमअवधिअधीन ॥ कबहूविर हकलेशकरि । मनमतकरहुमलीन ॥ ७८ ॥ जेअनुवर्तीकर्मपथ । नहींएकत्रनिवास ॥ जे सैपातप्रवाहपरि । सरितासलिप्रकाश ॥ ७९ ॥ माताचतुर्दशवर्षवन । मुहिजैहैछनमान॥ मंदिरदरीनिवासमन ॥ सज्ञानभूमिसमान ॥ ८० ॥ ॥ कौशल्यावाक्यं ॥ ॥ छंदप धरी ॥ धरिधीरमैथिलीरहहुधाम ॥ वनगमनउचिततुमकौनवाम ॥ पुनिसासुकह्यौदृगज लप्रवाहु ॥ जानकीअलपवयवननजाहु ॥ ॥सीतावाक्यं॥ ॥ कहिवचनसीयासासुहिवि सेस ॥ पतिसंगकितौंजमपुरप्रवेश ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वंदनकृतराघववारवार ॥ मिलिमातउरहिलाएकुमार ॥ उनमानिसमयदीनीअसीस ॥ सुतचलेसीयाजुतनाइसीस ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ त्रीयावसिष्टअरुंधती । विधिवत्पूजिविचारि ॥ अपनेसीताआभरन । ताकहँदएउतारि ॥ ८१ ॥ अलंकाररघुवीरअंग । जेबहुमूल्यबनाइ ॥ रामदएगुरुराजक हँ । परमप्रेमपरिपाइ ॥ ८२ ॥ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ महिपालउठ्यौमनमुषमलीन ॥ कैकेयीग्रेहतैगमनकीन ॥ जगहरहिमनहुसर्वसजुवार ॥ मुनिषोइमहातपविवसमार ॥ आ जन्मव्रतीव्रतभंगअंग ॥ सर्पजौंविकलमणिरहितसंग ॥ सरचूकिमहाधन्वीससोच ॥ पर हरेजोगजोगीसपोच ॥ जनुसाहउदधिबूडेजिहाज ॥ रणभूमिभजेसेसूरराज ॥ धनगएकृ पनजैसेआधीर ॥ विधिभईयहैअवधेशवीर ॥ इहिदसानृपतिगृहसभाआनि ॥ वारिधिदु ष्टबूडतविकलवानि ॥ कहूंलहतनहिनअवलंबकोइ ॥ रघुनाथविरहदुषउठतरोइ ॥ इहि समयरामआएसधीर ॥ वनगमनदंडकारण्यवीर ॥ कृतरामपिताकहनमस्कार ॥ वंदित पदचूमतवारंवार ॥ पुनिसीतालक्ष्मनलगेपाइ ॥ उरकंपनयनजलभरेआइ ॥ उरलाइपुत्र बैठारिअंक॥ राजानिधिपाईमनहुरंक ॥ मुषवचननआवतमनमलीन॥दुषसागरबूडतभए दीन ॥ रघुवंसतिलकलषिसमयराम ॥ उठिचलेछांडिधनधराधाम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ज्यौं परदेसीपाहुनौ । राषेहूंनरहाइ ॥ परजागतसंपतिप्रभुत्व । छांडिचलेरघुराइ ॥ ८ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ मुरझायपर्यौनृपभूमिमाँहि ॥ हीयफुट्यौमनहुंसुधिरहीनाँहि ॥ हाहंतवानि रनिवासहोइ ॥ कहूंदेतनहिंनअवलंबकोइ ॥ पुरजनउदासरोदतपुकारि ॥ नैरासभएसबपु रुषनारि ॥ दारुनजडजंगमसमयदेषि ॥ वसविरहविषमविलपविशेषि ॥ षगमृ गहुवृषभसुरभीसोक ॥ तजिग्रासविकलअपआपओक॥ गजसभयशब्दहयदुषितहेष ॥ विलपातवारवारहिविशेष ॥ जेबालकेलिहितचित्रजंतु ॥ तिनतजेअसनजलसुनितुरंतु ॥ निर्धारदसायहपशुनिहारि ॥ हियलगेफटननरनारिहारि॥ ॥ दोहा॥ ॥ वसनअन्नतजिली नव्रत । वनदंडकहिनिवास ॥ सबैविवर्जितविहितसुष । वैभवरामविशास ॥ ८४ ॥ वृक्षतु चापल्लववसन। निश्चलकृतपरिधान॥स्यामाजिनभाजनसलिल।मुनिपदवीलियराम॥८५॥

हाहारवरनिवासहुव। नगरलोकनैरास। बिछुरतदारुनदुषविषम। रामगवनवनवास ॥८६॥
॥ राजोवाच ॥ ॥ मानिसुमंतअनंतमति । बोलेनृपतिविचारि ॥ रथलेजइयैरामकहँ। विनयसहितबैठारि ॥८७॥ वनदिषाइवौराइमन। करिउपदेसकुमार ॥ किहुप्रकाररघुवीरकहँ। आनहुबुद्धिउदार ॥ ८८ ॥ बूडतशोकसमुद्रमहँ। अवलंबननहिआन ॥ मरतामिलावहुराममुहि॥प्रेमनिधानप्रधान ॥८९॥ वहुरैरामननियमवस। हठपुरुषारथेहत॥सीतहिआनहुफेरितुम। किहुंप्रपंचनिकेत ॥ ९० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रणविजयीशुभराजरथ। आगैकीनोआनि ॥ मंत्रीसुमंतअनंतमति। नृपआज्ञासिरमानि ॥ ९१ ॥ बाहिरनगरसुमंततब। रामहिरथवैठारि ॥ सुरबंधुलपमनसहित। संगसीयासुकुमारि ॥९२॥ करिकरिवंदनअवधिकहँ। सवगुरुजनसनमानि ॥ रामचलेआरूढरथ। विजयनिमित्तप्रमानि ॥ ९३ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ सबचलेतदांपुरलोकसंग ॥ अतिवृद्धतरुनलेबालअंग ॥ वसविरहमहाकातरविहाल ॥ वसिहेसमीपजहांवनविसाल ॥ अवधतेंएकजोजनजुआइ ॥ भएभानअस्तमिततहांसुभाइ॥तिहिंकरयौरामविश्रामराति ॥ जनदीनमहामनुनिधिहिजाति॥पहरुवाभएसबआसपास ॥शशिद्वैजदृष्टिज्यौंधरिसत्रास ॥ बुधिरचीइहांरघुरामवीर ॥ समयैनिसाथजागेसधीर ॥ रथहांकिअवधिसनमुषहिराम ॥ तबकहिसुमंतसबसरेकाम ॥ प्रजजानिरामगृहदिसप्रवेस ॥ उठिचलेचित्तआनंदविशेष ॥ दिसदछिनफेरिरथरामदेव ॥ अतिसजवहांकिगवनैअजेव ॥ तबआइसरिततमसाहितीर ॥ बसिनिसातहांदिगविजितवीर ॥ रथचक्रचिन्हनहीपाइराम ॥ महिधावतपुरजनठामठाम ॥ अनलब्धअजोध्यालोकआइ॥ विनुरामसवैउद्यमविहाइ ॥ अतिविकललोकभएआनिआनि ॥ जमसदनप्रायनिजसदनजानि ॥ नरनारिघोरदरसननिहारि ॥ भागतडरिएकइकभयारि ॥ परिजनपिसाचमंदिरससान ॥ जनस्वजनमनहुजमदूतजानि ॥ दिनअदिनरात्रिमनुकालराति ॥ विपरीतदसापुरजनविहाति ॥ ॥ पौरजनाऊचुः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भईकिरातिनिकैकयी। दुसहदसादवदीन ॥ दसहुंदिशाधावतदुषित। मनुमृगछनछनछीन ॥९४ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ॥ अवधजनमिलेएकत्रआइ ॥ सबकरतयहैचिंतासुभाइ ॥ ॥ लोकवाक्यं ॥ ॥ पदचाररामसीतापुनीत ॥ सहलक्ष्मनसहिहैतापसीत ॥ विनुरामइहांवसिवौनबीर ॥ अवलोकिअवधिचितअतिअधीर ॥ कैकयीबचनछलकरयौकाज॥रघुवंशवृद्धबुधिफिरीराज ॥ राक्षसीभईकैकयीरानि ॥ जिहिसर्वविनाशकबुद्धिवानि ॥ वनरामदुष्षसीताविजोग॥ पतिकष्टमहाबढिअप्रयोग ॥ बलवानविधाताअंकवाहि ॥ इहिमज्जनकोउनसमर्थआहि॥ मनसोचलोकव्याकुलमहंत ॥ तिंहिअसहदुष्षनहिंलहतअंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इजनदुषितजानिमुनिवामदेव इनमध्यआनिबैठेअजेव ॥ ॥ वामदेवउवाच ॥ ॥ इहिंठौरसोचकरिवौनआज ॥ कारनदुरंतअतिदैवकाज ॥ विधिजुक्तकहतयौंवामदेव ॥ भावीबलिष्टकोउलहिनभेव ॥ करियैनरामजानकीकाज ॥ यहसोचउचितनहिंसमयआज ॥ एआदिपुरुषअव्ययअनंत ॥ जानकीप्रीयालक्ष्मीजयंत ॥ परपुरुषआदिमायाप्रसिद्ध ॥ सुनियतनिगमागमस्वयंसिद्ध ॥ एलक्ष्मनअहिशेषावतार ॥ भवभूतधरतजेअषिलभार॥

एइरामभएब्रह्माअनूप ॥ रजजुक्तविश्वभावनसुरूप ॥ आविष्टसत्वगुनविष्णुआप ॥ तेइ संसृतिपालनहरनताप ॥ तमजुक्तरुद्रएइनासकार ॥ संसारकरतछनमहसंघार ॥ एइभए मीनअवतारएक ॥ वैवस्वतमनुवर्ततविवेक ॥ कृतशेषरज्जुभुवनावकीन ॥ लैबांधिसृंगज लप्रलयलीन ॥ सासुद्रसुरासुरमथनसंग ॥ सोलीनभयोमंदरससृंग ॥ आधारपृष्ठिकम ठावतार ॥ कृतदेवकाजवर्जितविकार ॥ जबगईरसातलरसाजानि ॥ अवतरेआदिबारा हआनि ॥ रदअग्रतुलितकर्दमसुरूप ॥ उद्धारइनहिंकीनोअरूप ॥ प्रल्हादबालदुषदसा पाइ॥दारुणस्वरूपनरहरिदिषाइ॥कंटकत्रिलोकदितिजातक्रूर॥अतिरोषनषरतिहिफारिऊ र ॥ सुतराजजातदेष्योसषेद ॥ वरजाचिआदितितहांविदितवेद ॥ एइभएतांवामनविशे ष ॥ बलिबांधिअवनिलीनीअसेष ॥ हैहयाधीसभुवभारहेत ॥ षनिमारयोभार्गवताहिषे त ॥ सोइभएरामरघुराजवंश ॥ पौलस्तिहतकपृथ्वीप्रसंस ॥ नरहाथमरणरावणनिदान ॥ वरदयोब्रह्मयहव्योंतवान ॥ आगेंजुराजदशरथअजेव ॥ दारुनतपसाआराधिदेव ॥ तुम होहुपुत्रमेरेस्वतंत्र ॥ मैंमाग्योवरयहमूलमंत्र ॥ वेइविष्णुरामअवतरेआप ॥ वधरावणहित तपदुषवियाप ॥ मुनिवेषशेषसीतासमेत ॥ वनजातहरनभुवभारहेत ॥ सीतासुआदिमा याअभीत ॥ इहिंव्याजनाशरावनअनीत ॥ नृपवाकेकेयीकृतनिदान ॥ इहाँहेतकछुजानहु नआन ॥ गतदिवसआइनारदसज्ञान ॥ पुनिराममंत्रकीनोप्रमान ॥ दृढवचनरामनार दहिदीन ॥ कष्टभुवहरनवनगमनकीन ॥ करीयेनशोचरघुवीरकाज ॥ शुभमंत्रसुनहुसाधू समाज ॥ निर्धारमानिसाधूनिदान ॥ यहमंत्रगूढकहिवौनआन ॥ कहिमनुजरामरामेति कोइ ॥ अपमृत्युभीतितिहिंनहिनहोइ ॥ इहिंठौरमुक्तिकारननआन ॥ विनुरामनामवैफ लनिधान ॥ करिमायामानुषरूपकीन ॥ दिनजानिविडंवनलोकदीन ॥ ॥ भजनहेतभ गतनिअभय । रावनवधनिरधार ॥ आश्रितमानुषरूपअब । रामहरनभुवभार ॥ ९५ ॥ तातेतिहिंरघुरामकृत । साधुनहोहुसशोक ॥ वामदेवउपदेसदै । आयगएनिजओक ॥ ९६ ॥ सबजनसाधुसमाजसुनि । उनमानेअषिलेश ॥ उघरीसंसयग्रंथिउर । सुमि रतरामनरेस ॥ ९७ ॥ सीतारामरहस्ययह । हितजुतहियथितहोइ ॥ भवसोइपावैदृढभ गति । कलुषनदरशैकोइ ॥ ९८ ॥ अबरघुवीरचरित्रए । आगेभएअनेक ॥ शिवप्रणी तनरहरसुकवि । बरनेसहितविवेक ॥ ९९ ॥ ॥ इतिवामदेवोपदेशपौरजनप्रति ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तबआइरामतमसाहितीर ॥ वसिनिसातहांरण विजितवीर ॥ पुनिशृंगवेरआएपुनीत ॥ संगमंत्रीयसानुजसहितसीत ॥ देवीवनसरवर सुभगदेषि ॥ मठपैठिकरैवंदनविशेषि ॥ सिंसिपावृक्षछायानिवास ॥ कृतरामचंद्रतहांसा वकास ॥ तहांआपरामसुरसरीतीर ॥ वंदनकृतअर्चनसमरवीर ॥ तबकरेगंगपावनत रंग ॥ अघनाशनमजनअंगअंग ॥ विष्यातजुनिगमागमबताइ ॥ सुरसरिप्रभावशेषहि सुनाइ ॥ कौशलकुमारविश्रामकाज ॥ सिंसिपावृक्षआएसमाज ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ र घुवरसषानिषादराजइहांसुनिगुहआयो ॥ जिनदंडोतप्रणामकीनप्रभुलैउरलायो ॥ भेट पुहपफलभक्तिभावकरुणाजुतकीनै ॥ पूछिसकुलकुसलातदेवदिगआसनदीनै ॥ गुहकह्यो

सबैकुसलातगृह,आजसुमेरैआगमन ॥ अघनासभएमेरेअषिल, चिदानंदपरसेचरन ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ हूंदानकृतारथभैयादयाल ॥ प्रभुकरहुधामअबप्रणतपाल ॥ कियध
न्यआजनैषादलोक ॥ सबवसनदेवकिंकरअशोक ॥ प्रभुकरहिधाममेरैप्रवेश ॥ अबहोइ
ततोपावनअसेस ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सषावचनयहसुन्यौरामकहिप्रीतिपरायन ॥ ग्रह
नग्रामआगमनवर्षदशचारिनदरशन ॥ अन्यदत्तफलमूलआदिनहींपुन्यप्रयासन ॥ सु
हृदसषासजसजसुसत्यमानहुअनुसासन ॥ पठवहुजुवधुकारिजनिपुन,जहँतहाँषोजिसु
जानियै ॥ जटजूटकाजबटषीरबन, इहांमित्रअवआनियै ॥ २ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ व
टषीरजटरघुवीर ॥ समबंधुवांधिसधीर ॥ व्रतजुक्तधर्मविधान ॥ पुनिएककृतजलपान ॥
कुशपत्रडासनडासि ॥ रचितलपसबसुषरासि ॥ निजसयनदंपतिकीन ॥ चितसौंधसज्जा
चीन ॥ रहिबंधुसमयनिहारि ॥ धनुवानजामिकधारि ॥ इतिरामवनवासगमनगुहसमाग
मः ॥ गुरुतहांरहिसज्ञान ॥ प्रभुसेवततत्परप्रान ॥ वरकरतचर्चावीर ॥ शुभसषावंधुसधीर
॥ ॥ गुहकवाक्यं ॥ ॥ यहदसाप्रभुअवलोकि ॥ रसकरुणबढचितरोकि ॥ परिनयननीरप्र
वाह ॥ उरउमगिप्रेमअथाह ॥ तहांलपनसौंकहितंत ॥ यहदैवचरितदुरंत ॥ नितसयनसेजन
वीन ॥ कुशपत्रडासनकीन ॥ थितसौंधसप्तसुथान ॥ भुवसयनरघुकुलभान ॥ परहरेरतनप्र
जंक ॥ यहदशावसविधिअंक ॥ रविदुष्षकारनराम ॥ वनिकैकयीमतवाम ॥ इतिआदरी
जुअनीति ॥ मंथरावुद्धिसमीति ॥ ॥ लक्ष्मननिषादप्रतिवाक्यं ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥
काहूवसुषदुषहेतकोऊकछौनहीकरतार ॥ भवभूतकर्मविपाकभुक्तबुद्धिकुबुद्धिविकार ॥
दुषसुष्षजंतुनकोपिदातायहनिगमनिर्धार ॥ परबोधपाइकुबुद्धिप्रगटतसोहीबमानतसार
॥ कर्ताअहंसबकाजकारनमनवृथाअभिमान ॥ निजकर्मसूत्रजुग्रथितनिर्भरनहिनछूटनि
दान ॥ जिहिंदेसवाजिहिकालकारनमनकृतशुभाशुभकोइ ॥ सोइभुक्तिछुटैकर्मभवभवअ
न्यथासुनहोइ ॥ हितहर्षवाजुविषादअनाहितशुभाशुभफलसंचरे ॥ विधिअंकविहितजुक
र्मकेवससोअलंघ्यसुरासुरे ॥ सुषअंतदुषदुषअंतज्योंसुषसहनजंतुसुभाइ ॥ अहनिशाना
हिनपरतअंतरविधिविधानबनाइ ॥ सुषमध्यदुषदुषमध्याथितसुषयहपरसपरअंक ॥ पं
कमहजलजथापावनप्रगटजलमहपंक ॥ नरहोतभिछकस्वपनअंतरनरपतीकिनहोइ ॥
कैरंकहोतसुरेसाकिवाकरतवंछितकोइ ॥ कररहतहानिनलाभकछुजबजागिचहुघांचाहि ॥
जगसोइप्रपंचजुविभवजीवतअकलमायाआहि ॥ तस्मातधीरजतत्ववेत्ताचहतबुद्धिवि
साल ॥ इष्टजौबअनिष्टउपजैकाजहुंअनकाल ॥ वसहर्षकैनविषादकैंवसविहितनित्यवि
चार ॥ मायेतिसबसंभावनायहसारसमझिअसार ॥ मिलितत्ववादनिषादलक्ष्मणविम
लबोधविचार ॥ कुलरीतिवसकुर्कटनिकीनिपुरप्रभातपुकार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जान्यो
होतविहानजब । जागेरामसुजान ॥ करैजुवासुरकर्मकुल । मिलिसबहिनसनमान ॥१॥
॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ मंत्रीसुमंतहिरामसुष । कहतजुनीतिप्रकार ॥ राजजतन
भरतहिप्रभुत । यथाउचितआचार ॥२॥ नगरनीतिपालनप्रजा । वृद्धनिमानविशेष ॥
राजश्रीरण्याकरहु । अहप्रतिवृद्धिअशेष ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कीनैविदासुमंत

कह । मिलिसप्रेमसनमान ॥ रोदतविलपतवैविरथ । पुरदिसिचलेप्रधान ॥ ४ ॥ ॥
॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कीरप्रसंग ॥ ॥ इहांरघुवीरसरितितटआए ॥ वोहितलावहु
कीरबुलाए ॥ आनतनांहिनावइहिओरा ॥ किरिवारामअग्रकरजोरा ॥ ॥ कीरउवाच
बोलेकीरतहांमृदुबानी ॥ जगतप्रसिद्धहमहपुनिजानी ॥ रामचरनरजपरसपुनीता ॥
उडीशिलाजवगगनअभीता ॥ द्विजसरापत्रियपाहनदेही ॥ सोरजपरसतमिलीसनेही
॥ उपलतेतोलकछुअधिकाइ ॥ गनीयनकाठमाझगरुवाई ॥ वहिगतिजौममनावउडाइ
वामापुत्रमरहिविलखाई ॥ पुनिहूंदीननावकहाँपाऊँ ॥ जनकुटंबकिहिआसजिवाऊं ॥
औरनवृत्तिमलाहुअभ्यासी ॥ विभवविपत्तिनदीतटवासी ॥ मुहिवरुधनुषतानिसरमार
हु ॥ पोतचढहुजोचरनपषारहु ॥ जौगंतव्यअवसितुमवहितट ॥ पदरजधोइअंगोछौम
मपट ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दीनवचनसुनिकेवटकेरे ॥ हसिहासिरामप्रीयातनहेरे ॥
मनमनरामलषनमुसकावहिं ॥ निकटरहेतेउभेदनपावहिं ॥ दीनजबैरघुपतिसोदेषा ॥
दीनबंधुनिजबिरदविशेषा ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तबबोलेहसिमुरमधमारन ॥ क
रहुमलाहउचितजोकारन ॥ जिहिंननावतोरीउडिजाई ॥ इहांउचितसोकरीयेभाई ॥ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ परमपवित्रजुसरस्वतिपानी ॥ इहांकठौतीभरिभरिआनी ॥ मलि
मलिपंकजचरणमुरारे ॥ पटनिअंगोछिअंगोछिपषारे ॥ जवनिस्सेषभइरजजानी ॥ इ
हांनिकटनौकातबआनि ॥ विबुधनिकिवटाभाग्यबषानै ॥ सुमनवरषिकरुनारससानैं ॥
रुद्रजुचरनकमलउरधारे ॥ तेइपदपामरकीरपषारे ॥ जेइंद्रादिनिरंतरजोए ॥ धरिकरकि
वटामलिमलिधोए ॥ अवनिचक्रजिहिंत्रयत्रयक्रमआन्यौं ॥ मेल्यौबलिमस्तकमनमान्यौ
नागराजशिरवहतनिरंतर ॥ रामचरनतेइकेइमुकतीकर ॥ निकसतजिनतेगंगतरंगा ॥
पावनजलत्रयलोकप्रसंगा ॥ इतिसंवादकीररघुपतिकौ ॥ कलुषविनाशदानिनिजगतिकौ
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्योरहसिनरहरसुकवि । करुणाहास्यप्रकास ॥ साधसुनतमनउल्ल
सत । विमलभक्तिविश्वास ॥ ५ ॥ इतिश्रीरामकीरसंवाद ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ आरोहरामनौकाउदार ॥ प्रभुभएतहांसुरसरितपार ॥ निजसषाइ
हांगुहविदादीन ॥ आज्ञाअधीनउत्तरनकीन ॥ नृपफिरयौतहांगुहसजलनैन ॥ उरनहीं
समातविछुरनअचैन ॥ सीतासुमध्यचलिअग्रसेष ॥ वरपृष्टिरामतापससुवेष ॥ मगच
लतरामइकमृगजुमारि ॥ तिहिआनिसरोवरतटउतारि ॥ वटतहांमहाशाषाविथार ॥ इ
हाँवसेतबैरघुवरउदार ॥ मृगआमिषभौभौजनसुभाइ ॥ वसुमतीतल्पपल्लवबनाइ ॥ नि
जसयनकीनकरुनानिधान ॥ धरिचापलषनरहेसावधान ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ अथभारद्वाजाश्रमआगमन ॥ ॥ प्रभुभयेआनिप्रयागप्रापतजहांतीर
थराज ॥ करिलीन्हनित्यविधाननैगमवनविलोकिविराज ॥ पुनिजोप्रयागप्रभावपूरनवि
मलवेदबताइ ॥ सोइप्रीयाबंधुसुनाइपावनरीझिकैरघुराइ ॥ इहांभरद्वाजऋषेशआश्रम
आगमनअषिलेश ॥ परिक्रमणकरिरघुनाथपुनिपुनिअरुप्रणामअशेश ॥ रसप्रेममग्न
ऋषीशरामहिलीनतबउरलाइ ॥ इहांअमितब्रंह्मानंदउपजौभयौसात्विकभाइ ॥ कृतअ

र्घ्यपूजाउचितअर्चनवारबारबिलोकि ॥ आनंदसागरहृदयउमग्यौऋषिसुजातनरोकी ॥ बैठारिआसनकुशलबूझतसहजसानुजसीय ॥ अमृतमयफलमूलअद्भुतद्विजसुरामहि दीय ॥ कहिभरद्वाजअनेकभांतिनिविनयभक्तिबढाइ ॥ कृतजन्मजन्मअशेषतपकेप्रग टफलहमपाइ ॥ चितहर्षजुतकृतधर्मचरचावासिनिसारघुवीर ॥ उठिचलेप्रातऋषेशआ एसगसमाजसधीर ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ब्रह्मादिकनिविशेषसुगमदुर्गमउपदेशत ॥ मोक्षधर्मकौंमांगविहितजोवेदविशेशत ॥ जीवचराचरजिनहिपूछिपरपंथहिपावत ॥ जथा कर्मफलजोगसाधानिजलोकसिधावत ॥ आश्चर्यमयोभवभूतयह, कहिनजातकारनअक थ ॥ तेइरामपराकृतपपुरुषज्यों, पूछतवनगिरिभूमिपथ ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरद्वाज सौंरामतहां । पूछ्योपंथपयान ॥ इहांऋपिउपद्रष्टाभए । प्रभुसोइकस्योप्रमान ॥ १ ॥ भर द्वाजकेवंदिपद । प्रभुतबआज्ञापाइ ॥ चित्रकूटसनमुषसुचित । कीनगमनरघुराइ ॥ २ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ रविसुताउतरेराम ॥ किधौदेहधरिरतिकाम ॥ जिहिंनिरषिमगननरना रि ॥ भएविवसकाजविसारि ॥ ॥ ग्रामिणउवाच ॥ ॥ अविलोकिलक्षनअंग ॥ पुनि कहतनीतिप्रसंग ॥ इनछत्रजोगअभंग ॥ अरुचिन्हनृपताअंग ॥ बनिदेहलछनवतीस ॥ सबसिद्धिछत्रजुसीस ॥ जटजूटतिहिंसिरजोइ ॥ हमपरमविस्मयहोइ ॥ वपुजोग्यवसनवि लास ॥ तरुत्वचाआवृततास ॥ सुषसेजविविधविसाल ॥ लषिठौरतिहिंमृगछाल ॥ वाह नमतंगविनीत ॥ पदचारयहविपरीत ॥ पदसिंघपीठप्रमान ॥ एभ्रमतरहितउपान ॥ दै वज्ञलछनदेषि ॥ शुभराज्यपात्रविशेषि ॥ सामुद्रकजोतिषसंग ॥ एसर्वमिथ्याअंग ॥ कैद इवजोगअकाज ॥ यहभयोनिश्चयआज ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ निहचैसुमातापितानिष्ठुर नीतिवर्जिततेह ॥ एपुत्रजिनवनवासपठएसहजप्रानसंदेह ॥ मृदुअंगवयसकिशोरमूरति चरनचरवनचीर ॥ अतिघोरहृदयकठोरउनकेवज्रहूतैवीर ॥ हमहूंजुदेषतफटतहीयविपरी तिदुःसहवात ॥ बिनुदोषऐसेबालविछुरनमातउरहिसमात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दो हा ॥ ॥ मारगजिहिंजिहिंग्राममह । निश्चयतेनरनारि ॥ सबैकृतारथहोतसुष । नरहरप्र भुहिनिहारि ॥ ३ ॥ पावनकरतअपावननि । जेजडजंगमजीव ॥ पाउधारैरघुनाथप्रभु । सु षदविचरगिरिसीव ॥ ४ ॥ ॥ अथवाल्मीकआश्रमआगमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चित्रकोटमहिमाअमित । वालमीकविश्राम ॥ मुनिसमाजनिगमनानिपुन । वसैनिरंतनिकाम ॥ १ ॥ विविधासिंघमृगव्याहरत । वसतविचित्रविहंग ॥ मत्तपुंजगुंज तमधुप । तहाँनिर्झरनितरंग ॥ २ ॥ तरुनप्रफुल्लितफलिततरु । पत्रहरितनितपाइ ॥ सीतल मंदसुगंधसुष । सेवतवातसुभाइ ॥ ३ ॥ वालमीकिमुनिवृंदवर । रहततहांऋषिराज ॥ वर्जितवयरविरोधवन । सेवतसँजुतसमाज ॥ ४ ॥ तहांआएसानुजतबै । वालमीकिवि श्राम ॥ रामचंद्रऋषिराजसौं । कीनेंप्रेमप्रणाम ॥ ५ ॥ आलिंगेकरुणाउदधि । ऋषिवर सानुजराम ॥ अरुचीन्हेअषिलेसए । व्यापकविश्वसवाम ॥ ६ ॥ पूजाअर्चाप्रेमपर । कु शलप्रश्नमुनिकीन ॥ बैठारेआसनविहित । दिव्यअसनफलदीन ॥ ७ ॥ ॥ श्रीराम उवाच ॥ ॥ कुँवरतहांकरजोरिकहि । वालमीकिसौंवात ॥ पितआज्ञावनवासपन । जथा

न्यायहमजात ॥ ८ ॥ कालछेपकछुदिनकराहि । ऋषिवरसौंकहिराम ॥ उपदेसहुतातैं इहां । वासस्थलविश्राम ॥ ९ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ कवित्त ॥ ॥ जलथलअनिलअ कासदुर्गगिरिदेसविदेसनि ॥ द्वीपगहनदिगविदिगसिंधुसरसरितविशेषनि ॥ स्वर्गमृत्युपा तालनियतत्रयलोकनिवासी ॥ ब्रह्मआदिपर्यंततूलस्वयमेवविलासी ॥ समसांतसर्वव्याप कसुषद, अषिलईसअसरनसरन ॥ जानौंअभावतुह्मरौजहां, कहूंततौंतहांगृहकरन ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सर्वविश्वव्यापकसगुन । निर्गुनहूंनिर्धार ॥ कहिहूंतदपिथानकोऊ । साधा रनबुधिसार ॥ १० ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ समदृष्टिसांतसुभाव ॥ अरुहृदयद्वेषअभा व ॥ सुषदुष्षरहितसमान ॥ तवमंत्रपाठप्रमान ॥ निसप्रेहनितनैरास ॥ इकसरणतवअ भ्यास ॥ षलताअहंपदसोइ ॥ करिरागद्वेषनकोइ ॥ अयउपलकुलगनिएक ॥ विधिअवि धिभेदविवेक ॥ प्रियजदपिअप्रियपाइ ॥ नहींहर्षशोकसुभाइ ॥ सुषदुषजानीयसंग ॥ य हकर्मफलअनभंग ॥ अनकामनितअभ्यास ॥ प्रभुभक्तिप्रेमप्रकास ॥ परदुष्षदुष्षितप्रा न ॥ सुषआनआपसमान ॥ इत्यादिसाधअकाम ॥ रहिहैजुतिहिंउरराम ॥ करियैनिवा सकृपाल ॥ प्रभुइनहिंउरप्रतिपाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाथजुमहिमानामकी । केतिकक हूंकृपाल ॥ रामभयौहूंब्रह्मऋषि । जिहिंछूटेअघजाल ॥ ११ ॥ अबताकोसुनीयैअषिल । कारनसीताकंत ॥ सोतवनामप्रभावतैं । सबैकहतमोहिसंत ॥ १२ ॥ ॥ अथवाल्मीक पूर्वप्रसंग ॥ ॥ वाल्मीकउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दुर्गमगिरिउद्यानभिल्लतहाँवस तभयंकर ॥ परहिंसकवित्तापहारपापीअदयापर ॥ पुरपत्तनजारतप्रसिद्धलाषनिपशुलाव त ॥ लूटतदेससलाभधारिदशहूंदिसिधावत ॥ दुरवृत्तनित्यवनदाहदवदुषद, नृपनिकाहुन डरत ॥ गिरिकंदरसेवतवनगहन, कर्मघोरनिर्दयकरत ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रभुपुरा किरातनिसंगहोइ ॥ ममजन्ममात्रकहिविप्रकोइ ॥ उपजेकिरातबहुसषाआन ॥ समकर्म वैसबुधिबलसमान ॥ मिलिकरहिसबैहमचोरकर्म ॥ धनुबानअभ्यासहिभिल्लधर्म ॥ वधकरहि जीववर्जितविचार ॥ मगरोकिनिसादिनमनुजमार ॥ पितमातवृद्धत्रीयपुत्रपास ॥ सबकर हिएकममकृत्तआस ॥ जनबधकरौंमैंपंथजाइ ॥ इहिंसमयसप्तऋषितहांआइ ॥ मुनिभास ततपबलअप्रमान ॥ सोज्वलिततेजदिनकरसमान ॥ मैंतबैआनिरोकेमहंत ॥ तनवसन छीनिलीनैतुरंत ॥ मोहिपूछितहाँऋषिराजमर्म ॥ किहिंहेतद्विजाधमयहअकर्म ॥ ॥ वा ल्मीकउवाच ॥ ॥ मैंकह्यौफेरितबरोकिरीस ॥ ममकुटुंबमोहिआश्रितमुनीस ॥ सोम माधीनममकुलसमाज ॥ यहभयौअतिक्रमकालआज ॥ हूंरहतउनहिपोषनअधीन ॥ का ननगिरिनित्यनिवासकीन ॥ ॥ सप्तऋषिवाक्यं ॥ ॥ सबमूलमंत्रतबकहिमुनेश ॥ विधि कुटंबजाइपूछहुविशेस ॥ बटएविभागसबलेतवीर ॥ सोकौरैहैकोउममकर्मसीर ॥ तुमजौ लौंऐहैविवरिवात ॥ तौंलौंहमठाढेकहूनजात ॥ ॥ वाल्मीकउवाच ॥ ॥ यह सुनतमात्रमैंग्रेहआइ ॥ सबकुटंबभयौपूछतसुभाइ ॥ हनिप्रातजुलावतनिठुहोइ ॥ समभाग षाततुमद्रव्यसोइ ॥ प्रातिदिवसचढतममसीसपाप ॥ इहिंलैहौंकछूविभागआप ॥ मिलि सबहिनउत्तरदयौमोहि ॥ तेपापकर्मसबलगिहतोहि ॥ ॥ कुटुंबउवाच ॥ ॥ दुषसु

षजथातूंआनिदेत ॥ हमफलहिविभागीउतरहेत ॥ ॥ वालमीकउवाच ॥ ॥
येहसुनतत्रासउपज्योंअमान ॥ ममभएप्रानकंपायमान ॥ वैराग्यमोहिउपज्योविशेष ॥
धिक्कारकहतआपहिअशेष ॥ निर्वेदभावउपज्योविनीत ॥ पुनिआयइहांहूंऋषिपुनीत ॥
धनुबानतोरिहूंभोअधीन ॥ कृतजोगवहुतमैंअकृतकीन ॥ नैरासनिरयअर्णवअसेष ॥
वसकर्मदेववूडतविशेष ॥ वदिसुमैरषरषेतिवानि ॥ मुनिदयोअभयमोहिदीनमानि ॥
दंडवतचरनमोहिपरयोदेषि ॥ वाचोपदेशदीनीविशेषि ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ आ
लोकिपरस्परऋषिनिआप ॥ परतक्षद्विजाधममहापाप ॥ अघकारतदपियहसरनआइ
सतसंगहेतकरिबोसहाइ ॥ उपदेसमोक्षमारगअभीत ॥ विप्रतोहिसविधिकरिहैविनीत
सोमंत्रजतनराषहुद्विजात ॥ विधिजुक्तजापकरींयैविष्यात ॥ ॥ वाल्मीकउवाच ॥
यौंकहिरुरामतवनामअंक ॥ सप्रसन्नदयेमोहिमुनिनिसंक ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥
जुतभावरामरामेतिजाप ॥ इहिंठौरनिरतरकरहुआप ॥ आवहिहमजोलौंअवधिअंत
॥ समभाववैठिइहांजपहुसंत ॥ करियहप्रसादऋषिगमनकीन ॥ निजबैठिइहांमैंनिय
मलीन ॥ सतभावजथाउपदेससंत ॥ एकाग्रचित्तमैजपिअनंत ॥ इहिंदसाकालबहु
भौअतीत ॥ सबसहेसीसतपसघनसीत ॥ अनसंगअसंज्ञाहेतआइ ॥ वल्मीकजंतु
मोपरवनाइ ॥ जुगसहसवितीतेजबहिजानि ॥ इहांदयोसप्तऋषिदरसआनि ॥ ॥
॥ सप्तऋषिरुवाच ॥ ॥ मुनिमोहिकह्योनिकसहुमहंत ॥ सबसाधनसफलीभएसंत
॥ ॥ वाल्मीकउवाच ॥ ॥ नीहारगर्भदिनकरनिकास ॥ सप्तऋषिमोहिदेष्योसहा
स ॥ वल्मीकजातमोकहँविचारि ॥ निर्धारजन्मदूजौनिहारि ॥ इहांफलेसबैसाधनअ
शेष ॥ वाल्मीकनाममैंकहिविशेष ॥ करिमोहिअनुग्रहनिजनिकेत ॥ सप्तऋषिगए
दिविधर्मसेत ॥ प्रभुअहंरामनामहिप्रभाइ ॥ संसारभयोपूजितसुभाइ ॥ पुनिआज
रामदरसनपुनीत ॥ शुभजोगभयोसानुजससीत ॥ राजीवनयनरघुवंसराम ॥ वनि
आदिसक्तिशुभअंगवाम ॥ ममसंगचलहुलक्ष्मनसमेत ॥ तबठौरदिषाऊंबासहेत ॥
॥ दोहा ॥ ॥ आएतबआनंदजुत । मुनिसहृंदरघुवीर ॥ चित्रकूटसुरसरितविच ।
लहांसुषदनदतीर ॥ १२ ॥ रचीपर्णसालारुचिर । उदयअस्तदिसिआनि ॥ तहांव
सेरघुनाथतब । महाइंद्रसुषमानि ॥ १३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वालमीकमुनिवृंदराम
दरसनजुनिरंतर ॥ सानुजसीतासहितवसतसानंदितरघुवर ॥ सोभासिद्धिसमृद्धिआ
नितबतेछबिछाई ॥ चित्रकूटपर्वतसचैनआएदोउभाई ॥ डोलतविहंगमृगसंगदिन, म
नहिमोदबाढतअमित ॥ वनगहनरहतसुखवासवर, नरहरप्रभूविलासानित ॥ ३ ॥ ॥
॥ अथवायसएकाक्षकृतप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभदिव
सएकमैथिलीसंग ॥ गिरिचित्ररामाविहरतअभंग ॥ उत्तरविभागगिरिचित्रअंग ॥ इक
दरीमनहुसालाअनंग ॥ वनगहनविविधतरुकुसुमवास ॥ अलिमत्तभ्रमितआमोद
आस ॥ तरुलताविपुलसंकुलतमाल ॥ शुभकुजमनहुसंकेतशाल ॥ अतिश्रमिततहां
सीयरामआइ ॥ वनवनविहारक्रीडाविहाइ ॥ अविलोकिफटिकमयशिलाएक ॥ अतिरं

गचित्रसौरभअनेक ॥ व्यामोहचित्ततरुपुहपपात ॥ वहिसीतमंदसौगंधवात ॥ कूजित
विहंगवनवनअनेक ॥ विस्तारसुषदवानीविवेक ॥ गिरिचारजंतुआकृतिअमान ॥ वि
धिविधिविहारक्रीडाविधान ॥ सन्नादसुषदानेझरननीर ॥ शुभसलिलचारअनअनशरी
र ॥ पल्लवतृणअंकुरमृदुलपाइ ॥ सुषतल्परचिततिहिंशिलसुहाइ ॥ सीयरामतहांबैठेस
धीर ॥ विलसनरतिमानहुमदनचीर ॥ नवसलिलमर्दिमनासिलनवीन ॥ करतिलकरा
मनिजभालकीन ॥ दुवजोरिप्रियाप्रयभालदेस॥समबिंबतिलकप्रगव्यौसुदेश ॥ रचनाअ
भूतकृततिलकराम ॥ वनदेवविहंसित्रिणतोरिताम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वासुरएकविलास
वन । सीतारामसुजान ॥ थितबैठेएकांतथल ॥ विवसमनोजविधान ॥ १ ॥ नामजयंत
सुरेससुत । वायसरूपविहार ॥ तिहिंदेषीसीततहां । बाढ्यौचित्तविकार ॥ २ ॥ ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ सोदुष्टजीवअपनौसुभाइ ॥ अविलोकतसीताहिनिकटआइ ॥ विह
गाधमआगमवारवार ॥ अविलोकितहांरघुवरउदार ॥ आकर्षिइसीकअस्त्रआप ॥
तिहिंहेतराममोष्यौसताप ॥ पापिष्टपक्षनिकस्यौपलाइ ॥ ज्वालाकरालसरपृष्टिजाइ ॥
उडिचल्यौजदपिवायसअकास ॥ तृणअस्त्रनछांडतसंगतास ॥ त्रैलोकफिर्यौकरित्राहि
त्राहि ॥ त्रातानभयौकोउतहांताहि ॥ सप्तऋषिदयौउपदेसतास ॥ पुनिरामसरनजइयै
प्रकास ॥ वायससोभ्रमिभ्रमिभौविहाल ॥ करचरनग्रहेरघुवरकृपाल ॥ ॥ श्रीराम
उवाच ॥ ॥ नहींहोतवृथामानहुनिदान ॥ बचिहौनअग्रअनमोघबान ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ आकर्षिसीकमायाअनेक ॥ अर्धांधकर्यौचषफेरिएक ॥ दृगहीनभयौजब
काकदीन ॥ करुनानिधानसौंप्रणतिकीन ॥ ॥ वायसउवाच ॥ ॥ एकाक्षकर्योहूंत
उअसाध ॥ परिभवजनकरिहैंनिरपराध ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
ताहिकह्यौहसिरामतब । जापक्षाधमपाप ॥ वढिहैदशगुनदृष्टिबल । चितरहिसंकितचा
प ॥ ॥ अथमंत्रीसुमंतअयोध्यगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रथ
लैफिर्यौसुमंततब । दाहहृदयअतिदीन ॥ रामहिछांडिजुजातहूं । हाविधनाकाकीन
॥ १४ ॥ नृपतिनिषादविषादवस । मंत्रिहिदेषिमलीन ॥ कहतदुषदविछुरनकथा । आर
तदीनअदीन ॥ १५ ॥ मंत्रीचल्यौनिषादमिलि । बनछांडेरघुवीर ॥ सुनिसुनिरुद
नसुमंत्रकौं । अगजगहोतअधीर ॥ १६ ॥ हांकेहूनहिनचलतयह । अवधिसमुष
अकुलात ॥ फिरिफिरिभागतरथहिलै । हेरिहेरिहिहनात ॥ १७ ॥ मंत्रीसुमंतससो
कमन । रामहिफिरेपनारि ॥ आएषालीरथअवधि । वरषतलोचनवारि ॥ १८ ॥ समाचार
रघुनाथके । बूझतलोकविहाल ॥ मंत्रीनआवतबोलमुष । करकरिहनतकपाल ॥ १९ ॥ पटल
पेटिमुषमनमलिन । कीनौपुरहिप्रवेश ॥ राजद्वाररथतेउतरि । आयौजहांअवधेश ॥ २० ॥
॥ दशरथउवाच ॥ ॥ नृपतिविलोकिसुमंततहां । अधमुषदुषहिमलान ॥ कहांछांडेसी
ताकुंवर । मेरेजीवनप्रान ॥ २१ ॥ कहाकह्यौमोपतितकहैं । रामलषनसीयबैन ॥ सुपैसु
नावहुत्रीयजितहि । लैआयेजीयतेन ॥ २२ ॥ ॥ गाथा ॥ ॥ दुर्जनविभवविनाशं ॥
सज्जनसुषसमयआगमं ॥ संततकहियैपथिकप्रमानं ॥ पुनिपुनिसोसोपिसंदेस ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ बहुतजिवायौमोहिविधि। यहकृतदेषतकाज॥समयतिलकसन्यासले॥रामजाहिंतजिराज ॥ २३ ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ वारवारवंदनकरे । रघुवरतुमहिनरेश ॥ ममहितकरहुकलेशमत । दीनोयहसंदेस ॥ २४ ॥ कुलआचारजुनीतिक्रम । करिपितवचनप्रमान ॥ दरशनकरिपदवंदिहूं । अवधिवितीतेआन ॥ २५ ॥ सीतालक्ष्मनतुमहिसौं । वंदनकरेविशेष ॥ पितदरशनपावनपरम । व्हैहैविधनालेष ॥ २६ ॥ रामलषनजटजूटसिर । बांधेवटपयआनि ॥ तनपहिरेतरुपत्रत्वच । वेषमहामुनिवानि ॥२७॥ शृंगवेरतेंगवनकिय । अरुरथदीनोफेरि ॥ मातपिताहिवंदनविविध । हितसौंकियइतहेरी ॥ २८ ॥ ॥ सोरठा ॥ दशारामासियदेपि, जडपेचरजलथलजथा ॥ विसमयपरेविशेषि । कूजतविकलकरालरव ॥ ॥ नृपतिरुवाच ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैम्रृगयानिसिश्रवनमुनि । वानहत्यौअज्ञात ॥ ताकेअंधजुमातपित । तिहिंदुषजरेविष्यात ॥ २९ ॥ कृतवनचिताप्रवेसकीय । उनदीनौमोहिश्राप ॥ पुत्रशोकज्यौंमरतहम । यौंनृपमरीयोंआप ॥ ३० ॥ सोयहआयौवहसमय । कर्मविपाकप्रकाश ॥ जोविधिअंकललाटपट । मिथ्याहोहिननास ॥ ॥ ३१ ॥ कविरुवाच ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहिसमयशोकसागरमझारी ॥ नृपभयौमग्ननहिंतनसँभारि ॥ ॥ नृपतिरुवाच ॥ ॥ रोवतपुकारिकरिरामराम ॥ हापुत्रकहांतुमधर्मधाम ॥ मोहिमरतआनिकिनदरसदेहु ॥ संसारआजछुव्योसनेहु ॥ हालषनपुत्रममवचनलीन ॥ कतछांडिमोहियौंगवनकीन ॥ हारामरामतवविरहहंत ॥ कैकेयीसंभवउपाजिअंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कारिरामरामदशरथपुकार ॥ प्राणतजिभएदुषसिंधुपार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अश्वमेधयाजकजुगति । यागतिधर्मनिधान ॥ ब्रह्मरंध्रफटनृपतिसो । पाईगतिपरमान ॥ ३२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुरसुन्यौनृपतिसुरपुरप्रयान ॥ हाहंतसब्दभोभूवभयान ॥ हाहारवतवरनिवासहोइ ॥ कैकयीधिककहिसबैकोइ ॥ पतिमरनरामवनवासपाइ ॥ वैरागभरतजाकेप्रभाइ ॥ वससोकचराचरभएविहाल ॥ कोवरनिसकैवहदुसहकाल ॥ गुरुबंधुसचिवमिलिसबसज्ञान ॥ वससमयमंत्रकीनैबिधान ॥ द्रोणिकातेलमहंनृपतिदेह ॥ सुस्थानराषिटूट्योसनेह ॥ दूतनिबुलाइगुरुपत्रदीन ॥ पुरजाहुभरतमातुलप्रवीन ॥ दुतजाहुजुधाजितनगरदूत ॥ जोभईसुनाहिकहिवीअभूत ॥ भरतनिसिस्वप्नदेषतभयान ॥ अनचिंतअसंगतरूपआन ॥ ॥ अथभरतस्वप्नदर्शनं ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ विस्तारसषासौंस्वप्नवात ॥ परिहृदयत्राससोकहतप्रात ॥ अवलोकिसुष्कसागरअनीर ॥ शशिभूमिपतनदेष्यौसधीर ॥ घनतिमिरसघनमिलिनगररुद्ध ॥ पतिमुक्तकेशथितजलप्रबुद्ध ॥ पतिअद्रिसिषरतेपतनपेषि ॥ विचाविसदकुंडगोमयविशेषि ॥ पुनिकरतकरांजुलितैलपान ॥ पेहसतवारवारहिप्रमान ॥ आहारतिलोदनअनायास ॥ तनलिप्ततैलअवगाहतास ॥ पाषानपीठबैठकप्रमान ॥ निजकृष्णवसनकृतपारिधान ॥ पिंगलाकृष्णप्रमदासप्रीति ॥ राजासौंप्रहसतिजथारीति ॥ धावंतित्रीयातेइसजवधाप ॥ अनुलेपनमालाअरुनआप ॥ रासभरथजोतेरौद्ररूप ॥ जमदिसासमुषप्रायाणजूप ॥ पुनिअवलोषरारोहकोउनरसपाप ॥ अतिआतुरइच्छागमनआप ॥ ततकालचिताधूमाग्रतास ॥ अवलो

किजातसोअनायास॥इहिंभातिस्वप्नअद्भुतअलोक॥सोदेषिनिसाचितअतिससोक॥अ
हमपिनृपालबारामअंत॥ देषेजुस्वप्नदारुणदुरंत॥ तिहिकालअनंतरमहात्रास॥ उपजे
अनिष्टकछुअनायास॥ पत्रीवसिष्टआग्याजुपाइ॥ अतिवेगभरतपहदूतआइ॥ ॥
दूतउवाच॥ ॥बोलेवसिष्टगुरुचलहुवीर॥ उठिचलेभरतसानुजसधीर॥ ॥कविरु
वाच॥ ॥ अतिवेगअजोध्यानगरआइ॥ सबहोततहांअनिमितसुभाइ॥ सोभाहत
दीसतश्रीसमाज॥ आकारनगरजैसौअराज॥ नहिबोलतवंदिनविरदबानि॥ जि
ततितहिसोचजनमुसेजानि॥ राजाग्रहनाहिनराजरीत॥ गजवाजिसुभटमंगलनगी
त॥ नृपमंदिरआएसमयनाहि॥ मनजानिपितारनिवासमांहि॥ इहिसमयमातग्रह
भरतआइ॥सामुंहैआनिकेकइसुभाइ॥अतिहर्षपुत्रबैठारिअंक॥नियराइकुशलपूछति
निशंक॥ ॥भरतउवाच॥ ॥रानीकिहिमंदिरआजराइ॥सुधिलेहुपठईदासीसुभाइ॥
॥कैकेयीवाक्यं॥ ॥मुषउत्तरदीनोफेरिमाइ॥सुरलोकपिताजसजुतासिधाइ॥ ॥भर
तउवाच॥ ॥उपज्यौअनर्थकहिकौनएह॥ ॥कैकेयीवाक्यं॥ ॥दुषपुत्रपितातवत
ज्योदेह॥ ॥भरतउवाच॥ ॥सोपुत्रकौनकारनसुनाइ॥ ॥कैकेयीवाक्यं॥ ॥दंडकनि
वासरामहिदिवाइ॥ ॥भरतउवाच॥ ॥किहिधौअकाजयहदुष्टकीन॥ ॥कैकेयीवा
क्य॥ ॥हैनृपतिमोहिवरदानदीन॥भरतउवाच॥ वरलएसुतएकहिंविधान॥ कैकेयी
वाक्यं॥नृपताविशेषतुमकहँनिदान॥रघुनाथजाहिवनछांडिराज॥सोतिलकतुमहिंसिर
छत्रसाज॥ ॥भरतउवाच॥ ॥पापिनीकहांतैवाटपारि॥मार्योनरेसअबमोहिमारि॥म
मकाजराजमाग्योजुमात॥तिहिंलग्योयहैफलमरेतात॥वनवासरामलक्ष्मनवियोग॥अव
धेशअंतभोअप्रयोग॥कारनजिहिंकीनोकुलअकाज॥राजश्रीफोरितबसीसराज॥रामहि
निकारिमुहिदेतराज॥यहदईबुधितुहिकवनआज॥ पापनीउदरउपज्यौसपाप॥ अपलो
कपात्रहूंभयोआप॥ ॥ दोहा॥ ॥मूलकाटितरुपत्रतैं। सिंचेचित्तकुचाल॥ मी
नजिवावनहेतज्यौं।फोरतसरवरपाल॥३३॥पुरीअयोध्यावंसरवि।दशरथपितादयाल॥
रामलषनसेभ्रातमम। जननीतूंअघजाल॥३४॥ तैवरजाचेतिहिंसमय। अधमाकु
लउच्छेद॥ रसनागिरिनकंठतैं। छातीभएनछेद॥३५॥ नृपतिनसमझेसुद्धमन। अ
बलाकपटअसंत॥ जागतहीमूसतिजगत। दारुणकर्मदुरंत॥३६॥ ॥ कविरुवा
च॥ ॥इत्यादिकदुर्वादए। भरतमातकहँभाषि॥ कौसल्याहिप्रणामकीय। सुद्धहदय
सुरसाषि॥३७॥ वसनमलीनसषीनवपु। कौसल्यातिहिकाल॥ महाकलपतरुतेमन
हुं। विछुरीलताविसाल॥३८॥ ॥छंदद्वैअक्षरी॥ ॥दंडप्रणामभरततहांकीनै॥
लएउठाइलाइउरलीनै॥ भरतसुद्धक्रममनवचभोरे॥ गलतगलांनिअरुकज्यौंओरे॥
मनविश्वासदेतिमहतारी॥ सकतनसनमुषदृष्टिपसारी॥ ॥ भरतउवाच॥ ॥ अं
बामोसमपतितनकोई॥ हितजिहिइतेअनर्थजुहोइ॥ पितपरलोकरामवनवासा॥ सो
सुनिअजहुंजियनमनआसा॥ यहमतिविधिहिदुष्टकिहिदीनी॥ केकैसुतानवंध्याकीनी॥
जननीभईजानियहजाकें॥ तौसिरपरहुपापएताकै॥ काजउदरकन्याविक्रेता॥ चाहत

मुक्तिशुद्धजुनिचेता ॥ कृतजोवधनअरुंधतिगुरुके ॥ सुतपितघातजुनिंदकसुरके ॥ गौ द्विजहुतभुकचरनप्रहारा ॥ हठितियबालकमारनहारा ॥ स्वामिद्रोहविश्वासजुघाती ॥ कृतहिविनाशकवनदवदाती ॥ गोकुलहारकवच्छविछोही ॥ देवपितामातागुरुद्रोही ॥ गुरुतल्पकजोपरगृहगामी ॥ स्तेयीकनककलंकितकामी ॥ कृषिकारनसरफोरतकोऊ ॥ जनवंचकपथघातकजोऊ ॥ द्विजजोक्रियाभ्रष्टकृपिकर्मी ॥ घोरप्रतिग्रहअपठअधर्मी ॥ छत्रिजातरणभीतअछोही ॥ होतविकलदेषतछतलोही ॥ इत्यादिकअघअसहअशेषा विश्वपरहुममसीसविशेषा ॥ जौमुहिजानभईयहमाता ॥ देवहोहुतौदुषफलदाता ॥ जननीयहसम्मतहैजाकौ ॥ तौरणहोहुपराजयताकौ ॥ कीयअनर्थजोयहकैकेई ॥ तौमम शोकदैववहिदेई ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ पतिघातिनिसुतद्वेषिनी । देशवंशदुषदाय । यहैकुबुद्धिनिकैकयी । मातभईभवमाय ॥ ३९ ॥ जानिभरतनिर्दोषजीयै । कौसल्याहितकीन ॥ लोचनपूछेअश्रुजल । नियतअंकभरिलीन ॥ ४० ॥ ॥ ॥ **मातावाक्यं** ॥ ॥ सूधेसाधुसुभावतुम । वर्जितवयरविकार ॥ पुत्रकरहुजिनिसपथपन । सबजानतसंसार ॥ ४१ ॥ वूडतशोकसमुद्रहूं । अवलंबनतुमआइ ॥ सीतालक्ष्मनरामसंग । सबमनुमिलेसुभाइ ॥ ४२ ॥ तिहिंछनदारुनदुषदुसह । उरउरप्रगट्यौआइ ॥ कठिनदशारनिवासकी । विधिहूंवरानिनजाइ ॥ ४२ ॥ ॥ **माताउवाच** ॥ कहिकौशल्याभरतकहँ । अबजनिहोहुअधीर ॥ समयविचारिजुअनुसरे । सोईपुरुषसधीर ॥ ४३ ॥ काहूंदोषनदीजियै । भाग्यफलतसतभाइ ॥ कालकर्मअतिकठिनहै । यासौंकछुनवसाय ॥ ४४ ॥ जीयनमरननरनाथकौ । धन्यकहहुतुमताहि ॥ जलतेविछुरतपंकज्यौं । उरममफट्यौनआहि ॥ ४५ ॥ सफरीप्रेमसराहीयै । हठनिवहतिइकहेत ॥ छनहींविछुरीनीरसौं । तरफितरफिजीयदेत ॥ ४६ ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ श्रवनलगेमिटिकर्मदसासुभभरतके । कौशल्यातिहिकाल ॥ कुचपयकरुणाहेतकरि । भईवितीतविभावरी । सबहिनकल्पसमान ॥ कठिनकालरनिवासकह । साल ॥ ४७ ॥ विलपतभयौविहान ॥ ४८ ॥ आइवसिष्ठअरुंधती । वचनउचारविनीत ॥ समाधान सबकौकर्‍यौ । पावनवेदप्रणीत ॥ ४९ ॥ तबबाहिरआएभरत । मनदुषवदनमलीन ॥ ज्यौंकोटिनिअपराधजुत । होतछनहिंछनहीन ॥ ५० ॥ गुरुबांधवअरुमंत्रीगन । मुनि हुमहाजनलोक ॥ उत्तमअंत्यजजनअषिल । आएसभाससोक ॥ ५१ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ अन्हवाइनृपतिजलगंगअंग ॥ सबकरेलेपसौरभजुसंग ॥ ज्यौंवेदरीतिसाज्यौंविमान ॥ पधरायनृपतितामहँप्रमान ॥ दैकंधपुत्रभ्रातापुनीत ॥ विस्तारवानिहरिहरिविनीत ॥ होहंतसब्दनभनगरहोइ ॥ खउठीसदुषजडजीवरोइ ॥ लैआएसरयूतटसषेद ॥ कृतसौंजसबैविधिउचितवेद ॥ श्रीषंडअगरमंदिरसजाइ ॥ ॥ वस्त्रादिविविधसौरभबनाइ ॥ पुनिकृतविमानतिहिगृहप्रवेश ॥ विधिजुक्तदयौहुतभुकविसेस ॥ करभरतदाह दशरथहिकीन ॥ पुनिउचितकर्मद्विजबचअधीन ॥ वपुन्हाइसरितसरयूविष्यात ॥ तहां दईतिलजुलिउदकतात ॥ लषिसमयरुदतसुभनगरलोक ॥ सबआइराजमंदिरसशोक ॥

॥ इतिराजादशरथपरलोकप्राप्ति ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मृतकृत्य जथाविधिकरिसनेम ॥ परलोकसध्यौंपितजुक्तप्रेम ॥ गोलक्षसविधिजुतभूमिग्राम ॥ सुषसेजबसनभूषनसनाम ॥ गजवाजिअन्नधनउच्चग्रेह ॥ सबभाइद्विजनिअर्चासनेह ॥ अहद्वादसभोजनजगअघाइ ॥ सूतकनिवर्तभौशुभशुभाइ ॥ कृतमज्जनउज्जलवसनअंग ॥ सबनगरजथाविधिलोकसंग ॥ दीनेवसिष्टगुरुवामदेव ॥ अनेकदानपूजाअमेव ॥ इहिसमयभरतसानुजसधीर ॥ बैठेसुसभारघुवंसवीर ॥ गुरुमंत्रिमहाजनमिलिअगान ॥ पुनिवर्णचारिपुरजनप्रमान ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कहिवसिष्टगुरुकथाविहितमतवेदविविधवर ॥ सुनहुंभरतसंसारप्रबलविधिअंकजुसिरपर ॥ हानिलाभहितअहितमनहुंजीवनजसमंगल ॥ विषमपराजयविजयअवनिअपजसजसउज्जल ॥ भवतव्यसुषैभवभुग्गवत, जोइजोइउपजैआनिजहँ ॥ भ्रमछांडिसमयवर्तहुभरत, करिवोशोचनपुरुषकहँ ॥ १ ॥ सुरसहायसंग्रामविषमनिसिदिवसजुवीत्यौ ॥ निषिलअसुरकीयनाशजुरंदशरथरनजीत्यौ ॥ निगमविदितनिस्सेषदानपूरनद्विजदीनौ ॥ अवधिअंतभजिभोगराजनिष्कंटककीनौ ॥ नाहिंटर्यौवचनपनानिर्वह्यौ,पृथ्वीसुजसप्रमानयौ ॥ तिहिंधन्यदेहतजिरामहित, जीयनमरनहूंजानयौ ॥ २ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तिहिंकाजशोककरियैनकोइ ॥ हौंनीजुदैवइछासुहोइ ॥ सुरअसुरसिद्धसाधकदिगेश ॥ सबकहतसुजसदशरथनरेश ॥ ॥ गुरोपदेश ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ गुरुवसिष्टअरुवामदेवगुर ॥ अतिविलोकिभरतहिंदुषआतुर ॥ जथासमयउपदेशजनावत ॥ सानुजभरतहिनीतिसुनावत ॥ किहिलगिकरीयैशोकअकारन ॥ धर्योसुविनसिरहिनइकधारन ॥ ज्यौंनरतज्जतवसनभौजीरन ॥ ततछनलैधारतपटनौतन ॥ त्यौंहीजीवछांडिजीरनतन ॥ अषिलसरीरभजतहैअनअन ॥ अव्ययशुद्धजीवतितअनमर ॥ जन्मनाशवर्जितहैनिर्जर ॥ पितअथवासुतपचतपावत ॥ वृथामूढउरशोकबढावत ॥ विधिकृतसृष्टिअनेकविलाहीं ॥ नियतकोटिब्रह्मांडनसाँहीं ॥ सागरहूंसरसरितसुषाँहि ॥ निषिलदश्यसोपैथिरनाँहि ॥ ज्यौंजलबिंदुपत्रपरजानहु ॥ प्रतिमात्यौक्षनभंगप्रमानहु ॥ आयुचपलजलवेलाआही ॥ तातैंप्रत्ययकैंसोताही ॥ कोऊचलेचलाऊकोई ॥ सबहिनकौमारगवहसोइ ॥ जलसमीरवसहोततरंगज्यौं ॥ उपजतनाशहोतसंसृतियौं ॥ धरहुधीरतजिसोकधुरंधर ॥ अभयदेहुसबहीजनआतुर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वचनलागिरघुनाथवन । सानुजचलेससीत ॥ नेमवचनदशरथनृपति । छाड्यौंप्रानप्रतीत ॥ १ ॥ यहतुमसमुझहुभरतअब । सबहीभांतिसुजान ॥ जोकछुपितआज्ञाप्रगट । करीवौपुत्रप्रमान ॥ २ ॥ दंडकवनरामहिदयौ । तुमहिअजोध्याराज ॥ सोउनहूंतुमहूंसमाझि । करिबौउचितजुकाज ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ ॥ भनिवसिष्टसुनिभरतलोकहितराजसुलिज्जइ ॥ पितावचनपरवानकालगतिजानिसुकिज्जइ ॥ नृपसुरलोकनिवासकठिनपनपूरनकरयौ ॥ रामाविषमवनवाससविधिमुनिव्रतअनुसरयौ ॥ तुमसाधुनीतिजानतसकल, विकलोकअवलंबविन ॥ अबकरहुराजआज्ञाउचित, दैहितिलकशुभशोधिदिन ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अनउचितउचितअज्ञाअधीन ॥ पितुवच

नमानिसुतसोइप्रवीन ॥ पितवचनकाजद्विजपरशुधार ॥ सहसोदरजननीकृतसंघार ॥
जाच्यौजुदुर्लभयौवनयजाति ॥ सुतदयौविश्वबाढीविष्याति ॥ उपज्यौनउनहूंकोउअजस
अंक ॥ नृपवाचभरतपालहुनिशंक ॥ पितुदेइराजसोइलहैपूत ॥ संमतयहवेदपुरानसूत ॥
॥ कौशल्याउवाच ॥ ॥ इहांकौशल्यादिकमातआइ ॥ सोकहतिसमयकारनसुनाइ ॥
अवधेशस्वर्गवनरामआप ॥ वशशोकभरततुमविरहव्याप ॥ करिहैकौरक्षाभूमिलोक ॥
सुतकरहुकाजमनतजहुशोक ॥ अवलंबनसबकौतुमहिआज ॥ रक्षाअवकीजैबैठिराज ॥
पितआज्ञाकरहुप्रमानपूत ॥ यहनीतिधर्मजसहैअभूत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोर
ठा ॥ ॥ विषमसुनतयहवात । अश्रुसलिलसंचीअवनि ॥ दुषअंकुरउरजात । अमजुत
उलहेभरतकै ॥ १ ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ कंपहृदयजलनैन । तहांरोमउभ्भारतन ॥
विकलभरतकहिबैन ॥ काजनमोकँहँराजकछु ॥ १ ॥ हूंअघमूलअकाज । उपज्योंकैकेयी
उदर ॥ चाहतहोसुषसाज । दुष्टमोहिअबराजदे ॥ ३ ॥ यहमोतेनहींहोइ । राजलैउरघु
रामको ॥ मैसिरमानीसोइ । कोऊजसअपजसकहै ॥ ४ ॥ रामलषनवनवास । माताविध
वापितमरन ॥ हमहितिलकजुगहास । भलीबनाइबाताविधि ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥
॥ रघुवीररामराजाधिराज ॥ उनकीयहसंपतिसुषसमाज ॥ अबतौमोहिसूझिउपाइएक ॥
तजिऔरवातयहग्रह्योटेक ॥ गुरुदेवचलहुलैसबनिसंग ॥ गहिबांहरामआनहुअभंग ॥
जननीगुरुमंत्रीबंधुजाइ ॥ आनियेरामजिहिंतिहिंउपाइ ॥ यहमंत्रसबनिअवलंबआइ ॥
भयौशोकसिंधुबूडतसहाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कीनौप्रमानयहमंत्रकाज ॥ सभउठे
थापिसज्जनसमाज ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्योभरतगुरुमंत्रिकहँ । पन
यहकरहुप्रमान ॥ सबमंगलयामँहँसमझि । करियेप्रातप्रयान ॥ ४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥
मानिभरतकृतमंत्रमन । पूरनप्रेमप्रतीत ॥ सोनिसिचकईचक्कज्यौं । लोकनिविषमविती
त ॥ ५ ॥ होतविहानप्रयानहित । रामदरसचितचाउ ॥ अंबुजज्यौंदिनकरउदय । उर
आनंदअमाउ ॥ ६ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ भरतचित्रकूटगमनं ॥ ॥ सुषसाजसर्व
अरुंधतीसंगवनिवसिष्टविमान ॥ पुनिवामदेवसुवामपूजितप्रगटरथपरवान ॥ चवडो
लसिविकासुभसुषासनअग्ररानिअरोह ॥ वाहनीकरिविविधवाहनसकलदासिसमोह ॥
सबवीरजेविवस्वानबंसीसचिवसुभटसमाज ॥ कृतजथाक्रमआरोहकीनैसुभगवाहनसा
ज ॥ पुरलोकजानबनाइपूरनजथामनसुषजोग ॥ करिहर्षरघुवरदरशकारनप्रगटप्रेमप्र
योग ॥ गजवाजिसुरथपदातअगनितचलिचमूचतुरंग ॥ पुनिगगनचुंबितध्वजपताका
अतिसुरंगउतंग ॥ निसानगहरनिनादनिरभरअवनिमध्यअकाश ॥ प्रगटस्वरब्रहमांड
पूरितप्रतिदिगंतप्रहास ॥ धरजातधसिडगमगतभूधरकमठकोलाकंप ॥ सुरसिद्धछूटि
समाधिसाधनसंक्रमितदलसंप ॥ मिलिअनिलपरिरजपूरिमंडलअगमचढिआकाश ॥
तमप्रसरिचक्कविछोहछनतिहितरणिझंपिततास ॥ पदचारभरतसबंधुपावनकृतगमनशु
भकाल ॥ समसांतवेषविषसोभामध्यगतमुनिमाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ग्रीषमऋतुगज
जूथज्यौं । सरवरजातसकाम ॥ विकलतृषातुरप्रेमवस । रूपदरसहितराम ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥ ॥ सेन्यामानं ॥ ॥ मिलिसहस्रदशमुदितमत्तमातंगमहोवल ॥ सुरथ बीरबरसहससाठिषितिपालशालषल ॥ एकलाषअतिसजवअश्वजोधाआरोहित ॥ मिलिपयदलधानुषसमूहअनभंगअसंषित ॥ धसमसितधरनिगिरिशृंगढहि, कमठकोलआकंपकीय ॥ सेन्यासुभरतचतुरंगसाजि, समुषचित्रगिरिसंचरीय ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शृंगवेरसीमासघन । वनसरसरितबिसाल ॥ घुरतनिसानदिसानघन । मिलिनिहाउगिरमाल ॥ ८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नीसानघोषसुनिनृपनिषाद ॥ वनरामअकेलेचढिविषाद ॥ ॥ गुहकउवाच ॥ ॥ सेन्याअनेकबांधवसकेलि ॥ महिवाटघाटरुंधहुसमेलि ॥ रघुनाथकाजगुहकोपिराज ॥ इहिंषेतभरतहमजुद्धआज ॥ असमर्थरामजानतअज्ञान ॥ सोइचल्योजातदलवलसमान ॥ मोहिप्रथमरामकिंकरहिमारि ॥ वनघाटततोधसिहैविचारि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भूमिकाजभवभूपबंधुसुतपिताविरोधत ॥ भूमिकाजभवभूपसत्यछांडेहितसोधत ॥ भुमिकाजभवभूपकर्मनिंदितसबकरहीं ॥ भूमिकाजभवभूपआपथापीअनुसरहीं ॥ भृतभूमिराजसोपैभरत,कष्टविनाहींकरचढ्यौ ॥ हियहेरिअकंटककरनहित, विषमवैरविग्रहवढ्यौ ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पठएदूतनिषादपति । शोधजुलेहुविशेष ॥ कारनआगमभरतकौ । आनहुंजाइअशेष ॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विषमपंथपदत्रानविनु । चरनचालचितचाइ ॥ आवतमुनिवरवृंदमहँ । भरतअग्रसतभाइ ॥ १० ॥ सात्विकवेषविलोकिशुभ । धावतआएधाइ ॥ सेन्याकारनस्वामिसौं । अषिलनिवेद्यौआइ ॥ ११ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ निश्चयहयछाड्यौतबनिषाद ॥ पुनिचल्यौपाइवर्जितप्रमाद ॥ करजोरिआइगुहदरसकीन ॥ परिदंडभाइवंदनप्रवीन ॥ अतिप्रेमभरतलीनोउठाइ ॥ लषिरामसषामिलिकंठलाइ ॥ अतिउपजिमोहमुक्कहिनअंत ॥ सानुजमनुभेटेरामसंत ॥ पुनिपूछिकुसलपथचलेपाइ ॥ सीयरामलषनसुधिलहिसुभाइ ॥ ॥ गुहकउवाच ॥ ॥ प्रभुदासजानिकरीयेप्रवेश ॥ सदनममहोइपावननरेश ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ पुनिभरतकह्यौगुहसौंप्रकास ॥ विनुरामनआवहिनगरवास ॥ रघुवीरसषातुमअद्रिराज ॥ अबचलहुसंगममउचितआज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जिहिंभांतिसहानुजभरतजात ॥ कीनौप्रमानसोइपातिकिरात ॥ पथविषमजथाक्रमकीयप्रयान ॥ गिरिचित्रनिकटआएसज्ञान ॥ इहिनिसाजानकिहिंस्वप्नआइ ॥ सविशेषप्रातरामहिसुनाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अन्नेकसेनमिलिभरतआइ ॥ वैकृतसरीरदुषादिनविहाइ ॥ तनुषीनमलिनसबमातसंग ॥ तिहिंरूपआनअरुआनरंग ॥ यहसुन्योस्वप्नजवअवनिइंद्र ॥ चषअश्रुधारचलिरामचंद्र ॥ सोहिस्वप्नरामशेषहिसुनाइ ॥ अबचिंतआजकछुअशुभआइ ॥ यहकहिसभीतरघुवरअन्हाइ ॥ पुनिपूजिजथाविधिरुद्रपाइ ॥ उत्तरदिगसनमुषबैठिआप ॥ वरवीररामविस्मयवियाप ॥ नभपूरिधूरिनीसाननाद ॥ वसुमतीडोलिमुनिगनविषाद ॥ ॥ किरातउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेनसंगचतुरंगसजि । भरतसहितलघुभ्रात ॥ आएइहिवनआपनै । काहूकह्योकिरात ॥ १२ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ आहिअचानकआग

मन । इहांभरतकौआज ॥ कहौलषनकारनकवन । सौचतुरंगसमाज ॥ १३ ॥
॥ लक्ष्मनउवाच ॥ शत्रुशेषनाहिंनसुषद । निगमनीतिनिर्धार ॥ याहीतेअवनी
शउर । बाढतवैरविकार ॥ १४ ॥ देसएकमहंस्वामिद्वै ॥ होतजहांकिहुंहेत ॥ विग्रहविषम
विनाशकौ । निश्चयतहांनिकेत ॥ १५ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ षनिमारौंरनिषेतदुसहचतुरंग
विडारौं ॥ सरितश्रोणसरपूरिवीरकौतुकविस्तारौं ॥ सानुजभरतसधीरवीरजमलोकहि
वासौं ॥ कैकयीउरपुत्रशोकज्वरप्रबलप्रकासौं ॥ कुलतिलकछत्रअजसुवनकौ, रामसीस
लैधारिहौं ॥ कारुण्यरूपअवधेशकरि, सिंघपीठबैठारिहौं ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
प्रभुतुमजानतधर्मपर । आपुनजैसेऔर ॥ पावैमनुजविभूतिपुति । ठिकनरहतजीयठौर
॥ १६ ॥ पाइनृपताअवधिपुर । सबपर्यागतसाज ॥ आएअवसरजानिअब । करनअकं
टकराज ॥ १७ ॥ वनहिंअकेलेतुमवसत । संगनसेनसहाउ ॥ असहनकौलक्षनइहै ।
देनसमयपरदाउ ॥ १८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ कौनराजमदचल्यौकुचला ॥ बहुतरा
जविनसेवुधिवाला ॥ सोमपाइपदगुरुत्रियगामी ॥ दुषजोतीद्विजभौअघनामी ॥ वेणु
विप्रकीयवेत्रप्रहारा ॥ सहसवाहुजमदग्निसंघारा ॥ षलसुरेसगोतमघरसोयौ ॥ रंध्रभए
तनपाछैहुंरोयौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जटामुकुटसिरजूटवसनतरुतु
चाविराजित ॥ कंधअजिनकरदंडरेणुरंजिततनराजित ॥ सांतभावअनुसारवयरविपरी
तिविवर्जिय ॥ रामवेषआचरीयसंगमुनिवरगुरुसज्जीय ॥ करिचित्तचरनरघुनाथकै,
प्रेमविवसहठभक्तिपन ॥ भयौभक्तिशिरोमनिभरतकौ, आहिसमयजूआगमन ॥ ७ ॥
रामदृष्टिपथभरतभएजबदोऊभाइ ॥ मगनसांतरसमांझ साथपुनिद्वंदसपाई ॥ चित्तप्रे
मबढिरामचंद्रधरआतुरधाए ॥ प्रणतदंडज्यौंपरेभरतलैकंठलगाए ॥ तहाँसजलनैनरो
मांचतन, कोउनउरअंतरकरत ॥ अनवद्यप्रीतिरसरीतियह, भ्रातरामभेटेभरत ॥ ८ ॥
॥ छंदपधरी ॥ मिलिसखातहांगुहसुषअमाप ॥ उरलायलयौरघुवीरआप ॥ सबबं
धुसीयाअपनेसुभाइ ॥ आनंदबढ्यौअतिमिलतआइ ॥ शुभदरसवंदिगुरुऋषिसंभारी॥
मिलिबैठिरामपरिषदमझारि ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ बोलेवसिष्टगुरुविमलवानि ॥
मातासबआइमोदमानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पाउधारिरामतिहिंठांपुनीत ॥ सम
बंधुसकलअरुप्रीयासीत ॥ आएसहर्षराघवउदार ॥ वंदनकृतजननिहिवारवार ॥ मिलि
मुदितजथाक्रमसबैमाइ ॥ वैठारिअंकलैलैबलाइ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पितकुश
लरामपूछीकृपाल ॥ करुणारसप्रगट्यौतिहींकाल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रहिसकिन
जननिसबउठीरोइ ॥ हाहापुकारिरवविषमहोइ ॥ मिलिनयननीरमनुवरषिमेह ॥ दुष
शोकप्रगटिजनुधरैदेह ॥ धोयौसुधराधरअश्रुधार ॥ प्रतिशब्दहोतकंदरपुकार ॥ करिस
किनधीरनरनारिकोइ ॥ रनिवासदुषजडजीवरोइ ॥ सुरनारिरुदतिसदननिसत्रास ॥ तरु
भूधरव्यापितशोकतास ॥ गुरुत्रीयाअरुंधतिअतिसज्ञान ॥ सबहिनकौंकीनौसमाधान ॥
॥ ॥ अरुंधतीवाक्यं ॥ ॥ हरिइच्छाकबहुनवृथाहोइ ॥ कीनौउपाइइहिंठांनकोइ ॥
मायाजुप्रबलदैवीअमान ॥ सिरवहतसुरासुरनरसमान ॥ काढैमगमस्तकउपरकोइ ॥

हढहेतबलीसौंकोउनहोइ ॥ कविरुवाच ॥ प्रच्छालिउदकग्रानननपुनीत ॥ तबसासु ग्रंकभरिलईसीत ॥ सविषादरामगुरुबंधुसंग ॥ तहांन्हाइतरलगंगातरंग ॥ सविशेष रामसबविधिसुजान ॥ दीयपितहितिलंजुलिउदकदान ॥ ग्रषिलेसरामगुरुमतउदार ॥ करिक्रियाजथाविधिकुलाचार ॥ प्रभुवैठिसाधुपरिषदप्रमान ॥ नितहोतधर्मचरचानिदा न ॥ वासुरकछुइहिंविधिइहांवीति ॥ पुरलोकरसेरघुनाथप्रीति ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांवचनरामगुरुसौंउचारि ॥ द्विजलोकहोतगृहाविनुदुषारि ॥ संगमातभरतक रीयैप्रवेश ॥ दलवलसमानपुरग्रवधिदेस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इकदिवसभरत शुभसभाग्राइ ॥ गुहसषासहितसानुजसुभाइ ॥ मुनिवरगुरुमंत्रीसुभटमानि ॥ पुनिवर्ण चारिपुरजनप्रमानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांसबनिमिलियौकह्यौ । ग्रवकछुकरहुउपाइ ॥ देषिजथाविधिशुभदिवस । राजतिलकरघुराइ ॥ १९ ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ग्रलपकाजभवभूरिनहिनव्ययकरतविचक्षन ॥ यहैनीतिउपदेसगहतसुरग्रसुरसिद्धग न ॥ भूरिकाजजिहिंतिहिसुभाइनसुग्रलपविथारहि॥पुरुषवहैपंडितप्रमानयौनिगमउचार हि ॥ ग्रभिषेकतिलकरघुवीरग्रब, करिलैचलीयेग्रवधिकहँ ॥ करिहैनिवासहमभरतक हि, महादंडकारण्यमहँ ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ग्रवधगएसर्वसुरहै । मंत्रयहैजुप्रमा नि ॥ वसिहैहममुनिबेषवन । रामवसहिरजधानि ॥ २० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भर तसहानुजभक्तिपर । दैग्रागैमुनिवृंद ॥ मिलिसंकल्पविकल्पमन । ग्राएजहांरघुइंद ॥ ॥ २१ ॥ कवित्त ॥ ॥ करग्रंजुलिजुतभरतरामसौंप्रणपतकीनीय ॥ ग्रवनिचक्रतुम ईसग्रषिलश्रियतुमहिग्रधीनीय ॥ करहुतिलकग्रभिषेकछत्रसिंघासनसज्जहिं ॥ मातहो हिमनमुदितविश्वजयदुंदुभिवज्जहिं ॥ राजाधिराजरविवंशरवि, विकसहिलोकजुकंजवन ॥ करियैप्रयानग्रबग्रवधिकहँ, घरघरमंगलहोहिघन ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ज ननीममजाच्यौकपटजोग ॥ तिननहींसमझिवहममप्रयोग ॥ होनीसुटरैनहिग्रंतहोइ ॥ तिहिलागिकहाग्रबकरैकोइ ॥ रक्षाभुवकरियेवैठिराज ॥ यहक्षत्रधर्महैउचितग्राज ॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पुनिकरतरामभरताहिप्रबोध ॥ पितुवचनलोपवेदहिविरोध ॥ सुतपितावचनकरिभंगतास ॥ निर्द्धारताहिनरकहिनिवास ॥ पितवचनभरतकरिवौप्रमा न ॥ इहिठौरनकारनउचितग्रान ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ तुमनीतिधर्मजानतनरेस ॥ विधिजुक्तभरतउचर्‌यौविशेष ॥ उनमत्तग्रांतचितत्रीयाजीत ॥ ग्रज्ञानग्रतिहिकामुक ग्रनीत ॥ ग्रक्रेयवचनइनकेग्रकाज ॥ सोइकहतनीतिपंडितसमाज ॥ उपजैग्रनर्थइन वचनग्रंत ॥ सबपूछहुमुनिवरसाधसंत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ ग्रपराधनमातापि ताएह ॥ सबभावीकारननिसंदेह ॥ वर्षदशचारिदंडकानिवास ॥ पितवचनसत्यकरिहुंप्र काश ॥ पितवचनभंगज्यौकरतपूत ॥ ग्रनसस्त्रवधकहियैग्रभूत ॥ पितघातपापपृथ्वी प्रमान ॥ इहिठौरफेरिकहिवौनग्रान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तवगएभरतउठिगंगती र ॥ सजिदर्भासनवैठेसधीर ॥ पनकर्‌यौदेहछांडनप्रमान ॥ निर्धारभक्तिरघुवरनिदा न ॥ सुनिनियमभरतकृतयहविशेस ॥ सुरकाजभंगजान्यौसुरेस ॥ सुरराजसहिततब

मन । इहांभरतकोंआज ॥ कहोल्पनकारनकवन । सोंचतुरंगसमाज ॥ १३ ॥
॥ लक्ष्मनउवाच ॥ शत्रुशेपनाहिंनसुपद । निगमनीतिनिर्धार ॥ याहीतेंअवनी
शउर । बाढतवेरविकार ॥ १४ ॥ देसएकमहंस्वामिद्वे ॥ होतजहांकिहुंहेत ॥ विग्रहाविषम
विनाशको । निश्चयतहांनिकेत ॥ १५ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पनिमारोंरनिपेतदुसहचतुरंग
विडारो ॥ सरितओणसरपूरिवीरकौतुकाविरतारो ॥ सानुजभरतसधीरवीरजमलोकहि
वासों ॥ केकयीउरपुत्रशोकज्वरप्रबलप्रकासों ॥ कुलतिलकछत्रअजसुवनको, रामसीस
लेधारिहों ॥ कारुण्यरूपअवधेशकारि, सिंघपीठबेठारिहों ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
प्रभुतुमजानतधर्मपर । आपुनजेसेओर ॥ पावेंमनुजविभूतिपुनि । ठिकनरहतजीयठौर
॥ १६ ॥ पाईनृपताअवधिपुर । सबपर्यागतसाज ॥ आएअवसरजानिअब । करनअकं
टकराज ॥ १७ ॥ बनहिंअकेलेतुमबसत । संगनसेनसहाउ ॥ असहनकोलक्षनइहै ।
देनसमयपरदाउ ॥ १८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ कोनराजमदचल्योकुचला ॥ बहुतरा
जविनसेबुधिवाला ॥ सोमपाइपदगुरुत्रियगामी ॥ दुपजोतीद्विजभोअघनामी ॥ वेणु
विप्रकीयवेत्रप्रहारा ॥ सहसबाहुजमदग्निसंघारा ॥ पलमुरेसगोतमघरसोयो ॥ रंध्रभए
तनपाछेहुरोयो ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जटामुकुटसिरजूटवसनतरुतु
चाविराजित ॥ कंधअजिनकरदंडरेणुरंजिततनराजित ॥ सांतभावअनुसारवयरविपरी
तिविवर्जिय ॥ रामवेपआचरीयसगमुनिवरगुरुसज्जीय ॥ करिचित्तचरनरघुनाथके,
प्रेमविवसहठभक्तिपन ॥ भयोभक्तिशिरोमनिभरतको, आहिसमयजूआगमन ॥ ७ ॥
रामदृष्टिपथभरतभएजबदोऊभाइ ॥ मगनसांतरसमांझ साथपुनिद्वंदसपाई ॥ चित्तप्रे
मबढिरामचंद्रधरआतुरधाए ॥ प्रणतदंडज्योंपरेभरतलैकंठलगाए ॥ तहाँसजलनैनरो
मांचतन, कोउनउरअंतरकरत ॥ अनवद्यप्रीतिरसरीतियह, भ्रातरामभेटेभरत ॥ ८ ॥
॥ छंदपधरी ॥ मिलिसखातहांगुहसुषअमाप ॥ उरलायलयोरघुवीरआप ॥ सबबं
धुसीयाअपनेसुभाइ ॥ आनंदबढ्योअतिमिलतआइ ॥ शुभदरसवंदिगुरुऋपिसंभारी॥
मिलिबैठिरामपरिपदमझारि ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ बोलेवसिष्टगुरुविमलवानि ॥
मातासबआइमोदमानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पाउधारिरामतिहिंठांपुनीत ॥ सम
बंधुसकलअरुप्रीयासीत ॥ आएसहर्षराघवउदार ॥ वंदनकृतजननिहिवारवार ॥ मिलि
मुदितजथाक्रमसबेमाइ ॥ वैठारिअंकलैलैबलाइ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पितकुश
लरामपूछीकृपाल ॥ करुणारसप्रगट्योतिहींकाल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रहिसकिन
जननिसबउठीरोइ ॥ हाहापुकारिरवविषमहोइ ॥ मिलिनयननीरमनुवरषिमेह ॥ दुष
शोकप्रगटिजनुधरेदेह ॥ धोयोसुधराधरअश्रुधार ॥ प्रतिशब्दहोतकंदरपुकार ॥ करिस
किनधीरनरनारिकोइ ॥ रनिवासदुषजडजीवरोइ ॥ सुरनारिरुदतिसदनिसत्रास ॥ तरु
भूधरव्यापितशोकतास ॥ गुरुत्रीयाअरुंधतिअतिसज्ञान ॥ सबहिनकोंकीनोसमाधान ॥
॥ ॥ अरुंधतीवाक्यं ॥ ॥ हरिइच्छाकबहुनवृथाहोइ ॥ कीनोउपाइइहिंठांनकोइ ॥
मायाजुप्रबलदेवीअमान ॥ सिरवहतसुरासुरनरसमान ॥ काढैमगमस्तकउपरकोइ ॥

हढहेतबलीसौंकोउनहोइ ॥ कविरुवाच ॥ प्रच्छालिउदकआननपुनीत ॥ तबसासु अंकभरिलईसीत ॥ साविषादरामगुरुबंधुसंग ॥ तहांन्हाइतरलगंगातरंग ॥ सविशेष रामसबविधिसुजान ॥ दीयपितहितिलंजुलिउदकदान ॥ अषिलेसरामगुरुमतउदार ॥ करिक्रियाजथाविधिकुलाचार ॥ प्रभुवैठिसाधुपरिषदप्रमान ॥ नितहोतधर्मचरचानिदा न ॥ वासुरकछुइहिंविधिइहांवीति ॥ पुरलोकरसेरघुनाथप्रीति ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांवचनरामगुरुसौंउचारि ॥ द्विजलोकहोतगृहाविनुदुषारि ॥ संगमातभरतक रीयैप्रवेश ॥ दलवलसमानपुरअवधिदेस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इकदिवसभरत शुभसभाआइ ॥ गुहसषासहितसानुजसुभाइ ॥ मुनिवरगुरुमंत्रीसुभटमानि ॥ पुनिवर्ण चारिपुरजनप्रमानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांसबनिमिलियौंकह्यौ । अवकछुकरहुउपाइ ॥ देषिजथाविधिशुभदिवस । राजतिलकरघुराइ ॥ १९ ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अलपकाजभवभूरिनहिनव्ययकरतविचक्षन ॥ यहैनीतिउपदेसगहतसुरअसुरसिद्धग न ॥ भूरिकाजजिहिंतिहिसुभाइनसुअलपविथारहि॥पुरुषवहैपंडितप्रमानयौनिगमउचार हि ॥ अभिषेकतिलकरघुवीरअब, करिलैचलीयैअवधिकहँ ॥ करिहैनिवासहमभरतक हि, महादंडकारण्यमहँ ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अवधगएसर्वसुरहै । मंत्रयहैजुप्रमा नि ॥ वसिहैहममुनिबेषवन । रामवसहिरजधानि ॥ २० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भर तसहानुजभक्तिपर । दैआगैमुनिवृंद ॥ मिलिसंकल्पविकल्पमन । आएजहांरघुइंद ॥ ॥ २१ ॥ कवित्त ॥ ॥ करअंजुलिजुतभरतरामसौंप्रणपतकीनीय ॥ अवनिचक्रतुम ईसअषिलश्रियतुमहिअधीनीय ॥ करहुतिलकअभिषेकछत्रसिंघासनसज्जहिं ॥ मातहो हिमनमुदितविश्वजयदुंदुभिवज्जहिं ॥ राजाधिराजरविवंशरवि, विकसहिलोकजुकंजवन ॥ करियैप्रयानअबअवधिकहँ, घरघरमंगलहोहिघन ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ज ननीममजाच्यौकपटजोग ॥ तिननहींसमझिवहममप्रयोग ॥ होनीसुटरैनहिअंतहोइ ॥ तिहिलागिकहाअबकरैकोइ ॥ रक्षाभुवकरियैबैठिराज ॥ यहक्षत्रधर्महैउचितआज ॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पुनिकरतरामभरताहिप्रबोध ॥ पितुवचनलोपवेदहिविरोध ॥ सुतपितावचनकरिभंगतास ॥ निर्द्धारताहिनरकहिनिवास ॥ पितवचनभरतकरिवौप्रमा न ॥ इहिठौरनकारनउचितआन ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ तुमनीतिधर्मजानतनरेस ॥ विधिजुक्तभरतउचरयोविशेष ॥ उनमत्तभ्रांतचितत्रीयाजीत ॥ अज्ञानअतिहिकामुक अनीत ॥ अकेयवचनइनकेअकाज ॥ सोइकहतनीतिपंडितसमाज ॥ उपजैअनर्थइन वचनअंत ॥ सबपूछहुमुनिवरसाधसंत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ अपराधनमातापि ताएह ॥ सबभावीकारननिसंदेह ॥ वर्षदशचारिदंडकानिवास ॥ पितवचनसत्यकरिहुंप्र काश ॥ पितवचनभंगज्यौंकरतपूत ॥ अनसरवधकहियैअभूत ॥ पितघातपापपृथ्वी प्रमान ॥ इहिठौरफेरिकहिवौनआन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबगएभरतउठिगंगती र ॥ सजिदर्भासनवैठेसधीर ॥ पनकरयौदेहछांडनप्रमान ॥ निर्धारभक्तिरघुवरनिदा न ॥ सुनिनियमभरतकृतयहविशेस ॥ सुरकाजभंगजान्यौसुरेस ॥ सुरराजसहिततव

सुरसमाज ॥ केहिहेतगंगसोदेवकाज । सुरसरीदेहधरिसहसकाम ॥ मनमुदितआइजहां अनुजराम ॥ गंगाउवाच ॥ कवित्त ॥ ॥ धेनुरूपकीयधरनिअसुरअघभरआक्रांता ॥ ब्रह्मविष्णुसौंविवरितासदुपककेहेदुरंता ॥ वरअमोघतहांविहितब्रह्मकहृदयोविसंभर ॥ दसरथनृपकेपुत्रनियतव्हेहूंआकातिनर ॥ करिहूंअमूलरावणसकुल, ताहिनपैवोखोजतव ॥ अपिलेशविष्णुदीनौअभय, अवनिहोहुनिर्भीतअब ॥ १० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहिंहेतविष्णुअवतरेआइ ॥ संघातअसुरदेवनिसहाइ ॥ निर्लेपनिरंजननिराकार ॥ अवतारलयौकारनउदार ॥ नहींबांधवकाहूकेनिदान ॥ आरंभआनकछुकरहिआन ॥ केकयीब्याजवनवासकीन ॥ निर्धारकछूइच्छानवीन ॥ एजातवनहिसुरकाजआज ॥ रावनकोकरिहैनाशराज ॥ आज्ञाजुदेहिरघुपतिअनंत ॥ सोइकरहुभरतहठछांडिसंत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिविनाशपोलस्त्यको । देवकाजकरिदेव ॥ अवधिवीतीतैअवधिपति । ऐहेंअवधिअजेव ॥ २२ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कीयप्रबोधमंदाकिनी । सवभरतहिसमझाइ ॥ माहिमाजथास्वरूपमिलि । सुपस्वस्थानसिधाइ ॥ २३ ॥ सुनिप्रबोधसुरसरितको । भरतउठेसतभाइ ॥ आएआश्रमआपनै । विस्मयहठहिविहाइ ॥ ॥ राजाजनकआगमन ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ ताहीअवसरदूत, आएजनकनरेसके ॥ तहांसुनिचरितअभूत, रामजोगदशरथमरन ॥ २५ ॥ दूतदसायहदेषि, पुनिआएमिथिलापुरी ॥ विनईबातविसेषि, सबहीराजाजनकसो ॥ २६ ॥ बढ्योविषाद्‌विदेह, सुनिसुनिसोवातैदुसह ॥ सोसकुटुंबसनेह, राजाआएचित्रगिरि ॥ २७ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ रघुनाथसानुजजनकराजामुदितमनसाजनमिले ॥ सुरलोकदशरथगमनसुनिसुनिविषमदुखभएव्याकुले ॥ रनिवासउभयउदासरसगतामिलिसमयअनुसार ॥ ऋषित्रीया आनिअनेकरानिनिकीयप्रवोधप्रकार ॥ कुलराजराजसमाजमिलिकछुकालछेपनकीन ॥ चित्रकूटसुधर्म्मचर्चानित्यहोहिनवीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रानीमैथिलराजकी । वासरइकविख्यात ॥ सीताहिकरतिप्रबोधसो । जथासमयविधिबात ॥ २८ ॥ ॥ सीताप्रतिजननीवाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पितदत्तरामवनवासपाइ ॥ वसनीतिचलेतिलकहिविहाइ ॥ दुषतहांमहादुस्सहदुरंत ॥ अनचिंत्यकष्टउपजैअनंत ॥ आरण्यजंतुदारुणअसाधि ॥ उतपातकरहिनवनवउपाधि ॥ मनुजासनराक्षसतनअमान ॥ भुववसतदुष्टनवनवभयान ॥ वयबालरामलीलाविलास ॥ तातैनउचिततुमसंगतास ॥ हठछांडिपुत्रिकारहहुग्रेह ॥ सबकरहुसासुसेवासनेह ॥ रघुनाथविरहअरुसौतिरेस ॥ वसियेहवढावहुकछुविशेश ॥ यहसंमतहैतवपितप्रमान ॥ करीयेममशिक्षाकुंवरिकान ॥ ॥ ॥ सीतादसा ॥ ॥ अधवदनविमननाहिफुरतवैन ॥ नीरदसमानजलधारनैन ॥ स्वरभंगकंपरोमांचसंग ॥ उपज्योसीयसात्विकभावअंग ॥ वैवर्णदेहप्रस्वेदवारि ॥ हियविकलसीयहिजननीनिहारि ॥ सोदसादेषिसीतासत्रास ॥ विपरीतहोइकछुभोविसास ॥ निर्धारजनेताकीयनिदान ॥ पुनिकहूंरहनतौंतजैप्रान ॥ पतिप्रेमइतैमाताप्रभाव ॥ दुषमग्नसीयाउरद्विसभाव ॥ उरलाइजननिलीनीउठाइ ॥ चषपौछिवातऔरैचलाइ ॥ ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नृपतिविदेहनिषादपति । गुरवसिष्टसज्ञान ॥
मुनिसमाजमहिमाअमित । नैगमनीतिनिधान ॥ २९ ॥ मंत्रीसुमंतहिसुभटमिलि ॥ वी
रनरेशविशेश ॥ एकसमयएकत्र व्है । देतभरतउपदेस ॥ ३० ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ छंद
पधरी ॥ गुरकह्यौभरतसौंगूढज्ञान ॥ सिषसमयमानिवर्तहुसुजान ॥ रावनवधकारनजात
राम ॥ करीयैनविघ्नइहांदेवकाम ॥ तातैंअबआग्रहतजहुतात ॥ मिलिरामचलहुलैग्रेहमात ॥
तुमसदासाधुसंमतसधीर ॥ विधिकहहिरामसोकरहुवीर ॥ गुरुपिताबंधुजेठौसज्ञान ॥ न
हींवचनलोपकरीयैनिदान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मनसोचिभरतगुरुवचनमानि ॥ उ
ठिरामचरनदेषेजुआनि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हाथजोरिबोलेभरत । सुनहुभानुकुलभान ॥
महाबाहुरघुवीरमुहि । प्रभुआज्ञासुप्रमान ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पितुदी
नीआज्ञाप्रगट । हितवाअनहितहोइ ॥ सोहमतुमकरीयैसफल । कुलहिकलंकनकोइ ॥ ३२ ॥
॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तहांप्रणामकरिभरतरामसौंकह्यौजोरिकर ॥ प्रभुआज्ञासुप्रमानसवैमें
मानिलईसिर ॥ परमपूज्यपादुकादेवमोकहँअबदिज्जइ ॥ कैकेइसुतजुतकलंकपुनिपावन
किज्जइ ॥ सोपेप्रमाणत्रैलोकसिर, राघवइच्छारावरी ॥ करुनानिधानदइभरतकर, प्रेमस
हितनिजपावरी ॥ ११ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महापादुकारतनमय । ल
ईभरतउरलाइ ॥ पूजिसुराषीसीसपर । सोसुषउरनसमाइ ॥ ३३ ॥ ॥ भरतउवाच ॥
॥ देवअवधिगतप्रथमदिन । नावहुअवधिनरेस ॥ करुनानिधितौभरतकौं । सुनिहौअगनि
प्रवेस ॥ ३४ ॥ ॥ अथश्रीरामभरतोपदेस ॥ ॥ पृथ्वीपालकएकनृप । सुनियैभरत
सधीर ॥ खानपानकरिएकमुष । पोसतसकलसरीर ॥ ३५ ॥ जैसैवनहिवसंतऋतु ॥ स
बकीकरतसंभार ॥ तरुवल्लीत्रिणपोषतिहि । फूलतफलतअपार ॥ ३६ ॥ त्यौंहीतुमकरी
यौभरत । पुररक्षासपुनीत ॥ जानतहौरघुवंसज्यौं । राजनीतिसबरीत ॥ ३७ ॥ अवनि
संभारहुअवधिलौं । तुमसबभांतिसयान ॥ करीयैरक्षालोककी । पावहिसुषबहुप्रान ॥ ३८ ॥
॥ लोकवेदअरुकाललषि । जोवरतेभुवपाल ॥ ताकेबुधिप्रभावतैं । जातविलयषलजाल ॥
॥ ३९ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भेटिभरतअरुशत्रुहन । विदाकरेरघुवीर ॥ कंपहृदयअति
तनपुलक । सात्विकभावसरीर ॥ ४० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विछुरतवीरविदेहप्रेमजुतभ
एपरसपर ॥ पुनिपुनिदंडप्रणामनियतकृतभरतनिरंतर ॥ लएरामउरलाइढरतलोचन
जलधारा ॥ देवसिद्धयहप्रीतिदेषिआनंदअपारा ॥ करिचलेभरतततहांपरिक्रमणा, संस
यमिव्यौसधीरकौ ॥ क्रमक्रमअवलोकनफिरिकरत, कमलवदनरघुवीरकौ ॥ १२ ॥
॥ मातावाक्यं ॥ ॥ मांगनआग्यामातरामसीयलषनसिधारें ॥ वारवारलैलैबलाइ
गोदनिबैठारे ॥ अविलोकतनहिद्रिगअघातउरभेटतिअंकनि ॥ मानहुविछुरीकिहूंप्र
मादनिधिपाईरंकनि ॥ जुरिचितवहिचंद्रचकोरज्यौं, रहिइकटकपलरोकिहैं ॥ करतारहोइ
ऐसीकबहि, फिरिविधुवदनविलोकिहैं ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ आज्ञामांगीरामइहां
अंबादईअसीस ॥ सबैसहायकहोहुसुर ॥ गुरुगोविंदागिरीस ॥ ४१ ॥ ॥ कैकयी
वाक्यं ॥ ॥ कैकयीतबरामकहँ । बचनकहेसविनीत ॥ मायावसमोतैभयौ । पापछमहुसपु

नीत ॥ ४२ ॥ नरपशुनाचननृत्यनच । पढतशुकादिप्रवीन ॥ एज्योंपाठकवसत्रपिल जनमायाआधीन ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कैकेयीसोंरामकहि । मातनभ्रम रषमोहि ॥ पुनिदेवीमायाप्रबल । हेतनव्यापैतोहि ॥ ४४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ राम चलेमातहिमिलि । सीतालक्ष्मनसंग ॥ उपजेसात्विकभावइहां । उभयदिसानिअभंग ॥ ४५ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ वामदेवजाबालि. गुरुवसिष्टकौशिकप्रमुष ॥ पूजेचरनप षालि । रामविदाकीनैसुऋषि ॥ ४६ ॥ करिमनुहारिअनेक । रामविविधवंदनविहित ॥ वचनपीयुषविवेक । कीनीविदाविदेहकी ॥४७॥ मंत्रीसुभटमहीप । प्रीतमसषानिषादपति॥ सबसनमानिसमीप । पुनिजेवासिअवधिपुर ॥ ४८ ॥ लघुदीरघपुरलोक । सेवकरामसु जनाके ॥ सोमनमलिनसशोक । बिछुरतभएव्याकुलविरह ॥ ४९ ॥ निर्भरबजेनिसा न । दुसहचलेचतुरंगदल ॥ प्रगटप्रयानप्रयान । सुनीयतनहिदूजौसबद ॥ ५० ॥ समसंतोषसुभाइ । भरततपस्वीभेषभए ॥ सेनअग्रसतभाइ । विषमचलेजुवियोगवस ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चलेजथाक्रमभंगवित । मुषतनवसनमलीन ॥ सर्वसषोए जातसव । दैवविमुषज्योंतीन ॥ ५२ ॥ वासरचारिवितीतविच । अवधिसीमदलआइ ॥ नंदिग्रामहिनियमजुत । संक्रमिभरतसुभाइ ॥ ५३ ॥ पाटनिवेसितपावरी । पुजतभरत सप्रेम ॥ करतजथाक्रमभक्तिकरि । सेवानित्यसनेम ॥ ५४ ॥ पुरुषप्रमानसुषनिपुहवि । सज्जादर्भसंभारि ॥ सोवततामहभरतसुष । मोहविषयमनमारि ॥ ५५ ॥ मातागुरुमं त्रीविमन । पत्तनकरेप्रवेश ॥ जीवनकहूंठहरातज्यों । सिरमनिविछुरीशेष ॥ ५६ ॥ सम झिनिवाहतशत्रुघन । भुवरक्षाभुवपाल ॥ राजकाजमंत्रीजुमिलि । सबसाधतरिपुसाल ॥ ५७ ॥ रीतिभरतकृतप्रेमरस । कहैसुनैनरकोइ ॥ रामभक्तिताकेहृदय । हेतसुनिश्चय होइ ॥ ५८ ॥ वसतवीरगिरिचित्रवन । हर्षदिनहिंदिनहोत ॥ रामलषनसीयशुभलषन । ज्योंजियमनमिलिजोत ॥ ५९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तरणिवंशअवतंसप्रगटअवतारअ वधिपुर ॥ छांडतिलकजुवराज सज्योंवनवासकाजसुर ॥ पितावचनपरमानकरयोकृतउग्र जुकिन्नौ ॥ वर्षचतुर्दशजतीवेषलीलाव्रतलिन्नौ ॥ क्रीडाअभूतनरहरसुकवि, रामचरितपर्व तकरीय ॥ विस्तारनीतिअरुधर्मविधि, विमलकीर्तिजगविस्थरीय ॥ १४ ॥ इतिश्रीपौ रुषेयरामायणे महामुक्तिमार्गे श्रीरामावतारचरित्रे बारहटनरहरिदासेननविरचितंअयो ध्याकांडसंपूर्णम् ॥ २ ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ छ ॥

इति अयोध्याकाण्डम् सम्पूर्ण.

पंडित श्रीधर शिवलालजी.
"ज्ञानसागर" छापखाना. (मुम्बई.)

श्रीगणेशायनमः ।

॥ अथ आरण्यकांडप्रारभ्यते ॥

॥ अथगाथा ॥ ॥ आरंभेआरण्यं । राघववनविहितविभ्रमंविविधं ॥ कुलनिसिचरषय कारं । कौशल्यानंदनंवंदे ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सघनस्यामतनशुभगविमलविद्युत पीतांबर ॥ बानधनुषआजानबाहुबनिकटिनिषंगवर ॥ विमलकमललोचनविसालजटजूटविराजित ॥ तुचातरुनतरुचीरसूरतपसातनसाजित ॥ जनुजीवजोतिमनमुदितमिलि, राघवसीताशेषसक ॥ कारुण्यरूपनरहरसुकवि, तन्नमामिरविकुलतिलक ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ इक्कदिवसरघुरामपुन्यपरिषदमिलिआपस ॥ कहतसबैकरजोरिकरतद्विजदोषजुराकस ॥ अनलकुंडभरिअंबुभवनजलपात्ररुधिरभरि॥विविधहोममषवाधकर्मअघजातनित्यकरि ॥ इहांरहतदुष्टरावनअनुज, षरनामानिस्संकषल ॥ तिहिंभयअनंतअवधेशअब, थिरनचित्तद्विजतजतथल ॥ २ ॥ जहांपावतद्विजकरतजज्ञपदत्राणप्रहारत ॥ रेणुमूत्रमलरुधिरदुष्टलीलातहांडारत ॥ पाकमात्रकरपरसकरतअपवित्रअसनकहां ॥ वनफललावतविप्रतेउतबछीनिलेततहां ॥अनथाहनीरपदनरअतर, जीयनकहूंठहरातजब ॥ क्रतुनाशहोतरघुवीरकह, त्राहित्राहिमुनिकहततब॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऋषिसमाजमहरामरहि । कछुककालचित्रकूट ॥ विप्रसहाइकदंडवन । जतीचलेजटजूट ॥ ॥ अत्रिआश्रमआगमनं ॥ ॥ चित्रकूटतेरामचलि । अत्रतपोपनआइ ॥ सेतसिरोरुहतनबलित । देष्योसंतसुभाइ ॥ २ ॥ कीनेंप्रेमप्रणामक्रम । रामधर्मधुरधीर ॥ अत्रिदएआशिसअषिल ॥ विजयहोहुरनवीर ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अनुसूयापहँतबसीयाआइ ॥ सबभाइप्रणतिकीनीसुनाइ ॥ सोदेषितापसीजरासंग ॥ उभमांगसेतजर्जरितअंग ॥ कंपितकरमस्तकविमलकाइ ॥ तपअतुलतेजपतिव्रतपाइ ॥ सीतहिलगाइउरलइसंत ॥ उपदेसकरेत्रीयकृतअनंत ॥ अनुसूयादीनेअंगराग ॥ अविकारवसनजेमलअलाग ॥ अतिदीप्यमाननगअलंकार ॥ वनमालविहिततितनवविहार ॥ आतिथ्यविविधकीनेअनेक ॥ वनवासविदितभोजनविवेक ॥ कछूकालरामइहांवासकीन ॥ पुनिचलतमांगिआज्ञाप्रवानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अत्रिविलोकतरामछबि । नैंकअघातननैन ॥ करुणाप्रभुअस्तुतिकरत । विविधप्रेमजुतबैन ॥ ॥ छंदअर्धनाराच ॥ ॥ अत्रिउवाच ॥ ॥ नमामिदिव्यदैवतं । कृपालसीलसंम्मतं । बदन्नओपवासयं । प्रभाकरंप्रकाशयं । विराजितंविरूथयं । अलक्कभृंगजूथयं । सदीर्घनैनसोहए । श्रीवारिजंविमोहए । सवक्रभौंहस्यामयं । जुकामठंकिकामयं । रदंछदंसुरंगए । सुवज्रबिंबसंगए । प्रसन्नमुखपंकजं । सहासवासनासजं । त्ररेषकंबुग्रीवए । सुसर्वसोभसींवए । भुजाआजानयंभजं । जुपाणिरक्तपंकजं । उरंमणीउहासयं । सुप्रेमभावभासयं । जुनाभिसोभसंजुरी । समध्यदेसकेसरी । नितंबभारभारए । विमोहनंविहारए । पदंअभैजुपंजरं । सरण्यदंसुरा

सुरं । सदैवसेससीसए । जुदीप्यमानदीसए । सुरस्सरीनिवासए । समूलपापनासए । श्री यासुचंदनंसजं । पलोटिपानिपंकजं । चरित्रव्रत्तचारिनं । वनंघनंविहारिनं । सप्रेमचंद्रशेखरं । अनन्यव्हैधृतंउरं । आराध्यमानजेअजं । सपूज्यपादपंकजं । सरीरस्यामसुंदरं । पयोदनीलनिर्भरं । विलासवन्यवासनं । प्रभाछटाप्रकासनं । जटामुकट्टधारिनं । वनेवनेविहारिनं । सचापवामपाणयो । विशेपसव्यबाणयो । कटित्तटेनिषंगयं । सओपमाअनंगयं । तृविक्रमंत्रिलोकदं । तृकालवंद्यतेपदं । भवेशचापभंजनं । विदेहवंशरंजनं । सुरासुरेशसेवितं । जरांतकेअजेवितं । इक्ष्वाकुवंसओपमं । सुरासुरंनकोसमं । हरेअनंतविग्रहं । नमामिआपदापहं । सरण्यदंसुषाकरं । अमोघसिद्धिआकरं । सशेषसक्तिसोभनं । सुरारिवृंदछोभनं । त्वमेवपादपंकजं । नमामिदेवसानुजं । सदासुपुन्यसंगमं । निदानबुद्धिनैगमं । भजंतिभूतभावनं । अपावनंसुपावनं । रसेजुरूपराघवं । अभीततेअघार्णवं । हितंजुरामगावही । सपुन्यलोकपावही । प्रसीदरामसेप्रभो । जुविश्वभावनंविभो । दिनेशवंशभासकं । भवांधकारनाशकं ॥ सुरद्रुहंविनाशनं । अभावभावभासनं । कलंकिशुद्धकारकं । अकालमृत्युहारकं । भवेसभावभाजनं । सुसंतसाधुसाजनं । नमामिदेवनायकं । सजेअमोघसायकं । प्रसीदजानकीपते । जुशेषसंगसेविते । नमोनमोनराधिपं । प्रसन्नकल्पपादपं । प्रसीदसिंधुजापती । भयापहारभूपती । कुजोनिकष्टकापनं । थिरंसुसाधथापनं । त्वमेवदुष्टतर्जनं । अमोघपुन्यअर्जनं । त्वमेवतापतापदं । अधर्मनाशआपदं । नमानिनित्यनिश्चलं । अनादिसिद्धअस्मलं । नमामिकर्मकारणं । रसातिभारहारणं । नमामिलोकनायकं । सचापपाणिसायकं । नमामिविश्वभासकं । नमामिदुष्टनाशकं । नमामिदीनवत्सलं । कृपानिधानकेवलं । नमामिमूलमायकं । दुर्लभ्यमोक्षदायकं । नमामिभूतभूपती । महानुभावमेगती । स्तोत्रअत्रभाषितं । सुसिद्धवेदसाषितं । निकामपाठनित्ययं । विशुद्धचित्तकृत्तयं । भवेतिभक्तिभाजनं । सउर्ध्वलोकसाजनं ॥ ॥

॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ कीर्तिकहीनरहरसुकवि । कर्मनाशगतिकाज ॥ जथासक्तिकृतजानिहै । रामगरीबनेवाज ॥ ५ ॥ मैअसक्यताक्योंसरण । रामसरणासाधार ॥ मोकृतघातकपतितकह । यहैजुएकआधार ॥ ६ ॥ ॥ **अथव्याधवधनं** ॥

॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ चलेदंडकारण्यकहँ । सानुजरामससीत ॥ जोजनसार्धइकजहां । निरष्योव्याधअनीत ॥ ७ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ पथमाझव्याधनामासपाप ॥ देष्योइकराक्षसमहादाप ॥ विपरीतरूपचषअरुनवान ॥ विस्तारअग्निकणिकाविधान ॥ जिव्हाकरालमुषअनलज्वाल ॥ दढासदीर्घ्यदंताकुदाल ॥ वैरूपव्याघ्रचर्मावसान ॥ भूवभारसर्वभक्षीभयान ॥ अतिकायदुष्टप्रातिअंगअंग अयमयतशूलभ्रामितउतंग ॥ शूलाग्रअष्टसिंघनिसधीर ॥ सबमनुजशूलषोएससरीर ॥ निशिचरनिशंककृतघोरनाद ॥ वसुधासकंपथिरचरविषाद ॥ ॥ **व्याधउवाच** ॥ ॥ आसुर कहिरे तुम कौन आहि ॥ जतिवेष प्रगट संग तरुणि जाहि ॥ वनिताजुसंगयहतपविरोध ॥ पापीकिहिकीनौतवप्रबोध ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ आकर्षि

सीयहिलैगौअकास ॥ तहाँजाइदुष्टबोल्यौअत्राश ॥ काननममआएसुतुमहुकौन ॥
नरभक्षकनिसिचरसुन्यौहौंन ॥ तपसाधमभागहुव्हैसत्रास ॥ त्रीयलईछींनिनहींदैउतास
॥ सोसुनतमात्रलषमनसमूल ॥ सरमारिकर्योशतषंडशूल ॥ सररामअसुरवेध्योसरीर
॥ भुवगिर्योवमतमुषरुधिरभीर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ताकहंपूछ्यौ
रामतब । रेतूंकोनिर्लाज ॥ कृतघनप्रेर्योकालकौ । काहेमर्योअकाज ॥ २ ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनतवदनरघुवरविलोकि ॥ राक्षसतहांबोल्यौरिस
हिरोकि ॥ ॥ व्याधउवाच ॥ ॥ इकसमयसुषाहिविलसतसधीर ॥ वैश्रवणसभामि
लिजक्षवीर ॥ गंधर्वसुकिन्नरगानकार ॥ अपसराआइछबिसौंअपार ॥ गंधर्वहुतोहूंकरत
गान ॥ तिहिंसमयविविधसुररागतान ॥ रंभातहांनाटकसज्यौरंग ॥ अन्नेकभावछवि
अंगअंग ॥ तिहिंरूपदेषिममचल्योचेत ॥ हुवदशाआनभवतव्यहेत ॥ कृततिहिकुबेर
चितभौविकार ॥ वैषम्यश्रापदीयतिहिखार ॥ ॥ कुबेरउवाच ॥ ॥ जादुष्टहोहिराक्ष
सदुसाधि ॥ अनर्थअनीतिकारकउपाधि ॥ परहिंसकसर्वभक्षीसपाप ॥ प्रतिकूलधनददीनो
सराप ॥ ॥ व्याधउवाच ॥ ॥ व्हैदीनकह्योमैजोरिहाथ ॥ कबश्रापमुक्तव्हैहूंसनाथ ॥
॥ कुबेरउवाच ॥ ॥ रघुवंशहोइरामावतार ॥ वसकारनकरिव्हैवनविहार ॥ बंधनविमु
क्तहतरामबान ॥ पुनिजक्षजोनिलहिहौप्रमान ॥ ॥ व्याधउवाच ॥ ॥ दिगपतिकु
दृष्टिममछुट्योदेह ॥ सुतत्रियाबंधुमिटिगोसनेह ॥ सतव्हदानामजननीअसाध ॥ वसि
उदरतासहूंभयौव्याध ॥ यहकारनजोनिपिसाचपाय ॥ अद्यावधिइहिवनवस्यौआय ॥
॥ गाथा ॥ ॥ स्वयंविष्णुरमासीता । शेषलक्ष्मणसंजुतं ॥ शंषचक्रावताराय । सेवितं
भरतसानुजं ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ करजोरिअसुरतबप्रणतिकीन ॥ प्रभुदेवब्र
ह्मरक्षकप्रवीन ॥ धरिदेहमनुजतुमधर्मकाज ॥ वनविहरतहौपितुवचनव्याज ॥ भुवभार
उतारनचलेभूप ॥ राघवमैंचीन्हेजतीरूप ॥ ब्रह्मणाअर्थयहकीयविचार ॥ भगवंतहरनतु
मभूमिभार ॥ हतप्रानभयौअबदेवहाथ ॥ निजपदमैपायोदयानाथ ॥ ॥ कविरुवाच ॥
॥ दरसनअधीनतहांछुट्यौदेह ॥ आकाशवानितबभईएह ॥ ॥ देवाऊचुः ॥ ॥ दुष्ट
षलदेवदोषीदुसाधि ॥ अषिलेशहत्यौटरिभवउपाधि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आसुरमूलअ
नर्थयह । इंद्रहिसालअजेव ॥ सोप्रभुमार्योएकसर । दुंदुभिबाजेदेव ॥ ३ ॥ ॥ अथ
सरभंगआश्रमआगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यावनतैजोजनअरध ॥ आएजब
रघुराइ ॥ तहांआश्रमसरभंगकौ । देष्योअतिसुषदाइ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सरभंग
आयसनमुषसकाम ॥ राजीवनयनकृतदरसराम ॥ पनकरेभक्तिपूजाप्रकार ॥ आसन
वनभोजनदीयअहार ॥ सरभंगबैठिरघुवीरसंग ॥ पुनिकहतभएपूरबप्रसंग ॥ ॥ रसभं
गउवाच ॥ ॥ आगैमैविधिमुषसुनीएह ॥ देवाधिदेवधरिमनुजदेह ॥ त्रेतामहँव्हैरामा
वतार ॥ वसकारनदंडकवनविहार ॥ अद्यावधिमैप्रभुदरसआस ॥ काननयहसेयौसाव
कास ॥ तपजुक्तइहांभएजुगवितीत ॥ प्रभुभयौआजदरसनपुनीत ॥ सबभएसफलसा
धनसमूल ॥ कमलाननदेष्योसानुकूल ॥ ठहराउछनकइहिरम्यवान ॥ जौलौंदयालतव

लोकजान ॥ अद्यावधिममतपसिद्धएव ॥ दृढपुन्यसमर्प्योतुमहिदेव ॥ सानुजाविलोकि
वामांगसीत ॥ अषिलेशमुक्तह्वैहूंअभीत ॥ सरपुंजमाझसोबैठिसिद्ध ॥ सीयरामरूपउर
धरिप्रसिद्ध ॥ जोगबलप्रगटितनअनलज्वाल ॥ तिहिभयोभस्ममुनितातकाल ॥ दूर्वादल
स्यामलतनदयाल ॥ वनिलोचनकमलायतविसाल ॥ जटजूटमुकटवनचीरवास ॥ कटि
तटनिसंगकसिसावकास ॥ जुतवामपानिधनुजगतजेव ॥ दक्षनकरभ्रामितविशिषदेव ॥ य
हरूपधारिअंतरअकाम ॥ धरिदिव्यदेहगौदिव्यधाम ॥ सरभंगजर्योजोगीसनेम ॥ प्रभु
जोतिमिल्योसोसाहितप्रेम ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वेतछत्रहयसेतसौ । स
नमुखआइसुरेस ॥ रथारोहसरभंगगो । वरपतपुहपविशेष ॥ ॥ अथमुनिवृंदसमाग
म॥ ॥ श्रीरामराक्षसवधप्रतिज्ञा ॥ दोहा ॥ सरभंगाश्रमतैंगमन । कीनोरामसकाज ।
दंडकवनवासीमिले । सर्वऋषीससमाज ॥१॥ विहरतरामसवामवन । पेषेमनुजकपाल ॥
स्वेतवर्णजहांतहांसघन । कूटाकृतिकंकाल ॥ २ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदपध
री ॥ ॥ हैंअस्थिपुंजएकवनहेत ॥ सविशेषकहहुद्विजक्रमसमेत ॥ किहिहेतकवन
एकौनकाज ॥ सोकहहुहेततुमऋषिसमाज ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ करजोरिद्विज
नितबकहिसत्रास ॥ ऋषिअस्थिपुंजपृथ्वीप्रकास ॥ राक्षसनिभषेतिनअस्थिराजि ॥ षो
जतजेउवरेभाजिभाजि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सोसुनिसुनिरघुवीरस
ब । दुष्टाचारदुरंत ॥ नाशदेषिद्विजदीनको ॥ अचिरजभएअनंत ॥ ३ ॥ ॥ श्रीराम
उवाच ॥ ॥ इहांकर्योपनदैअभय । विप्रनिरामविशेष ॥ दंडकवनराक्षसदुसह । सबह
तिहूंनिरसेष ॥ ४ ॥ ॥ अथपंपासरोवरआगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सरभंगा
श्रमतैंचले । वनगतआनविशेषि ॥ सानुजसीतानाथतहां । दिव्यसरोवरदेषि ॥ १ ॥ अति
प्रमानजोजनअयुत । सरवरसुपदसुढार ॥ जलअथाहफुल्लियजलज । मत्तमधुपगुंजार॥२॥
॥ महाम्रजादावृक्षमिलि । अरुझिलताचहुंओर ॥ वासतविविधविहंगवर । नाचतमत्तमयू
र ॥३॥ तबकीनोविश्रामतहां । पंथश्रमितसुषपाइ ॥ सुनिमृदंगनूपुरसवद । रीझिरहेरघुराइ
॥४॥ ॥ श्रीरामउवाच॥ ॥ महासघनउद्यानमह । कछूननूपुरझंकार ॥ कहतरामसोवौ
कहा । विस्मयचित्तविचार ॥५॥ ॥ ऋषिरुवाच॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ ऋषिकह्योसुनहुको
शलनरेश ॥ इहांमंदकर्णिनामामुनेश ॥ तिहिंतपोइहांवसिउग्रताप ॥ इकअयुतवर्षसहिक
ष्टआप ॥ सोसुन्योइंद्रमुनितपविशेष ॥ इंद्रासनकंपितभौअशेष ॥ सुररमनिपंचपठईसुरेश ॥
रसवसकरिषोबहुतपऋषेश ॥ अपछराआइतपथलअज्ञात ॥ वनफूलिविविधचलितृविध
वात ॥ भामिनीकटाछकरिहाउभाउ ॥ सरमारिकर्योमनमथसहाउ ॥ सायकअनंगनिकसेदु
सार ॥ वसतापसभौमनमथविकार ॥ सुरराजकाजसुररमनिसंग ॥ भौमंदकर्णिमुनिधर्मभंग ॥
तेरहातिइहांमुनिश्रापत्रास ॥ पुनिकरातिनित्यनाटकप्रकास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पंचअपछ
रातेप्रकट । रहतसमीपशषेस ॥ सुरनूपुरझंकारशुभ । सुनीयतअवधिनरेश ॥ ६ ॥ ॥
सुतिक्ष्णआश्रमआगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विसदसरोवरसघनवन ।
वसेकछुकरघुवीर ॥ तापसवेषस्वइच्छतब । चलेधर्मधुरधीर ॥ १ ॥ ऋषिअगस्तिकौशि

ष्यइक। ताससुतीक्षननाम ॥ ताकेबिनआश्रमविषे ॥ आएश्रीरघुराम ॥ २ ॥ ॥ छंद द्विअक्षरी ॥ क्रमआतिथ्यसुतीक्षनकीने ॥ नवपल्लवदर्भासनदीने ॥ कंदमूलफलस्वादसुहाए ॥ बनभोजनदीनैमनभाए ॥ विधिवतभक्तिसुतीक्षनकीनी ॥ रामकृपालमानिसबलीनी ॥ इहांकछुकदिनरहिरघुराइ ॥ कीनौगमनमुदितदोउभाई ॥ संगसुतीषनचल्यौऋषीशा ॥ कछुदिनगवनैमगहिमहीशा ॥ ॥ अथअगस्त्याश्रमआगमनं ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मुनिअगस्तिकेआश्रमआए ॥ जाइसुतीक्षनगुरुहिसुनाए ॥ सुनिअगस्तितबसनमुषआए ॥ देषेरामनयनजलछाए ॥ मिलेपरसपरसुषमनमाने ॥ अतिहितरामसुआश्रमआने ॥ कीनीपूजाविविधप्रकारा ॥ जोकछुवेदविदितव्यवहारा ॥ वनभोजनफलमूलअमृतवर ॥ ॥ प्रभुहिसमर्पनकरेभक्तिपर ॥ विविधविधिकह्यौस्तोत्रबडाई ॥ भावप्रसन्नहोतदोइभाई ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ बैठेमुदितरहसिरघुराई ॥ मुनिअगस्तिसौंबातचलाई ॥ त्रिकालज्ञतुमसमदृगस्वामी ॥ नियतकर्मनितहितव्रतनामी ॥ जाकारनहमहैवनआए ॥ सोतुमसबजानतऋषिराए ॥ तुमसौंकछुदुराउनतातें ॥ विस्तरजुतकहीयैकाबातें ॥ विहितमंत्रसोइकहहुविशेषा ॥ सुरद्रोहीजिहिकरौंअसेषा ॥ ॥ अगस्तिउवाच ॥ ॥ तबअगस्तिमुनिबातचलाइ ॥ पुराप्रसंगसुनहुरघुराइ ॥ अषिलअनादिविष्णुतुमआगे ॥ षीरसमुद्रसयनकरिजागे ॥ विधितुमसौंभूवभीतिवषानी ॥ तुमअनंतकरुनाउरआनी ॥ दयौअभयतुमभूमिहिदेवा ॥ अवनिभारभयहरनअजेवा ॥ पुनितुमविधिहिदयौवरपावन ॥ नाशकरौंराक्षसकुलरावन ॥ प्रभुव्रतलीनौंसुन्यौपुरंदर ॥ घनउछवदेवनिकीयेघरघर ॥ जान्यौइंद्रइहाँप्रभुआवन ॥ मुहिसौंपेआयुधमनभावन ॥ सोअबलैसुरकाजसंवारहु ॥ महादुष्टरावनषलमारहु ॥ यहनिषंगअक्षयसमसाइक ॥ ऐंद्रचापयहतुमहींलाइक ॥ षड्सातिष्षरतनमयसुंदर ॥ कवचअभेद्यप्रानरक्षाकर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दिव्यायुधकुंभजमुनिदीने ॥ रामलषनवंदनकरिलीनै ॥ ॥ अगस्तिउवाच ॥ ॥ दोहा पुनिअगस्तिरघुवीरप्रति । कह्यौमंत्रएकंत ॥ इककारनसुनीयेअशुभ । सीदतहैंजिहि संत ॥ १ ॥ आतापीनामाअसुर । वातापीलघुभ्रात ॥ मायारचतअनेकमिलि । षोजिषोजिद्विजषात ॥ २ ॥ राक्षसतेअजरूपकरि । मुनिभोजनव्हैमूल ॥ पेटफारिरसोनिकसिपुनि । सबहिनषातसेमूल ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कुंभजयहरामहिप्रगटकीन ॥ निर्दईनिशाचरकृतनवीन ॥ आतापीतापसवेषआइ ॥ भोजनहितन्यौंत्यौमुनिसुभाइ ॥ वनितहांआतापीछागवेष ॥ विधिजुक्तमांसरंधेविशेष ॥ वसकपटरम्यतपथलबनाइ ॥ बहुत्यौंअगस्तिलीनैबुलाइ ॥ कुंभजसोआमिषभक्षकीन ॥ वातापीदारुणहाकदीन ॥ बोल्यौअतापीउदरबीच ॥ मुनिलष्यौनिसाचरचरितनीच ॥ मुनिवरजठरानलतपअमाप ॥ उदरगतभस्मभौअसुरआप ॥ सोदुष्टकर्मसुनिरामदेव ॥ कीनैअसेषआसुरअजेव ॥ इहिंभांतिअजोध्यापतिअनंत ॥ इल्वणवातापीकह्यौअंत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सानुजरामअगस्तिसौं । पूछ्यौमंत्रप्रकाश ॥ सुषदबतावहुठौरसौं । निश्चलकरहिनिवास ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी

॥ ॥ अगस्तिउवाच ॥ ॥ कुंभजमंत्ररामसौंकीनौ ॥ दएइंद्रसोआयुधदीनौ ॥ पंचवटीजुगजोजनपावन ॥ निकटगोतमीतटमनभावन ॥ कालछेपनातहांवसिकीजै ॥ व्रतप्रमानदेवनिसुषदीजे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आग्यामांगिअगस्तिपह । प्रभुजबचलेप्रकाश ॥ अमरवृंदआनंदअति । दुंदुभिवजेअकाश ॥ ५ ॥ कहुंदिनपक्षजुमासकहुं । अनयवर्षकहुंवास ॥ एकादशवित्तेवरष । प्रचरतवननिप्रकाश ॥ ६ ॥ पावनकयौप्रवेशप्रभु । महादंडवनमांझ ॥ तहांवसेनिस्संकतब । सानुजआगमसांझ ॥ ७ ॥ अथगृध्रजटायुमिलन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठा ॥ ॥ कीनौंप्रातप्रयान, तिहिंथलतेरघुवीरतब ॥ सीतानाथसुजान, विविधविलोकतसघनवन ॥ ॥ गाथा ॥ ॥ ज्योंजीवेशरुजिवंमिलिजुगमध्यभागचलिमाया ॥ रामलषनवैदेहीतिहिछविजातगहनवनतापस ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांविलोक्योंगृधइक । दारुनदीरघदेह ॥ कह्योरामसौमित्रिकह । हैकोउराक्षसएह ॥ २ ॥ पर्वतउपरपक्षिसौं । वपुदेष्यौविस्तार ॥ सानुजरामसंभारितहां । करेधनुषटंकार ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ज्याघातदुसहसुनिकैजटायु ॥ यहजान्यौपूरनभयौआयु ॥ ॥ जटायुवाच ॥ ॥ नहींराक्षसहूंराजाधिराज ॥ अवतारसफलभोदरसआज ॥ विस्तारविश्वब्रह्माविष्यात॥ जानहुमरीचिमुनिब्रह्मजात ॥ तिहिंभयौपुत्रकश्यपप्रजाप ॥ उपराजिचराचरसृष्टिआप ॥ विनताभईताकैधर्मवाम ॥ निजपुत्रअरुणभएगरुडनाम ॥ अरुणकेभएहमपुत्रआनि ॥ जगविदितगृध्रद्वैबलीजानि ॥ अतितरुणपंषजबअंगआइ ॥ सीषतउडांनहमकुलसुभाइ ॥ परभातउदितदेष्यौपतंग ॥ संपातिबडोहूंअनुजसंग ॥ उनमानिमांसहमअसनआस ॥ अतिदर्पगएउडिकैअकास ॥ रविकिरणतापहमजरतराम ॥ संपातिभयौऊपरसुताम ॥ हूंहुतौअधस्थसुबच्यौअंग॥संपातिपंषजरिअर्कसंग ॥ संपातिगिरयोकहुंलषिनसोइ ॥ हमभ्राततबहिविजोगहोइ ॥ जीरनजटायुमोहिनामजानि ॥ प्रभुराषिलेहुसिरधरहुपानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोग्रीधसषादशरथनरेश ॥ षेचारदूरदर्शीषगेश॥तबदयौअभयरघुवीरतास ॥ वनरहहुग्रीधइहांनिकटवास ॥ ॥ अथपंचवटीआगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विहरतआएपंचवट । वनवनश्रीरघुवीर ॥ काममनहुंव्हैदेहकरि । सँगरतिप्रियासधीर ॥ १ ॥ पंचवटीतटगोतमी । आएरामअभीत । अनुसासनकारकअनुज । पतनीसंगपुनीत ॥ २ ॥ गंगाउत्तरतटसघन । मिलितरुलतातमाल ॥ बुद्धिवंतलक्ष्मनविमल । शुभगरचीतृणसाल ॥ ३ ॥ पर्णकुटीसुंदरसुषद । दिव्यबनाईदोइ ॥ सीतारामसुजानतहां । वसेमुदितमनहोई॥इकसमयअषिलेशइहां । सोदरलक्ष्मनसंग॥ करतसुचर्चाधर्मकी । आपुनमांझअभंग ॥ ५ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इहांवित्तेत्रयमासवसतसुषपंचवटीवन ॥ इकसमयएकांतरामसीतासमलक्ष्मन ॥ विश्वनिरूपणब्रह्मजीवविज्ञानज्ञानवर ॥ विसदविष्णुमायाविलासपुनिभक्तिमुक्तिपर ॥ विद्याअविद्याप्रतिमाविविध, सोसुनिममजियहोइसुष ॥ सौमित्रकह्योरघुनाथसौं, प्रगटबतावहुपरपुरुष ॥ १ ॥ जोइजोइकह्योअजेवप्रष्णसौमित्रप्रवीनो ॥ सोइसोइउत्तरसमाधानकरुणानिधिकीनो ॥

करलेषनवंदनअनेकउरज्ञानउपज्जीयं ॥ विहितविधानविशेषस्यामसेवारतिसज्जीय ॥ मनटरिअज्ञानअभिमानमति, उचितरहस्यजुउझ्झौ ॥ हस्तामलज्यौंजियहित, सबैतत्वतहांसुझ्झौ ॥ २॥ ॥ अथश्रीनारायनहिनारदमुनिश्रापप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकसमयएकांतथल । बैठेश्रीरघुरांम ॥ वामअंगसीताबनी । मानहुंवनरतिकाम ॥ १ ॥ त्रिकालज्ञरघुनाथतहँ । जानिभविष्यप्रभाव ॥ कारननारदश्रापकौ ॥ सीतहिकहतसुभाव ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पृथ्वीसुभ्रमतनारदऋषीप ॥ इकदिवसआइहिमगिरिसमीप ॥ शुभदेषिदरीतहांअतिविसाल ॥ तरुलताविपुलसंकुलतमाल ॥ सुरसरीनिकटतटपुन्यसंग ॥ भरसाषकुसमगुंजारभृंगं ॥ मनमानितहांनारदमहंत ॥ तिहिंठौरबैठितपकृततुरंत ॥ समचित्तउचितआसनसुसाधि ॥ धरिब्रह्मध्यानलागीसमाधि ॥ निद्रानप्यासभयछुधानाश ॥ तपउग्रभयौअनदेहतास ॥ सुनिनारदतपसातबविशेश ॥ सिंघासनडोलनलगसुरेस ॥ मुनिसाधतजोतपसाअमाप ॥ इंद्रपदलेयमतछीनिआप ॥ संकल्पविकल्पासुनासीर ॥ उपजेचिततातेअतिअधीर ॥ मनमथहिबोलितबदयौमान ॥ दुषकह्योइंद्रअपनौनिदान ॥ संक्रम्यौमदनऋतुराजसंग ॥ भ्रमचित्तकरनमुनिध्यानभंग ॥ सजिचल्यौसैनमनमथसधीर ॥ विष्यातविजितत्रैलोकवीर ॥ संगहिवसंतलीनैसहाइ ॥ अतिदर्पमदनहिमवंतआइ ॥ वनफूलिविविधपल्लवविथार ॥ गुंजारमधुपपरभृतपुकार ॥ वहिसीतमंदसौगंधवात ॥ वसकामजंतुजलथलविष्यात ॥ सुररमणिरचितनाटकसगान ॥ विस्तारविविधवाजित्रविधान ॥ कामहूंप्रपंचअनेककीन ॥ मनभयौनहींननारदमलीन ॥ कछुलग्यौनाहिबलमकरकेत ॥ सोरह्योहारिपरिगहसमेत ॥ मुनित्रासमहाभयमदनमानि ॥ आधीनभयौऋषिचरनआनि ॥ करिविनयसुनारदविदाकीन ॥ हठछोडिकामगयौगर्वहीन ॥ व्रतभयौजबैपूरनविशेस ॥ सिधिपाइउठेनारदऋषेश ॥ कृतसुजससुन्यौआपनौकान ॥ मनमथनभयौजिहिभंगमान ॥ शिवसभाबैठिसुरगनसमाज ॥ तहांआएनारदऋषिनिराज ॥ अहमितिअतिबाढीजितअनंग ॥ पुनिकहतभएसोईप्रसंग ॥ आपनीकीर्तमुषकहीआप ॥ वसमोहऋषिगौरववियाप ॥ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ ॥ शिवकह्यौनारदहिजुतसनेह ॥ अतिगूढसुनहुममंत्रएह ॥ सबविधिसमर्थतुमजोगसिद्ध ॥ पूरनप्रभावत्रयपुरप्रसिद्ध ॥ इहिभाँतिनकहिबोकरहुआन ॥ समदृष्टिसदातुमहौसयान ॥ करीयैंदुराउजोकहैकोइ ॥ हरिसोनकहूंयहप्रगटहोइ ॥ विष्णुजोसुनैयहकहूंवात ॥ तबश्रेयतेहारौनहिनतात ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मदनदहनउपदेसमन । नारदमान्यौनांहि ॥ विधिकृतअंकजुभालबिच । जथाजतनहुनजांहि ॥ ३ ॥ अटनकरतनारदअवनि । सुकरिवीणसन्नाद ॥ हरिगुनगवातहर्षजुत । वर्जितविषयविषाद ॥ ४ ॥ आएइच्छाआपनी । सुषहीनारदसंत ॥ जहाँविराजितविश्वजित । श्रियासहितश्रीकंत ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ करिवंदनऋषिराजकह । पूजाचरनपषारि ॥ दीनौबहुतौदिनदरस । मुनिसौकह्यौमुरारि ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ बैठारिपरसपरकरतबात ॥

विश्वेश्वरनारदसौंविष्यात ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ सुषपाइकरतनारदसुभाइ ॥ जबबैठेहमहिमवंतजाइ ॥ तिहिठौरतप्योमैंउग्रताप ॥ आरंभकरआयौमदनआप ॥ तिहिंदुष्टकरेबहुतेचरित्र ॥ मिलिपुनिसहायऋतुराजमित्र ॥ अनेककरीतितिहिंषलउपाधि ॥ ममछुटीनहिनतदपिसमाधि ॥ नहींचुक्योध्यानमेरौनिदान ॥ षिसिगयौभयो मनमथषिसान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ऐसौकोजननीजन्योआहि ॥ जगअहंकारच्यापैनजाहि ॥ कृतमदनचरितनारदप्रकास ॥ त्रिवकबहुवरजेहुतेतास ॥ अतिअहमितिछायौचितअज्ञान ॥ मुनिनारदबहुरेमोदमान ॥ जगदीसतवैमायाअजीत ॥ भवतव्यहेतप्रेरीअभीत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मायारूपीनगरतिहि । मायारच्यौरसाल ॥ जो जनसतविस्तारतिहिं । बागतडागविसाल ॥ ७ ॥ सबसमृद्धिसंजुतशुभग । नगरवसतनरनारि ॥ कर्मपरायणधर्मधुर । चैनवर्णरहिचारि ॥ ८ ॥ सबसुषभाजननगरशुभ । सोहरिपुरहिसमान ॥ नीतिनिपुनातिहिंपुरनृपति । राजासीलनिधान ॥ ९ ॥ नृपताहि कन्यासीलनिध । वहलक्ष्मीअवतार ॥ ताहिनव्याहैअवरकोउ । एकविनांकरतार ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहिंपुरतबनारदमुनिआए ॥ भ्रमतस्वइच्छाभूमिसुभाए ॥ सबसुरेशसमविभवविलोकी ॥ तहांमनुसोभावसततलोकी ॥ अवनीपगृहनारदमुनिआए ॥ शीलनिधाननृपतिउठिधाए ॥ ऋषिहिजथाविधिपूजेराजा ॥ सबविधिकरेप्रणामसमाजा ॥ इहांएकांतबेठिनृपनारद ॥ वातैकरतसुबुद्धिविसारद ॥ नृपकन्याजुशीलनिधिनामा ॥ विश्वमोहनीविष्णुकीवामा ॥ नृपपुत्रीतहांनिकटबुलाई ॥ दुहितालैनारदहिदिषाई ॥ ॥ राजाशीलनिधानउवाच ॥ ॥ तुमत्रकालदरसीऋषिराया ॥ देषहुयालक्षनकरिदाया ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ताकीकररेषामुनिदेषी ॥ विकलभयौद्विजरूपविसेषी ॥ जेगुनशीलकुंवरिकेजान ॥ नारदतेनृपसौंनबषानै ॥ राजोवाच ॥ शीलनिधानकह्यौतबराजा ॥ हमइहिंसुतास्वयंवरसाजा ॥ नारदउवाच ॥ नारदकह्यौसुज्ञाननिहारी ॥ रचहुस्वयंवरवेगिकुमारी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिनारदगोआज्ञापाइ ॥ रह्योसीलनिधिछबिहिलुभाई ॥ वाजितनृपतिद्वारघनवाजे ॥ कीयआरंभस्वयंवरकाजे ॥ न्यौतिन्यौतिभुवभूपबुलाए ॥ सभाबनाईमंडपछाए ॥ विविधवितानमंचविस्तारे ॥ जथाजोग्यसंभारसवारे ॥ भ्रमतऋषीसविकलचितभारी ॥ मनमहवसिरहीराजकुमारी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ भयौविवसमुनिचिंताभारी ॥ किहिविधिपाऊराजकुमारी ॥ दिनथोरेतपकर्मदुरंतर ॥ बनैनजतनयहौकहिमुनिवर ॥ औरउपायसुममइकआही ॥ तातैअबैबनाऊंताही ॥ जाचौंरूपविष्णुकोजाई ॥ भूपसुताजिहिवरैलुभाई ॥ कालविषमरक्षककरुणामय ॥ सदाभएआतुरकहअतिसय ॥ यहविचारिहरिरूपधारिउर ॥ अटवी विकटभ्रमतमुनिआतुर ॥ विरतिविसारिविकलभयौमुनिवर ॥ कामलोभहतगतलज्जाउर ॥ उपज्यौमोहभईद्युतिषीना ॥ दीनदयालदरशतबदीन्हा ॥ नारदभ्रमतमिलेनारायण ॥ परमपुरुषजेभगतपरायण ॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ नारदहरिसौंकीन्हनिहोरा ॥ ममप्रभुकरहुकाजइकमोरा ॥ ॥ श्रीहरिउवाच ॥ ॥ कहिहरितबैकहौमुनिकारन ॥

महामनोरथजोइधाय्यौमन ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ शीलनिधाननृपतिकीकन्या ॥ नामशीलनिधिरूपसुधन्या ॥ ताकौपितास्वयंवरमांड्यौ ॥ मैवहनगरनिकटहैछांड्यौ ॥ देवरूपअपनौमोहिदीजै ॥ कारनकाजसफलसबकीजै ॥ रमारूपवहरूपरसाला ॥ मेरैहिउरमेलैवरमाला ॥ भामिनीछांडिसबैभुवभूपति ॥ मोहीवरैयहैउपजैमति ॥ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ हसिबोलेहरिआरतिहरिहूं ॥ तबहितहोइसुषैसबकरिहूं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ धरनीधरभएअंतरध्याना ॥ मुनिनारदसोईनिश्चयमाना ॥ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अर्थीदोषनदेषैताही ॥ आगैकछुभवतव्यजुआही ॥ विष्णुस्वमायाप्रबलविचारी ॥ होइनइच्छामृषाहमारी ॥ ग्रस्यौरोगजौंकुपथिमंगावै ॥ वैद्यनदेवातनिवौरावै ॥ मुनिभौमूढभ्रष्टवसमाया ॥ छद्मछांडिमोहिकरिविनछाया ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कृपानिधानकौतुकीकेशव ॥ भयभंजनतारनसागरभव ॥ नृपतिस्वयंवररचित्रतलीनै ॥ जथाप्रकारसुक्रमजुतकीनै ॥ अषिलनरेसअवनिकेआए ॥ विहितजोग्यमंचनिबैठाए ॥ धरनीधरमानुषतनधारी ॥ महामंचतहांबैठमुरारी ॥ देवसमीपतबैमुनिनारद ॥ बैठेहरषितबुद्धिविशारद ॥ विकसहिंफूलहिछबिहिबढावहि ॥ विष्णुसुदेषिमनहिंमुसकांवँहि ॥ उकसिउकसिदेषततिहिंआगम ॥ भामिनिवसीजुमनछायौभ्रम ॥ इहांसीलनिधिकन्याआइ ॥ बिचमंडपतनवसनबनाइ ॥ रूपअलौकिककरवरमाला ॥ वंकविलोकनिनयनविशाला ॥ कन्यासोनारदअवलोकी ॥ ऋषिकीमनसारहैनरोकी ॥ उकसिउकसिबैठहिंअरसांहीं ॥ मुनिकैअतिअहमितिमनमांही ॥ उपज्योरूपगर्वनारदअति ॥ परमस्वरूपदयौमोहिश्रीपति ॥ ऋषिकैनिश्चयरूपरसाला ॥ वरिहैसबनिछांडिमोहिबाला ॥ महामनोरथमुनिमनमांहीं ॥ चितैचितैकन्याललचांहीं ॥ कपिआकृतिमुषनारदकीनौ ॥ देवरूपअतिनिंदितदीनौ ॥ कीसवदनमुनिजानिनकोई ॥ सुतानृपतिकीदेषतसोई ॥ नारदकौंजबबालनिहाय्यौ ॥ वैभवरसउरमहँविस्तार्यौ ॥ नारदबानरवदननिहारी ॥ करिगलांनिमुसकानिकुमारी ॥ इतउतहेरिविष्णुदिसआई ॥ अंगपुलकसात्विकरसछाइ ॥ दीनदयालविष्णुजबदेषे ॥ प्रेमनिधानप्रानसमपेषे ॥ जगकर्ताहर्ताजीयजानैपतिप्राचीनकुंवररिपहिंचांनैं ॥ वदनविलोकितनयनविसाला ॥ विष्णुकंठमेलीवरमाला जयजयभयौस्वयंवरजीत्यौ ॥ विधिसुतकौंअभिलाषजुवीत्यौ ॥ विष्णुविजयभयौमंगलबाजे ॥ सीलनिधाननृपतिकृतसाजे ॥ जथावेदविधिव्याहविचारी ॥ कर्यौपाणिग्रहराजकुमारी ॥ हरपठएगनकौतुकमनमहँ ॥ तेद्विजरूपधरैदेषततहँ ॥ दुहूंगणनिअद्भुतयहदेषा ॥ विधिसुतमर्कटवदनविशेषा ॥ प्रभुउद्वाहभयौजबपूरन ॥ गगननिसानहरषिदीयसुरगन ॥ विदासमंगलकृतवरवरनी ॥ करीनृपतिनिगमागमकरनी ॥ नारदभएनिराशषिसानै ॥ मनअमरषअतिहीमुरझानै ॥ हृदयअधीरभएऋषिराई ॥ गांठछुतेमनुनिधिहिगमाई ॥ विकलभएधावतऋषिवनवन ॥ उरअज्ञानबढ्यौअवअनगन ॥ हरगनहिरतसंगहरषानै ॥ जेद्विजरूपननारदजानै ॥ प्रगटजलाश्रयइहांमुनिपायौ ॥ आचरीसंध्याहितआयो ॥ ॥ गणउवाच ॥ ॥ आयनिकटयहगननिउचारी ॥ कहाभईजौरा

जकुमारी ॥ यहमूरतितजिरूपरसाला ॥ मेलीनिरगुनउरवरमाला ॥ नृपगृहजन्मतदपि बुधिनाहीं ॥ मूढनयहसमझीमनमांही ॥ सुभगआपनौवदनगुसांई ॥ झाषिनीरानिरषहु धौझांई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भवगनयोकहिततछनभागे ॥ नारदछबिहिनिहारन लागे ॥ दुषजुतऋषिजवजलमहदेष्यौ ॥ वांनरकौमुपआपविशेष्यौ ॥ विकृताननजब कीसविलोक्यौ ॥ रोषवढ्यौउररहतनरोक्यौ ॥ वनवनडोलतनारदऋषिवर ॥ धरिउर ध्यानस्वरूपधरनिधर ॥ प्रभुआरतवंधूप्रतिपालक ॥ अषिलअविद्यामूलउषालक ॥ हरिनारदकहंदुषितनिहारे ॥ प्रीयाशीलनिधिजुतपाउधारे ॥ दंपतिदैवजबैमुनिदेषे ॥ वढ्यौअमितउररोषविसेषे ॥ त्रिकलदसाहिभोगवतऋषिवर ॥ अतिहिजरतक्रोधानलअंतर ॥ परमपुरुषतिहिमुनिपहिचांनै ॥ महारोषउफनतमनमानै ॥ ॥ नारदउवाच ॥ बोलेइहांनारदविषबानी ॥ ठगईयहैसदातुमठानी ॥ बलिव्रतानिवह्यौतउगहिबांध्यौ ॥ सांचहूंसौकपटैहितसांध्यौ ॥ मथतसमुद्रविथारीमाया ॥ डहकिसुरासुरसाचदिषाया ॥ भक्तशंभुसबदनुजभुलाए ॥ प्रानभ्रमाइमहाविषप्याए ॥ करनीकपटसुरनिसौकीनी ॥ लक्ष्मीअरुमणिआपहिलीनी ॥ गोविंदअवहूंकितकगनाऊ ॥ प्रभुचरित्रनिअंतनपाऊं महाप्रबलयहरावरीमाया ॥ नहीमुहिवचींविगोइनचाया ॥ डहकिडहाकिपुनिपंथदिषावत ॥ प्रभुकहींयैयामहंकापावत ॥ परमस्वतंत्रनहींकोउसिरपर ॥ भावतमनसोइकरत विशंभर ॥ आपनिरंकुशकरतउपाधे ॥ सोतुमअवलौंकाहूंमसाधे ॥ विश्वठग्यौतुमको उनबाचा ॥ सोपरिपाकलहहुअबसाचा ॥ जोवपुधरिममकाजबिगारा ॥ आपलेहुसोइनर अवतारा ॥ वनिताकारनमोहिविगोयौ ॥ रह्यौनिरासमहादुषरोयौ ॥ तुमतिहिवनिताविरहविशेषी ॥ दुसहआपभुक्तहुदुषदेषी ॥ करिकृपामोहिकपिमुषकीना ॥ निधिमागतज्यौ पाथरदीना ॥ तेइकपिहोहिसहायतिहारी ॥ निहचैतवपावहुतुमनारी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हरितबमायाहांकीहसिकै ॥ विश्वनचावतिजोअपवसिकै ॥ माधवप्रेरिहुतीजुमाया ॥ सोइनिवारिनारदसमझाया ॥ नारदमनसंभ्रमहौछायौ ॥ विस्मयमिव्यौकलेशविहायौ ॥ पाइनासतमअर्कप्रकासे ॥ नारदउरसंभ्रमत्यौंनासे ॥ नारददेष्यौफेरिनिहारी ॥ नहिंतहां कमलाराजकुमारी ॥ नारदमनतहांभयौमलीना ॥ भयउपज्यौकरुणारसभीना ॥ ॥ नारदउवाच ॥ जगतईसप्रणतारतिभंजन ॥ ज्ञाननिधानअज्ञानहिंगंजन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नारदहरिचरणनिसिरनायौ ॥ दीनभयौनिजदोषदिषायौ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ महाअपराधछमहुसोमेरो ॥ रिसबसकहिदुरवादघनेरो ॥ पापमिटावहुसोप्रभुपावन ॥ नयउपदेशकअनयनसावन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विष्णुनारदहिहितपरबोध्यौ शंभुभजनअभिअंतरशोध्यौ ॥ ॥ श्रीहरिउवाच ॥ ॥ मृषावचनतुमभवकेमानै ॥ भौउपहासअषिलअपमानै ॥ भवउपदेशतुमहिनहिभायौ ॥ प्रगटयहैकरनीफलपायौ ॥ भजहुसहस्रनामभवकेरे ॥ तबअपराधमिटहिगेतेरे ॥ हरियौंकहिभएअंतरध्यानहि ॥ नारदगएकरतगुनगानहि ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ नारदआपदयौनारायन ॥ प्रगटसह्यौसोइधर्मपरायन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ मुनिसीताइहिंहेतआपनारदमुनिदीनौ ॥ कार

नकरनसमर्थहरिहुअंगीकृतकीनो ॥ तातेंअबमनुजावतारहमलयोनीतिहित ॥ सोभुग्गइ इहिंजन्मअसहिसहिहैंवियोगइत ॥ सोइसमयबन्योअबचिंतयह, अप्रयोगउनमानीये ॥ निर्धारकरहुनारदवचन, जगअमोघएजानीये ॥ १ ॥ हितउपाययहकरहुअनलमहराष हुआतम ॥ वहतवयीहरआहिसुषहितहांवसहुप्रीतिसम ॥ छायारूपसरीररहहुममसंग निरंतर ॥ करिहैंहमसुरकाजपुनिजुतुममिलहुप्रेमपर ॥ सीयकीनोमंत्रप्रमानसोइ, निजव पुअनलहिआश्रयो ॥ सुरराजटर्योजीयसोचसुर, भुवनत्रयजयजयभयो ॥ २ ॥ दोहा ॥ ॥ कोजानैनरहरसुकवि । प्रभुचरित्रअनपार ॥ कारनकरनसमर्थहारि । कृपासिंधु करतार ॥ ॥ अथशूर्पनषाप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहचरित्रअवधेशको । स माझिनलषनसुजान ॥ अंबुजभवहूतेअगम । नरहरप्रभूनिदान ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ पंचवटीवनरामवसतनिस्संकवीरवर ॥ विषदधराधरवृक्षनिगरफलफूलनिरंतर ॥ नदनि झरभरनीरप्रानवनचरसुषपावत ॥ तहांमयूरतंडवितसिंघचहुघांसब्दावत ॥ मिलिकुंजपुं जगुंजतमधुप, सुषदविहंगमरवसरस ॥ वनवनविहारवंछितविहित, वित्ततकालविलासव स ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीतासहजसुगंधतें । वासितभएदिगंत ॥ महिमावनसौरभ मिटी । विस्मयभयोवसंत ॥ २ ॥ रावनभग्नीराक्षसी । सूर्पनषातिहिनाम ॥ वनवनरूपअ नेकबनि । करतविहारसकाम ॥ ३ ॥ इक्कदिवससाआसुरी । अटवीदंडकआइ ॥ सौरभ अद्भुतवातवस । सोतिहलष्योसुभाइ ॥ ४ ॥ जैसेलावतिदूतिका । परत्रीयवचनविलास ॥ सूर्पनषहिलाईसरस । त्योंहीसीयवपुवास ॥ ५ ॥ पापनिकीनोगंधपथ । पंचवटीपरवेस ॥ चरनअंकरघुवीरके । देषेचिन्हसुदेस ॥ ६ ॥ वज्रांकुशध्वजसौविमल । रंजितपद्मसुरेष ॥ चरनचिन्हअवलोकिचित । बढिअभिलाषविशेष ॥ ६ ॥ अतिसोभाउफनातिअंग । वे षविचित्रबनाय ॥ थितबैठेएकांतथल । अविलोकेरघुराय ॥ ७ ॥ भ्रातपितामातुलहुसु त । दिव्यरूपनरदेषि ॥ त्रीयाअनंगप्रभावतें । व्याकुलहोतिविशेषि ॥ ८ ॥ ॥ छंदवे ताल ॥ सोनिकटआइनिहारिसुंदररामराजीवनैन ॥ करिहाउभाउकटाक्षक्रमतहांबोलिर समयबैन ॥ ॥ शूर्पनषावाक्यं ॥ ॥ अविवाहितामोहिजानिअद्भुतअमितसोभाअं ग ॥ तवसरनजाज्योकामपीडितअभयदेहुअभंग ॥ . ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कहिहेत अजहुंकुमारिकातुममर्मपूछ्योराम ॥ अतिअंगअंगअनंगउद्भवभइसजज्ञाभाम ॥ ॥ शूर्पनषावाक्यं ॥ ॥ ममसहृशवरत्रैलोकमध्यजुनहिंनकोऊवनिहारि ॥ सूर्पनषरीसुंदरी कृतरहीयाहिकुमारि ॥ सुरलोकविजयीभ्रातमेरौसीसदशभुजवीस ॥ रविचक्रआनअषंड रावनसबैमानतसीस ॥ भटकुंभमाईजिहिंबिभीषनसुरनिदेतसंताप ॥ अरुमेघनादकुमार उधृतइंद्रजेताआप ॥ हमहिसदशसंगसुंदरकृतउचितकरतार ॥ भजिमोहिभुक्तहुप्रेमभा वनसबैसुषसंसार ॥ तुमकौनहौइहांकौनकारनभ्रमतवनअनभीत॥प्रतिअंगलक्षनराजप्र तिमाविषयहविपरीत॥तबरामहसितिहिदयोउत्तरमोहिजानिसबाम॥व्रतएकपतनीअर्कवं शीरामहैममनाम ॥ शुभधर्मपतनीनामसीताजनकनंदिनीजान ॥ भामिनीप्रानहुतेजुवल्ल भनिरतसेवनिदान ॥ दुषदुसहदारुणहृदयदाहकसौतिकासैबिषाद ॥ सहिनहिनसकिहौ

सालसुंदरिपुनिह्वैहोइप्रमाद ॥ अवधेसकेसुतपिताआज्ञाइहिंविषमवनआइ ॥ द्विजदीन
रक्षाकरतडोलतदुष्टमारतडाइ ॥ लघुभ्रातहैममसंगलक्ष्मनमहावीरअवाम ॥ तिहिंजाइ
अबतुमभजहुतासंगकरहुपूरनकाम ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबजायलक्ष्मननिकट
ततछनकरेप्रेमप्रकार ॥ करिवंकदृष्टिकटाक्षकीनेमनविकलवसमार ॥ ॥ लक्ष्मनउवा
च ॥ ॥ लषिचित्तहासितिहिकह्योलक्ष्मनस्वामिवेहमदास ॥ प्रभुहिभजिनितलेहुप्रभुता
संगममउपहास ॥ सुषखानपाननसयनसज्जासमयनहिंअबकास ॥ वसचैनकहूंनस्वतं
त्रवसिबौदुष्षभाजनदास ॥ नहिपराधीनहिसुषनिरंतरमिलिनाभिक्षुकमान ॥ भक्तिन
हिविभिचारभाजनजसनलोभीजान॥व्यसनीनधनतपसिद्धिमद्यपनियतगुनअभिमान ॥
आकासदुहिज्योंदुग्धआसानहिनपूरिनिदान ॥ सोभजहुप्रभुतुमरामसुंदरसबहिभांति
सुजान ॥ इतउतनडोलहुचित्तअपनोभानकुलतजिभान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
छंदपधरी ॥ ॥ पुनिआईदुष्टारामपास ॥ उफनातिरोषडारतिउसास ॥ ॥ शू
र्पनषावाक्यं ॥ ॥ मोहिकहाभ्रमावतदृथामूढ ॥ गुनज्ञानप्रकासतहसतगूढ ॥ ॥
छंदवेताल ॥ ॥ तिहिलष्योनरएमोहिडहकतविविधतर्कवनाय ॥ इनसंगहैजोजु
वतिअद्भुतग्राहिलैहूंषाय ॥ हठछाडिमेरौकह्योकरिहैअंततरुनिअभाव ॥ दुषरोइमरि
हौकितौदुस्सहवनैयहपैदाव ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिरूपदारुणदुष्टका
मिनिअरुणलोचनआकुली ॥ मुषफारिदसनकरालदमकतिचकितसीतादिसिचलि ॥
तिहिंदेषिसीताभीततबपतिदृष्टिआइपुनीत॥दृगसैनआज्ञाअनुजकहदैमुषहसेमषमीत ॥
सरतिष्षलैकरसिषासंग्रहिकाटिनाशाकान ॥ दैलषनमूडविठारिदीनीभजतरूपभयान ॥
गिरिगुहाजैसेंधातगेरिकश्रवतनिर्झरसंग ॥ इहिभांतिरुधिरप्रवाहअविरलअरुणताप्रति
अंग ॥ दोहा ॥ नासाश्रवननसाइकै । प्रगटकर्मफलपाय ॥ आक्रंदतिचावतिअधर ।
पापनिगईपलाय ॥ कवित्त ॥ षरदूषणषलत्रिशिररहतथानैजहाँराक्षस ॥ सुभटसूरतिन
संगदुर्गमरनसहसचतुदर्श ॥ विप्रामिषभोजनविरूपवासिनिकटदंडवन ॥ विकृताननज
नपदविनाशप्रतिमाजुअपावन ॥ तहाँगईसुपनषरातवहिरुदनकरातिविकरालरुष ॥ परज
र्योसुषरउरत्रासपरिमहाभयानकदेखमुष ॥ षरादिकउवाच ॥ षरदूषणपूछ्योअषमउर
वाढ्योदुषआइ ॥ करसुखहिएहालकिहिसोममवेगिसुनाइ ॥ सूर्पनषावाक्यं ॥ वनदडं
कमहपंचवट । वसतउभयमुनिबाल ॥ आहिनिरंकुशधीटअति । हमहिकरेएहाल ॥ ११ ॥
धिकपौरुषतवरेअधम । कुलराक्षसधिक्कार ॥ वीरकहावतवीरपुन । हाथधरतहथियार ॥ क
विरुवाच॥सोसुनिषरदूषणत्रिशिर । दुष्टभएउरदाह ॥ कोपेकालकरालमन ।भईसनाहसना
ह ॥ छंदउधोर ॥ सन्नद्धआयुधसाजि ॥ गिरिदेहघनसेगाजि ॥ धरिलैहुमारहुधाय ॥
जिनिभाजिकैषलजाय ॥ रथसाजिअपनैरंग ॥ अतिक्रोधचलिअनभंग ॥ संक्रम्योराक्ष
ससेन ॥ मिलिषेहनभमनुमेन ॥ षैलोकचढिपुरषेह ॥ हुवहक्कचक्कीसंदेह ॥ भगिनीसुपा
र्पहिभीन ॥ हुवअग्रनाशाहीन ॥ सोअशुभरूपसुभाय ॥ अनिमित्तसबमिलिआय ॥ नि
शिचारमानसनांहि ॥ जमरज्जुबंधेजांहि ॥ सुनिघोररवनीसान ॥ जुधरामनिश्चयजान ॥

कसिजाटासुकटसकोप ॥ उच्छाहमुषरविस्रोप ॥ वनचीरमध्यविभाग ॥ कोदंडचाढिक राग ॥ कसियकटितूनीर ॥ सरस्रमितपानिसधीर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ सुनिलक्षनरा क्षससेन ॥ सबनिकटआइसुषेन ॥ लैजाहुसीतहिलाल ॥ वनअद्रिओटविसाल ॥ वनि ताहिरक्षावीर ॥ सबभाइकरहुसधीर ॥ इहांकाढिअनुजअभंग ॥ रहेरामरुपिरणरंग ॥ कृत धनुषगुणटंकार ॥ भवभूमिटारनभार ॥ रणरच्यौजहांरघुराइ ॥ अनेकराक्षसआइ ॥ मि लिमच्यौअतिसंग्राम ॥ रसवीरक्रीडतराम ॥ इहिंओररराघवएक ॥ उतभिरतषलअन्नेक ॥ परिशस्त्रअस्त्रप्रहार ॥ घनमारअसुरसँघार ॥ रघुनाथसरहतवीर ॥ संग्रामगिरतसधीर ॥ बढिभूतचरितविथार ॥ परिएकउठतअपार ॥ तेस्रजतमायावंत ॥ उठिरुंडमुंडअनंत ॥ स रसक्तितोमरशूल ॥ मिलिउपलवृक्षसमूल ॥ परिरामसीसप्रहार ॥ मुषसब्दमारहीमार ॥ बहुपरतउठतकबंध ॥ अतिभिरतमरतमदंध ॥ कछुकालक्रीडाकीन ॥ पुनिरोषिरामप्रवी न॥ जोइदुष्टमायाजाल ॥ करिकरतरूपकराल ॥ सोइकरतनाशसधीर ॥ बढिरोषरणरघु वीर ॥ ज्यौंउदयभानअनंत ॥ तमनाशहौततुरंत ॥ सररामअनलसमूल ॥ तिहिं जरतराक्षसतूल ॥ व्ययजलदज्यौंवसवात ॥ बढिगगनसघनविलात ॥ खरतृषिरदूष णषेत ॥ सबगिरेसेनसमेत ॥ भएनासअसुरअभंग ॥ ज्यौंशलभदीपकसंग ॥ अं त्रावलीग्रहिंअंत ॥ तहांग्रीधगगनभ्रमंत ॥ ग्रहिडोरिचंगउडाइ ॥ शिशुप्रेतमनहुसु भाइ ॥ कहिरामरामजुकोइ ॥ हठिमरेमुक्तसुहोइ ॥ रणजीतिठाढेराम ॥ सुरपुहपवर षिसंग्राम ॥ सुषभयौविबुधसमाज ॥ रणदेषिकोशलराज ॥ जयगगनदुंदुभिवाजि ॥ सुरनिरषिसिंदनसाजि ॥ हितनृपतपलचरहोइ ॥ सबकहतजयजयसोइ ॥ पलपूरजो गिनिपत्र ॥ तेइत्रिपतगावततत्र ॥ पुनिभूतप्रेतपिशाच ॥ नभचारमंडितनाच ॥ कहि जयतिरघुकुलकेत ॥ सुरराजसुरनिसमेत ॥ इहांलषनप्रमुदितआइ ॥ सीयसंगमिल तसुभाइ ॥ अतिहर्षसीताआनि ॥ परसेजुपतिक्षतपानि ॥ घटमिटीपीडाघाइ ॥ सु षउपाजिरामसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहतविजयजसरामकौ । गएविबुधनिजग्रेह ॥ मोषनग्रहरावनमरन । समझ्योनिस्संदेह ॥ १४ ॥ नरहरप्रभुक्रीडानिरषि । सुरमुनि भएसहास ॥ आपुनठाढेरणअजिर । निषिलशत्रुकियनाश ॥ १५ ॥ ॥ कवित्त ॥ षरदूषणषलतृशिरसुभटसंग्रामसँघारीय ॥ रहसचतुर्दशअसुरसंगमिलिषेतजुमारीय ॥ पुरसुरेससानंदघरनिवाजेनिसानघन ॥ भौआगमभवतव्यविषमभूवभारविनाशन ॥ सं ग्रामविजयनरहरसुकवि, विसदकीर्तिजगवित्थरीय ॥ अदभूतचरित्रपौरुषअतुल, कोप समरक्रीडाकरीय ॥ इतिखरदूषणवधप्रसंगः ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

॥ अथसीताहरणप्रसंगप्रारंभः ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अशुभजुरूपअमंगलिक । हैश्रुतनाशाहीन ॥ आईरावनपहँइहां । निर्लजवेषनवीन ॥ १ ॥ सुतबंधवमंत्रीसुभट । बैठेसभावनाइ ॥ दशशिरकौदीनौदरश । इहांअचानकआइ ॥ २ ॥ कंटकवहिनिविलोकिकैं । मनम हभयौमलीन ॥ पूंछिउस्यौतुहिपापनी । कौनयहैगतिकीन ॥ ३ ॥ विष्णुकुवेरक

सालसुंदरिपुनिहुहोइप्रमाद ॥ अवधेसकेसुतपिताआज्ञाइहिंविषमवनआइ ॥ द्विजदीन रक्षाकरतडोलतदुष्टमारतडाइ ॥ लघुभ्रातहैममसंगलक्ष्मनमहावीरअवाम ॥ तिहिंजाइ अबतुमभजहुतासंगकरहुपूरनकाम ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबजायलक्ष्मननिकट ततछनकरेप्रेमप्रकार ॥ करिवंकदृष्टिकटाक्षकीनेमनविकलवसमार ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ लषिचित्तहसितिहिकह्योलक्ष्मनस्वामिवेहमदास ॥ प्रभुहिभजिनितलेहुप्रभुता संगममउपहास ॥ सुषखानपाननसयनसज्जासमयनहिंअबकास ॥ वसचैनकहूंनस्वतंत्रवसिबौदुष्षभाजनदास ॥ नाहिपराधीनहिसुषनिरंतरमिलिनभिक्षुकमान ॥ भक्तिनहिविभिचारभाजनजसनलोभीजान॥व्यसनीनधनतपसिद्धिमद्यपनियतगुनअभिमान ॥ आकासदुहिज्यौंदुग्धआसानहिनपूरिनिदान ॥ सोभजहुप्रभुतुमरामसुंदरसबहिभांति सुजान ॥ इतउतनडोलहुचित्तअपनोभानकुलतजिभान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिआईदुष्टारामपास ॥ उफनातिरोषडारतिउसास ॥ ॥ शूर्पनषावाक्यं ॥ ॥ मोहिकहाअमावतवृथामूढ ॥ गुनज्ञानप्रकासतहसतगूढ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ तिहिलष्यौनरएमोहिडहकतविविधतर्कवनाय ॥ इनसंगहैजोजुवतिअद्भुतयाहिलैहूंषाय ॥ हठछाडिमेरौकह्योकरिहैअंततरुनिअभाव ॥ दुत्तरोइमारिहौंकितौदुस्सहवनैयहपैदाव ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिरूपदारुणदुष्टकामिनिअरुणलोचनआकुली ॥ मुषफारिदसनकरालदमकतिचकितसीतादिसिचलि ॥ तिहिंदेषिसीताभीततबपतिदृष्टिआइपुनीत॥दृगसैनआज्ञाअनुजकहदैमुषहसेमषमीत ॥ सरतिष्षलैकरसिषासंग्रहिकाटिनाशाकान ॥ दैलषनमूडविठारिदीनीभजतरूपभयान ॥ गिरिगुहाजैसैंधातगैरिकअवतानिर्झरसंग ॥ इहिभांतिरुधिरप्रवाहअविरलअरुणताप्रतिअंग ॥ दोहा ॥ नासाश्रवननसाइके । प्रगटकर्मफलपाय ॥ आक्रंदतिचावतिअधर । पापनिगईपलाय ॥ कवित्त ॥ षरदूषणषलतृशिररहतथानेजहाँराक्षस ॥ सुभटसूरतिन संगदुर्गमरनसहसचतुदर्श ॥ विप्रामिषभोजनविरूपवसिनिकटदंडवन ॥ विकृताननजनपदविनाशप्रतिमाजुअपावन ॥ तहाँगईसुपनषरातवहिरुदनकरतिविकरालरुष ॥ परजस्यौसुषरउरत्रासपरिमहाभयानकदेखमुष ॥ षरादिकउवाच ॥ षरदूषणपूछ्यौअषमउरवाढ्योदुषआइ ॥ करसुखहिएहालकिहिसोममवेगिसुनाइ ॥ सूर्पनषावाक्यं ॥ वनदंडकमहपंचवट । वसतउभयमुनिबाल ॥ आहिनिरंकुशधीटअति । हमहिकरेएहाल ॥ ११ ॥ धिकपौरुषतवरेअधम । कुलराक्षसधिक्कार ॥ वीरकहावतवीरपुन । हाथधरतहथियार ॥ कविरुवाच॥सोसुनिषरदूषणतृशिर । दुष्टभएउरदाह ॥ कोपेकालकरालमन ।भईसनाहसनाह ॥ छंदउधोर ॥ सन्नद्धआयुधसाजि ॥ गिरिदेहघनसेगाजि ॥ धरिलैहुमारहुधाय ॥ जिनिभाजिकैषलजाय ॥ रथसाजिअपनेरंग ॥ अतिक्रोधचलिअनभंग ॥ संक्रम्यौराक्षससेन ॥ मिलिषेहनभमनुमेन ॥ षैलोकचढिषुरषेह ॥ हूवहक्कचक्कीसंदेह ॥ भगिनीसुपापहिभीन ॥ हुवअग्रनाशाहीन ॥ सौअशुभरूपसुभाय ॥ अनिमित्तसबमिलिआय ॥ निशिचारमानसनांहि ॥ जमरजुबंधेजांहि ॥ सुनिघोररवनीसान ॥ जुधरामनिश्चयजान ॥

कसिजाटामुकटसकोप ॥ उच्छाहमुषरविस्रोप ॥ वनचीरमध्यविभाग ॥ कोदंडचाढिक राग ॥ कसियकटितूनीर ॥ सरस्रमितपानिसधीर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ सुनिलक्षनरा क्षससेन ॥ सबनिकटस्राइसुषेन ॥ लैजाहुसीतहिलाल ॥ वनस्रद्रिस्रोटविसाल ॥ वनि ताहिरक्षावीर ॥ सबभाइकरहुसधीर ॥ इहांकाढिस्रनुजस्रभंग ॥ रहेरामरूपिरणरंग ॥ कृत धनुषगुणटंकार ॥ भवभूमिटारनभार ॥ रणरच्यौजहांरघुराइ ॥ स्रनेकराक्षसस्राइ ॥ मि लिमच्यौस्रतिसंग्राम ॥ रसवीरक्रीडतराम ॥ इहिंस्रोरराघवएक ॥ उतभिरतषलस्रन्नेक ॥ परिशस्त्रस्रस्त्रप्रहार ॥ घनमारस्रसुरसँघार ॥ रघुनाथसरहतवीर ॥ संग्रामगिरतसधीर ॥ बढिभूतचरितविथार ॥ परिएकउठतस्रपार ॥ तेस्त्रजतमायावंत ॥ उठिरुंडमुंडस्रनंत ॥ स रसक्तितोमरशूल ॥ मिलिउपलवृक्षसमूल ॥ परिरामसीसप्रहार ॥ मुषसब्दमारहीमार ॥ बहुपरतउठतकबंध ॥ स्रतिभिरतमरतमदंध ॥ कछुकालक्रीडाकीन ॥ पुनिरोषिरामप्रवी न॥ जोइदुष्टमायाजाल ॥ करिकरतरूपकराल ॥ सोइकरतनाशसधीर ॥ बढिरोषरणरघु वीर ॥ ज्यौंउदयभानस्रनंत ॥ तमनाशहौततुरंत ॥ सररामस्रनलसमूल ॥ तिहिं जरतराक्षसतूल ॥ व्ययजलदज्यौंवसवात ॥ बढिगगनसघनविलात ॥ खरतृषिरदूष णषेत ॥ सबगिरेसेनसमेत ॥ भएनासस्रसुरस्रभंग ॥ ज्यौंशलभदीपकसंग ॥ स्रं त्रावलीग्रहिंस्रंत ॥ तहांग्रीधगगनभ्रमंत ॥ ग्रहिडोरिचंगउडाइ ॥ शिशुप्रेतमनहुसु भाइ ॥ कहिरामरामजुकोइ ॥ हठिमरेमुक्तसुहोइ ॥ रणजीतिठाढेराम ॥ सुरपुहपवर षिसंग्राम ॥ सुषभयौविबुधसमाज ॥ रणदेषिकोशलराज ॥ जयगगनदुंदुभिवाजि ॥ सुरनिरषिसिंदूनसाजि ॥ हिततृपतपलचरहोइ ॥ सबकहतजयजयसोइ ॥ पलपूरजो गिनिपत्र ॥ तेइत्रिपतगावतत्तत्र ॥ पुनिभूतप्रेतपिशाच ॥ नभचारमंडितनाच ॥ कहि जयतिरघुकुलकेत ॥ सुरराजसुरनिसमेत ॥ इहांलषनप्रमुदितस्राइ ॥ सीयसंगमिल तसुभाइ ॥ स्रतिहर्षसीतास्रानि ॥ परसेजुपतिक्षतपानि ॥ घटमिटीपीडाघाइ ॥ सु षउपाजिरामसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहतविजयजसरामको । गएविबुधनिजग्रेह ॥ मोषनग्रहरावनमरन । समझ्यौनिस्संदेह ॥ १४ ॥ नरहरप्रभुक्रीडानिरषि । सुरमुनि भएसहास ॥ स्रापुनठाढेरणस्रजिर । निषिलशत्रुकियनाश ॥ १५ ॥ ॥ कवित्त ॥ षरदूषणषलतृशिरसुभटसंग्रामसँघारीय ॥ रहसचतुर्दशस्रसुरसंगमिलिषेतजुमारीय ॥ पुरसुरेससानंदघरनिवाजेनिसानघन ॥ भौस्रागमभवतव्यविषमभूवभारविनाशन ॥ सं ग्रामविजयनरहरसुकवि, विसदकीर्तिजगवित्थरीय ॥ स्रदभूतचरित्रपौरुषस्रतुल, कोप समरक्रीडाकरीय ॥ इतिखरदूषणवधप्रसंगः ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

॥ स्रथसीताहरणप्रसंगप्रारंभः ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्रशुभजुरूपस्रमंगलिक । हैश्रुतनाशाहीन ॥ स्राईरावनपहँइहां । निर्लजवेषनवीन ॥ १ ॥ सुतबंधवमंत्रीसुभट । बैठेसभावनाइ ॥ दशशिरकौंदीनौदरश । इहांस्रचानकस्राइ ॥ २ ॥ कंटकबहिनविलोकिकैं । मनम हभयौमलीन ॥ पूंछिउत्यौंतुहिपापनी । कौनयहैगतिकीन ॥ ३ ॥ विष्णुकुवेरक

जमवरुण । किंवादेवजुकोइ ॥ करिहूंनाशविशेषकुल । हूंताकैहठहोइ ॥ ४ ॥ ॥ ॥ सूर्पनषावाक्यं ॥ ॥ सोसुनिबोलीराक्षसी । जरतिरोषनिलोज ॥ परहुवज्र यालंकपर । जावोराक्षसराज ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ तूंअगजगहिउपद्रव ति । पावतिसोइफलपाप ॥ पहिलैकहिकारणप्रगट । पाछैदीजहुश्राप ॥ ६ ॥ ॥ सूर्पनपावाक्यं ॥ ॥ दुष्टातबउत्तरदयो । वदनअशुभविकराल ॥ तोसोंभ्राताहोइ तिहिं । हौंहिक्योंनएहाल ॥ ७ ॥ त्रीयाविजितपानाशक्त । सठप्रमत्तसबकाल ॥ सोतुनसूझतसीसपर । वेषकीयैमुनिबाल ॥ ८ ॥ दूपणषरतृशिरादुसह । सहसचतुर्दश संग ॥ आहवभुंईपारेइते । एकहीरामअभंग ॥ ९ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ विनुनीति राजविहाइ ॥ जसधर्मविनधनजाइ ॥ नितसंगजतिहिंविनास ॥ विनुविनयप्रीतिनिवास गुनगर्वमानहिज्ञान ॥ पुनिलाजज्योंमदपान ॥ वसव्यसनतोहिविहाति ॥ रिपुसूझनाहिं दिनराति ॥ अरिअग्निकणिकाआप ॥ समझोंनलघुकरिसाप ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्हैसंन्यासीबालवय । वसतपंचवटवास ॥ काहुनमानतसीसपर । निरअंकुशनैरास ॥ ११ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ वहबालतदपिअजेव ॥ वनरामहैकोऊदेव ॥ ॥ रावनउ वाच ॥ ॥ कोरामहतिकिहिंहेत ॥ षरतृषिरदूषणषेत ॥ ॥ सूर्पनषावाक्यं ॥ ॥ अ वधेसपुत्रउदार ॥ वनवननिकरतविहार ॥ १ ॥ आरण्यदंडकआय ॥ सोवसतअभय सुभाय ॥ रघुवंशअग्रजराम ॥ मितिअनुजलक्ष्मननाम ॥ सुंदरीसीतासंग ॥ अतिरू परतिजितअंग ॥ मैत्रीयात्रिभुवनमाहि ॥ निरषीजुतादृशनाहि ॥ तबकाजल्यावनता हि ॥ हूंगईतहँचितचाहि ॥ अतिधीठवदतनआन ॥ कीयनाशनासाकान ॥ सबक हततुहिसुरसाल ॥ हैजीयततिहिएहाल ॥ भईविपतिमोमहँभ्रात ॥ सोइदुषउरन समात ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनतपरिजरअंग ॥ दशवदनज्योंदवदंग ॥ कैदु छरचूकीडान ॥ निसिंचपिआहिअनजान ॥ ज्योंसाहवूडिजहाज ॥ रणअजयज्योंभट राज ॥ मनशोचत्योंदशमाथ ॥ हीयहनतमींजतहाथ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मु हवांधिमंदिरमांझ ॥ सठपर्योहोतहीसांझ ॥ तहांवैद्योसोचअतीव ॥ यहकालगतिजु दईव ॥ अतिबलीराक्षसआप ॥ तिहिसहिनसुरकोउताप ॥ ममभ्रातसैन्यसमान ॥ नर शिशुनिहतेनिदान ॥ इहिंभांतिअभयअजेव ॥ द्विजरूपएकोउदेव ॥ विधिविष्णुसोंवरजा च ॥ सोइहोतादिषीयतसाच ॥ रघुवंसनरअवतार ॥ यहभयोरामउदार ॥ सोराममारि संग्राम ॥ वैकुंठरचिहूंधाम ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ यहविचारिपौलस्तिरामचिन्हैपरमेश्वर ॥ अषिललोकआधारसर्वआधीनसुरासुर ॥ तिहिंविरोधअनुसरतताहिसारूप्यदेवगति ॥ साधकतपदुषसहततदपिफलवेगिनपावति ॥ सोपैविचारितिहिरामसों, विग्रहवैरबढाइ हों ॥ रघुवीरबानमरिसमुषरन, परमजोतिपदपाइहों ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपध री ॥ ॥ विलपाततताहिदुस्सहविहान ॥ जुगमानभईरजनीसुजान ॥ पुनिप्रातउठ्यो रावनसपाप ॥ अतिरोषअंगपरजरतआप ॥ रथसाजिचढ्योरावनरिसाइ ॥ आनिहैम नहुंमीचहिमनाइ ॥ जहाँतपतहुतोमारीचताप ॥ पंपासरगोरावनसपाप ॥ एकाकीआ

गमकहाआज ॥ कारनप्रकासकरीयेसकाज ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ मातुलसौंकीनौबै ठिमंत्र ॥ तहांकहेसबैसुपनषीतंत्र ॥ ॥ **रावणउवाच** ॥ ॥ मामाअबकरहुसहायमो हि ॥ ताकौंवनिहोरौंसबैतोहि ॥ ॥ **मारीचउवाच** ॥ ॥ मारीचकह्योफिरप्रेममान प्रभुकहौसुपैआज्ञाप्रमान ॥ ॥ **रावणउवाच** ॥ ॥ अबसोविचारकरियेजजाइ ॥ वश होइशत्रुजिहिंतिहिउपाइ ॥ हरसीतहिलेजावौंछिपाइ ॥ दुषविरहरोइमरिहैविदाइ ॥ ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ **मारीचउवाच** ॥ ॥ पुनिकहिमुनिमारीचसुनहुसिद्धांतदशानन ॥ रामनमानहुमनुजकर्तअवतरेसकारन ॥ सीयनत्रीयासंभाव आदिमायाउतपन्नीय ॥ अनुजशेषअंशावतारनिर्द्धारसुमन्नीय ॥ इनसौनवयरविग्रहउचित, अमरईशविक्रमअ तुल ॥ अनुसरहुसंधितजिरोषउर, करहिअनंदपुलस्तिकुल ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ क रीयेनमंत्रसोसुनिलंकेश ॥ कुलनाशविश्वहांमीविशेश ॥ रघुनाथवानदीपकदुरंत ॥ मत होहुसलभतिहिपरिकुंमत ॥ यहषेलवंशकारकअमूल ॥ उनतुमहिंजोगज्योंअनलतूल ॥ उपदेशकवनतोहिकर्योएह ॥ दुतदातघातजहांउपजिदेह ॥ कौशिकमषरक्षाकरनकाज ॥ रघुनाथहिपठएअवधिराज ॥ धरकाकपक्षरघुरामधीर ॥ बीरासनबैठेमहावीर ॥ सं ष्याविनुराक्षससेनसंग ॥ हमउभयभ्रातआएअभंग ॥ क्रतुभंगउपद्रवआनिकीन ॥ म लश्रोणरेणुवर्षामलीन ॥ मार्योसुबाहुसेन्यासमेत ॥ षेबजिनिसानजयपाइषेत ॥ विनुभ ल्लविसिषतहांमोहिमारि ॥ दीनौशतयोजनअंतडारि ॥ सरवत्ररामदेषौंसुभाइ ॥ उरहोत कंपसुधिजबहिआइ ॥ भयत्रस्तरहतहुंचित्तभंग ॥ अद्यावधितबतेविकलअंग ॥ स्वप्नहूं रामदेषतसुभाइ ॥ भयभीतहोतमनुस्मृतकपाइ ॥ निद्रानहींतबतेलहतनैंन ॥ अतिहीउ दासआतमअचैन ॥ एकांतरह्योइहिंठौरआइ ॥ पैनिकसतहूंकोउसमयपाइ ॥ पुनिसु नहुंएकपूरबप्रसंग ॥ सोसुन्योंहुतौहमऋषिनिसंग ॥ आगेकहूंहरिसौंब्रह्मएह ॥ शुभजा चिलयौवरअतिसनेह ॥ ॥ **ब्रह्मोवाच** ॥ ॥ प्रभुआपुनव्हैमनुजावतार ॥ भगवंतहर हुयहभूमिभार ॥ अवधेशग्रेहअवतरहुईस ॥ सकुटंबहतहुषटचारिसीस ॥ ॥ **मारीच उवाच** ॥ ॥ भएविष्णुरामावतार ॥ भगवानहरनभवभूमिभार ॥ वधकर्योताडका बालवेष ॥ मषरष्याकीयकौशिकमुनेश ॥ पनजनकनिवाह्योभंजिचाप ॥ अरुकर्यौवि मदद्विजरामआप ॥ षरदूषनत्रशिराहनैंषेत ॥ तिहिंठौरनमानहुंमनुजहेत ॥ ॥ **रा वनउवाच** ॥ पुनिकह्योताहिरावनसपाप ॥ इकसुनहुरहासिमारीचआप ॥ परपुरुष जदपिराघवप्रकास ॥ वरदयोवधिहिममकृतविनाश ॥ मोहिमारनमानुषभएमुरारि ॥ कारनवनदडविहारकारि ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ यातेंसीताहरनअब । करिहूंजथाप्रकार ॥ तिहिकृतहमसौंउनहिंतब । बढिहैवयरविकार ॥ ११ ॥ मेरोजौपैरनमरन । उन कैंहाथअजेव ॥ ततौपाइहूंपरमपद । जोगतिदुर्लभदेव ॥ १२ ॥ रामहिमारौरन अजिर । हूंज्योंपेहठहोइ ॥ सीतातोपाऊंसुगम । कहूंसंदेहनकोइ ॥ ॥ **मारीचउ वाच** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ प्रभुराषहुकुलमानहुप्रबोध ॥ रामसूंछांडिविग्रहविरोध ॥ यहउद्यमतजिलंकेशआप ॥ पुनिजाहुग्रेहभुक्तहुप्रताप ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ कहि

तबैताहिरावनसक्रोध ॥ पापिष्टकरतहमकहप्रबोध ॥ हितउपदेशाभएतुमहूंमोहि ॥ ताकौफलदेहूंसनैतोहि॥पुत्रहिज्योंजननीरुदतपाइ॥डरपावातिलैजुजूवादिपाइ॥त्योंमोहिडरावतविवरिवात॥वसकस्योविश्वजिहिमैंविष्यात॥गुरभयोहमाहितूंकथतज्ञान ॥ संसारवीरकोउमुहिसमान ॥ मुहतेरेतेरीवसीमीच ॥ उत्तरज्योंदेहेफेरिनीच॥ मारीचउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥तहाँचिंतयमारीचउभयविधिमरनउपज्जीय॥ लिषिललाटविधिलिषतजातविधिहूंसुनमज्जीय ॥ मिलिरावनकरमराननिततौनर्कनिवासीय ॥ हस्तरामहतहोइविमलवैकुंठविलासीय॥ कीनौविचारनिधरककरि, लाभजन्मयहलेषयौ॥ करउचितमरनरघुनाथकै.सायकतिष्षविशेषयौ ॥ दोहा॥ रहूतरावनकरमरन। जाउतकोशलराज॥ तातैंराघवकरउचित। मरिवौमंगलकाज ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ मारीचमुनिन्हैमुदितमनरघुवीरसानुजउरधरे॥ जटजूटसिरकटितटनिसंगसचापकरवनअनुसरे ॥ संधानधनुकारिनिसितसायकममउरसिप्रभुमारिहैं ॥ सुरवरषिसुमनसुहरषिसुरपतिअमरजयतिउचारिहैं ॥ पुनिदिव्यरथचढिढरतचामरप्रगटआनंदपाइहै ॥ देवीसुरासुरमुनिजुदुर्लभसुषहिजोतिसमाइहै ॥ मारीचमरनाहिकरिमनोरथचल्यौचित्तविचारिकै॥ दशसीसआज्ञामोहिदीजैकरैसोईशिरधारिकै ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ करिमंत्रमिलिमारीचकंटकपंचवटीप्रवेस॥ मृगहोहुमामाहेममयतुमसजहुरूपसुदेस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मारीचरचिअद्भुतमायास्वर्णमृगसंभाव॥ महश्रृंगपुरवानिनीलमनिमयनेत्ररत्नबनाव॥ कृतकनकआभअजिनकोमलरूपबिंदुसुरंग ॥ अनेकछविअद्भुतआकृतिअषिलअंगनिअंग ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥इहांनिकटआश्रमआइ॥ सारंगचरतसुभाइ॥ मृगदेषिजनककुमारि॥ अभिलाषपतिहिउचारि ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ प्रियत्वचाइहिजुपवित्र ॥ चितलग्यौममम्मृगचित्र ॥ यहमारिआनहुआज ॥ सुषअजिनसज्यासाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रभुप्रीयावचनप्रमानि॥ उरतवैउद्यमआनि॥ ॥ लक्ष्मनउवाच॥ कवित्त॥ ॥ अषिलसृष्टिउतपन्नआदिविधिहूंनउपायो॥ नहींदेष्योनहींसुन्योयहजुकंचनमृगआयो॥ सुनहुरामराजेसअसुरमायाउपराजत॥ कपटवेषबहुकरतसमयलषिकारजसाजत॥ उच्चस्यौलषनसिद्धांतयह,प्रभुव्यापकभवभूतपर॥वैनाशकालभवतव्यवस, बुद्धिहोतविपरीतबर॥ ॥ ४ ॥ आग्रहतजहुअनंतरामयहमृगकोउराक्षस ॥ कारनकनककुरंगबन्योसुंदरमायाबस॥नारिनिमतकछुआनपुरषकछुआनउपासत॥जानिनकाजअकाजएकहठहीअभ्यासत ॥ विश्वेशविश्वव्यापकाविषम, आसुरदुष्टसमर्थअरि॥ इहिंठौरवीरअवधेशअब, करियैकाजविचारकरि ॥ ५ ॥ ॥ श्रीरामउवाच॥ ॥ दोहा॥ ॥ लक्ष्मनहूंजानतसकल। करिबौतउसुरकाज॥ जोईकोईहोईपैं। याहिंनछाडौंआज॥ १५॥ इहिंकाननराक्षसअधम। बसतदुष्टसविकार॥ सावधानरहीयौसमझि। वैदेहीरषवार ॥ १६॥ तवबुधिबलविक्रमविदित। वर्तहुसमयविचारि॥ किहुंकारनएकाकिनी। नहींछांडहुबननारि॥१७॥ ॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥कटिपटलपेटिजटजूटकोप॥ आरक्तनैनभ्रुकुटीसओप॥ कृतसज्जधनुषटंकारकीन॥निसिचारवधककरबानलीन॥ मृगराजचलनिचलिमृगहिमार॥संधान

वानसुरकाजसार ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रामसोचमुनित्राशमोचहनुमंतविजयजस ॥ मयत
नयावैधव्यसमरदुर्धरराक्षस ॥ भक्षपक्षपलचरनमहीश्रोणीभरमज्जन ॥ अरुजटायुउद्धर
नअचलद्रोणाचलउच्छन ॥ सुग्रीवबिभीषनराज्यसुष, मृगसुरूपमारीचमर ॥ संधानइतै
नरहरसुकवि, सुकररामसंधानसर ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ परित्रासचल्यौतहांमृगपला
ई ॥ पर्वतहिनांघिप्रभुतहांपाई ॥ दुरिजायनिकटदरशैजुदूर ॥ मृगकरैअसुरमायासमूर ॥
कीनौप्रभुकौतुककछूकाल ॥ तरुओटदेषिमृगतातकाल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥
कनकरत्नमयक्रांतिकपटमृगदेहसकारन॥सूंघतत्रिनसंक्रमतनिषिलदिगविदिगनिहारन॥
धसतकबहुअधधरनिधराधरचढिकहूंधावत ॥ वारवारग्रीवाविभंगतनशृंगषुजावत ॥ सिर
परीकालछायासभय, सुपैचरितएअनुसरन ॥ मारीचनीचमायाजुमृग, मिल्यौआनिनिह
चैमरन ॥ ६ ॥ असुरआयुजीवनजटायुमंदोदरिमंडन ॥ तृकुटगाढवारिधिहिवाढअसुरी
अहवत्तन ॥ ग्रहनिबंधतमचरनिगर्वदशकमलकलेवर ॥ देवत्रासमारीचदेहभवभूतिभू
मिभर ॥ सुरराजतापनरहरसुकवि, छलषेचरबलषुट्टिहैं ॥ रघुनाथधनुषगुनमुट्ठितै, एसर
छुट्टैछुट्टिहैं ॥ ७ ॥ लंकदाहसामुद्रसेतमयसुताशोकमन ॥ विघ्नवालिनारदविलाससंपा
तिपंषतन ॥ दुर्गरोधजोद्धनिविरोधविछुरनवैदेही ॥ कपिउछाहरावनहिराहसन्नाहसु
देही ॥ आसुरसमूहआकंपउर, भूमिभारभयभग्गिहै ॥ कररामविसिषमारीचकै, एउ
रलागैलग्गिहै ॥ ८ ॥ विधिहरमुनिवरविबुधतपहुजिहिजोतिनपावत ॥ इंद्रियक्कारि
निग्रहअनेकवपुकष्टबढावत ॥ पुनिराक्षसमारीचविषमजिहिवैरबढायौ ॥ तदपिदेव
गतिअगमदेहधरिदरसादिषायौ ॥ सायुज्यमुक्तिपाईसुषद, जातउग्रतपसाधिजहँ ॥
हतरामबानमृगकपटव्है, मिल्यौअसुरसोइराममहँ ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥
वरवीररामसरभौविराम ॥ मुषकह्यौमरतमृगरामराम ॥ स्वररामपुकाखोअसुरसो
इ ॥ हालक्ष्मनभ्रातसहायहोइ ॥ सोबचनदुसहजबसुन्योसीत ॥ भयचकितभयौ
मनमहाभीत ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लैसरधनुधावहुलष
न । अग्रजसंकटआहि ॥ उच्चाखौआरतवचन । तुमहिसुन्यौवताहि ॥ १८ ॥ ॥
लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ तुमजानतरघुवरप्रकृति । जदपिप्रानहूजात ॥ ऐसोवचनजुदीनयह ।
मुषतैकहैनमात ॥ १९ ॥ राक्षसमायाबहुरचत । वानीविविधबनाइ ॥ नहिनसुरासुरत्र
यभुवन । जाहिडरैरघुराइ ॥ २० ॥ राक्षसकाहूयहमरत । आतुरवचनउचार ॥ कोपरा
मब्रह्मांडकौ । नाशहोइनिरधार ॥ २१ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कुवचनभाषेजानकी ।
जोनहीकहिबेजोग ॥ श्रुतमूंदेलक्ष्मनसुनत । उपज्योदुषअप्रयोग ॥ २२ ॥ ॥ लक्ष्मण
उवाच ॥ ॥ हाचंडीदुर्वादिनी । यहपैकहैनकोय ॥ अकलंकहिलावतकलंक । सबफल
लहिहैसोय ॥ २३ ॥ दुर्मनलक्ष्मनअतिदुषित । सायकचापसंभार ॥ कीनीरेषारामकी ।
दुरगमशालाद्वार ॥ २४ ॥ कृतरेषायहधनुषकी । कठिनउलंघैकोइ ॥ सुरआसुरभवभूत
सोइ । इहांभस्मपैहोइ ॥ २५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ चरनरामकृतचिंतवन । सोचत
चित्तसुजान ॥ हाचलिष्टभवतव्यता । कहानसुनिवौकान ॥ २६ ॥ लषिदैवीमायालषन ।

प्रभुइछापरवान॥ आतुरचलेविचारिउर। इहांनउद्यमआन॥२७॥ ॥कवित्त॥ ॥कीय
नाटकसुररमनिदेवंदुदुभिअकासदीय॥ रामजैतउच्चारपुहपवर्षाजुप्रकासीय॥ अमरलोक
आनंदअवनिभरभञ्जनआगम॥ मृगजुमरयौमारीचवयरउपज्यौअतिवैषम। इहिसम
यआइसौमित्रइहांरामचरनवंदनकरे॥ मृगयासुसिद्धलेवीरमृगशुभआश्रममगसंचरे॥
१०॥ ॥दोहा॥ ॥ताकतहोलंकेशतहाँ। पूजीघातप्रमान॥ आइगयौअनसंक
ज्यौं। सूनैमंदिरस्वान॥ २७॥ ॥कवित्त॥ ॥समयपायलंकेशइहांरावणखलआ
यो॥ सज्यौवेषसन्यासदेहराक्षसजुदुरायो॥ देवदत्तकीयशब्दआनित्रिनशालाअंगन॥
सीयादेषिकोउअतिथिसाधविधिजुतकृतवंदन॥ विश्रामकरहुकछुछनविमल, महातरोवर
छाँहमुनि॥ आईहैवीरअबहीउभय, पूजैतुमहिविशेषपुनि॥११॥ ॥रावनउवाच॥ ॥
॥ तहांपूछौपौलस्तिकवनतुमइहांअकेली॥ दंडकवनयहदुर्गमसंगसेवकनसहेली॥ कि
हिंपुत्रीतियकाहिवंसकोनामवषानहु॥ अंगअंगछबिउदितजुवतिसमद्वितियनजानहु॥
चलचित्तदेषितिहिसीयचकित, लगीदैनवनफलविमल॥ अंतरिषरेषयहअनउचित,जती
ग्रहैनहिअसनजल॥ १२॥ ॥सीताउवाच॥ ॥स्वसुरनृपतिअवधेसपुत्रजेठो
राघवपति॥ पिताजनकनृपजगप्रसिद्धमोहिसीयानामसति॥ सुरविजितसंग्रामलषन
देवरशुभलक्षन॥ पितुदशरथआज्ञाप्रवेसकीनौइहिंकानन॥ मृगकनककरनआषेट
मिलि, गिरिविचित्रदोउभ्रातगत॥ यहभयौसमयआवनअबै, हैविलंबकहूंविजयव्रत॥
१३॥ ॥कविरुवाच॥ ॥दोहा॥ ॥धरविदारिजुगचरनधारि। रेषातरहारि
रोपि॥ हठिपहिलेहिठाढौरह्यौ। लोकवेदमतलोपि॥ २९॥ ॥कवित्त॥ ॥मा
निगृहाश्रमधर्मचित्तवैदेहिविचारीय॥ जतीवेषतिहिजानिपानिफलदेनपसारीय॥ बा
हिररेषाबाहुविमलकीनौवैदेही॥ आकर्ष्योकरएंचिदुष्टलीनीसुरद्रोही॥ दरसाइवीसभु
जसीसदश, कंटकअपनौरूपकीय॥ रेअधमकोनतूंआइइहां,कपटिहिपूछ्यौजानकीय
॥ ॥१४॥ ॥रावनउवाच॥ ॥ब्रह्मपनातीजगविजेतराक्षसहूंरावन॥ सुकर
वीशदससीससुरहूसुरराजसँतावन॥ तुवकाजैगृहकनककरयौरचनाअभूतकीय॥ तपी
वेषदुषतजहुजन्मफललेहुजानकीय॥ पावहुनफेरितुमरामपति, जतनकरहुबहुप्रानतजि॥
भामिनीभरमभूलहुनभव, भोगविलासहुमोहिभजि॥ १५॥ ॥सीताउवाच॥ ॥
रेवराकदशवदनविहितसुनिधौममबोलहि॥ सीयचित्ततवकृतविषमवातकहुंदुर्गनडोल
हि॥ सिंघरामतुमश्वाश्रृगालसमतायहसुनिसठ॥ कोबलिष्टजगकह्यौहमहिहांतौजुकरै
हठ॥ तृनतूलसदृशआकारतव, ज्वालावाननपरजरहु॥ आवर्तकोपआहवउदधि, पापी
जानतकतपरहु॥ १६॥ ॥दोहा॥ ॥दगहूंतेरैदूनदश। आहितदपिसठअंध॥
विहितनशशकहिसिंहबलि। रेकंटकदशकंध॥ ३०॥ ॥रावनउवाच॥ ॥जा
नहुअंधसुजानकी। मूरषलक्ष्मनराम॥ अनरक्षाएकाकिनि। वनतुवछांडीवाम॥३१॥
॥ ॥छंदवेताल॥ ॥कविरुवाच॥ ॥बलकर्षिलइउठाइविव्हलराहुज्यौशशिरेष॥
अकुलातिअतिबलकरतिअपनौविवससीयसुवेष॥ मननमथनमानिनिहितकिहुमनुपरीसंव

रपानि ॥ पाषंडकरसद्धोंकिपावनअदशवसभइआनि ॥ मिलिमनहुधूमसमूहमघरजुअ
नलज्वालाआंहि ॥ पत्रचित्रितपुत्तिकामनुमरुतचक्रानिमांहि ॥ एकादशोव्रतमठिनिव
समुषरिचावेदचंडार ॥ शुभजीवजोतिअदष्टसंगकिअवसजातिउदार ॥ आरूढरथइहिं
दशाअनुचितसीयारावनसाथ ॥ भवतव्यसूचितप्रबलभावीहैनकाहूहाथ ॥ सीताहिह
रिलैचल्योदशशिरहुवजगतहाकार ॥ सुरराजजान्यौसुरनिसांचौभूमिउतर्यौभार ॥ ॥
॥ सीताउवाच ॥ ॥ जगदेकवीरसधीरहारघुनाथदेवदयाल ॥ लंकेसवसअसमर्थअ
बलाकरहुअभयकृपाल ॥ हाहरनआरतिकरनकारनदीनरक्षकदेव ॥ तुमसरनपंजरवि
जयसबकहँजगतजेवअजेव ॥ हारामआरतबंधुअद्भुतअंगविजितअनंग ॥ रघुराजकुल
कीलाजलक्ष्मनआजतोहिअभंग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामबलिष्टनराजसम । मोहिसूझत
जगमांहि ॥ जातहुग्रहीअनाथज्यौं । नाथसुनताकिधौंनाहि ॥ ३२ ॥ तबधाएषगराज
तजि । जानिदुषितगजराज ॥ मेरीवेरांकाभयौ । रामगरीबनिवाज ॥ ३३ ॥ ॥ छंद
वेताल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनिदीवानीकहतिसीतारामरामपुकारि ॥ अतिबली
ग्रीधजटायुआयौसमयधर्मसँभारि ॥ अविलोकिउत्पथजातआतुरइहांरोक्यौआनि ॥ पु
निकरतनीतिप्रबोधपक्षीपतितकँहँपहिचानि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जटायुवाक्यं ॥ ॥
ब्रह्मवंसअवतरनहवनमस्तकपूजनहर ॥ दुसहसक्तिव्यापारदंडसंचारइंद्रसिर ॥ करहि
तोलिकैलाससशिवकंदुकगतिकरयौ ॥ हैलषेलकृतहास्यधराधरधरनीधरयौ ॥ इहिकर्म
नहिनलाजतअबुध, सोइरावनतूंनिशिचरन ॥ कीयकपटवेषरघुनाथकी, हेतकवनमहि
जाहरन ॥ १७ ॥ रावनउवाच ॥ दोहा ॥ वचननीतिकहिकहिविहंग। करनप्रबोधप्रकास
॥ तबसमझहुजबदेउंतुहि । सबजममंदिरवास ॥ ३४ ॥ छंदवेताल ॥ रिसजुक्तताकँहँकह्यो
रावनरेअधमनभचार ॥ तुहिजानिपंडितदंडवनकोकिहिदयोअधिकार ॥ जटायुवाच ॥ र
नतिष्टरेपरदारतस्करशून्यग्रेहसंचार ॥ ममसहहिगोसठदसहूंमुंडनिप्रबलतुंडप्रहार ॥ प
लरुधिरदेहूंभक्षपूरनशिवागृद्धशृगाल ॥ हमतुमहिव्हेहैषेतइहिंहठिकठिनजुद्धकराल ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ रथतोरिषलपथरोकिरावनकलहविरथकीन ॥ दुर्वादकहिकहिहृदयदा
हकदुसहपरिभवदीन ॥ रथकेतहयकृतचक्रचूरनचंचपक्षचपेट ॥ दशशीसकेहतिमुकटद
शहूंभईग्रीधहिभेट ॥ संग्रामसंगमग्रीधशशिरभयौपर्वभयान ॥ सोदेषिपौरुषसुरसुरेसुरपु
हपवरषिप्रमान ॥ सहिसारमारप्रहारसनमुषआपकृतउद्धार ॥ इहांसमरषेतजटायुसोयौ
वीरसेजविहार ॥ कलुस्वासशेषजुरहेशुभकृतदर्शआसदयाल ॥ महिगिर्योग्रीधपहारमा
नहुबिगतपंषविसाल ॥ पृथ्वीशदशरथप्रीतिपूरनजनमकीनजटायु ॥ पक्षीशपायौसुजस
पूरनअभँगपूरनआयु ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तोरिध्वजारथछत्रषेतमिरिग्रीधपर्योषग ॥
भयौविरथषलविकलगहिजुसीयचल्योगगनमग ॥ इहांनिकस्यौऋषिमूकऊपररावनअ
न्याई ॥ वसततहांसुग्रीवसंगकपिपंचसहाई ॥ सीतासत्राशअकाशतैंअपनेनूपुरउत्तरीय ॥
प्रतिमानरहीरनअद्रिपरदेषितिनहिडारिदीय ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेईनूपुरउत्तरी
य । तबलीनेहनुमंत ॥ सौंपैराषेजतनसौं । स्वामिकाजहितसंग ॥ ३४ ॥ सीताकेनूपुरव

सन । हनुमंतचढेजुहाथ ॥ आगमभौसुग्रीवके । श्रियत्रियवैभवसाथ ॥ ३५ ॥ ॥ अथ जानकीलंकाप्रसंग ॥ ॥ लैनभमागरगमैथिलि । आयौलंकनिलाज ॥ ताहीछनतेत्र कुटमहँ ॥ घरघरशोकसमाज ॥ ३६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सीयाहरीदशशीशकर्मअति दुष्टकमायौ ॥ परिलंकआतंकबीजकुलनाशकबोयौ ॥ सीयप्रविसतनहीसदनविवसराषी अशोकवन ॥ तरसिंसिपतरुतरलमलिनतनरहीमारिमन ॥ त्रिजटादिकरौद्रजुराक्षसी, ते रावनरक्षककरीय ॥ सिंघीसमूहवसज्यौंसभय, कर्मजोगकपिलापरीय ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुताबिभीषनकीशुभा । निशिचरित्रिजटानाम ॥ पूरबपुन्यप्रभावतैं । विष्णुभक्तवहवाम ॥ ३७ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ इहांब्रह्मप्रेरीतआइआपुनशक्रदेवसहाइ ॥ निशिअर्धसमयनिशिचरीसबपरीसोवतिपाइ ॥ पुनिसीयहिमर्मप्रकाशिअपनौकख्यौअभयप्रबोध ॥ घृतपानतृप्तकराइपूरनसबैदीनौशोध ॥ तोहिनहींव्यापैछुधातृष्णापुत्रिकेपरमान ॥ आज्ञानआसुरआसुरिनितैशक्रगौस्वस्थान ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ अंतहपुरआसन्न विमलविस्तरअशोकवन ॥ दुसहदशाकृतदीनतहांअधवदनमलिनतन ॥ सूषतअधरउसासआसप्रियदरसनआतुर ॥ रामराममुषरटतिनयनजलधारनिरंतर ॥ शशिकलाविधुतदत्रीयनिसंग, सुरभीसिंघिनीभयसहति ॥ निसिचरिनिमध्यइहिरूपनित, राम प्रियाघोरिरहति ॥ २० ॥ ॥ अथश्रीरामपर्णशालाआगमनं ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ मृगकनकलैइहांरामलक्ष्मनउभयआश्रमआइ ॥ शुभरूपसीतापर्णशालहिसोनपाइसुभाइ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ ममसंमुषनाईप्रियालक्ष्मनसदाज्यौंसविलास ॥ यहआपनौकिधौंनहिनआश्रमपरेभूलिप्रकास ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ बहिअंतरगृहविमलनाहिनप दर्पतिनिहारीय ॥ दृष्टिमुहिनआवतिसुदेसमिथिलेसकुमारीय ॥ यहनकीधौंआपनीपर्ण शालावनपावन ॥ हमनकीधौंवेहौहिसबलषलअमुरसंतावन ॥ कहिवीरलषनकारनकवन, कछुअनिष्टकिहूंदुष्टकीय ॥ हठिप्रानतजनचाहततनहिं, सहिनहीजातविजोगसीय ॥ २ ॥ सुन्यदेषित्रिणशालजगतपतित्रासउपज्जीय ॥ कहूनाँहिजानकीसदनसूझतिहित सज्जीय ॥ इहांअनिष्टकछुआजमोहिठरातनहींनम ॥ एकाकिनिअसमर्थतुमहुवनिताछांडीवन ॥ कैसीताषाइराक्षसनिके, हरिलैगएदुष्टषल ॥ करीयैविचारइहांमंत्रकछु, बीरलषनतुममहाप्रबल ॥ २२ ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिविधिसृष्टअराक्षसी । वैरलैउंतवबांम ॥ देषहुविक्रमदासको । राजशिरोमनिराम ॥ ३८ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कीनौनहिंतुमहूंउचितकाम ॥ वनमांझअकेलीतजीवाम ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ तहांलक्ष्मनउत्तरदियसत्रास ॥ प्रभुवानिपुकाख्यौमृगप्रकास ॥ सोसुनतभइसीतासषेद ॥ भावीअनिष्टजान्यौनभेद ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ धरिधनुषलषनधावहुसधीर ॥ रघुवीरवानिकिनसुनतवीर ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ मैकह्यौरामस्वरनहिनमात ॥ तमचारमरतकिहूंकरीघात ॥ मुहीकह्यौइहांदुर्वादमाय ॥ जो कहूंफेरिगरिजीभजाय ॥ बंधुनिविरोधकौबीजवाम ॥ राजाधिराजसर्वज्ञराम ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ विनुउचितकरीतुमयहैवात ॥ त्रीयमतप्रमानहुंनाहिनतात ॥ किहूंहेतक

हैत्रीयवचनकोइ ॥ सबबातविचारिकरीयैसोइ ॥ आकर्षिगयौकोउदुष्टआज ॥ कैकरीभक्ष तोपैअकाज ॥ ॥ लक्ष्मणप्रतिगूढमंत्र दोहा ॥ ॥ शोकमग्नअनुजहिसमाझि। रहसि मंत्रकीयराम ॥ पुराप्रसंगजुआपनौ। उपदेश्योवरबाम ॥ ३५ ॥ तुमहुनजानतलषनतिं हि। कीनौगूढप्रकार ॥ कह्योजुगोपनसीयकौ। विबुधकाजविस्तार ॥ ४० ॥ ॥ छंदप धरी ॥ ॥ सुनिलक्ष्मनतौसोकहूंसोइ ॥ अबलौमैराष्योगूढगोइ ॥ निशचारनाशव्रतमैं जुलीन ॥ दिनतिहिंप्रबोधमैंसियहिदीन ॥ तवपीहरहैपावकप्रमान ॥ दिनकछुकरहहुता मँहँनिदान ॥सुरकाजसिद्धिहमकरहिसीत॥पुनिमिलहुआनिहमसौंपुनीत ॥ मैथिलिदेहनि जअग्निमाह ॥हमसेवाकाजैरहहुछांह ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सीयमायारूपीरहीसंग ॥ अनलमँहँराषिआपनौअंग ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ यहब्रह्मपनातीदुष्टआप ॥ पुनिरावनमारेमहापाप ॥त्रीयहरनभयौअबआतताइ ॥ संग्रामउचितइहिंवनिसुभाइ ॥ अपराधविनाहतिबौनयाहि ॥ तातेंअपराधीकह्यौताहि ॥ करिवौनसोचइहांछायाकाज ॥ रावनकौषोऊवंसराज ॥ वरदियोजुमैब्रह्महिविशेष ॥ सौषैप्रमानकरिबोअशेष ॥ वससोकबैठिकरिहैविलाप ॥ पुनिहतिहैकोएअसुरपाप ॥ उठिचलहुवीरचिंतहुनआन ॥ जानकीषोजकरीयैसुजान ॥ भुवचक्रभ्रमतकहुंपाइभेद ॥ छितिकरिहैराक्षसवंसछेद ॥ भ जिवौमोहितातेमनुजभाव ॥ दुषशोकविरहलोकनिदिषाव ॥ नरवानरवरवाहिरनिदान ॥ उनहीकरिमारिहैयहअज्ञान ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ नीतिधर्म कृतरानि, तिहिमुहिकाढ्यौराजतैं ॥ जिहिंममयहबुद्धिजानि, कहूंहोतमृगकनकके ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी । ॥ सबभावरामजदपिसधीर ॥ विलपातकरत तनुमहावीर ॥ वससोचभएसानुजसुभाइ ॥ भूवभंगजासजगप्रलयजाइ ॥ ॥ श्रीरा मउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अहिशशांकभृंगीकुरंगशुकबिंबवज्रकन ॥ पिककपो तश्रीफलमृणालसरसीतरंगतन ॥ सिंघकरीकररंभकंजनारंगमतंगह ॥ सुरभिमलयनि स्वासरुक्मचंपकतनरंगह ॥ ग्रहिइतेअंसउत्तमजुगुन, मिलिसमग्रआतिछबिमिलीय ॥ यहजानतलक्ष्मनआजइन, हरिसबनिमिलिमैथिलीय ॥ २३ ॥ गगनअर्कउग्गयौलष नतरुछायालिज्जय ॥ अर्ककथानिसिअसंभावप्रभुचंद्रपुनिज्जय ॥ चंद्रउदितयहइहांकव नलछनतुमलेष्यौ ॥ भवसंतापभज्जयौदेवमृगवाहँनदेष्यौ ॥ हाहाविदेहतनयाविमल, चं द्रवदनिमृगलोचने ॥ देषिहैकबैएदीनदृग, ममअंतरदुषमोचने ॥ २४ ॥ शृंगगिरनि तरुसिषरलषनदावानलल्गीय ॥ कठिनज्वालमालाकरालअनिवारितअग्गिय ॥ देव उदयद्विजराजभजतकतधूमअसंभव ॥ परतधरनिप्रतिबिंबरह्योलगिअंकसुराघव ॥ सु षधामवामधरनीसुता, गुननिधानकहिकहितगई ॥ इहिंठौरनआवतिदृष्टिअब, भामि निमममनलीनभई ॥ २५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हाहावैदेहीपरमहेत ॥ मुहिदुषित देषिकिनदरसदेत ॥ निशिनाथवदनिहाकमलनैनि ॥ विश्रामजीवकोकिलावैनि ॥ रद वज्रबिबरदछदसुरंग ॥ कंठीकपोतलोचनकुरंग ॥ भुजजुगलप्रेमफासीसुभाइ ॥ कर कमलपत्रकोमलकहाइ ॥ करपल्लवचंपककलीकीन ॥ नषजोतिहोतिउपमानवीन ॥ उर

जातपीनइभकुंभओप ॥ जीयसफरअलकवनसीसजोप ॥ नाभीसरसुंदरतानिहारि ॥ कोनीत्रिरेषछविअसमकारि ॥ मृगराजछीनकटिमुष्टिमाप ॥ अतिगुरनितंबभरअसहआ प ॥ जुगथंभकदलिमृदुगभंजानि ॥ पुनिराजहंसगजगतिप्रमानि ॥ वरवरनकनकचंपक विमोह ॥ अतिसोभअंगअंगनिअरोह॥गुनरूपसीलव्रतचित्तज्ञान ॥ शुभ लछन त्रीय कोउ नहि समान ॥ मम प्रान गई ले त्रीय पुनीत ॥ शुभ दरस आनि किनदेतिसी त ॥ रटलगी एक हाहाजुराम ॥ विश्वास वीज कहांगई वाम ॥ इहिं भांति करत वनवन विलाप ॥ अतिदुषित फिरत षोजतजु आप ॥ जल थल नभचारी जिते जीव ॥ द्रुम लता तृण हूं पूछत दईव ॥ अग जग जड चैतन आदित अंत ॥ भगवंत तिनहु पूछतअमंत ॥ ममप्रियाबतावहुधर्मवाम ॥ नियरायअमितचितललैनाम ॥ अतिवि षईज्यौंविरहीअज्ञान ॥ प्रभुकरत मनुजलीलाप्रमान ॥ विधिविधिसमझावतलषनवी ॥ अ तिविरहतदपिरघुवरअधीर ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ब्रह्मादिकसुरअसुरविश्ववरवीरमहाबल॥ परिदेवीमायाप्रपंचवसरोदनविव्हल ॥ जोअक्रेयअनजेयअमितअनवद्यअनामय ॥ अगमअरूपअनादिअषिलईश्वरअजअव्यय ॥ उतपतिपोषनाशकअवनि, तेजपुं जस्वामीतृदस ॥ सोइमानुषलीलाअनुसरत, वनवनरुदनवियोगवस ॥ २६ ॥

॥ **अथगृद्धजटायुसमरसज्यास्थितदर्शन** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ वनषोजकर तइहांरामवीर ॥ सानुजसषेदआएसधीर ॥ रथचक्रपताकाध्वजाराम ॥ सहछत्रभग्न देषेसँग्राम ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ अविलोकिकह्योरघुरामएह ॥ सौमित्रिमोहिइ हांकछुसँदेह ॥ जोहुतोजानकिहिहरैजात ॥ ताषलकँहँउपजीवीचघात ॥ कोऊमिल्यौता हिराक्षसक्रुद्ध ॥ जानकीकाजयहभयौजुद्ध ॥ सकअसुरउभयकीनौसंग्राम ॥ महिगि रीसौंजयहठामठांम ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ वनगहनविचारतजातवीर ॥ संग्रामग्रीध सोयोसधीर ॥ सोदेषिदेहपरबतसमान ॥ अतिकायबलीपौरुषअमान ॥ ॥ **श्रीरामउ वाच** ॥ ॥ सुनिभ्रातइहैजिहिहरीसीत ॥ अतिजुधअमितसोयोअभीत ॥ करिग्रीधरू पयहअसुरकोइ ॥ सीताहिषाइपुनिरह्योसोइ ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ रघुनाथवचनसु निग्रीधराज ॥ आनंदकरयोहूंधन्यआज ॥ इहांनिकटजबरघुनाथआइ ॥ सोपैजटायुजा न्यौसुभाइ ॥ लीनौंउठाइउरलायलीन ॥ करिकृपागृद्धकृतकृत्यकीन ॥ ॥ **श्रीरामउवा च** ॥ ॥ तबदुसहदसातिहिंकहहुहेत ॥ षगराजकौनसौंभिरेषेत ॥ ॥ **ग्रीधउवाच** ॥ रावनहरिलैगौसीयहिराम ॥ मुहिभयौदुष्टतासौंसंग्राम ॥ करिमहाजुद्धमैंविरथकीन ॥ हुं गिरयोभयोजबपंषहीन ॥ नभमारगदक्षनदिसिनिहारि ॥ मैथिलीगयौलैमोहिमारी ॥ तु मआदिब्रह्मअवतारआइ ॥ कारनाभूतधरिमनुजकाइ ॥ ॥ प्रभुदयौदरसमोहिचलत प्रान ॥ निजजोतिलीनव्हैहूंनिदान ॥ ॥ **जटायुस्तुति** ॥ ॥ **छंदवेताल** ॥ ॥ अन गनितगुनअप्रमेयआदिजहेतथितिजुगनाशनं ॥ नितरमानयनकटाक्षनिरवधिसुष अशेषविलासनं ॥ दुषदेवमुनिभवभूतदारुननियतविविधिविनाशनं ॥ परब्रह्मरामन मामिपूरनपुरषजोतिप्रभाशनं ॥ ममवरदसरकोदंडमंडितपानिजानुप्रलंबए ॥ समसिंध

कटितूनीरसज्जितविहितभारनितंबए ॥ रविकोटिप्रभाप्रकासराघवदानवंछितदायके ॥ न
रूपरामनमामिनिर्ज्जितनियतशरततिनायकं ॥ भवसिंधुतारकपोतप्रभुपदद्रुषविपिनदा
वानलं ॥ रविसुताछवितनस्यामराजितागिरिशउरगतमंगलं ॥ पतिदनुजकोटिसहस्त्र
पापीविषमसमरविनाशनं ॥ दुतिजलददेहनमामिरामविभातिविद्युतवासनं ॥ परदार
परधनविमुषपावनअपरगुनउदघाटनं ॥ परविभवभूतिविलोकिपूरनमनसिथिरताथाट
नं ॥ प्रभुप्रगटपरहितभिरतप्रतिमापतितपावनसुरपते ॥ रघुवंसातिलकनमामिरामजु
गरुडअग्रजममगते ॥ दनुजेंद्रसेवितचरनमोषदानियतव्रतरघुनायकं ॥ मुषरुचिरहास
विकासमंबुजद्रिगसुधारसदायकं ॥ भवसुलभनितनिस्कामभाजनभेदवेदसुभाषितं ॥
तनस्यामरामनमामिसंततसुषदसुरमुनिसाषितं ॥ विधिविष्णुरुद्रपुनीतविग्रहभेदप्रति
माभाशए ॥ घटघटनिअघटितब्रह्ममायासगुणरूपविलासए ॥ तुमादवसपतिजलपात्र
दाइकसोपिसोषकसंमते ॥ तुमगुरहुतेगुरुगरुडगामीतंनमामिपतीपते ॥ शिवह्रदयसु
षदनिवाससंततस्यामघनतनसुंदरं ॥ भुजचारिआयुधचारिआजितमुषप्रसन्नमनोहरं ॥
अनवद्यअगुनअरूपअद्भुतसगुनप्रेरकसंचरे ॥ सुषधामरामनमामिस्वामिपरमपूजित
पाचरे ॥ दशशीसकेभुजवीसषंडनकीनगमनसकोपए ॥ आजानभुजतनमनुजआकृतिर
नविजयपनरोपए ॥ धरनीउधारविहारवारिधिजपतनितमुनिगनजयं ॥ दुषहरनदीन
निअभयवाइकतन्नमामित्रिलोकयं ॥ जिहिजोतिनिगमहुंअगमजानतअमितएकअषंड
ए ॥ जपिब्रह्मरुद्रजुगादिजोगीषोजकृतनवषंडए ॥ चितहूनआचितद्रगअगोचररहेहेरि
ऋषेश्वरं ॥ सोइदेहधारिमोकहँदिषायेतंनमामिनरेश्वरं ॥ षलजंतुग्रधकुजोनिषेचरप्रान
हिंसअपावनं ॥ पुनिरहततताकतभक्षततपरभ्रमतदयाअभावनं ॥ पलपिसितअसनभया
नप्रतिमापुरापुन्यप्रकाशनं ॥ अवधेसरामदयालदरशनटरीअंतकत्रासनं ॥ कारुण्यरूप
अकामनांकहँकरनकारनकेशवे ॥ संसारकरउद्धारस्वामीभूतदशरथसंभवे ॥ जोदुर्लभ
जोगीजातिनिजपद्हूंसततनिगमनिसाषिये ॥ यहरूपअसमअनूपअद्भुतराममम उरराषि
ये ॥ शतकोटिरतिपतिअमितसोभासंतविघ्नविनाशनं ॥ विश्वासमेकअनेकविग्रहप्रेमभा
वप्रकासनं ॥ यहसुन्यौरामस्तोत्रसानुजप्रसंनव्हैसीतापते ॥ वरदयौग्रीधहिचित्तवंछितप्र
भुसुरासुरपूजते ॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥ ममलोकनिर्मलपरमपदतुमपाइहौसपुनीत ॥
भवसिंधुतरहुषगेशनिर्भयगाइहैजगगीत ॥ पढिलिषैवानितपाठपूरनकरैव्रतजुतकोइ ॥
ममपरायनमुक्तिमहसारूप्यपावैसोइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहस्तोत्रजटायुविरचित
मुक्तिमारगमेक ॥ पुनिकह्यौकविनरहरपराकृतउपजिभक्तिअनेक ॥ करजोरिजाचन्याकरि
ममसबलषलअघसाल ॥ गतिदेहुदीनहिआपनौगनिदेवदीनदयाल ॥ ॥ श्रीराम
उवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तुमजैहौसुरलोकसुनहुषगपरमसयानै ॥ उहांदशरथअवधे
शप्रीतिजुततुमहिपिछानै ॥ सीताहरनप्रसंगसषाजिनिभूलिप्रकासहु ॥ करिवौमुहिसुरका
जसाधुतुमचित्तसमासहु ॥ अबचरितजुकछुव्हैहैआचिरज, ससमेतजगजानिहै ॥ कुल
सहितसुपैरावनकथा, विबुधलोकबषानिहै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥

प्रभुहेतप्रानतजिमुक्तिपाय ॥ सुरलोकबजेदुंदुभिसुभाय ॥ दृगनीरढरतरघुवीरदेव ॥ इहां अग्निदाहकीनौअजेव ॥ करअपनेकीयमृतसंस्कार ॥ पितुसषाग्रीधउद्धारपार ॥ बरचढि विमानहतसमरवीर ॥ धरिचिन्हशंषचक्रादिधीर ॥ शुभअमरचमरढारतसहास ॥ विहगे सभयौस्वर्गवास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामस्वरूपजुचित्तधरि । कीनौप्रानप्रवेस ॥ जोगतिदुर्ल भजोगिने । सोपदलह्यौखगेश ॥ ३८ ॥ ॥ अथकबंधप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्वैअक्षरी ॥ ॥ वनघनखोजतचलेविरागी ॥ अतिहिविरहप्रजरतिउरआगी ॥ जाहि ताहिपूछतधरधायौ ॥ छातीविषमविरहभ्रमछायौ ॥ सोचजुक्तपूछहिसरसरिता ॥ स अनकहुंबतावहुसीता ॥ दशादुसहरघुवरकीदेषी ॥ वरनिनजाइविरंचिविशेखी ॥ जानकी विछुरिभयौदुखजोई ॥ समझतएकरामपैसोई ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ चलिदक्षिनदिसत बरामचंद्र ॥ अतितापविरहअवधेसइंद्र ॥ वनगिरउतंगतरुतरलशृंग ॥ भरलतापुहपगुं जारभृंग ॥ मिलिविविधकुसुममंजरतमाल ॥ वनवर्णवर्णभूरुहविसाल ॥ वहिसीतमंदसौ गंधवात ॥ अन्नेकविहगवानीविष्यात ॥ नगदरीगहरनिर्झरनिनीर ॥ तरलताकुंजघनतीर तीर ॥ सरिताअनेकचलिसलिलसंग ॥ तटविकटभ्रमणनिर्मलतरंग ॥ सरवरविसालघन वनसरोज ॥ मनरहतभूलिरतिसौमनोज ॥ विस्तारगंधअंबुजबिराजि ॥ रसमत्तभ्रमितमि लिभृंगराजि ॥ जलजंतुविविधलघुदिव्यजाति ॥ भाषाअनेकअन्नेकभ्रांति ॥ गजमत्तजू थमज्जतगहीर ॥ निर्घोषगरजआंदोलनीर ॥ तरलतापंषिअन्नेकतीर ॥ सेवततरुछायासुष शरीर ॥ वनजंतुविविधवनघनविहार ॥ प्रतिमाअनेककोजानिपार ॥ भूधरनिसिंघगर्जित भयान ॥ मिलिहोतदरीप्रतिसब्दमान ॥ जुगभ्रातसभयवनचलेजात ॥ विस्मयजुतलक्ष्म नकहीवात ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ उद्विग्नहोतमनअकस्मात ॥ दृगबाहुफुरतकछुअ शुभदात ॥ अनमित्तहोतरघुनाथएह ॥ संभ्रमिताचित्तउपजतसंदेह ॥ सजिचलहुरामकोदं डसाज ॥ अनइष्टअसंभवमिलैआज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यौकहतएकराक्षसअमान ॥ भयकाररूपदेष्यौभयान ॥ सोइकोसमात्रअंतरकवंध ॥ उत्तमांगअगअनभावअंध ॥ अति घोरअसंभवरूपआय ॥ सनमुषहिपंथरोक्यौसुभाय ॥ मुषकूषजुमस्तकउदरमाह ॥ विस्ती रनजोजनमात्रवांह ॥ अनमस्तकआसुरदृष्टअंध ॥ कहीहैसुनामसंज्ञाकबंध ॥ गिरमानदेह षररोमराजि ॥ वानीसुमेघगर्ज्जाविसाजि ॥ घननीलवरनतनरौद्रघाट ॥ कर्कशकबंधआकृति कुवाट ॥ दुवबाहुमध्यइच्छादईव ॥ जोपरैभूमिनभचारजीव ॥ गहिलेइताहिभषकैगाजि ॥ भवभूतजानपावहिनभाजि ॥ अवधेससानुजनिकटआइ ॥ पापिष्टदेषिसंदेहपाइ ॥ ॥ राम उवाच ॥ ॥ करसंकटआएइहिंकुठौर ॥ इहांनाहिनलछमनजतनऔर ॥ भयअंतविहित फिरिवौनवीर ॥ संग्रामजतनकैसौसरीर ॥ पथरूक्यौनआगैगमनपाइ ॥ पैदेतनक्षत्रीविमुष पाइ ॥ निक्कोषषडगकीनैनिदान ॥ संग्रामवीरभयसावधान ॥ दक्षनभुजकाट्यौरामदेव ॥ अरुवामभुजालक्ष्मनअजेव ॥ घहराइकर्यौघननादघोर ॥ अतिदीर्घबाहुपरिदुहूंओर ॥ ॥ ॥ कबंधउवाच ॥ ॥ षलउपज्यौविस्मयसमरषेत ॥ हतबाहुविचारतभयोहेत ॥ ममभुजाहतकभुवचक्रमाहि ॥ निहचैसुरअसुरकोऊनाहि ॥ वनमाझकोनतुमनरवराक ॥

धसिजातधरनिममपरतधाक ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ धरढरतदुहूदिसरुधिरधार ॥
पापिष्टमनहुठाढौपहार ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ अवधेसनृपतिदसरथअभंग ॥ से
न्याअनेकचतुरंगसंग ॥ सुततासरामलक्ष्मनसधीर ॥ वनवनविहारहमकरतवीर ॥ मै
थिलीसंगममधर्मवाम ॥ निसिचारहरीकिहुंसीयनाम ॥ अवषोजतताकहँइहांआइ ॥
संकलितभएतवभुजसुभाइ ॥ यहरूपकहातुमकौनआप ॥ कोप्रगव्यौधौंप्राचीनपाप ॥
कारनकिहितबसिरछिन्नकीन ॥ नहींसुनीदेषियहछबिनवीन ॥ तहांरामचंद्रहसिपूछिता
हि ॥ यहप्रतिमाकारनकवनआहि ॥ ॥ कबंधउवाच ॥ ॥ छंदद्वैअक्षरी ॥ ॥ अंध
कबंधप्रसंगउचार्‍यौ ॥ धर्मधीरराघवउरधार्‍यौ ॥ जक्षराजहूंहुतौजगतपति ॥ पूरननेह
ग्रेहसुषसंपति ॥ अतिसुरूपअद्भुतछविअंगअंग ॥ सोमुहिगर्वबढ्यौजौवनसंग॥धनतन
मनमदअतिअधिकानौ ॥ ममछविसमकोउआननमांनौ ॥ प्रेमनिधानप्रीयामैपाई ॥ इ
हिमदमुहिअहमितिअधिकाई ॥ दिव्यठौरसरितावनदेष्यौ ॥ व्रतजुततहांनिवासिविशे
ष्यौ ॥ कमलसुवनहितबहुतपकीनौ ॥ देवसप्रसन्नमोहिवरदीनौ ॥ मैंअवध्यपदविधिप
हँपायौ ॥ भयौअभयविचरतमनभायौ ॥ रूपगर्वहमदंपतिचाढिरथ ॥ प्रेमपरायनजात
गगनपथ ॥ आठठौरतेवक्रतआतम ॥ अष्टावक्रनाममुनिउत्तम ॥ द्विजवहजातभूमिप
थदेष्यौ ॥ वसअचिरजहमहास्यविशेष्यौ ॥ मैंवनितासौंतर्कवषानी ॥ आपरूपअहमि
तिअधिकीनी ॥ यहहैपुरुषकहावतआपुन ॥ मिलित्रियकहामोददेहैमन ॥ तिहिंद्विजसु
निचितयौतबहमतन ॥ हसतजानिमुनिक्रोधकर्‍यौमन ॥ ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ ॥
श्रापऋषेशदयोमोहिरिसवस ॥ रेदुर्मदव्हैहैतूंराक्षस ॥ अधमजोनिपिसितासनआतुर
सबदिनरहहुसभयत्रासितसुर ॥ ॥ कबंधउवाच ॥ ॥ दुसहश्रापमोहिमुनिवरदीनौ
निजअपराधमानिमैलीनौ ॥ हमरथछांडिदिंडवतकीनै ॥ अरुदंपतिकहवचनअधीनै ॥
दंडप्रसादप्रमानद्विजेसुर ॥ प्रभुजोइकर्‍यौसुममसिरऊपर ॥ पुनिउधारकहहूमुनिपावन
॥ तातैंफेरिलहूंअपनौतन ॥ ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ ॥ दीनभएजबदेषेदंपति ॥ अष्टा
वक्रदयालभएअति ॥ करहिरामनरदेहसकारन ॥ त्रेताजुगभुवभारउतारन ॥ पितदस
रथआग्यावसपावन ॥ इहांव्हैहैदंडकवनआवन ॥ मारहितोहिछेदभुजदुर्मद ॥ पुनितु
मफेरिलहहुअपनौपद ॥ कहतमात्रममछुव्यौकलेवर ॥ प्रानचलेधुकिधरनिगिर्‍यौधर ॥
सुरसानामराक्षसीसुंदरि ॥ ताकेउदरवस्यौहूंसुरअरि ॥ अवधिपाइनामाआदूदन ॥ ज
नम्यौहूंराक्षसहिंसकजन ॥ जुगलभुजाममजोजनजोजन ॥ परवतमानसरीरअपावन ॥
विकलचेतजनथानविनासक ॥ पुन्यपरामुषपापउपासक ॥ कर्‍यौअनीतलोकभयकारन
॥ नियतव्रत्तमषहोमनिवारन ॥ डिगनलग्यौब्रंह्माडडरानौ ॥ सुनिउतपातसुरेशरिसानौ
॥ इहांइंद्रमोपरसजिआयौ ॥ भयौजुद्धजोदुहुमनभायौ ॥ तातैंभयउपज्यौतबतिहुपुर ॥
संकितमनसबभएसुरासुर ॥ सुरराजातबवज्रसँभार्‍यौ ॥ महाक्रोधमोहिमस्तकमार्‍यौ ॥
तिहिप्रहारहूंभयौअचेतन ॥ सिरधसिगयौउदरमहतिहछन ॥ भएनितंबजठरमहलीनौ
॥ हूंभयौमस्तकचरनविहीना ॥ तहांअवशेषकबंधरह्यौतन ॥ अतितिहिविरूपकूषमहआ

नन ॥ प्रथमब्रह्ममोहिदयौअमरपद ॥ मस्यौनहींतातैंहूंदुर्मद ॥महाविरूपदेषिसुरमोही ॥ हसनलगेसबदानवद्रोही ॥ विबुधवृंदतहांभएकरुनावस ॥ क्यौंजीहैंभषविनुयहराक्षस मुषअभावभषकोयहमानै ॥ सक्रहिकह्यौदयारससानै ॥ इंद्रदयालभयौतिहिअवसर ॥ बैकृतदेषिमोहिदीनौवर ॥ कूषहीमुषठ्हैहैतबराकस ॥ होइबाहुगतषाहुतबैतस ॥ जोभव भूतआइभुजभीतर ॥ सोपैभषौनबाहिरसंचर ॥ तबतैइहिगतिकालवितीते ॥ जुद्धजुरे सोपैमैजीते ॥ षगमृगप्रबलजंतुमैषाए ॥ अंतग्रहेभुजसंकटआए ॥ गिरिवनवसवहुका लगँवाए ॥ आजअवधिवसप्रभुइहांआए ॥ नासभुजाममआपनिवाख्यौ ॥ अंधकबंध कुजोनिउधाख्यौ ॥ दैवलषनकहआज्ञादीजे ॥ करीभग्नतरुसंचयकीजे ॥ तरलअग्निमह दाहियहैतन ॥ प्रभुपैंहूंअपनौपदपूरन ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ काठसदनलछमनत हांकीनौ ॥ प्रविस्यौतामहँअसुरप्रवीनौ ॥ ज्वालानलदुस्सहपरजाख्यौ ॥ अधमजख्यौमु षरामउचाख्यौ ॥ परमदेहअपनौतिहिपायौ ॥ शतकंदर्पनितेजुसवायौ ॥ अंगअलंकृत छबिअधिकाई ॥ पूरबजक्षजोनितिहिंपाई ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ निकसिअग्नितैंदिव्यतन । करिपरिक्रमणअनेक ॥ रामहिदंडप्रनामतहां । विधिजुतकृतसविवेक ॥ १ ॥ करिवंदन जुगजोरिकर । पुनिठाढोइकपाइ ॥ करतरामकौगुनकथन । विविधसप्रेमबनाइ ॥ २ ॥ लोचनभरिआनंदजल । उरउच्छाहअमाव ॥ तेजविराजितविपुलतन । भयौजुसात्विक भाव ॥ ३ ॥ ॥ **यक्षउवाच** ॥ ॥ **छंदवेताल** ॥ **अथस्तुति** ॥ ॥ तुमअनादिअनं तअद्वयचित्तवाचअगोचरं ॥ अबप्रकटसूक्षमरूपअद्भुतनाथजोतिनिरंतरं ॥ दृगरूपप्र भुतुमसर्वदेषतआपअदृशअकामयं ॥ शुभसगुनधारतदेहसुंदरअषिलप्रगटअनामयं ॥ सबगुननिसाषीभूतसांचेएकतुमजुअनंत ॥ जगदीसजानतनहिजडातमतुमाहिअबुधअ संत ॥ मनचित्तहूंतेभिन्नमाधवस्वयंसिद्धस्वरूप ॥ भगवंतकारनकरनअनुभवभूपहूकेभू प ॥ एकत्रताजबबुद्धिआतमजीवसंज्ञाजान ॥ अविकारअद्वयअजयग्राहीपरमपुरुषप्र मान ॥ शुभरूपसुषदअनादिसूक्षमसर्वव्यापकसोइ ॥ भवकमलभवकेहृदयभासतजोति मयजोकोइ॥पुनिद्वितीयरूपसथूलप्रतिमाविसदरचितविराट॥त्रिगुणमयभवभावनातुमध रतअद्भुतघाट ॥ महतत्वआवृतसर्वमयतुमभूतभव्यभविष्य॥ एसकललोकपलोकअवय वदृश्यहूअनदृश्य ॥ **लोकउवाच** ॥ पदमूलतवपातालप्रतिमापदमहातलपावनं ॥ तव गुल्फप्रभुराजतरसातलजघनअतलजनावनं ॥ जुगजानुसुतलप्रमानजगपतिऊरुवितल विभावए ॥ तवजघनभरतललोकराजितनाभिगगनवनावए ॥ उरदेशमिलिशि शुमारमंडलग्रीवगतमहलोकयं ॥ तववदनप्रभुजनलोकराजतआलिकतपअवलोकयं ॥ शिरसत्यलोकविसालसोभितबाहुदृढदिगदेवए ॥ श्रवणआसाधर्मश्रोतातिहिमजादत्वमे वए॥आघ्राणकारकउभयआश्विमुषमहानलमंडितं॥ तवनेत्रसवितासहसकरतिहिषगरथ तमषंडितं ॥ मनमुदितपूरनचंद्रमाभ्रुवभंगकालकराल ॥ समबुद्धिसुरगुरुमहाअहमिति प्रभुजुपाणिकपाल ॥ तववाणिविभ्रमविमलवेदादाढदृढजमदेव ॥ मिलिदंतपंक्तिनक्षत्रमा लाहास्यमायामेव ॥ कारण्यदेवकटाक्षक्रमउतपत्तिअषिलअनंत॥तवअग्रभागअजेवईश

सुधर्मगावतसंत ॥ प्रभुदृष्टिपापनिमेषहूंअनिमेषहोतअपार ॥सोइवहतनिशदिननित्यनिर्मलकर्मकारप्रकार ॥ तबकूपसप्तसमुद्रविस्तरनाडिनदनिर्धार ॥ अतिरोमभूरुहऔषधीएअषिलजगआधार ॥ तवरेतवर्षाविपुलऋतुबसहोतहैसुभहेत ॥ महिमाजुतवअनमानमाधवज्ञानशक्तिसचेत॥ यहथूलदेहअथूलउतपातिकरैध्यानजुकोय॥संसारबंधनकाटिसुषहीहेतमुक्तसुहोइ ॥॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ यहकबंधआराधसुगमसतमगउपदेसन ॥ कर्मछेदभवकरनप्रगटपरलोकप्रवेसन॥ रामरूपरतिकरनधर्ममूरातिउरधारन॥भवभवसंचितविषयभोगकृतकर्मप्रहारन ॥ जनहिंसकअंधकबंधजो, रूपआपलहिसाषिरवि ॥ कृतकर्मनाशहितरामके, कहेविरदनरहरसुकवि ॥ ॥ **जक्षउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सबरीपरमतपस्विनी।मनक्रमवचनसमेत॥पंथनिहारतरावरौ।हठीजुदरसनहेत ॥ १॥ आश्रमऋषिमातंगके। रहतिनियतव्रतनीत ॥ सीताकौकछुसोधसौं ॥ प्रभुकहिहैसोप्रीत ॥ २ ॥ कह्योजक्षपुनिजोरिकर । सुनियेहितउपदेस ॥ पंपासरवरतीरप्रभु । शुभऋषिमूकसुदेस ॥ ३ ॥ परवततिहिंसुग्रीवकपि । वसतवालिभयवीर ॥ सचिवबलीमुषचारिसंग । सेवकहनुसधीर ॥ ४ ॥ साषिअग्निसुग्रीवसौं । मैत्रीकरियेराम ॥ मर्कटजूथपजूथमिलि । करिहैसिद्धिजुकाम ॥ ५ ॥ व्हैहैसीताषोजतहाँ । पुरतीनहुंपरजंत ॥ अषिलरामभूचक्रयह । उनतेअगमनअंत ॥ ६ ॥ कृतप्रबोधरघुनाथकह । पुनिअपनौपदपाइ ॥ वरषतगगनप्रसूनवनि । सुभरथचढ्योसुभाइ ॥ ७ ॥ जाइमिल्यौत्रियबंधुजन । अपनैवंसअधीस ॥ ऐसेरामदयालअति । अधमउधार्योईस ॥ ८ ॥ ॥ **अथसबरीप्रसंग** ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ दक्षिनदिशगवनेरामदेव ॥ अतिविरहदशाव्यापितअजेव ॥ पंपासरपश्चिमतीरपाइ ॥ मातंगतपोथलआपआइ ॥ सन्यासवेषजटजूटसाज ॥ कारनाभूतहितदेवकाज ॥ कोदंडवानकरकटिनिषंग ॥ अभ्यासजोगवनवसनअंग ॥ भवहृदयरूपथितगूढभाव ॥ आराधकरतभवसुषअभाव ॥ सीयषोजतआएभ्रातसंग ॥ अविलोकेसवरीछबिअनंग ॥ इहांआतुरसवरीसमुषआइ ॥ सोपरीपाइसात्विकसुभाइ ॥ आनंदनयनजलकवउभार ॥ प्रछालिचरनभवभईपार ॥ विधिवारवारलैचरनवारि ॥ अविलोकतिभ्रातमवारिवारि ॥ पधरायरामआश्रमपुनीत ॥ विस्तारेदर्भासनविवीत ॥ इहांबैठिरामसानुजअभंग ॥ अविलोकतिसवरीअगंअंग ॥ उत्तमतरुपल्लवदीर्घआनि ॥ पुनअग्रधरेअतिहितप्रमानि ॥ प्रभुकाजप्रथमसंचितसुभाइ ॥ अंमृतमयस्वादफलदएआइ ॥ तरुत्वचावसनअंबरचलाइ ॥ विस्तरतिपवनलैलैबलाइ ॥ रघुनाथभक्षकीयफलरसाल ॥ देवाधिदेवदीनानिदयाल ॥ सुरवदतधन्यसवरीसनेह ॥ अविलोकिकृपारघुनाथएह ॥ महजिज्ञपुरुषजेतत्वमूल॥ सबरीफलखातसुसानुकूल ॥ अषिलेश्वरवनभोजनअघाइ ॥ सवरीकहपूंछतभएसुभाइ ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ सवरीकहिकारनवननिवास ॥ किहिहेतवसीइहांसावकास ॥ ॥ **सबरीवाक्यं** ॥ ॥ करजोरिकहतिसुनीयेकृपाल ॥ तुमदेवदेवदीनानिदयाल ॥ हूंअधमजन्ममशवरग्रेह ॥ हैताहूंमहँत्रीयअसुचिदेह ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ सुनिसबरीमे

रोमतसुसिद्ध ॥ पनजुक्तवेदसंमतिप्रसिद्ध ॥ भवभूतजुसाधनभक्तिभाउ ॥ समसांतस
दासात्विकसुभाउ ॥ मोहिनहिनजातिकुलवयसकाज ॥ चातुर्यकलासंपातिसमाज ॥ मा
याअलिप्तमनमानमारि ॥ गुरुगनैसबनिसहिरहैगारि ॥ अहमितिनहींव्यापैकवहूंअं
ग ॥ परहरैसंगविषयाप्रसंग ॥ हैनहिनज्ञानजिहिलच्छहानि ॥ मातासमजुवतीसबै
मानि ॥ सबजंतुब्रह्मदेषैसभाइ ॥ गृहजन्मवासवावनविहाइ ॥ सोभक्तगनतहूंसाधुसं
त ॥ उछाहजुक्तजीवनहुअंत ॥ सुनिकहूंभक्तिनवधासुभाइ ॥ लषितत्वइहैतूंचित्तलाइ
॥ गनिप्रथमभक्तिशतपुरुषसंग ॥ आपुनउपाधिवर्जितजुअंग ॥ ममकथाश्रवनमन
मोदमानि ॥ जगभक्तिइहैदूसरीजानि ॥ संजमसौंगुरुपदकरैसेव ॥ भक्तियहगनौती
जीसभेव ॥ तजिकपटकरैममगुननिगान ॥ मनलाइसुचौथीभक्तिमान ॥ मममंत्रजा
पविश्वासमानि ॥ विधिपंचमयहवेदनिबषानि ॥ सबभावजुसज्जनधर्मसाधि ॥ यहस
मझहुषष्टमनिरउपाधि ॥ संसारब्रह्ममयजानिसंत ॥ यहगनहुभक्तिसप्तमअनंत ॥ शुभ
जथालाभमानतसंतोष ॥ आठईभक्तियहपैंअदोष ॥ छलछद्मरहितअंतरअदीन ॥ हर
षनविषादमनअनमलीन ॥ विश्वासएकसमनहीनआन ॥ यहनवमभक्तिजानहुनिदान
॥ इत्यादिजुसाधैंपरमप्रेम ॥ नहींनारिपुरुषकारनसनेम ॥ जपहोमदानतपनियमजाग
॥ अध्ययनवेदवनवसिविराग ॥ हठिकरैसबैएभावहीन ॥ पावैनफलहिजद्दपिप्रवीन ॥
इहांनाहिनउद्यमद्वितीयआन ॥ परलोकहेतभावहीप्रमान ॥ त्रियपुरुषवापितिर्यगहुजं
त ॥ इकभावसिद्धिइहांआदिअंत ॥ सोइभावसिद्धितोहिभइअभीत ॥ परलोकहोहुम
मदरसप्रीत ॥ ॥ **सबरीवाक्यं** ॥ ॥ करजोरिकह्योसबरीसकाम ॥ रघुवंसतिल
कयहसुनहुराम ॥ ॥ **छंदद्विअक्षरी** ॥ ॥ वस्यौमहर्षिइहांगुरमेरो ॥ अतुलतेजत
पबलतिहिकेरो ॥ कालबहुतगुरुसेवाकीनी ॥ एकचित्तदासत्वअधीनी ॥ करतगवनगुरु
ब्रह्मलोककह ॥ मैविषादकीनोतबमनमँह ॥ परमदयालदुषितमोहिदेषी ॥ विप्रदईसिष
दयाविशेषी ॥ ॥ **विप्रगुरुरुवाच** ॥ ॥ त्रेताजुगव्हैनरअवतारा ॥ रामचंद्रहरिहैंभुव
भारा ॥ इहांरावनवधकारनऐहैं ॥ दीनदयालदरसतोहिदेहैं ॥ ॥ **सबरीवाक्यं** ॥ ॥
प्रभुमैफेरिकह्योगुरपांही ॥ नस्वरदेहभरोसौंनांहीं ॥ कहाविश्वासविनासीताकौ ॥ जाइ
करहैननिश्चयजाकौ ॥ ॥ **गुरुरुवाच** ॥ ॥ देवआइहैंहतनदशानन ॥ निर्भयरहितौलौं
इहिकानन ॥ ॥ **सबरीवाक्यं** ॥ ॥ वसतइहांमोहिकालविहाए ॥ आजफलेसाधनमन
भाए ॥ देवदयालदरसमैदेष्यौ ॥ वेदवचनमनअगमविशेष्यौ ॥ इहांऋषिमूकनिकटहै
आगे ॥ तहांसुग्रीववसतगृहत्यागे ॥ ऋषिप्रभावनिर्भयवहागिरिवर ॥ ताकेसरनसुकंठ
कपीश्वर ॥ वालिनिकालिदयोवहवानर ॥ वनवनभ्रमतसंगमंत्रीवर ॥ तासौंजाइकरहु
मंत्राई ॥ वैदेहीसोदेहिबताई ॥ कछुछनइहांविलंबनकीजै ॥ देवमोहिअवसदगतिदीजै ॥
॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ काठविपुलसंचयातिहिकीनो ॥ नियतचितातहाँरचितनवीनो ॥
सवरीकृतप्रवेसातिहिसाला ॥ उठीकलेवरज्वालकराला ॥ कृतबंधनजरिगएअकामा ॥
विमलसरीरमुक्तभईवामा ॥ उरधरिरामरूपछबिअद्वय ॥ मनहुंशुद्धतनभौकुंदनमय

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तिहिजोगानलजारितन । कीनौभस्मअकाम ॥ मुक्तभईसोजोति मिलि । रामरामकहिराम ॥ १ ॥ जोगतिदुर्लभजोगिनैं ॥ कीनैजतनअनेक ॥ निंदित जोनितथापित्रिय । विलसतिसहितविवेक ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जोगानलउपजाइ जतनसवरीतनजार्‍यौ ॥ पावनभक्तिप्रसिद्धअंतछनरामउचार्‍यौ ॥ अधमजोनिअसमर्थ कर्मउत्तमतिहिकिन्नौ ॥ दयारूपदेवाधिदेवअमरप्पददिन्नौ ॥ कहिविजयकीर्तिनरहरसुक वि, अमरवृंदजयउच्चर्‍यौ ॥वर्षाप्रसूनआकासबढि, कृतत्रिलोकउच्छवकर्‍यौ ॥ ॥ इतिसब रीपरलोकप्रसंग ॥ ॥छंदद्वैअक्षरी ॥ ॥ अतिहिविषादगवनकीयआगे ॥ फिरिकंदरवन ढूंढनलागे ॥ इहांप्रभुपंपासरवरआए ॥ सुषदविलोकतठौरसुहाए ॥ सरम्रजादसिरभूरुह सोभा ॥ सोछविनिरषिमदनवनछोभा ॥ चलतसुगंधमंदमिलिमारुत ॥ तहांसुनिविविध सुहावनषगरुत ॥रंगरंगपल्लवमिलिमंजर॥सौरभसुमनअंमृतफलसंचर ॥ वारिगहरवारि जविकसाँही ॥ मिलिमधुमत्तजुभ्रमरभ्रमाँही ॥ करतमधुपझंकृतकोलाहल ॥ जलदविता नमनहुंछायौजल ॥ मीनजातिविहरततहांअनमिति ॥ आपआपक्रीडतउछलतअति ॥ मकरग्राहकमठीअनमानहि॥जलचरजातिअनेकहुजानहि॥दादुररवसुनीयतचौहूंदिस॥ मनहुरटतआगमऋषिगुरुवस ॥ षड्गीमहिषवराहजंतुषल ॥ विषददेहमातंगमहाबल ॥ ज हांतहांमदमोषसुगाजत ॥ सलिलअगाधनिमज्जनसाजत ॥ चवरीगात्रगवयमृगचित्रित॥ जातिअनेकगहतजीयजितितित ॥ सिंघादिकजेनषीपलायन ॥ विग्रहविसदविषमषगवन वन ॥ जलपक्षीहंसादिकजेते ॥ आकृतिवर्णगनैकोएते ॥ तीरतीरमुनिवृंदतपोथल ॥ मिलिमषधूमगगनधुनिमंगल ॥ प्रभुविलोकिपंपासरपावन ॥ सलिलतीरऋषिमूकसुहाव न ॥ सबऋतुसुषदअगाधसरोवर ॥ नाचतमत्तमयूरनिरंतर ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तहांसु षदसरतीरनिकटठाढेरघुनंदन ॥ कठिनविरहज्वालाकरालसंतापितभौतन ॥ परसिरामत नपवनअसहतपभयौजुआतुर ॥ पवनतासपरजरतझंपलीनीपंपासर ॥ सुक्कयौसरोवरअ निलसंग, विगतवृक्षजलजंतुवर ॥ नतुनीरनत्रिणशतपत्रनही, फरफराइजारिमारिसफर ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अवनिविलोकतगमअगम । वनवनअद्रिविशेष ॥ कहूंनपा वतजानकी । उरसंतापअशेष ॥ २ ॥ इहअरण्यसमयौअषिल । पूरनभयौपुनीत ॥ क ठिनविरहरघुनाथकौ । शत्रुहरनवनसीत ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिअवतारचरित्रेम हामुक्तिमार्गेपौरुषेयरामायणेबारहटनरहरदासेनविरचितंआरण्यकांडसंपूर्ण ॥ ॥छ॥

॥ अथकिष्किंधाकांडप्रारंभः ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबकिसकिंधाकांडयह । वर्णनजुतविस्तार ॥ रा मचरित्रपीयूषरस । आतमहितउद्धार ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ मरुतजातकौमिलन प्रीतिरविसुवनप्रकासन ॥ वसनदरसवैदेहिसप्ततरुतालविनासन ॥ दुंददेहडुल्लवनबान उरविद्धनवालीय ॥ विहितराजसुग्रीवसहिततारारोमात्रीय ॥ ऋतुउभयप्रवर्षनगिरिरह न, महाजूथजूथपमिलन ॥ मैथलीसोधहितबलीमुष, चकितवीरचहुंदिसिचलन ॥ १ ॥ सघनस्यामतनसुभगबाहुआजानमहाबल ॥ धन्वीवरविज्ञानधामरक्षकद्विजगोकुल ॥

मायामानुषवेषधरनधरधर्मउधारन ॥ विहितविषमसन्यासवेषवनवनहिविहारन ॥ अघ
रोगहरनभेषजअतुल, सूरवंसअवधेससक ॥ शुभगतिहिदानिनरहरसुकवि, तन्नमामिर
घुकुलतिलक ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ क्रोशमात्रविस्तारक्रम । सरपंपासोपान ॥ तासुनिक
टऋषिमूकतहां । पर्वतमहाप्रमान ॥ अपरदिवसरघुनाथइहां । सममुनिवेषसुदेस ॥
सानुजसजितचापसर । परवतमूकप्रवेस ॥ ३ ॥ तिनहिदेषिसुग्रीवनव । मनमहवालि
प्रमानि ॥ भागिगयौगिरमुकते । मलयाचलभयमानि ॥ ४ ॥ मंत्रीचवहनुमंतमिलि ।
सोच्यौमनसुग्रीव ॥ कपटवालिऋषिवेषकरि । सोआयौइहिसींव ॥ ५ ॥ ॥ सुग्रीवउ
वाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ संपेषिइनहिउरउठीसूल ॥ ममचित्तनइहांठहरातमूल ॥
कैवेषविपर्जयकीयेवालि ॥ चितवैरमानिआयौसुचालि ॥ सबलयौछीनिममराजसाज ॥
कछुजदपिसरैहमतेनकाज ॥ रिपुअग्निसेषराषहिनराज ॥ इनअंतअवधिवसहैअकाज॥
तिहिंवेदविहितयहराजरीति ॥ निजकाजकरतनीतिहूंअनीति ॥ पृथ्वीशशत्रुपुनिसमय
पाइ ॥ अतिबलीअसंकितइहजुआइ ॥ हनुमंतजाहुतुमविप्रहोइ ॥ करीयेनिदानएहैजु
कोइ ॥ सोदुष्टजपैदेषहुअसंत ॥ तौकरहुहस्तसंज्ञातुरंत ॥ हसिहौतुमकिंचितहर्षहोइ ॥
करिहैनततोहमत्रासकोइ ॥ धारिविप्रवेषमारुतिसधीर ॥ राघवपहआयौमहावीर ॥ की
यरामदेषिद्विजनमस्कार ॥ उनविजयमंत्रआसिषउचार ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥
रसवीरनयनसन्यासरूप ॥ भवभिक्षुभावप्रतिमासभूप ॥ जटजूटजदपिशिरछत्रजोग ॥
पृथ्वीपअंगपूरनप्रयोग ॥ तनजोतिहोतिदाषतादिगंत ॥ अवतारपुरुषतुमकोउअनंत
जनकरनसरननासनजयंत ॥ रविकोटिकोटिआभारजंत ॥ नरनारायनतुमहीनिदान ॥
भूवभारहरनअरितिमिरभान ॥ किहुकारनमनुजाकारकीन ॥ नरनाथवेषभिक्षुकनवीन
॥ तुमकौनदंडवनकवनकाज ॥ रसशोकलीनअरुचिन्हराज ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥
सुषपायरामकहिसुनिहुशेष ॥ यहविप्रआहिपंडितविशेष ॥ सबविद्यापारंगतसुजान ॥
पुनिकहतवचनसोपेप्रमान ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ हनुमानप्रति ॥ ॥ द्विजसुनहुकह्यौ
तबरामदेव ॥ अवधेसपितादशरथअजेव ॥ ममनामरामविश्वहिविष्यात ॥ भटमहा
वीरएलषनभ्रात ॥ पितुआज्ञाहमवनवासपाइ ॥ आश्रमकृतपंचवटीहिआइ ॥ मैथि
लीसंगममधर्मवाम ॥ निसिचारहरीसीतेतिनाम ॥ भावननिफिरतषोजतसषेद ॥ द्वि
जजानततौकछुदेहुभेद ॥ तुमहुंधौअपनोममर्मतंत ॥ सबहमहिसुनाबहुब्रह्मसंत ॥ ॥
॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ मोहिजानहुंमारुतिबलअमाप ॥ अंजनीगर्भसंभूतआप ॥ ह
नुमंतनामहूंधर्महेत ॥ सुग्रीवदूतमनक्रमसमेत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कीयमारुति
अपनौंतनप्रकास ॥ विष्यातरूपवेदनिविसास ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ सुग्रीव
नामराजाकपीस ॥ सोवसतइहांऋषिमूकसीस ॥ करिद्रोहभ्रातदीनौनिकारि ॥ निस्सं
कबालिलइछीनिनारि ॥ सोइहांपंचमंत्रिनिसमेत ॥ व्हैदीनरहततिहित्रासहेत ॥ सुग्री
वसषाकीजैसनेह ॥ इंद्रसुतमारिअग्रजअरेह ॥ याकीत्रीययाकहँदेहुआन ॥ पनरोपि
करहुवाचाप्रमान ॥ तुमसरणविजयपंजरसुभाय ॥ राजाधिराजरघुवंसराय ॥ तेसी

यासोधकरिदैदिगंत ॥ करिहैसहायपुनिरमाकंत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांदी
नबंधुबोलेदैईव ॥ अबसषावेगिमिलवहुसुग्रीव ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हनुमंतसंगत
बसुरनिहेत ॥ सानुजप्रभुगवनेधर्मसेत ॥ ऋषिमूकशृंगतहांआइराम ॥ विलपातकर
तजुतविरहवाम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कीयअपनौउद्धारकपि । प्रभुकौकाजप्रमान ॥
हनूमंतसुग्रीवसौं । मिल्यौपाइसनमान ॥ ६ ॥ कारनआगमरामको । सबेकह्योसम
झाइ ॥ भएमनोरथसिद्धिसब । सीतानाथसहाइ ॥ ७ ॥ सुनतमात्रसुग्रीवशुभ ।
दौरेउठिसानंद ॥ दृष्टिभएरघुदेवतहां । दुरीगएदुषदुंद ॥ ८ ॥ कपितबदंडप्रनाम
कृत । आनँदउरनसमाय ॥ आइसमुषअवधेसयह । लीयउठाइउरलाय ॥ ९ ॥ उ
पजेसात्विकभावअंग । दुहुँघांपुलकितदेह ॥ सीतापतिऋषिमूकसिर । भौसुग्रीवसने
ह ॥ १० ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ लागिचरनकपिकहिभ
रिलोचन ॥ सुनहुरामप्रणतारतिमोचन ॥ समयएकऋषिमूकअद्रिसिर ॥ वैठेहमति
हिंठांषटवानर ॥ नभमारगकोऊपरवसनारि ॥ दीनभईअतिजातिदुषारी ॥ रामराम
हारामलगीरट ॥ पदनूपुरतिहिडारिदयोपट ॥ पटभूषणसोपैहमपायौ ॥ इहांपवनसु
तआनिदिषायौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ लषिसीयवसनलाइउरलीनौ ॥ देवविलोकिल
षनकरदीनौ ॥ भरिभरिनयनदेषिदोऊभाइ ॥ प्रानसमानमनहुनिधिपाइ ॥ भईप्रती
तिविलोकतभूषन ॥ मुरझिमुरझिठहरातनकहुंमन ॥ बुडतितरतिज्योंघटिकावेली ॥
आनिरहीजीयआसअकेली ॥ पवनपूतमंगलपरजारे ॥ रामसुकंठतहांपाउधारे ॥
अग्निसाषिमित्रत्वउपायौ ॥ भाषिपरसपरजोइमनभायौ ॥ बढिविश्वासउरनिसुषबाढे ॥ क
हिदुषदुसहनठकसलकाढे ॥ श्रीरामउवाच ॥ हसिकहिरामसषादुषहरिहौं ॥ करिवधवा
लिनिकंटककरिहौं ॥ मारौवालिभरोसामोही ॥ तबसुग्रीवराजद्यौंतोही ॥ इहांमित्रसंदेहनआ
नहु ॥ जोममवचनसुनिश्चयजानहु ॥ कहीयेअबअपनौदुषकारन ॥ वसजिहित्रासभ्रमतहौ
वनवन ॥ सुग्रीवउवाच ॥ कहततहांसुग्रीवजोरिकर ॥ प्रभुतेअगमनलोकइहौपर ॥ सुन
हुतथापिकहूंकछुस्वामी ॥ जगतचराचरअंतरजामी ॥ बडौवालिहूंअनुजमहाबल ॥ व्हैंआ
ताकपिसंगअमितदल ॥ पुरपत्तनप्राकारप्रबंधा ॥ करतअकंटकराजकिष्किंधा ॥ जूथप
जूथमिलहिकपिजितातित ॥ मंत्रीहितहनुमंतमहामत ॥ अतिबलदैतदुंदनामाइक ॥
हठिदुष्टपापीजनहिंसक ॥ मनमदवाढ्योगर्वअमाना ॥ मानतकाहुनआपसमाना ॥ जुद्ध
जुरनजिहिंतिहिंप्रतिजाई ॥ पाइविजयअहमितिअधिकाई ॥ तिहिंजमराजमहाबलजा
न्यौ ॥ मोसौवहिभिरहैमनमान्यौ ॥ अंतकद्वारपुकार्‌यौआसुर ॥ आयोसुनतधर्मअतिआ
तुर ॥ ॥ दुंदभीउ० ॥ ॥ मेरेभुजाषुजातभिरनजम ॥ मोहितुमसौंबनिहैरनसंगम ॥ काल
वलीतुमतेनहींकोइ ॥ संसृतिउपजिपचतकरसोइ ॥ ॥ यमउवाच ॥ ॥ देषिसमयज
मउत्तरदीनौ ॥ हूंभयौजराग्रसितबलहीनौ ॥ तनजोवनधनमदमतअनतुल ॥ विबुधसा
लतुमदुंदमहाबल ॥ इहिंभुवचक्रबलीभटऐसौ ॥ तुमसौंभिरैबालिकापितैसौ ॥ मिलतबली
मुषदलआनिमंधा ॥ कपिवहकरतराजकिष्किंधा ॥ वेगिजाहुसबछांडिविकलपन ॥ समसं

ग्रामउचिततुमउनसन॥ ॥ सुग्रीवउवाच॥ ॥यहसुनिदुंदकिष्किंधाआयौ॥ छोहसद्रो
हगर्वमनछायौ॥ दैतअर्धनिसिठाढौद्वारे॥ प्रगटवालिहिवालिपुकारे॥ कहात्रीयनिमहठा
ढौकातर॥ ब्रह्मसृष्टिहुंकरौंअवानर॥ माहिषरूपषलबलआनिमंधा॥ कुटिलषरौद्वारैंकिष्किं
धा॥ समयसक्रसुतवीरसँभाख्यौ॥ बिषमषेतचढिदुदंवकाख्यौ॥ दुहुंसंग्राममच्यौतहांदारु
न॥ घाउदाउकीनौतिनअतिघन॥ पकरिशृंगसौवालिपछाख्यौ॥ मानहुरजकवसनसिल
माख्यौ॥ कपिलैडाख्यौदुंदकलेबर॥ जोजनअंतगयोभौजरजर॥ तिहिंगिरिरिषिमातंगत
पततप॥ जतीसमूहकरतजहँतहँतप॥ पर्वतरुधिरनिकख्यौअपावन॥ असुरमृतककौत
नभयौआवन॥ मुनिमातंगभयौदुषितमन॥ श्रापदयौतैहीछनअसहन॥ जिहिचंडारय
हमृतकचलायौ॥ वहमारिहैइहिंपर्वतआयौ॥ ईऋषिमूकवालिजोआवै॥ पापीतिहिछन
पंचतुपावै॥ असुरहिमारिवालिघरआयौ॥ वाजेविजयसुवीरवधायौ॥ दुंदपुत्रमायावीदा
रुन॥ पितावयरलाग्यौसोकृतपन॥ वहषलअतिसरोसनितआवै॥ पकरिषाइजोइवानर
पावै॥ पुनिपर्वतकंदरमहंपापी॥ पैठिरहैद्वारैशिलथापी॥ कंदरवहपावतनहींकोई॥ हठि
करिरहैनिरुध्यमहोई॥ निसिसंघारकरैवहनिशिचर॥ वासुरकंदरलहैनवानर॥ जगतेऊ
भएअकालकेजोधा॥ बलविक्रमजद्दपिबुधिबोधा॥ मिलेवालिहमसचिवमहामत॥ एक
समयबैठेजुतहनुमत॥ ॥ वालिउवाच॥ ॥ नीतिनिपुनतुमसबदलनायक॥ वालि
विशेषकह्यौयहवायक॥ काजविचारिसमयअबकीजै॥ सत्रुनपरिभवसबलसहीजै॥ ॥
सुग्रीवउवाच॥ ॥ एकनिसामुषगूढठौरगहि॥ कपिराजाबैठेमंत्रिनिकहि॥ इहांअसु
रमायावीआयौ॥ वालिवकारिसुदुष्टकुलायौ॥ विषमजुद्धभौआसुरवानर॥ भग्यौसुदेह
दुहुनिसमसरभर॥ माख्यौवालिअसुरसोमुष्टीय॥ जुद्धछांडिगोलैअपनौजीय॥ दुष्टभा
गिपैठ्यौगिरिकंदर॥ द्वारशिलालैदीनीदुर्धर॥ सँगहमवालिहनूमंत्रिनिसम॥ मिलिदौरे
सबषोजतक्रमक्रम॥ देषिचिन्हपदकंदरद्वारे॥ वीसविसेयामांझिबिचारे॥ मासअवधिदै
वालीमहाबल॥ सोतहांधस्योद्वारढारीसिल॥ ॥ वालिउवाच॥ ॥ तुमसबरहहूद्वार
थिततौलौं॥ जतनकरहुहमआवहिजौलौं॥कोउषलआनिनमूंदैकंदर॥ तातेतमप्रसरैनहीं
भीतर॥ ॥ सुग्रीवउवाच॥ ॥ कख्यौप्रवेसवालितिहिंकंदर॥ सनमुषअसुरआइजुरिस
महर॥ दाउघाउबहुभएदुहींदिस॥ वीत्यौमासअसेषअवधिदिवस॥ ढरिवाहिरनिकसीरत
धारा॥ निधनवालिजान्यौनिर्धारा॥ अवधिवितीतीवालिनआए॥ सबहिनकैमनसंभ्रम
छाए॥ कपिपतिजूकेनिश्चयकीन्यौ॥ भ्रातसुग्रीवशोकरसभीनौ॥ दईशिलामैकंदरद्वारे॥
माख्यौवालिसुमोहूमारे॥ रोवतचलेसबैमनमारे॥ परदुषीहाहाबालिपुकारे॥ इहांहमसबै
किष्किंधाआए॥ वालिमरनकारनजुबताए॥ घरघरसोकदुसहरोदनघन॥ देषिनजाइस
मयसोदारुन॥ कख्यौवालिकौअंगदमृतकम॥ जथाधर्मसबसंजुतसंजम॥ भयौवयरदैत
निसौभारी॥ देसअराजकलोकदुषारी॥ सज्जनसुभटमंत्रिहममिलसव॥तत्वविचारबैठकी
नौतब॥ राजभारअंगदनअधारै॥ वनवनवालिचरित्रविहारै॥ ॥ हनुमंतउवाच॥ ॥
कहिमारुतिमेरौमतकीजै॥ देसभारसुग्रीवहिदीजै॥ अंगदवयबलबुधिअधिकावहि॥

तौलगिराजसुग्रीवचलावहि ॥ ॥ लोकउवाच ॥ ॥ कह्योसबनियहमतअतिनीको ॥ करियैअबसुग्रीवहिटीको ॥ मैंयहबातसुनतमनमाही ॥ निहचैसोचकरयौशुभनाँही ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ हूंतबनत्योराजनहींलैहों ॥ जोहठकरहुनिकासिपैजैहों ॥ इहांजीयत कबहूंवहआवे ॥ वालिमारिमुहिजैतबजावे ॥ निसचयवालिमरयौकोऊजाने ॥ ममकरग हौततौमनमाने ॥ त्रिकालज्ञहनुमंतमहामत ॥ वचनसूरअरुवहैवीरव्रत ॥ करग्रहिहनूति लकमोहिकरयो ॥ सबहिनतबबुधिबलअनुसरयो ॥ कीनयहैपनकपिसबकोई ॥ हमहिसु ग्रीवएकगतिहोई ॥ पर्जागतसंपातिमेंपाई ॥ भूमिराजभामिनिमनभाई ॥ विभवदयोमो हिसबनिविचारयो ॥ अंगदवालिगोदबैठारयो ॥ वैभवपाइमासषटवीते ॥ जुद्धजुरेदुर्जन सैजीते ॥ मांझविवरमायावीमारयो ॥ निकस्योवालीसबनिनिहारयो ॥ आयोवालीसुन्योअ चानक ॥ कांपीमोहिछातीभयधकधक ॥ सुनतवचनमनुवज्रपरयोसिर ॥ तजिसबहूंभाग्यो अतिआतुर ॥ सचिवचारिहनुमंतसहाई ॥ एऊभागिमिलेमोहिआई॥भयकंपितहमसबमि लिभागे ॥ लषेवालिउठिपाछेलागे ॥ अमतरहेगिरिगिरिकंदरभय ॥ मनुहमभएकीटभृंगी मय ॥ इहिंऋषिमूकसरनजबआए॥ प्रानविसासस्वासतबपाए॥प्रभुकौइहांदरसमैपायो॥ उरआनंदभयोअनमायो ॥ अहनिशिरहतत्राशमोहिवाको॥ त्रीयलइछीनिमहादुषताको॥ मुहिसनाथकरिवालिहिमारहु ॥ उदधिशोकबूडतउद्धारहु ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ भयो सषित्वहमहितुमभाई॥ सबविधिव्है हूंतोहिसहाई ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ बहुरिसुग्रीव चरनगहिबोले॥ देवबचनहिमगिरिनहीडोले॥ वयकिसोरतुमअतिबलवानर ॥ नहिंसंग्रा मतुमहिउनसमसर ॥ देवप्रतीक्षाद्देममदीजे ॥ पाइभरोंसाचित्तपतीजे ॥ साततालवेधहुजो इकसर ॥ करग्रहिटारहुदुंदकलेवर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ चाढिधनुषतहांबानचलायो॥ अगमतालहतिप्रभुकरआयो ॥ मारिफारिपर्वतछनमाही ॥ संपाज्योफिरिमगनिसमा ही ॥ बढिनभफोरिचरणज्योवामन ॥ ततछिनलीनभयोवामनतन ॥ प्रभुलैधनुषअग्र प्राहारयो॥ दुंददेहजोजनदशडारयो॥देवअभूतपराक्रमदेष्यो॥विश्वईशपरब्रह्मविशेष्यो॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ मनसुग्रीवसंदेहनमानहु ॥ जोइअभिलाषसत्यसोइजानहु ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उपजतिमनमेरेआंनिएह ॥ सुग्रीवसषासुनिनिसंदेह ॥ जगवि दितजन्मरघुवंसजानि ॥ अवधेसग्रेहउतपन्नआनि ॥ अग्निदैसाषिअरुदेवओर ॥ कपि निसोंकरीमैत्रीकुठौर ॥ मारिवौबहुरिमर्कटमलीन ॥ दैवहतभयोअरुजंतुदीन ॥ चंचल सुभावअज्ञानचित्त ॥ निर्लाजनिडरअनसौचचित्त ॥ करीयैवधवानरछांडिकानि ॥ अ पलोकलोकमहलगैआनि ॥ लोकापवादतेलगतिलाज ॥ यहसमझिहोतमनचकितआ ज ॥ करिवौतथापिअबमित्रकाज ॥ अरुगह्योसरनतैंदीनआज ॥ हूंसरनविजयपंजरसु भाइ ॥ सोभाषतनिगमागमसुनाइ॥ अपराधीतेरौबालिआहि ॥ तुमजाइपुकारहुवेगिता हि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांकिष्किंधासुग्रीवआइ ॥ संक्रोधवचनबोल्यौसुनाइ ॥ वालीजबलष्योसुग्रीवबैन ॥ निकस्योसकोपआरक्तनैन ॥ जाजुल्यभयोदुववीरजुद्ध ॥ कृतदाउघावअतिबलसक्रुद्ध ॥ मुषरूपएकआकृतिप्रमान ॥ वधमित्रदोषमोष्योनबान ॥

मुष्टिहतकर्योसुग्रीवमारि ॥ गौकूदिवालिमंदिरमझारि ॥ सुग्रीवहोतमुषरुधिरश्राव ॥ सोभ्रमितदेहआयौसद्राव ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सत्रुहाथप्रभुकहासंघारहु ॥ ममवधकाजतआपुनमारहु ॥ प्रभुकरमरौंतसदगतिपाऊं ॥ जानिअन्यथानकेहिजाऊं ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ देषेतुमहिएकाकृतिदोऊ ॥ सोचभयौमोहितातैसोऊ ॥ मित्रघातपातकमैमान्यौ ॥ तातेरह्योधनुषसरतान्यौ ॥ संकातिहिमोष्यौनहिसाइक ॥ प्रियजनघातदुसहयहपातक ॥ करहुचिन्हकछुलक्ष्मनयाकँह ॥ तिहिविश्वासहतौंषलताकँह॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लक्ष्मनअपनीकुसमरसाला ॥ मेलीसुकंठकंठवनमाला ॥ कीनौचिन्हप्रतीतिसुनीकी ॥ देवसुग्रीवहिआज्ञादीनी ॥ इहांसुग्रीवकिसकिंधाआयौ ॥ पुनिहुपचार्योप्रभुबलपायौ ॥ बढिरिसवीरभयौरोषारुन ॥ दुसहवालिऊठ्यौषलदारुन ॥ ॥ तारावाक्यं ॥ ॥ इहांतारापकर्योपतिअंबर ॥ प्रभुसुनियेयहमंत्रबुद्धिपर ॥ अबहिसुग्रीवपराजयपायौ ॥ उनषोजनिबहुर्योफिरआयौ ॥ उपज्यौकोउसहायकवाके ॥ ततछनयहआयौबलताके ॥ ॥ वालिरुवाच ॥ ॥ त्रीयासुभावअकारनकातर ॥ विस्मयकरतिरजुतेविषधर ॥ इहिंसहायविधिविष्णुमहेसर ॥ सोउपेकरैतमारौंसमहर ॥ ॥ तारावाक्यं ॥ ॥ तबफिरकह्योताहित्रीयतारा ॥ सुनहुनाथममवचनाबिचारा ॥ गएआषेटकक्रीडाअंगद ॥ वनवनविहरतबुद्धिविसारद ॥ सुनीनिषादनिसौंजहांजैसी ॥ तत्वकहतिहौंसुनीयैतैसी ॥ जगप्रासिद्धदसरथकेजाए ॥ रामलषनइहिंकाननआए ॥ तिनसौंकरीसुग्रीवमित्राई ॥ भएसहायवीरदोउभाई ॥ इनकेबलइहिंठांयहआयौ ॥ सबप्रसंगमैतुमहिसुनायौ ॥ कंतसमयलषियहमतकीजे ॥ अबकरग्रहिभ्राताआनीजे ॥ तजहुविरोधवयररिसत्यागहु ॥ लषिअपनौहितकारिजलागहु ॥ देसुग्रीवहिजुवराजापद ॥ आनिगोदमेलहुलैअंगद ॥ पुनितुमकरहुरामपदपूजा ॥ देषहुइहांउपायनदूजा ॥ शरनगएराघवहितचाहत ॥ होतदयालबचननिबोहत ॥ तिहिंछनरुदतिचरनगहितारा ॥ त्राहित्राहिवल्लभभरतारा ॥ लईउठाइअंकभरिलीनी ॥ प्रेमजुक्तकहिवातप्रवीनी ॥ दयतेमोहिनहींकाहूडर ॥ सबमैदेषेबलीसुरासुर ॥ काढिदयौमैपापीकातर ॥ कैसौलाऊंताहिपकरिकर ॥ विश्वविदितहूंबालिमहाबल ॥ दुर्गमजूथपजूथमलहिंदल ॥ कहोंकदापिवचनजोकातर ॥ उदयनहोयतजोरविअंवर ॥ बचनदीनजोवालीबोलै ॥ डिगैकमठअहिधरगिरिडोलै ॥ इहांप्रीयेउरसोचनआनहु ॥ पुरुषहिसाहससिद्धिप्रमानहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नारिप्रबोधवालिनहिंमान्यौं ॥ अंतकग्रासितगर्वउरआन्यौ ॥ सिंघनादकरिउठ्योसक्रसुत ॥ अतिबलअतुलपराक्रमअद्भुत ॥ देषिसुग्रीवहिधायौदारन ॥ मान्यौनहिनरामभयकछुमन ॥ जुटेपरसपरदोऊजोधा ॥ कालकरालमनहुभएक्रोधा ॥ भिरतकरतअतिनादभयानक ॥ धसकितधरनिलोकउरधकधक ॥ डिगतसुग्रीवरामजबदेषा ॥ विटपओटप्रभुदयाविसेषा ॥ करकोदंडतानिकृतकुंडल ॥ मोष्यौविजयीविसिषमहाबल ॥ सनमुषलग्यौवालिउरसोई ॥ लगततासुव्याकुलअतिहोइ ॥ मुरछितभयोरह्योनहिसुधिकर ॥ रुधिरवमनधुकिवीरपर्योधर ॥ इहांदयालरामतबआए ॥ सर

धनुपानिसुरूपसुहाए ॥ धरिजटजूटवसनवनधारे ॥ मंडितकटितूनीरमुरारे ॥ वामपानि धनुसरबीयसोहत ॥ मानहुंमदनचराचरमोहत ॥ चलभृकुटीअंबुजदललोचन ॥ चक्षु विसालविमलमालावन ॥ तनघनस्यामजानुलंबितभुज ॥ रोषारुनप्रफुलितमुषपंकज ॥ इकदिसअनुजाचित्तअनुगामी ॥ दुतियसुग्रीवमध्यसुरस्वामी ॥ गौअचेतमूर्छाजबजागी ॥ अरुननयनकपिवर्षतआगी ॥ महानादकीनौतहांमर्कट ॥ अवनिसकंपअद्रिघट औघट ॥ दिव्यसुरूपरामतबदेषे ॥ बढ्यौवालिउररोषविसेषे ॥ ॥ वालिउवाच ॥ ॥ वालिवचनबोल्यौतहांवैषम ॥ अतिसक्रोधप्रजरतमनुआतम ॥ रामकाजमैंक हाबिगास्यौ ॥ कहाशृगालसुग्रीवसुधास्यौ ॥ रघुकुलउपजिकहावतराजा ॥ करतनी तियहधर्मअकाजा ॥ समरलरतहमदोऊसोदर ॥ तुमतरुओटहसतरहेहरहर ॥ क वनधर्मयहवीरअकारन ॥ मिलिहैजांहिंएककहमारन ॥ वानसाजिमोहिसमुषबुलावत ॥ ततौप्रतीक्षापौरुषपावत ॥ व्हैतरुओटराममोहिमास्यौ ॥ यामहपौरुषकोनउघास्यौ ॥ पनकरिकहासुजसतुमपायौ ॥ निसचरज्योंहतिमोहिनसायौ ॥ दुष्षभेदतुममोहिनदीनौ ॥ कारनयहजुसहायककीनौ ॥ त्रीयाहरनभौवसतपंचवट ॥ लैगयौलंकदसाननलंपट ॥ जगतविदिदिततुममोहिनजान्यो ॥ पीडितविरहनतत्वपिछान्यो ॥ कुलसमेतरावनज्यौं कूकर ॥ आनतबांधिरज्वछनअंतर ॥ विषमलंकसंजुतवैदेही ॥ तुमहीसेयांसबसंपत तेही ॥ तुमहिकहतजगजीवचराचर ॥ धर्मपरायनरामधुरंधर ॥ व्याधकर्मकृततुममुहि मास्यौ ॥ विहितनभक्षअभक्षविचास्यौ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ आदिमध्यअवसान, हेतए कतुमकूंकहत ॥ सबकहसदासमान, हत्यौमोहिअपराधकिंहिं ॥ १ ॥ सुनोवातश्री राम, वालिअरक्षआषेप्रभुहि ॥ कीनौषोटोकाम, अनुचितव्याधनिखादसम ॥ २ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ हमरघुवंसधर्मरषवारक ॥ पुन्यपरायन पापप्रहारक ॥ नीतितजैतिहिंमारिनसांवहि ॥ विधिजुतधरमीताहिवसावहि ॥ दुहिता बहिनभ्रातसुतदारा ॥ सदाअगम्यवेदव्यवहारा ॥ इनकहँजोकोउभजैअज्ञाना ॥ पापी कहीयतवेदपुराना ॥ पापीतैंलैभ्रातापतनी ॥ वाहिविडारिभजीकरिअपनी ॥ जथापराध दंडनृपदेहीं ॥ जोनदेइतौपातकतेहीं ॥ पापदशांसभूपतीपावे ॥ जोनप्रजाकहँपंथचलावे ॥ तातैंदुष्टतोहिमैंदीनौ ॥ कायकदंडउचितइहांकीनौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रगटेवालिपु राकृतपावन ॥ मूर्छागईज्ञानउपजौमन ॥ ॥ वालिरुवाच ॥ ॥ दैंहिकदंडदेवमोहिदीना ॥ नियतप्रमानसीसधरिलीना ॥ कोऊकुबुद्धिक्रोधवसकीनौ ॥ नाथक्षमहुअपराधनवीनौ ॥ षईकरैंजोपैसंतोषे ॥ पितापुत्रकहतद्दपिपोषे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बोल्यौवालिदीनज बवानी ॥ इहांदयालदयाउरआनी ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ हमसुग्रीवसरनगतकेहित ॥ वध्यौवालितोहिराष्योकुलव्रत ॥ तनकरिअमरजिवांऊंतोही ॥ मरनवचाइवालिभाजि मोही ॥ ॥ वालिरुवाच ॥ ॥ जतनकरतभवभवमुनिजोगी ॥ व्रतसंजुततपविषमवि योगी ॥ विधिविधिजोगप्रजोगबनावत ॥ अंतकालमुषनामनआवत ॥ सोइतुमरामदेह धरिस्वामी ॥ मोहिदरसदीयअंतरजामी ॥ रामनामजोकाशीशंकर ॥ सिषवतनरनिमर

नकेअवसर ॥ नामदुर्लभतिहिंदरसननरहर ॥ आगेकहांबनैयहअवसर ॥ प्रभुममभये मनोरथपूरन ॥ देवसमयइहिपायोदरसन ॥ जगतईसतुमरघुपतिजाने ॥ पूरनपुरुषजुवे दप्रमाने ॥ तुमप्रसिद्धव्यापकभवप्रानी ॥ मायाआदिमैथिलीमानी ॥ यहहमतुल्यबलीहै अंगद ॥ प्रभुअपनोकरियेसेवकपद ॥ नाथविजयपंजरसरनाई ॥ इहिप्रतिपालकरहुअ पनाई ॥ मोहिविसल्यकरहुकरुनामय ॥ जोतिजांउयहजन्मभयोजय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सरकाढ्योजबसरनसहाई ॥ परममुक्तिबालीकपिपाई ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरनागतहितसक्रसुत, कीयतवप्रानप्रहार ॥ सोबदलौलैहौसुषहि, तुमकृष्णअवतार ॥ ॥ १२ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कबित्त ॥ विषदवानउरविद्धबालिरणसज्यावानर ॥ व्हैदयालर घुदेवसुकरकाढ्योअपनोसर ॥ प्रगटप्रानकीनोप्रयानअपनोपदपायो ॥ इंद्रमाझमिलिइंद्र असबपुकीसविहायो ॥ बाजेत्रिलोकबाजतविजय, बढीकीर्तिसीतावरन ॥ शुभगतिप्रसाद नरहरसुकवि, रामविजयपंजरसरन ॥ ३ ॥ छंदपधरी ॥ प्रभुसुन्योबालिमारयोप्रमान ॥ सबमिलेसुभटमंत्रीसमान ॥ कलकलारवनछुंकारकीन ॥ अतिरोषकीसगर्जतअदीन ॥ को उकहैकरहुरक्षाकुमार ॥ सुग्रीवसबकुलकरीयेसंघार ॥ प्राकारद्वाररुंधितप्रमान ॥ थितभ एसुभटसबथानथान ॥ दीनेकपाटतबचतुर्द्वार ॥ कृतजननमध्यअंगदकुमार ॥ इहांनगर अमंगलसब्दहोइ ॥ सुरदुसहसुन्यौरनिवाससोइ ॥ सिरमुक्तकेसतारासत्रास ॥ उरहनत पानिमोचतिउसास ॥ सासोकसिंधुबूडातिसषेद ॥ भवतोरिहारशृंगारभेद ॥ रनभूमिआइ तारारुदंत ॥ तहांदेषिवीरसज्यासुकंत ॥ रजरुधिरलिप्तसोभासुभाइ ॥ बिश्रामसमरपति गहेपाइ ॥ हाप्राननाथयहकौनहाल ॥ सुग्रीवनिवारेहृदयसाल ॥ प्रियचरनधारिरोदतिपु कारि ॥ मोहिप्राननाथकिनचलेमारि ॥ अंगदनगरधनराजआज ॥ कछुनाहिनमेरेइन हिंकाज ॥ शुभतजौनहिंनभर्त्तारसंग ॥ आनंदसहितदहिअनलअंग ॥ करमींजतरोव तसबैकोई ॥ सुनीयतइकहाहारवनसोइ ॥ इहिंसमयरामतहांनिकटआइ ॥ रसरोषभरी तारारिसाइ ॥ ॥ तारावाक्यं ॥ ॥ निहत्योजिहिंसायकप्राननाथ ॥ हतीयेअबमोहूति हींहाथ ॥ पतिलोकजाइपतिमिलिसप्रेम ॥ नितकरौंचरनसेवासनेम ॥ पतनीविनुपतिजो सहतपीर ॥ वर्ततसोतवउरआजवीर ॥ पतनीदुषसहतिजुविनापीय ॥ समझिहैसुतोइहि समयसीय ॥ वालीतुमनिरस्योंमारिवान ॥ दीजैअबताकैंहंत्रीयादान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनिसोकवचनरघुपतिसधीर ॥ विश्वासदेततिहिसमयवीर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पतिकाजरुदतितुमककरिप्रलाप ॥ वहपतिसुकौनमोहिकहहुआप ॥ समझतिपतिजीयकै धौंसरीर ॥ सोकहहुहमहिधारिचित्तधीर ॥ जडदेहपंचभौतिकप्रयोग ॥ त्वकमांसअस्थिश्रो णितसंजोग ॥ सबदेहपस्योतबअग्रसोइ ॥ कछुहुतौजीवदेष्योनकोइ ॥ भूगगननीरमंगल समीर ॥ संजोगपंचसंज्ञासरीर ॥ संबंधजीवकैधौंसरीर ॥ अबरोवतिहौजाकहअधीर ॥ हि तजानतजौसंबंधदेह ॥ अतिजतनचलहुलैग्रेहएह ॥ जानतसंबंधीजपैजीव ॥ सोदेह भिन्नमायादईव ॥ ताकेनरूपरेषानरंग ॥ उपजैनमरैअव्ययअभंग ॥ तिष्ठैनजाइसब दिनस्वतंत्र ॥ मानैनजतनकछुजंत्रमंत्र ॥ निर्धारषंढनाहिंपुरुषनारि ॥ व्यथरहितस

वेंव्यापकविचारि ॥ संबंधसकलमिथ्यासंसार ॥ विस्तारविभवस्वप्नौविहार ॥ हैमन
हीबंधनमोषहेत ॥ चीन्हैंजुसुभासुभवहैचेत ॥ संबंधनजीवहिकछुसरीर ॥ इनकाज
मरहिरोवहिअधीर ॥ कोजीवदेहकाकोंकहाइ ॥ जगविदितनिकसिकैंविनसिजाइ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ प्रभुवचनउपजितारापबोध ॥ सबलह्योज्ञानअज्ञानसोध ॥ सो
सुनतसबनिकौगयौसोक ॥ लहितत्वसांतचितभएलोक ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥
देवसुग्रीवहिआज्ञादीनी ॥ कृपाजथोचितवालिहिंकीनी ॥ करस्नानसुद्धीसबकोइ ॥ हा
थजोरिप्रभुआगेंहोई ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ सोकसमुद्रहिबूडतस्वामी ॥ मो
हितुमकाढ्योअंतरजामी ॥ प्रभुममभयेमनोरथपूरन ॥ रामविनाकिहिंवालिमरैरन ॥ देव
चरनमेरैंसिरदीजे ॥ किष्किंधापुरपावनकीजे ॥ अवधिनाथबैठैंअंगनइहिं ॥ जन्मपवित्रहो
इमेरौजिहिं ॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥सुनिसुग्रीववचनभौमनसुष॥रामविहसिबोलेताहीरु
ष ॥ नहिनप्रवेसहमहींपुरपत्तन॥ वर्षचतुर्दशवासउचितवन ॥ अषिलराजकिष्किंधालेअब
॥ सक्रसमानविभवविलसहुसब ॥ लक्ष्मनगमनकिष्किंधाकीजे ॥ देसराजसुग्रीवहिदी
जै ॥ पदजुवराजसुअंगदपावे ॥ करहुविधानजुवेदबतावे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आ
ज्ञारामलषनइहांआए ॥ सचिवबंधुभटसबसमझाए ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ इहि
ठांरोषकछुनचितआनहु ॥ प्रभुआज्ञासोइसीसप्रमानहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहां
संभारसारसबआना ॥ निगमप्रणीतकरीविधिनाना ॥ लोकवेदसंमतसबलीनौ ॥ देस
तिलकसुग्रीवहिदीनौ ॥ पदजुवराजसुअंगदपायौ ॥ विहितसुकंठगोदबैठायौ ॥ दुषसं
जुतअतितारादेषी ॥ वीरलषनसिषदीनविसेषी ॥ सेषइहांतारासमझाई ॥ रामवचनसि
रलैहुचढाई ॥ तुमहिदोषइहिठौरनतारा ॥ वनतिर्जगजियनहिनविचारा ॥ सबैइहांल
क्ष्मनसमझाए ॥ दयौराजनीसानबजाए ॥ पर्जागतसंपतिकपिपाई ॥ अवनिराजश्रीय
त्रियजुतआई ॥ लैसुग्रीवअंगदहिलक्ष्मन ॥ मंत्रिसुभटहनुमंतमुदितमन ॥ अषिलले
कहरषितइहांआए ॥ लक्ष्मनरामचरनलैलाए ॥ देवसुग्रीवसीसकरदीनौ ॥ करिअपनौ
कपिराजाकीनौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांरघुनाथसुग्रीवसौं । आ
ज्ञादीअपनाय ॥ संपतिभुक्तहुराजसुष । जथाजुक्तग्रहजाय ॥ १३ ॥ अपनाबहुदलबल
अषिल । सबवसकरहुअसेष ॥ वर्षदिवसपरजंततव । बाढैतेजविशेष ॥ १४ ॥ हमहु
प्रवर्षनगिरिविषय । तौलौंकालवितीत ॥ करहिंवर्षपर्यंतकछु । सहैविरहविनुसीत ॥१५॥
॥ समयपाइउद्यमसबै । करहुउचितकपिराज ॥ तौलौंरसविलसहुअतुल । रीतिविविध
सुषकाज ॥ १६ ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ कहिकपिराजाजोरिकर । सुनीयैरामसुजान
॥ हैप्रभुवर्षाकालमह । मर्कटबलअप्रमान ॥ १७ ॥ देवजबहिआवैसरद । करौंहैउद्यम
काज ॥ स्वर्गमृत्युपातालसीय । हमतेअगमनराज ॥ १८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
रामप्रतिज्ञाविजयरन । पूरनकरीप्रमान ॥ कपिराजाअंगदकुंवर । आएराजस्थान ॥
१९ ॥ ॥ श्रीरामप्रवर्षनगिरिआगमनं ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामप्रवर्षनगिरि
इहांआए ॥ शृंगसुषदअविलोकिसुहाए ॥ जहांतहांनिर्झरसोभसनीरा ॥ लताविपुलसं

कुलतरुतीरा ॥ मंजरपुहपरंगसौरभमिलि ॥ अतिमधुमत्तभ्रमितगुंजतअलि ॥ फलित अंमृतमयस्वादविविधफल ॥ द्रुममिलिसघनछांहपल्लवदल ॥ वससुषकूजतविविधविहं गम ॥ इहांनितऋतुवसंतकौआगम ॥ वसनअनेकजंतुतिहिंगिरिवर ॥ चित्रविचित्रन षीश्रृंगीवर ॥ काननगिरितिहिंवरनिनिकाई ॥ ऐसीबुद्धिकवनकविपाई ॥ सिषरउतंगप्र वर्षनगिरिसिर ॥ राजिततहांफटिकमयकंदर ॥ सिलारतनमयइकतिहिअंतर ॥ नगअ नेकमिलिसोभानिर्भर ॥ वसेतहांजबतेंसीतावर ॥ बंछितसुषतबतेतिहिंगिरिवर ॥ ऋतु इच्छाजुकरैरघुराइ ॥ इहिगिरिसोइसुषवर्तैआइ ॥ गिरिइहिंरहतकछुदिनग्रीषम ॥ विरह सीयादुषसहिसहिवेषम ॥ इहांदुसहपावसऋतुआइ ॥ जोविरहीनिहिसहीनजाइ ॥

॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पंचतत्वमहप्रकृतिभुवनताजिएकतत्वभय ॥ म हीव्योमजलमरुतमनहुंवर्ततंतेजोमय ॥ वासररजनीविषमयहैसमकालविपतिवस ॥ त रुझंषरझरिपत्रतहँनपाईछायातस ॥ दिसदिसागगनगर्जतदुसह, आगमऋतुवर्षाभयौ॥ ॥ कीनौनसोधकहुंजानकी, यहग्रीषमहूंबित्तयौ ॥ ४ ॥ ॥ अथवर्षाऋतुवर्णनं ॥ ॥

॥ श्रीरामविलाप ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ घहरातअतिघनघटासंघटस्यामवर्णसुहाव नी ॥ दिसिदसहुमिलितमपसरिदारुनभयदविरहिअभावनी ॥ धरिनीरजिततितजलद धावतअनिलवसअतिआतुरे ॥ गजमत्तमनुदलेअग्रगामीअषिलअतिबलअनुसरे ॥ बगपंक्तिदंतसओपउज्जलअवधिसरनिउदारही ॥ मदझरतवरषतमंदमंदसुविरहिभयवि स्तारही ॥ चपलाजुचक्रितछुटतिचरषीगरजगाजतगहभरे ॥ तडिताजुलंबीतरकिविभ्र तधजामनुवहुरंगधरे ॥ कहुंस्वेतअंबुदचमरआकृतिरेषधनुवहुरंगए ॥ सिंदूरवादरअरुन सोभामुदितघनमातंगए ॥ लगिवजतिघंटालोहलंगरकिंकिनीभयकारनी ॥ दिसिविदि सिघनसन्नाददादुरझिल्लिकाझंकारनी ॥ चढिवरनवरनअनेकवादरअनिलप्रेरितआवही ॥ वानैतभटमनुचुटकिवाजीदौरिअग्रदिषावही ॥ चढिघटाकारीव्योमचहुघांचलिचमूच तुरंगनी ॥ गहरेनिसानसुगगनगर्जाओरओरसजीअनी ॥ बकभ्रमततरतरउपरउज्जल हरषिमोरपुकारहीं ॥ तेमनहुसहीयावसनफेरतसेनघनसंचारहीं ॥ सावधानसुकरतसव विरहीनिजतनबनाइ ॥ सरनवल्लभगुहासेवहुअतनघनदलआइ ॥ तनगौरवसुमतिअं कुरितत्रिणवसननीलवसाइ ॥ अतिलोलनदहारावलीश्रृंगारसहजसुभाइ ॥ भुवसकचा पपलासपुहपतिसुभगनासासोह ॥ मुषरचाससहजसुगंधमारुतवहतपतिहिविमोह ॥ गिरिअसितअंजनरेषदृगजुकटाक्षविद्युतकीन ॥ मनुविमलथलवर्तुलविराजितप्रगटउर जसपीन ॥ करिशुभगवर्षाजातकुंकुमबिंदुभ्राजितभाल ॥ अतिअरुणगैरिकधातअधरसु सरजनयनविसाल ॥ कचतृवेनिपुनीतकवरीकुसुमफेनजुकीन ॥ छटिअलकसुक्षमधारधु रवानादमनहरिलीन ॥ वनिविसदथलजुनितंबवानकसहजअंगसुवास ॥ रसरीतिवानी झिल्लिकारवहर्षतडिताहास ॥ भूनिम्नजलरहीचमकभूषनअंगअंगअधीन ॥ कटितटहि वारिधिमेषलाकसिनाभिसरसिनबीन ॥ कृतकदलिषंभाजंघकोमलरूपअद्भुतराजही ॥ झंकारनुपूरमुषरदंदुरविविधनादसुबाजहीं ॥ सोदेषिलक्ष्मनएजुसुकृतीपुन्यकृतफलपाइ ॥

हितमिलीइंद्रहिमानिनीमहिवर्षविरहविहाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कछुकछुलक्ष्मनप्रसंगक
हि। कठिनकढावतकाल ॥ रामतदपिसीताविरह। वीततद्यौसविहाल ॥ ॥ छंदउधो
र ॥ ॥ इकसमयरघुकुलइंद्र ॥ नगसिषरथितसानंद ॥ सबभावतत्परसेव ॥ भएलछ
नपूछतभेव ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ प्रभुवर्णधर्मविचार ॥ पुनिकहहुभक्तिप्रकार ॥
आराधप्रतिमाईस ॥ सबकरहिंजनधरिशीश ॥ दृढभावपूजिदईव ॥ जिहिंतरहिभवजड
जीव ॥ नृपनीतिविहितविराग ॥ विधिजुक्ततत्वविभाग ॥ पुनिक्षत्रधर्मप्रकास ॥ वसहो
इचित्तविसास ॥ प्रभुप्रष्णलक्ष्मनकीन ॥ तबसोइउत्तरदीन ॥ समसमाधानसुभाइ ॥
रससांतकृतरघुराइ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ देषिलषनसीयवि
नुदुषदायक ॥ सघनबुंदलागतमनुसायक ॥ गहरदुरंगगगनघनगाजत ॥ विजयविरह
वाजेसेवाजत ॥ चहुघांरटतजुपियपियचातक ॥ घाउकरतमानहुजियघातक ॥ मनवढि
घटतमनोरथमेरे ॥ करिअभिलाषदरिद्रीकेरे ॥ तरकिदुरतितडिताइहिरीती ॥ प्रगटगु
पतज्यौंषलजनप्रीती ॥ भरेनीरभरधसतधरनिघन ॥ समृधिपायविद्याज्यौंसज्जन ॥ दुर्ज
नवचनदुसहसेदारुन ॥ लगतिमोहिघनधारालक्ष्मन ॥ अल्पनदीगर्जतजलआए ॥ पु
रुषकृपनज्यौंबहुधनपाए ॥ सरडावरजलआवतदिसदिस ॥ जगसज्जनआवैंजेसेंजस ॥
अवनिपंथमिटितृणघनछाए॥ वेदमर्मज्यौंपाषंडपाए॥ पल्लवअर्कजवासनसाहीं ॥ ज्यौंकु
राजिजनउद्यमजाही ॥ तमनिसिभ्रमतनिकरजोतीगण ॥ जुरतसमूहदंभिज्यौंकलिजन
मिलिजलअवनिमजादामेटी ॥ ज्यौंकुलवधूचलतिमतचेटी ॥ पावसकालमरालपलाए
॥ अषिलधर्मज्यौंकलिजुगआए ॥ ऊषरउपंजनहीतृनऐसे ॥ जुगविकारसाधूमनजेसें ॥
जहाँजहाँथकेपथिकपरिवारा ॥ ज्ञानउदयज्यौंविषयविकारा ॥ वातविलासजलदविषरा
वत ॥ ज्यौंकुपुत्रकुलकर्मनसावत ॥ कबहुकप्रगटिदुरतरविकैसें ॥ शुभमतिसंगकुसंगति
जैसें ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वर्षामुहिवीतीविषम । विनुवल्लभाविशेष ॥ कुनृपतिसेवानिफल
ज्यौं। उरअभिलाषअसेष ॥ २ ॥ यहऋतुऐसेंहीगई । दुषहींसंजुतदेह ॥ जातअफल
उज्जासज्यौं ॥ दीपकसूनैंग्रेह ॥ ३ ॥ ॥ हनूमंतउवाच ॥ ॥ सुग्रीवप्रति ॥ ॥ क
वित्त ॥ ॥ हितप्रबोधकरहनूमंतकह्योवचनकपीश्वर ॥ वालिबलीकृतविघ्नराजतोहिदी
नौरघुवर ॥ सुतौप्रवर्षनसिषरसहतआतपघनसानुज ॥ अभयदानिआजानतुमहिदेषे
भारथभुज ॥ कृतघननहोहुअज्ञानकरि, यहैलाभलीजैअतुल ॥ कृतमानिकाजरघुनाथ
कौ, करहुकृतारथजन्मकुल ॥ १ ॥ कस्योनाशताडकासुभुजसंग्रामसंघास्यौ ॥ धरिभंज्यौ
शिवधनुषगर्वद्विजरामविगास्यौ ॥ हत्यौव्याधजगअहितअसुरवातापीइल्वन ॥ कस्यौक
बंधनिकंधदुंदडास्योदसजोजन ॥ जुधहत्यौवालित्रिनमात्रजग, कृतअनंतजिहिंअतुल
क्रम ॥ सुग्रीवआपजानतसकल, तिनकहकहाअवध्यतुम ॥ २ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ पवनपुत्रकहिवचनप्रवीना ॥ हितउपदेससुग्रीवहिदीना ॥ वालिबलीतुमहेतनिपाता
॥ दशरथसुतअक्षयनिधदाता ॥ कीन्हरामतुमसौंउपकारा ॥ सोतुमसंपतिपाइविसारा
॥ तुमपाईदुर्लभत्रियतारा ॥ विविधकरतरसविषयविहारा ॥ पुनिसीयसोधप्रतिज्ञाकीनी ॥

॥ भूलेसोनिधिपायनवीनी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कहीनीतिहितचारिप्रकारा ॥ सामादिकसबविधिव्यवहारा ॥ मनसुग्रीवमहाभयमाना ॥ मारुतिमंत्रसुकीनप्रमाना ॥ वचनसत्रासकीसपतिबोला ॥ देहकंपअतिअंतरडोला ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ कृतहनुमंतउचितसोइकीजे ॥ दूतचलहिअबआइसदीजे ॥ एकपाषमहँकपिजुनआवै ॥ प्राणाअंतदंडसोपावै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मुषमंत्रीहनुमंतमिलि । प्रभुकीआज्ञापाय ॥ दूतसहसदसदसहुदिस । दीनेंचतुरचलाय ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ मारुतिकह्योसंदेसमुष । कृतगौरवप्रभुकाज ॥ जूथपनावैंअवधिजौं । रोषहतहितिहिंराज ॥ २ ॥ वानरभालविसालवपु । पौरुषविक्रमपूर ॥ आनहुंजूथपजूथइहां । सप्तदीपगतसूर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आतुरधाएदूतअति । दिसादिसदेतसदेस ॥ तिनकीनैंभूवचक्रतब । प्रगटादिगंतप्रवेस ॥ ४ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ लक्ष्मनप्रति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुदासीसीरैनिगत । नृपहिजगावतिआनि ॥ पावसबीतेसरदपुनि । प्रगटीयहैप्रमानि ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ वसाविरहएकविहाइ ॥ यहद्वितीयऋतुपुनिआइ ॥ क्रमजुक्तप्रफुल्लितकास ॥ ऋतुसघनजराप्रकास ॥ नभरहितजलभरनेक ॥ वसबुद्धिज्योंअविवेक ॥ बहिरहेनीरनिवान ॥ रतिलाजत्रीयदृगजान ॥ व्हैग्रहीज्योंधनहीन ॥ महिनीरघटिदुषमीन ॥ जलगहरमीनसुजानि ॥ ममसरनज्योंसुषमानि ॥ टरितृषाचातकत्रास ॥ कहूंस्त्रवतस्वातिप्रकास ॥ चषचितैचंद्रचकोर ॥ मिलिमोदचित्तमयोर ॥ भयोसरदअमलअकास ॥ वसजीवहारिविश्वास ॥ कंकलुषपृथ्वीपंक ॥ मिटिजलदओटमयंक ॥ सतगुरुहिमिलिज्योंसाध ॥ बहुहोतसंसयबाध ॥ इहिसमयषंजनआइ ॥ शुभदूतऋतुसतभाइ ॥ पुनिप्रगटनृपतिप्रयान ॥ दिगविजयहेतनिदान ॥ यहसरदऋतुपुनिआइ ॥ पैंकहुनसीयसुधिपाइ ॥ जौजीयतहैंकिहुंजोग ॥ अबउचितलषनप्रयोग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीरामविरह ॥ ॥ प्रगटनज्वालापिषियत । श्वासधूमश्रावंत ॥ हियरौअग्निअलावज्यों । पिंडअंतरप्रजरंत ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ त्वचापत्रघनतरलपुहपसाषाफलपूरन ॥ तरुरैवैंनितहरितअषिलसोभाअंकूरन ॥ उपजमध्यकुलकीटषातकाठहिअसेषखनि ॥ वहैदसाममआजविषमवर्ततऐसीबानि ॥ अंतरगतमेरौविरहउर, छेदतजुगवरजातछन ॥ सुनिलषनविथाबाढतअसह, महदुषसहीयतमनहिमन ॥ १ ॥ शशिमयूषदिनकरसमानवाहिवातवज्रवर ॥ सुमनहारसूचीसचारमलयजवैसानर ॥ क्रमरजनीशतकल्पप्रानअसहनभारोपम ॥ विधिवसहासीतावियोगसंघारकालसम ॥ वर्षाऋतुवितईअतिविषम, अहोसरदनियरानिअब ॥ कोसुनैनकहिवैजोगकछु, सुषदभएदुषदातसब ॥ २ ॥ रेमकरध्वजदुरनिवासविकसितवारिजवर ॥ करतबानसंधानकवनपौरुषयहमोपर ॥ सीयवियोगसंभूतअनलज्वालाउतपन्नीय ॥ तिहिअसेषदहिदेहमोहिमृतदसासुमन्नीय ॥ भवभूतविजितधन्वीअभय, महावीरत्रैलोकमहँ ॥ ॥ नहिसूरधर्मयहकहिनिगम, कौरवौघावजुमृतककहँ ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हाचंद्राननजानकी । कबदेखौंगोतोहि ॥ जेतवविछुरेंजातहै ॥ मानकलपपलमोहि ॥

॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ जोकहुंजीवतिजानकी । हैदुषवसऋतिदीन ॥ कष्टसहित वसदुष्टके । कृसतनुवसनमलीन ॥ ५ ॥ मानिप्रतिज्ञाभ्रातमम ॥ जिहिहारिजनककुमारि ॥ तातेकरिहूंनासतिहि । सौकुलमूलसंभारि ॥ ६ ॥ आहिसुग्रीवजुनिर्दयी । मोहिद सानहिंदेषि ॥ पाइअकंटकराजपद । विलसतभोगविसेषि ॥ ७ ॥ प्रियासक्तरसपानरत । कृतघनमननिःसंक ॥ सरदहुआयोनाहिसो । कछुहैभालकुअंक ॥ ८ ॥ विसर्योमोहिरसभोगवस । कृतभूल्योउपकार ॥ कीनोंवालिप्रवेसपथ । हैतिहिंचालनहार ॥ ९ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ सुग्रीवलहिसबराजसंपतिनारिसुषअन्नेक ॥ सोपर्योविविधविलासकेवसवहैसेवतएक ॥ जिहिबानमैंहठिहत्योवालीवहअमोघअगूढ ॥ तिहिबानसकुलसुग्रीव सांचहुमर्योचाहतमूढ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कृतनैनआरतकुटिलभृकुटीक्रोधलषन कराल ॥ जारिहैत्रैलोकजैसौकुप्योकालअकाल ॥ तहांदेषिरामसरोषभ्रातहिनैनसैननिवारि ॥ नहिउचितहमकहँयहैलक्ष्मनमित्रकहिपुनिमारि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लक्ष्मनधनुतूनीरलै । इहांकिष्किंधाआइ ॥ विषमअरुनदगरोषवस । जमहूसहैनजाइ ॥ १० ॥ लक्ष्मन वीरसरोषलषि । साषास्रृगनिसमाज ॥ किलकिकिलकिचढिकांगुरनि । गहरैंसब्दतगाज ॥ ११ ॥ इहांकोदंडचढायकर । कीनौगुनटंकार ॥ पुरकिष्किंधासहितप्रभु । छनमहंकरैंसुछार ॥ १२ ॥ आगमसेषसरोषसुनि । सुतहिकह्योसुग्रीव ॥ अंगदतुमआधीनव्है । जाइबचावहुजीव ॥ १३ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ इहांदौरिअंगदआय ॥ पुनिगहेलक्ष्मनपाय ॥ दैधीरसिरकरदीन ॥ कहिवचननिर्भयकीन ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ कहित्रीयासौंकपिराज ॥ सजिकलसदीपकसाज ॥ तुमजाहुसजिशुभतंत ॥ आरतीकरहुअनंत ॥ मिलिजुवतिजूथसमान ॥ निजकरतिमंगलगान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हनुमंतसंगहिहोइ ॥ शुभकलसदीपसँजोइ ॥ करिमोदआरातिकीन ॥ दैतिलकअक्षतदीन ॥ तारासरोमात्रीय ॥ करिजोरिदीनतकीय ॥ ॥ तारावाक्यं ॥ ॥ प्रभुकरहुग्रेहप्रवेस ॥ सबलहहि अभयविसेस ॥ कृतकृत्यहोइकपिराज ॥ करिहैसुआज्ञाकाज ॥ धरिपानिहनुमतधीर ॥ विचसदनआएवीर ॥ कपिराजआइसकाम ॥ मिलिकरैदंडप्रणाम ॥ आकर्षिभुजाउठाय ॥ लएलषनकंठलगाय ॥ ग्रहसुषदबैठिसज्ञान ॥ दूवपूछिकुसलनिदान ॥ ॥ शेषउवाच ॥ ॥ हितरोषकिंचितहास ॥ पुनिकहतलषनप्रकास ॥ सुग्रीवभएअसंक ॥ इहांपाइनृपताअंक ॥ रिधिसंगताराराज ॥ जिहिंदएविश्वविराज ॥ सठविसारिरघुपतिसोय ॥ हतिवालिजिहिहठहोय ॥ वधवालिकियजिनवान ॥ सोइआहिधनुषसंधान ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ प्रगटविश्वउतपतिवृत्तिबसजासविनासन ॥ कारनकर्त्तुंअकर्त्तुंप्रबलअन्यथाप्रकासन ॥ कृतघनतोहिनिकासिकरैराजाअंगदकँहँ ॥ कोउनिषेधतिहिंकरनमुहिनसूझतत्रिलोकमँहँ ॥ आकासढाहिअवनीउलटि, धरिसुमेरदक्षनधरइ ॥ रघुवीरधीरकपिराजरे, जेआरंभइत्ते करइ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ वालिबलीजिहिवीर, समरनिपात्यौएकसर ॥ सोइरघुवीर सधीर, तिहिंकामारनकठिनतव ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ कर जोरिकहिकपिराज ॥ अपराधछमिजैआज ॥ नाहिविषयसममदआन ॥ मुनिमनहुमोह

प्रमान ॥ पुनिराजधनमदपाय ॥ उपजैअनर्थजुआय ॥ कृतघातहूंसकलंक ॥ अरुलह्यो नृपताअंक ॥ परिविषयरसहिसपाप ॥ इहिमाझअरुझ्योआप ॥ हुइसुतोममहितहानि ॥ मैसीसलीनीमानि ॥ वनिरामचरनवियोग ॥ सोममअकर्मसंजोग ॥ हितअहितआज्ञा होइ ॥ सबकरौंसिरधरिसोइ ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ कृतजिहिंप्रतिज्ञाकाज ॥ व हकरहुपूरनआज ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तुमहीयहथाप्योजुथिर । रामभक्तकपिराज ॥ तारकसंघारकतुमहिं । कहिहनुमंतसकाज ॥ १४ ॥ दूतपठाएदस हूंदिस । दससहस्रसमुदाइ । तत्परयाहीकाजतैं ॥ रह्योसदाकपिराइ ॥ १५ ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ यहैकहतहीआगमन । भौवनचारवरूथ ॥ जगतविदितसुरअंसजे । प्रग टेजूथपजूथ ॥ १६ ॥ वाजीसोकजुदिगविदिग । पुहपरहीनभपूर ॥ भौअद्भुतसंपातसुर । सेन्याआवनसूर ॥ १७ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अगनितगुनबलअतुलगगनभुविविजितमरु तगति ॥ अद्रिमानविग्रहउतंगअनेकजुआकृति ॥ मिलिघनवनचरमुष्यकालसौंसकहि विषमकहि ॥ स्वामिकाजसंग्राममेरुठिल्लहितहथँभहि ॥ षयकारवंसराक्षसअषिल, अमर अंसभुवअवतरे ॥ आएजुअठारहपद्मइहां, कपिराजहिवंदनकरे ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सु ग्रीवउवाच ॥ ॥ करिपूजाआतिथ्यक्रम । जोरेकरकपिराज ॥ लक्ष्मनचलियैमोहिलै । जहां रामरघुराज ॥ १८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबसुग्रीवअगंदसहित । मिलिमंत्रीहनुमंत ॥ अ ग्रकियैलक्ष्मनउमागि । आएजहांअनंत ॥ १९ ॥ भेरीदुंदुभिशुभसबद । श्वेतछत्रसिरसोह ॥ चहुंओरउज्जलचमर । मनप्रभुचरननिमोह ॥ २० ॥ विषदप्रवर्षनगिरिविषय । दुर्गमकंदर द्वार ॥ मणिमयसिलबैठेसमुष । राजतरामउदार ॥ २१ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ चैलअजिनधर स्यामसरीरा ॥ मुकुटजटामंडितरघुवीरा ॥ नयनविसालसांतमुषसोभा ॥ लक्ष्मनतनसंतन मनलोभा ॥ सीयाविरहअतितपितसनेही ॥ दीनमलीनषीनदुषदेही ॥ जद्यपिआदिब्रह्मज गजानत ॥ तदपिमानुषीलीलावानत ॥ देवसुग्रीवदूरतेदेषे ॥ विसर्योदेहसनेहविसेषे ॥ रूपअनूपदेषिकपिराजा ॥ भएसकलसुषमंगलसाजा ॥ अतिआतुरकपिराजाधायौ ॥ उर आनंदभयौअनमायो ॥ कपिपतिदंडप्रणामजुकीना ॥ निरषिरामसोउरधरिलीना ॥ सु कृतीकोसुग्रीवसमाना ॥ पतिरघुनाथहृदयलपटाना ॥ अंगदरामचरनगहिआतुर ॥ करी कृपाप्रभुसीसदयोकर ॥ पूछिकुसलसबसषापीयारे ॥ रामसुकंठनिकटबैठारे ॥ नीलआदिमं त्रिनशिरनायो ॥ प्रभुसनमानपवनसुतपायो ॥ प्रगटीजबहितकथापरसपर ॥ विनुसंष्या आगमभौवानर ॥ विश्वविदितवनचारवरूथा ॥ प्रभुहितआएजूथपजूथा ॥ ॥ छंदउधोर ॥ इहिसमयआइअनंत ॥ दलदेसदेसदिगंत ॥ भवसुभटमर्कटभाल ॥ सबसेनआ इसवाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अथजूथपजूथनामानि ॥ देसपराक्रमनामदल । बुधिविक्रम व्यवसाय ॥ इहांसुग्रीवरघुवीरसौं । सबकेकहतसुनाय ॥ २१ ॥ जांववंतबहुजुद्धजित । आयौरीछअभंग ॥ २२ ॥ सेनापतिविज सहसकोटिदलसंग ॥ कुलराकसनिर्मूलकर । आयौरीछअभंग ॥ २२ ॥ सेनापतिविज यीसमर । एसतबलीसुखेन ॥ आएउरआनंदअति । संगअसंष्यासेन ॥ २३ ॥ ॥ छं दपधरी ॥ ॥ केसरीनामयहकपिसकाज ॥ अगणितलैआयौसेनआज ॥ यहकपिगवा

क्षगोलांगूल ॥ संगएककोटिसैन्यासमूल ॥ यहपनससंगदसकोटिआइ ॥ यहांतारसहस कोटिसहाइ ॥ द्विविदयहमयँदमलउरनिदाह ॥ दससप्तकोटिकपिसंगदुवाह ॥ देवयहगं धमादनगहीर ॥ षटकोटिसंगमर्कटसधीर ॥ यहसंकुनामसंग्रामसूर ॥ पुनिसातसहसप रिगहसपूर ॥ यहकीसदरीमुषरनअसंक ॥ एकादशकोटिनिसुभटअंक ॥ यहनीलधूम्रअ रुकुमुदआइ ॥ कौमुदविनीतसहुसथसुभाइ ॥ सौराष्टसरतसरगुल्मसंग ॥ विजृंभणउ ल्कामुषमतंग ॥ दधिमुषोबलीमुषबलिदुरंत ॥ अनभंगअंगजूथपअनंत ॥ गजगवय सरभवाहरूसीत ॥ इनसंगकोटिदसदसअभीत ॥ यहहनूमानरुद्रावतार ॥ सबकाजसिद्धि कारककुमार ॥ नलवानरयहरचनानिधान ॥ वसयाहिविश्वकर्माविधान ॥ ॥ अथव र्णकपीनां ॥ ॥ कोउफटिकपद्मचंदनप्रकार ॥ अंजनघनआभाकोउउदार ॥ कोऊकन कवर्णकोउअरुनकाय ॥ कोउधूम्रपीतसोभासुभाय ॥ अंगारवर्णकोउदीर्घभाल ॥ कोउस टासिंघलंकेससाल ॥ मुषस्यामअरुनउरसत्रुसूल ॥ लघुपुच्छकोकदीरघलँगूल ॥ कोगनैर गआकृतिअनेक ॥ विवसायबुद्धिविग्रहविवेक ॥ कपिसेनकरैसंष्याजुकोइ ॥ यहबुद्धिकहौ कविकवनहोइ ॥ इत्यादिकवानरभालआइ ॥ पुनिगनैकोइकिहिअंतपाइ ॥ दलअकल मिलेकपिअंसदेव ॥ भवभूतनपायौतासभेव ॥ गजबलदशशतकोउअयुतगान ॥ मिलि कीसकोउबलअमितमान ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विश्वविदितवनचारवजूथा ॥ प्रभु हितआएजूथपजूथा ॥ लैलैनामसुग्रीवनिरंतर ॥ रामचरनलाएसबवानर ॥ प्रभुतेइअ मरअंसपहिचानैं ॥ मिलिएकहिवीरासनमानैं ॥ देवजथाक्रमआसनदीनैं ॥ तेअविलो कतप्रभुहिअधीनैं ॥ वहसबवीरकरतहुंकारव ॥ अतिउदमादजुद्धकेउच्छव ॥ कूदतगग नमुदितकपिमनमहँ ॥ कहतषुजातभुजाभारथकहँ ॥ कहिसबनाथविलंबनकीजे ॥ देव देवअबआज्ञादीजे ॥ एकएकविक्रमउनमानैं ॥ असुरसमेतलंकधरिआनैं ॥ जांबुवंत जोधाजरजीरन ॥ आहवसत्रुजएजिहिअनगन ॥ संष्यारहितभालभटसंगी ॥ आकृति वरनअनेकअभंगी ॥ अतिवलक्रोधतृकूटउषारक ॥ कलहहर्षराकसषयकारक ॥ कूदत नभधरनीअकुलावहि ॥ प्रभुकारिजआज्ञाकबपावहि ॥ देषरामपलंबभालदल ॥ मनभो मुदितविसेषिमहाबल ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ रामकह्यौतबसुनिकपिराजा ॥ कारि यैसीतासोधसुकाजा ॥ रामवचनकपिपतिसिरधार्यौ ॥ यहसबहिनसौंमंत्रउचार्यौ ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ काजरामअरुममहितकारन ॥ आपकृतारथवंसउधारन ॥ अ मरअंसतुमसबमिलिआए ॥ धरिकपिरूपअवनिहितधाए ॥ करहुप्रमानप्रतिज्ञाकीनी ॥ देवदेवतबआज्ञादीनी ॥ विधिलैवचनप्रगटबरपाए ॥ एहरिमनुजदेहधरिआए ॥ स विताचक्रदिगंतसँभारहु ॥ निश्चयकरिजानकीनिहारहु ॥ ॥ जूथपोवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सोसुनिजूथपजूथसब । उठिठाढेसिरुनाइ ॥ आज्ञादेहुकपीसअब । जोइजोइ जिहिदिसिजाइ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ सीतासोधकपिगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वानरविनीतअतिबलविसेषि ॥ दिसिपूरबपठयौहितूदेषि ॥ पँच वीसकोटिवानरपचारि ॥ संगदएएकएकहिसंभारि ॥ २५००००००० ॥ २ ॥ पठ

यौसुषेणपश्चिमप्रजंत ॥ सनमान्यौतारापितासंत ॥ सुग्रीवस्वसुरअपनौसुजानि ॥ प्रेस्यौप्रचंडपूजाप्रमानि ॥ संगदएकोटिविंसतिससूर ॥ प्रज्ञाप्रवीनपौरुषहिपूर ॥ २०००००००॥ ३ ॥ उत्तरदिगंतशतबलीआप ॥ पठयौजिहिंदुर्जनजरतताप ॥ त्रयविंसकोटिसंगदएतास ॥ साषामृगसेन्यासावकास ॥ २३०००००००॥ ४ ॥ जुवराजजोग्ययहकाजजानि ॥ पठयौदिसदक्षनबलप्रमानि ॥ दसदयेसंगजूथपदुवाह ॥ रनरौद्रवंसराक्षसनिराह ॥ जगविदितभालभारथजयंत ॥ जरजरितपितामहजामुवंत ॥ गज १ गवय २ गंधमादन ३ अभंग ॥ सौरष्ठि ४ नील ५ सरगुल्म ६ संग ॥ तहांद्विविद ७ विदूरथ ८ शरभ ९ तार ॥ १० ॥ मिलिस्वामिकाजआसुर संघार ॥ विष्यातजगत्तहनुमंतवीर ॥ शुभस्वामिकाजसाधकसधीर ॥ अषिलेसविश्वव्यापकअजेव ॥ भवभूतलहतगतिचित्तभेव ॥ मारुतिहिजानिबुद्धिबलअमान ॥ नामांकितमुदरीदीयनिदान ॥ आकर्षिजाहुमुद्रिकाएष ॥ विश्वासदेहुसीतहिविसेष ॥ मुद्रिकालईमारुतिमहंत ॥ सिरनायरामपदपरमसंत ॥ सुग्रीवकह्यौसबहिनसुनाइ ॥ इकमासअवधिलैसोधआइ ॥ अवधिसिरजोनआवैअषंड ॥ दैहुंतिहिनिश्चयप्रानदंड ॥ प्रभुकाजजुपैसाधैप्रमान ॥ सोधन्यनकोताकेसमान ॥ इहांचल्यौमुषीअंगदअभंग ॥ सिरुनाइप्रभुहिलैसुभटसंग ॥ करिउच्छवसबहिनगमनकीन ॥ अवधेसकाजआज्ञाअधीन ॥ वनगहनगुहापर्वतविथार ॥ वससोधसीयाजलथलविहार ॥ विंध्याचलवनमहँधसेवीर ॥ संपेषिमहाराक्षससरीर॥इनजानियहैरावनअनीत ॥ सबचोरिगयौलैसतीसीत॥ कौतुकहिअसुरसंघारिकारि ॥ मुषमुंडचपेटानिलयौमारि ॥ पृथ्वीतलकोऊअसुरपाइ ॥ जीयलैहिताहिहसिनिकटजाइ ॥ इहिंभांतिफिरहिषोजतअसंक ॥ गिरिषोहसरितसरविवरवंक ॥ वसुमतीभ्रमतरहेमहावीर ॥ नहींएकपाषकहुलह्यौनीर ॥ भइतृषानपावतसलिलभेद ॥ सूकंतअधरतारूसषेद ॥ चढिअंगदपर्वतासिषरचाहि ॥ तनछुटततृषाकीरित्राहित्राहि ॥ ॥ **अंगदउवाच** ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ कहाँगृहतजराघवकुमारवनदंडकवासी ॥ मृगजुकनकमारीचहरनसीयकहाँजनहासी ॥ कहाँसुग्रीवरिषिमूकबनैमैत्रीसोरघुवर ॥ कहाँमुहिसीताषोजकाजपठयौलंकापुर ॥ हाविधेक्रूरकर्मोहठी, तातेचरितदुरंततुअ ॥ अनचिंतअसंभावितअरथ, सोइसोइघटतसरोजसुअ ॥ १ ॥ ॥ **अथकपीस्वयंप्रभासमागम** ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ इकपर्वतचढिहनुमंतआप ॥ वारिहिंअविलोकततृषवियाप ॥ तहांविवरएकजोजनविसाल ॥ तृणलताहारआवृततमाल ॥ देषेतिहिनिकसतविवरद्वार ॥ जलझरतपंषपषीअपार ॥ उनमानकह्यौहनुमानएह ॥ हैनीरविवरइहिंनिस्संदेह ॥ यहजानिहांकतवदइआप ॥ तहांमिलेआनिसबतृषाताप ॥ ॥ **मारुतिरुवाच** ॥ ॥ निहचैइहिकंदरमांझनीर ॥ धसियेनिसंककरिचित्तधीर ॥ करकरहिजोरितबगमनकीन ॥ लैअग्रहनूभएविवरलीन ॥ तमविषमपंथदुर्गमप्रवेस ॥ देष्यौसुतहांआश्रमसुदेस ॥ अतिमानसरोवरमाणिमर्जाद ॥ शुभफालिकमलजलमधुरस्वाद ॥ तरलतातरलमिलिमोदकारि ॥ नमिसाषपुहपफलभरनिहा

रि ॥ गुंजारभ्रमरकलकंठगान ॥ सुषसकलमनहुसुरपुरसमान ॥ जलपानकरेतहांलहेजी
व ॥ देषमणिमंदिरजनुदईव ॥ रविक्रांतितहांमणिरंगरंग ॥ अतिसयप्रकासदिसदिसअभं
ग ॥ पुनिकह्यौकपिनितिहिगृहप्रवेस ॥ देषीसुतहांइकत्रीयदेस ॥ तिहिंप्रभाअतुलपूरनप्र
भास ॥ वनचीरधरैतनतपबिलास ॥ दृढजोगसाधिअतिदमितदेह ॥ निस्कामरहितविष
यादिनेह ॥ कपिसंकिततताहिप्रणामकीन ॥ तिहिनिरषिवीरवानरनवीन ॥ ॥ तापसीबा
क्यं ॥ ॥ तुमकौनकहांतेकहाकाज ॥ इहिविवरगूढआगमनआज ॥ कौनैधौपठएकहां
जात ॥ विस्तारजुक्तसबकहोबात ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ रघुवंसराजदसरथनरेस ॥
अवधेसविश्वविजयीअसेस ॥ तसपुत्ररामजेवौपुनीत ॥ शुभलक्ष्मनवामासंगसीत ॥ पितु
आज्ञादंडकवनप्रवेस ॥ महलक्ष्मनमृगयावनप्रवेस ॥ पंचवटबसतरावनसपाप ॥ वहसी
ताहिहरिलैगयौआप ॥ तिहिसोधकाजजुवराजसंग ॥ एपठएमंत्रीदसअभंग ॥ अतितृषा
वंतइहिठौरआइ ॥ किहुँपुन्यजोगतवदरसपाइ ॥ ॥ स्वयंप्रभावाक्यं ॥ ॥ संतोषकर
हुपाइहोसीत ॥ भवतव्यहेतदुषसह्योभीत ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ पुनिपूछ्यौताकह
पवनपूत ॥ एरचेभवनकौनैअभूत ॥ तुमकवनकिहिंजुउपदेसकीन ॥ एकाकिनिइहांतपसा
अधीन ॥ ॥ स्वयंप्रभावाक्यं ॥ ॥ जलपानकरहुफलभक्षजाय ॥ अरुसुनहुइहांवृत्तां
तआय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कपिकन्यावचतप्रमानकीन ॥ पुनिसबैआनिबैठे
प्रवीन ॥ ॥ तापसीवाक्यं ॥ एरचेविश्वकर्माअवास ॥ तिहिंपुत्रीहेमानामतास ॥
कृतनाटकतिहिंहरप्रसन्नकीन ॥ दीयदरसताहियहठौरदीन ॥ तबबसीइहांहेमापुनीत ॥
गावतिसप्रेमहरिचरितगीत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कन्याहूंगंधर्वकी । स्वयंप्रभाममनाम ॥
विष्णुहेततपसाविमल । मैसाधीइहिंठाम ॥ १ ॥ हेमासौमोसौहरषि । प्रीतिवढीअनपार ॥
एकप्रानअरुतनउभय । विलसततपअविकार ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तपमहातप्यौहेमास्व
तंत्र ॥ मनवाचकर्मजपिदिव्यमंत्र ॥ वसिअयुतअयुतइहांवषवाम ॥ धरिध्यानगईवहविष्णु
धाम ॥ हेमामोहिकीयप्रबोधएह ॥ दिनकछुकजोगकरिराषिदेह ॥ त्रेताजुगहोइरामावता
र ॥ प्रभुदरसपाइतुमहोहुपार ॥ इहिठौरवसतितबतेअकाम ॥ मनआसएकममदरसरा
म ॥ तुमकहतभयौरामावतार ॥ अबफलेसबैसाधनअपार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ व
नितातिंहिइनसौंकह्योवैन ॥ निस्संकहोहुछिनमूदिनैन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वयंप्रभाकेवच
नसौ । कपिचषमुद्रितकीन्ह ॥ षारउदधिकेतटषरे । चषउघारितहाँचीन्ह ॥ ३ ॥ गईप्रव
र्षनगिरिगुहा । तपबलसुंदरितास ॥ कीनौदरसनरामकौ । स्वयंप्रभासप्रहास ॥ ४ ॥ जा
इवदरिकाजोगिनी । प्रभुआज्ञाजुप्रमान ॥ तिहिठांजोगाभ्यासतैं । पायौपरमनिधान ॥
५ ॥ ॥ क्षारसमुद्रतटकपिमंत्रबलप्रकासनं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तेवानरषारसमु
द्रतीर ॥ बैठेविचारमिलिकरतवीर ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ जुवराजइहांअंगदसुजान ॥
बोल्यौसुनीतिवायकविधान ॥ कंदरवनपर्वतभ्रमणकीन ॥ दिगअंतमनहुंपरिक्रमणदीन ॥
पैकहुनजानकीसोधपाइ ॥ सवमासअवधिसोपैसिराइ ॥ श्रमभयौवृथानिरफलसयान ॥
प्रभुआज्ञानाहिनभइप्रमान ॥ कुलराजसदामंत्राधिकार ॥ सबजानतआपुननीतिसार ॥

योसुषेणपश्चिमप्रजंत ॥ सनमान्यौतारापितासंत ॥ सुग्रीवस्वसुरअपनौसुजानि ॥ प्रेख्यौप्रचंडपूजाप्रमानि ॥ संगदएकोटिविंसतिससूर ॥ प्रज्ञाप्रवीनपौरुषहिपूर ॥ २००००००० ॥ ३ ॥ उत्तरदिगंतशतबलीआप ॥ पठयौजिहिंदुर्ज्जनजरतताप ॥ त्रयविंसकोटिसंगदएतास ॥ साषामृगसेन्यासावकास ॥ २३००००००० ॥ ४ ॥ जुवराजजोग्ययहकाजजानि ॥ पठयौदिसदक्षनबलप्रमानि ॥ दसदयेसंगजूथपदुवाह ॥ रनरौद्रवंसराक्षसनिराह ॥ जगविदितभालभारथजयंत ॥ जरजरितपितामह जामुवंत ॥ गज १ गवय २ गंधमादन ३ अभंग ॥ सौरष्ठि ४ नील ५ सरगुल्म ६ संग ॥ तहांद्विविद ७ विदूरथ ८ शरभ ९ तार ॥ १० ॥ मिलिस्वामिकाजआसुर संघार ॥ विष्यातजगतहनुमंतवीर ॥ शुभस्वामिकाजसाधकसधीर ॥ अषिलेसविश्वव्यापकअजेव ॥ भवभूतलहतगतिचित्तभेव ॥ मारुतिहिजानिबुद्धिबलअमान ॥ नामांकितमुदरीदीयनिदान ॥ आकर्षिजाहुमुद्रिकाएष ॥ विश्वासदेहुसीतहिविसेष ॥ मुद्रिकालईमारुतिमहंत ॥ सिरनायरामपदपरमसंत ॥ सुग्रीवकह्योसबाहिनसुनाइ ॥ इकमासअवधिलैसोधआइ ॥ अवधिसिरजोनआवैअषंड ॥ देहुंतिहिनिश्चयप्रानदंड ॥ प्रभुकाजजुपैसाधैप्रमान ॥ सोधन्यनकोताकेसमान ॥ इहांचल्योमुषीअंगदअभंग ॥ सिरुनाइप्रभुहिलैसुभटसंग ॥ करिउच्छवसबाहिनगमनकीन ॥ अवधेसकाजआज्ञाअधीन ॥ वनगहनगुहापर्वतविथार ॥ वससोधसीयाजलथलविहार ॥ विंध्याचलवनमहँधसेवीर ॥ संपेषिमहाराक्षससरीर॥इनजानियेहरावनअनीत ॥ सबचोरिगयौलैसतीसीत ॥ कौतुकहिअसुरसंघारिकारि ॥ मुषमुंडचपेटानिलयोमारि ॥ पृथ्वीतलकोऊअसुरपाइ ॥ जीयलैहिताहिहसिनिकटजाइ ॥ इहिंभांतिफिरहिषोजतअसंक ॥ गिरिषोहसरितसरविवरवंक ॥ वसुमतीभ्रमतरहेमहावीर ॥ नहींएकपाषकहुंलह्योनीर ॥ भइतृषानपावतसलिलभेद ॥ सूकंतअधरतारूसषेद ॥ चढिअंगदपर्वतासिषरचाहि ॥ तनछुटततृषाकीरत्राहित्राहि ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कहाँगृहतज राघवकुमारवनदंडकवासी ॥ मृगजुकनकमारीचहरनसीयकहांजनहासी ॥ कहाँसुग्रीव रिषिमूकबनैमैत्रीसोरघुवर ॥ कहाँमुहिसीताषोजकाजपठयोलंकापुर ॥ हाविधेक्रूरकर्मोहठी, तातेचरितदुरंततुअ ॥ अनचिंतअसंभावितअरथ, सोइसोइघटतसरोजसुअ ॥ १ ॥ ॥ अथकपीस्वयंप्रभासमागम ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकपर्वतचढिहनुमंतआप ॥ वारिहिंअविलोकततृषवियाप ॥ तहांविवरएकजोजनविसाल ॥ तृगलताद्वारआवृततमाल ॥ देषेतिहिनिकसतविवरद्वार ॥ जलझरतपंषपषीअपार ॥ उनमानकह्योहनुमानएह ॥ हैनीरविवरइहिंनिस्संदेह ॥ यहजानिहांकतवदइआप ॥ तहांमिलेआनिसबतृषाताप ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ निहचैइहिकंदरमांझनीर ॥ धसियेनिसंककरिचित्तधीर ॥ करकरहिजोरितबगमनकीन ॥ लैअग्रहनूभएविवरलीन ॥ तमविषमपंथदुर्गमप्रवेस ॥ देष्यौसुतहांआश्रमसुदेस ॥ अतिमानसरोवरमाणिभ्रजाद ॥ शुभफालिकमलजलमधुरस्वाद ॥ तरलतातरलमिलिमोदकारि ॥ नमिसाषपुहपफलभरनिहा

रि॥ गुंजारभ्रमरकलकंठगान ॥ सुषसकलमनहुसुरपुरसमान ॥ जलपानकरेतहांलहेजी
व॥ देषमणिमंदिरजनुदईव॥ रविक्रांतितहांमणिरंगरंग॥ अतिसयप्रकासदिसदिसअभं
ग ॥ पुनिकर्‌यौकपिनितिहिंगृहप्रवेस॥ देषीसुतहांइकत्रीयदेस ॥ तिहिंप्रभाअतुलपूरनप्र
भास ॥ वनचीरधरैतनतपबिलास ॥ दृढजोगसाधिअतिदमितदेह ॥ निस्कामरहितविष
यादिनेह ॥ कपिसंकिततताहिप्रणामकीन॥ तिहिनिरषिवीरवानरनवीन ॥ ॥ तापसीवा
क्यं ॥ ॥ तुमकौनकहांतेकहाकाज ॥ इहिविवरगूढआगमनआज ॥ कौनैधौपठएकहां
जात॥ विस्तारजुक्तसबकहोबात ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ रघुवंसराजदसरथनरेस॥
अवधेसविश्वविजयीअसेस ॥ तसपुत्ररामजैवौपुनीत ॥ शुभलक्ष्मनवामासंगसीत॥ पितु
आज्ञादंडकवनप्रवेस ॥ महलक्ष्मनमृगयावनप्रवेस ॥ पंचवटबसतरावनसपाप ॥ वहसी
ताहिहरिलैगयौआप ॥ तिहिसोधकाजजुवराजसंग ॥ एपठएमंत्रीदसअभंग॥ अतितृषा
वंतइहिंठौरआइ ॥ किहुँपुन्यजोगतवदरसपाइ ॥ ॥ स्वयंप्रभावाक्यं ॥ ॥ संतोषकर
हुपाइहोसीत ॥ भवतव्यहेतदुषसह्यौभीत ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ पुनिपूछ्यौताकह
पवनपूत ॥ एरचेभवनकौनैअभूत॥ तुमकवनकिहिंजुउपदेसकीन॥ एकाकिनिइहांतपसा
अधीन ॥ ॥ स्वयंप्रभावाक्यं ॥ ॥ जलपानकरहुफलभक्षजाय ॥ अरुसुनहुइहांवृत्तां
तआय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कपिकन्यावचतप्रमानकीन ॥ पुनिसबैआनिबैठे
प्रवीन ॥ ॥ तापसीवाक्यं ॥ एरचेविश्वकर्माअवास ॥ तिहिंपुत्रीहेमानामतास ॥
कृतनाटकतिहिंहरप्रसन्नकीन ॥ दीयदरसताहियहठौरदीन ॥ तबबसीइहांहेमापुनीत ॥
गावतिसप्रेमहरिचरितगीत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कन्याहूंगंधर्वकी । स्वयंप्रभाममनाम ॥
विष्णुहेततपसाविमल । मैसाधीइहिंठाम ॥ १ ॥ हेमासौमोसौहरषि । प्रीतिवढीअनपार॥
एकप्रानअरुतनउभय । विलसततपअविकार॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तपमहातप्यौहेमास्व
तंत्र ॥ मनवाचकर्मजपिदिव्यमंत्र॥वसिअयुतअयुतइहांवषवाम॥धरिध्यानगईवहविष्णु
धाम ॥ हेमामोहिकीयप्रबोधएह ॥ दिनकछुकजोगकरिराषिदेह ॥ त्रेताजुगहोइरामावता
र ॥ प्रभुदरसपाइतुमहोहुपार ॥ इहिठौरवसतितबतेअकाम ॥ मनआसएकममदरसरा
म ॥ तुमकहतभयौरामावतार ॥ अबफलेसबैसाधनअपार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ व
नितातिंहिइनसौंकह्यौवेन ॥ निस्संकहोहुछनमूदिनैंन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वयंप्रभाकेवच
नसौं । कपिचषमुद्रितकीन्ह ॥ षारउदधिकेतटषरे । चषउघारितहाँचीन्ह ॥ ३ ॥ गईप्रव
र्षनगिरिगुहा । तपबलसुंदरितास ॥ कीनौदरसनरामकौ । स्वयंप्रभासप्रहास ॥ ४ ॥ जा
इबदरिकाजोगिनी । प्रभुआज्ञाजुप्रमान ॥ तिहिठांजोगाभ्यासतैं । पायौपरमनिधान ॥
५ ॥ ॥ क्षारसमुद्रतटकपिमंत्रबलप्रकासनं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥तेवानरषारसमु
द्रतीर ॥ बैठेविचारमिलिकरतवीर ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ जुवराजइहांअंगदसुजान ॥
बोल्यौसुनीतिवायकविधान॥ कंदरवनपर्वतभ्रमणकीन ॥ दिगअंतमनहुंपरिक्रमणदीन ॥
पैकहुनजानकीसोधपाइ ॥ सवमासअवधिसोपैसिराइ ॥ श्रमभयौवृथानिरफलसयान ॥
प्रभुआज्ञानाहिनभइप्रमान ॥ कुलराजसदामंत्राधिकार ॥ सबजानतआपुननीतिसार ॥

वाढ्योविरोधसुग्रीववालि ॥ निहचैसुग्रीवदीनोनिकालि ॥ डरतिहिसुग्रीवभटक्योदिगंत ॥ कृतजोगमिलेजानकीकंथ ॥ यहदीनतबैप्रभुसरनपाइ ॥ रघुनाथवालिमाख्योरिसाइ ॥ उहि समयमोहिलीनोउवारि ॥ महिमाअनाथबंधुमुरारि ॥ वालिकोपुत्रहूंजगविष्यात ॥ सुग्री वहियैनाहिनसमात ॥ कीनोनकछुमैरामकाज ॥ याहीमिसऔसरवन्योआज ॥ देहैसुग्री वमोहिप्राणदंड ॥ यहघातउपजिमोकहअषंड ॥ जिहिंलयोराजममपितामारि ॥ सबदस कोसत्रीयलौंसंभारि ॥ नहिंशत्रुसेषराषतनृपाल ॥ सबकालरहतसोहृदयसाल ॥ पुनिजाऊँ नहीसुग्रीवपास ॥ निहचैइहांकरिहुंप्राणनास ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंगदकोंहनुमंतइहां ॥ देष्योसभयसषेद ॥ पौरुषरामप्रभावपन । भएकहतसबभेद ॥ १ ॥ रामनमानुषमानिये । पूरनब्रह्मप्रकास ॥ सीताजगदंबासती ॥ वेदवचनविश्वास ॥ २ ॥ लषमनशेषजुदेहलहि ॥ यहजगजिहिआधार ॥ भुवहितविधिवरदैभए । राममनुजअव तार ॥ ३ ॥ इनतेदुस्करकर्मकोऊ । इहिंरविचक्रनआहि ॥ कारनवससोईकरै । जोयैचित्त हँचाहि ॥ ४ ॥ तुमसबआज्ञाविष्णुतै । देवधरीकापिदेह ॥ रावनवधलगिअवतरे । सौर घुनाथसनेह ॥ ५ ॥ कपितनपूरनकाजकरि । सवजैहौस्वस्थान ॥ पुनिअपनौपदपाइहौ । देवस्वरूपनिदान ॥ ६ ॥ अबवलपौरुषआपनो । अरुवानरअवतार ॥ सफलकरहुसुरका जसब । विश्वसुजसविस्तार ॥ ७ ॥ ॥ छंदद्विक्षअरी ॥ ॥ सबैसुभटमारुतिसमझाए ॥ ॥ धरिधीरजसीयसोधहिंधाए ॥ अतुलितबलसुरकपिअवतारा ॥ षोजतचलेअसुरक्षय कारा ॥ विंध्याचलआएतबवानर ॥ करतसोधसियवनघनकंदर ॥ इहांमहेंद्राचलसोआ ए ॥ सागरदक्षनतीरसभाए ॥ इहांदुरुपारउदधिअवलोक्यो ॥ रहतनचित्तमहाभयरो क्यो ॥ सलिलअगाधभयंकरसागर ॥ तहांजलजंतुविषमतनविस्तर ॥ भएसवकीसत हांमनभंगी ॥ उद्यमनाहिनफुरतअभंगी ॥ महेंद्राचलगुहाअमाना ॥ तहांतरुसोभितल ताविताना ॥ ॥ संपातिकपिसमागम ॥ ॥ कृतनिवासपहिलैंतिहिंकंदर ॥ वसतम ध्यसंपातिगृद्धवर ॥ इहिकंदरमुषकपिजबआए ॥ बैठतनाहिभेदविनुपाए ॥ इहांविछाइ कुशबैठेनिर्भय ॥ समयनिहारिमरनकृतनिश्चय ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ हाथसुग्रीवम रनहैअनहित ॥ करियेदेहत्यागराघवकृत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनिगीधनिकट चलिआयौ ॥ इनहिविलोकिपरमसुषपायौ ॥ दैवआजमुहिबहुभषदीना ॥ निकसेबहुदि नछुधाअधीना ॥ वचनगीधसुनिकंपितवानर ॥ मरनउभयमहँउपजितृतीयमर ॥ ॥ अं गदउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कृतरामसुग्रीवनस्वयंकाज ॥ उपज्योजमसदनगम नआज ॥ अपमृत्युमरेसबवृथाआइ ॥ इहिठौरऔरनाहिनउपाइ ॥ ॥ हनुमंतउ वाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उच्चार्योहनुमंतयह । जन्मसुधन्यजटायु ॥ कृपासिंधुरघुनाथके । अर्थनिवेद्योआयु ॥ ८ ॥ जोगतिदुर्लभजोगिने । कष्टकीयैहूंकाइ ॥ रामप्रसादजटायु रन । प्रगटदिव्यगतिपाइ ॥ ९ ॥ ॥ संपातिवाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनत महाषगनिकटआइ ॥ संपातिभयोपूछतसुभाइ ॥ तुमकौनइहांलगिकवनकाम ॥ ममश्र वनसुनायोअमृतनाम ॥ कहिकहिजटायुतुमबातकीन ॥ कोवहजटायुतिहिकहाकीन ॥ ॥

हनुमंतउवाच ॥ ॥ पुरअवधिईसदसरथपुनीत ॥ सुतरामचंद्रतिहिवधूसीत ॥ पित आज्ञादंडकवनप्रवेस ॥ वसिपंचवटीसुकिसोरवेस ॥ वनगहनरामआषेटवीर ॥ धरिचा पगएसानुजसधीर ॥ इहिसमयआनिरावनअसँक ॥ लैचल्योसीयहिहरिदुष्टलंक ॥ कहि रामरामसीयापुकारि ॥ सोसुनिजटायुऊठ्योसंभारि ॥ षगभिरयोग्रीधलंकेसषेत ॥ सबतो रिछत्रध्वजरथसमेत ॥ जूझ्येजटायूसंग्रामसूर ॥ भइगगनपुहपवर्षासपूर ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भौरामाअवतारभुव । सुन्योइहांसंपाति ॥ ततछनभयोसपंष तहां । जथाजन्मषगजाति ॥ १० ॥ तवसुग्रीधगोसिंधुतट । दैजटायुजलदान ॥ कह नलगेचितधीरकरि । पूरबकथाप्रमान ॥ ११ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सीयविरहभ्रमतसानुजसधीर ॥ वनमाझमिलेसुग्रीववीर ॥ भौतहांरामसौमित्रभाव ॥ सुग्रीवकरतसेवासुभाव ॥ आज्ञासुग्रीवहमइहांआइ ॥ पुनिभ्रमतकहूंसीतानपाइ ॥ ॥ संपातिरुवाच ॥ ॥ तबकह्योग्रीधथिरकरहुचेत ॥ सीताहिबतैहूंथलसमेत ॥ ॥ जूथप उवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सबकपिपूछतगृद्धसौं । पंषविनासप्रकार ॥ मायावर्जितसाधु तुम । सूरविदितसंसार ॥ १२ ॥ ॥ संपातिरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पूरबवृत्तांत यहसमयपाइ ॥ संपातिकहनलगेसुभाइ ॥ हमभ्रातउभयअनजानिभेव ॥ यौवनारूढ गर्वितजेव ॥ अतिदर्पउडेसन्मुषअकास ॥ पर्जंतगएदिनकरप्रकास ॥ जोजनसहस्रक छुपहूंचिजाइ ॥ परजरनलगेरवितापपाइ ॥ जान्यौजटायुमैजरतज्वाल ॥ कृतजघनआ तलघुहोतकाल ॥ आछादिपंषमैउपरआइ ॥ सोअनुजकह्योतरहरसुभाइ ॥ ममपंषज रीरवितपसँमूल ॥ तहँभयौदेहपलपिंडतूल ॥ इहांपरयोविंध्यपर्बतहिआनि ॥ मूर्छागत भौतनमृतकमानि ॥ विछुरयोजटायुतिहिंसमयवीर ॥ सोगयोकहूंसुधिनाहिसरीर ॥ दुरा तपतनअतिविथादेह ॥ अनअवधिनछूटेप्रानएह ॥ सबरह्योदेहअवसेषस्वास ॥ दिन तृतीयजगीमूर्छादुरास ॥ विनुपंषसक्तिहतभौविहंग ॥ अरुदग्धभएसबअंगअंग ॥ च षउधरिजबैकछुभयोचेत ॥ शुभआश्रमदेष्योजलसमेत ॥ क्रमक्रमहिचल्योहूदुषितका इ ॥ अतिकष्टतपोथलनिकटआइ ॥ तहांतपतचंद्रमुनिउग्रताप ॥ इहांभाग्यमोहिभएभे टआप ॥ मोहिकह्योतपस्वीछांडिमौन ॥ किहिकरीदसायहहेतकौन ॥ मैकह्योसबैवृत्तांत मूल ॥ सोभयौसुनतमुनिसानुकूल ॥ देष्योमैमुनिवरअतिदयाल ॥ व्हैदीनकह्योआपनौ हाल ॥ विनुपंषवृथाजीवनाविहंग ॥ आहारविनाक्यौरहैअंग ॥ आहारसुतौपंषनिअधी न ॥ करतारपंषसोइनासकीन ॥ मोहिदेषिविगतपंषनिविहाल ॥ दीनौप्रबोधद्विजव्हैद याल ॥ ॥ चंद्रमुनिरुवाच ॥ ॥ संपातिप्रति ॥ ॥ दुषभाजनजानहुदेहवान ॥ सब कालआदिमध्यावसान ॥ दुषमूलआहिभवभूतदेह ॥ इंहिआश्रितकर्माकर्मएह ॥ इहां कर्मप्रवर्त्ततदेहआनि ॥ मनलेतजंतुहंभावमानि ॥ अनआदिआहिजडअहंकार ॥ पैं होतअविद्यातेप्रचार ॥ जडहोइचेतछायासजोग ॥ ज्योंलोहपिंडअग्निहिप्रयोग ॥ अय पिंडअनलमयहोतआप ॥ पुनिदेहचेतभासतप्रताप ॥ यहबुधिउपजिजबदेहएह ॥ सबभाइवढततासोंसनेह ॥ बसअहंकारअतिबलवियाप ॥ अपनीकरिजानैदेहआप ॥

वाढ्यौविरोधसुग्रीववालि ॥ निहचैसुग्रीवदीनौनिकालि ॥ डरतितिहिसुग्रीवभटक्यौदिगंत ॥ कृतजोगमिलेजानकीकंथ ॥ यहदीनतलैप्रभुसरनपाइ ॥ रघुनाथवालिमाख्यौरिसाइ ॥ उहि समयमोहिलीनौउवारि ॥ महिमाअनाथबंधुमुरारि ॥ वालिकौपुत्रहूंजगविष्यात ॥ सुग्री वहियैनाहिनसमात ॥ कीनौनकछुमैरामकाज ॥ याहीमिसऔसरवन्यौआज ॥ दैहैसुग्री वमोहिप्राणदंड ॥ यहघातउपजिमोकहअषंड ॥ जिहिंलयौराजममपितामारि ॥ सबदस कोसत्रीयलौंसंभारि ॥ नहिंशत्रुसेषराषतनृपाल ॥ सबकालरहतसोहृदयसाल ॥ पुनिजाऊँ नहीसुग्रीवपास ॥ निहचैइहांकरिहुंप्राणनास ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंगदकौंहनुमंतइहां ॥ देष्यौसभयसषेद ॥ पौरुषरामप्रभावपन । भएकहतसबभेद ॥ १ ॥ रामनमानुषमानिये । पूरनब्रह्मप्रकास ॥ सीताजगदंबासती ॥ वेदवचनविश्वास ॥ २ ॥ लषमनशेषजुदेहलहि ॥ यहजगजिहिआधार ॥ भुवहितविधिवरदैभए । राममनुजअव तार ॥ ३ ॥ इनतेदुस्करकर्मकोऊ । इहिंरविचक्रनआहि ॥ कारनवससोईकरैं । जोयेचित्त हुँचाहि ॥ ४ ॥ तुमसबआज्ञाविष्णुते । देवधरीकपिदेह ॥ रावनबधलगिअवतरे । सौर घुनाथसनेह ॥ ५ ॥ कपितनपूरनकाजकरि । सवजैहौस्वस्थान ॥ पुनिअपनौपदपाइहौ । देवस्वरूपनिदान ॥ ६ ॥ अबवलपौरुषआपनौ । अरुवानरअवतार ॥ सफलकरहुसुरका जसब । विश्वसुजसविस्तार ॥ ७ ॥ ॥ छंदद्विक्षअरी ॥ ॥ सबैसुभटमारुतिसमझाए ॥ ॥ धरिधीरजसीयसोधहिंधाए ॥ अतुलितबलसुरकपिअवतारा ॥ षोजतचलेअसुरक्षय कारा ॥ विंध्याचलआएतबवानर ॥ करतसोधसियवनघनकंदर ॥ इहांमहेंद्राचलसोआ ए ॥ सागरदक्षनतीरसभाए ॥ इहांदुस्पारउदधिअवलोक्यौ ॥ रहतनचित्तमहाभयरो क्यौ ॥ सलिलअगाधभयंकरसागर ॥ तहांजलजंतुविषमतनविस्तर ॥ भएसवकीसत हांमनभंगी ॥ उद्यमनाहिनफुरतअभंगी ॥ महेंद्राचलगुहाअमाना ॥ तहांतरुसोभितल तावितानां ॥ ॥ संपातिकपिसमागम ॥ ॥ कृतनिवासपहिलैंतिहिंकंदर ॥ वसतम ध्यसंपातिगृद्धवर ॥ इहिकंदरमुषकपिजबआए ॥ बैठतनाहिभेदविनुपाए ॥ इहांविछाइ कुशबैठेनिर्भय ॥ समयनिहारिमरनकृतनिश्चय ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ हाथसुग्रीवम रनहैअनहित ॥ करियेदेहत्यागराघवकृत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनिग्रीधनिकट चलिआयौ ॥ इनाहिविलोकिपरमसुषपायौ ॥ दैवआजमुहिबहुभषदीना ॥ निकसेबहुदि नछुधाअधीना ॥ वचनग्रीधसुनिकंपितवानर ॥ मरनउभयमहँउपजितृतीयमर ॥ ॥ अं गदउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कृतरामसुग्रीवनस्वयंकाज ॥ उपज्यौजमसदनगम नआज ॥ अपमृत्युमरेसबवृथाआइ ॥ इहिठौरऔरनाहिनउपाइ ॥ ॥ हनुमंतउ वाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उच्चाख्यौहनुमंतयह । जन्मसुधन्यजटायु ॥ कृपासिंधुरघुनाथके । अर्थनिवेद्यौआयु ॥ ८ ॥ जोगतिदुर्लभजोगिने । कष्टकीयेहूंकाइ ॥ रामप्रसादजटायु रन । प्रगटदिव्यगतिपाइ ॥ ९ ॥ ॥ संपातिवाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनत महाषगनिकटआइ ॥ संपातिभयोपूछतसुभाइ ॥ तुमकौनइहांलगिकवनकाम ॥ ममश्र वनसुनायौअमृतनाम ॥ कहिकहिजटायुतुमवातकीन ॥ कोवहजटायुतिहिकहाकीन ॥ ॥

हनुमंतउवाच ॥ ॥ पुरअवधिईसदसरथपुनीत ॥ सुतरामचंद्रतिहिवधूसीत ॥ पित आज्ञादंडकवनप्रवेस ॥ वसिपंचवटीसुकिसोरवेस ॥ वनगहनरामआषेटवीर ॥ धरिचा पगएसानुजसधीर ॥ इहिसमयआनिरावनअसँक ॥ लैचल्यौसीयहिहरिदुष्टलंक ॥ कहि रामरामसीयापुकारि ॥ सोसुनिजटायुऊठ्यौसंभारि ॥ षगभिर्योग्रीधलंकेसषेत ॥ सबतो रिछत्रध्वजरथसमेत ॥ जूझ्येजटायूसंग्रामसूर ॥ भइगगनपुहपवर्षासपूर ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भौरामाअवतारभुव । सुन्यौइहांसंपाति ॥ ततछनभयोसपंष तहां । जथाजन्मषगजाति ॥ १० ॥ तवसुग्रीधगोसिंधुतट । दैजटायुजलदान ॥ कह नलगेचितधीरकरि । पूरबकथाप्रमान ॥ ११ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सीयविरहभ्रमतसानुजसधीर ॥ वनमाझमिलेसुग्रीववीर ॥ भौतहांरामसौमित्रभाव ॥ सुग्रीवकरतसेवासुभाव ॥ आज्ञासुग्रीवहमइहांआइ ॥ पुनिभ्रमतकहूंसीतानपाइ ॥ ॥ संपातिरुवाच ॥ ॥ तवकह्यौग्रीधथिरकरहुचेत ॥ सीताहिबतैंहूंथलसमेत ॥ ॥ जूथप उवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सबकपिपूछतगृद्धसौं । पंषविनासप्रकार ॥ मायावर्जितसाधु तुम । सूरविदितसंसार ॥ १२ ॥ ॥ संपातिरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पूरबवृत्तांत यहसमयपाइ ॥ संपातिकहनलागेसुभाइ ॥ हमभ्रातउभयअनजानिभेव ॥ यौवनारूढ गर्वितजेव ॥ अतिदर्पउडेसन्मुषअकास ॥ पर्जंतगएदिनकरप्रकास ॥ जोजनसहस्रक छुपहुंचिजाइ ॥ परजरनलगेरवितापपाइ ॥ जान्यौजटायुमैजरतज्वाल ॥ कृतजघनभ्रा तलघुहोतकाल ॥ आछादिपंषमैउपरआइ ॥ सोअनुजकर्योतरहरसुभाइ ॥ ममपंषज रीरवितपसँमूल ॥ तहँभयौदेहपलपिंडतूल ॥ इहांपर्योविध्यपर्वतहिआनि ॥ मूर्छागत भौतनमृतकमानि ॥ विछुर्योजटायुतिहिंसमयवीर ॥ सोगयोकहूंसुधिनहिसरीर ॥ दुरा तपतनअतिविथादेह ॥ अनअवधिनछूटैप्रानएह ॥ सबरह्योदेहअवसेषस्वास ॥ दिन तृतीयजगीमूर्छादुरास ॥ विनुपंषसक्तिहतभौविहंग ॥ अरुदग्धभएसबअंगअंग ॥ च षउधरिजबैकछुभयोचेत ॥ शुभआश्रमदेष्योजलसमेत ॥ क्रमक्रमहिचल्योहूदुषितका इ ॥ अतिकष्टतपोथलनिकटआइ ॥ तहांतपतचंद्रमुनिउग्रताप ॥ इहांभाग्यमोहिभएभे टआप ॥ मोहिकह्यौतपस्वीछांडिमौन ॥ किहिकरीदसायहहेतकौन ॥ मैकह्योसबैवृत्तांत मूल ॥ सोभयौसुनतमुनिसानुकूल ॥ देष्योमैमुनिवरअतिदयाल ॥ व्हैदीनकह्योंआपनौ हाल ॥ विनुपंषवृथाजीवनाविहंग ॥ आहारविनाक्यौंरहैअंग ॥ आहारसुतौंपंषनिअधी न ॥ करतारपंषसोइनासकीन ॥ मोहिदेषिविगतपंषनिविहाल ॥ दीनौप्रबोधद्विजव्हैद याल ॥ ॥ चंद्रमुनिरुवाच ॥ ॥ संपातिप्रति ॥ ॥ दुषभाजनजानहुदेहवान ॥ सब कालआदिमध्यावसान ॥ दुषमूलआहिभवभूतदेह ॥ इहिंआश्रितकर्माकर्मएह ॥ इहां कर्मप्रवर्त्ततदेहआनि ॥ मनलेतजंतुहंभावमानि ॥ अनआदिआहिजडअहंकार ॥ पैं होतअविद्यातेप्रचार ॥ जडहोइचेतछायासजोग ॥ ज्योंलोहपिंडअग्निहिप्रयोग ॥ अय पिंडअनलमयहोतआप ॥ पुनिदेहचेतभासतप्रताप ॥ यहबुधिउपजिजबदेहएह ॥ सबभाइवढततासौंसनेह ॥ वसअहंकारअतिबलवियाप ॥ अपनीकरिजानैदेहआप ॥

मानहूंसुदेहसंसृतितिहिमुल ॥ सुषदुष्षवहैसाधकसमूल ॥ अविकारजीवसबकालएह ॥ अरुद्रस्यमानमिथ्यासुदेह ॥ महिहोतदेहजीवाहिमिलाप ॥ अपनीकरिमानतताहिआप ॥ कर्ममदेहहूंकर्मकार ॥ संकल्पसदाइतिगनतसार ॥ जीयकरतकर्मजेअहंजोग ॥ पुनि बंधतातिनकेवसप्रयोग ॥ अधऊर्धभ्रमततत्फलअधीन ॥ नितपापपुन्यकरिकरिनवीन ॥ कृतकरैदानमषजुतविवेक ॥ अभिलाषस्वर्गसुषहितअनेक ॥पुनितिहिप्रभावसदगतितिहि पाइ॥ भुक्तैमनवंछितफलसुभाइ ॥ इहांपुन्यसबैजबषीनहोइ॥अनइच्छकर्मप्रेरितजुकोई ॥ तबगिरैतहांतैतिहींकाल ॥ विचआवैससिमंडलविसाल ॥ विधुमंडलवसिअवधिहिविहा इ ॥ अवतरैबहुरिभूलोकआइ ॥ जौंहोईपुरुषकिहुंकर्मजोग ॥भुक्तैअनेकरसस्वादभोग॥ ॥ सप्तदशद्रव्यभोजनसुढार ॥ पुनिहोतअमृतमयचवप्रकार ॥ तातैंबलवीरजवृद्धिताहि ॥ चितहोतकामवसत्रीयाचाहि ॥ पुनिप्रेमजुक्तजुवतीजुपाइ ॥ सन्यासजोगविलसतसु भाइ ॥ ऋतुजुवतिजोनिजोषसतषेत ॥ मिलिजरामध्यसोरजहिरेत ॥ रजरेतभयोसंगम सुभाइ ॥ पुनिगर्भमध्यतिनवृद्धिपाइ ॥ इकदिवसकलिलनामाउचार ॥ कहिपंचरात्रिबु द्बुदाकार ॥ पुनिरात्रिसप्तपेशित्वपाइ ॥ इकपक्षरुधिरसंचरितआइ ॥ पेसीपचीसजबरा त्रिपाइ ॥ शुभउपजितहांअंकुरसुभाइ ॥ सिरग्रीवाकंधरपृष्टिसंग ॥ इहांउदरजुक्तएपांच अंग ॥ मिलिपानिचरनतनद्वितीयमास ॥ पारसकटिजुगजानुनिप्रकास ॥ क्रमतृतीय माससबसंधिकीय ॥ अरुचतुर्मासमिलिअंगुलीय ॥ शुभघ्राणश्रवनजुगदृगसमास ॥ रदमूलगुह्यनषपंचमास ॥ श्रुतरंध्रनिकसिषटमाससंग ॥ मिलिपायूमेढ्रअरुजोनिअंग ॥ नाभित्वचरोमसूक्षमसुदेस ॥ सप्तमैमासकृतसीसकेस ॥ अष्टमैमाससबसिद्धअंग ॥ वृद्धियाक्रमहिगर्भहिविहंग ॥ मिलिदेहजीवजबनवममास ॥ तहांहोतगर्भचैतन्यतास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाभीछिद्रजुसूत्रनिज । अलपगर्भकोआहि ॥ माताभुक्तिसारसुष । तिहिमगपोषतताहि ॥ १३ ॥ अंबांकीजठराअगनि । भोजनपचतसुभाइ ॥ सोनपच्यौ किहिकर्मवस । पोषदिनहिंदिनपाइ ॥ १४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांहोतचेतनास क्तिपाहि ॥ तबसमरनपूर्वजन्मताहि ॥ वसजठरकष्टजलश्रोणजीव ॥ अतिदुषितकहत हाहादईव ॥ ॥ गर्भउवाच ॥ ॥ अन्नेकउदरअवतारआय ॥ भवकष्टभएअनुभवसु भाय ॥ संबंधपुत्रदारासंसार ॥ अन्यायन्यायधनलैअपार ॥ तिहिंकुटंबभरनपोषनजु कीन ॥ दृगधर्मपंथकबहूंनदीन ॥ राच्यौनस्वप्नहूंविष्णुरूप ॥ कृतघ्नीपर्यौफिरउदरकूप ॥ दुर्भागनचीन्हौप्रभुदयाल ॥ होतएतौमोमाझहाल ॥ सबअहितआपनेआपसाधि ॥ आतमहितएकौनहिअराधि ॥ तातिफलभुक्तेमैस्वतंत्र ॥ जठरनिबहुपीडितजोनिजंत ॥ निरयोपमशतयहगर्भनारि ॥ ममयोक्षकदाव्हैहैमुरारि ॥ दुषयातेक्यौहूंछुटौंदेव ॥ सम कर्मवाचमनकरौंसेव ॥ ॥ चंद्रमुनिवाक्यं ॥ ॥ तबजोनिजंत्रपीडितकुजीव ॥ दिन अवधिगर्भमोष्यौदईव ॥ व्रणपूयमध्यजौंकृमिविशेष ॥ इहिंभांतिनिकसिदुषसहिअसेस तस्मातवाल्यवस्थासताप ॥ अनुभवतआखिलभवभूतआप ॥ वरन्यौनग्रीधयातेविथार ॥ संसारविदितयौवनअसार ॥ छनभंगहोतज्यौंअभ्रछाय ॥ अंजुलिगतजलत्यौनिकसि

जाय ॥ पुनिजरादुषदुष्पारजानि ॥ अनचिंत्यकष्टसबमिलिहिआनि ॥ बालापनआ दिकवृद्धवेस ॥ सबतुमहिआहिअनुभवषगेस ॥ करिअकर्मअज्ञानकोइ ॥ सठगर्भ वासफिरिपरैसोइ ॥ यातैंयहकरिवोतुमहिआज ॥ रहिएकचित्तसुनिविहगराज ॥ व्हे आदिस्थूलसूक्ष्मजुदेह ॥ उनहूंतेन्यारोहेअनेह ॥ पुनिप्रकृतितिहूंतेभिन्नपार ॥ नि र्लेपनिरंजननिराकार ॥ सोधरहुचित्तव्हैसावधान ॥ गहिवाचकर्ममनतत्वज्ञान ॥ दि नकछुकजोगबलराषिदेह ॥ समधरहुसर्पकंचुकसनेह ॥ हैत्रेताजुगरामावतार ॥ भव तव्यभूपभुवहरनभार ॥ आज्ञापितुदंडकवनहिआइ ॥ सानुजससीतबसिहैसुभाइ ॥ लंकेसआइतसकरनिलाज ॥ करिहैसीयहरनअनिष्टकाज ॥ आज्ञासुग्रीवकपिवीरआइ ॥ सीयसोधकरतअपनैसुभाइ ॥ दक्षनसमुद्रतटतुमहिदेषि ॥ वसदेवमिलनव्हैहैविसे षि ॥ तेकहिहैभोरामावतार ॥ दशशीशहतनभुवहरनभार ॥ सोसुनतपंषव्हैहैसमू ल ॥ मुहिकह्योचंद्रमुनिमंत्रमूल ॥ मुनिवचनवृथानाहिहोइवीर ॥ सोभएपंषमेरेसरीर नवपंषग्रीधतनकपिनिहार ॥ विश्वासउपजिकृतहितविचार ॥ ॥ संपातिवाक्यं ॥ ॥ संपातिकह्योकपिसुनहुसूर ॥ दुष्पारउदधिहैलंकदूर ॥ शतयोजनजलअंतरसँचार ॥ विश्रामबीचकहुनहिंविचार ॥ जातिस्वभावहमग्रीधजंतु ॥ तिहिआहिदूरदरशीदिगंतु ॥ वनिकाअसोकदशशिरविहार ॥ सुषनित्यफलितफूलितसुडार ॥ सिंसिपावृक्षतिहिम ध्यसोह ॥ अतितरलसघनछायाअरोह ॥ सीयबैठीहैतहांविरहसंग ॥ भयजुक्तमलि नतनचित्तभंग ॥ हूंदेषतहूंवहसीयाहोय ॥ करीयेंनतासंसंदेहकोय ॥ अबकरहुउद धिलंघनउपाइ ॥ प्रभुकारिजतातेंसिद्धिपाइ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जिहिरघुपतिनि जनाममात्रसुमिरतभवसागर ॥ दुषमूलदुष्पारपतिततरिजातलोकपर ॥ सोइत्रिलो कउतपत्तिवासलयहेतविस्वंभर ॥ तुमजुरामप्रियभक्ततासकारजहिततत्पर ॥ तिहिंकहातु च्छवारिधितरन, होइसमर्थअसमर्थहीय॥करिहैंसहायजिहंधनुषको, विजयजज्ञसीतावरी य ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ संपातिमिटेसबदुषसँताप ॥ यहकरिप्रबोधउ डिगयोआप ॥ ॥ अथकपिमंत्रबलप्रकासनं ॥ ॥ तहांआयसकलकपिउदधितीर ॥ बैठेविचारवसमहावीर ॥ भयउपजिदेषिसागरभयान ॥ नक्रादिचक्रआकृतिअमान ॥ कृतघोषगगनचुंबितकलोल ॥ दुस्साधिभ्रमणवससलिलडोल ॥ दुर्लंघ्यदेषिसागरदुरंत ॥ इहांभयोंकपिनिविस्मयअनंत ॥ मनचकितकह्योअंगदकुमार ॥ सबसुनहुवचन ममबुद्धिसार ॥ तुमसकलमहाबलवानवीर ॥ सुरस्वामिकाजसाधकसधीर ॥ करिनिषमसिंधुलांघेजुकोइ ॥ इनसबनिप्रानदातावसोइ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जबयेंक हिजुवराजआपबलसबनिउचार्‍यो ॥ दशतेदशदशगुनदिषाइविक्रमाविस्तार्‍यो ॥ मिलि शतजोजनमध्यकिहुनक्रमऊपरकिन्नो ॥ पुनरागमनप्रसिद्धदुर्गमयहउत्तरदिन्नो ॥ इहांको ऊनकाजसाधकभयो, बैठिअधोमुषतोलिबल ॥ चाहतसुभूमिव्रतचुक्यो, चकितचित्तअ तिचलविचल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जावबंतउवाच ॥ ॥ जांबवंतबोल्योजरठ । पुत्रसुन हुबलपार ॥ ममतरुनप्पनतिहिसमय । भोवामनअवतार ॥ १५ ॥ कृतभुवमंडलतीनि

क्रम । वपुविराटविस्तार ॥ दएप्रदक्षनप्रहरद्वय । विमलसप्ततृकवार ॥ १६ ॥ केशववा
मनरूपकरि । जाच्योबलिबलजोग ॥ विश्वनिवाह्योवचनव्रत । पूरनपुन्यप्रयोग ॥ १७ ॥
कलपंतरवीतेकइक । जराग्रसितअबजानि ॥ वहैजुप्रतिमादेहयह । भइबलविक्रमहानि ॥
॥ १८ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ नीकहिकूदैंनीरनिधि । अंगदभाष्योएह ॥ आवनबनैंकि
नाबनै । यहपैजियसंदेह ॥ १९ ॥ ॥ जामवंतउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ वृ
द्धरीछतबसमयविचाऱ्यो ॥ अगंदसोंयहबचनउचाऱ्यो ॥ नीतिनिपुनतूअगंदनामी ॥ स
मसुग्रीवसबहिकोस्वामी ॥ जनकेरहतस्वामिजोंजाही ॥ निहचैनीतिधर्मयहनांही ॥ जा
मवंतहनुमंतहिजाना ॥ नीतिनिपुनबलबुद्धिनिधाना ॥ तूहनुमंतरुद्रअवतारा ॥ बलविक्र
मविसऱ्योइहिंवारा ॥ जातमात्रक्रीडततूबालक ॥ कृतअभूतराक्षसकुलघालक ॥ प्रातसम
यदिनकरतैंपायो ॥ अरुणस्वरूपदृष्टितबआयो ॥ मनआरक्तपक्कफलमान्यो ॥ जियमह
भक्षभूतसौंजान्यो ॥ षस्योपंचशतजोजनतैंषिति ॥ महावेगकूद्योतूंमारुति ॥ पऱ्योभू
मिशिशुअतुलपराक्रम ॥ कूदतफिऱ्योजथाकपिकुलक्रम ॥ इतनैबडेकाजकेआगम ॥
साधिमौनकारहेअपरसम ॥ स्वामिकाजसाधकतुमसमरथ ॥ कपिजियराषिजगतरा
षहुकथ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हनुमंतबालअवस्थाहोई ॥ कहूंसँतायोतापसको
ई ॥ देवकाजकारकसोदेष्यो ॥ वानरहरअवतारविशेष्यो ॥ साधुश्रापमारुतिहिसुनावै ॥
अपनोबलतोहिनहिसुधिआवै ॥ जबकोऊदूजोसमुझैहै ॥ यातेबालतोहिसुधिऐहै ॥ सबै
पराक्रमभालसुनाए ॥ इहांबलहनूमानसुधिआए ॥ हनूमानतबहरषितहोई ॥ सिंघनादग
र्ज्योकपिसोई ॥ सिद्धसमाधिटरीतिहिंस्वरसंग ॥ अचलडोलभूगोलकंपअंग ॥ तनवढ्यो
कनकाचलसोतहां ॥ ज्योंजगदीसविराटदेहजहां ॥ मारुतितबैप्रकास्योविक्रम ॥ कारनपैं
जुअतुलसज्जितक्रम ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ चढिमहेंद्रगिरिवचनउचारे ॥ स्वा
मिकाजरघुनाथसंभारे ॥ सुरभीपदजलभरज्योंसागर ॥ करिहूंममासिरपररघुवरकर ॥ लां
घिसमुद्रभस्मकरिलंका ॥ सकुलहतौंरावनताजिसंका ॥ रज्वाबद्धकंठसठरावन ॥ पकरिज
थाकरस्वानअपावन ॥ पर्वतसहितउठाइलंकपुर ॥ विहितअग्ररापैलैरघुवर ॥ सीयहि
रामसंदेससुनैहूं ॥ अभयविजयजुतइहिठांऐहूं ॥ धरहुधीरकपिभालधुरंधर ॥ विषमकाल
ममरक्षकरघुवर ॥ ॥ जामवंतउवाच ॥ ॥ वेगितुमहिगंतव्यवीरवर ॥ जबलौं
सीयाजीयतिदुर्ज्जरजर ॥ करतगमनतुमरामराजकृत ॥ व्हैहैसंगपवनकारनहित ॥ जा
मवंतकहिहनूप्रीतिजुत ॥ शुभतवहोहुगमनमारुतसुत ॥ करिमिलिमंत्रसबनिजयजयक
हि ॥ रामकाजतटसिंधुवासरहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वालि
मरनवैभवसुग्रीवजुवराजाअगंद ॥ किस्किंधास्वामित्वपाइतारासुभागपद ॥ वसवियो
गरघुवीरकालछेपनगिरिकंदर ॥ महासेनसंमिलनकीसजानकीसोधकर ॥ संपातिपंष
प्रापातिसुषद, वर्णनवानरवेगबल ॥ आरोहझंपलंघनउदधि, मारुतिमहामहेंद्रचल ॥
॥ दोहा ॥ ॥ इहिंकिस्किंधाकांडयह । संपूरनशुभजान ॥ सुन्योंजथानरहरसुक
वि । पूरबग्रंथप्रमान ॥ २० ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेपौरुषेयरामायणेमहामुक्तिमार्गेकि

ष्किंधाकांडबारहठनरहरदासेनविरचितंसंपूर्णं ॥ ॥ श्रीसीरामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥छ॥

॥ अथसुंदरकांडप्रारंभः ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबसुंदरआरंभयो । श्रोतासुनहुसुजान ॥ करहिउलंघनउदधिकौ । हनूमानबलवान ॥ १ ॥ सीतासोधजुआगमन । महाविजयदिगराम ॥ मिलिअनसंष्यादलक्रमन । करनसेतुजयकाम ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कनकाचलप्रतिमाकपीससोइ वर्णविराजित ॥ अरुनवदनविग्रहअमानचलरोमअचलचित ॥ सबनिमानछांड्योंकी हुनकपिविक्रमकरयौ ॥ महावीरहनुमंतअतुलपौरुषउद्धरयौ ॥ क्रमसज्जितभौरघुनाथ कृत, प्रबलसुरासुरपिष्षयौ ॥ सामुद्रदुर्गमनरहरसुकवि, इहांझंपनआरंभयौ ॥ १ ॥ आंजनेयउष्षसियसीसआकासपरस्सीय ॥ अतिप्रचंडविग्रहअभूतदनुदेवदरस्सीय ॥ रामरूपचितधरियपादपर्वतधरिचंपीय ॥ कमठकोलकसमसियअवनिअसहनआकंपीय ॥ दिगदेवडरीयब्रह्मांडडिगि, भुवनतीनजयजयभयौ ॥ सियसोधकाजनरहरसुकवि, जबमारुतिक्रमसज्जयौ ॥ २ ॥ जयतिजयतिराजीवनैनरघुवंसउजागर ॥ जयतिजयति देवाधिदेवषलषोनिषयंकर ॥ जयतिजयतिराजाधिराजधनुसायकधारन ॥ जयतिजयति धर्माधिकारवनदंडविहारन ॥ उरधारिरामसानुजअभय, भवअमानविग्रहभयौ ॥ कारन सुशोधसीताकुंवरि, कपिहनुमानजुकुदयौ ॥ ३ ॥ दिघ्घनालिगोलासदिघ्घछोहहिंमनुछूट्यौ ॥ मिलिअसेतनिसिगगनमग्गताराजनुतूट्यौ ॥ रामसरासनबानमनहुमोष्यौरिपु मारन ॥ कनकाचलदिगदछनकयौकिधौगमनसकारन ॥ जानकीदरसअभिलाषजिय, छीजतजुगवरछनहिंछन ॥ करिरूपवीरहनुमंतकौ,मानहुंधायौराममन ॥ ४ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ सहसफनजग्यौतिहिंभारसंग ॥ उत्तमगंधसेलगिकमठअंग ॥ पदमारुतिचांप्यौगिरप्रमान ॥ वहिचलैधातअन्नेकवान ॥ भभकांहिधातगिरफटतभूरि ॥ चिभंटीपक्कगजचरनचूरि ॥ गिरचरनचांपिझंप्यौगहीर ॥ निस्सेषलीनज्यौउपलनीर ॥ पर्वतसोजोजनदशप्रमान ॥ मिलिपयोधरनिमहँधसिअमान ॥ ॥ सुरसाप्रसंग ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जातगगनमगमारुतिजान्यौ ॥ अमरनिउरसंदेहजुआन्यौ ॥ उदधिउलंघितृकूटगमनउत ॥ हैसमर्थवानवापवनसुत ॥ विग्रहअमितजुद्धवरवामा ॥ नागजननिसासुरसानामा ॥ मायारूपजुपैइच्छामन ॥ ततछनप्रतिमारचैवहैतन ॥ ॥ देवाऊचुः ॥ ॥ सुरनितहांपठईवहसुंदरि ॥ कपिकीलेहुप्रतिछाबुधिकरि ॥ जौपैकाजसर ततुमजानहु ॥ पवनपूतकौबलपहिचानहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुरसातिंहिरोक्यौपथसागर ॥ कीनौरूपविरूपभयंकर ॥ ॥ सुरसावाक्यं ॥ ॥ यहकोउजंतुअचानकआयौ ॥ भक्षआजन्हैहैमनभायौ ॥ ममसुषमाझपैठिरेमर्कट ॥ काठिनछुधामोप्राननिसंकट ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ दूतजातषोजनवैदेही ॥ सोहमपठएरामसनेही ॥ काजदेविअवरोधनकीजे ॥ देषिसमयमातामगदीजे ॥ सीतालहैमोहिउपजेसुष ॥ मैंफिरिआइपैठिहूंतवमुख ॥ ॥ सुरसावाक्यं ॥ लंकादूरिलीलिपैलैहूं ॥ जतनकोटिहूजाननदैहूं ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ वृद्धात्रीयासर्वथावंदित ॥ हमतुमवादउचितनहियहहित ॥ वानरसदाअभक्षविकारी ॥

भषिहौतौमुहफारहुभारी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ द्वैजोजनमारुतितनदेषा ॥ वदनवि
थारजुपंचविसेषा ॥ विग्रहजोजनचारिसुवानर ॥ वदनवीशजोजनभौविस्तर ॥ क्रमजि
हिंजिहिंवपुबढ्योकपीसा ॥ द्विगुनतासुरसामुषदीसा ॥ जबसुरसामुषभौशतजोजन ॥
महाहर्षउपज्योमारुतिमन ॥ कपिअंगुष्टमात्रतनकीनौ ॥ पैठिगयौतिहिउदरप्रवीनौ ॥
रदसंपुटजौलौंवहरोकै ॥ बाहरठाढोहनूविलोकै ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ पनअरुव
चनकरेमैंपूरन ॥ तवमुषपैठ्योनिकस्योततछन ॥ ॥ सुरसावाक्यं ॥ ॥ पौरुषबलसुर
सापहिचान्यौ ॥ पूरनकारजदेवप्रमान्यौ ॥ विजयहोहुकारिजतववानर ॥ प्रविसहुजाइ
कुसललंकापुर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिप्रमानहनुमंतकृत । साधुसा
धुकहिसोइ ॥ सुरसासुरपुरसंचरी । हरषितचित्तहिहोइ ॥ ३ ॥ ॥ मैनाकप्रसंग ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ सीयसोधजातहनुमंतसाध ॥ उर्द्धमगलष्योअंबुधिअगाध ॥ तुहि
नाचलकोमैनाकपूत ॥ अतिवुद्धिबलीआकृतिअभूत ॥ मैनाकउदधिगतभयोमूल ॥ सुर
राजपंषछेदतसमूल ॥ वहबच्योसिंधुकेसरनआइ ॥ सुरराजत्रासछूट्योसुभाइ ॥ तनता
रहेममयरत्नतास ॥ वनवृक्षपुहपफलसुषविलास ॥ ॥ समुद्रउवाच ॥ ॥ सामुद्रक
ह्योपर्वतसधीर ॥ विश्रामदेहुकछुहनूवीर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ शुभशृंगउठेतबसलि
लसीस ॥ करिमनुजरूपगौनिकटकीस ॥ ॥ मैनाकउवाच ॥ ॥ विश्रामलेहुममशृं
गवीर ॥ तुमस्वामिकाजसाधकसधीर ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ हनुमंतकह्योसप्रसन्न
होइ ॥ इहांअर्थनमोतैसस्योकोइ ॥ अबकासकहांविश्रामआज ॥ करुनानिधानविनुसरे
काज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मैनाकहिकीनीमनोहारि ॥ करसिषरछीयोसंतोषकारि
॥ ॥ अथसिंघिकाप्रसंग ॥ ॥ सिंघिकानामआसुरिअसाध ॥ विधुंतुदमाताधर्मबाध
॥ सिंधुगतभईआसुरीसोइ ॥ हनुमानविघ्नकारिनीहोइ ॥ कछुगमनगगनहनुमंतकीन
॥ नभछायाजलमहभइनवीन ॥ छायासुग्रसीसिंघिकाछोह ॥ दुष्टातिहिकारनदेवद्रोह
॥ इहांरह्योहनूथिरह्वैअकास ॥ तरबद्धदोरिज्यौंचंगतास ॥ चिंतयौतबैमारुतिसचेत ॥
हतवेगभयोहूंकवनहेत ॥ इतउतहिदेषिकोउनहीआन ॥ पुनिकरीअसुरमायाप्रमान ॥
॥ अधदृष्टिनिहारयोजबैआप ॥ सोपरीदृष्टिदुष्टासपाप ॥ अतिकायघोररूपाअसाध ॥
॥ वसकपटकरतिभवभूतबाध ॥ तहांदईलातहनुमंतताहि ॥ अनचेतभईसुधिनहिनआ
हि ॥ उल्लंघिउदधिमारुतिअभंग ॥ शुभभूमिदेषितरुलतासंग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उल्लं
घ्योमारुतिउदधि । चित्तभयोसुरचैंन ॥ दच्छनरामसुवामसीय । ताछनफरकेनैन ॥ ४ ॥
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वनसघनविविधउद्यानबाग ॥ तटनिकटकूपसरितातडाग ॥ म
नमुदितनटतबोलतमयोर ॥ रसमत्तरत्तकलकंठरोर ॥ सरसरनिफुल्लिसरसिजसमूह ॥ जि
ततितहिगुंजअलिमत्तजूह ॥ पक्षीअनेकभाषाप्रचार ॥ सोपढतअतनजनुचंटसार ॥ आ
मोदपुहपविकासितअनंत ॥ कलरवमदंधमधुकरकरंत ॥ वनजंतुविविधभाषाविहार ॥
प्रतिमाजुवर्णअनअनप्रकार ॥ पर्वतइकअौघटाविकटपाइ ॥ इहिंचढ्योतहांहनुमंतआइ ॥
तबदिव्यमानलंकासुदेषि ॥ विस्तारविविधरचनाविशेषि ॥ विश्रामकर्योतहांहनूवीर ॥

तरुतरलछांहगिरिउदधितीर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महासंकलपविकलपमन । मनचिंत्योहनु
मान ॥ इहिंकपिरूपप्रवेसपुर । नाहिनजुक्तनिदान ॥ ४ ॥ करीप्रतिज्ञावचनकहि । अंग
दादिसौंएह ॥ करिहूंसोधजुजतनकरि । सीतानिस्संदेह ॥ ५ ॥ मारुतितहांविचारिमन।
उत्तममतगनिएह ॥ करिकरिवंदनरामकहँ । दंशधस्योतबदेह ॥ ६ ॥ तरणिअस्तमितअ
द्रितै । उतस्योहनूअसंक ॥ दंशसुरूपअनूपदुति । कपिआयौगढलंक ॥ ७ ॥ ॥ अथलंका
प्रवेश ॥ ॥ छंदअद्दिक्षरी ॥ ॥ करित्रीयरुपजुआईलंका ॥ अतिबलरोक्योपंथअसंका॥
विग्रहविसदविरूपावामा ॥ निसिचरिघोरलंकिनीनामा ॥ दंसरूपतिहिंहनुमंतदेष्यौ ॥
अलपसरीरवीरअबरेष्यौ ॥ ॥ लंकावाक्यं ॥ ॥ कोतुमजातकहाँकिहकारन ॥ चोरसमय
निसिगढसंचारन ॥ ॥ मैराक्षसीलंकिनीनामा ॥ विकटाचौरभक्षनीवामा ॥ ॥ मारुतिरु
वाच ॥ ॥ कपिहूँरामचंद्रकौकिंकर ॥ करतसोधसीतागिरिकंदर ॥ ॥ लंकावाक्यं ॥ ॥ देष
ततौहिजानजौदेहूं ॥ पंचनिमाझकहापतिपैहूं ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ हमतुमविग्रहउचित
नहोई ॥ कामिनिवधनपुरुषकहुंकाई ॥ पुरप्रवेसमोअछतनपैहौ ॥ जोअतिबलीतफिरीघर
जैहौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रोषदृष्टितिहिंलातउभारे ॥ मुष्टिकरमारुतिसोमारी ॥ परीमू
र्छितविषमप्रहारा ॥ रुधिरश्रवतिमुषअविरलधारा ॥ जागीमूर्छाचेतभयौजब ॥ तहँकरिवि
नयलंकबोलीतब ॥ ॥ लंकावाक्यं ॥ ॥ रचीविश्वकर्मारुचिर । हूंलंकानिजहाथ ॥ पाईपुरी
कुबेरप्रभु । सुषविलसेममसाथ ॥ ८ ॥ कंटककाढिकुबेरकह । छीनिलईहूंछोह ॥ अघभा
रनिपीडितभई । देवधर्मद्विजद्रोह ॥ ९ ॥ कमलसुवनकोध्यानकिय । मैंतबअतिदुषमा
न ॥ विधितहांदीनोमोहिवर । मैंसोइकह्योप्रमान ॥ १० ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ त्रेताजु
गमहअवनिहित । राममनुजअवतार ॥ हठिपठवहिंसीयसोधकह । वानरजूथविचा
र ॥ ११ ॥ ऐहैहनुमंतदुर्गइहि । करितववधनिस्संक॥यहनिश्चयजानहुइहां । लहहिवि
भीषनलंक ॥ १२ ॥ अग्निदाहकरिवौअबै । मृतकसरीरहिमोहि ॥ मारुतिधर्मनिधानमि
लि ॥ ताकिलजान्यौतोहि ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ कीनोअंगीकारकपि । रामप्रतापप्र
मान । ऐसेहीव्हैहैअबै । निसचरमानिनिदान ॥ १४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ देष्यौमारु
तिगढदुगम । चहुघांकठिनसंचार ॥ कंटकग्रेहप्रवेसकौ । चिंत्योचित्तविचार ॥ १५ ॥ ॥
छंदपधरी ॥ ॥ सोरचितविश्वकर्मासुभाय ॥ पौलस्तिवंसतहांमोदपाय ॥ पर्वतत्रिकूटऊ
परप्रकार ॥ परिषाजुगहरजलनिधिअपार ॥ थितद्वारकनकप्राकारथाट ॥ कृतच्यारौवज्रा
कृतिकपाट ॥ शृंखलाशूलशृंगाटसाज ॥ बहूजंत्रनालिकपिसिरविराज ॥ निसानद्वारद्वार
हिसनाद ॥ प्रतिजामबजतनितअप्रमाद ॥ रक्षकअनेकराक्षससरोष ॥ घहरातवचनज्यौं
गगनघोष ॥ उत्तरदिगद्वारसुमध्यआइ ॥ सबदेषतविधिहनुमँतसुभाइ ॥ कनकमयग्रेह
व्यापारकार ॥ पुररचितहाटपाटनप्रकार ॥ सबमंत्रिनिकेघरकस्योसोध ॥ पैंभयौकोउननि
द्राप्रवोध ॥ ग्रहकुंभकर्णसोधेअगान ॥ थितस्वर्णरचितसबथानथान ॥ सुतरावनग्रहसो
धतसुथान ॥ निस्सेषएकएकहिनिदान ॥ दशकंधग्रेहजबगयौदूत ॥ अविलोकिविविधरच
नाअभूत ॥ सहस्त्रनितहँराक्षससावधान ॥ सन्नादघोरजहाँतहाँनिसान ॥ अरुबजहिंविवि

धबाजेविवेक ॥ आकृतिधुनिसज्जितसुरअनेक ॥ गजमत्तछकऋतुघूमतगहीर ॥ सोपवनवेगपर्वतसरीर ॥ अन्नेकदेससंभवउतंग ॥ प्रतिमासुजातिबहुरँगपवंग ॥ वामीविसालतनभारवाह ॥ थलगगनवेगजेअतिअथाह ॥ बनिजूथषरनिभस्मीकुवान ॥ कर्कसरवरोमादीर्घकान ॥ मदमत्तकरभगर्जतअमान ॥ वपुवृद्धिवृषभअन्नेकवान ॥ कोगनैविविधवाहनविसाल ॥ रथजलहुथलहुअतिगतिरसाल ॥ आषेटअर्थजेजियअनेक ॥ कहिकवनजुसंष्याएकएक ॥ प्रतिजामिकराक्षसजुक्तप्रेम ॥ नितरहहिंनिरंतरस्वामिनेम॥सबग्रेहकनकप्राकारसाजि ॥ विस्तारविहितरचनाविराजि ॥ प्रतिहारवृद्धजेद्वारपाल॥ कंचुकीकुब्जकायाकुटाल॥ अंतःपुरप्रविस्यौहनूआइ ॥ सबवैभवदेषतभौसुभाइ ॥ हिममयअवासशुभसत्थान॥ विधिविधिगवाक्षजालीविधान॥ ससिसुरक्रांतिमणिमयप्रकास॥वातायनछविअद्भुतविसाल ॥ थिततहांप्रबालमणिनीलथंभ ॥ अन्नैकचित्ररचनाअसंभ ॥ मुक्तापुटगजरदजुतसमान ॥ पाटनिकपाटसोभाप्रमान ॥ ग्रहग्रहगवाक्षद्वारनिसुरंग ॥ पटवेणुरचितपरदाप्रसंग ॥ प्रतिसौधपताकाध्वजापांति ॥ कनकमयकलसमणिदीपक्रांति ॥ आसुरीसुरीवनिताअनेक ॥ किन्नरीनरीविदूषाविवेक ॥ पन्नगीनगीप्रतिमाअनूप ॥ पछिनीजच्छिअच्छीस्वरूप ॥ गंधर्वदेवकन्यासगान ॥ तंत्रीमृदंगशुभमानतांन ॥ प्रौढाकोउमध्यामुग्धपेषि ॥ रतिरमितअमितविव्हलविसेषि ॥ थितसेजविवसतनठामठाम ॥ भारथरथिजीतेमनहुभाम ॥ इहांमध्यग्रेहहनुमंतआइ ॥ सुषसयनजहांरावनसुभाइ ॥ यौंलष्यौसेजरावनअगूढ॥ सिरकाठचिताजनुमृतकसूझ ॥ मयसुतासतीसीद्रस्यमान ॥ प्रेतनिकटवर्तिनिप्रमान ॥ इहिंविधिनिद्रागतदेषियाहि ॥ चषमूंदिसुअसमयाफिर्यौचाहि ॥ इत्यादिठौरषोजेअसेष ॥ वामानरामपाईविसेष ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावनविभवविलासविधि । पावैकोकविपार ॥ तातेकछुकछुहैकह्यौ ॥ सुन्यौजुमतिअनुसार ॥ १६ ॥ ॥ अथमारुतिबिभीषणमिलन ॥ ॥ मारुतिडोलतलंकमहँ । गयौबिभीषणग्रेह ॥ तबदेवालयदेषितहां । सोमनभोसंदेह ॥ १७ ॥ इहिंग्रहअंगनआगमन । भौमारुतिसतभाइ ॥ तुलसीघनमंजरतरल । अवलोकेतहँआइ ॥ १८ ॥ सदनजुसुंदरसाधको । यहपायौअनयास ॥ विधिकृतरामप्रतापवस । बाढ्यौउरविश्वास ॥ १९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांजग्यौविभीषणअनाचिंत ॥ उच्चाररामहरिहरिअनंत ॥ धरविप्ररूपहनुमंतधीर ॥ विचआँगनठाढेसंतवीर ॥ तबदेषिविभीषनाविप्रतास ॥ सोआनिनिकटमनसावकास ॥ कीयब्रह्मजानितहांनमस्कार ॥ विधिजुक्तभएपूछतविचार ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ इहिपुरीबसतराक्षसकुचेत । तहांकहियैआवनकौनहेत ॥ कैआवनभौममभाग्यकाज ॥ कोउउदितपुराकृतभएआज ॥ सावकसुभाइबढिदुहुनिसंग ॥ आनंदअश्रुरोमांचअंग ॥ इहिंठौरहनूजिहिहेतआय ॥ सबकहीकथाकारनसुनाय ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ तबलगेबिभीषनकहततास ॥ विधिसुनहुहमारीरहनिवास ॥ रदसंकटबिचिरसनानिवास ॥ त्यौंरहतसदाहमसहितत्रास ॥ सबजानतकपितुमप्रभुसुभाइ ॥ अन्नाथकोउजोसरनआइ ॥ करितासकहँअपनोजनकृपाल ॥ देषैसुदृष्टिक्यौंहूंदयाल ॥ दारुनसुभावनिर्दयनिलाज ॥ राक्षसीजोनितामसीराज ॥ आसुरअज्ञानअंतरअ

चेत ॥ हमसौंजौआवैकिहूंहेत ॥ अन्नाथनाथकहियतअनंत ॥ सोरीझहिंक्यौंहनुमंत
संत ॥ ॥ **मारुतिरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सरनाईपंजरविजय । रामचंद्ररघुराइ ॥ कपि
सुग्रीवहुसौंकरी । भाइपसहजसुभाइ ॥ २० ॥ जोकोउलेइअजानहूं । वानरनामसवेर ॥
ताकहँभोजनदिवसतिहिं । फलैनकाहूपेर ॥ २१ ॥ सुनिवानरसुग्रीवसो । आयसरनअ
कुलाइ ॥ वालिमारिताकहँविभव ॥ राजदयौरघुराइ ॥ २२ ॥ कारणवर्णावर्णकौ । ना
हिंनउहांनिदान ॥ सोसुग्रीवकीनौसषा । भूपभानुकुलभान ॥ २३ ॥ लंकविलोकीऔर
लौं । सुनहुबिभीषणसंत ॥ कहूंनपाईजानकी । चित्तनभयौअचिंत ॥ २४ ॥ ॥ **बिभी
षणउवाच** ॥ ॥ रावनकौक्रीडारहसि । इहांअसोकवनआहि ॥ तहांदीनअनिषीनत
न । ततछनलहिहौताहि ॥ २५ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ जिहिंअसोकवनजानकी । चित
वतिविपतिविसेष ॥ अबहनुमंतआएइहां । षोज्यौनगरअसेष ॥ २६ ॥ **छंदवेताल** ॥
॥ वनकोटकनकविसालविरचितविश्वकर्मबनाय ॥ चितहरनद्वारकपाटचंदनसुभसुगंधसु
भाय ॥ तरतरलकिसलयविपुलपल्लवसुषदमंजरसंग ॥ आमोदपुहपअनेकआकृतिरंगरं
गसुरंग ॥ फलअमृतस्वादअनेकफलिभुविनामितसाषभार ॥ नितकुसुमफलषटऋतुनि
रंतरउदितछबिअनपार ॥ बनिविविधकुंजसपुंडवेलीयकुसमफलअन्नेक ॥ मधुमत्तगुंज
तमधुपमालीकोकिलारवकेक ॥ अन्नेकरंगविहंगआकृतिभाषअनअनभेद ॥ करिछत्र
नाचतमोरक्रीडाअतिहिमत्तअषेद ॥ मिलिसीतमंदसुगंधमारुतसुषदछायासंग ॥ अद्वि
तीयवनअविलोकिअद्भुतउदितजहांअनंग ॥ मर्जादमंडितकनकमयशुभरचितमणिसो
पान ॥ जलअमलकुंडप्रफुल्लिजलरुहनिकरमधुकरगान ॥ नगरचितथंभसुभीतिभीतिनि
प्रगटकुंदनपंक ॥ मिलिईटमणिमयचित्रमहिमाकनकपटपर्जंक ॥ तरुसिंसिपातिहिकुंडकेत
टसघनपल्लवसाज ॥ तहांरहतिघेरीसतीसीतासभयदुष्टसमाज ॥ मैथिलीतनशसिद्वैज
कौसौजगतवंदितजानि ॥ तनषीनअतिमनकलाअकलितनिमषजुगहिप्रमानि ॥ ॥ **छंद
पधरी** ॥ ॥ राक्षसीरहतिरक्षकसरोस ॥ दुष्टासुदेंहिअनदोसदोस ॥ सोरहतिनिसदिन
सावधान ॥ अवकासनहिनविश्वासआन ॥ दुस्साध्यरूपसुनिसुनिकुदेह ॥ डरहोतडर
निधरधरजुदेह ॥ रतिबुधितमुदितराक्षसीरंड ॥ ऊढाअनूढचितचरितचंड ॥ प्रतिमाजु
सीसअन्नेकपाइ ॥ श्रुतनयनवदनकर्कससुभाइ ॥ करिदंतकोउदंताकुदाल ॥ कृष्णाप्रलं
बकूर्चाकुचाल ॥ कोठिकाउदरासिरऊर्द्धकेश ॥ बनिकृष्णअधररसनाकुवेस ॥ दारुनदुजी
हकोउदीर्घदेह ॥ साषामृगवदनीनिस्सनेह ॥ विषधरनमगरवदनीविष्यात ॥ गजमहि
षमुषीसोइदिघ्घगात ॥ मुंडितशिरकोऊहैंदुमुंड ॥ तारुसुकृष्णकोउदीर्घतुंड ॥ सुकर
कोउकूकरमुषिश्रृगाल ॥ कोउकाकतुंडचंचाकराल ॥ गजश्रवाकोऊविपरीतगात ॥ दंता
वलिनीलीदुष्षदात ॥ ज्वालामुषिकोऊतडितजीह ॥ सल्लकीरोमकोउमूषीसीह ॥दृगजर
तअनलषलविश्वद्रोह ॥ विषवचनवानिविषमयविमोह ॥ हठघूरतिलोचनपापहेत ॥ दे
षतनरनारीप्रानदेत ॥ भववदनश्रवनपदरीछभांति ॥ जानैकोराक्षसिजातिजाति ॥ अ
तिदुष्टअमंगलवाचएक ॥ अंगारभखीदुर्मुषअनेक ॥ मुषसर्पावानीश्रवनसाल ॥ गलन्ह

धबाजेविवेक ॥ आकृतिधुनिसज्जितसुरअनेक ॥ गजमत्तछकतुघूमतगहीर ॥ सोपवनवेगपर्वतसरीर ॥ अन्नेकदेससंभवउतंग ॥ प्रतिमासुजातिबहुरँगपवंग ॥ वामीविसालतनभारवाह ॥ थलगगनवेगजेअतिअथाह ॥ बनिजूथषरनिभस्मीकुवान ॥ कर्कसरवरोमादीर्घकान ॥ मदमत्तकरभगर्जतअमान ॥ वपुवृद्धिवृषभअन्नेकवान ॥ कोगनैविविधवाहनविसाल ॥ रथजलहुथलहुअतिगतिरसाल ॥ आषेटअर्थजेजियअनेक ॥ कहिकवनजुसंष्याएकएक ॥ प्रतिजामिकराक्षसजुक्तप्रेम ॥ नितरहहिंनिरंतरस्वामिनेम॥सबग्रेहकनकप्राकारसाजि ॥ विस्तारविहितरचनाविराजि ॥ प्रतिहारवृद्धजेद्वारपाल॥ कंचुकीकुब्जकायाकुटाल॥ अंतःपुरप्राविस्यौहनूआइ ॥ सबवैभवदेषतभौसुभाइ ॥ हिममयअवासशुभसत्तथान॥ विधिविधिगवाक्षजालीविधान॥ ससिसुरकांतिमणिमयप्रकास॥वातायनछविअद्भुतविसाल ॥ थिततहांप्रबालमणिनीलथंभ ॥ अन्नेकचित्ररचनाअसंभ ॥ मुक्तापुटगजरदजुतसमान ॥ पाटनिकपाटसोभाप्रमान ॥ ग्रहग्रहगवाक्षद्वारनिसुरंग ॥ पटवेणुरचितपरदाप्रसंग ॥ प्रतिसौधपताकाध्वजापांति ॥ कनकमयकलसमणिदीपकांति ॥ आसुरीसुरीवनिताअनेक ॥ किन्नरीनरीविदूषाविवेक ॥ पन्नगीनगीप्रतिमाअनूप ॥ पछिनीजच्छिअच्छीस्वरूप ॥ गंधर्वदेवकन्यासगान ॥ तंत्रीमृदंगशुभमानतांन ॥ प्रौढाकोउमध्यामुग्धपेषि ॥ रतिरमितअमितविव्हलविसेषि ॥ थितसेजविवसतनठामठाम ॥ भारथरथिजीतेमनहुभाम ॥ इहांमध्यग्रेहहनुमंतआइ ॥ सुषसयनजहांरावनसुभाइ ॥ यौंलष्यौसेजरावनअगूढ॥ सिरकाठचिताजनुमृतकसूझ ॥ मयसुतासतीसीद्रस्यमान ॥ प्रेतनिकटवर्तिनिप्रमान ॥ इहिंविधिनिद्रागतदेषियाहि ॥ चषमूंदिसुअसमयफिर्यौचाहि ॥ इत्यादिठौरषोजेअसेष ॥ वामानरामपाईविसेष ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावनविभवविलासविधि । पावैकोकविपार ॥ तातेकछुकछुहैकह्यौ ॥ सुन्यौंजुमतिअनुसार ॥ १६ ॥ ॥ अथमारुतिबिभीषणमिलन ॥ ॥ मारुतिडोलतलंकमहँ । गयौबिभीषणग्रेह ॥ तबदेवालयदेषितहां । सोमनभौसंदेह ॥ १७ ॥ इहिंग्रहअंगनआगमन । भौमारुतिसतभाइ ॥ तुलसीघनमंजरतरल । अवलोकेतहाँआइ ॥ १८ ॥ सदनजुसुंदरसाधको । यहपायौअनयास ॥ विधिकृतरामप्रतापवस । बाढ्यौउरविश्वास ॥ १९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांजग्यौविभीषणअनाचिंत ॥ उच्चाररामहरिहरिअनंत ॥ धरविप्ररूपहनुमंतधीर ॥ विचआँगनठाढेसंतवीर ॥ तबदेषिविभीषनाविप्रतास ॥ सोआनिनिकटमनसावकास ॥ कीयब्रह्मजानितहांनमस्कार ॥ विधिजुक्तभएपूछतविचार ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ इहिंपुरीबसतराक्षसकुचेत । तहांकहियेआवनकौनहेत ॥ कैआवनभौममभाग्यकाज ॥ कोउउदितपुराकृतभएआज ॥ सावकसुभाइबढिदुहुनिसंग ॥ आनंदअश्रुरोमांचअंग ॥ इहिंठौरहनूजिहिहेतआय ॥ सबकहीकथाकारनसुनाय ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥तबलगेबिभीषनकहततास॥विधिसुनहुहमारीरहनिवास॥ रदसंकटविचिरसनानिवास ॥ त्यौंरहतसदाहमसहितत्रास ॥ सबजानतकपितुमप्रभुसुभाइ ॥ अन्नाथकोउजोसरनआइ ॥ करिताकहँअपनोजनकृपाल ॥ देषैसुदृष्टिक्यौंहूंदयाल ॥ दारुनसुभावनिर्दयनिलाज ॥ राक्षसीजोनितामसीराज ॥ आसुरअज्ञानअंतरअ

चेत ॥ हमसौंजौआवैकिहूंहेत ॥ अनाथनाथकहियतअनंत ॥ सोरीझहिंक्यौंहनुमंत संत ॥ ॥ **मारुतिरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सरनाईपंजरविजय । रामचंद्ररघुराइ ॥ कपि सुग्रीवहूसौंकरी । भाइपसहजसुभाइ ॥ २० ॥ जोकोउलेइअजानहूं । वानरनामसवेर ॥ ताकहँभोजनादिवसतिहिं । फलैनकाहूपेर ॥ २१ ॥ सुनिवानरसुग्रीवसो । आयसरनअकुलाइ ॥ वालिमारिताकहँविभव ॥ राजदयौरघुराइ ॥ २२ ॥ कारणवर्णावर्णकौ । नाहिनउहांनिदान ॥ सोसुग्रीवकीनौसषा । भूपभानुकुलभान ॥ २३ ॥ लंकविलोकीओरलौं । सुनहुबिभीषणसंत ॥ कहूंनपाईजानकी । चित्तनभयौअचिंत ॥ २४ ॥ ॥ **विभीषणउवाच** ॥ ॥ रावनकौक्रीडारहसि । इहांअसोकवनआहि ॥ तहांदीनअनिषीनतन । ततछनलहिहौताहि ॥ २५ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ जिहिंअसोकवनजानकी । चितवतिविपतिविसेष ॥ अबहनुमंतआएइहां । षोज्यौनगरअसेष ॥ २६ ॥ **छंदवेताल** ॥ ॥ वनकोटकनकविसालविरचितविश्वकर्मबनाय ॥ चितहरनद्वारकपाटचंदनसुभसुगंधसुभाय ॥ तरतरलकिसलयविपुलपल्लवसुषदमंजरसंग ॥ आमोदपुहपअनेकआकृतिरंगरंगसुरंग ॥ फलअमृतस्वादअनेकफलिभुविनामितसाषभार ॥ नितकुसुमफलषटऋतुनिरंतरउदितछबिअनपार ॥ बनिविविधकुंजसपुंडवेलीयकुसमफलअनेक ॥ मधुमत्तगुंजतमधुपमालीकोकिलारवकेक ॥ अनेकरंगविहंगआकृतिभाषअनअनभेद ॥ करिछत्रनाचतमोरक्रीडाअतिहिमत्तअषेद ॥ मिलिसीतमंदसुगंधमारुतसुषदछायासंग ॥ अद्वितीयवनअविलोकिअद्भुतउदितजहांअनंग ॥ मर्जादमंडितकनकमयशुभरचितमणिसोपान ॥ जलअमलकुंडप्रफुल्लिजलरुहनिकरमधुकरगान ॥ नगरचितथंभसुभीतिभीतिनिप्रगटकुंदनपंक ॥ मिलिईंटमणिमयचित्रमहिमाकनकपटपर्जंक ॥ तरुसिंसिपातिहिकुंडकेतटसघनपल्लवसाज ॥ तहांरहतिघेरीसतीसीतासभयदुष्टसमाज ॥ मैथिलीतनशंसिद्वैजकौसौजगतवंदितजानि ॥ तनषीनअतिमनकलाअकलितनिमषजुगहिप्रमानि ॥ ॥ **छंद पधरी** ॥ ॥ राक्षसीरहतिरक्षकसरोस ॥ दुष्टासुदैहिअनदोसदोस ॥ सोरहतिनिसदिन सावधान ॥ अवकासनहिनविश्वासआन ॥ दुस्साध्यरूपसुनिसुनिकुदेह ॥ डरहोतडरनिधरधरजुदेह ॥ रतिबुधितमुदितराक्षसीरंड ॥ ऊढाअनूढाचितचरितचंड ॥ प्रतिमाजुसीसअनेकपाइ ॥ श्रुतनयनवदनकर्कससुभाइ ॥ करिदंतकोउदंताकुदाल ॥ कृष्णाप्रलंबकूर्चाकुचाल ॥ कोठिकाउदरासिरऊर्द्धकेश ॥ बनिकृष्णअधररसनाकुवेस ॥ दारुनदुजीहकोउदीर्घदेह ॥ साषामृगवदनीनिस्सनेह ॥ विषधरनमगरवदनीविष्यात ॥ गजमहिषमुषीसोइदिघ्घगात ॥ मुंडितशिरकोऊहैदुमुंड ॥ तारुसुकृष्णकोउदीर्घतुंड ॥ सुकरकोउकूकरमुषिश्रृगाल ॥ कोउकाकतुंडचंचाकराल ॥ गजश्रवाकोऊविपरीतगात ॥ दंतावलिनीलीदुष्षदात ॥ ज्वालामुषिकोऊतडितजीह ॥ सल्लकीरोमकोउमूषीसीह ॥ दृगजरतअनलषलविश्वद्रोह ॥ विषवचनवानिविषमयविमोह ॥ हठघूरतिलोचनपापहेत ॥ देषतनरनारीप्रानदेत ॥ भववदनश्रवनपदरीछभांति ॥ जानैकोराक्षसिजातिजाति ॥ अतिदुष्टअमंगलवाचएक ॥ अंगारभखीदुर्मुषअनेक ॥ मुषसर्पावानीश्रवनसाल ॥ गलन्ह

स्वाकोऊकूपगाल ॥ नषसुपानिर्दयकूपनैन ॥ कचकपिलअरुणनेत्राकुबैन ॥ गजकरभ चरनकोउसिंघगाउ ॥ प्रतिमाअनेकअन्नेकपाउ ॥ आकृतिअनेकपूंछाअधीर ॥ साकार चर्मगोधासरीर ॥ पापिनीरुधिरकोउसुरापान ॥ वसमांसभषीवैभच्छवान ॥ इत्यादिअ सुरिकारकअनीति ॥ भवभूतहोतअविलोकिभीति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इनकेसंकटयौंरह ति । ज्यौंदंतनिमहजीह ॥ कछुअवलंबनजानकी । देहसहतिदुषदीह ॥ ॥ मारुतिअ शोकागमनं ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहाँअशोकवनहनुमतआयो ॥ छननारहतम नसंभ्रमछायौ ॥ तहांसिंसिपतरुतररहसीता ॥ भामिनिदेषीअतिहिसभीता ॥ ऐसीरा मप्रीयाअबरेषी ॥ दीनमलीनजातिनहिदेषी ॥ वनपटवसनमलिनइकवेनी ॥ सयनभू मिसहिपरिभवश्रेनी ॥ मनहुषीनगंगाऋतुग्रीषम ॥ सतीसचिंतनाथविनसंगम ॥ नयौ वियोगअनलकंचनतन ॥ छीनदेहबढिवानछनहिछन ॥ शोकशलाकामनसूलाकत ॥ प्रेमप्रतीतिप्रीतिपरिपाकत ॥ कष्टकसौटीरेषाकीजत ॥ छीजतदेहनसोभाछीजत ॥ क ल्पलताज्यौंबिछुरिकलपतरु ॥ मनमलीनमुरझानैमंजरु ॥ वेदवानिज्यौंअर्थविपर्जय ॥ श्रीहरिबिछुरिमहाचिंतामय ॥ वनगिरिजाजनुशिवहिवियोगनि ॥ सचिबिछुरीइंद्रहिअ विजोगनि ॥सावित्रीज्यौंछुटिविधिसंगहि॥ आरतरतिमनुबिछुरिअनंगहि ॥ रविहिबिछौ हीजैसीरन्न॥छनछनहोतदेहज्योछिन्न॥निसचलचित्तसुसीलअनिंदा॥बिछुरीजनुजालंध रवृंदा ॥ मनमुरझातिउसासनिमूकति ॥ शोकपंकनलिनीसीसूकति ॥ तरफरातिसोचाति जियतैसै॥ जलतेबिछुरीसफरीजैसैं॥घोरादुष्टराक्षसिनिघेरी॥हिरिनीमनहुकिरातिनिघेरी ॥ सुरभीबालसिंघनीसंकट ॥ रहतरामइकरामलगीरट ॥ ग्रसीबुद्धिमानहुंचिंताचय ॥ मिलि भयहोतकीटभृंगीमय॥ कलाद्वैजससिसीअविलोकि॥ राहत्रियनिमानहुमिलिरोकी ॥ मान हुजीवजोतिवसमाया ॥ छईसुविद्यकुविद्याछाया ॥ कनकलताअतितरुनसकोमल ॥ मन हुआवरितकंटकमंडल ॥ रहैग्रहनिसंकज्यौंरोहानि ॥ छीजतदेहविवसभइछोहनि ॥ लिप्तपं कमानहुमुक्ताफल॥ कनकसलाकलपेटीकज्जल॥ केतकिसीकंटकबसकीनी ॥ मनिमानहुंअ हिगनआधीनी॥डिगैनावमारुतबसडोलै ॥वसत्रिषचातकपियापियबोलै॥ रामरामहैएक लगीरट ॥ सीतापरीदुसहअतिसंकट ॥ ऐसीरामप्रीयाअविलोकी ॥ सीततापघनसहति ससोकी॥ ॥दोहा॥ ॥देषिदसावैदेहिकी । त्राहित्राहिकरित्रास ॥ मारुतिअतिहिविषा दमन । सोचतमोचतस्वास ॥ २८ ॥ तरुसिंसिपपल्लवतरल । साषासघनसमान ॥ ति नमहदुरिबैठ्यौतबहि । हनूमानबलवान ॥ २९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मारुतितरुपत्रा वरितमांहि ॥ निसिचारसुकाहूलष्योनाहि ॥ निसिअर्धबजेजिततितनिसान ॥ इहँजग्यौ दुष्टरावनअज्ञान ॥ तिनसिथिलविवसरतिसहिरत्त ॥ अतिसयअसंकमदपानमत्त ॥ ॥ अथरावनअशोकवनआगमनं ॥ ॥ कहिसियासियाषटचारिकंध॥ अंतरअधीरआयौ मदंध ॥ नूपुरनिहोतझंकारनाद ॥ प्रतिसब्दपूरिहिममयप्रसाद ॥ सतजूथसुभगवनिता निसंग ॥ रसरूपरत्तअन्नेकरंग ॥दीयसीयाअंगसोभादुराइ ॥ अधवदनपरामुषभइसुभाइ ॥ रावणवाक्यं ॥ ॥ मुहिदेषकहाकृतमनमलीन ॥ लैकरैअंगहाअंगलीन ॥ ममब

चनसुनहुसीतासमोह ॥ कहारामकाजएतौअदोह ॥ आकासवासदेषैनकोइ ॥ संपेषैवातु
लहोइसोइ ॥ कृतघनकुदांनिकन्याकुंकत॥अपैसंसर्वतिहिछलैअंत॥मुंडाजटीनिकोमहामि
त्र ॥ चाहैअनाथरीझैचरित्र ॥ दूषैजुतुमहितिहिंलोकदेह ॥ अंतरउदासउहिचरितएह ॥
निर्गुणअनाथलीजैननाम ॥ ठिकनाहिनजाकोठौरठाम ॥ जाकैनमातकोऊपिताजान ॥
नितषोजकरतसुनिमुनिनिदान ॥ उद्यानवाससंततअवश्य ॥ सादृश्यकिहूंकाहूअदृश्य ॥
तुमहूंधोकरिहौकहाताहि ॥ वहविषयरहितनिस्नेहआहि ॥ निस्नेहसदातुमसौंनिरास ॥
तुमकरतइतौहेततास ॥ निर्गुणवहपइयतकहूंनाहि ॥ मुनिरहतषोजिभुवचक्रमांहि ॥ तव
काजजतनमैकीयअनेक ॥ आनीमैतुहिभुजबलहिएक ॥ अजहुनसोतेरैषोजआइ ॥ सो
हीनसक्तिकातरसुभाइ ॥ निश्चैननराधमबुद्धिनाँहि ॥ हितनाहिनतोसोचित्तमाँहि ॥ नि
स्कामरामनिर्गतसनेह ॥ उहिकाजैआग्रहकहौएह ॥ हूंआहिकामकिंकरसहेत ॥ तिहिंर
हतसदातोमाँझचेत ॥ मनतजहुविकल्पनभजहुमोहि ॥ तातैमनवंछितदैंउतोहि ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ गंधर्वीजक्षीनरी । सुरकन्यासुरगान ॥ करिहूंतवपरिचारिणी । मानहुवच
नप्रमान ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनिसुनिरावनबचनसीय । बोलीत्रिणदेवीच ॥
मंदिरसूनैहरीमुहि । रेनिसिचारीनीच ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विनुप्रका
सरविबिंबतमनभुवचक्रहिटरही ॥ विनुप्रकासरविबिंबनहिनदेवलउघ्घरहीं ॥ विनुप्रकास
रविबिंबमातबछानगउमिलि ॥ विनुप्रकाशरविबिंबउघरिकंजनउड्डहिअलि ॥तवबचनरच
नदशकंठरे, ममनाचित्तडुल्लइअमल ॥ षद्योतजोतिलंकेशषल, कहूंनपरफुल्लहिकमल॥१॥
॥ रेशृगालशशश्वानसिंघबलिचहतअधमषठ ॥ रुद्रशीसशशिरेषहरनविटक्रोडकरत
हठ ॥ धरनीतलधनुरेषजतनकिहुंलंघितजाकी ॥ रणसंगमसरधारतिष्षसहिहोंक्योंता
की ॥ अपराधीतूंअवधेसकौ, रेवराकनिसचरनिलज ॥ सम्मूलनाशव्हैहैसकुल, अबन
टचहुभूतेसअज ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हरिलायोमोकहँहँसुन्यग्रेह ॥ अनउचित
चौक्तकर्योएह ॥ रेराक्षसपरत्रीयापहारि ॥ गतनहिअधमधिक्कारगारि ॥ याकोंफलहैअ
बनिकटआइ ॥ घटभर्योपापपूरनअघाइ ॥ मूढत्वरामतुमनुजमानि ॥ जमलोकचलाऊ
भएजानि ॥ सरपंजरवाजलबद्धसेत ॥ करिपंथउदधिरघुवंसकेत ॥ सामुद्रसोषिकिंवाअसे
ष ॥ वरवीररामआगमविसेष ॥ असुराधमसानुजरामआइ ॥ सोवंसनाशकरिवौसुभाइ॥
बलउलटिलंकलैउदधिबोरि ॥ जैहैमुहिलैकैंसमरजोरि ॥ उठिजाहिदुष्टइहांतेअज्ञान ॥ नि
जदोषनाशव्हैहौनिदान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ सामादिकउपचारसब । क
रिथाक्योलंकेश ॥ काढ्योषग्गदुधारतहां । लग्योग्रहमकरकेस ॥ ३ ॥ देषिसमयमंदोद
री । आइंतहांअकुलाय ॥ जोगउपद्रवजानिकै । पकरिरहीपीयपाय ॥ ॥ मंदोदरिवा
क्यं ॥ ॥ दग्धभईयहविरहदव । आँषिनिमहजीयआइ ॥ दैदैआपकिअतिदुसह । कैम
रिहैअकुलाइ ॥ ५ ॥ प्रगटसुरासुरपुत्रिका । नगीपन्नगीनारि ॥ गंधर्वीजक्षीजुग्रह । अ
षिलपियतिजलवारि ॥ ६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विरहानिविषयविरत्तवहतिजीयएकपति
व्रत ॥ दीपसिषासीदेहरहीव्हैषीनरामरत ॥ रोषानलउठिरोमरोमहठिपरजरिमरिहै ॥

प्रलयकालसीप्रगटकोपिकुलनासहिकरिहै ॥ प्रीयछांडिष्यालयाकोपिया, करग्रहिप्रणतिग्र नेककीय ॥ भर्तहिंप्रबोधिधरिग्रंसभुज, मिलिगवनीमंदोदरीय ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **छंदद्विग्रक्षरी** ॥ ॥ सीताविषमयवचनसुनाए ॥ भयौंषिसांनोमननहिभाए ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ सबहिराक्षसिनिकह्यौसुनाई ॥ तहांमासद्वैग्रवधिबताई ॥ सर्वउपाइ करहुसमझावहु ॥ ज्यौंमानैतिहिभांतिमनाबहु ॥ तर्जनवामनुझारिहुतांई ॥ कहिग्रसुहा तीतथासुहाई ॥ समझिग्रवधिमैदीनीसीता ॥ भजैमोहिनहींजपैग्रभीता ॥ कछुदिन ग्रवधिप्रतिक्षाकरिहौं ॥ टेकग्रापनीतेनहिहरिहौं ॥ मान्यौनहींवचनज्यौंमेरौ ॥ करौ भक्षतौसीताकेरौ ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ यौंकहिदससिरमंदिरग्रायो ॥ दह्यौ हृदयसियवचनदुषायो ॥ ॥ **वृंदाराक्षसीवाक्यं** ॥ ॥ इकराक्षसिसीतहिउप देसा ॥ विविधवनावातिवचनविषेसा ॥ सफलकरहुजोबनतनसोभा ॥ लंकापतित वरूपहिलोभा ॥ छीजतिजोवनज्यौघनछांही ॥ नीरकरंजुलिगतथिरनांही ॥ दुस हवचनलागेवैदेही ॥ तबहिदयौफिरिउत्तरतेही ॥ ॥ **सीतावाक्यं** ॥ ॥ जोकोउछनपैमोहिजिवावहु ॥ निलजवचननहिफेरिसुनाबहु ॥ देवहव्यनहिस्वानहि दीजै ॥ कबहूंयहग्रभिलाषनकीजै ॥ कहुउचिष्टहुतभुकलैहोमन ॥ मालतुरासिपिं डालसमर्पन ॥ द्विजग्रभक्षज्यौंभषैस्वदेही ॥ विमुषरामतौहोइवैदेही ॥ डिगसु मेरजौब्रह्मांडडोलै ॥ बलवसजौंविधिमिथ्यावोलै ॥ हितजुतसिंघघासज्यौंचरही ॥ तोग्रधर्मसीताग्रनुसरही ॥ पछिमगंगप्रवाहप्रनीता ॥ सीलधर्मतौछोडैसीता ॥ वृद्ध भईतुमसमयविचारहु ॥ यहग्रनर्थक्यौंमुषहिउचारहु ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ कीनोंस यनजायदशकंधर ॥ मणिमयपांलिकहिममयमंदिर ॥ दारुणस्वप्नदशाननदेष्यौ ॥ वान रग्रायौलंकविशेष्यौ ॥ कपितिहिमहाउपद्रवकीनै ॥ दुसहरावनहिपरिभवदीनै ॥ सीत हितेराक्षसिसमझावति ॥ दारुणदंतदिषाइडरावति ॥ कोऊवोलतिवचनकराला ॥ हस तितालदैपीवतिहाला ॥ दुस्सहलोचनग्ररुणदिषावति ॥ गर्जतिकोउकर्कसस्वरगावति ॥ काढिषडगजमदाढभयानक ॥ ग्रावतिमनहुचहूंदिसिग्रंतक ॥ करिकरिचरितग्रनेक कुरूपा ॥ संषिनिहस्तिनिजेनषसूपा ॥ त्रिजटानामविभीषनपुत्री ॥ विष्णुभक्तिवहपरम विचित्री ॥ रहतिजानकीनिकटनिरंतर ॥ दिननिसिदुष्षवटावतिदुस्तर ॥ ॥ **त्रिजटावाक्यं** ॥ ॥ बोलीत्रिजटावचनविसेषा ॥ दारुणस्वप्ननिसामैंदेषा ॥ ममवचसुनहुराक्षसी माता ॥ तुमहिग्रंतयहव्हैहैत्राता ॥ ग्रनुजसहितग्रारुहऐरावत ॥ इहिंगढरामविलोके ग्रावत ॥ स्वामिग्रंकग्रारोपितसीता ॥ यहमैंदेषीपरमग्रभीता ॥ दग्धालंकाकृष्णादे षी ॥ वधरावणकौसकुलविसेषी ॥ रावणतैलाभ्यंगादिगंबर ॥ विहरतगोमयनदजुतसुर वर ॥ चलदलपल्लवमालाचंचल ॥ तिलहैचावतमुष्टाकरतल ॥ दससिरमुंडितमुंडफटे द्रिग ॥ महिषारूढचलेदक्षनमग ॥ पुरीविभीषणलंकापाई ॥ सानुजरघुवरभएसहाई ॥ ग्रनरुंष्याकपिसेन्याग्राई ॥ दशदिशिफिरिरघुनाथदुहाई ॥ त्रिजटास्वप्नसुनतउरत्रा सी ॥ सोइरहीनिसचरीउदासी ॥ मुषनिस्वासनयनजलमोचति ॥ सियासभीतमनहि

मनसोचति ॥ पुनिकोउमरनउपाइनपावति ॥ तातेंबुद्धिवितर्कवढावति ॥ विषभक्षनकिं वाउद्वंधन ॥ सस्त्रघातजलअनलसंजोजन ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ हेसिंसिपाममत्रो रनिहारौ ॥ हैपरकेहितजनमातिहारौ ॥ काठमाझहैअग्निकहावत ॥ वेदहुलोकसुरसत्यबता वत ॥ आगिडारिद्दीजैयहअवसर ॥ कहतिनिहोरिनिहोरिजोरिकर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हनूमंतबुद्धिवंततहँ । हितजुतसमयनिहारि ॥ अवसरजानिजुआप नै । दीनीमुदरीडारि ॥ ७ ॥ करधरिसीतामुद्रिका । आतुरलईउठाइ ॥ हैप्रभुयहकैसी अगनि । सीयरीलगतिसुभाइ ॥ ८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ षनकनिहारिसंमारि जुदेषी ॥ यहमणिमयमुद्राअवरेषी ॥ रामनामअंकितअतिसुंदर ॥ धरिउरछातीकांपति धरधर ॥ स्वर्णरतनमयविहितसवारी ॥ रामसदाकरपल्लवधारी ॥ यहइहिंठौरहेतकिहिं आई ॥ सोचतिअतिमतिसंभ्रमछाई ॥ दृष्टिऊर्धतबतरुतनदेष्यौ ॥ वानरबैठ्यौडारवि शेष्यौ ॥ इहांजानकीअतिअकुलानी ॥ वानरदेषिविषमकहिवानी ॥ रेकपिहैआयौतूं रावन ॥ पापीपापप्रकाशिअपावन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ यहसुनिउतरिवृक्षतेंआयौ ॥ करेप्रणामजनमफलपायौ ॥ रामदूतहूंमारुतिवानर ॥ उपज्यौसाधअंजनीकेउर ॥ ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ कपिसौंनृपनिमित्रताकैसी ॥ असंभावयहबातअनैसी ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ मुहिआपनौकिंकरजानहुमन ॥ कहुंजननीसुनियैजोकारन ॥ कपि राजाहोबालिकिष्किंधा ॥ अनुजसुग्रीवहिभौअनसंधा ॥ देसनिकालिसुग्रीवहिदीनौ ॥ व्हैगयौबित्तचित्तबलहीनौ ॥ यहगिरिमूकसरनतबआयौ ॥ पैकारनजुतआश्रमपायौ ॥ ब्रह्मआदिरघुवंसबषान्यौ ॥ जगतप्रसिद्धपुरानप्रमान्यौ ॥ रघुवंसीभौदशरथराजा ॥ ॥ विमलछत्रपुरअवधिविराजा ॥ बचनकपटत्रीयनृपतिविनासा ॥ सानुजरामभएवह वासा ॥ इहांरावनउपजीमतिएही ॥ वसतपंचवटहरिवैदेही ॥ अवधेसरगिरिमूकनि आए ॥ तापसवेषविरहतनताए ॥ इहांसुग्रीवसरनजबआयौ ॥ लैकरग्राहिप्रभुकंठल गायौ ॥ तहांभईरविसुतमित्राई ॥ भाग्यउदयरघुवरकहिभाई ॥ सरनविजयपंजरत्र तस्वामी ॥ जीवचराचरअंतरजामी ॥ निग्रहबालिपरमपददीनौ ॥ कपिसुग्रीवहिराजा कीनौ ॥ कपिपतिपैजकरीयहकहिकहि ॥ मैथिलसुतासोधिआनहिमहि ॥ प्रबलकी सचहुंओरपठाए ॥ धरिसिरवचनदिगंतानिधाए ॥ अंगदहैयादिसकहँआए ॥ द्वादश सुभटसंगसमुदाए ॥ दोहा ॥ ॥ भाग्यउदयमेरेभए । मातपुराकृतमूल ॥ दुर्लभ पायौतवदरस । सबसंसयमिटिशूल ॥ १ ॥ इत्यादिकप्रत्ययदए । सियमानेविश्वा स ॥ आउहनूचिरजीवअब । देवसिरोमाणिदास ॥ ॥ सीतामुदरीप्रतिवाक्यं ॥ मनसंकल्पविकल्पमति । विभ्रमपूछतिबात ॥ सानुजदशरथसुवनकी । कहमुद्रेकुश लात ॥ ११ ॥ मूकभावहैधातुमय । जडमुद्रानिर्जीव ॥ क्रमयहलछनविरहकौ । प्रकृतिटरतविनुपीय ॥ १२ ॥ हनुमतबोलतिनाहिंयह । कछूअनिष्टैआहि ॥ तातें होतअधीरचित । दुस्सहउपजतदाहि ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ काहिपूछतितुममु द्रिका । होतिमौनइहिंहेत ॥ नामविपर्जयआपनै । तिहिंउत्तरनहिदेत ॥ १४ ॥ कर

पल्लवमुद्राकठिन । जोहीतबसंजोग ॥ सोयहकरआवतिसुगम । जननीतुमहिविजोग ॥ १५ ॥ मुदरीकंचनरतनमय । सोपैंगढीसुनार ॥ विरचीकरकंकनविरह । पुनरपिजनमप्रकार ॥ १६ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ तहँहनुमंतहिकहतजुसीता ॥ भइरावनकेवचनसभीता ॥ निठुरभएमोप्रतिरघुराइ ॥ भाग्यजोगसुनिहनुमंतभाई ॥ कबहुनझेरइतौप्रभुकीना ॥ देष्योजबैदुषितकोउदीना ॥ दुषप्रहलादहिथंभविदारा ॥ तहांभएनरहरिअवतारा ॥ प्रानकष्टगजराजहिपाए ॥ आतुरगरुडछांडितवआए ॥ सुरनिसहायहास्यतनसांध्यौ ॥ इंद्रचाडबलिराजाबांध्यौ ॥ परमसचिंतरुद्रजबपायौ ॥ वृंदाडहकिसुरूपबनायौ ॥ वेदविगतजबचित्तविचारी ॥ मीनरूपतहँभएमुरारी ॥ रतननिकासनसुरनिविचास्यौ ॥ धरिगिरपृष्टिकमठतनधास्यौ ॥ रसाअसेषहरीजबनिसिचर ॥ करुणासिंधुतबहिभएशूकर॥ हयग्रीवपुनिनिगमहिराए॥ पैंसोउमारिविधिहिपहुंचाए ॥ कोटिकलपकीविरदकहानी ॥ ऐसीकतिकगनौसुधिआनी ॥ उनहिंअगम्यनहींकछुअनकर ॥ वेदपुरानकहतयौंविस्तर ॥ किहुंअदृष्टमेरीसुनिहनुमत ॥ जानतहीऔंघतहैजागत ॥ तनममदसाछिपीनहिंतोतें ॥ मुषकारिकछुकाहिजातनमोतें ॥ तबजेहुतेप्रानतनत्राता ॥ तेइअबहोतदुसहदुषदाता ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ कंटककपूरभएकौतुकभयानकसेहारअहिभएअंधियारभयोआरसौं ॥ नाहरसेनूपुरपहारसेपहरभएसेजसमसानभएभूषनसुभारसौं ॥ आकसोतंबोरसिरवाइसीसुवाससबैचीरभएकौंछीसेअंजनअंगारसौं ॥ विपतिदुसहऐसीकपिअवधेसविनाप्रानभएपाहुनेसेंप्रेमभौंप्रहारसौं ॥ १ ॥ सषीकौनवसकाहूपुनीतपिसाचीहूंकौंपंषहूनमेरैजिहिआपनोउडावति ॥ वृद्धात्रीयआवैसुतोधीरजधरावैजोपैंधीरजहूंहोतकहाएतोदुषपावती ॥ देहभयौसूनौदिनरैनजरैदूनौलगीरसनाहैएकरटरामरामगावती ॥ उद्यमसोथाकेरहेप्रानआकवाकेगईनिद्रातजिगांउजोसुपनहुमिलावती ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सनमुषभएपरामुषसोई ॥ रामवियोगकहूंकिहिरोई ॥ वनतरुकिसलयनयनसूलवर ॥ कालरातिसीरातिभयंकर ॥ वहतसमीरगरलमनुविषधर ॥ तप्ततैलसेसघनबुंदसर ॥ विलपतचातकदुषीत्रिषावस ॥ दुसहघाउछोलतसेदिसिदस ॥ कुहूकुहूकलकंठपुकारत ॥ तीषनशब्ददुसारनिमारत ॥ मत्तमयूराविविधविहंगम ॥ सबदिसिहोतदुषदरवसंगम ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाननतुमनीकेजनानि । रामपराक्रमरीति ॥ सोधविनाउनहूंदुसह । वासुरइतेवितीति ॥ १७ ॥ विषमदसारघुवरविरह । दुषवसभएविदेह ॥ मानहुंकीटजुभृंगमय । व्हैहैंनिस्संदेह ॥ १८ ॥ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ निरषतसोगुननयनसब्दअनवाधिरसुनतसम ॥ कहतकछुकअनमूकगमनमगआहिसजंगम ॥ समझतजपैसचेतगंधग्रहिलेतघ्रानगुन ॥ स्वादमधुरकटुरसनितुचातपसीतभेतन ॥ इंद्रियनिप्रकृतिमिलिअनुसरन, मोहनइच्छाराममन ॥ तबविरहगतागतमिहिरगति, छक्रतुमत्ततिहिंजातछन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अज्ञानमातभयौविलंबएह ॥ सुधिलहीकछुनतवनिस्संदेह ॥ लैजाउंतुमहिजलबोरिलंक ॥ कछुनहिनमोहिलंकेससंक ॥ आज्ञानराममुहिमातएह ॥ सोचतजीययातेनिःसंदेह ॥ ॥

॥ मारुतिरुवाच ॥ मातायहवायकसत्यमानि ॥ अबमिलिहैंराघववेगिआनि ॥ संमिल असंख्यजूथपसुजूथ ॥ वरवीरधीरवानरवरूथ ॥ उत्थापाहिलंकाएकएक ॥ ऐसेअभंग कपिमिलिअनेक ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ प्रतिमाबलपौरुषतोहिप्रमान ॥ तनसमता जुद्धनजातुधान ॥ संदेहहोतममचित्तसूल ॥ तुमउनहिकहाप्रतिजुद्धतूल ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ महदेहभयौतबहनूमान ॥ प्रतिमासुमेरुपर्वतसमान ॥ तिहिदेषिचराचरहो तभीति ॥ पैंभईचित्तसीतहिप्रतीति ॥ ॥ सीताउवाच ॥ ॥ जसजुक्तपुत्रतूंचिरंजीव ॥ दृढभक्तिरामवल्लभसदेव ॥ सप्रन्नसीतदीनीअसीस ॥ सौंविजयजाहुप्रभुचरनकीस ॥ दिनदसादेषितुमजातदूत ॥ प्रभुअग्रसबैकहिवोसुपूत ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ अब भयोजननितुवदरसआज ॥ कृतकृत्यभयोहूंसरेकाज ॥ प्रभुकारिजतौलौंछुधाप्यास ॥ व्यापीनमोहिउपज्यौविसास ॥ इहांउपज्योंजीयसंतोषआइ ॥ मोइबाधतहैआतिछुधामाइ ॥ ॥ सीताउवाच ॥ ॥ सुनिपुत्रहनूतबकह्योसीत ॥ भुवगिरेसुफलभुक्तहुअभीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सजितनुलहांसमयअनुसारा ॥ वनअसोक हनुमानविहारा ॥ द्रुमधकधूनिफलनिभुवडारत ॥ अमृतस्वादतेइविविधअहारत ॥ उर्ध मूलअधसाषाआनत ॥ भुवतृणबालकेलिज्यौंभानत ॥ मत्तद्विरदज्यौंलतामरोरत ॥ ता नतएकएकगहितोरत ॥ वनविध्वंसकस्यौसबवानर ॥ आयौजंबुमालितिहिंअवसर ॥ लो हस्तंभकाढिकपिलीनौ ॥ केलिहींकरछटिकासौंकीनौ ॥ मूंढहीमूंढसुमालीमास्यौ ॥ पस्यौ जंबुगतप्रानपुकास्यौ ॥ इहांआतुरतेनिसिचरिआई ॥ सीतहिघेरेरहतिसदाई ॥ दारुन तहांएककपिदेष्यौ ॥ बागविध्वंसनकस्यौविसेष्यौ ॥ ॥ निसिचरीवाक्यं ॥ ॥ सीत हितिनराक्षसिनिसुनायौ ॥ यहकपिकौनकहांतेंआयौ ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ विविध कपटमायाविस्तारत ॥ राक्षसरूपअनेकविहारत ॥ जोकोउहैयहसोतुमजानत ॥ प्रगट गुपतअपनैपहिचानत ॥ जननीहूंतोयाहिनजानौ ॥ पूछौवाहितुमहिपहिचानौ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ घरकतिछातीराक्षसिधाई ॥ अतिसभीतरावनपँहँआई ॥ ॥ राक्ष सीवाक्यं ॥ ॥ वानरबागअसोकविगास्यौ ॥ मालीजंबुपछास्योमास्यौ ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ यहसुनितहांदशाननआयौ ॥ अरुननयनमनअतिअकुलायौ ॥ प्रभुप्र चारिसुभटजेप्रेरे ॥ वानरतेसबमारिनिबेरे ॥ पठवेदशशिरजिनहिंपचारे ॥ मारुतितिन हीषेलहिमारे ॥ इहांसातसेनापतिआए ॥ सोउहनुमंतससेननसाए ॥ पांचमंत्रिसुतसूर जुसमहर ॥ षेलहिमारिपछारेषेचर ॥ अक्षकुमारइतेमहआयौ ॥ अगणितराकसलैअ कुलायौ ॥ भारथअक्षकुमारनभागै ॥ इहांअभंगपवनसुतआगै ॥ भिरेपरसपरिसमहरदू भर ॥ अक्षकुंवरझूंझ्यौइहिंअवसर ॥ राक्षसहनूअनेकसंघारे ॥ महाप्रमानसुथंभनिमारे ॥ दारुनअरुनवदनकपिदीसै ॥ परमभयानकदंतनिपीसै ॥ षेतमाझठाढौषलषेकर ॥ चा बैबांहरोसचढिबनचर ॥ राक्षसअसीसहसरनमारे ॥ पुनिहूदुष्टअनेकपचारे ॥ अतिहिस रोषइंद्रजितआयौ ॥ लोहितनयनछोहउरछायौ ॥ भ्रातावधसुनिमहीभयंकर ॥ सीसनवा योंआगैदशशिर ॥ रावणउवाच ॥ करिअतिक्रोधकह्योतबकंटक ॥ इंद्रजीततुमजा

हुअचानक ॥ बांधिलेहुमारहुजनिवानर ॥ करहिषोजयहकानकहौंकर ॥ कविरुवाच ॥
दुर्जनइंद्रजीतजबदेष्यौ ॥ वनचरमनआनंदविशेष्यौ ॥ विषमप्रहारथंभहतवानर ॥
सारथिरथहयभंजेसमहर ॥ सुतकंटककपिझुझतसमसर ॥ देवराजदेवनिभोअतिडर ॥
भएप्रहारदुहूघांभारी ॥ वानरानेशिचरवारीवारी ॥ मेघनादकँहँमुष्टीमारयौ ॥ पुनितरुचढि
हनुमंतपचारयौ ॥ जाग्योमूर्छाइंद्रजीतजब ॥ तेसविसेषआनिजूठ्योतब ॥ राक्षसब्रह्मपाश
तहँडारयौ ॥ वायुतनयतबधर्मविचारयौ ॥ ब्रह्मपासनाविनासवेदविधि ॥ सुरकारजहैनिकट
भईसिधि ॥ नीतिधर्मवसकपिशिरुनायौ ॥ ब्रह्मपासहनुमंतबंधायौ ॥ आन्यौगहिलंकेसुर
आगै ॥ लोकअषिलकपिकौतुकलागै ॥ मेघनादपौरुषमनमान्यौ ॥ विक्रमबलदससीसब
षान्यौ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ सुनहुप्रहस्तकहैलंकेसर ॥ विधिकारनपूछहुयावनचर ॥
यहकपिकीटकहांतेआयौ ॥ कोधौंकायहकवनपठायौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सनमुष
ठाढौपूछतदशशिर ॥ तिहिंहनुमंतदेतप्रतिउत्तर ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ रामदूतहूं
हनुमतवानर ॥ स्वामिकाजवसकरौंसुरासुर ॥ मारुतिअक्षकुंवरमैंमारयौ ॥ सोइहूंजिहिंतव
सेनसंघारयौ ॥ ॥ अथरावणहनुमानप्रश्नोत्तर ॥ ॥ रावनप्रश्न ॥ ॥ रामकौन हनु
मानउत्तर ॥ ऋषिमषरषवारयौ ॥ सोमारीचसुबाहुसंघारयौ ॥ ॥ रावणप्रश्न॥ ॥रामकौ
न ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ जिहिहरधनुभान्यौ ॥ जोअसाध्यतीनहुपुरजान्यौ ॥ ॥
रावणप्रश्न ॥ ॥ काठतोरिपौरुषकाकरयौ ॥ ॥ हनुमानउत्तर ॥ ॥ धरतेटरयौनतु
महूंधरयौ ॥ ॥ रावणप्रश्न ॥ ॥ रामकौन ॥ ॥ हनुमानउत्तर ॥ ॥ छत्रीयत्वउधा
रयौ ॥ परशुरामकौगर्वपहारयौ ॥ ॥ रावणप्रश्न ॥ ॥ परशुरामवहकौनकहातौ ॥ ॥
हनुमानउत्तर ॥ ॥ हैहयराजमारिकीयहातौ ॥ ॥ रावणप्रश्न ॥ ॥ हैहयको ॥ ॥
हनुमानउत्तर ॥ ॥ माहिषमतिग्रामी ॥ सहसबाहुबहुसेन्यास्वामी ॥ रेवाजलभुजबल
तिहिंरोके ॥ विथकिप्रवाहसतुमहुविलोके ॥ अतिबलगर्वतहांतुमआए ॥ भएसंग्रामज
थामनभाए ॥ निग्रहिचापप्रतिंचानांधे ॥ बाहुवीसतुमकौंलेबांधे ॥ दुषीदेषितुमसंभुछिडा
ए ॥ वहिछनविसरिगएघरआए ॥ ॥ रावणप्रश्न ॥ ॥ रामकौनकहिधौरेवानर ॥ ॥
हनुमानउत्तर ॥ ॥ सबलवालिजिहिहत्यौएकसर ॥ ॥ रावणप्रश्न ॥ ॥ वालीको
नकहातिंहिकीनौ ॥ नामसुन्यौहमआजनवीनौ ॥ ॥ हनुमानउत्तर ॥ ॥ रसापरिक्र
मकरतसांतरस ॥ वानरसंध्याभयौध्यानबस ॥ उहादिगविजयकरततुमआए ॥ उनहिंजो
गनिद्रावसपाए ॥ विघनध्यानमँहँतैंविस्तारयौ ॥ पकरितोहिकपिभूमिपछारयौ ॥ कांषचां
पितोहिपरिक्रमकीनौं ॥ लीयेंफिरयौतुहिकौतुकलीनौ ॥ यौंहितोहिलीयैंघरआयौ ॥ लैअंग
दपलनालटकायौ ॥ करधरिवालिअभयतोयकीनौ ॥ दयाकरीछुटकाइजुदीनौ ॥ ॥ राव
णप्रश्न ॥ ॥ रामकौनरेअधमवनेचर ॥ ॥ भयौगर्वतोहिजाकौनिर्भर ॥ ॥ हनुमा
नउत्तर ॥ सबलताडकारामसंघारी ॥ नाहिनअबलात्रीयानिहारी ॥ ॥ मारुतिरु
वाच ॥ ॥ सुनिदिगविजयहेततूंदशशिर ॥ सहजसुतललौंगयौलंकेसर ॥ वीसभुजाद
शसीसविलच्छन ॥ देषविरूपजुबांध्यौदेतन ॥ कहिदुर्वादतुमाहिवसकीनै ॥ दसहूमूंडनितो

लादीने ॥ राजाबलिकेआगैराषे ॥ भलेभेलजूसबहिनिभाषे ॥ बांधेआनिथंभसौंबाहिर ॥ हँसतसुरूपदेषिजनहरहर ॥ कछुदिनबंधेरहेतनकोमल ॥ षुधालगीअतिभएविकलषल॥ सबदासीजनस्वर्णसिंगारी ॥ तुमहिविलोकिहसहिंदेतारी ॥ बलिराजाकीविभवविलासिनि ॥ देंदैकवलनचाएदासिनि ॥ कछुदिनयौंदिगविजयाकीनी ॥ लटकतरहेकिंहुनसुधिलीनी ॥ इहिंविचशुक्राचारजआए ॥ दयाकरीतुमछोडिदिवाए ॥ सूर्पनषाभगिनीतवसुंदर॥ ताकतिफिरतिवननिकामातुर ॥ दंडकवनतिहिंराघवदेषे॥सोभामनमथकोटिविसेषे॥करिकटाक्षदगहावभावकृत ॥ होतिसुविव्हलरसविषयारत ॥ ॥ श्रीरामवाक्यशूर्पनखाप्रति ॥ ॥ वसतपसाहमएकनारिव्रत ॥ राजाकोउषोजहुवैभवरत ॥ क्रोधस्वरूपराक्षसीकोकरि ॥ सीतहिषानधसीसोनिसचरि ॥ कननाकहतिलषनवानकरि ॥ श्रवतरुधिरभागीतबसुंदरि ॥ जानतहूंसोतुमनहीजानी ॥ हसिहसिपूंछतरामकहानी ॥ षरदूषनात्रिशिरहतिषोए ॥ रोसभरेतुमहूंसुनिरोए ॥ कलहकबंधनिपातनकीनौ ॥ दुषितदेषितिहिनिजपददीनौ ॥ असुरमारिवातापीइल्वन ॥ क्रीडाहीकीनैतेकनकन ॥ निसचरव्याधजुमारिनसायौ ॥ पैतुमसोऊसुनिनहिंपायौ ॥ रामप्रतापप्रगटतवरावन ॥ पुनित्रैलोकसाषिजिहिंपावन ॥ ब्रह्मवंसतुमबडीबढाई ॥ भुवदिगपालधनदसोभाई ॥ भक्तिसूरताअतुलितभाषी ॥ सिरकृतहोमसुरासुरसाषी ॥ सूरहियहकृतकोउनसराहै ॥ आनसून्यमंदिरअवगाहै ॥ तस्करकर्महरीतुमसीता ॥ भामिनित्रातारहितसभीता ॥ तजियेवुद्धिराक्षसीअनुचित ॥ हठसठछांडिविचारहुकुलहित ॥ राक्षसबुद्धिनहीतुमराक्षस ॥ महावंसआराधततामस॥ भूतभविष्यवर्तमानभाषे ॥ रामरजात्रयपुरसिरराषे ॥ यहजोकालचराचरषाई ॥ सोपैरामकुदृष्टिनसाई ॥ ममसतसुनहुविसारिदुष्टमाति ॥ सीतादेहुरहैकुलसंपति ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ कबैतुमहिहममंत्रीकीने ॥ निलजप्रबोधतमंत्रनवीनै ॥ षोयोबागसकलफलषाए ॥ इहाँतुमैंकोन्योतिबुलाए ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ भलेस्वादलागेमनभाए ॥ षुधालगीतबवनफलषाए ॥ वानरचंचलजातिबषान्यौ ॥ भ्रमतफिरयौत्यौंत्यौवनभान्यौ ॥ ॥ रावणप्रश्न ॥ ॥ रेकिहिंदोषअक्षतैमारयौ ॥ ॥ हनुमानउत्तर ॥ ॥ पानिसस्त्रधरिमोहिपचारयौ ॥ ॥ रावणप्रश्न ॥ ॥ बलीहुतौतौक्यौंबबँधायौ ॥ हनुमानउत्तर ॥ छनअज्ञातदृष्टिअघछायौ ॥ रावणप्रश्न॥नीतिनहींजोपापदुरावहु॥ सोअबज्ञातअज्ञातसुनावहु ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ संगतवश्रीयाअवासासोई ॥ हूंतहांआयौदृष्टिसुहोई ॥ वहैपापलाग्यौमोहिअविहित ॥ तेजविहायबंधायौताहित ॥ पासब्रह्मडारयौइहिपापी ॥ थिरहूंरह्यौसांतमतिथापी ॥ भंजौंब्रह्मपासअनभीता ॥ उपजेदोषअधर्मअनीता ॥ निहचैमैंतातैंसिरनायौ ॥ बढ्यौसोचतबआपबंधायौ ॥ ॥ कवित्त ॥ सिष्यादेनसमर्थ्यतोहिहूंनिलजनिसाचर ॥ ममप्रचंडभुजदंडसाषितिहिपूछिसुरासुर ॥ हठिउठाइभूगोलषेलकंदुकसमषेलौं ॥ फांदिफांदिनभफारिमिहिरहिमकरमुषलैलौं ॥ आकपिलंकबोरौंउदधि, दैत्यदेवकाहूनडरौं ॥ अंजनीदुग्धलजाऊंअवसि, कहिनजपैएतौकरौं ॥ १ ॥ एकएककरिअवनिरौद्रराक्षससबमारौं ॥ दंततोरिमुषदसहुउरहिभुजवीसउषा

रौं ॥ हठित्रकूटगिरढाहिमारिसमभूमिमिलाऊं ॥ अविलोकततूहिआजजनकतनयाले जाऊं ॥ कृतदुष्टअधमपौलस्तिकुल, रेरेकंटककाकहूं ॥ आज्ञानमोहिअवधेसकी, रोकि मनहुतातेरहूं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ यहसुनिजरिरावनबिनुआगी ॥ गरज्योमनहुंहृदयदवलागी ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ भूंजिषाहुरेयहकपिभाई ॥ पुनिकादेषहुआज्ञापाई ॥ महतरढांकिताजनामारहु ॥ रजरजकाढिदसहुंदिसिडारहु ॥ दूतजानिमैसाहिदुर्वादा ॥ मर्कटत्यौंत्यौंतजीमजादा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यौंकहिकहिवाचालअभागी ॥ गरजिगरजिबोलतनभलागी ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ सचिवसुभटकहिकहिसमझावत ॥ प्राणदंडप्रभुदूतनपावत ॥ भाषैदूतजुपैमनभावे ॥ आहिअवध्यनजियडरआवे ॥ कपिइककीटमारिकहाकीजे ॥ छीजेबुंदनसागरछीजे ॥ ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्योविभीषनजोरिकर । भवपुलस्तिकुलभान ॥ दूतअवध्यसदोषहू । यहजून्यायनिदान ॥ १९ ॥ कामारनकपिकीटकौ । दूतउदरभरदास ॥ कारिजनाहिनसिद्धिकछु । हैयातेउपहास ॥ २० ॥ प्रवलमहागजमत्तपर । जूथपिपीलिकजानि ॥ कपिसमूहएकत्रकरि । अंतकप्रेरितआनि ॥ २१ ॥ सानुजरामसुग्रीवसंग । नासकरहिनिर्नाम ॥ अबतौकरिवौमंत्रयह । वेगिमिलैसंग्राम ॥ २२ ॥ कपिकैकोऊचिन्हकारि । काढिदेहुछुटकाइ ॥ करिअविलोकनदूतकौ । ऐहैसोअकुलाइ ॥ २३ ॥ सठरावनयहमंत्रसुनि । उमग्योचित्तअपार ॥ कहैविभीषनसोकरहु । वेगिनलावहुवार ॥ २४ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ हैवानरकैंपूछहित । सोभाअंगसुभाइ ॥ ताहिनिकासहुदुर्गतैं । ज्वालापूंछजराइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ सुनिवचनयहलंकेश ॥ वढिअसुररोषविसेस ॥ सनसूत्रतूलसंजोग ॥ पटरालतैलप्रयोग ॥ संष्यानवस्तुसमेट ॥ लंगूलमूललपेट ॥ रावणउवाच ॥ ॥ लैदेहुअग्निलगाइ ॥ इहिंनगरमध्यफिराइ ॥ निर्घोषपटहनिनाद ॥ वानीसुकहिदुर्वाद ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लैदयौअनललगाइ ॥ सुलग्योजुपूंछसुभाइ ॥ पुनिकाढिलीयविधिपास ॥ हनुमंतचित्तहुलास ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ यहभयौवंछितआज ॥ कीयदेवसबसुरकाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दिसिकूदिपछिमद्वार ॥ चढिकर्योकपिसंचार ॥ इहांउचकिउचकीअभूत ॥ पुरअमतमारुतपूत ॥ सबठौरठौरसंभारि ॥ जबदयौपुरपरजारि ॥ थितग्रेहग्रेहसुथान ॥ मिलिज्वालमालप्रमान ॥ डहरातपवनझकोर ॥ अतिअनललगिचहुंओर ॥ करित्राहित्राहिपुकार ॥ भजिचलतसबतजिभार ॥ प्राकारकनकप्रसाद ॥ पुरभयौलंकप्रमाद ॥ गरिकनककौगढग्राम ॥ ठरिचलेधामनिधाम ॥ नतभूमिज्यौंघननाल ॥ षलकेजुहिममयषाल ॥ छतरीनिअरुनसछोह ॥ मिलिज्वालमालसमोह ॥ करिकीरसुरासुरसंक ॥ कुचढकातिमानहुलंक ॥ पघल्योकनकचहुपास ॥ बढिवारिवाहविलास ॥ प्रतिधामअग्निसपेषि ॥ वानिदीपमालिविसेषि ॥ भंडारभांतिनिभांति ॥ परजरेपातिनिपांति ॥ सौगंधसालसुभाव ॥ मनुमलयगिरिदुवदाव ॥ शुकसारिकाषगसाथ ॥ यौंजरेमनहुंअनाथ ॥ हयकरतजरिजरिहेष ॥ वार

नविहालविसेष ॥ सबजरेजंतुसुथान ॥ अवकासनहिकोउआन ॥ हामातताततुहोइ ॥ रटिजरेबालकरोइरोइ ॥ इहिंरूपपसरेआगि ॥ जनुप्रलयपावकजागि ॥ करित्राहित्राहि सत्रास ॥ वसशोकसबरनिवास ॥ दससीससोचनिदान ॥ षलभयौआतिहिषिसान ॥ सबसुभटमंत्रीयसोच ॥ परिउलटकृतजेपोच ॥ कोउगएभजितजिकोट ॥ उनलईजलनिधिओट ॥ उनचासमारुत्तआइ ॥ अधजरेफेरिजराइ ॥ कृतलपटझपटकराल ॥ विललातबालविहाल ॥ कीयषाललंककपीस ॥ तहांजरीजोजनतीस ॥ मिलिकहहिंषलमुरझाइ ॥ हैदेवकोउकपिनाँहि ॥ दहिपूंछसासनदीन ॥ लषिसबनिअबफललीन ॥ आवे लोकिजितातितऊक ॥ कृतजातुधानीकूक ॥ ॥ लोकउवाच ॥ ॥ छंदसवैय्याघनाक्षरी ॥ ॥ पूतनधियाकौबापपातिनपतनीहूंकौभाइकौनभाईमित्रमित्रकौनमानियै ॥ मूढनिउघारेवपुवसनविसारेवीरधूमअंधीयारेमाझअंधउनमानियै ॥ हेषतजरतहयगाजतफिरतगयाविकलचराचरसोकहालोंबषानियै ॥ बूढेबारेतरुनत्रीयाहूविललातबैठेपानींपानींकरतनकोऊपहिचानियै ॥ ३ ॥ कोऊमरेडाढेकोऊअधभुरसेसेकाढेकोऊकरमींढेठाढेकहेआयौकालहै ॥ भीतरबाहिरअधऊरधदिगनिभागवानरविलोकेवहैदेहकौंविसालहै ॥ कपिमईभईमानौविधिनाकीसृष्टिकहैदिव्यहूंचरमदृगसोईसूझैसालहै ॥ मानौरेअभागेसबव्हैहौकीटभृंगमयभागहुभुगतैकहूंजोईलिष्यौभालहै ॥ ४ ॥ दूतएकआएजोभईसोसबहीनिदेषीकहतहैआगमअबैहैवाकेरामकौ ॥ बाढ्यौहैविषमबैरअबलाचुराईआनिकीनौ नजतनकुलधराकौनधामकौ ॥ भूपठाढेदेषियहलंकाजरिछारभईवरहुंवितीत्यौजोदयौहोदेववामकौ ॥ धीरजछुटैतैरोइरोइकहैंजातुधानीजैहैराजधानीव्हैहैनासजामजामकौ ॥ ॥ ५ ॥ देषतहींपुरडाढ्यौकाहूनकछुहैकाढ्यौबालकविछोहेविललातिफिरैबालिका ॥ झरोषांअटारीघरआंगनकरालझालचौकिचौकिभामिनीपलानीगजचालिका ॥ रहितउपानजातुधाननिकीवल्लभाजेपाइनिपयादीसदापौढैंसुषपालिका ॥ अगजगजान्यौरविचक्रमैंउजारौभयौकेसरीकेनंदऐसीपूजीदीपमालिका ॥ ६ ॥ धामधनजरेपुरहाटपाटपरजरेलपटझपटसीकरालज्वालालागिहैं ॥ बांचिवौनआजफैलीआगिचहुंभागाफिरिभागहुरेवालदैअभागेकबभागिहै॥ फेरैहैलंगूलकपिफैलतअँगारफूटिलरिकामरैंगेजोपैकाहूउडिलागिहैं॥ आरतपुकारतहैंलंकाकेवसाईयाआतिआजकीप्रलयसीअनैसीऐसीआगिहै ॥ ७ ॥ मंदरिवुझावैततौसौंजजरीउठैमांझवसनबचाएसबैदेहविचवारियै ॥ भर्त्ताक्यौहुंबच्यौभगिनीभाभिसमभईमाताकुसरातततौपुत्रजारिमारियै ॥ भाईलघुकाढ्यौतहांदीरघकौनासभयौभागिगए मामांभागिनेयनसंभारियै ॥ सुनीहूंनदेषीऐसीआजकीदुसहआगिवांचिवोनकहूंकहौकहाधौंविचारियै ॥ ८ ॥ भयौकहाहोइगोकहाधौंकोऊजानभीयाचितमैविनासकेप्रकारचुनीयतहै ॥ एककपिआयौतिहिंगढहेजरायौगाढोस्वामीताकेआवेकोआगमसुनीयतहैं ॥ गढमठग्रेहजरेपीटनासबैकेपरधनगएलगीवाइसीसधुनीयतहै ॥ काढिअगडाढीकहैप्यारीनिसचारीनिकीहेतबहेषततैसेधानलुनीयतहै ॥ रनिवासवाक्यं ॥ भांतिभांतिआजतुमसबहीसयानैभएकालहकाहूवरज्योनकुलकेकुठारको ॥ रूषचारितोरिकैषुधाकेभएफलखाएचंचल

तालच्छैंहैकीसबनचारकौं ॥ बापुरेवानरकौवहसिहसिलायौंबांधिकहाकहौंयाहिइंद्रजेताव तारकौं ॥ रोइरोइहाथमींडिकहतिमंदोवैरानीछोहहेफँटतिछातीदेषेलंकाछारकौं ॥ १० ॥ रानीअकुलानीहाहाबानीकहैरोइरोइरामजूकेआएककहौंहमैकोऊराषिहै ॥ एककीसाआयौ अबआगमकहतओरसुनीयतपदमअठारहकीसाषिहै ॥ सौतौनविलोक्यौंकहुंलंकाकेजर तसठआनीहमसोंधिसाधिअजोअभिलाषिहै ॥ तबतौकहांहेसबसचिवसुभटसूरसांचीके कैहैतअबकोऊमनमाषिहै ॥ ११ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कृततत्रकूटग ढकुंडसौंजसमिधामिलिसोई ॥ प्रलयकालपावकप्रज्वालमालासंजोई ॥ करराक्षससाकुल्य पूगफलतिलजवप्रघ्घल ॥ बालधिश्रुवाविसालहोतस्वाहाकोलाहल॥ पृथ्वीप्रसिद्धहोताप्र बल, इहांझंझामारुतअभय ॥ कीयवंदनपावनभस्मकौ, जसदीक्षितहनुमंतजय ॥ ६ ॥ करिकटाहगढलंकलसतदर्वीलंगूरन ॥ ग्रेहकनकथितमध्यभागपषिलेघृतपूरन ॥ जातुधा नपकवानतलेतिहिंताईततछन ॥ ज्वालापंकतिजोरिप्रबलपावकप्रियपाहुन ॥ पवमानप रोसाप्रेमपन, प्रगट्यौसौरभदाहपुर ॥ हनूमानधन्यजिवनारहठ, सहसभोज्यकीयतृप्तसु र ॥ ७ ॥ उडेगुलालअबीरधूमज्वालारंगधारीय ॥ दवँगउछिललघुदीर्घचलीचहुघांपि चकाराय ॥ त्राहित्राहिहोहोजुहोइहाहारवहासिय ॥ निर्लज्व्हैपतिप्रियाविकलधावतपुर वासिय ॥ अगमवसतरावनअदिन, पुरीहोलिकापरजरीय ॥ केसरीनंदजीत्यौअकल, क पिजुफागक्रीडाकरीय ॥ ८ ॥ वटीकंकदिनवंकलंकआतंकजुलग्गीय॥ प्रलयकालसीप्रग टलगीअनकालहिअग्गीय ॥ परिअपारपत्तनपुकारभयभीतजुभारीय ॥ हहैंअसुभउतप तिनियतनैऋतिहिनिहारीय॥ परिबेषकोटप्राकारपुर, घरकोऊअनउच्छरीय ॥ कारनअ निष्टदशकंधकौ, कृष्णवदनलंकाकरीय ॥ ९ ॥ त्राहित्राहिकोउत्रातसब्दयहजहाँतहाँसु नियै ॥ माततातसिसुमुक्किगएककहूंवनघनगुनियै॥ सोचिसोचिदससीसकरनिधरनीधरिकु ट्टीय ॥ दीनमलिनव्हैदीनछोहजीयआसाछुट्टिय ॥ कृतअतुलकाजसुरराजकौ, दाहदसा ननउरदयौ ॥ कपिबलप्रतापरघुराजकौ, भुवनभुवनजयजसभयौ ॥ १० ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ कह्यौकोपलंकेसप्रबलबोलेतहांपावस ॥ कृतअकालमिलिजलदमालदारुन घनद्वादस ॥ वारिदविनयविसेषदयाकरिआज्ञादीजे ॥ कह्यौदसाननजरतलंककछुउद्यम कीजे ॥ गजशुंडिमुशलधारागरजि, घोरिघोरिबरषौसघन ॥ विपरीतज्वालबाढतविषम, मनहुंभयौघृतसौंमिलन ॥११॥ वरषिवरषिघनबारिमेघमालाओहट्टीय ॥ सोनअनलजल साध्यषिसेजलघरबलषुट्टिय ॥ चहूंओरजलचलतवन्हिसहस्रगुनबाढत ॥ भवअभूतयह भइदूरिहजलदसुडाढत ॥ गुननीरइंद्रबलगर्वगौ, कहाआनिकीनूंकहत ॥ सोइभएविसा नैमेघसब, चलेभागिफिरिफिरिचहत ॥ १२ ॥ इंद्रउवाच ॥ मिलिजुकहीयघनमालदु सहपावकयहदिष्यौ ॥ रविवाडवअहिमुषअसाध्यप्रलयानलपिष्यौ ॥ इहांनकछुआपनौ नियतबलचलतदसानन॥ सोइसुनिसुनिसुतसुभटमंत्रिमुरझातमनहीमन ॥ सबकहतना थपौलस्तिसुनि, कारननहिनकृसानयह ॥ अनुसारबुद्धिउनमानियत, अदयारुद्रविका रयह ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ दशशिरदसहीरुद्रहित । करेहोमलंकेस ॥ मा

रुतिएकादशशिव । कीनौकोपविसेस ॥ १ ॥ जुक्तिनपंकतिभेदको । करिवोकिहूंप्रकार ॥
लंकादईजरायकपि । कीनौअतविकार ॥ २ ॥ तपनलग्यौहनुमंततन ॥ लंकाजरोसमूल॥
वासविभीषनकौबच्यौ। सोरावनउरसूल ॥३॥ कूद्यौहनुमंतलंकते।अग्निबुझाईआनि ॥ मज्ज
नकय्यौसमुद्रमहँ । अवधेश्वरउरआनि ॥ ४ ॥ तहांफिरिकूद्यौउदधिते । नभमारगहनुमं
त ॥ आनिकय्यौबहुय्यौउमगि । सीतादरसनसंत ॥ २७ ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ अ
जरामररनजयअषिल । होहुसदाहनुमान ॥ परमभक्ततुमरामप्रिय । सीताकह्योसुजान ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ हूंशोकउदधिबूडतसुभाइ ॥ अवलंबभयौतूंपुत्रआइ ॥ यौछांडिजा
ततुमहूजुआहि ॥ ठहरातचितनाहिकहूंठाहि ॥ मिलिकहाजरतघरआनिमेह ॥ दे
षिहौंचलेममदसादेह ॥ छतियाजुफटतअतिविरहछोह ॥ भयचकितनयनजलभर
समोह ॥ दसकंधमासद्वैअवधिदीन्ह ॥ लंघिदिवसषानमोहिव्रतजुलीन्ह ॥ पुनि
आइकहाकरिहैकृपाल ॥ सोइभषैमोहिजबसुरनिसाल ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥
मतकरहुसोचजीयजननिमूल ॥ सबहरिहैराघवविरहसूल ॥ सहिजानमातमुहिदेहुसोय ॥
हेतजिहिरामविश्वासहोय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मणिग्रंथितकवरीगोप्यमान ॥ सो
लईछोरिसीतासुजान ॥ मणिदीनीलैहनुमंतहाथ ॥ सोशीसबांधिलीनीसनाथ ॥ ॥ सी
तावाक्यं ॥ ॥ सुनिप्रत्ययइकदेहुंसुभाइ ॥ पुनिकहौरामएकांतपाइ ॥ ॥ कवित्त ॥
चित्रकूटपर्वतबिचित्रमहिमातिहिनिर्म्मल ॥ मिलिबैठेदंपतिमहीपतहांफटिकसिलातल ॥
इंद्रकुमारजयंतकाकव्हैकय्यौदुष्टक्रम ॥ मुक्तिइसीकाअस्त्रकाणकीयअतुलपराक्रम ॥ तिहिं
समयकरेमनसिलतिलक, भालभालप्रतिभेटियौ ॥ सोकहिबोमारुतिरामसौं, देविगूढप्र
त्ययदियौ ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ दुषदारुनअबलौंसह्यौदेह ॥
अबकछुकदिवसभवतव्ययेह ॥ अगनितदलवानरभालआय ॥ वारिधीसेतबांधौबनाय॥
निसिचरसंघारिगढलंकभानि ॥ अबदर्सनराघवदेहिआनि ॥ मतमानहुकछुमनसोच
माय ॥ सबभांतिरामकरिहैंसहाय ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सीयाहिपाइकृतसाधिदाहलंकेस
उरहिदीय ॥ वनविदारमिलिअक्षमारसुषकारजसाधीय ॥ रामप्रीयसंदेसकहेलैचलेस
कारन ॥ करिवंदनपरिक्रमणानियतसीयसोकनिषारन ॥ आगमनउलंघनउदधिकौ, भ
यौजुविक्रमअतुलभुव ॥ सुरराजहर्षनरहरसुकवि, हनूकीर्तित्रैलोकहुव ॥ ॥ दोहा ॥
पाइप्रतिक्षासीतपहँ । चूडामणिचितचैन ॥ काजस्वामिकौसिद्धकरि । उचकय्यौकपिनभ
यैन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कपिमहागर्जकीनौप्रकास ॥ तिहिंगर्भस्त्रावनिसचरि
नित्रास ॥ शुभभूमिलतातरुनिकरसंग ॥ आकासहुलैउतरय्यौअभंग ॥ इकअद्रितीस
जोजनउतंग ॥ तटसिंधुविकटअतितरलशृंग ॥ तबचढ्यौकूदिहनुमंततास ॥ पनक
य्यौउदधिझंपनप्रकास ॥ सोलईझंपमारुतिविसेष ॥ अद्रिवहभूमिधसिगौअसेष ॥ क
पिगगनकिलकिलाशब्दकीन ॥ निहचैसुसुन्यौअंगदनवीन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ इकदिनसरमाआपनै । सषिसमाजगृहसंग ॥ कठिनरामसीयविरहकौं ।
पुनिसोइचल्यौप्रसंग ॥ २९ ॥ रामरामसीतारटत । धरतनिरंतरध्यान ॥ अविलोकी

किहूंआसुरी ॥ परेजुसंभ्रमप्रान ॥ ३० ॥ ॥ राक्षसीवाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरमा सौंकहितिहिं । सषीयहपैबन्यौअजोग ॥ कारनकीटीभृंगको । पुनिधौंकवनप्रयोग ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रामराममुषरटतिनियतउरध्याननिरंतर ॥ भवभविष्यजौंकीटभृंगनहि टरतसुरहुनर ॥ रामहोइयहरमनिविरहसंकटपरिपरवस ॥ सहिनजाइयहपरमसालहियअलीसुसपरस ॥ सरमासौंपूंछ्यौइकसषी, अबविचारकरीयेइहां ॥ जिहिंकारनदुहुँघां होतजुध, तबकैसीबानिहैंतहां ॥ ॥ सरमावाक्यं ॥ ॥ तहांसरमाहसिताहिआपउतारि दियऐसौ ॥ तैंजुकह्यौसषितत्वजगतमहसुनीयतजैसौ ॥ सीताज्यौंरामहिसंभारिहित ध्यानधरतहीय ॥ जपतरामजानकीजतनबहुकरतमिलितजीय ॥ जोव्हैहैनारीनाहहठि, नारताहव्हैहैनियत ॥ इहिंठौररसषीनहींसोचअब, रसबनिहैविपरीतरत ॥ ॥ दोहा ॥ सरमासषीसमाजसुष । समयविलाससमेत ॥ तर्कवितर्कबढाइचित । हसिहसिउत्तरदेत ॥ ॥ अंगदादिपहँमारुतिपुनरागमन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ आनंदकपिनउपजेअनंत ॥ जाग्योजुहनूआयोजयंत ॥ लैलैसबबैठेकंठलाय ॥ प्रफुलेमनुनोतनजन्मपाय ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ बूडतजहाजज्यौंआनिवीर ॥ अबलंवदयोहमहेअधीर ॥ मनतलफतहमज्यौंविकलमीन ॥ निर्घोषमिलेतुमघननवीन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उठिच लेसबैरघुचंद्रओर ॥ चितमोदमनहुधावतचकोर ॥ ॥ अंगदादिऊचुः ॥ ॥ मिलि सबनिजपूछ्योहनूमंत ॥ विधिजुक्तकहहुअपनौवृंतत ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ जान कीदरसकीयनिकटजाय ॥ अविलोकिदसाननइहांआय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुग्रीवसुषदरक्षितसुठाम ॥ नियरायतबैमधुवनसुनाम ॥ ॥ कपिरुवाच ॥ ॥ मिलिच लियेअंगदधसहिमांहि ॥ अतिलगीक्षुधावनफलहिषांहि ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ जु वराजदईआग्यासुजान ॥ करीयेफलभक्षनछांडिकान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कीयफ लअहारमधुपानकीन ॥ निस्सेषस्वादलेलैनवीन ॥ इहांआएवनरक्षकअपार ॥ मुष्टीप्र हारतिनलहेमार ॥ दोहा ॥ ॥ कपिराजासुग्रीवको । मामादधिमुषनाम ॥ सोमधुव नरक्षकसदा । कीनौप्रभुहितकाम ॥ १ ॥ बागबिगार्‍यौवानरनि । मधुद्रोणिकासमेत ॥ सोदधिमुषसुग्रीवसौं । हैविनयौसवहेत ॥ २ ॥ सुनतबातकपिराजसोइ । बाढ्यौउरवि श्वास ॥ निहचयपाईजानकी । तौषाएफलजास ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सबक पिआयेतिहिंसमय । अंगदअग्रसुओर ॥ विमलप्रवर्षणगिरिविषैं । राजतरघुकुलमोर ॥ ४ ॥ ॥ कपिरुवाच ॥ ॥ कपिसबदंडप्रणामकरि । कह्यौयथाक्रमकाज ॥ प्रभुतव अतुलप्रतापतैं । सिद्धभयेसुषसाज ॥ ५ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ त्रिभुवनरामप्रभा वतव । कछूनदुष्करदेव ॥ सबकहिहैंमारुतसमुझि । भूतभविष्यतभेव ॥ ६ ॥ ॥ मारु तिरुवाच ॥ ॥ वहिंतटलैगहिमुद्रिका । मणिलाईइहिओर ॥ रामप्रतापरुसीयसत । फलेमनोरथमोर ॥ ७ ॥ दरसमातकीनोदुलभ । हैअशोकवनमाहि ॥ तहांविलोकी षीनतन । जुगवरछनछनजांहि ॥ ८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिप्रभुहिहनूएकां तपाइ ॥ सबकहतभयेविधिजुतसहाइ ॥ सीयदत्तदईमणिसावधान ॥ पुनिदयउभे

यप्रत्ययप्रमान ॥ चित्रकूटतिलकमनसिलसचीन ॥ वायसतहांकीनौचषविहीन ॥ सी
यकहेवचनसुनीएसुभाय ॥ राजाधिराजरघुवंसराय ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ अति
विरहसिंधुबूडतिअनाथ ॥ हितदेहुनाथअवलंबहाथ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उद्धार्यौप्रह्लाद
तुम । प्रगटसुवेदपुरान ॥ अवधिवितीतेमासद्वै । पुनिकोकरेप्रमान ॥९॥ लक्ष्मनप्रतिसी
तासंदेस ॥ छंदपधरी ॥ लक्ष्मनरघुकुलकीतोहिलाज ॥ अनउचितवचनसुधिकरनआ
ज ॥ पतिसासुजननिनहिसुनिप्रबोध ॥ वसप्रेमकरेमैंनयविरोध ॥ त्रीयजन्मनिकसिवन
वासवीर ॥ परिपाकसहितितैंइविरहपीर ॥ उरषोजतिहूज्यौंकुमतिआप ॥ तोसहतिविरहदु
स्सहसंताप ॥ श्रीरामउवाच ॥ सोरठा ॥ हेजीवतिकिहिंहेत, जनकसुताहनूमंतजौं ॥
कहियेयहसंकेत, देषीतुमजैसीदसा ॥ १ ॥ हनूमंतसीतादसावर्णन ॥ छंदपधरी ॥
इकवेणीचिंतामलिनचीर ॥ सबभाइसहितपरिभवसरीर ॥ परिवेषराक्षसीआसपास ॥
तिनबीचरहतिसीतासत्रास ॥ देषीनजातिदुषसहतिदेह ॥ सुषघटतबढतत्यौंत्यौं सनेह ॥
जैसीअविलोकीमातुजाय ॥ हूंवचनकहतनाहिनबनाय ॥ अवसेषरहेकछुप्रानआय ॥
स्वामीत्रिलोककरीयेसहाय ॥ जेहौंनदेवयहसमयजान ॥ प्रभुसुनिहौंसीतातजेप्रान ॥
॥ सवैयाघनाक्षरी ॥ ॥ मेरीतौदुसहदसादेषीतुमहनूमानजबतेंविछोहाभयौसांवरेसने
हीकौ ॥ नैनपैनफूटिगएप्रानहूंनछूटिगएदुषएतेसहतभरोसौकैसौदेहीकौ ॥ जलतेंबिछुरि
पलमाझमरिजातमीनतातेलोकवेदगावैधन्यपनतेहीकौ ॥ संकटकेसाथीसदादीनकेदयाल
देवबानसौंलग्यौंहैमोयबचनवैदेहीकौ ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जोलौंसीतानयनजल ।
सरितामिलहिनआइ ॥ प्रभुतौलौंयासिंधुपर । बांधहुसेतबनाइ ॥ १० ॥ प्रभुतवनामजु
पाहरू । ध्यानकपाटधराहि ॥ प्रानसुजंत्रितनेत्रपल । निकसनपावतनाहि ॥ ११ ॥ ॥
छंदपधरी ॥ ॥ मोहिचलतसीयाअतिदीनमान ॥ दृगबहतनीरयौंकहिनिदान ॥ मनरा
मचरनअनुरागमोहि ॥ तौविसरिकवनहितकहूंतोहि ॥ मारुतियहअवगुनएकमोर ॥ की
यनाहिगमनजीयभोकठोर ॥ छतीयांनफटीविछुरतसछोह ॥ मनवृथाअबैसबजानिमोह ॥
सबजानततुमसीतासनेह ॥ अबकहूंकहांलगिकथाएह ॥ कछुछिप्यौनाहिनतुमतेकृपाल ॥
दिनदशाजुसीयवर्ततदयाल ॥ जगनाथजगताजितसर्वजान ॥ छनजातसीयहिजुगजुगस
मान ॥ प्रभुसीतातनमनकष्टपाइ ॥ जगदीससुमोपहकहिनजाइ ॥ ऐसौअनर्थमेंदेषिआ
प ॥ प्रभुदयौधीरतवबलप्रताप ॥ ममदृष्टिमात्रसुनीयेजुमाइ ॥ सबभाइरामकरिहैसहाइ ॥
अनसोधभएगतदिवसएह ॥ सोभयोरामसानुजसंदेह ॥ आइहैंरामलक्ष्मनअभंग ॥ साषा
मृगेशसुग्रीवसंग ॥ अंगदअसंकजुवराजआइ ॥ सोसदारामसेवकसुभाइ ॥ अनपारजू
थजूथपअभीत ॥ सबआएदेषहुमातसीत ॥ वानरसमुद्रसिरसेतबंध ॥ करिहैसुनासषटचारि
कंध ॥ सठदुष्टसकुलरावनसँघारि ॥ मिलिहैकृपालतबप्रभुमुरारि ॥ विधिविधिअनेकदीनैवि
सास ॥ इकसीयहिरहीतबदरसआस ॥ कविरुवाच ॥ कपिराजसहितअंगदकुमार ॥
सबबैठिसभाजूथपसुढार ॥ ॥ जांबुवंतउवाच ॥ ॥ तबकह्यौरामसौंजाबुवंत ॥ प्रभुत
वप्रतापमहिमाअनंत ॥ कीनौतथापिहनुमंतकाज ॥ देवनिजोदुर्गमदेवराज ॥ सीयदेषि

पुरीलंकाप्रजारि ॥ मलिमानदसाननअक्षमारि ॥ कृतकह्योजुमारुतिउद्धकाम ॥ रसनाइ ककेतिककहुंराम ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुकोंमेरोआपनो। सुरसुरपति सुषसाज ॥ कहिसुकंठइहांरामसौं । कृतमारुतिहितकाज ॥ १२ ॥ शतजोजनसागरसलिल । कूदिगएनिस्संक ॥ आएसीताशोधले । कह्योदाहगढलंक ॥ १३ ॥ कीनौदरसनजानकी । दीनीलंकजराय ॥ माह्योअक्षकुमारनै । पुनिदेषेप्रभुपाय ॥ १४ ॥ ॥ हनुमंत उवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मोतेनभयौकछुमहाराज ॥ कृततवप्रतापसबसिद्धिकाज॥ वानरकौप्रभुयहबलविष्यात ॥ जोसाषहुतेप्रतिसाषजात ॥ जारीजुलंकअघभारजान ॥ अरुहत्यौअक्षबालकअज्ञान ॥ विनस्योजुबागजडभावजाहि ॥ यामहममविक्रमकवनआहि ॥ निग्रह्योमोहितहँमेघनाद ॥ पुनिछुट्योजीयतप्रभुकेप्रसाद ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ देवनिहूंदुस्करअतिदारुन ॥ काजहनूजोकह्योसकारन ॥ शतजोजनदुस्तरअतिसागर ॥ जलअगाधपलजंतुवसतवर॥ भयोसुगोपदमनहुनीरभय॥ कूदिगएलंकागढकांगुर ॥ बीरमहाबलबुद्धिविसेषी ॥ दुर्गमठौरजानकीदेखी ॥ सुनिसुग्रीवकहतसतभाहीं ॥हनुमन्ततेऊरनहमनाहीं ॥ ॥हनुमंतउवाच॥ ॥ तुमपरपुरुषदयापरिपूरन॥अपनैकरतकृतारथआपुन॥ ॥कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ पदसीसलाइमारुतिप्रवीन ॥ करुणाजुतदंडप्रणामकीन॥ ॥ मारुतिरुवाच॥ ॥कवित्त॥ ॥ पाथोनिधिनहींपीयौप्रबलनहिलंकपलट्टीय॥ आनिनदशअवधेशअग्रकंटकसिरकट्टीय॥ संगदासिमयसुता इहैसीतानहींआनीय॥ सुनहुदेवदेवेशमुहिनपौरुषपरमानीय॥करजोरिचरनवंदनकरौं,सो कृतकिंकरअनुसरीय ॥ अषिलेशजुलावतमोहिउर,कवनसुमैविक्रमकरीय ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मिलिकंठलाइतबकह्योराम ॥ मारुतितुमकीनैसबैकाम ॥ बैठारिनिकटकरग्रहिविष्यात॥ वरवीररामकपिपूछिबात ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कैसौगढदेष्योविकटवंक ॥ लक्षनप्रकारकपिकहहुलंक ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ कनकमयकोटमंदिरसवंक ॥ तहांवसतदुष्टकंटकअसंक ॥ सुतबंधुसचिवसुभटानिसमाज ॥ सुषसमृद्धिवित्तवंछितसुसाज ॥ थितद्वारचारितहांविकटथाट ॥ पुनिसंजुतवज्राकृतिकपाट॥ अर्गलासूलसृंकलअपार ॥ राक्षसतहांरक्षकद्वारद्वार ॥ अगन्यास्त्रधनुषधारीअनेक॥अनगनितकँगूरनिएकएक॥संष्यासहस्त्रराक्षससनद्ध॥पश्चिमदुवाररक्षकप्रसिद्ध॥मदमत्तगजनिचढिचौरमार॥ दिनरात्रिफिरतजोधादुवार॥उत्तरदुआरअश्वाअरोह॥सहसनिसक्रुद्धसन्नाधसोह॥पुरबदुवारपयदलप्रचंड॥दशकोटिधनुर्धरदुसहदंड॥इकवीससहस्त्रभटरथअधार ॥ दारुणसदुष्टदक्षणदुवार ॥ परिखातहांशतयोजनप्रमान ॥ भरनीरगहरसागरभयान ॥ आवरितसीमसागरअगाध ॥ सबजंतुवसततामहँअसाध ॥ अतिकायनक्रचक्राअनेक॥ अपआपतिमिंगलग्राहएक॥प्रभुआहिसाध्यसबतवप्रताप॥अषिलेसकरहुअबगमनआप॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥ सानुजप्रभुबोलेसानुकूल॥ सुषसाध्यसबैन्हैहैसमूल ॥ कपिराजकरहुअबगमनकाज ॥ जुतरोषकह्यौयौमहाराज ॥ सीताहिदेषिआयोसधीर ॥ वससोत्चविलँबकरीयेनवीर ॥ यहसुनतजूथजूथपअभंग ॥ गिरमात्रदेहझांपनिविहंग ॥ चितचढे

हर्षंअतिजुद्धवाहि ॥ हठचढेलैहिगढलंकढाहि ॥ जटजूटकरेसानुजसधीर॥ वनपटलपेटिक टितटनिवीर ॥ गहिमध्यभागबांधेनिषंग ॥ आकर्षिबानधनमनुअभंग ॥ भएरोषउतारन भूमिभार ॥ सकुटंबकरनरावनसंघार ॥ हठिउठेरामआजानबाहु ॥ अतिबढ्योचित्तआहव उछाहु ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ **छंदउधोर** ॥ ॥ अबयहमुहूरतआइ ॥ पंचांगशुद्धसुभा इ ॥ अरुविजयदशमीएह ॥ सबसिद्धिनिस्संदेह ॥ ॥ **श्रीरामप्रयान** ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ शुकलपक्षऋतुसरदमासआश्विनदक्षिनायन ॥ शुभकारकपंचांग शुद्धमिलिसकुनजथाम न ॥मुषसुग्रीवशाषामृगेशअंगदअतुलितबल॥ अषिलऋच्छवानरअभंगदशसीससीस दल ॥ आकंपअवनिनरहरसुकवि, नियतनागपतिफणनमीय ॥ दिगविजयविजयदश मीदिवस, सेनलंकदिसिसंक्रमीय ॥ १ ॥ समरचलतकपिसेनसजलमिलिपंथसरितसर ॥ पयसुपाननिर्झरनिवानभएसुक्किपंकभर ॥ रहिनपंकसुररवनगवनसमविषमभूमिभय ॥ ॥ वातस्वासनासाविलाससोइरैनगगनगय ॥ विस्मयजुचक्कचक्कियविछुरि, तहांअबरोध दिगंततम ॥ सुरबृंदहर्षनरहरसुकवि, कृतरघुनाथप्रयानक्रम ॥ २ ॥ नागराजफननमी यकठिनलगिकमठपिट्ठिकँहँ ॥ दसनटंकमुखदुस्सहतिषपरिअंकषंतितँहँ ॥ कोलदक्कभ रकरकिसंपमर्कटभटसंगम ॥ धरभग्गनपरिजातुधानअवधेसुरआगम ॥ दिगपालैंडोल दिगंतिडर, रहिजुचकितसप्ताश्वरवि ॥ आकंपकुलाचलनभअवनि, कहिजयजयनरहर सुकवि ॥ ३ ॥ ॥ **छंदघनाक्षरी** ॥ ॥ पदहतउठतगगनमगरेनपृथ्वीपूरीयतसिंधुसर सरिताप्रमानहैं ॥ टूटतउरनिचढिजूथनिकेमहातरुमूलहूनरहैंमहीहोतजुमैदानहैं ॥ युद्ध कोउछावकपिजातकोस्वभावअतिरामकोप्रभावसतीसीताजूकोध्यानहैं ॥ मंचज्योंमच किजातअवनीकेअंगमूलपृथ्वीपतिरामजूकोप्रबलप्रयानहैं ॥ ॥ **छंदउधोर** ॥ ॥ संक्र म्योसेनअसंष ॥ कपिमनहुपर्वतपंष ॥ वनिअग्रपृष्टिवरूथ ॥ जुगपार्श्वजूथपजूथ ॥ ग जगवयमैंदगवाषि ॥ पुनद्विविदतारजुदाषि ॥ नलनीलसबलसषेन ॥ संगजांबुवंतसमे न ॥ इत्यादिजूथपऔर ॥ सबठएठौरहीठौर ॥ हठिवृक्षपर्वतहाथ ॥ सबचलेसेनसमाथ ॥ संक्रम्योविजईसेन ॥ रहिगगनपूरितरेन ॥ कृतअंतरितरविचक्र ॥ बनिदिवसकंटक वक्र ॥ हलहलितधरभरहोइ ॥ संचालमंचसजोइ ॥ उठिरेणुव्हैदिसिअंध ॥ धरगगन घनमिलिधुंध ॥ पातालसातसकंप ॥ संचारकपिदलसंप ॥ डगमगितधरगिरिडोल ॥ लगित्रासकमठीकोल ॥ सरसुक्किरेणुसपूरि ॥ भएनीरकदर्मभूरि ॥ मिलिभालमर्कटमाल॥ आकासपंथउछाल ॥ अंतरीषसोभाअंग ॥ अन्नेकरंगउतंग ॥ वपुवरनवरनविसाल ॥ जनुउनइजलधरजाल ॥ जुधहेतमर्कटजूह ॥ मिलिपंषअद्रिसमूह ॥ तरुतुट्टिउरचटि तास ॥ वनगहनघनजुविनास ॥ कपिसेनवहतसकोप ॥ पाथोधिमनुहदलोप ॥ षितिउ ठीनभचढिषेह ॥ हुवचक्किचक्कसंदेह ॥ हुंकारझंपहिवीर ॥ मिलिगगनगतिजुसमीर ॥ बढिवीररसभुजवाह ॥ अतिक्रुद्धजुद्धउछाह ॥ कोऊकहतढाहाहिलंक ॥ कोऊउदधिबोरि असंक ॥ कोऊकहैग्रहिदशकंध ॥ विछुटहिंतबग्रहबंध ॥ मंदोदरीग्रहमूल ॥ दशकंध अग्रदुकूल ॥ वसकरहुवदनविलोकि ॥ कपिमध्यराषहुरोकि ॥ सुतबंधुसहितसंघार ॥

पुरीलंकाप्रजारि ॥ मलिमानदसाननअक्षमारि ॥ कृतकस्यौजुमारुतिउद्धकाम ॥ रसनाइ ककेतिककहुंराम ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुकोंमेरौआपनौ । सुरसुरपति सुषसाज ॥ कहिसुकंठइहांरामसौं । कृतमारुतिहितकाज ॥ १२ ॥ शतजोजनसागरसलि ल । कूदिगएनिस्संक ॥ आएसीताशोधलै । कस्योदाहगढलंक ॥ १३ ॥ कीनौदरसनजा नकी । दीनीलंकजराय ॥ मास्योअक्षकुमारनै । पुनिदेषेप्रभुपाय ॥ १४ ॥ ॥ हनुमंत उवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मोतेनभयौकछुमहाराज ॥ कृततवप्रतापसबसिद्धिकाज॥ वानरकौप्रभुयहबलविष्यात ॥ जोसाषहुतेप्रतिसाषजात ॥ जारीजुलंकअघभारजान ॥ अरुहत्यौअक्षबालकअज्ञान ॥ विनस्यौजुबागजडभावजाहि ॥ यामहममविक्रमकवनआ हि ॥ निग्रह्योमोहितहँमेघनाद ॥ पुनिछुट्योजीयतप्रभुकेप्रसाद ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ देवनिहूंदुस्करअतिदारुन ॥ काजहनूजोकस्योसकारन ॥ शतजो जनदुस्तरअतिसागर ॥ जलअगाधपलजंतुवसतवर ॥ भयौसुगोपदमनहुनीरभय ॥ कूदि गएलंकागढकांगुर ॥ बीरमहाबलबुद्धिविसेषी ॥ दुर्गमठौरजानकीदेखी ॥ सुनिसुग्रीवकहत सतभाहीं ॥हनुमन्ततेऊरनहमनाहीं ॥ ॥हनुमंतउवाच॥ ॥ तुमपरपुरुषदयापरिपूर न॥अपनेकरतकृतारथआपुन॥ ॥कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ पदसीसलाइमारुतिप्र वीन ॥ करुणाजुतदंडप्रणामकीन॥ ॥ मारुतिरुवाच॥ ॥ कवित्त॥ ॥ पाथोनिधिनहींपी यौप्रबलनहिलंकपलट्टीय॥ आनिनदशअवधेशअग्रकंटकसिरकट्टीय॥ संगदासिमयसुता इहैसीतानहींआनीय॥ सुनहुदेवदेवेशमुहिनपौरुषपरमानीय॥करजोरिचरनवंदनकरौं,सो कृतकिंकरअनुसरीय ॥ अषिलेशजुलावतमोहिउर,कवनसुमैविक्रमकरीय ॥ १ ॥ ॥ क विरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मिलिकंठलाइतबकह्योराम ॥ मारुतितुमकीनैसबैका म ॥ बैठारिनिकटकरग्रहिविष्यात॥ वरवीररामकपिपूछिबात ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कैसौगढदेष्यौविकटवंक ॥ लक्षनप्रकारकपिकहहुलंक ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ कन कमयकोटमंदिरसवंक ॥ तहांवसतदुष्टकंटकअसंक ॥ सुतबंधुसचिवसुभटानिसमाज ॥ सु षसमृद्धिवित्तवंछितसुसाज ॥ थितद्वारचारितहांविकटथाट ॥ पुनिसंजुतवज्राकृतिकपाट॥ अर्गलासूलसृंकलअपार ॥ राक्षसतहांरक्षकद्वारद्वार ॥ अगन्यास्त्रधनुषधारीअनेक॥अन गनितकँगूरनिएकएक॥संष्यासहस्त्रराक्षससनद्ध ॥ पश्चिमदुवाररक्षकप्रसिद्ध॥मदमत्तगज निचढिचौरमार॥ दिनरात्रिफिरतजोधादुवार॥उत्तरदुआरअश्वाअरोह॥सहसनिसक्रुद्धस न्नाधसोह ॥पुरबदुवारपयदलप्रचंड॥दशकोटिधनुर्धरदुसहदंड॥इकवीससहस्त्रभटरथअधा र ॥ दारुणसदुष्टदक्षणदुवार ॥ परिखातहांशतयोजनप्रमान ॥ भरनीरगहरसागरभयान ॥ आवरितसीमसागरअगाध ॥ सबजंतुवसततामहँअसाध ॥ अतिकायनक्रचक्राअनेक॥ अपआपतिमिंगलग्राहएक॥प्रभुआहिसाध्यसबतवप्रताप॥ अषिलेसकरहुअबगमनआ प॥ ॥श्रीरामउवाच ॥ ॥ सानुजप्रभुबोलेसानुकूल ॥ सुषसाध्यसबैव्हैहैसमूल ॥ कपि राजकरहुअबगमनकाज ॥ जुतरोषकह्यौयौमहाराज ॥ सीताहिदेषिआयौसधीर ॥ वससो चविलँबकरीयेनवीर ॥ यहसुनतजूथजूथपअभंग ॥ गिरमात्रदेहझांपनिविहंग ॥ चितचढे

हर्षअतिजुद्धवाहि ॥ हठचढेलैहिगढलंकढाहि ॥ जटजूटकरेसानुजसधीर ॥ वनपटलपेटिक टितटनिवीर ॥ गहिमध्यभागबांधेनिषंग ॥ आकर्षिबानधनमनुअभंग ॥ भएरोषउतारन भूमिभार ॥ सकुटंबकरनरावनसंघार ॥ हठिउठेरामआजानबाहु ॥ अतिबढ्योचित आहव उछाहु ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ अबयहमुहूरतआइ ॥ पंचांगशुद्धसुभा इ ॥ अरुविजयदशमीएह ॥ सबसिद्धिनिस्संदेह ॥ ॥ श्रीरामप्रयान ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ शुकलपक्षऋतुसरदमासआश्विनदक्षिनायन ॥ शुभकारकपंचांग शुद्धमिलिसकुनजथाम न ॥ मुषसुग्रीवशाषामृगेशअंगदअतुलितबल ॥ अषिलऋच्छवानरअभंगदशसीससीस दल ॥ आकंपअवनिनरहरसुकवि, नियतनागपतिफणनमीय ॥ दिगविजयविजयदश मीदिवस, सेनलंकदिसिसंक्रमीय ॥ १ ॥ समरचलतकपिसेनसजलमिलिपंथसरितसर ॥ पयसुपाननिर्झरनिवानभएसुक्किपंकभर ॥ रहिनपंकसुररवनगवनसमविषमभूमिभय ॥ ॥ वातस्वासनासाविलाससोइरैनगगनगय ॥ विस्मयजुचक्कचक्कियविछुरि, तहांअवरोध दिगंततम ॥ सुरबृंदहर्षनरहरसुकवि, कृतरघुनाथप्रयानक्रम ॥ २ ॥ नागराजफननमी यकठिनलगिकमठपिट्ठिकँहँ ॥ दसनटंकमुखदुस्सहतिषपरिअंकषंतितँहँ ॥ कोलदक्कभ रकरकिसंपमर्कटभटसंगम ॥ धरभग्गनपरिजातुधानअवधेसुरआगम ॥ दिगपालैंडोल दिगंतिडर, रहिजुचकितसप्ताश्वरवि ॥ आकंपकुलाचलनभअवनि, कहिजयजयनरहर सुकवि ॥ ३ ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ पदहतउठतगगनमगरेनपृथ्वीपूरीयतसिंधुसर सरिताप्रमानहै ॥ टूटतउरनिचढिजूथनिकेमहातरुमूलहूनरहैंमहीहोतजुमैंदानहै ॥ युद्ध कोउछावकपिजातकोस्वभावअतिरामकोप्रभावसतीसीताजूकोध्यानहै ॥ मंचज्योंमच किजातअवनीकेअंगमूलपृथ्वीपतिरामजूकोप्रबलप्रयानहै ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ संक्र म्यौसेनअसंष ॥ कपिमनहुपर्वतपंष ॥ वनिअग्रपृष्टिवरूथ ॥ जुगपार्श्वजूथपजूथ ॥ ग जगवयमैंदगवाषि ॥ पुनद्विविदतारजुदाषि ॥ नलनीलसबलसषेन ॥ संगजांबुवंतसमे न ॥ इत्यादिजूथपऔर ॥ सबठएठौरहीठौर ॥ हठिवृक्षपर्वतहाथ ॥ सबचलेसेनसमाथ ॥ संक्रम्यौविजईसेन ॥ रहिगगनपूरितरेन ॥ कृतअंतरितरविचक्र ॥ बनिदिवसकंटक वक्र ॥ हलहलितधरभरहोइ ॥ संचालमंचसजोइ ॥ उठिरेणुव्हैदिसिअंध ॥ धरगगन घनमिलिधुंध ॥ पातालसातसकंप ॥ संचारकपिदलसंप ॥ डगमगितधरगिरिडोल ॥ लगित्रासकमठीकोल ॥ सरसुक्किरेणुसपूरि ॥ भएनीरकर्दमभूरि ॥ मिलिभालमर्कटमाल ॥ आकासपंथउछाल ॥ अंतरीषसोभाअंग ॥ अनेकरंगउतंग ॥ वपुवरनवरनविसाल ॥ जनुउनइजलधरजाल ॥ जुधहेतमर्कटजूह ॥ मिलिपंषआद्रिसमूह ॥ तरुतुट्टिउरचटि तास ॥ वनगहनघनजुविनास ॥ कपिसेनवहतसकोप ॥ पाथोधिमनुहदलोप ॥ षितिउ ठीनभचढिषेह ॥ हुवचक्किचक्कसंदेह ॥ हुंकारझंपहिवीर ॥ मिलिगगनगतिजुसमीर ॥ बढिवीररसभुजवाह ॥ अतिकुद्धजुद्धउछाह ॥ कोऊकहतढाहहिलंक ॥ कोउउदाधिबोरि असंक ॥ कोऊकहैग्रहिदशकंध ॥ विछुटहिंतबग्रहबंध ॥ मंदोदरीग्रहमूल ॥ दशकंध अग्रदुकूल ॥ वसकरहुवदनविलोकि ॥ कपिमध्यराषहुरोकि ॥ सुतबंधुसहितसंघार ॥

निस्सेषकरिनिमिचार ॥ उदमादबढिजुधअंग ॥ यौंचलेदलअनभंग ॥ ॥ कवित्त ॥ वीरप्रेतवेतालभूतापित्तरपिशाचभूव ॥ डमरुपानिडंकिनीयहरषजक्षनिजुग्गिनिह्रूव ॥ प्रचरचिल्हगृद्धीप्रासिद्धपंषीपलचारीय ॥ शिवाआदिवृकगनसृगालनषिजंतुनिहारिय ॥ संग्रामअासआहारसुष, धावतकौतुकमनधरीय ॥ संष्यानतासनरहरसुकवि, सेनपिछिमिलिसंचरीय ॥ २ ॥ ॥ भिल्लीवाक्यं ॥ ॥ नहिनराखसन्नाहवसनवनधनुषबानधर ॥ नहिनवाजिरथनागचमूचतुरंगचरनचर ॥ नहिनराजरचनानिदानजटवानजुगमजन ॥ बनिविभूतिअबधूततदपिनृपलच्छनगुनतन ॥ प्रातमैमातदेषेपुरुष, कपिसमूहबिचगिरिकुहर ॥ आश्चर्यपरसपरकहतियह, विहसिबिहसिरमनीसवर ॥ ॥ अंबा उवाच ॥ ॥ जयकारजलंकाअजेयपाथोधितरनपद ॥ सबलसत्रुदशसीसमहाभुजवीसजुदुर्मद ॥ देवआपसानुजदुबाहुकुलराक्षसषयकर ॥ पुनिसहायइहांमिलेआइवनचारीवानर ॥ संसारसुपौरुषसाध्यसब. परिकरनाहिप्रमानियैं ॥ कृतसिद्धिहेतनरहरसुकवि, पूरनफलपहिचानियैं ॥ ४ ॥ कुलराक्षसभयकरीयअमरआनंदउपज्जीय ॥ संकलंकलंकेसविकलजियआसाविवार्जिय ॥ मयतनयाअहवत्तआसउरछुट्टिउदासीय ॥ घटिविलासघरघरनिघेरवनितापुरवासीय ॥ आगमअभंगअवधेसकौ, विदितबातजगवित्थरीय ॥ कपिभालप्रबलदलरामके, आनिसिंधुतटउत्तरीय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ परमितिअष्टादशपदम । कपिदलभालअसंक ॥ तेसबआएसिंधुतट । लैनहारगढलंक ॥ १ ॥ देषिगएसोइदूतदग । रावनकेदलराम ॥ सुपैवातलंकासुनी । मानहुवज्रविराम ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ घरघरपुरलंकायहैघेर ॥ वससोचसबैसंध्यासवेर ॥ दिनरात्रिदुसहानिद्रानननैन ॥ विस्मयगतकाहुनफुरतबैन ॥ यहदसाभईजबलंकआइ ॥ जुवतीसत्रासरनिवासजाइ ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ मंदोदरिआगेकहतिमूल ॥ सुनिदूतवातउरउठतसूल ॥ आगमनरामउरपरिउद्राव ॥ सुनिहोतअसुरत्रीयगर्भस्राव ॥ इहांआयोहनुमतदूतएक ॥ वँहिकरेकर्मदुस्सहअनेक । विपरीतकालवर्ततविहाल ॥ विललातवृद्धजनतरुनबाल ॥ करिसंधिरामसौंदेहुसीत ॥ भुजपकरिकहौपतिसौंअभीत ॥ पटरानीतुमआपुनप्रवीन ॥ यहमंत्रआजतुमहीअधीन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मंदोदरिदैवचनमान ॥ सबकरीविदाकरिसमाधान ॥ इहिंसमयदसाननग्रेहआइ ॥ सनमुषमिलिमंदोदरिसुभाइ ॥ थितिभएजुदंपतमध्यथान ॥ विस्तारमंत्रहितिचितविधान ॥ नृपनीतिकंतसुनीयैनिदान ॥ भयहोतलोकअंतरभयान ॥ आगमनरामउतपतिअलाभ ॥ रजनीचरगृहनीगिरतगाभ ॥ उरतजिहुरोषअरुकरहुएहु ॥ दुखटरैरामकँहँसीयदेहु ॥ पुनिपूतबंधुपूछहुप्रधान ॥ पुरलोकवृद्धजेबुधिप्रमान ॥ कुलकंजाविपिनतवदाहकारि ॥ यहआइसियाउत्तरबयारि॥दीनैविनुसीताअवरदाउ॥विधिरुद्रहुनहिअपनौबचाउ ॥ आवैनरामसामुद्रवार ॥ चिततौलौंकरियैयहविचार ॥ रावणउवाच ॥ तवबोल्यौरावनकीयैटेक ॥ अहंकारप्रगटत्रैलोकएक ॥ अबलायहजातिसुभावअंक ॥ सुषहीमैंहँसूचतिडरससंक ॥ अंतकबसमर्कटकटकआइ ॥ आसुरसबषैहैतिनअघाइ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ कंपततीन

भुवनममभयकारि ॥ सोचकरैक्यौंताकीसुंदरी ॥ यहसुनिव्हैहैलोकउदासी ॥ हैश्रनहितसौं करिहैहासी ॥ **मंदोदरीवाक्यं** ॥ **दोहा** ॥ दृष्टिहुतीतबरूपरत । पुनिश्रापुनवलवंत ॥ तोरिसरासनशंभुको । सीतावरीनकंत ॥ १ ॥ चोरिजुलाएरामत्रीय । साजिकपटमुनिवेश ॥ बईमीचकीवेलिसो । लंकमाँझलंकेश ॥ ३ ॥ बालिबलीपरदोषजिहिं । रनमाख्योक रिरोष ॥ क्यौंवचिहैतुमसौंकहो । जिहिशिरश्रपनौदोष ॥ ४ ॥ जिनकीधनुरेषालनक । लांघीगईनराज ॥ उनसौंरनसागरश्रगम । क्यौंलांघहुगेश्राज ॥ ५ ॥ जिहिंतोख्योकोदंडहर । मानसुरासुरमोरि ॥ सोकहातेरौंलंकगढ । सकिहिनछनमहैंतोरि ॥ ६ ॥ ॥ **छंद द्विश्रक्षरी** ॥ ॥ जगतईसताश्रापहिजानत ॥ श्रतिहिगुमानहितउरश्रानत ॥ वातनसुनतकंतश्रहमितिबल ॥ फिरिश्रघाइहौताकेफल ॥ मनश्रतिमंदोदरिमुरझानी ॥ विधिविपरीतवातसबजानी ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ श्रतिहिगर्वजुतबाहरश्रायो ॥ बैठिसिंघासनछत्रबनायो ॥ इहांसचिवसुतबंधवश्राए ॥ निजनिजभावबैठिसिरनाए ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ तहाँकुंभकरणश्रायौश्रभीत ॥ वंदनकृतरावनकहँविनीत ॥ श्रग्रजसमीपबैठ्योसुभाइ ॥ सबसुनीदूतवातैंसुभाइ ॥ ॥ **कुंभकर्णउवाच** ॥ ॥ नृपनीतिकहनलाग्योनदान ॥ सुनियैप्रभुव्हैछनसावधान ॥ श्रारंभकख्योतुमकर्मएह ॥ हैनासहेतसोनिस्संदेह ॥ देषततुमरामहिमनुषदेह ॥ श्रव्ययश्रनंतभगवंतएह ॥ सीताहैलक्ष्मीश्रादिसोइ ॥ हरिमहाप्रीयानारीनहोइ ॥ हैराक्षसमूलविनासहेत ॥ मीनहिज्यौंबनसीपलसमेत ॥ तुमसबैंनिपुनविद्यानिधान ॥ इहिंसमयकहाकोउकहैश्रान ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ तुमश्रापुनसमुझतसकल । कहींकरतनहिंकानि ॥ परत्रीयहरिश्रानीप्रथम । जादिनमीचनजानि ॥ १ ॥ जिहिंबलतुमजीत्योजगत । सुतौवितीत्यौंश्राज ॥ श्रबतौताकौसोचकह । श्रानिबनीजबराज ॥ २ ॥ जिहिकाढेचौदहरतन । षीरसमुद्रमँथाइ ॥ सोइहिंछुद्रसमुद्रकहा । सकैंनसेतबंधाइ ॥ ३ ॥ **रावणउवाच** ॥ ॥ काचीनिद्रातुमहिकिहि । श्रधमजगाएश्राज ॥ श्रौंघसतावतहैश्रधिक । सयनकरहुसुषसाज ॥ ४ ॥ कहामनुषकपिधौंकहा । जानहुषेचरसाज ॥ करिकरितिनकौउतकरष । कुंभडरावतश्राज ॥ ५ ॥ भक्षभूतहमभोगता । नरवानरयहन्याय ॥ बांधेरसरीकालकी । एघरबैठेश्राय ॥ ॥ **कुंभकर्णउवाच** ॥ ॥ देष्योरावनकौश्रदिन । हितउपदेसनहोइ ॥ जिहिऐसीभवतव्यता । कहाकरैश्रबकोइ ॥ ७ ॥ **छंदद्विश्रक्षरी** ॥ ॥ याहीसमयविभीषनश्रायो ॥ बैठ्योजहांप्रभुश्राइसपायो ॥ ॥ **इंद्रजीतउवाच** ॥ ॥ इंद्रजीतबोल्योश्रधिकारी ॥ नरवानरनहिंदृष्टिहमारी ॥ राममनुष्यसुभक्षहमारे ॥ वानररीछकितेतविचारे ॥ स्वामिदेहुश्राज्ञालंकेसुर ॥ करहिश्रवनितौश्रनरश्रवानर ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ दशशिरइहांश्रनुसासनदीनै ॥ निजमंत्रीतुमसबेप्रवीनै ॥ करिवौश्राजसुसबमिलिकहियै ॥ रोषमानिनहिचुपकरिरहियै ॥ कारिजकेश्रागमजोकीजै ॥ मंत्रवहैउत्तममानीजै ॥ परेमूंडतबमंत्रप्रकासै ॥ भवसोपैमतमध्यमभासै ॥ वीतेकाजजुमंत्रविचारै ॥ वहैश्रधममतजगतउचारै ॥ श्राजमंत्रकरियैसोइउत्तम ॥ तत्वजानस्वामीहितहौतुम ॥ ॥ **प्रहस्तउवाच** ॥ ॥ तुमहिरामकैसौरावन ॥ सुरसुरराजहीसो

ञ्चिसतावन ॥ जीतिकुबेरजथातुमजान्यौ॥अरुषसोटिपुहपकरथआन्यौ॥जमतुमजयौदुस
हदुषदीनो ॥ कालदंडकोभयनहिंकीनो ॥ कोउतुमसौंबलवरुणनकीनो ॥ दुपरीभवतुम
ताहूदीनो ॥ प्रगटअसुरमयकुंवरिप्रवीनी ॥ देवतुमहिमंदोदरिदीनी ॥ महासुरासुरजेम
हिमंडल ॥ वर्ततेतवआज्ञावसुतजिबल ॥ शंभुब्रह्मतवसदासहाए ॥ अवरदेवकिंहिगण
नाआए ॥ भटमहँकुंभकर्णतवभ्राता ॥ देवराजदेवनिदुषदाता ॥ इंद्रजीतजेठौसुतअतिब
ल ॥ देवराजबांध्योंजिहिंहितिदल ॥ मानमर्दिवासवमदमोर्यो ॥ छियेचरनतवतबसोइछो
र्यो ॥ ॥ बिभीषणउवाच ॥ ॥ इहांविभीषनलष्योंअमंगल ॥ बोलतसभामूढकरिक
रिबल॥भाग्यदसाननविपरितभांती ॥ सबहिकहतहैठकुरसुहाती ॥ सचिववैद्यगुरकहैसुहा
ई ॥ नीतिदेहनृपधर्मनसाई ॥ इहांविभीषनजुगकरजोरे ॥ मतिअनुसारकहूंकछुमोरे ॥
प्रभुकोजोअनुसासनपाऊं ॥ स्वामीहितउपदेससुनाऊं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरदनिसाभा
दौंसुकल । चौथिचंद्रचितचेत ॥ तासमपरत्रीयमुषपुरुष । हेरतनाहिकिहुंहेत ॥ २१ ॥ का
मक्रोधमदलोभमत । हेजुनर्कशतहेत ॥ सुषजससचाहततजतसो । मनक्रमवचनसमेत ॥
२२॥सृष्टिउपाजकपोषसुषहैनाशहुजिहिंहात॥तासौंवयरविरोधविधि। नीतिकुशलनहिना
थ ॥ २३ ॥ सीयानर्त्रासंभावना ॥ रामननरभुवपाल ॥ प्रभुप्रतिमाभ्रममतपरहु । हैकाहू
कोकाल ॥ २४ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ तौएकोहैकहहुतुम । कारिनिर्णयनिर्धार ॥ पंचभू
तकीप्रवृतिसी । सबदेषतसंसार ॥ २५ ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ परब्र
ह्मरामसंगलषनशेश ॥ सुग्रीवअर्कअंगदसुरेश ॥ नलविश्वकर्मअरुअनलनील ॥ शतबली
वरुणअजअजसुशील ॥ मिलिमयँदद्विविदअश्विनिकुमार ॥ मारुतसोइमारुतिअक्षमार ॥
गजशरभगंधमादनगवाषि॥सोपैकृतांतसुरकहतसाषि॥इत्यादिसबैअमरावतार ॥भवभूत
भयेभुवहरनभार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गोद्विजवेदसहायबपु । निश्चयकृपानिधान ॥ भूमिउता
रनभारभव । भएमनुजभगवान ॥ २६ ॥ सुमतिकुमतिदोउएकसंग । वसातिसबनि
केचित्त ॥ तिनहींकेफलभोगवत । निगमकहतयोंनित्त ॥ २७ ॥ जहांसुमतितहाँ
संपदा । कुमतितहांविपरीत ॥ कालनिशासीअसुरकुल ॥ स्वामिवसीमनसीत ॥ २८ ॥
समयनिहारिविसारिरिस । प्रभुउरधरहुकृपाल ॥ सरनाईपंजरविजय । हैअतिदीनदया
ल ॥ २९ ॥ संधिकरहुरघुनाथसौं । अरुवैदेहीदेहु ॥ भुक्तहुलंकासुषअभय । हेतजन्म
फललेहु ॥ ३० ॥ ऋषिपुलस्तियहमंत्रकारि । सिषिपठयोसमुझाइ ॥ कारनतिहिंमौंसों
कह्यौ । सोमैतुमहिसुनाइ ॥ ३१ ॥ ॥ माल्यवानउवाच ॥ ॥ माल्यवानयहसुनिस
मुझि । पुनिकहिमनसुषपाइ ॥ कहतविभीषनसोकरहु । यहप्रभुश्रेयउपाइ ॥ ३२ ॥
॥ रावणउवाच ॥ ॥ माल्यवानभएवृद्धवय । हैअतिहितूहमार ॥ शत्रुपक्षबोलतजु
ऽ.ठ । देहुनिकासिदुवार ॥ ३३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जबकोप्योदशशिरअसुर ।
अतिअनिष्टगनिएह ॥ माल्यवानसुनिसकुचिमन । गएतबैउठिग्रेह ॥ ३४ ॥ ॥ राव
नउवाच ॥ ॥ कुलदूषनारिपुउतकरष । मोहिसुनावतमूढ ॥ कोनैएमंत्रीकरे । ज्ञानप्र
बोधकगूढ ॥ ३५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अहिजक्षसुरासुरजएआप ॥ ताकोंनरवानर

कहातापकहाताप ॥ एमूढडरावतहमहिआइ ॥ उरसबकैउपजीनीतिआइ ॥ उन्मुकाहिदरासिदाम निआज्ञान ॥ पुनिओसबुंदपावसप्रमान ॥ उलटीकौंचाढतगुमटअंबु ॥ वाघहिज्यौंत्रासदिषाइजंबु ॥ तार्क्षकहँलघुअहिकहतत्रास ॥ वाचतज्यौंमैंडुकअहिविनास ॥ ॥ छंद द्विअक्षरी ॥ ॥ कहतपीपीलकभयज्यौंकुंजर ॥ आनहिआषुदिषावतअतिडर ॥ रज्वा ज्यौंमनिधरअबरेषे ॥ दीनसन्यासीहिमसमदेषै ॥ गहिसंतोषजिहिंराजगँवायौ ॥ उदधिपारकपिदललेआयौ ॥ जगसुभावकातरहैजाकौ ॥ तूंडरकहादिषावतताकौ ॥ भयजोगाइ विप्रसौंभाजैं ॥ सदाअनाथहिमैत्रीसाजै ॥ जाकैनाहिनठौरठिकानौ ॥ मूढकहाताकोभयमानौ ॥ आतुरव्हैलीनीसरनाई ॥ सोपैभयौसुग्रीवसहाई ॥ ॥ बिभीषणउवाच ॥ ॥ कुंभकर्णघननादनकोई ॥ जानिप्रहस्तसहोदरजोई ॥ कुंभनिकुंभतथाअतिकाया ॥ महाप्रचंडध्वजतअतिमाया ॥ सनमुषरामवानरनसोई ॥ किंहूंप्रकारनरहिहैकोई ॥ सभावैठिएसबैसयानै ॥ मारतगालनकालहिमानै ॥ जौलौंलंकनकपिदललाए ॥ ढोइवीरनहींकोटढहाए ॥ गिरितनमानभालकपिगाढे ॥ जौलौंवीरनद्वारैवाढे ॥ अंगदहनूनज्यौंलौंआवहि ॥ चढैकंगूरनिशिलाचलावहि ॥ वनिताशिषानऐंचहिवानर ॥ घनहाहारवहोइनघरघर ॥ रामअमोघवानअनियारे ॥ जौलौंतववपुनहिनविहारे ॥ जौलौं भयौनाहिनगढघेरौ ॥ मानहुप्रभुतौलौंमतमेरौ ॥ उदधिलांघिजौलौंअवधेसर ॥ करहुसंधितौलौंलंकेसर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दुद्धाराअतितेजदृढ । वज्रोपमशुभवान ॥ रामहिसीतादेहुफिरि । जौंलौंलगैनबान ॥ ३६ ॥ हैकुलकीरतितासहठ । सोतजीयैलंकेस ॥ सीतारामसमर्पिसुष । वैभवभजहुविशेष ॥ ३७ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ संधिबतावतमोकहँतूंसठ ॥ हैजगजयौसवैमैंअपहठ ॥ अहंकारमेरोजगऊपर ॥ मानुषशरनजाउंक्यौंडरमर ॥ विनुपूछैहीनीतिविभीषन ॥ उपद्रष्टाहमकौंभएआपुन ॥ मित्रभावपैंशत्रुहमारे ॥ रहतसमीपहोतनहींन्यारे ॥ जातिजातिकोवैरीजानहु ॥ प्रछनविनाशकबुद्धिप्रमानहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सबकहींविभीषननीतिसानि ॥ मनकंटकबातनएकमानि ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दुर्गलंकषाईसमुद्रनिजस्वामिदसानन ॥ सुतभ्राताराक्षससहाइरिसमनहुकालरन ॥ तिंहिविजेतजुगनरवराकप्रतिमातापसपुनि ॥ सचिवसुभटवानरसमूहसोइआइहमहुंसुनि ॥ देष्यौयहपरिगहहास्यपद, अरुमेरेगृहआवनहि ॥ ताकौंभयवारंवारतूं, रेसबदाषतरावनहि ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिबोल्यौरावनरोषपाइ ॥ सठहमहिप्रबोधकभएसहाइ ॥ पोष्यौमैंदैदैकवलपाप ॥ पषसोइशत्रुकीभयौआप ॥ रेलाठतोहिआवैनलाज ॥ अरिकौवढाउज्यौंकरतआज ॥ इहिजगतसुरासुरकवनआहि ॥ जुधभुजबलमैंजीत्यौनजाहि ॥ तपसीनिओरबोलतस्वतंत्र ॥ मोकहँउपदेशतमूलमंत्र ॥ कुलकलँकतूंजुपंडितकहाइ ॥ सोनीतिजाइतपासिनिशिषाइ ॥ लघुभ्रातजानिवांचतलवार ॥ कीरशत्रुपक्षबोलतकुचार ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ सहोदरजोजेठौपितुसमान प्रभुकह्यौसर्वथासोइप्रमान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनितदपिविभीषनबचनसूल ॥

॥ मस्तकलैटेक्यौचरनमूल ॥ पाइहूंपरतकंटकसपाप ॥ इहांदयींविभीषणलातआप ॥
पापिष्टकयौशिरपदप्रहार ॥ भौविकलदेहभूल्यौसँभार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जहांकछूमू
र्छाजगी । ऊठ्यौतबअकुलाइ ॥ हितउपदेसनलातहत । भयौकुसंगप्रभाइ ॥ ३८ ॥
॥ रावणउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ धिकतोकहिरेरक्षकुलाधम ॥ जानतना
हिमूढकोप्यौजम ॥ रिसकरिकह्यौताहितवरावन ॥ इहांदिषाउनवदनअपावन ॥ ॥
॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ कालतृदोषग्रस्योदशकंधर ॥ औषधलगतप्रबोधनऊपर ॥
॥ अथविभीषनश्रीरामशरणचिंतवन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विनुबदलैउपकारअति ।
करतकोशलाधीश ॥ दीनबंधुजाकोविरद । जगतपिताजगदीस ॥ ३९ ॥ चरनकमल
कृतचिंतवन । पैसबछांडिविकल्प ॥ सरनरामजेहूंसुषद । कीनौमनसंकल्प ॥ ४० ॥
इहांबोल्यौरावणअनुज । प्रभुमोहिकीयअपमान ॥ दशशिरसीताविनुदीयै । नहींकल्या
णनिदान ॥ ४१ ॥ सुनहुसभासदबंधुसब । दूषनमोहिनदेहु ॥ ठकुरसुहातीजेकहत ।
अबताकौंफललेहु ॥ ४२ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांआयौगृहआपनै । सकुचिविभी
षनसंत ॥ मंत्रीरावनकेजुमुषि । लीनैबोलितुरंत ॥ ४३ ॥ गयौविभीषनगगनमग । प्र
भुपहसागरपार ॥ महाउपद्रवलंकमहँ । व्हैरह्यौहाहाकार ॥ ४४ ॥ ॥ लोकवाक्य ॥
कह्यौअहितहितकीकहत । घोसफिर्‍योदससीस ॥ भौपूरनविधिदक्षवर । दारुनकालसु
दीस ॥ ४५ ॥ हितवक्ताभ्राताहुतौ । मंत्रीसाधुसुजान ॥ हठितेहूगयौरामपहँ । देहैभेद
निदान ॥ ४६ ॥ घरघरघेरजुसोचघन । भएलोकअतिभीत ॥ देषहुरावनकेआदिन ।
बनीसबैविपरीत ॥ ४७ ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मनमहँ
करतविचारविभीषन ॥ दुसहगएममआएशुभदिन ॥ परिहूंजाइरामपदपंकज ॥ अहि
निसिजिनहिंउपासतभवअज ॥ पदजेगंगागगनपषारे ॥ पुन्यप्रवाहसंगपाउधारे ॥
भईअहिल्यापदरजपावन ॥ निषिलजन्मत्रयतापनसावन ॥ जेकमलाकुचकुंकुममंडित ॥
॥ क्षनकेभजनअषिलदुषषंडित ॥ कपिकुरंगसँगसँगपनकीनौ ॥ दंडकवनविहरतसुष
दीनौ ॥ भाग्यमोहिमाहिमाअतिभाषी ॥ रहिहूंचरनसरनाचितराषी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
॥ जिनपदपावनपादुका । सेवतभरतसुचार ॥ तिनकौंकरिहूंहेतजुत । वंदनवारंवार ॥
४८ ॥ कृतमहिमाममभाग्यकी । जोनहिवरनीजाइ ॥ देषहुंगोतेहिपददुलभ । आज
अघाइअघाइ ॥ ४९ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ यौंचिंततजबनिकटहिआए ॥ प
करेकपिनिजाननहिपाए ॥ ॥ कपिरुवाच ॥ ॥ कोतुमइहांकोनपहँआए ॥ कहाप्र
योजनकोनपठाए ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ भाष्यौहूंरावनकोभाई ॥ आयौसदु
षरामसरनाई ॥ इहांकपिकपिराजापहँआए ॥ सबैविभीषनवचनसुनाए ॥ ॥ सुग्री
वउवाच ॥ ॥ कपिपतिप्रगटरामसैंकीनी ॥ देवसमुझफिरआज्ञादीनी ॥ ॥ श्री
रामउवाच ॥ ॥ कपिपतिइहांउचितसोइकीजै ॥ पुन्यनीतिजिहिंजगतपतीजै ॥ ॥
॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुसमयछांड्यौबंधुकहँ । आजजुहमपहँआय ॥
रचिहैमायाराक्षसी । जोपैचीन्हिनजाय ॥ १ ॥ भेदहमारेकटककौ । सोभ्रातहुसमझाइ ॥

रहैनिरंतरकटकमहँ । करैप्रपंचउपाइ ॥ ५१ ॥ मेलहियाकहनिगडमँह । घनकपि
राषहिघेरि ॥ जोलौंमारहिरावनहि । तौंलौंजाइनफेरि ॥ ५२ ॥ ॥ श्रीरामउवा
च ॥ ॥ करैनषंडनमानक्रम । तजिवौहूनहिंताहि ॥ हमछत्रियकुलनीतिहित । यह
सरनागतआहि ॥ ५३ ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ जोपैहोयहनिसकपट । सूधौसा
धुसुभाइ ॥ जबरावनसीताहरी । ताहीदिनकिनआइ ॥ ५४ ॥ ॥ श्रीरामउवा
च ॥ ॥ मित्रकह्योतुमनीतिमग । सोहमसुन्यौप्रकास ॥ याकेगौरवभंगतैं । होइज
गतउपहास ॥ ५५ ॥ सरनागतकेत्यागतैं । उपजतपापअपार ॥ अबज्यौंत्यौंकरिरा
षिये । मेरैयहहैविचार ॥ ५६ ॥ कोटिविप्रवधदोषहै । जोकाढैसरनाइ ॥ जौयहहोतौ
दुष्टमन । तौंनहींमोपहँआइ ॥ ५७ ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ सांचेहूराषहुस
रन । याकहंप्रभुअपनाइ ॥ कहिसुग्रीवअवधेससौं । अबतौयहैउपाइ ॥ ५८ ॥ ॥
॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ जोपठयौदशशीसयह । भेदलैनचरभाइ ॥ तदपिनहमकं
हंकठिनकछु । यहनिश्चयकपिराइ ॥ ५९ ॥ हनुमतआनहुहाथगहि । जौअसाधजो
साध ॥ भावसुअपनौभुगतहै । अनहितहूआराध ॥ ६० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
चलेसुलैरघुवरवचन । अंगदहनूअभंग ॥ करिबहुआदरकरकरषि । सौलैआएसंग ॥
६१ ॥ कीनौदरसनरामकौ । इहांविभीषनआइ ॥ उपज्यौअतिआनंदउर । नैनरहेज
लछाइ ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ वंसपिता
एकवस्यौजननीउदरवासअग्रजकेसंगदोषअघनिअघायौहुं ॥ दीनानाथदीनबंधूदीनके
दयालदेवदर्सीननवचननिदुरसहदुषायौहुं ॥ भयभीतकहतविभीषनउठाएभुजाकरियेंस
हायरामरावरौकहायौहुं ॥ सरनाइपंजरविजयतुमअवधेसयाहीतैंअनाथपैंसरननाथआ
यौहुं ॥ महावैरबाढ्योमनरावनसौंमिटीमेरुसवैदिनमोसौंसठनिवह्योसरेसोहैं ॥ दीनबं
धुतुमदुषगहनकेदावानलमहादीनआधीनदुषीनकोऊमोसोहैं ॥ पाइनपरतमोहपाइसौं
प्रहारयोपापीमानभंगभयोमनमारिकैमसोसोहै ॥ मोहिनत्रिलोकमांझठौरआजमहारा
जभारीएकरावरेसरनकौभरोसोहैं ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ दंडप्रनामविभीषनकीनें ॥ नाथउठाइकरषिकरलीनें ॥ गनिनिजभक्तसुउरहिलगायौ
॥ विहिप्रभुकृपापरमसुषपायौ ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ विगतपापतहांबोलिविभी
षन ॥ जयतिदयालदेवपालकजन ॥ देषिदेषिछविउपजतआनंद ॥ नैनदयालविसा
लकोकनद ॥ स्यामगातअतिअतुलितसोभा ॥ लक्षनतनमनमथमनुलोभा ॥ भृकुटि
त्रिरेषजानुलंबितभुज ॥ कोमलअरुनवरनकरपंकज ॥ मध्यभागमृगराजमनोहर ॥ सु
करधनुषनामितविजयीसर ॥ सिरजटजूटवसनवनसुंदर ॥ विकसितकुसममालवनिउर
वर ॥ वदनप्रसन्नसहासविराजित ॥ भूपअनूपरूपछविभ्राजित ॥ ॥ विभीषनस्तु
ति ॥ ॥ आदिवराहजयतिअषिलेसुर ॥ दंतअंतउर्वीधरिउद्धार ॥ जयसनकादिकर्म
तपकारक ॥ बालदसात्रैलोकविहारक ॥ कृतअवतारजज्ञहितकारन ॥ जयजयमषविद्या
विस्तारन ॥ जोगध्यानजयनररनारायन ॥ पीठबदरिकासिद्धिपरायन ॥ कपिलदेवज

यजनहितकारक ॥ साठिसहसनृपपुत्रसंघारक ॥ दत्तात्रेयजयजगसुषदाता ॥ वरदाय कपितमातविष्याता ॥ जयजयऋषभदेवजोगेश्वर ॥ परमविदेहत्रिलोकभ्रमणपर ॥ जयतिदेवध्रुववरदनामजस ॥ तिहिछिनउर्द्धलोकपायौतस॥अषिलईशजयपृथुअवतारा॥ पृथ्वीसोधनृपनीतिप्रचारा ॥ जयहयग्रीवदेवविस्तारन ॥ महाअसुरहयग्रीवामारन॥ जय जयकमठपयोधिप्रवेसन ॥ देवनिअमृतलाभउपदेसन ॥ मच्छजयतिसंषासुरमारन ॥ वेदविमलत्रयपुरविस्तारन ॥ जयप्रहलादप्रतिज्ञापालक ॥ कालनृसिंघअसुरघरघालक ॥ जयकारनवामनबलिजाचे ॥ रीझिसत्यताहीसौंराचे ॥ जयगजग्राहमहाग्रहमोचन ॥ चारिभुजाहरिपंकजलोचन ॥ जयतिहंसविधिसोचविनासन ॥ मायाब्रह्मप्रकासप्रकासन ॥ ईसजयतिजयमनुअवतारा ॥ प्रकटभएदशचारिप्रकारा ॥ जयधन्वंतरिजगताजिवावन ॥ निजऔषधबलरोगनसावन ॥ जयद्विजरामउग्रअवतारा ॥ करिनिछत्रभुवमारिकुठारा ॥ जयजयव्यासपुरानप्रकासे ॥ विधिश्रोताअज्ञानविनासे ॥ अबभवतव्यसुनौअवतारा ॥ पुरुषपुरातनजथाप्रकारा ॥ जयजयदेवकृष्णजदुराए ॥ घोषउपद्रवनिषिलनसाए ॥ जयतिबौधमतिअसुरभ्रमावन॥ नियतविविधमषक्रियानसावन ॥ जयजयकल्किदुष्टषयकारक ॥ वेदमर्जादधर्मविस्तारक ॥ सोतुमरामअनंतअवधेसुर ॥ जगतकरनजगसरनजगतगुरु ॥ जयजयजगकर्ताजगजेता ॥ सुषवनविहरतअनुजसहेता॥जयजयजनकसुतामनरंजन ॥ भक्तवत्सलप्रनतारतिभंजन ॥ जयजयगोकुलद्विजहितकारी॥जयहरहितवृंदाव्रतहारी ॥ जयजयमुरमधुकैटभमारन ॥ विमलरूपउरशंभुविहारन ॥ जयजयपरमपुरुषजगपावन ॥ विधिहरसुरत्रयतापनसावन ॥ सीतापतिजयकरुणासागर ॥ जयतिजयतिरघुवंसउजागर ॥ जयतिजयतिप्रभुभक्तकारन ॥ ईससुकविनरहरउद्धारन ॥ देवविभीषनकहँसुषदायक ॥ लैवैठारिजथाथितलायक ॥ ॥ इतिस्तुति ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ हमराक्षसतामसमयदेही ॥ सुपनेहुभएनधर्मसनेही ॥ आदिजन्मतामसआराध्यौ ॥ साधभावअबलौंनहिसाध्यौ ॥ सबदिनरह्यौकुसंगतिसंगा ॥ पैंनकर्यौकहूंसाधप्रसंगा ॥ हमसमअधमनकोउजगमाँही ॥ जिनकहँपापकरतभवजाँही ॥ पापातमवसरुधिरपलासी ॥ हिंसाप्रानसाधसौंहासी ॥ सबैअकर्मअविद्यासाधी ॥ अबलौंनीतिनहिनआराधी ॥ ऐसेहुजपैसरनप्रभुआयो ॥ लेकरग्रहितउकंठलगायौ ॥ यहतौतबमहिमाअधिकाई ॥ आदिअंतरघुकुलचलिआई ॥ जगतअनाथनहींकोउजाके ॥ तुमप्रभुभएसहाइकताके ॥ भगतिहीनरावनकौभाई ॥ सरनहेततउभएसहाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विनयदीनतासुनीयहवानी ॥ इहांरघुनाथदयाउरआनी ॥ कहिलंकेसतिलकसिरकीनो ॥ दुर्लभराजविभीषनदीनो ॥ षनमहकीयलंकेसाविभीषन ॥ प्रभुरघुवंसधन्यमहिमापन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावनकाटेसीसदस । करिकरिहोमजुकीन ॥ सोलंकादसरथसुतन । देवसरनहितदीन ॥ ६१ ॥ विधिकृतकीनौतपविसम । मस्तकज्वलनजलाइ ॥ रावनवरषसहस्रदश । पुनिलंकागढपाइ ॥ ६२ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वर्षसहस्रदसतपविशेषकीनौदशकंधर ॥ करनिकाटिसिरहोमकरेदशवारअर्पकर ॥ देवब्रह्मतबव्हैदयालदरसनतिहिदिन्नौ ॥ करिसंभा

रकरुनाअपारलंकेसुरकिन्नौ ॥ सोइधन्यरामपौरुषसुकर, हठिछिनइक्कहिसरनहित ॥ वढी कीर्तिजुलंकविभीषनहि, अनलिन्नौदिन्नीयहउचित ॥ १ ॥ जादिनपंथपदचारपट्टपरिधा नतुचातर॥ सयनअवनिसत्थरीयअजिनडासनताउप्पर॥मिलिभोजनफलमूलभस्मअंग रागसुभंतीय ॥ जुतकिरिटचटजूटमृगजुकपिसभामिलंतिय ॥ कृतउद्धयहैनरहरसुकवि, रामचंद्रदिगविजितरन ॥ हितरीझसुदानबिभीषनहि, देवलंकदिन्नीयतादिन ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहाँविभीषनआपनौ । कस्योरामदैलंक ॥ ताकेनासेअदिनतब । उघरिभालसु नअंक ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ धरिअगजगगहिवसुंधरा । गगनअर्कउडुराज ॥ थिरज गजौलौंममकथा । रहूविभीषनराज ॥ ६४ ॥ कृपासिंधुयहवचनकहि । अरुकरगहिअ पनाइ ॥ जानिदुषितअतिदीनजन । सोराष्योसरनाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउ धोर ॥ ॥ इहिंसमयश्रीरघुराइ ॥ सबबैठिमंत्रसुभाइ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ वि धिपूछितहांरघुवीर ॥ तुमसबैबुद्धिसधीर ॥ कपिराजउद्यमकाज ॥ इहांउचितकही येआज ॥ अतिभ्रमणनीरअगाध ॥ बहुधासुपंथबाध ॥ अहिकमठमकरअमान ॥ जलग्राहतंतीयजान ॥ झषसूसिकुंभीयजोर ॥ इत्यादिनाहिनओर ॥ दलप्रबलपंथनदीस ॥ क्यौंलँघहिसिंधुकपीस ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ दीयकीसयतिउपदेस ॥ सरअनलत बअवधेस ॥ मुक्कहुसुसिंधुमझारि ॥ जलसोषिषलजीयजारि ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ प्रभुकरहुएकउपाइ ॥ सठसिंधुकहसमझाइ ॥ तबआदिकुलगुरुएहु ॥ द्विजजानिशिष्या देहु ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ मतयहीलषनमानि ॥ हमजाचिनाहिनजानि ॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांअनुजकहँसमझाइ ॥ अवधेसजलतटआइ ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ करदर्भआसनकीन ॥ प्रभुतहांबैठप्रवीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तजीविभीषन लंकतब । पाछैदूतपठाइ ॥ तिनसबलीनैसोधतहां । उलटिलंकफिरिआइ ॥ तिनकहँपूछ तलंकपति।भ्राताकेसबभेद॥गयौउहांतजिलंकगढ । दुष्टजुकुलउच्छेद॥६७॥कहेदूतकपिक टककेसमाचारसमझाइ॥तिलककस्योरघुनाथतहां॥६८॥लंकबिभीषणपाई। उनकेमर्कटसे नमय ॥ यहमैसुन्यौअसेस ॥ तहांविभीषनभ्राततब । कहीयतहैलंकेस ॥ ६९ ॥ हासि बोल्यौरावनइहां । वातसुनीसविषाद ॥ उहांजायनिर्लज्जवहि । पायौबुद्धिप्रसाद ॥ ७० ॥ ॥ करतठठोलीभालकपि । कहितार्कहँलंकेस ॥ ज्यौंकोउहोरिरावकरि । सबनरहसतनरे स ॥ ७१ ॥ कहिवेकेलंकेसहैं । काजनसरिहैकोइ ॥ कहिकहिराजाघूघकँहँ । हांसीजग महंहोइ ॥ ७२ ॥ कहौउलंघनउदधिकौं । चिंततकहाविचार ॥ विधिहूंकरतजुनावनै । इहांकोऊउपचार ॥ ७३ ॥ आयौकपिजुनिसीथइहां । कर्मचोरकरिचूर ॥ उनकेम र्कटकटकमहं । सुपैकहावतसूर ॥ ७४ ॥ मास्योअक्षसुबालवय । तरुतोरेजडतास ॥ ताकौमारुतिजाइतहां । पौरुषकस्योप्रकास ॥ ७५ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ पूछिमंत्रतव भ्रातपह । आपउदधितटआय ॥ पंथसुजाचतपायपरि । बैठेडाभडसाय ॥ ७६ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ कर्मसन्यासीरामकौ । पौरुषबलहमपाइ ॥ पास्यौधरनासिंधु पर । अरुमचलतइहांआइ ॥ ७७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वासरतीनजुवित्तिगय ।

यजनहितकारक ॥ साठिसहसनृपपुत्रसंघारक ॥ दत्तात्रेयजयजगसुषदाता ॥ वरदाय कपितमातविष्याता ॥ जयजयऋषभदेवजोगेश्वर ॥ परमविदेहत्रिलोकभ्रमणपर ॥ जयतिदेवध्रुववरदनामजस ॥ तिहिंछनउर्द्धलोकपायोतस॥अषिलईशजयपृथुअवतारा॥ पृथ्वीसोधनृपनीतिप्रचारा ॥ जयहयग्रीवदेवविस्तारन ॥ महाअसुरहयग्रीवामारन ॥ जय जयकमठपयोधिप्रवेसन ॥ देवनिअमृतलाभउपदेसन ॥ मच्छजयतिसंषासुरमारन ॥ वेदविमलत्रयपुरविस्तारन ॥ जयप्रहलादप्रतिज्ञापालक ॥ कालनृसिंघअसुरघरघालक ॥ जयकारनवामनबलिजाचे ॥ रीझिसत्यताहीसौंराचे ॥ जयगजग्राहमहाग्रहमोचन ॥ चारिभुजाहरिपंकजलोचन ॥ जयतिहंसविधिसोचविनासन ॥ मायाब्रह्मप्रकासप्रकासन ॥ ईसजयतिजयमनुअवतारा ॥ प्रकटभएदशचारिप्रकारा ॥ जयधन्वंतरिजगतजिवावन ॥ निजऔषधबलरोगनसावन ॥ जयद्विजरामउग्रअवतारा ॥ करिनिछत्रभुवमारिकुठारा ॥ जयजयव्यासपुरानप्रकासे ॥ विधिश्रोताअज्ञानविनासे ॥ अबभवतव्यसुनौअवतारा ॥ पुरुषपुरातनजथाप्रकारा ॥ जयजयदेवकृष्णजदुराए ॥ घोषउपद्रवनिषिलनसाए ॥ जयतिबौधमतिअसुरभ्रमावन ॥ नियतविविधमषक्रियानसावन ॥ जयजयकल्किदुष्टषयकारक ॥ वेदमर्जादधर्मविस्तारक ॥ सोतुमरामअनंतअवधेसुर ॥ जगतकरनजगसरनजगतगुरु ॥ जयजयजगकर्ताजगजेता ॥ सुषवनविहरतअनुजसहेता॥जयजयजनकसुतामनरंजन ॥ भक्तवत्सलप्रनतारतिभंजन ॥ जयजयगोकुलद्विजहितकारी॥जयहरहितवृंदाव्रतहारी ॥ जयजयमुरमधुकैटभमारन ॥ विमलरूपउरशंभुविहारन ॥ जयजयपरमपुरुषजगपावन ॥ विधिहरसुरत्रयतापनसावन ॥ सीतापतिजयकरुणासागर ॥ जयतिजयतिरघुवंसउजागर ॥ जयतिजयतिप्रभुभवकृतकारन ॥ ईससुकविनरहरउद्धारन ॥ देवविभीषनकहँसुषदायक ॥ लैंबैठारिजथाथितलायक ॥ ॥ इतिस्तुति ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ हमराक्षसतामसमयदेही ॥ सुपनैहुभएनधर्मसनेही ॥ आदिजन्मतामसआराध्यौ ॥ साधभावअबलौंनहिसाध्यौ ॥ सबदिनरह्यौकुसंगतिसंगा ॥ पैंनकर्योकहूंसाधप्रसंगा ॥ हमसमअधमनकोउजगमाँही ॥ जिनकहँपापकरतभवजाँही ॥ पापातमवसरुधिरपलासी ॥ हिंसाप्रानसाधसौहासी ॥ सबैअकर्मअविद्यासाधी ॥ अबलौंनीतिनहिनआराधी ॥ ऐसैहुजपैसरनप्रभुआयौ ॥ लेकरग्रहितउकंठलगायौ ॥ यहतौतबमहिमाअधिकाई ॥ आदिअंतरघुकुलचलिआई ॥ जगतअनाथनहींकोउजाकै ॥ तुमप्रभुभएसहाइकताकै ॥ भगतिहीनरावनकौभाई ॥ सरनहेततउभएसहाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विनयदीनतासुनीयहवानी ॥ इहांरघुनाथदयाउरआनी ॥ कहिलंकेसतिलकसिरकीनौ ॥ दुर्लभराजविभीषनदीनौ ॥ षनमहकीयलंकेसविभीषन ॥ प्रभुरघुवंसधन्यमहिमापन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावनकाटेसीसदस । करिकरिहोमजुकीन ॥ सोलंकादसरथसुतन । देवसरनहितदीन ॥ ६१ ॥ विधिकृतकीनौतपविसम । मस्तकज्वलनजलाइ ॥ रावनवरषसहस्रदश । पुनि लंकागढपाइ ॥ ६२ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वर्षसहस्रदसतपविशेषकीनौदशकंधर ॥ कर निकाटिसिरहोमकरेदशवारअर्पकर ॥ देवब्रह्मतबव्हैदयालदरसनतिहिंदिन्नौ ॥ करिसंभा

रकरुनाअपारलंकेसुरकिन्नौ ॥ सोइधन्यरामपौरुषसुकर, हठिछनइक्कहिसरनहित ॥ वढी कीर्तिजुलंकविभीषनहि, अनलिन्नौदिन्नीयहउचित ॥ १ ॥ जदिनपंथपदचारपट्टपरिधा नतुचातर॥ सयनअवनिसत्थरीयअजिनडासनताउप्पर॥मिलिभोजनफलमूलभस्मअंग रागसुभंतीय ॥ जुतकिरीटचटजूटमृगजुकपिसभामिलंतिय ॥ कृतउद्धयहैनरहरसुकवि, रामचंद्रदिगविजितरन ॥ हितरीझसुदानबिभीषनहि, देवलंकदिन्नीयतदिन ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहाँविभीषनआपनौ । कह्योरामदैलंक ॥ ताकेनासेअदिनतब । उघारिभालसु नअंक ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ धरिअगजगहिवसुंधरा । गगनअर्कउडुराज ॥ थिरज गजौलौंममकथा । रहूविभीषनराज ॥ ६४ ॥ कृपासिंधुयहवचनकहि । अरुकरगहिअ पनाइ ॥ जानिदुषितअतिदीनजन । सोराष्योसरनाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउ धोर ॥ ॥ इहिसमयश्रीरघुराइ ॥ सबबैठिमंत्रसुभाइ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ वि धिपूछितहांरघुवीर ॥ तुमसबैबुद्धिसधीर ॥ कपिराजउद्यमकाज ॥ इहांउचितकही येआज ॥ अतिभ्रमणनीरअगाध ॥ बहुधासुपंथवाध ॥ अहिकमठमकरअमान ॥ जलग्राहतंतीयजान ॥ झषसूसिकुंभीयजोर ॥ इत्यादिनाहिनओर ॥ दलप्रबलपंथनदीस ॥ क्यौंलँघहिसिंधुकपीस ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ दीयकीसयतिउपदेस ॥ सरअनलत बअवधेस ॥ मुक्कहुसुसिंधुमझारि ॥ जलसोषिषलजीयजारि ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ प्रभुकरहुएकउपाइ ॥ सठसिंधुकहसमझाइ ॥ तबआदिकुलगुरुएहु ॥ द्विजजानिशिष्या देहु ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ मतयहीलषनमानि ॥ हमजाचिनाहिनजानि ॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांअनुजकहँसमझाइ ॥ अवधेसजलतटआइ ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ करदर्भआसनकीन ॥ प्रभुतहांबैठप्रवीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तजीविभीषन लंकतब । पाछैदूतपठाइ ॥ तिनसबलीनैसोधतहां । उलटिलंकफिरिआइ ॥ तिनकहँपूछ तलंकपति।भ्राताकेसबभेद॥गयौउहांताजिलंकगढ । दुष्टजुकुलउच्छेद॥६७॥कहेदूतकपिक टककोसमाचारसमझाइ॥तिलककरयोरघुनाथतहां॥६८॥लंकाबिभीषणपाई। उनकेमर्कटसे नमय ॥ यहमैसुन्योंअसेस ॥ तहांविभीषनभ्राततब । कहीयतहैलंकेस ॥ ६९ ॥ हासि बोल्यौरावनइहां । वातसुनीसविषाद ॥ उहांजायनिर्लज्जवहि । पायौबुद्धिप्रसाद ॥ ७० ॥ ॥ करतठठोलीभालकपि । कहिताकैंहँलंकेस ॥ ज्यौंकोउहोरिरावकरि । सबनरहसतनरे स ॥ ७१ ॥ कहिवेकेलंकेसहैं । काजनसरिहैकोइ ॥ कहिकहिराजाघूघकैंहँ । हांसीजग महंहोइ ॥ ७२ ॥ कहोउलंघनउदधिकौं । चिंततकहाविचार ॥ विधिहूंकरतजुनाबनै । इहांकोऊउपचार ॥ ७३ ॥ आयोकपिजुनिसीथइहां । कर्मचोरकरिचूर ॥ उनकेम र्कटकटकमहं । सुपैकहावतसूर ॥ ७४ ॥ मार्योअक्षसुबालवय । तरुतोरेजडतास ॥ ताकोंमारुतिजाइतहां । पौरुषकर्योप्रकास ॥ ७५ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ पूछिमंत्रतव भ्रातपह । आपउदधितटआय ॥ पंथसुजाचतपायपरि । बैठेडाभडसाय ॥ ७६ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ कर्मसन्यासीरामकौ । पौरुषबलहमपाइ ॥ पार्योधरनासिंधु पर । अरुमचलतइहांआइ ॥ ७७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वासरतीनजुवित्तिगय ।

रामकरतमनुहारि ॥ जानिसमुद्रहिदीनद्विज ॥ रहेविचारिविचारि ॥ ७८ ॥ जगप्र
सिद्धजडभावजल । नहिंमानतमनुहारि ॥ उठिलक्ष्मनअकुलाइइहां । सरकोदंडसंभारि
॥ ७९ ॥ उरपरित्रासससमुद्रअति । जानिविकलजलजीव ॥ अंतरद्दगअविलोकिउर ।
देषेरामदईव ॥ ८० ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ इहांउदधिद्विजधरदेह ॥ निजरामभक्ति
सनेह ॥ अन्नेकरत्नउदार ॥ थितकरेकनकसुथार ॥ उपहारदीयअनेक ॥ विधिजुक्त
विहितविवेक ॥ ॥ सिंधुरुवाच ॥ ॥ अरुकरीप्रणपतिएव ॥ दशकंधभयमुहिदेव ॥
इहिंहेतकरिअज्ञान ॥ कछुसुन्योनाहिनकान ॥ अनउचितकर्मअनेस ॥ ममछमहुराम
नरेस ॥ अबकरहुएकउपाइ ॥ सुषलँघहुनीरसुभाइ ॥ नलनीलपुहविप्रसंस ॥ एविश्व
कर्माअंस ॥ सोरचहुजलपरसेत ॥ मिलिजूथजूथसमेत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपितिन्ह
ऋषिसेवाकरी । पुनिऐसौवरपाइ ॥ पाथरकरिहौंकापरस । सोइजलतरहिसुभाइ ॥ ८१ ॥
पेषियहैभावीप्रगटआगेहीलखिआप ॥ करुनानिधिकारनकरन । प्रभुसबरामप्रताप ॥
॥ ८२ ॥ अरुदुषकहतजुआपनौ । सुनियैअवधिनरेस ॥ मेरैउत्तरतटवसत । करतअनी
तिअसेस ॥ ८३ ॥ हैद्रुमकलपजुथलइहां । अषिलवसतआभीर ॥ तिनहीचलावहुराम
तुम । तेजअनलमयतीर ॥ ८४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अनलबानअकर्षिइहां । मो
च्यौराममुरारि ॥ उत्तरतटवासीअधम । जोसबआयोजारि ॥८५॥ कृतजुपराक्रमरामकौ
। सागरदेषिअसेष ॥ सुरकारिजकीसिद्धिसव । बनीसुनियतविशेष ॥ ८६ ॥ ॥ सिंधु
रुवाच ॥ ॥ रामसुजसरावनमरन । पुरीबिभीषनपाइ ॥ लंकाटुटनसीयमिलन । अव
धिनिकटप्रभुआइ ॥ ८७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जलनिधिकह्योप्रवेसजल । दैरामहि
उपदेस ॥ कारनसागरसेतकौ । निश्चयकह्योनरेस ॥ ८८ ॥ ॥ अथश्रीरामेश्वरस्था
पनं ॥ ॥ रामेश्वरशिवथापना । इहांकरीरघुराय ॥ सेतमूलशुभसिंधुतट । वेदप्रनीतव
नाय ॥ ८९ ॥ पूजाअर्चाप्रेमपन । सबविधिकरेसुभाइ ॥ श्रीरामेश्वररामके । सोईभए
सहाइ ॥ ९० ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ सेतबंधरामेशकौ । करिहैदरशनकोइ ॥ जो
द्विजघातकपातकी-। इहांहतकल्मषहोइ ॥ ९१ ॥ करिदरशनरामेसकौ ॥ अरुसमुद्रअ
न्हाइ ॥ पुनिजैहैवाराणशी । जुतसंकल्पसुभाइ ॥ ९२ ॥ ल्यावैगंगानीरफिरि । शिवशि
रधारादेइ ॥ मेलैशेषसमुद्रमहँ । लाभजन्मफललेइ ॥ ९३ ॥ ताकँहँगतिप्रापतितहां ।
दैवीनिस्संदेह ॥ श्रीरघुनाथसुरासुरनि । उपदेस्यौप्रभुएह ॥ ९४ ॥ ममसेवकहरसौंवि
मुष । हरभ्रतममनसनेह ॥ सष्ठिसहस्त्रनिवर्षसो । दुषहिनकंभजिदेह ॥ ५ ॥ ॥ कपय
ऊचुः ॥ ॥ उमगेजूथपजूथइहां । आज्ञामांगीआइ ॥ करियैबंधनसेतकौ । लंकादैहिढहा
इ ॥ ९६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांजुरघुकुलइंद्रकौ । पूरनआइसुपाइ ॥ सेतबंध
कारनसकल । उद्यमकीनौआइ ॥ ९७ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥
कपिबोलितहांनलनीलहितकरिदेवयहआग्यादई ॥ बलबुधिकरिकरिसेतबांधहुमहादढप
र्वतमई ॥ जलसीसप्रबलपषानजोरहुअषिलगिरिउत्तंगए ॥ कपिकरहुभुजबलमिलिजु
क्रीडाआपआपअभंगए ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मिलिनीलनलबलअतुलमर्कटसेत

सागरसज्जए॥कल्लोलजलबढिभ्रमणभयकरगहरचहुंघांगज्जए॥ कपिभालधरउछालकरिक
रिकेलिज्यौंकंदुककरैं ॥ धरिपानिपानिअमानभूधरधाइनलत्र्प्रागैधरैं ॥ बलसुभटमिलियौं
सेतबांधतअतुलपौरुषअंगए॥ पथगगनभूब्रह्मंडपूरितसमरसूरसुसंगए ॥ मिलिप्रबलरा
मप्रतापमहिमातारिउपलातिहिताल ॥ जलउपरपुरइनिपत्रजैसेलसतपर्वतमाल ॥ जेसलि
लबोरतसिलासंगीसहजजातिसुभाव ॥ तेतरतआपुनअवरतारतप्रगटरामप्रभाव ॥ दो
हा ॥ ॥ कपिकौंगिरिउपजीविका । सोजानतसंसार ॥ कपितेमेलतकरकरषि । यातेतरतअ
पार ॥ ९८ ॥ हैलघुतालघुसंगते । यहजुनीतिउपदेस ॥ तातैंगिरलागेतरन । पाथरनीर
प्रवेस ॥ ९९ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ दसचारिजोजनप्रथमहींदिनसेतबांधिसुभाइ ॥
बढिवीसजोजनद्वितीयवासरविविधभांतिबनाइ ॥ जुरितृतीयदिनइकईसजोजनहरषिचि
त्तहिहोइ ॥ चवदिवसजोजनसेतरचिरचिदुगमवीसवीसरुदोइ ॥ मिलिवीसत्रयतहादि
वसपंचमहोयकृतसुरहेत ॥ जसरामप्रगटीयबंधजलनिधिसमविषमसोईसेत ॥ दोहा ॥
आदिअंतसौंसेतयह । पूरनभयौप्रमान ॥ शतजोजनदीरघसुषद । मध्यभागदशमान
॥ १०० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अगमसेतबंधयौकपिनिअतिविक्रमाकिन्नौ ॥ अमरअ
षिलआनंददाहकंटकउरादिन्नौ ॥ सरनआइअनसमयलंकविभ्भीषनलिध्धीय ॥ कविनरहर
कहिकीर्तिप्रगटत्रयलोकप्रसिध्धीय । जलजलधितरतरुपत्रज्यौं, कृतअमानपाषानकुल ॥
राजाधिराजरघुनाथकी, यहप्रतापमहिमाअतुल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहाँसुंदरपूरनभयौ ।
देवद्विजनिसुखदाय ॥ भारउतारनभूमिकौ । आगमभयौजुआय ॥ १०१ ॥ ॥ इतिश्री
चतुर्विंशतिअवतारचरित्रेपौरुषेयरामायणेबारहटनरहरदासेनविरचितंसुंदरकांडसंपूर्णं ॥
॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ शुभंभवतु ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

॥ अथलंकाकांडलिष्यते ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आरंभ्यौलंकासमय । रावनरनअधिकार ॥
ग्रहछूटनटूटनजुगढ । कुलराक्षसषयकार ॥ १ ॥ ॥ अथसैन्यासेतूलंघनं ॥ ॥ सेत
मूलबैठेसहज । सानुजरामसधीर ॥ कौतुकमर्कटभालकौ । विहसतदेषतवीर ॥ २ ॥
कपिदललांघतसेतकहै । अपनेअपनेभाइ ॥ कूदतगर्जितक्रोधकरि । सब्दननभहिंसमा
इ ॥ ३ ॥ कोउकोउगगनउडातकपि । सेतपंथनसमात ॥ मनहूजलदसमूहमिलि । जलब
रषनकहँजात ॥ ४ ॥ चलेजातजलजंतुचढि । कोउकपिकौतुककाज ॥ मानहुंजलधिअगा
धमहँ । गहिपेलेगजराज ॥ ५ ॥ मकरनिचाढिचालिरींछमिलि । वाटीसोमविभाति ॥ दशकं
धरऊपरदुसह । जमजमातिसीजाति ॥ ६ ॥ रामहिबाढ्योहास्यरस । देषिदेषियहदाव ॥
तारीदैदैहँसततहां । रीझिकरंगकपिराऊ ॥ ७ ॥ वीरभयानकहास्यरस । अद्भुतरौद्रअनेक ॥
अतिकौतुकयाहीसमय । आनिभएसबएक ॥ ८ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ आपउडहिंलैआं
नउपलकुललछनऐसौ ॥ तिनकौंसागरतरनकहौविश्वासजुकैसौ ॥ तेइपर्वतजलतरतवा
रिनिधिलाँघतवानर ॥ परित्रासहाहापुकारघनलंकाघरघर ॥ सुनवानरवारिधिवारिगुन,
इहांसंदेहनआनियें ॥ कारनप्रतापरघुनाथकौं, सोत्रयपुरनिप्रमानियें ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥

कटकपारभयौसेतकहैं । यहदूतनिकहिआइ ॥ सानुजसषासुमंत्रिसब । उतरेराघवराइ ॥९॥ तहांमिलनभौसिंधुतट । आएविजयीवार ॥ परिआतंकजुलंकपुर । प्रतिग्रहपरीपुकार ॥ १० ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ सवैय्या ॥ ॥ प्रभुताविभीषनकीकीरतिकपीसकीसी अंगदकीसिद्धिशुकगातिसतभाईकी ॥ मारुतिकीविजैद्रोणाचलकीविचलताइदेवनकीदसा देवराजशुभदाईकी ॥कुंभकीविनिद्राइंद्रजीतकीविनासकारीतृजटाकीइच्छासुषसीयाकेसहाईकी ॥ कालकीसीपातीसबराकसकीसाढसातीरावनकीमीचआइसेन्यारघुराईकी ॥ १ ॥ ॥ ॥श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कोसलेशकपिभालकहँ । आज्ञादईउदार ॥ कंटकरक्षितवाटिका । वनचरकरहुविहार ॥ ११ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आइसलहिअवधेसकौं । जूथजूथवनजाय ॥ षातमधुरफलअतिहरष । हठिहठिवृक्षहलाय ॥ ॥ १२ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ धसिरीछमर्कटधारि ॥ असुरेसवननिउजारि ॥ कहूंलहतरक्षककोइ ॥ गहितजतताहिविगोइ ॥ तिहिंश्रवननासाकाटि ॥ पुनिकूचमूछउपाटि ॥ मुषकहतजबजयराम ॥ करितजतताहिअकाम ॥ तेभाजिवनरषवार ॥ दशकंधआएद्वार ॥ प्रतिहारलैपहुंचाय ॥ जहांहुतौरावनराय ॥ कृतनाशनाशाकान ॥ वनपालदेषिभयान ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ सठपूंछितिहिलंकेश ॥ कीयवदनकिहिइँहिवेसे ॥ ॥ मालीउवाच ॥ ॥ कहितबैमालीकार ॥ कृतकर्मकपिनविकार ॥ प्रभुसिंधुबंधीयपाज ॥ मिलिकीसभालसमाज ॥ इहिंओरराघवआइ ॥ सुषसिंधुलाँघिसुभाइ ॥ दीयलंकहीयहिमिलान ॥ मिलिकपिनिदलअप्रमान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बढिसोचसुनिसुनिबात ॥ असुरेसएउउतपात ॥ सठगयौउठिरनिवास ॥ वससोचमोचतस्वास ॥ अतिक्रोधजबग्रहआइ ॥ त्रीयलष्यौपतिहिमिताइ ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ मंदोदरिमनमलिनमंत्रहितकरतिपतिहिंमिलि ॥ अनहितवक्ताएजुभाग्यवससभादुष्टमिलि ॥ ब्रह्मरुद्रवरविहितजाहितुमसबजगजीत्यौ ॥ अवधिपाइवसअवशआजसोईसबैअतीत्यौ ॥ हितअहितनजानतहेरिहिय, एकगर्वसेवतअतुल ॥ सोछांडिसंधिकरिरामसौं, करियेअभयपुलस्तिकुल ॥ २ ॥ त्रीयसज्ञानमयसुताराजहितनीतिउचारीय ॥ देषिअदिनदशवदनभयौउरशोकजुभारीय ॥ कहतिबचनहितकाजसोनमानतलंकेस्वर ॥ घटचीकटज्यौंसघनभिदतनहिंवारिधारिभर ॥ औषधीवृथाअनरोगअँग, कहाकरैउपदेसकर ॥ अतिगर्वकुमतिदशसीसअघ, भयौजुघटकृतदोषभर ॥ ३ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ तबरामअंतरएह ॥ षद्योतदिनमणिदेह ॥ जिहिमहासुरमधुमारि ॥ सबअसुरवंशसँघारि ॥ बलिबांधिपठइपताल ॥ हैकालहूकोकाल ॥ रनमारिहैहयराज ॥ कृतरुधिरतरपनकाज ॥ जिहिंसिंधुबांधीयसेत ॥ हैहव्यौतबम्रतहेत ॥ अवतर्यौमानुषआइ ॥ भुवभारहरनसुभाइ ॥ चढिलंकहीयचतुरंग ॥ एभालकपिअनभंग ॥ तुममनुजजानतताहि ॥ अषिलेशब्रह्मजुआहि ॥ सीयजोगमायासोइ ॥ कहिहेतत्रीयनहिकोइ ॥ पुनिगहहुरघुवरपाई ॥ अबचतुर्थाश्रमआइ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कृतनृपसुतौसबैतुमकीनौ

॥ देवअदेवनिपरिभवदीनो ॥ जिहिंषोजतमुनिवरजगजोगी ॥ ब्रह्मगिनानीबिषयबि
योगी ॥ वहअवधेसग्रेहतवआयो ॥ देहमनुजअगजगनिदिषायो ॥ प्रभुसीतादैचरन
निपरहु ॥ कंतसुहागअक्षयममकरहु ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ लोकलोकपतिमैज
यलीना ॥ कवनैलैभामिनिभयकीना ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सीयादैनजबसुन्योलंके
शर ॥ बलतहृदयआयोतबबाहिर ॥ सभाबनाइछत्रसिरसाजा ॥ रोषजरतबैठ्योषलरा
राजा ॥ ॥ अथशुकसारणदूतआगमनं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सभामध्यतेहीसमय ।
इहांशुकसारनआइ ॥ कीनैलंकानाथकँहँ । वंदनविविधबनाइ ॥ १३ ॥ पठएदूतसुलंक
पति । शुकसारनसमझाय ॥ विस्तरजुतआनहुविवरि । कटकभेदकिंहुकाय ॥ १४ ॥
कारनमर्कटरूपकरि । शुककीयकटकप्रवेस ॥ ताकतसुनतसुनिपुनता । सोधलेतस
विसेस ॥ १५ ॥ कृतदेषतकपिरूपकरि । भेदसुलक्षनभाव ॥ डोलतदलमहदिसिवि
दिसि । दूतसुकीएदुराव ॥ १६ ॥ तदपिपिछानैकपिनिते । ओचकपकरेआइ ॥ पु
निआनैसुग्रीवपहँ । दुष्टसुसबनिदिषाइ ॥ १७ ॥ तिनहिविलोकिसुग्रीवतब । बोलेसम
यविचारि ॥ अंगभंगकरिचारए । निर्लजदेहुनिकारि ॥ १८ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ का
टनजबलागेनाककान ॥ इनचरनिदईरघुनाथआन ॥ बहुस्योंचरलक्ष्मनलियेबुलाय ॥
कीनैनिवारनछेदकाय ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ इहांलक्ष्मनपातीदईएहु ॥ दूतयह
जायरावनहिदेहु ॥ तुमऱ्हैहोदीपकसलभतूल ॥ मतषोवहुरावनवंशमूल ॥ जोराईतिहा
रेकर्मजोग ॥ पुनिताकौयहएकैप्रयोग ॥ सीतासमर्पिसात्विकसुभाइ ॥ परियैवआनिरघु
वीरपाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वरवीरनीतलक्ष्मनविचारि ॥ करिदयादूतदीनैनिका
रि ॥ तेगएदूतरावननिकेत ॥ तहांलगेकहतसबकर्महेत ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ क
रिपूछतरावनचितविकार ॥ शुककहौविभीषणसमाचार ॥ ॥ शुकउवाच ॥ ॥ उहां
गयौविभीषनअतिअधीन ॥ करितिलकतेहिलंकेसकीन ॥ सोकटकमांझकहीयतलँकेस ॥
॥ विधिअंकबढीमहिमाविसेस ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ कहीयेगतिवानररीछकेरि ॥
घरमेरैलायौकालघेरि ॥ ॥ शुकउवाच ॥ ॥ दलप्रबलभालकपिअंसदेव ॥ सुग्रीव
सहितरतचरनसेव ॥ मनातिनकैप्रभुएसोगुमान ॥ इकएकलेइगढफोरिआन ॥ अतिब
लीवीरइहिंरूपआइ ॥ जैभिरेषेततुमसौंबजाइ ॥ ऐसेअष्टादशपद्मआय ॥ सबरोषरत्न
अपनेसुभाय ॥ आकृतिअभूतपौरुषअमान ॥ मानतजोतुमकहुंतृणसमान ॥ कूदतक
रिउछवजुद्धकाज ॥ यहगर्वमनहुंगढलैहिआज ॥ थाटकपिदैहिंपर्वतनिठेलि ॥ कालहुं
सौमंडहिसमरकेलि ॥ अबरामलषनबलसुनीराज ॥ उनसमनसुरासुरपुरुषआज ॥ सर
एकसातसोषहिसमुद्र ॥ छीलरकहातिनकहँषारछुद्र ॥ तबभ्रातहिपूछ्योमंत्रताम ॥ सा
गरपरकीनौपंथस्याम ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ सुनिबातहस्यौषट्चारिसीस ॥ कहा
ताकौबलजिहिकटककीस ॥ वसभाइसदाकातरसभीत ॥ मुषमंत्रिविभीषनमिल्यौमीत
॥ कालभयछांडिकुलसंगकानि ॥ इहिसमयसरनरिपुगह्योआनि ॥ पैपूंछिताहियहमंत्र
पाइ ॥ जलनिधिपरधरनादयोजाइ ॥ तूंकहतझूठबातेंबनाइ ॥ हमरामपराक्रमपारपाइ ॥

॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ यहवचनसुनतशुकक्रोधआइ ॥ सोदईकाढिपत्रीसुभाइ ॥ दशशीसवाचिदेषहुनिदान ॥ पुनिकरहुमंत्रपौरुषप्रमान ॥ जिहिंसुनतपत्रछातीसिराइ ॥ चितलाइयाहिदेषहुवचाइ ॥ करवामलईपत्रीकुचार ॥ मंत्रीकुदईबांचहुविचार ॥ मंत्रीजुसुनाएवाचिमूल ॥ तेलगेवचनउरबानतूल ॥ ॥ **पत्रीकेवचन** ॥ ॥ रावनजिनिषोवहिवंसराज ॥ अजईससरननहीबचहिआज ॥ कररामबानधाराकराल ॥ जरिहोहुसलभमतक्रोधज्वाल ॥ कुलराजकरहुरक्षासकाम ॥ छांडहुविरोधगहिसरनराम ॥ ॥ **रावणउवाच** ॥ ॥ रावणसुनिपत्रीसमाचार ॥ विहिसानहसनलगिवारवार ॥ लषमनकोदेषहुचितहुलास ॥ सोयोजुभूमिकर्षतअकास ॥ ॥ **शुकउवाच** ॥ ॥ **छंदद्विअक्षरी** ॥ ॥ कहिशुकदूतसुनहुलंकेसर ॥ तुमअतिगर्वगुरहुतेबहुगुर ॥ तजोयैक्रोधविरोधकषाया ॥ ॥ अतिबलरामसिंधुलंघिआया ॥ पंजरविजयरामसरनाई ॥ दयाप्रकृतिनिगमागमगाई ॥ कुलपुलस्तिकरिरक्षाकीजे ॥ देवफेरिसीताकिनदीजे ॥ भईजुपैभाईअनभाई ॥ सोसबक्षमिहैरामगुसांई ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ सीतादेहुसुन्योजबहीसठ ॥ हन्योशुकहितबलातमहाहठ ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ फिरमतवदनदिषावहिमोही ॥ तवकृतपापदेहुंफलतोही ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ इहांशुकदूतआपग्रहआयो ॥ अतिहठरावनकालहिछायो ॥ अखिलसुभटसुतमंत्रीआए ॥ निसचरसभाबैठिसिरनाए ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ सिंधुलांघिद्वैबालसन्यासी ॥ सोआएमोहिआवतहाँसी ॥ वनचरकटकलीयेअंतकवस ॥ सुनेतुमहुंआएद्वैमानस ॥ कारनकहोइहांसोकीजे ॥ छलबलजिहिंदुजेनकुलछीजे ॥ ॥ **सभासदउवाच** ॥ ॥ इहांसभासदवचनउचारे ॥ मानसवानरभक्षहमारे ॥ जीतकटककेवलहमजाने ॥ एकपिभालकालगाहिआने ॥ कहहुलंकेसतुमहिभयकाको ॥ जगतसबैवसवर्तीजाको ॥ ॥ **प्रहस्तउवाच** ॥ ॥ कहप्रहस्तनृपनीतसुनाई ॥ सभाकहतसबठकुरसुहाई ॥ उदधिकूदिइककपिइहांआयो ॥ जिहिंबुधिबलगढलंकजरायो ॥ इनकीषुधागईकहांवादिन ॥ षायोकिनहनुमतताहीषिन ॥ जठरअगनिसबकीअवजागी ॥ लेहुषाहुनरकपिहठलागी ॥ इककपिवेउतपातउठाए ॥ अबहैपदमअाठदशआए ॥ संधिकरहुअबदीजेसीता ॥ परममंत्रयहनीतिप्रणीता ॥ जपैपाइत्रियफेरिनजाई ॥ विग्रहकरहुनिसानबजाई ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ सोप्रहस्तजबवचनसुनायो ॥ अतिहिरोषरावनउरआयो ॥ प्रहस्तनीतिकहांयहपाई ॥ गुरप्रसादविद्यागरुवाई ॥ संधिनामफिरमोहिसुनैहे ॥ पुनिप्रहस्तविद्याफलपैहे ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ उठ्योप्रहस्तअनषउरआनी ॥ मानतनांहिबचनअभिमानी ॥ ॥ **प्रहस्तउवाच** ॥ ॥ काननसुनतबचनहितकंटक ॥ आनिपरीसिरछायाअंतक ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ महंवृद्धआयइहाँमाल्यवान ॥ निसचारनीतिविद्यानिधान ॥ रावनकोनानोवृद्धवेश ॥ इहिंसमयकरयोपरिषदप्रवेश ॥ अतिहेतसुबैठ्योसभाआनि ॥ मनमांझदशाननमोहमानि ॥ ॥ **माल्यवानउवाच** ॥ ॥ विधिजुक्तबोलिइहांमाल्यवान ॥ कछुकह्योचहतजोदेहुकान ॥ पुरलंकभयोसीताप्रवेश ॥ विपरीतसगुनतवतोविसेस ॥ करतजो

अग्निद्विजहोमकाज ॥ जागतसोनाहिनमहाराज ॥ आवरितधूमसंकुलअशेष ॥ स्फुलिंग वन्हिवर्जितविशेष ॥ मिलिवसतअश्वसालानिमाझ ॥ शतजूथभुजंगमदिवससांझ ॥ पारि जालपिपीलिकहवनपात्र ॥ गतषीरसुरभिभइषीनगात्र ॥ मदगतमतंगहयहेषमुक्ति ॥ क रभषरभिन्नरोमाश्रुमुक्ति ॥ स्वाभावरहितनिसिश्रवनसाल ॥ कुलकाकअशुभकूजतकरा ल॥ दीसतविमानआकासदेस ॥ पुनिअग्रगृद्धकुलकरिप्रवेस ॥ सन्नादशिवाद्वयसंधिसंग ॥ अतिअशुभथानथितव्हैउतंग ॥ जंबूकक्रूरक्रव्यादिजाल ॥ कूजततटकूटद्वारनिकराल॥ रौधिरीबुंदआवितअकास ॥भयकारजूथगर्धभकुभास ॥ सुरलिंगसचलस्वेदितसुभाइ ॥ प्र तिनिसानगरमूसितजुपाइ ॥ कालिकास्वेतदंतानिकुभाइ ॥ अतिग्रेहग्रेहसोहसातिआइ ॥ दीरघसथूलसिरवपनसाजि ॥ वपुरौद्रकृष्णपिंगलविराजि ॥ एकालपुरुषइहिंरूपआइ ॥ दीनरातिजातिअतिभयादिषाइ॥ भूषिकानकुलषरगोप्रसूत॥अतिजुद्धहोतकर्कसअभूत ॥ अपसगुनहोतइत्यादिआइ ॥ तिहिंनिमितसांतिकरीयैंसहाइ ॥ यानिमितिसांतिहैयहै एक ॥ जानकीदेहुकुलरहैटेक ॥ चतुराश्रमआयौहैअचिंत ॥ ताकौंसबसाधहुसमयतंत ॥ व्हैवानप्रस्थवपुवृद्धवेस ॥ निस्तारकरतअपनैनरेस ॥ सुतदेहुराजासिरछत्रसाज ॥ करी यैंअपनौउद्धारकाज ॥ त्रीयसहितआपकरिअग्रसीत ॥ अवधेससरनग्रहियैंअभीत ॥ है यहैमंत्रकुलवृद्धिहेत ॥ तुमचतुरभूपसबविधिसचेत ॥ मनरुचैंसुकरीयैंमहाराज ॥ अनुसा रबुद्धिहमकहतआज ॥ सुनीवचनएहपरजरिलँकेस ॥ उरक्रोधबढ्यौअतिअहंतेस ॥ ॥ **रावणउवाच** ॥ मतएकविभीषनतुमहुंमानि ॥ निर्द्धारिआजयहहमजुजांनि ॥ वहगयौ तुमहूंजैहौवअंत ॥ मनमान्यौसरनागतमहंत ॥ हमजानीरामहिमिलेआहि ॥ ममवास वसताचितउहांचाहि ॥ विनुबुद्धितुमहूजौभएवृद्ध ॥ पनचौथौवर्ततहैप्रसिद्ध ॥ वचिहोन मीचतकिहुंविचार ॥ सरनैहूंमरिहैअतीसार ॥ सुनिरावनकेजबवचनसूल ॥ सोमाल्यवान परजस्यौमूल ॥ ॥ **माल्यवानउवान** ॥ ॥ करिजतनदूधसींचहुजुकोइ ॥ हठबेतनहि नफलफूलहोइ ॥ अतिगर्वतुमहिबनिअदिनआय ॥ छकिराजमदहितमबुद्धिछाय ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ मनमलिनतबैउठिमाल्यवान ॥ ग्रहगयेसोचतैंअतिसज्ञान ॥ ॥ इ तिमाल्यवानरावणहितप्रबोध ॥ ॥ **अथश्रीरामदूतांगदप्रवेशनं** ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **छंदद्विअक्षरी** ॥ ॥ ॥ प्रभुबैठेवेलाद्रिसिखरपर ॥ सानुजसहितकपीसलंकेसर ॥ जा मवंतअतिनीतिसुजाना ॥ सबैवीरबैठेस्वस्थाना ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ रहसिमंत्र पूछ्यौरघुराजा ॥ करियैअबैजुद्धकोकाजा ॥ ॥ **जामवंतउवाच** ॥ ॥ जामवंततबक हिकरजोरी ॥ ममप्रभुसुनहुप्रणातिइकमोरी ॥ तुमसर्वज्ञलोकत्रयस्वामी ॥ जगतच राचरअंतरजामी ॥ तुमतेंमतिनदुरीकोउदेवा ॥ सुरनरनागकरतजिहिसेवा ॥ कह्यौचहत कछुतदपिकृपाला ॥ समदरसीतुमदीनदयाला ॥ थितचितयाकैअहमितथाती ॥ पापीदश शिरब्रह्मपनाती ॥ याहिकालकीछायाआई ॥ सभाकहतसबठकुरसुहाई ॥ याकेनयनगर्व मदछाए ॥ अजहुनजानतराघवआए ॥ पापीनिजकृतनासाहिपैहैं ॥ जगतविदितजमसा दनजैहैं ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मर्कटभालअभंगमिलि। आयौदलअनपार ॥ याकौमारन

काअगम । सबैकहतसंसार ॥ १९ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामसदागोद्विजरषवारे ॥
स्वामीचलतनीतिअनुसारे ॥ प्रभुइकवारबसीठपठावहु ॥ सठरावनबहुख्यौसमझाव
हु ॥ मेरेमनतौयाहिनमाराहि ॥ सीतादेयितवयरविसाराहि ॥ हैद्विजवंसदुष्टकुलद्रोही ॥
आपकर्मकरिहैषयओही ॥ प्रभुअंगदहिवसीढपठावाहि ॥ सर्वभाइवाकहँसमझावहि ॥
तत्वबोधअंगदबहुभांती ॥ सबकहिहैंअसुहातिसुहाती ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥
रामकह्यौअंगदजुवराजा ॥ करहुबसीठहेतममकाजा ॥ नीतिनिपुनतुमसूरसयानै ॥ देहुप्र
बोधजुसमयनिदानै ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अतिदुर्मदकिंवाअज्ञानकछुअदिनजुआगम ॥
सुन्यग्रेहसीतासभीतकृतहरनचौरक्रम ॥ सोछांडहुदशसीसकहहुअंगदयहकारन ॥ नात
रुलक्ष्मनसरसमूलरिससहहुमहारन ॥ छिदकंठदसहुरतउछलत, कृतसुतनातीकालव
स ॥ संपतिसमाजग्रहछांडिसुष, अंतकपुरजैहौअवस ॥ ४ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ चलेसुआज्ञासीसचढाई ॥ राषिस्वरूपहृदयरघुराई ॥ प्रभुप्रतापसबसिद्धिप्रकारा ॥
अंगदचलियहवचनउचारा ॥ वारवारकपिवंदनकीनै ॥ आयसबसअतिभक्तिअदीनै ॥
॥ दोहा ॥ ॥ चलेजातइहांपंथविच । अंगददूतअभंग ॥ क्रीडतमिलिरावनकुंवर । सषा
लियैबहुसंग ॥ २० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कंटकसुतधनमदअतिताके ॥ जगतृणसम
आवतमनजाके ॥ दोषवाततिहिवचनउचारे ॥ सुनततहांजुवराजसंभारे ॥ बातहिबातविरो
धवधायौ ॥ अतिहीक्रोधदुहुनचढिआयौ ॥ अंगदकहतहिलातउठाई ॥ अलपवैसप्रभुताअ
धिकाई ॥ पकरिचरनसोधरनिपछार्‍यौ ॥ रामदूतरावनसुतमार्‍यौ ॥ इहांजुवराजनगरमहँ
आयै ॥ अतिअनसंकछोहमनछायौ ॥ राक्षसकाहुनजानपचार्‍यौ ॥ चलेजांहिघेरोदिसि
चार्‍यौ ॥ दृष्टिसरोषनिहारैजादिस ॥ सूकिजातसोईपैराक्षस ॥ ॥ असुरआसुरीवाक्यं
॥ ॥ उहैकिधौऔरैकोउआयौ ॥ जिहिंवानरगढलंकजरायौ ॥ घरघरहोतकुलाहलघेरा ॥
वनितापतिसौंलेतनिहोरा ॥ लंकउलटिकाहूसौंलरिहैं ॥ कपिकोउबहुउपद्रवकरिहैं ॥ ॥ क
विरुवाच ॥ ॥ असहदृष्टिचितवताजिहिंओरा ॥ नजरिनथाँभहिंकरिहिंनिहोरा ॥
विनुपूछैहीपंथबतावत ॥ सभयभेदपहिलेहिसमझावत ॥ सभासाजिबैठ्यौलंकेसर ॥
पूतसचिवसबसुभटसेवपर ॥ इहांराक्षससंख्याकोआनै ॥ ठाढेसायुधविग्रहठानै ॥ इहि
समयअंगदभयौआवन ॥ वचनलग्यौप्रतिहारबनावन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अजगुरुप
ढियैअलपसभायहनहिनसुरेश्वर ॥ रेदिगेसमतकरहुभीरएतेकहाआतुर ॥ गंधर्वकिन्नरगा
नविरदतुंबररहिबोलहु ॥ नारदसमयनिहारिषनकजनिपरदाषोलहु ॥ स्वस्थानचित्तलं
केसवर, अहकृतआजनसद्धयौ ॥ मैथिलीरूपअटक्यौजुमन, भ्रमतकहुंविन्हलभयौ ॥
॥ ५ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अंगदअसुरद्वारजबआयौ ॥ सोस्वामिहिप्रतिहारसुना
यौ ॥ बैठ्यौरावनसभाबनाए ॥ वालिसुवनतहांमध्यबुलाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मत्तगयंद
निजूथमँहँ । जैसैकेहरिजाय ॥ महापराक्रमधीरमन । अंगदसभाजुआय ॥ २१ ॥ शिला
फटिकपरतिहिंसमय । बैठ्यौछत्रवनाय ॥ अतिअहमितिपौरुषअतुल ॥ रावनराक्षसरा
य ॥ २२ ॥ रावनरावनरूपकरि । प्रतिमाचारिपचीस ॥ सोसमआकृतिएकसे । सजेमु

कटदशसीस ॥ २३ ॥ अंगदमायाआसुरी । देषीकपटकुदाइ ॥ इहिंगढरावनएकहो । इतेकहांतेंआइ ॥ २४ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रेमदंधदशकंधरसापर केतेरावन ॥ सबैइतेहमसुनैपरमपापिष्टअपावन ॥ धर्‌योहैहयाधीसप्रथमतिहिकृतफलपायौ ॥ बलिदासिनिदूवबांधिनिलजदैकवलनचायौ ॥ बाँध्योजुतृतीयममपालनें, मोहि सुलज्जकहतमन ॥ उनमाँझकिधौंउपजेअवर, कहीयैऐकंटककवन ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनतअवरसबगएविलाइ ॥ एकहिसोरावनरह्योआइ ॥ बैठ्यौसुपरामुषदएपीठ ॥ अंगदउरप्रजरीमनुअगीठ ॥ सिलहनीलातफिरिगईसोइ ॥ हसिबोल्यौ रावनसमुषहोइ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ किहिंपठयौकपितूकवनकाज ॥ इहिंठौहरआवनभयौआज ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ मोहिपठयोतोपहदूतराम ॥ निस्संकवीरअंगदजुनाम ॥ ममपितातोहिआतित्वमानि ॥ तातैंतिहिंआयौछांडिकानि ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंगदआपुनआइइहां । सनमुषबैठिसधीर ॥ रामप्रतापअभीतउर । वातकहतवरवीर ॥ २५ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ जोबांध्योघननाहजुध । अरुदीयपूछिजराइ ॥ वहकपितूंहरिअधमके । अवरैकोऊआइ ॥ ॥ २६ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ गनिगनिदाह्योलंकगढ । मार्‌योअक्षकुमार ॥ हनुमतसोमिथ्याकह्यो । रेदशकंधगिवार ॥ २७ ॥ हैदोरतअतिवेगवह । पत्रीवाहप्रमान ॥ सोममदलसंभावना । नाहिनबीरनिदान ॥ २८ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामकौनजिहिंहरधनुतोर्‌यो ॥ महामानभृगुपतिकोमोर्‌यो ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ खंडनकीयहरधनुषवालिसंग्रामविनासीय ॥ सप्ततालसरइक्कविद्धसोइपुनिकरवासीय ॥ अतिप्रचंडगिरआनिवारिनिधिसेतबँधायौ ॥ सुषउतारिकपिसेनयहजुदक्षनतटआयौ ॥ उरधरिप्रतापबलतेजयह, कबहुनविग्रहकीजियै ॥ सुषसंधिकरहुरघुनाथसौं, देवसीयाफिरिदीजियै ॥ ७ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ कृतविनासधनुकाठवालिमार्‌योसोइवानर ॥ तीरइक्कहतसाततालजडजोनिसुतोतर ॥ सेनबद्धमिलिकपिसमूहकहाविक्रमकिन्नौ ॥ करहितोलिकैलासलेषिकंदुकज्योंलिन्नौ ॥ शिवदेवसगनशशिसुरसरित, शिवाशेषवनजंतुसम ॥ आकर्ष्यौकौतुककाजवह, मैजानतबलबाहुमम ॥ ८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जीरनशंभुपिनाकनजान्यौं ॥ भयौकहाजौताकहभानौं ॥ ब्राह्मनफरसधरनकेसोबल ॥ दीनजातिअरुसंगनहींदल ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ ब्राह्मनपरसुरामकौसुनिबल ॥ मारिनिछत्रकर्‌योभुवमंडल ॥ साततीनवेरांपितऔरिस ॥ रुधिरनितर्पनकरेवीररस ॥ षनिजरसहसवाहुघरषोयौ ॥ जगतप्रसिद्धचराचरजोयौ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ सहसबाहुकैसौरेकपिसठ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ हाथबांधिपीठेतुमजिहिहठ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ काकौसुततूंलपसीकिंकर ॥ वानिअनैसीबोलतवनचर ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ वालिपुत्रहूंवैरविहंडन ॥ षेतमारिराकसकुलमंडन ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ वालिकौनयौंहमाहिबतावहु ॥ कपिजाकेतुमपूतकहावहु ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ वालिकरतहेसंध्यावंदन ॥ मंदतनयनध्यानवसहोमन ॥ निद्रा

काअगम । सबैकहतसंसार ॥ १९ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामसदागोद्विजरषवारे ॥ स्वामीचलतनीतिअनुसारे ॥ प्रभुइकवारबसीठपठावहु ॥ सठरावनबहुत्योंसमझाव हु ॥ मेरेमनतौयाहिनमारहि ॥ सीतादेयितवयरविसारहि ॥ हैद्विजवंसदुष्टकुलद्रोही ॥ आपकर्मकरिहैषयओही ॥ प्रभुअंगदहिबसीढपठावहि ॥ सर्वभाइवाकहँसमझावहि ॥ तत्ववोधअंगदबहुभांती ॥ सबकहिहैअसुहातिसुहाती ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ रामकह्योअंगदजुवराजा ॥ करहुबसीठहेतममकाजा ॥ नीतिनिपुनतुमसूरसयाने ॥ देहुप्र बोधजुसमयनिदाने ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अतिदुर्मदकिंवाअज्ञानकछुआदिनजुआगम ॥ सुन्यग्रेहसीतासभीतकृतहरनचौरक्रम ॥ सोछांडहुदशसीसकहहुअंगदयहकारन ॥ नात रुलक्ष्मनसरसमूलरिससहहुमहारन ॥ छिदकंठदसहुरतउछलत, कृतसुतनातीकालव स ॥ संपतिसमाजग्रहछांडिसुप, अंतकपुरजैहौअवस ॥ ४ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ चलेसुआज्ञासीसचढाई ॥ राषिस्वरूपहृदयरघुराई ॥ प्रभुप्रतापसबसिद्धिप्रकारा ॥ अंगदचलियहवचनउचारा ॥ वारवारकपिवंदनकीनै ॥ आयसबसअतिभक्तिअदीनै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चलेजातइहांपंथविच । अंगददूतअभंग ॥ क्रीडतमिलिरावनकुंवर । सषा लियेबहुसंग ॥ २० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कंटकसुतधनमदअतिताके ॥ जगतृणसम आवतमनजाकै ॥ दोषवाततिहिवचनउचारे ॥ सुनततहांजुवराजसंभारे ॥ बातहिबातविरो धवधायो ॥ अतिहीक्रोधदुहुनचढिआयो ॥ अंगदकहतहिलातउठाई ॥ अलपवैसप्रभुताअ धिकाई ॥ पकरिचरनसोधरनिपछाख्यो ॥ रामदूतरावनसुतमाख्यो ॥ इहांजुवराजनगरमहँ आये ॥ अतिअनसंकछोहमनछायो ॥ राक्षसकाहुनजानपचाख्यो ॥ चलेजांहिघेरोदिसि चाख्यो ॥ दृष्टिसरोषनिहारेजादिस ॥ सूकिजातसोईपैंराक्षस ॥ ॥ असुरआसुरीवाक्यं ॥ ॥ उहैकिधौऔरैकोउआयो ॥ जिहिवानरगढलंकजरायो ॥ घरघरहोतकुलाहलघेरा ॥ वनितापतिसौंलेतनिहोरा ॥ लंकउलटिकाहूसौंलरिहैं ॥ कपिकोउबहुउपद्रवकरिहैं ॥ ॥ क विरुवाच ॥ ॥ असहदृष्टिचितवताजिहिंओरा ॥ नजरिनथाँभहिकरिहिनिहोरा ॥ विनुपूछेहीपंथबतावत ॥ सभयभेदपहिलेहिसमझावत ॥ सभासाजिबैठ्योलंकेसर ॥ पूतसचिवसबसुभटसेवपर ॥ इहांराक्षससंख्याकोआनै ॥ ठाढेसायुधविग्रहठानै ॥ इहि समयअंगदभयोआवन ॥ वचनलग्योप्रतिहारबनावन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अजगुरुप ढियैअलपसभायहनहिनसुरेश्वर ॥ रेदिगेसमतकरहुभीरएतेकहाआतुर ॥ गंधर्वकिन्नरगा नविरदतुंबररहिबोलहु ॥ नारदसमयनिहारिषनकजनिपरदाषोलहु ॥ स्वस्थानचित्तलं केसवर, अहकृतआजनसद्ध्यो ॥ मैथिलीरूपअटक्योजुमन, अमतकहुंविव्हलभयो ॥ ॥ ५ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अंगदअसुरद्वारजबआयो ॥ सोस्वामिहिप्रतिहारसुना यो ॥ बैठ्योरावनसभाबनाए ॥ वालिसुवनतहांमध्यबुलाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मत्तगयंद निजूथमँहैं । जैसैकेहरिजाय ॥ महापराक्रमधीरमन । अंगदसभाजुआय ॥ २१ ॥ शिला फटिकपरतिहिंसमय । बैठ्यौछत्रबनाय ॥ अतिअहमितिपौरुषअतुल ॥ रावनराक्षसरा य ॥ २२ ॥ रावनरावनरूपकरि । प्रतिमाचारिपचीस ॥ सोसमआकृतिएकसे । सजेमु

कटदशसीस ॥ २३ ॥ अंगदमायाआसुरी । देषीकपटकुदाइ ॥ इहिंगढरावनएकहो । इतेकहांतैआइ ॥ २४ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रेमदंधदशकंधरसापर केतेरावन ॥ सबैइतेहमसुनैपरमपापिष्टअपावन ॥ धर्योहैहयाधीसप्रथमतिहिकृतफलपा यो ॥ बलिदासिनिदूवबांधिनिलजदैकवलनचायो ॥ बांध्योजुतृतीयममपालनै, मोहि सुलज्जकहतमन ॥ उनमाँझकिधौंउपजेअवर, कहीयेऐकंटककवन ॥ ६ ॥ ॥ छंदपध री ॥ ॥ यहसुनतअवरसबगएविलाइ ॥ एकहिसौरावनरह्योआइ ॥ बैठ्योसुपरामुष दएपीठ ॥ अंगदउरप्रजरीमनुअगीठ ॥ सिलहनीलातफिरिगईसोइ ॥ हसिवोल्यो रावनसमुषहोइ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ किहिंपठयौकपितूकवनकाज ॥ इहिंठौह रआवनभयौआज ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ मोहिपठयौतोपहदूतराम ॥ निस्संक वीरअंगदजुनाम ॥ ममपितातोहिआतित्वमानि ॥ तातैंतिहिंआयोछांडिकानि ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंगदआपुनआइइहां । सनमुषबैठिसधीर ॥ रामप्रतापअभीतउर । वातकहतवरवीर ॥ २५ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ जोबां ध्योघननाहजुध । अरुदीयपूछिजराइ ॥ वहकपितूंहरिअधमकै । अवरैकोऊआइ ॥ ॥ २६ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ गनिगनिदाह्योलंकगढ । मार्योअक्षकुमार ॥ ह नुमतसोमिथ्याकह्यो । रेदशकंधगिवार ॥ २७ ॥ हैदोरतअतिवेगवह । पत्रीवाह प्रमान ॥ सोममदलसंभावना । नाहिनबीरनिदान ॥ २८ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामकौनजिहिंहरधनुतोर्यो ॥ महामानभृगुपतिकोमोर्यो ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ खंडनकीयहरधनुषवालिसंग्रामविनासीय ॥ सप्ततांडसरइक्कविद्धसोइपुनिकरवासीय ॥ अतिप्रचंडगिरआनिवारिनिधिसेतबँधायौ ॥ सुषउतारिकपिसेनयहजुदक्षनतटआयौ ॥ उरधरिप्रतापबलतेजयह, कबहुनविग्रहकी जियै ॥ सुषसंधिकरहुरघुनाथसौं, देवसीयाफिरिदीजियै ॥ ७ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ कृतविनासधनुकाठवालिमार्योसोइवानर ॥ तीरइक्कहतसाततालजडजोनिसुतोतर ॥ सेनबद्धमिलिकपिसमूहकहाविक्रमकिन्नो ॥ करहितोलिकैलासलेषिकंदुकज्योंलिन्नो ॥ शिवदेवसगनशशिसुरसरित, शिवाशेषवनजंतुसम ॥ आकर्ष्योकौतुककाजवह, मैजान तबलबाहुमम ॥ ८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जीरनशंभुपिनाकनजान्यौं ॥ भयोकहा जौताकहभानौं ॥ ब्राह्मनफरसधरनकैसोबल ॥ दीनजातिअरुसंगनहींदल ॥ ॥ अंगद उवाच ॥ ॥ ब्राह्मनपरसुरामकोसुनिबल ॥ मारिनिछत्रकर्योभुवमंडल ॥ साततीनवे रांपितऔरिस ॥ रुधिरनितर्पनकरेवीररस ॥ षनिजरसहसवाहुधरषोयौ ॥ जगतप्रसिद्ध चराचरजोयौ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ सहसबाहुकैसौरेकपिसठ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ हाथबांधिपीठेतुमजिहिहठ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ काकौसुततूंतपसीकिंकर ॥ वानि अनैसीबोलतवनचर ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ वालिपुत्रहूंवैरविहंडन ॥ षेतमारिराकसकु लमंडन ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ वालिकौनधौंहमाहिबतावहु ॥ कपिजाकेतुमपूतकहाव हु ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ वालिकरतहेसंध्यावंदन ॥ मंदतनयनध्यानवसहोमन ॥ निद्रा

जोगहुतेतेनिश्चल ॥ तुमदिगविजयीआएतिहिथल ॥ कंटकतुमतहांषलताकीनी ॥ मन उपजीकछुवुद्धिमलीनी ॥ पकरिकंधतुमतबैपछारे ॥ मलेकांषवालीअनमारे ॥ नित्यनेम ज्यौंसंध्याकीनी ॥ द्वीपअंतपरिकर्मादीनी ॥ कृतप्रवेसगृहकांषहिकाढे ॥ ठोलामुंडदएकारि ठाढे ॥ भूलेताहिछुटेन्हैभाई ॥ वालिहिपूंछतयहैबढाई ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ अब वहवालिकहांहैअंगद ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ रामवानहतलयौपरमपद ॥ ॥ रावण उवाच ॥ ॥ महाबलीवहकौनेमार्यो ॥ रामहत्योरनस्वर्गसिधार्यो ॥ कवनदोषजाते यहकीनी ॥ देवदेवमतसिष्यादीनी ॥ तुमजौंवहैकामकरिप्रेरित ॥ रातिदिवसरहतौ परत्रीयरत ॥ देवताहिजौंदंडनदेही ॥ तौंदशांशपहुंचैफलतेही ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ ताकहधिकजिहिपैतूंजायौ ॥ अवपितहतकदूतन्हैआयौ ॥ साचेंहुकरतसत्रुकीसेवा ॥ कुलकुपुत्रविसर्योयहकेवा ॥ ममदलसंगरामलैमारहु ॥ अपनैपितकौवयरउधारहु ॥ कपिसुग्रीवकौतोरहुकंधा ॥ करौंतोहिराजाकिष्किंधा ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ठगईप्रभुसौंदासनठानैं ॥ परमधरमअपनौपहिचानै ॥ राजादंडदेइअथवावर ॥ प्रभु जोइकरैसुपैसिरऊपर ॥ हमपहयहकबहूनहिहोई ॥ करहुनवृथाकलपनाकोई ॥ आगेइहाँजुहनुमंतआयौ ॥ जयपायौतिहिलंकजरायौ ॥ रनचढिअक्षकुंवरजिहिमार्यो ॥ सेनापतितवसेनसँघार्यो ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ क्रीडतअक्षकुमारजुबालक ॥ अति हिभीरदबिमर्यौअचानक ॥ इहाँहममारुतिपूंछजरायौ ॥ अनलउछलितिहिगढसुलगायौ ॥ अंगदतूंजुवसीठीआयौ ॥ कहजुसन्यासीकहाकहायौ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीरामवचन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हमजुवचनविधिवंसहित । रेकंटकदशकंध ॥ जिनषोवहिकुलमेषजर । अजहुसमुझिमदअंध ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ यहसंदेस अवधेसकौ । सुनिदशकंधसँभारि ॥ गएसरनतृनदंतगहि । नहिमारिहैंमुरारि ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पौलस्तिउर्द्धकुलजन्मपाइ ॥ शिवकरीउग्रपूजासुभाइ ॥ विधिरुद्रपाइतुमवरविशेष ॥ अवनीसअसुरसुरजयअसेष ॥ संततिहितसाधतरतिसमाज ॥ संततीउपाजिनृपभोगसाज ॥ जीयअर्थधर्मकामनाजाल ॥ भवमोषएकसाधतभुवाल ॥ उपदेस करतहितसुनहुआज ॥ रघुवीरआइराजाधिराज ॥ वैरोधछांडिकुलहितविचारि ॥ सीताहिअग्रकरिबुधिसँभारि ॥ मंदोदरिजुतअपराधमानि ॥ प्रभुसरनजाहुजुगजोरिपानि ॥ त्रिणगहहुदंतकंठनिकुठारि ॥ हठछांडिचरनधरिमानिहारि ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ रेवनचरबोलतकवनबानि ॥ जगजेतारावणमोहिनजानि ॥ जन्मतववालिय्रहवृथाजान ॥ गर्भगलिगयौकिनरेअज्ञान ॥ जिहिंहत्यौवालिसरसमरसाज ॥ आयौवसीठतिहिंकरनआज ॥ गहिदूतकर्मकहिज्ञानगूढ ॥ मुषमोहिदिषावतकहामूढ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ आंषिकानहैंबीससुन्यउर ॥ आंधोबधिरतदपिरेआसुर ॥ शिवविरंचिवंछतजिहिंसेवा ॥ रामदीनउद्धारनदेवा ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कपिदूतदुष्टबोलतकराल ॥ सहततहूंनीतिवंससब्दसाल ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ तवसीलसहनताजगतजानि ॥ विस्थरीकीर्तिसोइवानिवानि ॥ काटेभगनीकेनाककान ॥ मुखदे

खिनीतिहितदुषनमानि ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ सेनातवऐसोकोसमाथ ॥ संग्रामभिरे
जोमोहिसाथ ॥ हुवरामविरहत्रीयतेजहीन ॥ मनलक्ष्मनभौतिहिदुषमलीन ॥ सुग्रीवतु
महुनिर्बलसुभाइ ॥ आश्रयोसन्यासीसरनआइ ॥ ममभ्रातविभीषणजन्ममूढ ॥ जिहिग्र
ह्योसत्रुसरनाअगूढ ॥ तनजराग्रसितअतिजांबुवंत ॥ सोउभयोहीनबलजरवसंत ॥ नल
नीलसिलपकर्महिसयान ॥ जुधमर्मसुपैकछुवैनजान ॥ इहाआयोकपिहनुमंतएक ॥ ता
कीहममानतकछुकटेक ॥ निग्रह्योहुतौसोमेघनाद ॥ नहिवदनदिषावततिहिविषाद ॥
॥ अंगदउवाच ॥ ॥ एकतैंएककपिबलीआहि ॥ ढंढोरहितबग्रहलंकढाहि ॥ सुनिसठ
नराममानुषसरीर ॥ नहीगंगसरिततसलिलनीर ॥ पसुकामधेनतरुकल्पस्ररूष ॥ पंषीन
गरुडपानीपियूष ॥ माननिहिनउपलअहिशेषमानि ॥ निसिचरनलोकवैकुंठजानि ॥ ॥
॥ रावनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हरविधिपूजेवारबहु । सुकरकाटिमैंसीस ॥ होमकरे
लैंअनलमँहँ । सुनिमोरोबलकीस ॥ सैलउठायोहरसहित । मैंकरधरिकैलास ॥ रेकपि
जानतजगतसब । ममपौरुषहिप्रकास ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ प्रगट
सीसबहुरूपकाढिनहिसूरकहावत ॥ दृष्टिहेतजरिदीपपतँगभटपदकहुंपावत ॥ भारवहत
गर्दभाकहांअतिबलीकहाए ॥ मूंडचिरीमाँगतजुघांघदिनवनिकडराए ॥ हठिछेदिछेदि
सिरकीयहवन, अरुकैलासजुउद्धरीय ॥ इनमाँझसुतैंदशकंधअब, कवनवीरलच्छनकरी
य ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देवजानितुहिदीनद्विज । पठइवसीठीमोहि ॥ ब्रह्मपनातीम
तिविकल । तातेहततनहोहि ॥ ३० ॥ चोपटस्यालहिसमरचढि । नहिमारतमृगराज ॥
विनुसमताविग्रहवृथा । जानियेहेजीयलाज ॥ ३१ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ तहांउ
ठिठाढोवालिसुत । अरुयहवचनउचारि ॥ सभामाझतवकोउसबल । सकैचरनमोटारि
॥ ३२ ॥ जोपैठेलहुवौरतें । मेरोपदगहिमूल ॥ तबसीताहारैजतो । हमतुमनहिसमतू
ल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहपनसुनिउमगेअसुर । एकएकलगिआइ ॥ टरतनहींप
गठौरतें । बैठतआइषिस्याइ ॥ ३४ ॥ इहांरावनअतिहीअनषि । उठिआयोअकुलाइ
॥ भरिरिसकंटककवीसभुज । पकरैअंगदपाइ ॥ ३५ ॥ धरिमर्कटपटकौधरानि । निकस
हिप्राननिदान ॥ अपनैबलदसकंधइह । मनकीनौउनमान ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥
॥ कवित्त ॥ ॥ तुमविशेषपौलस्तिवंसउपजेअधिकारीय ॥ ब्रह्मरुद्रपूजाविधानसबभा
इसुधारीय ॥ चरनपरतमनरामचंद्रअपराधनआनत ॥ हेतभक्तवसहोतप्रगटचितभा
वप्रमानत ॥ दृढगहहुजाइरघुनाथपद, तहांअकर्मषतचुक्किहै ॥ तबसिरपरआयोकाल
सोई, ममपदगहैनमुक्किहै ॥ १० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पर्य्योषिसानैलं
कपति । थिरबैठ्योफिरथान ॥ कर्मजुअंगदछलकर्यो । मनसठभयोमलान ॥ ३७ ॥
सोठाढोविचराकसनि । अतिबलअंगदआप ॥ पायौजयजीत्यौजुपन । पूरनरामप्रता
प ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ ममहितवचननकरतमन । रेकुबुद्धिलंकेस ॥ कंटकच
क्रजुकालकौ । सिरपरअम्योविसेस ॥ ३९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सून्यपर्णशालाप्रवेस
कृततस्करकरयो ॥ जगतमातजानकीहरीअनहितअनुसरयो ॥ यहजिहिबलआंगयो

सुतौकुलदलसबसज्जहु ॥ भईसुतौअबभईतेषअहंकारनतज्जहु ॥ मान्यौनवचनमेरौमुगध, अबकोसरनउबारिहै ॥ आयौजुसेतबंधीयउदधि, हव्यौरामतोहिमारिहै ॥ ११ ॥ रावनउवाच ॥ दोहा ॥ काटिकाटिअपनैकरनि । कहततोहिसुनिकीस ॥ मेलेहुतभुककुंड महँ । मंगलफलसेंसीस ॥ ४० ॥ अवलोकेमैंआपनैं । पावकजलतकपाल ॥ तहांविधा ताकेलिषत । भएप्रगटपटभाल ॥ ४१ ॥ मैंतेइअक्षरमालिका ॥ वाँचीमर्मविधान ॥ तामहँ हैमेरोनियत । नरकरमरननिदान ॥ ४२ ॥ कर्मअंकजेब्रह्मके । अंतनमिथ्याहोइ ॥ सुर आसुरमज्जनसमथ । कोटिजतनहुनकोइ ॥ ४३ ॥ सोपैहूजानतसबै । लाहसमरचढिलैउं ॥ होहुजुकछुभवतव्यता । अबतौसियानदेउं ॥ ४४ ॥ कवित्त ॥ कालसेवममकरतहैजुरवित पतसीतहित ॥ दूरहितेदिगदेवविहितनितपदरजवंदित ॥ चंद्रहासममषड्गदेषिसुरनागनारिडर ॥ अवतिगर्भअनसमयानियततहांकोवराकनर ॥ देषहुसुउभयतापसअडर, दीनजंतुकपिमेलिदल ॥ सुनिमोहितपतगढलंकसिर, क्षत्रिअधमइहांआइषल ॥ १२ ॥ ॥ साषामृगदलसाजिअरिजुलंकागढआए ॥ उदधिसेतबंधयौआनिगिरनीरतिराए ॥ अवनिसंधियहडचितनीतिअंगदतुमजानत ॥ हठमेरौत्रैलोकविदितसुरअसुरवषानत ॥ शिरपंचदूननाएशिवहि, सोनआनदिसिनाइहूं ॥ चितयहैरामसिरधारचढि, हौंऊरधपदपाइहूं ॥ १३ ॥ ॥ छंदकुंडली ॥ ॥ उत्तरप्रतिउत्तरअधिकदुसहवालिसुतदेत ॥ हूवरावनतहांमानहतहीयपरजरीइहिहेत ॥ हीयपरजरिइहिहेतसबलसौंकछुनबसाई ॥ मानिताहितृणमात्रकरतअंगदअधिकाई ॥ दुष्टसभाजित्तीयदुरंततरिसागरदुस्तर ॥ कपिअभंगइहांकरेअसहउत्तरप्रतिउत्तर ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वचनवानउरविद्धयौ । षेचरभयौषिसान ॥ पतिखोईकपिपंचमैंहँ । इहांकोप्यौअज्ञान ॥ ४५ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ ॥ सुनिवचनजबउरसूल ॥ मनतापअसुरसमूल ॥ रिसकह्यौराक्षसराइ ॥ जिनिभाजिवानरजाइ ॥ गहिलेहुसठअज्ञान ॥ कपिसुन्यौजबयहिकान ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विसरिवालिसुतवीरसूरअवसानसँभारीय ॥ इहांअंगदअनभंगमहीदूवहत्थहमारीय ॥ धराधसकिधुज्जईपरयौमुँहभरलंकापति ॥ कनकरतनमयमुकटगिरेविथुरेदेवीगति ॥ सोमुकटइक्कलैवालिसुत. कटकऔरधरमुक्कयौ ॥ पुरलंकअसुरआतंकपरि, भुवनरामजयजय भयौ ॥ १४ ॥ नभमारगआवतनिहारिआश्चर्यउपज्जीय ॥ उलकपातकैअसानिसमयविनुरौद्रजुसज्जीय ॥ महातेजमयमुकटकूदिहनुमंतआकर्ष्यौ ॥ रामअग्ररष्षयौहेरिकपिदल बलहर्ष्यौ ॥ सोइदेषिमुकटदशरथसुतन, सीसविभीषनसमधरीय ॥ सकबंधविजयपंजर सरन, कविनरहरजयजयकरीय ॥ १५ ॥ जयतिरामजगदीसअभयपंजरसरनाइय ॥ जयतिरामजगदीसनिषिलभुवभारनसाइय ॥ जयतिरामजगदीसदुगमहरधनुधरिषंज्यौ ॥ जयतिरामजगदीसवालिसरइक्कविहंज्यौ ॥ जयरामदीनबंधवविरद, प्रभुप्रतापत्रिभुवनअभय ॥ वसिचरनसरननरहरसुकवि, जयजयजयरघुनाथजय ॥ १६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मारिमतंगहिषेतमह । ज्यौगजेतमृगराज ॥ उठिठाढौऐंडात अति । जयपाईजुवराज ॥ ४६ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ कंटकसौंहसिदूतकपि । दी

नौयहउपदेस ॥ पनमतछांडहिआपनौ ॥ करिसमहरलंकेस ॥ ४७ ॥ असुरकहा यौआजलौं । सुरसुरेसकौसाल ॥ सरनगएहूंछांडिरिस । कबहुनवचैनकाल ॥ ४८ ॥ मूलमंत्रयहमानिमन । मिलिसनमुषरनराम ॥ आनिवनीउच्छाहउर ॥ साजिसबनसंग्राम ॥ ४९ ॥ हमतोहिमारनकौंहठे । प्रभुकौंद्वेषीपाय ॥ अबतौमंगलसौंमरत । रनमहँरावनराय ॥ ५० ॥ तबचलिअंगदलंकते । परेआनिप्रभुपाइ ॥ तवप्रतापरघुकुलतिलक । सुधरीसबैसुभाइ ॥ ५१ ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ श्रीरामप्रति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ चिंताकूपगभीरशोकअरघट्टसदुस्तर ॥ विषमशब्दहारावशोकसंकोचधुरंधर ॥ नयनजंत्रघटिकासदीर्घजुगभरतढरतजल ॥ नाशावंसप्रनालअश्रुधाराचलिअविरल ॥ कहिग्रेहग्रेहनरहरसुकवि, श्रमअनेकपरिभवसहित ॥ रघुवीरधीरतवरिपुरमनि, वारिउरजकुंभनिवहत ॥ १६ ॥ नहिनरागरसरंगहाससविलासकुतूहल ॥ नहिनसुषदश्रृंगारकेलिमंगलकोलाहल ॥ सूरवीरसन्नाहसारआयुधनसंभारत ॥ रामवयरदिनरातिअबरनहिबातउचारत ॥ मृगराजत्रासमृगजूथमनु. जीयनआसछूटनजथा ॥ कुलराकसवासीलंकके, कहतकालआगमकथा ॥ १७ ॥ इतिअंगददूतप्रसंगः ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ ॥ सिखरतृकूटाचलविषय । रावनठाढाऔनि ॥ देषतवेलाचलदिसहि । महारोषमनमानि ॥ १ ॥ पर्वतवेलाश्रृंगपर । उतठाढेरघुराम ॥ दक्षिनआमितबानदृढ । विसिषासनकरवाम ॥ २ ॥ इक्कदिसादिनकरउदित । इक्कहिलंकअवास ॥ प्रतिआभादूववादपरि । सममिलिभयौप्रकास ॥ ३ ॥ तहांविलोकतलंकतन । सानुजरामसचेत ॥ कल्पितसोभानगरकी । दृगानिमहासुषदेत ॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रतिद्वारद्वारतोरणप्रचंड ॥ दुतिग्रेहग्रेहबनिध्वजादंड ॥ कनकमयकलसनगजटितकीन ॥ नितबढतअमितसोभानवीन ॥ प्राकारग्रेहहिममयप्रमान ॥ थितउर्द्धविराजतसप्तथान ॥ पूरनकिहिकवियहबुद्धिपाय ॥ वरनीजुलंकसोभाबनाय ॥ ठाढौतहांरावनउर्द्धथान ॥ निस्संकरामदेष्योनिदान ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दसमस्तकमुकुटकिरीटदेषि ॥ सोपूछिविभीषनकहिविसेषि ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥ रावनयहठाढौअसुरराइ ॥ सिरछत्रसेतचामरचलाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनतरामआजानबाहु । आकर्षिधनुषसरगुनउछाहु ॥ कोदंडकर्योकुंडलाकार ॥ मोष्योजुवाननिसिचारमार ॥ दशमुकटमूलकाटेनिदान ॥ सोलग्यौवानवज्रहिसमान ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ लजितमनतिहिछनलंकेसुर ॥ परेछत्रभजिगौअंतःपुर ॥ बेलाचलऊपरप्रभुपावन ॥ वसेनिसात्रैतापनसावन ॥ लक्ष्मनपल्लवदर्भडसाए ॥ विहितअजिनसज्जाजुबनाए ॥ सीसकपीसअंकअवधेसर ॥ मारुतिचांपतचरनमनोहर ॥ वामपाणिकोदंडविराजित ॥ सरअमोघदच्छिनकरसाजित ॥ निकटनिषंगसव्यदिसिसोहत ॥ महिकृतसयनभक्तमनमोहत ॥ सावधानलक्ष्मनवीरासन ॥ बैठेमित्रकपीशविभीषन ॥ ॥ रावणअषारो ॥ ॥ सोचतनिसाभईइहिअवसर ॥ लंकासिषरमनोहरमंदिर ॥ वनिबैठ्यौताऊपररावन ॥ भामिनिमंदोदरिमनभावन ॥ राजितछत्रवितानमनोहर ॥

धुरजनुघटाघमंडितजलधर ॥ इहांकिन्नरगंधर्वजुआए ॥ विधिनाटकसंगीतबनाए ॥ वाजतविविधगहरसुरबाजे ॥ गगनमनहुंप्रतिधुनिमिलिगाजे ॥ नाचतिअपछरिकरतकूतूहल ॥ होतनिसानगानकोलाहल ॥ कंटकमुकटकिरीटकनकमय ॥ मंदोदरिकुंडलनगहिममय ॥ मनहिरीझिजबसीसभ्रमावत ॥ तडितातरकिमनहुछविपावत ॥ राघवलंकाओरनिहारे ॥ इहांरावनघरहोतअषारे ॥ कह्योउदयतिहिसमयनिसाकर ॥ कुमुदिनिविकसिचकोरनिहितकर ॥ देषिविसेसछत्रघनडंबर ॥ विभ्रतत्रीयकुंडलतडितावर ॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥ रामकह्योदेषहुलंकेसर ॥ दामिनिदमकलंकपरडंवर ॥ मनहिविभीषनआवतमोरे ॥ उनयोघनपरिहैधोओरे ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ बोलेलंकविलोकिविभीषन ॥ मेघनाहिनयहरघुकुलमंडन ॥ सजिवितानबहुरंगसँवारे ॥ उहांरावनघरहोतअषारे ॥ घुमरतनहिनमृदंगसवदघन ॥ गगनपूरिप्रतिधुनित्रंबकगन ॥ नाथदमकदामिनियहनांहीं ॥ मंदोदरिकुंडलचमकांही ॥ रतनकिरीटचमकयेरावन ॥ नहींचपलात्रेतापनसावन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विजयतानिमोष्योतबरघुवर ॥ सोहनिमुकटफिरहिंआयोसर ॥ तहांकाहुनदेष्योधनुताज्यो ॥ निजकौतुककपिसेननजान्यो ॥ धरिसिरलैगोमुकटपरेधर ॥ मनअसकुनलषिपैठ्योमंदिर ॥ पकरिहाथतवहीपटरानी ॥ सज्यालैवैठारिसयानी ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ मानहुवचनकहतिमंदोदरि ॥ असअसकुनहोतनिकटआयोअरि ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावनकाहिमंदोदरी । सिरहुंगिरेसुभसूर ॥ पुनिलैधरिहुंसीसपर ॥ मुकटनअसगुनमूर ॥ ५ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ सबकहतनीतित्रीयगनसमास ॥ उरजासअष्टलक्षननिवास ॥ साहस १ जुअनृत २ चपलता ३ संग ॥ अतिमाया ४ भय ५ अविवेक ६ अंग ॥ अनसोच ७ अदय ८ मिलिअनाचार ॥ वनितास्वभावअष्टौविकार ॥ प्यारीहमकीनोयहप्रसान ॥ धरिचित्तवचनतवभयनिदान ॥ सबअमरसत्रुजेमोहिसुनाइ ॥ सोसबैछांडिठाढेसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीतामहमायासती । रामब्रह्महियहेरि ॥ निहचैहैमेरोमरन । तोपैदेउंनफेरि ॥ ६ ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ कंतजुछायाकालकी । निसंदेहघरनास ॥ तातैंमानतनाहिंतुम । वृथाप्रबोधप्रकास ॥ ६ ॥ रहसिसमयमंदोदरी । रातिकहतिदुषरोइ ॥ अंगदहूकीएकतुम । कहीनमानीकोइ ॥ ७ ॥ द्वैसुतमारेवानरनि । पतिकहँउपजीघात ॥ अहंकारप्रियरावरो । मोहिभयोफलदात ॥ ८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अंतकंततबलगिअवतारा ॥ भयोरामटारनभुवभारा ॥ प्रियसुनीयैतिनकीप्रभुताई ॥ छातीतोहिगर्वमदछाई ॥ अमरअषिलजिनकेहैअवयव ॥ देवसहायदुष्टदानवदव ॥ ॥ विराटरूप ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ प्रतिमासुत्रयपुरपाल ॥ सिरब्रह्मधामविसाल ॥ भवकालभृकुटिविलास ॥ बनिद्रिगविभावसुवास ॥ कचमालघनआकार ॥ कृतघ्रानअश्वनिकुमार ॥ निसिदिवसजासनिमेष ॥ अरुदिसाश्रवनअसेष ॥ चलिपवनस्वासप्रचंड ॥ भुवलोभअधरअषंड ॥ कृतांतदंतकराल ॥ जसहास्यमायाजाल ॥ दिगदेवबाहूदंड ॥ पुनिवदनअनलप्रचंड ॥ प्रभुरसनिकरुणप्रतच्छ ॥ उतपत्तिप्रलयसुइच्छ ॥वनरोमराजाविसाल ॥ करिकठिनगिरकं

काल ॥ जिहिंसरितहैंनसजाल ॥ बनिउदधिउदरविसाल ॥ अधअंगगोउनमान ॥ पाता
लचरनप्रमान ॥ विधितासबुद्धिविलास ॥ पुनिमनहिचंद्रप्रकास ॥ शिवअहंकारसुथान ॥
प्रभुपिंडयहजुप्रमान ॥ वपुरूपविसदविराट ॥ घटघडतभंजतघाट ॥ यहरामसमझहुसोइ ॥
करिकल्पनाजनिकोइ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विश्वरूपयहरासविश्वंभर ॥ चाहत
दृष्टिप्रसादचराचर ॥ तिनसोवयरअहितअतितोरा ॥ मानहुनाथवचनयहमोरा ॥ गर्व
भावमतराजगमावहु ॥ प्रभुभजिरामअभयपदपावहु ॥ रामहिसियदैपाइपरीजे ॥ दिन
अहवातअचलमोहिदीजै ॥ रहीषीनव्हैजनककुमारी ॥ मरिहैविरहविथाअनमारी ॥ अप
नैअदिनहोइजोऐसी ॥ करिहैसंधिकहौतबकैसी ॥ झूठदेयहमतहठठानहु ॥ मानुषकरिरा
महिजनिमानहु ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बोल्यौइहाँदशशिरवचन । हासि
हसिराकसराय ॥ प्रियेमोहिमायाप्रबल । यासौंकहावसाय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कर
तप्रियाप्रियबतकही । विषमसुनिसाविहाइ ॥ भोरभयेरावनअभय । बैठ्योसभाबनाइ ॥
॥१०॥ इतिमंदोदरीरावनसंवाद ॥ ॥ अथशुकदूतोद्धरण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अनहीं
बोल्यौयासमय । तहांआयौशुकदूत ॥ नीतिनिपुनहितनाथकौ ॥ अरुसाहसीअभूत ॥
॥ शुकउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कहिपठयौतुमहुंतत्रकाज ॥ मोहिलयोपकरितहां
कपिसमाज ॥ मारनतेलगिमर्कटअमान ॥ कैकाटनलागेनाककान ॥ तनचाटिकाटिलाव
तचपेट ॥ भइभलीमोहिमर्कटनिभेट ॥ परपुरुषअनुजलक्ष्मनप्रवीन ॥ करिदयामोहिछुट
काइदीन ॥ काव्योतुममोकहँकरिअकाज ॥ अनपूछीबहुत्योंकहतआज ॥ प्रभुसेतबांधिध
रिधरिपहार ॥ आयौहैराघवउदधिवार ॥ अंगदसौंजोधादूतआइ ॥ समझाइतुमहिपुनि
गोरिसाइ ॥ गटरोधहोइजोलौंनग्राम ॥ सीताहिदेहुप्रभुकरहुसाम ॥ विस्तारवैरविग्रहबढा
इ ॥ कैअंतदेहुचढिषेतआइ ॥ सबदेषेमैवानरसमूह ॥ जुधहर्षकरतवरवीरजूह ॥ व्हैलंकस
मुषचालतलंगूल ॥ सोसिंघनादगर्जतसथूल ॥ सुग्रीवसेनपतिजितसंग्राम ॥ नितरहत
निरंतरनिकटराम ॥ यहनीलअग्निनंदननिसंक ॥ नलप्रबलसेतकर्तानियंक ॥ आछोटपुछ
उतमंगआनि ॥ जुवराजयहैअंगदसुजानि ॥ हनुमंतहेलजिहिलंकजारि ॥ मिलिअक्ष
कुंवररनषेतमारि ॥ यहपनसरंभअरुसरभसूर ॥ यहदुविदमयंदपौरुषसपूर ॥ कपिक
हनपारकोकविकहाइ ॥ संष्यानसेनअतिबलीआइ ॥ विश्वेशरामविश्वहिविनास ॥
जगजननिजानकीप्रियाजास ॥ तिनसौंविरोधनहिउचिततोहि ॥ हठझूठठानिमतना
सहोहि ॥ संसारअथिरयहनाससंग ॥ भवभूतअंतछनमाझभंग ॥ पँचभूप्रकृतिदेहहि
प्रमानि ॥ अरुमिलततत्वपचवीसआनि ॥ मलमांसअस्थिदुर्गंधमूल ॥ अहमेवपात्रअ
तिजौअमूल ॥ भौअंगवारअन्नेकभंग ॥ सोइदेहसहजउतपत्तिसंग ॥ पुनिकरतब्रह्महत्या
दिपाप ॥ तिहिंहेतअविद्यासंगआप ॥ पौलस्तिवंसतुमजनमपाइ ॥ अधिकारलह्योलंकेस
आइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अहंकारताजिबुद्धियह । रामभजहुरघुराइ ॥ दुर्लभपावहुपरमपद ।
सुरपुरवाससुभाइ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ शुककेवचनसुनतहितसानैं ॥ उरअ
तिक्रोधदशाननआनै ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ अन्नषातममदत्तअभागे ॥ गुरजौंमोहि

धुरजनुघटाघमंडितजलधर ॥ इहांकिन्नरगंधर्वजुआए ॥ विधिनाटकसंगीतबनाए ॥ वाज तविविधगहरसुरबाजे ॥ गगनमनहुंप्रतिधुनिमिलिगाजे ॥ नाचतिअपछरिकरतकूतू हल ॥ होतनिसानगानकोलाहल ॥ कंटकमुकटकिरीटकनकमय ॥ मंदोदरिकुंडलनग हिममय ॥ मनहिरीझिजबसीसअमावत ॥ तडितातरकिमनहुछविपावत ॥ राघवलं काओरनिहारे ॥ इहांरावनघरहोतअषारे ॥ कखौउदयतिहिसमयनिसाकर ॥ कुमु दिनिविकसिचकोरनिहितकर ॥ देषिविसेसछत्रघनडंबर ॥ विभ्रतत्रीयकुंडलतडिता वर ॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥ रामकह्योदेषहुलंकेसर ॥ दामिनिदमकलंकपरडं वर ॥ मनहिविभीषनआवतमोरे ॥ उनयौघनपरिहैधौओरे ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ बोलेलंकविलोकिविभीषन ॥ मेघनहिनयहरघुकुलमंडन ॥ सजिवितानबहुरंगसँवारे ॥ उहांरावनघरहोतअषारे ॥ घुमरतनहिनमृदंगसबदघन ॥ गगनपूरिप्रतिधुनित्रंबकगन॥ नाथदमकदामिनियहनांहीं ॥ मंदोदरिकुंडलचमकांही ॥ रतनकिरीटचमकयेरावन ॥ नहींचपलात्रेतापनसावन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विजयतानिमोष्योतबरघुवर॥ सोह निमुकटफिरहिंआयोसर ॥ तहांकाहुनदेष्योधनुतान्यौ ॥ निजकौतुककपिसेननजान्यो ॥ धरिसिरलैगोमुकटपरेधर ॥ मनअसकुनलषिपैठ्योमंदिर ॥ पकरिहाथतवहीपटरानी ॥ स ज्यालैवैठारिसयानी ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ मानहुवचनकहतिमंदोदरि ॥ अस असकुनहोतनिकटआयोअरि ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावनकाहिमंदो दरी । सिरहुंगिरेसुभसूर ॥ पुनिलैधरिहुंसीसपर ॥ मुकटनअसगुनमूर ॥ ५ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ सबकहतनीतित्रीयगनसमास ॥ उरजासअष्टलक्षननिवास ॥ साहस १ जुअनृत २ चपलता ३ संग ॥ अतिमाया ४ भय ५ अविवेक ६ अंग ॥ अनसोच ७ अदय ८ मिलिअनाचार ॥ वनितास्वभावअष्टौविकार ॥ प्यारीहमकीनोयहप्रसान॥ धरिचित्तवचनतवभयनिदान ॥ सबअमरसत्रुजेमोहिसुनाइ ॥ सोसबैछांडिठाढेसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीतामहमायासती । रामब्रह्महियहेरि ॥ निहचैहैमेरोमरन । तोपैदेउंन फेरि ॥ ६ ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ कंतजुछायाकालकी । निसंदेहघरनास ॥ तातैं मानतनाहिंतुम । वृथाप्रबोधप्रकास ॥ ६ ॥ रहसिसमयमंदोदरी । रातिकहतिदुषरोइ ॥ अंगदहूकीएकतुम । कहीनमानीकोइ ॥ ७ ॥ द्वैसुतमारेवानरनि । पतिकहँउपजौघात ॥ अहंकारप्रियरावरो । मोहिभयोफलदात ॥ ८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अंतकंततब लगिअवतारा ॥ भयोरामटारनभुवभारा ॥ प्रियसुनीयैतिनकीप्रभुताई ॥ छालीतोहिगर्वम दछाई ॥ अमरअषिलजिनकेहैअवयव ॥ देवसहायदुष्टदानवदव ॥ ॥ विराटरूप ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ प्रातिमासुत्रयपुरपाल ॥ सिरब्रह्मधामविसाल ॥ भवकालभृकुटिविला स ॥ बनिद्रिगविभावसुवास ॥ कचमालघनआकार॥ कृतघ्रानअश्वनिकुमार ॥ निसिदिव सजासननिमेष ॥ अरुदिसाश्रवनअसेष ॥ चलिपवनस्वासप्रचंड ॥ भुवलोभअधरअषंड॥ कृतांतदंतकराल ॥ जसहास्यमायाजाल ॥ दिगदेवबाहूदंड ॥ पुनिवदनअनलप्रचंड ॥ प्रभुरसनिकरुणप्रतच्छ ॥ उतपत्तिप्रलयसुइच्छ ॥वनरोमराजविसाल ॥ करिकठिनगिरकं

काल ॥ जिहिंसरितहैंनसजाल ॥ बनिउदधिउदरविसाल ॥ अधअंगगोउनमान ॥ पाता
लचरनप्रमान ॥ विधितासबुद्धिविलास ॥ पुनिमनहिचंद्रप्रकास ॥ शिवअहंकारसुथान ॥
प्रभुपिंडयहजुप्रमान ॥ वपुरूपविसदविराट ॥ घटघडतभंजतघाट ॥ यहरामसमझहुसोइ॥
करिकल्पनाजनिकोइ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विश्वरूपयहरामविश्वंभर ॥ चाहत
दृष्टिप्रसादचराचर ॥ तिनसोवयरअहितअतितोरा ॥ मानहुनाथवचनयहमोरा ॥ गर्व
भावमतराजगमावहु ॥ प्रभुभजिरामअभयपदपावहु ॥ रामहिसियदैपाइपरीजे ॥ दिन
अहवातअचलमोहिदीजे॥ रहीपीनव्हैजनककुमारी ॥ मरिहैविरहविथाअनमारी ॥ अप
नैअदिनहोइजोऐसी ॥ करिहैसंधिकहौतबकैसी ॥ झूठदेयहमतहठठानहु ॥ मानुषकरिरा
महिजनिमानहु ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वोल्योइहाँदशशिरवचन । हसि
हसिराकसराय ॥ प्रियेमोहिमायाप्रबल । यासौंकहावसाय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कर
तप्रियाप्रियबतकही । विषमसुनिसाविहाइ ॥ भोरभयेरावनअभय । बैठ्योसभाबनाइ ॥
॥१०॥ इतिमंदोदरीरावनसंवाद ॥ ॥ अथशुकदूतोद्धरण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अनहीं
बोल्योयासमय । तहांआयोशुकदूत ॥ नीतिनिपुनहितनाथको ॥ अरुसाहसीअभूत ॥
॥ शुकउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कहिपठयौतुमहुंतत्रकाज ॥ मोहिलयोपकरितहां
कपिसमाज ॥ मारनतेलगिमर्कटअमान ॥ कैकाटनलागेनाककान ॥ तनचाटिकाटिलाव
तचपेट ॥ भइभलीमोहिमर्कटनिभेट ॥ परपुरुषअनुजलक्ष्मनप्रवीन ॥ करिदयामोहिछुट
काइदीन ॥ काव्योतुममोकहँकरिअकाज ॥ अनपूछीबहुत्यौंकहतआज ॥ प्रभुसेतबांधिध
रिधरिपहार ॥ आयौहैराघवउदधिवार ॥ अंगदसौंजोधादूतआइ ॥ समझाइतुमहिपुनि
गोरिसाइ ॥ गटरोधहोइजौलौंनग्राम ॥ सीताहिदेहुप्रभुकरहुसाम ॥ विस्तारवैरविग्रहबढा
इ ॥ कैअंतदेहुचढिषेतआइ ॥ सबदेषेमैवानरसमूह ॥ जुधहर्षकरतवरवीरजूह ॥ व्हैलंकस
मुषचालतलंगूल ॥ सोसिंघनादगर्जतसथूल ॥ सुग्रीवसेनपतिजितसंग्राम ॥ नितरहत
निरंतरनिकटराम ॥ यहनीलअग्निनंदननिसंक ॥ नलप्रबलसेतकर्तानियंक ॥ आछोटपुछ
उतमंगआनि ॥ जुवराजयहैअंगदसुजानि ॥ हनुमंतहेलजिहिलंकजारि ॥ मिलिअक्ष
कुंवररनषेतमारि ॥ यहपनसरंभअरुसरभसूर ॥ यहदुविदमयंदपौरुषसपूर ॥ कपिक
हनपारकोकविकहाइ ॥ संष्यानसेनअतिबलीआइ ॥ विश्वेशरामविश्वहिविनास ॥
जगजननिजानकीप्रियाजास ॥ तिनसौंविरोधनहिउचिततोहि ॥ हठझूठठानिमतना
सहोहि ॥ संसारअथिरयहनाससंग ॥ भवभूतअंतछनमाझभंग ॥ पँचभूप्रकृतिदेहहि
प्रमानि ॥ अरुमिलततत्वपचवीसआनि ॥ मलमांसअस्थिदुर्गंधमूल ॥ अहमेवपात्रअ
तिजौअमूल ॥ भौअंगवारअनेकभंग ॥ सोइदेहसहजउतपत्तिसंग ॥ पुनिकरतब्रह्महत्या
दिपाप ॥ तिहिंहेतअविद्यासंगआप ॥ पौलस्तिवंसतुमजनमपाइ ॥ अधिकारलह्योलंकेस
आइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अहंकारतजिबुद्धियह । रामभजहुरघुराइ ॥ दुर्लभपावहुपरमपद ।
सुरपुरवाससुभाइ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ शुककेवचनसुनतहितसानैं ॥ उरअ
तिक्रोधदशाननआनैं ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ अन्नषातममदत्तअभागे ॥ गुरजौंमोहि

प्रबोधनलागे ॥ दीष्यादंडजगतहूंसाजत ॥ ताकहँसिष्यादेतनलाजत ॥ कहतअधमतूंजा
तिनीतिकथ ॥ सोहूंनहिसुनिवेकहसमरथ ॥ पुनिजोकहैनीतिफलपावहि ॥ दुष्टवदन
मतफेरिदिषावहि ॥ ॥ शुकउवाच ॥ ॥ प्रभुमैंसबसेवाफलपाए ॥ योंकहिशुककंपत
घरआए ॥ ॥ अथशुकपूर्वजन्मप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आगेंहुतोब्रह्मऋ
षिशुकयह ॥ सोसेवतवनसुषवनितासह ॥ अग्निहोत्रदेआदिजुउत्तम ॥ करतोहोमउ
चितजोद्विजक्रम ॥ वज्रदंष्ट्राकसइकबैषम ॥ इहांसोवसतनिकटशुकआश्रम ॥ पापी
असुरद्रोहद्विजतत्पर ॥ निसदिनताकतघातनिरंतर ॥ इहांअगस्तिऋषिशुककैआए ॥
पूजिसविधिआश्रमपधराए ॥ शुकभोजनहितन्योंतिऋषीश्वर ॥ आपुनगयोतबैगृहअंत
र ॥ करिअगस्तिकोरूपसुआसुर ॥ ॥ कह्योशुकहिविनतीसुनिद्विजवर ॥ ॥ वज्रदंष्ट्र
उवाच ॥ ॥ छागामिषभोजनममइक्षा ॥ कछुककालभएकरतउपेक्षा ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ शुकअपकारहेतबहिराक्षस ॥ तहांशुकत्रीयारूपकीनोतस ॥ भांतिभांतिभोजन
मनभाए ॥ मनुषामिषतिनमध्यबनाए ॥ यहकरिपाकअसुरगृहआयो ॥ ब्राह्मनइहांअग
स्तिबुलायो ॥ बहुतभक्तिगृहमहँबैठारे ॥ पुनिलैअग्रधरेपनवारे ॥ लेशुकआपपरोशन
लागे ॥ परमविचित्रअन्नरसपागे ॥ नरआमिषतामहँलैनाए ॥ अंगप्रतक्षदृष्टिमुनिआ
ए ॥ ॥ मुनिअगस्त्यउवाच ॥ ॥ एअमेध्यनरमांसअभागे ॥ आनिधरेभोजनमम
आगे ॥ पापीमुहिपरुस्योजुअपावन ॥ शुकतुमहोहुमनुजमांसासन ॥ ॥ शुकउवाच
॥ ॥ देवमांसभषआज्ञादीनी ॥ विसरेसोयहबुद्धिनवीनी ॥ काहिअपराधश्रापदयोस्वा
मी ॥ जगतपूज्यतुमअंतरजामी ॥ दयोश्रापकिहिकारनदेवा ॥ मैसतभाइकरीसबसेवा
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जोगध्यानकरिजबऋषिजान्यो ॥ मनअपराधनशुककोमान्यो
॥ शुकअदोषमुनिमनअनुसरयो ॥ कछुविकारकिहुंदुष्टजुकरयो ॥ ॥ अगस्त्यउवाच
॥ ॥ द्विजअज्ञातश्रापमैदीनो ॥ कृतअविचारअनोचितकीनो ॥ मेरोवचनअमोघवि
चारहु ॥ निहचैसोइभवतव्यनिहारहु ॥ रौद्रदेहराकसकोधरिहै ॥ कर्मसहायदशाननक
रिहै ॥ रामजवैमानुषतनधरिहैं ॥ कारणवधरावनकोकरिहैं ॥ त्रेताजुगराघवअवतारा ॥ तौ
लौंराकसदेहतुह्मारा ॥ इहांरघुवीरलंकगढआवहिं ॥ सेनरीछवानरसमुदावहिं ॥ जबशु
कदूतरामपहंजैहो ॥ हेतवचनकंटकसमझैहो ॥ वातनीतिकहिअनषबढैहै ॥ दुष्टतबैतोहिउत्त
रदैहै ॥ हठिपुनिरामसरनतुमजैहो ॥ प्रभुपदपरसिआपपदपैहो ॥ ॥ कविरुवाच ॥
॥ आगेंहुतोभविष्यजुऐसो ॥ तातेमिल्योशुकहिअबतैसो ॥ इहांशुकअनषिरामपहँआ
ए ॥ सबअपनोवृत्तांतसुनाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिवंदनरघुनाथकँहँ । परमप्रेमपरि
पाय ॥ क्रमजुतकीनोपरिक्रमण । सुष्वनचित्तसमाय ॥ ३ ॥ पुनिशुकपायोआपपद ।
धर्मदेहद्विजधारि ॥ अधमउधारनअघहरन । ऐसेराममुरारि ॥ ४ ॥ हैअनाथकेनाथ
हरि । पतितदीनसोंप्रीति ॥ अषिलचराचरअगतिगति ॥ नरहरप्रभुकीरीति ॥ ५ ॥
॥ इतिशुकोद्धरणं ॥ ॥ अथलंकावरोधनं ॥ ॥ सुग्रीववाक्यं ॥ ॥ कवित्त ॥
॥ जोरिपानिकपिराजस्वामिसोंविनयोंऐसो ॥ तवप्रतापरघुतिलककहारावनगढकैसो ॥

सहितबंधुसुतत्रीयारजुवद्धीयगलरावन ॥ गढउथालिषलगर्वगोलिपारहिपदपावन ॥ आजानबाहुअवधेसअब, रनजयदीक्षालीजिये ॥ कपिभालकरतउछवकलह, देवसुआज्ञादीजिये ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ हसिबोलेअवधेसरामधर्महिरषवारे ॥ तुमकारनकपिअमरअंसअवनीअवतारे ॥ यहउपज्यौवरब्रह्मवंसपापिष्टअपावन ॥ जानयहैजुवराजसठहिपठयौसमझावन ॥ तिहिंभएअबैनिर्दोषतुम, कपिपतिशोचनकीजिये ॥ अनाचारिषलकंटकहि, दुष्टकर्मफलदीजिये ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जयतिजयतिसुरसरन अषिलदलवचनउचारे ॥ उठेवीरअनभंगकुलहिराकसषयकारे ॥ रामरूपउरधरीयतृकुटद्दगवंकनिहारीय ॥ चितहुलासआयासलग्गिसुरवैरसंभारीय ॥ संक्रम्यौसेननरहरसुकवि, कोलाहलजुधहर्षकरि ॥ आनंदअमरपतिउप्पजीय, पुरहिलंकआतंकपरि ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ दुर्गमलंकाचारिदुवारा ॥ वज्रकपाटसूलविस्तारा ॥ चारिचमूचहुंओरचलाए ॥ अतिबलसाजिद्वारचहुँआए ॥ दक्षिनद्वारआइलगिअंगद ॥ पायौजिहिंजुवराजविजयपद ॥ द्वारपूर्वदिसनीलप्रबलदल ॥ करसंचालचरनरनअनचल ॥ पच्छिमदिसहनुमंतविजयपन ॥ रामभक्तषयकरराक्षसरन ॥ आपरामलक्ष्मनदिसउत्तर ॥ भक्तसहायविनासनभूवभर ॥ सबदिसभएकपीससहाइक ॥ कपिसमूहलीनैमधिनाइक ॥ सिलपर्वततरनिकरसुहाए ॥ आयुधवानरभालउठाए ॥ कूदहिंगगनकरहिंकोलाहल ॥ दुस्सहदससीसहिमर्कटदल ॥ देतविभीषनचौकीदसदिस ॥ राषतपूठिकपिनकीराकस ॥ घनदलभयौलंकगढघेरौ ॥ कालआइराकसकुलकेरौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांरावनकृतकोपअति । सजिआयुधसन्नाध ॥ दुर्गमद्वारनिचारिदिसि । आएअसुरअसाध ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ असहप्रहस्तपूर्वदिसआयौ ॥ जंत्रविविधिघनद्वारसजायौ ॥ दक्षिनद्वारैआइमहोदर ॥ वीरविषमदलरोकेवानर ॥ इंद्रजीतपच्छिमदिसआयौ॥विकटकपाटनिद्वारबनायौ॥ उत्तरद्वारदसाननआए॥ साजिकिरीटदससुकटसुहाए॥ विरूपाक्षसोमध्यरह्यौसक॥ करतसहायसबनिनारंतक॥कंटकदुर्गसुरक्षितकीनौ॥द्वारद्वारजिहिआइसदीनौ ॥ आयुधसकलसाजिषलआए ॥ सोइसोइजिहअभ्याससुहाए ॥ ॥ छंदपधरी ॥ कर्तरीपाशअंकुशकटार ॥ जमदष्ठषग्ग, षांडादुधार ॥ शक्तिसुसांग, छुरिका, तृशूल ॥ मुद्गरा, गदा, डंगासमूल ॥ धनु, वानविविध, तोमरसधीर ॥ वसभिंडपाल,परिघा, जुवीर ॥ परसी, कुठार, चुगमारपानि ॥ घन, घातप्रबल, पट्टिस, प्रमानि ॥ हल,मुसल, डाह, करपत्रहाथ॥ डसमक्षिचक्र, वीछूसमाथ ॥ करग्रहेशूल, भल्ला, कुदाल॥ जेकपटजुद्धआयुधनिजाल ॥ अरुदेशदेशपहरणअनेक ॥ इत्यादिगनैकोएकएक ॥ वाहनहय, वारण, रथविसाल, ॥ षर, करभ, सिंघ, चित्रकनिषषाल ॥ तहांवृषभ, महिष, वृकचढिकुचित्त ॥ अन्नेकजंतुवाहकअभित्त ॥ वाजतनिसानचहुघांविसाल ॥ भेरी,मृदंग, रवसुरनिसाल ॥ गोमुषा, पणव, आनक अगान ॥ दुंदुभी, संष, पटहा, निदान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ काठ, चर्म, मयतांत्रिका । पुनिजेधातप्रकार ॥ इत्यादिकवाजित्रअवर । बसकिंहिगणितविचार ॥ २ ॥ समहरवाजतवीरसुर । सुनिसुनिसब्दविसाल ॥ त्यौंत्यौउमहत

चित्तश्रति । भटराकसकपिभाल ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ छंदद्विश्रक्षरी ॥ ॥ चौपटमारिभजावहुवनचर ॥ षाहुजहांपावहुजहांषेचर ॥ साजिदलगहहुबालसन्यासी ॥ होइवंसछत्रिनमंहंहासी ॥ पूंछकाटिछांडहिंगेकपिपति ॥ पकरविभीषनकरिहैंमढपाति ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ दशसीचवचनराकसदुवाह ॥ रसरोसलगेकपिदलाहिराह ॥ रसवीरउभयदलपैजरोपि ॥ कपिलरतनिसाचरसमरकोपि ॥ पटकहिंगहिराकसकपिनिपेषि ॥ डारहिंउछालिदिसिरामदेषि ॥ दलमर्कटकौइहांचित्तडोलि ॥ पच्छिमदिसटूटैनहिनपौलि ॥ ॥ छंदभुजंगप्रयात ॥ ॥ श्रथहनुमंतश्रंगदगढमध्यजुद्ध ॥ ॥ दुहूश्रोररघुनाथरावनदुहाई ॥ करैमारलैकारलंकालराई ॥ भनैवानरारीछनिसिचारभागे ॥ लरैरामकेभीछश्रसमानलागे ॥ बकैमूडटूटेधरारुंडधांवै ॥ परैएकउठैमहामुक्तिपावै ॥ चलैजंत्रजंबूरकंगूरजेते ॥ बचांवैतहांकूदिकपिभालतेते ॥ इहांकूदिहनुमंतगढमांझश्रायौ ॥ पस्यौइंद्रजितदृष्टिधरिरोषधायौ ॥ जुरेपवनकौपूतलंकेसजायो ॥ भयौपत्रसंग्रामजोमन्नभायौ ॥ महाबीरझूझैसिलासारमोषै ॥ चढेरोषदोऊबढीचित्तचोषै ॥ ॥ छंदपधरी ॥ सिलमारितोरिरथहयसधीर ॥ वासवजितभौतहांविरथवीर ॥ सारथीश्रवररथलियसजाइ ॥ इंद्रजीततासश्रारोहिश्राइ ॥ हनुमंतसुमास्यौलाततहीय ॥ जर्जरितदेहगयौभूलिजीय ॥ मूर्छागतश्रान्यौमेघनाद ॥ दशशीसदेषिउपज्योविषाद ॥ विचिलंकजुरतहनुमंतवीर ॥ सुनिश्रायौतहांश्रंगदसधीर ॥ सुतवालिमिल्यौमारुतिहिसंग ॥ श्रतिबलीउभयवानरश्रभंग ॥ दुस्साधिवीरकपिभिरतदोइ ॥ हाहंतशब्दगढमांझहोइ ॥ पीटहिउरमस्तकरोइपानि ॥ धावहिंसभीतश्रतिजातुधानि ॥ परित्रासकहहिबालकपलाहिं ॥ हामाततातकिहिंसरनजांहि ॥ षीरोदधिलंकामथहिषेल ॥ मंदराचलमर्कटउभयमेल ॥ एहचढेकपिहिरावणश्रवास ॥ तहांधुनिगिराएकलसतास ॥ ढाहेजुग्रहध्वजदंडढाहि ॥ व्हैरहीलंकमहँत्राहित्राहि ॥ मारुतिश्ररुश्रंगदबलश्रमान ॥ श्रतिहर्षकरैरघुनाथश्रान ॥ श्रवधेसजयतिजयनृपश्रभंग ॥ भयपस्यौसुनतरावनाहिभंग ॥ जुधमारिकपिनिबहुजातुधान ॥ भूवभिरतश्रस्तमितभयौभान ॥ श्रावासथंभलीनैउषारि ॥ सोइकरैसमरश्रायुधसंभारि ॥ सजिझंपगगनमगकपिसधीर ॥ बिचश्राएश्रपनैसाथवीर ॥ जाग्यौजबमूर्छाइंद्रजीत ॥ श्रतिहर्षभयौरावनश्रभीत ॥ पुनिदुष्टनिसाचरनिसापाइ ॥ सबहिनिकौबाढ्यौबलसुभाइ ॥ ॥ श्रथश्रतिकायश्रकंपणजुद्ध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांश्रकंपनउरउमगि । श्ररुश्रभीतश्रतिकाइ ॥ प्रगटभयेसेनापति । सोगवनैसिरुनाइ ॥ ४ ॥ ॥ छंदद्विश्रक्षरी ॥ ॥ श्रबश्रतिकायश्रकंपनश्राए ॥ ग्रह्यौजुद्धश्ररुमंगलगाए ॥ तिनश्रासुरमायाविस्तारी ॥ श्ररुघनमिलिरयनिश्रंधियारी ॥ श्रोणवृष्टिकीनीश्रतिराकस ॥ दारुणतमपसस्यौदसहूदिस ॥ श्रंधभयेकपिबसश्रंधियारैं ॥ सूझतनाहिंनकहासंभारैं ॥ भएनिरुधममर्कटमाला ॥ रुधिरमईमिलिजलदनिजाला ॥ जान्यौरघुपतिश्रंतरजामी ॥ संकटहरनसुरनिकेस्वामी ॥ प्रभुतहांकरनसहायपठाए ॥ श्रंगदहनूमानकपिश्राए ॥ श्रग्निबानरघुनाथचलायौ ॥ श्रंधकारतिहिंनिखिलनसायौ ॥ इहांनिसाचरमायानासी ॥ पावकजोतिदिगंतप्रकासी ॥ दुसहहाकहनुमंतजुदीनी ॥ गिरे

गर्भश्रसुरीभयभीनी ॥ राकसश्रायुधसूरसचारत ॥ मर्कटतिहिंपर्वततरुभारत ॥ षाइलेहु गहिगहिवानरषल ॥ करतनिसाचरसमरकुलाहल ॥ भयौकलहकपिराकसभारी ॥ चौप टभिरेपचारिपचारि ॥ इहांसुभटश्रतिकायश्रंकपन ॥ घाइलभएश्रघाइघाइघन ॥ परेउठा इलंकपहुंचाए ॥ एघाइलरावनपहँश्राए॥पतिहितमरेश्रसुरजसपाए ॥उवरेसुपैदुर्गमंहंश्रा ए॥रनव्यवहारसुन्यौजबरावन ॥ प्रजरतहींयौसरोषश्रपावन ॥ सुततइयांमंत्रीभटसाजन॥ निर्णयपूंछतभयौदसानन ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ करिवोकाजश्रबैसोइकहियै ॥ सब लश्रापपरिहंसक्यौंसहीयै ॥ दुसहवचनसुनियतहैदिनादिन ॥ रोसचढैराक्षसछीजतरन ॥ ॥ **माल्यवानउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ माल्यवानश्रतिहेतमन । बोल्यौवचनविचार॥ समताविनुसंग्रामसजि । होयश्रंतपैहार ॥ ५ ॥ हिरण्याक्षदैश्रादिहठि । श्रसुरसूरश्रब नीस ॥ श्रगणितमारेरामइहिं । सुनेतुमहुदससीस ॥ ६ ॥ लीनौतिहिंतबश्रंतलगि । श्र बमानुषश्रवतार ॥ हठलाग्यौहैदैवहित । भूमिउतारनभार ॥ ७ ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ वचनलग्यौविषवानसौं । माल्यवानकोमूढ ॥ उत्तरदीन्यौफेरियह । इहांदससीसश्रगूढ ॥ ॥ **रावनमाल्यवानप्रतिवाक्यं** ॥ ॥ जमहूंतोहिभूल्योजरठ । सोनहींकरतसंभार ॥ इ हिंकारनजीवतश्रजौ । वचननीतिविस्तार ॥ ॥ **माल्यवानउवाच** ॥ ॥ एहगयौतबग्रे हउठि । माल्यवानदुषमानि ॥ देषहुगेरावनदुसह । श्रबजुबनीहैश्रानि ॥ १० ॥ ॥ **इंद्र जीतजुद्ध** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ इहांबोल्यौरावनसुतश्रभीत ॥ जगलह्यौविरदजिहिंइंद्र जीत ॥ करीयेनसोचलंकेसकोइ ॥ दलकीसकहानरजतीदोइ ॥ श्राकासढाहिपृथ्वीउथा लि ॥ करिहूंश्रवानरीसृष्टिकालि ॥ यौंकरतमंत्रसुतपितश्रभंग ॥ प्रगट्यौप्रभातउद्योतपं ग ॥ दललगेलरनचौहूदुवार ॥ मिलिहोतशब्दमुषमारमार ॥ सेनापतिव्हैश्रायौसकोप॥ श्रतिवढीवदनघननादश्रोप ॥ इहिंदिसाश्राइश्रंगदश्रभीत ॥ जुधजुरेश्रसुरकपिसम रजीत ॥ राक्षसतबवाह्यौवज्ररोष ॥ मर्कटकरपर्वतकरयौमोष ॥ तिहिंटरयौवज्ररथध्व जाटूटि ॥ छोहबलगएघननादछूटि ॥ राक्षसप्रजंघत्रयवानरोपि ॥ संपातिकीसउरबनै सोपि ॥ तरुहिघ्घमारिसंपातितास ॥ सोगिरयौषेतगोभूलिस्वास ॥ श्रतिकायश्रसु रश्रायुधउठाइ ॥ सोजुरयौश्रानिसमहरसुभाइ ॥ वनचरवितीतश्ररुरंभवीर ॥ धरिवृ क्षमारिकाढ्यौसधीर ॥ सरहयौमहोदरकपिसुषेन ॥ नतभयौसुविव्हलविथातेन ॥ डा रयौसुषेनपर्वतदुरंत ॥ टूट्यौरथउठिभाग्यौतुरंत ॥ मकराक्षश्रसुरसरजालमेलि ॥ कृत जांबुवंततहांसमरकेलि ॥ संग्रहीसिलाइकपुरुषवीस ॥ सरजालविनास्यौडारिसीस ॥ जुधहन्यौविसिषइहांविद्युजीह ॥ उरफोरि, सतबली, कपिश्रवीह ॥ लीलाउषारिद्रुमस रललीन ॥ दीनीसिरश्रासुरगयौदीन ॥ संग्राम; धूम्रराकसश्रसंक ॥ कपिकुंभमिलेर सरोसकंक ॥ परिश्रगनितसरपाथरप्रहार ॥ जुरिगिरेसमरदोऊजुझार ॥ तहांदेवांतकन ववानतानि ॥ श्राहवगवाक्षउरलगेश्रानि ॥ वानरतिहिंमारयौतालवृक्ष ॥ पर्वतप्रमा नतनपरिश्रपक्ष ॥ सरमुक्तिश्रसुरसारनसरोष ॥ सोलग्यौऋषभउरप्रानसोष ॥ वृक्ष हतकरयौतिहिंश्रसुरवीर ॥ संग्रामकीसगर्ज्यौसधीर॥ रावनसुततृशिरागजारूढ॥श्रतिको

पअसुरआयौअगूढ ॥ हततोमरकीनौ, सरभ, हेल ॥ षेचरतिहिंमाखौवृक्षषेल ॥ सम जुरे, नरांतक, पनस, सार ॥ हठिकरेदुहुनिसरतरप्रहार ॥ अरिसमर, अकंपन, कुमुद आनि ॥ परिमारउभयमुष्टासुपानि ॥ धूम्राक्ष, केसरी, मिलेधाइ ॥ इहिंबानमारिउहिं गिरिउठाइ ॥ धुकआसुरकीनौसराजाल ॥ तिहिं, बलीबेग, तरुतोरिताल ॥ आसुरन रांतकुशजुखौआइ ॥ कपि, तपनसरनितैबेधिकाइ ॥ नल, हयौसुथापटनिसाचार ॥ धर गिखौवमतमुषरुधिरधार ॥ नागांतकआसुररननिहारि ॥ मर्कटमयंदसोलयौमारि ॥ दुस्साध्यनिसाचरसार्दूल ॥ कपिद्विविदमिलेसंग्रामकूल ॥ राक्सस, निकुंभ, वानरजुनील ॥ समसक्तिजुरेसमहरसुसील ॥ सजिकैप्रहस्तआयौसधीर ॥ गजउतैगरजिमर्कटगहीर ॥ इहिंओरसुरांतक असुरआइ ॥ दलराम दुरीमुषलगेदाइ ॥ जंबालि, वीरहनुमंत जुद्ध ॥ करथापहन्यौमुहअसुरक्रुद्ध ॥ उतवीरपाक्षनिसचरअभंग ॥ सौमित्रिहयौरनवा नसंग ॥ संतापन, अरु, घनक्रोधसूर ॥ संक्रोधन, कृतघन, सकसमूर ॥ चढिषेतअसु रएदुष्टचारि ॥ मुहंचढेलएसोराममारि ॥ पर्वततरुआयुधघाइपूर ॥ संग्रामअसंष्यागि रेसूर ॥ गनिकरैकवनदूवसेनग्यान ॥ पतिहेतदएजिनसमरप्रान ॥ सिरटुटेछुटेआतम समंध ॥ कलहइहिउभयऊठेकबंध ॥ पलश्रोनपंककर्दमअपार ॥ धरचलीसरितमिलि रुधिरधार ॥ पलचारतृपतआहारपाइ ॥ सबभएनषीपंषीसुभाइ ॥ जोगिनीरक्तभरिपत्र जाल ॥ करिपानकहेजयजयकृपाल ॥ डाकिनीभयानकदईडाक ॥ हरनारदकौतुकवीर हाक ॥ ॥ अथमेघनादजुद्धनागपासबंधनं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मेघनादअतिक्रोधम न । सजिआयौसंग्राम ॥ मारिपछारतमर्कटनि । रनहिंपचारतराम ॥ ११ ॥ षेचंरठा ढौषेतमह । रिसगर्जतहठहोइ ॥ चितवतजादिसकुटिलचष । कपिनसहारतकोइ ॥ १२॥ ॥ अतिसरोषहनुमंतइहां । आयौअद्रिउभार ॥ सोमाखौघननादसिर ॥ भाग्यौरहिन सँभार ॥ १३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तिहिंचोटटुट्यौरथहयसमेत ॥ षलभयौविरथत जिगयौषेत ॥ इहांइंद्रजीतचढिगौअकास ॥ तबहींअदष्टभयौदुष्टतास ॥ आवैनदष्टिमा याअगाध ॥ कहअसुरसबनिमारैअसाध ॥ करसस्त्रअस्त्रवाहनअनेक ॥ अवधेससुका टतएकएक ॥ दुर्वादकहैनहींलगेदाउ ॥ इहांकखौदुष्टषलबुधिउपाउ ॥ विस्तारअसुरमा याविकार ॥ अतिभईश्रोणवर्षाअंगार ॥ मलमूत्रअस्थिकचउपलमार ॥ भइवृष्टिपांशु पूयाअपार ॥ इहिंसमयमिल्यौनभअंधकार ॥ पसखौदिगंततमलहिनपार ॥ तिहिंभए भालकपिअतिसभीत ॥ सबकहतत्राहिप्राणेशसीत ॥ तेजमयबानरघुनाथतानि ॥ जा जुल्यसुमोष्यौसमयजानि ॥ तममायाभईविनासतास ॥ पृथ्वीप्रसिद्धजौरविप्रकास ॥ विधिदएप्रसन्नव्हैरिपुविनास ॥ पहिलैदशकंधहिनागपाश ॥ श्रीरामचंद्रलक्ष्मनसमेत ॥ षललएबांधिअहिपासषेत ॥ ब्रह्माप्रभावरघुनाथवीर ॥ सोपासनहिनकाटेसधीर ॥ रनगिरेमूर्छितबअवधिराउ ॥ प्रभुकखौइहांमानुषप्रभाउ ॥ दुषभएसुभयकपिभालदेषि ॥ षेचरनिहर्षवाढ्यौअसेषी ॥ दशशिरपहँआयौमेघनाद ॥ व्रत्तांतसुनायौसुरविषाद ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ पापिष्टकखौतवसमयपाइ ॥ जानकिहिदिषावहुकंतजाइ ॥ ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रथारूढतबराकासिनि । कीनीजनककुमरारि ॥ रामदिषाएरनअजिर। पौढेपाइपसारि ॥ ॥ सीतावाक्यं॥ ॥ कवित्त॥ ॥ मनहिदेषि मैथिलीइहांअतिशोकउपजिय ॥ कालचालियहकठिनमनुजसुरजाइनमजिय ॥ पापसर्प तेप्रगटनामजिनकौनिस्तारत ॥ भवसागरबूडतसभीतधरिकाहउधारत ॥ भूवप्रवल आहिभवतव्यता, कवनताहिअपवसकरन ॥ सोइरामबंधेअहिपाससौं, राजतसोएसे जरन ॥ १ ॥ जानिसमयजानकीनियतसुरकाजनिहारिय ॥ परमभक्तअतिवलप्रचं डइहांगरुडसँभारिय ॥ गरुतमानआगमनजबहिपंषारववज्जीय ॥ भुजँगपासगए भज्जिविषममायासुवितज्जीय ॥ रघुनाथउठेसानुजरनहि, सुरनिपुहपवरषेसमय ॥ होयप ख्यौदाहयहसुनतही, भयौतहांरावनसभय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ वनअसोकआनीवैदेही ॥ सुमिरततौँहांरामसनेही ॥ ॥ अथधूम्राक्षअकंपनजुद्ध ॥ ॥ इहांधूम्राक्षअकंपनधाए ॥ इहिंदिसिअंगदमारुतिआए ॥ भयौसंग्रामपरसपरभा री ॥ भटलेइभिरेसंभारिसंभारि ॥ परेषेतधूम्राक्षअकंपन ॥ रोषसोकपरजरिउररावन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अनकंपनधूम्राक्षरन । परेजूझिजसपाइ ॥ इंद्रजीतरावनइहां । सोनहि चित्तसमाइ ॥ १५ ॥ इहांरावनअतिहीअनषि । वीरसभाजुबनाइ ॥ सुतभ्रातामंत्रीसु भट । अगनितबैठेआइ ॥ १६ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अथमहोदरमंत्रीनीति प्रबोधनं ॥ ॥ इहिंविचमंत्रिमहोदरआयौ ॥ जिहिंप्रधानपदपूरनपायो ॥ ॥ रावन उवाच ॥ ॥ समयपाइबोल्यौलंकेसर ॥ मौनसाधितुमरहेमहोदर ॥ हितवक्तातुमसदा हमारे ॥ सबैकाजबलबुद्धिसँवारे ॥ कहीयेइहांउचितजोकारन ॥ रिपुलागेराकसछीजत रन ॥ ॥ महोदरउवाच ॥ ॥ द्वैकरजोरेकहतमहोदर ॥ प्रभुतुमचतुरसुबुद्धिनीतिपर ॥ पैहितअहितनाहिंपहिचानत ॥ जानतकरताकिधौंअनजानत ॥ समझिहमहूंतातेचुप साधी ॥ आजपूछयतमंत्रउपाधी ॥ जोहितकहतसुअनहितजानत ॥ मनमहंताहिदुष्ट करिमानत ॥ आजपूछितुमतिहिंकहिआयौ ॥ विहितप्रबोधजुशुक्रबतायौ ॥ सुनीयें नाथकहूंअबसोइ ॥ हठतजिछनकसुनहुथिरहोइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूपतिचारिप्रका रमिलि । प्रगटसुलोकपुरान ॥ मंत्रजुचारप्रकारभुव ॥ मंत्रीचारप्रमान ॥ १७ ॥ ॥ ॥ अथनृपति ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ नृपसुनहुंचारिनिदान ॥ जेप्रसिद्धनीतिप्रमान ॥ महिभयौवेणुमहीस ॥ तिहिंआपमानीयईस ॥ पदयहैलोकजुपाइ ॥ परलोकनियतन साइ ॥ १५ ॥ दूवनृपतिभौहरिचंद्र ॥ अतिबलीअवनीइंद्र ॥ वहिसत्यसाध्यौएक ॥ कृ तकरेउद्धअनेक ॥ सोउभयलोकसधाय ॥ साएवजोतिसमाय ॥ हूवतृतीयराजविदेह ॥ दुषइहांसाहितपदेह ॥ परलोकतिहिंसुषपाइ ॥ सबभएदेवसहाइ ॥ ३ ॥ इक्ष्वाकुकुलनृप अंकु ॥ कोऊभयौराजतृशंकु ॥ इहिंलोककरेअनर्थ ॥ वहिलोकसरिनहीअर्थ ॥ सोइउ भयलोकनसाइ । गौधर्मकीर्तिगँवाइ ॥ ॥ अथमंत्री ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इक मंत्रीनिजस्वारथी ॥ इकप्रभुस्वारथप्रीति ॥ इकदोऊसाधतअरथ । इकदोउहतकअनी ति ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ इकहुतौमंत्रिअसाध ॥ बहुकरेप्रभुहितबाध ॥ तिहिनामसु

रथस्वतंत्र ॥ मनआपप्रभुमिलिमंत्र ॥ दियानिषिलसुभटनिकारि ॥ सबहस्यौराजसंभारि ॥ १ ॥ प्रभुकाजद्वितीयप्रमान ॥ निजकाजनासनिदान ॥ हठिसहीलोचनहानि ॥ जौशुक्रबलिहितजानि ॥ २ ॥ कपितृतीयहनुमँतकीन ॥ प्रभुआपकाजप्रवीन ॥ कृतदरशशुभरघुदेव ॥ सुग्रीवलायोसेव ॥ ३ ॥ तवपुत्रमंत्रीयतेष ॥ कृतउभयअहितअसेष ॥ समतुमहिनिजकुलनास ॥ प्रभुकरतबुद्धिप्रकास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हेतचारिमंत्रीकहे । जथाकर्मजुतजोग ॥ अबसुनियैदैकानए ॥ प्रभुनृपमंत्रप्रयोग ॥ १९ ॥ ॥ ॥ अथमंत्र ॥ ॥ विषदाडिमकनसेविहित । गुडसेनिंबगनाइ ॥ कविनिमंत्रएचारिकहि । स्वादगुननिसमझाइ ॥ २० ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ च्यारगुनदुस्साधि ॥ वपुनासउतपातिव्याधि ॥ विषस्वादकर्कसअंत ॥ दाडिमीवीजदुरंत ॥ ३ ॥ सुषस्वादगुनमिलिसंग ॥ प्रियमंत्रगुडजुप्रसंग ॥ कटुस्वादगुनहितगाइ ॥ समनिंबमंत्रसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजामंत्रीमंत्रमत । कहेजथामतिजान ॥ देवनकछुतुमतेदुख्यौ । निर्णयनीतिनिदान ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ राजामंत्रीमंत्ररीतिहमसुनीमहोदर ॥ तदपिमनोरथमनहिंनियतयहरहतनिरंतर ॥ राममारिरनषेतइंद्रआसनतेटारौं ॥ करिवासवपुरवासअमरजरमूलउषारौं ॥ जबसुनीप्रतंग्याइंद्रजित, यहकीनीरावनअडर ॥ सन्नादबद्धसजिसारसब, पुनिआयौरनषेतपर ॥ ॥ अथइंद्रजीतजुद्ध ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इतअंगदमारुतिकपिआगम ॥ कुमुदनीलनलसरभक्रोधक्रम ॥ दुविदमयंदतारकेसरितहां ॥ जांबुवंतदधिमुषआएजहां ॥ एतेजूथपजूथजुआए ॥ सिलतरुगिरिसजिभिरतसवाए ॥ समहरआयुधअसुरसंभारत ॥ मारमारउचरतअरुमारत ॥ विषमजुद्धभयौराक्षसवानर ॥ ओणपंककर्दममचिसमहर ॥ घाइनजुद्धउछाहभिरतघन ॥ रोषसियाजारतराक्षसरन ॥ अंसचतुर्थरहेरनआसुर ॥ उपजिसोचअतिइंद्रजीतउर ॥ तिहिंराकसमायाविस्तारी ॥ मेघनादगयौगगनमझारी ॥ नभसोइभयौअदृष्टनिसाचर ॥ ब्रह्मअस्त्रतिहिमारेवानर ॥ कपिनिमारिराक्षसगयौलंका ॥ सोसुनिमिटीपिताउरसंका ॥ इहांकपिषेतगिरेअवलोके ॥ सानुजरघुवरभएससोके ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ऋषभाचलषीरसमुद्रतीर ॥ तहांअमृतऔषधीवसतवीर ॥ अवधेशदईआज्ञाअनंत ॥ सोआनहुतुमहनुमंतसंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हनुमंतऔषधीआनिहाथ ॥ सबमृतकजिवाएसुभटसाथ ॥ पुनितहांमेलिआएप्रमान ॥ मारुतिसोऔषधछनकमान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेकपिअ

पिद्लसंग ॥ आसुरप्रहस्तअसंक ॥ कपिनीलमिलिसमकंक ॥ रननीलमुष्टीमारि ॥ मार्‌योप्रहस्तपछारि ॥ ॥ **अथरावनजुद्धागमन** ॥ ॥ इहिंगिरतमनअकुलाइ ॥ अतिकोपरावनआइ ॥ रनचढ्‌योराकसराज ॥ समपुत्रबंधुसमाज ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ सजिचापरामनरेस ॥ समपूछितबलंकेस ॥ एकौनकौनजुआइ ॥ तेदेहुवीरबताइ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ कंटकसुतदृतबंधुके। गुनबलचिन्हगनाइ ॥ कहतविभीषनविधिविवरी। सुनतरामरघुराइ ॥ २६ ॥ ॥ **छंदउधोर** ॥ ॥ रथव्याघ्रव्याघ्रनिकेत ॥ त्रयशूलरोषसचेत ॥ तिहिअतिकुवेरसताय ॥ अतिकाययहरनआय ॥ रथकनकमिलिध्वजमोर ॥ जयअमरसमरसजोर ॥ सोइसामकार्तिकसाल ॥ करधरैसक्तिकराल ॥ यहमहोदरधुरधीर ॥ वनिवृकोदरकोवीर ॥ कृतरथहिअर्कप्रकास ॥ अहिकेतरनजयजास ॥ यहदेवअंतकदुष्ट ॥ प्रतिअंगपापसपुष्ट ॥ तनदीर्घहंसनिकेत ॥ करषग्गषलथितषेत ॥ सोसमरपंडितसूर ॥ कुलअसुरकर्मकरूर ॥ वसजिहिंसुरासुरवाम ॥ लईछीनिसकसंग्राम ॥ षरसुवनयहमकराक्ष ॥ संसारपौरुषसाक्ष ॥ ॥ **अथरावनजुद्ध** ॥ ॥ बनिस्वर्णकिंकिनिवाजि ॥ रथजुक्तनगमनिराजि ॥ सिरछत्रमालससोह ॥ अतिदुष्टगर्वअरोह ॥ त्रैलोककंटकतास॥इहिंकर्मजगतउदास ॥ यहआहिरावनआप ॥ त्रैलोकप्रगटप्रताप ॥ जुधकपिनिराकसजोर ॥ अतिभारपरिदुहुओर ॥ अपआपसनमुषआइ ॥ घनघाइघाइअघाइ ॥ सिरटुटेकटिअनसंधि ॥ फटिउवरअंत्राफांधि ॥ मर्कटनिगिरतरुमार ॥ सोभयोअसुरसंघार ॥ रनजुटेरावनराम ॥ मनदुहुंनिजयसंग्राम ॥ निसचारसरसंधान ॥ हीयमुष्टिहयहनुमान॥ मुरगईसुष्टिमार ॥ भूल्यौलंकसँभार ॥ पुनिचेतनाभइप्रान ॥ उठिलग्यौषलअसमान ॥ ॥ **सोरठा** ॥ ॥ सरमुक्यौअवधेस, काटेमुकटकिरीटका ॥ भयौलज्जितलंकेस, षिसिपैठ्योगढमाझषल ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ इहांरावनगृहआइपुत्रसौंमंत्रप्रकासीय ॥ राक्षसरनसंघरेसबलठाढेसन्यासीय ॥ ॥ **मेघनादउवाच** ॥ ॥ जबबोल्यौविरदैतइंद्रजेतारउगमउर ॥ मारिरीछमर्कटनिसमरनिस्सेषकरौसुर ॥ करियैनसोचलंकेसकछु, कहिनजपेएतीकरौं ॥ पृथ्वीप्रसिद्धपौरुषप्रबल, प्रगटनाममैपरहरौ ॥ २ ॥ ॥ **अथमेघनादजुद्धद्रोणाचलआगमनं** ॥ पिताचरनवंदनसप्रेमकरजोरिजोरिकीय ॥ इंद्रजीतउठिचल्यौसबलदलराक्षससज्जीय॥ सिंघकेतजेतासुरेसपौरुषपदपायौ ॥ महारथीसाहसअमानअनसंकितआयौ ॥ सोकह्यौविभीषनरामसौं, सावधानरहीयेसमर ॥ परमीसपरमपूरनपुरुष, सजहुनाथकोदंडसर ॥ ३ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ करशस्त्रसमरपंडितसक्रुद्ध॥ जाजुल्यकरतभयोकपटजुद्ध ॥ हैदृष्टिकवहुअनदृष्टिहोइ ॥ कृतचरितकरैदेषैनकोइ ॥ ॥ **जांबवंतउवाच** ॥ ॥ ताकहजुवकाढ्योजामवंत ॥ दृढचरनहोहुममचढहुदंत ॥ ॥ **मेघनादउवाच** ॥ ॥ निजगर्वबोलितबमेघनाद ॥ विनुसमतासौंकैसौविवाद ॥ तोहिजरठजानिछांडतकुजीव ॥ दुषजराजुमार्‌योहैदेईक ॥ अबजपैजुद्धजाच्योअजान ॥ पगमांडितदौढकरहुप्रान ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ तबअसुरकोपिवाह्योत्रिशूल ॥ मिलिरीछऐंचिलीनौसमूल ॥ ताहीत्रिशूलफिरिहयौतास ॥ पगपकारिभूमिपटक्यौप्रकास ॥ मूरछाग

रथस्वतंत्र ॥ मनआपप्रभुमिलिमंत्र ॥ दियानिपिलसुभटनिकारि ॥ सवहस्योंराजसंभारि ॥ १ ॥ प्रभुकाजहितीयप्रमान ॥ निजकाजनासनिदान ॥ हठिसहीलोचनहानि ॥ जोशुक्रवलिहितजानि ॥ २ ॥ कपितृतीयहनुमँतकीन ॥ प्रभुआपकाजप्रवीन ॥ कृतदरशशुभरघुदेव ॥ सुग्रीवलायोसेव ॥ ३ ॥ तवपुत्रमंत्रीयतेप ॥ कृतउभयआहितअसेष ॥ समतुमहिनिजकुलनास ॥ प्रभुकरतवुद्धिप्रकास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हेतचारिमंत्रीकहे । जथाकर्मजुतजोग ॥ अवसुनियेदकानए ॥ प्रभुनृपमंत्रप्रयोग ॥ १९ ॥ ॥ ॥ अथमंत्र ॥ ॥ विपदाडिमकनसेविहित । गुडसेनिंवगनाइ ॥ कविनिमंत्रएचारि कहि । स्वादगुनानिसमझाइ ॥ २० ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ च्यारगुनदुस्साधि ॥ व पुनासउतपतिव्याधि ॥ विपस्वादकर्कसअंत ॥ दाडिमीवीजदुरंत ॥ ३ ॥ सुषस्वादगुनमिलिसंग ॥ प्रियमंत्रगुडजुप्रसंग ॥ कटुस्वादगुनहितगाइ ॥ समनिवमंत्रसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजामंत्रीमंत्रमत । कहेजथामतिजान ॥ देवनकछुतुमतेदुखो । निर्णयनीतिनिदान ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ राजामंत्रीमंत्ररीतिहमसुनीमहोदर ॥ तदपिमनोरथमनाहिंनियतयहरहतनिरंतर ॥ राममारिरनषेत इंद्रआसनतेटारौं ॥ करिवासवपुरवासअमरजरमूलउषारौं ॥ जबसुनीप्रतंग्याइंद्रजित, यहकीनीरावनअडर ॥ सन्नादबद्धसजिसारसब, पुनिआयौरनषेतपर ॥ ॥ अथइंद्रजीतजुद्ध ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इतअंगदमारुतिकपिआगम ॥ कुमुदनीलनलसरभक्रोधक्रम ॥ दुविदमयंदतारकेसरितहां ॥ जांबुवंतदधिमुषआएजहां ॥ एतेजूथपजूथजुआए ॥ सिलतरुगिरिसाजिभिरतसवाए ॥ समहरआयुधअसुरसंभारत ॥ मारमारउचरतअरुमारत ॥ विषमजुद्धभयौराक्षसवानर ॥ श्रोणपंककर्दममचिसमहर ॥ घाइनजुद्धउछाहभिरतघन ॥ रोषसियाजारतराक्षसरन ॥ अंसचतुर्थरहेरनआसुर ॥ उपजिसोचअतिइंद्रजीतउर ॥ तिहिंराकसमायाविस्तारी ॥ मेघनादगयौगगनमझारी ॥ नभसोइभयौअदृष्टनिसाचर ॥ ब्रह्मअस्त्रतिहिंमारेवानर ॥ कपिनिमारिराक्षसगयौलंका ॥ सोसुनिमिटीपिताउरसंका ॥ इहांकपिषेतगिरेअवलोके ॥ सानुजरघुवरभएससोके ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ऋषभाचलषीरसमुद्रतीर ॥ तहांअमृतऔषधीवसतवीर ॥ अवधेशदईआज्ञाअनंत ॥ सोआनहुतुमहनुमंतसंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हनुमंतऔषधीआनिहाथ ॥ सबमृतकजिवाएसुभटसाथ ॥ पुनितहांमेलिआएप्रमान ॥ मारुतिसोऔषधछनकमान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेकपिअमृतजोगतैं । मरेउठेसंग्राम ॥ सिंघनादगर्जतसबै । मुषभाषतजयराम ॥ २२ ॥ पऱ्यौजुविस्मयलंकपाति । वाढ्यौचित्तविराम ॥ जेअबमारेइंद्रजित । सोठाढेसंग्राम ॥ २३ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ जपतमंत्रसंजीवनी । शुक्रनउनहिंसहाय ॥ मर्कटजियेजुरनमरे । यहधौंकवनउपाय ॥ २४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इंद्रजीतगढमाझइह । मेल्यौसहितसमाज ॥ सजिआयौसंग्रामसिर । रावनराक्षसराज ॥ २५ ॥ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ अथप्रहस्तजुद्धवर्णन ॥ ॥ इहिंओररामअभंग ॥ सजिभालक

पिदलसंग ॥ आसुरप्रहस्तअसंक ॥ कपिनीलमिलिसमकंक ॥ रननीलमुष्टीमारि ॥ मार्‍यौप्रहस्तपछारि ॥ ॥ **अथरावनजुद्धागमन** ॥ ॥ इहिंगिरतमनअकुलाइ ॥ अतिकोपरावनआइ ॥ रनचढ्यौराकसराज ॥ समपुत्रबंधुसमाज ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ सजिचापरामनरेस ॥ समपूछितबलंकेस ॥ एकौनकौनजुआइ ॥ तेदेहुवीरबताइ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ कंटकसुतवृतबंधुके। गुनबलचिन्हगनाइ ॥ कहताविभीषनविधिविवरी। सुनतरामरघुराइ॥ २६ ॥ ॥ **छंदउधोर** ॥ ॥ रथव्याघ्रव्याघ्रनिकेत ॥ त्रयशूलरोषसचेत ॥ तिहिअतिकुवेरसताय ॥ अतिकाययहरनआय ॥ रथकनकमिलिध्वजमोर ॥ जयअमरसमरसजोर ॥ सोइसामकार्तिकसाल ॥ करधरैसक्तिकराल ॥ यहमहोदरधुरधीर ॥ वनिवृकोदरकोवीर ॥ कृतरथहिअर्कप्रकास ॥ अहिकेतरनजयजास ॥ यहदेवअंतकदुष्ट ॥ प्रतिअंगपापसपुष्ट ॥ तनदीर्घहंसनिकेत ॥ करषग्गषलथितषेत ॥ सोसमरपंडितसूर ॥ कुलअसुरकर्मकरूर ॥ वसजिहिंसुरासुरवाम ॥ लईछीनिसकसंग्राम ॥ षरसुवनयहमकराक्ष ॥ संसारपोरुषसाक्ष ॥ ॥ **अथरावनजुद्ध** ॥ ॥ बनिस्वर्णकिंकिनिवाजि ॥ रथजुक्तनगमनिराजि ॥ सिरछत्रमालससोह ॥ अतिदुष्टगर्वअरोह ॥ त्रैलोककंटकतास॥इहिंकर्मजगतउदास ॥ यहआहिरावनआप ॥ त्रैलोकप्रगटप्रताप ॥ जुधकपिनिराकसजोर ॥ अतिभारपरिदुहुओर ॥ अपआपसनमुषआइ ॥ घनघाइघाइअघाइ ॥ सिरटुटेकटिअनसंधि ॥ फटिउवरअंत्राफंधि ॥ मर्कटनिगिरतरुमार ॥ सोभयौअसुरसंघार ॥ रनजुटेरावनराम ॥ मनदुहुंनिजयसंग्राम ॥ निसचारसरसंधान ॥ हीयमुष्टिहयहनुमान ॥ मुरगईमुष्टिमार ॥ भूल्यौलंकसँभार ॥ पुनिचेतनाभइप्रान ॥ उठिलग्यौषलअसमान ॥ ॥ **सोरठा** ॥ ॥ सरमुक्यौअवधेस, काटेमुकटकिरीटका ॥ भयौलज्जितलंकेस, षिसिपैठ्यौगढमाझषल ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ इहांरावनगृहआइपुत्रसौंमंत्रप्रकासीय ॥ राक्षसरनसंघरेसबलठाढेसन्यासीय ॥ ॥ **मेघनादउवाच** ॥ ॥ जबबोल्यौविरदैतइंद्रजेतारउगमउर ॥ मारिरीछमर्कटानिसमरनिस्सेषकरौसुर ॥ कारियैनसोचलंकेसकछु, कहिनजपैएतीकरौं ॥ पृथ्वीप्रसिद्धपोरुषप्रबल, प्रगटनाममैपरहरौं ॥ २ ॥ ॥ **अथमेघनादजुद्धद्रोणाचलआगमनं** ॥ पिताचरनवंदनसप्रेमकरजोरिजोरिकीय ॥ इंद्रजीतउठिचल्यौसबलदलराक्षससज्जीय॥सिंघकेतजेतासुरेसपौरुषपदपायौ ॥ महारथीसाहसअमानअनसंकितआयौ ॥ सोकह्यौविभीषनरामसौं, सावधानरहीयेसमर ॥ परमीसपरमपूरनपुरुष, सजहुनाथकोदंडसर ॥ ३ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ करशस्त्रसमरपंडितसक्रुद्ध॥ जाजुल्यकरतभयौकपटजुद्ध ॥ हैदृष्टिकवहुअनदृष्टिहोइ ॥ कृतचरितकरैदेषैनकोइ ॥ ॥ **जांबवंतउवाच** ॥ ॥ ताकेहजुवकार्‍यौजामवंत ॥ दृढचरनहोहुममचढहुदंत ॥ ॥ **मेघनादउवाच** ॥ ॥ निजगर्वबोलितबमेघनाद ॥ विनुसमतासौंकैसौविवाद ॥ तोहिजरठजानिछांडतकुजीव ॥ दुषजराजुमार्‍यौहैदेईक ॥ अबजपैजुद्धजाच्यौअजान ॥ पगमांडितत्तौदृढकरहुप्रान ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ तबअसुरकोपिवाह्यौत्रशूल ॥ मिलिरीछऐंचिलीनौसमूल ॥ ताहीत्रशूलफिरिहयौतास ॥ पगपकारिभूमिपटक्यौप्रकास ॥ मूरछाग

तराकसषेतमांहि ॥ होवरप्रभावतिहिंमस्यौनांहि ॥ कालांतरमूर्छागइकरूर ॥ सोभिरतउ
ठ्योसंग्रामशूर ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दुसहविभीषनगदापानिघननादजुदेष्यौ ॥ जदपिपि
तृव्ययसमरजोगषलव्ययरविशेष्यौ ॥ विषमवीरघातिनीसक्तिअनमोघसंभारीय ॥ यहजु
देषिलक्ष्मनअभंगचितधर्मविचारीय ॥ करिअभययाहिलंकेसकहि, रामप्रतिज्ञाक्यौंटरै॥
उरलगैविभीषनसक्तियह, राक्षसतौनिहचैमरै ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जानिविभीषनकौ
जतन । सरनागतहिसधीर ॥ वीरघातिनीसक्तिके । विचभयेलषमनवीर ॥ ॥ क
वित्त ॥ ॥ भटमर्कटमनभंगभालमयभीतसुभाजत ॥ इनकेममसायकसतेजलागतचित
लाजत ॥ रनसुरेसइभकुंभविषमबहुवारविदारिय ॥ जहांसुरासुरजुद्धकर्मतहाँतहाँजयकारि
य ॥ मुहिहोमततौपूजेजुमन, राममिलैजौआइरन ॥ प्रतिभटप्रसिद्धसमताप्रबल, नाहि
नहमतुमसौंलषन ॥ ४ ॥ रनविचारिशेषावतारअरिवीचजुआयौ ॥ मनुपर्वतप्रतिमाअ
मानदुवसेनदिषायौ ॥ सोइअमोघआसुरअसाधइहांसक्तिचलाई ॥ लषमनवीरलगीदुस
हदुहुँघाँदरसाई ॥ नरभावजुदिषीयसुरनरनि, हाइहाइत्रैलोकहुव ॥ रघुनाथविलोक्यौवीर
रस, भाईसोयौसमरभुव ॥ ५ ॥ इहांअचेतशेषावतारघननादनिहास्यौ ॥ लागिबलीस
बलेहुलेथियहवचनउचास्यौ ॥ इंद्रजीतदैत्यादिअसुरबलबुद्धिउपाईय ॥ लोथिनइतउतच
लीसबैताजिगएषिस्याईय ॥ हनुमंतलषनधरिलाइहीय, रामअग्रलैरष्षयौ ॥ ब्रह्मंडअषि
लव्यापकजुविष्णु, देवशोकइहांदष्षयौ ॥ ६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥
शक्रजीतलंकेशसौं । विजयसुनाईवात ॥ सक्तिहयौलक्ष्मनसमर । तुमसुषमानहुतात ॥
॥ रामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ हालक्ष्मनप्रियप्राननयनममभुजानिरंतर॥
भ्रातमित्रमंत्रीअभीतसेवकभटसमहर ॥कवनकवनगुनकर्मभनूतववल्लभभाई॥सदारह्यौ
सुषसंगसमयसमविषमसहाई ॥ संसारसून्यलागतसकल, मोहिनकहूंठहरातमन ॥ सौ
मित्रिनसोवनयहसमय, लागिकंठबोलहुलषन ॥ ७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रग
टविलापप्रलापकरतभवभूतभ्रमावत ॥ नरलीलाअनुसरतदुसहदुषशोकदिषावत ॥ अ
धरसोषआकंपमहानिस्वासनिमोचत ॥ सूरजदपिसंग्रामसभयमनहीमनसोचत ॥ रो
दतविषादहाहारवन, नीरधारवरषतनयन ॥ वरवीररामलक्ष्मनविरह, विषमदसाफु
रतनबयन ॥ ८ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ हाभवेसकाभयौहेतमुहिजीवननाहीं ॥
कहाकरौंकितजाउंप्रानअवलंबनपाहीं ॥ कृतकारनजोइकरनआहिसोइपरआधीनौ ॥
विभ्भीषनवापुरौकहिनलंकेसुरकीनौ ॥ आरंभअवरकछुभौअवर, पृथ्वीकालमहिमाप्रब
ल ॥ ममरहेमनोरथमांझमन, षांतिपूरिदशकंधषल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अ
र्कबिंवअस्तथयौभयौतमविषमचक्रभूव ॥ विछुरिचकचक्कइयहेतमुद्रितसरोजहुव ॥ ष
लफुल्लीयषेचारवारिवनकुमुदविकासीय ॥ मिलिपलचरवसमांसहरषजुग्गिनिकृतहासीय
॥ अतित्रासितजूथपजूथउर, हीयविषादसुरराजहुव ॥ रुपिरहेअसुरकपिबीररस, भई
निसासंग्रामभुव ॥ १० ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ जांबुवंतकपिराजसमयउद्यमचि
तहुसब ॥ इहांजोइकारनउचितअषिलमिलिमंत्रकरहुअब ॥ समुषविभीषनकँहँसुग्रीवबहु

भाइसबुझिय ॥ देसकालगुनदेहसकलविधितमकहँसुझिय॥उच्चर्योविभीषनतिनहियह, जान्यौसेनसचिंतजब ॥ हैमहावैद्यगढलंकमहँ, आनहुतूसपतूसअब ॥ ११ ॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उचर्योरामविषादउर । सुनहुपरमहितसंत ॥ तुमकरिआवहिवैद्यते । महावीरहनुमंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आज्ञाअवधिनरेस की । मानिसीसहनुमान ॥ धर्योलंकलघुदेहधारि । विहितबुद्धिबलवान ॥ २९ ॥ पाए तूसपतूसतहां । सोवतमंदिरमांहिं ॥ कोलाहलकेसंकतैं । नाहिनजगाएजांहि ॥ ३० ॥ सोमारुतिमंदिरसहित । वैद्यउठाएवीर ॥ आनिधरेउचकाइए । जहांरामरनधीर ॥ ३१ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहिंसमयविभीषणनिकटआइ ॥ वाहिरविसासिलीनैबुलाइ ॥ ॥ ॥ अथबिभीषनवैद्यप्रति ॥ ॥ करीयैविचारिउपचारकोइ ॥ हीयछांडिकंपअरुसधर होइ ॥ पर्यांगततुमअधिकारपाइ ॥ सबभांतिहमारेहितसुभाइ ॥ ॥ तूसपतूसउवाच ॥ ॥ इहांतूसपतूसनिनिकटआइ ॥ विधिदईविभीषनकोबताइ ॥ द्रोणाचलपर्वत दिघ्घदेह ॥ हैषीरोदधिमहँनिःसंदेह ॥ औषधीसजीवनिगुनअमोघ ॥ वहिअद्रि निरंतरउपजओघ ॥ संजीवनिआवैकाजसिद्ध ॥ परभातभएविनुजगप्रसिद्ध ॥ अब करहुविभीषनमंत्रएहु ॥ दुषटैरैरामउपदेसदेहु ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ सविसेष विभीषनसुनिसुभाइ ॥ अवधेसअग्रसोइकह्योआइ ॥ औषधीदिव्यआवैअनंत ॥ तिहिं छुवतलषनऊठहितुरंत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आग्यादीनीरामयह । सुनहुवीरसबकोइ ॥ अंशुमानकेअनउदित । आनहुमूलीकोइ ॥ ३२ ॥ इहांतेद्रोणाच लअवनि । जोजनअंतरजानि ॥ साठिलाषदुर्गमसभय । पर्वतबनहिप्रमानि ॥ ३३ ॥ रामवचनसुनिसुभटसब । बोलेसमयविचारि ॥ अपनोअपनोबलउचित । सोइसोइक हतसंभारि ॥ ३४ ॥ नलतूरात्रिआवागमन । द्विविदमयंदनिसिदोइ ॥ नीलकपीश्वर एकनिसि । हठजुतआवनहोइ ॥ ३५ ॥ आगमनिर्गमआपनो । जामचारिपर्जंत ॥ अंगदविक्रमसमझिउर । बोल्यौतहँबलवंत ॥ ३६ ॥ सबहिनकौबलवेगसुनि । मारुति बलअप्रमानि ॥ समयदेषिकहिरामसौं । प्रभुआग्यासुप्रमानि ॥ ३७ ॥ ॥ हनुमंत उवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अबनशोचअवधेशकरहुममरहतजुकिंकर ॥ पैठिअगमपा तालअमृतआनौछनअंतर ॥ निसानाथनिष्पीडिसुधालक्ष्मनमुषमेलौं ॥ तवप्रतापरघु तिलकषेलभुजबलयहषेलौं ॥ दिनमणिमुहिआएविनु, दरसदेइतनहीकाहूडरौं ॥ कहिमा रुतितौद्वादशअरक, करनिमीडिचूरनकरौं ॥ १२ ॥ ॥ श्रीरामहनुमंतप्रतिवचन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनतरामकीनौउछाहु ॥ जसरातिजन्मतुमहनूजाहु ॥ शुभकाज जोग्ययहतुमहिसंत ॥ मूलीलैआवहुहनूमंत ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ कीनोप्रमान प्रभुवचनकाज ॥ जयजयतिरामराजाधिराज ॥ मिलिवैद्यनिपूछ्योहनूमंत ॥ तिहिंमूलि कहीयैचिन्हतंत ॥ ॥ तूसपतूसउवाच ॥ ॥ तववैद्यबताएचिन्हतास ॥ तिहिपत्रपत्र दीपकप्रकास ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पवनपूततहांबांधिपन । उड्योगग नमगआप ॥ उरधार्योअवधेसकौं । प्रगटसुरूपप्रताप ॥ ३८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥

॥ सोसुन्यौमंत्रदूतनिसुभाइ ॥ धरिचित्तसुलंकागएधाइ ॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ दूतनि काहिरावनसौंनिदान ॥ मूलीकँहँपठयौहनूमान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुन्यौजुरावनदूतसौं । मंत्रयहैदुषमूल ॥ करमीडतअतिक्रोधकरि । सहिनपरतउरशूल ॥ ३९ ॥ एकदैत्यबलबुद्धिअति । कालनेमितिहिनाम ॥ ताकेसमयनिसीथनिसि । रावनआयोधाम ॥ ४ ॥ कालनेमिदशकंधकह । उठितहांसनमुपआय ॥ करवंदनजुगजोरिकर । पुनिपूछ्योपरिपाय ॥ ४१ ॥ ॥ कालनेमिउवाच ॥ ॥ एकाकीप्रभुआगमन । क्यौवअर्धनिसिकीन ॥ हूंलघुकिंकररावरौ । अरुआग्याआधीन ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुनिकालनेमिमोहिउपजिसोच ॥ पुनिदेहिनउत्तरफेरिपोच ॥ हनुमंतजातऔषधीहेत ॥ वानरअसंकबहुरनविजेत ॥ करियैनिषेधऔषधीकाज ॥ यहकारिजतुमहीसरैआज ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इंद्रजीतसक्तीअमोघलक्ष्मनउरलागीय ॥ भौअचेतरनभूमिताहिगएप्रानजुत्यागीय ॥ महासजीवनिमूलिगोप्ययउत्पत्तिद्रोणागिर ॥ अमरनरनिअज्ञातरहतितिहिंठौरनिरंतर ॥ ताहेतजातहनुमंततहँ, करहुविघ्नबल बुद्धिकरि ॥ आवैनप्रथमसोरविउदय, सतूकाजतौनहिनसरि ॥ १२॥ ॥ कालनेमिउवाच ॥ ॥ कालनेमिकरजोरिकह्योसुनीयेंलंकेसर ॥ तुमआपुनअरुइंद्रजीतसबवीरमंत्रिवर ॥ विद्यमानहनुमानपुरीलंकापरजारीय ॥ त्राहित्राहिसिसुत्रियाभयौकोलाहलभारीय ॥ कवनहूंतासविग्रहकरन. हेलमात्रमोहिमारिहै ॥ सुरअसुरनागजिहिंनाहिसम, हठितिहिंकौननिवारिहै ॥ १३ ॥ अगमउदधिझंपयौनिषिलतवधामनिहाख्यौ ॥ मारिसमरअक्षयकुमारवनसुषदबिगाख्यौ ॥ दुर्गलंकदाहयौदुसहतुमसबहिनादिष्यौ ॥ ब्रह्मपासबसपख्यौबंध्यौतउवधनबिसेष्यौ ॥ हनुमंतदूतजाकौहठी, रावनचित्तविचारियै ॥ भुजबलत्रलोकजाकैअभय, विग्रहतिहिनवधारियै ॥ १४ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ताहिकह्योलंकेसतव । महाक्रोधउरमोलि ॥ आजहमहिंतुमगुरुभए । करतकालसौंकेलि ॥ ॥ कालनेमिउवाच ॥ ॥ दुहुघाँआयौमरनदिन । सोच्यौअसुर सवाहि ॥ याकेकरमरिवौअगाति । उहांमरनगतिआहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कालनेमितिहिकालविविधमायाविस्तारीय ॥ पर्वतहेमालयसमीपसुषथानसँवारीय ॥ तहांबनाइमुनिवेषआपबैठ्यौतपआश्रम ॥ सिषअनेकतिहिसंगकरतव्यवहारकपटक्रम ॥ हनुमंतआनिअज्ञाततहां, करजोरेवंदनकरिय ॥ सिधिहोहुवीरवंछितसकल, द्विजस्वरूपआसीसदिय ॥ १५ ॥ ॥ अथकालनेमिकपटरूप ॥ ॥ छलतापसपूछ्यौ कवनतुमकाजजातकत ॥ सूरवीरलक्ष्मनसंग्रामहैगिख्यौशक्तिहत ॥ सल्यविसल्यामूलिआहिद्रोणागिरऊपर ॥ अनभासकरउदयमोहिलैजैवेमुनिवर ॥ अतिबढीतृषाहनुमंतइहां, करिविसासलाग्यौकहन ॥ निर्झरनिवानकहुंजलनिकट, विप्रबताबहुवेगिवन ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥ कपटविप्रइहांकह्यौकपिजुयहभख्यौकमंडल ॥ करियैपाननिसंकजतनजुतहैसीतलजल ॥ महावीरहनुमंतआपफिरिवचनउचारीय॥अल्पनीरतृषअधिकविषमनहीघटतविचारीय ॥ सोइसुषदबताबहुसरितसर, करिमजनजलपानकरि ॥ शुभकथासु

नहिमुनिराजमुष, वेगिइहांआवहिबहुरि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संगद यौइककपटसिष । आयौवारिबताइ ॥ सरवरतिहिंमारुतिधस्यो । पकस्यौमकरीपाइ ॥ २८ ॥ तबकाढीगहिनीरतें । वारिचरीबलबंड ॥ मारुतिदुज्जनपत्रज्यौं । षिजिकीनीसतषंड ॥ २९ ॥ तिहिंपायौपंचत्वतहां । दिव्यलहीपुनिदेह ॥ चालतस्वर्गविमानचढि । उच्चस्यौमुषएह ॥ ॥ मकरीवाक्यं ॥ ॥ इंद्रलोकरहिअपछरा । धान्यामालीनाँउ ॥ ऋषिसरापभईराक्षसी । ठहरानींइहिठाँउ ॥ ३१ ॥ कीनोमकरीरूपकारि । मैंतवबाधकतंत ॥ अबपदपायौआपनौ । तवप्रसादहनुमंत ॥ ३२ ॥ कालनेमिहैदैत्ययह । जिहिंआश्रमतुमजात ॥ पठयौलंकेसरपतित । विघ्नकाजविष्यात ॥ ३३ ॥ ताकौंभूलिविसासतुम । नहींकरिवौहनुमान ॥ याहिमारिलैऔषधी । प्रभुकृतकरहुप्रमान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इंद्रलोकगइअपछरा । दैकपिकँहँउपदेस ॥ आयौमारुतिफेरिइहां । मिलितहांकपटमुनेस ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ करिमायाबोल्यौकपटकार ॥ विश्रामछनककरीयेविचार ॥ गुनमंत्रप्रसादहिअषिलज्ञान ॥ मोहिभूतभविष्यतवर्तमान ॥ हूंदिव्यदृष्टिदेषतदिगंत ॥ तहांलक्ष्मनहैउठ्यौतुरंत ॥ लाभैसंजीवनिमंत्रलेहु ॥ दक्षनामोहिगुरुजानिदेहु ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ यौकहतमात्रसिरथापमारि ॥ सवलेहुदक्षनागुरुसंभारि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मार्यौकपिथापटघट्यौमुंड ॥ तबलग्यौजाइधरअसुरतुंड ॥ मुषबहतरुधिरधाराअमान ॥ पापिष्टदैत्यतहांदएप्रान ॥ मुषकह्यौभरततिहिंरामनाम ॥ धरिदिव्यदेहगौदिव्यधाम ॥ ॥ कवित्त ॥ कालनेमिकौबंधुसबललंकेशसहाइक ॥ कालदंडतिहिंनामदैत्यदेवनिदुषदाइक ॥ वहद्रोणागिरआइअसुरमायाउपराजीय ॥ तरुवल्लीत्रिणपत्रपत्रसमदीपकसाजीय ॥ मिलिभौप्रकासभूवचक्रमहँ, मानहुपरवतअग्निमय ॥ रचिदुष्टकपटमायारहसि, भाजिसुअंतरध्यानभय ॥ ॥ अथसुमित्राप्रसंग ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुषसदनसुमित्राकरतिसैन ॥ यहस्वप्नदेषिउपज्योअचैन ॥ सम्मूलवामभुजग्रस्योसाप ॥ अकुलायअशुभलषिउठीआप ॥ सोस्वप्नप्रातसमयसुभाइ॥इहांकह्योजुकोशल्याहिआइ ॥ बोल्यौवशिष्टगुरुतबविचारि ॥ सोइस्वप्नसुनायौतिहिसंभारि ॥ दुःस्वप्नसांतिहितहोमदान ॥ गुरुलग्यौकरनवैदिकविधान ॥ इहांबैठिहोमथलभरतआइ॥ शुभकुंडअनलप्रगट्यौसुभाइ ॥ समिधामिलिचंदनअगरसंग ॥ उच्चारवेदसाषाअभंग ॥ शुभनारिकेरनीरजमृनाल ॥ घनसारसघृतपटजबप्रबाल ॥ कृततिलउसीरसबहोमकाज ॥ विधिजथाजुक्तसमद्रव्यसाज ॥ पूर्णाहुतिकीनीजबप्रमान ॥ दीयभरतद्विजनितहांउचितदान ॥ पर्वततिहिआयौपवनपूत ॥ अवलोक्यौद्रोणाचलअभूत ॥ आसुरीतहांमायाअमान ॥ प्रतिभूरुहदीपकपानपान ॥ कपिभएतहांविस्मयअनेक ॥ औषधीवृक्षचीननहिनएक ॥ लीनौद्रोणागिरहाथमेलि ॥ कंदुकज्यौंबालककरतकेलि ॥ उचक्यौकपिद्रोणाचलउठाइ ॥ अंतरिक्षगगनमगचल्यौजाइ ॥ देषिगिरिदीपमालादिगंत ॥ सबभएसुरासुरचाकितसंत ॥ इहांनिकसिअजोध्याउपरआइ ॥ जान्यौजुभरतकोऊअसुरजाइ ॥ दशसीससहायकदुष्टदेषि ॥ दारुमुषविसिषमार्यौविशेषि ॥ मारुतिसुगिर्यौकहिरामराम ॥ तहांभौअचे

तसुधिनहिनताम ॥ रघुनाथनामजबसुन्यौवीर ॥ अतिभएभरतअंतरअधीर ॥ अकुलाइ भरततवदौरिआइ ॥ उरलाइलयौमर्कटउठाइ ॥ मूर्छाजबजागीहनूमंत ॥ विधिजुक्तकहेका रनवृतंत ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ अज्ञातघाततोहिभईआज ॥ कपिकरीयैअवैसुसिद्धि काज ॥ ममवानचढह्रुगिरलेमहंत ॥ विनुतरनिउदयपहुंचौतुरंत ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ पुनिकह्योहनुरघुवरप्रताप ॥ मोहिविशिपविथानाहिनवियाप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांवंदिभरतकेचरनवीर ॥ सोझंप्योपर्वतलेसधीर ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ द्रोणागिरितरप त्रपत्रसारंगसंजोइय ॥ दुष्टअसुरमायादुरंतकछुचीन्हिनकोइय ॥ उदयादिसिजनुअर्क उदितअतिजोतिउहासीय ॥ भ्रमभुल्लीयउडिभ्रमरप्रगटसरकंजप्रकासीय ॥ व्हैगयौप्रभा तयहवीचही, स्वामिकाजनहीसद्धयो ॥ हनुमंतपरीलज्जाहिये, तवतनत्यागनउद्धयौ ॥ १॥ ॥ तहांअनंतअवधेसजीयमारुतिभयजानीय ॥ मायाअसुरअमानप्रातअनभयौप्रमा नीय ॥ अर्कउदयज्योंअपिलनिविडतमपुंजनशावत ॥ ज्यौमारुतमिलिजलदजालष नमँहँविषरावत ॥ भगवंतसुअंतरभावभ्रम. भगतचित्तभयभंजयो ॥ नहीसहतदु सहदुषदासकों, भुवनभुवनजयजसभयौ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांमनुषभा वरघुनाथआप ॥ विस्तरविषादरोदनविलाप ॥ यासमयअर्धनिसिभईअतीत ॥ भगवंततदपिभैअतिसभीत ॥ यौकरतवीरहनुमंतआइ ॥ सोधरयौअग्रपर्वतसुभाइ ॥ इहांकपटदीपतेगएविलाइ ॥ औषधअधीनसोइरहेआइ ॥ आलिंगनकीनैरामआनि ॥ पनपौरुषमारुतिकृतप्रमानि ॥ करिजतनवैद्यउपचारकीय ॥ सोछुवतमात्रमूलीसजीय सोवतसेउठिलक्ष्मनसधीर ॥ रिपुमारिमारिमुषवदतवीर ॥ लहिप्रानमनहुउरलषनलाय ॥ रिसहर्षवढ्योरघुवंसराय ॥ इहिसमयवजेदुंदुभिअकास ॥ सुरकाजभयोजान्योप्रकास ॥ तिहिपरयौचितदशकंधत्राश ॥ निहचैसुजानिनिजकुलविनाश ॥ लैतूसपतूसनिमाँझ लंक ॥ सममंदिरपहुंचाएनिशंक ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हनूमंतागिरद्रोणतहां । संजीवनी समेत ॥ मेल्यौलैक्षनमात्रमहँ । नगसोइआपनिकेत ॥ ३६ ॥ प्रातसमयनरहरप्रभू । करतधनुषटंकार ॥ सानुजठाढेविचिसमर । देषेरामउदार ॥ ३७॥ सुग्रीवादिकभालभ ट । वानरवीरवरूथ ॥ सिंघनादगर्जेसकल । जयहितजूथपजूथ ॥ ३८॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कालनेमिषयकरीयधान्यमालीउद्धारीय ॥ हेतस्वामिहनुमंतद्रोणपर्वतउप्पारीय ॥ अ रुविसल्यऔषधीपरेरनषेतपरस्सीय ॥ लषनकालवंचयौदुसहदनुदेवदरस्सीय । इहिठौ रजुकारनआदरस, होतनकंकनहाथकै ॥ सव्रकाजसिद्धिनरहरसुकवि, कृतप्रतापरघुनाथ कै ॥ इतिहनुमंतद्रोणागिरिउद्धरण ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कोलाहलकृ तभालकपि । आनिद्वारचहुंओर ॥ विषमतृकूटाचलविषय । घरघरसुन्यौजुघोर ॥ १ ॥ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ कंटकसानुजरामरन । देषिपरयौउरदाहु ॥ मोघभईमयदत्त हू । जपेशक्तिजारिजाहु ॥ २ ॥ वीरघातिनीजौविषम । निर्फलगईनिदान ॥ रावनजा न्योदिनफिर्यौ । विपरितहोतविधान ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ कुलराकसधिक्कार, कोपिदशा ननतहांकह्यौ ॥ एतोतवआहार, करतजुनरवानरकलह ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ ॥ धूमनि

धूमसधीरअनषिगढबाहिरआए ॥ सरतोसरअसिगदासूलधरिआयुधधाए ॥ इहिओरां पर्वतउठाईमारुतिलैमार्यो ॥ इनवाननिविद्धयौदुगमरजरजकरिडार्यो ॥ यावीचउभय हनुमंतए, हाकमारिमुष्टिनिहये ॥ षलगिरतषेतराक्षसनिरषि, भालकीसहर्षितभये ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ असतभागिलंकामहंआए ॥ समाचाररावननिसुनाए ॥ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ इहांरावनजोधाहलकारे ॥ राकसतुमलंकारषवारे ॥ विविधदुस हमायाविस्तारहु ॥ सन्यासीगहिकपिनिसंघारहु ॥ ॥ प्रहस्तउवाच ॥ ॥ सुनिप्रह स्तबोल्यौतबसूरो ॥ पौरुषबुद्धिपराक्रमपूरो ॥ वासवजितमायाविस्तारीय ॥ नागसुरा सुरदुगमानिहारीय ॥ ताहूमायामरैनतापस ॥ रनमारिहैतिनाहिकोराक्षस ॥ देविद्वार ज्यौंअजबलिदीजे ॥ कहौतजायमरनत्यौंकीजे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निकस्यौ इहांप्रहस्तनिसाचर ॥ वज्रमुष्टिसंगअनुजसहोदर ॥ सुभटचारिइहिंदिसिसमुहाए ॥ एक रीछवानरत्रयआए ॥ जांबुवंतजोधाजरजीरन ॥ तारेदुरीमुषद्विविदनिर्भयतन ॥ द्वै निसिचारिचारिवनचारी ॥ भिरेसुभटदुपचारिपचारी ॥ दुसहप्रहारप्रहस्तजुदीने ॥ कपि त्रयरीछमूर्छितेकीने ॥ इनहिंगिरतकपिराजाआयो ॥ अतुलितपर्वतआनिउठायो ॥ सोपर्वतडार्योदुर्ज्जनसिर ॥ समरअचेतभएदोऊनिसचर ॥ सनमुषजूझिगिर्योरिपुसं कट ॥ भूल्योजीवप्रहस्तमहाभट ॥ वज्रमुष्टिरनमर्योविशेष्यौ ॥ दुवदलअतुलपरा क्रमदेष्यौ ॥ प्रहसतपौरुषजगतप्रमान्यौ ॥ असुरअचेतलंकमहँआन्यौ ॥ प्रहसत गिरतदुचितलंकापति ॥ उतमंगधुनतकरतहैरिसअति ॥ इहांरावनचतुरंगचलाए ॥ बाजेअगनितवीरबजाए ॥ सुतबाँधवमंत्रीभटसाजे ॥ वीरअसुररनभूमिविराजे ॥ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पूछौतबैविभीषनरघुपति ॥ मुहिएसबैबताउमहामति ॥ ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥ नगमणिजटितकवचकसिनिसचर ॥ कृतरथजिहिंचवदं तीकुंजर ॥ षड़पानियहमेघनादषल ॥ बांध्यौइंद्रसमरइहिंभुजबल ॥ पिताअधठाढौ अतिपौरुष ॥ रोषदृष्टिचितवतआपुनरुष ॥ दंडकनकमयछत्रसीसदश ॥ ग्रद्धध्वजी हैरावनराकस ॥ असुरअसंख्यासमहरआए ॥ विविधचिन्हतेसबैबताए ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ बाजेवीरधनुषटंकारव ॥ असुरसमूहसुगाजतआहव ॥ वानररीछअभंग महाबल ॥ करतसंग्रामहरषकोलाहल ॥ इहांसुग्रीवआइरनअंगन ॥ रिसउफनातबका र्योरावन ॥ अतिबलकीसअसुरमुहँआए ॥ अद्रितरोवरसारउठाए ॥ गवय, गवाक्ष, मयंदनिभैनल ॥ वीरचारिएरावनअतिबल ॥ इतकपिराजउतैअसुरेसुर ॥ वीचआ निठाढेभएवनचर ॥ चारिशिलातिनकपिनिचलाई ॥ उभयउभयजोजनअधिकाई ॥ रनभुविसरनिमारितेरावन ॥ काटिशिलाकीनीषलकनकन ॥ इहांउभारिमुष्टिनलआ यौ ॥ अनिलबानसोइमारिउडार्यौ ॥ दुसहसुग्रीवअद्रिकरडार्यो ॥ रावनसोउदश वानविदार्यो ॥ इहांअहिवानचलायौआसुर ॥ अतिसतेजलाग्यौकपिपतिउर ॥ गि र्यौसुग्रीवषायरनअंगन ॥ राकसकहिगरज्यौजयजयरन ॥ सुन्यौजबैयहसब्दपवनसु त ॥ हुतौअनीवरैंतबहनुमत ॥ इहांअभंगहनूमतआयौ ॥ अतिरिसमहावीरअकु

लायौ ॥ पेतगिस्यौसुग्रीवहिदेष्यौ ॥ बिषमवैरअतिरोषविशेष्यौ ॥ इहाँधरिवाँहकपी सउठायौ ॥ प्रभुलगिहनूमानपहुंचायौ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ हठिफिस्यौपुनिहनूमंत ॥ दशसीसकेचढिदंत ॥ रिसभरेरावनराइ ॥ इहांभुजावीसउठाइ ॥ मारुतिहि मुष्टीमारि ॥ सोगिस्यौवहुरिसंभारि ॥ करिकोपमारुतिकीस ॥ समजुझ्यौरनदशसीस ॥ धरिवयरहनूमँतधीक ॥ हठिहयौरावनहीक ॥ परिदसहुमुषनिअपार ॥ धरवहत श्रोनीधार ॥ तहांकछुकरावनचेत ॥ हँसिउभ्यौपौरुषहेत ॥ इहांअग्निरूपजुआइ ॥ भटनीलजुस्यौसुभाइ ॥ जलवानपंकतिजाल ॥ कृतदशाननतिहिकाल ॥ तिहिंभयौ नीलअचेत ॥ षितिपस्यौकपिरनषेत ॥ इहांसुभटवानरआइ ॥ अनचेतनीलउठाइ ॥ रनदेषिरावनराम ॥ करिकोपदुष्टसकाम ॥ धायौसुआयुधधारि ॥ नभनछत्रटूटिनिहारि ॥ अवधेशबीचतवआइ ॥ भयौलछनवीरसुभाइ ॥ जुधपस्यौजुगभटजोर ॥ अतिवाह भईदुहुंओर ॥ करसजतजोइलंकेस ॥ वसरोससारविसेस ॥ हठवीरलछमनहोइ ॥ सरनिकरछेदतसोइ ॥ सारथीरथहयसंग ॥ इहांहएलषनअभंग ॥ सजिद्वितीयरथदशसीस ॥ आरुह्यौआसुरईस ॥ वहिवानवीरविधान ॥ दुहुओरसमरनिदान ॥ इतलषनउतलंकेस ॥ वढिवीरदाउविसेस ॥ इहिंवीचहनुमतआइ ॥ धरिअग्ररथकरधाइ ॥ कृतभ्रमणसोइआकास ॥ प्रतिहन्यौरथहिप्रकास ॥ दशसीसअद्भुतदेषि ॥ विचगयौलंकविसेषि ॥ अवधेशविजयउदार ॥ कपिभालकृतजयकार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रथटूट्यौछूट्यौजुरन । रावनराक्षसराइ ॥ मुहलैआयौलंकमह । हितसुतभ्रातहताइ ॥ ॥ प्रहस्तवध ॥ ॥ घाइलहुतौ प्रहस्तघर । विषमसुनीयहवात ॥ निर्भयलंकातैंनिकासि । वीरभिस्यौविष्यात ॥ ६ ॥ गयौ प्रहस्तजुसुरगति । मिलिसनमुषसंग्राम ॥ जगपायौउज्जलसुजस । मरतसँभारेराम ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥ ॥ मस्यौप्रहस्तसंग्रामकीर्त्तिराक्षसकुलकिन्नीय ॥ दलसंमुहँक्रमदएदुयनकँहँपीठनदिन्नीय ॥ हाहारवघरघरनिहोइलंकाभयलाग्यौ ॥ सुनीवातलंकेसभयोदुषउच्छवभाग्यौ ॥ उबरेजुअसुराभिरिभिरिअवर, भएआनिएकत्रभूव ॥ संग्रामविषमभटमरनसुनि, हाइहाइरनिवासहूव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करधरपीटतशोककरि । रावनअतिदुषरोइ ॥ कृतअपनैपूरबकुमति । सबनिबतावतसोइ ॥ ८ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ दिवसइकशिवदेवहुताहुगयोदरसहित ॥ परमरंम्यपरवतप्रसिद्धकैलासयथाथित ॥ तहांदेषेशिवगनसमूहपरिषदअतिपावन ॥ इकनंदीनामाअभूतआकृतिआनन ॥ बोल्यौतबनंदीगनविहसि, करतमोहिकछुहास्यक्रम ॥ विधिदयौसतुष्टजुतोहिवर, हैतिहिवाँहिररूपहम ॥ ३ ॥ कपिआननगनकह्यौरोषजुतसुनीयैरावन ॥ कुलपुलस्तिउतपन्नसहजत्रैलोकसतावन ॥ अवरअभंगपशुओपवदननरव्हैहैवानर ॥ यहैसृष्टिउतपतिदर्पतबहरिहैदुर्धर ॥ अवतरेसुयेवानरअमर, वृथानहरसेवकवचन ॥ भवतव्यसबैअबहोहुभव, राक्षसकरहुअभंगरन ॥ ४ ॥ इकराजाअनरण्यहुतौछत्रीरविवंसीय ॥ वयपूरनतनवृद्धप्रगटभुवकीर्तिप्रसंसीय ॥ मैंअहमितिबलमानिकलहजाचन्याकिन्नीय ॥ तिहिंजरजीरनअबलजीवलसिओटजुलिन्नीय ॥ मुहभरसुपस्यौदीयठेलिमें, गर्वताहिकुलकौगयौ ॥ हूंहस्यौतहांअन

संक०है, भूपमहालजितभयौ ॥ ॥ अनरण्यउवाच ॥ ॥ अनरण्यमोहिउच्चरयौसु नहुधनमदलंकेसर ॥ महावीरममवंसमांझनिजदेहधरहिंनर॥सोतोकहंकुलबलसमेतसम हरसंघारहि ॥ अमरवृंदकरिअभयअषिलभुवभारउतारहि ॥ अवतरयौरामरविवंसयह, हठिलायौदलभालहरि ॥ नहिंहोइवचनमिथ्यानियत, यौंकह्योजुछत्रीयक्रोधकरि ॥ ६ ॥ वरदीनैमोहिब्रह्ममैजुमांगैमनमानै ॥ भालकीसममभक्षयेनगनतीमँहँआनै ॥ धनुषवा नसंधानभीलआयुधएभाषे ॥ नरवराककोनियतराजमदचित्तनराषे ॥ यहरामधनुर्धारी अभय, वानररीछअसंष्यबल ॥ करिकोपलंकघेराकरयौ, दशदिशलगेदुसहदल ॥७॥ ॥ वेदमतीनामाविचित्रइकवालअयोनीय ॥ विवरद्वारतपविहितमहासाधतिरहिमौनीय ॥ मैताकौतपवलअमानकृतषंडनकीनौ ॥ दहनरोषदहिदेहदेविमोहिश्रापजुदीनौ ॥ अव तरीजोगमायासुयह, सीतानामाविदेहसुत ॥ जगविदितसुजानहुजानकी, हठीवंशमम नाशहित ॥ ८ ॥ मोहिवचनमारीचप्रथमजेकरेनीतिपर ॥ पुनिवरज्यौंहिताहितप्रमान विभ्भीषनबुधिवर ॥ नंदीगनअनरन्यनरेसअरुवचनअयोनी ॥ नहिंनटरतिनिर्धारअं तव्है्हैजोइहोनी ॥ अनभंगवीरजूझेअभय, रहेकछुकअवशेषरन ॥ मैकरेकर्मजेमानि मन, मिलिसंजोगआयौमरन ॥ ९ ॥ कुंभकर्णबलअकलअयननिद्राअभ्यासीय ॥ ए कछुधाआराधिविषयलोलुपघरवासीय ॥ अषिलसुरासुरनरअनूपकन्याअनुरागीय ॥ अजहूंसोवतअभयआनिसिरपरेअभागीय ॥ पौरुषप्रसिद्धकिहिंकाजपुनि, दिनपलटैं जुनदापियैं ॥ कहिकुंभजगावहुजतनकरि, रविमंडलजसरापियैं ॥ १० ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनतअसुरदौरेअपार॥ पुनिकरेआनिबहुतेप्रका र ॥ हस्तीपदमर्दनचरनहोइ ॥ सुषसयनतदपिजागैनसोइ ॥ हठिकरतअंगमुद्गरप्र हार ॥ सोलग्यौघुरावनविनुसँभार ॥ निर्भयबहुबाजतस्वासनास ॥ आषाढमनहुंग जंतअकास ॥ ॥ सेवकउवाच ॥ ॥ रावनसौंसेवककह्योराज ॥ कीनेअनेकहमजतन काज ॥ सोवैअसंकजागैनसोइ ॥ हठिरहेबहुतहमकछुनहोइ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ पुनितिनहिंकह्योरावनप्रकास ॥ त्रीयजतनवतैहैकछुतास ॥ ॥ कुंभकर्णस्त्रीवाक्यं ॥ वल्लभाकुंभपूछीविसेष ॥ उच्चरयौवचनतिनजतनएष ॥ निद्रावधिपूरनभईनांहि ॥ ॥ जागैनतऊजौकालजांहि ॥ अबसुनहुमर्मकहिहूंउपाइ ॥ जागिहैश्रवनजोनादजाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ शुभकिन्नरगंधर्वमिलिसमाज ॥ सुरकन्यानाटककरयौसाज ॥ वा जित्रअनेकसुरविविधवाजि ॥ ग्रहग्रहमिलिप्रतिधुनिगगनगाजि ॥ बंधानरागनाटक विधान ॥ गतिभेदतालसंगीतगान ॥ सुनिजग्यौअलपनिद्रासधीर ॥ विस्मयमनउप ज्यौकुंभवीर ॥ आयौतबरावनपहँअसंक ॥ उठिमिलेभ्रातउरलाइअंक ॥ आपनैठौर बैठ्यौसुआइ ॥ पूरनप्रमानआदरहिपाइ ॥ ॥कुंभकर्णउवाच॥ ॥ इहाँकुंभकर्णबोल्यौ असाध ॥ विनुअवधिकरयौनिद्राजुबाध ॥कारनलंकेसुरकह्योकाज ॥ अनसमयजगायौ मोहिआज ॥ ॥ रावनउवाच ॥ सुनिकह्योतबैरावनसक्रोध ॥ वानरनरराक्षसवढिवि रोध ॥ वनचरनिकरयौमिलिसेतबंध ॥ सुषहींपलआएलांघिसिंध ॥ जाजुल्यहोतचहुंद्वार

जुद्ध ॥ कपिसेनलंकलागेसक्रुद्ध ॥ सुतबंधुसुभटमंत्रीजुसूर ॥ परिषेतप्रबलपौरुषसपूर ॥ करिबालसन्यासीउभयकंक ॥ निसचरनिमारिठाढेनिसंक ॥ आसुरअभंगजूझेअनेक ॥ इहाँमरतनहींकपिभालएक ॥ जोमरतलेततताकहजिवाइ ॥ आनतसंजीवनिगिरउठाइ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिबहुजतनजुजानकी । हूंलायोहठहोइ ॥ रिसविसारिमोसौंरहसि । सुषहिनबोलतसोइ ॥ ९ ॥ जोरकीयेतेरोसजारे । मरिजमसादनजाइ ॥ कहीयेकुंभविचारकरि । याकहँकवनउपाइ ॥ १० ॥ रामरामवाकहरटत । जुगभरिछनछनजात ॥ ज्यौंचातकघनबुंदचित । विपतिसहतबिललात ॥ ११ ॥ ॥ कुंभकर्णउवाच ॥ ॥ अबरौंकहूंउपाइइक । सुनिरावनछलसाज ॥ करिसुरूपतूंरामकौ । करहुजथासिधिकाज ॥ १२ ॥ जालंधरकौकपटजुत । विष्णुधर्योजौवेस ॥ आनिअचानकसमयइक । वृंदाछलीविसेस ॥ १३ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सुनहुकुंभमैसमुझियहौं उद्यमअनुसरयौ ॥ हेतजुसमयनिहारिकपटतापसतनकरयौ ॥ विमलवसनतरुतुचातरु नवनमालस्यामतन ॥ जटाजूटकटिकसिनिषंगधरिपानिवानिधन ॥ कृतरूपअनूपमरामकौ, पतनीटरयौनएकपन ॥ परत्रीयादरसकिंवापरस, मेरौचलैनमूलमन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहिहेतजगाएतुमहिआज ॥ करीयेवकुंभरिपुनासकाज ॥ ॥ कुंभकर्णउवाच ॥ ॥ पूछ्यौनमोहितुमप्रथमपोत ॥ हठसोचकीयेअबकहाहोत ॥ जानकीहरीउपज्योजँजाल ॥ करीयेवकहासोवह्योकाल ॥ अबहूंज्यौंपूंछतमोहिआज ॥ सुनिलोकवेदमतमहाराज ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ राजाअरुजुवराजप्रगटप्रोहितमंत्रीपर ॥ इनहिकुलच्छनइतेसुनहुंश्रुतदेलंकेशर ॥ कामीकुटिलकुसंगकृपनकृतहतककुबोधी ॥ सोदुषदायकनहिनसेव्यजनवेदविरोधी ॥ पावैनजगतसोभासुपै, कारनसंपतिनाशके ॥ सुरअसुरजदपिनरहरसुकवि, एभाजनउपहासके ॥ ॥ अथनृपदोष ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कामी, वाम, मूढ, कुलद्रोही ॥ क्रोधी, कुपुरुष, हठहिअरोही ॥ कृतघन, कातर, कलह. कुसंगी ॥ क्रूर, कुटिल, अलसी. एकंगी ॥ देवदोष, द्विजदोष, अदाता ॥ दुर्वच, दारुन, व्यसन, विष्याता ॥ सठ, क्रूर, षल, निलज, निर्मोही ॥ वादीदइव, कुवादी, द्रोही ॥ प्रक्रतिछली, झूठौ, जड, पापी ॥ अजसी. लोभी, आतमथापी ॥ सर्वभषी, अविवेक, असोची ॥ अजपी, अदयी, प्रतिमापोची ॥ वातुल, बधिर, गुंग, तनवामन ॥ अंगहीन, कोढीअनपावन ॥ अंध, अविद्य, अधम, अमानी ॥ ज्ञातिभ्रष्ट, गर्विष्ट, अज्ञानी ॥ इतेअलच्छननृपजोआही ॥ तिरस्कारसबकरहीताही ॥ ॥ कुमंत्रीलक्षण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मिलैनलोहूसर्पमुष । वपुडंकितनविशेश ॥ त्यौधनप्रजानराजपहँ । जहांदुर्मंत्रिप्रवेस ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भूपदेइग्रहभारसचिवसोइच्छाचारीय ॥ काजमनोरथकरतविविधफललाभविचारीय ॥ ज्यौरक्षकमंजारजूथपलपिसितप्रगलपय ॥ जतनजानिमनमोदमानिनृपसोवैनिर्भय ॥ फिरिषाइअघाइकुबुधिफल, महिपतिसोचतमनहिंमन ॥ अतिदुस्सहअगनिअवाहज्यौं, करतदाहअंतहकरन ॥ ॥ तथाजल ॥ ॥ मदनदह्यौनिर्मूलउमातिहिहेतवामअँग ॥ कालकूटकृतकवलसो

मताकाजभालसंग ॥ प्रलयकालपावकप्रचंडदृगधस्योजुदारुन ॥ तालगिगंगतरंगसंग जटजूटसकारन ॥ वसकरेसबलभयवृद्धिकै, विविधजतननिजतनवहत ॥ कौतुकीरुद्रतउ शत्रुकृत, राजनीतितत्तपररहत ॥ १३ ॥ उषटेरोपैत्र्यानिकुसमचुनिलेइकालक्रम ॥ लघु पोषैंचितलाइसरलतरुछेदिकरैसम ॥ नमितउठावैनियतमहाकंटककरिमंडल ॥ विषमसंग करिविरलजतनजुतसमयदेइजल ॥ कृतउचितजुमालाकारके, निहँचेतिहिंसाधैनृपति ॥ सुषअभयराज्यनरहरसुकवि, पृथ्वीभुक्तपुहविपति ॥ १४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नारद यहमोसौकहिनिदान ॥ गहिचरनकहतहूंगूढज्ञान ॥ रामहिमतमानुषगनहुराइ ॥ सीता नमानुषीहैसुभाइ ॥ साषामृगनाहिनभटसमाज ॥ एअमरअंसअवतरेआज ॥ अवहूं जोपूछतमोहिएहु ॥ दुषटैरसकलमैथिलीदेहु ॥ सिद्धांतयहैलंकेशसाधि ॥ अतिक्रोधत जहुटारिहैउपाधि ॥ राघवसौंकरियैसंधिराज ॥ अपराधसवैछमिहैंसुआज ॥ समभाइसु रासुरकरतसेव ॥ सोइदीनबंधुदेवाधिदेव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अर्थउपाजतधर्महित । संततिहितरतिसाज ॥ सुतउपजैंतपसाधिकैं । मुक्तहोतमहाराज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनतजस्योदशसीसअंग ॥ घृतमनहुभयोपावकप्रसंग ॥ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ सामर्षइहांबोल्योअसाध ॥ बहुतुमहिंकरतनिद्राजुबाध ॥ सुषसे जजाइघररहहुसोइ ॥ करीयैनकुंभकल्पनाकोइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहाचलाईनीतिकी। अनपूछैउपदेस ॥ सुनिवेकौंनाहिनसमय । विग्रहबन्योविशेष ॥ १४ ॥ कुंभजगाएजु ह्वकैंहं । नहिनपढावननीति ॥ सोवनसौंरुचिअधिकसी । पुनिभोजनसौंप्रीति ॥ १५ ॥ कैतौलरहुउछाहकरि । मिलिसुषकरहुकिधाम ॥ करहुविभीषनसंगकौ । वहठाढौहैराम ॥ १६ ॥ सोइरहहुघरजाइसठ । करिअहारअनपार ॥ कोटिकीटमर्कटकहा । मेघनाद कीमार ॥ १७ ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ आईमंदोदरीइहिंअ वसर ॥ करतिविषादमीडिकरसौंकर ॥ ह्वाबलिष्टभावीकाहोनी ॥ कंतसुनतनाहिहितकी कौंनी ॥ कुंभकर्णसमहितूनकोई ॥ स्वामीकहेवमानहुसोई ॥ इनहिंसुरासुरगर्वनसाए ॥ अबहितकाजजगाएआए ॥ कहेसुमानिवचनप्रियकीजे ॥ देषिसमयकुलअभयजुदीजे ॥ भावीवसजोमरेअसुरभट ॥ सूरसहतस्वामीहितसंकट ॥ रामनमानुषमानहुरावन ॥ नि गमहेतभुवभारनसावन ॥ अबलियतुमहिकाजअवतारा ॥ सुरतेतीसकोटिविस्तारा ॥ भ एभालकपिदेवमहाभट ॥ समहरकरतलंकगढसंकट ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दीनबालप्रहला ददुसहतिहिंपिताकष्टदीय ॥ प्रानसोषअहिडंकदुरदभयगिरतैंडारीय ॥ जलहुज्वलनसं जोगप्रानजबजातपुकास्यौ ॥ दीनबंधुनरसिंघदेवअतिदुषितउधास्यौ ॥ कीनौसहाय नरहरसुकवि, थंभफस्योधरथरहरीय ॥ इहांफारिहिरनकस्यपउदर, कृतसरूपअद्भु तकरीय ॥ १४ ॥ जलअगाधतंतानिजंत्रिगजग्राहजुग्रहयौ ॥ वर्षसहसदशमांझ वारिअनअसनसुरहयौ ॥ घटछीज्योबल घट्यौ समय तिहि द्विरद सँभास्यौ ॥ जलप्रलीनकरमुष्टिमात्रप्रभुहरिहिंपुकास्यौ ॥ व्रतजाससरनपंजरविजय, गहिसमूलषनि गडिडहे ॥ निजदोषविसरिनरहरसुकवि, छमिअपराधनछडिडहे ॥ १५ ॥ जामदग्निभ

यजानिकवनत्रीयवेपनकीनो ॥ कारिनिछत्रइकवीसद्विजनभुवमंडलदीनो ॥ ताहूकौमथिमा नगर्वछनमांझगँवायो ॥ वालिबलीवानरविष्यातसरइक्कनसायो ॥ कोगनैअवनिटारेकस ट, राक्षसमारेमांझरन ॥ बचिहैनतुमहुसौरोषवस, निसचयममानहुवचन ॥ १८ ॥ प्र थमहरनदीयप्रीयाजोगमायासीयजानहु ॥ अहिपासनिबांधेअनंतवहयैसुधिआनहु ॥ स क्तिहयोलक्ष्मनसंग्रामारिसरामसहोदर ॥ अवरदोषइत्यादिप्रगटतुमकरेगर्वपर ॥ विधिवं शविश्ववेदितविहित, आपुनरावनअवतरे ॥ कृतमारनद्विजतादूरिकरि, क्रमहिआततताई करे ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुंभकर्णदेवरअकल । सुतजेतासुरराज ॥ तूतौरावनकीत्रिया । इतोकहाडरुआज ॥ कालनत्रातबढावको । कुंभसुनहुदैकान ॥ करी यैजोपैमनकहै । दुविधाछांडिनिदान ॥ १९ ॥ गुनमीठौसरितागहर । तंतउभयसमतू ल ॥ चाहतद्वैद्वैचोपडी । सोतैबनैनसूल ॥ २० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जोमिलेबिभीष नषलहिंजाइ ॥ सोतंततुमहुंसाधौसुभाइ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ हरीसि यासुनबनहिनागपासनिसुतनाधे ॥ सोदरमाख्योसांगिसबैअपराधजुसांधे ॥ वामनमां गित्रिपैंडभूमिबलिसर्वसदीनो ॥ सोपैबांधिपतालपठइकीनौआधीनो ॥ अपराधविनाध रिद्वेषउर, करतअकारजआनको ॥ बचिहैक्योंएतेदोषवस, नरहरवचननिदानको ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यहसुनतकुंभतनलगीआगि ॥ जाजुल्यरोषप्रतिरोमजागि ॥ ॥ कुंभ कर्णउवाच ॥ ॥ समप्रेमकुंभबोल्योसुभाइ ॥ लंकेशमोहिमिलिकंठलाइ ॥ यहअंतमिल नहैभ्रातआज ॥ रनतीरथतजिहूंप्रानराज ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तजिविषादपोलस्तिउ चितनहिंशोकसमयइहि ॥ जीयतकुंभकर्णहिअजेयजगविकलकख्योजिहिं ॥ कवनकालदि गपालरामसानुजकपिराजा ॥ कवनमात्रयमकोटिसमरजुरिअमरसमाजा ॥ मिलिजदपि बिभीषनआसितमुंहँ, कवलकलेवरकालको ॥ जगजेठकुंभकोप्योजबै, सबलवीरसुरसाल कौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दैजुचल्योपरदक्षना । कुंभकर्णअतिक्रोध ॥ हूवहाहारवलंकमँह । सुनिकोकरैप्रबोध ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मिलिकुंभभ्रातउरलागि मोह ॥ छनतासतसबनिउरलग्योछोह ॥ रसवीरकुंभनिकस्योरिसाइ ॥ हूवशब्दलंकमहहाइ हाइ ॥ रनिवाससबैइहांउठ्योरोइ ॥ हाहंतबानिघरघरनिहोइ ॥ उठ्योजँभातअलसातअं ग ॥ अनअवंधिजग्यौराकसअभंग ॥ इहांदएसहसदसकलसआनि ॥ मदपानकस्योम नमोदमानि ॥ मिष्टान्नचारिशतमनमँगाइ ॥ षलगयोबहुतमेवानिषाइ ॥ शतअष्टमहिष मानवइकीस ॥ अनिजंतुसुसंष्याजानिईस ॥ अन्नेकअननभोजनअघाइ ॥ सोभयोकले उसौसुभाइ ॥ पुनिकरेपछ्यावरिरुधिरपान ॥ उतपतिसवादकछुआनआन ॥ इहांकरतअ सुरऊठ्योडकार ॥ आघातउडतपंषीअपार ॥ विधिरंगरंगवागोबनाइ ॥ चितचौंपविविध सौधाचढाइ ॥ सन्नाधबद्धप्रतिअंगसोह ॥ मिलिअसुरमहोच्छवस्वर्गमोह ॥ इकसहसअ श्वप्रतिरंगओप ॥ रथजुक्तपताकाध्वजारोप ॥ आरूढवीरातिहिकुंभआइ ॥ कृतहर्षजुद्धच षरक्तकाइ ॥ आघातवज्जगजेतअभंग ॥ इहाँआइकुंभरनभूमिरंग ॥ भुजधरीत्रिसूलइक सहसभार ॥ इकलक्षउर्द्धआकृतिउदार ॥ शतधनुषमानचौरौसजोप ॥ एसोत्रिशूलकरकुं

भओप ॥ मिलिसघनघटातनमानमूल ॥ समविजुलताचमकतित्रिसूल ॥ आरक्तनैनदलि अधरदंत ॥ विचषेतसुआयोक्रोधवंत ॥ रघुनाथहिषोजतरनसरोष ॥ भटकुंभकर्णअपनै भरोस ॥ इहिंसमयविभीषनअनुजआइ ॥ प्रियभ्रातदेषिसोलग्यौपाइ ॥ नियराइआपनौ कह्यौनाम ॥ तिहिंलयौअनुजउरलाइताम ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कह्यौविभीषनकुंभवीरतुमहेनिद्रावस ॥ रतनागरतटरामसेतबंधनदीयआइस ॥ मैंगहि रावनचरनमूलहितवचनउचार्‍यौ ॥ सभामाहिअनदोषमोहिपदघातप्रहार्‍यौ ॥ काढ्यौपु निषग्गदुधारकर, भ्रातमोहिमारनभयौ ॥ इहिहेतभागिअवधेसको, तवहिसरनमैंतक्कयौ ॥ १८ ॥ ॥ कुंभकर्णउवाच ॥ ॥ कारनसुनितबकुंभवचनप्रतिकह्योविभीषन ॥ कुल विनासासिरकालचक्करिसतजतनरावन ॥ ऋषिपुलस्तिकेवंसधन्यतूंभयौधुरंधर ॥ कुलक लंककह्यौसरनलीनौअवधेश्वर ॥ मोहिकह्यौएहिनारदमरम, महाभागतूंअसुरमनि ॥ मनकर्मवाचजुतमोहमत, जगतईशपदतजहुजनि ॥ १९ ॥ हूंजुकालग्रहग्रस्यौदगनिरो षानलदाहे ॥ भयौबक्रोधाअंधचीन्हिकोउपरतनचाहे ॥ प्रतिमाअपनौअपरजीयहिनि र्धारनजानत ॥ विषमदसावित्तीयतसोनहितअहितपिछानत ॥ हममिलेजाहुनिजसेनम हं, कुलबलरक्षाकीजियै ॥ करिचरनसेवअभिलेसकी, जनमसफलकरिलीजियै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतपरदक्षनकुंभकँहँ । ढरतनयनजलधार ॥ इ हांविभीषनआपनै । सेनकर्‍यौसंचार ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिआइविभीषनरामपा स ॥ प्रभुहेतवचनबोल्यौप्रकास ॥ दीनकेनाथरघुनाथदेव ॥ यहकुंभकर्णआयौअजेव ॥ संग्रामहोहुप्रभुसावधान ॥ आसुरअसंकअतिबलअमान ॥ चौपटजबकुंभहिरामची न्ह ॥ करचाढिधनुषटंकारकीन्ह ॥ हठचढेरीछवानरहकारि ॥ धरिरामधनुषकरवानधारि ॥ आगैंप्रभुजूथपजूथआइ ॥ सबसिंघनादकीनौसुभाइ ॥ कुंभसौंजुटेवानरसकोप ॥ राक्ष सरनठाढौपैंजरोप ॥ गिरवरप्रहारकृतकपिनिअंग ॥ फलअर्कमनहुंलागतमतंग ॥ इहि भांतिलागिगिरअसुरअंग ॥ सीसीजनुफूटतिशिलासंग ॥ उडिलगतअंगमर्कटजुआनि ॥ प्राहारदंशमनुगजप्रमानि ॥ मिलिदेतकीसतरवरनिमार ॥ पर्वततनमानहुतृणप्रहार ॥ कपिकछुकमीडिडारेसकोप ॥ उडिगएस्वासकोउतूलओप ॥ पकरैंजुकुंभकपिभालपा नि ॥ आहारकरैमुषमेलिआनि ॥ इहिंवीचवीरहनुमंतआइ ॥ उरहयौकुंभमुष्टिकउठाइ ॥ सोजानुभारपरिउठ्योजुद्ध ॥ कंटककोभ्राताअतिसक्रुद्ध ॥ तिहिंमार्‍यौहनुमतउरत्रसूल ॥ तनभयौसमूर्छामृतकतूल ॥ जबलग्यौलोथहनुमंतलैन ॥ सबगरजितहांकपिभालसैन ॥ नल, नील, अँगदकेसरी, आइ ॥ सिलचारिचहूंमारीसुभाइ ॥ सोउचारिगिराएमा रिसूल ॥ भटभएमूर्छितप्रानभूल ॥ हीयपरित्राससबविमनहोइ ॥ कपिभालकुंभमुहच ढिनकोइ ॥ मूर्छाजबजागेहनूमंत ॥ तहांमहावीरउठ्यौतुरंत ॥ इकलयोदीर्घपरवतउठा इ ॥ अतिरोषकुंभसिरहन्योआइ ॥ तिहिंघाइअश्वरथध्वजाटूटि ॥ भौकुंभविरथछलछो हछूटि ॥ कुंभचषरक्तदेष्यौसकोप ॥ रनभूमिविरथसिरपैंजरोप ॥ संग्राममरनसूचैसधी र ॥ वढिक्रोधजुठाढोकुंभवीर ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कुंभाविरथअवलोकिसमरसुग्रीवजुस

ज्जीय ॥ राक्षसअरुकपिराजजुगमहरिनादनिगज्जीय ॥ गगनझांपिसुग्रीवमहापरवतसिर माख्यौ ॥ पकरिपाइनिसिचरप्रचंडसोपुहविपछाख्यौ ॥ तवभौअचेतकपिराजतहां, महावीरजान्यौमख्यौ ॥ संग्रह्यौकांषचाप्यौदुसह, सबललंकदिससंचख्यौ ॥ २१ ॥ तिहिंनिहारिहनुमंतरोषघनकुंभरोकिरन ॥ हठिलत्ताउरहयौघायातिहिंलाग्यौघूमन ॥ तहांसुग्रीवभयौचेतानिकटतटदुसहनिहाख्यौ ॥ मुषहिनाककरउभयकानसंग्रहेसंभाख्यौ ॥ गौगगनतहांसंकोचितन, सोहछद्मकरिछुट्यौ ॥ कुंभाजुभ्रातलंकेसकौ, भुवनबुच्चनकटाभयौ ॥ २२ ॥ कुंभकर्णकेनाककानदलमध्यजुडारे ॥ कौतुकदेकरतालहसतकपिभालनिहारे ॥ गख्यौकुंभराक्षसगलानिपलमहाषिस्यायौ ॥ अंगभंगभौअनाषिओपअंतकफिरिआयौ ॥ विनुश्रवननाकवैरूपवपु, परमभयानकपिष्षयौ ॥ संसारग्रसतसौकालसोइ, दुसहभालकपिदिष्षयौ ॥ २३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांफारिमुषसन्मुषआयौ ॥ षेचरकपिपायौषोइषायौ ॥ नाशाश्रवनविवरतेवनचर ॥ वलकरिनिकसेआएबाहिर ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ मनिकनकमुकटअमूल ॥ सिरधरेपानित्रसूल ॥ बनिविविधभूषनवृंद ॥ उरउपजिमरनअनंद ॥ अतिरोषरनभुवआइ ॥ भयत्रासकपिनिसुभाइ ॥ निस्वासउडतअनेक ॥ उरस्वासपैठतएक ॥ तेनिकसिश्रवननिनास ॥ परिछिद्रकूपप्रकास ॥ षलजितेमर्कटषाइ ॥ सोइनिकसिहसतसुभाइ ॥ सुररथनिछयौअकास ॥ पुनिप्रगटहास्यप्रकास ॥ सुररमानिकौतुकसंग ॥ अद्भुतरसबाढिअंग ॥ षलकपिनपटकतषेत ॥ कोऊगगनगतगहिलेत ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ दूवदलसौपैकौतुकदेषै ॥ बांबींनिकसतशलभविसेषै ॥ कपिदलकुंभत्रासबहुकीनै ॥ निसचरदेषतरूपनवीनै ॥ कुंभतहांदेषेरघुनायक ॥ साधेपानिविषमधनुसायक ॥ आसुरवैषमवचनउचारत ॥ आयौरामओरचषआरत ॥ ॥ कुंभकर्णउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ नहिनताडकानारिमैनहरधनुषदारुमय ॥ नहिनरामद्विजदीनमृगनमारीचकनकमय ॥ बालिहूंनवनचरवराकजडतालनजानहु ॥ षरदूषणत्रशिरासुबाहुयौंसषनप्रमानहु ॥ पाथोधिहूंनबांध्यौउपल, नामसुरासुरसालकौ ॥ रनकुंभकर्णकाकुस्थरे, महाकालहुंकालकौ ॥ २४ ॥ मेलिभालमर्कटनिबहुलजलसेतबंधायौ ॥ तूंइनकेवसअंतअबजुलंकागढआयौ ॥ वन्यौयहैभवतव्यवीरझूझेराक्षसरन ॥ ताकौंमर्कटकटकमहाअहमेवकख्यौमन ॥ नरअमरभालवानरनिकर. हठिसोइगनिगनिमारिहूं ॥ नरवख्यौतोहिरघुरामरे, अबसोइगर्वउतारिहूं ॥ २५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ नरवीररामनिहारि ॥ भटधख्यौसूलउभारि ॥ अवलोकिषलज्यौंइंद ॥ कृतवयरधाइकलिंद ॥ नरतोहिबोलतराम ॥ ममसाथिसाजिसंग्राम ॥ त्रयलोककारकत्रास ॥ सुरअसुरगरवविनास ॥ भरअमरकन्यानाग ॥ भवभोगकारसभाग ॥ सुरराजसुरगनसाल ॥ हूंकुंभकालअकाल ॥ यहसुनतरघुकुलइंद ॥ गहिधनुषतानिगुविंद ॥ आकर्णषैचिअचुक्क ॥ महविजयसायकमुक्क ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अर्धचंद्रसमउभयसरजुमुक्केअवधेश्वर ॥ महावीरसंग्रामकुंभछेदेदोऊकर ॥ पुनित्यौंहीदूवपाइकाटिचौरंगाकिन्नो ॥ दुष्टदल्यौरघुदेवदेवराजहिसुषदिन्नो ॥ अतिरोषजरतलोचनअ

नल, महाभयानकफारिमुष ॥ भवभूतग्रसतसोकालभट, राक्षसधायौरामरुष ॥ २६ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुंभहिलागतसरनिकर । अरुफूटतबहिओर ॥ दामिनिजैंसैज लदद्दुरि । विहसिबहोरबहोर ॥ २१ ॥ रक्तधारधरनीढरत । षलकेजनुजलषाल ॥ कज्जलगिरिमनुगेरिका । परहाचलतप्रनाल ॥ २२ ॥ कुंभकर्णमुषवानकरि । राम भर्योरनरंग ॥ पूरनकीनौजानिप्रभु । षेचरवदननिषंग ॥ २३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सोजान्यौअवधेसअसुरउरवनिभरआयौ ॥ कृतकुंडलकोदंडअर्धविधुबानचलायौ ॥ कोटद्वाररुक्कयौदुसहरावनसौदेष्यौ ॥ परिदरारउरप्रबलसालषलवैरविशेष्यौ ॥ कृतजं त्रदसनवानिवज्रकन, भ्राजतरजरतलिप्तभूव ॥ काकुस्थजयतिनरहरसुकवि, हाहाकार जुलंकहूव ॥ २७ ॥ महावीरहनुमंतकरनिधारिकुंभकलेवर ॥ पर्योषेतपर्वतप्रमानर हिओटलंकगिर ॥ गहिमूक्यौमगगगनमृतकहतपर्योउदधिमहँ ॥ देहदिर्घजलजंतु जालतिहिंकालदबेतहँ ॥ तिहिंदेषिहनूविक्रमअतुल, अमरवृंदआनंदअति ॥ संसार भयोजयकारसुर, परिप्रहारउरलंकपति ॥ २८ ॥ वीरबाहुमुनिवेषरामठाढेविजयीरन ॥ करगवामकोदंडदुसहसायककरदछन ॥ अग्रभागथितअनुजहसतकपिसेननिहा रत ॥ जानकीसजयजयतिअषिलसुरवृंदउचारत ॥ शुभहोतगगनवरषासुमन, बा जतसुरदुंदुभिविजय ॥ कृतनासकुंभनरहरसुकवि, जयजयजयकाकुस्थजय ॥ २९ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ रनभूमिठाढेरामराघवअंगश्रमकनसोभए ॥ वनवसतलागेरुधि रविंदवछोहराकसछोभए ॥ रिसभृकुटिभंगतरंगरेषाकटितटहिभाथाकसे ॥ कोदंडना मितवामकरगतरनजुवीरारसरसे ॥ रतलिप्तसायकसव्यकररहिरत्तआननरोषए ॥ प्र भुवक्रचितवततृकुटप्रतिमापैंमकपिदलपोषए ॥ सुरसिद्धचारनजपतजयजयपरमकरुना मयप्रभौ ॥ विष्यातवीरतृलोकवंदितविश्वजितपालकविभौ ॥ इहिंसमयआइऋषेसना रदगगनमृदुगुनगावते ॥ भगवंतहितभवभूतभूपतिभुवनत्रयमनभावते ॥ ॥ अथनारद ऋषिकृतस्तुति ॥ ॥ जयरामतनघनस्यामसोभाअरुनअंबुजलोचने ॥ सरऐंद्रअंकित पानिसव्यसुमहारिपुमदमोचने ॥ जयजगन्नाथअनाथबंधूदेवदेवसनातने ॥ नारायणेनरदे हनिर्मितघाइनिसिचरघातिने ॥ जयविश्वसाक्षिविशुद्धबुद्धेविश्वमायावंचने ॥ जयमाय यातनमनुजमहिमासुषदुषादिकसंचने ॥ जयमाययागुनगुह्यमूरतिसर्वआतमसानिधे ॥ जयसर्वव्यापकव्यक्तसबतेविष्णुसंभूत्वांविधे ॥ जयस्वयंजोतिस्वभावसिद्धेव्यक्तव्या पितविश्वजे ॥ उन्मीलनेद्दगलोकउत्पत्तिजगतपोषकजयअजे ॥ तवमीलनेद्दगनाशसं सृतिचारिखाणिचराचरं ॥ मनवचनकर्मनसाध्यमाधवज्ञानध्यानअगोचरं ॥ जयब्रह्म णेजगदेकवीरेप्रकृतिपुरुषेपावने ॥ अव्यक्तव्यक्तस्वरूपअद्भुतभुवनत्रयसंभावने ॥ जय ज्ञानरूपविकारवर्जितजयतिजगदाधारणे ॥ जयदीनबंधुदयालदेवेविश्वजितअविकारि णे ॥ वैरोधवैदिकवेदवादिनानिर्णयेनचनिश्चयं ॥ तवप्रसादविनात्रिलोकिअबुधबुधभ्रा मितअयं ॥ जयअषिलमायाजालमहिमाजथाजलरविकरहरे ॥ प्रतिबिंबजलभ्रमत्व याकलिपतआपअगमअगोचरे ॥ प्रभुकथंद्रस्यअद्रस्यप्रतिमाहोतविनशनहेतए ॥ अ

वतारतवमिलिजोतिअद्भुततवगुणतत्वसमेतए ॥ महबुद्धिमानभजंतिमाधवतेतरंतिभवा र्णवं ॥ प्रभुसुषहिजलभरजथागोपदरहितभयअघरौरवं ॥ दैकामक्रोधहिआदिदुस्सहसब लशत्रवशालए ॥ मांजारजैसैंआषुअनहितकरतहैसबकालए ॥ तवनामसमरननित्य तत्पररहतदृगतवरूपए ॥ प्रभुप्रेमजुततवचरनपूजाश्रुतकथाभवभूपए ॥ तवरामसगुन स्वरूपसुंदरध्याइहैचितधीर ॥ तवभक्तिजैहैमुक्तिमाधवविनावारितवीर ॥ तुमरामकृतय हकर्मअतुलितसुरसुरेससहाइ ॥ भुवभारटारयोभक्तिभावनसमरकुंभनसाइ ॥ ॥ अथ इंद्रजीतवध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इंद्रजीतकौमरनअब । कहैबोल क्ष्मनहाथ ॥ कंटकवधअवधेसकर । निश्चयभावीनाथ ॥ अमरगणाऊचुः ॥ ॥ क वित्त ॥ ॥ कुलध्वजादपितुवचनकाजदंडकवनवासीय ॥ कुंभकर्णराक्षसअसंकवरविसिष विनासीय ॥ सुरसुरेशवैषमविशेषदुषदूरिजुकिन्नौ ॥ दुसहदाहरनलग्गिदाहदशशिरउर दिन्नौ ॥ अवधेसअमरगावतअतुल, कृतप्रतापअवतारकौ ॥ आगमनभयौनरहरसुक वि, क्रमविनासभुवभारकौ ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुंभमरयोगढथरहरयो । तहांपरि आसुरत्रास ॥ भूलेसेंजिततितभ्रमत । अरुछुट्टीजियआस ॥ २५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामवानहतकुंभरन । जोतिमिल्यौषलजाइ ॥ मारिउधारतछनकमँहँ । ऐसेराघवराइ ॥ २६ ॥ रामहिकरिउपदेशऋषि । मिलिनारदसुरसाथ ॥ अषिलगएगृहआपनै । गा वतहरिगुनगाथ ॥ २७ ॥ रावनउरपरित्रासारिस । करतविलापअनेक ॥ करधरपीटत शोककरि । टरतनअहमितिटेक ॥ २८ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ हाहाकुंभअचंभय ह । सबविधिसूरसमाथ ॥ तेरीयहभवतव्यता । होइमरननरहाथ ॥ २९ ॥ ॥ इंद्रजी तउवाच ॥ ॥ कुंभमरनरावनविकल । इंद्रजीतइहांआइ ॥ शोकसहोदरवधसमर । करहुनराक्षसराइ ॥ ३० ॥ ममजीवतघननादमहि । शुचनउचितलंकेश ॥ पौरुषदेषहु पुत्रकौ । भएविहानविशेष ॥ ३१ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रोषभिरतसुरअसुररन । भयौअस्तामितभान ॥ रहेभालकपिसमररुपि । दुगमदिसानदिसान ॥ ॥ अथइंद्रजी तनिकुंभिलागूढहोमआरंभ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ त्रिकुटाचलकेमध्यगूढइकगुहाअज्ञा ता ॥ निजनिकुंभिलानामविवरभुविगतविख्याता ॥ रक्तमालवासनविसाललेपनअनुर ज्जीय ॥ मौनव्रतचषमुद्रिजथाविधिआसनसज्जीय ॥ कृतकुंडविशदनरहरसुकवि, पौरु षरिछवलबांधिपन ॥ मिलिवाचकायसमएकमन, कर्महोमलाग्यौकरन ॥ १ ॥ इहांवि चित्ररथआनिसजववाजिसंजोईय ॥ शस्त्रअस्त्रसन्नाहसकलपरिकरजुतसोईय ॥ लैमेल्यौ रथकुंभमांझपावकपरजारीय ॥ सुरद्रोहीआसुरअसंकगुरमंत्रउचारीय ॥ अभ्यासअ सुरमायाअगम, अग्निधूमनभउत्तरीय ॥ सोदेषिधूमधारासघन, प्रानविभीषनभयपरी य ॥ २ ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिइहांविभीषनचरपठाइ ॥ यहकवनधूमसुधिकहहुआइ ॥ किंहिंकीनधूमधौंकवनकाज ॥ यहलेहुभेदमुहिकहहुआ ज ॥ दूततेगएअतिवेगदौरि ॥ पैठेकिहुंछलकरिमध्यपौरि ॥ सुधिलईदूतगढमांझसोइ ॥ क्रमहोमइंद्रजितकरतकोइ ॥ यहसुनतदूततहांफेरिआइ ॥ विधिकहीविभीषनसौंबनाइ ॥

निजसुनीचेष्टामेघनाद ॥ वढिमहाविभीषनउरविषाद ॥ अतिभीतविभीषननिकटआइ ॥ सबभेदविवरिरामहिसुनाइ ॥ विभीषनउवाच ॥ रथहोमतहैषलमहाराज ॥ यहधूमगगनमगउठ्यौआज ॥ जहांगूढविवरगतइंद्रजीत ॥ जहकरतहोमअंरअभीत ॥ अनलमहँजबरथनिकसिआज ॥ आपनौततोनिश्चयअकाज ॥ आरूढरथहितैंहिचढिअकास ॥ तौहमहिदृष्टनहींपरैतास ॥ सबहिनवहदेषैअमरसाल ॥ करिहैसंग्रामकालहुअकाल ॥ आसुरअदृष्टव्हैहैअजीत ॥ मंत्रयहसुनहुअवयज्ञगीत ॥ हैमरनइंद्रजितलषनहाथ ॥ सोपठैदेहुहमजांहिसाथ ॥ करियैववविघ्नइहिंहोमकाज ॥ रघुवंसतिलकराजाधिराज ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ हमचलहिंकह्योयौरामराइ ॥ सुनिबोलिविभीषनफिरिसुभाइ ॥ ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥ वरदयोयाहिब्रह्माविशेष ॥ सोसुनहुकहूंअवनीनरेस ॥ वर्षजिहिचतुर्दसदुगमवीर ॥ समछुधासुनिद्राजयसरीर ॥ हैअंतजुयाकोतासहाथ ॥ निश्चयसोसुनियैअवनिनाथ ॥ जबतेतुमछांडीअवधिराज ॥ इनतजेसबैंसुषलगेआज ॥ कृतनियमयमननिद्राकीन ॥ अद्यावधिरहिसेवाअधीन ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दीनीतबआज्ञारामदेव ॥ तुमआपजाहुलक्ष्मनअजेव ॥ हैरचतदुष्टमायादुरंत ॥ मतभागिजाइराक्षसअमंत ॥ सुनुवीरजतनकरिवौसंभारि ॥ चहुंओरसुभटराषहुविचारि ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ करजोरिप्रनततहांलषनकीन ॥ हूंअवधिनाथआज्ञाअधीन ॥ संकल्पकर्‍यौलक्ष्मनसँभारि ॥ मघवाजितराषौंषेतमारि ॥ प्रभुयहैवचनमानहुप्रकास ॥ तोदेवदेवरावरौदास ॥ पुनिसबैसिद्धिरघुवरप्रताप ॥ अतिप्रेमलषनउरलाइआप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ परिक्रमणदएइहांलागिपाइ ॥ उठिचलेलषनबलभुजउठाइ ॥ संगदएसुभटएतेसंभारि ॥ विश्वेशरामअतिबलविचारि ॥ वयपूरनबुद्धिसुजांबुवंत ॥ संग्रामसूरअतिबलीसंत ॥ पुनिदयोविभीषनसंगपचारि ॥ मान्यौसुमेददातामुरारि ॥ अंगद, अरुकेसरी, नलहु, नील ॥ समकपिमयंद, मारुति, सुसील ॥ षलइंद्रजीतअतिचित्तषेध ॥ बाढ्योविशेषपुनिअवनिवेध ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांउचितविभीषनजतनआज ॥ लक्ष्मनहैयाकीतुमहिलाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ एसुभटजुलक्ष्मनसंगआइ ॥ सोइहोमस्थलपायोसुभाइ ॥ जुतमौनमंत्रषलगूढजाप ॥ अतिध्यानसुमुद्रितनयनआप ॥ शतकुंभरुधिरबलदेतसोइ ॥ हितविजयमहिषआहुतीहोइ ॥ इहांउठेद्वाररक्षकरिसाइ ॥ इनमारिवीरएमध्यआइ ॥ नहिंउठतनिसाचरतदपिनीच ॥ मुँहचढेशत्रुशिरचढीमीच ॥ दिनभयोकोलाहलदुसहदेषि ॥ षलनयनउघारतमहिविशेषि ॥ कृतदृष्टिविभीषनअग्निकुंड ॥ तहांनिकसिअग्ररथअश्वतुंड ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ रथनिकसतहैलक्ष्मननिहारि ॥ मुहचाहिरहेकहाशत्रुमारि ॥ आहुतिजौंपूरनभईएव ॥ यहदुष्टसुरासुरतौअजेव ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ निर्धारनीतिपौरुषनिदान ॥ वधनहिंनउचितअनसावधान ॥ ॥ अंगदउवाच ॥ ॥ उठिदुष्टवीरसौमित्रिआइ ॥ बिधिरुद्रसरनहूंनहिंबचाइ ॥ जुधजाचतठाढेशत्रुजाल ॥ कहिषलअवजीवनाकितककाल ॥ धिक्कारयाहिजीतवअधीर ॥ वैरीजुवकारतसमरवीर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हांसिइहां

वीरअंगदहकारि ॥ मुहथापटकचग्रहिलातमारि ॥ ॥ इंद्रजीतजुद्ध ॥ ॥ तजिहो
मउव्यौतहांइंद्रजीत ॥ अनभंगअसुरअंतरअभीत ॥ अनसमयपचाय्यौमोहिआइ ॥
पौरुषहिप्रकासौमांडिपाइ ॥ सबसूरकहावततुमसधीर ॥ वदिहूंजोरहिहौपगनिवीर ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ अनभएहोमऊव्यौअभंग ॥ अपवादउचारतअभयअंग ॥ इहिंबी
चविभीषनदृष्टिआइ ॥ रसवीरकुंवरबोल्यौरिसाइ ॥ ॥ मेघनादउवाच ॥ ॥ धिक्का
रविभीषनवृद्धवैस ॥ इहिंसमयकर्मकीनैंअनैस ॥ जबजुय्यौजुद्धदुवदलनिजोर ॥ उठिग
एभागितबशत्रुओर ॥ उठिगएअसितमुहजदपिआप ॥ पुनिछिद्रबताएकहापाप ॥ बहु
कालरहेअनउचितबोल ॥ भएषरारूढअरुदएढोल ॥ कुलग्रहेदुर्गकेछांडिकान ॥ अरि
सौमिलिदीनैंभेदआन ॥ निर्लाजजुन्हैंहैवंसनास ॥ पापीयहतेरौबुद्धिविलास ॥ पुत्रहिका
मारनकाजमूढ ॥ अरिअग्रकय्यौतैंपनअगूढ ॥ ऐसेअकर्मकरिफेरिआइ ॥ षलकहालंक
महँमुहँदिषाइ ॥ कहामारौंतोकहँकुलकलंक ॥ अपराधीजिहिंसिरपापअंक ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ इत्यादिमर्मछिदवचउचारि ॥ संग्रामसूरठाढौसंभारि ॥ कृतघोररावपरिधरन
कंप ॥ जगजीवचराचरभएअजंप ॥ चषरत्तविकटभृकुटीविलास ॥ दलिअधरदसनसि
रलगिअकास ॥ इहिंरूपइंद्राजितसमरआइ ॥ बोल्यौंसरोषप्रतिभटबुलाइ ॥ जुधलषनइं
द्रजितपरीजोर ॥ अतिसस्त्रअस्त्रवहिदुहुंओर ॥ परिसमरभारसमसरप्रहार ॥ हलकार
हाकमुषमारमार ॥ इषुहयौतवैसेषावतार ॥ भुवगिय्यौनिसाचरनहिंसंभार ॥ जबभयौस
चेतनइंद्रजीत ॥ उठिलय्यौलरनआसुरअभीत ॥ दशवानहएषलशेषदेव ॥ अरुलाएद
शमारुतिअजेव ॥ पुनिविद्धविभीषनबानवीस ॥ कीनैंप्रहारसबसुभटकीस ॥ हठिमहासु
रासुरसमरहोइ ॥ कहुंरह्योनअक्षतवीरकोइ ॥ शतवानलषनमुक्कीयप्रकास ॥ तहांकवच
काटिघननादतास ॥ कृतधनुषइंद्रजेतासंधान ॥ इक्कहींवारछुटिसहसवान ॥ सन्नाहशेषछे
द्यौसधीर ॥ विनुकवचभएतबउभयवीर ॥ परसपरहोतप्रहरनप्रहार ॥ बसरोषविविधरन
वारवार ॥ आघातघाउपूय्यौअकास ॥ तनश्रवतरुधिरबढिसोभतास ॥ सारथिरथ
वाजीधनुषसंग ॥ सबइक्कवारकीयलषनभंग ॥ रनभयौविरथजबमेघनाद ॥ वस
वयरविषमबाढ्यौविवाद ॥ रथद्वितीयसमरसारथिसजाइ ॥ आरोहइंद्रजितकय्यौआ
इ ॥ धनुअपरकय्यौघनसरसंधान ॥ विविषंडसुकीनौमारिवान ॥ ततकालतृतिय
धनुअसुरतानि ॥ आकर्षिमुष्टिकर्णांतआनि ॥ शतबानहयौलक्ष्मनसधीर ॥ शत
धाररुधिरचलिषलसरीर ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ऐंद्रवानअनमोघनिसितसज्जीयरामानुज ॥
कृतकुंडलकोदंडभरीयकरणांतमहाभुज ॥ रामरूपउरधरीयभक्तिजुतनामसँभारीय ॥
प्रभुप्रतापबलप्रगटईसजयजयउच्चारीय ॥ तिरछौनिहारिघननादतन, चितविरोधनहिं
चुक्कयो ॥ आजानबाहुसौमित्रिइहां, महावीरसरमुक्कयो ॥ ३ ॥ कंठछेदतिहिंकरीयवा
नघननादमहाबल ॥ कनकरतनमयमुकटादिपतदुहघांश्रुतकुंडल ॥ दृगफट्टियहसिदंत
भौंहमिलिमूछभिरंतीय ॥ अरुनवरनआननउवासरिसअधरदसंतीय ॥ दसकंधरसं
ध्यामध्यादिन, आन्हिककर्मकृतअनुसय्यो ॥ करअंजुलिमस्तकपुत्रकौं, पिष्यौमनविभ्र

मपख्यो ॥ ४ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ पुनिसँभारपिष्पयौपुत्रमस्तकपहिचान्यौ ॥
हाभवेशकाभयौयहज़ुभवतव्यअजान्यौ ॥ वंशनाशलंकाविनाशराक्षसरजधानीय ॥
सुरसतोषमिलियहनिमोषमैनिश्चयमानीय ॥ लंकतृकुटगढकोतिलक, सीसविभीषनसा
रिबो ॥ जुधमरनएकइंद्रजीतकै, हैनहिकहानिहारिवो ॥ ५ ॥ विबुधवृंदमिलिविविधआ
जआनंदकरहुउरु ॥ सुरसंमतसुरराजसीसगनितिलककरहुगुरु ॥ पुनिसमस्तदिगपाल
विमलनिजकृतविस्तारहु ॥ अमररमनिगंधर्वआजसंगीतसुधारहुं ॥ सीयरामविभीषन
लंकसुष, ब्रह्मयज्ञाहितद्विजबरहु ॥ ॥ काराग्रहछूटेजगतकहँ, कर्मउपद्रवग्रहकरहु ॥ ६ ॥
वानररीछकुजीवसेतसागरतिनसज्जीय ॥ द्वैसन्यासीबालदीनिपुनिवयरउपज्जीय ॥
महाकायराक्षसमहीपसोकपिनसंघारे ॥ कुंभकर्णअसइंद्रजीतमानवरनमारे ॥ अनभूत
असंभवकर्मयह, अनुचितकासुनिवौनअब ॥ हठिबडावडीजोइकहतजग, सोइहममा
नीआजसब ॥ ७ ॥ जदिनवीरजन्मयोधसकिदशदिशधुज्जियधर ॥ गहरनदद्दगज्जयोग
गनडुल्लीयकंपितगिर ॥ सुरासुरनिविग्रहसंभारिसमहरभरसंध्यौ ॥ इंद्रजीतभयौविजय
अंकवासवरनवंध्यौ ॥ दिगपालसालदारुनदुसह, द्दगविकारत्रिभुवनडरइ ॥ काकहीयै
महिमाकालकी, सोइमेघनादनरकरमरइ ॥ ८ ॥ वारवारमस्तककुमारलैउरहिलगावत
॥ ढरिअपारचषअश्रुधारपुनिथाहनपावत ॥ उर्द्धस्वासजियछूटिआसपरित्रासअपावन॥
हीयविहारहाहापुकाररोवतरटरावन ॥ अबइंद्रजीततोविनअषिल, राक्षसकुलदुषरोइहै॥
दिगपालसालटरिदुसहदिन, सुरसुरेससुषसोइहैं ॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
रनत्रयदिनत्रयरातिभूमिभिरिपर्यौभयंकर ॥ जयपायौलक्ष्मनअजेयविक्रमअतुलितवर
॥ करिहिंचापटंकारकौनजयशंखबजायौ ॥ सुन्यौरामकपिभटसमूहउरहर्षउपायौ ॥ आ
कासअषिलप्रमुदितअमर, रनजयकीर्त्तिसुउच्चरीय ॥ दुंदुभिगगनवज्जीसुषद, रीझिपुह
पवर्षाकरीय ॥ ॥ दुष्टमारिघननादसहितकुसलीभटसंगीय ॥ इहांमिलेरघुपतिहिआ
निसौमित्रिअभंगीय ॥ कृतवंदनकरजोरिरामलैकंठलगाए ॥ धन्यधन्यलक्ष्मनसधीर
इतिवचनसुनाए ॥ साधतेनजौतुमकष्टकर, वर्षचतुर्दसवीरवर ॥ अतिबलीअसुरघन
नादयह, सुकोवीरमारतसमर ॥ ११ ॥ इतिरावणविलाप ॥ ॥ अथमंदोदरीआग
मन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ विलपातकरतरावनबिहाल ॥ सुतसुमरिसुमरिउरअमर
साल ॥ धरलुठतपरतऊठतअधीर ॥ पापिष्टसहतमनमनहिंपीर ॥ अतिदुषितमंदोद
रीइहांआइ ॥ उरमस्तकपीटातिनाहिअघाइ ॥ परिभववसरोवातिकरिपुकार ॥ विलला
तिसंभारतिवारवार ॥ हामेघनादद्दगओटहोइ ॥ कितगयौबतावतनाहिनकोइ ॥ मि
लिकंठलागिकिनपुत्रमोहि ॥ तनसुंदरदेषौंकहांतोहि ॥ लरिसमरगिर्यौअनभंगलाल ॥
सुरराजसुरनिअबटरेसाल ॥ आक्रंदकरतिरोवतिअनाथ ॥ व्हैविव्हलकछुलागैनहाथ
॥ दुषसागरबूडतिसीनिदान ॥ पावतिअवलंबनआनप्रान ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥
रावनसमुझावतरोइरोइ ॥ भावीबलिष्टकाकरैकोइ ॥ नस्वरसरीरस्थिररहतनाँहि ॥ ज
गजंतुउपजिपुनिअंतजाहि ॥ जतनहूंकीयैनहींरहैजीव ॥ देषौबलिष्टमायादईव ॥ ॥

॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ नस्वरदेहजपैपियजानहु ॥ तौनअ नीतिइतौहठठानहु ॥ वेषबनाइजतीकोजैसौ ॥ अरुविरुद्धक्रमकीनौऐसौ ॥ जुगातिन सूनैमंदिरजाई ॥ परत्रीयतहांअकेलीपाई ॥ रक्षकविनाहुतीसोनारी ॥ आनीहरितुम कपटप्रचारी ॥ चौरकर्मयहकरीकुचर्चा ॥ ऐसौवरपायौविधिअर्चा ॥ यहअनीतिपर त्रीयलैआए ॥ षोटेपीयमनलड्डुवाषाए ॥ सोपैनहिंतुमसौंरसराची ॥ करीअनीतिप रीसबकाची ॥ नागविषमविषपासनिनांधे ॥ बंधूउभयपरेरनबांधे ॥ लगितुमहठेध राधनलैना ॥ वन्हिदहेउरकहेकुवैना ॥ सक्तिहयौरनभ्राताताकौ ॥ इंद्रजीतयहफल हैवाकौ ॥ पुनितुमलरेपचारिपचारे ॥ शस्त्रअस्त्रगहिमर्कटमारे ॥ तुमकहँजानिहरन दईसीता ॥ भामअरक्षकवनहिंसभीता ॥ मैथिलीकेकोपानलमानौ ॥ जखौतेजतुम रौसवजानौ ॥ अबल्यौरननहिमारेयाते ॥ तुमहिआततताईकीयताते ॥ हैकछुब्रह्मअं सतुममाँही ॥ सोसबदूरिकख्योसहजाँही ॥ कुलविधिकारनहांतोकीनौ ॥ तुमहिआत ताईपददीनौ ॥ जेतुमकर्मकरेमनजानैं ॥ पापसबैतेरामप्रमानैं ॥ सुतौंआहिएवेईसूरे ॥ ॥ पौरुषनीतिधर्मबलपूरे ॥ कंततोहिअपराधीकीनौ ॥ नाशतिहारेकौव्रतलीनौ ॥ ॥

॥ अथआततताईलक्षण ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दुष्टकैरंग्रहदाहविषमविषदेइवयरवस ॥ ॥ शस्त्रधारसंग्रामरोषमुहआइबीररस ॥ परधनपरघरसमयपाइपरत्रीयापहारीय ॥ उ चितप्रानवधइनहियहजुमतनीतिउचारीय ॥ संसारविदितनरहरसुकवि, पातककर्मपि छानियैं ॥ अबसुनहुकंतषट्पुरुषए, आततताइकरिजानियैं ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लंकाराजविभीषनहि । मुषकहिदीनौराम ॥ तुमहिंहतेविनुसुनहुसो । कैसैसरिहैकाम ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ इंद्रजीतकेमरतहू । भएकामसबभाम ॥ पूरनव्हैहैंवचनपन । मुषउचरेजेराम ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ मेघनादरनमख्योअमरजय शब्दउचारीय ॥ पख्योलंकआतंकभयोराक्षसभयभारीय ॥ टरिउद्वेगादिगदेवअसुरकुल नासजुआयौ ॥ वैरिवामवैधव्यदुसहआगमदरसायौ ॥ जयकारभयौत्रैलोकजस, भ क्तवछलजिहिंविरदभनि॥ कविनरहरदातामुक्तिके, महाराजरघुवंशमनि॥ इतिइंद्रजीतबध ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ देप्रबोधमंदोदरिहिं । आपसभामहँआइ ॥ सूरभतीजेबंधुसुत । इहांभटमंत्रिबुलाय ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सबनिसुनाइकहत लंकेसुर ॥ अबतौआनिपरीसिरऊपर ॥ मैंयहकरीभरोसैमेरे ॥ होतकहाअबइतउतहेरे ॥ हमअपनैबलवयरबढायौ ॥ उतमंगभारसुपाइनिआयौ ॥ दुर्जनकूंउत्तरअबदेहूं ॥ लोहस मोहसमरचाढिलैहूं ॥ सबतुमसुभटसमरजयसूरे ॥ परदलदलनपराक्रमपूरे ॥ सुरनरमैत्र यलोकसतायौ ॥ अबलौंकख्योजुषैमनआयौ ॥ रिपुसनमुषजोईरनरहिहै ॥ लोकलोकसो ईजसलहिहै ॥ दुवदलमिलेजुचित्तडुलावै ॥ सोपहिलहिभागैंसुषपावै ॥ अबअपनौपौरुष उद्धारहु ॥ सिलिसनमुषदुर्जनरनमारहु॥ पुत्रसोकउरप्रजरतआगी ॥ ज्वालारोमरोमप्रति जागी॥कविरुवाच॥ उठिअसोकवनरावनआयौ॥सीतासिरकाटनसमुहायौ॥निठुरनिका लिषड्गकरलीनौ ॥ कमलसीयाछेदमनकीनौ ॥ इहांसुपारश्वमंत्रीआयौ ॥ सुकरगह्योहित

मंत्रसुनायौ ॥ सुपारश्वउवाच ॥ बालाबालअवध्यविचारहु ॥ महापुरुषतुमत्रियाहिनमारहु ॥ समरअनेकजएतुमदशशिर ॥ सेवाततपररहतसुरासुर ॥ तुमभवभक्तधनदसेभाइ ॥ ब्रह्मवंशपुनिबडीबडाई ॥ तोयहउचितकर्मनहिंताते ॥ जगउपहास्यहोइप्रभुजाते ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मंत्रीवचनजबैषलमान्यौ ॥ इहिंकरकरषिफेरिग्रहआन्यौ ॥ इहांएकांतगयौअन्याई ॥ ऐसीतहांकुबुद्धिउपाई ॥ दुष्टनिकौंतबआज्ञादीनी ॥ निसचरउपजीबुद्धिनवीनी ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ मायामयीजानकीमंडहु ॥ षलकपिदलदेषताशिरषंडहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सीताअसुरनिकपटसवांरी ॥ मर्कटदलदेषतलैमारी ॥ कपटसीसतबहांतोकीनौं ॥ देवकटकमहँडारिजुदीनौं ॥ विमनभएसिरदेषतवानर ॥ यहवृत्तांतसुनायौरघुवर ॥ प्रभुतहांमानुषभावप्रकास्यौ ॥ तातेसुरवानरमनत्रास्यौ ॥ अबहनुमंतकूदिगढआए ॥ सीतादेषीकुसलसुनाए ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ प्रभुयहमायाअसुरप्रमानहु ॥ मिथ्याचरितनकछुमनमानहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हनुमतवचनसुनेसबहरषे ॥ पापचरित्रदसाननपरषे ॥ पुनियहमंदोदरिसुनिपाई ॥ इहांरावनपैंआतुरआई ॥ ॥ मंदोदरिवाक्यं ॥ ॥ कहाचरित्रकरतएकंटक ॥ इंद्रजालतेडरैनअंतक ॥ मंदोदरिपतिकहिसमझावति ॥ दुषरोवतिअरुमंत्रदिषावति ॥ भटजौकुंभकर्णसोभाई ॥ इंद्रजीतसुतबलअधिकाई ॥ रनसोइमरैजगतजसरहिहै ॥ गढअधिकारकवनअबलहिहै ॥ प्रभुसीतादेसंधिप्रमानहु ॥ ठगईछांडिकितोजुधठानहु ॥ आपुनषेलकह्यौतुमऐसो ॥ कुलहिनासकरिजीवनकैसो ॥ ॥ मकराक्षउवाच ॥ ॥ षरसुततबमकराक्षअसुरषल ॥ बोल्योइहांसकोपमहाबल ॥ सीतादेनकहैकोदसाशिर ॥ प्रभुमोजीयतत्रकुटदुर्गपर ॥ कुंभकर्णघननादधर्मकृत ॥ हरतनभयेधन्यवेपतिहित ॥ उनभरिपेटसयनअभ्यासे ॥ पुनिघनसुरजुधकपटप्रकासे ॥ कहासोकतिनकोअबकीजै ॥ देवमोहिजुधआज्ञादीजै ॥ रामहिसानुजमारिमहारन ॥ बाँधौंपकरिसुग्रीवविभीषन ॥ कैतोवासअयोध्याकरिहौं ॥ महावीरपदलहिरनमरिहौं ॥ कविरुवाच ॥ करीप्रतिज्ञावंदनकीनौं ॥ लाइहृदयरावनतबलीनौं ॥ भेरिनिसानबजाइभयानक ॥ आनिचढ्यौरनषेतअचानक ॥ दारुनताहिविभीषनदेष्यौ ॥ षलअतिबलअंतकसोलेष्यौ ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ सुपैविभीषनप्रभुहिसुनायौ ॥ यहमकराक्षमहाबलआयौ ॥ राघवसावधानहोइयेरन ॥ राक्षसयहैभतीजोरावन ॥ षरसुतमानसुरनिकोषंड्यौ ॥ यहमकराक्षसमरपनमंड्यौ ॥ ताकहँदेषिडरैरनमर्कट ॥ अतिहिभयानकरूपअसुरभट ॥ मिटतकपिनिसुग्रीवमहाबल ॥ षेतचढेरोक्योराक्षसषल ॥ इहांअंगदमारुतिदोउआए ॥ सजिभूधरतररोषसवाए ॥ भयौजुद्धराक्षसकपिभारी ॥ वहेजुप्रहरनवारीवारी ॥ इनहुंरुक्यौरह्यौनहींआसुर ॥ आइसरोषविभीषनऊपर ॥ जुरयौभतीजाकाकासौंजुध ॥ उभयअनेकअवाहेआयुध ॥ समरविभीषनसूरसँभार्यौ ॥ रिसमकराक्षगदाशिरमार्यौ ॥ तदपिनगिर्यौप्रहारवीरतस ॥ रनलाग्यौलषमनगहिराक्षस ॥ लषमनतिहिंभुजकाटनलागे ॥ अस्त्रसस्त्रनहिंभिदतअभागे ॥ पहिलैंतिहिंब्रह्मावरपायौ ॥ समहरमुरतनजुरतसवायौ ॥ ग्रहलैचल्यौलषनकोलंका ॥ इहांमायातमरच्योअसंका ॥ अंतरनभभूभयोअं

ध्यारो ॥ सोअपनैपररहिनसभारो ॥ हाहाकारगगनभुवहोई ॥ कहूंउपायफुरतनहिकोई ॥ इहांतेजसररामचलायो॥अंधकारतिहिंनिषलनसायो ॥ अंगअंगकाटेप्रभुआसुर॥धुक्यौ तहाँमकराक्षपर्यौधर ॥ रामतुष्टमकराक्षीमार्यो ॥ अमरवृंदजयशब्दउचार्यो ॥ जयदुंदु भिसुरगगनबजाए ॥ अतिआनंदपुहपवरषाए ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इहांलषनकरजोरिउचितहितवचनउचारीय ॥ तुमदयालदेवाधिदेवहौसंकटहारीय ॥ क ठिनपरीजिहिंजिहींकालषलसाधुसताए ॥ तहांतहांचिंततमात्रछेदिरिपुदीनछुडाए ॥ करुनानिधानकारनकरन, कोऊनसमसरकीजियै ॥ सबविधिदयालनरहरसुकवि, देवभ क्तिफलदीजियै ॥ ॥ इतिमकराक्षवध ॥ ॥ अथप्रभंजनीराक्षसीप्रसंग ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इहांनिसारनअजिररामनिद्रागतनिर्भर ॥ मानिवयरअनस मयसजीषलतालंकेसर ॥ नामप्रभंजनिनिसाचारिअतिकपटअभ्यासी ॥ रचैसुमायारूप विविधजगजीवविनासी ॥ पठईसोरावनवाधिपन, रामहिसानुजमारिरन ॥ हितकरहुमात मेरौयहै, मानौंतवउपकारमन ॥ १ ॥ षग्गपानिषेचरीयदेहदुष्टाअतिदारुन ॥ समरभूमि संक्रमीयतहांकियरुपगुप्ततन॥पहिंचानीअंगदप्रबुद्धकरषग्गउनग्गीय॥ धरीअचानकवी रधाइमृगपतिमनुमृग्गीय ॥ जुवराजचरनगहिगैंदज्यौं, पापिनिपटकीभूमिपर ॥ आसुरी गईजमलोकवह, सुनीसुषलंकेसवर ॥ २ ॥ ॥ अथश्रीराममायायामस्तकदर्शनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सीसरामसौमित्रिकरीमायामयराक्षस ॥ रचितरुचिर तद्रूपसहितजटजूटनितापस ॥ श्रोनधारगलश्रवतनेत्रफटेविकृतानन ॥ वारवारहिकाउवा सरतलिप्तरेनुरन ॥ मुषरत्तवानभूवमूर्छमिलि, अरुअभूतछविअनुहरे ॥ अतिरोषदंतपी डितअधर, धरनिसुताआगेधरे ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मस्तकसोदेषेअकस्मात ॥सीय असहसोकनहींउरसमात॥परित्रासमनहुंसिरवज्रपात॥वढिशूलहृदयनहींफुरतवात॥सिर वारवारउरलाइसोइ॥ रसरौद्रमगनपुनिउठतिरोइ॥ ॥सीतावाक्यं॥ ॥ जगदेकवीरहा जगन्नाथ ॥ अतिदुषितहुतीकीनीअनाथ ॥ रघुवंसतिलकराजाधिराज ॥ यहदुसहकौन गतिभईआज ॥ सुनियेपुकारसमसुरसमाज ॥ धरिचित्तमीचदैधर्मराज ॥ नहींसह्योजा तयहदुषनिदान ॥ पापीनप्रानकीनोप्रयान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निहचैंजबकीनौम रननैम ॥ परिभवअतिदुसहचित्तपैम ॥ ॥ देवाऊचुः ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दुसहदसा सियदेषिअमरगणत्रासउपज्जीय ॥ यहनसीतअवधेससीसदशमायासज्जीय ॥ कठिन कालकोकालअंततिहिंनिकटनआवे ॥ भयकुदृष्टिभवभूतनियतछनमांझनसावे ॥ मैथि लीमाननिहचिंतमन, देवनितबधीरपदई ॥ यहकपटभूतमायाअषिल, भवअकासवानी भाई ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सोसुनिउपज्यौसीयकैं। सांचोमनविश्वास ॥ मिथ्याकरिनहींमानियो अमरगिराआकास ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कंटककरिथाक्यौ कपट । मायाअसुरअमान ॥ भयोनिरुद्यमपर्योभय । नहिंकछुचलतनिदान ॥ २ ॥ रावनमायाराक्षसी । सबकरिरह्योसमूल ॥ एकैतुरीनअदिनतें । कर्मभएप्रतिकूल ॥ ३ ॥ अथदूतप्रचार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ काचीपरीजुसबकरी । विद्याकपट

विधान ॥ तबरावनरघुनाथपहँ । पठएदूतप्रमान ॥ १ ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ समयपाइ लंकेसइहांछलदूतपठायौ ॥ देवकपटमहदुष्टअसुरआतुरसोआयौ ॥ ताहिअह्यौततका लकपिनिप्रभुआगेंकीनौ ॥ धर्मजानिअवधेसनिकटतांहिंबोलिजुलीनौ ॥ सुरकाजरामन रहरसुकवि, राक्षसवंसविनासरन ॥ तहांहसिहसिहेरतदूततन, महाराजउच्छाहमन ॥ १ ॥ राक्षसनामालोहिताक्षअतिबलीबुद्धिवर ॥ विहितदूतव्यापारसमुझिपठयौलंकेस र ॥ इहिंअसंकअवधेसजगतपतिआनिजुहारे ॥ दयासिंधुदेवाधिदेवठाहरबैठारे ॥ सुतबधवरावनकुसलसो, कहौकवनकारिजकरत ॥ आगमनहेतकाहैयेआषिल, कह्योजुतु महिविचारिकृत ॥ २ ॥ ॥ **दूतउवाच** ॥ ॥ तबदशशिरकेदूतसमयउत्तरअनुसरयौ ॥ अपनेप्रभुकोआपउचितगौरवउच्चरयौ ॥ ब्रह्माअरुसुरगुरुबिचारिरावनपहँआए ॥ जु गकरअंजुलिजोरिसंकजुतवचनसुनाए ॥ सबकस्यपकोवंसकोपकरिनासनकीजे ॥ दे षिजथाअपराधदंडदीरघलघुदीजे ॥ दनुदेवमनुजकहँअभयदै, प्रभुकछुकरिरिसपरहरी य ॥ कारिसमाधानविधिजीवको, कहिजुवचनआज्ञाकरीय ॥ ३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ कारन तुमपैकहनकछु। मोहिपठायोराम ॥ रावनानितपूजानिमित । आपगएशिवधाम ॥ ॥ **श्री रामउवाच** ॥ ॥ करिआदरतबदूतकौ । यौंपूछयौरघुराइ ॥ तोकहंपठयौकाजजिहिं । सो धौंहमहिसुनाइ ॥ ॥ **दूतउवाच** ॥ ॥ सावधानचितव्हैसुनहु । कह्योजुकछुलंकेस ॥ जो पैरुचैतकीजियै । निहचैंरामनरेस ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ सूपनषाजुविरूपकरीतुमउचितनकी नौ ॥ हमसीतातवहरीतुमहिंदारुनदुखदीनौ ॥ अंबुधिजलपरआनिसेतपर्वततुमसाधे ॥ सुतमेरैसंग्रामनागपासनितुमनांधे ॥ भवटरैनहींभवतव्यता, प्रगटकरमफलपाइ ये ॥ देधनुषहमहिद्विजरामको, सीयलैआपुसिधाइये ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ संधिकरहुलंकेश सौं । यहजोपैअवधेस ॥ समरसुरासुरकौदुसह । कटिहैततोकलेस ॥ १ ॥ परसुरामको चापतुम । पायौविनहिप्रयास ॥ ताकेसटैलेहुसीया । पुनिग्रहजाहुप्रकास ॥ २ ॥ ॥ **क विरुवाच** ॥ ॥ करीविदातवदूतकी । रामचंद्ररघुराई ॥ नीतिधर्ममनकौनिमित । सबै कह्योसमझाई ॥ ३ ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ मंदोदरीरावनमहल । आपहोहिएकंत ॥ समाचारयहदूतसब । कहिवेतहांनचिंत ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ आयौफेरिवसीठइहां । सुनिरघुनाथसंदेस ॥ ताहीछनप्रतिहारतिहिं । लैगुदरयौलंकेस ॥ ५ ॥ रावनअरुमं दोदरी । बैठेसदनसुभाइ ॥ सुनिवेकँहँसंदेससोइ । लीनोदूतबुलाइ ॥ ६ ॥ ॥ **दूतउवा च** ॥ ॥ मोकहँचलतसंदेसमुष । आपकहेअवधेस ॥ कहिहैप्रभुसौंजोरिकर । सोसुनि यैलंकेस ॥ ॥ **रावनउवाच** ॥ ॥ तुमअवलोकेरामतहां । सन्निधिसुभटसमाज ॥ कै सैंबैठेहैंकहो । कवनकरतहेकाज ॥ ॥ **दूतलोहिताक्षउवाच** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ मृ गतुचाकनकमणिरत्नमान ॥ बनिमृदुलविविधवैचित्रवान ॥ सोदईलषनभूतलडसाइ ॥ राजततहांपौढेरामराइ ॥ वामांगधरयौजयधनुषवीर ॥ रजिदक्षनदिसिअक्षयतुनीर ॥ वधकारइंद्रजितवऐंद्रवान ॥ आमितकरदक्षनवंशभान ॥ जिहिकुंभकर्णकैनाककान ॥ भवकाटिरूपकीनौभयान ॥ समजटामुकुटतिहिंगोदसीस ॥ अनशंकितसोवतअवनिईस

॥ जिहिंअक्षअकंपनहतेआइ ॥ ज्वालानललंकादियजराइ ॥ तिहिंधरेअंकपावनपुनीत ॥ वातसुतपलोटतपदविनीत ॥ देवांतनरांतकहतकदेषि ॥ विश्वेसरामविहसतविशेषि कछुकहतबिभीषनवचनकाज ॥ सोइरीझिसुनतहेमहाराज ॥ इहिंभाँतिविलोकेअवधिईस ॥ कृतमंडलचहुघांभालकीस ॥ दीनेसंदेसजोरामदेव ॥ सोसुनहुसबैकहिहूंसभेव ॥ ॥ रामोक्त ॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ वामनदीयइंद्रहिस्वर्गवास ॥ सौसुरनिवसततहांसुषनिवास ॥ पुनिवामनबलिकहँदीयपताल ॥ सोविलसतहैवैभवविसाल ॥ द्विजरामद्विजनिभुवलोकदीन ॥ करमेलिउदकसंकल्पकीन ॥ हमदईबिभीषनलंकहाथ ॥ सोईसेवातपररहतसाथ ॥ लैदीनेएतौतीनलोक ॥ अबऔररह्योनहींकहुंओक ॥ सोदैहितुमहिसोसंधिसाज ॥ जिहिंठौरवैठितुमकरहुराज ॥ सवनीतिआपजानतसकाज ॥ इहिंठौरनसंभवसंधिआज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संधिनहीसंभावना । यहतौकवहुनहोइ ॥ सोरावनसमझतसकल । कहाकहैअबकोइ ॥ इतिदूतलोहिताक्षवाक्यं ॥ ॥ अथमंदोदरीरावनप्रतिवाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावनसौंमंदोदरी । इहांकह्योअकुलाइ ॥ अवतौकछुऔरैभइ । तासौंकहाबसाइ ॥ १ ॥ समयहुतौजबसंधिकौ । तबतौकीनीटेक ॥ आयौअंगददूतइहां । आपनमानीएक ॥ २ ॥ रावनहितजेरावरे । सबैरहेसमजाइ ॥ तिनकेमंत्रजुनीतिजुत । एकौचित्तनआइ ॥ ३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ उदधिसेतसज्जयौउतरिइहिंतटरिपुआयौ ॥ द्वारद्वारदलदुसहरोकिसंग्रामसजायौ ॥ भ्रातपुत्रभटभिरेसुतौकछुकाजनसरयौ ॥ धर्मस्वामिउरधर्यौकर्मरनउद्धजुकरयौ ॥ कीनौकुलनाशपुलस्तिकौ, अरुषलसौंबाढीषई ॥ कहियैप्रियकारनसंधिकी,भलीजुअबइच्छाभई ॥ १ ॥ दीनदेषिभगिनीसिदुषनासाश्रुतनासीय ॥ वीरभ्रातमातुलविसेषसुतमंत्रिविनासीय॥दुर्गदाहवारिधिहिवंधसेन्यासंघारीय ॥ भयौबिभीषनजियततोहिलंकाअधिकारीय ॥ एतेअनर्थसुनिसुनिअसह, हमहुत्रियादाहताहियौ ॥ पठयौजोअबहूंदूतप्रिय, कवनसंधिउछवकियौ ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुंभभ्रातसुतमेघसुर । रनमरिभएजुराष ॥ आसाप्रीयबलवानयह ॥ अजहूंजयअभिलाष ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ समयवितीतैसंधिकंतयहमंत्रजुकेसो ॥ लैलैलावतलौनजरेऊपरकौजैसौ ॥ व्याहकाजज्यौंविषमसोककेगतिसुनावत॥सबैसुरासुरसुनतयहौकछुचित्तनआवन ॥ संसारप्रगटअहंकारसोई, अपनौऔरनिवाहियै ॥ जलवूडतगहरतरंगज्यौं, हाप्रीयहाथनवाहीयै ॥ ३ ॥ किहुंकालअतिकलहभयौदैवासुरभारीय ॥ तहांवीतेकछुकल्पदुसहभवभूतदुषारीय ॥ बलविधानवित्तएनियतहरिहरभयमान्यौं ॥ महासक्तिकोत्रासमानिउरध्यानजुआन्यौ ॥ रामसौंहूँवलरिहौरनहिं, प्रभुताभुक्तहुलंकपति ॥ ज्यौलरीदेविदुर्ग्गासजय, असुरवंसकीयनासअति ॥ ४ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ सुनिबोल्यौलंकेसकपटमैदूतजुकीनौ ॥ परशुरामकोचापलैनकहदाउसुदीनौ ॥ नारायनकौधनुषवानअपनैकरआवत ॥ वासवसंजुतविष्णुनियतरनमारिनसावत ॥ तोप्रीयेकाजतेरैपकरि, लक्ष्मीदासीलावतौ ॥ तवकाढिअमरानिजलोकतें, वैकुंठअसुरवसावतौ ॥ ५ ॥ कालसेवममकरतहैजुरवितपतसीतहित ॥ दूरहिंतेदिगपालविहितपदरजानितवंदित ॥ चंद्रहासषलष

गगदुसहसुनिश्रमरनारिडर ॥ अवतिगर्भअनसिद्धनियततहांकोवराकनर ॥ निरषहुजबालतपसीनिलज, दीनजंतुकपिजोरिदल ॥ सुनिमोहितपतगढलंकसिर, षत्राधमआएसुषल ॥ ६ ॥ ज्यौंमृगेशगजमारिथापकट्टीयकुंभाथल ॥ लेतकवलरतलिप्तहैजुविथुरेमुक्ताहल ॥ यहजुरामअज्ञानमेलिवनचरदलमर्कट ॥ मैंभुजबलमैथिलीहरीसोममग्रहसंकट ॥ शशचहतकंठवंधेसुफल, जतनकरततिहिहेतज्यौं ॥ मनमोदकषातअघाइमुष, तपसीइच्छतसियहित्यौं ॥ ७ ॥ ॥ अथरावनगूढहोमोद्यमप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ ॥ जोइजोइकीनैकपटजुध । निष्फलगएनिदान ॥ दशशिरबाढ्योदुसहदुष । उद्यमफुरैनआन ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ अकुलाइरावनआप ॥ परित्रासउरबढिपाप ॥ गोविकलचितगुरग्रेह ॥ निसिअर्धभक्तिसनेह ॥ शुक्रहिजुनाएसीस ॥ वहिंदईस्वस्तिअसीस ॥ पुनिजोरिकरपरिपाइ ॥ सबदुसहदुष्षसुनाइ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ वीयराजछत्रीयवाल ॥ वनिजतविषविसाल ॥ जटजूटसीससजोप ॥ करधनुषवानसकोप ॥ कटिकसेसुभगनिषंग ॥ तरपत्रआवृतअंग ॥ लसिउरनीतुरसीमाल ॥ वपुभुजाकंधविसाल ॥ वनिदीर्घनयनविचित्र ॥ मनुरत्तपंकजपत्र ॥ मुषकमलसोभअमाप ॥ प्रतिअंगउदयप्रताप ॥ आजानबाहुअभंग ॥ उपमेयवर्जितअंग ॥ संगभालकीससहाइ ॥ इहांजूथजूथपआइ ॥ सिरजलधिबंधीयसेत ॥ तेइउतरिसेनसमेत ॥ इहांलंकघेरीयआनि ॥ प्रतिद्वारजुद्धप्रमानि ॥ परिविषमझुझअपार ॥ सबभयोअसुरसँघार ॥ षलमारसहिपरिषेत ॥ सुतबंधुसुभटसमेत ॥ रनकुंभमरिजसराषि ॥ सुतइंद्रजितरविसाषि ॥ अबरहिचतुर्थमअंस ॥ सबविनसिराक्षसवंस ॥ कहुंचलतनहिंबलकोइ ॥ हममाझयहगतिहोइ ॥ मडिरामकपिदलमाझ ॥ सोरह्योरनदिनसांझ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शुक्रजुतुमसेगुरुसदय । हममहँऐसीहोत ॥ सुनिसुनिहसतसुरेससुर । यहकछुकर्मउदोत ॥ ॥ शुक्रउवाच ॥ ॥ शुक्रकह्यौलंकेससौं । होनीहोइसुहोइ ॥ भवबालिष्टभवतव्यता । कहाकरैतिहिंकोइ ॥ ३ ॥ नहींसुरासुरवसनियत । सतअंतकहूंसंग ॥ असंभावसंभावना । भावीकरैअभंग ॥४॥ शुक्राचारिजसुनिसवे । दएमंत्रउपदेस ॥ जाइकरौयहहोमजप । बनिहैकाजविसेस ॥ ५ ॥ अविघनजोपैहोमयह । पूरनहोइप्रमान ॥ तौतोव्हैहोअजयतुम । दशशिरयहैनिदान ॥ ६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ शुक्रमंत्रउपदेसइहांरावनसुनिआयौ ॥ वसगुरवचनविसासछोहउरगर्वजुछायौ ॥ मनअपनेतृणमात्रजगतभवभूतसुजानत ॥ अबफूटीउरआंषिपतितप्रभुहूनपिछानत ॥ शशज्यौंश्रृगालमृगराजसौं, कुदिनहेतक्रीडाकरत ॥ कंटकत्यौंबलइहहोमकैं, आपनासकृतअनुसरत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गूढविवररावनगयौ । कपटहोमकैकाज ॥ आनिकरेसबासिद्धिइहां । समयउचितमषसाज ॥ ७ ॥ छंदउधोर ॥ गतविवरभौदशग्रीव ॥ सोलगिपयालहिसीव ॥ एकांतअजनअवास ॥ निजगतहोमनिवास ॥ अनपरसमाज्जितअंग ॥ आरभहोमअभंग ॥ विधिवसनधौतबनाइ ॥ इहांथप्यौआसनआइ ॥ उच्छाहबढिपुनिआप ॥ त्रैलोकप्रगटप्रताप ॥ संकल्पकृतव्रतसाथ ॥ हितउदकसंग्रहिहाथ॥ कृतकुंडविहितविसाल॥कीयप्रगटअ

नलकराल॥समिधाजथाविधिसाधि॥प्रज्वालिरहितउपाधि॥व्रतमौनसज्जीयवीर॥रहिंद्र गनिमूंदिसधीर॥ विधिद्रव्यवारहिवार॥आहुतीमंत्रउचार॥रथमहाहयजुतराजि॥ अरुस कलपरिकरसाजि॥समसस्त्रअस्त्रनिसंग॥पुनिचापअषयनिषंग॥प्रतिअंगकवचप्रमानि॥ इत्यादिभररथआनि॥कृतकुंडमेलिमझारि॥इहांउचितमंत्रउचारि॥मिलिअनलऊठियधो म॥वसबातबढिचढिव्योम॥दुषभौविभीषनदेषि॥बाढ्यौजुसोकविसेषि॥विभीषनउवाच॥ हैगूढथलयहहोम ॥ धाराजुबढिचढिधोम ॥ तबदुर्गपठएदूत ॥ यहलेहुसोधअभूत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुपैदूतसबभेदसुनि । इहांकपिदलमहँआइ ॥ बिव रिविभीषनसौंसविधि । बातेंकहीबनाइ ॥ ८ ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ कह्यौविभी षनजोरिकर । रामसुनहुमहराज ॥ गौलंकेसनिकुंभिला । कपटहोमकैंकाज ॥ ९ ॥ का ढतहैरथहोमकरि । अग्निकुंडतेंओर ॥ सायुधसकवचसौजसब । ठीकठौरकेठौर॥ १०॥ ॥ गमनतासरथभूगगन । जथागुप्तव्हैजाइ ॥ वहिरथजौषलआरुहै । अपनीदृष्टिनआ इ ॥ ११ ॥ आयुधधनुषअभंगवै । तेइअक्षयतूनीर ॥ विसिषअमोघजुकवचवपु । स हजअभेद्यसधीर ॥ १२ ॥ जोवहनिकसेरथसजय । अजयहोइषलआप ॥ हैनसुरासुर साध्ययह । पापीतृपुरप्रताप ॥ १३ ॥ अबप्रभुकरियैमंत्रयह । होमविघ्नजिहिंहोय ॥ याकेसबसाधनअफल । कारिजसिद्धिनकोय ॥ १४ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामक ह्यौतबसुनिकपिराजा ॥ करियैहोमविनासनकाजा ॥ हठमर्कटभटबलीपठावहि ॥ होम विध्वंसकरहिंफिरिआवहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मुषीभएअंगदहनुमाना ॥ वानर संगसुभटबलवाना ॥ निकसिचलेप्रभुकहँसिरनाई ॥ हृदयराषिमूरतिरघुराई ॥ इहांक पिलंककोटचढिआए ॥ छोडिदएयहगजनिअबाए ॥ वानरछूटेभिरहिंमत्तबल ॥ यहधा वहिगढभयौकुलाहल ॥ इहांजितेराक्षससमुहआए ॥ समहरकपिनिसुमारिनसाए ॥ पु निसोइहोमविवरनहिंपावहि ॥ ढूंढतफिरिप्राकारढहांवहि ॥ होमविवरषोजतकपिहारे ॥ दिसादिसधावतहोतदुषारे ॥ सरमानामराक्षसीसुंदरि ॥ हुतीविभीषनत्रियाभक्तिहरि ॥ दिसिदिसिधावतमर्कटदेषे ॥ विकलभएतिहित्रियाविसेषे ॥ वनितानैननिसैनबतायौ ॥ दुर्गमविवरद्वारदरसायौ ॥ दएकपाटविकटासिलद्वारैं ॥ निकटआइसोवीरनिहारैं ॥ वा लिपुत्रसोसिलाविदारी ॥ महावीरपदतललैमारी ॥ विवरद्वारजबषुल्यौविशेष्यौ ॥ द सशिरहोमकरततहँदेष्यौ ॥ इहांकपिहोमविवरमहँआए ॥ सबैउपद्रवकरतसवाए ॥ चषमुद्रितजुतध्याननिसाचर ॥ बैठ्यौदृढआसनसाधैवर ॥ डरैनरावनडगैनडोलै ॥ वी रपचारततदपिनबोलै ॥ मांगतमर्कटजुद्धमहाबल ॥ षेचरव्रतनहिंतजतमौनषल ॥ इहाँअंगदयहमंत्रउपायौ ॥ आसुरकेअंतहपुरआयौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंगदपैठ्यौ कूदिइहां । रावनकेरनिवास ॥ डोलतगृहगृहअतिअडर । त्रियनिदिषावतत्रास ॥ १५ ॥ अकस्मातदेष्यौइहां । वानरदेहविसाल ॥ जूथमृगीमृगराजज्यौ । वनिताभईं विहाल ॥ १६ ॥ सुरआसुरकिन्नरसुता । नागजक्षसुअनारि ॥ समयविचारिजुअतिस भय । प्रतियहदुरीपुकारि ॥ १७॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अंगदअतिबलउमगिआपअं

तःपुरआयो॥हुवहाहारवग्रेहग्रेहदुस्सहदरसायो॥भामिनीतिहिंछनभाजिभाजिप्रतिमंदि
रपैसी॥त्राहित्राहिकाररिरुदंतिकहैयहभईजुकैसी॥ जुवराजफिरतढूंढतसजय, महलमहल
मंदोदरी॥ पावैनकहुंपटरागिनी, प्रबलचिंतचितापरी॥ चित्रग्रेहप्रतिमाविचित्रवनिताजु
बनाई॥ मयतनयातिहिंग्रेहमांझउरकंपितआई॥ मंदिरतिहिंपुतरीनिमाझमिलिगईमंदो
दरि॥ अंगदषोजतअंगअंगसोलहतवसुंदरि॥ कपिपरयौजुसंभ्रमाचित्तकछु, हाथनमेल
तचकितहूव॥केविमनसुथाक्योषोजिहठि. भटठाढौतवद्वारभुव॥सुरकन्याइकतहांदुचितअ
वलोक्यौअंगद॥ नैनसैनसंज्ञानिदानतिहिंबताइदइतद॥ फिरिपैठ्योतिहिंग्रेहफांदिअं
गदअधिकाई॥ उरहिकंपअनुसारप्रायालंकेसुरपाई॥ करकरषिऐंचिकाढीसुकपि, जोरमृ
गीमृगराज्यौं॥ धकधकीपरीछतियांअधिक, तरुनिविलोकतिभीतर्यौं॥ ॥दोहा॥ ॥
झकझोरतिगहिगहिझपटि। वानरत्रियाविहाल॥ जलजलतागजमत्तज्यौं॥ आंदोलि
तअसराल॥ ॥कवित्त॥ ॥ अबसभईअबलाअचेतइहांबाहिरआनी॥ छुद्रघंटिका
गईटूटिनीवीशिथिलानी॥ फटकंचुकितनप्रभाफैलिहारावलिटूटी॥ मदनपुरीमनुवयरमा
निलीनीशिवलूटी॥ आनीकठोरकचकरषियौं, होमकरतरावनजहाँ॥ हाहावलिष्टभावी
असह, तिहिंनसुरासुरबलतहां॥ ॥मंदोदरीवाक्यं॥ ॥सुतबंधवमंत्रीजुसूरझुझेज
गजान्यौ॥ ऋषिपुलस्तिकोवंसपृथ्वीभौनासप्रमान्यौ॥ पुनिजुबिभीषनअभयपाइप्रभुता
गढपायौ॥ करषिकरषिकचकपिनिदुसहदुषत्रियनिदिषायौ॥ हममाझविपतियहहोतहैं,
मौनमंत्रप्रियपढ़िहौ॥ तिहिबलविशेषलंकेशतुम, कितकुकालअबकाढ़िहौ॥ २॥ अरि
किंकरघरआइअबलकृतमूंडउघारे॥ फारिफारिपटभ्रमणफेरिहठअंगनिहारे॥ सकलहार
श्रृंगारतोरिडारेदिसिदिशितन॥ सुनीकरतअनसुनीमंत्रतुमजपतमौनमन॥ तिहिजीव
नहैधिक्कारजग, जपैकल्पसतजोजियै॥ हियचढैआनिदुर्जनदुसह, कंतपराक्रमकीजियै
॥ ३॥ मेरौपुत्रजुमेघनादसोनहिइहिअवसारै॥ मोसीताकीमातवीरसूयामंदोदारि॥ ति
हिंकचकरगहिकपिनिऐंचिपतिआगैआनी॥ कंतमौनजपकरतआंषिषोलैनअज्ञानी॥
गुनअहंकारलज्जागए, होमकरतजिहिजियनहित॥ कइनीतिधर्मनरहरसुकवि, बरुता
तैमरिवौविहित॥ ४॥ करमर्कटकरमांझरटातिहाहामंदोदरि॥ हमअनाथज्यौंग्रहीक
हाकीरहोवहोमकरि॥ कंतपाणिग्रहकरेअबलतुमव्याहिजुआनी॥ करतेइवानरकरषि
धाइलूटतरजधानी॥अनभईभईहममाझयह, सोसचराचरसाषियै॥ दुषशोकसिंधुबूड
तिदुगम, हमहिकहौकोराषिहै॥ ५॥ ॥कविरुवाच॥ ॥ छंदद्विअक्षरी॥ ॥
चोलीफटिछूटीछुद्रावली॥विगलितबसनचषनिअंजनचली॥ अश्रुअषंडउर्ध्वउश्वासा॥
॥ उरनासीअहवत्तनआसा॥ छुटेकसनतनधरकतछाती॥ रोमउभारराषहगराती॥
करमर्दतबलयाबलिकरकी॥ तनरोमांचकंचुकीतरकी॥ चकितमृगीसीचहूघांचाहति॥
थकीविपतिसिंधूसौंथाहति॥ मग्नभईदुषसागरमाहीं॥ निरषतिकछुअवलंबननाहीं॥
पटरागिनिमर्कटपरिभावत॥ त्यौंत्यौंसुरकन्यासुषपावत॥ भीनैकनकरतनमनिभूषन॥
करीसुभगमुकतावलिकनकन॥ ज्यौंज्यौंकपिकरगहिझकझोरत॥ मिलिमिलिसोतिहंस

तिमुषमोरत ॥ ऐसीदुसहदसाअकुलानी ॥ रावनआगैठाढीरानी ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ तबतुमकंतकरीबुधितैसी ॥ अबहममाझभईगतिऐसी ॥ आपमौनव्रतचषनउघारत ॥ मर्कटहमहिदुसहदुषमारत ॥ कृतइहिंहोमकहाप्रियकरिहौ ॥ मानगमाइपुनिहुंतौमरिहौ ॥ सबसुतभ्रातभतीजसंघारे ॥ मंत्रीसुभटमर्कटनिमारे ॥ ऐसोपतितुममंत्रउपायो ॥ ऋषिपुलस्तिकौवंसनसायो ॥ हमहिपकरिएकपिलैजैहैं ॥ कोजानैतहांकैसीकैहैं ॥ किहिंकाजैतुमकरतहोमक्रम ॥ हैधौंकहानहीनसमझतहम ॥ रहीपुकारिमंदोदरिरानी ॥ इहिंमनमांझगलानिनआनी ॥ परमदुषितमयसुतापुकारत ॥ यहव्रतहेतनआषिउघारत ॥ दोहा ॥ ॥ पावतयज्ञप्रसादनृप । कुलवैभवअहंकार ॥ सोतोतुमइहबुद्धिसौं । करेसबैषयकार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ देषित्रियाबिललातिदुषारी ॥ भौहनुमंतक्रोधमनभारी ॥ विहितहोमसंभारविथारे ॥ लैसाकुल्यदसहुदिसडारे ॥ वारिमेलकृतकुंडबुझायो ॥ पुनिरावनकछुअनलनपायो ॥ लैकरसुबाशुमूंडहिमारयौ ॥ पुनिथापटदसमुषनिप्रहारयौ ॥ दुसहलाततबउरमहदीनी ॥ कपिइत्यादिअनैसीकिनी ॥ विनस्यौहोमसुमनहिविचारयौ ॥ व्हैउद्यमहतरावनहारयौ ॥ काजहोमकपिहांतोकीनो ॥ पुनिकंटकउठिपापप्रवीनो ॥ जोगनींदतैजाग्योजैसो ॥ कालकरालप्रलयकोकैसो ॥ लैकरगदादुसहमर्कटदिस ॥ रावनधायोचित्तमहारिस ॥ अंगदमारुतिबाहिरआयो ॥ धीठदसाननपाछेधाए ॥ कौतुकहोमविध्वंसनकीनो ॥ निसचरउरबढिदाहनवीनो ॥ कोटकूदिकंटककेसंकट ॥ मारगगगनगएतेमर्कट ॥ एविजयीकपिदलमहँआए ॥ भलेभलेसबहिनमनभाए ॥ रामचरनातिनलैसिरनाए ॥ प्रभुकीकृपापरमजयपाए ॥ ॥ कवित्त ॥ सुन्योशुक्रउपदेसकर्मआरंभहोमकृत ॥ विवरगूढगढवीचहटिजुतहांबैठिविजयहित ॥ मारुतिअरुजुवराजमुषीमर्कटइहांआए ॥ करेउपद्रवतिनअनेकदुषदुसहदिषाए ॥ सोइटरयौसमयनरहरसुकवि, उरभयपरयौअधीरकैं ॥ कीनोजुहोमविध्वंसकपि, कृतप्रतापरघुवीरकैं ॥ इतिरावनमंदोदरीप्रतिज्ञानप्रबोध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हैउपजतहठकर्महित । दुखसुखउभयदुरंत ॥ भुगवतहैभवभूतभय । तिनकेफलहितुरंत ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दैवाधीनदुसाध्यसर्वहितअहितजुसुंदरि ॥ आनिमिलतअवाचिंतअषिलसज्जनअसहनअरि ॥ सुषदुकर्मसंजोगइष्टअनइष्टअभ्यासत ॥ बसभवतव्यविशेषप्रगटमतवेदप्रकासत ॥ सबगतिजुएकनरहरसुकवि, लघुदीरघनहिलेषिहै ॥ जोजीयतजंतुबहुकालजग, दुसहकहानहिदेषिहै ॥ ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कर्माधीनअहितहितकारन ॥ मानिनिज्ञानप्रकासहुनिजसन ॥ शोकमूलअज्ञानसुजानहु ॥ पुनितिहिंनाशकज्ञानप्रमानहु ॥ उपजतहैअज्ञानहिअहमिति ॥ मूढइनहिंअपनैकरिमानाति ॥ देहीदेहपुत्रधनदारा ॥ हैसंबंधकुटुंबहमारा ॥ हर्षशोकभयक्रोधजुमोहा ॥ लोभमदादयदारुणद्रोहा ॥ जन्मजरारुजमरनसुजानहु ॥ यहअज्ञानप्रवृत्तिप्रमानहु ॥ देहाधीनइतेसबदेषहु ॥ लोचनमध्यउघारिसुलेषहु ॥ जगतचराचरविलसतजानहु ॥ प्रानीपिंडसंजोगप्रमानहु ॥ निश्चयप्रानसुतौअविनाशी

पूरनजोतिअखंडप्रभासी ॥ सुद्धअलेपकसाधुअसंगी ॥ आनंदरूपअरूपअभंगी ॥ भावाभावविवर्जितभामिनि ॥ हैवितरिक्तसजोगविजोगनि ॥ वहतनमहँतोलौंअपनाई ॥ सोबिछुरयोतबगईसगाई ॥ वहतौंगयौहुतीजिहिंअहमिति ॥ रानीअबाकिहिंकाजैरोवति ॥ हुतेबंधुसुतपौत्रहमारे ॥ जीवगयोतबतनलैजारे ॥ जियतौहुतोसुजातनजान्यौ ॥ प्रगटनवेदपुरानपिछान्यौ ॥ शोकतजहुयहजानिसयानी ॥ पिंडविनासनविनसैप्रानी ॥ प्रियेजातहूंबांधिवयरपन ॥ रामहिसानुजहतौंमहारन ॥ इहिंत्रिकूटगढजीयतजुएहुं ॥ प्रियेप्रसिद्धजगतजसपैहुं ॥ रामबानउरविद्धमहारन ॥ रामजोतिमिलिहैकैरावन ॥ जबरघुनाथमांझमिलिजाऊं ॥ विधियहकरियौतुमहिबताऊं ॥ वेदप्रणीतक्रियासबकीजहु ॥ दानजथाविधिदेषिसुदीजहु ॥ ममआज्ञासीताहितहांमारहु ॥ तुमसहगमानिधर्मउरधारहु ॥ काठचिताचढिमोसंगकामिनि ॥ भवदोऊजीतहुतुमभामिनि ॥ सुषसाधेइहिंलोकसुभावक ॥ पुनिपरलोकसधहुजारिपावक ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ कवित्त ॥ कह्यौ मंदोदरिसुनहुकंततुमप्रगटकरतपन ॥ भएनहैंहैंनभूपकोउरामजयीरन ॥ वीसभुजादशशिरविशालजद्यपिजगजेता ॥ मानहुआपुनकितिकमात्रसबवंससमेता ॥ एस्वयंब्रह्मनरहरसुकवि, आपधर्महितअवतरे ॥ भवभूतत्रिपुरदायकअभय, हैभुवभरहंताहरे ॥२॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ प्रथमकल्पतनमच्छप्रकास्यौ ॥ वारिप्रलयमँहँशंखविनास्यौ ॥ पुनिभयेकमठअसंष्याआतम ॥ भ्रमणअद्रिकृतपृष्टिसयनभ्रम ॥ आदिवराहभएप्रभुओई ॥ महीअषिलरदअग्रसमोई ॥ एईहैंनरहरअवतारा ॥ शत्रुहिरण्यकश्यपसंघारा ॥ सुरपतिहितवामनतनसाँध्यौ ॥ बलित्रैलोकदएतउबाँध्यौ ॥ असुरभएषलछत्रियआकृति ॥ छीनिलईइकवीसवारछिति ॥ सोइद्विजरामद्विजनिलैदीनी ॥ करजलमेलिसंकलपकीनी ॥ एइरामरघुकुलअवतारा ॥ स्वयंब्रह्मअतिरूपउदारा ॥ कंतहतनतोहिनरतनकीनौ ॥ लोकप्रसिद्धजतीव्रतलीनौ ॥ तुमजोहरीसियात्रियताकी ॥ वनहिंअकेलीवसतवराकी ॥ प्रियह्हकीनीबुद्धिअपावन ॥ राक्षसवंसनासहितरावन ॥ रावणउवाच ॥ परब्रह्महूंजानतरघुपति ॥ सीतालक्ष्मीयहौवचनसति ॥ मेरोयहमतसत्यमंदोदरी ॥ मिलिहुंरामरामकरिसरमारि ॥ सनमुषरामबानउरसहिहूं ॥ लोकदुलभ्यपरमपदलहिहूं ॥ अबतौप्रियेयहैबनिआई ॥ जोपैरहैजाइसोजाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लंकापतीमरनव्रतलीनौ ॥ कामिनितहांमौनमुषकीनौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ होमगूढविध्वंसहुव । सौदंपतिसमवाद ॥ सुरासुरनिनरहरसुकवि । बाढ्यौवयरविवाद ॥ ॥ इतिरावणगूढहोमविध्वंसनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ देप्रबोधमंदोदरिहि । रसरिसराक्षसराय ॥ बाहिरआयोबलतसौं । बैठोसभावनाय ॥ १ ॥ पुत्रभतीजेसुभटपुनि । जौपौरुषहितपूर ॥ मारतबचेजुमर्कटानि । सोबैठेमिलिसूर ॥ २ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ जेरनमारेराक्षसानि । हेरिहेरिहठहोइ ॥ आनिजिवाएअमृतउन । कपितोमरयौनकोइ ॥ ३ ॥ हैसबजूझैस्वामिहित । विषमजुद्धकरिवीर ॥ असचतुर्थमआपनौ । सेन्यारहेसधीर ॥ ४ ॥ तुमनिसचरविद्यानिपुन । कपटजुद्धबलकाय ॥ कारननासजुअमरकुल । ऐसेकरहुउपाय ॥ ५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ षेचरवंसपचारिषल ।

रनबढबंध्यौरान ॥ हुइहाहारवलंकमँहँ । निहसदिसाननिसान ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उत्तमजलमज्जनकरीयअंग ॥ पुनिजपेमंत्रविजयीप्रसंग ॥ विधिवरनवरनवासनबनाइ॥ चितरुचिरविविधसौरभचढाइ ॥ सन्नाहकसेप्रतिअंगसोह ॥ उब्भरीयमूंछभौहनिअरोह॥ टूटंतकसनतनफूलितेष ॥ रसवीरविकटभृकुटीत्रिरेष ॥ आरक्तनयनतनकचउभार ॥ संसारमनहुकारनसंघार ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दशनिषंगकटिकसिसुदेसदशशिरषलदारुन॥ भृकुटिदशहुभुवभंगसकललोचनअतिसारुन ॥ दशहस्तनिकोदंडविषमवजीयटंकारव ॥ धुनितबानदुधरदुधारअतिसयरनउच्छव ॥ साजिसमयसिक्षआयुधसकल, विषमवयररिसउरवसीय ॥ खलखुट्टिआयुनरहरसुकवि, कालसँमुखकम्मरकसीय ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इष्टमनाएआपने । अरुमातापहँआइ ॥ पाईआज्ञावंदिपद । प्रेमअसीसजुपाइ ॥ ६ ॥ मिलिरावनरनिवासमँहँ । सबहिनसौंहितसाहि ॥ आयौबाहिरआपइहां । वीरजुझाऊवाहि ॥ ७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मनिमयकिरीटनगमुकटमंड ॥ दशशीसछत्रबनिकनकदंड ॥ रथजथाजुक्तधजदंडरोप ॥ आवरितशस्त्रसन्नाहओप ॥ करिवाजिवृषभषरजुक्तकीन ॥ नगजटितकनककिंकिनिनवीन ॥ समरमुषचढ्योदसकंधसाजि ॥ बनिवीरजुझाऊवीरवाजि ॥ भेरीमृदंगघनसंषताल॥ कहालीतूरत्रंबककराल॥ रनशृंगभेरिडिंडिमिरवद ॥ सहनाइढोलगोमुषाशबद ॥ दारुमयधातमयशृंगवाद ॥ निरधारविविधअनसंष्यनाद॥प्रतिदेसषंडसंभवप्रमान॥वाजित्रविविधमहिमाविधान॥इत्यादिगगनगतधुनिअनेक ॥ वाजित्रविधानकरमुषविवेक ॥ अष्टादसषोहनिमिलेआइ॥सबसुघरबजंत्रीजेसुभाइ ॥ आरोहसुरथरावनअभंग ॥ भवकोलकमठअहिराजभंग ॥ डगमगितदिसाब्रहमंडडोल॥ त्रयलोकत्रासमानीअतोल ॥ धसमसितधरापर्वतनिढाह ॥ अतिवेगपवनथकिजलअथाह ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ अनचिंतअसगुनएक ॥ इहांहोतअसुभअनेक ॥ रविकिरनिमंदप्रचार ॥ वहिपवनसंमुषविकार ॥ वढिअजयअसुरभवानि ॥ जहांगिरतआयुधजानि॥ भटहोतभयचितभंग ॥ अरुषसितसिंदनअंग ॥ कूजतकुठौरकुभास ॥ वनजंतुकाजविनास ॥ ध्वजअग्रबैठीगृद्ध ॥ पतिअहितसूचिप्रसिद्ध ॥ पलचारपंषीयपुंज ॥ गोमायुषरट्टकगुंज ॥ अनिमित्तहोतअनेक ॥ तउतजतनाहिनटेक ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सबैजंतुकूजतअसुर । करिकरिशब्दकुभास ॥ मनुअंतककेदूतमिलि । बोलतहेतविनास ॥ ८ ॥ जोअपराधीरामको । तिहिशुभसगुननहोइ ॥ लोकवेदकोधर्मलषि । कहतयहैसबकोइ ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सजिचल्योसेनचतुरंगसार ॥ रजउठीगगनमिलिभोअंधार ॥ विनुनिसाचक्कचक्कीवियोग ॥ रजसेनचढीमारुतसँजोग ॥ सुरसंषधनुषटंकारसूर ॥ प्रतिअनीबजेवाजित्रपूर ॥ हयहींसगरजगजवीरहाक ॥ डहडहेडमरुडंकिनियडाक ॥ सबभएनादमिलिएकसंग ॥ पूरितअकासमंडलपतंग ॥ घनप्रलयकालजनुगगनघोर ॥ उरपरीत्रासभुवओरओर ॥ मिलिसातसिंधुमर्जादमुक्कि ॥ सरसरितगहरगएनीरसुक्कि॥ दिगपालदुरदडगमगितडोल ॥ रहिपवनगवनगतिअतिअलोल ॥ गजमत्तचलेअतिदिघ्घगाजि ॥ वसवातमनहुबादलविराजि ॥ विरदैतमिलेआसुरदुवाह ॥ रनदुष्टकपटजुधहुयनराह ॥ रनच

ढ्योऋानिरावनसरोष ॥ दिगपालसालरतदेवदोष ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ देवरामतनदृष्टि रोषरवमारमाररन॥ दृगफट्टीयदशदूनदिघ्घतनचरनसुऋंजन॥ऋतिप्रचंडसज्जीयऋनेक ऋायुधऋभ्यासत ॥ पापभयानकरूपपेषितहांमर्कटत्रासत ॥ भवभूतचराचरमानिभय, हीयकातरऋाकंपहुव॥ दसवदनऋरुनदारुनदुसह, भटऋायौसंग्रामभुव॥ ॥ रावणउ वाच ॥ ॥ सोहूंरावनसमरसूरकंटकत्रयलोकीय॥ गिरतसुरासुरशस्त्रविषमरनमोहिविलो कीय ॥ मैंकंदुककैलासकेलिहींहरजुतकीनौ॥ कहिमानुषतूकवनदाहसुरपतिउरदीनौ ॥ क रिजूथसहाइकदीनकपि, लांघिसिंधुऋायौलरन ॥ ऋभिलाषदूरिकरिहूंऋबै, महागर्व बाढ्यौजुमन ॥ १ ॥ त्रीयामात्रताडकादीनहिजरामविनादल॥ मृगसभीतमारीचवधसु तिहिंकहौकहाबल ॥ सप्ततालजडजोनिदुंदसोम्रतकदेहडगि ॥ वालिसाषामृगवराक हतिगर्वजुतिहिंलगि ॥ कोजयौवीरतैंजुद्दकरि, मिथ्याऋहमितिवहतमन ॥ कोदंड बानसंधानकर, रेकाकुस्थसँभारिरन ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राघवठाढेविरथरन । रावनरथऋारोह ॥ देषिविभीषनभौदुचित । हैबाढ्यौउरछोह ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ रावनषोडशचक्ररथ । सजेसनाहसरीर ॥ कैसेजीतहुगेकल ह । विनाकवचरथवीर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ सुनहुसषाहमपहंसुरथ । जगजीतहिब लजाहि ॥ जद्दपिदशशिरवीसभुज । यहकेतकषलऋाहि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ शूरधीर यशचक्रसीलसतध्वजादंडधारि ॥ उरपरहितकृतबलविवेकक्रमजुक्तवाजिकरि ॥ छमाद यासमतासँजोगबनिरासजुबंधीय ॥ विश्वईशसुमिरनविसाससारथिरथसंधीय ॥ संतोष षग्गदामसुफरस, विरतिचर्मबुधिसक्तिवस ॥ संसारविषयविजयीसहज, सुकविकहैनर हरसुजस ॥ १ ॥ शुभलक्षनमिलसुभटज्ञानबंधवगलगज्जीय ॥ विश्वविदितविज्ञानसद्द ढकोदंडसुसज्जीय ॥ मनथिरतातूनीरनियमसंयमदमसायक ॥ सुरगुरुनितपूजासप्रेम सोइकवचसहायक॥ ऋवरनउपाययासमऋषिल, हैजुविभीषनविजयहित ॥ इहिंरथारूढ नरहरसुकवि, निगमहेतहमरहतनित ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मानिविभीषनवचनमम। सषासहितविश्वास ॥ ऋबदशकंधरदुष्टयह । निजकृतन्हैहैनास ॥ ॥ छंदद्विऋक्षरी ॥ इतरावनउतरामऋगज्जीय ॥ समहरचढेसेनघनसज्जीय ॥ ऋसुरसगूहभालकपिऋाए ॥ स्वामिऋग्रऋतिरोषसवाए ॥ दुहघांसेनघटादरसाई ॥ ऋतिबललरनजुवरषनऋाई ॥ ऋसुरऋनीगजघटासुऋावहि ॥ दंतपंतिमनुबकदरसावहि ॥ तपतकुंभदिनकरकरतै से ॥ जलदवितानसुरंगरंगजैसे ॥ ऋनिलफिरैदलसनमुषऋाए ॥ दिघ्घजुमच्छध्वजा दरसाए ॥ नेजासुरंगमोघतहांतानै ॥ पवनवीरऋनुकूलप्रमानै ॥ विसरिजुझाऊवाजित बाजे ॥ जैसैगगनसघनामिलिगाजे ॥ ऋायुधचमकतकरनिउघारे ॥ विद्युलतातरकाति वरिषारे ॥ ऋतिसरलेसुरग्रीधउचारहिं ॥ किधौंमयुरामत्तपुकारहिं ॥ इंद्रधनुषसेधनुषजु ऋाहव ॥ रोषसघोषहोतटंकारव ॥ पवनरोषचढिऋतिछबिपावत ॥ धीरसुभटबादरज नुधावत ॥ ऋमरचमूरीछविकोऋावन ॥ स्यामघटाउनईमनुसावन ॥ कपिभटवरनवर नवनिकैसे ॥ जलदऋनेकरंगमिलिजैसे ॥ ऋटकनिवारिनिकटदलऋाए ॥ रोषारोहछो

हबलछाए ॥ सघनधारसेछुटेअसुरसर ॥ रनहैमच्योमनहुलाग्योझर ॥ कपिउरलागिनि
कसिसरकैसे ॥ पवतिमनहुपनगसेपैसे ॥ धरहैरुधिरढरतघनधारा ॥ झरनाअरुनधात
सेझारा ॥ तेषकपिनिसिरअसिवरटूटहिं ॥ छटामनहुंपर्वतपरछूटहिं ॥ अग्निवानतहांनि
कसतऐसे ॥ टूटतनक्षत्रगगनमगतैसे ॥ ताडतकपिराक्षसमूडनितर ॥ असनिपरतमा
नहुगिरिऊपर ॥ घाइनिकंदररुधिरचलेघन ॥ पर्वतासिरवरषाज्योंपूरन ॥ बहुसुरघावसु
भटघटबोलत ॥ झरनामनहुपवनझकझोलत ॥ वरषततरुपाथरभटवानर ॥ काढिअ
सुरनषदंतअवाहर ॥ चहुघांकूदिलातहैवाहत ॥ कपिजुपरस्परबलनिसराहत ॥ मुहरा
क्षसथापटकपिमारहिं ॥ पुनिअतिबलमुष्टीनिप्रहारहिं ॥ पकरिपाइकपिराक्षसपटकहिं ॥
हियचढिवीरदुहूंदिसहटकहिं ॥ देहिंउछारिबलीगहिनभदिस ॥ महीषोदिडाटहिंकौतुक
मिस ॥ फारहिउदरनषनिगहिफेरहिं ॥ मुहषलचढैसुमारिनिवेरहिं ॥ रनलोटहिंमर्कटके
मारे ॥ विवसभएमानहुंमतवारे ॥ छतमुषरुधिरधारघटछूटे ॥ फवेकसूंभमाटसेफूटे ॥
करिवरघाइअर्द्धधरकाटत ॥ वीरमनहुंघरवातनिवाढत ॥ गरजिचलतबहुगोलीगोले ॥
आइअषाढदिघ्घलघुओले ॥ सोभादेतसघनऋतुसमहर ॥ नाचतमत्तमयूरधरनिधर ॥
चहुघांधूमरेनुचढिनभचलि ॥ महाअंधारमनहुरजनीमिलि ॥ दिसिदिसितेपर्वतकपिडा
रत ॥ महाप्रमानराक्षसनिमारत ॥ काटतपाँषइंद्ररष्याकय ॥ भाजिचढेगिरगगनमनहुं
भय ॥ कर्दममच्यौमांसबसकेरौ ॥ घाइनिश्रोनीचल्यौघनेरौ ॥ पूररुधिरपरशस्त्रप्रहारा॥
॥ धरनिचलीसरिताशतधारा ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कपिभालअर्धधरकटेकोप ॥ रन
टूकभिरतभटपाइरोप ॥ महिपरेमूंडकहिमारमार ॥ धरधसहिरूंडकरधरिदुधार ॥ फटि
वीरउवरधरफैलिअंत्रि ॥ उरसतअभंगजुगचरनजंत्रि ॥ वांदरनिकेरनषउदरवाढ ॥ प
वगातअंत्रझूलहिपटाढ ॥ केकानश्रोनभभकंतकुष ॥ मानहुपषालछुटिउभयमुष॥धरध
रनिपरेलोटतसधीर ॥ वरीयामउठहिपुनिलरहिवीर ॥ भालुकापिभएभरउभयभाग ॥ ष
लदेषिउठहितेइटेकिषाग ॥ आडवढहोतकोउउर्द्धअंग ॥ अतिक्रोधभालमर्कटअभंग ॥
करवतनिकाटमनुषंडकीन ॥ भटभएभागविवरोषभीन ॥ सिरकपिनिअवाहतअसुरसार
॥ वीजजनुकरतिपर्वतविहार ॥ कटिअंगहोतउलटेकराल ॥ षितिपालअग्रमनुभंडष्याल
पदपानिसीसविथुरेप्रमानि ॥ जुघइंद्रजालबहुरूपजानि ॥ कपिसीसनिकटपरिरीछकाइ
॥ सिररीछदेहमर्कटसुभाइ ॥ विररीतसृष्टिषगधारवानि ॥ अद्भुतचरितजुधभयोआनि
॥ परिवारपेतप्रतिमाप्रहार ॥ अंगअंगघाउआयुधअपार॥उत्तरहिंरुधिरकृतपथअचा
ल ॥ षलकेजनुपर्वतदरीषाल ॥ विपरीतषेतभयोरत्तवान ॥ अवनीचलिश्रोणीअप्रमान
॥ मिलिरुधिरसुपैनहिंभूसमाइ ॥ शतधारावहिसरितासुभाइ ॥ कपिमारलातझांपहिअ
कास ॥ तिनकरहिंषग्गाविविषंडतास ॥ धरगिरहिकटेमर्कटसधीर ॥ रसबीररसेउठिभीर
हिंवीर ॥ निसचारभालकपिजुधनिदान ॥ भूतोनभविष्यतयहभयान ॥ जयजयतिराम
कहिकीसजोध ॥ कहिरावनजयजयअसुरक्रोध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहजामिलेपरिकरस
कल। भएचराचरभीत ॥ अबवरनतअदभुतयह । रनसरितविपरीत ॥ छंदाद्विअ८

॥ तहांउभयदलबनेविकटतट ॥ सरिताभईसहजरनसंकट ॥ रुधिरप्रवाहसलिलचलि
राते ॥ मज्जतवीरवीररसमाते ॥ तरतकबंधतरंगनिमिलतन ॥ जलक्रीडासीकरतम्रतकजन
कटीसुंडगजमकरकलोलत ॥ दिसदिसढालकमठसेडोलत ॥ पानिकटेऐसीछबिपावत ॥
धाराजूथमीनमनुधावत ॥ सिततारिचमरफेनतटसोहत ॥ मिलिकचउरझिसिबालविमोहत
ग्रीधकंकचकवाकहंसगन ॥ जलमानससेक्रीडतटकजन ॥ सिलासदिघ्घमध्यपरिसिंधुर ॥
टूटेजहाजतरतरथआतुर ॥ भ्रमणचक्ररथभ्रमतभयानक ॥ बसनतरंगरंगबहुवानक ॥
ढाहेगिरतमरतकुंजरढहि ॥ वारिरुधिरतिनऊपरिवहिवहि ॥ अतिसबेगतिरिऊपरआए ॥
छत्रपत्रपुरइनसेछाए ॥ विसिषशक्तिवहिनिकसिफूटिवप ॥ सोइभएमनुलघुदीरघजलस
प ॥ वनिचोफारविविधदलविकसे ॥ निर्मलकमलकमलसेनिकसे ॥ वहिगजढालविसा
लविराजत ॥ छतरीमनहुंसरितविचछाजत ॥ वीरउदरफटिअंत्रवहावत ॥ मानहुग्राह
तंतमुकलावत ॥ अंत्रावलिजंबुकधरिऐंचत ॥ षेलमीनवनसीसीषैचत ॥ जोधागिरेसंघ
धारीजहं ॥ तेइतरिसंघचलेसरितातहं ॥ महासरितचलिसमरमझारी ॥ भरेरुधिरडाव
रसरभारी ॥ दुहसरितातटघाइलडारे ॥ मनहुंअरधजलमरतउतारे ॥ थितपांतीपांतीप
लचरथट ॥ तेइमनुसहसभोजसरितातट ॥ विविधअहारलहेआमिषवस ॥ दादुरशिवा
रटततटदूवादिस ॥ भूतपिसाचवालमनभए ॥ सरितातिहिंषेलतसुषपाए ॥ पंषीनषीजु
जंतपलासी ॥ विहरतजूथजूथवनवासी ॥ देतविलासरासरसडाकनि ॥ हठहटहसतिवी
रकरहाकनि ॥ भूतअभूतकुजंतुभयानक ॥ विकटसरीरअनैसेवानक ॥ हर्षितभएसुबो
लतिहँसिहँसि ॥ धावतसमरविलोकतिधसिधसि ॥ धनुषतरंगतरहिंउठितेते ॥ मृतकवहत
जलचरसेजेते ॥ कटतधाररतसुभटकरारे ॥ भूमिगिरततेजातरुभारे ॥ मज्जाफेनस्वेतति
हिंमाहिं ॥ जनुवसराततटनिचलिजाहीं ॥ वहुषगस्मृतकधरणिपरबैसे ॥ जलडूंडाषेवतर
तजैसे ॥ पत्रभरहिंजोगनिपनिहारी ॥ तहांमालाहितभ्रमित्रिपुरारी ॥ ढूंढतकमलसमर
विचिधावत ॥ पैशिवसरिताथाहनपावत ॥ विहसिपिसाचीवालनचावहिं ॥ जनुकपालक
रतालबजावहिं ॥ गहगहसुरचामुंडागावति ॥ रासदेतिरनचित्तरिझावति ॥ ऐसीनदी
रामअवलोकी ॥ तहँविहसतहैनाथत्रिलोकी ॥ पलचरतृप्तभएभरपूरन ॥ रामहिंदेतअ
सीसमहारन ॥ इतरघुपतिउतराक्षसराई ॥ दोउदलजूझतकरतदुहाई ॥ भाषतहैहसिभा
गेभागे ॥ लरतरोसरसअंबरलागे ॥ भाजेअसुरनमर्कटभाजहिं ॥ गहचढिलरहिंसिंघ
ज्योंगाजहिं ॥ मारमारकहिआयुधमारत ॥ आपआपप्रभुजैतिउचारत ॥ कालरूपकपि
मारहिंराक्षस ॥ प्रगटदेहिरावनउरपारिहस ॥ गर्जहिंविषमभालकपिगाढे ॥ ठेलहिंवल
राक्षसदलठाढे ॥ भिरेनिसाचरमर्कटभाला ॥ कर्योपरसपरजुद्धकराला ॥ राक्षससबैभिरे
हितरावन ॥ भयोमहासंग्रामभयावन ॥ अतिबलस्वामिधर्मउरधारहिं ॥ विजयरिनकपि
भालविहारहिं ॥ इहांदससीसठेलिदलआयो ॥ दुस्सहमनुपर्वतदरसायो ॥ मनिमयकन
ककिरीटविमोहत ॥ सिरदसस्वेतछत्रअतिसोहत ॥ रथसिरध्वजापताकाराजहि ॥ विवि
धसस्त्रभुजवीसविराजहि ॥ सोहतश्रवनकनकनगकुंडल ॥ मिलिचषरोषजरतमनुमंगल ॥

॥ तानतवानधनुषटंकारत ॥ अतिदुस्सहविषवचनउचारत ॥ विषमभौंहजादिसिकरिवं
कट ॥ मनमुरझाइजातसोइमर्कट ॥ छंदउधोर ॥ ॥ हठिइहांकपिहनुमान ॥ पुनिआइ
जुद्धप्रमान ॥ दशसीससौंचढिदंत ॥ वढिवीररसबलवंत ॥ चषरत्तषलहिपचारि ॥ पुनि
हीयहिमुष्टिप्रहारि ॥ रथमध्यराक्षसराइ ॥ तिहिंचोटगिरयौवताइ ॥ कछुजबैवीत्योकाल
॥ सोउठ्योसुरपतिसाल ॥ तिहषलहिदेषितुरंत ॥ हसिकह्यौतबहनुमंत ॥ करमुष्टिमम
धिक्कार ॥ लहिजपैचेतलवार ॥ लंकेसमुष्टीलाइ ॥ घटभ्रम्यौतिहिंकपिघाइ ॥ छनमात्र
उठ्यौसछोह ॥ हनुमंतरोषारोह ॥ मुहचह्योउठिहनुमंत ॥ तजिषेतअसुरतुरंत ॥ यहक
ह्यौहनुमतआप ॥ पगमांडिदुष्टसपाप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उरपर्यौत्रासअसेस ॥
सोइभाजिगौलंकेस ॥ चितहनूधर्मविचार ॥ लाग्यौनभागेलार ॥ ॥ अथअग्निवर्णादि
कयुद्ध ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ सोचतअतिदेष्योलंकेसुर ॥ उठसँभारिचारीतबआसुर ॥
अग्निवर्ण १ अहिरोमा २ अतिवल ॥ षड़रोम ३ वृश्चिकरोमा ४ षल ॥ प्रभुहिजुहारि
बांधिपौरुषपन ॥ रोषचढेराक्षसआएरन ॥ एचार्यौराक्षसइतआए ॥ धरिउरक्रोधउतैक
पिधाए ॥ वीरवालिसुत १ मारुति २ अतिवल ॥ निकसिसेनतेंसुभटनील ३ नल ४ ॥
राक्षसचारिचारिवरवानर ॥ आपआपजटेरनअवसर ॥ अन्योअन्यप्रहारेआयध ॥

रुप्यौकालकेरूपमहारन ॥ इतरघुनाथहांकिरथआये ॥ साजिसारंगवानसमुहाये ॥
॥ ॥श्रीरामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कह्यौनासताडकासबलपरदूसिरसंघारे ॥ सू
र्पनषाश्रुतनाकछेदिमायामृगमारे ॥ करिमज्जनतिहिंरुधिरकुंभघननादश्रोनघट ॥ क
लहनित्यकृतकरीयप्रगटममचापबैठिपट ॥ दशसीसस्वादआमिषदुलभ, सोइपैंचहत
अमोघसर ॥ विंजनअनेकराक्षसविविध, थालदिघ्घरनभूमिथर ॥ ॥ श्रीरामवामभु
जदक्षिणभुजाप्रतिवचन ॥ ॥ मिलेरामरावनसँग्रामदारुनअतिदुर्द्धर ॥ सुरविमान
आकासतासछनछयौंनिरंतर ॥ करतान्यौकोदंडरामलंकेसुरमारन ॥ वधिदक्षनसोंवाम
कह्योतहांवचनसकारन ॥ भोजनजुदानसमयैंअभय, सदाअग्रवरतीसुकर ॥ अबभए
पृष्टिगतआपतैं, समयविषमअवलंबिसर ॥ ॥ दक्षनभुजवचन ॥ ॥ करदक्षनतब
कह्योवामकछुतत्वविचारहु ॥ अनसमझेकारनअकाजबकवादवधारहु ॥ ममजुगपल्लव
मुक्ततत्तोइषुतोलगिऐहै ॥ मुष्टिछुट्टिरनमाँझनियतषलजालनसैहै ॥ प्रभुश्रवनलागिपूछ
तप्रगट,कंटकमस्तकवानकरि ॥ इकएकहनौंकैंधोअषिल,एकहीवेरांविषमअरि ॥ इतिश्री
रामवामदक्षनभुजसंवाद ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ धायौरावनअग्निवानधरि ॥ काढ्यौ
रामसुअग्निवानकरि ॥ इहांदेवतसुरअसुरअभ्यास्यौं ॥ विशिषदैवसौंरामविनास्यौ ॥ सजे
अस्त्रजोइजोइलंकेसुर ॥ सोइसोईषंडकरतअवधेसुर ॥ अबदससीसउपाधिउपाई ॥ सर्पा
कारबानसमुदाई ॥ स्वर्णचित्रविषवदनमहासर ॥ पंकतिदुस्सहपरतरामपर ॥ विषधर
बानदसाननवरषत ॥ हसतरामकौतुककरिहरषत ॥ मुषतेवानअग्निकनमोचत ॥ सोला
गततननाहिंसकोचत ॥ विषमयविशिषजालरनवरष्यौ ॥ पापीकपटदसाननपरष्यौ ॥
जिततितनागसमूहनिहारे ॥ समयरामतिहिंगरुडसंभारे ॥ इहांसुपर्णवानअवधेसुर ॥ ध
रिगुनमुष्टिदृष्टिसारंगधर ॥ कठिनचापरघुवरकृतकुंडल ॥ बाहुश्रवनलगितानिमहाबल ॥
छूटेंगरुडबाननभछाए ॥ अवधिईसचहुंओरचलाए ॥ गरुडाकारसरनितहांगनिगनि ॥
षाएसर्परूपसरषनिषनि ॥ षगपतिवयरभावलगिषाए ॥ नागबाननिस्सेषनसाए ॥ ॥ छं
दउधोर ॥ ॥ रिसभस्यौराक्षसराइ ॥ सरचापकरनिसजाइ ॥ देवेशरथध्वजदंड ॥ षि
जिकरेहतिसतषंड ॥ मातलिहिसरइकमारि ॥ पुनिअश्वसरनिप्रहारि ॥ दुस्साध्यराक्षस
देषि ॥ बढिपितरसोकविसेषि ॥ सुरराजसिद्धसुसंग ॥ भएविबुधगनमनभंग ॥ भयौवि
भीषनदुसुभाइ ॥ कपिराजकंपितआइ ॥ जुधरामरावनजोर ॥ सोभयौकपिदलसोर ॥
दुववीरभोप्रतिवाद॥वढिविषमवयरविषाद ॥ षलगराजितहांषचार ॥ कहिंवचनसहितावि
कार ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ तैंहतेरिपुहठहोइ ॥ कहितहांमोसौकोइ ॥ ॥ छंदद्विअ
क्षरी ॥ ॥ रावनहूंदिगविजयीराजा ॥ कियेसुरनिकेसबैअकाजा ॥ काराग्रहदिगपतिमैं
दीनैं ॥ कठिनग्रहानिपरिपाएकीनैं ॥ नासतिडरनिगर्भसुरनारी ॥ मैंवनितात्रयलोकविहा
री ॥ सुरपतिमोभयसुषहिनसोवत ॥ रातदिवसदुषस्वासनिरोवत ॥ तैंमारेत्रिषिराखरदू
षण ॥ व्याधकर्मकरिवालिविदूषन ॥ व्याधकबंधकितेकविचारे ॥ महाआलसीकुंभजु
मारे ॥मेघनादसोअसमयमार्यो॥ वसहोध्यानसुपैंनविचार्यो ॥ दुसहवैरसबहिनकोदेहौं

॥ तानतवानधनुषटंकारत ॥ अतिदुस्सहविषवचनउचारत ॥ विषमभौंहजादिसिकरिवं कट ॥ मनमुरझाइजातसोइमर्कट ॥ छंदउधोर ॥ ॥ हठिइहांकपिहनुमान ॥ पुनिआइ जुद्धप्रमान ॥ दशसीससौंचढिदंत ॥ वढिवीररसबलवंत ॥ चपरत्तपलहिपचारि ॥ पुनि हीयहिमुष्टिप्रहारि ॥ रथमध्यराक्षसराइ ॥ तिहिंचोटगिर्योवताइ ॥ कछुजबैबीत्योकाल ॥ सोउठ्योसुरपतिसाल ॥ तिहपलहिदेषितुरंत ॥ हसिकह्यौतबहनुमंत ॥ करमुष्टिमम धिक्कार ॥ लहिजपैचेतलवार ॥ लंकेसमुष्टीलाइ ॥ घटभ्रम्यौतिहिंकपिघाइ ॥ छनमात्र उठ्यौसछोह ॥ हनुमंतरोषारोह ॥ मुहचढ्यौउठिहनुमंत ॥ तजिषेतअसुरतुरंत ॥ यहक ह्यौहनुमतआप ॥ पगमांडिदुष्टसपाप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उरपर्यौत्रासअसेस ॥ सोइभाजिगौलंकेस ॥ चितहनूधर्मविचार ॥ लाग्यौनभागेलार ॥ ॥ अथअग्निवर्णादि कयुद्ध ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ सोचतअतिदेष्यौलंकेसुर ॥ उठसँभारिचारीतबआसुर ॥ अग्निवर्ण १ अहिरोमा २ अतिवल ॥ षड़रोम ३ वृश्चिकरोमा ४ षल ॥ प्रभुहिजुहारि बांधिपौरुषपन ॥ रोषचढेराक्षसआएरन ॥ एचार्यौराक्षसइतआए ॥ धारिउरक्रोधउतेक पिधाए ॥ वीरवालिसुत १ मारुति २ अतिवल ॥ निकसिसेनतेंसुभटनील ३ नल ४ ॥ राक्षसचारिचारिवरवानर ॥ आपआपजूटेरनअवसर ॥ अन्यौअन्यप्रहारेआयुध ॥ जुरेवीरराक्षससनमुषजुध ॥ शस्त्रअस्त्रइतउततरपाथर ॥ भटकोउमिटतनपर्योसमरभर ॥ भिरेअभंगअसुररनभारे ॥ सोइषलचार्यौंकपिनिसंधारे ॥ ॥ रावणजुद्ध ॥ ॥ इनके गिरतदसाननआयो ॥ छलवलछोहमहामदछायो ॥ डसतअधरदसहूमुषदारुन ॥ सो कग्रसितलोचनअतिसारुन ॥ रामराममुषकहतलँकेसुर ॥ प्रलयअनलसौंदुष्टरोषपर ॥ आसुरमनहुविलोक्यौअंतक ॥ धीरजछुटेकपिनिउरधकधक ॥ ॥ अथरावणरणआग मनं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रथारूढदससीसरन । विरथरामवरवी ॥ इंद्रतहांअविलोकियह । अंतरभयौअधीर ॥ १ ॥ सुरपतिअपनौसारथी । मातलिलयौवुलाइ ॥ मेरौरथलैजाहुमहि । रामचढहिंरघुराइ ॥ २ ॥ हरितवरनजोतेहरषि । वेगपवनजितवाजि ॥ ऐंद्रधनु षभाथाअषय ॥ सजिउकवचरथसाजि ॥ ३ ॥ ॥ मातलिरुवाच ॥ ॥ रनवि जयीहितादिव्यरथ । इंद्रपठायौआज ॥ कर्योजुमातलिजोरिकर । रामचढहुमहराज ॥ ४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करेजथाविधिपरिक्रमण । वंदनविविधविशेष ॥ राम चढेतिहिंदिव्यरथ । निश्चयविजैनरेस ॥ ५ ॥ रामभएआरूढरथ । संपेषेसुरराज ॥ मह उपज्यौविश्वासमन । सिद्धिभएसुरकाज ॥ ६ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रथआरूढरामक हंरावन ॥ देषेदुसहदेवदुषदावन ॥ भयौसोचरावनउरभारी ॥ तवराक्षसमायाविस तारी ॥ दुरसहअसुरअनीमहंदेषे ॥ रामहिरामलषनअवरेषे ॥ देवहिसत्रुसेनमहंदेतष ॥ विपरितअद्भुतचरितविशेषत ॥ डहकेलक्ष्मनकीसभालदल ॥ चित्रलिषेसेरहेचित्तचल ॥ रोषसहितमर्कटदलसोचत ॥ मनभ्रमपरेउसासनिमोचत ॥ यौंलंकेसुरकपटउपाया ॥ एकहिरामनव्यापीमाया ॥ देष्यौरामविवसअपनौदल ॥ विश्वईसदीननिकेवच्छल ॥ मा यादूरिकरीछनमाँही ॥ निरषहिंकपितहांकछुवैनाँही ॥ दशशिरक्रोधभर्योअतिदारुन ॥

रुप्यौकालकेरूपमहारन ॥ इतरघुनाथहांकिरथआये ॥ साजिसारंगवानसमुहाये ॥ ॥ ॥श्रीरामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कस्यौनासताडकासबलपरतृसिरसंघारे ॥ सूपैनषाश्रुतनाकछेदिमायामृगमारे ॥ करिमज्जनतिहिंरुधिरकुंभघननादश्रोनघट ॥ कल्हनित्यकृतकरीयप्रगटममचापबौठिपट ॥ दशसीसस्वादआमिषदुलभ, सोइपैंचहत अमोघसर ॥ विंजनअनेकराक्षसविविध, थालदिग्घरनभूमिथर ॥ ॥ श्रीरामवामभुजदक्षिणभुजाप्रतिवचन ॥ ॥ मिलेरामरावनसँग्रामदारुनअतिदुर्द्धर ॥ सुरविमान आकासतासछनछयौनिरंतर ॥ करतान्यौकोदंडरामलंकेसुरमारन ॥ वधिदक्षनसौवाम कह्योतहांवचनसकारन ॥ भोजनजुदानसमर्थेंअभय, सदाअग्रवरतीसुकर ॥ अबभए पृष्टिगतआपतैं, समर्थविषमअवलंबिसर ॥ ॥ दक्षनभुजवचन ॥ ॥ करदक्षनतब कह्योवामकछुतत्वविचारहु ॥ अनसमझेकारनअकाजबककवादवधारहु ॥ ममजुगपल्लव मुक्ततजोइषुतोलगिऐहै ॥ मुष्टिछुट्टिरनमाँझनियतषलजालनसैहै ॥ प्रभुश्रवनलागिपूछतप्रगट,कंटकमस्तकवानकरि ॥ इकएकहनौंकैंधोअषिल,एकहीवेरांविषमअरि ॥ इतिश्री रामवामदक्षनभुजसंवाद ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ धायौरावनअग्निवानधरि ॥ काढ्यौ रामसुअग्निवानकरि ॥ इहांदैवतसुरअसुरअभ्यास्यौं ॥ विशिषदैवसौंरामविनास्यौ ॥ सजे अस्त्रजोइजोइलंकेसुर ॥ सोइसोईषंडकरतअवधेसुर ॥ अबदससीसउपाधिउपाई ॥ सर्पाकारबानसमुदाई ॥ स्वर्णचित्रविषवदनमहासर ॥ पंकतिदुस्सहपरतरामपर ॥ विषधर बानदसाननवरषत ॥ हसतरामकौतुककरिहरषत ॥ मुषतेवानअग्निकनमोचत ॥ सोलागततननाहिंसकोचत ॥ विषमयविशिषजालरनवरष्यौ ॥ पापीकपटदसाननपरष्यौ ॥ जिततितनागसमूहनिहारे ॥ समयरामतिहिंगरुडसंभारे ॥ इहांसुपर्णवानअवधेसुर ॥ धरिगुनमुष्टिदृष्टिसारंगधर ॥ कठिनचापरघुवरकृतकुंडल ॥ बाहुश्रवनलगितानिमहाबल ॥ छूटेंगरुडबाननभछाए ॥ अवधिईसचहुंओरचलाए ॥ गरुडाकारसरनितहांगनिगनि ॥ षाएसर्परूपसरषनिषनि ॥ षगपतिवयरभावलगिषाए ॥ नागवाननिस्सेषनसाए ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ रिसभर्यौराक्षसराइ ॥ सरचापकरनिसजाइ ॥ देवेशरथध्वजदंड ॥ षिजिकरेहतिसतषंड ॥ मातलिहिसरइकमारि ॥ पुनिअश्वसरनिप्रहारि ॥ दुस्साध्यराक्षस देषि ॥ बढिपितरसोकविसेषि ॥ सुरराजसिद्धसुसंग ॥ भएविबुधगनमनभंग ॥ भयौविभीषनदुसुभाइ ॥ कपिराजकंपितआइ ॥ जुधरामरावनजोर ॥ सोभयौकपिदलसोर ॥ दुववीरभौप्रतिवाद॥वढिविषमवयरविषाद ॥ षलगरजितहांषचार ॥ कहिंवचनसहितविकार ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ तैंहतेरिपुहठहोइ ॥ कहितहांमोसौकोइ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रावनहूंदिगविजयीराजा ॥ कियेसुरनिकेसबैअकाजा ॥ काराग्रहदिगपतिमैदीनै ॥ कठिनग्रहनिपरिपाएकीनै ॥ नासतिडरनिगर्भसुरनारी ॥ मैंवनितात्रयलोकविहारी ॥ सुरपतिमोभयसुषहिनसोवत ॥ रातदिवसदुषस्वासनिरोवत ॥ तैंमारेतृषिराखरदूषण ॥ व्याधकर्मकरिवालिविदूषन ॥ व्याधकबंधाकितेकविचारे ॥ महाआलसीकुंभजुमारे ॥मेघनादसोअसमयमार्यो॥ वसहोध्यानसुपैनविचार्यो ॥ दुसहवैरसबहिनकोदेहौं

॥ जोपैरामभाजिनहिंजैहौ ॥ मोवसपरेभलेसमझैहूं ॥ हठिसबहिनजमसादनदैहूं ॥ कपिराजाकीपूंछहिकाटौं ॥ आजविभीषनभुजाउपाटौं ॥ कहाभालकपिमारौंकिंकर ॥ चंचलजातिवराकवनेचर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ पृथ्वीप्रसिद्धतिहारौपौरुष ॥ मानिगर्वसोइकहतआपमुष ॥ हुतेफिरततुमदिगविजयीहित ॥ करेवालितुममहवैसेकृत ॥ पुनिबलहारगएकरिपौरुष ॥ सुतौतहांपाएतुमसबसुष ॥ तातैवडेपवारेतेरे ॥ मुहतोख्यौथापटकपिमेरे ॥ विछुरकपिनिगहिनारिनंग्याई ॥ वाहूसमयतुमहिरिसनाई ॥ यातैंहमकहँलज्याआवत ॥ करहिंकहाजोतुमहिंकहावत ॥ तेइतेइरोचनाविरदतिहारे ॥ सोतौलोकप्रगटहैसारे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबपुरुषातनआपनो । दशशिरवेगिदिषाउ ॥ इतउतडोलिनाचित्तयह । जरठभाजिजिनिजाउ ॥ नाहिनतूनिसचरनियत । विधिशिवसरनबचाइ ॥ परीआनिजबसीसपर । अबसनमुषलरिआइ ॥ रोषेरावनरामररन । बलबोलेबलबंड ॥ धरकिचराचरधरनिधसि । डिगनलग्यौब्रहमंड ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इतहिरामअवधेसउतैरावनलंकेसर ॥ इतहिधर्मआधारउतैषलधर्मषयंकर ॥ इतद्विजवेदसहाइउतैद्विजवेदसदोषी ॥ इतहिपापअपहारउतैकुलपापनिपोषी ॥ इतछत्रीयउतराक्षसअधम, महावीरसंग्राममिलि ॥ समलोपिअगडनरहरसुकवि, भिरनमनहुगजमत्तमिलि ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ वीरबाहुरघुवीररोसबसबचनउचार्‍यौ ॥ यहअसाधअसुरेसवेदसौंवयरवधार्‍यौ ॥ षलयाकहँचढिषेतषोदिजरमूलउषारौं ॥ सोधिसोधिसंसारमहाराक्षसरनमारौं ॥ सुरसाधुविदितनरहरसुकवि, अबजीरनउतराइहूं ॥ दससीसमुंडमालादुलभ, हरहिंआजपाहिराइहूं ॥ कविरुवाच ॥ सारथिमातलिफिरिसँभारिसुरपतिरथसाज्यौ ॥ ध्वजावैठिमारुतिसधीरगहरेसुरगाज्यौ ॥ कृपादृष्टिप्रभुकरिवाजिवरविथाविनासीय ॥ सुरसुरेसटरिसोचंसिद्धविश्वासप्रकासीय ॥ जानकीनाथकाकुस्थजय, जयतिरामत्रिभुवनजई ॥ संग्रामसमयनरहरसुकवि, यहअकासभाषाभई ॥ १ ॥ इंद्रधनुषआकर्षिचाढिकरवानचलायौ ॥ काटिसीसलंकेसअहुटिरामहिकरआयौ ॥ एकोत्तरशतवारनबजुषलमुंडनसाए ॥ अक्षयभएअनेकवारअकासहिछाए ॥ संध्यानरातिसूझैदिवस, परीत्राससंभ्रमपरे ॥ दिगमूढकहतकपिभालदल, हाहातुमरक्षकहरे ॥ २ ॥ कटेसीसदशकंधअषिलनभमंडलछायौ ॥ उडिअसंष्यसिरअसुरदुसहषलचरितदिषायौ ॥ दारुनभूनभलगिदिगंतभरिरहेभयानक ॥ रुधिरश्रवतरवमारमारयहहोतअवानक ॥ अतित्रासपर्‍योकपिभालउर, असहचारितअसुरेसकै कोपितमनुआएराहकुल, कृतसहायलंकेसकैं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ज्यौंशिरउपजतअसुरजोइ ॥ हरिकाटतत्यौंत्यौंहठहिहोइ ॥ इहिंक्रीडालागेअवधिईस ॥ सोइहठतकटेआकाससीस ॥ याभांतिबढतषलसिरअपार ॥ विषयानिभजतज्यौंचितविकार ॥ भवहोतनमस्तकवृद्धिभंग ॥ सदमनहुंविद्यादुष्टसंग ॥ कौतुकयहदेषतभालकीस ॥ सहसकरअंतरितभएसीस ॥ अनसहनगगनमिलिअंधकार ॥ बलबढ्यौअसुरमायाविथार ॥ तिहिंमांझदुरतरविरथउदोत ॥ थकीवातप्रातज्यौंकुहरहोत ॥ देषैनवीरतिहिंदुष्टदेह ॥ षलपैठिजाततमनभअषेद ॥ भालकपिलहततिहिंनहिनभेद ॥

सोरहेथकितचितपरिसंदेहु ॥ पापीसुकरैसबहिनप्रहार ॥ कपिभएविवसबसअंधकार ॥ कंटकअदृश्यवढिभौअकास ॥ तहांलष्योरामकपिदलसत्रास ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामकहांलछमनकपिराजा ॥ मारमारकहिमूंडसमाजा ॥ धुनियहसिरमर्कटदिसधावहिं ॥ पगनरहहितेकीसपलावहिं ॥ देवदुचितमर्कटभटदेषे ॥ वीरसुविस्मयवसहिविसेषे ॥ तहां मोषेसायककुलरघुपति ॥ हांतेकरेमूडनमहतिहति ॥ मूंडपरेतेजलनिधिमांही ॥ षोजिषो जिजलचरसबषांहीं ॥ कछुलैमुंडमालशिवकीनै ॥ कहेसमरसोवीनिजुलीनै ॥ निसचरमा याकपटविनासे ॥ प्रगटजोतिदिवसेसप्रकासे ॥ दशशिरतबैबिभीषनदेष्यौ ॥ वाजषुलत चषलवाविशेष्यौ ॥ धरिकरसक्तिभ्रातपरधायौ ॥ इहांरघुनाथबीचचलिआयौ ॥जाकोपन निगमागमज्यान्यौ ॥ पंजरविजयजुसरनप्रमान्यौ ॥ दुष्टबिभीषनसनमुषडारी ॥ असहअ मोघसांगिअनियारी ॥ सांगिलगीरघुनाथगुसाँई ॥ ओटिलईत्रिणकीसीनाँई ॥ इहांराम कहँमूर्छाआवत ॥ दैवमनुजसौभावदिषावत ॥ कोप्योतहांविभीषनराक्षस ॥ प्रगटविषा दवादउरपरहस ॥ कहनलग्यौवसक्रोधकराला ॥ वचनविषमविषमुषसेव्याला ॥ ॥ वि भीषनउवाच ॥ ॥ अरेअभागेअबुधअन्याई ॥ चितआईसुअनीतिचलाई ॥ सुरनर नागजुसाधसंताए ॥ प्रभुत्रिलोकपतिचीन्हिनपाए ॥ दुष्टब्रह्महितसीसजुदीने ॥ कृपाकरी तिहिअक्षयकीने ॥ सिरतेकाटिहोमकृतसाजे ॥ एकएककेकोटिउपाजे ॥ याहीगर्वभएतुम आंधे ॥ सठजोपैचषवीसकसांधे ॥ अजहूंताहिनदेषतआसुर ॥ आनिकालनाच्यौसिरऊ पर ॥ जोशिवविधिहूंप्रभुकरजान्यौ ॥ पापीसौतैंनाहिपिछान्यौ ॥ जगतसबैतैविधिवरजी त्यौ ॥ अबतौरावनसुपैप्रतीत्यौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भिरतसुजान्यौजेठौभाई ॥ चि तरिसरोकिनगदाचलाई ॥ ॥ रावणउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कायरसेवाशत्रुकी । क रतछांडिकुलक्रोध ॥ मुहकोनैफिरिआइमुहि । पापीदेतप्रबोध ॥ १ ॥ कुलद्रोहीकातर कुबुधि । हूंनहींमारततोहि ॥ कोटतजोभयमीचके । मुषनदिषावहुमोहि ॥ ॥ कविरुवा च ॥ ॥ छंदपधरी ॥ अतिजरतक्रोधआतमअभीत ॥ कंटककुजोनितामसकुचीत ॥ पुनिकरतवानवर्षाअपार ॥ मर्कटप्रहारमुषमारमार ॥ रनरोषसुभटहलकारिराम ॥ मर्कटन सुरोक्यौंठामठाम ॥ उपराजिकपटमायाअभूत ॥ ततछनभौअंतरध्यानभूत ॥ इहांभयो अदृष्टषलरूपएक ॥ आयेसुदुष्टरूपनिअनेक ॥ एकतैंभएरावनअपार ॥ करवीसवीसद शशिरकुचार ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रनकपिभालभालतिनरोके ॥ वीरवीरदशदिश निविलोके ॥ विकलकीसदलकछुनबुझे ॥ सबदिसरावनरावनसूझे ॥ ब्रह्मसृष्टिमनुगईवि लाई ॥ यहरावनमयनववनिआई ॥ भालकीसाजितहीतितभाजत ॥ रावनरूपरोकिगल गाजत ॥ घोररूपआसुरकीयघेरा ॥ विन्हलभएअमरतिहिंवेरा ॥ धरैशस्त्रषलकोटिनि धावहि ॥ पैकपिहूंअवकासनपांवहि ॥ सुरकपिभालसुरूपपरीसक ॥ कहतअसाध्यएकहो कंटक ॥ पापीतिहिसबदेवपजाए ॥ अबतौदुष्टइतेव्हैआए ॥ निसचरयापहँउवरननाहीं ॥ जुद्धछांडिगिरकंदरजांहीं ॥ भएभेचकितकीसदलभाला ॥ देवत्राहिअबरामदयाला ॥ दि नकरकुलमंडणजबदेषे ॥ वानरभालसभीतविशेषे ॥ रनवानररघुनाथपचारे ॥ अतिबल

पौरुषवचनउचारे ॥ जेरघुराजप्रतापहिंजानैं ॥ सोनिर्भयभटभिरतसयानैं ॥ हनुमंतअंगदनिभैनीलनल ॥ विसारिलरतलगिगगनमहाबल ॥ वीरअमितरघुवीरविलोके ॥ राक्षसमारिसरनतहांरोके ॥ रामवानदुस्सहअनियारे ॥ मायारूपदसाननमारे ॥ गएविलाइकपटकेरावन ॥ रह्योएकतुवचकभयावन ॥ प्रभुसबमायारूपविनासे ॥ ज्यौरविउदयनिषिलतमनासे ॥ रावनएकरह्योरनसेष्यौ ॥ देवसमानगगनरथदेष्यौ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ भिरतदेवमैंसबैभजाए ॥ अवनिलाजसाजिरथआए ॥ अमरपगनिरहियौहूंआयौ धरिकरसूलगगनमगधायो ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भयपरिगगनअमररथभाजत ॥ गहचढिपीठिदसाननगाजत ॥ अंगदअमरलषेजबआतुर ॥ कूद्योपंथअकासभयंकर कपिगहिचरनपछाग्योकंटक ॥ अवनिगिरयोज्योंमाय्योअंतक ॥ इहांरावनकहँमूर्छाआई ॥ प्रगटजैतिअंगदकपिपाई ॥ दंडएकमहँचेत्योदारुन ॥ सूरसंभारिउठोचषसारुन ॥ छंदउधोर ॥ ॥ रनउठ्योरावनराइ ॥ धरिसूलदसकरधाइ ॥ रथरामचंद्रतुरंग ॥ सोहएसूलनिसंग ॥ सरतीसधनुसंधान ॥ नरनाथमुक्तिनिदान ॥ संघरेतिनदशशीस ॥ विच्छेदसरकरवीस ॥ शिरभुजाकटिइकसंग ॥ एईहोतनउतनअंग ॥ भुजसीसकटेभयानं ॥ सोईचढेउडिअसमान ॥ दिसविदिसगगनदिगंत ॥ एइरहेपूरीअनंत ॥ सिरराहमनुकरकेत ॥ हूवक्रोधविग्रहहेत ॥ रविराहवयरविराम ॥ रविवंसराजाराम ॥ सोइआदिवैरसंभारि ॥ मिलिजूथगगनमझारि ॥ भवराहकेतसुभाइ ॥ इहांरामघेरेआइ ॥ सरअनलतबअवधेस ॥ वसक्रोधमुक्तविसेस ॥ तिहिंजरेमायाजाल ॥ करअसुरजूथकपाल ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ दशसीसविभीषनसमरदेषि ॥ वसवयरअसुरधायोविसेषि ॥ इहिंवीचवीरहनूमंतआइ ॥ रोक्योचढिहीयेलंकराइ ॥ उरदईलातझांप्योआकास ॥ तिहिंपकरिपूंछधरिपटकितास ॥ छोडेनपूंछरावनसछोह ॥ दूवहोतपरसपरदाउद्रोह ॥ कपिलीयेषलहिकूद्योअकास ॥ तहांचल्योप्रलंबितअसुरतास ॥ तनादिर्घदसाननकरतताक ॥ हनुमंतकरीइहींवीरहाक ॥ कपिफिरयोगगनहनुमानक्रुद्ध ॥ जाजुल्यभयोदुहुबाहुयुद्ध ॥ पुनिकरतलातथापटप्रहार ॥ आघातवज्रमुष्टिकामार ॥ संग्राममल्लसमरोषसंग ॥ आसुरकपिजूटतजुधअभंग ॥ दूववीरकरतनभद्रोहदाउ ॥ निर्घातपातवाजहिनिहाउ ॥ अंतरिक्षजुद्धअद्भुतअनिंद ॥ कपिलगीकनकगिरिमनुकलिंद ॥ तिनदेषिअमरउरपरीत्रास ॥ सोइरथनिललैभाजअकास ॥ इहांकरेदाउमारुतिअनेक ॥ तऊगिरयोनरावनगहिटेक ॥ रघुवीरदेषिकौतुकरसाल ॥ सरहन्योदसाननअमरसाल ॥ तिहिंघाइभयोरावनअचेत ॥ षलपरयोभूमिसंग्रामषेत ॥ कंटकगतमूर्छाउठ्योकोपि ॥ रनरोद्रमरणपनपाउरोपि ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अमरविमाननिअंबरछायो ॥ कंटकतिनहिंदेषिअकुलायो ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ भिरेजहांमोसौंतुमभागे ॥ अबसोइममकौतुकअनुरागे ॥ तोसुरराजवदौंबलतोही ॥ मांडिपाउआवनदेमोही ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कहियौंचल्योगगनमगकंटक ॥ धरकैउरसुरपतिकोधकधक ॥ अंगदइंद्रादिकअवलोके ॥ सबभाजेरथहांकिससोके ॥ सूरइहांजुवराजसंभाग्यौ ॥ पकरिपाइदससीसपछाग्यौ ॥ दैउरलातकूदिगौअंग

द ॥ दुष्टअचेतभयौतबदुर्मद ॥ इहांदसाननऊठ्यौआतुर ॥ अतिहिंषिसानौरोषजरतउ
र ॥ गहरैसुरगज्र्योरनगाढौ ॥ ठौरठौरघेर्योषलठाढौ ॥ तहांदसधनुषदसहूंभुजतानत ॥
मर्कटदलतृणमात्रप्रमानत ॥ महासुभटदसदससरमारे ॥ दुसहनिकसितेअंगदुसारे ॥
आयुधवीसहुकरनिअवाहत ॥ चौहूंदिसाकुटिलद्दगचाहत ॥ जोइमुहँचढैताहिषलमारे ॥
पर्करिभालकपिधरनिपछारे ॥ असुरपानिगहिगगनउडावै ॥ धसैहसैरनबजरेधावै ॥
मुसलकपीसपरिघनलमार्यौ ॥ पट्टिसनीलसरोषप्रहार्यौ ॥ जांबुवंतअसितोमरमारुति ॥
परससुषेनकुंतकेसरिहति ॥ सूलगवाक्षहिगदाबिभीषन ॥ मुद्गरद्विविदकुमुदनेजातन ॥
तारकटाराभिंडपालगज ॥ चिटपगवयजुवराजसिलासज ॥ दधिमुषचक्रसरभहनिअंकु
स ॥ शेषशक्तिहतकर्योजगतजस ॥ वीरकछुककरपत्रविनासे ॥ इत्यादिकसबशस्त्रअ
भ्यासे ॥ श्रीरघुनाथहिमारितीनसर ॥ इहांगर्जतठाढौरनआसुर ॥ घाइलभएसबनिक
पिघेर्यो ॥ मरैनमार्योफिरैनफेर्यो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ काटतषलकेकोपकरी । चाढिराम
सिरचाप ॥ त्योंत्योंहोतअनेकतहां । ज्योंपरवसमनपाप ॥ १ ॥ दुसहतहांरघुनाथदल ।
धाएसुभटसधीर ॥ मरैनकरसिरकटतहूं । विहसिलरैरनवीर ॥ २ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥
इहांसुग्रीवजुअंगदआए ॥ धसिनलनीलद्विविदबलधाए ॥ हनुमतआयोएकदसमहर ॥
वीरअनेकभालभटवानर ॥ महावृक्षपर्वतासिलमारहि ॥ पुनिदंतननषदेहविदारहि ॥ कू
दिजाहिंदैलातअचानक ॥ करमेलतगहिवेकहकंटक ॥ करनिचढतकपिभालभयंकर ॥
ज्योंगिरडांगविहारतवनचर ॥ चढेसीसनलनीलवनेचर ॥ दांतनिषातकपालनहिनडर ॥
दससिरकोपकर्योतबदारुन ॥ कपिनविडारिकरेरनकनकन ॥ भएभालकपिघाइलभारी ॥
भईनिसासमहरभयकारी ॥ निसातमीनिसचरमनमानी ॥ जननीसीजुसहाइकजानी ॥
इहांनिसिसमयरीछपतिआयो ॥ स्यामवर्णदललियैसवायो ॥ धरिमारतकाटतधरधाव
त ॥ कारेयाकीदृष्टिनआवत ॥ हठलाग्योरावनरनहठकत ॥ पावतताहिभूमिगहिपटकत ॥
जांबुवंतजरजीरनजोधा ॥ कालसुरूपजुआयोक्रोधा ॥ कूदिलातउरमार्योकंटक ॥ ऐसो
हन्योवज्रमनुअंतक ॥ ढरतदसहुमुषश्रोणीधारा ॥ पर्वतजैसेइंद्रप्रहारा ॥ रथपरभौमूर्छा
गतरावन ॥ पर्योअचेतनिअसुरअपावन ॥ घेरिरहेराकसप्रभुघाइल ॥ हाहाकरतभए
सबहाइल ॥ जबरावनहिअचेतनिजान्यौ ॥ इहांरथहांकिलंकमँहआन्यौ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ काटेराघवसीसकर । षलजीवततउषेत ॥ निसिरावनसबसेवकनि । आन्यौग्रेहअचेत
॥ ३ ॥ ॥ अथसीतातृजटासंवाद ॥ ॥ अर्धनिसातृजटाअसुरि । इहांसीतापहँआ
य ॥ समहरकीबातैसभय । सोसबकहीसुनाय ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ काटतसिरभुज
सरनिकर । पुनिपुनिहोतअपार ॥ हातृजटेव्हैहैकहा । क्योंयहमरेकुचार ॥ २ ॥ राम
वानहूंनहिमरत । सिरकरकटेअसेष ॥ आहिकछूविपरीतयह । विधिकृतजननिविशेष ॥
॥ ३ ॥ एतेहूंदुषमँहँअजौं । मोहिजिवावतमात ॥ देषौविधिरचनादुसह । घाइवचतषल
घात ॥ ४ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ जिहिंकनकमयमृगकीन ॥ दिनदुष्टबुधिमुहिदीन ॥ कहि
वचनकछुककराल ॥ लगिहियैलक्ष्मनलाल ॥ मुहितजिअकेलीमात ॥ जोभयौरक्षकजात ॥

पौरुषवचनउचारे ॥ जेरघुराजप्रतापहिंजानै ॥ सोनिर्भयभटभिरतसयानैं ॥ हनुमंतअंगदनिभैंनीलनल ॥ विसारिलरतलगिगगनमहाबल ॥ वीरअमितरघुवीरविलोके ॥ राक्षसमारिसरनतहांरोके ॥ रामवानदुस्सहअनियारे ॥ मायारूपदसाननमारे ॥ गएविलाइकपटकेरावन ॥ रह्योएकतुवचक्रभयावन ॥ प्रभुसवमायारूपविनासे ॥ ज्यौरविउदयनिषिलतमनासे ॥ रावनएकरह्योरनसेष्यौ ॥ देवसमानगगनरथदेष्यौ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ भिरतदेवमैंसबैभजाए ॥ अवनिलाजसाजिरथआए ॥ अमरपगनिरहियौहूंआयौ धरिकरसूलगगनमगधायौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भयपरिगगनअमररथभाजत ॥ गहचढिपीठिदसाननगाजत ॥ अंगदअमरलषेजबआतुर ॥ कूद्यौपंथअकासभयंकर कपिगहिचरनपछार्यौकंटक ॥ अवनिगिर्योज्यौंमार्योअंतक ॥ इहांरावनकहँमूर्छाआई ॥ प्रगटजैंतिअंगदकपिपाई ॥ दंडएकमहँचेत्यौदारुन ॥ सूरसंभारिउठौचषसारुन ॥ छंदउधोर ॥ ॥ रनउठ्योरावनराइ ॥ धरिसूलदसकरधाइ ॥ रथरामचंद्रतुरंग ॥ सोहएसूलनिसंग ॥ सरतीसधनुसंधान ॥ नरनाथमुक्तिनिदान ॥ संघरेतिनदशशीस ॥ विच्छेदसरकरवीस ॥ शिरभुजाकटिइकसंग ॥ एईहोतनउतनअंग ॥ भुजसीसकटेभयान ॥ सोईचढेउडिअसमान ॥ दिसविदिसगगनदिगंत ॥ एइरहेपूरीअनंत ॥ सिरराहमनुकरकेत ॥ हूवक्रोधविग्रहहेत ॥ रविराहवयरविराम ॥ रविवंसराजाराम ॥ सोइआदिवैरसंभारि ॥ मिलिजूथगगनमझारि ॥ भवराहकेतसुभाइ ॥ इहांरामघेरेआइ ॥ सरअनलतवअवधेस॥ वसक्रोधमुक्तविसेस ॥ तिहिंजरेमायाजाल ॥ करअसुरजूथकपाल ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ दशसीसविभीषनसमरदेषि ॥ वसवयरअसुरधायौविसेषि ॥ इहिंवीचवीरहनूमंतआइ ॥ रोक्यौचढिहीयैलंकराइ ॥ उरदईलातझांप्यौआकास ॥ तिहिंपकरिपूंछधरिपटकितास ॥ छोडेंनपूंछरावनसछोह ॥ दूवहोतपरसपरदाउद्रोह ॥ कपिलीयेषलहिकूद्योअकास ॥ तहांचल्योप्रलंबितअसुरतास ॥ तनादिर्घदसाननकरतताक ॥ हनुमंतकरीइहींवीरहाक ॥ कपिफिर्योगगनहनुमानक्रुद्ध ॥ जाजुल्यभयौदुहुबाहुयुद्ध ॥ पुनिकरतलातथापटप्रहार ॥ आघातवज्रमुष्टिकामार ॥ संग्राममल्लसमरोषसंग ॥ आसुरकपिजूटतजुधअभंग ॥ दूववीरकरतनभद्रोहदाउ ॥ निर्घातपातवाजाहिनिहाउ ॥ अंतरिक्षजुद्धअद्भुतअनिंद ॥ कपिलगीकनकगिरिमनुकलिंद ॥ तिनदेषिअमरउरपरीत्रास ॥ सोइरथनिललैभाजअकास ॥ इहांकरेदाउमारुतिअनेक ॥ तऊगिर्योनरावनगहिटेक ॥ रघुवीरदेषिकौतुकरसाल ॥ सरहन्यौदसाननअमरसाल ॥ तिहिंघाइभयौरावनअचेत ॥ षलपर्योभूमिसंग्रामषेत ॥ कंटकगतमूर्छाउठ्योकोपि ॥ रनरौद्रमरणपनपाउरोपि ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अमरविमाननिअंबरछायो ॥ कंटकतिनहिंदेषिअकुलायौ ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ भिरेजहांमोसौंतुमभागे ॥ अबसोइममकौतुकअनुरागे ॥ तोसुरराजवदौंबलतोही ॥ मांडिपाउआवनदेमोही ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कहियौंचल्योगगनमगकंटक ॥ धरकैउरसुरपतिकोधकधक ॥ अंगदइंद्रादिकअवलोके ॥ सबभाजेरथहांकिससोके ॥ सूरइहांजुवराजसंभार्यो ॥ पकरिपाइदससीसपछार्यो ॥ दैउरलातकूदिगौअंग

ह ॥ दुष्टअचेतभयौतबदुर्मद ॥ इहांदसाननऊठ्योआतुर ॥ अतिहिषिसानौरोषजरतउ
र ॥ गहरैसुरगज्योरनगाढौ ॥ ठौरठौरघेर्योषलठाढौ ॥ तहांदसधनुषदसहूंभुजतानत ॥
मर्कटदलतृणमात्रप्रमानत ॥ महासुभटदसदससरमारे ॥ दुसहनिकसितेअंगदुसारे ॥
आयुधवीसहुकरनिअवाहत ॥ चौहूंदिसाकुटिलदृगचाहत ॥ जोइमुहँचढैताहिषलमारै ॥
पकरिभालकपिधरनिपछारै ॥ असुरपानिगहिगगनउडावै ॥ धसैहसैरनबजरेधावै ॥
मुसलकपीसपरिघनलमार्यो ॥ पट्टिसनीलसरोषप्रहार्यो ॥ जांबुवंतअसितोमरमारुति ॥
परससुषेनकुंतकेसरिहति ॥ सूलगवाक्षहिगदाबिभीषन ॥ मुद्गरद्विविदकुमुदनेजातन ॥
तारकटाराभिंडपालगज ॥ चिटपगवयजुवराजसिलासज ॥ दधिमुषचक्रसरभहनिअंकु
स ॥ शेषशक्तिहतकर्योजगतजस ॥ वीरकछुककरपत्रविनासे ॥ इत्यादिकसबशस्त्रअ
भ्यासे ॥ श्रीरघुनाथहिमारितीनसर ॥ इहांगर्जतठाढौरनआसुर ॥ घाइलभएसबनिक
पिघेर्यो ॥ मरैनमार्योफिरैनफेर्यो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ काटतषलकेकोपकरी । चाढिराम
सिरचाप ॥ त्यौंत्यौंहोतअनेकतहां । ज्योंपरवसमनपाप ॥ १ ॥ दुसहतहांरघुनाथदल ।
धाएसुभटसधीर ॥ मरैनकरसिरकटतहूं । विहसिलरैरनवीर ॥ २ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥
इहांसुग्रीवजुअंगदआए ॥ धसिनलनीलद्विविदबलधाए ॥ हनुमतआयौएकदसमहर ॥
वीरअनेकभालभटवानर ॥ महावृक्षपर्वतसिलमारहि ॥ पुनिदंतननषदेहविदारहि ॥ कू
दिजाहिंदैलातअचानक ॥ करमेलतगहिवेकहकंटक ॥ करनिचढतकपिभालभयंकर ॥
ज्योंगिरडांगविहारतवनचर ॥ चढेसीसनलनीलवनेचर ॥ दांतनिषातकपालनहिनडर ॥
दससिरकोपकर्योतबदारुन ॥ कपिनविडारिकरेरनकनकन ॥ भएभालकपिघाइलभारी ॥
भईनिसासमहरभयकारी ॥ निसातमीनिसचरमनमानी ॥ जननीसीजुसहाइकजानी ॥
इहांनिसिसमयरीछपतिआयौ ॥ स्यामवर्णदललियैसवायौ ॥ धरिमारतकाटतधरधाव
त ॥ कारेयाकीदृष्टिनआवत ॥ हठलाग्यौरावनरनहठकत ॥ पावतताहिभूमिगहिपटकत ॥
जांबुवंतजरजीरनजोधा ॥ कालसुरूपजुआयौकोधा ॥ कूदिलातउरमार्योकंटक ॥ ऐसो
हन्योवज्रमनुअंतक ॥ ढरतदसहुमुषश्रोणीधारा ॥ पर्वतजैसैइंद्रप्रहारा ॥ रथपरभौमूर्छा
गतरावन ॥ पर्योअचेतनिअसुरअपावन ॥ घेरिरहेराकसप्रभुघाइल ॥ हाहाकरतभए
सबहाइल ॥ जबरावनहिअचेतनिजान्यौ ॥ इहांरथहांकिलंकमँहआन्यौ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ काटेराघवसीसकर । षलजीवततउषेत ॥ निसिरावनसबसेवकनि । आन्यौग्रेहअचेत
॥ ३ ॥ ॥ अथसीतातृजटासंवाद ॥ ॥ अर्धनिसातृजटाअसुरि । इहांसीतापहँआ
य ॥ समहरकीबातैंसभय । सोसबकहीसुनाय ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ काटतसिरभुज
सरनिकर । पुनिपुनिहोतअपार ॥ हातृजटव्हैहैकहा । क्यौंयहमरेकुचार ॥ २ ॥ राम
वानहूंनाहिमरत । सिरकरकटेअसेष ॥ आहिकछूविपरीतयह । विधिकृतजननिविशेष ॥
॥ ३ ॥ एतेहूंदुषमँहँअजौं । मोहिजिवावतमात ॥ देषौविधिरचनादुसह । घाइवचतषल
घात ॥ ४ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ जिहिंकनकमयमृगकीन ॥ दिनदुष्टबुधिमुहिदीन ॥ कहि
वचनकछुककराल ॥ लगिहियेलक्ष्मनलाल ॥ मुहितजिअकेलीमात ॥ जोभयौरक्षकजात ॥

॥ भवकर्मफलममभोग ॥ विधिदयेरामविजोग ॥ उपराजिजिहिकृतएव ॥ सोइदेतदुषविधिदेव ॥ एकरेचरितअनूठ ॥ सवभाईभयौसरूठ ॥ ॥ त्रजटावाक्यं ॥ ॥ सिद्धांतममसुनिसीत ॥ पुत्रीसुवचनप्रतीत ॥ सबहृदयतिहिंतववास ॥ भवरामतुवउरभास ॥ तिहिंरामउदरत्रिलोक ॥ वहअषिलथिरचरओक ॥ तिहिहनतनहिंउरताहि ॥ यहगूढभाविजुआहि ॥ विनुछेदउरवहवाम ॥ नहींमरैषलनिर्नाम ॥ इहिंहेतरामअनंत ॥ सरउरनहनतअसंत ॥ रघुवीरकरिरनरोष ॥ जवमहासाइकमोष ॥ प्रतिअंगदहिषलपाप ॥ अवधेसकाटहिंआप यहमहापीडापाय ॥ सठहोइविकलसुभाय ॥ चढिलोहछांकअचेत ॥ षलहोइजबरनषेत ॥ निसिचारतजितुवध्यान ॥ पुनिहोहिपरवसप्रान ॥ जवविसरितौंकहँजाइ ॥ रनमारिहैंरघुराइ ॥ भवकरहिंअवउरभेद॥छनहोइत्रभुवनछेद॥जुधहनतनहिंयहजानि ॥ प्रभुविश्वपालप्रमानि ॥यहभेदत्रजटिवताइ॥ भएसीयहिसात्विकभाइ ॥ भइरामविरहभयान ॥ सोनिसाकल्पसमान॥शशिरथहिनिंदतिसोइ ॥हाप्रातकबधौंहोइ॥ विधिकर्मदेषिदुरंत॥ इहांसीयाइच्छीयअंत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥कठिनकालवैदेहिके। विधिफुरकेअंगवाम॥ सगुनविचारतिआपशुभ।सहींमिलहिघनस्याम॥ कविरुवाच ॥ छंदपधरी ॥ इहांभयौप्राततमचरपुकार ॥ दुंदुभिनिसानवजिद्वाद्वार ॥ सुनिसौरजग्यौरावनअसाध ॥ विपरीतचरितकृतधर्मबाध ॥ पुनिदेषिकनकमंदिरप्रकार ॥ रिसहनतधरनिकरवारवार ॥ ॥ रावनउवाच ॥ ॥ रनषेतछुडायौमोहिराति ॥ धिक्कारतोहिकातरकुजाति ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रथसाजिबहुरिषललंकराइ ॥ अतिवेगहाकिरनभूमिआइ ॥ दलभालप्रबलमर्कटदुगाम ॥ मंडलमँहसानुजदेषिराम ॥ इहांदुष्टरचीमायादुरंत ॥ तिहिंछनभौअंतर्गततुरंत ॥ रनकर्योकपटमायाविथार ॥ पाषंडचंडदुस्सहप्रकार ॥ वेतालभूतषेचरभयान ॥ आकृतिअनेकतनआनआन ॥ विनुसंष्याजंतुपिसाचवीर ॥ स्वरविषमवचनवैकृतिसरीर ॥ करजोगानिलंबितनरकपाल ॥ विकरालरुधिरश्रवदिग्घबाल ॥ परिपूरपत्रकरिश्रोनपान ॥ गहगहेकंठविपरीतगान ॥ भनिमारमारवानीकुभास ॥ यहसब्दपूरिधरनीअकास ॥ षेचरीधसहिमुषवाइषान ॥ परित्रासरीछवानरपलान ॥ भटकौसजांहिजिहिंदिसाभागि ॥ आगेतहांदेषैजरतआगि ॥ कृतघ्टष्टरूपजोगनिकराल ॥ धासिषाँहिषाँहिबोलहिकुटाल ॥ रजवृष्टिकरहिंकचरुधिरराष ॥ भयकारगगनवानीकुभाष ॥ विकरालचरितकपिभालवीर ॥ यहदेषिभएअंतरअधीर ॥ पाषंडअवरइकरच्योपाप ॥ आकृतिअमानहनुमानआप ॥ इहिंरूपनिसाचरनिकटआइ ॥ लांगूललपेटेरामराइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मंदराचलमंथानहित । जनुआवृतअहिराज ॥ सोहतठाढेतिहिंसमय । रनमहँराघवराज ॥ ६ ॥ कह्यौविचार जुवसकरे । निग्राहिनिसचरनीच ॥ रामहिअबउचकाइरन । बोरौंसागरवीच ॥ ७ ॥ जान्यौराघवअसुरजव । मायातनहनुमान ॥ तिलतिलकाटीपूंछतब । वीरहन्यौउरवान ॥ ८ ॥ पुनिछलमायाअवधिपति । ज्वालामुषसरजारि ॥ कपटनसायौअसुरको । मारे दुष्टमुरारि ॥ ९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ करसिरकटिलंकेसनहिनतउमरतनिसाचर ॥ वारवारछेदेविचारिउपजेअँगआसुर ॥ रनक्रीडारघुनाथकरतअगजगभयकारी ॥ सुरसुरे

सउरसिद्धिभयौतहांत्रासजुभारी ॥ विषयादिकसेवतनरविसन, बढतकामजौवामवस ॥
आसुरीकपटमायाअगम, त्यौंत्यौंउपजतअंगतस ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सुर
निसचिंतजगलपतिजानें ॥ प्रभुरनषेलनिवर्तप्रमानें ॥ जनकीरामप्रतीक्षाजोई ॥ हसे
विभीषनसनमुषहोई ॥ ॥ विभीषनउवाच ॥ ॥ सुनहुमंत्रइकत्रिभुवनस्वामी ॥ जग
तचराचरअंतरजामी ॥ जानिविभीषनजुगकरजोरे ॥ मर्मदसाननसुनिप्रभुमोरे ॥ ना
भिकुंडलीअमृतनिरंतर ॥ याकोजीववसतताअंतर ॥ अमृतप्रभावनमरतअभागे ॥ लर
तकटेसिरअंबरलागे ॥ कटतबानधारामस्तककर ॥ अंगअसंष्यउपजज्यौंआसुर ॥ मा
रहुजीवमर्मतोमरिहै ॥ कंटकविविधचरितयहकरिहै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निसचर
हतनरामपनकीनें ॥ नानाअसगुनहोयनवीनें ॥ करहिंसब्दभवभूतकराला ॥ समयवि
नाषरश्वानशृगाला ॥ पर्वविनाउपरागप्रमानो ॥ अर्कसोमकँहँसंकटआनो ॥ दीसतरा
हकेतप्रतिमादिन ॥ उल्कापातगगनतारागन ॥ धरनिकंपदिगदाहसधूमर ॥ पुनिनिर्घा
तपातपुहवीपर ॥ प्रतिमाचलजलनयननमुक्कहिं ॥ कुथलअकालनषीषगकुक्कहिं ॥ वर्षा
केसरुधिररजबादर ॥ अतिविपरीतमरुतचलिआतुर ॥ महाशोकउरकंपमँदोदरि ॥ प्र
गटअकारनतनभूषनपरि ॥ इनहिंआनिनिमित्तअपारा ॥ वर्ततभूनभविविधविकारा ॥
॥ देवाऊचुः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अविलोकतअनिमित्तए । अमरसिद्धअकुलाय ॥ कह
तसुधौंव्हैहैकहा । हारघुनाथसहाय ॥ १० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कृतरघुवरभ्रूकुटी
कुटिल । रोषवदनचषरत्त ॥ अविलोकेराक्षसअषिल । प्रलयकालसांप्रत्त ॥ ११ ॥
॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ ऐंद्रवानरघुपतिकरआयौ ॥ पायसमयमातलिपहुंचायौ ॥ ब्रह्म
दत्तसुरपतिहिसकारन ॥ दुसहस्वसतविषधरसोदारुन ॥ महाप्रमानसरीरगगनमय ॥
तेजअर्कपावकमिलिफलतय ॥ मंदरमेरसगौरवमान्यौ ॥ पवनदुहूंदिसिसजबप्रमान्यौ
॥ लोकपालजिहिंपवनप्रकासित ॥ तनजाजुल्यअर्कअभ्यासित ॥ लोकलोकभयानिषिल
नसावन ॥ परमप्रसिद्धदिव्यसरपावन ॥ सोप्रभुवेदमंत्रविधिसाध्यौ ॥ निर्भयचापपनि
चलैनाध्यौ ॥ तहांरघुवीरऐंद्रसरतान्यो ॥ ऐंचिचापकर्णावधिआन्यौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
तानिसरासनमुक्तितहँ । अग्निबानअवधेस ॥ नाभिकुंडनिसिचारकैं । सोष्योअमृतअ
सेस ॥ ११ ॥ सरपावकजारयौसुधा । जीवजरयौतिहिंजोग ॥ त्रैलोकीकंटकतहां । राव
नमरयोअरोग ॥ १२ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जबहतप्रानदशाननजान्यौ ॥ तहां
रघुनाथवहैसरतान्यो ॥ छोड्यौबानभयानकतिहिंछन ॥ दुष्टमूंडकरकाटिदसानन ॥ पर
मप्रसिद्धबानजयपावत ॥ असुरविनासिअंगफिरिआवत ॥ करसिरकटेअसेषजुकंटक ॥
असहरुंडधावतज्यौंअंतक ॥ धरउरचाढिसुकपिनिधकावत ॥ परिऊपरमर्दतसुषपावत ॥
मूंडकटेतउदुष्टनमरई ॥ कंटकचरितअनेकसुकरई ॥ रुंडमांझरवहोतइहैरट ॥ मारिमा
रिधरिधरिनरमर्कट ॥ कहांरामसुग्रीवविभीषन ॥ प्रबलप्रचारतफिरतकीयेपन ॥ दुष्टच
रित्रदुसहयहदेष्यौ ॥ अमरसिद्धअतिभयअरवेष्यौ ॥ झपटिकबंधकटकझकझोलत ॥
डरततहांइंद्रासनडोलत ॥ ॥ इंद्रादिदेवाऊचुः ॥ ॥ सोचअमरगनप्रभुहिसुनावत ॥

षितिपतिकहापिसाचषिलावत ॥ नाथहमारौत्रासनिवारौ ॥ महादुष्टअवतौरनमारौ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ सभयसुरेसजबैप्रभुजान्यौ ॥ अर्धचंद्रमुषतबसरतान्यौ ॥ कुंडल
धनुषरामतहांकीनौ ॥ दिव्यवानरावनतनदीनौ ॥ मध्यलग्यौसासिबानमहाबल ॥ षंड
उभयव्हैपर्यौमहाषल ॥ पर्‌यौनिहाउपरतषलव्याकुल ॥ तहांधूजिधसक्यौधरनीतल ॥
डिगतकुलाचलनभडिगडोलत ॥ विकलचराचरहाहाबोलत ॥ इहांकपिराजरीछपतिआ
ए ॥ प्रभुप्रतापसेवाफलपाए ॥ मच्यौलंकपतिनाचतमर्कट ॥ भयौहर्षअतिविहसिभाल
भट ॥ धाएकपिषलसीसकरनिधरि ॥ डारेलैआंगनमंदोदरि ॥ पेषित्रियनितहांविस्मय
पायौ ॥ दैवचरितयहविषमदिषायौ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इहाँरावनवपुआनिप्रभास
तअर्कप्रकासी ॥ सोदेषतदिविदेवप्रगटअतिदैवप्रभासी ॥ जोतिराममहँजाइपरम
सायुजगतिपाई ॥ भावएकइहांभयौजानिकछुभेदनजाई ॥ अद्भुतकृपाकारनअतुल,
तबसोचतभवभूतलहँ ॥ संसृतिविनासरावनअसुर, मेलिलयौप्रभुआपमहँ ॥
॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ देवनिहरषिदुंदुभीदीनी ॥ नभवर्षांकुसुमनकीकीनी ॥ विबुधहोत
जयजयनभवानी ॥ पूरिरहीब्रह्माण्डप्रमानी॥सुरसंतुष्टभयेमुनिसिद्धा ॥ प्रभुकहिचारनसुज
सप्रसिद्धा ॥ गहगहकिन्नरगंधर्वगावहिं ॥ सुरकन्यानिर्तहिंसुखपावहिं ॥ ॥इंद्रादिदेवा
ऊचुः ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ तहांकहतसुरगनसिद्ध ॥ प्रभुसुनहुप्रणतिप्रसिद्ध ॥ यह
दुसहषलदुस्साधि ॥ प्रतिदिवसरचतउपाधि ॥ दुर्मतिदुशतमदुष्ट ॥ पुनिपापकर्मसपु
ष्ट ॥ सुरसाधुसात्विकसिद्ध ॥ प्रभुकृपापात्रप्रसिद्ध ॥ भवभ्रमतहमजुसभीत ॥ तेसहतदुष
अनचीत ॥ दससीसयहदुर्बोध ॥ कृतघातकुटिलसक्रोध ॥ द्विजहतकृतामसदेह ॥ हठि
लगतपरत्रीयनेह ॥ कंटकतूलोककुचेत ॥ संसारद्वेषसहेत ॥ भवभूतदूषतभूप ॥ सोभयौ
तबसारूप ॥ मिलिजोतिजोतिसमाइ ॥ ज्यौंदीपदीपहिजाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इ
हिंसमयनारदआइ ॥ सोकहतसुरनिसुनाइ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ यहदेवकर्मदुरं
त ॥ तुमसोनजान्यौतंत ॥ सबदेवतुमहुसुजान ॥ निजसुनहुनिगमानिदान ॥ दससीसकी
नौदोष ॥ रघुनाथसौंचढिरोष ॥ तबबढ्यौवयरविरोध ॥ नहिसुन्यौपतितप्रबोध ॥ भयत
थाद्वेषप्रभाव ॥ रहिहृदयकोशलराव ॥ तिहिंराममयभयभूत ॥ अविलोकिछबिअद्भूत ॥
जागर्तस्वप्नसुभाइ ॥ रहिचित्तराघवराइ ॥ विश्वेसवयरविचारि ॥ मिलिरह्योचित्तमुरारि॥
रनहत्यौसोरघुवीर ॥ संगरहेपापसरीर ॥ अविनासजोतिअनंत ॥ तननाससूचतसंत ॥
महजोतिजोतिसमाइ ॥ निस्सेषकर्मनसाइ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पापरत्तपरदारपतितपर
वित्तपहारी॥भयसनेहकिहुभायधरैउरसारंगधारी ॥ सोव्हैअंतरसुद्धपापशतजन्मपहारैं॥
साधुयहैसिद्धांतउचितमतवेदउचारै ॥ सुरसिद्धसाषिनरहरसुकवि, निंदितकर्मनसाइहैं ॥
पुहपकविमानवरषतपुहप, सुपैपरमपदपाइहैं ॥ १ ॥ ॥ कविरुउवाच ॥ ॥ मिलि
संयोगमैथिलीयमिल्यौअविजोगमंदोदरि ॥ इकहारश्रृंगारइकहारावलिउत्तरि ॥ इकवल
यकरवतीयइकवलयावलिफुट्टीय ॥ इकहिरतिअभिलाषइकअभिलाषअहुट्टीय ॥ भरटय्यौ
भूमित्रिभुवनअभय,भारअसुरकुलकँहँभयौ॥ सुरसिद्धहर्षनरहरसुकवि, हठिजुरामरावनह्ह

यो ॥ २ ॥ शिरजुशंभुकहँनएअवरसुररहेअनामित ॥ काटिकाटिनिजकरनिहवनकीन विरंचिहित ॥ अग्निकुंडमहँआपजथामंगलफलजारे ॥ वर्षसहसदसतदविधानअतिकष्ट उधारे ॥ सुरराजअभयनरहरसुकवि, समहरतृतअमोघसर ॥ पृथ्वीप्रसिद्धपौलस्तिके, कटेसुसिररघुनाथकर ॥ ३ ॥ नरआकृतित्रैलोकनाथकौशल्यानंदन ॥ वेदप्रणितपितुव चनविषमसेयोदंडकवन ॥ सेतबांधिमर्कटसमूहलंकागढलग्गीय ॥ सुरनिसोचग्रहबंध मोचअवनीभरभग्गीय ॥ सुरराजकाजनरहरसुकवि, भुवनतीनउच्छवभये ॥ देवाधिदे वदशशीसके, दससिरदसदिसिबलिदये ॥ ४ ॥ जिहिंडरसचीउसाससरितआकासजुसु क्कीय ॥ जिहिंडरडारिदिगदेवमहासुषनिद्रामुक्कीय ॥ जिहिंडरत्रयपुरतरुनिरहतसेवाढिगढु क्कीय ॥ जिहिंडरमुनिगनमषविधानचिततालीचुक्कीय ॥ जिहिंडरनिडोलिब्रंह्माडडिगि, अमरवृंदमदउत्तरे ॥ सोइरावनसोवतसमरसुष, भूमिसेजमुषरजभरे ॥ ५ ॥ भएअमर आनंदअमरपुरबजेबधाए ॥ भएजज्ञआरंभभएविप्रनिमनभाए ॥ भयोरघुकुलसोभाग महीभरटारिअप्रमानो ॥ भौराक्षसकुलभंगभयौगढलंकभयानो ॥ विस्तारधर्मभौवेदवि धि, अरुनरहरकविउद्धरन ॥ करभयौवानरनरामकै, रामजैतरावनमरन ॥ ६ ॥ पारि पुकारग्रहग्रहअपारआतंकलंकअरि ॥ परेसमरराक्षसप्रचंडआतमबलउद्धरि ॥ मरेम त्तमातंगपरेयहपुंजसपष्षर ॥ परेभालभटअभयवीररनविजयीवानर ॥ पुरतीनिचोटनि सानपरि, सोकदुष्टउरसंचरीय ॥ काकुस्थविजयनरहरसुकवि, पानिरामरावनपरीय ॥ ७ ॥

॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ अधमव्याधउधार्‌यौतैसोहीकबंधतार्‌यौअमरजैजैउचार्‌यौवि जैरघुवरकौ ॥ जबतौनएतीजानीआगैजगदंबाआनीधूजैधरानभजातुधानीउरधरकौ ॥ आगैंआगैंआपआएसेन्याकपिलैसहाएवेदनिबताएज्यौंभरोसोभुजवरकौ ॥ प्रभुताहिभूषौ पायौताकतहुतौवितायौकालहिबतायौपंथरावनकेघरकौ ॥ १ ॥ कविरुवाच ॥ छंदाद्विअ क्षरी ॥ इहांभागलंकामहँआए ॥ सबनिदसाननमरनसुनाए ॥ रावनमर्‌यौसुन्यौपटरानी अवनिपरीमूर्छितअकुलानी ॥ इहांग्रहग्रहतेजुवतीआई ॥ अतिअचेतमयसुताउठाई ॥ निकरनिकरआईपुरनारी ॥ पुनिरोवतिअतिदुषितपुकारी ॥ राजलोकआयौतहांरोवत ॥ स ज्यारनरावनजहँसोवत ॥ पातिगतिदेषित्रियाअकुलावति ॥ सोकसमुद्रहिपारनपावति ॥

॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ रोदतिकहतिमंदोदरिरानी ॥ विगलितकेसविकलविलषानी ॥ सिर उरताडतिमनमनसोचति ॥ मुषनिस्वासनयनजलमोचति ॥ कंतमहाबलयहगतिकैसी ॥ अबलौंहोतनजानीऐसी ॥ अर्कनिशाकरतुवतपआगे ॥ लोकविलोकिहीनसीलागे ॥ द सदिगपालद्वारतवडोलत ॥ बाहिरठाढेउच्चनबोलत ॥ सुरगनकरतजथाक्रमसेवा ॥ दी नसत्रासरहेभूदेवा ॥ अमरसमरनहिंसनमुषआवत ॥ प्रियतौंहिआयौसुनतपलावत ॥ कालजीतिजिहिंअपवसकीनो ॥ दुसहदाहत्रैलोकनिदीनो ॥ कारागृहसेवतग्रहकातर ॥ भु जगकमठनहिकोलसहतभर ॥ धसकतिकंपितअघभरधरनी ॥ करीसकलमदबससोक रनी ॥ सोप्रभुतुमधरनीतलसोवत ॥ जाकीकृपादृष्टिजगजोवत ॥ पतिअदृष्टयहनीतिपु कारा ॥ रहानकुलकोउरोवनहारा ॥ रघुपतिवयरउचितयहरावन ॥ पिंडघसीटतजंतुअ

पावन ॥ श्वानशृगालसिवामिलिसंगहि ॥ ऐंचतषातअघातसुअंगहि ॥ वचननीतिजे कहेविभीषन ॥ षारेलगेतुमहिकुलदूषन ॥ स्वयंब्रह्मभवभूतसपेष्यौ ॥ देवसुतैंमानुषकरि देष्यौ ॥ प्रियताकौयहफलतुमपायौ ॥ गढसमेतकुलमूलगमायौ ॥ अतिहिगर्वयहआ डोआयौ ॥ पुनिगढराजविभीषनपायौ ॥ सठपतिएकहिंकाजैसीता ॥ विधवाकरीइतीव रवनिता ॥ वामाआनीचोरिविरानी ॥ रामकरीअपनीसबरानी ॥ इनकेभूषनविविधउ तारे ॥ सीताअंगसिंगारसँवारे ॥ प्रिययहअलंकारफलपायौ ॥ ऋषिपुलस्तिकौवंसन सायौ ॥ षनमहँसतसनमंदिरषोए ॥ सोतुमसमरभूमिसुषसोए ॥ ब्रह्मआदिशिवजिहिं सिरनावत ॥ पतितभजततेऊगतिपावत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पापउपासेजन्मपति । इहां कोकहैगनाइ । तोहूदीनौपरमपद । ऐसेराघवराइ ॥ १ ॥ सुनतसुरासुररामसम । हैद यालकोउनाहीं ॥ जोगतिदुर्लभजोगिने । मारिदईछनमाहीं ॥ २ ॥ सबतुमकीनीराम सौं । सोजानीसंसार ॥ उनतुमसौंऐसीकरी । ऐसेरामउदार ॥ ३ ॥ ॥ भावीप्रबलता वर्णन ॥ कवित्त ॥ ॥ गढतृकूटपरिषापयोधिस्वामीदसकंधर ॥ भ्रातकुंभघननादपुत्रवि त्तेसवित्तघर ॥ सुभटबलीराक्षससमूहआज्ञाआधीनै ॥ दाहित्रिलोकअहिअसुरदेवकृतदु स्करकीनै ॥ संजीवनिमुषविद्यासुगम, शुक्रगुरूसाधतसमो ॥ हाहासुकालमहिमाअकल भवसोइरावननष्टभो ॥ ८ ॥ जिहिकैलाससंभुपानिधरिइकाउथाप्यौ ॥ जिहिंकरकसक्क हरनप्रचँडकुलअमरजुकंप्यौ ॥ जिहिंविसेसभुजवीससरववसकरेसुरासुर ॥ भयजिहिभा मिनिगर्भप्रगटहैअवतितिहूंपुर ॥ देषहुसुतपीमानुषदुभुज, जगजसलीनौमारिजिहिं ॥ विधिजाकीयहकरनीविषम, तातेंदैवनमामितिहिं ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहांसीताअ कलंककुल । वसराक्षसअपवाद ॥ लाभजुकर्मविपाककौ । पुराअदृष्टप्रसाद ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जहँमिगीतसंगीततहँमिसुनियतहाहासुर ॥ जहाँविलाससुषवासपरियपि इनलंकापुर ॥ जहांसुषदमारुतसुगंधवसमांसजुवासीय ॥ सुभमयूरकपिशब्दप्रगटतहां गृद्धप्रकासीय ॥ रनमरतएकलंकेसके, पुरसुभयानकपिष्षयो ॥ दुषरोइकहतिमंदोदरी, हाभवेसयहकाभयो ॥ १० ॥ दोहा ॥ ॥ इहिंछनरावनअस्थयौ । जगतडरतभयजा हिं ॥ अर्कनतपतिरसोइअब । यहकछुपौरुषआहि ॥ ५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ छंदद्वि अक्षरी ॥ ॥ रावनजहांपस्यौरनअंगन ॥ विकलचित्ततहांआइविभीषन ॥ देषीमंदोद रीदुषारी ॥ रोवतिहीबहुभांतिनिवारी ॥ इहांविभीषनप्रभुपहँआए ॥ रामविलोकिनयन सीयराए ॥ रोवतिसुनिमंदोदरिरानी ॥ अवधेसुरकरुनाउरआनी ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ रावनभ्रातरामसमझायौ ॥ जंतुउपजिसोइअंतनसायौ ॥ निहँचैताहिजतनकछुना हीं ॥ जानहारभवभूतसुजाहीं ॥ दाहविभीषनभ्रातहिदीजे ॥ कुलअपनैआचारसुकीजे छनछनक्रियाकालहैछीजे ॥ दाहजुक्तजलअंजुलिदीजे ॥ जसभाजनलक्ष्मनतुमजावहु ॥ शोकविकलरानीसमझावहु ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांविभीषनलक्ष्मनआए ॥ महासुगं धजुकाठमँगाए ॥ देहप्रमानरच्यौरनमंदिर ॥ सौरभतेलसींचघृतसुंदर ॥ रावनअंगअं गपरिन्यारे ॥ दिसिदिसिबीनिचितामँहडारे ॥ हठिमंदोदरिमोहिजरावहु ॥ छीजतसम

यनसंगछिडावहु ॥ सोलक्ष्मनबहुविधिसमझाई ॥ अबतौतुमहिलगीठकुराई ॥ सबहीरा
जलोकसमझायो ॥ तत्वबोधजोवेदबतायो ॥ ॥ मंदोदरीवाक्यं ॥ ॥ समझिकह्योमं
दोदरिरानी ॥ उरतबविरहविथाअधिकानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दुषजुतवचनमंदोदरी ।
रामहिकह्योरिसाइ ॥ याकहँरोवनहारकोउ । राष्यौनहिंरघुराइ ॥ ६ ॥ पुत्रभतीजाभ्रातपैं
। रावनकुलमहँकोइ ॥ रघुवरएकोराषते । रहतोजौदुषरोइ ॥ ७ ॥ ॥ श्रीरामउवाच
॥ कोऊगावहुकंठकछु ॥ नहिंजामहँहरिनाम ॥ सोरावनकहँरोइवो ॥ मानहुसहित
विराम ॥ ८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांमंदोदरिमंदिरआई ॥
सालनएनहिंहृदयसमाई ॥ पीटहिंउरसिरत्रियालंकपुर ॥ सुनियतजहांतहांरोदनसुर ॥
कपिनिअसेषहतेरनराक्षस ॥ वनितातिनहिसंभारतिदुषवस ॥ हाहारवसुनिसुनिदुषहो
ए ॥ जीवकहाजडजंगमरोए ॥ पुनिरावनतनअनलप्रजारे ॥ सोधिजथाविधिअंगसका
रे ॥ देसकालकुलधर्मजुदेषे ॥ विधिजुतकीनीक्रियाविशेषे ॥ भ्रातपितानहिंपुत्रसंभारे ॥
एकराजलोभहिअनुसारे ॥ जद्यपिराजनकाहूजानत ॥ पैकछुदेहसुभावप्रमानत ॥ भयो
विभीषनशोकमगनमन ॥ अग्रजभ्रातादुष्टअतिअसहन ॥ तहाँलक्ष्मनबहुविधसमझा
वत ॥ ताकहँनीतिधर्मदरसावत ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ कालकवलहैजंतुकलेव
र ॥ होतमरतभवभूतमहाभर ॥ जलतरंगज्यौंबढतवातवस ॥ त्यौंभवभूतविलातउप
जितस ॥ जाकेकाजसषातुमसोचत ॥ मानतदुषनैननिजलमोचत ॥ कोयहहोकोधौं
तुमयाके ॥ जीवसहतदुषकारनजाके ॥ ॥आगेअबबहुत्योइहांआई ॥ इनसौंतुमसौं
कहासगाई ॥ कईवारछांडेतुमइनकहँ ॥ तुमएतजेअनेकवारतहँ ॥ सरितनावज्यौंकाठ
सगाई ॥ यौंसंबंधमिलतसबआई ॥ वातविधूतकठिनज्योंरजकन ॥ विचरतभवसं
जोगविजोगन ॥ यौंहीउपजनाससंगमअर ॥ कर्मकालवसभ्रमतकलेवर ॥ देहदेह
संभावितदेष्यौ ॥ जैसेंबीजहिबीजविशेष्यौ ॥ देहबुद्धितहांसबैसगाई ॥ भामिनिपुत्रपिता
समभाई ॥ देहदेहसगपनदरसावै ॥ विनसैंतहांकछूनवसावै ॥ देहविनासगयोजबदेही ॥
तहांसंबंधनकोउसनेही ॥ समझहुमिथ्यादेहसगाई ॥ भवतौप्रानभतीजनभाई ॥ प्रा
नीलगिसंबंधप्रमान्यो ॥ सोकितगयोनकाहूजान्यो ॥ देहबुद्धितजिहटहिनठानहु ॥ पूरन
देहीबुद्धिप्रमानहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सबविधिज्ञानलषनसमझाए ॥ इहांतबउठे
जलासयआए ॥ दुषतजिभ्राततिलांजजुलिदीनी ॥ क्रियाविभीषनकुलक्रमकीनी ॥ इहां
लक्ष्मनसंगहिलैआयो॥सोकविभीषनदुष्षनसायो ॥ ॥ विभीषनउवाच॥ ॥ वंदिचर
नतहांकह्योविभीषन ॥ देवदीनकेविपतिनिकंदन ॥ नाथअभयपंजरसरनाई ॥ सदाद
यानिधिभगतसहाई ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वीरलषनसुग्रीववोलि
अंगदनलनीलहि ॥ जांबुवंतहनुमंतसमाझिनिर्भयगुनसीलहि ॥ दीनबंधुदेवाधिदेववाचा
प्रतिपालन ॥ सरनविजयपंजरसुभावषलमूलउषालन ॥ अवधेसदईआज्ञाइनहि, जाहु
दुर्गनृपग्रेहजहां ॥ क्रमजुक्तराजदशशीसको, तिलकबिभीषनदेहुतहां ॥ १ ॥ मोहिउचि
तनहिनगरमांझआवनइहिंअवसर ॥ भ्रातसषाअरुसुभटसबैतुमदेहधरैसुर ॥ मंदोदरि

मंत्रीजुमान्यसवहीकेसंम्मत ॥ देशकोशदलदुर्गसकलराजश्रीसंगत ॥ मुहिमिल्यौविभी षनवहिसमय, पेषिकह्यौमैलंकपति ॥ सुभलगनआजनरहरसुकवि, सुपेवचनममहोइ सांति ॥ २ ॥ लंकआनिलंकेसादिव्यसिंघासनदीनौ ॥ रामअनुजकपिराजकपिनिमिलि तिलकजुकीनौ ॥ वेदप्रनीतविसेषसाजिअभिषेकसकारन ॥ बजिनिसानमंगलविधानघु मरतमानहुघन ॥ पर्जागतसंपतिराजपद, तिहिंपायौगढलंकतहँ ॥ अभिलाषविभीषन मिलिअषिल, पुनिआएरघुनाथपहँ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्यौराम हनुमंतकहँ । जहँसीतातहँजाइ ॥ कुसलहमारीउनहिंकहि ॥ उनकीहमहिसुनाइ ॥ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मारुतिकूद्यौगगनमग । इहांअसोकवनआइ ॥ सीयहिसुना एविजयसुष ॥ सियाकुसलरघुराइ ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ षलषोयौनिर्मूलषनि । भवटास्यौभुवभार ॥ अबसीतहिअवधेसबर । देहुदरसउदार ॥ ॥ अथसीताश्रीराम दरसनपुनरागमनं ॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कहिहनुमंतजुग लजोरेकर ॥ सुनियैकछुविनतीअवधेसुर ॥ जिहिंहितकर्मदुरंतजुकीनै ॥ लोगप्रगटरन जयव्रतलीनै ॥ जुद्धनब्रह्मपनातीजोयौ ॥ षलदससीसवंसषनिषोयौ ॥ सोइफलउदयभ यौअबस्वामी ॥ जीवसकलतुमअंतरजामी ॥ सबविधिसमरथरामसनेही ॥ वांछितचरन दरसवैदेही ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुनिवचनरामसुजान ॥ हितक हेजेहनुमान ॥ सुषउपजिरामसुभाउ ॥ भयौतहांसात्विकभाउ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ ॥ ॥ तहांकह्यौप्रभुहनुमंत ॥ सीयवेगिलावहुसंत ॥ जुवराजतुममिलिजाहु ॥ यहका जआजउछाहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सजिलंकपतिदयौसंग ॥ उठिचलेवीरअभंग ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांअसोकवनमारुतिआए ॥ छनतिहिंनयनरुदनजलछाए कपिगतिदेषिजानकीकेरी ॥ हियचढिकंपजातिनहिंहेरी ॥ विरहमन्नतनवसनमलीना ॥ द्द गजलधारवचनमुषदीना ॥ वेनीएकअधोमुषवामा ॥ सोचतिस्वासविमोचतिस्यामा ॥ रहतिससोकराक्षसनिघेरी ॥ हरिनीमनहुवधिकत्रियहेरी ॥ सरमातृजटासाधसुलच्छन ॥ बोलितिनहियौकह्यौविभीषन ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ मिलिसुषसीयहिकरहुतनम ज्जन ॥ अंगसुरंगवसनद्दगअंजन ॥ वानकउचितसिंगारबनाहु ॥ चित्तरुचिरसौगंधबढा वहु ॥ अतिबहुमूल्यवस्तुसबआनहु ॥ पाइनिधरिउरभक्तिप्रमानहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भूषनवसनबनाएभामिनि ॥ देहधरैमनुठाढीदामिनि ॥ मिलिअद्भुतसोभासुकुमारी ॥ निरषितोरितृननिसचरनारी ॥ याहीसमयसुषासनआनी ॥ भइआरूढरामपटरानी ॥ तृकुटद्वारतेनिकसीततछन ॥ पटहिलपेटीसिविकापूरन ॥ असुरत्रियाकौतुकअनुरागी ॥ लाषनिधावतपाछैलागी ॥ धरैंचमरकरमारुतिढारत ॥ अंगदजयजयजननिउचारत ॥ वेत्रपानिलंकेसबिभीषखन ॥ आगैचलतपयादौआपुन ॥ निकटआनिकपिभालनिहार त ॥ निवुरकंचुकीतिनहिविडारत ॥ इहांहनुमंतहिरामबलायौ ॥ अंतर्भाविकमंत्रबतायौ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ जोहमकह्यौप्रमानसुजानहु ॥ अबसीतहिचरनचरआनहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भावराममनलष्यौअभीता ॥ सिविकाछांडिचरनचलिसीता ॥

देषतलोकनवदनदुराई ॥ इहांसीतारघुपतिपहँआई ॥ देवलषनकहँआज्ञादीनी ॥ काठ बहुलशालातहांकीनी ॥ इहांसोइसालप्रजारीआगी ॥ ज्वालाअनलअकासहिलागी ॥ ॥ अथसीतादिव्यस्वरूपअग्निसाक्षीकरणं ॥ ॥ वैदेहीवाक्यं ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ चितहुकर्ममनवचनस्वप्ननिद्राप्रबोधसँग ॥ बिनुराघवरसभावअन्यअवलोकपरसअँग ॥ ततोदहौयहदेहप्रगटसुरमुषतुमपावन ॥ कर्मसाक्षिउत्तमनिकृष्टसंसयजुनसावन ॥ देष तसोआसुरकीसदल. अनगसुतासतउद्धर्यो ॥ मनमोदविकासितकमलमुष, अनलप्रवे सनआचर्यो ॥ १ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कीनेवंदनपरिक्रमण । अनलहिसी ताआप ॥ आननरविद्वादसउदित । मनबढिहर्षअमाप ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ प्रगटज्वालसालाजुप्रजारी ॥ कीयोप्रवेसविदेहकुमारी ॥ ऐसेंकछुइच्छाअवधेसुर ॥ सोपाव तनहिभेदसुरासु ॥ हाहाकारलोकत्रयहोई । कहतसुनतसमझतनहिकोई ॥ त्राहिरामभवभूत पुकारत ॥ असहनचरितदेषिभएआरत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देवअसुरऋषिनरनिदिय ॥ प्रत्ययरामप्रकास ॥ जानिसमयसोजानकी । बाढ्योउरविश्वास ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ प्रलयकालसीप्रबलमनहुजागीज्वालानल ॥ परवसपरिलोकापवादलगिचित्तभावषल ॥ व पुछायामायाविलाससीयरूपसिधार्यो ॥ लोकविलोकतसत्यलागिज्वालानलजार्यो ॥ पहि लैंसीयपावकमहँप्रछन, हठिराषीरावनहयो ॥ कारुण्यरामकारनकरन, देवदुसहप्रत्ययद यो ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ विकस्योमुषारविंदअंगअंगसोभाअतिमंगलमैंकीनोमा नोपीहरप्रवेससो ॥ भावीसोंनबलकछुकीयोचाहैसोईकरैसोमैसमोदेषिसिरधुनतसुरेससो ॥ हाहारवतीनलोकव्हैरह्योवसातनाहींउपज्योचराचरकेउरमैंअंदेससो ॥ रामरूपसीताउरअं तरअभीताअतिलाग्योनबसनबसपावककोलेससो ॥ १ ॥ ॥ राक्षसीवाक्यं ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ समयविलोकिनिसाचरी । नरपतिकरतअनीति ॥ करमीडतअतिसो चउर । भईचकितभयभीति ॥ ३ ॥ कहतिपरसपरराक्षसी । पायोसत्यप्रमान ॥ भईनव्हैहैत्रयभुवन । सीतासतीसमान ॥ ४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ धर्मरूपद्विजदेहइहाँवैस्वानरआयो ॥ सीतापुत्रीसंगविहितउरहर्षबढायो ॥ पयसागरलक्ष्मी पुनीतअरपीनारायन ॥ यौंसीतारघुपतिहिंआनिदियप्रेमपरायन ॥ करनामसंगरघुनाथ कै, भ्राजतअतिछविभामिनी ॥ नवनीलजलदमिलिनेहनव, देहवानसीदामिनी ॥ ३ ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ भयोहोविजोगसीताराममनभावनकोभवकैसैंटरैजोकरमरेषाभाव नी ॥ अनलमैराष्योदेहपाइपतिआज्ञाऐसीछायाप्रतिबिंबकीनीपंचवटीछावनी ॥ काठग्रेह पैठिजारिछायातनछारकीनौसुद्धव्हैनिकसीसोसतिनिसमझावनी ॥ पावककेसीथआनिष्या रेकोदरसपायौपिताकेसेंग्रेहतेंपधारीपुत्रिपावनी ॥ २ ॥ ॥ अग्निवाक्यं ॥ कवित्त ॥ ॥ दंडकवनरघुनाथदेवयहइहांउपजाई ॥ साधसतीसियसमझिप्रछनममग्रेहपठाई ॥ कर्यो समरजयकाजमहाराक्षसषलमार्यो ॥ कंटकपतितकुजोनिअंतसोइदुष्टउधार्यो ॥ सबभाँइ करनकारनसमथ, देवविश्वसुषदीजियै ॥ जानकीजोगमायाअजय, कृपाअनुग्रहकीजियै ॥ ४ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आज्ञादीनीरामयह । मातलिदिव्यवि

मान ॥ पहुंचावहुसुरराजपहँ । पुनिकहिकाजप्रमान ॥ ५ ॥ लैरथसारथिफिरिचल्यौ । इंद्रलोकतबआइ ॥ रामविजयरावनमरन । सबैकहेसमझाइ ॥ ६ ॥ ॥ मातलिरुवाच ॥ कामारतवामीकुटिल । दुष्टविश्वरतद्रोह ॥ सोरावननिजरोषसठ ॥ छनमहँगयौसछोह ॥ ७ ॥ सुरदोषीहठगर्वसंग । सदाकुमारगसाधि ॥ नासभयौदशशिरनिलज । अपनैकर्म उपाधि ॥ ८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ देवसबैदशकंधरकेडर ॥ सकेनआइनिकटलगिसमहर ॥ सुनिषलमर्‍यौविमानसजाए ॥ इंद्रकुबेरवरुणयमआए ॥ ब्रह्मरुद्रमुनिसिद्धसचारन ॥ संध्याकिन्नरपितरसकारन ॥ ऋषिगंधर्वरुनागदिगेसर ॥ मिलिइत्यादिकअषिलचराचर ॥ सबैआइसुरत्रियासयानी ॥ महाहर्षसीताहितमानी ॥ अमरकोटितेतीसजुआये ॥ भ्राजतगगनविमानबिछाये ॥ हसतपरसपरकरतकुलाहल ॥ षेचरमर्‍यौदसानसोषल ॥ होइआनंदविबुधगनहर्षहि ॥ वारवारनभपुहपनिवरषहि ॥ विविधवरनरथवसनबनाए ॥ आगमऋतुजानहुघनआए ॥ सुरकन्यानभनाटकसाजत॥ विविधविधानतानसुरवाजत ॥ विहसतितालमृदंगबजावहि ॥ गहगहकंठरामगुनगावहि ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ तुमआदिब्रह्मअनादिअद्भुतएकआभासिनं ॥ अजअकलअगुनअरूपअनजितअनघतअविनासिनं ॥ कल्याणरूपत्रिलोककर्ता ब्रह्मतुमविश्वंभरे ॥ प्रभुजगतरक्षककरनपोषनविष्णुतुमलक्ष्मीवरे ॥ भवनासकारनरौद्रभावनरुद्रतुमहीराघवे ॥ सुरथानलीनेछीनइनसबमहाबलषलमाधवे ॥ शुभशक्तिसदाअमोघस्वामीसुरसहायसदादयं ॥ संग्राममार्‍यौसकुलदससिरअसुरईसअसाधयं ॥ अबदेवहमस्वस्थानपाएप्रभुप्रसादसपावनं ॥ तुमआदिमध्यजुअंतहूंलौंभक्तिहितभवभावनं ॥ ॥ इंद्रोवाच ॥ ॥ छंदभुजंगी ॥ ॥ भजेरामइंदीवरंनीलआभं ॥ भजेअंतकेनिर्जितंपद्मनाभं ॥ महापातकंकाननंदाहनामं ॥ जयोरुद्रब्रह्मस्थितंरूपरामं ॥ भवाभावसंभावनंभूपभूपं ॥ अकामंअठामंअनामंअरूपं ॥ नराकारदेहंसुरंदुष्षनासं ॥ परानंदपापौघहंताप्रकासं ॥ कपीसेसमित्रंदयारूपदेवं ॥ विदेहेसुताभोग्यभाजंसभेवं ॥ स्वयंब्रह्मत्वंरामवेदेसहाया ॥ सियावामभागेमहाजोगमाया ॥ अहंकारमद्याभिमत्तंमहीसं ॥ अनाचारचारीबलीबाहुबीसं ॥ त्वयाक्रोधदीपानलेभौपतंगं ॥ दह्यौदेवदोषीसुतंवृंदसंगं ॥ निभंनीरदंनीलसोभातिस्यामं ॥ छटापीतवासंकलाकोटिकामं ॥ जटाजूटसीसंवयंवन्यवासं ॥ दृगंअंतरंतंमुषेचारुहासं ॥ करंवामकोदंडनामंसकामं ॥ भुजंदक्षणंवानसोभासभ्रामं ॥ कटीसिंघतूनीरवद्धंसकोपं ॥ उरंसुंदरंतुलसिकामालओपं ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ तुममोहसघनकेविषमवात ॥ वनसंसयकेपावकविष्यात ॥ भ्रमअंधकारकेरविउदार ॥ विषयादिकगजवनषयतुषार ॥ मनमथमतंगकेसिंघमान ॥ भववारिधिमंदरगिरिप्रमान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवदेषौंनृपतातिलक । अवधिपुरीप्रभुआइ ॥ शंभुकह्यौयहरामसौं । दिनसुधन्यसुषदाइ ॥ ९ ॥ अबनहिउचितविलंबइहां । राजराजरघुराज ॥ रनजयपायौमारिरिपु । करेसिद्धसुरकाज ॥ १० ॥ सुरमुनिचारनसिद्धसब । जथाभावमतिजास ॥ कलहजैतरघुनाथको । कीनौकीर्तिप्रकास ॥ ११ ॥ कविरुवाच ॥

॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांपितरदशरथनृपआए ॥ पितुआगमनरामसुषपाए ॥
करपरिक्रमनदंडवतकीनैं ॥ आपराममभएप्रेमअधीनैं ॥ लैदशरथसुतकंठलगाए ॥ बिछु
रेमनहुप्रानसेपाए ॥ भूपविलोकिनयनजलभारिभारि ॥ अतिआनंदरोमतनउभ्भारि ॥ उभ
यओरआनंदअमाए ॥ जोसुषसुकविकवनकहिजाए ॥ विगतभारभुवसमयविचार्यौ ॥
इहांदशरथनृपवचनउचार्यौ ॥ ॥ राजादशरथउवाच ॥ ॥ सत्यवतीअकलंकितसी
ता ॥ पावनपरमप्रसिद्धपुनीता ॥ आदिमध्यअवसानअरेही ॥ विश्वविष्यातशुद्धवैदेही ॥
रामकृपादृगसियहिंनिहारो ॥ उचितधर्महितवितअनुसारो ॥ ॥ कविरुवाच ॥
॥ पूजेरामपितासुषपाए ॥ इहांदशरथवैकुंठसिधाए ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥
इंद्रवचनकरजोरिउचारे ॥ मुहिकछुआज्ञादेहुमुरारे ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ रामक
ह्यौतबसुनिसुरराजा ॥ करियैएहुउचितममकाजा ॥ विहितयहैअबअमृतमँगावहु ॥ जूझे
रनतिनकपिनिजिवावहु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इंद्रअमृतवरषाअनुसारी ॥ वानरमृत
कजियेअविकारी ॥ जथासबैसोवतसेजागे ॥ लीलारामचरनउठिलागे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
सुरसमूहसुरराजसम । वाजतविजयविशेष ॥ अपनैअपनेलोकइहां ॥ कीनैंप्रगटप्रवेस
॥ १२ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ रघुनाथसुभटनिहार ॥ इहांकृपावचनउ
चार ॥ अवलोकलक्ष्मनवीर ॥ कपिराजअंगदधीर ॥ अरुजांबुवंतसुवृद्ध ॥ नलनीलहनू
प्रसिद्ध ॥ इत्यादिजूथपजूथ ॥ थितसबैवीरवरूथ ॥ अरुनिकटलंकानाथ ॥ हितजुक्तजो
रैहाथ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ प्रभुकह्योकृपाप्रसंस ॥ सबआहितुमसुरअंस ॥ तवबा
हुबलविरदैत ॥ मैंलह्योजुधजसजैत ॥ रनहत्यौरावनराइ ॥ लियलंकविजयबजाइ ॥ सब
राजदुर्गसुभाई ॥ प्रभुताबिभीषनपाइ ॥ त्रयलोककीर्तिप्रकास ॥ तवहोहुकारनतास ॥
॥ दोहा ॥ जौलौंससिसूरजजगत । उदितहौंहिआकास ॥ तौलौंजसकपिभालकौं । प्र
तित्रयलोकप्रकास ॥ १३ ॥ पौरुषमहिमाआपनी । कपिसुनिहौकछुकाल ॥ चलिहोमेरे
संगमिलि । पुनिवैकुंठविसाल ॥ १४ ॥ मोसमकीरतिकपिनकी । सुनिकहिहैंसविशेष ॥
भवसागरतारिहैंभगत । सोअनयासअशेष ॥ १५ ॥ ॥ अथबिभीषणवरदान ॥ ॥
कवित्त ॥ ॥ प्रभुनरहरइहांव्हैप्रसन्नवरदयौबिभीषन ॥ ममप्रसादगढमाँझमहासुषकर
हुअभयमन ॥ पाइप्रगटप्रभुताप्रतापपुनिपाइनिपरयौ ॥ करिअपनौराक्षसकुजोनिध
रिकरउरधरयौ ॥ अद्भुतप्रभावमहिमाअतुल ॥ आज्ञादईअभीतआरि ॥ जगरामनामजौ
लौंसजय, कलिजुगनिर्भयराजकारि ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्यौबि
भीषनजोरिकर । सुरसुरपतिटारिसाल ॥ मज्जनविजयजुग्रेहमम । कारियैदीनदयाल ॥
१६ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ अबतौविनुपूरनअवधि । सुनहुसत्यलंकेस ॥ मेरौआ
वननगरमँह । नाहिनबनतविशेस ॥ १७ ॥ जतीधर्मपालतजथा । भरतसहानुजभ्रात
॥ अलंकारमज्जनवसन । ताविनुमुहिनसुहात ॥ १८ ॥ करहुसुश्रूषाकपिनकी । जथाउ
चितविधिजान ॥ इहांबिभीषनआनिगृह । सबकीनौसनमान ॥ १९ ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ माररामरावनसंग्रामलंकागढलिन्नौ ॥ असुरबिभीषनसरनआइ

तिहिंदीनहिदिन्नौ ॥ महावीरहनुमंतसेवसुग्रीवकपीसुर ॥ अंगददूतअभंगभालपतिअ सुरभयंकर ॥ मिलिअभयजूथजूथपसमर, हिततत्रलोकजयसब्दहुव ॥ भवभूतअषिलभय भंजयो, जैतजैतभयटस्यौभुव ॥ १ ॥ समरसिवहिदससीसश्रोनभरधरनसमप्पींय ॥ पिसितमांसपलचरनिअनलकंकालजुअप्पींय ॥ वीरप्रेतकौतुकविभागवेध्यौतनबाननि ॥ जोतिजोतिसंजोगपवनलैगौमिलिप्राननि ॥ कृतसरनहेतनरहरसुकवि, दीनबिभीषनलं कदिय ॥ कंटकघटवैभवदुर्गक्रम, कोपिरामहृदबंटकिय ॥ २ ॥ इक्कअभयदसअयुत नागहयचरनचारनर ॥ इतेगिरतभूवइक्कभिरतउठ्ठतकबंधधर ॥ उठ्ठहिंकोटिकबंधतामव ज्जइटंकारव ॥ सुकरविजयसारंगरोषसज्जितरनराघव ॥ कृतयहभूतनरहरसुकवि, सम रदसाननसज्जयो ॥ रघुवीरधनुषटंकारवन,वारत्रयोदशबज्जयो ॥ ३ ॥ तबकंटकभयटस्यौ लोकलोकनिमिलिमंगल ॥ कुलराक्षसषयकस्यौषेतमास्यौरावकषल ॥ महाग्रहनिग्रहमो षभयौथिरचरमनभायौ ॥ वेदधर्मवित्थस्यौसमयसोऋषिनिसुहायौ ॥ त्रैलोकसोकभाग्यौ तदिन, अमरसमयजयउच्चस्यौ ॥ साध्यौअसाधलंकेसवर, कृतअभूतरघुपतिकस्यौ ॥ ४ ॥ रिपुरावनरनरौद्रमहागढलंकादुर्गम ॥ पदलंघनपाथोधिदुसहमुनिदसादेहदम ॥ भटस हायकपिभालशस्त्रपैपानिधनुषसर ॥ वयसुषालवनितावियोगहैजलफलआहर ॥ मान्यौ इहांपौरुषवेदमत, पुनिसंपतिनप्रमानियै ॥ सुरअसुरनरनिनरहरसुकवि, नियतकाजसि धिजानियै ॥ ५ ॥ निसाचारकीयनासकठिनकोदंडवामकर ॥ रनअंगनरघुनाथसव्यफे रतविजईसर ॥ रोषनयनसारत्तविविधक्षतदेहविकाशित ॥ श्रोनबिंदुवनवसनप्रभारवि कोटिप्रकासित ॥ कपिभालमध्यमंडलअकल, करिठाढेप्रभुविजयक्रम ॥ करुनानिधान नरहरकहत, महावाहुउद्धारमम ॥ ६ ॥ इतिरामचंद्रविजयरावणवधवर्णनं ॥ अथअयो ध्याप्रतिआगमनं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आनिबिभीषनअर्पकीय । पु हुपकनामविमान ॥ तिहिंबैठेरघुनाथतहँ । सीतालषनसुजान ॥ १ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ कह्यौरामलंकेसकहँ । पूरनकृपाप्रचार ॥ आपसंभारहुजाइअब । राजश्रीभंडार ॥ २ ॥ ॥ बिभीषनउवाच ॥ ॥ अवधिचलौंगोसंगअब । सेवाचरनविसे ॥ दरस नविरहदयालको । सहिनजाइअवधेस ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जथाजोग्यरथदिव्यजुदीनें ॥ कपिपतिअंगदआरुहकीनें ॥ विहितआनिरथदयेबिभी षन ॥ तहांआरूढभएजूथपतिन ॥ शुभरथचढ्यौबिभीषनसोहत ॥ हितबंधुनिके चित्तविमोहत ॥ आपप्रयानकस्यौअवधेसर ॥ बाजेगगननिसानगहरवर ॥ वाजे विविधलंकमहँवाजे ॥ गोमव्योमतिहिंसुरमिलिगाजे ॥ मिलिउत्तरदिसिचलेविमाना ॥ कृपानिधानसहितकल्याणा ॥ रामप्रतापरूपउरराषे ॥ षेचरअमरनिजयजयभाषे ॥ इहां रनभूमिमध्यप्रभुआवत ॥ तेइतेइसीतहिठौरबतावत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ राजकुमारिविलोकिमहारन ॥ कर्दमश्रोनअलंकितअंगन ॥ मिलिकपिरीछनिराक्षसमारे एतिनकेवपुषंडविथारे ॥ इहांलक्ष्मनघननादलराई ॥ गिरेलषनषलसक्तिलगाई ॥ कुंभ कर्णकौशिरइहांकाट्यौ ॥ द्वारदुर्गजिहिंपरताहिंडाट्यौ ॥ गढलंकायह,यहवैलागिर ॥ सम

हरमध्यजुमार्यौदशशिर ॥ यहमर्कटनिनीरनिधिमाप्यौ ॥ सेतबांधिरामेश्वरथाप्यौ ॥ इ
हांबिभीषनसरनैंआयौ ॥ प्रभुतासहितलंकगढपायौ ॥ यहप्रश्रवणअद्रिकपिआए ॥ इ
हांतेजूथपजूथचलाए ॥ कपिपतिकौयहनगरकिष्किंधा ॥ इहांवालिमार्यौमदअंधा ॥
पंपासरऋषिमूकजुपर्वत ॥ हमकहँआनिमिल्यौइहांहनुमत ॥ इहांभईसुग्रीवमिताई ॥
उत्तरीयनूपुरइहांपाई ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ कहिकपिराजसुग्रीवजोरिकर ॥ इहांकछुना
हिकिष्किंधाअंतर ॥ रघुपतिआजइहांपाउधारौ ॥ होइपावनकुलग्रेहहमारौ ॥ कृपानि
धानअनुग्रहकीजै ॥ देवचरनमेरैंसिरदीजै ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दीनबंधुबोलेहि
तदायक ॥ कपिपतितुमसबहीकृतलाइक ॥ जोपैअवधिबितीतेजाऊं ॥ प्यारेभरतहिजि
यतनपाऊं ॥ मैवनवासितपकर्मप्रकास्यौ ॥ उनसोइग्रेहवसतअभ्यास्यौ ॥ अबनविलं
बउचितमोहियातें ॥ जौतनपंषहोतउडिजातें ॥ कुंभादिकराक्षसषयकीनौ ॥ रावनमारि
लंकगढलीनौ ॥ प्रभुतादुर्गविभीषनपायौ ॥ भयौसुरकाजजथामनभायौ ॥ हितअभिला
षजुपूरिहमारे ॥ तेबलबुद्धिकपीसतिहारे ॥ निकटइहांतेतवरजधानी ॥ पुरीकिष्किंधासुष
दप्रमानी ॥ अबग्रेहजाइकरहुसुषअपनै ॥ पुनिममकृपानहिनभयसपनै ॥ जूथपजूथस
बैग्रहजाहू ॥ कबहूसंकनमानहुकाहू ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपिकपी
सइहांजोरिकर । विनएवचनविसेस ॥ अपनैंकौगौरवअषिल । आपदेतअवधेस ॥ ४ ॥
॥ कहूंसहायजुगरुडको । हितमसकापैहोत ॥ कछुदिनप्रभुसेवाकरी । यहहमभाग्यउदो
त ॥ ५ ॥ करुनानिधियहसबनिकै । इच्छाहैअषिलेस ॥ रामतिलकसुषअवधिपुर । दर
सनकरहिंसुदेस ॥ ६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कपिपतिजूथपजूथकपि । सबैचलेसुष
पाइ ॥ इहांसीतातारासषी । लीनीसंगबुलाइ ॥ ७ ॥ जिहिंजिहिंठौरनिजगतपति । सुष
कृतचरितसुभाइ ॥ पुनिसीतहितेइजातपथ । विहसतदेतबताइ ॥ ८ ॥ ॥ श्रीरामउ
वाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ वनकीनौतपवैसविहाई ॥ सबरीइहांसुरलोकसिधाई ॥
दंडकवनयहसेवततापस ॥ इहांकबंधहत्यौषलराक्षस ॥ इहांजटायुग्रीधउद्धार्यौ ॥ महा
जुद्धरावनजौमार्यौ ॥ वैदेहीयहविमलपंचवट ॥ तबैवसेहमगोदावरितट ॥ यहजुअग
स्तिसुतीक्षणआश्रम ॥ दिव्यशस्त्रहमलहेदुष्टदम ॥ एहैपंचसरोवरअद्भुत ॥ जलरुहफू
लेनिर्मलजलजुत ॥ इहांसरभंगपरमगतिपाई ॥ आपदेहजरिअग्निउठाई ॥ निसचरव्या
धिनासइहांकीनौ ॥ देवद्विजनिजिहिंअतिदुषदीनौ ॥ अनुसूयाअरुअत्रिवसतइहँ ॥
हितउपदेसकरेजिनतुमकहँ ॥ चित्रकूटयहविश्वविष्याता ॥ मातामिलीभरतप्रियभ्राता ॥
वालमीकआश्रमयहवंदित ॥ हैद्विजपूज्यहमारेअतिहित ॥ तरलतरंगविमलजमुनातट
॥ काटतसकलपापदुषसंकट ॥ सिययहत्रिपथगामिनीसुरसरि ॥ इहांमज्जतअघकारक
उद्धरि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आश्रमभरद्वाजकेआए ॥ पूछतकुसलपरमसुषपाए ॥
॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देवसिष्ठगुरुआदिद्विज । पावनमातुकृपाल ॥ आ
तभरतसानुजकुसल । कहियैदेससुकाल ॥ ९ ॥ ॥ ॥ भरद्वाजउवाच ॥ ॥ सुनहु
रामसबहीकुसल । प्रभुतवकृपाप्रसाद ॥ आजदेवआगमभए । देववंसउदमाद ॥ १० ॥

भरद्वाजभावनभरत । देवहिकह्यौनिदान ॥ आजचतुर्दशवर्षए । पूरनहोतप्रमान ॥ ११ ॥
॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ आजअवधिपूरनअवधेसर ॥ पितुतपआज्ञाहातधर्मपर ॥
यहविचारभरतगतिऐसी ॥ कोजानौधौंव्हैहैकैसी ॥ रामरामरटमुषचषरोवत ॥ जथा
स्वातिचातकमगजोवत ॥ कारजकरतविलंबनकीजे ॥ प्रभुतवआगमसुनतपतीजै ॥
॥ ॥ अथभरतदसा ॥ ॥ महाविषादभरतचिंततमन ॥ देषतरघुवरपंथनिसादिन ॥
आजअवधिपूरनदिनआयौ ॥ पैकछुरामसंदेसनपायौ ॥ सोचतमनमोचतनिस्वासा ॥
आनिरहीइकदिननिसिआसा ॥ अजहूंतौरघुनाथनआयौ ॥ दारुनआगमअंतदिषायौ ॥
॥ द्रगभुजभरतफुरेइहांदक्षन ॥ निश्चयभयौविसासमनहिमन ॥ कछुधीरजकछुचितअ
कुलावत ॥ दुविधासिंघुपारनहिंपावत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ उर
विचारिअवधेशवर्षदशचारिविहाईय ॥ अवधिद्यौंसइहआजवहैपंचमतिथिआईय ॥ सु
नहुवचनहनुमंतसंतअबवेगिसिधावहु ॥ ममआगमभरतहिसमूलसुषबातसुनावहु ॥ चं
चलअतिनाहिनरहतचित, हमपाछैंहीआइहै ॥ सुषव्हैहैतबनरहरसुकवि, विहितभ्रात
हिउरलाइहै ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ धीरवीरहनुमंतउठिधा
ए ॥ अतिसवेगनंदीपुरआए ॥ आनिमिलेभरतहिअतिआतुर ॥ कह्यौदूतहूंरघुवरकिंक
र ॥ आजरामसियलक्ष्मनऐहैं ॥ दलबलकुसलदरसप्रभुदेहैं ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥
अमिसेरहेभरतजुतभ्राता ॥ बातस्वप्नकिधौंसत्यविधात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामदू
तसुनिउठिउरलाए ॥ सात्विकभावनयनजलछाए ॥ ऐसेरूपभरतअविलोके ॥ भूमिविवर
समपुरुषससोके ॥ दर्भासनमृगछालामंडित ॥ षितिबैठेतपसाअनषंडित ॥ तनमलपं
कितबसनतुचातर ॥ सांतभावमनजटाजूटसिर ॥ अवनिसयनफलमूलअहारी ॥ सांत
उदासधर्मव्रतधारी ॥ कामक्रोधमदमोहनमाया ॥ कीनैमुनिव्रतदुर्बलकाया ॥ अंतरभू
मिरहतएकासन ॥ एकरामरटरामउपासन ॥ प्रभुपावरिसिंघासनपूजत ॥ केकीज्यौंघन
आगमकूजत ॥ रामरामरटपंथनिहारत ॥ तहांकल्पसमछनछनटारत ॥ साधअनन्यसु
रामउपासी ॥ पूरनप्रभासरीरप्रकासी ॥ कृतरघुनाथजुबनवसिकरयौ ॥ सोईभरतग्रेहअ
नुसरयौ ॥ भएअधीरमिलतकहँभाई ॥ विछुरीमनहुपरमनिधिपाइ ॥ धरमधुरंधुरसानु
जधाए ॥ सिरपरचरनपीठसुषदाए ॥ पाइफटेअरुरहितउपाना ॥ धाएउरधरिकृपानिधा
ना ॥ आगेहनूसजवफिरिआए ॥ सानुजआवतभरतसुनाए ॥ दूरहितेजबभरतहिदेषे
प्रभुसोइप्रानसमानसपेषे ॥ वारवारकपिपतिहिंबतावत ॥ वेममभ्रातभरतहैंआवत
इतरघुनाथहांकिरथआए ॥ धीरनरह्यौभरतउतधाए ॥ उतरेरथतैंरामअभीता ॥
संपासीपाछैहीसीता ॥ कृतहितभरतदंडवतकीनै ॥ नाथउठाइलाइउरलीनै ॥ प्रभुभएभर
थमनोरथपूरन ॥ उभयभ्रातउपजेसुषअनगन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मिलितभरतरघुनाथम
न । उपजेजेसुषआहि ॥ तासुषकेपरिपाकतब । तेईजानतताहि ॥ १२ ॥ ज्यौंअंमृतकेगु
नअषिल । पानकरैसुप्रमानि ॥ हैबैव्यौजोनिकटहिं । जनश्रोताकहाजानि ॥ १३ ॥ जैसै
वारिजगंधगुन । जानतअमरसुजान ॥ भेकरहतनितसंगभव ॥ पावतनाहिंप्रमान ॥

कहिनसकैनरहरसुकवि । अनुभवविनुअज्ञात ॥ करुनासुषदुवभ्रातके । बिछुरेमिलतवि
ष्यात ॥ १५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सियचरनभरतइहांनाइसीस ॥ इनदईउचितअ
क्षयअसीस ॥ पुनिलक्ष्मनलागेभरतपाइ ॥ करकरषिहरषिलीयकंठलाइ ॥ नमिरामच
रनअरिहासनेम ॥ प्रभुलाइलएउरसहितप्रेम ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ कहिभरतध
न्यलक्ष्मनअभीतं ॥ जसरातिजन्मतेंजन्मजीत ॥ निजरामचरनकीनौनिवास ॥ प्रभुक
रीसंगसेवाप्रकास ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहिकहिसबकेगुनकरम । प्रभु
सेवासुषपाइ ॥ कपिनामिलावतभरतकहँ । रीझिरीझिरघुराइ ॥ १६ ॥ ॥ श्रीरामउ
वाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मित्रपरमसुग्रीवहमारे ॥ संगरहेसबकाजसुधारे ॥ का
ननाकइनहींहातेकरि ॥ महाषिस्यानौकुंभछुव्योमरि ॥ यहजुवराजमहाबलअंगद ॥ म
ल्योसभामहँदससिरकोमद ॥ एहनुमंतसोधिसियलाए ॥ चिन्हपाइहमसेनचलाए ॥ जांबु
वंतएजोधाजीरन ॥ पृथ्वीप्रसिद्धबुधिबलपूरन ॥ एनलनीलसेताजिनसाँध्यो ॥ वाटकरी
गिरसागरबाँध्यो ॥ जूथपजूथमहाकपिजानहु ॥ पौरुषइनकेअमितप्रमानहु ॥ एममसरन
विभीषनआए ॥ इनरिपुकेघरसर्मबताए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतपौरुषहनुमंतके । करे
सिद्धसुरकाज ॥ भरतकुसलतुमसौंभविसि । आनिमिलेहमआज ॥ १७ ॥ इनआनी
संजीवनी । लषनजियैरनमांहिं ॥ नातरमेरौजियनतहां । निहचैजानहुनाहिं ॥ १८ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ आपसमीपभरतबैठाए । चढिरघुनाथवि
मानचलाए ॥ शृंगवेरपर्वतआएसुष । महिमारामबतावतनिजमुष ॥ ॥ श्रीरामउ
वाच ॥ ॥ शृंगवेरयहपरमसषाश्रम ॥ हितनिसिवसेजटाकीनीहम ॥ ॥ कविरुवाच ॥
इहांनिषादराजगुहआयौ ॥ लैरघुनाथसुकंठलगायौ ॥ चढिमिलिरथअतिवेगचलावत
॥ प्रभुमनमनविहसतसुषपावत ॥ अनुक्रमनिकटअयोध्याआए ॥ दीरघध्वजाकलसद
रसाए ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ वामाकहँकरसाषबताई ॥ देषहुअवधिपुरीसुष
दाई ॥ लोकप्रसिद्धपुन्यथललेषहु ॥ वंदनपुनरागमनविशेषहु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कियआ
ज्ञाहनुमंतकहँ । अवधिप्रवेसजुआज ॥ कहौजाइमाताकुसल । सानुजसेनसमाज ॥
१९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांहनुमंतअजोध्याआयौ ॥ सी
ताराघवकुसलसुनायौ ॥ आगैंजननीहनूबुलाए ॥ ग्रहग्रहउच्छवमंगलगाए ॥ ॥ कोस
ल्यावाक्यं ॥ ॥ कहहुपुत्रशुभरामकहानी ॥ कबऐहैंप्राननिकेप्रानी ॥ ॥ हनुमंतउ
वाच ॥ ॥ प्रभुहेवसतपंचवटपावन ॥ राक्षसकस्यौतहांछलरावन ॥ इहांभालकपि
अगनितआए ॥ सेतबांधगढलंकलगाए ॥ दसदिसिरोकेदुर्गदुवारा ॥ पदमअठारैवान
रपारा ॥ दुस्सहजूथपजूथविषमदल ॥ षेतराममास्यौरावनषल ॥ महासंग्रामसकुलरिपु
मास्यौ ॥ इंद्रादिकजयसबदउचास्यौ ॥ सानुजसीतानाथसुभाए ॥ अबपुरनिकटजननि
हैंआए ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनतयथाविधिमंगलसाजे ॥ बाजेविसदअवधिपुरबा
जे ॥ क्रमचोडोलपंथसुषदाइक ॥ लैलैदएजथाविधिलाइक ॥ गुनत्रियचलीअग्रसुभगा
वति ॥ इनिपाछैंमातासबआवति ॥ गुरुमंत्रीअरुसूरसुभटगन ॥ इहांचतुरंगचलेदल

भरद्वाजभावनभरत । देवहिकह्योनिदान ॥ आजचतुर्दशवर्षए । पूरनहोतप्रमान ॥ ११ ॥
॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ आजअवधिपूरनअवधेसर ॥ पितुतपआज्ञाहातधर्मपर ॥
यहविचारभरतगतिऐसी ॥ कोजानोंधौंव्हैहेंकेसी ॥ रामरामरटमुपचषरोवत ॥ जथा
स्वातिचातकमगजोवत ॥ कारजकरतविलंबनकीजे ॥ प्रभुतवआगमसुनतपतीजे ॥
॥ ॥ अथभरतदसा ॥ ॥ महाविपादभरतचिंततमन ॥ देषतरघुवरपंथनिसादिन ॥
आजअवधिपूरनदिनआयो ॥ पैकछुरामसंदेसनपायो ॥ सोचतमनमोचतनिस्वासा ॥
आनिरहीइकदिननिसिआसा ॥ अजहूंतौरघुनाथनआयो ॥ दारुनआगमअंतदिषायो ॥
॥ द्रगभुजभरतफुरेइहांदक्षन ॥ निश्चयभयौविसासमनहिमन ॥ कछुधीरजकछुचितअ
कुलावत ॥ दुविधासिंधुपारनहिंपावत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ उर
विचारिअवधेशवर्षदशचारिविहाईय ॥ अवधिदयौंसइहआजवहैपंचमतिथिआईय ॥ सु
नहुवचनहनुमंतसंतअबवेगिसिधावहु ॥ ममआगमभरतहिसमूलसुपबातसुनावहु ॥ चं
चलअतिनाहिनरहतचित, हमपाछेंहीआइहे ॥ सुषव्हैहेतबनरहरसुकवि, विहितभ्रात
हिउरलाइहे ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ धीरवीरहनुमंतउठिधा
ए ॥ अतिसवेगनंदीपुरआए ॥ आनिमिलेभरतहिअतिआतुर ॥ कह्योदूतहूंरघुवरकिंक
र ॥ आजरामसियलक्ष्मनऐहें ॥ दलवलकुसलदरसप्रभुदेहें ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥
भ्रमिसेरहेभरतजुतभ्राता ॥ बातस्वप्नकिधौंसत्यविधात ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामदू
तसुनिउठिउरलाए ॥ सात्विकभावनयनजलछाए ॥ ऐसेरूपभरतअविलोके ॥ भूमिविवर
समपुरुपससोके ॥ दर्भासनमृगछालामंडित ॥ षितिबैठेतपसाअनषंडित ॥ तनमलपं
कितबसनतुचातर ॥ सांतभावमनजटाजूटसिर ॥ अवनिसयनफलमूलअहारी ॥ सांत
उदासधर्मव्रतधारी ॥ कामक्रोधमदमोहनमाया ॥ कीनैमुनिव्रतदुर्बलकाया ॥ अंतरभू
मिरहतएकासन ॥ एकरामरटरामउपासन ॥ प्रभुपावरिसिंघासनपूजत ॥ केकीज्योंघन
आगमकूजत ॥ रामरामरटपंथनिहारत ॥ तहांकल्पसमछनछनटारत ॥ साधअनन्यसु
रामउपासी ॥ पूरनप्रभासरीरप्रकासी ॥ कृतरघुनाथजुवनवसिकरयौ ॥ सोईभरतग्रेहअ
नुसरयौ ॥ भएअधीरमिलतकहँभाई ॥ विछुरीमनहुपरमनिधिपाइ ॥ धरमधुरंधुरसानु
जधाए ॥ सिरपरचरनपीठसुषदाए ॥ पाइफटेअरुरहितउपाना ॥ धाएउरधरिकृपानिधा
ना ॥ आगेहनूसजवफिरिआए ॥ सानुजआवतभरतसुनाए ॥ दूरहितेजबभरतहिदेषे
प्रभुसोइप्रानसमानसपेषे ॥ वारवारकपिपतिहिंबतावत ॥ वेममभ्रातभरतहैंआवत
इतरघुनाथहांकिरथआए ॥ धीरनरह्योभरतउतधाए ॥ उतरेरथतेंरामअभीता ॥
संपासीपाछैहीसीता ॥ कृतहितभरतदंडवतकीनै ॥ नाथउठाइलाइउरलीनै ॥ प्रभुभएभर
थमनोरथपूरन ॥ उभयभ्रातउपजेसुषअनगन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मिलितभरतरघुनाथम
न । उपजेजेसुषआहि ॥ तासुषकेपरिपाकतब । तेईजानततााहि ॥ १२ ॥ ज्योंअंमृतकेगु
नअषिल । पानकरैसुप्रमानि ॥ हैवैज्यौजोनिकटहिं । जनश्रोताकहाजानि ॥ १३ ॥ जैसै
वारिजगंधगुन । जानतभ्रमरसुजान ॥ भेकरहततनितसंगभव ॥ पावतनाहिंप्रमान ॥ १४ ॥

कहिनसकैनरहरसुकवि। अनुभवविनुअज्ञात॥ करुनासुषदुवभ्रातके । बिछुरेमिलतविष्यात॥ १५ ॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ सियचरनभरतइहांनाइसीस॥ इनदईउचितअक्षयअसीस॥ पुनिलक्ष्मनलागेभरतपाइ॥ करकरषिहरषिलीयकंठलाइ॥ नमिरामचरनअरिहासनेम॥ प्रभुलाइलएउरसहितप्रेम॥ ॥ भरतउवाच॥ ॥ कहिभरतधन्यलक्ष्मनअभीतं॥ जसरातिजन्मतेंजन्मजीत॥ निजरामचरनकीनौनिवास॥ प्रभुकरीसंगसेवाप्रकास॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ दोहा॥ ॥ कहिकहिसबकेगुनकरम। प्रभुसेवासुषपाइ॥ कपिनमिलावतभरतकहँ। रीझिरीझिरघुराइ॥ १६ ॥ ॥ श्रीरामउवाच॥ ॥ छंदद्विअक्षरी॥ ॥ मित्रपरमसुग्रीवहमारे॥ संगरहेसबकाजसुधारे॥ काननाकइनहींहातेकरि॥ महाबिस्यानौकुंभछुव्यौमरि ॥ यहजुवराजमहाबलअंगद॥ मल्यौसभामहँदससिरकौमद॥ एहनुमंतसोधिसियलाए॥ चिन्हपाइहमसेनचलाए॥ जांबुवंतएजोधाजीरन॥ पृथ्वीप्रसिद्धबुधिबलपूरन॥ एनलनीलसेतजिनसाँध्यौ॥ बाटकरीगिरसागरबाँध्यौ॥ जूथपजूथमहाकपिजानहु॥ पौरुषइनकेअमितप्रमानहु॥ एममसरनविभीषनआए॥ इनरिपुकेघरमर्मबताए॥ ॥ दोहा॥ ॥ कृतपौरुषहनुमंतके। करेसिद्धसुरकाज॥ भरतकुसलतुमसौंभविसि। आनिमिलेहमआज॥ १७ ॥ इनआनीसंजीवनी। लषनजियैरनमांहिं॥ नातरमेरोजियनतहां। निहचैजानहुनाहिं॥ १८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी॥ ॥ आपसमीपभरतबैठाए। चढिरघुनाथविमानचलाए॥ शृंगवेरपर्वतआएसुष। महिमाशमबतावतनिजमुष॥ ॥ श्रीरामउवाच॥ ॥ शृंगवेरयहपरमसषाश्रम॥ हितनिसिवसेजटाकीनीहम॥ ॥ कविरुवाच॥ इहांनिषादराजगुहआयौ॥ लैरघुनाथसुकंठलगायौ ॥ चढिमिलिरथअतिवेगचलावत॥ प्रभुमनमनविहसतसुषपावत ॥ अनुक्रमनिकटअयोध्याआए॥ दीरघध्वजाकलसदरसाए॥ ॥ श्रीरामउवाच॥ ॥ वामाकहँकरसाषबताई ॥ देषहुअवधिपुरीसुषदाई॥ लोकप्रसिद्धपुन्यथललेषहु॥ वंदनपुनरागमनविशेषहु॥ ॥ दोहा॥ ॥ कियआज्ञाहनुमंतकहँ। अवधिप्रवेसजुआज ॥ कहौजाइमाताकुसल। सानुजसेनसमाज ॥ १९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी॥ ॥ इहांहनुमंतअजोध्याआयौ॥ सीताराघवकुसलसुनायौ॥ आगैजननीहनूबुलाए॥ ग्रहग्रहउच्छवमंगलगाए॥ ॥ कोसल्यावाक्यं॥ ॥ कहहुपुत्रशुभरामकहानी॥ कबऐहैंप्राननिकेप्रानी॥ ॥ हनुमंतउवाच ॥ ॥ प्रभुहेवसतपंचवटपावन ॥ राक्षसकरयौतहांछलरावन ॥ इहांभालकपिअगनितआए॥ सेतबांधगढलंकलगाए॥ दसदिसिरोकेदुर्गदुवारा ॥ पदमअठारैवानरपारा॥ दुस्सहजूथपजूथविषमदल॥ षेतराममार्यौरावनषल ॥ महासंग्रामसकुलरिपुमार्यौ॥ इंद्रादिकजयसबदउचार्यौ ॥ सानुजसीतानाथसुभाए॥ अबपुरनिकटजननिहैंआए॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ सुनतयथाविधिमंगलसाजे॥ बाजेविसदअवधिपुरबाजे॥ क्रमचोडोलपंथसुषदाइक॥ लैलैदएजथाविधिलाइक॥ गुनत्रियचलीअग्रसुभगावति॥ इनिपाछैंमातासबआवति ॥ गुरुमंत्रीअरुसूरसुभटगन ॥ इहांचतुरंगचलेदल

अनगन ॥ लोकमहाजनजोजिहिलाइक ॥ साजिचलेवाहनसुषदाइक ॥ कृपापात्रविधि
विधिकृतकारक ॥ पाइसमयप्रभुविरहप्रहारक ॥ पंथपंथजनपंतिप्रचारी ॥ प्रभुहिमिल
नपुरभुजापसारी ॥ बालकतरुनवृद्धपुरवासी ॥ प्रेमसहितचलिरामउपासी ॥ इहांहनुमं
तरामपहँआयो ॥ सुभजननीआगमनसुनायो ॥ सजवहांकिरथत्रिभुवनस्वामी ॥ आए
लोकचित्तअनुगामी ॥ जननिविमानदृष्टिपरिजवही ॥ तज्यौरामपुहपकरथतवहीं ॥ ध
रिअतिवेगधराप्रभुधाए ॥ उरआनंदमातपहँआए ॥ क्रमजुतरामदंडवतकीने ॥ लाइउर
निजननीतवलीने ॥ अतिहियहरषप्रेमअधिकाई ॥ पूरनमनहुरंकनिधिपाई ॥ सुरभिव
छमिलिमनहुसभागी ॥ लेतबलाइलौनहितलागी ॥ आकुलमीनजानिजलपाए ॥ दादु
रदुषितसघनदरसाए ॥ महामनोरथरटतिमयूरी ॥ पावसआएआसापूरी ॥ इहांभएदु
हघांसुषऐसे ॥ तेकविनहिनसकतकहितैसे ॥ सासुनिचरनलगीतहाँसीता ॥ गहिउरला
इलईशुभगीता ॥ भरतलषनशत्रुघनसबभाई ॥ जननिमिलनसुषकहिकिहिंजाई ॥ सवज
नकेउरहर्षसंचारा ॥ विश्वईसमिलिएकहिवारा ॥ मोहिनमिलेरामसनमानी ॥ जुगतिलो
कयहकाहुनजानी ॥ आपुनचलेजननिरथआगे ॥ अवनिपयादेउरअनुरागे ॥ आज्ञामात
रथनिआरोहे ॥ समवंधवदिनकरसेसोहे ॥ अथनंदीग्रामआगमनं ॥ नंदिग्रामहिराम
नरेसर ॥ आएभरतग्रेहअवधेसर ॥ वाजेमंगलद्वारवधाए ॥ आसाफलीरामग्रहआए ॥
पुनिमाताग्रहमाँझपधारी ॥ समसीतातारासुषकारी ॥ भरतउवाच ॥ छंदपधरी ॥ कर
जोरिभरतइहांप्रणतकीन ॥ प्रभुविश्वहृदयव्यापकप्रवीन ॥ चितमध्यचराचरभावतंत ॥
तुमतेनअगमकछुहैअनंत ॥ कैकयीकियौअनुचितअकाज ॥ राजापहँजाच्यौकपटराज
॥ सोराजतिहारौवेदसाषि ॥ रघुरामविनाकोसकैराषि ॥ यहराजतुमहिंसोहैअनंत ॥ तु
महीप्रतिपालकआदिअंत ॥ अबकरहुजगतरक्षाअजेव ॥ तुमदीनबंधुदेवाधिदेव ॥ र
क्षकतुमतुमहीवनेराज ॥ रघुवंसतिलकराजाधिराज ॥ पावरीइष्टपूजाप्रमानि ॥ इहांरा
मअग्रलैधरीआनि ॥ ॥ सुमंतउवाच ॥ ॥ तुमसाधसदानिर्मलसुभाइ ॥ लियराम
भरतकँहँकंठलाइ ॥ तवदईरामआज्ञासुमंत ॥ तुमकरहुभरतमज्जनसुतंत ॥ कृतभरतज
टामोचनसुकाज ॥ सानुजशुभमज्जनवस्त्रसाज ॥ आवरितवसनभूषनअनेक ॥ वनिवि
विधगंधलेपनविवेक ॥ विधिजुक्तशस्त्रअस्त्रनिबनाइ ॥ समअनुजबढीसोभासुभाइ ॥
इहांभरतशत्रुघनभक्तिभाज ॥ रघुरामजुहारेमहाराज ॥ पुनिरामजटामोचनप्रकार ॥
सानुजतनमज्जनकृतसुढार ॥ इहांभईअवधिपूरनिप्रमान ॥ सन्यासभावछांड्यौसुजान ॥
सौगंधसलिलमज्जनसँवारि ॥ तनवसनधौतअवधेसधारि ॥ नितकृत्यजापपूजासनेम ॥
प्रभुकेरजथाविधिसहितप्रेम ॥ अनमूल्यवसनआवरितअंग ॥ स्वर्णमयसूत्रविरचितसु
रंग ॥ आपुनसमलक्ष्मनवसनओप ॥ जुगमदनमनहुमिलिप्रेमजोप ॥ कनकमयरतन
मनिषचितकीन ॥ बनिअंगअंगभूषननवीन ॥ अर्चितसुगंधआमोदअंग ॥ आमित
ससब्दमिलिमत्तभृंग ॥ समरूपशस्त्रअस्त्रनिसुधारि ॥ चितहेतबैठिमिलिबंधुचारि ॥ त्र
यवहिनप्रथममज्जनसुतंत ॥ सियआज्ञासाधेत्रियासंत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौसल्याआ

ज्ञासकल । मिलित्रियचतुरसमूह ॥ कृतहितमज्जनजानकी । सलिलसुगंधसमूह ॥ ॥ २० ॥ आभूषनवासनअषिल । आजितअंगविभाग ॥ सासुचरनलागीसिया । सत्य अतुलसौभाग ॥ २१ ॥ सहजसुवाससरीरकी । उठततरंगअपार ॥ भामिनिपरमधुम त्तभ्रमि । करतमधुपझंकार ॥ २२ ॥ मानहुलक्ष्मीप्रियमिलन । साजिसोरहश्रृंगार ॥ प्र गटविराजितसासुपहँ । अद्भुतरूपउदार ॥ २३ ॥ सकलसमंगलदिवसशुभ । सुषमिलि दैवसंजोग ॥ कीनैमंत्रीउचितक्रम । पुरहिप्रवेसप्रयोग ॥ २४ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इ हांबजेविविधवाजितविसाल ॥ मनुगरजपवनमिलिजलदमाल ॥ आन्यौविमानपुहपक बनाइ ॥ आरूढभएतिहिंरामराइ ॥ अतिप्रेमभुजाधरिभरतआप ॥ बैठारिनिकटमनसुष अमाप ॥ सबचंढेआतवाहनसजाइ ॥ सविसेषचढीसोभासुभाइ ॥ सुग्रीवविभीषनसुभ टसंग ॥ आरूढजथाक्रमरथअभंग ॥ आरोहजननिरथादिव्यआनि ॥ सीतासमेततारा समानि ॥ ॥ अथअयोध्यापुरागमनं ॥ ॥ रसबढ्यौचलेचढिअवधिराउ ॥ घनपरे गहरनिसानघाउ ॥ सतसहस्त्रअश्वआरोहसंग ॥ रथअयुतअयुतमिलिगजमतंग ॥ पु निवीसलक्षपयदलप्रमान ॥ सरधनुषीसेवासावधान ॥ चतुरंगचलीसेन्यासचाल ॥ मि लिपदमअठारहकीसभाल ॥ इकक्रोसमात्रअंतरजुआइ ॥ पुरअवधिसुनंदीग्रामपाइ ॥ शुभबागविविधबनसुखदसंग ॥ अविलोकतउद्दीपनअभंग ॥ तबआइअजोध्यापुरीती र ॥ वंदनकृतपुनरागमनवीर ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सगुनभएरघुनाथहिसोई ॥ जा केमनशुभइच्छाजोई ॥ पुरपैठतदक्षनदिसपायौ ॥ आननअसनगरुडउडिआयौ ॥ आ एकलससमुषमिलिऐसे ॥ जुवतिगानमंगलसुभजैसे ॥ छिरकीगलीसुगंधसुहाई ॥ अति सोभाजिततितअधिकाई ॥ छबिबढिहाटपाटओछारे ॥ वाटवाटसौगंधविथारे ॥ वंदन मालाग्रहग्रहबांधे ॥ सबैसमंगलसमयजुसाजे ॥ तोरनध्वजापताकाअंकित ॥ जनअवि लोकिहरषबढिजिततित ॥ उज्जलधवलउतंगअवासनि ॥ प्रतिग्रहग्रहछबिअतुलप्रका सनि ॥ पुरमहँकर्यौप्रवेसदेसपति ॥ जथाजोग्यसुरपूजासाजति ॥ द्वारद्वारप्रतिभेटदि षाँवँहि ॥ प्रभुसनमाननगरजनपावँहिं ॥ ग्रहग्रहसौधसौधचढिगावति ॥ वनितासुरंग अबीरउडावति॥पुहपवृष्टिराघवरथऊपर ॥ करतिपसारिपसारिकमलकर ॥ घरघरबजतब धाएअतिघन॥मिलिनारीनरमोदमहामन ॥ घनातिहिंगगनविमाननिछायौ ॥ अमरसमू हअवधिपुरआयौ ॥ व्योमनगरबाजेवहुबाजत ॥ गहरअषाढसघनसमगाजत ॥ विबु धवृंदकुसुमावलिवरषत ॥ हँसतिपरसपरसुरत्रियहरषत ॥ इहिंछबिराजद्वारपरआए ॥ वनितामंगलकलसबँदाए ॥ विधिजुतपूजिद्वारकृतवंदन ॥ कर्यौप्रवेसजुअसुरनिकंदन॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ परब्रह्मराजमंदिरप्रवेस ॥ आनंदभएत्रयपुरअसेस ॥ कपिभालउ चितनररूपकीन ॥ निस्सेषविलोकितसुषनवीन ॥ अषिलेससभामंदिरहिआइ ॥ बैठे जुरामपरिषदबनाइ ॥ आदरहिजथाक्रमबैठिआनि ॥ वानरनरराक्षसभालवानि ॥ मं त्रीसुमंतदैआदिमोह ॥ सबकरतराजकारिजससोह ॥ पुनिजननीअंतहपुरपधारि ॥ कु लदेवनिपूजेहेतकारि ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांअनंतसुमंतकहँ ।

आज्ञादीनीएहु ॥ सषासुग्रीवहिआदिसुप । डेरेसबकहँदेहु ॥ छंदउधोर ॥ ॥ हैकुबे रपदममग्रेह ॥ सबसौंजसहितसनेह ॥ तहांराषियैकपिराज ॥ सनमानसहितसमाज ॥ २६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभग्रेहभरतपरिकरसमेत ॥ सोदेहुलंकपतिकहँसहेत ॥ पुनिजूथपजूथनिजथाजोग ॥ पुररापिकरहुसेवाप्रयोग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउ धोर ॥ ॥ सुग्रीवसहितसमाज ॥ रथरोहराक्षसराज ॥ प्रभुविनयआज्ञापाइ ॥ अति हर्षडेरनिआइ ॥ कपिभालनैऋतिकाज ॥ रहिजोरिकरभृतराज ॥ जिहिजथामनसुषजो ग ॥ प्रतिअग्रभक्तिसभोग ॥ प्रभुभ्रातसुभटप्रवीन ॥ दैमानआज्ञादीन ॥ लहिजथा आदरलोक ॥ उठिचलेअपनैंओक ॥ इहांमातगृहअवधेस ॥ पुनिकरयौमध्यप्रवेस ॥ छंदहिअक्षरी ॥ ॥ क्रमजुतजननिहिंवंदनकीनै ॥ रामसप्रेमलाइउरलीनै ॥ बंधुसमेत निकटबैठारे ॥ आनिआनिन्यौछावरिवारे ॥ आनंदसलिलनयनभरिआए ॥ पुत्रमिलेत नमनसुषपाए ॥ पैयहबुद्धिकवनकबिपाई ॥ विहितमिलनिसुषदेइबताई ॥ दोहा ॥ ॥ इ हांरामगृहसुषउचित । सानुजकरतविलास ॥ सक्रजथासुरलोकशुभ । वनितावसनसुवास ॥ ॥२७॥कलहजुरावनरामकौ । ताकीपूरनकीर्ति ॥ करुनाजुतमनवचनक्रम । नरजोपढिहैनि त्ति ॥ २८ ॥ लिषैसुनैवांचैनियत । किहूसुनावैकोइ ॥ विजयविभूतिविशुद्धमति । हरिप्रसाद तिहिंहोइ ॥ २९ ॥ अवरहिदेवउपासना । कारनविषयविसारि ॥ तातैनरहररामतूं । सासउ साससंभारि ॥३०॥ तैंकीनैभवभवअकृत ॥ जोकछुजानअजान ॥ कहतविजयरघुनाथकौ । व्हैहैनासनिदान ॥ ३१ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सर्पराजकुंडलिसरावतनवर्तिमेरुतहां ॥ स घनतैलमिलिसप्तसिंधुजगनयनजोतिजहां ॥ कोलकमठआधारधामभुवचक्रसुधारीय ॥ असितगगनकज्जलअरोहतमपापपहारीय ॥ करिवंदननरहरसुकवि, केईजरतपतंगकु ल ॥ त्रैलोकप्रगटरघुकुलतिलक, तवप्रतापदीपकअतुल ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ मायामृ गमारिमोष्यौवालिसौबलीविदोष्यौसुग्रीवसंतोष्यौअंगदादिअपनाएहैं ॥ पारावारमा प्यौसेतबाँधिरामेश्वरथाप्यौशुक्रहिसंताप्यौदेवदुंदुभीदिवाएहैं ॥ रावनसवंसमारयौविभीष नसोउधारयौपृथ्वीभारटारयौभवभूतसुषपाएहैं ॥ लंकागढलीनौदीनविभीषनसोपैदीनौअ वधेशरामयौंअवधिपुरआएहैं ॥ ३१ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सबलरामरावनसंग्रामचित कीर्तिविचारहिं ॥ सारदनिगमगनेससेसधरिध्यानउधारहिं ॥ कल्पकोटिश्रमकरहिंपारत द्दपिनहिंपावहिं ॥ सुनहिजथाग्रंथनिसुभेदगुनमानुषगावहिं ॥ मैकह्योजुकछुअनुसारमति, साधसुकविपंडितसुनहु ॥ करजोरिजोरिनरहरकहत, गुरुतुममुहिसिषकरिगनहु ॥ २ ॥ कलहकीर्तिकाकुस्थकहनमनसाहसकरयौ ॥ आपसक्तिउनमानअगमकारनअनुसरयौ ॥ आकर्षनज्यौंउडिअकासमसकांअभ्यास्यौ ॥ उदधितरननरकरउठाइपुरषार्थप्रकास्यौ ॥ करुनाप्रसादरघुदेवके, हिततिहँसतमारगलह्यौ ॥ रघुपतिविलासरनवीररस, हैकछुक विनरहरकह्यौ ॥ ३ ॥ ॥ इति श्रीचतुर्विंशतिअवतारचरित्रे पौरुषेयरामा यणे महामुक्तिमार्गे वारहटनरहरदासेन विरचितं लंकाकांडं संपूर्णम् ॥ ॥

॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥

॥ अथउत्तरकांडप्रारंभः ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबउत्तरआरंभयो । राजतिलकरसरीति ॥ पृथ्वीर क्षाधर्मपन । पुरवासिनकीप्रीति ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ महाद्विजानिसन्मानराजसि रछत्रजुधारीय ॥ पाइवीररनजयप्रसादउरहर्षवधारीय ॥ लवनासुरवधविहितपुत्रलवकु शउतपन्नो ॥ प्रगटन्यायपसुपक्षिकर्महयमेधसुकिन्नो ॥ कुलराज्यवर्षदशसहसशत, अ षिलअवधिपुरउद्धरीय ॥ कीरतिपुनीतरघुपतिकहन, कविउत्तरआरंभकीय ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शतसुरपतिकैसीसभा । बैठेरामविचित्र ॥ बंधवमर्कट भालबनि । राक्षसमंत्रीमित्र ॥ २ ॥ द्विजवसिष्टगुरुआदिदै । वामदेवजावालि ॥ वा लमीकगोतमविमल । आइप्रेमप्रतिपालि ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कस्यपअगस्ति भृगुअत्रिव्यास ॥ अंगिराकणवद्विजहैदुर्वास ॥ मुनिविश्वामित्रपर्वतसपेष ॥ इत्यादिआ इऋषिवरअशेष ॥ उठिदयेरामआदरअनंत ॥ सोबैठिजथाक्रमपरमसंत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पाइसमयपरिषदप्रसिद्ध । पुनिआएसप्रमान ॥ चारनसिद्धजुचतुरचित । गुनगंधर्वसमा न ॥ ४ ॥ ॥ अथरामनामअधिकारप्रश्न ॥ ॥ शत्रुघ्नउवाच ॥ ॥ शत्रुघ नपूंछिवसिष्टसौं । सभामध्यसानंद ॥ रामरामइहिंनामकौ । कहियेमहतमुनिंद ॥ ५ ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ पितामहैसूप्रश्नमैं । कीनौंहोइककाल ॥ प्रानीकौंउद्धारपद । दे हुबताइदयाल ॥ ६ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जोगजज्ञकीसक्तिनजाके ॥ तीरथगमन दाननहिताके ॥ पुनिगुरुगम्यज्ञाननहिपायौ ॥ भटकतफिरैंकुसंगभ्रमायौ ॥ विनुबलउ द्यमदीनविचारौ ॥ तोप्रभुताकौंक्यौंनिस्तारौ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ यहजुगबीतेकलि जुगऐहै ॥ तबसबसाधनसिद्धिनसैहै ॥ करिहैंविप्रसूद्रकीकरनी ॥ वारविषममुहिजातन वरनी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भवचढिहैकलिजुगभरन । विनसेवेदविचार ॥ धर्महोहिअबछिन्न धर । सीदहिसाधसंसार ॥ ७ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ निगमपुराननिदानजबैनिर्मूलनसै हैं ॥ कृतद्विजगोअपकारमहततीरथमिटिजैहैं ॥ तपसासंजमनियमप्रानअभ्यासियमु क्कहिं ॥ वर्णधर्मकुलकृतविधानचतुराश्रमचुक्कहिं ॥ इत्यादिकर्मवसकालके, जज्ञनिस्सेषत जाइहैं ॥ कलिकेवलरघुपतिनामकहि, प्रानपरमपदपाइहैं ॥ १ ॥ जदिनध्यानतपयज्ञनियत व्रतदाननसैबो ॥ पितामातसेवाप्रकारपुनिषोजनपैबो ॥ सतसंगतिसेवानसाधश्रद्धाशुभल छन ॥ भक्तिभावपौरुषप्रभावमानैनसूलमन ॥ साचोविसासनरहरसुकवि, तवसबकाजसुधा रिहै ॥ करुनानिधानरघुरामकौ, एकनामउद्धारिहै ॥ २ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ काहिहैसुनिहैहि ताचितकोई ॥ हैद्विजवाअंत्यजकिनहोई ॥ इहांनवर्णअवर्णविचारै ॥ पशुपंषीअगजगहु उचारै ॥ कुंजरकवननेमव्रतकीनौ ॥ देवग्राहग्रहमोषजुदीनौ ॥ कहासरटअजगरकीकरनी ॥ ॥ विदुषपुरानतिनहुगतिवरनी ॥ अजामेलकोकर्मअराध्यो ॥ सुतहितनाममरतजोसाध्यो ॥ कर्मअहल्याअनुचितकीनौ ॥ देवताहिताकोपददीनौ ॥ गनिकाकहौकहाजसगायो ॥ निसिकेजागेपापवसायो ॥ व्याधकर्मकीकौनबडाई ॥ प्रभुकेहतेपरमपदपाई ॥ कीरकहा साधनधौंकीनौ ॥ देवकठोताजलभरदीनौ ॥ दुष्टकवंधकवनसुषदीनो ॥ करहतकरिगंध

वेंजुकीनो ॥ पुनिग्रीधहिंकिहितत्वपढायो ॥ लिप्तरुधिरतनप्रभुउरलायो ॥ कुंभकर्णषल मांगतकेवा ॥ दईदेवगतितताहूदेवा ॥ कंटकरावनदुष्टत्रिलोकी ॥ विधिताकीभुवभूतवि लोकी ॥ कहाइत्यादिमुकतकीकरनी ॥ वेदपुरानतिनहुगातिवरनी ॥ जगदुद्धारनामसोइ जानहु ॥ वारवारछलछांडिवषानहु ॥ गहिमनवाचरामगुनगावै ॥ पतितसुपैपूरनपदपा वें ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामनामपीयूषरस । प्रगटजुवेदपुरान ॥ ताकौवेदसुतत्वगुन । जानतशंभुसुजान ॥ १ ॥ पाइपरमकासीपुरी । जीवतकिहुंकृतजोग ॥ हरताकेउपदेसि हैं । प्रभुकौनामप्रयोग ॥ २ ॥ प्रानीकिहिहैहेतपर । मरतसमययहनाम ॥ पापीमहापु नीतपैं । मोष्यलहेहरधाम ॥ ३ ॥ इतिरामनामाधिकार ॥ ॥ अथदानाधिकारप्रश्न ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरद्वाजसौंभक्तिजुत । यहपूछीरघुराइ ॥ कहि येपद्धतिदानकी । जैसीवेदबताइ ॥ ॥ भरद्वाजउवाच ॥ ॥ पापकरैप्रानीपुहवि । जोकछुजानअजान ॥ भूमिदानगोचर्मगत । पावैनासनिदान ॥ ५ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ त्रयजबअंगुलइक्कमुष्टिअंगुलचवमंडीय ॥ षटमुष्टीकरइक्कसप्तकरदंडअषंडीय ॥ मु षमुषत्रिंशतटंडमानगोचर्मगनिज्जइ ॥ दशगोचर्मप्रमानभूमिद्विजदीनजुदिज्जइ ॥ ति हिंचर्ममानभूदानतैं, होहिनविपातिविपादवस ॥ सोलहैस्वर्गनरहरसुकवि, जगतरहेउ ज्वलसुजस ॥ ॥ दोहा ॥ देवजुषोडशआदिदै । करियतदानअनेक ॥ हैपृथ्वीसमको नही । वाचतवेदविवेक ॥ ६ ॥ दानसकलफलदातहै । षेत्रपावदिनदेषि ॥ पैसबतैंपूरन पुरुष । वसुधादानविशेष ॥ ७ ॥ तातैतुमरघुकुलतिलक । दानभूमिकोदेहु ॥ लिष्यौपुरा ननजुगतलों । अक्षयपुण्यसुएहु ॥ ८ ॥ अथपातकादिक ॥ ॥ आतमपरदत्ताअव नि । हरैजुकाहूहेत ॥ तातेपापप्रभावकौ । लाभनरकपरिलेत ॥ ९ ॥ अवनीपतिआज्ञा अनय । प्रतिग्राहकदैताप ॥ कुलतिनिसातदुहूनिके । पुरुषाभुक्तहिपाप ॥ १० ॥ पृथ्वी उदकप्रलोपकै । बाढतपापविधान ॥ ताकेमोचनजतनतहाँ । निगमनकहेनिदान ॥ ११ ॥ ॥ अवलौअतुलअनर्थयह । किहुंभूपतिहीकीन ॥ प्रायश्चित्ततातैप्रगट । वेदबताइनदी न ॥ १२ ॥ ॥ अथउत्तमादिक ॥ ॥ उत्तममध्यमनिकृष्टअरु । देवअफलजेदान ॥ सोसुनियेअवधेससब । निर्णयकहतनिदान ॥ १३ ॥ द्विजग्रहजाइअचिंतदिन । पूजि जथाविधिपाइ ॥ जोकछुदीजैशक्तिजुत । उत्तमदानकहाइ ॥ १४ ॥ पात्रआनिग्रहआप नै । समयसहितसन्मान ॥ करैजुहितचितभावकरि । देवमध्यसोइदान ॥ १५ ॥ कीनै जाचन्याकछु । दयौजुपात्रहिदान ॥ ताकहँकहतनिकृष्टतव । पृथ्वीनाथप्रमान ॥ १६ ॥ कीनैसेवाकष्टकै । पात्रदानजोपाइ ॥ तातैंयहत्रैलोकपति । कृतहैअफलकहाइ ॥ १७ ॥ सात्विकराजसतामसी । नियतत्रृविधहैदान ॥ आदिमध्यअवसानलौं । पुनिसोसुनहुप्र मान ॥ १८ ॥ अथतृविधदानप्रकार ॥ ॥ जोरिगांठित्रियसोजुगति । पढिविधिमंत्रप्र योग ॥ अपनैकरदीजैउचित । सात्विकदानसजोग ॥ १ ॥ कछूजुदीजतअन्यकर । मा निपात्रसनमान ॥ आलसवाऐश्वर्यते । देवसुराजसदान ॥ २ ॥ पात्रअनादरहितराहि त । हैकछुदीजतजाहि ॥ धर्मसुजसहितहीनविधि । तामसजानहुताहि ॥ ३ ॥ ॥ अथ

नैमित्तानित्यदान ॥ ॥ कारनकिंवानियमकारि । देतमहीपतिदान ॥ निगमकहतनैमि
त्तयह । देवअधिकनितदान ॥ ४ ॥ पात्रहिंछांडिकुपात्रकहँ । दानपिछानिनदेत ॥ जस
ताकौनहिंवढतजग । महिमाधर्मसमेत ॥ ५ ॥ ॥ अथअकामसकाम ॥ ॥ सोरठा
॥ ॥ देवउभयविधिदान, हैवर्ततसंसारमहँ ॥ निगमनिकह्योनिदान, एकअकामसकाम
इक ॥ त्यागधर्मकेहेत, स्मृतीबताईअकामसो ॥ तेकछुइहाँनदेत, लहतसुपैपरलोकफल॥
करिमनइच्छाकोइ, कहुकारनतैदानकिय ॥ जगसकामग्रहजोइ, याकोफलविलसतइहां ॥
॥ दोहा ॥ ॥ कहीजथाविधिदानकी । भरद्वाजऋषिराइ ॥ इहांभयोसंतोषअति । सुनि
श्रीरामसुभाइ ॥ ६ ॥ ॥ इतिदानप्रश्न ॥ ॥ अथश्रीरामराज्याभिषेक ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिवसिष्टदैवज्ञमिलि । शुभलक्षनदिनसाधि ॥ धर्योलग्नपं
चांगसुध । उत्तमरहितउपाधि ॥ १ ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ द्विजसबहिनआज्ञादई ।
सुनहुभरतसज्ञान ॥ रामतिलकअभिषेकअब । परिकरकरहुप्रमान ॥ २ ॥ ॥ भरतउ
वाच ॥ ॥ मंत्रीराजसुमंतसौं । कह्योभरतसुभकाज ॥ करियेरघुवरतिलकक्रम । सक
लसुमंगलसाज ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भरतसुमंतसुग्रीवसम । मिलिअंग
दहनुमान ॥ जामवंतजूथपसजय । कृतउद्यमकल्यान ॥ ४ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ इहांकपिभालकपीसपठए ॥ जेबलबुद्धिउचितउरआए ॥ सबसरितासागरजलसंगम॥
सप्तद्वीपमृत्तिकामहातम ॥ सर्वअद्रिमणिधातजथाशुभ ॥ देववृक्षपल्लवफलदुर्लभ ॥ पत्र
अठारभारवनपावन ॥ मिलिपंचांगजथामनुभावन ॥ सबतीरथकेनीरसकारन ॥ आने
तारकघटभरअनगन ॥ औषधमूलीउचितअसेषित ॥ दिव्यवस्तुजेविहितविशेषित ॥
अतिहीरामभक्तिकपिआतुर ॥ वस्तुषोजिवनवनपत्तनपुर ॥ उत्तमवस्तुसर्वलैआए ॥ जेव
सिष्टगुरुमंत्रिबताए ॥ जथाअंगनषसिषरोमनिजुत॥आनैसिंघचर्मत्रयअद्भुत॥ विधिवत
चतुरदंतसितवारन ॥ गुंजतमत्तकपोलमधुपगन ॥ शुभलच्छनतनवर्णसहाए ॥ वालिउ
तंगसुराजबनाए ॥ ऊमरिकाठसमयसिधिआए ॥ विचित्रविहितसुपीठबनाए ॥ कन्या
षोडशविप्रकुमारी ॥ स्वर्णाभूषणरत्नसिंगारी ॥ प्रतिगृहध्वजापताकातोरन ॥ वंदनमा
लविचित्रपत्रवन ॥ कलसकनकग्रहग्रहप्रतिकीने ॥ नगमनिजटितउतंगनवीने ॥ किन्नर
गंधर्वगाननित्यकर ॥ आनिमिलेमंगलमयअवसर ॥ विविधवितानानिसानजुबाजत ॥
गहरमनहुभाद्रवघनगाजत ॥ हयगयरथपयदलअनगानहि ॥ पूरनमिलिचतुरंगप्रमान
हि ॥ सुरमंदिरसबपूजतजाए ॥ महिमावैदिकदेवमनाए ॥ छंदपधरी ॥ ॥ ग्रहग्रहपुर
मंगलजुवतिगान ॥ वाजित्रविविधबांधेवितान ॥ मूलाग्रसहितकुशपत्रमेलि ॥ तुलसिका
मालतरुतरलकेलि ॥ त्रयतीसकोटिइहांअमरआइ ॥ छबिअमितविमाननिगगनछाइ ॥
अपछरानृत्यउच्छाहअंग ॥ आकासरच्यौनाटकअभंग ॥ सबभएआनिसंभारसिद्ध ॥
प्रभुतिलकसमयघटिकाप्रसिद्ध ॥ ॥ अथातिलक ॥ ॥ तहांसुभगहोमशालापुनीत ॥
बैठेवसिष्टऋषिवरविनीत ॥ इहिंब्रह्मदेवद्विजरूपआनि ॥ बैठेविख्यातचववेदबानि॥करिह
र्षजथाक्रमतिलककाज ॥ शुभदेहधारिसुरगनसमाज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामतिलकआ

नंदउर । सुरकपिनिरतनसाजि ॥ जडजंगमभवभूतजे । विधिक्रमजथाविराजि ॥ १ ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ उमर्रीकेपीढनिबैठिआइ ॥ औषधीसकलजलसौंअन्हाइ ॥ शुभम
ज्जनकीनैरामसीत ॥ परिधानवसनभूपनपुनीत ॥ अस्परसहोममंडलहिआइ ॥ विधि
जुक्तसमयभूषनबनाइ ॥ सिंघासनदशरथनृपतिसाज ॥ कनकमनिरतनमयतिलककाज ॥
बनिबैठेरघुपतिसीयावाम ॥ कारुन्यरूपरतिमनहुकाम ॥ कृतकुंडअग्निदीपितसकाज ॥
सिधिसमयसाजिगुरुमुनिसमाज ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ ऋषिवरवेदमंत्रउच्चारे ॥
विविधिविधानहोमविस्तारे ॥ देवजथाक्रमआहुतिदीनी ॥ कारनउचितजुपूजाकीनी ॥
साषोचारपढेविधिसंजुत ॥ सबैवसिष्टगुरूब्रह्मासुत ॥ कस्योवसिष्टतिलकशुभकारन ॥
रामचंद्रमस्तकविजईरन ॥ मस्तकमनिथालनिमुक्तागन ॥ मनुजलबिंदुपत्रगतपुरइन ॥
॥ सोरहकन्यासहितसुवासनि ॥ तहांआरतीकृतअहवातनि ॥ इहांगुरुवधूअरुंधति
आई ॥ करीआरतीपूजापाई ॥ आइजननिसवप्रेमअधीनी ॥ देवितिलकशुभआ
सिषदीनी ॥ पुनिमातासवग्रेहपधारी ॥ करतिगानजुवतीसुषकारी ॥ भरतलषनअ
रिघनत्रयपाई ॥ राजतिलककीनौरघुराई ॥ इष्टदेवकेमंदिरआए ॥ राजतिलकपाएरघु
राए ॥ कुलदेवीमंदिरहितकारन ॥ प्रभुकीनैशुभहोमजुक्तपन ॥ सस्त्रअस्त्रपूजातहांसाजी
॥ विधिवतपूजिजुरथगजवाजी ॥ इहांप्रभुराजसभामहँआए ॥ बैठेसिंघासनहिबनाए
॥ तहांसुग्रीवबिभीषनअतिहित ॥ जामवंतअंगदसमहरजित ॥ जूथपहनूमानसमजे
ते ॥ तिलककरैदेषतसुषतेते ॥ रघुवंसीनरपतिजेराजा ॥ करेतिलकमिलिमंत्रिसका
जा ॥ वरनचारिप्रभुचरनजुवंदित ॥ आनितिलककीनैआनंदित ॥ प्रजाप्रसन्नदरस
प्रभुपाए ॥ आदरलहिआनँदउपजाए ॥ होततिलकइंद्रादिकहरषे ॥ विबुधनिविजय
पुहपनभवरषे ॥ वसुधागगननिसानजुबाजे ॥ गिरिकंदरप्रतिधुनमिलिगाजे ॥ वाजे
घरघरनगरबधाई ॥ प्रभुअभिषेकमहासुषपाई ॥ ॥ अथदान ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ नियमसवामपूजिपदगुरुगन ॥ प्रथमहिकरेमनोरथपूरन ॥ नगरसक्तसतसांसनकी
नै ॥ देवउदककरिविप्रनिदीनै ॥ सुरभीलक्षस्वर्णश्रृंगारी ॥ उदकजुक्तविप्रनिअवधारी
अश्वदुरदरथमनिआभूषन ॥ ऊर्णासूत्रपाटंबरअनगन ॥ अनसंख्यातरौप्यकृतअर्पन
॥ त्रिंशतकोटिकनकमुद्रातन ॥ वृषभसहस्रचारिगुनअतिवल ॥ हेतद्विजनिदीनैसंजुतहल
॥ भावसहितजोजिहिमनभाए ॥ प्रभुअभिलाषसवनिपहुंचाए ॥ पृथीचक्रजाचकजन
पूरन ॥ याहीसमयदानकृतऊरन ॥ स्वेतछत्रशुभकनकदंडकारे ॥ सोभितअतिझाल
रिमुक्तासारि ॥ सत्रुघनलएछत्रसोइसोहत ॥ मनुपावसकेजलदविसोहत ॥ विमलच
मरसुग्रीवविभीषन ॥ ढारतदुहुंदिसमहामोदमन ॥ दर्पनलेजुवराजदिषावत ॥ विधि
जुतलक्ष्मनपानखवावत ॥ जांबुवंतनलनीलजथाक्रम ॥ हनुमतादिसेवाजुतसंजम ॥
वेत्रपानिदिगपालविचक्षन ॥ आज्ञाभरतकरतकृतअनअन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आनं
देसुरऋषिअषिल । समयविलोकिसुभाइ ॥ करजोरेअस्तुतिकरत ॥ प्रेममग्नसुषपाइ
॥ ॥ अथब्रह्मस्तुति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तुमहिमहामर्यादविश्वकेहितविस्तारीय ॥

सोपैंटरतअसेषधर्मकारनतनधारीय ॥ रजसततामसतृगुनआपइच्छाउपजाए ॥ एकते रूपअनेकवर्णलक्षनजुबनाए ॥ अद्भुतअनंतमायाअतुल, रामदेवप्रभुरावरी ॥ सुररहे भूलितामहसकल, काहुनसोपैवसकरी ॥ १ ॥ रजगुनतेतुमरामभएविधिसृष्टिबनाई ॥ स ततेविष्णुसरूपविविधकृतपोषबढाई ॥ तामसगुनत्रिपुरारिवेषसंसृतिजुविनासीय ॥ आ दिनमध्यनअंतएकतुमहीअविनासीय ॥ अनवद्यअनोपमअसहआति, रघुवरइच्छारा वरी ॥ करनीदुरंतकारनकरन, उरधारीसोइअनुसरी ॥ २ ॥ माधवतुमजगमांझजगत तुमहीमहँजानौ ॥ चारिषानिइकईसचौकभवभूतप्रमांनौ ॥ जथाकुंभशतजलसंजोगप्रति बिंवप्रकासत ॥ प्रगटचंद्रप्रतिमाप्रमानअभाआभासत ॥ घटनष्टहोतमहिनीरमिलि, काहुकालविशेषवसि ॥ संबंधरहितनरहरसुकवि, सुपैएकआकाससिस ॥ ३ ॥ तुमहिआ दिवाराहअषिलअवनीउद्धारीय ॥ सफररूपवेदनिसहाइषलसंषसंघारीय ॥ कमठपीठ काठिन्यमहामंदरजुअमायौ ॥ सुधाकाढिमथिषीरसिंधुअमरनिअचवायौ ॥ नरसिंघफा रिथंभानिकसि,रनहिरनाक्षसमारयौ ॥ बैठारिअंकबालकअवल, अरुप्रहलादउधारयौ ॥ ४ ॥ वामनतनविस्तर्यौबांधिबलिदैत्यविगोयौ ॥ विप्ररामइकवीसवारछत्रियकुलषोयौ ॥ रामतुमहिसन्यासरूपरनरावनमार्यौ ॥ इहिंअवसरबूडतअसेषधरधर्मउधार्यौ ॥ व्हैकृ षणतुमहिंव्रजविहरिहौ, बौद्धदयाविस्तारिहौ ॥ कलिअंतकल्किअवतारकरि, सबैअसुर संघारिहौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राममिटतमर्जादमहि । करतसुरूपअनेक ॥ सिद्धिभएन रहरसुकवि । तुमताएकहीएक ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ भक्तनित्यजुत भावतिलकउछवगुनकृततव ॥ सुनैलिषैवाचैसप्रेमरनविजयसराघव ॥ लोकविषैलहिलो कसकलसंतानसुसंपति ॥ आयुकीर्तिउद्यमअमोघमनसाविशुद्धमति ॥ श्रद्धासमेतनरह रसुकवि, यहीजतीकोउगाइहै ॥ तेइसाधअवारितलोकतव, प्रभुप्रसादतैपाइहै ॥ ६ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करुनानिधानतवभक्तिकरि । पावतपंथपुनीत ॥ तातैदुषसागतर त । भवभवसंतअभीत ॥ ॥ इतिब्रह्मस्तुति ॥ ॥ अथइंद्रादिकअमरस्तुति ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ जयरामदेवजुदेवरक्षकअवनिनरतनअवतरे ॥ रनमारदुष्ट मदंधरावनहेतसुरभुवभरहरे ॥ जयनिराकारनिरीहनिर्गुननिकटनित्यनिरंजने ॥ जयस क्तिकायसुसक्तिसंजुतवर्णनीलघनाघने ॥ तवमाययावसवहिनिरंतरनागसुरअसुरान रा ॥ भवभूतभावभविष्यभावनचारिवर्णचराचरा ॥ तेभ्रमतनिसिदिनदुषभाज नकर्मवसगुनकालके ॥ जगदीसदृष्टिप्रसादजगतीजनमुकतभवजालके ॥ संसा रनासकदुष्टआसुरभक्तिदेषीअघभरे ॥ रनमारिहमदेषतसुराघवअषिलपापीउद्धरे ॥ मुनित्रियापदरजपरसपावनभईपतिमनभावती ॥ सिलदेहतजिगोविंदगुनगनगईनि जपदगावती ॥ विधिशंभुअमरसुरेसवंदितचरनजेसचराचरा ॥ ध्वजवज्रअंकुशपद्मअं कितंतनमामिनरेश्वरा ॥ वनदंडअवनिसकंटकाकरदिवसनिसनहिंजानए ॥ प्रभुभ्रमतआ तुरमृगनिपाछैईशरहितउपानए ॥ मषभागअमरनिदएमाधवगंधद्वारसुहमयहे ॥ मिलि विविधरससबहवनसुरमुषरिष्टपुष्टसदारहे॥मषबाधकारिअसेषदशमुषभागवर्जितहमभए

नंदउर । सुरकपिनरतनसाजि ॥ जडजंगमभवभूतजे । विधिक्रमजथाविराजि ॥ १ ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ उमरीकेपीढनिबैठिआइ ॥ औषधीसकलजलसौंअन्हाइ ॥ शुभम
ज्जनकीनैरामसीत ॥ परिधानवसनभूषनपुनीत ॥ अस्परसहोममंडलहिआइ ॥ विधि
जुक्तसमयभूषनबनाइ ॥ सिंघासनदशरथनृपतिसाज ॥ कनकमनिरतनमयातिलककाज ॥
बनिबैठेरघुपतिसीयावाम ॥ कारुन्यरूपरतिमनहुकाम ॥ कृतकुंडअग्निदीपितसकाज ॥
सिधिसमयसाजिगुरुमुनिसमाज ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ ऋषिवरवेदमंत्रउच्चारे ॥
विविधिविधानहोमविस्तारे ॥ देवजथाक्रमआहुतिदीनी ॥ कारनउचितजुपूजाकीनी ॥
साषोचारपढेविधिसंजुत ॥ सर्बैवसिष्टगुरूब्रह्मासुत ॥ कह्योवसिष्टतिलकशुभकारन ॥
रामचंद्रमस्तकविजईरन ॥ मस्तकमनिथालनिमुक्तागन ॥ मनुजलबिंदुपत्रगतपुरइन ॥
॥ सोरहकन्यासहितसुवासनि ॥ तहांआरतीकृतअहवातनि ॥ इहांगुरुवधूअरुंधति
आई ॥ करीआरतीपूजापाई ॥ आइजननिसबप्रेमअधीनी ॥ देवितिलकशुभआ
सिषदीनी ॥ पुनिमातासबग्रेहपधारी ॥ करतिगानजुवतीसुषकारी ॥ भरतलषनअ
रिघनत्रयपाई ॥ राजतिलककीनौरघुराई ॥ इष्टदेवकेमंदिरआए ॥ राजतिलकपाएरघु
राए ॥ कुलदेवीमंदिरहितकारन ॥ प्रभुकीनेशुभहोमजुक्तपन ॥ सस्त्रअस्त्रपूजातहांसाजी
॥ विधिवतपूजिजुरथगजवाजी ॥ इहांप्रभुराजसभामहँआए ॥ बैठेसिंघासनहिबनाए
॥ तहांसुग्रीवविभीषनअतिहित ॥ जामवंतअंगदसमहरजित ॥ जूथपहनूमानसमजे
ते ॥ तिलककरैदेषतसुषतेते ॥ रघुवंसीनरपतिजेराजा ॥ करेतिलकमिलिमंत्रिसका
जा ॥ वरनचारिप्रभुचरनजुवंदित ॥ आनितिलककीनैआनंदित ॥ प्रजाप्रसन्नदरस
प्रभुपाए ॥ आदरलहिआनँदउपजाए ॥ होततिलकइंद्रादिकहरषे ॥ विबुधनिविजय
पुहपनभवरषे ॥ वसुधागगननिसानजुबाजे ॥ गिरिकंदरप्रतिधुनमिलिगाजे ॥ वाजे
घरघरनगरबधाई ॥ प्रभुअभिषेकमहासुषपाई ॥ ॥ **अथदान** ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ नियमसवामपूजिपदगुरुगन ॥ प्रथमहिकरेमनोरथपूरन ॥ नगरसप्तसतसांसनकी
नै ॥ देवउदककरिविप्रनिदीनै ॥ सुरभीलक्षस्वर्णश्रृंगारी ॥ उदकजुक्तविप्रनिअवधारी
अश्वद्विरदरथमनिआभूषन ॥ ऊर्णसूत्रपाटंबरअनगन ॥ अनसंख्यातरौप्यकृतअर्पन
॥ त्रिशतकोटिकनकमुद्रातन ॥ वृषभसहस्रचारिगुनअतिबल ॥ हेतद्विजनिदीनैसंजुतहल
॥ भावसहितजोजिहिमनभाए ॥ प्रभुअभिलाषसबनिपहुंचाए ॥ पृथीचक्रजाचकजन
पूरन ॥ याहीसमयदानकृतऊरन ॥ स्वेतछत्रशुभकनकदंडकारि ॥ सोभितअतिझाल
रिमुक्तासारि ॥ सत्रुघनलएछत्रसोइसोहत ॥ मनुपावसकेजलदविसोहत ॥ विमलच
मरसुग्रीवविभीषन ॥ ढारतदुहुंदिसमहामोदमन ॥ दर्पनलेजुवराजदिषावत ॥ विधि
जुतलक्ष्मनपानखवावत ॥ जांबुवंतनलनीलजथाक्रम ॥ हनुमतादिसेवाजुतसंजम ॥
वेत्रपानिदिगपालविचक्षन ॥ आज्ञाभरतकरतकृतअनअन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आनं
देसुरऋषिअषिल । समयविलोकिसुभाइ ॥ करजोरेअस्तुतिकरत ॥ प्रेममग्नसुषपाइ
॥ ॥ **अथब्रह्मस्तुति** ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तुमहिमहामर्यादविश्वकेहितविस्तारीय ॥

सोपैटरतअसेषधर्मकारनतनधारीय ॥ रजसततामसतृगुनआपइच्छाउपजाए ॥ एकते रूपअनेकवर्णलक्षनजुबनाए ॥ अद्भुतअनंतमायाअतुल, रामदेवप्रभुरावरी ॥ सुररहे भूलितामहसकल, काहुनसोपैवसकरी ॥ १ ॥ रजगुनतेतुमरामभएविधिसृष्टिबनाई ॥ स ततेविष्णुसरूपविविधकृतपोषबढाई ॥ तामसगुनत्रिपुरारिवेषसंसृतिजुविनासीय ॥ आ दिनमध्यनअंतएकतुमहीअविनासीय ॥ अनवद्यअनोपमअसहअति, रघुवरइच्छारा वरी ॥ करनीदुरंतकारनकरन, उरधारीसोइअनुसरी ॥ २ ॥ माधवतुमजगमांझजगत तुमहीमहँजानौ ॥ चारिषानिइकईसचौकभवभूतप्रमांनौ ॥ जथाकुंभशतजलसंजोगप्रति बिंवप्रकासत ॥ प्रगटचंद्रप्रतिमाप्रमानअभाआभासत ॥ घटनष्टहोतमहिनीरमिलि, काहुकालविशेषवसि ॥ संबंधरहितनरहरसुकवि, सुपैएकआकाससि ॥ ३ ॥ तुमहिआ दिवाराहअषिलअवनीउद्धारीय ॥ सफररूपवेदनिसहाइषलसंषसंघारीय ॥ कमठपीठ काठिन्यमहामंदरजुभ्रमायौ ॥ सुधाकाढिमथिषीरसिंधुअमरनिअचवायौ ॥ नरसिंघफा रिथंभानिकसि,रनहिरनाक्षसमारयौ ॥ बैठारिअंकबालकअवल, अरुप्रहलादउधारयौ ॥ ४ ॥ वामनतनविस्तर्योबांधिबलिदैत्यविगोयौ ॥ विप्ररामइकवीसवारछत्रियकुलषोयौ ॥ रामतुमहिसन्यासरूपरनरावनमार्यौ ॥ इहिंअवसरबूडतअसेषधरधर्मउधार्यौ ॥ व्हैकृ ष्णतुमहिंव्रजविहरिहो, बौद्धदयाविस्तारिहो ॥ कलिअंतकल्किअवतारकरि, सबैअसुर संघारिहो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राममिटतमर्जादमहि । करतसुरूपअनेक ॥ सिद्धिभएन रहरसुकवि । तुमतोएकहीएक ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ भक्तनित्यजुत भावतिलकउछवगुनकृततव ॥ सुनैलिषैवाचैसप्रेमरनविजयसराघव ॥ लोकविषैलहिलो कसकलसंतानसुसंपति ॥ आयुकीर्तिउद्यमअमोघमनसाविशुद्धमति ॥ श्रद्धासमेतनरह रसुकवि, ग्रहीजतीकोउगाइहै ॥ तेइसाधअवारितलोकतव, प्रभुप्रसादतैपाइहै ॥ ६ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करुनानिधानतवभक्तिकरि । पावतपंथपुनीत ॥ तातैदुषसागतर त । भवभवसंतअभीत ॥ ॥ इतिब्रह्मस्तुति ॥ ॥ अथइंद्रादिकअमरस्तुति ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ जयरामदेवजुदेवरक्षकअवनिनरतनअवतरे ॥ रनमारदुष्ट मदंधरावनहतसुरभुवभरहरे ॥ जयनिराकारनिरीहनिर्गुननिकटनित्यनिरंजने ॥ जयस क्तिकायसुसक्तिसंजुतवर्णनीलघनाघने ॥ तवमाययावसवहिनिरंतरनागसुरअसुरान रा ॥ भवभूतभावभविष्यभावनचारिवर्णचराचरा ॥ तेभ्रमतनिसिदिनदुषभाज नकर्मवसगुनकालके ॥ जगदीसदृष्टिप्रसादजगतीजनमुकतभवजालके ॥ संसा रनासकदुष्टआसुरभक्तिदेषीअघभरे ॥ रनमारिहमदेषतसुराघवअषिलपापीउद्धरे ॥ मुनित्रियापदरजपरसपावनभईपतिमनभावती ॥ सिलदेहतजिगोविंदगुनगनगईनि जपदगावती ॥ विधिशंभुअमरसुरेसवंदितचरनजेसचराचरा ॥ ध्वजवज्रअंकुशपद्मअं किततंनमामिनरेश्वरा ॥ वनदंडअवनिसकंटकाकरदिवसनिसनहिंजानए ॥ प्रभुभ्रमतआ तुरमृगनिपाछैईशरहितउपानए ॥ मषभागअमरनिदएमाधवगंधद्वारसुहमग्रहे ॥ मिलि विविधरससबहवनसुरमुषरिष्टपुष्टसदारहे॥मषबाधकारिअसेषदशमुषभागवर्जितहमभए

॥ अबपाइसोइभवभक्षपूरनमानजुतकरुणामए ॥ सुषहरेजिहिंलंकेसराक्षसदेवहमभएदीन ॥ रनमारिचंडप्रचंडरावननिषलनिर्भयकीन ॥ तजिआसअवरउदाससबतेहेततवगुनगावहीं ॥ प्रभुनामभक्तिप्रतापपूरनपरमपदसोइपावहीं ॥ ॥ दोहा ॥ प्रभुयहमाँगतबांधिपनभएविबुधबडभाग ॥ कीनौंदरसनभाग्यकृत । अबचरननिअनुराग ॥ ॥ इतिइंद्रादिदेवस्तुति ॥ ॥ अथऋषिस्तुति ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ रामनमामिस्यामतनसुंदर ॥ नीलकमलदलवर्णदेहनर ॥ रामनमामिदुष्टदलदूषित ॥ आजितअंगअंगप्रतिभूषित ॥ रामनमामिसिंघासनराजित ॥ वामअंगजानकीविराजित ॥ ॥ छंदपधरी ॥ तुमआदिमध्यअवसानएक ॥ आकाररचतमायाअनेक ॥ दुस्साध्यसुरासुरहूदुरंत ॥ अषिलेश्वरतवमायाअनंत ॥ तुमतिहिंअलिप्तमायाउदार ॥ इच्छासुकरतलीलाअपार ॥ तवअंसअवनिअवतारलेत ॥ हरिसहतजुसंकटदीनहेत ॥ अन्नादिकओषधआपअंस॥ प्रभुअजेहेतआमयप्रसंस ॥ उद्भिजहितससिहरअनिलआप ॥ मिलिपोषकारमहिमाअमाप ॥ भोजनहितप्रानीभूमिभूप ॥ पाचकप्रसिद्धहुतवहसुरूप ॥ जलशोषकशोषककिरणजाल ॥ भवभूतहेतादिनकरभुवाल ॥ सूरतनप्रभाधइरजसुभाव ॥ प्रानीजुवहतसोइप्रभुप्रभाव ॥ विधिविष्णुरुद्रतवतनविभेद ॥ संसाररचतपालकसछेद ॥ मिलिकालकर्मअहनिसामान ॥ शशिमिहिरभूतआयुषप्रमान ॥ तुममीनरूपकीनौमहंत ॥ उद्धारिवेदआनैअनंत ॥ यहधर्मअषिलवेदनिअधीन ॥ महिकरयोप्रगटतुमदेवमीन ॥ प्रभुधर्महेततुमहीप्रमान ॥ आधारउपाजककोउनआन ॥ ॥ दोहा ॥ तवमायाप्रेरितअगम । नहिंजानतअज्ञान ॥ भवतातैभूलैभ्रमत । हैभवभूतभयान ॥ ॥ अथदिगपालस्तुति॥ ॥ कवित्त ॥ दिगरक्षाहितदेवहमहिंदिगपतिपददीनै ॥ जथानीतिव्यवहारजोगकृतउचितजुकीनै ॥ कर्मदुष्टलंकेशपापजवकरतपयानौ ॥ भवनछांडिदिसदिससभीतभुवपरतभगानौ ॥ काकुस्थरामनरदेहकरि, जगअजीतराक्षसजए ॥ सबटरेसालनरहरसुकवि, आजअकंटकहमभए ॥ ॥ अथवेदस्तुति ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ वेदइहांद्विजरूपबनि । आएसहितउछाह ॥ हर्षविषादजुमध्यहिय । हितदृगनीरप्रवाह ॥ ॥ वेदउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ हरेहमहिहठहोइदुष्टसंखासुरदारुन ॥ नष्टभएधरधर्मब्रह्मादिगमूढविचारन ॥ जग्यहोमजपजोगविप्रविद्यासविनासी ॥ द्विजपायोसूद्रत्वहोतजितहीतितहांसी ॥ व्यवहारचलतनहिवेदविन, इहाँविरंचितसोचआति ॥ कीनीपुकारकारनकरन, त्राहित्राहित्रैलोकपति ॥ १ ॥ धर्मसहाइकधरउधारप्रतिकल्पनिकीनै ॥ दुषितदेषिजनदीनदेवनिर्भयपददीनै ॥ भएमहातनमीनअषिलगतानिगमउधारे ॥ कर्महव्यकव्यादिविबुधहितजगतविथारे ॥ करुनानिधानविधिवेदके, दुसहसूलसंसयदमन ॥ संसृतिसहायनरहरसुकवि, रामजयतिसीतारमन ॥ ॥ अथजक्षस्तुति॥ ॥ यक्षउवाच॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हुतेजुवाहकभारहम । रावनकेघरराम ॥ निद्रानैननसैननिसि । सुषनहिंभोजनभाम ॥ १ ॥ समयरहेइहिंदुष्टसौ । प्रतिछनकंपितप्रान ॥ सोरावनमारयोसकुल । नरतपकृपानिधान ॥ २ ॥ मुक्तभएदुषजालहम । टरेसवैभवताप ॥ भयोयक्ष

मंडलअभय । प्रभुरघुनाथप्रताप ॥ ३ ॥ ॥ अथपितृस्तुति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ गया श्राद्धकृतकुंठकरतजोमनुजउचितक्रम ॥ अन्नपिंडतिलउदकहव्यकव्यादिलहततहम ॥ सुपैअसुरदशशीसबाधकीनैजुकर्मबल ॥ दलकुलजुतरघुदेवषेतमाय्यौसुमहाषल ॥ हम पितरलोकसुषपाइहैं॥कृपातृप्तिरघुराइकै॥ आनंदपितरगनउच्चरे, करुनावचनसुभाइकै ॥ ॥ अथगंधर्वस्तुति ॥ दोहा ॥ हुतेनिपुनसंगीतहम । गावतनितगुनग्राम ॥ आनंदा मृतपूरिउर । रामतिहारेनाम ॥ १ ॥ दुष्टदसाननडरदुसह । भूलिभएदुषभाज ॥ गान कलासंगीतगति । आईसबसुधिआज ॥ २ ॥ अथउरगस्तुति ॥ ॥ सीसतपेभुवभार सौं । पीडितभईजुपाप ॥ कह्योमहोरगजोरिकर । दुसहटरेदुषदाप ॥ ३ ॥ पृथ्वीवाक्यं ॥ ॥ सुरभीरूपवसुंधरा । करिहितप्रनपातिकीन ॥ महाभारटरिअसुरमृत । देवअभय मुहिदीन ॥ १ ॥ पशुपक्षीभवभूतपनि । जेजडजंगमजंतु ॥ कंटकमाय्यौसहितकुल । टा य्योदुषदुरंतु ॥ ॥ अथशिवस्तुति ॥ ॥ छंदतोटक ॥ जयरामअनादिअनंतरयं ॥ अ नवद्यअषंडअजोअभयं ॥ निर्लेपनिरीहनिरंजनयं ॥ अविलोकनतत्वदगंजनयं ॥ निरभी तनिरामयधर्मनिधे ॥ वपुभेदशिवेनहरेनविधे ॥ अघमत्तमतंगमृगेशमहा ॥ प्रणतारति पालकपुंजपहा ॥ भवसागरतारनपोतभए ॥ जगतीअघदुष्टसमूहजए ॥ अननीतिनिसास जनीनिरयं ॥ महतेजसुताहितअर्कमयं ॥ अघपुंजअधारनिवारनयं ॥ अनषंडितजोतिसु दीपकयं ॥ अघअर्णवहेतसुमेरहरे ॥ इंद्रादिकभावदरीउवरे ॥ तवनामउपायनआनतहां ॥ जनग्रासितआमयपापजहां ॥ वनपापविनासहुतासविभो ॥ घनपातकघातनचातप्रभो॥ भवमंगलरौरवपुंजभए ॥ जलधारनिवारनरामजए ॥ विषयाकृषिउत्तरवातवहे ॥ दलकूप लसेअभिलाषदहे ॥ रविकोटिप्रभासुप्रतापरजे ॥ भगवंतअनंतजुसंतभजे ॥ विधिको टिभवंरचनारचनं ॥ जमकोटिविनासकवैरिजनं ॥ वलकोटिप्रभंजनरामबली ॥ थितको टिसुरेसविलासथली ॥ गंभीरजुकोटिसमुद्रगने ॥ व्रहमंडजुविग्रहकोटिबने ॥ महिशेष जुकोटिनमोहसनं ॥ मिलिसोभतकोटितनंसदनं ॥ पदतीरथकोटिसुपापपहा ॥ मिलिसं गतरंगजुगंगमहा ॥ हयमेधसुरौरवकोटिहरं ॥ कलपत्तरकोटिनिसिद्धकरं ॥ गनिकामद कोटिककामगवे ॥ चिंतामनिकोटिजुवेदचवे ॥ रघुरामअकामजुनामरसे ॥ विपदासम वैभवचित्तवसे ॥ रघुवीरसधीरजुभक्तिरये ॥ भवसागरपारसुसामभये ॥ परसेपदपारस प्रेममए ॥ भवभूतकुजोनिसुजोनिभए ॥ जगपावनपातकहापदजे ॥ असुरासुरवंदित शंभुअजे ॥ भवहेततहांउतपत्तिभई ॥ मंदाकिनिमूरतिपुन्यमई ॥ श्रुतकुंडलसीसकिरी टसजे ॥ भुजवामसकामसवामभजे ॥ कमलायतलोचनकारुनयं ॥ मुषवाचसुधासमस त्यमयं ॥ पटपीतविसालसरीरबनै ॥ तडिताघनमानहुसोभसनै ॥ कटिषग्गविजैजमदा डकसी ॥ लीलादिसिवामजुचर्मलसी ॥ शुभभालभुजापंचाननसे ॥ कटिसिंघअभंगनि षंगकसे ॥ करकंजमहाधनुबाणधरे ॥ कृतमानहुकामअभ्यासकरे ॥ क्रोधानलराक्षसजूथ जरे ॥ हितदेवनमामिनमामिहरे ॥ हठिबीसभुजादशसीसहयौ ॥ भवभूतसभीतअभी तभयौ ॥ महराक्षसरावनषेतमय्यौ॥तुमरामकृपाभुवभारटय्यौ ॥ कृतदेहनरेसदिनेसकुले॥

॥ असुरेसअसेसंजुमानमले ॥ पृथ्वीसनरेसदिनेसप्रभा ॥ भुवनेसविसेसनरेसससभा ॥ ॥
अथशिवकृतरामनामप्रसंसा ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रामतिलकउच्छवरसालसुनिपढै
सुनावै ॥ पुराकल्पकृतपापनिषिलछनमांझनसावै ॥ संपतिविजयसमेतआयुरारोग्यअ
निदित ॥ सर्वदेवसंतुष्टवंसमहहोइसुवंदित ॥ वंध्यापिपुत्रपावैविहित, पतिसुहागपदपा
इहै ॥ श्रद्धासमेतनरहरसुकवि, हेतरामगुनगाइहै ॥ १ ॥ अर्थधर्मअरुकाममोक्षवांछा
जुकैरैमन ॥ रहसिरामसुनिरीझरसिकवाचैपारायन ॥ उरविशुद्धसुचिअंगनियमजुतर
हैनिरंतर ॥ जतीव्रतीसंजमीग्रहीविषईविरागनर ॥ कृतविजयरामनृपतातिलक, जोम
नवाचसंभारिहै ॥ निहचैनरेसदशरथसुतन, तिहिंअवधेसउधारिहै ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥
कृतरघुपतिअभिषेककौ ॥ क्रमश्रद्धाजुतकोइ ॥ सुनैसुनावैप्रेमसौं। हितवंछितफलहोइ ॥
१ ॥ सोपावैसुषसंपदा । आयुर्बलजसआप ॥ मरतरामकौनाममुष ॥ प्रगटैभजनप्रता
प ॥ २ ॥ विषईविरक्तभाववस । रामरूपउरराषि ॥ साधैदोऊभवसुगम । सुषपावैसुरसा
षि ॥ ३ ॥ प्रभुतवभक्तिप्रभावतैं । कासीवसिनिष्काम ॥ सबप्रानिनिपरबोधिहूं । राम
तिहारौनाम ॥ ४ ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ रामरामयहमंत्र, चतुरक्षरतारकअतुल ॥ सो
भवभूतसुतंत्र, अंतकालउपदेसिहुं ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिदरसननृपताति
लक । शंभुगएकैलास ॥ जिनहिंरामरसरूपकौ । सबविधिउरविश्वास ॥ ॥ कवित्त ॥
इहांअवधिपुरआइनिषिलत्रैलोकनिवासी ॥ देवमहोत्सवतिलकदेषिअतिभक्तिउपासी ॥
चारनसिद्धप्रसिद्धगीतहितविरदजुगाए ॥ सुरनिबरषिनभसुमनविजयनीसानबजाए ॥
पाएनिकंटकआपपद, क्रमग्रहग्रहमंगलकरे ॥ कृतविजयकहतनरहरसुकवि, सबस्वस्थान
नकसंचरे ॥ ॥ अथवीरजयप्रसादप्राप्ती ॥ जूथपजूथस्वगृहेगमनं ॥ ॥ श्रीराम
उवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्योदिवसषट्मासको । प्रभुकपिजनकीप्रीति ॥ सेवाफलपा
वतसकल । राजनीतियहरीति ॥ १ ॥ रामकहतकपिराजसौं । सुनियेसषासुजान ॥ मे
रेकीनेकाजतुम । केतककरौंबषान ॥ २ ॥ ममहितसुषगृहसंपदा । सोसबतजेसुभाइ ॥
क्रममनवचनसेवाकरि । प्रगटजुद्धजयपाइ ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कविरुवाच
॥ ॥ ॥ पहिराइवसनभूषनप्रमान ॥ धरिपानिसीसकरुनानिधान ॥ अर्पीकुबेरमालाजु
आनि ॥ प्रभुदईरीझसुग्रीवपानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंगदकपिकहँआपनें । अंगददए
अनंत ॥ हितवक्ताअतिबलहठी । सेवकपरमजुसंत ॥ ४ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिअं
गदमस्तकदयौपानि ॥ जयवंतजोधाअतिबलीजानि ॥ ॥श्रीरामउवाच ॥ ॥ कीनौ
सुविदाकपिमहाकाइ ॥ जुवराजकिष्किंधाकरहुजाइ ॥ अबविजयसहितग्रहजाहुवीर ॥
सुषसमयभोगविलसहुसरीर ॥ किहुकालकरहुभयनाहिनकोइ ॥ हमकृपावसहुनिस्संक
होइ ॥ शुभतारारोमान्हैसनाथ ॥ सियवंदिचलीभर्त्तारसाथ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जासु
वंतदेआदिजे । जूथपजूथसुजान ॥ सबदिनएभूषनसमाझि । प्रभुबहुमूल्यप्रमान ॥
५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सनमानजथाजूथपसजूथ ॥ वरवीरचलेवानरवरूथ ॥ जरजी
रनविजयीजांबुवंत ॥ सनमानिकह्योसोविदासंत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देवबिभीषनकहँदए।

आभूषनसबअंग ॥ पुनिकीनीमनुहारिप्रभु । पूरनप्रेमप्रसंग ॥ ६ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अवधेसचितैलंकेसओर ॥ कहिकृपावचनदशरथकिसोर ॥ हितसहितविभीषनग्रेहजाइ ॥ सुषलंकभजहुसंपतिसुभाइ ॥ कुलउचितकरहुक्रमजुक्तकाज ॥ राक्षसदलसंजुतत्रकुटराज ॥ मतकरहुसंककोउचित्तमाह ॥ छितिपालहुतवममछत्रछांह ॥ करिअभयविभीषनविदाकीन ॥ देवाधिदेवसिरछत्रदीन ॥ नरपतिनिषादनिजसषाजानि ॥ पहिराइसुभूषनआपपानि ॥ ग्रहराजबालसेवकविचारि ॥ उरलाइउचितवचननिउचारि ॥ आज्ञायहदीनीअवधिईस ॥ महिग्रेहजाइभुक्तहुमहीस ॥ सुषपाइचलहुपुनिहमहिसंग ॥ अबकछुककालविलसहुअभंग ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सबहिनकेकरिकरिसमाधान ॥ प्रभुकरेविदापूरनप्रमान ॥ भरतादिकमिलिरघुवीरभ्रात ॥ पहुंचाइप्रगटविनयाविष्यात ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ किष्किंधाजुवराजजुत । इहांकपिराजाआइ ॥ विजयीजूथपजूथकपि । सबग्रहगएसुभाइ ॥ ७ ॥ पाइअकंटकलंकपुर । आइविभीषनग्रेह ॥ पर्जागतिसंपतिप्रभुत । विलसतसहितसनेह ॥ ८ ॥ मंगनद्विजआसामुषी । प्रभुप्रसादसबपाइ ॥ जाकेजियवंछितजथा । आदरसहितअघाइ ॥ ९ ॥ श्रीरामचितैहनुमंततन । पूरनकृपाप्रमान ॥ वरमाँगहुवंछितविहित । मारुतिजोमनमानि ॥ १० ॥ देवनिजोप्रभुतादुर्लभ । तीनलोककीलेहु ॥ सबबिधिमारुतिसंतसुष । भुक्तहुसहितसनेहु ॥ ११ ॥ ॥ मारुतिरुवाच ॥ ॥ कहिहनुमंतसुजोरिकर । पूरनब्रह्मपुनीत ॥ विश्वंभरममउरबसहु । सानुजसंजुतसीत ॥ १२ ॥ नैनदरसमुषनामरट, हितमुहित्रिपतिनहोइ ॥ यहमेरेअभिलाषउर । संततकरियेसोइ ॥ १३ ॥ रविमंडलजौंलैरघू । रामतिहारौनाम ॥ मेरोतनतौलौंअमर । करहुसपूरनकाम ॥ १४ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रियदीनौसीतहिप्रथम ॥ हितमुक्ताफलहार ॥ नैनसैनकृतजानकी । आज्ञारामउदार ॥ १५ ॥ सीताहारउतारिसौं । पहिरायौनिजपानि ॥ हेतसहितहनुमंतकह । जनितधर्मसुतजानि ॥ १६ ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ कह्योसियासुनिपुत्रकपि । जहांरहिहोसुषजोग ॥ जरामरनवर्जितसजय । भवमनवंछितभोग ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ आज्ञादीनीरामयह । तपकरियैहिमवंत ॥ ताकेफलभुक्तहुअतुल । मनवंछितहनुमंत ॥ १८ ॥ ॥ अथश्रीरामराज्यप्रतापमहिमावर्णनं ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सिंघासनदशरथनरेसरघुरामविराजित ॥ सघनवरनतनस्यामतडितपटपीतसुछाजित ॥ प्रभाकोटिदिनकरप्रतापसशिकोटिसुसीतल ॥ मदनकोटिसोभामहीपबाढतप्रतिपलपल ॥ राजाधिराजरविवंसरवि, विश्वईसममउरबसहु ॥ करजोरिकहतनरहरसुकवि, रूपअनूपमदृगरसहु ॥ १ ॥ सुनतसोकसंतापपुत्रपितुभक्तिपरायन ॥ व्यालव्याधिवैधव्यजगनभयचौरचाटजन ॥ अहितशोकअनकालअंतडरप्रेतनडाइनि ॥ रिपुअनर्थभयरहितसकलकुलजलतसुभाइनि ॥ चववर्णचारिआश्रमअचल, एकधर्मव्रतआचरन ॥ वानीविचित्रवाचासव्रत, रामराजजनअनुसरत ॥ २ ॥ फूलिफलितवनवागविचित्रषटरितुहिविराजित ॥ सुरभिदुग्धबहुश्रवतिसिंघगजवयरनसाजत ॥ सरसरितासंततसनीरसरसिजसरसावहिं ॥ सदामत्तमातंगपापफलपापीपावहि ॥ मोचनइकमानजु

माननी, बालकगुरुसज्यागमन ॥ भवनहिनअनयदालिद्रभय, राज्यरामसीतारमन ॥३॥ त्रविधिरोगकफबातापित्तसवरहितप्रानसुष ॥ तीनितापनहितहांदैहभौतिकदैविकदुष ॥ सप्तइतीसंजोगमिलिनशलभाशुकमूपा ॥ चक्रआपपरचक्रअतिहिवर्षाअनवर्षा ॥ गनिधर्मअर्थअरुकामगति, साधनसाधसधीरके ॥ सुषवसतलोकवर्जितविसन, कृपाराजरघुवीरेक ॥ ४ ॥ जरामरनजमजालनियतस्वप्नैभयनांही ॥ संपतिविद्यारूपसबैविलसतसतभांहीं ॥ ध्वजाकंपचक्रिविजोगहितकीचितचोरी ॥ वयमुग्धाअनुभवविहीनभामिनिमतिभोरी ॥ निर्दईपलासीजंतुनित, एकसर्वभक्षीअनल ॥ सकमारसारिचौगानसिर, रोषघावषगसीसषल ॥ ५ ॥ सबलसरिसबलसाजविविधसरचापीबंधन ॥ कसाघातहयकरनविषममुक्ताउरवेधन ॥ आतपत्रदढदंडदाहअगरहिगहिदिज्जइ ॥ वचननिठुररसनविषयफागुनिलज्जफिरिज्जइ ॥ करियेडरएकअलोकको, लोभधर्ममनलेषिये॥विद्याविवादवानीविदुष, रामराज्यअवरेषिये ॥६॥ सहजवातसंभ्रमीरमतहोरीदिनगारी ॥ सून्यसदनसंचारमहाछलकृतमंजारी ॥ स्वर्णतेइइकहीसुनारनरछायानिंदित ॥ सहजवक्रगतिसर्पतृषाआतुरचातकचित ॥ विपरीतअंकमुद्राविहित, विद्याविसनवधारिये ॥ वारणविशेषअंकुशवहत, हठिजूवामहहारिये ॥ ७॥ सघनकालरुचिअवहिनिषिलभुविअन्ननिरंतर ॥ वहहित्रिविधिशुभवातप्रगटचववर्णपुन्यपर ॥ नृपतिनीतिअनुसरनसकलविधिसानुकूलसुर ॥ जथासुरालयतीनिकालपूजापत्तनपुर ॥ पतिव्रतानारिपतिप्रेमपन, एकनारिव्रतपतिअषिल ॥ काकुस्थराजनरहरसुकवि, आहिचित्रप्रतिमाअमिल ॥ ८ ॥ गमननीचपथनीरवधजुदालिद्रदयाविन ॥ कामिनिकुटिलकटाक्षविषमशृंषलगजबंधन ॥ सप्तद्वीपनवषंडवसीपृथ्वीधनपूरन ॥ पुन्यचलेचहुंपाइअषिलभएजाचकऊरन ॥ करुणानिधानरघुरामके, कीर्तिराजवर्णनकरे ॥ शुभमुक्तिजाचिनरहरसुकवि, आपकर्मकृतउद्धरे ॥ ९ ॥ कमठपीठिथितकरीयअवनिभाजनअनषंडीय ॥ सिंधुसातमिलितैलमेरगिरवर्तिसुमंडीय ॥ जोतिअर्कद्वादशजगंतकारिगगनसुकज्जल ॥ सलभजूथजारिसत्रुसेनअधपतिआषंडल ॥ विस्तारभवनब्रह्मंडबिच, भयनवाततहांसंभवै ॥ कारुण्यरामरघुकुलतिलक, तवप्रतापदीपकतवै ॥ १० ॥ प्रथीकोटिपंचासमेरुमर्जादामंडित ॥ महाउदधिमेखलाखानिचरअचरअषंडित ॥ आनंदितदिगदेवदशहुदिशकूणनडोलत ॥ वरषहिपुहपविशेषविबुधजयजयनभबोलत ॥ नवषंडडंडभुववैभरहि, तवप्रतापदिनकरतवै ॥ अवधेसराममहिमाअतुल, एकछत्रमहिभुक्तवै ॥११॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ इंद्रकेविलाससुषवाससमतानआवैसंपदाकुवेरसतसमनसुभाईकी ॥ कोटिकोटिभासकरपूरणप्रतापपुंजपुन्यजलचलेयहमहिमाजुपाईकी ॥ पूरणभगतिनरहरकविदानपायौचौपवढीसुजसकहतचितचाईकी ॥ सातद्वीपसातौंसिंधुमध्यवासीहारसेवैऐसीरजधानीमानीरामरघुराईकी ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कीयवर्णननरहरसुकवि । शक्तियथामतिसंग ॥ शेषसहसजुगजीहसौं । औरनलहतअभंग ॥ ॥ अथभरथप्रश्न ॥ ॥ श्रीरामज्ञानोपदेश ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ एकसमयएकांतरामबैठेरघुराजा ॥ एकभरतइहिंसमयसंगसेवकन

समाजा ॥ तहांमोक्षकोतत्वभरथपूछ्योमनभायो ॥ रामहृदयगतजोरहस्यविधिजु क्तबतायो ॥ अंधारविश्वनासकअखिल, प्रगटउदयरविप्रातकें ॥ ज्ञानोपदेशअज्ञानजौं, भौप्रकाशमनआतकें ॥१॥ ॥ अथभरतप्रश्नरामप्रति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ साधुअसाधु जुसहजही । विधिजुतदेहुबताइ ॥ भेदइहैपूछ्योभरत । रामचंद्ररघुराइ ॥ १ ॥ ॥ अथ साधुलक्षन ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कोऊस्तुतिनिंदाकरहु । जिनकेसबैसमान ॥ उपजैहरषनरोषउर । तेप्राणीममप्राण ॥२॥ संतनकेलक्षणसुनहु । सीतलसरलसुभाव ॥ प्रेमपराइनभक्तिपन । परहितवचनप्रभाव ॥ ३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ भूलहुपरुष वचननाहिभाषहि ॥ रामचरनचितनिश्चलराषहि ॥ परदुषदुषीसुषीपरसंपति ॥ अवर कीर्तिसुनिविहसहिअतिअति ॥ परनिंदानाहिंमुषहिप्रकाशत ॥ तनमनशुद्धकुसंगहित्रा सत ॥ परदारापरद्रव्यपरामुष ॥ सबैकहहिपरमारथकेसुष ॥ पापविवर्जितधर्मपरायण ॥ निश्चयएकभक्तिनारायण ॥ लाभहानिकछुचित्तनलेषै ॥ परब्रह्ममयविश्वसंपेषै ॥ पग वंदैजोधर्मप्रबोधै ॥ वैरकरैताहूनविरोधै ॥ साधसदासबहिनसुषदाई ॥ पावहिदुषसुनि विपतिपराई ॥ शत्रुअजातसाचकैसंगी ॥ परउपकारीपुण्यप्रसंगी ॥ आपतरैंअरुअवर हितारैं ॥ ऐसेहिसुषतैंवचनउचारैं ॥ जोकोइआइसंगअनुसरही ॥ काठनावज्यौंपारहि करही ॥ अवगुनकीनैगुनहिउपाजत ॥ लषिकोउनिलजआपअतिलाजत ॥ जसप्राप तिजियअतिहितजानत ॥ प्रभुविश्वासजुसत्यप्रमानत ॥ परसुषसुषपरदुषहिदुषारे ॥ पर अपवादमूकपरपारे ॥ जथालाभसंपतिसुषजानै ॥ परत्रियमातसमानप्रमानै ॥ गनहि सदासमअस्तुतिगारी ॥ कारनवंदनजथाकुठारी ॥ वहकाटैंजरमूलनसाबे ॥ वहलेधार सुगंधवसावै ॥ चढततिलकदेवनिकौचंदन ॥ घरियतदाहिवदनअहरानिघन ॥ पावैसा धसदाउत्तमपद ॥ दुष्टदुसहदुषसेवहिदुर्मद ॥ भयवर्जितअरुविमदविरागी ॥ अमरस क्रोधरहितनितत्यागी ॥ कामनक्रोधमोहमदमाया ॥ अहंकारत्वज्ञानउपाया ॥ शीलस रलतासमदमसंजम ॥ आश्रितनीतिअखंडितआतम ॥ हिंसाविसनरहतहितकारी ॥ संतनिकेगुनइतेसंभारी ॥ स्यामभजनरतसदासुसंगी ॥ अहंमितिरहितअकामअभंगी ॥ तेनरसुषदोऊभवतारिहैं ॥ कीरतिधर्मसुसंचयकरिहैं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसेसाधूजन अवनि । अंतरशुद्धअभीत ॥ सुषविलसहिभवभवसकल । पावहिमुक्तिपुनीत ॥ ४ ॥ ॥ अथअसाधुलक्षन ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ परसंपतसुष देषतपापी ॥ उरपरजरहिआपमतथापी ॥ परनिंदाजोसुनाहिअपावन ॥ सबहिनलागे बहुरिसुनावन ॥ करहिजगतसौंवैरअकारन ॥ मिलहिसाधातिहिताकतमारन ॥ मिथ्या वादीझूठमनोरथ ॥ परद्रोहीअरुगमनपापपथ ॥ बोलहिमधुरवचनमुषवानी ॥ अंतर थाटकपटअभिमानी ॥ अपठअहितअहमितिआधिकाई ॥ आतममतसूचकअन्याई ॥ पतितनभक्षअभक्षपिछानै ॥ मिलैताहिभोजनमनमानै ॥ अतिपाषंडचंडउपराजहि ॥ संपतिकाजभेषबहुसाजहि ॥ वेदविदुषकविविप्रविरोधी ॥ कलहीकुटिलकलंकीक्रोधी ॥ परसुषभयेमहादुषपावत ॥ परदुषआपनसुषहिअघावत ॥ सहजकुसंगकुविद्यासाधै ॥

अनुचितविसनसदाआराधै ॥ प्रहसैनिंद्यासुनतपराई ॥ परीमहानिधिमानहुंपाई ॥ मन मतथपहिमोहमदमातै ॥ जाहिंनष्टमतिदुर्गतिजातै ॥ कामक्रोधवसलोभमहामद ॥ दिवसनिसाजानतनाहिदुर्मद ॥ कपटकुटिलमिथ्याअभिमतमन ॥ जगतअकारनवैरीजन जन ॥ असमयअनुचितवचनउचारैं ॥ आपढकैपरमर्मउघारैं ॥ मारगजलज्यौंचित्तम लीनै ॥ कबहुनथिरताहितहूकीनै ॥ कीनैकृतमानतनाहिकाहू ॥ ताकृतछिद्ररहतनितताहू ॥ दुष्टकर्मरतनितपरद्रोही ॥ आपकर्मफलविलसतओही ॥ परदारापरधनजोपावहि ॥ आपपरमसुषनाहिनअघावहि ॥ परसंपतिदेषतदुषपागे ॥ आगिविनाहीजरतअभागे परअवगुनलैसभाप्रकासै ॥ हितविनवचनउचारहिहासै ॥ अनभषभषैअगम्यागामी ॥ सिष्टासनवैठैंव्हैस्वामी ॥ वसुकाजेबहुभेषबनावत ॥ पुरपुरभ्रमतसपूजापावत ॥ स्वारथ हितलैमैत्रीसाजै ॥ अषिलअनीतिद्रव्यउपराजै ॥ स्वारथबिनुनाहिप्रीतिसगाई ॥ मानत अग्रजपितानमाई ॥ वेदविरोधदेवाद्विजदोषी ॥ पुण्याविनासपापमतपोषी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसेनरपापीअधम । नरकपात्रनिर्लाज ॥ भुक्तहिकर्मअनेकभव । कोऊसरैनकाज ॥ ॥ ॥ अथसाधुसंग ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ मनसावाचाकर्मना । करैसुसंगतिकोइ ॥ पारसपरसतहीप्रगट । हेमलोहतैंहोइ ॥ १ ॥ रामसरणगहिनीचनर । प्रभुतउच्चपद पाइ ॥ साधसभामनशुद्धसौं । ऊपरबैठेआइ ॥ २ ॥ मलयाचलकीभूमिमहँ । अनतरुचंदनहोइ ॥ तातैसंगतिसाधकी । करिदेषहुधौंकोइ ॥ ३ ॥ जलनिधिथंभजिहाजज्यौं । उडिषगगगनअपार ॥ कविनरहरमतिमंदके । एकैरामअधार ॥ ४ ॥ ॥ अथअसत्संग ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ असतसंगकेफलअखिल । सुनियैभरतसुजान ॥ जातेजो तसुभावही । निंदाअहितनिदान ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मननैनसंगमिलिचित्त मोह ॥ अविलोकित्रियातनछविअरोह ॥ हठिबंधजबैमनरूपमांहि ॥ भवछांडिमनहि दृगभागिजांहिं ॥ मनसहैदुष्षकारिदुष्टमेल ॥ षलनैनयहैस्वभावषेल ॥ कीनैकुसंगगोधूम केरि ॥ पुनहोतचूनपरिघरटघेरि ॥ घटिकानिजंत्रवेलीघस्यार ॥ मिलिसहतिझल्लरीमूंड मार ॥ अहरनिचढिसहिघनघावअंग ॥ प्रज्वलितअगनिलोहाप्रसंग ॥ मदसंगदुरद अन्नेकमार ॥ पैबद्धसहितअंकुसप्रहार ॥ कुलछेदकाठडंडाकुठार ॥ वनकाटिकरतयहपैं विकार ॥ सुकुलीनित्रियाकुलटानिसंग ॥ आचरैअकृतप्रेरतअनंग ॥ सरहोइजबैमिलि पंषसंग ॥ उडिगगनअंगवेधेविहंग ॥ व्हैनष्टआपओरहिनसाइ ॥ ज्यौउपलनावबोरैबु राइ ॥ ज्यौंसुरभिसाधहारियाईसंग ॥ वहआएहोइहरहोइअंग ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ बूडैभवसागरमैंबोरैंजाकीगहैबाँहबोलैमुषवानीसोकहानीअपराधकी ॥ स्वारथकीप्रीतसा धैविश्वसौंविरोधबांधैकारनविनाहीकरैक्रीडापुण्यबाधकी ॥ काहूकौनकृतजानैआपनौही मत्तमानैएकैछिद्रभजैसदाअविद्याअराधकी ॥ राच्यौचावैमुषहिविराच्यौकाटैपापीपाइ स्वानकीसीसंगतिहैसंगतिअसाधकी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इत्यादिकप्राणीअसत । कृतत्रे तानाहिकोइ ॥ द्वापुरविषैजुएकद्वै । हौइतकवहूहोइ ॥ उपजहिगेकलिजुगअषिल । ऐसे मनुजअनेक ॥ साधुसुलछनातिहिंसमय । कोटिनमहकोउएक ॥ पाषंडीतबपूजियै ।

बनिबनिवेशविशाल ॥ साधहिसाधुअसाधुसुष । कठिनकालकलिकाल ॥ ॥ कवित्त ॥ अलपआयुअनुसरपुरुषजेपुन्यपरायन ॥ दीर्घआयुभुक्तहिदुरंतमिलिपापमलिनमन ॥ दातादुषीदरिद्रकरमअनुचितनाहिकरिहैं ॥ क्रपनधनीवर्जितकलेसधनध्यानसुधरिहैं ॥ अकुलीनराजभजिहैंअषिल, कृतकुलीनसेवाकरहिं ॥ ऐहैजुकलिजुगप्रबलअति, एतेषट्गुनआसरहिं ॥ ॥ अथसाधुअसाधुजुग्मलक्षण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संतअसंतसुभाव सब ॥ सुनियैमिलितसमाज ॥ एकसहजगुनअनुसरै ॥ एकहिअवगुनकाज ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ काटैजुवृक्षचंदनकुठार ॥ धन्यसोकरैसोगंधधार ॥ उत्पत्तिसर्पमुषविषअपार ॥ पैंपानकरायैहितअचार ॥ शुभवसनक्षुद्रसूचीसंजोग ॥ पुनिकरततागटंकनप्रयोग ॥ जारियतअगरलैअनलज्वाल ॥ तउउपजतसौंधाताकाल ॥ पुनिपेलिजुदहियतइक्षुदंड ॥ अतिदेतमधुररसतउअषंड ॥ कृतदाहकनकज्वालाकराल ॥ तउबढतवानमहिमाविसाल ॥ करिवेधनमुक्ताफलहिकोइ ॥ हितकंठाभूषनतदपिहोइ ॥ बहुजंत्रविनौराचढिविहाल ॥ वपुढकततदपिवासनविसाल ॥ विधिजुक्तबताएसम्रतिवेद ॥ भवभूतजुदुष्टादुष्टभेद ॥ इत्यादिबताएप्रभुअनंत ॥ श्रीमुषसुभावअनसंतसंत ॥ ॥ दोहा ॥ दुर्जनबुरोदुजीहतें । विषबाढैपैपान ॥ कुचपरधरीजलूकज्यौं । पीयैरुधिरप्रमान ॥ ॥ अथरामराज्यनीतिधर्मवर्णन ॥ ॥ सन्यासीश्वानप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मसन्यासीजातहो । मगमहँसोयोश्वान ॥ ताहिप्रहार्योदंडतिहिं । अनकारनअज्ञान ॥ ॥ १ ॥ विकलभयोतिहिंचोटवपु । कूकरकरतपुकार ॥ परिपरिऊठतश्रमतपै । दुषितआइनृपद्वार ॥ २ ॥ समद्धिकुजीवनसंचरै । देवनृपतिगुरुद्वार ॥ दुषजुतठाठौदूरतें । प्रभुसोंकरतपुकार ॥ ३ ॥ ॥ श्वानउवाच ॥ ॥ सोवतलोकनचिंतसब । एकभरोसैंआप ॥ जगतजोगअहनिसिसजय । पृथ्वीनाथप्रताप ॥ ४ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दीनस्वानजान्योदुषित । लीनोमध्यबुलाय ॥ आगमकारनआपनो । कहिहैस्वानसुनाय ॥ ॥ श्वानवाक्यं ॥ ॥ पुरसन्यासीतनपुसट । विचरतभोजनवार ॥ राजरामकेभयरहित । वर्जितवैरविकार ॥ ६ ॥ हौंसोवतबाजारमहँ । बसनिद्राअविचार ॥ कारनविनुमोकहँकर्यो । पापीदंडप्रहार ॥ ७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ प्रभुयहसुनतहिदूतपठाए ॥ आतुरतपसीकहँलैआए ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तुमविरक्तनहिधर्मविचार्यो ॥ स्वानविनाअपराधप्रहार्यो ॥ ॥ सन्यासीवाक्यं ॥ ॥ सुनियहफेरिकह्यौतिहिंतापस ॥ वासुरसंध्याहुतौक्षुधावस ॥ यातैअतिहूंजातजुआतुर ॥ कीनौसयनपंथमहँकूकर ॥ ग्रामसिंघमैचित्तविचार्यो ॥ पैताकेभयस्वानप्रहार्यो ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ सन्यासीतुमअमिलकहीसब ॥ एनप्रमानबातमानैअब ॥ मारगसंधिक्षुधाअरुभयमन ॥ एतेतापसकहँअपलक्षन ॥ नीतिरामयहकह्यौसुनाई ॥ इहिंविधितौतापसअन्याई ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ इहांवसिष्टबोलेगुरुवानी ॥ वेदविदितनृपनीतिबषानी ॥ दैहिकदंडद्विजहिनहिदीजै ॥ कूकरकहैसुतौअबकीजै ॥ ॥ सभासदवाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नीतिप्रबोधकवृद्धजन । सोतिनपूछयौस्वान ॥ याकहँदंडहिउचि

तऊअब । पैसोइककहौंप्रमान ॥ ८ ॥ ॥ श्वानउवाच ॥ ॥ तापसकीजैमठपती । हितमेरोतबहोइ ॥ कूकरयहतिनसौंकह्यौ । करौविचारनकोइ ॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ करेपीतपरिधानपट । पुनिगजचढिपहुंचाइ ॥ कीनौमठपतिशंभुकौ । सन्यासीसुखपाइ ॥ १९ ॥ गयौशिवालयतापसी । गीतसहितत्रियगान ॥ तहांकरैआनंदजुत । पूजारुद्रप्रमान ॥ ११ ॥ देवालयकौद्रव्यदिन । संचैषाइविशेष ॥ तातेंद्रव्यप्रसादतिहिं । अतिसुषबढ्यौअशेष ॥ १२ ॥ काहूगनैनद्रव्यकरि । नैनछएधनछाक ॥ त्रिनप्रमानजानैजगत । देसबजीयहडाक ॥ १३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अचरजपरमसभासदपायौ ॥ बहुरिस्वानसोइफेरिबुलायौ ॥ ॥ सभासदवाक्यं ॥ ॥ हमहिसमझियहपैंकछुनाहीं ॥ स्वानतोंहिंपूछतसतभाहीं ॥ द्विजकहँजोमठपातिपददीनौ ॥ निग्रहकिधौंअनुग्रहकीनौ ॥ श्वानउवाच ॥ स्वानकह्योसुनियेअबसाची ॥ कहिहौंआदिअंतबहिकाची ॥ दिव्यकनौजएकदेवालय ॥ अमितउतंगमेषलाअतिसय ॥ एकविप्रताकौअधिकारी ॥ विमलचतुर्भुजदेवविहारी ॥ अवनीश्वरजबहीकोइआवै ॥ वागेवीरैदेवबनावै ॥ आजपुरुषत्रियकोइनआई ॥ जटिदेवालयउठिघरजाई ॥ भावहीनसौंपूजप्रकासै ॥ सेवाफलतदपिनहिनासै ॥ मठउपराजितधनअनमानै ॥ धनीपात्रभौजगसबजानै ॥ मेरोपितापरोसीताकौ ॥ साधसुभावजगतहितजाकौ ॥ वाकेएकपाहुनौआयौ ॥ विविधमठीतितिहिंपाकबनायौ ॥ लीनौमेरौबापबुलाई ॥ पकनिपुनकीनीपरुसाई ॥ ताकेघरकौघृतलगितांही ॥ ममपितुनषनिअंसरहिमाही ॥ वहांटहलकरिपितुघरआयौ ॥ अतिभूषौहूंसनमुषधायौ ॥ लाडकरतमोहिगोदीलीनौ ॥ दूधभातवेलाभरिदीनौ ॥ षरौउष्णमैंदूधनषायौ ॥ सोपितुअंगुरिमेलिसिरायौ ॥ पघल्यौघृतजबनषतपपायौ ॥ वाकौअंसदूधमहँआयौ ॥ वहपयपीयौअधिकअघान्यौ ॥ जोनिअनेकभजीसतजान्यौ ॥ ताहीपापस्वानतनपायौं ॥ अबकिहिभाग्यअयोध्याआयौं ॥ कछुअपराधइतौनहिकीनौ ॥ दंडअधिकमैंतपासिहिंदीनौ ॥ अबसोमठकेद्रव्यअघैहै ॥ पुनिकलपांतनिरयपदपैहै ॥ ॥ दोहा ॥ अन्नमठीअनभोज्यअति ॥ तातेंग्यातअग्यात ॥ कीजैपरसनअग्निकौ तदपिजरावैगात ॥ क्यौंहूंअन्नमठेसकौ । करिहैभक्षनकोइ ॥ व्रतचांद्रायणकरिसविधि । हेतशुद्धितोहोइ ॥ परसैजोद्विजमठपतिहि । ततोसचैलसनान ॥ कर्मधर्मनितनेमकी । पावैशुद्धिप्रमान ॥ पत्रपुहपजलफूलफल । द्रव्यअन्नमठदेव ॥ दुसहनर्केइकवीसद्विज । सोपरिकरिहैसेव ॥ ४ ॥ देवमहेसहिआदिदै । देवलविष्णुविसेष ॥ करैजुमाठापत्यक्रम । उपजैदोषअसेष ॥ देवब्रह्मकोद्रव्यद्विज । हरैजुकाहूहेत ॥ लाभअधोगतिसोलहै । महपुरषानिसमेत ॥ ६ ॥ ॥ अथराजासत्यकेतप्रसंग ॥ ॥ विकलभूपकीवारता । सुनियेरामसुजान ॥ अवधिपुरीसोवसतअब । वंसकारकेवान ॥ १ ॥ सत्यकेतनामान्रपति । भौकासीकिहुंकाल ॥ सूरप्रतापीधर्मधुर । वाचासत्यविशाल ॥ २ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ द्विजकस्यौएकधर्माधिकार ॥ पापीसुउदकवित्तापहार ॥ गनिकानिदुष्टरंडासजोग ॥ भवकरैविविधदासीनिभोग ॥ संकल्पद्रव्यमूषैअसेष ॥ विनुदयौसुपैविलसैविशेष ॥

नृपसत्यकेतदलप्रवलसाजि ॥ वानैतवीरनीसानवाजि॥संग्रामभिरेदुवसबलसेन ॥ मिलि
दिवससोरअंधारमेन ॥ तहँगिरयोजूझिनृपसत्यकेत ॥ मिलिघाइसुभटमंत्रीसमेत ॥ सं
ग्राममरयोजोपैसमर्थ ॥ हठिग्रहेतदपिजमदूतहथ्थ ॥ नृपसत्यकेतसात्विकसुभाइ ॥ ज
मअग्रकरयोजमदूतजाइ ॥ पूछयौवतांतआदरप्रमान ॥ नृपसत्यकेतकहियैनिदान ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ जमउवाच ॥ ॥ कहियेनृपतिविचारकरि । अषिलकर्मकृतआप ॥ दूमहँबि
लसोगेकहा । पहिलेपुण्यकपाप ॥ ३ ॥ सत्यकेतउवाच ॥ कीनौजममैनाहिकछु । अ
पनैजानिअधर्म ॥ तुमहीकछुजानततौ । मोहिबतावौमर्म ॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥
॥ जमउवाच ॥ ॥ तुमकरयोविप्रधर्माधिकार ॥ संकल्पद्रव्यपूछीनसार ॥ सवषायद्र
व्यरंडानिसंग ॥ अतिमत्तचित्तसेयोअनंग ॥ अधपंथद्रव्यतिहिंभज्यौआप ॥ सोपरयो
निहारेमूंडिपाप ॥ जुतधर्मकर्मसंकल्पकीन ॥ उपज्यौसुपापविप्रहिअधीन ॥ वहहुतौरा
जतुमहीअधार ॥ वसनीतिक्यौंनकीनौविहार ॥ ज्योंकरयोधर्मतुमचित्तजानि ॥ सोइपा
पपुंजउपज्योप्रमानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कठिनधर्महैराजकौ । दारुणषग्गदुधार ॥ आ
लसकीनैतैअषिल ॥ दुहुघांविषमविकार ॥ ५ ॥ जानेकौकेतेजनम । भजैनरकतिहिंभू
प ॥ अवधिपुरीमहंवसतअब । पापकोलकैरूप ॥ ६ ॥ ॥ अथद्विजपुत्रजीवितकप्र
संग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गाथा ॥ ॥ कृतजुगेवर्षकरियं ॥ पुरुषंसतसहसआयु
परमानं ॥ त्रेताअयुतजुइक्क ॥ द्वापरेसहस्रवर्षाणि ॥ १ ॥ विहितसवासतवरषं ॥ कलि
युगआयुअल्पविधिकरनी ॥ सुषदुषजीवसमानं ॥ भुग्गवैकर्मभावेण ॥ ॥ छंदद्विअ
क्षरी ॥ ॥ ब्राह्मणएकअवधिपुरवासी ॥ अषिलधर्मषटकर्मअभ्यासी ॥ बहुतकुटंबमो
हअतिमाने ॥ पोषनभरनविशेषप्रमानै ॥ ब्राह्मणअर्धआयुवीत्योजब ॥ ताकेभाग्यपुत्र
उपज्योतब ॥ एकहिपुत्रपिताअतिप्यारो ॥ जाकेदेषतग्रेहउज्यारो ॥ सोरहसैवर्षनकोसुं
दर ॥ भायोवढैसोभादिनदिनवर ॥ एकदिवसद्विजबालकअंगन ॥ लीलाबालककैरसुभ
लछन ॥ घुटवनिचलैकेरैकिलकारी ॥ मुषदेषेहर्षैमहतारी ॥ जोगदैवकछुकहिनहिजाइ
याकहमीचअलपजोआई ॥ बालअकालमरयोसुतब्राह्मन ॥ घरकेसिरपीटहिंरोवनिघन
॥ द्विजलैपुत्रखाटपरडारयो ॥ आनिमृतकनृपद्वारउतारयो ॥ राजसभाबैठेरघुराई ॥ दे
वऋषीश्वरतहँसुषदाई ॥ वेदवचनमुनिविदुषविचारहिं ॥ विधिजुतनीतिधर्मविस्तारहिं
॥ ब्रह्मादिकसुरसभावनाई ॥ राममध्यसौभितरघुराई ॥ द्विजसोमृतकलियैनृपद्वारै ॥ प
रयोरामहारामपुकारै ॥ ॥ विप्रउवाच ॥ ॥ मरयोअकालबालयहमेरौ ॥ त्राहित्राहिरघु
नाइकतेरौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आरतवानीसुनिअवधेसुर ॥ बोलिलयौभीतरिसो
द्विजवर ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ रघुवरगोद्विजभूरषवारे ॥ महादुष्टइनकेहितमारे ॥ ॥
कवित्त ॥ ॥ वरषसहसदसविहितपुरुषआयुष्यप्रमानै ॥ त्रेताजुगकेअंतचरणचौथेज
गजानै ॥ वयसोरहसेवरषरमतअंगनक्रीडारस ॥ कारनकिहुंअकालदेवभौबालकालवस
॥ पितमातकिधौंयहबालकृत, प्रभुनिदानकछुपाइहौं ॥ द्विजकह्योरामसौंरोइदुष, हठितो
मृतकजराइहौं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संजुतइंद्रादिकसभा । बैठेराम

विनीत ॥ भ्रातमित्रमंत्रीसुभट । अतिसोभितअनभीत ॥ ७ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥
॥ कह्योरामजमराजकहँ । यहसबजानतआप ॥ बालमरैजिहनगरमहँ । सोधौंकैसौपाप
॥ ८ ॥ कर्मपिताकेमातकौ । भ्रातमकृतअसराल ॥ कहियेसौनिर्धारकरि । बालकमरयोअ
काल ॥ ९ ॥ कह्योधर्मतबजोरिकर । सुनियेअवधिनरेस ॥ पुरजिहिसाधतशूद्रतप । सो
शिशुघातविशेष ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ त्रेताअंतकह्योजोरेकर ॥ यहकार
नकाहिहौंअवधेसर ॥ शूद्रादिकअंत्यजतपसाधै ॥ धरिअभिलाषदेवअराधै ॥ करिमन
मांझकामनाकोइ ॥ हठदुषसाधैतापसहोइ ॥ करैअधमनरासिलापरसकर ॥ धर्मविरुद्ध
कर्मयहदुर्धर ॥ शूद्रकरैतपसातिहिंपातक ॥ कारणयहैरामससुघातक ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
जहांविरुद्धाचरणजग । पुरतिहिंहोतसंताप ॥ पितुमाताजीवतप्रगट । पुत्रमरैइहपाइ ॥
११ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामउठेसौतत्वसुनि । विबुधसभावहुराइ ॥ अश्वारोहित
अवधिपति । आपमहावनआइ ॥ १२ ॥ आराधततपसाअगम । प्रभुतहांशूद्रजुपा
इ ॥ पादपलंबितऊर्ध्वपद । शिरनीचेसतभाइ ॥ १३ ॥ मंगलजारयौनिकटमुष । धूम्र
पाननिर्धार ॥ नासाआननर्नैनमग । येकयहैआहार ॥ १४ ॥ कठिनतपस्याशूद्रकी ॥
यौंदेषीअवधेस ॥ तहांपूछ्योप्रभुकोनतूं । कृतकिहिकरतकलेस ॥ १५ ॥ ॥ शूद्रउवा
च ॥ हेतकह्योतिहिंशूद्रहुं । साधततपस्वछंद ॥ देवकरतदेहीदमन । अतिसंजुतआनंद ॥
॥१६॥ याकोमस्तकछेदयहां ॥ कीनोरामकृपाल ॥ ताकहँदीनीपरमगति । ऐसेदेवदयाल ॥
१७॥ जीयौततछिनवालद्विज । सूद्रमरयौतपसिद्ध ॥ आनंदेसुरमुनिअषिल ॥ प्रभुलीलाजु
प्रसिद्ध॥१८॥ ॥ अथकाकभुषंडीगरुडप्रसंग॥ ॥श्रीरामउवाच॥ दोहा ॥ ॥कहत
रामसुनियैभरत।साधुभ्रातहितसंग ॥ रुद्रभवानीसौंरहसि । आगेकहीअभंग ॥ १ ॥ अनं
गारिसंजुतउमा । एकदिवसएकंत ॥ रामचरितवर्णनकरत ॥ शंभुपरमहितसंत ॥ २ ॥
॥ रुद्रउवाच ॥ ॥ येहकथाहैगूढअति । सोमैंकहूंसुनाय ॥ काकउपासकरामकौ । सं
ततसाधसुभाय ॥ ३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वायसवृद्धविष्यातभयौइककाकभुषंडी ॥ जुग
जुगादितिहिजनमआयुकल्पांतअषंडी ॥ रामनामरटरसनिनयनछबिरामनिहारत ॥ श्रव
नरामजससुनतचित्तहितरामविचारत ॥ मिलिभएप्रानरघुनाथमय, उपजिवातअद्वैतउ
र ॥ आनंदमगनविहरतअवनि, प्रगटगमागमतीनपुर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कारनकाक
भुसंडिकौ । रामरूपरसरत्त ॥ रुद्रभवानीसोंरहसि । विनयोविषयविरत्त ॥ ४ ॥ ॥ छंद
पधरी ॥ ॥ भवानीवाक्यं ॥ ॥ भगवतीफेरिपूछ्योभवेस ॥ संदेसइहांमेरेसुरेस ॥
कुकृतीकुजीवकुच्छितकुभास ॥ विनुवैरविहगबालकविनास ॥ विहगाधमवायसविदितवे
द ॥ षलअषिलप्राणद्रोहीसषेद ॥ रघुवीरपरायनग्यानरत्त ॥ क्यौंहोइकहौकऊवाउचित्त ॥
रघुनाथकथारतदिवसराति ॥ क्यौंभयौकहौवायसकुजाति ॥ कहांलह्यौरामनामाधिकार ॥
सोजीवनमुक्तविहरतसंसार ॥ सबकालनिकटवर्तीसमान ॥ स्वामीसोसेवासावधान ॥
हरिभक्तगरुडहरिचरनहेत ॥ विश्वंभरवाहनजगविजेत ॥ काकसौंसंगकिहिंभांतिकीन ॥
पृथ्वीसुछांडिमुनिबरप्रवीन ॥ संभाषननाहिनउचितसोइ ॥ हितकाकगरुडकिहिहेतहोइ ॥

अनँगारिअसंभवकहतएह ॥ सुनिनाथमोहिउपज्योसंदेह ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संभुभवानीसौंसमुझि । उत्तरदीनौएह ॥ सुन्यौयथामैंजिहसमय । सबवर्जितसंदेह ॥ ॥ ५ ॥ आदिअंतलौरहसियह । कहिहौंप्रियेसकाम ॥ सुनहुयथाक्रमदैश्रवन । रूपचरितरघुराम ॥ ६ ॥ सतीजुइच्छासुननकी । उपजीतोउरआइ ॥ धन्यधन्यतूंधर्मधुर । संभुकह्योसुषपाइ ॥ ७ ॥ ॥ काकभुसंडीगरुडकौ । सुषदमिलनसंवाद ॥ आरंभ्योशिवकहतयह । पूरनरहितप्रमाद ॥ ८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥तुमप्रथमदक्षगृहजन्मपाइ ॥ सुभसतीनामपायौसुभाइ ॥ दीनीतुममोकहँपितादान ॥ पुनिभयौव्याहउच्छवप्रमान ॥ सबभाइनिसेवासावधान ॥ संगरहतमोहिप्राननिसमान ॥ पितुग्रेहयज्ञतुमसोंधपाइ ॥ सुरजातदेषिसुषभौसुभाइ ॥ अनन्यौतिपितुग्रहगईआप ॥ मैवरजीतद्दपिहठअमाप ॥ मषभयौअनारदमनमलीन ॥ दहिक्रोधअनलतुमप्रानदीन ॥ पुनिहुतेसंगममगनसमाज ॥ करिकोपयज्ञविध्वंसकाज ॥ अतिदुष्षभयौमोहिसुनतएह ॥ दिनरातिदहैतवविरहदेह ॥ ठहराइनहींचितकहूंठौर ॥ अनचिंतअसंभवभईऔर ॥ तुमजरीक्रोधउपज्योसँताप ॥ वनवनहूंडोलतदुषवयाप ॥ सरितासिरगिरवरवृक्षसंग ॥ अतिभ्रम्योविरोगीअंगअंग ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उत्तरभागसुमेरकै । नीलसैलइहनाम ॥ चारिसिषरतिहिंहेममय । अतिसुंदरअभिराम ॥ ॥ ९ ॥ ॥ तिनसिषरनिपरचारितरु । वटपीपरविस्तार ॥ पाकरआम्रसपल्लवित । मत्तभ्रमरगुंजार ॥ १० ॥ तिनशिषरनिकैमध्यतट । सरवरसुषदसमान ॥ जलअगाधविकसेजलज । प्रतिमनिमयसोपान ॥ ११ ॥ मीनकमठभेकीमकर । विविधिप्रकारविहंग ॥ वनपुहपितचहुँओरवनि । संजुतगंधसुरंग ॥ १२ ॥ तरुतरुलताअरुझितन । सुफलसुधामयस्वाद ॥ विधिअनेकतहांजंतुवसि । वर्जितवयरविषाद ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ काकभुसंडिवसैतिहिंकानन ॥ सरवरगिरितरुपरमसुहावन ॥ सोहमनोजनहीमदमाया ॥ छुवैनतहांकालकीछाया ॥ व्यापैअंतनकलपव्यतीतै ॥ जिहिंमायाक्रतअवगुनजीतै ॥ तीनकालचहुंवृच्छनिरंतर ॥ वाइसभक्तिउपासैरघुवर ॥ पीपरछांहबैठिसुषपावै ॥ ध्यानअषंडरामपदध्यावै ॥ पाकरिहेठियज्ञतपपावन ॥ नियतकरैअघपुंजनसावन ॥ मानसीकपूजामनमानी ॥ विटपआम्रतरकरविज्ञानी ॥ वटतररामकथाविस्तारै ॥ तहांजोसुनैताहिनिस्तारै ॥ वायसआश्रमआनिविहंगा ॥ प्रतिदिनसुनहिंसुरामप्रसंगा ॥ एकदिवसहूंतिहिंसंगआयो ॥ प्रगटरामजससुनिसुखपायो ॥ सभाविहंगमदेषिसुहाई ॥ रीझ्योकथासुनतरघुराई ॥ पुनिहौंहंसदेहधरिपावन ॥ वस्यौकालकछुपापविहावन ॥ परिषदतिहिंहमवसिसुषपाए ॥ यहांकैलाससिषरफिरिआए ॥ ॥ अथकाकभुशंडीगरुडसमागम ॥ ॥ विधिजिहिंकाकभुशंडिविहंगम ॥ मिलिसुषभयौगरुडसौंसंगम ॥ सुनहुप्रसंगयथाक्रमसोई ॥ हिताजिहिंरामचरणरतिहोई ॥ नरतनधर्य्योरामरघुराई ॥ देवसुमायाप्रबलदिषाई ॥ त्रेतायुगमहंभौअवतारा ॥ अषिलेसुररघुनाथउदारा ॥ आग्यापितुदंडकवनआए ॥ पंचवटीवसिअतिसुषपाए ॥ तहांहरीदसकंधरसीता ॥ परमसतीअतिप्रेमपुनीता ॥ इहांकपिपदमअठारहआए ॥ लैरघुनाथलंकग

ढलाए ॥ दारुणयुद्धभयोचहुंद्वारे ॥ परिपरिऊठैवीरपचारे ॥ स्वामिहेतदुहुघांभटसूरे ॥ परे असुरकपिपौरुषपूरे ॥ याहीसमयइंद्रजितआयो ॥ सुरनिपचारतभिरतसवायो ॥ नागपासरनसंकटनाधे ॥ वहसिरामलषमनदोउबांधे ॥ हठिसीतातहाँगरुडहकारे ॥ विषमुषसाइककाटिविडारे ॥ देष्योचरितअसंभवदुस्तर ॥ अचरजभयोसमातनहींउर ॥ भयोसंदेहगरुडकहँभारी ॥ विस्मपर्यौविचारविचारी ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भवबंधनतेरासभजि । भएमुक्तभवभूत ॥ रामबंधेअहिपासरन । यहपैंअगमअभूत ॥ १४ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ एकसमयअनचिंततआए ॥ पुनिषगराजसुनारदपाए ॥ मिलेगरुडनारदमगमांही ॥ भयोमिलापसहजसतभांही ॥ सोसंदेहगरुडनारदसम ॥ विधिजुतपूछयौराजविहंगम ॥ विश्वरामअवतारविशेष्यौ ॥ दैवतइहांकछूनहिदेष्यौ ॥ प्राकृतनरज्यौपीडापाई ॥ रनभुविजूझिपरेरघुराई ॥ मनअवतारहेतकिहिमानै ॥ सोनारदतुमकहोसायानै ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तवमुनिपिताविरंचिबताए ॥ ज्ञानवंतनिगमागमगाए ॥ पूछहुजायपरमसुषपैहै ॥ नियतअज्ञानसंदेहनसैहैं ॥ इहांगरुडविधिलोकहिआयौ ॥ छोहबढ्यौमनसंभ्रमछायो ॥ ब्रह्मलोकसुरसभाबनाई ॥ देषीजाइगरुडसुषदाई ॥ करेषगेसप्रणामसकारन ॥ आदरपाइसुबैठेआसन ॥ कहिरघुनाथप्रतापकहानी ॥ गावतप्रेमसहितमुनिग्यानी ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामविलोकेमांझरन ॥ परेबंधअहिपास ॥ कारनइहाँअवतारको । सुपैनमोहिविसास ॥ कह्यौषगेसविरंचिकह । विस्मयचित्तविषाद ॥ मेरोमनसंभ्रममिटै । प्रभुकेकृपाप्रसाद ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ हरिवाहनवल्लभवली । साधपरमहितसुद्ध ॥ काहूकर्मकुबुद्धियह । उपज्यौवेदविरुद्ध ॥ ॥ १ ॥ कह्यौविरंचिषगेसकह । अतिसंभ्रममनएह ॥ ऐसीतोनाहिनउचित । साधुनिकेसंदेह ॥ २ ॥ अतिबलमायाईश्वरी । अद्भुतचरितअगाध ॥ वचैनकाहूतेविषम । ज्यौंअसाधुजोसाध ॥ ३ ॥ जतीव्रतीमुनिसंजमी । जोगीजगतअजेव ॥ सबैनचाएकर्मसंग । द्विजनरराक्षसदेव ॥ ४ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विहसिइहांब्रह्मातबबोले ॥ षगपतिसोमायागुनषोले ॥ इहिमोकौंबहुवारनचायौ ॥ पुनिमैयाकोथाहनपायौ ॥ विश्वचराचरइहिंनहिंबांचे ॥ नग्नकरेकोकोनहिनांचे ॥ महामोहनीदैवीमाया ॥ छननहिछांडतज्यौंतनछाया ॥ वृद्धतरुणसबहीनविगोवत ॥ रातिदिवसयाकेदुषरोवत ॥ महापुरुषतुमहूइहिमाया ॥ भक्तमहाबलतदपिभ्रमाया ॥ रामहिमनुजभावअवरेषत ॥ दीपकलैदिनकरदिनदेषत ॥ मनभ्रमज्यौंपूछयोतुममोही ॥ ताकोजतनबताऊंतोही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतमहिमारघुनाथके । अद्भुतअगमअनंत ॥ पावतभेदनपचिरहो । सबैसुरासुरसंत ॥ ५ ॥ उत्तरभागसुमेरके । पर्वतनीलप्रचंड ॥ वसतजुगंतअनेकवहि । सुषतहांकाकभुषंड ॥ ६ ॥ वानिविहंगविहंगकी । समुझैसहजसुभाइ ॥ उनकौंतुमसंदेहयह । आपुनपूछौजाइ ॥ ७ ॥ रामप्रभावजुरूपरस । भक्तिरहेमनगोइ ॥ तिनकीमहिमागुनअतुल । शिवजानैकैसोइ ॥ ८ ॥ रघुवररूपपीयूषरस । अतिहितभजनअषंड ॥ गरुवतताकेस्वादगुन । समझतकाकभुषंड ॥ ९ ॥ समाधानकरिहैसबै । जोतुमपूछहुजाइ

कारनभ्रमरहिहेतकछु । सुषहीमिलतसुभाइ ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विनुस तसंगनकथाविहंगम ॥ भागैकथाविनानमहाभ्रम ॥ भ्रमभागेविनुभक्तिनभावन ॥ नहि नरामअनुरागउपजिमन ॥ विनुअनुरागनमिटैविकारा ॥ रहितविकारमुक्तिषलुद्वारा ॥ जोगविरागग्यानविग्याना ॥ सबैनाहींइकभजनसमाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवा च ॥ ॥ तबब्रह्माउपदेसतैं । सेवकरथहरिसंत ॥ आश्रमकाकभुषंडके । आएगरुड अचिंत ॥ ११ ॥ सरवरतटगिरनीलसिर । बैठैसभाबनाइ ॥ काकभुसंडिअषंडकृत । गुनगावतरघुराइ ॥ १२ ॥ बालकजुवाजुवृद्धवय । सकलविहंगमसंत ॥ काकवचनगु णरामके । मनक्रमसुनतमहंत ॥ १३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ याहीसमयगरुडइहां आए ॥ परिषदविहंगदेषिसुषपाए ॥ विहंसिसभासबउठेविहंगम ॥ काकभुसंडिकरेआ तिथिक्रम ॥ आजभागममषगपतिआए ॥ पायोदरसपरमसुषपाए ॥ करिहितआगत स्वागतकीनो ॥ देषियथाविधिआसनदीनो ॥ वायसवृद्धगरुडषगवानी ॥ कारनआगम पूछिकहानी ॥ विहसिगरुडमृदुवायकबोले ॥ षगवरअंतरभावजुषोले ॥ ॥ गरुडउवा च ॥ ॥ उपजिसंदेहएकमेरेउर ॥ घेरैफिरतलियैमोहिघरघर ॥ पूछ्योमैंनारदमुनिपांहीं ॥ नियतसंदेहमिट्योतहांनाहीं ॥ तबनारदविधिपितावतायो ॥ अतिसुषब्रह्मलोकहूंआ यो ॥ कहेतहांमैंमनभ्रमकारन ॥ महाविचारविरंचिकियोमन ॥ दुषितदेषिमोहिआज्ञा दीनी ॥ मोहभईषगबुद्धिमलीनी ॥ देवरामतुममानुषदेष्यो ॥ विस्मयपातकइहैविसे ष्यो ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ रामप्रभावसुनहुषगराजा ॥ जाइकुबुद्धिसरैमनकाजा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रतिउपजैरघुनाथके । चरणकमलवसिचित्त ॥ भ्रमभाजैउपजैभगति । मायाव्यापनमित्त ॥ १४ ॥ काकभुसंडीरामके । चरितयथाक्रमचिन्ह ॥ वेदपुरानजुवा चही । कथाप्रकाससुकिन्ह ॥ १५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कारनरघुपतिजनमको । बालचरित्रविशेष ॥ तीनलोकलौंछत्रतप । अतिहितराजअशेष ॥ १६ ॥ कहेजनमद शकंधके । प्रथमदुतीयप्रकार ॥ भागीगोरवपासभय । भूमिनसहिअघभार ॥ १७ ॥ वसुधाविधिसुरराजसुर । प्रभुसौंकरीपुकार ॥ हाहानाथअनाथहम । अवतुमहीआधार ॥ १८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भाषानभभवितव्यता । ऐसीभईअरेह ॥ करहु रूपसुरभालकपि । हौंधरिहूंनरदेह ॥ कीजेइहक्रमजतनकरि । सठरावनसंघार ॥ कार नसोकत्रिलोकको । भूमिउतारहिभार ॥ २० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ आजन्मचरितरघुवरअषंड ॥ तबलगेकहनवायसभुसंड ॥ प्रभुजातमात्रभोजनप्रकार ॥ कौसल्यादेष्यौकृतकुमार ॥ विस्तारबाललीलाविसाल ॥ दीयमातपिताकहसुषदयाल ॥ विद्याविनोदआरंभवीर ॥ शुभशस्त्रअस्त्रधारणसधीर ॥ इहसमयविश्वामित्रआइ ॥ संग रामलछनलीनैसहाइ ॥ अतिबलाबलीविद्याअभंग ॥ सीषेसोइविश्वामित्रसंग ॥ पथ जातहतीताडकापाप ॥ सोभईराक्षसीरिषिसराप ॥ वीरासनबैठेयज्ञवीर ॥ सप्तदिनकरी रक्षासधीर ॥ सबअसुरमारिजीतेसंग्राम ॥ वयसातवर्षरघुवंसराम ॥ आरंभधनुषमषन्रृ पअनंग ॥ सोदेषनविश्वामित्रसंग ॥ रसवीरबढ्योउरहर्षराम ॥ सुरकाजचलेविजयीसंग्रा

ढलाए ॥ दारुणयुद्धभयोचहुंद्वारे ॥ परिपरिऊठैवीरपचारे ॥ स्वामिहेतदुहुघांभटसूरे ॥ परे असुरकपिपौरुषपूरे ॥ याहीसमयइंद्रजितआयो ॥ सुरनिपचारतभिरतसवायो ॥ नागपासरनसंकटनाधे ॥ वहसिरामलषमनदोउबांधे ॥ हठिसीतातहाँगरुडहकारे ॥ विषमुषसाइककाटिविडारे ॥ देष्योचरितअसंभवदुस्तर ॥ अचरजभयोसमातनहींउर ॥ भयोसंदेहगरुडकहँभारी ॥ विस्मपर्योविचारविचारी ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भवबंधनतेरामभजि । भएमुक्तभवभूत ॥ रामबंधेअहिपासरन । यहपैंअगमअभूत ॥ १४ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ एकसमयअनचिंततआए ॥ पुनिषगराजसुनारदपाए ॥ मिलेगरुडनारदमगमांही ॥ भयोमिलापसहजसतभांही ॥ सोसंदेहगरुडनारदसम ॥ विधिजुतपूछ्यौराजविहंगम ॥ विश्वरामअवतारविशेष्यो ॥ दैवतइहांकछूनहिदेष्यो ॥ प्राकृतनरज्यौंपीडापाई ॥ रनभुविजूझिपरेरघुराई ॥ मनअवतारहेतकिहिंमाने ॥ सोनारदतुमकहोसायाने ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तवमुनिपिताविरंचिबताए ॥ ज्ञानवंतनिगमागमगाए ॥ पूछहुजायपरमसुषपैहे ॥ नियतअज्ञानसंदेहनसैहैं ॥ इहांगरुडविधिलोकहिआयो ॥ छोहबढ्यौमनसंभ्रमछायो ॥ ब्रह्मलोकसुरसभावनाई ॥ देषीजाइगरुडसुषदाई ॥ करेषगेसप्रणामसकारन ॥ आदरपाइसुबैठेआसन ॥ कहिरघुनाथप्रतापकहानी ॥ गावतप्रेमसहितमुनिग्यानी ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामविलोकेमांझरन ॥ परेबंधअहिपास ॥ कारनइहाँअवतारको । सुपैनमोहिविसास ॥ कह्योषगेसविरंचिकह । विस्मयचित्तविषाद ॥ मेरोमनसंभ्रममिटै । प्रभुकेकृपाप्रसाद ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ हरिवाहनबङ्कभवली । साधपरमहितसुद्ध ॥ काहूकर्मकुबुद्धियह । उपज्योवेदविरुद्ध ॥ ॥ १ ॥ कह्योविरंचिषगेसकह । अतिसंभ्रममनएह ॥ ऐसीतोनाहिनउचित । साधुनिकेसंदेह ॥ २ ॥ अतिबलमायाईश्वरी । अद्भुतचरितअगाध ॥ वचैनकाहूतेविषम । ज्यौंअसाधुजोसाध ॥ ३ ॥ जतीव्रतीमुनिसंजमी । जोगीजगतअजेव ॥ सबैनचाएकर्मसंग । द्विजनरराक्षसदेव ॥ ४ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विहसिइहांब्रह्मातबबोले ॥ षगपतिसोमायागुनषोले ॥ इहिमोकौंबहुवारनचायो ॥ पुनिमैयाकोथाहनपायो ॥ विश्वचराचरइहिंनहिंबांचे ॥ नम्रकरेकोकोनहिनांचे ॥ महामोहनीदैवीमाया ॥ छननहिछांडतज्यौंतनछाया ॥ वृद्धतरुणसबहीनविगोवत ॥ रातिदिवसयाकेदुषरोवत ॥ महापुरुषतुमहूइहिमाया ॥ भक्तमहाबलतदपिभ्रमाया ॥ रामहिमनुजभावअवरेषत ॥ दीपकलैदिनकरदिनदेषत ॥ मनभ्रमज्यौंपूछ्योतुममोही ॥ ताकोजतनबताऊंतोही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतमहिमारघुनाथके । अद्भुतअगमअनंत ॥ पावतभेदनपचिरहो । सबैसुरासुरसंत ॥ ५ ॥ उत्तरभागसुमेरके । पर्वतनीलप्रचंड ॥ वसतजुगंतअनेकवहि । सुषतहांकाकभुषंड ॥ ६ ॥ वानिविहंगविहंगकी । समुझैसहजसुभाइ ॥ उनकौतुमसंदेहयह । आपुनपूछौजाइ ॥ ७ ॥ रामप्रभावजुरूपरस । भक्तिरहेमनगोइ ॥ तिनकीमहिमागुनअतुल । शिवजानेंकैसोइ ॥ ८ ॥ रघुवररूपपीयूषरस । अतिहितभजनअषंड ॥ गरुवतताकेस्वादगुन । समझतकाकभुषंड ॥ ९ ॥ समाधानकरिहैसबै । जोतुमपूछहुजाइ

कारनभ्रमरहिहेतकछु । सुषहीमिलतसुभाइ ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विनुसतसंगनकथाविहंगम ॥ भागैकथाविनानमहाश्रम ॥ भ्रमभागेविनुभक्तिनभावन ॥ नहिनरामअनुरागउपजिमन ॥ विनुअनुरागनमिटैविकारा ॥ रहितविकारमुक्तिषलुद्वारा ॥ जोगविरागग्यानविग्याना ॥ सबैनाहींइकभजनसमाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबब्रह्माउपदेसतैं । सेवकरथहरिसंत ॥ आश्रमकाकभुषंडके । आएगरुडअचिंत ॥ ११ ॥ सरवरतटगिरनीलसिर । बैठैसभाबनाइ ॥ काकभुसंडिअषंडकृत । गुनगावतरघुराइ ॥ १२ ॥ बालकजुवाजुवृद्धवय । सकलविहंगमसंत ॥ काकवचनगुणरामके । मनक्रमसुनतमहंत ॥ १३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ याहीसमयगरुडइहांआए ॥ परिषदविहंगदेषिसुषपाए ॥ विहंसिसभासबउठेविहंगम ॥ काकभुसंडिकरेंआतिथिक्रम ॥ आजभागममषगपतिआए ॥ पायोदरसपरमसुषपाए ॥ करिहितआगतस्वागतकीनौ ॥ देषियथाविधिआसनदीनौ ॥ वायसवृद्धगरुडषगवानी ॥ कारनआगमपूछिकहानी ॥ विहसिगरुडमृदुवायकबोले ॥ षगवरअंतरभावजुषोले ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ उपजिसंदेहएकमेरेउर ॥ घेरैफिरतलियैमोहिघरघर ॥ पूछ्योमैंनारदमुनिपांहीं ॥ नियतसंदेहमिट्यौतहांनाहीं ॥ तबनारदविधिपितावतायो ॥ अतिसुषब्रह्मलोकहूंआयो ॥ कहेतहांमैंमनभ्रमकारन ॥ महाविचारविरंचिकियोमन ॥ दुषितदेषिमोहिआज्ञादीनी ॥ मोहभईषगवुद्धिमलीनी ॥ देवरामतुममानुषदेष्यो ॥ विस्मयपातकइहैविसेष्यौ ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ रामप्रभावसुनहुषगराजा ॥ जाइकुबुद्धिसरैमनकाजा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रतिउपजैरघुनाथके । चरणकमलवसिचित्त ॥ भ्रमभाजैउपजैभगति । मायाव्यापनमित्त ॥ १४ ॥ काकभुसंडीरामके । चरितयथाक्रमचिन्ह ॥ वेदपुरानजुवाचही । कथाप्रकाससुकिन्ह ॥ १५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कारनरघुपतिजनमकौ । बालचरित्रविशेष ॥ तीनलोकलौंछत्रतप । अतिहितराजअशेष ॥ १६ ॥ कहेजनमदशकंधके । प्रथमदुतीयप्रकार ॥ भागीगोरवपासभय । भूमिनसहिअघभार ॥ १७ ॥ वसुधाविधिसुरराजसुर । प्रभुसौंकरीपुकार ॥ हाहानाथअनाथहम । अबतुमहीआधार ॥ १८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भाषानभभवितव्यता । ऐसीभईअरेह ॥ करहुरूपसुरभालकपि । हौंधरिहूंनरदेह ॥ कीजेइहक्रमजतनकरि । सठरावनसंघार ॥ कारनसोकत्रिलोककौ । भूमिउतारहिभार ॥ २० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ आजन्मचरितरघुवरअषंड ॥ तबलगेकहनवायसभुसंड ॥ प्रभुजातमात्रभोजनप्रकार ॥ कौसल्यादेष्यौकृतकुमार ॥ विस्तारबाललीलाविसाल ॥ दीयमातपिताकहसुषदयाल ॥ विद्याविनोदआरंभवीर ॥ शुभशस्त्रअस्त्रधारणसधीर ॥ इहसमयविश्वामित्रआइ ॥ संगरामलछनलीनैसहाइ ॥ अतिबलाबलीविद्याअभंग ॥ सीषेसोइविश्वामित्रसंग ॥ पथजातहतीताडकापाप ॥ सोभईराक्षसीरिषिसराप ॥ वीरासनबैठेयज्ञवीर ॥ सप्तदिनकरीरक्षासधीर ॥ सबअसुरमारिजीतेसंग्राम ॥ वयसातवर्षरघुवंसराम ॥ आरंभधनुषमषनृपअनंग ॥ सोदेषनविश्वामित्रसंग ॥ रसवीरबढ्यौउरहर्षराम ॥ सुरकाजचलेविजयीसंग्रा

म ॥ आश्रमगौतमकैआनिआप ॥ सोसून्यविलोक्योरिषिसराप ॥ तरफूलिफलेतहांतर लतुंग ॥ वसआपविनावनचरविहंग ॥ पायोजुअहल्याइंद्रपाप ॥ सोभईसिलागोतमसराप ॥ रजचरणझारितिहिंसीसराम ॥ धारिदेहदिव्यगइकंतधाम ॥ तवआइरामसुर सरिततीर ॥ करिकृपाहकारेनावकीर ॥ सिलदेहअहल्यातजिसकाम ॥ रजचरणपर सिउद्धरीराम ॥ सोचरितदेषिकेवटसुभाइ ॥ भवभएसुलैनौकाभगाइ ॥ उडिगईशिला पदछुइअकास ॥ उडिजाइनावहमकोनआस ॥ कौउभागउदयकेभएकीर ॥ भरिनि कटकठौताआनिनीर ॥ रजझारिपषारेचरणराम ॥ क्रतकीरसपूरणभएकाम ॥ बैठा रिनावराघवविनीत ॥ पुनिसरितपारकीनेपुनीत ॥ विहसातहसतमगजातवीर ॥ क रिकरिचरित्रसुधिवचनकीर ॥ ऋषिसंगजनकपुरआइराम ॥ भवधनुषभंजिसियबरी भाम ॥ सीताविवाहिलक्ष्मीसरूप ॥ प्रभुभंजिसुरासुरगर्वभूप ॥ गृहचलेरामनीसान गाजि ॥ संगपिताअतुलचतुरंगसाजि ॥ इहांरोकिपंथद्विजरामआनि ॥ प्रभुमानभं गकीनौप्रमानि ॥ जुवराजतिलकअभिषेकजोग ॥ पुनिदसरथक्रतमंगलप्रयोग ॥ कै केइइहांछलमंत्रकीन ॥ दुषपातिहिरामवनवासदीन ॥ रघुनाथचलेउठिछांडिराज ॥ पर्जागतसंपतिसुषसमाज ॥ संवादरामलछमनसनेह ॥ व्रतसीयासंगकुंवरीविदेह ॥ जबगमनसमयकीनौजुहार ॥ इहांमातमंत्ररक्षाउचार ॥ वढिविरहनगरवासीविषाद ॥ मिलिचलेरामसीयकुलमजाद ॥ हाहारवघरघरनगरहोइ ॥ कारनअनर्थनहिंजानिको इ ॥ सियरामलषनउठिचलिसकाज ॥ सुरराजभयोसुषसुरसमाज ॥ पुरसुनीजवैघरघर पुकार ॥ अवधेसदुःषउपज्योअपार ॥ सोमंतबोलिनृपकहिसकाम ॥ रथजाहुवेगिलेज हांराम ॥ सुमंतआनिरथसमयसंत ॥ आरुहितसियासानुजअनंत ॥ शुभशृंगवेरआ एसुभाइ ॥ इहांनृपनिषादगुहमिल्योआइ ॥ सिंसिपावृक्षतरसुषहिस्याम ॥ रहिगुह समेततिहिंनिसाराम ॥ जटजूटकरेवटपयसजोग ॥ पटपत्रआदितपसीप्रयोग ॥ करिकृ पासुमंत्रीविदाकीन ॥ पदचारभएरथतजिप्रवीन ॥ प्रभुउतरिगंगआएप्रयाग ॥ भवभूत करतदरसनसभाग ॥ वसिवालमीकआश्रमविसाल ॥ कीनौतहांफलभोजनकृपाल ॥ पु निचित्रकूटआगमपुनीत ॥ बासिकछुकदिवससमलषनसीत ॥ मंत्रीसुमंत्रफिरअवधिआ इ ॥ जरिहृदयसोकनहिंबोलिजाइ ॥ प्रभुअग्रजबैआयौप्रधान ॥ रटिरामरामनृपतजेप्रा न ॥ कृतरामविरहनृपकस्यौकाल ॥ भावीनमिटैजोअंकभाल ॥ अवधेसमरणपुरदुषससे ष ॥ सुनवरणिजाइसुरसंभुसेष ॥ इहांजननिबंधुचित्रकूटआइ ॥ अवधेसमरणरामहिसु नाइ ॥ क्रमयथावेदविधिक्रियाकीन ॥ द्विजदानतिलोदकपितहिदीन ॥ मिलिमातभरत मंत्रीसुमंत॥सबजोरिसुकरकहिसुभटसंत॥ **भरतादिकउवाच॥** ॥ अवधेसचलहुफिरि ग्रेहआज ॥ रघुवंसतिलककरिअवधिराज ॥ जगअवरकोनइहिंराजजोग ॥ प्रभुकरहुपृ थ्वीरक्षाप्रयोग ॥ कहिरहेसवैमानीनएक ॥ तहांतजैनहींरघुनाथटेक ॥ पादुकादईभरतहि पुनीत ॥ वनचलेरामसुरमुनिविनीत ॥ शिरधरीपावरीअतिसुभाइ ॥ इहांभरतजुनंदीग्राम आइ ॥ गृहअत्रिआगमनअवधिईस ॥ सुषमिलेमुनीश्वरदैअसीस ॥ विस्तारगहनव

नवधाविराध ॥ सरभंगजस्योज्योंजेगसाध ॥ द्विजमिलेसुतीक्षणरामदेव ॥ आएअगस्ति
आश्रमअजेव ॥ राषेअगस्तिकैदेवराज ॥ सरधनुषदियरामहिसकाज ॥ पुनिकीनोदंडक
वनप्रवेश ॥ इहांमिलिजटायुपौरुषअशेष ॥ अवधेसपंचवटवसेआइ ॥ विधिजुक्तपर्णसा
लाबनाइ ॥ द्विजकीयसनाथसवरामदेव ॥ अनेकमारिआसुरअजेव ॥ इहिंसमयइंद्रको
सुतजयंत ॥ सोकाकरूपआयोअसंत ॥ सरसीकमारितिहिंदुष्टसाल ॥ कारिअर्धअंधछां
ड्योकृपाल ॥ पापीभ्रमितपदचिन्हपाइ ॥ अविलोकेसीतारामआइ ॥ सुपनषाधसीसोसि
यहिषान ॥ काटेहिलछमननाककान ॥ षरदूषनराक्षसजुरेषेत ॥ सोमारिलयेसेन्यासमेत
॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांविरूपसूपनषिआई ॥ दुष्टाछविरावनहिंदिषाई ॥ अरुषर
दूहनमरनसुनायो ॥ पापीरावनअतिदुषपायो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कंटकगृहमारीचके ।
अर्धनिसागतआइ ॥ षरदूषनकोमरनषल । सबैकह्योसमुझाइ ॥ मायामृगमारीचभ्रत ॥
बाढ्योविषमविषाद ॥ हठिछायासीताहरी । रावनवैरविवाद ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ पंषिजटायुपरमपदपायो । निशचरव्याधसमूलनसायो ॥ प्रेमजुक्तसिवरीगतिपाई ॥ वे
दविदितज्योंस्मृतीबताई ॥ वनवनभ्रमतविरहसियरघुवर ॥ सानुजसदुषआइपंपापुर ॥
बहुरिरामनारदसंवादा ॥ मर्मबताइधर्ममर्जादा ॥ पुनिगिरिमूकआगमनरघुपति ॥ मि
लिहनुमंतबसीठमहामति ॥ मारुतिआनिसुग्रीवमिलाए ॥ राममित्रकीनौउरलाए ॥ नि
श्चयवालिवधनव्रतलीनो ॥ देवयथाविधिप्रत्ययदीनो ॥ हत्योवालिसुग्रीवसषाहित ॥ क
रअपनैदैराजतिलककृत ॥ पायोराजकिष्किंधाकपिपति ॥ तारासहितसबैसुषसंपति ॥
अबरघुनाथप्रवर्षणआए ॥ छीनविरहपरवतशिरछाए ॥ वसितहांवर्षासरदविहाए ॥
पुनिलषमनकपिलैनपठाए ॥ अवलोकेलषमनकोपातुर ॥ कीयआगतस्वागताकपीश्वर ॥
वांदरजूथपजूथबुलाए ॥ इहांअष्टादशपद्मजुआए ॥ अवसुग्रीवप्रवर्षनआए ॥ लैकपिसु
भटरामपदलाए ॥ सीताषोजनवीरसयानै ॥ पठएवहूंदिगंतप्रमानै ॥ जामवंतजुवराजस
मरजस ॥ दछिनदिसपठएजोधादस ॥ इहांकिहुंपर्वतहनुमतआयो ॥ पैठ्योविवरनीरत
हांपायो ॥ सुनिअवताररामअवधेसर ॥ भयोसंपातिसपंषीअवसर ॥ इहांसंपातिग्रीधसु
धिआई ॥ वनअसोकमहसियावताई ॥ अबकपिषारसिंधुतटआए ॥ तहांअपनेबलबु
द्धिबताए ॥ बोल्यौतवहनुमंतमहावल ॥ षेचरकितिकमात्ररावनषल ॥ कपितहांझंप्यो
गगनअसंका ॥ लांघिसमुद्रगयोगढलंका ॥ कपिलंकामुहथापटमारी ॥ मसकातनध
रिगयोमझारी ॥ आतुरगृहगृहफिरिअकुलायो ॥ पुनिकपिरावणसोवतपायो ॥ देष्योआ
निविभीषनमंदिर ॥ मोरैआंगनतुलसीमंजर ॥ वनअसोकमहँसियाबताई ॥ इहांविभीष
नमिलिसुषदाई ॥ आनिअसोकासियाअविलोकी ॥ सिंसिपतरुवसिमहाससोकी ॥ वन
असोककपितोरिविगार्यो ॥ मिलिरनअक्षकुमारहिमार्यो ॥ दशशिरकहउपदेसजुदीनो
॥ कपिलंकागढदहनसुकीनो ॥ सिंधुकूदिआयोमारुतसुत ॥ अंगदादिदेष्योबलअ
द्भुत ॥ आएवीरजहांरघुराई ॥ वैदेहीकीकुसलसुनाई ॥ सजिमर्कटदलसीयासहाए ॥
॥ अवधेसुरसागरतटआए ॥ मिल्योविभीषनवदनमलीनो ॥ करसिरदैलंकापतिकी

मैचल्यौचहुंपाई ॥ निसचैचलतकुलरीतिसभाई ॥ जनमचरित्रअनुक्रमजेते ॥ तुमसवसु
नेकहेहमतेते ॥ विवरिरामकृतकवनवषानै ॥ सहसवदनकहिसकेसयानै ॥ जोइनमहँदे
वत्वनजानहु ॥ मनअवतारचरित्रनमानहु ॥ सुपैप्रकासहुइहांखगेश्वर ॥ ताकोतुमहिंदे
हिहमउत्तर ॥ काकभुसंडिकहेकृतकारन ॥ मिटेसवैसंदेहगरुडमन ॥ भागउदयमनसं
भ्रमभागे ॥ गरुडपायवायसकेलागे॥मनकेसबैअज्ञानमिटाए ॥ वायससाधुप्रवोधवताए
॥ एरघुनाथउग्रअवतारा ॥ भएमनुजटारनभुवभारा ॥ नियतत्रिलोकनाथतवजाने ॥
पूरनवेदपुरानप्रमाने ॥ जगतपितामहकहेनजिनके ॥ कृतकोजानिअनुक्रमतिनके ॥ मे
ममबुद्धिप्रमानप्रमानै ॥ जगउद्धारजितेकछुजानै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पौरुपरामप्रतापको।
करैसंदेहजुकोइ ॥ आगमनिगमनिदानयह । सोपैसाधनहोइ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥
उपज्यौमनसंदेहअति । पूरवकर्मप्रसाद ॥ मोहिभयौतुमसौमिलन । विसमयगएविषा
द॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ मायादासीरामकी । इहिभवभूतविगोइ ॥ यहकाहूवसना
भई । रहेसबैरटरोइ ॥ १ ॥ निसाकरैबहुभेसनट । तैसेनाचैनाच ॥ कृततिहिमायाराम
की । सोपैदीसतसाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वरनीनजाइदेपीविचारि ॥ क्रीडाब्रह्मादि
कमोहकारि ॥ जहांजहांरामविहरैजयंत ॥ तहांतहांसंगडोलौंतुरंत ॥ जोतीस्वरूपतजि
कहुंनजाउं ॥ षसिपरैजूठिलैलैसुषाउं ॥ इकदिवसबालक्रीडाउदार ॥ अवधेसकुंवरकी
नीअपार ॥ सोबचनमनहुदुर्गमसधीर ॥ सुधिहोतहोतपुलकितसरीर ॥ अहभूतचरित
मायाअमान ॥ पुनिकहिहुंकछुममविधिप्रमान ॥ पृथ्वीपग्रेहअंगनपवित्र ॥ चववंधक

नौ ॥ वनचरनिकरवारिनिधिबाँध्यौ ॥ सेतआनिपर्वतबहुसांध्यौ ॥ सेतमूलथापे रामेश्वर ॥ जिहिंदरसनत्रैतापमिटैजुर ॥ सेनअठारहपदमनिसंका ॥ लांघिसेतलागेगढलंका ॥ जुधजेतारवालिकोजायो ॥ इहांवसीठीअंगदआयो ॥ दलकपिलांघेचहूंदुवारा ॥ सारमारकरिसूरसंघारा ॥ राक्षसअजवअसेषरहेरन ॥ वासुरफिर्‌यौ विलोक्यौरावन ॥ इंद्रजीततहांआइअचानक ॥ भिरिकीनौसंग्रामभयानक ॥ बहुरिरामअहिपासबंधाई ॥ देवसुलीलामनुजदिषाई ॥ परेअचेतसमरभुविपावन ॥ राक्षसदेषिहर्षभयौरावन ॥ याहीसमैगरुडतुमआए ॥ षलविषमुषनिविसेषितषाए ॥ लागीसक्तिगिरेरनलछमन ॥ प्रानप्रयानकर्‌यौपौरुषपन ॥ इहांमारुतिद्रोणगिरलायौ ॥ जरीलुवतहीलछनजिवायौ ॥ याहीसमयजगायोआयौ ॥ समहरजूझतकुंभसवायौ ॥ महादुसहराघवसरमार्‌यौ ॥ द्वारलंकताकोसिरडार्‌यौ ॥ रोयौइहांमहादुषरावन ॥ सुरनिसालसुरराजसतावन ॥ लषिघननादविजयव्रतलीनौ ॥ दुष्टपिताकहँधीरजदीनौ ॥ कपटहोमकंटकसुतकीनौ ॥ देवहिभेदबिभीषनदीनौ ॥ पुनिलक्ष्मनरघुनाथपठाए ॥ अंगदहनूवीरसंगआए ॥ मेल्यौरथहयजुक्तअगनिमहँ ॥ तिहिंछनगूढजुमंत्रजप्यौतहँ ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ हठिकीनौरथहोमबहुरिउपज्यौसुमंत्रबल ॥ अगनिकुंडहयतुंडजरेनिकसेज्वालानल ॥ तिनहिंदेषिहनुमंतवारिलैअनलबुझायौ ॥ विगर्‌यौहोमविलोकिइंद्रजितबाहिरआयौ ॥ करिसारमारसिरमर्कटनि, कलहमहादारुणकर्‌यौ ॥ करसरप्रहारसौमित्रकै, महादुष्टराक्षसमर्‌यौ ॥ ॥ **छंदद्विअक्षरी** ॥ ॥ भ्रातापुत्रभतीजमहाभट ॥ सुरसचीवझूझेरनसंकट ॥ दाहपर्‌यौदशशिरउरदारुन ॥ महासोकसोचतमनहीमन ॥ इहांषलमायाकपटउपावै ॥ जोइजोइकरैसुनिर्फलजावै ॥ राक्षसमायारचिरचिरावन ॥ पुनिपुनिपीटैमुंडअपावन ॥ मिल्यौआनिराघवसौसमहर ॥ भिर्‌यौपचारिपचारिभयंकर ॥ कछुदिनजुद्धनिरंतरकीनौ ॥ देवलोकत्रयसंभ्रमदीनौ ॥ ज्यौज्यौंखेचररामाषिलावत ॥ ज्यौंइंद्रादिमहादुषपावत ॥ प्रभूकरतरनक्रीडापावन ॥ माधवहमाथिरनाहिंरहतमन ॥ अवधिनाथभुवभारउतारौ ॥ महाराजयादुष्टहिमारौ ॥ ॥ **काकउवाच** ॥ ॥ अवनिभाररघुनाथउतार्‌यौ ॥ मूलउषार्‌यौरावनमार्‌यौ ॥ विहितलोकत्रयबजैवधाए ॥ गीतबिमलसुरत्रियमिलिगाए ॥ रावनमरनमंदोदरिरोवन ॥ विबुधवृंदसुषराजबिभीषन ॥ सीतारामदरसहितसज्जन ॥ मिलिसरमादिककीनौमज्जन ॥ कव्योवियोगदरसप्रियकीनौ ॥ दारुनदिव्यअगनिचढिदीनौ ॥ इहांसाजिपुष्पकरथआयौ ॥ चढिरघुनाथविमानचलायौ ॥ अनुक्रमरामआयोध्याआए ॥ विमलनगरनभबजेवधाए॥ मातभ्रातमिलिघरघरमंगल ॥ जैसेसफरमरतपायौजल ॥ क्रमजुतजटाविमोचनकीनै ॥ निजतनभूषनसजैनवीनै ॥ बंधुभालकपिसभावनाई ॥ रामचंद्रवैठेरघुराई ॥ कर्‌यौतिलकअभिषेकराजक्रम ॥ साधुसकलगुरुमुनिवरसंगम ॥ नीतिधर्मनृपकर्मनिरंतर ॥ वेदप्रणीतचलतसीतावर ॥ कीनैन्यावस्वानद्विजकेरै ॥ नीतिधर्मरघुनाथनिवेरै ॥ निहत्यौसूद्रकरततपसाधन ॥ बालकजियोतिहींछनब्राह्मण ॥ न्यावपशूपक्षिनकेकीनै ॥ नीतिधर्मप्रभुपरमप्रवीनै ॥ पुनितबध

मैंचल्यौचहुंपाई ॥ निसचैचलतकुलरीतिसभाई ॥ जनमचरित्रअनुक्रमजेते ॥ तुमसबसुनेकहेहमतेते ॥ विवरिरामकृतकवनवषानै ॥ सहसवदनकहिसकेसयानै ॥ जोइनमहँदेवत्वनजानहु ॥ मनअवतारचरित्रनमानहु ॥ सुपैप्रकासहहुइहांखगेश्वर ॥ ताकोतुमहिदेहिहमउत्तर ॥ काकभुसंडिकहेकृतकारन ॥ मिटेसबैसंदेहगरुडमन ॥ भागउदयमनसंभ्रमभागे ॥ गरुडपायवायसकेलागे॥मनकेसबैअज्ञानमिटाए ॥ वायससाधुप्रबोधवताए ॥ एरघुनाथउग्रअवतारा ॥ भएमनुजटारनभुवभारा ॥ नियतत्रिलोकनाथतबजाने ॥ पूरनवेदपुरानप्रमाने ॥ जगतपितामहकहेनजिनके ॥ कृतकोजानिअनुक्रमतिनके ॥ मैं ममबुद्धिप्रमानप्रमानै ॥ जगउद्धारजितेकछुजानै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पौरुषरामप्रतापको। करैसंदेहजुकोइ ॥ आगमनिगमनिदानयह। सोपैसाधनहोइ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ उपज्यौमनसंदेहअति। पूरवकर्मप्रसाद ॥ मोहिभयोतुमसौमिलन । विसमयगएविषाद ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ मायादासीरामकी। इहिभवभूतविगोइ ॥ यहकाहूवसनाभई। रहेसबैरटरोइ ॥ १ ॥ निसाकरैबहुभेसनट। तैसेनाचैनाच ॥ कृततिहिमायारामकी। सोपैदीसतसाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वरनीनजाइदेषीविचारि ॥ क्रीडाब्रह्मादिकमोहकारि ॥ जहांजहांरामविहरैजयंत ॥ तहांतहांसंगडोलौंतुरंत ॥ जोतीस्वरूपतजिकहुंनजाउं ॥ षसिपरेंजूठिलैलैसुषाउं ॥ इकदिवसबालक्रीडाउदार ॥ अवधेसकुंवरकीनीअपार ॥ सोबचनमनहुदुर्गमसधीर ॥ सुधिहोतहोतपुलकितसरीर ॥ अहभूतचरितमायाअमान ॥ पुनिकहिहुंकछुममविधिप्रमान ॥ पृथ्वीपग्रेहअंगनपवित्र ॥ चवबंधुकरतशैशवचरित्र ॥ विस्तारवीरबालकविनोद ॥ पितुमातदेहिवंछितप्रमोद ॥ घनस्यामरामसुंदरस्वरूप ॥ अतिअंगअषिलशोभाअनूप ॥ राजीवपत्रमृदुचरणराजि ॥ विचचिन्हजुकुलिशादिकाविराजि ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ ससिदुतिहरतनषरअतिसोभित ॥ ललितचरणपल्लवमनलोभित ॥ नूपुररणितचारुरवराजै ॥ विमलजंघजुगकदलिविराजै ॥ रतनकनकमयकिंकिनिराजित ॥ विहितवीरकटिसिंघविराजित ॥ नाभिगंभीररुचिरत्रयरेषा ॥ विश्वविमोहकरूपविशेषा ॥ बाहुप्रलंबअतुलआयतउर ॥ सिंघनषरझूलतमोहतसुर ॥ अरुणकंजछविकरतलऐसे ॥ नषमनोजरथनोदतजैसे ॥ श्रीवत्सरेषविराजितगाढी ॥ करिछविसीमामानहुकाढी ॥ कंधविसालमनहुवनिकेहारि ॥ अविलोकतसूकतमदगजअरि ॥ चिवुकविंदुमेचकछविछाई ॥ अषिललोकसोभाजनआई ॥ अरुनअधरजुगराजतऐसे ॥ सुभगसपक्वविंबफलजैसे ॥ दुइदुइदंतअरुनअधऊरध ॥ बचनअमृतमोहतमनविधविध ॥ नासाविमलकपोलविराजै ॥ स्वासविलाससुगंधनिसाजै ॥ सरदचंद्रज्यौंहासप्रकासै ॥ नियतविलोकिभगतभयनासै ॥ कमलायतलोचनझलकांहीं ॥ मीनमनहुंउछलतजलमांहीं ॥ जुगलवक्रचंचलभ्रुवजैसे ॥ वालमधुपमानहुमिलिवैसे ॥ भालविसालवनीछविभारी ॥ राजतस्यामअलकघुघरारी ॥ तिलकवन्यौगोरोचनतैसौ ॥ जगजनमनमोहतहेजेसौ ॥ लसतकुटिलभ्रकुटीचलचचंल ॥ क्षत्रचरित्रविलोकित्रसतषल ॥ प्रफुलितवदनसरदससिपूरन ॥ तेजपुंजद्वादशरविसमरन ॥ नीरद

नीलनवीनबरनतन ॥ कुंचितकेससुदेसस्यामघन ॥ आजितअंगअंगशिसुभूषन ॥ ली
लावालबतीसैलच्छन ॥ किलकनिहसनिचलनिभजिचितवनि ॥ वचनविलाससुतोतरिबो
लनि ॥ नाचतनिजप्रतिबिंबनिहारत ॥ बालकेलिनृपअजिरविहारत ॥ निकटजातहुं
रूपनिहारत ॥ पकरनमोकहभुजापसारत ॥ हुंभजिचल्योंघरनिमुंहिधावहि ॥ हाथपसा
रहिपूपदिषावहि ॥ आपुनहसहिनिकटजबआऊं ॥ पैरोवहिजबदूरिपलऊं ॥ आऊं
जबपरसनपदअंबुज ॥ भाजहिभयकिलकारिमहाभुज ॥ मनुजबालज्यौंचरितमनोह
र ॥ करहिअनेकरामत्रिभुवनकर ॥ ॥ दोहा ॥ रघुवरप्रेरितइहिंसमय । मा
याव्यापीमोहि ॥ भावीवसजैसीभई । तैसीकहौवतोहि ॥ १ ॥ मायावससबमानिये ।
जगतचराचरजीव ॥ तिहिंमायावसत्रिगुणमय । देहननिर्गुणदेव ॥ २ ॥ रहैअषंडि
तज्ञानजो । सबहींकेषगराइ ॥ ईश्वरजीवहिभेदतो । कैसैकैकहिजाइ ॥ ३ ॥ जेअभि
मानीजीवहै । तेमायावसमानि ॥ सोमायावसईसकै । नियतकर्मगुनषानि ॥ ४ ॥ वि
नाभक्तिभगवंतकी । मुक्तिहिचाहैकोइ ॥ सोनरपूंछविषानविनु । जद्यपिग्यानीहोइ ॥
॥ ५ ॥ जोषोडसशसिनभउगहि । सबउडुगनमिलिसंग ॥ जोअनेकगिरिदवजरहि । र
विविनरजनिनभंग ॥ ६ ॥ मायाव्यापीमोहिजब । जानीरामसुजान ॥ करनसहाइजुदा
सको । भ्रमभंजनभगवान ॥ ७ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ बहुत्योंमोहिविलोक्योरघुव
र ॥ करिकिलकारिपसाखौंनिजकर ॥ धरनमोहिउरुवनिभरधाए ॥ सुंदरस्यामशरीर
सुहाए ॥ मैंउहिभाग्योगगनमझारी ॥ रामइहांलघुभुजापसारी ॥ हौंजहँजहँउडिनभ
चढिहाखौं ॥ नाथहाथसोतहांनिहाखौं ॥ हौंजबगयोब्रह्मपुरमांही ॥ उतहैअंगुलवीच
तहांही ॥ गोअपनीगतिलौनभगामी ॥ सप्तावरणभेदिहौस्वामी ॥ भ्रमतभ्रमतभयोंव्या
कुलभारी ॥ इहांबलघट्योंसुनहुंउरगारी ॥ शगतीथकीआपनीजानी ॥ मूंदेनैनहारिमैमा
नी ॥ इहांदेषौंतअवधिपुरआयो ॥ छोहघट्योंमनसंभ्रमछायो ॥ मोहिविलोकिराममुस
कायौ ॥ उदरमांझमेरोजियआयो ॥ देष्योउदरमांझब्रह्मंडा ॥ अषिललोकपतिलोकअषं
डा॥शिवविरंचिसूरजशशिसागर ॥ उडगनसरिताभूमीभूधर॥भ्रांतिअनेकसृष्टिभवभूता॥
अगनितजमसुरमुनिअवधूता ॥ अगनितकालकरालनागनर ॥ चारिषानिविधिसृष्टिच
राचर ॥ जोनहिदेषासुनानजाना ॥ वर्तमानभवभूतवषाना ॥ जनमनवचनअगोचरजो
ई ॥ कहिनसकैरचनानाहिकोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकएकब्रह्मांडमहँ ॥ सतसतव
र्षविहाई ॥ रचनाविश्वअनेकरंग ॥ तहांअविलोकिअघाइ ॥ ८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥
प्रतिलोकलोकविधिभिन्नपेषि ॥ दिननाथनिसाकरभिन्नदेषि ॥ पुनिभिन्नविष्णुशिवानिसा
पाल ॥ विकरालभिन्ननिसचरविताल ॥ आसुरसुरकिन्नरओरओर ॥ ठाएप्रपंचसबठौर
ठौर ॥ सबअंडकोसप्रतिनिजसरूप ॥ पुरअवधिओरओरैअनूप ॥ कोसल्यादसरथ
अवधिराइ ॥ सबदेषेभरतादिकसुभाइ ॥ ठहराइदेषिमैठामठाम ॥ रघुवीरनदेष्योएक
राम ॥ भ्रमिलोकलोकहुंसहितभीति ॥ तहांगएकलपशतएकवीति ॥ दूवदंडमांझसबचारि
तदेषि ॥ विभ्रम्यौदैवमायाविशेषि ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ विहसिरामवरवीर, हूंनि

कस्योमुषद्वारऽहै । प्रभुजानतपरपीर, सदाकरनकारनसमर्थ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांविलोकिमोहिमुषआगे ॥ लीलाबालकरनपुनिलागे ॥ अतुलप्रतापदेपिअधिकाई ॥ सात्विकउपजिदसाविसराई ॥ हूंविहालऽहैधरणिपरयोधसि ॥ त्राहित्राहिकरिकंपप्रानत्रसि ॥ आतुररामभमोहिअविलोक्यो ॥ क्रमअपनीमायावलरोक्यो ॥ देवकमलकरममशिरदीनो ॥ लीलाहीभ्रमसबहरिलीनो ॥ मोहविगतमोहिकस्योमुरारी ॥ हितदायकसेवकदुषहारी ॥ नियतदेषिप्रभुतारघुनायक ॥ कस्योहर्षमैंमनवचकायक ॥ भरेनैनजलरोमउभारा ॥ विनयकरेबहुवारंवारा ॥ सहितप्रेममैंवचनसुनाए ॥ दीनदयालदयादरसाए ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इहांपूंछ्योप्रभुअघमउधारण ॥ काकभुसंडिमांगिमनकारण ॥ अणिमादिकसबसिद्धिअनंतर ॥ सहितनवैनिधिमोक्षदुलभसुर ॥ विरतिग्यानविग्यानविवेका ॥ उरअभिलाषजुहोइअनेका ॥ मांगहुकाकजुहैइच्छामन ॥ निहचैसबैकरौंपरिपूरन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कछूनदुर्लभरामकह । देतलोकत्रयदान ॥ दीनउधारनहरनदुष । भ्रमभंजनभगवान ॥ १ ॥ कह्योभुसंडीजोरिकर । नाथदीनपरनेहु ॥ पूरनभगतिजुआपनी । देवदयाकरिदेहु ॥ २ ॥ अविगतउचितविसुद्धअति । वेदपुरावनवषान ॥ जिहिंषोजतजोगीजती । भक्तिदेहुभगवान ॥ ३ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ करुणासुनीभुसंडिकी । एवमस्तुकहिआप ॥ जोदैवीमायादुसह । वायसतोहिनव्याप ॥ ४ ॥ मायासंभवभ्रमभ्रमित । मनक्रमसुमिरतमोहि ॥ देवासुरनरहूंदुषद । कबहुनव्यापैतोहि ॥ ५ ॥ सुनिवायससिद्धांतयह । जोविधिदेववषानि ॥ ममकायासंभवसकल । जीवचराचरजानि ॥ ६ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ संश्रितमैंसबभूतसवारे ॥ नषसिषअंगसुन्यारेन्यारे ॥ पुनिहूंकरतभरनअरुपोषन ॥ षोजतदुषसुषतिनकेषनषन ॥ सावधाननिजकर्मनिसारे ॥ पैतिनमाझमनुजमुहिप्यारे ॥ भवतिनमहद्विजहैअतिभावत ॥ वेदधर्मषटकर्मबढावत ॥ तिनहूंमहजोविषयविरागी ॥ तत्ववादमुनिसंपतित्यागी ॥ तिनमहजेममसेवासांचे ॥ अवरआसविश्वासनिवांचे ॥ तिनमहमोहिभक्तप्रियभारि ॥ नीचौहोहुध्यानव्रतधारी ॥ हीनभक्तिजोविधिकिनहोई ॥ सबप्रानिनसमलेषोसोई ॥ ज्योंपितएकपुत्रबहुजाए ॥ प्रथकसीलगुनलक्षनगाए ॥ कोउतापसकोउज्ञानीपंडित ॥ कोउआचारीधर्मअषंडित ॥ कोउसुचिसूरदयादरदाता ॥ कोउगुनवंतसंतकोज्ञाता ॥ कोउधनपात्रदरिद्रीकोऊ ॥ हितकोउअहितदुष्टकिनहोऊ ॥ आनप्रकृतिगुनलच्छनआनै ॥ जद्यपिपिताअकर्मीजानै ॥ करैतथापिभरनपोषनक्रम ॥ सबपुत्रनिसौंदयाएकसम ॥ पिताकछूजोंद्वेषप्रकासै ॥ नियतततोसवसंततिनासै ॥ जोपितुमातभक्तिअतितत्पर ॥ निहचैसेवाकरैनिरंतर ॥ भवसोइपुत्रपिताकहभावै ॥ प्रानसमानपरमसुषपावै ॥ जीवचराचरइहिंविधिजोई ॥ अमरअसुरनरतिर्यगकोई ॥ इत्यादिकमैंसबैउपाए ॥ ठौरठौरगुनसक्षनठाए ॥ मोहिभजैताजिअहमितिमाया ॥ करैभक्तिमनसावचकाया ॥ जदपिनपूंसकवानरनारी ॥ जीवचराचरविश्वविहारी ॥ सर्वभावइकममविश्वासा ॥ आनैचित्तनदूजीआसा ॥ सत्यकहौंतोहिवायससोई ॥ करौनतासौअंतरकोई ॥ ॥

दोहा ॥ ॥ आसभरोसातजअवर । भजिमोकहँसतभाइ ॥ कबूनव्यापैकालतो हि । संततसाधुसुभाइ ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुधावचनप्रभुकेसुन त । सात्विकपुलकसरीर ॥ आनंदनहिनसमातउर । नयनसपूरितनीर ॥ २ ॥ सोसुखजानै मनश्रवन । जीहनवरन्योजाइ ॥ रामपरमसुषरूपपरस । अतिहियलेतअघाइ ॥ ३ ॥ ॥ काकभुसंडउवाच ॥ ॥ इहविधिमोहप्रबोधअति । करिअवधेसकुमार ॥ क्रीडा सिसुलागेकरन । नरहरकेआधार ॥ ४ ॥ करिरूषैमुषनैनभरि । चितैमातकीओर ॥ ल गीक्षुधाआंगनलुटत । कोसलराइकिसोर ॥ ५ ॥ आतुरजननिविलोकिइहां । लीनैकंठलगाइ ॥ देविसुतहिकुचदानदै । बहुस्योलेतबलाइ ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ करिवेषअसुभ जिहिंसुषहिकाज ॥ रतध्यानरहतनितभूतराज ॥ निजपुरीनिवासीपुरुषनारि ॥ रसमग्नर हतनितमुषनिहारि ॥ हितरूपनिहारतसुपनमाहि ॥ निहचैसुस्वर्गसुषगनतनाहिं ॥ हूंर ह्योकालकछुअवधिमाहि ॥ अविलोकतसुषनहिदृगअघाहि ॥ यहचरितनकाहूलष्योओ र ॥ मोसौंजुकह्योरघुवंसमौर ॥ प्रभुकेप्रसादवरभक्तिपाइ ॥ आनंदमग्नहूंग्रेहआइ ॥ व्या पैनमोहिमायाविषाद ॥ प्रभुरामकर्योकरुणाप्रसाद ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातेअवतैगरुडतु म ॥ संसयतजहुकुतर्क ॥ रामभजैभ्रमनासिहै । रजनिउदयज्योंअर्क ॥ १ ॥ ॥ छंदसो रठा ॥ ॥ सबनिजमतिअनुसार, प्रभुप्रतापकरुणाप्रगट ॥ कहीजुछांडिविकार, सोष गेसतुमहैसुनी ॥ १ ॥ मैसबनयननिहारि, महिमारामप्रतापगुन । यहजुकहीउरगारि, मायाभ्रमजातैमिटे ॥ २ ॥ मैअपनैअनुमान, रामचरितगायोरहषि । जोविधिवेदनजा न, पैसुरमुनिसंसयपरत ॥ ३ ॥ आदितुमहिषगराइ, लीलाउडतजुदंसलौं । पारगग ननहिपाइ, आपपहुविगतिआपुनी ॥ ४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कारन बोधभुसंडिको । इहांसुन्योषगराइ ॥ आन्योरामप्रतापउर । विस्मयबुधिविसराइ ॥ १ ॥ मायाजनितसंदेहमन । उपज्योहोकछुआइ ॥ सुमरिसुमरिअज्ञानसौं । पुनिषगेसपछि ताइ ॥ २ ॥ आदिब्रह्मअषिलेसइहां । जानेरामसुजान ॥ भएमनुजतनहरनभुव । भा रविषमभगवान ॥ ३ ॥ भ्रमभाज्योबाढीभगति । भोउपदेसभुसंड ॥ रामप्रतापषगेस उर । उपज्योग्यानअषंड ॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ करिकाकप्रसंसाहर्षकारि ॥ वाह नहरिबोलेपुनिविचारि ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ पूछ्योभुसंडिकहलागिपाइ ॥ संदेह चित्तउपज्योसुभाइ ॥ तुमसाधुसंतसुमतीसुजान ॥ विद्याविवेकपूरनप्रमान ॥ ॥ छंद द्विअक्षरी ॥ ॥ संतभक्ततुमरामसनेही ॥ हेतकवनयहवायसदेही ॥ पुनियहरामचारि त्रअपारा ॥ सोकहांलह्योजगतनिस्तारा ॥ प्रभुकोबालविलाससपावन ॥ निसचयमोहकुबु द्धिनसावन ॥ शिवमोकँहतवभेदसुनायो ॥ प्रलयकालहूंकालनपायो ॥ महाप्रलयबीतेभ वमाहीं ॥ निहचैनासतहांतुवनाहीं ॥ शिवकेवचनसुमिथ्यास्वामी ॥ गनियेकवहुनाहि नभगामी ॥ मनकुबुद्धिमतमोहनमाया ॥ कबहूतुवनहिव्यापैकाया ॥ जीवचराचरहैजग जेऊ ॥ कठिनकर्मवसकालकलेऊ ॥ ममसंदेहहोतमनमांही ॥ हेतकवनतवअंतजुनाहीं ॥ ॥ व्यापैतुमहिनकालकलेसा ॥ सोकारनकहिमिटैअंदेसा ॥ यहबलजोगकिज्ञानअभ्यासा

नियतकालतुमनेजोनासा ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ जोतुममुहिपूछीहरियाना ॥ निगम प्रणीतसुसुनहुनिदाना ॥ जोगदानजपतपमषसंजम ॥ विषयविरागसांतिइंद्रियसम ॥ पूरनप्रेमरामपदपंकज ॥ आनअलेपनीरज्योंअंबुज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामचरनरतरू परस । आनैचित्तनआन ॥ सुषदुषसंगानिवर्तसब । जीवन्मुक्तसुजान ॥ ॥ छंदद्विअ क्षरी ॥ ॥ मैइहदेहपरमसुषमान्यौं ॥ जीवनमुक्तआपकहँजान्यौं ॥ समुझ्योंसाधुसब हिमोहिसाधन ॥ एकैरामभक्तिआराधन॥नीचहुरामभक्तिजोजानै ॥ विश्वताहिकहिसाधुब षानै ॥ पाटकीटसंभवसबपेषो ॥ विमलपाटवरहोतविशेषो ॥ पावनहोततासपाटंवर ॥ सुषदस्वर्गपरिधानकरतसुर ॥ पाटमूलउतपत्तिअपावन ॥ गनतनजगतलगेगुनगावन ॥ विमुषरामब्रह्माकिनहोई ॥ करैनताकौंवंदनकोई ॥ रामभक्तिइहतनउरगारी ॥ पाव नमोहिलगतअतिप्यारी ॥ तातेंहोंनतजौंयहदेही ॥ साधुगनतसबरामसनेही ॥ विवि धजन्महूमोहविगोयो ॥ राघवविमुषमहादुषरोयो ॥ जन्मअनेककर्मबहुकीनों ॥ जोगज ग्यतपदानहुदीनों ॥ जोनिकवनजिहमाझनजायौं ॥ यौंहीभ्रमभ्रमिजन्मगमायौं ॥ दुष सुषसबैकर्मवसदेषे ॥ विश्वआजजौसुपनविसेषे ॥ मोहिअनेकजन्मसुधिमेरे ॥ तहाँ तहाँदेषेदुषबहुतेरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कथाजुपूर्वजन्मकी । सोसबकहौंसुभाइ ॥ अ बल्हैसुनियेएकचित । रहसिकथाषगराइ ॥ १ ॥ ॥ अथकाकभुसंडिपूर्वजन्मप्र संग ॥ ॥ कलिजुगभोपहिलैकलप । सोअपनेस्वाभाइ ॥ हूंजनम्योंतबसूद्रग्रह । अ बधिपुरीमहँआइ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सिवकीतहांकरौंहौंसेवा ॥ दुष्टभावनिंदौं सबदेवा ॥ अतिबाचालउग्रबुधिआपुन ॥ दंभकपटमदमत्तमहाधन ॥ वसौंअवधिपुर जदपिविसाला ॥ तदपिकुबुद्धिकुचाल्रकराला ॥ भईकठिनसाधनिसबभाइन ॥ पुरुषना रितहांपापपगइन ॥ कलिजुगग्रसेधर्मसबकेरे ॥ गएलुप्तऋषिग्रंथघनेरे ॥ निजमतिकल्पि तदंभिननाना ॥ प्रगटकरेबहुग्रंथप्रमाना ॥ चारिवर्णनाहिंधर्मविचारहिं ॥ वेदविरुद्धकर्म विस्तारहिं ॥ बेचहिंवेदवजारनिब्राह्मण ॥ सबसंग्रहेनृपतिप्रजासन ॥ आज्ञानिगमन मानैकोई ॥ जगतकरैभावैजिहिहोई ॥ जोवाचालसुपंडितजानै ॥ महादंभतिहिंतापसमा नै ॥ जगवंचकमौंनीव्रतजोई ॥ कहैसंतताकहँसबकोई ॥ परधनहारकसुपैसयानें ॥ जोइ कपटआचारीजानें ॥ बोलेंझूठलोकवहँकावै ॥ कलिसोइअद्भुतगुनीकहावै ॥ विनुआचारी सुपैविरागी ॥ तेईगुनीनिगमपथत्यागी ॥ नषजटबालजुषाषचढावै ॥ कलिसोइपरमहंस पदपावै ॥ करहिजुभेषअसुभभयकारी ॥ नियतजोगरततेइनरनारी ॥ भषीअभष्यअपेय सुभावै ॥ कलिजुगसोअबधूतकहावै ॥ जोलबारवक्तातिहिजानै ॥ महाधनेसवडोसोइमा नै ॥ रहतअनेकएकत्रियराचै ॥ निसदिननटमर्कटजौंनाचै ॥ द्विजनिसूद्रउपदेसदिषावैं ॥ वांचेंवेदपुरानवचावैं ॥ पूजेंसिलाजनेऊपहरैं ॥ चाहिकुदानविप्रकौंचहरैं ॥ करिकरिवेषज गतवहकावैं ॥ धर्मजतीबाहनचढिधावैं ॥ विधवाविविधिसिंगारबनावत ॥ पैसौभाग्यनि वस्त्रनपावत ॥ नरपरत्रियरतपरपतिनारी ॥ आपआपइच्छाअधिकारी ॥ सुनहिनपुत्रापि ताहितशिष्या ॥ देइचंडारद्विजनकहदिष्या ॥ पितामातजोबालपढावहि ॥ शिष्याउदरभर

णासमुझावहि ॥ ब्रह्मघातनरनारिविचारहि ॥ हेतबराटवृद्धगुरुमारहि ॥ वर्णधर्मजेवेदबषाने ॥ सुन्यकलारकुंभारकहाने ॥ तैलकछीपाकोलकिराता ॥ जेइत्यादिकलघुकुलजाता ॥ नासिसिंपतिमरिगइनारी ॥ जोगीभएमुंडितजटधारी ॥ ऐसौंमैंकलियुगअवलोक्यौ ॥ रहैनजीवभ्रमतअतिरोक्यौ ॥ वानप्रस्थकीनैवनवासी ॥ नासैदिनकछुग्रेहनिवासी ॥ हसिहसिद्विजसौंचरनपुजावहिं ॥ आपनष्टभएओरनसावहिं ॥ विप्रनिरक्षरक्रियाविसारैं ॥ हठिहठिलेतकुदाननहारैं ॥ चूकेकलिपतधर्मचलावैं ॥ वेदविरुद्धसुपंथबतावैं ॥ करहिवर्णसंकरअहंकारा ॥ बैठेमध्यसुभोजनवारा ॥ धारहिकुमतिकुमारगधावहि ॥ पापवियोगरोगदुषपावहि ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ बहुदामदेंदैजतीविधिविधिस्वर्णधामसँवारहीं ॥ विषयादिलंपटविरतिविसरीविसनकामवधारहीं ॥ धनवंततापसग्रहीनिर्धनकुलवधूनिनिकारहीं ॥ ग्रहराषिचेरिकुपथगामिनिसुभगतनसिंगारहीं ॥ सुततबहिलौपितुमातकेबसभवनभामिनिबसभए ॥ पुनिव्याहकेत्रियलेपियारीग्रहस्वशुरउठिउठिगए ॥ पितुमातुभ्राताकुटुंबपरहरिसुषनिवासीसासरे ॥ सांच्यौंसुषाइषवाइसालनिभएनिर्धनदिनभरे ॥ नृपसावधानअनीतिनिर्भयप्रजादंडप्रचारही ॥ मतनीचकेलैचोरमोषहिसाधुमारसंघारही ॥ द्विजसूत्रमात्रअवस्त्रतपसीप्रगटचिन्हप्रमानियै ॥ मालानतीरथवेदमानहिजगअनन्यसुजानियै ॥ कविपंडितनिसौंहितनकाहूरीजिभांडनिसौंरही ॥ कलिकालधर्मविलोपकीनैसुरनिपूजाघटिसही ॥ परिवारवारहुकालपृथ्वीमेघधारनमोषही ॥ अंकूरग्रासितअवनिआतुरसरसरितजलसोषही ॥ विनुअन्नतृणबहुविपतिव्यापितमनुजपसुतिहदुषमरैं ॥ महिपरतदुस्सहमहामारीसकलप्रानीसंघरैं ॥ विहगेसवर्ततविषमविधिमुनिकपटहठपाषंड ॥ मदमोहमारजुदंभअहमितिव्यापिबहुब्रह्मंड ॥ तहांवढेअविहितधर्मतामसनिठुरतामसदान ॥ इहिंदोषदेवनवर्षिअवनीनहींनजामतधान ॥ वपुरोगपीडितधर्मवर्जितलोकसुषनाहिनलहै ॥ अभिमानविषमविरोधअनहितसत्यवादीदुषसहै ॥ सबभएजातिकुजातिजाचकएकलोभहिआचरैं ॥ करिईरषाबहुदोषकारकप्रबलदुषउरपरजरैं ॥ गतवर्णआश्रमधर्मधारणमलिनतनमनदुर्मती ॥ सठपुष्टदुष्टसदोषतामसजगतभयजाठरजती ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सत्यव्रतसतजुगहिक्रतजुत्रेतातपकीनें ॥ द्वापरअतुलितदानदेवदानवनृपदीनें ॥ जबजैसोजिहिकर्योप्रगटतहांतेसौपायौ ॥ स्वर्गमृत्युपातालगुणजुनिगमागमगायौ ॥ संध्यात्रिकालनरहरसुकवि, संततसाधसंभारिहै ॥ कलिजुगदुरंतरघुनाथकौ, एकनामउद्धारिहै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करैजुकलिजुगमांझकोऊ । पुन्यमानसिकपाप ॥ ताकोफलसोपैतहां । अंतनपावैआप ॥ १ ॥ याजुगकोअधिकारयह । करिविश्वासजुकोइ ॥ रामरामयहमंत्ररटि । अंतमुक्तसोइहोइ ॥ २ ॥ ताकलिजुगमहवर्षबहु । हूंजुवर्स्योकछुकाल ॥ भएतहांदुर्भिक्षभय ॥ गयोविदेसविहाल ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जबवस्योउजेणीपुरीजाइ ॥ दारिद्रदसातनमनहुषाइ ॥ पुनिकछूतहांमैवित्तपाइ ॥ भवभक्तिकरौंसेवासुभाइ ॥ शिवसेवकद्विजइकअवरसाध ॥ अतिहेतकरैंपूजाअराध ॥ परमारथसाधैसहितप्रेम ॥ निंदैनविष्णुदेवहिसुनेम ॥ संगकपटकरोहूतहांसेव ॥ द्विजसोदयालभव

लख्योभेव ॥ करिपुत्रमोहिअतिदयाकीन ॥ पुनिसबपढाइविद्याप्रवीन ॥ अरुरुद्रमंत्र दीनेअनेक ॥ उपदेसविधिविधिकरिविवेक ॥ जपकरौंदेवालयनित्यजाइ ॥ सोदंभहृदय अहमितिसुभाइ ॥ हौंनीचजातिमनग्रसितमोह ॥ हठिकरौंविष्णुसौंमहाद्रोह ॥ निजसा धदेषिममजरहिनेन ॥ चितबढेद्वेषउपजैअचैन ॥ गुरुकरैमोहिदिनप्रतिप्रबोध ॥ कुल केसुभावतउबढैंक्रोध ॥ कपटीकेनीतिहिकहाकाम ॥ रसकामरत्तनहिभजैराम ॥ इकवार मोहिगुरुलियबुलाइ ॥ सबनीतिधर्मविधिविधिसिषाइ ॥ सुनिपुत्रकहौंइकगूढग्यान ॥ निर्धाररुद्रपूजानिदान ॥ आराधरुद्रफललहैएह ॥ सुतवंदविष्णुचरननिसनेह ॥ जिंहिं विष्णुभजहित्रयपुरविष्यात ॥ बहुस्योनरपामरकितिकवात ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हरपूजक हरिद्रोहकरि । पावैसुषनप्रमान ॥ संवतसाठिसहस्त्रसौं । नर्कहिकीटनिदान ॥ १ ॥ हरि सेवासतगुरुकही । जागीउरममज्वाल ॥ यहअनीतिसुनिअतिअसह । बाढ्योक्रोधकरा ल ॥ २ ॥ कबहुप्रबोधकुजातिकहँ । हितसिष्यानसुहाइ ॥ बाढैंअहिमुषविषमविष । को उपयपानकराइ ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पाईकुजातिविद्याप्रमान ॥ इहांबढीमोहि अहमितिअमान ॥ अधिकारविष्णुजबसुन्योएह ॥ सठतातैंबाढ्योममसंदेह ॥ घटिघाट विचारौगुरुहिघात ॥ विषलगीमोहिसोसुनतवात ॥ पावैकुजातिजिहतेप्रमान ॥ तिहिदु ष्टमूलषोवैनिदान ॥ चितमोहिजदपिदेषीकुचाल ॥ कछुकरिनक्रोधदरसीत्रिकाल ॥ पै धूमअगनितेजन्मपाइ ॥ बाढेसुआपअगनिहिवुझाइ ॥ गुरुमोहिसिषावैनित्यग्यान ॥ सो लगेसुनतमोहिविषसमान ॥ इकदिवसशिवालयजपतजाप ॥ इहिसमयताहांगुरुआइ आप ॥ मैउठिनकर्योआदरअजान ॥ अतिहीदयालगुरुजियनआन ॥ अविलोकिअ नारदगुरुअनीति ॥ पैसहिनसकेशिवधर्मप्रीति ॥ नभवानिभईतहांशिवनिकेत ॥ शिवनि गमसहाइकधर्मसेत ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हैतवगुरुउरक्रोधनहि । द्वि जसोइसाधुदयाल ॥ अनुचितअतिहिअनीतियह । सहिनरुद्रउरसाल ॥ ॥ ४ ॥ तातैंदेहुं सरापतोहि । मोसौंकह्योमहेस ॥ नीतिविरुद्धनहौंसहौं । उरबाढ्योअंदेस ॥ ५ ॥ करौंततौ कहडंडकछु । जोइतनैअपराध ॥ अष्टहोइतौंपंथभव । सहिनसकैसुरसाध ॥ ६ ॥ करैअना दरगुरुनिकौ । अथवागर्वअग्यान ॥ भजैसुरौरवनर्कभव । पावैदुष्टप्रमान ॥ ७ ॥ मिलैसु तिर्यगजोनिमह ॥ प्रयुतजन्मतिहिंपाप ॥ पर्योरहेविनुभक्षभव । सोपैअजगरसाप ॥ ८ ॥ महाविटपकोटरविकट । जामहँवसिहौजाइ ॥ रेअधमाधमअंतलौं । पापीअधगतिपाइ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ वायसउवाच ॥ ॥ ममगुरुइहांकरिमलिनमन ॥ सुनिशिवदारुनआप ॥ महासकंपविलोकिमुहि । पायोद्विजपरिताप ॥ १० ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ करिप्र णामगुरुजोरिकर । शिवसन्मुषद्विजसंत ॥ एअनादिअविगतअमित ॥ अद्भुतरूपअ नंत ॥ ११ ॥ ॥ छंदत्रोटक ॥ ॥ गुरुप्रणीतशिवस्तुति ॥ ॥ शिवदेवनमामिसुरेससुरं ॥ अषिलेशमहेशरिपूअसुरं ॥ त्रयमूरतिव्यापकएकतनं ॥ जगदीससहाइकसंतजनं ॥ त्रिगु णातमसत्वरजंतमसं ॥ रतध्यानविज्ञानजुजोगरसं ॥ ऊँकारउदारसुमारअरे ॥ संसारविका रहरेसिगरे ॥ महाकालहीकालकपालकरं ॥ धरजोगप्रयोगत्रिशूलधरं ॥ गुणपारनवारसंसा

एसमुझावहि ॥ ब्रह्मघातनरनारिविचारहि ॥ हेतबराटवृद्धगुरुमारहि ॥ वर्णधर्मजेवेदबषानै ॥ सुन्यकलारकुंभारकहानै ॥ तैलकछीपाकोलकिराता ॥ जेइत्यादिकलघुकुलजाता ॥ नासीसंपतिमरिगइनारी ॥ जोगीभएमुंडितजटधारी ॥ ऐसौमैकलियुगअवलोक्यौ ॥ रहैनजीवभ्रमतअतिरोक्यौ ॥ वानप्रस्थकीनैवनवासी ॥ नासेदिनकछुगेहनिवासी ॥ हसिहसिद्विजसौचरनपुजावहिं ॥ आपनष्टभएओरनसावहिं ॥ विप्रनिरक्षरक्रियाविसारें ॥ हठिहठिलेतकुदाननहारे ॥ चूकेकल्पितधर्मचलावे ॥ वेदविरुद्धसुपंथबतावे ॥ करहिवर्णसंकरअहंकारा ॥ बैठेमध्यसुभोजनवारा ॥ धारहिकुमतिकुमारगधावहि ॥ पापवियोगरोगदुषपावहि ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ बहुदामदैदैजतीविधिविधिस्वर्णधामसँवारहीं ॥ विषयादिलंपटविरतिविसरीविसनकामवधारहीं ॥ धनवंततापसगृहीनिर्धनकुलवधूनिनिकारहीं ॥ गृहराषिचेरिकुपथगामिनिसुभगतनसिंगारहीं ॥ सुततवहिलौपितुमातकैबसभवनभामिनिबसभए ॥ पुनिव्याहकैत्रियलेपियारीगृहस्वशुरउठिउठिगए ॥ पितुमातुभ्राताकुटुंबपरहरिसुषनिवासीसासरे ॥ सांच्यौसुषाइषवाइसालनिभएनिर्धनदिनभरे ॥ नृपसावधानअनीतिनिर्भयप्रजादंडप्रचारही ॥ मतनीचकेलैचोरमोषहिसाधुमारसंघारही ॥ द्विजसूत्रमात्रअवस्रतपसीप्रगटचिन्हप्रमानियै ॥ मालानतीरथवेदमानहिजगअनन्यसुजानियै ॥ कविपंडितनिसौहितनकाहूरीजिभांडनिसोंरही ॥ कलिकालधर्मविलोपकीनैसुरनिपूजाघटिसही ॥ परिवारवारहुकालपृथ्वीमेघधारनमोषही ॥ अंकूरग्रासितअवनिआतुरसरसरितजलसोषही ॥ विनुअन्नतृणबहुविपतिव्यापितमनुजपसुतिहदुषमरे ॥ महिपरतदुस्सहमहामारीसकलप्रानीसंघरे ॥ विहगेसवर्ततविषमविधिमुनिकपटहठपाषंड ॥ मदमोहमारजुदंभअहमितिव्यापिबहुब्रह्मंड ॥ तहांवढेअविहितधर्मतामसनिठुरतामसदान ॥ इहिंदोषदेवनवर्षिअवनीनहींनजामतधान ॥ वपुरोगपीडितधर्मवर्जितलोकसुषनाहिनलहे ॥ अभिमानविषमाविरोधअनहितसत्यवादीदुषसहे ॥ सबभएजातिकुजातिजाचकएकलोभहिआचरे ॥ करिईरषाबहुदोषकारकप्रबलदुषउरपरजरे ॥ गतवर्णआश्रमधर्मधारणमलिनतनमनदुर्मती ॥ सठपुष्टदुष्टसदोषतामसजगतभयजाठरजती ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सत्यव्रतसतजुगहिक्रतजुत्रेतातपकीनै ॥ द्वापरअतुलितदानदेवदानवनृपदीनै ॥ जबजैसोजिहिकस्योप्रगटतहांतेसौपायौ ॥ स्वर्गमृत्युपातालगुणजुनिगमागमगायौ ॥ संध्यात्रिकालनरहरसुकवि, संततसाधसंभारिहै ॥ कलिजुगदुरंतरघुनाथकौ, एकनामउद्धारिहै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करैजुकलिजुगमांझकोऊ । पुन्यमानसिकपाप ॥ ताकोफलसोपैतहां । अंतनपावैआप ॥ १ ॥ याजुगकोअधिकारयह । करिविश्वासजुकोइ ॥ रामरामयहमंत्ररटि । अंतमुक्तसोइहोइ ॥ २ ॥ ताकलिजुगमहवर्षबहु । ह्वैजुवरस्योकछुकाल ॥ भएतहांदुर्भिक्षभय ॥ गयोविदेसविहाल ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जबवस्यौउजेणीपुरीजाइ ॥ दारिद्रदसातनमनहुषाइ ॥ पुनिकछूतहांमैवित्तपाइ ॥ भवभक्तिकरौंसेवासुभाइ ॥ शिवसेवकद्विजइकअवरसाध ॥ अतिहेतकरैपूजाअराध ॥ परमारथसाधैसहितप्रेम ॥ निंदैनविष्णुदेवहिसुनेम ॥ संगकपटकरोहूतहांसेव ॥ द्विजसोदयालभव

लख्यौभेव ॥ करिपुत्रमोहिअतिदयाकीन ॥ पुनिसबपढाइविद्याप्रवीन ॥ अरुरुद्रमंत्र
दीनेअनेक ॥ उपदेसविधिविधिकरिविवेक ॥ जपकरौंदेवालयनित्यजाइ ॥ सोदंभहृदय
अहमितिसुभाइ ॥ होंनीचजातिमनग्रसितमोह ॥ हठिकरौंविष्णुसौंमहाद्रोह ॥ निजसा
धदेषिममजरहिनैन ॥ चितबढेद्वेषउपजैअचैन ॥ गुरुकरैमोहिदिनप्रतिप्रबोध ॥ कुल
केसुभावतउबढैक्रोध ॥ कपटीकेनीतिहिकहाकाम ॥ रसकामरत्तनहिभजैराम ॥ इकवार
मोहिगुरुलियबुलाइ ॥ सबनीतिधर्मविधिविधिसिषाइ ॥ सुनिपुत्रकहौंइकगूढग्यान ॥
निर्धाररुद्रपूजानिदान ॥ आराधरुद्रफललहैएह ॥ सुतवंदविष्णुचरननिसनेह ॥ जिंहिं
विष्णुभजहित्रयपुरविष्यात ॥ बहुखौनरपामरकितिकवात ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हरपूजक
हरिद्रोहकरि । पावैसुषनप्रमान ॥ संवतसाठिसहस्रसौं । नर्कहिकीटनिदान ॥ १ ॥ हरि
सेवासतगुरुकही । जागीउरममज्वाल ॥ यहअनीतिसुनिअतिअसह । बाढ्योक्रोधकरा
ल ॥ २ ॥ कबहुप्रबोधकुजातिकहँ । हितसिष्यानसुहाइ ॥ वाढैअहिमुषविषमविष । को
उपयपानकराइ ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पाईकुजातिविद्याप्रमान ॥ इहांबढीमोहि
अहमितिअमान ॥ अधिकारविष्णुजबसुन्योएह ॥ सठतातैंबाढ्यौममसंदेह ॥ घटिघाट
विचारौंगुरुहिघात ॥ विषलगीमोहिसोसुनतवात ॥ पावैकुजातिजिहतेप्रमान ॥ तिहिदु
ष्टमूलषोवैनिदान ॥ चितमोहिजदपिदेषीकुचाल ॥ कछुकरिनक्रोधदरसीत्रिकाल ॥ पै
धूमअगनितेजन्मपाइ ॥ बाढैसुआपअगनिहिबुझाइ ॥ गुरुमोहिसिषावैनित्यग्यान ॥ सो
लगेसुनतमोहिविषसमान ॥ इकदिवसशिवालयजपतजाप ॥ इहिसमयताहांगुरुआइ
आप ॥ मैंउठिनकर्योआदरअजान ॥ अतिहीदयालगुरुजियनआन ॥ अविलोकिअ
नारदगुरुअनीति ॥ पैसहिनसकेशिवधर्मप्रीति ॥ नभवानिभईतहांशिवनिकेत ॥ शिवनि
गमसहाइकधर्मसेत ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हैतवगुरुउरक्रोधनहि । द्वि
जसोइसाधुदयाल ॥ अनुचितअतिहिअनीतियह । साहिनरुद्रउरसाल ॥ ॥ ४ ॥ तातैंदैहुं
सरापतोहि । मोसौंकह्यौमहेस ॥ नीतिविरुद्धनहोंसहौं । उरबाढ्योअंदेस ॥ ५ ॥ करौंततौ
कहडंडकछु । जोइतनैअपराध ॥ भ्रष्टहोइतौंपंथभव । सहिनसकेसुरसाध ॥ ६ ॥ करैअना
दरगुरुनिको । अथवागर्वअग्यान ॥ भजैसुरौरवनर्कभव । पावैदुष्टप्रमान ॥ ७ ॥ मिलैसु
तिर्यगजोनिमह ॥ प्रयुतजन्मतिहिंपाप ॥ पर्यौरहेविनुभक्षभव । सोपैअजगरसाप ॥ ८ ॥
महाविटपकोटरविकट । जामहँवसिहौंजाइ ॥ रेअधमाधमअंतलौं । पापीअधगतिपाइ ॥
॥ ९ ॥ ॥ वायसउवाच ॥ ॥ ममगुरुइहांकरिमलिनमन ॥ सुनिशिवदारुनआप
॥ महासकंपविलोकिमुहि । पायोद्विजपरिताप ॥ १० ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ करिप्र
णामगुरुजोरिकर । शिवसन्मुषद्विजसंत ॥ एअनादिअविगतअमित ॥ अद्भुतरूपअ
नंत ॥ ११ ॥ ॥ छंदत्रोटक ॥ ॥ गुरुप्रणीतशिवस्तुति ॥ ॥ शिवदेवनमामिसुरेससुरं ॥
अषिलेशमहेशरिपूअसुरं ॥ त्रयमूरतिव्यापकएकतनं ॥ जगदीससहाइकसंतजनं ॥ त्रिगु
णातमसत्वरजंतमसं ॥ रतध्यानविज्ञानजुजोगरसं ॥ ॐकारउदारसुमारअरे ॥ संसारविका
रहरेसिगरे ॥ महाकालहीकालकपालकरं ॥ धरजोगप्रयोगत्रिशूलधरं ॥ गुणपारनवारसंसा

रगती ॥ हिमवंतसुताप्रियप्रानपती ॥ परहारतुषारसरीरप्रभा ॥ भूतेश्वरमंडितभूतसभा ॥ ॥ ॥ छंदभुजंगी ॥ ॥ लसैसीसगंगाजटाजूटलागी ॥ जस्यौकामतीजैनयनआगिजागी ॥ चलंकुंडलंभूलतासोमभालं ॥ सुधाश्रावकंबैननयनंविशालं ॥ विरूपंवयंविश्वहारंविकारं ॥ सदासंभुस्वामीससारंसधारं ॥ रदानांछदंबिंबरातेविराजे ॥ मुषंचंद्रहासंरदंवज्रराजे ॥ कृतंनीलकंठंमहारुंडमाला ॥ बनैबाहुदंडंप्रचंडंविसाला ॥ उरंआयतंमध्यभागंमृगेशं ॥ पदंपंकजंसाधुवंदेसुरेशं ॥ धरेश्वेतवीभूतित्रैसूलधारी ॥ वनीअद्रिजावामभागेविहारी ॥ मृगाधीसचर्मावृतंदेहमानं ॥ कटीपट्टकृष्णाजिनंकोपियानं ॥ प्रसन्नंवदन्नंमनीधारमाला ॥ करंकोपरंधारमनुजंकपाला ॥ प्रचंडंप्रभाकोटिभानंप्रकासं ॥ विरागीविभोथानउद्यानवासं ॥ अजंभृंगअहिफेनमत्तंअनंतं भषेमत्तवीजंसुजगतीजयंतं ॥ कलंकालकूटंसुकल्पांतकर्ता ॥ हरंहेललीलात्रयीतापहर्ता ॥ शिवंसांतरूपंसदासाधुसंगं ॥ अकामंसकामंसदाहंअनंगं ॥ कृपासिंधुशंभोचिदानंदकारी ॥ हितंसाधुसंसारसंतापहारी ॥ नतोहंसदाईसअवधूतअंगं ॥ पिनाकीप्रियंजोगभोगंप्रसंगं ॥ हरेनाथअंनाथपापौघहारी ॥ विग्यानंविधानंमसानंविहारी ॥ जराजन्मदुषंविशेषंविनासी ॥ निराकारआकारकैलासवासी ॥ नजानामियज्ञंनजोगंनजापं ॥ प्रियंमेसदापादपूजाप्रतापं ॥ प्रभूपुन्यपूजाकरौंनित्यप्रेमं ॥ महादानमांगौंयहैहौंसनेमं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्यौजुस्तोत्रमहेसकौ । नरहरमतिअनुमान ॥ काकभुसंडीगरुडकह । पूरवकथ्यौप्रमान ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ द्विजकीदेषीदीनता । प्रभुभूतेशअपार ॥ पुनितहांकीनौकरिकृपा । नभवानीनिर्धार ॥ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ ॥ मागहुजोकछुमांझमन । द्विजहूंभयोदयाल ॥ हितअभिलाषापूरिहौं । कह्योभवेसकृपाल ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ प्रभुतवमायामांझपरि । यहजुभ्रम्यौअग्यान ॥ यातैंक्रोधनउचितअब । भूतेश्वरभगवान ॥ १ ॥ एप्रभुसूद्रकुजातियह । मनमायाभ्रममान ॥ कस्यौजुइहिअपराधकछु । नियतछमहुभगवान ॥ ॥ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ ॥ मैदेष्यौपरमारथी । ब्राह्मणतोहिविशेष ॥ कृतअकर्मयाशूद्रके । सोमैक्षमेअशेष ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ स्वल्पकालममश्राप, सोपैहोइनिवर्तसब । यहद्विजजानहुश्राप. काजासिद्धियासूद्रकी ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जोदयौश्रापमैदोषजानि ॥ नाहिअथाहोइइहिंसत्यमानि ॥ इकसहसजन्मदुषदेषिश्राप ॥ सोपैनिवर्तपुनिहोइश्राप ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ भवभयेजुअंतरध्यानभाव ॥ कहिविप्रसूद्रसौंयहकहाव ॥ होंकालकर्मप्रेरितकराल ॥ विंध्याचलमैवासिभयोव्याल ॥ जोजन्मलहौंवसिकर्मजोग ॥ पुनितजौंदुष्षसहिअप्रयोग ॥ जौंपहारिवस्त्रनवनवप्रमान ॥ पुनिपुरुषजानिछांडैपुरान ॥ इहभांतितजेतनधरिअनेक ॥ विसस्यौनग्यानपहिलौंविवेक ॥ जिहिजिहीजोंनिमहवस्यौजाइ ॥ सुभरामभक्तिउपजैसुभाइ ॥ पुनिभ्रमतजोनिद्विजजन्मपाइ ॥ सबभांतिदुलभनिगमनिसुनाइ ॥ बहुलेउंसंगबालकबुलाइ ॥ सबकरौंरामलीलासुभाइ ॥ पुनिसमुझिभईकछुअवधिपाइ ॥ पितमोहितहांविद्यापढाइ ॥ वासनागईसबचितविकार ॥ सोइरामप्रेमउरवस्यौसार ॥ ऐसोअग्यानकोधौंअभेव ॥ सुरधेनछांडिकरिषरि

सेव ॥ रसराममग्नहौदिवसराति ॥ सुषश्रवरनकछुविद्यासुहाति ॥ हठरहेमातपितुस
बेहारि ॥ विद्यानकछूपाईविचारी ॥ पितमातजबैपंचत्वपाइ ॥ इहिसमयतबेउद्यानश्रा
इ ॥ जिहिजिहिसुथानमुनिलहौजाइ ॥ सुभरामरूपपूछौंसुभाइ ॥ गुरुसवैत्रतावैइहेग्या
न ॥ सर्वमयरामव्यापकसुजान ॥ निर्गुनहिचित्तममलगैनाहि ॥ मनरह्योश्रटकिछविस
गुनमांहि ॥ रघुवीरचरितगाऊंरसाल ॥ वनवनहिफिरौंपर्वतविसाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
मेरुसिषरवटवृछवर । लोमसश्राश्रमश्राइ ॥ ऋषिदरसनकीनोरहसि । पुनिहौलाग्योपाइ ॥
॥ १ ॥ लोमशपूछ्यौनिकटलै । कारनश्रागमसकाज ॥ कह्योतबैमैजोरिकर । सुनिसबसिद्धस
माज ॥ २ ॥ जानिपुरातनमुनिजथा । मैवर्ण्योश्रुतिसार ॥ कलोमांझरघुनाथको । एकना
मश्राधार ॥ ३ ॥ सगुनवषान्यौंमैसमुझि । मुनिवरनिरगुनमानि ॥ इहछिनलोमसकैइहां ।
उररिसउपजीश्रानी ॥ ४ ॥ साधुहुकैकाहूसमय । उपजैकठिनकषाइ ॥ ज्यौंचंदनकेषं
डजुग । श्रतिघसिश्रगनिउठाइ ॥ ॥ लोमसउवाच ॥ ॥ यातेलोमसकैश्रधिक । उ
ठ्योक्रोधउरश्रानि ॥ मैंउपदेस्योश्रगुनमत । मूरषसुतैनमानि ॥ ६ ॥ प्रतिउत्तरउत्तर
प्रगट । करतमोहितजिकानि ॥ तूंवायसज्योंभयत्रसित । मनविश्वासनमानि ॥ ७ ॥
तातैवायसहोइतू । करमकरहुवहुकाल ॥ बनबनडोलहुमनविकल । चहुंदिसविहगचंडा
ल ॥ ८ ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ मुनिवरदीनोश्रापमोहि । दारुनदुसहदुरंत ॥ मिटैन
सोमानवश्रमर । जोभावीभगवंत ॥ ९ ॥ तबहिभयौहूंकाकतन । मनकछुक्रोधनमा
नि ॥ भवजैसीभवतव्यता । ऐसीमिलीजुश्रानि ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विश्रक्षरी ॥ ॥ ऋ
षिदूषननाहिनषगराया ॥ महाप्रबलरघुपतिकीमाया ॥ दारुणमतिलोमसकहदीनी ॥
नाथप्रतिक्षामेरीलीनी ॥ मोकहँरामदासनिजमाना ॥ इहमतप्रभुलोमसउरश्राना ॥ द्विज
तबमोहिसाधुश्रतिदेषा ॥ विगतक्रोधविश्वासविशेषा ॥ मोकहँफेरिकह्योतवलोमस ॥ वि
प्रभयोसोविहितदयाबस ॥ करिकृपापरितोषनकीनो ॥ द्विजमोहिराममंत्रतहांदीनो ॥ बाल
विलासध्यानजोरघुवर ॥ पैमोहिकह्योरिषीसदयापर ॥ कछुककालमुनिराष्योमोकहँ ॥ तार
करामचरित्रकहेतहँ ॥ गुरुप्रभावजूवेदनिगाए ॥ सबरघुवरकेमोहिसुनाए ॥ लोमसउवाच
॥ गुरुउपदेसरामगुनगावहु ॥ सोनश्रसाधहिभूलिसुनावहु ॥ श्रविगतरामभक्तिउरएहै ॥ नि
यतसबैदुरबुद्धिनसैहै ॥ हितजुतरामभगततूंव्हैहै ॥ इच्छामरणपरमपदपैहै ॥ तुवश्राश्रम
जोजनइकताई ॥ सदाकुबुद्धिनश्राइगुसांई ॥ व्यापिनकबहुतोहिदिनवंका ॥ कालकर्मगुन
जनितकलंका ॥ श्रषिलपुरानश्रर्थइतिहासा ॥ पैहौसबतुमविनाहिप्रयासा ॥ रामभजनतरप
रतुमरैहै ॥ पूरनमनइच्छाभरिपैहै ॥ सुनिमुनिवानिप्रेमरससानी ॥ गगनगिरातबब्रह्मवषा
नी ॥ कह्योसवैव्हैहैमुनिकेरो ॥ मनक्रमवचनभगततूंमेरो ॥ वायसतदपिश्रनन्यविरागी ॥
गतिमतियाकीमोहीलागी ॥ वायसउवाच ॥ सुनिनभवानिभयोविस्वासा ॥ श्रषिलभईमो
हिपूरणश्रासा ॥ मुनिपदवंदिपरमसुषपायो ॥ इहिमेरोहौश्राश्रमश्रायो ॥ बसतइहांमोहिक
लपविहाए ॥ सातवीसऊपरसुषदाए ॥ प्रेममगनहूंरामपरायन ॥ मिलिगोज्योंप्रभुसोंजलजल
मन ॥ मतिगतिएकरामहीमेरे ॥ कर्मबालदेषौंतिहिकेरे ॥ विविधचरित्रबषानौरघुवर ॥ सुन

रगती ॥ हिमवंतसुताप्रियप्रानपती ॥ परहारतुपारसरीरप्रभा ॥ भूतेश्वरमंडितभूतसभा ॥ ॥ ॥ छंदभुजंगी ॥ ॥ लसैसीसगंगाजटाजूटलागी ॥ जस्यौकामतीजेनयनआगिजागी ॥ चलंकुंडलंभूलतासोमभालं ॥ सुधाआवकंवैननयनंविशालं ॥ विरूपंवयंविश्वहारंविकारं ॥ सदासंभुरवामीससारंसधारं ॥ रदानांछदंविंवरातेविराजे ॥ सुपंचंद्रहासंरदंवज्रराजे ॥ कृतंनीलकंठंमहारुंडमाला ॥ वनेबाहुदंडंप्रचंडंविसाला ॥ उरंआयतंमध्यभागंमृगेशं ॥ पदंपंकजंसाधुवंदेसुरेशं ॥ धरेश्वेतवीभूतित्रैसूलधारी ॥ वनीअद्रिजावामभागेविहारी ॥ मृगाधीसचर्मावृतंदेहमानं ॥ कटीपट्टकृष्णाजिनंकोपियानं ॥ प्रसन्नंवदन्नंमनीधारमाला ॥ करंकोपरंधारमनुजंकपाला ॥ प्रचंडंप्रभाकोटिभानंप्रकासं ॥ विरागीविभोथानउद्यानवासं ॥ अजभृंगअहिफेनमत्तंअनंतं भषेमत्तवीजंसुजगतीजयंतं ॥ कलंकालकूटंसुकल्पांतकर्ता ॥ हरंहेललीलात्रयीतापहर्ता ॥ शिवंसांतरूपंसदासाधुसंगं ॥ अकामंसकामंसदाहंअनंगं ॥ कृपासिंधुशंभोचिदानंदकारी ॥ हितंसाधुसंसारसंतापहारी ॥ नतोहंसदाईसअवधूतअंगं ॥ पिनाकीप्रियंजोगभोगंप्रसंगं ॥ हरेनाथअंनाथपापौघहारी ॥ विग्यानंविधानंमसानंविहारी ॥ जराजन्मदुष्षंविशेषंविनासी ॥ निराकारआकारकैलासवासी ॥ नजानामियज्ञंनजोगंनजापं ॥ प्रियंमेसदापादपूजाप्रतापं ॥ प्रभूपुन्यपूजाकरौनित्यप्रेमं ॥ महादानमांगौयहैहौसनेमं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्योजुस्तोत्रमहेसकौ । नरहरमतिअनुमान ॥ काकभुसंडीगरुडकह । पूरवकथ्योप्रमान ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ द्विजकीदेपीदीनता । प्रभुभूतेशअपार ॥ पुनितहांकीनौकरिकृपा । नभवानीनिर्धार ॥ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ ॥ मागहुजोकछुमांझमन । द्विजहूंभयोदयाल ॥ हितअभिलाषापूरिहौ । कह्योभवेसकृपाल ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ प्रभुतवमायामांझपरि । यहजुभ्रम्यौअग्यान ॥ यातैक्रोधनउचितअव । भूतेश्वरभगवान ॥ १ ॥ एप्रभुसूद्रकुजातियह । मनमायाभ्रममान ॥ कस्योजुइहिअपराधकछु । नियतछमहुभगवान ॥ ॥ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ ॥ मैदेष्यौपरमारथी । ब्राह्मणतोहिविशेष ॥ कृतअकर्मयाशूद्रके । सोमैक्षमेअशेप ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ स्वलपकालममश्राप, सोपैहोइनिवर्तसब । यहद्विजजानहुआप, काजसिद्धियासूद्रकी ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जोदयौश्रापमैदोषजानि ॥ नाहिव्रथाहोइइहिंसत्यमानि ॥ इकसहसजन्मदुषदेषिश्राप ॥ सोपैनिवर्तपुनिहोइश्राप ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ भवभयेजुअंतरध्यानभाव ॥ कहिविप्रसूद्रसौंयहकहाव ॥ होकालकर्मप्रेरितकराल ॥ विंध्याचलमैवसिभयौव्याल ॥ जोजन्मलहौंवसिकर्मजोग ॥ पुनितजौंदुष्षसहिअप्रयोग ॥ जौपहरिवस्त्रनवनवप्रमान ॥ पुनिपुरुषजानिछांडैपुरान ॥ इहभांतितजेतनधरिअनेक ॥ विसर्योनग्यानपहिलौविवेक ॥ जिहिजिहीजोनिमहवस्योजाइ ॥ सुभरामभक्तिउपजैसुभाइ ॥ पुनिभ्रमतजोनिद्विजजन्मपाइ ॥ सबभांतिदुलभनिगमनिसुनाइ ॥ बहुलेउसंगबालकबुलाइ ॥ सबकरौरामलीलासुभाइ ॥ पुनिसमुझिभईकछुअवधिपाइ ॥ पितमोहितहांवियापढाइ ॥ वासनागईसबाचितविकार ॥ सोइरामप्रेमउरवस्योसार ॥ ऐसौअग्यानकोधौअभेव ॥ सुरधेनछांडिकरिषरि

सेव ॥ रसराममग्नहौंदिवसराति ॥ सुषश्रवरनकछुविद्यासुहाति ॥ हठरहेमातपितुस
बेहारि ॥ विद्यानकछूपाईविचारी ॥ पितमातजबैपंचत्वपाइ ॥ इहिसमयतबैउद्यानश्रा
इ ॥ जिहिजिहिसुथानमुनिलहौंजाइ ॥ सुभरामरूपपूछौंसुभाइ ॥ गुरुसबैव्रतावैइहैग्या
न ॥ सर्वमयरामव्यापकसुजान ॥ निर्गुनहिचित्तममलगैनाहि ॥ मनरह्यौश्रटाकिछविस
गुनमांहि ॥ रघुवीरचरितगाऊंरसाल ॥ वनवनहिफिरौपर्वतविसाल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
मेरुसिषरवटवृछवर। लोमसश्राश्रमश्राइ ॥ ऋषिदरसनकीनौरहसि। पुनिहौंलाग्योपाइ ॥
॥ १ ॥ लोमशपूछ्यौनिकटलै। कारनश्रागमकाज ॥ कह्यौतबैमैजोरिकर। सुनिसबसिद्धस
माज ॥ २ ॥ जानिपुरातनमुनिजथा। मैवर्ण्यौश्रुतिसार ॥ कलौमांझरघुनाथको। एकना
मश्राधार ॥ ३ ॥ सगुनवषान्यौमैसमुझि। मुनिवरनिरगुनमानि ॥ इहछिनलोमसकेइहां।
उररिसउपजीश्रानी ॥ ४ ॥ साधुहुकैकाहूसमय। उपजैकठिनकषाइ ॥ ज्यौंचंदनकेषं
डजुग। श्रतिघसिश्रगनिउठाइ ॥ ॥ लोमसउवाच ॥ ॥ यातेलोमसकेश्रधिक। उ
ठ्योक्रोधउरश्रानि ॥ मैंउपदेस्यौश्रगुनमत। मूरषसुतैनमानि ॥ ६ ॥ प्रतिउत्तरउत्तर
प्रगट। करतमोहितजिकानि ॥ तूंवायसज्योंभयत्रसित। मनविश्वासनमानि ॥ ७ ॥
तातैवायसहोइतू। करमकरहुबहुकाल ॥ बनत्रनडोलहुमनविकल। चहुंदिसविहगचंडा
ल ॥ ८ ॥ ॥ काकउवाच ॥ ॥ मुनिवरदीनौश्रापमोहि। दारुनदुसहदुरंत ॥ मिटैन
सोमानवश्रमर। जोभावीभगवंत ॥ ९ ॥ तबहिभयौहूंकाकतन। मनकछुक्रोधनमा
नि ॥ भवजैसीभवतव्यता। ऐसीमिलीजुश्रानि ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विश्रक्षरी ॥ ॥ ऋ
षिदूषननाहिनषगराया ॥ महाप्रबलरघुपतिकीमाया ॥ दारुणमतिलोमसकहदीनी ॥
नाथप्रतिक्षामेरीलीनी ॥ मोकहँरामदासनिजमाना ॥ इहमतप्रभुलोमसउरश्राना ॥ द्विज
तबमोहिसाधुश्रतिदेषा ॥ विगतक्रोधविश्वासविशेषा ॥ मोकहँफेरिकह्यौतबलोमस ॥ वि
प्रभयौसोविहितदयाबस ॥ करिक्रपापरितोषनकीनौ ॥ द्विजमोहिरामसमंत्रतहांदीनौ ॥ बाल
विलासध्यानजोरघुवर ॥ पैमोहिकह्यौरिषीसदयापर ॥ कछुककालमुनिराष्यौमोकहँ ॥ तार
करामचरित्रकहेतहँ ॥ गुरुप्रभावजूवेदनिगाए ॥ सबरघुवरकेमोहिसुनाए ॥ लोमसउवाच
॥ गुरुउपदेसरामगुनगावहु ॥ सोनश्रसाधहिभूलिसुनावहु ॥ श्रविगतरामभक्तिउरएहै ॥ नि
यतसबैदुरबुद्धिनसैहै ॥ हितजुतरामभगततूंव्हैहै ॥ इच्छामरणपरमपदपैहै ॥ तुवश्राश्रम
जोजनइकतांई ॥ सदाकुबुद्धिनश्राइगुसांई ॥ व्यापिनकबहुतोहिदिनवंका ॥ कालकर्मगुन
जनितकलंका ॥ श्रषिलपुरानश्रर्थइतिहासा ॥ पैहौसबतुमविनहिप्रयासा ॥ रामभजनतत्प
रतुमरैहै ॥ पूरनमनइच्छाभरिपैहै ॥ सुनिमुनिवानिप्रेमरससानी ॥ गगनगिरातबब्रह्मवषा
नी ॥ कह्यौसवैव्हैहैमुनिकेरौ ॥ मनक्रमवचनभगततूंमेरौ ॥ वायसतदपिश्रनन्यविरागी ॥
गतिमतियाकीमोहीलागी ॥ वायसउवाच ॥ सुनिनभवानिभयोविस्वासा ॥ श्रषिलभईमो
हिपूरणश्रासा ॥ मुनिपदवंदिपरमसुषपायौ ॥ इहिमेरौहौश्राश्रमश्रायौ ॥ बसतइहांमोहिक
लपविहाए ॥ सातवीसऊपरसुषदाए ॥ प्रेममगनहूंरामपरायन ॥ मिलिगोज्यौंप्रभुसौंजलजल
मन ॥ मतिगतिएकरामहीमेरे ॥ कर्मबालदेषौंतिहिकेरे ॥ विविधचरित्रबषानौंरघुवर ॥ सुन

हुविहंगआनिसबसादर ॥ रामअवधिजवनरतनधाराहिं ॥ बालविनोदविचित्रविहारहि ॥ अबधिपुरीहौंतवतवआऊं ॥ प्रभुहिविलोकिपरमसुपपाऊं ॥ धरिसोइबालरूपउरध्याऊं ॥ अबधिपाइआश्रमइहांआऊ ॥ काकदेहपायोजिहिकारन ॥ मैतुमसौंविनयौंवाचामन ॥ पै यहदेहमोहितिहिप्यारी ॥ रामचरनरतिअतिउरगारी ॥ जेयहभगतिछांडिअग्यानी ॥ ज्ञानिभजहिसमकरिविग्यानि ॥ कामगावगृहभीतारित्यागी ॥ करहिआकपयपाजअभागी ॥ चितजेछांडिभगतिसुपचाहैं ॥ हठकरिआनधर्मअवगाहैं ॥ तेइसठसिधुनावविनुतरही ॥ पारनलहैंभ्रमनभ्रमपरही ॥ सुनिभुपंडिकेवचनपगेसर ॥ पुनिबोल्योंमृदुवानिप्रेमपर ॥ **गरुडउवाच** ॥ ॥ हितप्रवोधवायसपतितेरे ॥ मनभ्रमकछुनरह्योमनमेरे ॥ संसयएक मोहिपुनिस्वामी ॥ तुमहिजनाउंअंतरजामी ॥ संतकहैसबग्यानसमाना ॥ नाहिउपा यतरनकछुआना ॥ ग्यानभगतिमहकेतोअंतर ॥ निसचयवायसकहौंनिरंतर ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ सुनेगरुडकेवचनसुहाए ॥ पुलकितकाकपरमसुषपाए ॥ ॥ **काक उवाच** ॥ ॥ ज्ञानभगतिअंतरनहिगाए ॥ पैदोउहरतसंदेहपराए ॥ इनमहभेदक छुकहैंआनै ॥ वायससुनहुमुनीशबपानै ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ पूछ्यौ काकभुसंडिप्रति । जोकछुगरुडसुजान ॥ ज्ञानभक्तिकेभेदगुन । पूरनकह्योप्रमान ॥ ११ ॥ ॥ **अथसप्तप्रश्नगरुडवायसप्रति** ॥ ॥ **गरुडउवाच** ॥ ॥ कह्योगरुडत हांजोरिकर । सुनहुभुसंडिसुभाइ ॥ प्रश्नसप्तक्रमजुतप्रगट । तेमुहिदेहुवताइ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ सुनिप्रथमप्रश्नवायससधीर ॥ संसृतिमहदुर्लभकोसरीर ॥ १ ॥ दुषकव नकहोदारुनदुरंत ॥ २ ॥ सुषकवनवषानैजाहिसंत ॥ ३ ॥ भवकहौंसंतअनसंतभेद ॥ ॥ ४ ॥ गुनदोषबतावहुविदितवेद ॥ ५ ॥ पुन्यकोकहहुअरुकवनपाप ॥ ६ ॥ इनकेप्रभाव तुमजानिआप ॥ मानसिकरोगकैसोमहंत ॥ ७ ॥ तुमतनदुख्योकछुपरमतंत ॥ **काकउवा च** ॥ विहगेससुनहुसंक्षेपवात ॥ तुमप्रश्नसातपूंछेजुतात ॥ दुर्लभसंसारमानुषीदेह ॥ है जासरामचरननिसनेह ॥ जाचैंजिहिथिरचरअषिलजीव ॥ दीजैजिहिउपमासमदईव ॥ ॥ **छंदद्विअक्षरी** ॥ ॥ भवनरजोगभोगकोभाजन ॥ अश्वमेधलोधर्मउपाजन ॥ सोतनलहिरघुनाथसँभारै ॥ आपुनउभयवंशउद्धारै ॥ मुक्तिपात्रहैएकैमानुष ॥ साधैस्वर्गसहैतनदुषसुष ॥ हैनअवरनरसमसरदेही ॥ सहजसाधुरघुनाथसनेही ॥ ॥ १ ॥ हैदरिद्रसमदुषकोउनाहीं ॥ जिहिंसुरूपसुषसंपतिजाहीं ॥ जीयतमृतकताकहज गजानै ॥ पैनसषाकोउबंधुपिछानै ॥ नगरवसतहीजिहिघरसूनो ॥ आवैअतिथजाइक हिऊनो ॥ २ ॥ साधुसमागमयहैपरमसुष ॥ मनजानैकहिजाइननिजमुष ॥ भगतिभजन नाहीसंगजाई ॥ प्रेमसहितसोयैनिधिपाई ॥ संतसहजभवभूतसनेही ॥ दुषसुषसोकह र्षनहिदेहि ॥ परसुखदेषिआपसुषपावैं ॥ निधिहूलहिनहिगर्वजनावैं ॥ आपुनलघुसबगुरु अनुमानै ॥ जगभवभूतब्रह्ममयजानै ॥ ३ ॥ परसुषदुषीअभागेपामर ॥ सोइअसंतपरद्रो हनितपर ॥ सनज्यौंलषपरवंधनिसाधै ॥ अंगदुषसहिपरदुषआराधै ॥ षलविनुस्वारथ परअपकारी ॥ तकतरहैज्यौंमुषमंजारी ॥ परउपकारकियौविनसावै ॥ परसंपतिदेषैदुषपावै ॥

निहचैअमरअसंतहुनांहीं ॥ हेतहिध्यानआतमगलिजाही ॥ ४ ॥ दयासमानपुन्यनहि दूजा ॥ प्रेमनेमसौसुरगुरुपूजा ॥ मनजिहिंवेदम्रजादामांही ॥ अहनिसिनीतिधर्मअवगाही ॥ भूलेहुवेदविरोधनभावे ॥ क्रमजुतसोईपुन्यकहावे ॥ ५ ॥ परनिंदासमपापनप्रानी ॥ जिहिनरहरिगुरुभगतिनजानी ॥ निंदासाधुद्विजानिजोकरही ॥ धीरजविनुवायसतनधरही ॥ निगमदेवनिंदकजोईनर ॥ रौरवनर्कभोगवेदुषभर ॥ स्वामिद्रोहपतिनिंदासाधे ॥ आपउलूकहोइदिनआंधे ॥ फलविनुपरअवगुनकरिफूलै ॥ होइवागलीअधमुषझूलै ॥ जिनमहँएअवगुनजगजानै ॥ पापयहैअतिवेदप्रमानै ॥ ६ ॥ ॥ अथमानासिक ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जपनेमधर्मतपजोगजाप ॥ आचारदानव्रतयज्ञआप ॥ इत्यादिकहैभेषजअनेक ॥ कइक्तिगनाउंएकएक ॥ एगमहिकदाचितमनासिरोग ॥ भवलहैजीवतवकर्मभोग ॥ मानसीव्याधिदुषसहतमूढ ॥ भवसोकविरहगनिप्रीतिगूढ ॥ अतिदुषदपराभवरुजअयोग ॥ रघुनाथकृपातेजाहिरोग ॥ याकोउपायहैयहैएक ॥ अग्यानमरहिकरिकरिअनेक ॥ सठजपैअविद्यामिलिकुसंग ॥ अग्यानउपजिहोइविवसअंग ॥ पुनिउपजैविषयकुपथ्यपाइ ॥ सोइरोगदुसहसंततसुभाइ ॥ अवधेसकृपाफिरिकरैआप ॥ सतगुरूवैद्यमिलिहरिसंताप ॥ उपवासइहैतजिविषयआस ॥ सतगुरूवचनउपजैविसास ॥ रहिसंजमतोपैजाइरोग ॥ पैतजैकुपथइंद्रीप्रयोग ॥ रतिचरणसरणगहिअवधिराइ ॥ प्रभुभक्तिसजीवनमूलिपाइ ॥ अनरोगहोइतवसकलअंग ॥ अनुरागवढैअतिबलअभंग ॥ विधिषुधासुमतिनवनवनिदान ॥ सुभग्याननीरउपजैसनान ॥ दुर्बलतानासैउरदुरास ॥ वढिदेहपुष्टिउपजैविसास ॥ सुषसाधिभजनकरिहरिसनेह ॥ अविकारवेदमैतत्वएह ॥ विनुरामभगतिजाहिनविकार ॥ श्रुतिसाथकहतयहमंत्रसार ॥ हरिभक्तिविनानाहिमुक्तिहोइ ॥ करिजतनआनहठिफलनकोई ॥ जगजीवभगतिविनुगतिनजाइ ॥ अनभूतअसंभवमिलैआइ ॥ मिलिउपजैकमठीपीठिरोम ॥ वरुहोइमुष्टिगतअगहव्योम ॥ पुनिवांझकदाचितपुत्रपाइ ॥ अरुमृगतृष्णातेत्रिषाजाइ ॥ फूलैपुनिचलदलविमलफूल ॥ सससीसस्रृंगजामैसमूल ॥ रविउदयननासैअंधकार ॥ अरुअवैनिसाकरकरअंगार ॥ करिमंथनवारिघृतकाढिकोइ ॥ हठिसिक्तापीलैतैलहोइ ॥ इत्यादिअसंभवबनैआइ ॥ पुनिभक्तिविनागतिकिहुंनपाइ ॥ करिदेषहुबहुतेजतनकोइ ॥ हरिभक्तिविनानहिमुक्तिहोइ ॥ हरिकरहिमेरुतैतूलहाथ ॥ सममेरुकरैतूलहिसनाथ ॥ हैस्मृतीवेदसिद्धांतएह ॥ हठछाँडिकरहुरघुवरसनेह ॥ हरिआहिअषिलमायाअजीत ॥ मोसेकुजीवसौंपरमप्रीत ॥ तुमरामकथापूछीसुतंत्र ॥ मैकहेचारितसबमूलमंत्र ॥ सकुलाधममोकहकरयौसाध ॥ अरुदईभक्तिअपनोअराध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जदपिअपावनजीवजग । सुनियेकृपाखगेस ॥ महाभक्ततवदरसमुहि । आजदयोअवधेस ॥ १ ॥ कर्मउदधिरघुनाथके । पारनसुरहूपाइ ॥ अपनीबुधिअनुसारए ॥ मैसंक्षेपसुनाइ ॥ २ ॥ कृतप्रतापरघुनाथके । अद्भुतअमितअगाध ॥ नेतिनेतिजाकहँनिगम ॥ सदाबतावतसाध ॥ ३ ॥ कोउसुनैजूयहकथा । पढैलिषैजुतप्रीति ॥ सिद्धिमनोरथहोहिंसब । उरव्यापैनअनीति ॥ ४ ॥ कर्मकथारघुवीरकी । सुनिश्रुतिसंमतसार ॥ गोपदज्यौंभवसिंधुगानि ।

प्रगटभएजनपार ॥ ५ ॥ यहांभुसंडीआपनो । पूरवजन्मप्रसंग ॥ कारणवाइसदेहको । सबैकह्योहितसंग ॥ ६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सातप्रश्नपूछेसमझि । वायससोंविहगेस ॥ समाधानतिनकेसबै । कीनेनासकलेस ॥ ७ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ कह्योषगेसभुसंडिकह । प्रभुतवबोधप्रसाद ॥ मायासंभवदुपदमम ॥ विस्मयगएविषाद ॥ ८ ॥ मैंअबजान्योंजन्ममम । भौकृतकृत्यसुभाइ ॥ कृतप्रतापरघुनाथके । अषिलवसेउरआइ ॥ ९ ॥ प्रभुमायासभवप्रगट । उरबाढेअग्यान ॥ तेवायसतवबोधतें । विपमविपादविलान ॥ १० ॥ रामचरणरतिरूपरस । उपजेचित्तअपार ॥ मोहजनितसंदेहमम । विनसेविविधिविकार ॥ ११ ॥ आदब्रह्मअवधेसए । पूरनपुरुषप्रमान ॥ मायाजोगसुमैथिली । लपमनसेपसुजान ॥ १२ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अगुनब्रह्मअवतारप्रगटरघुनाथप्रमानै ॥ महाशक्तिमैथिलीजोगमायाजगजानै ॥ षलरावनषयकर्यौलागिलंकागढलिन्नौं ॥ सरनाविजयपंजरसुभाइदुर्जनकहँदिन्नौं ॥ सुनिरामचरित्रनरहरसुकवि. भाग्यउदयमेरेभए ॥ वायसप्रसादतवअतिविषम, मोहजनितभ्रमभज्जए ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आश्रमरह्योसुआपनै । वायसप्रेमविदेह ॥ संसयमिटेप्रबोधसुनि । गरुडगएनिजग्रेह ॥ १ ॥ काकभुसंडीगरुडको । साधुसगुनसंवाद ॥ कह्योसुपदनरहरसुकवि । श्रीरघुनाथप्रसाद ॥ २ ॥ ॥ इतिश्रीकाकभुसंडिगरुडसंवादसंपूर्ण ॥ ॥ अथवसिष्टआगमन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इक्कदिवसअवधेसरामअंतहपुरराजित ॥ भामजनकजानामभागजुतप्रेमविराजित ॥ द्विजवसिष्टगुरुदेवइहांनभमारगआए ॥ प्रभुप्रणामकरिप्रीतिविहितआसनबैठाए ॥ करिकृपाजुतहांरघुनाथकहि, भक्तवछलजुगजोरिभुव ॥ गुरुराजतिहारेआगमन, हमसुआजकृतकृत्यहुव ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दैनलगेमोहिनहुषनृप । पौरोहितपदप्रीति ॥ तहांनकाख्योंहोंतुरत । भवउपजीमनभीति ॥ १ ॥ पुनिमोकहँलैनोपरे । दुषसुषचरतनिदान ॥ नृपआज्ञामानीनहीं । हूंनटिरह्योनिदान ॥ २ ॥ तवब्रह्मामेरेपिता । आज्ञादीनीएहु ॥ यामहँअतुलितफलअषिल । हैसुतनिःसदेहु ॥ ३ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ व्हैहैहरिरघुवंसमह । त्रेताजुगअवतार ॥ रामचंद्रनरदेहधारि । भवहरिहैंभुवभार ॥ ४ ॥ जपतपसंजमजोगयज्ञ । भैरवादिघटभंग ॥ इनहुनजोफलपाइयै । सोयामाझअभंग ॥ ५ ॥ पुत्रपुरोहितपदप्रगट । लेहुअबैचितलाइ ॥ आगेयातेफलअतुल । मोपहकह्योनजाइ ॥ ६ ॥ जगतपितामहअजअमर । मेरोपितुहितमान ॥ नहिमिथ्याताकौवचन ॥ पैयहवेदप्रमान ॥ ७ ॥ तबैपुरोहितपदप्रगट । मैंलीनोहितमानि ॥ ताकोफलपूरनपुरुष । पायोअबैप्रमानि ॥ ८ ॥ जोपैंदरसनजोगिनै । दुर्लभदुर्गमदेव ॥ मैसुषहीपायोसुगम । अवधेश्वरअनजेव ॥ ९ ॥ तवप्रतापमहिमाअमित । दिव्यअमानुषदेषि ॥ सबविधिपरमानंदसुभ । बाढतचित्तविशेषि ॥ १० ॥ प्रभुयहवरमागौप्रसिद्ध । पौरोहितपदपाइ ॥ जन्मजन्मतवभक्तिजस । ममउररहैसमाइ ॥ ११ ॥ रूपअलौकिकरावरो । अषिलईसअनभंग ॥ मेरेलोचनप्रानमन । सदारहैछविसंग ॥ १२ ॥

श्रीरामउवाच ॥ ॥ कह्योरामतवजोरिकर ॥ परिवसिष्टकेपाइ ॥ करतमनोरथतुमजुकछु ॥ सोसबहोइसुभाइ ॥ १३ ॥ गएवसिष्टजुगगनमग । पुरीअमरसुषपाइ ॥ गावतमाहमारामगुन । मनआनंदनमाई ॥ १४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अथविधिआगमन ॥ ॥ श्रीरामप्रतिउपदेस ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ इकदिवसरघुराइ, संगसकलसोदरसुभट ॥ उत्तमथलवनआइ, सुषसंजुतबैठेसभा ॥ १ ॥ अविलोकितप्रभुओर, सबैनिरंतरवदनशशि ॥ जैसेचंद्रचकोर, पलकनलावतप्रेमपर ॥ २ ॥ वेदधर्मरघुवीर, उपदेसतभ्रातनअषिल ॥ धरियैचित्तसधीर, भूपतिजातैटरनभव ॥ ३ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मेरैसतअनुसासनमानै ॥ सोममबल्लभसाधुसयानै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांचतुराननमुनिसुरआए ॥ वंदनकरिआसनबैठाए ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ कहोविरंचिआगमनकारन ॥ तुमजगपूज्यजगतविस्तारन ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ कहैविरंचितहांजोरेकर ॥ रामदेवतुमगुरुहूतेगुर ॥ समसतभाइसहाइसुरेश्वर ॥ अलपवेसपैग्यानअगोचर ॥ विधिजुगवेदपुरानवषानै ॥ जिनकीमहिमाशंकरजानै ॥ तुमनिजइच्छालोकउपाए ॥ विश्वविदितत्रयभुवनबनाए ॥ ऊजरहोतसुपैआरिवलसर ॥ कारनतिनकौसुनहुकृपाकर ॥ ब्रह्मकुबेरविष्णुपुरवासी ॥ नियतइंद्रपुरवरुणनिवासी ॥ अवधिपुरीमहँआनिवसेअब ॥ सुषसंपदाविलासकरतसब ॥ कोउनअधर्माचरणउपासै ॥ नहितातैआयुर्बलनासै ॥ आयुघटैविनुमीचनआवै ॥ प्रानीकोउनअगतिगतिपावै ॥ नरकस्वर्गकेपंथनिरंतर ॥ वहतेरहेसुनहुसीतावर ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ आपरामहसिकह्योबचनयह ॥ हमसमझेसबमर्मपितामह ॥ करहुविरंचिनचिंताकोई ॥ हिततुमवंछहुसोपैहोई ॥ इहांविरंचिसीतापहँआए ॥ पूजेचरनपरमसुषपाए ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ चितहितसीतावचनउचारे ॥ हुएपुराकृतसफलहमारे ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राक्षसमारयौदुष्टरन । भवटारयौभुवभार ॥ सुरकारजकीनैसकल । राममनुजअवतार ॥ १ ॥ तुमअबसीताआजतैं । करियैवहैप्रकार ॥ करहिगमनवैकुंठकौ । रामलोकरषवार ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिप्रबोधयहांजानकी । ब्रह्मगएनिजवास ॥ रामचंद्रकेराजमहँ ॥ पूरनपुन्यप्रकास ॥ ३ ॥ उपवनमंदिरमांझइहां । सीतारामसुजान ॥ राजतमानहुमदनरति । विविधविलासविधान ॥ ४ ॥ ब्रह्माजूकेहितवचन । सीतानीतिसमान ॥ कहेसमयलषिरामकहँ । प्रभुसोइकरहुप्रमान ॥ ५ ॥ ॥ अथसीतापरित्यागलवकुशोत्पत्ति ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ गनिसीतागर्भिणीचित्तरघुनाथविचारीय ॥ मंदरनृपज्यौंगर्भमोषयहनिगमउचारीय ॥ जन्मपुत्रउछवसंजोगछूटतताहीछन ॥ निगडबद्धनरनारिजुक्तअपराधकारजन ॥ वांधेस्वकर्मबंधनविषम, जेभवभूतविहालजग ॥ छांडिवेततोनरहरसुकवि, सबैतबैहीअगसजग ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ कारनजनितसकाम, प्रभुरचिहैमायाप्रबल ॥ सीताकोश्रीराम, परित्यागकरिहैप्रगट ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकसमयएकांतथल । सीतारामसप्रेम ॥ बैठेसुषविलसतविविध । मनुरतिमदनसनेम ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ सुकरजोरिश्रीरामसौं । कह्योविदेहकुमारि ॥ ब्रह्माकेवाइकविहित । सोप्रभुकरहुसँभारि ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सीतावचनसुन्यौअवधेश्वर ॥ ब्रह्माजुपै कहायौबुद्धिवर ॥ विहसिवचनरघुनाइकबोले ॥ गूढभावअंतर्गतपोले ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ सीताप्रति ॥ ॥ तवपरित्यागकछुकदिनकरहो ॥ तिहिंदुपाविरहपयोनिधि तरिहो ॥ बालमीकतपथानविनीता ॥ तहांकछुकालरहहुतुमसीता ॥ सुततवदोइहोईगे सुंदर ॥ कुशलवनामपिताकुलहितकर ॥ पुत्रभएकछुकारनपैहे ॥ हमतुमवहुरिसमागम व्हैहे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ स्यामसगर्भाजानीसीता ॥ विश्वविदितसुरसिद्धविनीता ॥ राजनीतिरतरहतनरेश्वर ॥ धर्मसहाइकरामधुरंधर ॥ वेदवचनयहऋपिनबतायौ ॥ इहांअवधेसुरमंत्रउपायौ ॥ जनमैपुत्रराजग्रहजबही ॥ हैकाराग्रहछूटततबही ॥ मेरेग्रह सुतजन्ममहोछव ॥ लक्षणजुक्तहोहिगेकुशलव ॥ त्रिकालज्ञप्रभुरामत्रिलोकी ॥ यहभव तव्यवातअवलोकी ॥ जमग्रहबंधेकर्मबसजेते ॥ तौभवभूतछोडिवैतेते ॥ जोममवचन छुटहिजडजंगम ॥ सुरपुरजाहिवसहितैसुरसम ॥ बांधेछुटहिकर्मकेबंधन ॥ जन्ममरण तेमुक्तहोहिजन ॥ यातेधर्मराजपुरऊजर ॥ व्हैहैसाधिसिद्धसुरशंकर ॥ इहांगर्भावधिनि कटहिआई ॥ सदारामत्रयलोकसहाई ॥ कारनमंत्रयहैअवकीजे ॥ दिनकछुसियहिवा सवनदीजे ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांभ्रातादरसनहेतआइ ॥ भरतादिकरेवंदनसुभाइ ॥ उच्चर्यौभरतकौरामएहु ॥ देषहुजिनऊपरफेरिदेहु ॥ मैथिलीगहनवनमांझमेलि ॥ व हिठौरछांडआवहुअकेलि ॥ ॥ श्रीभरतउवाच ॥ ॥ हितवचनभरतकहिजौरिहाथ ॥ ॥ तुमवेदधर्मरक्षकसमाथ ॥ सीयसुद्धसतीअरुगर्भसंग ॥ भवताहितजैपातकअभंग ॥ इहिंगर्भावधिहैनिकटआइ ॥ जनिहैसुकहौधौवनहिजाइ ॥ याकेजोपुत्रीप्रसबहोइ ॥ कि हुहाथचढैजानैनकोइ ॥ प्रभुहोइमहालोकापवाद ॥ विवश्वानवंसउपजैविषाद ॥ ॥ श्री रामउवाच ॥ ॥ ऐसीकछुइच्छामोहिआज ॥ जोकहौंभ्रातसोइकरहुकाज ॥ इहांकरि हैउतरफेरिकोइ ॥ हत्याममपातकतासहोइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिकह्यौरामलछ मनपुनीत ॥ शिबिकाचढाइलेजाहुसीत ॥ मैथिलीतजहुउद्यानमांहि ॥ निहचैविचारकछु औरनाहि ॥ इहांफेरिवचनकहिहौजुआप ॥ पैहोप्रभुसासनभंगपाप ॥ आज्ञासुनिलक्ष्म नग्रेहआइ ॥ समअर्धनिशाअपनेसुभाइ ॥ शिविकाआरोहनकरीसीत ॥ पुनिचलेगह नवनलेपुनीत ॥ रघुवीरवीरभएगंगपार ॥ उद्यानसघनदेष्यौअपार ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ वनमोहिकहांलेचलेवीर ॥ घरकंतनांहिमनधरतधीर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अतिदुषितनबोलेलषनआप ॥ परवाहनयनजलमनसंताप ॥ मिलिशोकविलोकतभूमि माहि ॥ निहचैकछुआवैबोलनांहि ॥ शिबिकातजिउतरीइहांसीत ॥ भयचकितगिरीभुव अतिसभीत ॥ विव्हलविलोकिसीताहिवीर ॥ सोलग्योदेहत्यागनसधीर ॥ करिथावरजं गमहाहकार ॥ यहांभईगगनवानीउदार ॥ ॥ आकाशवाणी ॥ ॥ करिवानहिसाहस लषनकोइ ॥ हरिइच्छासोमिथ्यानहोइ ॥ विलपातकरतफिरिमहावीर ॥ सीयचलेछांडि लछमनसधीर ॥ मुरझाइगिरीसोधरनिमाहि ॥ निहचैकछुचेतनरह्यौनाहि ॥ सीयदुषि तदेषिइकमहासाप ॥ पुनिकरीआनिफनछांहआप ॥ इहांबालमीकरिषिभ्रमतआइ ॥ सूष

गहनमांहिअपनेसुभाइ ॥ तहांदेषिअतिहिअबलाअचेत ॥ महसोचभयोमनक्रमसमे
त ॥ इहांकह्योपवनमुनिनिकटआइ ॥ सीयभईकछुकसंज्ञासुभाइ ॥ ॥ वाल्मीकउवा
च ॥ ॥ तुमकौनइहांकिहिंहेतआइ ॥ सोभयोविप्रपूछतसुभाइ ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥
॥ मिथिलेससुताममसीयानाम ॥ विश्वेसनृपतिकीधर्मवाम ॥ निर्धारहेतमेंकछुनजा
नि ॥ इहदशाछांडिगएइहांआनि ॥ तहांवाल्मीकसौंकह्योसीत ॥ प्रभुकवननामआ
पुनपुनीत ॥ ॥ वाल्मीकउवाच ॥ ॥ मिथिलेसगुरूहौंवालमीक ॥ यहांआश्रम
हैवर्जितअलीक ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सियआनीसनमानसौं । वाल
मीकनिजवास ॥ राषीपुत्रीहेतकरि । पूरनधर्मप्रकास ॥ १ ॥ ऋषिपत्नीसौंरिषिकह्यौ । यह
लक्ष्मीअवतार ॥ करहुभक्तिजुतजोरिकर । पूजाविविधिप्रकार ॥ २ ॥ इहांभईपूरनअव
धि । सुभवीतेदसमास ॥ लवकुशनामाहंसकुल । प्रगटेपुत्रप्रकास ॥ ३ ॥ जाएसुतद्वैजा
नकी ॥ एकहिवारअभंग ॥ जगतविदितजुगजोरुवा । अरुलछनजुतअंग ॥ ४ ॥ वालमी
कक्रतजातक्रम । विहितजुवेदविधान ॥ कहेजथाक्रमलवकुशी । पौरुषनामप्रमान ॥ ५ ॥
॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ पुनिमुनिविद्यासकलपढए ॥ शस्त्रअस्त्रजयमंत्रसिषाए ॥ अरु
निजराजधर्मअभ्यासे ॥ वालऋषिनसंगवननिविलासे ॥ ॥ इतिश्रीलवकुशोत्पत्ती ॥ ॥
अथअश्वमेध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ एकसमयरघुइंद, शुभमंड
पबैठेसभा ॥ वसिष्ठादिमुनिवृंद, सोभितविश्वामित्रसम ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥
सुनहुवसिष्टसुजान, कह्योरामजुगजोरिकर ॥ सीताप्रियासमान, मैंकीनेसबदानमष ॥
२ ॥ अवइच्छामनआइ, करणयज्ञहयमेधकी ॥ सबरिषिहोहुसहाइ, सुपैकरावहुकरि
कृपा ॥ ३ ॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उत्तरवसिष्टतहांदयोएह ॥
सुनियैसुवेदविधिनिसंदेह ॥ करियैजुकर्मधर्माधिकार ॥ सोसांगहोतत्रियजुतसंसार ॥
त्रियविनाजुकरियैधर्मतंत ॥ अंगहीनसुनिस्फलहोतअंत ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥
पुनिकह्योवचनयौंअवधिभूप ॥ स्वर्णमयरचहुसीतासुरूप ॥ यहवामअंगहमधरहिआ
नि ॥ सुभजोरियग्रंथपटजुगसमानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कीनैप्रमानगुरुजिज्ञकाज ॥
संभारसिद्धभएअषिलसाज ॥ सबबोलिराममुनिवरसमाज ॥ कीनैतहांजग्यारंभकाज ॥
सितवाजिकर्णतिहिंवामस्याम ॥ तनदीर्घलषनजुतसकलताम ॥ पूज्योसुजथाविधिबांधि
पट्ट ॥ मुकलाइदयोसंगसुभटथट्ट ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हयमुक्योअवधेसयह । करिमस्तकम
खअंक ॥ बहुविधिजोनृपहैवली । सोपैग्रहौंनिशंक ॥ १ ॥ सत्रुघनपठएसंगतिहिं । यह
रक्षाकेहेत ॥ पाछैपाछैफिरतपुनि । सेन्यासबलसमेत ॥ २ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ भुवभ्रम
तजहांहयआपभाइ ॥ घनघुरतपृष्टिनीसानघाइ ॥ जिहिजिहिसुठौरक्रतउचितजोग ॥
पाछैसुहोतपूरनप्रयोग ॥ इहिंभातिभ्रम्योहयअवनिअंत ॥ तहांवीतिवर्षसबमिलेतंत ॥
इहांअश्वआपनैसहजआइ ॥ सोपैठ्योमखशालासुभाइ ॥ करिअर्चापूजाविविधकीन ॥
पुनरागममयद्विजदानदीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वालमीकमुनिइहिंसमय । मिलिबहुविप्र
समाज ॥ आएलवकुशअग्रले । रामजग्यऋषिराज ॥ १ ॥ देवजथाविधिपूजदीय । वा

लमीकसुभवास ॥ होममंत्रजहांतहांहरप । पुरआनंदप्रकास ॥२॥ मुनिवरबालकसंगमिलि। गावतलवकुशगीत ॥ सरितावनसरवरसुषद । पुनिजहांरमनपुनीत ॥ ३ ॥ कीर्तिचरित्ररघुनाथके। वालमीकवपानि ॥ सुपैपढाएलवकुशहि । विप्रबालशुभवानि ॥ ४ ॥ करनिबजावतकिंन्नरी। सबगावतमिलिसंग ॥ सुनतहोतथिरचरथकित । उपजतहेसुषअंग ॥ ५ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ सुनतलोकतिहिअधिकसुहावत ॥ भ्रमतसंगविछ्योंनहिभावत ॥ सालाजिग्यसांझअवधेशर ॥ वसिष्टादिबैठेसबमुनिवर ॥ इहांलवकुसरिषिबालकआए ॥ संगफिरतजेसखासुहाए ॥ ॥ वालमीकउवाच ॥ ॥ वालमीकभवतव्यविचार्यो ॥ यहलवकुशसोंवचनउचार्यो ॥ गावहुपुत्ररामगुनगीता ॥ पावनपरमप्रसिद्धपुनीता ॥ एरघुनाथचरित्रमिलिगाए ॥ सुनतसभामनपरमसुहाए ॥ जोकछुवालमीकिमुनिगायो ॥ सोपैनूतनगीतसुनायो ॥ मनआनंदितभएमहामुनि ॥ सुंदरसुषदगीतधुनिसुनिसुनि ॥ पुनिरघुनाथपरमसुषपाए ॥ शिशुनिअपूरवपाठसुनाए ॥ तंत्रीरवबाजतमिलितैसी ॥ जथागानअमृतस्रुतजैसी ॥ मनअतिरीझिरामभाष्योमुष ॥ सुन्योंनगीतआजलोंयहसुष ॥ नियतरीझिअतिदसरथनंदन ॥ कह्योभरतसोंअरीनिकंदन ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अयुतसुवर्णजुद्रव्यअब । इनहिसमर्पोआनिद्विजबालककेग्रेहदिन । होइदरिद्रकीहानि ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ द्विजसुतजानिजुद्रव्यदीय । डारिदयोइनदूरि ॥ करिभृकुटीचंचलकुटिल । मनहुंछुईविषमूरि ॥ २ ॥ ॥ लवकुशउवाच ॥ ॥ सुनहुभरतयाद्रव्यसों । हमहिकछूनहिंकाज ॥ करिजाचन्यालेइकोउ । रीझिदेहुंतिहिराज ॥ ३ ॥ हमतोजाचकनाहिने । हातओडिपुनिलैह ॥ दुषितदरिद्रीदीनकों । दैवकृपाहमदेह ॥ ४ ॥ जाकेकुलजैसीजुगति । हेतसहितसोहोइ ॥ लालचप्राणाअंतलों । करिहैअकरनकोइ ॥ ५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ बालवचनसुनिसुनिविवेकभयोअचिरजभारीय ॥ वाततकेजुतकरताविप्रचितहेतविचारीय ॥ चितैवदनतवरामचंद्रलवकुशहिबिलोके ॥ ज्योंचकोरनिसिचंद्ररहेइकटकपलरोके ॥ दहुघांनिहारिताद्रिसवदन, रीझिरीझिरघुनाथरुष ॥ मुनिकहतपरसपरसकलमिलि, मनहुंमुकरप्रतिबिंबमुष ॥ ॥ ऋषिवाक्यं ॥ ॥ पतिकीनौपरित्यागसियानिसिअर्धनिकारीय ॥ सुनिपुरअवधिअनीतिभयोहाहारवभारीय ॥ तिवालमीकअपनैविचारिआश्रमलैआए ॥ पुत्रीभावपुनीतविविधचितहेतबढाए ॥ तिहिंगर्भमोक्षपायौतहां, उपजेद्वैबालकअतुल ॥ सुंदरसुरूपएईसुपै, करहिप्रकासदिनेसकुल ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अपवादनअवधेसहसैअविलोकिमुकरमहँ ॥ अरुलवकुसकीओरहेतजुतचितैचितैतहँ ॥ भवनभेदसंभावनाहिकछुइहांनिहार्यो ॥ वालमीकसोंहसिविशेषयहवचनउचार्यो ॥ कोइअभूतउपजैकहां, संजुतसहजसुभावरे ॥ अषिलेसप्रबलमायाअजित, रामपुत्रएरावरे ॥ २ ॥ ॥ वाल्मीकउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वामाधर्मपतिव्रता । गर्भवतीगुनग्राम ॥ ताकोकियपरित्यागतुम । मनइछा यहराम ॥ १ ॥ मेरेआश्रमभोजनम । सियागर्भसंभूत ॥ कृतइनकेमैजातक्रम । पिता

रामयेपूत ॥ २ ॥ जानेरामसुजानजब । एसीतासुतआइ ॥ भएलज्जाकछुनीतिभय । रहेअ धोमुषचाहि ॥ ३ ॥ वासिष्टादिद्विजकहिविमल । मुनिवरविश्वामित्र ॥ राघवमायारावरी । ताकेअमितचरित्र ॥ ४ ॥ रहेसुरासुरषोजिसब । साधुऋषीश्वरसंत ॥ मायाअतिबलमोहनी । याकौलह्यौनअंत ॥ ५ ॥ पावनपरमपतिव्रता । सीताद्वैसुतसाथ ॥ आनहुमंदिरआपने । हेतजुक्तधरिहाथ ॥ ६ ॥ परिनीताअरुपद्मिनी । मिलिसंगधर्मकुमार ॥ अतिमंगलकरि आनिये । आदरजुक्तउदार ॥ ७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुनिवचनजथाविधिअवनिईस ॥ सुरगुरुकेवंदेचरणसीस ॥ प्रभुकरेवचनसबकेप्रमान ॥ जानकीहेतरघुवरसुजान ॥ शत्रुघनवोलिअंगदसधीर ॥ वानरसुषेनहनुमंतवीर ॥ इनकौप्रभुआज्ञादईएह ॥ सियआनहुआदरजुतसनेह ॥ सोचलेतहांसबडोलसाजि ॥ वालमीकजहांआश्रमविराजि ॥ आरोहितबे चवडोलआप ॥ पतिव्रतासतीपावनप्रताप ॥ साआइजिग्यसालासमीप ॥ पांवधारिसामुहे सबरिषीप ॥ करिवालमीकआगेरिषेस ॥ पुनिकर्यौजिग्यसालाप्रवेस ॥ रवितेजविष्णुरघुवंसराज ॥ लक्ष्मीसीयासंकलितलाज ॥ निजवामअंगआनीनिहोरि ॥ जुगवसनविमलगुरु गांठिजोरि ॥ कृतजग्यजथाहयमेधकाज ॥ संभारसारसंपतिसमाज ॥ विधिवेदकरेसबमषविधान ॥ पूरणाहुतिदीनीप्रमान ॥ मखभयौसांगपूरणम्रजाद ॥ नीसानसघनभएगहरनाद जयजयाशब्दत्रैलोकजान ॥ पुनिवजेगगनदुंदुभिप्रमान ॥ सुररमनिसजेनाटकसमूल ॥ लहि समयहरषसुरवरषिफूल ॥ नभभुवनिसानमिलिएकनाद ॥ पुनिदएराममुनिमखप्रसाद ॥ विधिजुतबशिष्टपूजाविशेष ॥ अभिलाषकरेपूरनअशेष ॥ यज्ञाधिकारद्विजचारिजानि ॥ पुनितिनहिप्रथमपूजाप्रमानि ॥ गजअयुतएकवनिप्रयुतवाजि ॥ त्रयअयुतसुरभिद्विजएकसाजि ॥ संतुष्टकरेसबद्विजसमान ॥ गनिकोनदानतिनकेअगान ॥ अतितृप्तग्रामजाचकअनेक ॥ विधिजुक्तदानआदरविवेक ॥ मषभयौसपूरनसांगसिद्ध ॥ पुरतीनवजेवाजितप्रसिद्ध ॥ वनिरामराजबैठेविमान ॥ सूरजप्रतापसीतासमान ॥ भरतादिभ्रातचलिअग्रभाग ॥ शुभपुत्रचमरढोरहिसभाग ॥ सजिपृष्टिअमितचतुरंगसेन ॥ मिलिगगनरेनुमनुदिवसमेत ॥ निर्घोषवाजिभूनभनिसान ॥ वढिअवधिपुरीमंगलविधान ॥ रघुनाथपधारेराजद्वार ॥ आरतीकलससाजितअपार ॥ हितजुतन्यौछावरिद्रव्यहोइ ॥ कहुंवारपारपावैनकोइ ॥ प्रभुइहांमातगृहपावधारि ॥ अन्नेकपिवहिजलवारिवारि ॥ पुनिलगेरामजब जननिपाइ ॥ उरलाइहरषिलीनैउठाइ ॥ क्रमजुक्तजननिसौंमिलनकीन ॥ पाँलगीसीयासासुनिप्रवीन ॥ सुभसभासजिबैठेसधीर ॥ विश्वेशरामरघुवंशवीर ॥ भटवानरराक्षसमनुजभाल ॥ सुभसभासबैवैठेसुढाल ॥ इंद्रादिदेहधारेमनुजअंग ॥ सबसोभतबैठेसभासंग ॥ ब्रह्मादिसकलऋषिवरसमाज ॥ विधिक्रमविशेषआशनविराज ॥ सबकीकरिपूजासमाधान ॥ सुरपूजिसिद्धचारनसुजान ॥ बंदीजनकिन्नरगानकार ॥ वाजित्रविहितनाटकविथार ॥ रघुराजकरतयौंअवधिराज ॥ सुभवंधूभटसैन्यासमाज ॥ ॥ अथलवणासुरवधप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ एकदिवसअवधेस, सोभतबैठे नृपसभा ॥ मिलिसंगचिवनमुनेस, पुनिद्विजआएरामपहँ ॥ १ ॥ ठाढेदेवदुवार, द्विज

कालिंदीकूलकौ ॥ हाथजोरिप्रतिहार, कह्योआनिरघुनाथकौ ॥ २ ॥ उठिप्रभुसनमुषआ
इ, कीनैवंदनजोरिकर ॥ लीनैमध्यबुलाइ, बैठारेक्रमजुतविहित ॥ ३ ॥ ॥ श्रीरामउवा
च ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांजुकारनआगमन । द्विजसोइकहोनिदान ॥ अभिलाषाजो
मांझउर । पूरनकरौप्रमान ॥ १ ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हमबसत
विमलकालिंदिकूल ॥ सुरसाधुकरतसेवासमूल ॥ तवराजदुषितकोउनाहिंदेव ॥ भवभू
तसुषीसवआपभेव ॥ ॥ चिवनउवाच ॥ ॥ मधुनामदैत्यकृतजुगकुचार ॥ अतिही
प्रतापभौबलअपार ॥ तिहिंकरीशंभुसेवासमूल ॥ करिकृपाताहिदीनौत्रिशूल ॥ सुरअ
सुरसीसयहपरैशूल ॥ सोइभसमतहांव्हैहैसमूल ॥ आइहैफेरितवहाथएह ॥ दुर्जनहिदा
हकरिनिःसंदेह ॥ मधुसौनजुर्यौद्विजपरशुराम ॥ सुनितासनामतजिगौसंग्राम ॥ निस
चरिनामकुंभीनसीय ॥ तिहिदैत्यग्रेहवल्लभात्रीय ॥ संभूतउदरतिहिंकेप्रसाध ॥ उप
ज्यौलवणासुरबलअगाध ॥ सोमहादुष्टअतिबलीशूर ॥ सुरसुरभिवृंदनासकसमूर ॥
अतिदुषिततासपीडितअधीन ॥ देवकैसरनद्विजआइदीन ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥
विश्वेसदईवाचाविशेष ॥ अबविप्रअभयमानहुअशेष ॥ ममवचनविप्रकरीयेविसास ॥
निहचैलवणासुरहोइनास ॥ गहिचित्तधीरद्विजजाहुग्रेह ॥ अपनेअकर्मषयजाइएह ॥
प्रभुकह्यौतहांकरुनाप्रचार ॥ भ्रातनिकहदीनौजुद्धभार ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ ह
मदयौद्विजनिकौअभयदान ॥ पैकरहुवीरकोऊप्रमान ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ करजो
रिभरतबोलेसकाज ॥ आज्ञायहमोकहँदेहुआज ॥ तहांतमकिनिवेद्योशत्रुघात ॥ विश्वे
ससुनहुयहभृत्यबात ॥ देवाधिदेवपावरीदीन ॥ करिकष्टभरततिहिपूजकीन ॥ सुखरहे
लषनवनवाससंग ॥ अतिकरीसेवदुषसहेअंग ॥ मोहिआइसदीजैएहराम ॥ करिहौंप्र
तापतवसिद्धकाम ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ भगवंतकह्यौसुनिवचनभ्रात ॥ तुमकहँ
व्रजमंडलदयौतात ॥ निजकरहुआपमथुरानिधान ॥ पुनिपुत्रपौत्रवसिहैप्रमान ॥ मैंकि
हूंजुगांतरहेतपाइ ॥ अवतरिहूंहूंयदुवंसआइ ॥ तिहिंमंडललैकृष्णावतार ॥ भवभूतसुष
दभुवहरौभार ॥ मेरौवहवल्लभदेसमानि ॥ जहांवृंदादेवीवासजानि ॥ दीनौव्रजमंडलरा
ज्यदेव ॥ अभिषेककर्‍यौभ्रातहिअजेव ॥ निश्चैकरिदीनौदिव्यबान ॥ प्रभुदईतहांशिष्या
प्रमान ॥ सोअसुरनित्यपूजतत्रिशूल ॥ मनिकनकपीठऊपरसमूल ॥ पुनिजातआपकहूं
हतनप्रान ॥ वनजंतुविविधभक्ष्यनविधान ॥ तिहिसमयदुष्टकोरोकिद्वार ॥ भयरहिततुम
हुआयुधसंभार ॥ लषितुमकहद्वारप्रवेसकाल ॥ करिक्रोधजुद्धकरिहैकराल ॥ तिहिंअवसर
मारहुअसुरताहि ॥ जतनसौंरहौमतभागिजाहि ॥ पुनिमधुबनपुरीवसाइपूर ॥ संग्रामजी
तिमोहिमिलहुसूर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हितकरिप्रबोधप्रभुप्रसन्नहोई ॥ संगप्रबलसे
नदीनौसंजोइ ॥ बनिसहसपंचभटसजववाजि ॥ तिहिंअवधिविमलस्यंदनविराजि ॥ मि
लिअग्रेसरषटसतमतंग ॥ अरुअयुततीनिपयदलअभंग ॥ शत्रुघनकौकीनौसमाधान ॥
पठयौपचारिबलदलप्रमान ॥ षटदूनदिवससंक्रमीयसेन ॥ रविरुद्धगगनमगचढीरेन ॥ से
न्याअभंगसमहरसधीर ॥ तहांदीपमिलनरविसुतातीर ॥ लवणासुरकरिपूजात्रिशूल ॥ मि

लिअर्चनबंदनमंत्रमूल ॥ पुनिकस्यौनिसामुषवनप्रवेस ॥ इतआनिद्वाररोक्यौअसेस ॥ पूस्यौअहारषलतृप्तिपाइ ॥ अलसातगातपुरद्वारआइ ॥ समद्रष्टिपस्यौतहांसत्रुसाल ॥ कारिकोपआनिजूट्यौकराल ॥ कछुकालभिस्यौसंग्रामक्रुद्ध ॥ जाजुल्यभयोदुववीरजुद्ध ॥ तबदिव्यबानउरहयौतास ॥ शत्रुघनजैतबाजेप्रकास ॥ दुषटरेविप्रभएहर्षवंत ॥ सुषवसततहांरिषिसाधसंत ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मधुबनिकटजुमधुपुरी । रवितनयाकैतीर ॥ वस्योसुपत्तनअतिविसद । निपजअन्नसुषनीर ॥ १ ॥ बनेजथाक्रमपुरविमल । मथुरामंडलमांहि ॥ चिंतितसुषलहिवर्णचव । निषिलईतिभयनाहि ॥ २ ॥ कुललवणासुरनासकरि । वाजेजैतबजाइ ॥ कीनौदरसनरामकौ । इहांशत्रुघनआइ ॥ ३ ॥ ॥ **अथकालपुरुषआगमन** ॥ ॥ **लक्ष्मनपरित्याग** ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ धर्मराजद्विजरूपधरि । कालपुरुषइककाल ॥ पुनिसोआयोरामपहँ । बैठेसभाविशाल ॥ १ ॥ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ प्रभुतबैराजमंदिरपधारि ॥ सोविप्रवोलिलीनौसंभारि ॥ नरनाथलषनसौंकहिनिदान ॥ निजद्वाररहहुतुमसावधान ॥ इहिंग्रेहअवरआवैजुकोइ ॥ होहतौंतुमहिनिःसंकहोइ ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ द्विजताहिपूंछतवरामदेव ॥ भवआगमकारनकहौभेव ॥ किहिपठएहोतुमकवनकाज ॥ अनसंककहौवृत्तांतआज ॥ ॥ **कालपुरुषउवाच** ॥ ॥ मोहिकालपुरुषजानहुमुरारि ॥ कारनभवभूतविनासकारि ॥ प्रभुपासमोहिब्रह्मापठाइ ॥ संदेहकहौंसुनियेसुभाइ ॥ विश्वेशकस्यौशिवजगविनाश ॥ उहांवद्योनीरलग्योअकाश ॥ तिहमध्यकस्यौतुमशेषशैन ॥ निजइच्छारघुवरकमलनैन ॥ तवनाभिकमलतैंकमलनाल ॥ वढिभयौतहांवारिजविसाल ॥ उहिवारिजतैमोकहँउपाइ ॥ सोदयोप्रजापतिपदसुभाइ ॥ निजमायामैंविस्तारकीन ॥ निसचरउपराजेद्वैनवीन ॥ मधुकैटभनामामनमलीन ॥ भवभयेअसुरदोउपापभीन ॥ षेचरसोलागेमोहिषान ॥ तुमदेवकरीरक्षानिदान ॥ मधुकैटभदोऊदुष्टमारि ॥ मोहिराषिलह्योतुमहूमुरारि ॥ असुरनिकेनिकसीमेदअंग ॥ भवरचीमेदनीतिहिअभंग ॥ अस्थिनकेपर्वतकरिप्रमान ॥ थिरमोहिप्रजापतिथप्योथान ॥ हिरणाक्षहिरण्यकश्यपसहेत ॥ तेउपजेआसुरदुष्टचेत ॥ सोमारेतुमहीसुरसहाइ ॥ राजाधिराजरघुवंशराइ ॥ अतिबलीभयोबलिदैत्यएक ॥ विस्तारधर्मबाचाविवेक ॥ सुरलोकलएतिहिंजुद्धसाधि ॥ अरुकरतनित्यनवनवउपाधि ॥ तुमबांधिताहिपठयौपताल ॥ सुरलहेलोकटरिइंद्रसाल ॥ पुनिभयौदुष्टराकससपाप ॥ तिहिरावनसुरकीनैसंताप ॥ सुरकाजताहिमारनसमाथ ॥ नरदेहभएतुमअवधिनाथ ॥ तहांवर्षसहसग्यारहवितीत ॥ पृथ्वीशभारटास्योपुनीत ॥ अवधेसअवधिअबनिकटआइ ॥ भगवंतकरहुजोचित्तभाइ ॥ कछुअजहूंपृथ्वीराजकाज ॥ रघुनाथकरहुनरदेहराज ॥ सुरलोकगमनजोमनसुहाइ ॥ करियेसनाथसुरदेवकाय ॥ कहिकालपुरुषएविधिकहाउ ॥ रीझेहरिबोलेअवधिराउ ॥ ॥ **श्रीरघुनाथउवाच** ॥ ॥ जोकह्यौकालतुममंत्रजान ॥ मेरेसोइइच्छाहीप्रमान ॥ रघुनाथकह्योरघुवंसराज ॥ हमकरेजथाविधिदेवकाज ॥ अबइच्छामनमहँरहीएह ॥ सेवकसौंमेरेअतिसनेह ॥ सबमनुजभालवानरसमाज ॥ करवो

अबइनकोंमुक्तिकाज ॥ सामीपमुक्तिममरहैसंग ॥ अबयहैकाजकरिहौंअभंग ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ दुरवासायाहीसमयआइ ॥ सोइराजद्वारठाढोसुभाइ ॥ मांझजबजानला
ग्योमुनीस ॥ सौमित्रिकह्योपगवंदिशीश ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥ ॥ हैंराजकाजमहँवि
प्रराम ॥ ठहराहुविप्रछिनइहींठाम ॥ कहीयेमोहिजोकछुआहिकाज ॥ रघुपतिहिनिवेदौं
रिषीराज ॥ ॥ दुर्वासाउवाच ॥ ॥ इहिंछनकेकरिहौंदरसआज ॥ केदेशरापकुलकरि
अकाज ॥ द्विजकह्योजुदारुनवचनदेषि ॥ वससोचभएलछमनविशेषि ॥ इहांआइराम
पहँलषनआप ॥ दुर्वासाआगमकहिसदाप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनतमात्ररघु
वरप्रवीन ॥ पुनिकालपुरुषकहविदाकीन ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ अवधेसतबैसामु
हैआइ ॥ पूजेदुर्वासावंदिपाइ ॥ रिषिकहतबपूछ्योमहाराज ॥ कहियेमुनीसआगमन
काज ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ मोहिसहसबर्षउपवासमानि ॥ जगदीसपारणादेहुजानि
॥ इहांविविधिभांतिभोजनबनाइ ॥ जुगतिसौंरामरिषिवरजिमाइ ॥ अन्नेकभांतिदीनी
असीस ॥ सोइत्रिप्तगयोआश्रमऋषीस ॥ इतिकालपुरुषप्रसंग ॥ ॥ अथलक्ष्मनपरि
त्याग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ विश्वेशकह्योयहाचिंतविचार ॥ हैवच
नभंगपातकअपार ॥ दुखसोचकलितरघुनाथदेषि ॥ विस्मयमनलक्ष्मनबढिविशेषि ॥
जगदीश्वरअंतरभावजानि ॥ पुनिकह्योलक्ष्मनतहांजोरिपानि ॥ ॥ लक्ष्मनउवाच ॥
करियेनप्रतिज्ञाभंगकाज ॥ अषिलेश्वरहौंवधजोग्यआज ॥ ममआहिकलेवरकवलकाल॥
॥ पुनिभईअवधिपूरनकृपाल ॥ जोकरहिनाथमोहितकलेश ॥ हूंनिरयपात्रव्हैहूंनरेस ॥
॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ बोलेवसिष्टमंत्रीसुमंत ॥ तहांकेहेपुरुषआगमनतंत ॥ ॥ वसि
ष्टउवाच ॥ ॥ प्रभुसौंवसिष्टकहिजोरिपानि ॥ ऐसीहीभावीबनीआनि ॥ भावीनटरैअन
भईभूप ॥ सुभअसुभरचैअन्नेकरूप ॥ प्रभुवधतैंदुःसहपरित्याग ॥ सोइकरियेलक्ष्मन
कहसभाग ॥ विधिवेदकहीजोगुरुविचारि ॥ सोइलईमानिमनक्रममुरारि ॥ विश्वेसप्रति
ग्याटरिविशेष ॥ सबधर्मनासव्हैहैअशेष ॥ विधिधर्मटरैमानहुविश्वास ॥ नरनाथहोइ
त्रयलोकनास ॥ तुमसदाधर्मरक्षकत्रिलोक ॥ सोकरहुदेवअबतजहुशोक ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ गुरुवचनमानिरघुवरसज्ञान ॥ निर्धारयहैकीनोनिदान ॥ इहिसमयसभाबैठे
उदार ॥ हितकह्योआनिलक्ष्मनजुहार ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ वससोकलक्ष्मनसौं
कहिविष्यात ॥ तुमजाहुजहांमनरुचैतात ॥ सोसुनतमात्रलछमनसधीर ॥ निजग्रेहवंदि
पदगएवीर ॥ दीयवेदविहितबहुद्विजनिदान ॥ सुततिलकराजदलबलसमान ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लैलक्ष्मणवैराग्यव्रत । तिहिछिनशरयूतीर ॥ करिकुशपल्लव
तल्पकर । बैठेनिर्भयवीर ॥ १ ॥ कस्योस्वासअवरोधक्रम । धर्मधारणाध्यान ॥ प्रभुआ
ज्ञालक्ष्मणप्रगट । पायोपदनिर्वाण ॥ २ ॥ इंद्रादिकसुरसिद्धसब । इहांसामुहैआइ ॥
सैंदेहीलक्ष्मनसुषहि ॥ दिव्यासनबैठाइ ॥ ३ ॥ चमरढुरतबरषतकुसुम । सुरगनसंगस
नेह ॥ लक्ष्मणआज्ञारामलहि ॥ आएस्वर्गसदेह ॥ ४ ॥ ॥ अथमाताकौसल्या
हिवैकुंठगमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ एकसमयएकंत, बैठेरामवि

रागवस ॥ करुणानिधिश्रीकंत, ध्यानावस्थितधर्मधुर ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इ
हछनकौशल्यातहांआई ॥ ब्रह्मजानिसुतभावविहाई ॥ नमस्कारकरिबैठीनिश्चल ॥ पु
त्रजदपिपोषेहैपलपल ॥ नियतइहांसुतबुद्धिनिवारी ॥ चीन्हैपूरणब्रह्मविचारी ॥ तव
नहिंआदिमध्यअवसाना ॥ जगतआदितुममैंयहजाना ॥ पूरणपरमानंदपरातम ॥
एकतुमहिव्यापकसबआतम ॥ जद्यपिमनुजदेहमैंजाए ॥ लेलैअंकनिसंकलडाए ॥
अंतअवधिअबनियरैआई ॥ मोहिनमोहतथापिमिटाई ॥ बोधनउपजिछेदभवबंधन ॥
मुक्तिहोइजातैंक्रमवचमन ॥ जुगतिप्रबोधकरहुअबजातें ॥ तुमपरब्रह्मदृष्टिहोइतातें ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ मातुवचनसुनिअंतर्जामी ॥ समयजानिबोलेजगस्वामी ॥ ॥ श्रीरा
मउवाच ॥ ॥ मातमोक्षमारगत्रयमानहु ॥ प्रथमहिकर्मजोगपहिचानहु ॥ दूजोज्ञान
जोगहितदायक ॥ समजहुतीजोभक्तिसुभाइक ॥ मारगभक्तिसुगमहैमाता ॥ सोपित्रिगुण
मयविश्वविष्याता ॥ सात्विकराजसतामससंगी ॥ एसाधतभवभूतअभंगी ॥ हिंसाअरथ
दंभमिलिमछर ॥ क्रोधविरोधभेददृष्टीकर ॥ वहपैतामसद्रष्टिकहावे ॥ प्रानिनिकरैनाहिफ
लपावे ॥ अंतरभेदबुद्धिआराधै ॥ साधकहावैंभक्तिहिसाधै ॥ राजसभक्तियहैजुतअहमि
ति ॥ पुनिताकीतैंसीफलप्रापति ॥ रहितकामनाकरिमनवचकय ॥ भेदबुद्धिवर्जितजोनि
भय ॥ सोपैसर्वनिमित्तनारायण ॥ प्रभुहिसमर्पैभजनपरायण ॥ इहिंविधिवर्तैमुक्तिउपावै॥
क्रमसोइसात्विकभक्तिकहावे ॥ जिहिमनवृत्तिरहैमममाही ॥ होइकबहुपैअंतरनांही ॥
ज्यौंगंगासागरमहँजाई ॥ रहैएकव्हैतहांठहराई ॥ प्रानीसर्वब्रह्ममयपेषे ॥ दयादृष्टिसम
भावहिदेषे ॥ सदाकुसंगविवर्जितसोई ॥ हेतप्रीतिसतसंगतिहोई ॥ वेदमजादसत्यमुषबा
नी ॥ पुनिमोमांझमिलैसोप्रानी ॥ तातैंपुत्रभावसुषदाता ॥ ममभूरतिमनराषहुमाता ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामधर्ममूरतिउरधारी ॥ धन्यास्वर्गसदेहसिधारी ॥ ॥ दोहा
॥ ॥ सालोक्यसारुपसमिप । मुक्तिसायोज्यसएव ॥ वेदविदितएचारिविधि । दुर्लभक
हिंद्विजदेव ॥ १ ॥ तीनिमुक्तिएलांघितब । मिलितधर्ममर्जाद ॥ कौसल्याचौथीमुकति ।
पाईसहितप्रसाद ॥ २ ॥ जोगभक्तिसाधीजतन । कैंकेईतिहकाम ॥ पायौस्वर्गसदेहसुनि
। मातुप्रबोधितराम ॥ ३ ॥ साधसुमित्रासत्यसंग । पावनइहीप्रकार ॥ स्वर्गसिधारीदेह
सौं । आग्यारामउदार ॥ ४ ॥ इहांसुमित्राकेकई । पतिसमीपपदपाइ ॥ तनतिहिंसेवा
करततैं । रहिसँगदसरथराइ ॥ ५ ॥ कौसल्यादिकमातुकहँ । दीनौमोक्षसदेह ॥ सफ
लभएसाधनसबै । रामप्रसादसनेह ॥ ६ ॥ ॥ अथसीतामहाप्रस्थान ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ व्यापितलषनवियोग, रामअगनिप्रजरतउरहि ॥ पैनहि
फुरतप्रयोग, असनवसनविषसेभये ॥ १ ॥ रहतसोकवसराम, वेधतउरभ्राताविरह ॥
ममलषमनसुषधाम, हाहापुनिमिलिहैकहां ॥ २ ॥ विव्हलकरतविलाप, तरफतघायल
सेतबै ॥ इहप्रकारप्रभुआप, भावमनुजदाषतभुवन ॥ ३ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥
एकदिवसअवधेस, मंत्रगूढकहिमैथिली ॥ प्यारीकरहुप्रवेश, आगेतुमवैकुंठअब ॥ १ ॥
यहपैसह्यौनजाइ, व्यापैलछमनकोविरह ॥ भामिनिमेरैभाइ, सुन्यभयौसंसारसब ॥ २ ॥

कछुकवितीतेकाल, हमपाछैहीआइहै ॥ स्वर्गप्रयानसुढाल, करिवोहैपुरअवधकौं ॥ ॥ ३ ॥ एकसमयअभिराम, सोभितगुरुरिषिवरसभा ॥ मिलिबैठेरघुराम, धरनीधरसिरछत्रधरि ॥ ४ ॥ अंतर्भावअभंग, जान्योपतिकौजानकी ॥ अतिहरषितअंगअंग, आनिभईठाढीइहां ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिसूरजसनमुषजोरपानि ॥ विधिवेदकह्योसियविमलवानि ॥ सुनिमातधरनिममवचनसार ॥ विश्वासमानिदीजेदरार ॥ ह्यांसतीजपैपतिव्रतासाध ॥ अंतर्गतममरघुवरअराध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यह सुनतसतीवाचाअखंड ॥ पृथ्वीदरारपाइप्रचंड ॥ पातालदेविहितचितप्रमान ॥ विचविवरदिव्यआन्यौविमान ॥ पुनिधारिदेविमैथिलीपानि ॥ आरोपितदिव्यासनहिआनि ॥ नीसानगगनभुवभौनिनद ॥ संसारअषिलजयजयासद ॥ पातालविवरमारगप्रवेश ॥ वैकुंठगईसीताविशेष ॥ सुरकरीपुहपवर्षाअकास ॥ पायौसुरेसआनंदप्रकास ॥ इहिविधिसौसीतास्वर्गआइ ॥ सोलईविबुधवनिताबधाइ ॥ ॥ अथभूमिविभागवासिष्याकरणं ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भरतादिकरघुभूप, करततिनहिउपदेसक्रम ॥ रामआपअनुरूप, मनक्रमवाचानृपधरम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुत्रभतीजनिकहप्रिथी । वांटिदईविश्वेस ॥ अवनिवसाईसुषसहित । विधिजुतदेसविशेष ॥ १ ॥ नामयुधाजितभरतकौं । इहविचमातुलआइ ॥ गयोसहाइनिमित्तलै ॥ प्रभुकीआज्ञापाइ ॥ २ ॥ इहांगंधर्वनिसौंभयौ । भरतहिजुद्धभयान ॥ तीनिकोटिमारेतहां । अतिबलशत्रुअमान ॥ ॥ ३ ॥ क्षितिलीनीसबमारिषल । भारतभरतअभंग ॥ नगरवसाएद्वैनए । तहांकरिकोटउतंग ॥ ४ ॥ तक्षशिलापुष्करवती । नगरीदुवर्धरिनाम ॥ तक्षकपुष्करकुँवरतहां । कीनैवाससकाम ॥ ५ ॥ गंधर्वनिसौंजीतिजुध । पुनिआएप्रभुपास ॥ करतसुसेवारामकी । संततभरतप्रकास ॥ ६ ॥ पुत्रजुलवकुशआपनै । राजधर्मरघुराइ ॥ तिनकहँदीनैवांटितहां । देसनगरसुषदाइ ॥ ७ ॥ अपनीरजधानीअषिल । पुरीअजोध्यापाट ॥ दयाजुक्तलवकहँदए । निजकरतिलकललाट ॥ ८ ॥ कुशकहँपुरीकुशावती । दुर्गममालवदेश ॥ सुषदराजदलबलसहित । आपदएअवधेस ॥ ९ ॥ पाइरामआज्ञाप्रगट । आगैलषनअभंग ॥ शत्रुहयेजीतेसमर । सेन्याअतिवलसंग ॥ १० ॥ कह्योहुतौप्रभुलषनकहँ । उत्तरदिसाअषंड ॥ मल्लालोकअनेकमिलि । वसततहांवलवंड ॥ ११ ॥ करौतिनहिनिर्मूलकुल । सुतवसायतिहिंदेस ॥ आनिमिलहुमोकहँअनुज । वल्लभप्रानविशेष ॥ १२ ॥ लक्षउभयमल्लालषन । मारेषेतमहीप ॥ कारनआग्यारामकी । सेन्यासबलसमीप ॥१३॥ लीयउत्तरधरसीमलगि । मल्लाकीयनिर्मूल ॥ उहांवसाएपुरउभय । सत्रुनराषेशूल ॥ १४ ॥ लषमनकेसुतसुभलषन । पौरुषसमरप्रवीन ॥ जेठोअंगदजानिवो । चंद्रकेतलघुचीन ॥ १५ ॥ अंगदपुरदीघेअंगदहि । सोभासमृधसजूप ॥ चंद्रकेतचंद्रावती । नगरीदईअनूप ॥ १६ ॥ देशशत्रुघनकहँदयो । व्रजमंडलविष्यात ॥ पुत्रवसाएतहांप्रबल । पुरीरहितउतपात ॥१७॥ पावनभूमिजुमधुपुरी । हैतहांवसतसुबाहु ॥ शत्रूघातकजबवस्यौ । रनअभंगरिपुराहु ॥१८॥ प्रबलसुरक्षितकारिपृथी । इहविधिपुत्रवसाइ ॥ कह्या

अकंटकराजकुल। इक्कछत्ररघुराइ॥ १९॥॥ छंदपधरी॥ पुनिकरतइहांशिष्याप्रबोध॥
सुतउचितभतीजनिनीतिसोध॥ मिथ्यानवचनबालहिमहीप॥ सबतजहिमूढमैत्रीस
मीप॥ दैसुकरफेरिलीजेनदान॥ नहितोरिमित्रसोहितनिदान॥ पुनिसातव्यसनवर्जिनप्र
कास॥ सबछांडिदुष्टदुर्जनविसास॥ मंत्रीरुवैद्यवयवृद्धिमानि॥ कबहूनविप्रगुरुतजहुका
नि॥ आषेटकर्मफिरिवौअकाज॥ रिपुभूमिमांझनहिउचितराज॥ मूरषसौंतजियेमूलमंत्र॥
सबभांतिमौनभोजनसुतंत्र॥ विधिगूढमंत्रकरियेविसेष॥ षटकर्णपरयौविनसेअसेष॥
अनकारनहठअनुचितउपाधि॥ आरंभनिरर्थककृतअसाधि॥ अहनिसाप्रजारष्याअषं
ड॥ दीजियेजथाअपराधदंड॥ भवसावधाननृपमंत्रभेद॥ दुष्टतातजेपरमर्मछेद॥ द्वि
जदेवबालधनत्रियविकार॥ विषअग्निजानितजियेविचार॥ पीडियैप्रजानाहिनिरपराध
॥ सुचिमानभंगकरियेनिसाध॥ मदक्रोधलोभअरुकाममोह॥ दुर्वादतजैनृपचित्तहोइ॥
अनिषिद्धसुषनतजियेअसंक॥ करियेनदीनसेंकलहकंक॥ परत्रियादृष्टिगुरुत्रियप्रमानि
करियैजुअगम्यागमनकानि॥ इंद्रियरिपुनिग्रहकरिअशेष॥ विधिधर्मसुजससंग्रहविशे
ष॥ विस्तारकरहुनितसाधुबुद्धि॥ सबकालप्रकासहुजीवशुद्धि॥ मानियेहितूशिष्यामजाद
वर्जितकुसंगमिथ्याविवाद॥ पापीनवाकभिक्षाप्रमान॥ अनदोषदोषदीजेनआन॥ क
रअकरसीसकरियेनकोइ॥ हितवंतनिकटवर्तीसुहोइ॥ पुनिदुष्टवुद्धिवर्जितप्रधान॥ नि
हचैनदूतकरियेअग्यान॥ सेनापतिगढवैउचितसूर॥ दुविधागततजियेसुभटदूर॥
कामीसलोभद्विजकुकृतकार॥ करियेनताहिधर्माधिकार॥ संकल्पद्रव्यसौंसावधान॥
दीजैसुआपनैहाथदान॥ राजश्रीआपवसकरैराज॥ वसतासभयैउपजैअकाज॥ विस्ता
रधर्मविद्याविवेक॥ इत्यादिदईशिष्याअनेक॥ सबभाइरहौसुतसावधान॥ नितनीतिध
र्मसाधहुनिदान॥ ॥ दोहा॥ ॥ इहविधिहितउपदेसए। दीनेसुतनिसुदेस॥ पृथ्वीसु
रक्षितकरिप्रवल। नरहरप्रभूनरेस॥ १॥ ॥ अथमहाप्रस्थान॥ ॥ अयोध्याउ
द्धरण॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ दोहा॥ ॥ लषमनकेपरित्यागतैं। सोकाकुलितअस
स॥ रघुपतिमंत्रीमित्ररिषि। वृद्धनिबोलिविशेष॥ ॥ श्रीरामउवाच॥ ॥ कह्यौव
सिष्टसुमंतकहँ। अवधेसुरमतिएहु॥ अवनिराजअभिषेककरि। भरतहिटीकादेहु॥ २॥
॥ चालेलषनविमानचढि। हमहुचालनहार॥ महावीरतावंधुविनु। सून्यलगतसंसार
॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ करुणावचनजुरामके। सुनिपुरवासिनसोइ॥ पारिपारिलोटतभू
मिपर। रामरामकहिरोइ॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ विश्वेशवचनसुनिभरतवीर॥ अकुला
यभयेअंतरअधीर॥ दारुनसुनिवाइकभएदीन॥ करजोरिभरततबप्रणतिकीन॥ ॥
भरतउवाच॥ ॥ देवाधिदेवदीननिदयाल॥ सुनिवचनदुसहमोहिभएसाल॥ रघुना
थप्रिथीवाइंद्रराज॥ करुणानिधानमोहिनाहिनकाज॥ तवसपथसुनहुममजीवतंत॥ अ
षिलेसचरनछांडौनअंत॥ रघुराइदेहुअबलवहिराज॥ सबसुभटपूछिमंत्रीसमाज॥
॥ वसिष्ठउवाच॥ ॥ बोलेवासिष्टगुरुविहितवानि॥ प्रभुकरहुकाजसमयौप्रमानि॥ त
वविरहभएकातरसभीत॥ सुरलोकगमनजबदेषिसीत॥ भुवगिरतविकलनाहिनसंभारि॥

कछुकवितीतेकाल, हमपाछैहीआइहै ॥ स्वर्गप्रयानसुढाल, करिवोहैपुरअवधकों ॥
॥ ३ ॥ एकसमयअभिराम, सोभितगुरुरिषिवरसभा ॥ मिलिबैठेरघुराम, धरनीधरसिरछ
त्रधरि ॥ ४ ॥ अंतर्भावअभंग, जान्योपतिकौजानकी ॥ अतिहरषितअंगअंग, आनिभ
ईठाढीइहां ॥ ॥ सीतावाक्यं ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिसूरजसनमुषजोरपानि ॥ वि
धिवेदकह्योसियविमलवानि ॥ सुनिमातधरनिममवचनसार ॥ विश्वासमानिदीजैदरार ॥
ह्यांसतीजपैपतिव्रतासाध ॥ अंतर्गतममरघुवरअराध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यह
सुनतसतीवाचाअखंड ॥ पृथ्वीदरारपाइप्रचंड ॥ पातालदेविहितचितप्रमान ॥ विचविव
रदिव्यआन्योविमान ॥ पुनिधारिदेविमैथिलीपानि ॥ आरोपितादिव्यासनहिआनि ॥ नी
सानगगनभुवभौनिनद्द ॥ संसारअपिलजयजयासद्द ॥ पातालविवरमारगप्रवेश ॥ वैकुंठ
गईसीताविशेष ॥ सुरकरीपुहपवर्षाअकास ॥ पायौसुरेसआनंदप्रकास ॥ इहिविधिसौसी
तास्वर्गआइ ॥ सोलईविबुधवनिताबधाइ ॥ ॥ अथभूमिविभागवासिष्याकरणं ॥
॥ सोरठा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भरतादिकरघुभूप, करततिनहिउपदेसक्रम ॥ रा
मआपअनुरूप, मनक्रमवाचानृपधरम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुत्रभतीजनिकहप्रिथी ।
वांटिदईविश्वेस ॥ अवनिवसाईसुषसहित । विधिजुतदेसविशेष ॥ १ ॥ नामयुधाजितभ
रतकौ । इहविचमातुलआइ ॥ गयोसहाइनिमित्तलै ॥ प्रभुकीआज्ञापाइ ॥ २ ॥ इहांगं
धर्वनिसौंभयो । भरतहिजुद्धभयान ॥ तीनिकोटिमारेतहां । अतिबलशत्रुअमान ॥
॥ ३ ॥ क्षितिलीनीसबमारिषल । भारतभरतअभंग ॥ नगरवसाएद्वैनए । तहांकरिकोटउ
तंग ॥ ४ ॥ तक्षशिलापुष्करवती । नगरीदुवधरिनाम ॥ तक्षकपुष्करकुँवरतहां । कीनै
वाससकाम ॥ ५ ॥ गंधर्वनिसौंजीतिजुध । पुनिआएप्रभुपास ॥ करतसुसेवारामकी ।
संततभरतप्रकास ॥ ६ ॥ पुत्रजुलवकुशआपनै । राजधर्मरघुराइ ॥ तिनकहँदीनेवांटित
हां । देसनगरसुषदाइ ॥ ७ ॥ अपनीरजधानीअषिल । पुरीअजोध्यापाट ॥ दया
जुक्तलवकहँदए । निजकरतिलकललाट ॥ ८ ॥ कुशकहँपुरीकुशावती । दुर्गममालवदे
श ॥ सुषदराजदलवलसहित । आपदएअवधेस ॥ ९ ॥ पाइरामआज्ञाप्रगट । आ
गैलषनअभंग ॥ शत्रुहयेजीतेसमर । सेन्याअतिबलसंग ॥ १० ॥ कह्यौहुतौप्रभुल
षनकहँ । उत्तरदिसाअषंड ॥ मल्लालोकअनेकमिलि । वसततहांबलवंड ॥ ११ ॥
करौतिनहिनिर्मूलकुल । सुतवसायतिहिंदेस ॥ आनिमिलहुमोकहँअनुज । वल्लभप्रान
विशेष ॥ १२ ॥ लक्षउभयमल्लालषन । मारेषेतमहीप ॥ कारनआग्यारामकी । सेन्यास
बलसमीप ॥ १३ ॥ लीयउत्तरधरसीमलगि । मल्लाकीयनिर्मूल ॥ उहांवसाएपुरउभय । सत्रु
नराषेशूल ॥ १४ ॥ लषमनकेसुतसुभलषन । पौरुषसमरप्रवीन ॥ जेठोअंगदजानिवो ।
चंद्रकेतलघुचीन ॥ १५ ॥ अंगदपुरदीघेअंगदहि । सोभासमृधसजूप ॥ चंद्रकेतचंद्रा
वती । नगरीदईअनूप ॥ १६ ॥ देशशत्रुघनकहँदयो । व्रजमंडलविष्यात ॥ पुत्रवसाएतहां
प्रबल । पुरीरहितउतपात ॥ १७ ॥ पावनभूमिजुमधुपुरी । हैतहांवसतसुबाहु ॥ शत्रूघातक
जबवस्यौ । रनअभंगरिपुराहु ॥ १८ ॥ प्रबलसुरक्षितकारिप्टथी । इहविधिपुत्रवसाइ ॥ कथा

अकंटकराजकुल । इक्कछत्ररघुराइ ॥ १९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ पुनिकरतइहांशिष्याप्रबोध ॥ सुतउचितभतीजानिनीतिसोध ॥ मिथ्यानवचनबालहिमहीप ॥ सबतजहिमूढमैत्रीस मीप ॥ दैसुकरफेरिलीजेनदान ॥ नहितोरिमित्रसोहितनिदान ॥ पुनिसातव्यसनवर्जिनप्र कास ॥ सबछांडिदुष्टदुर्जनविसास ॥ मंत्रीरुवैद्यवयवृद्धिमानि ॥ कवहूनविप्रगुरुतजहुका नि ॥ आखेटकर्मफिरिवौअकाज ॥ रिपुभूमिमांझनहिउचितराज ॥ मूरषसौंतजियेमूलमंत्र ॥ सबभांतिमौनभोजनसुतंत्र ॥ विधिगूढमंत्रकरियेविसेष ॥ षटकर्णपर्योविनसैअसेष ॥ अनकारनहठअनुचितउपाधि ॥ आरंभनिरर्थककृतअसाधि ॥ अहनिसाप्रजारष्याअषं ड ॥ दीजियेजथाअपराधदंड ॥ भवसावधाननृपमंत्रभेद ॥ दुष्टतातजैपरमर्मछेद ॥ द्वि जदेवबालधनत्रियविकार ॥ विषअग्निजानितजियेविचार ॥ पीडियैप्रजानाहिनिरपराध ॥ सुचिमानभंगकरियेनिसाध ॥ मदक्रोधलोभअरुकाममोह ॥ दुर्वादतजैनृपचित्तहोइ ॥ अनिषिद्धसुषनतजियेअसंक ॥ करियेनदीनसैंकलहकंक ॥ परत्रियादृष्टिगुरुत्रियप्रमानि करियैजुअगम्यागमनकानि ॥ इंद्रियरिपुनिग्रहकरिअशेष ॥ विधिधर्मसुजससंग्रहविशे ष ॥ विस्तारकरहुनितसाधुबुद्धि ॥ सबकालप्रकासहुजीवशुद्धि ॥ मानियेहितूशिष्यामजाद वर्जितकुसंगमिथ्याविवाद ॥ पापीनवाकभिक्षाप्रमान ॥ अनदोषदोषदीजैनआन ॥ क रअकरसीसकरियैनकोइ ॥ हितवतनिकटवर्तीसुहोइ ॥ पुनिदुष्टवुद्धिवर्जितप्रधान ॥ नि हचैनदूतकरियेअग्यान ॥ सेनापतिगढवैउचितसूर ॥ दुविधागततजियेसुभटदूर ॥ कामीसलोभद्विजकुकृतकार ॥ करियैनताहिधर्माधिकार ॥ संकल्पद्रव्यसौंसावधान ॥ दीजैसुआपनैहाथदान ॥ राजश्रीआपवसकरैराज ॥ वसतासभयैउपजैअकाज ॥ विस्ता रधर्मविद्याविवेक ॥ इत्यादिदईशिष्याअनेक ॥ सबभाइरहौसुतसावधान ॥ नितनीतिध र्मसाधहुनिदान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहविधिहितउपदेसए । दीनैसुतनिसुदेस ॥ पृथ्वीसु रक्षितकरिप्रवल । नरहरप्रभूनरेस ॥ १ ॥ ॥ अथमहाप्रस्थान ॥ ॥ अयोध्याउ द्धरण ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लषमनकेपरित्यागतैं । सोकाकुलितअसे स ॥ रघुपतिमंत्रीमित्ररिषि । वृद्धनिबोलिविशेष ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ कह्यौव सिष्टसुमंतकहँ । अवधेसुरमातिएहु ॥ अवनिराजअभिषेककरि । भरतहिटीकादेहु ॥ २ ॥ ॥ चालेलषनविमानचढि । हमहुंचालनहार ॥ महावीरतावंधुविनु । सून्यलगतसंसार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करुणावचनजुरामके । सुनिपुरवासिनसोइ ॥ पारिपारिलोटतभू मिपर । रामरामकहिरोइ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ विश्वेशवचनसुनिभरतवीर ॥ अकुला यभयेअंतरअधीर ॥ दारुनसुनिवाइकभएदीन ॥ करजोरिभरततवप्रणतिकीन ॥ ॥ भरतउवाच ॥ ॥ देवाधिदेवदीननिदयाल ॥ सुनिवचनदुसहमोहिभएसाल ॥ रघुना थप्रिथीवाइंद्रराज ॥ करुणानिधानमोहिनाहिनकाज ॥ तवसपथसुनहुममजीवतंत ॥ अ षिलेसचरनछांडौनअंत ॥ रघुराइदेहुअबलवहिराज ॥ सबसुभटपूछिमंत्रीसमाज ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ॥ बोलेवसिष्टगुरुविहितवानि ॥ प्रभुकरहुकाजसमयौप्रमानि ॥ त वविरहभएकातरसभीत ॥ सुरलोकगमनजबदेषिसीत ॥ भुवगिरतविकलनाहिनसंभारि ॥

पुरलोकसोकरोवतपुकारी ॥ धरिदयाकरहुतिनसमाधान ॥ प्रभुअबैजुकछुकरिवौप्रमान ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ करिदयालोकबोलेक्रपाल ॥ विनवौजुमनोरथवृद्धबाल ॥ ॥ लोकउवाच ॥ यहसुनतलोकबोलेअशेष ॥ विश्वेशविरहदुस्सहविशेष ॥ सबवसहिदेव तवचरनसंग ॥ इच्छायहसबहिनकेअभंग ॥ पुरस्वर्गवसहुवाबनप्रमान ॥ जगदीशसंगरा राखहुसुजान ॥ कविरुवाच ॥ अनुरागजानिसबकैअनंत ॥ विश्वासदयौतबदयावंत ॥ करिनिश्चयरघुवरसमयकाज ॥ लवकस्यौतिलकदैअवधिराज ॥ अभिषेककस्यौगुरुमंत्रि आइ ॥ सुभछत्रसीसचामरचलाइ ॥ कवित्त ॥ ॥ सहसअाठगजसुरथसहसइकजूथपसं गीय ॥ सहससाठिहयसजवअषिलअसिवाहअभंगीय ॥ इहिंप्रमानसेन्याअजीतदुवपुत्र निदीनी ॥ सम्रद्धिसंगसबराजसाजनिधिविविधनवीनी ॥ पितविरहसमयदारुनदुसह, भवरक्षाततपरभए ॥ करिनमस्काररघुनाथकहँ, ग्रहनिइहांलवकुशगए ॥१॥ सजवदूतअ वधेसइहांशत्रुघनपहंआए ॥ कालपुरुषआगमनसहितदुर्वाससुनाए ॥ प्रभुलछमनकौ परित्यागपुनिरामप्रतिज्ञा ॥ विषमलोककौविरहअवधिपतिकीहितआज्ञा ॥ शत्रुघातवा तएदुसहसुनि. दुवपुत्रनिकहँराजदीय ॥ सुरसाषिस्वर्गरघुनाथसंग, क्रमप्रयाननिश्चय करीय ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मथुरामंडलकौकस्यौ । हितकरनृपतिसुबाहु ॥ कीनौस्वा मिकनोजकौ । शत्रूघातुसनाहु ॥ १ ॥ देसउभयपुत्रनिदए । सेन्यासंपतिसंग ॥ समाधान करिसबनिकौ । आएअवधिअभंग ॥ २ ॥ ॥ शत्रुघ्नउवाच ॥ ॥ करिवंदनरघुनाथकहँ । शत्रुघनकह्यौसुनाइ ॥ द्वौपुत्रनिकौराजदै । पुनिआयौप्रभुपाइ ॥ ३ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रभुकरौंचरनसेवाप्रमान ॥ नहितजहुंसंगकरुणानिधान ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ दृढभक्ति जानबोलेदयाल ॥ करिवोप्रयानमध्यान्हकाल ॥ याहीविचजूथपजूथआइ ॥ सबकरेच रनवंदनसुभाइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ आयौजुबिभीषनसकुलआप ॥ पावनसिरजा कौरामछाप ॥ सुरआइअषिलमुनिवरसमाज ॥ रघुनाथवंदिराजाधिराज ॥ ॥ सुग्रीव उवाच ॥ ॥ हितकहीकपीसतवजोरिहाथ ॥ सर्वथानछांडौंचरनसाथ ॥ अंगदहिदयौमै तिलकआप ॥ पुरवासकिष्किंधाप्रभुप्रताप ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ मतकहैबिभीषनफे रिमोहि ॥ हठकरैततौममसपथतोहि ॥ पृथ्वीयहजौलौउदधिपाज ॥ रुचिकरहुबिभीषनलं कराज ॥ अथश्रीरामआज्ञाहनुमंतप्रति ॥ ॥ सुधिलायौजबतूंप्रियासीत ॥ पदअमर दयौतोकहँपुनीत ॥ सोवचनवृथानहिहोइसंत ॥ महिवसहुभक्तसुषसौंमहंत ॥ जगदीसक ह्यौसुनिजांबुवंत ॥ अवनीपररहिद्वापुराअंत ॥ कालांतरकारनकलहकाज ॥ हमतुमसौंव्हैहै रीषराज ॥ रघुनाथसषागुहआइराज ॥ करिसबैसंगकेगमनकाज ॥ निर्धारकह्यौयहनृपनि षाद ॥ प्रभुकरहुचरनसेवाप्रसाद ॥ द्रढबुद्धिसवनकीरामदेषि ॥ विश्वेसदईआग्याविशेषि ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ इच्छाअषंडजिहचित्तएह ॥ संगचलहुहमारैनिसंदेह ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ पुनिअपरदिवसवेलाप्रभात ॥ तहांगुरुवसिष्टएकहीवात ॥ हमकाजमहाप्रस्था नहेत ॥ मुनिकरहुहोमसबविधिसमेत ॥ परिधानवसनधौतापुनीत ॥ आएवसिष्टअंतरअ भीत ॥ कुसपानिकरेसबसिद्धकाज ॥ संगसांतरूपमुनिवरसमाज ॥ नगरतैंनिकसिअइलो

कनाथ ॥ हरिचलेभरतकोग्रहेहात ॥ प्रभुअर्ककोटिप्रतिमाप्रकास ॥ सासिकोटिसुषदसीतल सहास ॥ वामांगसंगकमलाविशेष ॥ आवरितभरनभूषनअसेष ॥ लज्जादिकसहचरिसुभ गसंग ॥ अलिमत्तकरतगुँजारअंग ॥ गायत्रीअंबासहितआइ ॥ सबवेददेहधारैसुभाइ । पुरलोकचलेसुतत्रियासंग ॥ पुनिबालवृद्धपरिजनप्रसंग ॥ अंतहपुरवासीदासिदा स ॥ पुनिचलेवर्णचार्य्योंप्रकास ॥ पुरद्वारषुलेछांडेप्रसिद्ध ॥ वैकुंठहेतचलिबालवृद्ध ॥ भवभूतचलेमिलिसंगभूप ॥ जडथावरजंगममनुजरूप ॥ पसुपंषीसूकरसलभस्वान ॥ कृमिकीटअधमजनअषिलआन ॥ इत्यादिकजेप्रानीअनंत ॥ सबचलेहरषिअनसंत संत ॥ रघुनाथरूपमनमांझराषि ॥ भवभूतचलेजयजयतिभाषि ॥ प्रानीनरह्योकोऊप्र मान ॥ भौनगरशून्यलागतभयान ॥ तबआएसरयूसरिततीर ॥ विश्वेसरामरघुवंस वीर ॥ सबहीनदईआग्यानरेस ॥ पुनिकर्य्योसरितसरयूप्रवेस ॥ मज्जनकरिआरोहन विमान ॥ सबजंतुचलेसुरपुरसमान ॥ गतकल्मषगुनरघुनाथगाइ ॥ सबगएस्वर्गअ पनैसुभाइ ॥ ब्रह्मादिसकलमुनिवरविशेष ॥ आनंदजुक्तआएअशेष ॥ मिलिकोटिको टिनभसुरविमान ॥ आकासभयोआव्रतअमान ॥ पुनिअर्ककोटिनभभोप्रकास ॥ सौ गंधपवनचलिसावकास ॥ हितपुष्पवृष्टितहांगगनहोइ ॥ सुरदईहर्षिदुंदुमिसजोइ ॥ सुरकिन्नरमिलिगंधर्वगान ॥ पुनिनाटकसुरकन्याप्रमान ॥ कृतरामचरनमज्जनकृपाल ॥ सरयूजलनिर्मलअघनिसाल ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ विधिकह्योतहांवानीविनीत ॥ परपुरुषरामतुमजगपुनीत ॥ परमीश्वरपूरनविश्वपाल ॥ देवाधिदेवरघुपतिदयाल ॥ अनचिंतअनामयचितअरेह ॥ विष्णुतुमतत्ववेत्ताविदेह ॥ आनंदजुक्तअविगतउदास ॥ अनभंगअनोपमनभअवास ॥ आकासलिंगतुमरूपएक ॥ अरुकरतदेहकारनअने ॥ क ॥ सुनियैविशेषममदीनवानि ॥ अबकरहुपवित्रविधिलोकआनि ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जाचन्यासुनियहकमलजात ॥ प्रभुकीयप्रमानवाचाविष्यात ॥ रघुनाथपलटितब मनुजरूप ॥ भएयहांचतुर्भुजदिव्यरूप ॥ अरुभएलषनशेषावतार ॥ आजितजिहिफ नपरभूमिभार ॥ भएभरतशत्रुघनमनसंभारि ॥ धरिदेहचतुर्भुजचक्रधारी ॥ रघुनाथ विष्णुभएमहावीर ॥ सीयधर्य्योतहांलक्ष्मीशरीर ॥ इंद्रादिदेवऋषिसिद्धआइ ॥ मुनिपि तरपितामहदरसपाइ ॥ योगेसयक्षपर्वतप्रचंड ॥ अंबोधिसरितसरवरअषंड ॥ दोहा ॥ ॥ मिलिसबहिनकेलोकमहँ । पावनकरतसप्रीत ॥ प्रभुआयेवैकुंठपति । पुनिवैकुंठपु नीत ॥ पूज्यमानप्रतिलोकप्रभु । सबहिनकरेसनाथ ॥ आएअपनेलोकइहां । सानुज सीतासाथ ॥ २ ॥ कारनवानररूपकिय । अमरअषिलभुवआइ ॥ सुरपतिकारिजसिद्ध कारि । पुनिअपनेपदपाइ ॥ ३ ॥ तिर्यगादिभवभूततहां । सदगतिपाइअसंक ॥ भवबं धनकटिकटिभए । तेनिर्बंधनियंक ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रामचरित्ररसालयहजुअद्भु तशिवगायौ ॥ पूछ्योशिवासप्रेमसुगमभूतेससुनायौ ॥ लिषैसुनैवाचैनिसंकपुनिभावप्र कासै ॥ जन्मसहसकीयअकृतजालनिर्मूलसुनासै ॥ सोलहैभक्तिनरहरसुकवि, अरुएको त्तरउद्धरै ॥ करुणानिधानरघुनाथकौ, यहचरित्रकृतउच्चरै ॥ १ ॥ धर्मरूपअवधेसबदन

सुप्रसन्नविराजित ॥ द्रगनिसुधाश्रावितदयालसिरछत्रसुसाजित ॥ उरआयतआजान बाहुसोभितसिंघासन ॥ प्रगटकोटिदिनकरप्रतापमिलिछविजुमथनमन ॥ अंकूरधर्म कोभौउदित,रह्योअटाकिमनरूपरस ॥ काटेअकर्मनरहरसुकवि,यथाशक्तिभाष्योसुजस॥ ॥२॥ सघनबुंदरजरेणुकवनतरुपत्रगानकरि ॥ अकलपंथकिहिंकल्पधराधरमनुजकराहि धरि ॥ उदधिकवनथाहयोपानिकिंहिधरयोप्रभंजन ॥ भवितव्यभवभूतकठिनवसकीनो काहुन ॥ सतकोटिरामसंष्यासुजस, कविसुकवनपूरनकहै ॥ सुभलहैभक्तिनरहरसुकवि, रामचरनहितचितरहै ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दससहस्त्रशतवर्षदस । रहेमनु जतनराम ॥ तीनिलोकउछवअषिल । सुरमुनिलहिविश्राम ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीचतुर्विं शतिअवतारचरित्रेपौरुषेयरामायणेमहामुक्तिमार्गेबारहटनरहरदासेनविरचितंउत्तरकांडं संपूर्णम् ॥ ॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शुभंभवतु ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ कल्याणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इति श्रीअवतारचरित्रे एकविंशतितम
रामावतारचरित्रं समाप्तम् ॥

पंडित श्रीधर शिवलाल.
ज्ञानसागर छापखाना (मुंबई)



कृष्णावतार चित्र.


ब्रह्मादिदेव
गोरूपपृथ्वी

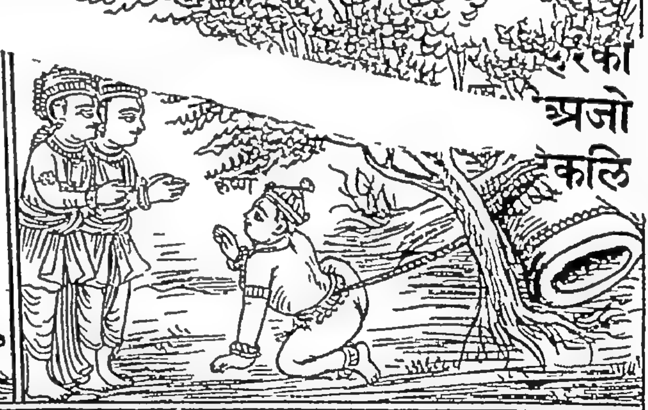

परीक्षित् राजा


कंस
देवकी


वसुदेवजी कृष्णको गोकुलमें पहुं
चातेहैं


कृष्णावतार
नंद
यशोदा


पूतनावध.


कृष्ण


बकासुर


अघासुरवध


हरण

सुप्रसन्नविराजित ॥ द्रगनिसुधाश्रावितदयालसिरछत्रसुसाजित ॥ उरआयतआजान बाहुसोभितसिंघासन ॥ प्रगटकोटिदिनकरप्रतापमिलिछबिजुमथनमन ॥ अंकूरधर्म कोभौउदित,रह्यौअटकिमनरूपरस ॥ काटेअकर्मनरहरसुकवि,यथाशक्तिभाष्यौसुजस॥ ॥२॥ सघनबुंदरजरेणुकवनतरुपत्रगानकरि ॥ अकलपंथकिहिंकलपधराधरमनुजकराहि धरि ॥ उदधिकवनथाहयोपानिकिंहिधरयोप्रभंजन ॥ भवितव्यभवभूतकठिनवसकीनो काहुन ॥ सतकोटिरामसंष्यासुजस, कविसुकवनपूरनकहै ॥ सुभलहैभक्तिनरहरसुकवि, रामचरनहितचितरहै ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दससहस्त्रशतवर्षदस । रहेमनु जतनराम ॥ तीनिलोकउछवअषिल । सुरमुनिलहिविश्राम ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीचतुर्विं शतिअवतारचरित्रेपौरुषेयरामायणेमहामुक्तिमार्गेबारहटनरहरदासेनविरचितंउत्तरकांडं संपूर्णम् ॥ ॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शुभंभवतु ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ कल्याणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथश्रीकृष्णावतारप्रारंभः ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ गवरीपुत्रगनेशबुद्धिदातालंबोदर ॥ वारनवदनविशालसकलकारजअग्रेसुर ॥ वरनअरुनवित्थरीयसीससिंदूरसमंगल ॥ रुचिकपोलमदरेषकरतमधुकरकोलाहल ॥ कीनोउछाहनरहरसुकवि, कृष्णदेवजयजसकरन ॥ सिद्धहोइविघनविनसैंसबै, धुरवंदौंफरसद्धरन ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मसुतावागेश्वरी । सारदासरस्वत्ति ॥ कृष्णचरितमंगलकहूं । मातादेहुसुमत्ति ॥ १ ॥ ॥ गाथा ॥ जरजीरनाजयंती ॥ ज्वालामुषीजोतिजालया ॥ जगजननीजगकारी ॥ जुगकरजोरीकरौंजाचन्या ॥ ॥१॥भषाजुतिरसभेदं ॥ अक्षरछंदअरथगतिउत्तम ॥ पावैंसुकविप्रमानं ॥ भगवंतीभक्तिभावेन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ब्रह्मविष्णुअरुविश्वनाथऋषिसहसअव्यासी ॥ अमरकोटितेतीसपंचपालगपरगासी ॥ नवदुर्गानवनाथद्विजसुगुरुगिरधरदीक्षत ॥ दयाकरहुमुहिजानिदासहरिविघ्नमानिहित ॥ क्रीडासुकृष्णजदुनाथकी, जोपुरानमतिजानिहौं ॥ हरिकृपाजन्मउद्धारहित, बुद्धिप्रमानवषानिहौं ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महाकवीश्वरजेमनुज । सज्जनसगुनसुजान ॥ कविनरहरवंदनविहित । मानहुप्रेम[illegible] ॥ २ ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ कृष्णकृष्णकृष्णाहरिकेसवकृपालहरिकरुणानिध[illegible]हरिकारनकरनहैं ॥ भवकेतारनहरिभयकेहरनहरिकमलनयनहरिकमलावरनहैं ॥ वृजकेविहारहरिकंसकेसंघारहरिगजकेउधारगिरवरकेधरनहैं ॥ दुषकेषयारअघवनके[illegible]जोगसिद्धांतकेसारनरहरकौंसरनहैं ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जगरक्षकरघुनाथज[illegible]प्रभुवैकुंठपधारि ॥ पुरीअजोध्याउद्धरी । सबभवभूतसंभारि ॥ ३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ द्वापरअंतआदिकलिकाला ॥ असुरबढेबहुकर्मकराला ॥ वसुधामहापापविस्तारे ॥ नियतसोधिसबधर्मनिवारे ॥ तिहिंअघपीडितपृथ्विपुनीता ॥ भाराक्रांतभईभयभीता ॥ सुधिनरहीकछुअघभरकेसंग ॥ अतिविव्हलव्हैगईसकलअंग ॥ पृथ्विधेनुकेरूपपलाई ॥ आतमविकलब्रह्मपुरआइ ॥ सबदुषकारनविधिहिसुनायौ ॥ भयोजुकछुभायौअनभायौ ॥ यहसुनिसोचभयोब्रह्माउर ॥ संगलएइंद्रादिकशंकर ॥ इहांषीरसागरतटआए ॥ अवनिसकलसुरगनअकुलाए ॥ कमलजातप्रभुसुमिरनकीनो ॥ अतिजियभयोसुरूपअधीनो ॥ सोएहुतेमध्यपयसागर ॥ अषिललोककररक्षकईश्वर ॥ करीवेदधुनिब्रह्मसकारन ॥ नरहरप्रभुजागेनारायन ॥ दयानिधानदरसप्रभुदीनो ॥ कारनब्रह्मनिवेदनकीनो ॥ अथआकाशवानी ॥ ॥ इहांआकाशवानिभइऐसी ॥ तबैसुनीब्रह्मादिकतैसी ॥ ॥ गगनगिरा ॥ ॥ सबैदेवतुमभूमिसहाई ॥ जदुकुलमांझअवतरहुजाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्हैहैनृपवसुदेवतहां । भुवमंडलभवभूप ॥ ताकैअवतरिहैतहां । नारायननररूप ॥ ४ ॥ शेषनागतेईसमय । शुभबलभद्रसनेह ॥ प्रभुअग्रजव्हैहैप्रबल । प्रानएकद्वैदेह ॥ ५ ॥ रामकृष्णइहिंनामकरि । हैंअंसाअवतार ॥ व्रजमं

डलमहँविहरिहे । भवहरिहैंभुवभार ॥ ६ ॥ मायाजोगमहेश्वरी । पूरनप्रभाप्रताप ॥ हितजुतनंदअहीरकें । वहिअवतरिहैआप ॥ ७॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ यहअकासबानी भई । धराहेतनिर्धार ॥ सोसुनिब्रह्मादिकसवे ॥ विसरेशोकविकार ॥ ८॥ ब्रह्मआदिसुर भूमिसंग । सबनिभएसंतोष ॥ आएथानकआपने ॥ मनहर्षतदुषमोष ॥ ९ ॥ रजधा नीजदुवंसकी । ब्रजमंडलविस्तार ॥ कृष्णतहांक्रीडाकरत ॥ सदाभक्तसुषसार ॥ १० ॥ ॥ अथजादवोत्पत्ति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सोमवंशराजाधिराजजदुभयोनरेसुर ॥ ताते जादववंसबढ्योसंसारसाषिसुर ॥ तिहिंशाषामहसूरसेनमहिपतिकुलमंडन ॥ ताकौंसुतव सुदेवविजयरनवैरविहंडन ॥ भुवपालराजश्रीभोगवत, सहजविजयपंजरसरन ॥ सुतता सकृष्णव्हैहैसुषद, कृतअभूतकारनकरन ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परमरम्यमथुरापुरी । सबसंपतिसुषसाज ॥ करततहांजदुकुलतिलक ॥ राजाआहुकराज ॥ ११ ॥ कवित्त ॥ ॥ आहुककेसुतउग्रसेनराजासुधर्मरति ॥ देवकनामाद्वितीयशूरदातावाचासति ॥ देवक कैदेवकीसाधकन्यागुनसुंदर ॥ वसुदेवहिमागीविचारिपुत्रीसुप्रेमपर ॥ मंगलविधानदुव ओरमिलि, उरआनंदउपजेअतुल ॥ घनसेनिसानघुमरेसघन,कीएउछाहजजातिकुल ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इंहिक्रमजादवअवतरे । मथुरामंडलमांहिं ॥ सुरसमाजरमनीसहि त । वासुरसुषाहिविहाहिं ॥ १२॥ ॥ अथकंसउत्पत्ति ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ इकसमयसुषदऋतुवसंतआइ ॥ सबफूलिफलितवनघनसुभाइ ॥ तिहिका लविमलचलित्रिविधिवात ॥ सौंगंधमंदसीतलसुहात ॥ तरुलतागुल्मकोमलतमाल ॥ वनिरंगपुहपमंजरविसाल ॥ सरसरसरोजफुल्लीयसुगंध ॥ अलिजूथभ्रमतमदगंधअंध ॥ वनवनविलासवनितानिवृंद ॥ चलकेलिजथाआतमअनंद ॥ शुभवनविहारनृपउग्रसेन ॥ ॥ मिलिसमयसमयसुषदिवसमेन ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ आगेमहादुष्टकोउआसु र ॥ पहिलेंभयोहुतोजुगद्वापुर ॥ सोनिर्मूलहत्योनारायन ॥ पापीतिहिजीयबांधिवयरपन ॥ बहुत्योसोइउपजिमहाबल ॥ षेचरकालनेमिनामाषल ॥ वैरभाववहअसुरविचारे ॥ वि सरैनाहिविरोधवधारे ॥ ताकतघातरहैसोनिसचर ॥ अवलोकीकोउतैसोअवसर ॥ राजा उग्रसेनपटरानी ॥ मजनऋतुबैठीसुषमानी ॥ पापीयहेजुअवसरपायौ ॥ आसुरकालने मिसोआयो ॥ हठहींनभमारगरथहाक्यौ ॥ तिहिंषलछिद्रहिहेजोताक्यौ ॥ दुर्जनत्रिया अवस्त्रादेषी ॥ विषमविरोधअनंगविशेषी ॥ उग्रसेनकोरूपकस्योअर ॥ निसासमयआ योसोनिसचर ॥ ठगतितिहिकपटजुऐसोठान्यौ ॥ पटरानीसोनाहिपिछान्यौ ॥ इहांऋतुदा नादियौतिहिंआसुर ॥ जातअज्ञातभयोआनंदउर ॥ उग्रसेनसज्यागृहआयौ ॥ पैताहून मर्मयहपायौ ॥ असुरगर्भथितिभईत्रियाकैं ॥ तबतेउदरतापबढिताकैं ॥ देतत्रियाकेगर्भजु दारुन ॥ करतिदुष्टअभिलाषसकारन ॥ विवरनबदनदेहअतिविव्हल ॥ दिनदिनहोत सुरानीदुर्वल ॥ नृपतित्रीयातनदसानिहारी ॥ पुनिताकीइकसषीप्रचारी ॥ ॥ सखीउ वाच ॥ ॥ तिहिंपूछ्यौस्वामिनितेरोतन ॥ षीनहोतकाहेतेषिनषिन ॥ ॥ रानीवाक्यं ॥ ॥ सुनिसषितोकहँमर्मसुनाउं ॥ पतिकोकहूंकलेजापाउं ॥ मनअभिलाषफलैतौमेरौ ॥ ताहि

षाइमानौगुणतेरो ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सषीनृपहिवृत्तांतसुनायौ ॥ बहुरिराइकोउ गुनीबुलायौ ॥ कागदमयराजातिहिंकीनो ॥ देहमध्यअजकालिजदीनो ॥ भूषनवसनसु गंधबनाए ॥ उग्रसेननृपमानहुआए ॥ सोपुतराएकांतसुबायौ ॥ वनिताकहँलैसषीवता यौ ॥ इहांरानीमनहरषितआई ॥ पंथपरीमानहुनिधिपाई ॥ बैठीउचाकिहींयेपरअतिबल ॥ षाइकलेजाभईतृप्तिषल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजासौंतिहिसाषिरहासि । सबैकहीसमझा इ ॥ दुष्टगभयाकैंदुषद । कोउअरिष्टहैआई ॥ १३ ॥ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ यहांमंत्रि निसौंमंत्रयह । रहसिकह्यौसबराज ॥ हैअनिष्टउतपत्तियह । करहुजतनइहिंकाज ॥ ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ उग्रसेनसौंइहांकह्यौमंत्रीनिमंत्रमिलि ॥ यहअनिष्ट कलुआहिभयौभावीसजोगमिलि ॥ वैश्वानरअरुवयरव्याधिदिनबढननदिज्जै ॥ जथाजत नकाचेसुजानिनिर्मूलकरिज्जै ॥ पृथ्वीसआपअर्थीप्रगट, इहैनीतिमारगअकल ॥ आप नीराजरष्याउचित, करतरहैराजासकल ॥ ५ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ सचिवमंत्रसु निउग्रसेनयहवचनउचार्‍यौ ॥ कुलजादवनिकलंकवंसकोधर्मविचार्‍यौ ॥ अबलावधअन उचितयहजुहमतेनहिंहोई ॥ दइवीमायादुगमकरैतिहिंलगिकहाकोई ॥ शुभअशुभकर्म संभूतसब, जगतसुरासुरजोइहै ॥ सोटरैनाहिनरहरसुकवि, होनहारसोहोइहै ॥ ६ ॥ अ वधिपाइवहअसुरअंसइहाकंसउपज्ज्यो ॥ शरनचल्योभयोचित्तचेतजनदोषजुसज्ज्यो ॥ देवीकोदेबलसदिग्घषेचरषेलहिषल ॥ भूतप्रेतवेतालकरहिंरजनीकोलाहल ॥ क्रीडासुकं सतिनमहँकरै, वैसीहीबुधिआचरै ॥ मानैनवेदहुंलोकमत, अहितकर्मसोइअनुसरै ॥ ७ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अथवसुदेवदेवकीविवाह ॥ ॥ देवकसुताजुदेवकी । सुंदरसगुन सुजान ॥ दईहुतीवसुदेवकों । पहिलेप्रीतिप्रमान ॥ १४ ॥ लिषिपठयोताकोलगन ॥ पंच अंगसुधपाइ ॥ करिमंगलवसुदेवकहं ॥ विप्रनिआनिवंदाइ ॥ १५ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ बनिवरातवसुदेवआइमधुपुरीउछाहनि ॥ कनककलसतोरनउतंगमिलिथंभरचितमनि ॥ सजिचौरीमंडपसुरंगाविवहारजथाविधि ॥ वरवरनीसोभाविशेषशुभजोगमहासिधि ॥ कृत होमद्विजनिनरहरसुकवि, वेदमंत्रवानीविहित ॥ जुगवसनगांठिजोरीजतन, हूवआनंद विवाहहित ॥ ८ ॥ करिसंग्रहकरिकमलरमनरमनीयरंगरस ॥ विविधवेदविवहारविमलवि स्तारविप्रवस ॥ परिभांवरिलौकिकप्रकारशुभकाजसंवारीय ॥ पूरनआहुतिप्रगटअषिल जगजसउद्धारीय ॥ नृपउग्रसेनबढिहर्षहित, दिव्यसकलदाइजदिये ॥ मिलिजुवतिगान मंगलधमल, जगवंदनजाचकजिए ॥ ९ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कनकअष्टदससतरथ कीनै ॥ देवकनृपतिदाइजैदीनै ॥ गजमदमत्तभ्रमरगुंजारत ॥ वहतछीरतुवनसरितविहा रत ॥ बनिपटवसनकनकमयकिंकिनि ॥ धावतधरागगनमिलिप्रतिधुनि ॥ निकरतरा इलसहितनवीनै ॥ दुरदमतंगचारिसतदीनै ॥ सोभाजीनजराइनिसाजे ॥ विविधसौं जपटडोरविराजे ॥ उपजसुषेतजातिअधिकारीय ॥ असीसहस्रपनरहअवधारीय ॥ कारनवस्तुगानकिहिकीनैं ॥ दिव्यअनेकदाइजैदीनै ॥ दासितीनसतकृताहितकारी ॥ सबै कनकपटवसनसिंगारी ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ विधिजुक्तसबैरसराहिविवाह ॥ इहांजान

विदाकीनीउछाह ॥ संगचल्यौहर्षसौंकुंवरकंस ॥ पहुंचावनबहिनीहितप्रसंस ॥ भगिनी रथहांकतचित्तभाइ ॥ इहांभयौसारथीकंसआइ ॥ तहांआइएकजोजनवरात ॥ वसकर्म वनीभवतव्यवात ॥ जैसीकछुभावीदइवजोग ॥ पुनिमिलीआनिसोइअप्रयोग ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अथआकाशवानी ॥ ॥ गगनगिराअनगूढभईयासमयजुऐसी ॥ सुनी कंससोसबैतहांउरदाहकतैसी ॥ रेमदंधमतिमूढकरततूंसारथजाकौ ॥ तेरौहंताअहितगर्भ अष्टमहैयाकौ ॥ यहसुनीगगनवानीअसह, पापकंसउरत्रासपरि ॥ परजरयौचित्तरथते पिसुन, इहांदुष्टठाढौउतारि ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ काढ्यौषग्गासिषागहिगाढी ॥ कंसदेवकीबाहिरकाढी ॥ काटनमूंडलग्यौजुकलंकी ॥ वितयौसरापनदृष्टिसवंकी ॥ अबलात्राहित्राहिउच्चारीय ॥ भयोसबानिकेत्रासजुभारीय ॥ इहांवसुदेवनिकटतबआयो॥ पापीचारितदेषिदुषपायो ॥ महाअनर्थविलोकिधर्ममत ॥ करजोरेधरधरउरकांपत ॥ इहांवसुदेवविचारयौऐसो ॥ कंसकुमारभरोसोकैसो ॥ यहतौपतितसुरापीपापी ॥ महाबलीआततममतथापी ॥ अबतौकोऊमंत्रउपाऊं ॥ विषमकालतैंत्रियाबचाऊं ॥ जौसुतजामैकिधौंनजामैं ॥ आहिमहासंदेहजुयामै ॥ जोपैयहैवीचमारिजैहै ॥ हैकछुकरतकछूपुनि व्हैहै ॥ भयोहोतभवतव्यजुजैसो ॥ ताकौंकोजानतहैतैसौ ॥ ॥ वसुदेववाक्यंकंसप्रति ॥ ॥ तुमछत्रीयजदुकुलमहिजाए ॥ अरुनृपनीतिचलावनआए ॥ अबलाबहिनव्याह कौअवसर ॥ घनआसाजुतचलीआपधर ॥ बालाविप्रगऊअरुबालक ॥ इनकौवधअप नौघरघालक ॥ इतेअवध्यनृपतिउरआनौ ॥ निजअपराधकवेदनिदानौ ॥ निंदितकर्म सुधर्मविनासी ॥ सोनकरहुजातेजगहासी ॥ जौतुममहामीचभयजानौ ॥ पापबडोयह चित्तपिछानौ ॥ करहुजतनबहुजीवेकारन ॥ दिनवहतदपिनटरिहैदारुन ॥ आयुर्बलय हदैवअधीनो ॥ कलिजुगवर्षसवासतकीनौ ॥ परमावधिजोनृपतिपिछानैं ॥ जगमहँध र्मधिर्मसुजानै ॥ जतनकरोजिहिंजिहिंनृपजोई ॥ कालबलिष्टनछांड्योकोई ॥ पापाचरन करैनहिभुवपति ॥ सुपहैअल्पादिग्धदुषदुर्मति ॥ ॥ कंसोवाच ॥ ॥ याकोबधमेरौहित तामै ॥ जीयतरहैततौसुतजामै ॥ करौयेवधइहिंविलंवनकीजे ॥ जोनहीआपहिजमहिस दीजे ॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ जोतुमदुसहमीचतेडरहू ॥ कंसकहूंइकजतनसुकरहु ॥ याकैंजोकोउबालकहोई ॥ आनितुमहिदेहूंहूंसोई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निसचययह वसुदेवजुकीनौ ॥ दुष्टदेवकिहिंअभयसुदीनौ ॥ ग्रहवसुदेवदेवकीगए ॥ भयजुततहांवस तसोभए ॥ जोसुतप्रथमदेवकीजायौ ॥ कीरतिमंतसुनामकहायौ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ इहाँप्रथमपुत्रवसुदेवआनि ॥ पनजुक्तदयौसोकंसपानि ॥ बहुशोभारूपविलोकिबाल ॥ इहांदुष्टकंसकछुभौदयाल ॥ जबवचनसाचवसुदेवजानि ॥ पुनिदयौफेरिबालकप्रमानि ॥ तातेंअबसौंपतबालतोहि ॥ माँगौंतबदीजहुआनिमोहि ॥ वसुदेवचलेलेग्रेहबाल ॥ कंसपहैंआइदरसीत्रिकाल ॥ ॥ अथनारदमनचिंतवन ॥ ॥ कंसजोहतैनहिंबालको इ ॥ सुरकारिजहेतविनासहोइ ॥ चितमांझयहैनारदविचारि ॥ सुरकाजआजजैहूंसवारि ॥ कंससौंमंत्रनारदजुकीन ॥ दारुनविसेसउपदेसदीन ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥

करिगनतीअष्टमगर्भकोइ ॥ आठवैंगर्भजौंयहैहोइ ॥ निहचैनबालछांडहुनरेस ॥ सब हतहुजितेदेषहुअसेष ॥ नंदादिगोपजादवनिजानि ॥ एअमरअंसअवतरेआनि ॥ इ नकोविसासकरियेनआज ॥ कछुकहतकरतकछुओरकाज ॥ उपजौतूंषेत्रजपुत्रआनि ॥ मतउग्रसेनकहँपितामानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बातनिअनर्थनारदवढाइ ॥ पर घरहिघालिपुनिगौपलाइ ॥ जोलौंनाहिपहुंच्यौग्रेहजाइ ॥ वसुदेवफेरिलीनौवुलाइ ॥ वसुदेवलियैआयोसुबाल ॥ कृतजोगसीसतिहिंभ्रम्यौकाल ॥ पुनिलयौवालवसुदेव पास ॥ वसुदेवदेवकीपकरिबाँह ॥ मेलेलैकाराग्रेहमाँह ॥ पुनिजरेलोहवसुदेवपाइ ॥ जिहिंठौरओरकोऊनजाइ ॥ पहरादुतराषेचहुंपास ॥ विष्यातवीरजेमनविसास ॥ सुत जन्मभयौदूजौसुषेन ॥ सुततीजोउपज्यौभद्रसेन ॥ सुतचोथोमृदुनामासुरूप ॥ अरु पंचमसमदनभौअनूप ॥ पुनिछठोनामतिहिंभद्रपाइ ॥ इहिंक्रमसौंउपजेपुत्रआइ ॥ कंसाहितेदीनेसबकुमार ॥ पापीसोमारेसिलपछार ॥ जादवसुधजुतजितेजानि ॥ अ वरोधकरेतेसबैआनि ॥ ॥ अथउग्रसेनअवरोधकंसतिलक ॥ ॥ जरिसुदृढलोह पाइनजँजीर ॥ पापिष्टपिताकहदईपीर ॥ संकटमहँदीनौउग्रसेन ॥ षलकंसपाटबैठ्यौ सुषेन ॥ कंसासुरजबहीराजकीन ॥ निस्सेषपापवर्तेनवीन ॥ ॥ अथसंकर्षनप्रसं ग ॥ ॥ देवकीगर्भसप्तमसुभाइ ॥ ॥ अंसावतारबलभद्रआइ ॥ प्रभुजानिगर्भय हसप्रतीत ॥ पठईसुमहामायापुनीत ॥ वसुदेवरोहणीनंदवास ॥ पहिलैंहीराषीअप्र कास ॥ देवकीगर्भमायादुरंत ॥ आकर्षिगूढलाईअनंत ॥ यहमेल्यौरोहनिगर्भआनि ॥ जगमर्मसुपैकाहूनजानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अतिसुरूपबलभद्रइह । पायौजन्मप्रका स ॥ जातकर्मकीनैजतन । आपुननंदअवासे ॥ १६ ॥ नंदमहरकेग्रेहनव । हेतसमंग लहोइ ॥ दुतियनामबलदेवकौ । संकर्षनभयौसाइ ॥ १७ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्री कृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिंसमयामिलसबदुष्टआनि ॥ पापीनजिनहिंधर्महिपिछानि ॥ सठससुरकंसकोजरासंध ॥ अबआनिमिल्यौसोउमदाअंध ॥ अघबकीबकासुरप्रलंब आइ ॥ त्रिनचक्रषरासुरकेसिताइ ॥ इत्यादिपापसबजुरेऔर ॥ ठाएअरिष्टजेठौरठौर ॥ जबलग्यौजादवनिदुषदैन ॥ कोउगएदेसतजिचितअचैन ॥ अक्रूरआदिकोउमतउदा स ॥ देष्यौजुसमयव्हैरहेदास ॥ मानेनअहितहितमिलिसमाज ॥ जोकहैकंससोइकरहिं काज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रसूतिका ॥ ॥ भयौजुसप्तमगर्भगत । प्रभुकछुकारनपाइ ॥ कंसाहिकह्यौप्रसूतिका । सोएकांतसुनाइ ॥ १८ ॥ गर्भदेवकीकोगयौ । पाइकछूउतपात ॥ मथुराघरघरनगरमहँ । बातभईविष्यात ॥ १९ ॥ ॥ अथमहामायाजशोदागर्भो त्पत्ति ॥ ॥ इहांमायाजसुमतिउदर । आनिवसीअज्ञात ॥ पलपलबाढतिसोप्रबल । व्रजमहँभईसुबात ॥ २० ॥ ॥ अथश्रीकृष्णदेवकीगर्भोत्पत्ति ॥ ॥ तबईश्वरअंसनि सहित । कृतकारनकरतार ॥ कृपासिंधुवसुदेवकै । चित्तकर्योसंचार ॥ २१ ॥ कीनौप्रभु वसुदेवकै । मनहिप्रवेसप्रमान ॥ ताछनतनमानहुउदित । भएकिद्वादशभान ॥ २२ ॥

॥ छंदपधरी ॥ ॥ मनभावधरेदेवकीमांहि ॥ निजघातहेतसंबंधनांहि ॥ भगवंतजोति देवकीभासि ॥ शुभमनिमहज्यौंदिनकरप्रकासि ॥ आभासोमंदिरमांहिआइ ॥ भोडर महँदीपकजोतिभाइ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ देवकिउदरदयालअषिलभवभारतउतारन ॥ अष्टमगर्भअनूपकृष्णप्रभुआइतकारन ॥ इहांब्रह्मादिकआनिगर्भअस्तुतिगुनगाए ॥ जयतिजयतिजदुनाथअमरगनरक्षकआए ॥ व्रजकेअनेकहरिहैंविघन, हरिवनवनहिविहारिहौ ॥ करिपावननरहरपतितकहँ, हतिकंसासुरमारिहो ॥ ११ ॥ अवधिपाइकलिजुगहिआदिपूरनऋतुपावस ॥ नभजुमासरोहनिनक्षत्रवसिसिघविभावस ॥ असितपाषअष्टमीहितमिलिसिद्धिजोगइहां ॥ अर्द्धनिसावनिबुद्धवारश्रीकृष्णाजन्मतहां ॥ कृतउग्रफले वसुदेवके, भाग्यउदयसनमुषभए ॥ त्रैलोकनाथसुतअवतर्‍यौ, ग्रहअनिष्टिसिगरेगए ॥ १२ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गर्भस्तुतिब्रह्मादिकनि । जोकीनीकरजोरि ॥ गावैसुनैसुगर्भके । वसनहिंपरैबहोरि ॥ २३ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासवि०द्विती० ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जबभयोजन्मश्रीकृष्णजानि ॥ पयवहीकोउकसरिताप्रमानि ॥ महिमंगलघरघरअकस्मात ॥ सुरसिद्धहर्षमननहिंसमात ॥ सरसरसरोजफुल्लीयससोह ॥ मिलिकुसुमलतातरचित्तमोह ॥ चलिपवनत्रिविधिदिसदिसनिचाइ ॥ अतिसुषदमनहुंऋतुवसंतआइ ॥ इहांबुझीअगनिउठिजरतआप ॥ प्रगटीसुजोतिजनुप्रभुप्रताप ॥ आनंद भएअमरनिअशेष ॥ वाजेअकाशदुंदुभिविशेष ॥ लहिसमयहरषबढिवरषिफूल ॥ सुरलोकलोकमंगलसमूल ॥ किन्नरसुरगंधर्वगानकीन ॥ नाटकसुरकन्यारचिनवीन ॥ देवकीदिसाप्राचीअनंद ॥ दीपितभएपूरनकृष्णचंद ॥ सिरमुकटकनकमनिमयसुदेस ॥ कुंचितअतिसुंदरसघनकेस ॥ रतनमयश्रवनकुंडलसुरंग ॥ अरुमंदहासआकृतिअनंग ॥ मनिशोभउरसिमुक्तानिमाल ॥ बनिअंगअंगभूषनविशाल ॥ तनस्यामसघनबनिवरनतास ॥ करिपीतवसनतडिताप्रकाश ॥ चक्रादिकआयुधभुजाचारि ॥ निस्सेषितशुभलछ्छननिहारि ॥ देवकीतबैसुतओरदेषि ॥ विश्वेसपुरुषलच्छनविशेषि ॥ वहवारवारलैलैबलाइ ॥ सुतजन्महर्षउरनहिंसमाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दुष्टकंसकोदुसहडर । हितछबिपुत्रनिहार ॥ भरिभरिलोचनप्रेमभर । धरनिअषंडितधार ॥ २४ ॥ दुसहदसासौदेवकी । देषीदीनदयाल ॥ कृष्णतबैहसियोंकह्यौ । करौनभयइहिकाल ॥ २५ ॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वसुदेवदेषिअद्भूतबाल ॥ करिवारवारवंदनकृपाल ॥ प्रभुपरमपुरुषपूरनप्रमान ॥ पायौनभेदवेदहुपुरान ॥ अनखंडजोतितवअनाधार ॥ पैलहिनसुरासुरवारपार ॥ ध्यावतजिहिंमुनिवरध्यानधारी ॥ चितचावअगोचररहिविचारी ॥ निगमागमषोजतजोनजानि ॥ अवतरेजोतिममग्रेहआनि ॥ कहुंभाग्यवानमोसोनकोइ ॥ हितकृपाअतप्परकहाहोइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हैजाकेकचकूपमहँ । मिलिब्रह्मंडसमात ॥ तेप्रभुमेरेअवतरे । व्रजन्हैहैयहबात ॥ २६ ॥ रूपअलौकिकरावरो । वेदविदितव्रजराज ॥ समयनिहारिविचारिसो । यहउपशमियैआज ॥ २७ ॥ अवतौअद्भुतरूपयह । नहिदुरिहैजदुदेव ॥ वह

हत्यारौंआइहै। भवकहुंलहिहैभेव॥ २८॥ आगैमारेबालइन । निर्दयनिठुरअनीति ॥ सु
धिआएआवतसहम। पापीकहाप्रतीति ॥ २९ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ आगैका
लंतरकिहूं । भौऋषिसुतपानाम ॥ ताकैभईपतिव्रता । पृश्निसुनामावाम ॥ ३० ॥ तप
साध्यौअतिउग्रतिन । मिलिरिषित्रियासमेत ॥ देवनिजोदुर्लभदरस। हरिदीनोंकरिहेत
॥ ३१ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांकह्यौबचनभगवंतएह ॥ जिहिंहेतकर्‍यौवनदमनदेह
याकोअमोघफललेहुआज ॥ कृतकरहुजुपूरनचित्तकाज ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ कर
जोरिकह्यौदंपतिसकाम ॥ वरदेहुहमहियहधर्मधाम ॥ अवतरहुनाथममउदरआइ ॥
तुमसदादेवदीननिसहाइ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ मैंदीनौवरतुमकोमहंत ॥
यहयौंहीव्हैहैकहिअनंत ॥ वरदयोजयावंछितविशेष ॥ स्वस्थानपधारेसयनशेष ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ पृष्णिमातसुतपापिता । विहितधर्मविश्राम ॥ प्रगटभएपूरनपुरुष। पृ
ष्णिगर्भयहनाम ॥ ३२ ॥ कालंतरवीतेकछुक । जनमसुदूजैजानि ॥ कस्यपभयोप्रजे
सपति। पतनीअदितिप्रमानि ॥ ३३ ॥ अदितिगर्भकूंअवतर्‍यो । वामनविप्रविनीत ॥
कीयसहायतवइंद्रको । पुनिबलिछल्यौपुनीत ॥ ३४ ॥ तेइकस्यपवसुदेवतुम । अदिति
देवकीमाइ ॥ तीजैजन्मसुअवतरे। इहिव्रजमंडलआइ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मैलयो
जन्मतवउदरमात ॥ वरदयौहुतौपहिलैंविष्यात ॥ कहिबचनजथामैंसत्यकीन ॥ इहिं
दिव्यरूपप्रत्ययजुदीन ॥ अबकृष्णनाममूरतिउदार ॥ व्रजमांझविविधकरिहूंविहार ॥
॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करतमहाभयकंसको । जोतुममोकहँजानि ॥ करहु
जतनजोहूंकहत । पैयहसमयपिछानि ॥ ३६ ॥ महरनंदकेग्रेहमुहि । अबैदेहुपहुंचाइ ॥
हितजसुमतितहांपोषिहै। कुचपयपानकराइ ॥ ३७ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपध
री ॥ ॥ यौंकहिरुकृष्णतननतनककीन ॥ पुनिबालभाववर्तेप्रवीन ॥ इहांलएमातदेवकिउ
ठाइ ॥ लैलैबलाइअरुकंठलाइ ॥ तहांदेषेअद्भुतचरिततास ॥ वसुदेवभयोअंतरविसास
आनंदसलिलबढिउरअमान ॥ समतासकर्‍योसूतकसनान ॥ इकअयुतधेनुविधिजुतन
वीन ॥ करिमनहुगूढसंकल्पकीन ॥ दीनेलपेटिपटजनतिदाइ ॥ लीयपिताकृष्णतबउर
लगाइ ॥ जंजीरचरनछुटिपरीजानि ॥ वसुदेवपुत्रदैवतप्रमानि ॥ ॥ अथगोकुलगमन
॥ ॥ वसुदेवचलेलैजिहींवार ॥ दुर्गमकपाटखुलिगएद्वार ॥ इहांपरेपहरुवांनाहिनज्ञान॥
निद्राजुकालझांपेनिदान ॥ नभनिसाअर्धघनगगनघोर ॥ अंधारदिसामिलिचहूंओर ॥
छायोनभद्रादसघनदुरंत ॥ पसर्‍योतमदुर्गमदिगंत ॥ मघवामिलिवरषतमंदमंद ॥ कृ
तजोतिवदनआनंदकंद ॥ इहांसेषनागफनसहसआइ ॥ छतनाकरिलीनैचलेछाइ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ मायाजसुदाउदरमहँ । आपुनवसीजुआइ ॥ भयौजन्मताकौअभय। पैयह
अवसरपाइ ॥ ३८ ॥ ताकहँलैसोईतबै । माताअतिहितमानि ॥ देष्योसंततिमुषदुलभ
। जनमसफलकरिजानि ॥ ३९ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तबतरनिसुताकेआइतीर ॥ बसुदेव
जुठाढेभएवीर ॥ जलचढ्यौतटिनिमिलिलहरिजोर ॥ आवर्तविषमपरिओरओर ॥ पा
वैनघाटकहुंथाहपाइ ॥ इहिंठोरफुरतनाहिनउपाइ ॥ वसुदेवकृष्णचिंतवनकीन ॥ नदजमु

नातवहींथाहदीन ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ उतरनदीजवगोकुलआए ॥ पुरवासीनि द्रावसिपाए ॥ दुर्गमकपाटछुटेग्रहद्वारा ॥ समयकह्योवसुदेवसंचारा ॥ पलिकापरसोव ततिहिंपाई ॥ जसुमतिलियेसुताजोजाई ॥ इहांजसुदाढिगकृष्णसुवाए ॥ आपुनसोक न्यालैआए ॥ पुनिवसुदेवबंदिग्रहपैसे ॥ जुरिगएविकटकपाटजुजैसे ॥ पहरिजंजीरआप नैपाइनि ॥ सोइरहेवसुदेवसुभाइनि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णजन्मवसुदेवके । देवकिग भेंदयाल ॥ कीयनिवासतहनंदके । प्रभुव्रजकेरषपाल ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्री कृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचिते श्रीकृष्णगोकुलगमनोनामतृ तीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इहांमायाअंसावतारकीयरुदनजुकन्या ॥ दयाजुक्तदेवकीधरीलैगोदसुधन्या ॥ बालरुदन सुनिशब्दजगेजामिकसोजान्यो ॥ आतुरकंसहिआनिविवरियहमर्मवषान्यो ॥ आठवोंग र्भभयौमोषअव, सुन्योबालरोवतसही ॥ करजोरिकंससौंसेवकनि, हितवढायसगरीकही॥ ॥ १३ ॥ अतिजंभातअरसातउठ्योसज्याइतिआतुर ॥ सुरापानवसविकलगनतनाहिंवृद्ध मंत्रिगुर ॥ भयजिहिअष्टमगर्भसुयेभयौमोषसुनायो ॥ राषनयनपरजरतधरेकरषग्गसु धायो ॥ आयोअसाधअवचिंतइहां ॥ जनकाहूनहीजानयौ ॥ प्रतिमाविलोकिउरत्रास परि, प्रानबिनासप्रमानयौ ॥ १४ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांकंसजुमंदिरमांझआइ ॥ पु निबहिनगोदपुत्रिकापाइ ॥ उचकाइलईकन्याअभीत ॥ कछुनाहिदयालज्जाकुचीत ॥ क न्यासुपछारीसिलप्रकास ॥ उडिगईकरानितैंछुटिअकास ॥ सोभईदिव्यअपनैसुरूप ॥ अतिप्रभामहामायाअनूप ॥ ॥ ॥ महामायावाक्यं ॥ ॥ बोलीसुगगनमहँविमलवा नि ॥ पापिष्टनतैंहंतापिछानि ॥ सोप्रगट्योंहैपृथ्वीप्रमान ॥ मारिहैतोहिमसकासमान ॥ अनकाजबालमारेअनाथ ॥ हत्यारेआयौकहाहाथ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इतनोकहि महामायाअभीत ॥ पुनिअपनेथानकगइपुनीत ॥ विलपातकंसकहंभोविहान ॥ निसि भईदंडद्वैवर्षमान ॥ करिसभाकंसबैठोकुचीत ॥ भृतदुष्टमंत्रआएअभीत ॥ सुधिकरिक रिकन्यावचनसाल ॥ करिक्रोधकंसमनमहँकराल ॥ तहांमिलेआनिभवतव्यतंत्र ॥ मंत्रि नसौंपूछ्योमूलमंत्र ॥ कन्यकावचनसबप्रगटकीन ॥ पुनिमित्रमंत्रिबोलेप्रवीन ॥ ॥ मं त्रिरुवाच ॥ ॥ करियैनसोचइहिंठोरकंस ॥ अवतारजयेजदुअमरअंस ॥ अमरनिके देषेबलविथान ॥ निर्भयथलअतिपौरुषनिदान ॥ मिलित्रासकंपउठिचित्तमांहि ॥ जबप रैंकठिनतबभागजांहि ॥ ब्रह्मासोतपसीअबलवृद्ध ॥ पूजेनताहिकोउयहप्रसिद्ध ॥ हैरुद्र भिषारीरहितराग ॥ वनवसतइलाव्रतजुतविराग ॥ हरिदुख्योरहतएकांतहोइ ॥ कहूताहि दृष्टिदेषैनकोइ ॥ मुनिश्रापदग्धलज्जाइमान ॥ सुरराजरहैकहुंभयसमान ॥ हैसत्रवजद्दपिम हादीन ॥ पैसंकनियततदपिप्रवीन ॥ प्रभुदेषहुकंतटकनप्रमान ॥ पदगडतकरतहैविकलप्रा न ॥ अग्निकनअलपआमयअसाधि ॥ एहोइवृद्धिउपजैउपाधि ॥ वढिपरैतवैकछुनहीवसा इ ॥ प्रभुकरहुसमझिपहिलैंउपाइ ॥ निहचैसुरपोषकमषनिदान ॥ सोकरहुबाधविप्रनिसमा न ॥ अमरनिकोसाधकयहउपाइ ॥ रावरेश्रेयलगिकहतराइ ॥ इकमंत्रसुनहुपृथ्वीसआज॥

॥ कीजैनविलंबयाजतनकाज ॥ व्रजमंडलमहँबालकविशेषि ॥ दसद्यौसउरैजनमेजुदेषि ॥ पुनिहतहुतितेजिहिंतिहिंप्रकार॥बलछलकरिअबतौयहविचार॥हैनिपुनप्रानहिंसाविदान प्रभुतिनहिदेहुआज्ञाप्रमान ॥ कृतदुष्टतितेसबविदाकीन ॥ परप्रानघाइविद्याप्रवीन ॥ पूत नाआदिदैचलेपाप॥ छलकारकबांधैसीसछाप ॥ पापिष्टचलेआदेसपाइ ॥ अजजूथजथा वृकषुधितआइ॥ गतिभईअगमयहचरितगूढ ॥ मायाप्रपंचजान्यौनमूढ॥ मषबाधकरेअ सुरनिसमूल॥ सुरराजसुनतउरउठतसूल॥ ॥ कंसउवाच ॥ दोहा ॥ ॥ इहांविचाखौकं सयह। जोवनधनमदराज॥बालहतेमैंदोषविनु। कछूसखोनहिंकाज॥ ४१ ॥ वचनअमर विश्वासतैं। मैंजुबहिनकेबाल॥सूनकज्यौंमारेसबै। कखौअनर्थअकाल॥ ४२॥ कहिडरअ ष्टमगर्भकौ। अमरवानिआकास॥ भटठोहरकन्याभई। सुरनिकवनविश्वास॥ ४३॥ कारा ग्रहतैंदेवकी। दएकाढिवसुदेव॥कंसजुसामउपाइकरि। भाषतवचनसभेव॥ ४४॥ भलीवुरी भवतव्यता। होनीहोइसहोइ॥अमरहुबोलतझूठअब॥ कहाकरैतिहिंकोइ ॥ ४५ ॥ भवन टरैभावीअभय। सुरासुरनिहूसाध॥ करियैषम्याकारिकृपा। यहमेरौअपराध॥४६॥॥ वसु देवउवाच॥ ॥ कह्यौजोरिवसुदेवकर। चितमहँसमयविचारि। भावीवसजोकछुभयौ॥ ता हिनकछुउपचार ॥ ४७ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गएतबैवसुदेग्रह। मानिकुसलग्रहमोष ॥ कहाभरोंसोकंसकौ । देतअदोषनिदोष ॥ ४८ ॥ लेकंसहीकरभरनकहँ । आएनंदअ हीर ॥ समझायौवसुदेवसौं। वेगिजाहुग्रहवीर ॥ ४९ ॥ करियोरष्याबालकनि। अहो मित्रइहिंकाल॥ अबव्रजमहँउतपातअति। सुनिहोअंतरसाल॥ ५० ॥ ॥ इतिश्रीअवता रचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेचतुर्थोऽध्यायः॥४॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अबनंदमहरकेनरअनूप ॥ सुतभयोस्यामसुंद रसुरूप ॥ बत्तीसपुरुषलछनविशेष ॥ अंगअंगविराजितहैअशेष ॥ अर्धायुवितीतेजुत अनंद ॥ निरष्योमुषसुतकौमहरनंद ॥ प्राचीनकर्मफलअषिलपाइ ॥ उद्धारउभयकु लपुत्रआइ ॥ दावानलपसखौज्यौंदुरंत ॥ अरुधरनिधानसूकतअनंत॥ चहुंओरवर षिघनचित्तचाह ॥ योंभयौमहरघरघरउछाह ॥ मुषदेषिउतारैलौंनमात ॥ सुषवढ्यो सुपैनहिंउरसमात ॥ गोकुलहोइमंगलग्रेहग्रेह ॥ हितदूधनिवरषेमनहुमेह ॥ बनिबनिहें आवतजुवतिवृंद ॥ मिलिचलतिदुरदगतिमंदमंद ॥ गहगहेकंठमंगलसुगान ॥ वासन बनिभूषनविविधवान ॥ आरतीकलसमंगलबनाइ ॥ व्रजवधूनिनंदरानीबधाइ ॥ न्हैनि कटवदनबालकनिहारि ॥ आनंदपिवहिजलवारिवारि ॥ दैदैअसीसजाचहिंदईव ॥ जसु दाकोबालकचिरंजीव ॥ ग्रहग्रहतैंआएगोपग्वाल ॥ सोलीनैदधिभाजनविशाल ॥ आनं दमगनसुधिनहिनआन ॥ सबकरतपरसपरदधिसनान ॥ बनिदहीहरदमिलिपीतवान ॥ मनुअजिरकाचढारेअमान ॥ इहांवहीदहीसरिताअपार ॥ दधिकादममाच्यौनंदद्वार ॥ आनंदकेलिकरिकरिअन्हाइ ॥ पटवसननंदपैंसबनिपाइ ॥ अरुग्रामग्रामतेआइगोप ॥ आनंदितभूषनवसनओप ॥ इहांआपनंदसुरगुरअराध ॥ शुभकीनोनांदीमुषसराध ॥ व्रजपंडितद्विजबोलेप्रष्यात ॥ पगधोइकरीपूजाविष्यात ॥ सुचिनीरनंदकीनोसनान ॥

नातवहींथाहदीन ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ उतरनदीजवगोकुलआए ॥ पुरवासीनि
द्रावसिपाए ॥ दुर्गमकपाटछुटेग्रहद्वारा ॥ समयकस्योवसुदेवसंचारा ॥ पलिकापरसोव
ततिहिंपाई ॥ जसुमतिलियेसुताजोजाई ॥ इहांजसुदाढिगकृष्णसुवाए ॥ आपुनसोक
न्यालैआए ॥ पुनिवसुदेवबंदिग्रहपैसे ॥ जुरिगएविकटकपाटजुजैसे ॥ पहरिजंजीरआप
नैपाइनि ॥ सोइरहेवसुदेवसुभाइनि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णजन्मवसुदेवके । देवकिग
भैदयाल ॥ कीयनिवासतहनंदके । प्रभुव्रजकेरषपाल ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्री
कृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचिते श्रीकृष्णगोकुलगमनोनामतृ
तीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥
इहांमायाअंसावतारकीयरुदनजुकन्या ॥ दयाजुक्तदेवकीधरीलैगोदसुधन्या ॥ बालरुदन
सुनिशब्दजगेजामिकसोजान्यो ॥ आतुरकंसहिआनिविवरियहसमैवपान्यो ॥ आठवौग
र्भभयौमोषअब, सुन्योबालरोवतसही ॥ करजोरिकंससौंसेवकानि, हितवढायसगरीकही॥
॥ १३ ॥ अतिजंभातअरसातउठ्योसज्याइतिआतुर ॥ सुरापानवसविकलगनतनहिंवृद्ध
मंत्रिगुर ॥ भयजिहिअष्टमगर्भसुयेभयौमोपसुनायौ ॥ रापनयनपरजरतधरेकरषग्गसु
धायौ ॥ आयौअसाधअवचिंतइहां ॥ जनकाहूनहीजानयौ ॥ प्रतिमाविलोकिउरत्रास
परि, प्रानविनासप्रमानयौ ॥ १४ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांकंसजुमंदिरमांझआइ ॥ पु
निबहिनगोदपुत्रिकापाइ ॥ उचकाइलईकन्याअभीत ॥ कछुनाहिदयालज्जाकुचीत ॥ क
न्यासुपछारीसिलप्रकास ॥ उडिगईकरनितैंछुटिअकास ॥ सोभईदिव्यअपनेसुरूप ॥
अतिप्रभामहामायाअनूप ॥ ॥ ॥ महामायावाक्यं ॥ ॥ बोलीसुगगनमहँविमलवा
नि ॥ पापिष्टनतैंहंतापिछानि ॥ सोप्रगट्योहैपृथ्वीप्रमान ॥ मारिहैतोहिमसकासमान ॥
अनकाजबालमारेअनाथ ॥ हत्यारेआयोकहाहाथ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इतनोकहि
महामायाअभीत ॥ पुनिअपनेथानकगइपुनीत ॥ विलपातकंसकहंभोविहान ॥ निसि
भईदंडद्वैवर्षमान ॥ करिसभाकंसबैठोकुचीत ॥ भृतदुष्टमंत्रआएअभीत ॥ सुधिकरिक
रिकन्यावचनसाल ॥ करिक्रोधकंसमनमहँकराल ॥ तहांमिलेआनिभवतव्यतंत्र ॥ मंत्रि
नसौंपूछ्यौमूलमंत्र ॥ कन्यकावचनसवप्रगटकीन ॥ पुनिमित्रमंत्रिबोलेप्रवीन ॥ ॥ मं
त्रिरुवाच ॥ ॥ करियैनसोचइहिंठोरकंस ॥ अवतारजयेजदुअमरअंस ॥ अमरनिके
देषेबलविथान ॥ निर्भयथलअतिपौरुषनिदान ॥ मिलित्रासकंपउठिचित्तमांहि ॥ जबप
रैकठिनतबभागजांहि ॥ ब्रह्मासोतपसीअबलवृद्ध ॥ पूजेनताहिकोउयहप्रसिद्ध ॥ हैरुद्र
भिषारीरहितराग ॥ वनवसतइलाव्रतजुतविराग ॥ हरिदुरयौरहतएकांतहोइ ॥ कहूताहि
दृष्टिदेषैनकोइ ॥ मुनिश्रापदग्धलज्जाइमान ॥ सुरराजरहैकहुंभयसमान ॥ हैसत्रवजदपिम
हादीन ॥ पैसंकनियततदपिप्रवीन ॥ प्रभुदेषहुकंतटकनप्रमान ॥ पदगडतकरतहैविकलप्रा
न ॥ अग्निकनअलपआमयअसाधि ॥ एहोइवृद्धिउपजैउपाधि ॥ बढिपरैतबैकछुनहींवसा
इ ॥ प्रभुकरहुसमझिपहिलैंउपाइ ॥ निहचैसुरपोषकमषनिदान ॥ सोकरहुबाधविप्रनिसमा
न ॥ अमरनिकोसाधकयहउपाइ ॥ रावरेश्रेयलगिकहतराइ ॥ इकमंत्रसुनहुपृथ्वीसआज॥

॥ कीजैनविलंबयाजतनकाज ॥ व्रजमंडलमहँबालकविशेषि ॥ दसद्यौसउरैजनमेजुदेषि ॥
पुनिहतहुतितेजिहिंतिहिंप्रकार॥बलछलकरिअबतौयहविचार॥हैनिपुनप्रानहिंसाविदान
प्रभुतिनहिदेहुआज्ञाप्रमान ॥ कृतदुष्टतितेसबविदाकीन ॥ परप्रानघाइविद्याप्रवीन ॥ पूत
नाआदिदैचलेपाप ॥ छलकारकबांधेसीसछाप ॥ पापिष्टचलेआदेसपाइ ॥ अजजूथजथा
वृकषुधितआइ ॥ गतिभईअगमयहचरितगूढ ॥ मायाप्रपंचजान्यौनमूढ॥ मषबाधकरेअ
सुरनिसमूल ॥ सुरराजसुनतउरउठतसूल ॥ ॥ कंसउवाच ॥ दोहा ॥ ॥ इहांविचाखौकं
सयह । जोवनधनमदराज ॥ बालहतेमैंदोषविनु । कछूसख्योनहिंकाज ॥ ४१ ॥ वचनअमर
विश्वासतैं । मैंजुबहिनकेबाल ॥ सूनकज्यौंमारेसबै । कस्योअनर्थअकाल ॥ ४२॥ कहिडरअ
ष्टमगर्भकों । अमरवानिआकास ॥ भटठोहरकन्याभई । सुरनिकवनविश्वास ॥ ४३ ॥ कारा
ग्रहतैंदेवकी । दएकाढिवसुदेव ॥कंसजुसामउपाइकरि । भाषतवचनसभेव ॥ ४४ ॥ भलीबुरी
भवतव्यता । होनीहोइसहोइ ॥ अमरहुबोलतझूठअब ॥ कहाकरैंतिहिंकोइ ॥ ४५ ॥ भवन
टरैभावीअभय । सुरासुरनिहूसाध ॥ करियैषम्याकारिकृपा । यहमेरौअपराध ॥ ४६ ॥ ॥ वसु
देवउवाच ॥ ॥ कह्योजोरिवसुदेवकर । चितमहँसमयविचारि । भावीवसजोकछुभयौ ॥ ता
हिनकछुउपचार ॥ ४७ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गएतबैवसुदेग्रह । मानिकुसलग्रहमोष ॥
कहाभरोसोकंसकौ । देतअदोषनिदोष ॥ ४८ ॥ लेकंसहीकरभरनकहँ । आएनंदअ
हीर ॥ समझायौवसुदेवसौ । वेगिजाहुग्रहवीर ॥ ४९ ॥ करियोरष्याबालकनि । अहो
मित्रइहिकाल ॥ अबव्रजमहँउतपातअति । सुनिहोअंतरसाल ॥ ५० ॥ ॥ इतिश्रीअवता
रचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेचतुर्थोऽध्यायः॥४॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अबनंदमहरकेनरअनूप ॥ सुतभयोस्यामसुंद
रसुरूप ॥ बत्तीसपुरुषलछनविशेष ॥ अंगअंगविराजितहैअशेष ॥ अर्धायुवितीतेजुत
अनंद ॥ निरष्योमुषसुतकौमहरनंद ॥ प्राचीनकर्मफलअषिलपाइ ॥ उद्धारउभयकु
लपुत्रआइ ॥ दावानलपसख्योज्यौंदुरंत ॥ अरुधरनिधानसूकतअनंत ॥ चहुंओरवर
षिघनाचित्तचाह ॥ योंभयौमहरघरघरउछाह ॥ मुषदेषिउतारैलोंनमात ॥ सुषबढ्यो
सुपैनहिंउरसमात ॥ गोकुलहोइमंगलग्रेहग्रेह ॥ हितदूधनिवरषेमनहुमेह ॥ बनिबनिहैं
आवतजुवतिछंद ॥ मिलिचलतिदुरदगतिमंदमंद ॥ गहगहेकंठमंगलसुगान ॥ वासन
बनिभूषनविविधवान ॥ आरतीकलसमंगलबनाइ ॥ व्रजवधूनिनंदरानीबधाइ ॥ व्हैनि
कटवदनबालकनिहारि ॥ आनंदपिवहिजलवारिवारि ॥ दैदैअसीसजाचहिंदईव ॥ जसु
दाकोबालकचिरंजीव ॥ ग्रहग्रहतैंआएगोपग्वाल ॥ सोलीनैंदधिभाजनविशाल ॥ आनं
दमगनसुधिनहिनआन ॥ सबकरतपरसपरदधिसनान ॥ बनिदहीहरदमिलिपीतवान ॥
मनुअजिरकाचढारेअमान ॥ इहांवहीदहीसरिताअपार ॥ दधिकादममाच्यौनंदद्वार ॥
आनंदकेलिकारिकरिअन्हाइ ॥ पटवसननंदपैंसबनिपाइ ॥ अरुग्रामग्रामतेआइगोप ॥
आनंदितभूषनवसनओप ॥ इहांआपनंदसुरगुरअराध ॥ शुभकीनौनांदीमुषसराध ॥
व्रजपंडितद्विजबोलेप्रष्यात ॥ पगधोइकरीपूजाविष्यात ॥ सुचिनीरनंदकीनोसनान ॥

आवरितवसनपटविहितवान ॥ कृतजातकर्मविधिविहितवेद ॥ अरुदानपुन्यकीनैअभेद ॥ जेप्रथमप्रसूतासुरभिजानि ॥ आकृतिउतंगवहुरंगआनि ॥ कंचनमयभूषनउचितकीन ॥ वनिविमलपाटनाईनवीन ॥ सुभघाटदोहनीकनकशृंग ॥ आछादितपाटंबरउतंग ॥ इत्यादिकपरिकरउचितआन ॥ द्वैलक्षधेनुदैद्विजनिदान ॥ अरुभूरिदक्षनादियअशेष ॥ विधिवतविधानकीनैविशेष ॥ जाचकजनमागधसूतजानि ॥ वहुपाइबोलिजयजयतिवानि ॥ ध्वजकलसबनेप्रतिधामधाम ॥ वँधिवंदनमालाद्वारठाम ॥ शुभथंभथपेअंगनउतंग ॥ नीसाननादपूरितनहंग ॥ संगमिलिजूथजूथनिसनेह ॥ गावतफिरिगोपीचलीग्रेह ॥ कीयअवाधिपाइपूरनसकाम ॥ नक्षत्रजोगभयोकृष्णनाम ॥ ॥इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणवारहटनरहरदासविरचितेपंचमोऽध्यायः॥५॥ श्रीकृष्णा०

कविरुवाच ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकहुतीपूतनात्रियअसाधि ॥ पुनिकंसकरनपठईउपाधि ॥ विधिजुक्तवसनभूषनबनाव ॥ भामिनीकरतअतिहावभाव ॥ लटछुटीविमोहतिसवैन ॥ निस्संकभ्रमावतदिग्घनैन ॥ उचकतकुचशोभाअंगअंग ॥ मुरिमुरिहैचितपतिगतिमतंग ॥ पापिनीषातिमुसकातिपान ॥ उफनातरूपशोभाअमान ॥ सवगोपठगेसेरहेठाम ॥ वसमोहपरेसोदेषिवाम ॥ तनरूपअनूपमवसनताहि ॥ चकिरहीगोपिकावदनचाहि ॥ वसभावीकाहुनपूछिवात ॥ तूंकौनआहिअरुकहांजात ॥ इहिंसमयनंदकैग्रेहआइ ॥ चहुघांलगिचितवनिचित्तचाइ ॥ कनकमयविहितपालनाकीन ॥ नगलटकतमुक्तासरिनवीन ॥ घनमोलरतनमनिजटितघाट ॥ पटवसनविराजितडोरिपाट ॥ पलनातिहिंझूलतकृष्णपाइ ॥ इहांदुष्टपूतनानिकटआइ ॥ दुरिवालदसामहँरहेदेव ॥ भस्मज्योंअगानिकनिकासभेव ॥ विषलेपकुचनिअंतरविकार ॥ पापनीलगीइहांकरनप्यार ॥ लीनेउठाइतितिहिंनंदलाल ॥ षिलबालषिलावतिकरतिष्याल ॥ पापिष्टादीनोउरजपान ॥ पयसंगसोषिपूतनाप्रान ॥ मुषमांझकृष्णकुचएकमेलि ॥ कुचदुतीयगह्योकरमुष्टिकेलि ॥ कुचपानकरतआनंदकंद ॥ मुसकातमनोहरमंदमंद ॥ अतिविथाबढीभएविकलअंग ॥ गएभूतभावबलबुद्धिभंग ॥ इहांलगीछुडावनकुचअधीर ॥ प्रतिअंगअंगभईविषमपीर ॥ छूटेनजबैछलबलअछेह ॥ दुष्टासुकरीआसुरीदेह ॥ इहांकृष्णपयोधरधरिउछारि ॥ दीनीसोबाहिरनगरडारि ॥ सठपरीकोसषटपाइसीस ॥ चंडालिमरततितिहिंकरीचीस ॥ तरलतादबेजेपरतताहि ॥ एतेसवचूरनभएआहि ॥ जीयजातकरीपापिनिपुकार ॥ सुनिगिरेलोकभूलेसंभार ॥ इहांआइगोपगोपीअगान ॥ सोपरीदेषिपर्वतसमान ॥ उरऊपरदेषेकृष्णआइ ॥ सुभषेलतहैंअपनेसुभाइ ॥ उरलाइलयौजुवतिनिउठाइ ॥ बहुवारवारलैलैबलाइ ॥ उनदयौपूतजसुदाहिआनि ॥ मातायहसुतकीकुशलमानि ॥ अवलोकिलौनराईउतारि ॥ अरुदेतिकृष्णपरद्रव्यवारि ॥ गोमयमिलिगोरजलाइअंग ॥ गोमूत्रन्हवायोनीरगंग ॥ बहुधेनुदईविप्रनिवुलाइ ॥ सुरकवचरामरक्षासुनाइ ॥ सुतकुशललग्योषेलनसुभाइ ॥ पुनिमनहुजसोदाप्रानपाइ ॥ लालहिलडाइउरलाईलीन ॥ दुषटरेदुसहकुचपानदीन ॥ करभरदेकंसहिसावकास ॥ इहांचलेनंदसोचतउदास ॥ ॥ नंदउवाच ॥

मिथ्यानहोइवसुदेववानि ॥ जिहिंदयोभेदषलमर्मजानि ॥ ॥ कबिरुवाच ॥ ॥
सोचतसेमोचतउर्ध्वस्वास ॥ इहांनंदमहरआएअवास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हु
तौदसौठनकोदिवस । इहांपूतनाआइ ॥ करैजुजैसोकर्मकोइ । पुनितैसोफलपाइ ॥ ५१ ॥
गोकुलआएनंदग्रह । करभारियाहीकाल ॥ पाएमानहुंप्रानसें । कुसलविलोक्योबाल ॥
॥ ५२ ॥ मरीपूतनाकृष्णकर । पुनितिहिसदगतिपाइ ॥ हैसोसाषिजुदशममहँ । सुनिहैसं
तसुभाइ ॥ ५३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनर
हरदासविरचितेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ॥
॥ ॥ कबिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकमासकेजबभए । कृष्णदेवश्रीकंत ॥ महाउप
द्रवघोषमहँ । उपजनलगेअनंत ॥ १ ॥ देवस्थलइकदेविको । हतौमहावनबीच ॥ तहां
मिलिषेल्योंकंसषल । निसाचरनिसौंनीच ॥ २ ॥ इहिंअवसरवेईअसुर । मिलेसषास
बआइ ॥ महाउपद्रवघोषमहँ । करिहैकंससहाइ ॥ ३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ यहमा
याबलकृष्णउपायौ ॥ जसुमतिजानैंमेरोइजायौ ॥ स्यामहिमातचुषाइसुवाए ॥ पलनाक
नकरतनछबिछाए ॥ पछिमभागसकटकेपलना ॥ लैतिहिछाहसुवायोललना ॥ सुतकेग
र्वहिमहरिसभागी ॥ ग्रहव्यापारकरनपुनिलागी ॥ निसचरएकसकटतिहिंनिर्दय ॥ की
नोआनिप्रवेसमहाकय ॥ पूजीघातजुअसुरप्रवीनौ ॥ कृष्णहिदाबनदाउसोकीनौ ॥ अं
तरहुतौनिकटलग्योआवन ॥ प्रभुतहांदेष्योसकटअपावन ॥ मोहनवामचरनसौंमार्यौ
॥ प्रबलदृष्टिभरधरनिपछार्यौ ॥ अग्रभागधरनीमहंअटक्यौ ॥ पैसोइसकटऊठिलेपट
क्यौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सकटासुरतोर्यौसहज । अंगविछुरेचहुंओर ॥ कीनीएकहिमा
सके । क्रीडानंदकिसोर ॥ ॥ इतिसंकटभंग ॥ ॥ कबिरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
इकदिनगोदलियैंआनंदहि ॥ मातखिलावतिबालमुंकुदहि ॥ जबप्रभुअसुरआगमनजा
न्यौ ॥ आवततृणावर्तउनमान्यौ ॥ आरोकर्यौमातसौंआपुन ॥ उतरिगोदतेंलोटतआं
गन ॥ याहीसमयत्रिणाव्रतआयौ ॥ दारुनबातचक्रदरसायौ ॥ उडेपातत्रिणचक्रअकारौ
॥ अर्धदिवसतबभयौअंधारौ ॥ उडतरेणुकांकांकरिऐसी ॥ जिहिंतनलगतगिलोलाजैसी
॥ पुरजनभाजिग्रहनिमहंपैठे ॥ जथाबालतरुनैंअरुजेठे ॥ पापीअसुरदावयहपायौ ॥ अ
तिरिसभर्यौत्रिणाव्रतआयौ ॥ इहांषेचरतिहिंकृष्णउडाए ॥ मारुतचक्रमहँघालिभ्रमाए
॥ सीसअकासलग्योतबआसुर ॥ संगहिलग्योगयोरक्षकसुर ॥ कंठग्रहनबालककियताकौ
॥ इहांकपटबलछूट्यौयाको ॥ सिलपरपर्योनिसाचरसोई ॥ अतिदारुनरवव्रजमहंहोई ॥
त्रिणावर्तकेप्राणततच्छन ॥ निकसेनयनवाटछूट्यौतन ॥ कृष्णबालकौतुकयहकरयौ ॥ प
र्वतमनहुंवज्रहतपरयौ ॥ इहांघोषजनआतुरआए ॥ प्रभुतिहिंउरपरषेलतपाए ॥ नंदउठा
इलाइउरलीनै ॥ कुसलबालपायौहितकीनै ॥ पूतहिइहांजसुदानहिंपावति ॥ मनसोचति
अतिदेवमनावति ॥ अबषेलतबालककितगयौ ॥ हाहादइवकहायहभयौ ॥ याहीसमय
नंदजूआए ॥ पूतकुसललहिप्रानसेपाए ॥ घरनीकहलेदीनौबालक ॥ घरकौसूरिजअरि
घरघालक ॥ लालजसोमतिसुतउरलायौ ॥ लैलैलूनसुबाललडायौ ॥ जूथजूथव्रजवनि

ताजेती ॥ दौरीआइअसीसनिदेती ॥ ॥ व्रजवनितावाक्यं ॥ ॥ अहोमहरिभवतूंब
डभागी ॥ लालहिनेकचोटनहिंलागी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गोदानादिकदा
नगनि । करेनंदतिहिंकाल ॥ मंगलबजेनिसानमिलि । बच्यौकुसलसौंबाल ॥ ४ ॥ अ
सुरतृणाव्रतकौइहां । नासकर्‌यौनंदनंद ॥ मंगलघरघरघोषमहँ । उपजेअतिआनंद ॥
५ ॥ इतितृणावर्तवध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असुरनिकेबलकायअति ।
अरुसुतकेबलअंग ॥ क्रमजुतमनमहँमहरके । अचिरजभयौअभंग ॥ ६ ॥ सिसुदेषत
कौतनकसौ । अतिपौरुषबलएह ॥ मनहिसमातनमातके । हैउपज्यौसंदेह ॥ ७ ॥ घट
घटव्यापकस्यामघन । अंतरजामीआप ॥ हारकसदासुभावयह । परचितकौपरिताप ॥
८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ एकदिवसजसुदाअनुरागी ॥ सुतहिंषिलावतिअंकसभा
गी ॥ इहांकृष्णकहंआइजंभाई ॥ देवीमायाअगमदिषाई ॥ बदनकोषब्रहमांडविलोक्यौ ॥
रचनाविश्वनिरषिमनरोक्यौ ॥ सरसरितापर्वतबनिसागर ॥ धरनिअकासहंसउडश
शिहर ॥ पानिचारिभवभूतअषंडित ॥ महिचोरासीलाषजुमंडित ॥ जगजडजीवचराचर
जेते ॥ तिहिंछनमातनिहारेतेते ॥ तहांजसोदामांझत्रिलोकी ॥ सुतकेमुषहीमांझविलो
की ॥ पूतहिपूरनब्रह्मप्रमान्यौ ॥ जगआधारजगतपतिजान्यौ ॥ पुनिप्रभुमायाप्रबलप्रका
सी ॥ वहैमातसुतमतिआभासी ॥ इतिकृष्णमुषेविश्वरूपदर्शन ॥ इतिश्रीअवतारचरि
त्रेश्रीकृ०दशमस्कंधा०बारहटनरहरदासविरचितेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ जबलगेरोवनलाल ॥ करटेकिचलतकृपाल ॥ हतिरिंगति
आँगनमांहि ॥ जबकछुअंतरजांहि ॥ इहांलेतमातउठाइ ॥ जानिबालबाहिरजाइ ॥ कच
स्यामसघनसुदेस ॥ बनिअलकविथुरिविशेस ॥ शुभविकसिवदनसरोज ॥ मनलजित
समनमनोज ॥ जुगनयनषंजनजोप ॥ अतिदृष्टभेदअनोप ॥ मिलिकुटिलभौंहमरोर ॥
जनुबालमधुकरजोर ॥ अधररत्तरत्तअनूप ॥ रदवज्रकणिकारूप ॥ विधिजुक्ततुतरेवैन ॥
मनहरनमंत्रजुमैन ॥ रहिकंठसुषदतृरेष ॥ बनिरूपसीमविशेष ॥ उरसिंघनषरसचाल ॥
वीयजोगमनुससिबाल ॥ लसिकमलकरतललाल ॥ बनिबाहुदंडविसाल ॥ कटिकनककिं
किनिकीन ॥ नगजटितओपनवीन ॥ सुषझुनकनूपुरसद्द ॥ वनिचलनिपैडविहद्द ॥ लगि
जबैदोरनलाल ॥ बचकाचआजिरविसाल ॥ मुषनिरषिहरषितमाइ ॥ सुषअतुलउपजिसु
भाइ ॥ इहिंसमयनंदकुमार ॥ व्रजकरतबालविहार ॥ अबरामकृष्णअनूप ॥ शुभगौरस्या
मस्वरूप ॥ संगलियेसषासमाज ॥ वयरूपसमजुविराज ॥ इकगोपिकाकैआइ ॥ पुनिसुन्य
मंदिरपाइ ॥ मिलिधसेग्रेहमझारि ॥ नवनीतपात्रनिहारि ॥ सीकाप्रलंबितसोइ ॥ हैहस्तग
तनहींहोइ ॥ ऊचोसुदुर्गमआहि ॥ तहांकरनपहुंचतताहि ॥ इहँकृष्णबुद्धिउपाइ ॥ इकध
र्‌यौऊषलआइ ॥ बैठारितिहिंपरबाल ॥ ताकंधचढितताल ॥ निस्सेषमाँषनलीन ॥ नि
जसषनिवाँटिसुदीन ॥ इहिवीचग्वालनिआइ ॥ सोद्वाररोकिसुभाइ ॥ मुषमांझिदूधजुमेलि
॥ कियकृष्णछलइहिकेलि ॥ त्रीयनयनमांझिनिहारी ॥ दीयवदनतेंपैडारी ॥ रहीनैनमीडत
नारि ॥ मिलिसषाभजेमुरारि ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अवरदिवसकाहूग्रहआए ॥

पुनिदधिदूधनिबाहिरपाए ॥ तहांइकसषाधस्योगृहभीतर ॥ अवलोकेभाजनतिहिंअंतर ॥
अंधियारैसोइअतिअकुलायो ॥ बाहिरतेतिहिंकृष्णबुलायो ॥ भयोप्रकासरतनमनिभूषन
वांटिदयोदधिअसुरविदूषन ॥ इहांषाइदधिबाहिरआए ॥ पहिचानेग्रहनीतेपाए ॥ मटि
कारिक्तविलोकेमंदिर ॥ करिप्रलापमीडतिकरसौंकर ॥ इकदिनकृष्णअकेलौआपुन ॥ है
कोउसंगसषातबनाहिन ॥ इहांगोपीकेग्रहमहँआयौ ॥ पैमाषनबहुतैतहांपायौ ॥ मनि
मयथंभमांझमनमोहन ॥ निजप्रतिबिंबविलोकिचकितमन ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥
लग्यौकहनताबिंबहिलालन ॥ मिलिहमतुमषइयैइहांमाषन ॥ पैममर्मातहिसोनसुनाव
हु ॥ अरुहमसंगनितषेलनआवहु ॥ एककबलमेलतमुषआपन ॥ तामुषदेतदुतीयप्रफु
लितमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ याग्रहकीस्वामिनितबआई ॥ मोहनचरितदेषिमुस
काई ॥ लालउठाइलाइउरलीनौ ॥ कृतयहप्रगटजसोदहिकीनौ ॥ महरिबलाइलैलैमुस
कावै ॥ ललअपनोलैछतियांलावै ॥ ॥ जसोदावाक्यं ॥ ॥ मुदितबचनयौभाषैमइया
॥ काहेघरघरजातकन्हैया ॥ मेरैंदूधदहीअरुमाषन ॥ अतुलितलालसुषइयैआपुन ॥ प
रघरजाइकवनपदपावत ॥ कान्हरमाषनचोरकहावत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अवरदिव
सकाहूग्रहआए ॥ संगबलदाऊसषासुहाए ॥ पुनिसबबालगेहमहँपैसे ॥ जनवंचकअद्भु
तगतिजैसे ॥ जतनधरेछींकादधिभाजन ॥ मोहनभएविलोकिचकितमन ॥ अतितेपा
त्रप्रलंबितऊँचे ॥ हैतिनलगिनहींहाथपहुंचे ॥ कृष्णतहांअद्भुतमतिकीनी ॥ लांबीलकु
टीकरधरिलीनी ॥ सबमटुकनिलैलकुटिसंचारी ॥ भएछिद्रतिनतरहरभारी ॥ धसीतहां
अविरलदधिधारा ॥ इहांआज्ञादइकृष्णकुमारा ॥ ऊकमांडिसबसषाअघाए ॥ पानकरे
दधिअतिसुषपाए ॥ याहीसमयग्रेहनीआई ॥ करिचोरीभजिगएकन्हाई ॥ हेदधिपात्र
सछिद्रनिहारति ॥ विस्मितबालचरित्रविचारति ॥ दिवसअपरजसुदाकोनंदन ॥ छानौ
करतमृत्तिकाभक्षन ॥ कृष्णतहांकिहुंसषाविलोक्यौ ॥ रहैनहींताहूजौरोक्यौ ॥ यहैबाल
सौंदेषिरिसायौ ॥ इहांनिकसिजसुमतिपहँआयौ ॥ छोहबढ्यौबालकताहीछन ॥ लाग्यौ
कहनकान्हकेलक्षन ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ मेअबहींदेष्यौरीमइया ॥ करदुवमाटीषा
तकन्हइया ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लैछटिकाजसुदारिसलागी ॥ सौआईतहांदौरिसभा
गी ॥ लीलिलईमुषमाटीलालन ॥ तहांथरथरकांपनलाग्यौतन ॥ ॥ मातावाक्यं ॥
मनरिसपूछतिजसुमतिमाई ॥ क्यौंरेषलतैंमाटीषाई ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दृगजल
भरेलकुटियाकेडर ॥ धरनिनिहारतकांपतथरथर ॥ लैलैवडेउसासउचारै ॥ मइयामोहि
छटिकाजनिमारै ॥ हैएसषाषिजावतमोही ॥ तेलबारबहँकावततोही ॥ सठकिहुंझूठहुआ
निंसिलाई ॥ मेरोमुषअवलोकरिमाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनियौंकाहिलंघ्रुवदनप
सार्‍यौ ॥ नियतमाततहांविश्वनिहार्‍यौ ॥ पुनिभूगोलविलोक्यौपावन ॥ सप्तदीपनवषं
डसुहावन ॥ सातसमुद्रनवासीसरिता ॥ सातपतालभुयंगमसहिता ॥ अषिलवनस्पति
भारअठारा ॥ पर्वतअष्टकुलीअनपारा ॥ सोलकलाशशिद्वादसदिनकर ॥ नवनछत्रता
रागननभचर ॥ निगमचारिनवदूनपुराना ॥ मिलिचत्रषानिचराचरमाना ॥ देषेराक्षसदैत्य

ताजेती ॥ दौरीआइअसीसनिदेती ॥ ॥ व्रजवनितावाक्यं ॥ ॥ अहोमहरिभवतूंब
डभागी ॥ लालहिनेकचोटनहिंलागी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गोदानादिकदा
नगनि । करेनंदतिहिंकाल ॥ मंगलबजेनिसानमिलि । बच्यौकुसलसौंबाल ॥ ४ ॥ अ
सुरतृणाव्रतकौइहां । नासकस्यौनंदनंद ॥ मंगलघरघरघोषमहँ । उपजेअतिआनंद ॥
५ ॥ इतितृणावर्तवध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असुरनिकेबलकायअति ।
अरुसुतकेबलअंग ॥ क्रमजुतमनमहँमहरके । अचिरजभयौअभंग ॥ ६ ॥ सिसुदेषत
कौतनकसौ । अतिपौरुषबलएह ॥ मनहिसमातनमातके । हैउपज्यौसंदेह ॥ ७ ॥ घट
घटव्यापकस्यामघन । अंतरजामीआप ॥ हारकसदासुभावयह । परचितकौपरिताप ॥
८ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ एकदिवसजसुदाअनुरागी ॥ सुतहिषिलावतिअंकसभा
गी ॥ इहांकृष्णकहंआइजंभाई ॥ देवीमायाअगमदिषाई ॥ बदनकोषब्रह्मांडविलोक्यौ ॥
रचनाविश्वनिरषिमनरोक्यौ ॥ सरसरितापर्वतबनिसागर ॥ धरनिअकासहंसउडश
शिहर ॥ पानिचारिभवभूतअषंडित ॥ महिचोरासीलाषजुमंडित ॥ जगजडजीवचराचर
जेते ॥ तिहिंछनमातनिहारेतेते ॥ तहांजसोदामांझत्रिलोकी ॥ सुतकेमुषहीमांझविलो
की ॥ पूतहिपूरनब्रह्मप्रमान्यौ ॥ जगआधारजगतपतिजान्यौ ॥ पुनिप्रभुमायाप्रबलप्रका
सी ॥ वहेमातसुतमतिआभासी ॥ इतिकृष्णमुषेविश्वरूपदर्शन ॥ इतिश्रीअवतारचरि
त्रेश्रीकृ०दशमस्कंधा०बारहटनरहरदासविरचितेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ जबलगेरोवनलाल ॥ करटेकिचलतकृपाल ॥ हतिरिंगति
आँगनमांहि ॥ जबकछुअंतरजांहि ॥ इहांलेतमातउठाइ ॥ जनिबालबाहिरजाइ ॥ कच
स्यामसघनसुदेस ॥ बनिअलकविथुरिविशेस ॥ शुभविकसिवदनसरोज ॥ मनलजित
समनमनोज ॥ जुगनयनषंजनजोप ॥ अतिदृष्टभेदअनोप ॥ मिलिकुटिलभौंहमरोर ॥
जनुबालमधुकरजोर ॥ अधररत्तरत्तअनूप ॥ रदवज्रकणिकारूप ॥ विधिजुक्ततुतरेवैन ॥
मनहरनमंत्रजुमैन ॥ रहिकंठसुषदतृरेष ॥ बनिरूपसीमविशेष ॥ उरसिंघनषरसचाल ॥
वीयजोगमनुससिबाल ॥ लसिकमलकरतललाल ॥ बनिबाहुदंडविसाल ॥ कटिकनककिं
किनिकीन ॥ नगजटितओपनवीन ॥ सुषझुनकनूपुरसद्द ॥ वनिचलनिपैंडविहद्द ॥ लागि
जबेदौरनलाल ॥ बचकाचअजिरविसाल ॥ मुषनिरषिहरषितमाइ ॥ सुषअतुलउपजिसु
भाइ ॥ इहिंसमयनंदकुमार ॥ व्रजकरतबालविहार ॥ अबरामकृष्णअनूप ॥ शुभगौरस्या
मस्वरूप ॥ संगलियेसषासमाज ॥ वयरूपसमजुविराज ॥ इकगोपिकाकैआइ ॥ पुनिसुन्य
मंदिरपाइ ॥ मिलिधसेग्रेहमझारि ॥ नवनीतपात्रनिहारि ॥ सीकाप्रलंबितसोइ ॥ हैहस्तग
तनहींहोइ ॥ ऊचोसुदुर्गमआहि ॥ तहांकरनपहुंचतताहि ॥ इहँकृष्णबुद्धिउपाइ ॥ इकध
स्यौऊषलआइ ॥ बैठारितिहिंपरबाल ॥ ताकंधचढितितकाल ॥ निस्सेषमाँषनलीन ॥ नि
जसषनिबाँटिसुदीन ॥ इहिवीचग्वालनिआइ ॥ सोद्दाररोकिसुभाइ ॥ मुषमांझिदूधजुमेलि
॥ कियकृष्णछलइहिकेलि ॥ त्रीयनयनमांझिनिहारी ॥ दीयवदनतेंपैडारी ॥ रहीनैनमीडत
नारि ॥ मिलिसषाभजेमुरारि ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ अवरदिवसकाहूग्रहआए ॥

पुनिदधिदूधनिवाहिरपाए ॥ तहांइकसषाधस्यौग्रहभीतर ॥ अवलोकेभाजनतिहिंअंतर ॥ अंधियारैसोइअतिअकुलायो ॥ बाहिरतेतिहिंकृष्णबुलायो ॥ भयौप्रकासरतनमनिभूषन वांटिदयोदधिअसुरविदूषन ॥ इहांषाइदधिबाहिरआए ॥ पहिचानेग्रहनीतेपाए ॥ मटि कारिक्तविलोकेमंदिर ॥ करिप्रलापमीडतिकरसौंकर ॥ इकदिनकृष्णअकेलौआपुन ॥ है कोउसंगसषातबनाहिन ॥ इहांगोपीकेग्रहमहँआयौ ॥ पैमाषनबहुतैतहांपायौ ॥ मनि मयथंभमांझमनमोहन ॥ निजप्रतिबिंबविलोकिचकितमन ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ लग्यौकहनताबिंबहिलालन ॥ मिलिहमतुमषइयैइहांमाषन ॥ पैममातहिसोनसुनाव हु ॥ अरुहमसंगनितषेलनआवहु ॥ एककबलमेलतमुषआपन ॥ तामुषदेतदुतीयप्रफु लितमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ याग्रहकीस्वामिनितबआई ॥ मोहनचरितदेषिमुस काई ॥ लालउठाइलाइउरलीनौ ॥ कृतयहप्रगटजसोदहिकीनौ ॥ महरिबलाइलैलैमुस कावै ॥ ललअपनोलैछतियांलावै ॥ ॥ जसोदावाक्यं ॥ ॥ मुदितबचनयौभाषैमइया ॥ काहेघरघरजातकन्हैया ॥ मेरैंदूधदहीअरुमाषन ॥ अतुलितलालसुषइयैआपुन ॥ प रघरजाइकवनपदपावत ॥ कान्हरमाषनचोरकहावत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अवरदिव सकाहूग्रहआए ॥ संगबलदाऊसषासुहाए ॥ पुनिसबबालगेहमहँपैसे ॥ जनवंचकअद्भु तगतिजैसे ॥ जतनधरेछींकादधिभाजन ॥ मोहनभएविलोकिचकितमन ॥ अतितेपा त्रप्रलंबितऊँचे ॥ हैतिनलगिनहीहाथपहुँचे ॥ कृष्णतहांअद्भुतमतिकीनी ॥ लांबीलकु टीकरधरिलीनी ॥ सबमटुकनिलैलकुटिसंचारी ॥ भएछिद्रतिनतरहरभारी ॥ धसीतहां अविरलदधिधारा ॥ इहांआज्ञादइकृष्णकुमारा ॥ ऊकमांडिसबसषाअघाए ॥ पानकरे दधिअतिसुषपाए ॥ याहीसमयग्रेहनीआई ॥ करिचोरीभजिगएकन्हाई ॥ हैदधिपात्र सछिद्रनिहारति ॥ विस्मितबालचरित्रविचारति ॥ दिवसअपरजसुदाकोनंदन ॥ छानौ करतमृत्तिकाभक्षन ॥ कृष्णतहांकिहुंसषाविलोक्यौ ॥ रहैनहींताहूजौरोक्यौ ॥ यहैबाल सौंदेषिरिसायौ ॥ इहांनिकसिजसुमतिपहँआयौ ॥ छोहबढ्यौबालकताहीछन ॥ लाग्यौ कहनकान्हकेलक्षन ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ मैअबहीदेष्यौरीमइया ॥ करदुवमाटीषा तकन्हइया ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लैछटिकाजसुदारिसलागी ॥ सौआईतहांदौरिसभा गी ॥ लीलिलईमुषमाटीलालन ॥ तहांथरथरकांपनलाग्यौतन ॥ ॥ मातावाक्यं ॥ मनरिसपूछतिजसुमतिमाई ॥ क्यौंरेषलतैंमाटीषाई ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दृगजल भरेलकुटियाकेडर ॥ धरनिनिहारतकांपतथरथर ॥ लैलैबडेउसासउचारै ॥ मइयामोहि छटिकाजनिमारै ॥ हैएसषाषिजावतमोही ॥ तेलबारबहँकावततोही ॥ सठकिहुंझूठहुआ निसिलाई ॥ मेरौमुषअवलोकरिमाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनियौंकहिलग्रुवदनप सार्यौ ॥ नियतमाततहांविश्वनिहार्यौ ॥ पुनिभूगोलविलोक्यौपावन ॥ सप्तदीपनवषं डसुहावन ॥ सातसमुद्रनवासीसरिता ॥ सातपतालभुयंगमसहिता ॥ अषिलवनस्पति भारअठारा ॥ पर्वतअष्टकुलीअनपारा ॥ सोलकलाशशिद्वादसदिनकर ॥ नवनछत्रता रागननभचर ॥ निगमचारिनवदूनपुराना ॥ मिलिचत्रषानिचराचरमाना ॥ देषेराक्षसदैत्य

जुदानव ॥ किन्नरयक्षगनेसुरअध्रव ॥ सगुनकोटितितीससबैसुर ॥ सहसअठ्यासीतहां ऋषेश्वर ॥ मेघत्रयोदशनभघनमाला ॥ पुनितहांप्रगटअष्टदिगपाला ॥ अणूपलदंडप्रहरदिनतिथिपर ॥ मासअयनऋतुसवसंबत्सर ॥ पंचसलिलत्रयकालअनलत्रय ॥ मारुतमंदसुगंधसीतमय ॥ त्रिगुणदेवत्रयपंचतत्वतहां ॥ जोतिचक्रअनषंडितहैजहां ॥ जीवजोनिचतुरासीजेते ॥ तहांविलोकेजसुमतितेते ॥ इत्यादिकभुवचक्रअषंडा ॥ वदनकोषदेष्यौब्रह्मंडा ॥ ब्रह्मसृष्टिजोवेदबषानी ॥ जननीसुपैविलोकीजानी ॥ मुषमूंधोपुनिकुंवरमनोहर ॥ अद्भुतरसउपज्योइहिंअवसर ॥ पुत्राहिमाताब्रह्मप्रमान्यौ ॥ जगकर्ताहर्तासोजान्यौ ॥ दैवतअद्भुतबालदिषायौ ॥ आदिपुरुषसोगर्भहिआयौ ॥ प्रभुतबदैवीमायाप्रेरी ॥ हैतवजनानिमनुजगातिहेरी ॥ भावब्रह्मव्रजनारीभूली ॥ फिरतिपुत्रहितफूलीफूली ॥ ॥ दोहा ॥ लीनैसषाअनेकसंग । सोवयरूपसमान ॥ माषनघरघरदूधदधि । मूसिषातदिनमान ॥ २ ॥ यहैजुचल्यौचवाउअति । ग्रहग्रहगोकुलग्राम ॥ मिलतजहांतहांगलिनमहँ । द्वंदद्वंदव्रजवाम ॥ ३ ॥ बालविनोदविचित्रवर । अद्भुतचरितअपार ॥ विविधअगोचरमनवचन । करतव्रजेसकुमार ॥ ४ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेबालविनोदअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥

॥कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पहिलैंद्वापरजुगप्रगट । कृतयहभयोप्रकार ॥ मुनिनारदकेश्रापमारि । उभयकुबेरकुमार ॥ १ ॥ सुतद्वैहुतेकुबेरके । नलकूबरमणिग्रीव ॥ धनजोवनमनमदमहा ॥ सोदुष्टनिकीसीव ॥ २ ॥ त्रियनिसमेतअवस्त्रते । करतगंगजलकेलि ॥ सुरापानवसमदनमत । मनतनलज्जामेलि ॥ ३ ॥ मुनिनारदयाहीसमय । सारितातटसतभाइ ॥ वीणापानिजुवानिवर । आपुनतिकसेआइ ॥ ४ ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ लएवस्त्रवसलाज, देष्यौजबनारददिवस ॥ सकुचीत्रियासमाज, चितभामिनिभयअतिचकित ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ एकुंवरमहामदअंधआप ॥ परिहरिभयलज्जाप्रगटपाप ॥ इहांमिल्यौअसुभभवतव्यआनि ॥ कछुकरीननारददेषिकानि ॥ करजोरिनवंदनप्रनतिकीन ॥ द्विजवरविशेषआसिषनदीन ॥ तनहुतेनगनमनमदनमत्त ॥ त्यौंहीजुरहेरसरंगरत्त ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ ऋषिरोषवचनबोल्यौरिसाइ ॥ पापिष्टछकेअतिविभवपाइ ॥ बहुद्रव्यग्रेहवैश्रवणबाप ॥ यातेंधनांधतुमभएआप ॥ तनरूपगर्वतुमछकेतास ॥ सोनाशहेतकैसोविसास ॥ पोषततिहिंनिसदिनसमयपाइ ॥ नवअष्टद्रव्यभोजनबनाइ ॥ सौगंधविविधवासनसुरंग ॥ अनमोलिकभूषनअंगअंग ॥ सुषवासकुसमसज्यासमान ॥ शतजूथदासिकासावधान ॥ वनिताजुमुग्धमध्याविशेष ॥ अतिरसविलासविलसतअसेष ॥ इहिदेहगर्वतुमचढ्यौआज ॥ सुषपाइराजसंपतिसमाज ॥ पुनिसुनहुदेहताकेप्रकार ॥ छनमांझजलनजरिहोतछार ॥ जलसँहसकारकृतकिहूंजोग ॥ भवभक्षततोजलजंतुभोग ॥ अरुषातकहूंकृमिकुलअघाइ ॥ विटहोतकलेवरसोसुभाइ ॥ परिणामपिंडएत्रयप्रकार ॥ तिहिंहेतगर्वमानतगँवार ॥ यहदेहदुष्टतुमतजहुआप ॥ पुनिहोहुजमलतरुमहापाप ॥ पैमथुरामंडलजन्मपाइ ॥ जडजोनिसुगोकुलभजहुजाइ ॥ निसदि

वसनग्नतननिराधार ॥ पुनिसहोसीततपजलअपार ॥ मिलिजोरजमलअर्जुनसमूल ॥
कृतजोगहोहुकालिंदिकूल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छनमांझिउतरितबगईछाक ॥
वपुकंपवदननहिंफुरतवाक ॥ पहिचान्योतहांनारदपुनीत ॥ सठरहेजोरिकरअतिसभीत
॥ ॥ नलकूबरउवाच ॥ ॥ वसदीनभावकहिविमलवानि ॥ मुनिदयोश्रापहमलयोमानि
॥ तुमदंडअनुग्रहजोग्यदेव ॥ भवकहोहमहिउद्धारभेव ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ शतदि
व्यवर्षजडजोनिसंग ॥ पापिष्टरहहुदुर्मनप्रसंग ॥ कलिप्रथमचरनकृष्णावतार ॥ भवहोहि
उतारनअवनिभार ॥ अंबाकरऊषलबद्धआप ॥ पुनिकरैतिहारेनासपाप ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ रिसदैसरापनारदऋषेस ॥ पुनिकयौबदरिकाश्रमप्रवेश ॥ नलकूवरअरुमणिग्रीव
नाम ॥ कौबेरउभयकिंकरसुकाम ॥ पुनितहांतासपंचत्वपाइ ॥ जडजोनिसुगोकुलभएजा
इ ॥ लहिजोनिजमलअर्जुनअजान ॥ नारदसरापभुक्ततनिदान ॥ ॥ इतिश्रीअवतारच
रित्रेश्रीकृष्णावतारे दशमस्कंधानुसारेण बारहटनरहरदासविरचितेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुतकाजैमाषनसुकर । मथिकाढतिदधिमांहि ॥ हेतकृ
ष्णाकेजननिहाठि । छननपत्यावतिछांहि ॥ १ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मातप्रातहीमांडि
मथानी ॥ अद्भुतनेतरईतहांआनी ॥ मधुरदधीमेल्यौतहाँमांही ॥ सुषहिकरतमंथानसु
भाही ॥ सबहीतेउठिमहरिसवारे ॥ दहीविलोबतिअंचरडारै ॥ करतिआपश्रमसुतहित
काजै ॥ विमलकरनिवलयावलिबाजै ॥ सुषसज्यासोवतहोसुंदर ॥ कुंवरजग्योचषमींजत
जुगकर ॥ कहतसुआयोकुँवरकन्हइया ॥ मोकहँमाषनदैरीमइया ॥ गहिरह्योकान्हमथ
नियांगाढी ॥ थकितजसोदाचितवतिठाढी ॥ ॥ महरिउवाच ॥ ॥ लैउंवलाइमथनदै
लालन ॥ मेरेपूतहिदैहूंमाषन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कान्हरकाजैदूधकढायो ॥ याही
बीचसुपैउफनायो ॥ मथनीछांडिजसोदामाई ॥ इहांदौरिमंदिरमहँआई ॥ लैदर्बीकरदू
धचलायो ॥ वारिछीटदैजतनबनायो ॥ कान्हपुधावसअतिरिसकीनी ॥ दहीमथानीफो
रिजुदीनी ॥ अंगनकाचेफेलिदधिऐसो ॥ सोभितमहीसरोवरजैसो ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥
तबैकृष्णअतित्रास, भाजिदुरयोदूजैभवन ॥ इहांपायौअनयास, भाजनमाषनसौंभर्यो ॥
॥ २ ॥ छीकाधर्योछिपाइ, सोपैमाषनजतनसौं ॥ चढ्योउलूषलआइ, काढिषातरुचिसौंकुं
वर ॥ ३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांजसोदाजबफिरिआई ॥ किहुनविलोक्यौकुंवर
कन्हाई ॥ महीगिर्योअरुफूट्योमटका ॥ छोहचढ्योकरलीनीछटिका ॥ ढूँढतिसुतहिफि
रतिअतिधाई ॥ मनरिसव्याकुलजसुमतिमाई ॥ महरिजबैआईतिहिंमंदिर ॥ माषनचो
रतबलष्योमनोहर ॥ लालतहांतनकांपनलाग्यो ॥ भयतैंतीनभुवनपतिभाग्यो ॥ इहांम
हरिगहिलीनोआतुर ॥ मर्दनमहांवलीषलमधुमुर ॥ मुहपरदीनीचनगटमाई ॥ इहांसु
अँषियांजलभरिआई ॥ मंदमंदरोदतमनमोहन ॥ गिरतमनहुअसुवामुक्तागन ॥ ॥
मातावाक्यं ॥ अरेढीठतूंविगर्योऐसो ॥ तोकौंदेहुंअवैफलतैसो ॥ भानतफिरतदूधद
धिभाजन ॥ मुसिमुसिषातपराएमाषन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ऊषलइहांनिकटहैआन्यो ॥
ठाढपूतकहँबाँधनठान्यो ॥ इहांपाटकीनोईआनी ॥ तासैंबांध्योऊषलतानी ॥ नोईअर्ध

भागलैनांध्यो ॥ बालमुकुंदहिचाहतिबाँध्यो ॥ सुतकटिकसीदांवरीसोई ॥ हठहूंकियेनपू
रनहोई ॥ सरलदांवरीदूजीसांधी ॥ बहुरयोगाठिनपूजातिबांधी ॥ नाँधीव्रजकीजेतिक
नोई ॥ हीनतऊद्वैअंगुलहोई ॥ भयौजसोदाकहँश्रमभारी ॥ देषीजननीहोतदुखारी ॥
कृष्णकृपालदयातबकीनी ॥ दांवरिगांठजसोदादीनी ॥ जाकौआदिअंतनहिजान्यौ ॥
ताकहँबांधिउलूखलतान्यौ ॥ देवजुनिरवधिदयादिषाई ॥ गूढप्रगटनिगमागमगाई ॥
प्रेमभक्तिकेवसप्रभुपूरन ॥ अतिसुषकरतदासकहँऊरन ॥ जाकीगतिनसुरासुरजानी ॥
रसरीसौंबांध्योनंदरानी ॥ लहेपरमसुषव्रजपतिललना ॥ पयकुचपाइझुलायोपलना ॥
बालगुपालजसोदावांध्यो ॥ सबव्रजजुवतिहांस्यरससांध्यो ॥ ॥ व्रजवनितावाक्यं ॥
प्रतिदिनमाषनमुसतपराए ॥ प्यारेलालसुपैफलपाए ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नैनसैन
दैभौंहनचावति ॥ षेलतिआपुनकृष्णाषिजावति ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ लीनैअबैक
मैंफललालन ॥ मुसिमुसिबहुत्यौंषेहैमाषन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुतकहँऊषलबांधि
सभागी ॥ ललितकरनगृहकारजलागी ॥ सिंधुरमहामत्तज्यौंसंकल ॥ ऐसैंबालकटोर
तऊषल ॥ नाथइहांतरुजमलनिहारे ॥ देषिजक्षजडजोनिदुषारे ॥ प्रभुनारदकौबचन
प्रमान्यौ ॥ अगिलोकारनसोसुधिआन्यौ ॥ आनिनिकटतिरछोकारिरूषल ॥ विवस्योंद्रु
मविचबालमहाबल ॥ ऊषलअटक्यौदुवद्रुमअंतर ॥ निकसिगएउतस्वामीनरहर ॥ त
हांजमलाअर्जुनहठितोरे ॥ विप्रश्रापतेंजक्षविछोरे ॥ इक्षुदंडज्योंवृक्षउषारे ॥ पापश्राप
हतधरनिपछारे ॥ भएमुक्ततहांदोऊभाई ॥ सुतकुबेरकेकृष्णसहाई ॥ उषरिपरेतरुअति
अररानै ॥ भयौसब्दव्रजलोकभयानै ॥ इहांजसोमतिदौरीआई ॥ मानहुप्राननिकसिहै
माई ॥ महरविलोक्योकान्हअभयमन ॥ ऊषलबँध्योडोलतआंगन ॥ नोईछोरिलाइउ
रलीनो ॥ कहतिजुहाहामैकाकीनो ॥ बडौविघ्नटारयौविश्वंभर ॥ कुशललह्योमैमेरोका
न्हर ॥ मुषरजझारतचुंबतमइया ॥ वारवारसुतलेतबलइया ॥ तरुनमाझतैंनिकसेततछन
॥ तहांजक्षदोउदिव्यधरेतन ॥ अतिछवितेजविराजतऐसै ॥ ज्वलनकाठतेंनिकसेजैसैं ॥
॥ अथजक्षस्तुति ॥ ॥ जयतिजयतिजदुवंसउजागर ॥ स्यामसुरूपजुअतितनसुंदर
॥ कृष्णजयतिव्रजजनसुषकारी ॥ हितजुतवृंदाविपिनविहारी ॥ नागरजयतियशोदानं
दन ॥ निगमहेतव्रजविघननिकंदन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ देहजक्षधरिभ्रातादोऊ ॥
स्वस्थानकहरषितगएसोऊ ॥ तृभुवननाथअधोगततारे ॥ यौकुबेरकेपुत्रउधारे ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ आपदुषीदुषऔरके । ऐसेकृष्णउदार ॥ सरनागतपंजरविजय । नरहरके
निस्तार ॥ ४ ॥ भावविवर्जितभागवत । करैश्रवणज्योकोइ ॥ दर्ब्बीपरुसतसर्वंदिन ।
हेतस्वादनहिहोइ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारे
णबारहटनरहरदासविरचितेजमलार्जुनउद्धारोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ ७॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांउपद्रवहोतए । हैव्रजमहांविपरीति ॥ महरकरत
सबमंत्रमिलि । नंदादिकजुतनीति ॥ १ ॥ अबचलियैअन्यत्रकहूं । तजियैगोकुलग्राम॥
बालउपद्रवअतिवढे । मनयहदुसहविराम ॥ २ ॥ ॥ उपनंदउवाच ॥ ॥ तहांकह्यो

उपनंदतब । घनजलपूरनघास ॥ दृष्ट्योवृंदावनप्रगट । वसियैतहांसुषवास ॥ ३ ॥ देषि
तरलताद्रुमनकी । बालकवेसविचार ॥ विनापवनहीटूटिवो । अचिरजहोतअपार ॥ ४ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ वृंदावनक्रीडाविमल । मनजबधरीमुरारि ॥ नंदादिकव्रजगोपके ।
प्रेरेचित्तप्रचारि ॥ ५ ॥ सबनिकर्योनिर्धारसो । वृंदावनकोवास ॥ अपनेअपनेसकटस
जि । करतप्रयानप्रकास ॥ ६ ॥ साधिदिवसपंचांगशुभ । निर्भयगवनेनंद ॥ आकृति
रंगअनेकअति । बनिगोधनकेवृंद ॥ ७ ॥ मिलिसुषगोधूलकसमय । वृंदांवनपरवेस ॥
सबकेसंमतशुभसगुन । कीनोवासव्रजेस ॥ ८ ॥ ॥ इतिवृंदावनवास ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ महरबस्योवृंदावनमांही ॥ सुरभीजूथनषरिकसमांही ॥
आकृतिरंगअनेकउतंगनि ॥ सोभाबनीविविधसमश्रृंगनि ॥ श्वेतवृषभउज्जलरवराजे ॥
गहरजलदसेदिसिदिसिगाजे ॥ बछरावृंदअनंदवढावत ॥ उर्ध्वपूंछधरिधरिमिलिधाव
त ॥ बालगुपालजुहर्षबढावे ॥ धरिभुजभुजनिसौंअंगनधावे ॥ घुमरतदधिमंथानघर
निघर ॥ धरनिधसेमनुगाजतजलधर ॥ संपतिदेषिनंदगृहसोहत ॥ वरुणकुबेरसुरेसविमोह
त ॥ गोपवसेसबगांवनिगांवनि ॥ परमविलाससकलसुषपावनि ॥ कृष्णभएइहांपंचवरषके
॥ हितकहिजाइनजननिहरषके ॥ एकदिवसजननीपहँआए ॥ संगसषामिलिकृष्णसुहाए
॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ कहतमातसौंकुँवरकन्हैया ॥ अबहूँबडोभयोरीमईया ॥ जननी
हूंबछरनिसंगजैहूं ॥ हेतसहितचहुंओरचरैहुँ ॥ मोकहँपनहीनईमँगावहु ॥ आनिकँबरिया
अरुनउढावहु ॥ लालकुटियाहूंकरलैहूं ॥ वंसीदेमुहिवनहिबजैहूं ॥ ॥ कविरुवाच ॥
इतनीसुनतमहरमुसकाई ॥ लएउठाइलालउरलाई ॥ ॥ जसोदावाक्यं ॥ ॥ वारवार
लैमहरिबलैया ॥ करिहूंजोकछुकहैकन्हैया ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ बालविनोदवच्छसं
गवनवन ॥ महिमामनुजविहारतमोहन ॥ अषिलेश्वरऐसीकछुइच्छा ॥ दुष्टनिदेतदंडम
यदिक्षा ॥ सरवरसहितगहनवनसुंदर ॥ लतावितानपत्रमिलिमंजर ॥ कुसुमितफलितसदासु
षकारी ॥ कुंजकुंजसुषविपिनविहारि ॥ फूलेसरनिसरोरुहसोहत ॥ मिलिमधुमत्तमधुपमन
मोतह ॥ अतिसुषभासविहंगमअनअन ॥ तांडवमत्तमयूरचित्रतन ॥ श्रृंगीनषीजुदंती
सुंदर ॥ करतकेलिवनजंतुभयंकर ॥ व्रनमृगवरनजातिकोजाने ॥ मिलिमिलिजूथभ्रमत
मनमाने ॥ साषामृगतरुझंपितसोहे ॥ जूथपजूथमहामनमोहे ॥ वछराकृष्णचरावतवनव
न ॥ वहांबलदाऊसंगगोरतन ॥ सषाअनेकवेषवयसुंदर ॥ बालवनाउविचित्रकियेबर ॥
तनवनडोलतवंसिबजावत ॥ षेलतआपरुसषनिषिलावत ॥ आयोवच्छरूपकीरआसुर ॥
निकरवच्छमहंमिलिगोनिसचर ॥ पापीसोकाहूनपिछान्यो ॥ जगव्यापकमोहनपैंजान्यो
ओचकहरितताकेढिगआए ॥ प्रभुकिहुंसंगसषानहींपाए ॥ आसुरसोगहिचरनउठायो ॥
महाकोपकरिगउनभ्रमायो ॥ पटक्योषेलहिधरनिअपावन ॥ तजिगएप्रानअसुरछूट्योत
न ॥ महाप्रमानवच्छासुरमार्यो ॥ रौद्रसरीरसषानिनिहार्यो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वच्छासुरमा
र्योविषम । प्रभुनरहरगहिपाइ ॥ बालविलोकिविलोकिवपु । निर्भयभयेसुभाइ ॥ ९ ॥ ॥
इतिवच्छासुरवध ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ भयोबालकनिअचिरजभारी ॥ निसचरदेह

॥ उपमेयतासकविलहिनअंत ॥ कृतमध्यकोशघनअंधकार ॥ पावैनकहूंकछुवारपार ॥
बहुजूथजूथउठिवच्छबाल ॥ षितिचलेजातमिलिकरतष्याल ॥ अघअसुरपन्नतनदेषि
याहि ॥ चितचकितरहेसबबालचाहि ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ यहकहोकहौंधौंभिया
कोइ ॥ इहिंहेतबतावहुसभरहोइ ॥ यहपर्वतहैकोउमहाकाय ॥ पृथ्वीतेंनिकस्योहेतपाय
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मनमनतर्कवितर्कमिलि । बालकरहेविचारि ॥ प्र
भुमायाप्रेरितप्रवल । मुषातिहिंधसेमझारि ॥ १ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ करिहैकृष्णसहाइ
कछु । निहचैभयकोउनाहि ॥ भईजपैभवतव्यता । मिलिचालियैयामांहि॥२ ॥वच्छासुरमा
स्योविषम । दुष्टअसुरवकदेह ॥ करिहैतईकृष्णकछु । इनहिनदुर्गमदेह ॥ ३ ॥ छंदपधरी ॥
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिंसमयकृष्णपुनिइहांआइ ॥ सबबालधसेदेषेसुभाइ ॥ प्रभु
कस्योकृष्णआपुनप्रवेस ॥ अषिलेसविश्वरक्षकअशेस ॥ मुषरोकिसर्पकोसर्पमार ॥ करिज
तनतहांजसुदाकुमार ॥ अजगरमुषसंपुटजटितआइ ॥ सुरनासस्वासरुंधितसुभाइ ॥ नि
जब्रह्मरंध्रफूट्योनिदान ॥ पन्नगकेतिहिंमगगएप्रान ॥ पापीमरिअसुरइहिंप्रकार ॥ कृत
अमरवृंदजयजयाकार ॥ वजिइहांदेवदुंदुभिविशेष ॥ आकासकुसमवरषाअसेष ॥ विच
उदरबचाएवच्छबाल ॥ करिसुधादृष्टिमोहनकृपाल ॥ निकसेतहांविहसतनंदनंद ॥ वनि
पाछैवछराबालवृंद ॥ इहिरूपकृष्णप्रभुनिकसिआइ ॥ सबकालग्वालबालकसहाइ ॥ जो
हुतीअसुरमहदैवजोति ॥ बलविक्रमताहीहेतहोति ॥ वहजोतिनिकसितबगइअकास ॥
पुनिभयौतासपूरनप्रकास ॥ सोइजोतिउलटिनभतेसमूल ॥ तबआईउलकापाततूल ॥
इहिंभांतिकृष्णमहँमिलीआइ ॥ संपारवज्योंघनमहँसमाइ ॥ करकृष्णहतेजेदुष्टकोइ ॥
हरिमांझरहेएकत्रहोइ ॥ दनुदुष्टविजयकरिकृष्णदेव ॥ अषिलेसग्रेहआएअजेव ॥ वन
चरितकहेलरिकनिबनाय ॥ रसअदभुतउपज्योनंदराय ॥ बालहिउरलावतिवारवार ॥ अरु
करतिदानजननीअपार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदजसोदाकेनिषिलल । औरपुराकृतकोइ
॥ व्रजमँहजोउपजतविघन । नासहिपावतसोइ ॥ ४ ॥ वीतेइहिंविधिषटवरस । सैसव
वयघनस्याम ॥ प्रभुनरहरदइवतप्रगट । करेसपूरनकाम ॥ ५ ॥ अघासुरमास्योअधम
। राषेवछराबाल ॥ प्रभुनरहरपूरनपुरुष । देवनिदेवदयाल ॥ ६ ॥ इतिश्रीअवतारच
रित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरविरचितेद्वादशोध्यायः॥१२
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्हैहैअबवच्छाहरन । ब्रह्माचित्तविचार ॥ काज
प्रतिच्छाकृष्णकी । भूमिउतारनभार ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकसमयसुषदरविसुता
तीर ॥ वछरानिचरावतउभयवीर ॥ बनिसंगसषाबहुगोपवाल ॥ रसरत्तरमतवानीरसा
ल ॥ बहुकरतबाललीलाविनोद॥ पुनिबढताचित्तनानाप्रमोद ॥ क्रीडाश्रमभौमध्यान्हाका
ल ॥ बैठेमिलिमंडलग्वालबाल ॥ जबभयौछाककोसमयजानि ॥ अपअापसुपंकतिबै
ठिआनि ॥ दौनाभरिविंजनविविधदीन ॥ क्रमजुक्तसबनिआहारकीन ॥ ॥ दोहा ॥
॥ कृष्णहिभईअवेरकछु । भोजनकरतसुभाइ ॥ बछराजमुनाकछाबिच । चरतहुताचत
चाइ ॥ २ ॥ ताकतहुतौविरंचितहां । पूजीघातप्रमान ॥ हठिकीनोबच्छाहरण । हितसु

निहारिनिहारि ॥ बहुखौएकसमयविहरतवन ॥ गएसरोवरतटबालकगन ॥ मोटोइकबगु लातासरमहँ ॥ बैठ्योतीरदुष्टताकततहँ ॥ तहँभएबालकवच्छतृषातर ॥ सीतलजलपीनो अतिसुंदर ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ विस्मयभयेविहंगविशेष्यौ ॥ षगऐसौअबलौंन हिदेष्यो ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ याहीविचबलदाऊआए ॥ संगकृष्णसबअंगसुहाए ॥ भयेपियतजलदोऊभाई ॥ इहांबककेढिगगएकन्हाई ॥ लीलिलयौतिहिंबकनँदलालन ॥ घाटघरनआसुरघरघालन ॥ बककोकंठजरनजवलाग्यो ॥ ततछनतिहिंमुषकेमगत्याग्यौ चाचउघारिलग्यौबकचाबन ॥ दुष्टचह्योतनचरननिदावन ॥ कृष्णाचंचपुटजुगमगेहकर ॥ बिठुरतृणाज्यौंफाख्यौनिसिचर ॥ तीरनीरद्वैभागाविहंगतन ॥ बालविलोकितपरेअपावन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बकमाख्योटाख्योविघन । नरहरप्रभुनंदनंद ॥ प्रगटकंसउरत्रासपरि । अमरभएआनंद ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ वच्छचराइबालवृंदावन ॥ आएकृष्ण संगगृहआपुन ॥ वच्छबकासुरमरनवषान्यो ॥ जान्यौनहिनातिनहुसबजान्यौ ॥ ग्रेहग्रेहते मिलीगोपिगन ॥ आईसबैजसोदाआंगन ॥ लेतबलाइकंठलपटावति ॥ गहगहकंठसुसंग गावति ॥ वदतिमहहरिकीभागवडाई ॥ विघनउपजिसोइजातविलाई ॥ मरिमरिजातसुआ वतमारन ॥ कान्हकुंवरकोउपौरुषकारन ॥ इहांकछूयहदैवीइच्छा ॥ दुष्टनिदेतदंडमयदी क्षा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वृंदारण्यविलासवन । नितविहारनंदनंद ॥ कविनरहरउद्धा रकर । अमरवृंदआनंद ॥ ११ ॥ ॥ इतिश्रीअ॰च॰श्रीकृ॰दशमस्कं॰बारहटनरह रदासविरचितेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ बकीनामइकबहिनअसुरिषलताअधिकाई ॥ अधमबकासुरएकभयौअघदूजोभाई ॥ प्रथमबकीपूतनाजबैषलभावजनायो ॥ ताहीछि नातिहिंतहांपापफलकखौसुपायो ॥ अजगरधरदेहजुइहिंसमय, अबैअघासुरआइहै ॥ कविनरहरनंदलालकर, प्रगटकर्मफलपाइहै ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मिलिनि कसेबलदाऊमोहन ॥ सषाअनेकसंगव्रजसोहन ॥ सुंदरवछरावृंदसुहाए ॥ अपनेअप नैसबलैआए ॥ नंदघोषतैंवाहिरनिकसे ॥ विमलसरोरुहसेजनुविकसे ॥ करतविलास हासकौतूहल ॥ मिलिधावतबोलतमुषमंगल ॥ विहसतनाचतवेनुबजावत ॥ गोपकुमा रमधुरधुनिगावत ॥ सुंदरबालमदनसेसोहत ॥ मुषछविदेषिचराचरमोहत ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ इत्यादिकरतकौतुकउदार ॥ कीनौप्रवेसबनघनमुरार ॥ वनगहनधसेतब वच्छवृंद ॥ अपनैसुभाइसंजुतअनंद ॥ दिनमध्यवितीतेप्रहरदोइ ॥ व्हैछुधितबालएक त्रहोइ ॥ याहीविचविंजनछाकआइ ॥ पुत्रनिकहिजननीदियपठाइ ॥ पुनिबैठिसबैसि सुपांतिपांति ॥ भरिदौनाभाजनभांतिभांति ॥ करिजथाछाकभोजनकुमार ॥ सबग्वाल बालबैठेसुढार ॥ इहिसमयअघासुरकरिउपाइ ॥ अजगरव्हैरोक्यौपंथआइ ॥ मगमां झपख्यौतनअद्रिमान ॥ प्रतिमाजुतासजोजनप्रमान ॥ तिहिंदुष्टधख्यौउरमांझदाउ ॥ करिभगिनिभ्रातावैरभाउ ॥ सरूपदेहपर्वतसमान ॥ मुषकोशविवरकंदरामान ॥ अध अधरअवनिसौंमिलितअंग ॥ पुनिऊर्ध्वअधरनभसौप्रसंग ॥ दड्ढाकरालविकरालदंत

॥ उपमेयतासकविलहिनअंत ॥ कृतमध्यकोशघनअंधकार ॥ पावैनकहूंकछुवारपार ॥
बहुजूथजूथउठिवच्छबाल ॥ षितिचलेजातमिलिकरतष्याल ॥ अघअसुरपन्नतनदेषि
याहि ॥ चितचकितरहेसबबालचाहि ॥ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ यहकहोकहौंधौंभिया
कोइ ॥ इहिंहेतबतावहुसभरहोइ ॥ यहपर्वतहैंकोउमहाकाय ॥ पृथ्वीतेंनिकस्योहेतपाय
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मनमनतर्कवितर्कमिलि । बालकरहेविचारि ॥ प्र
भुमायाप्रेरितप्रबल । मुषतिहिंधसेमझारि ॥ १ ॥ बालकउवाच ॥ ॥ करिहैकृष्णसहाइ
कछु । निहचैभयकोउनाहि ॥ भईजपैभवतव्यता । मिलिचलियैयामांहि॥२ ॥वच्छासुरमा
स्योविषम । दुष्टअसुरबकदेह ॥ करिहैंतेईकृष्णकछु । इनहिनदुर्गमदेह ॥ ३ ॥ छंदपधरी ॥
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिंसमयकृष्णपुनिइहांआइ ॥ सबबालधसेदेषेसुभाइ ॥ प्रभु
कस्योकृष्णआपुनप्रवेस ॥ अषिलेसविश्वरक्षकअशेस ॥ मुषरोकिसर्पकोसर्पमार ॥ करिज
तनतहांजसुदाकुमार ॥ अजगरमुषसंपुटजटितआइ ॥ सुरनासस्वासरुंधितसुभाइ ॥ नि
जब्रह्मरंध्रफूट्योनिदान ॥ पन्नगकेतिहिंमगगएप्रान ॥ पापीमरिअसुरइहिंप्रकार ॥ कृत
अमरवृंदजयजयाकार ॥ वजिइहांदेवदुंदुभिविशेष ॥ आकासकुसमवरषाअसेष ॥ विच
उदरबचाएवच्छबाल ॥ करिसुधादृष्टिमोहनकृपाल ॥ निकसेतहांविहसतनंदनंद ॥ वनि
पाछेवछराबालवृंद ॥ इहिरूपकृष्णप्रभुनिकसिआइ ॥ सबकालग्वालबालकसहाइ ॥ जो
हुतीअसुरमहदेवजोति ॥ बलविक्रमताहीहेतहोति ॥ वहजोतिनिकसितबगइअकास ॥
पुनिभयौतासपूरनप्रकास ॥ सोइजोतिउलटिनभतेसमूल ॥ तबआईउलकापाततूल ॥
इहिंभांतिकृष्णमहँमिलीआइ ॥ संपारवज्यौंघनमहँसमाइ ॥ करकृष्णहतेजेदुष्टकोइ ॥
हरिमांझरहेएकत्रहोइ ॥ दनुदुष्टविजयकरिकृष्णदेव ॥ अषिलेसग्रेहआएअजेव ॥ वन
चरितकहेलरिकनिबनाय ॥ रसअदभुतउपज्योनंदराय ॥ बालहिउरलावतिवारवार ॥ अरु
करतिदानजननीअपार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदजसोदाकेनिषिलल । औरपुराकृतकोइ
॥ ब्रजमँहजोउपजतविघन । नासहिपावतसोइ ॥ ४ ॥ वीतेइहिंविधिषटवरस । सैसव
वयघनस्याम ॥ प्रभुनरहरदइवतप्रगट । करेसपूरनकाम ॥ ५ ॥ अघासुरमास्योअधम
। राषेवछराबाल ॥ प्रभुनरहरपूरनपुरुष । देवानिदेवदयाल ॥ ६ ॥ इतिश्रीअवतारच
रित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेद्वादशोध्यायः॥१२
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्हैहैअबवच्छाहरन । ब्रह्माचित्तविचार ॥ काज
प्रतिच्छाकृष्णकी । भूमिउतारनभार ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकसमयसुषदरविसुता
तीर ॥ वछरानिचरावतउभयवीर ॥ बनिसंगसषाबहुगोपवाल ॥ रसरत्तरमतवानीरसा
ल ॥ बहुकरतबाललीलाविनोद॥ पुनिबढतचित्तनानाप्रमोद ॥ क्रीडाश्रमभौमध्यान्हाका
ल ॥ बैठेमिलिमंडलग्वालबाल ॥ जबभयौछाककोसमयजानि ॥ अपआपसुपंकतिबै
ठिआनि ॥ दौनाभरिविंजनविविधदीन ॥ क्रमजुक्तसबनिआहारकीन ॥ ॥ दोहा ॥
॥ कृष्णहिभईअबेरकछु । भोजनकरतसुभाइ ॥ बछराजमुनाकछबिच । चरतहुताचेत
चाइ ॥ २ ॥ ताकतहुतोविरंचितहां । पूजीघातप्रमान ॥ हठिकीनोबच्छाहरण । हितसु

रकाजसुजान ॥ ३ ॥ कृष्णबछासुधिलैनकहँ । इहांआपुनचलिआइ ॥ तहांनपाएवच्छते । सोचतभएसुभाइ ॥ ४ ॥ तबब्रह्माआयौतहां । जहांसषासबजानि ॥ बालहरेतेऊ बहुरि । प्रगटअशेषपिछानि ॥ ५ ॥ उहांनबछराबालइहां । पायेकृष्णकृपाल ॥ अब देवीमायाअगम । प्रेरीब्रजप्रतिपाल ॥ ६ ॥ बैसेईतादृशअषिल । बछराबालकवृंद ॥ सबअपनेपरिकरसहित । कीनैबालमुकुंद ॥ ७ ॥ मातपितासोंहितमिले । वैसेईसबआन अद्भुतइछाआपनी ॥ प्रभुसोइकरीप्रमान ॥ ८ ॥ वछराराखेएकबिधि । वासुरदिव्यदुराइ॥ संकरषनहूंतासमय । पैसोइमर्मनपाइ ॥ ९ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ विबुधनिकोजबवीत्योवासुर ॥ इहांआएब्रह्मातबआतुर ॥ तनघनस्यामकमलदललोचन ॥ मुरलीपानमदनमदमोचन ॥वसनकँबरियांवेत्रवृषाना॥ निरषेमोहनरूपनिधाना॥ग्वालमंडलीमिलिमिलिगावत॥ विहितबाँसुरीमधुरबजावत॥ हैकोउद्रुमचढिबछराहेरत ॥ फिरिफिरिलटुवाचकरीफेरत ॥ सरिताकच्छनिवछरासोहत ॥ मिलिधावतमारुतगतिमोहत ॥ चहुघांलरतचरताचितचाइनि ॥ सोभतषेलतआपसुभाइनि ॥ तेइवछराव्रजबालकतेते ॥ जातसरोजहरेहेजेते ॥ ॥ पुनिवेइहांविरंचिपिछानै ॥ आपहरेहेतेउतहँआनै ॥ दुहुंघांजूथदेषिविधिदोऊ॥ कृत्रिमकहेजातनहिंकोऊ ॥ प्रतिमावयसभेदनहिंपावत ॥ विधिमनतर्कवितर्कवढावत ॥ वारवार प्रतिमाहिविलोकत॥रह्योकमलभूपलकनिरोकत ॥ ब्रह्माअंतरभावविकासे ॥ सोसबकृष्णमईआभासे ॥ दिव्यदृष्टिब्रह्माजबदेष्यौ ॥ विश्वमूलश्रीकृष्णविशेष्यौ ॥ मोहनकेप्रतिरोमनिमंडित ॥ अषिलतहांब्रजमंडअषंडित ॥ प्रतिब्रहमंडचराचरप्रानी ॥ षेचरभूचरचार्योषानी ॥ आदिब्रह्मसुरसंकरआसुर ॥ पंचभूतपच्चीसप्रकृतिपर ॥ अषिलविभूतिभोगद्विजदेवा ॥ सबैरहतआईसबसेवा ॥ जोतिचक्रमहदादिकजेते ॥ कालकर्मकारनभवकेते ॥ महाविलोकदईवीमाया ॥ छनकब्रह्मपरपरीसुछाया ॥ भयोमोहवसचैतनभूल्यौ ॥ लहरिअज्ञानसमुद्रहिझूल्यौ ॥ आपुनसुधिबुधिरहीनऐसी ॥ जगकीरचनादेषीजैसी ॥ अषिलप्रपंचविलोक्योअद्भुत ॥ सात्विकभावभयोवारिजसुत ॥ इहांविरंचिभयौजबआतुर ॥ स्यामदयालभएरक्षकसुर ॥ मायाविषमनिवारीमोहन ॥ चेतभयौतिहिंछिनचतुरानन ॥ दृष्टिउघारिब्रह्मजबदेष्यो ॥ वहैजुवृंदारन्यविशेष्यो ॥ सरिताकुंजपुंजवनशोभा ॥ लहरितरंगकमलवनलोभा ॥ नाचतमोरमदनमदमाते ॥ कलरवकोकिलगनकुहकाते ॥ भावअनेकविहंगमभाषा ॥ सोभातरुप्रतिसाषासाषा ॥ वनवनजंतुअनेकविहारत ॥ गुहागुहामृगपतिगुंजारत ॥ फलअमृतमयतरवरफूले ॥ लतामाधुरीमधुकरझूले ॥ बांदरवृंदअनंदबढावत ॥ इकद्रुमझंपिअवरद्रुमआवत ॥ इत्यादिकवनशोभाअनगन ॥ चिततहँमग्नभएचतुरानन ॥ महाग्वालमंडलविचमोहन ॥ अतुलिततनछविप्रफुलितआनन ॥ आदिनमध्यनहींअवसाना ॥ जगकरताहरताविधिजाना ॥ पूरनपुरुषनंदसुतपरष्यौ ॥ हेतविचारिविधाताहरष्यौ ॥ रचनादेषिब्रह्मअनुरागे ॥ पाइप्रतीतिप्रेमरसपागे ॥ ढरतनयनआनँदजलधारा ॥ भौअद्भुतरसरोमउभारा ॥ कमलसुवनपदवंदनकीनौ ॥ लालउठाइलाइउरलीनौ ॥ हरैहरैचितवतहरिमांही ॥ अचवतछबिनहिंनयनअघांही ॥ ॥

विधिरुवाच ॥ ॥ विनयसहितबोलेविधिवानी ॥ प्रभुमहिमामैंनहिनपिछानी ॥ साप
राधहूंत्रिभुवनस्वामी ॥ जगकरतातुमअंतरजामी ॥ देवउचितमोहिदंडसुदीजे ॥ कार
नकरनविलंबनकीजे ॥ हूंअग्यानअबुधअपराधी ॥ सठतवमायाचाहतसाधी ॥ अग्नि
तैंकणिकाउछलिअपारा ॥ वन्हिदिषावतज्यौंविसतारा ॥ वारुपादहतजाकेबढै ॥ चलिता
हीकेसिरपरचढै॥ त्यौंहीमैंअज्ञानतुह्मारी ॥ लैनपरीक्षाबुधिविस्तारी ॥ममबलविक्रमसक
लविलाए ॥ राषहुत्राहित्राहिजदुराए ॥ मैंदुर्मतिवसहरेमुरारे ॥ तेइएबालकबच्छतुह्मारे ॥
सबैसंभारिलैहुअबस्वामी ॥ जुतपरिकरजगअंतरजामी ॥ दोहा ॥ करिकरिवंदनप
रिक्रमन । ब्रह्माभक्तिविधान ॥ अतुलकृष्णछविधारिउर । भएसुअंतरध्यान ॥ १० ॥
आएवछराबालले । संध्याग्रहघनस्याम ॥ क्रीडाकौतूहलकरत ॥ मनवंछितअभिराम ॥
११ ॥ मातपितासुतहेतमिलि । पूरवजथाप्रकार ॥ वछरावाछीधेनवन । वर्ततप्रेममविहा
र॥ १२ ॥ इहिविधिवच्छाहरनवन । कस्यौविरंचिविकार ॥ नरहरप्रभुमायानियत । पायो
तदपिनपार ॥ १३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहट
नरहरदासविरचितेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ब्रह्मस्तुति ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ महिमाकृष्णअमेवनिरषथ
किरह्योअजोनिज ॥ सघननीलतनस्यामपरमकरुनादृगपंकज ॥ विमलबदनकचवक्र
कर्णमंडितचलकुंडल ॥ भृकुटिभावभूवभंगलसितमनुअलिसुतचंचल ॥ आमोदस्वास
नासाअतुल, अरुनअधरदाडिमदशन ॥ सोभाअभूतनरहरसुप्रभु, मोहतमहामनोजम
न ॥ १ ॥ कंबुकंठमृगराजकंधभुजजानुप्रलंबित ॥ उदरेरेषसोभाअभूतउन्नतउरआयत
॥ बनिनितंबभरविहितकदलिजंघाकटिकेहरि ॥ चरनसरोरुहनषररत्तकृतचालमत्तकरि ॥
कमलाउरोजकुंकुमकलित, करपल्लवमर्दनकरे ॥ सषभांइहोहुकहिकमलसुत, हितममप
दपंकजहरे ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वनधातचित्रमंडितविचित्र ॥ तरुतरलपत्रवेजं
तितत्र ॥ शुभशिषिशिषंडशिरमुकटसोह ॥ अँगअंगउचितभूषनअरोह ॥ आभानव
नीरदनीलअंग ॥ समवसनपीततडितासुरंग ॥ उद्धारमूलअवतारएह ॥ दुषदेवहरनध
रिमनुजदेह ॥ अपराधमोहिछमियेअनंत ॥ कृतकारनकरनजुरमाकंत ॥ यहदेहधस्यो
ममहितउदार ॥ शिष्यामोहिदीनीभक्तिसार ॥ पावैनहिमहिमावारपार ॥ पचिमरैजद
पिमोसेअपार ॥ दुषसाध्यजोगमषतपदुरंत ॥ आवैनहिइनकोकहूंअंत ॥ तजिप्रानअ्रा
नसाधनअनेक ॥ अनुसरैचित्ततवचरितएक ॥ सुषसाध्यप्रानउद्धारसोई ॥ कृतगावैव्र
जलीलाजुकोई ॥ एचरिततुमारेआदिअंत ॥ सुषलहैध्यानकरिपरमसंत ॥ उद्धारमूलसा
धनाएह ॥ हठिमरतजोगकरिदमितदेह ॥ वयबालतिहारेव्रजविहार ॥ सोइगीतआहि
उद्धारसार ॥ करिश्रद्धागावहिजपैकोइ ॥ सुषवंछितपावैसाधुसोइ ॥ कछुनाहिज्ञानविज्ञान
काज ॥ आचारविचारनहेतआज ॥ करिनिर्गुनसाधनपचैकोइ ॥ सूनौअकासपावैनसोइ
जाकैनरूपरेषानरंग ॥ पुनिक्रियाकर्म्मसंगनप्रसंग ॥ मनकर्मअगोचरबचनमूल ॥ सा
धैकहाप्रानीसानुकूल ॥ निर्धारपारनिर्गुननिदान ॥ पावैनकछूपचिमरैप्रान ॥ परहरहि

धानकूटहिपराल ॥ कनहाथनलागैकिहूंकाल ॥ तजिभोगजोगसाधैजुतंत ॥ आगैअनेक पचिमरेअंत ॥ हठिहूंअसाध्यलषित्रसितहोइ ॥ पुनिसगुनउपासीभएसोइ ॥ तिनलह्यो सुलभअतिसगुनतंत ॥ सुषभयेमुक्तजीवनसुसंत ॥ अवतारललैतातैंअजेव ॥ दुषभू तहरतदेवाधिदेव ॥ तुमसगुनरूपमारगबताय ॥ करिदेतसुगमउद्धारकाय ॥ ॥ छंदद्वि अक्षरी ॥ धन्यसुरभिएजिनसंगधावत ॥ चितहितलावततुमजुचरावत ॥ लैलैनामदुहत तुमनिजकर ॥ सगुनसरूपस्याममनसुंदर ॥ जिनकीकृपालोकत्रयजीवत ॥ तेइतुमढाक पातपयपीवत ॥ गोपीधन्यनिगमयौंगावत ॥ कृष्णहिजोपैटहलकरावत ॥ सषाधन्यएषे लतसंगनि ॥ पलपलझगुरतप्रीतिप्रसंगनि ॥ महरिजसोदाधन्यजुमइया ॥ बदनविलोक तिलेतबलइया ॥ पयकुचपानपिवाएपोषे ॥ सुतकेभाइलडाइसंतोषे ॥ महरनंदकीधन्यक माई ॥ कहियतजाकेकुंवरकन्हाई ॥ व्रजगोपनिकेपुन्यविचारी ॥ होतजुतुमसौहितूविचा री ॥ धन्यधन्ययहव्रजकीधरनी ॥ वेदचरनतबअंकितवरनी ॥ प्रभुयहधन्यउठतपदपंक ज ॥ ऋषिवामापावनभइजिहिंरज ॥ तेहिवनधन्यधन्यसोइतरवर ॥ बैठेजिहिंछायासुंदर वर ॥ जमुनापुलिनधन्यतेजानै ॥ मोहनजहांविहरतमनमानै ॥ विहगधन्यतेइपसुवनवा सी ॥ निरषतजिनहिकृष्णअविनाशी ॥ सरवरधन्यकमलवनसोभा ॥ लालकरतक्रीडाज ललोभा ॥ वारिदधन्यजुव्रजपरवर्षै ॥ हेरितिनहिनँदनंदनहर्षै ॥ धन्यघटाबादरमिलिधा वत ॥ इतउततेवृंदावनआवत ॥ वहतसमीरधन्यवृंदावन ॥ प्रतिदिनकरतकृष्णपदपरसन ॥ जेव्रजधन्यचराचरजानै ॥ वर्तमानइहिंकालबषानै ॥ प्रभुहुंधन्यदरसनजिहिंपायौ ॥ भयौ सबैमेरोमनभायौ ॥ कृपानिधानकृपायहकीजे ॥ देवभक्तिदृढमोकहँदीजे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कमलजातअस्तुतिकरी । धरीसुछबिउरध्यान ॥ कविनरहरवर्णनकर्यौ । जथासक्तिहित जान ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहर दासविरचितेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथश्रीकृष्णगौचारनोद्यम ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ बालद साबीतीजुतविभ्रम ॥ इहांकिसौरबैसभयोआगम ॥ यहअभिलाषकृष्णमनआयौ ॥ सु पैजसोदामातसुनायौ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ हूंमइयाअबगाइचरैहूं ॥ हितकरिसंग सषासबलैहूं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांनंददइवझबुलाए ॥ पंचअंगसुधलगनपुछा ए ॥ भूषनवसनविचित्रविराजे ॥ विहितनिसानसमंगलबाजे ॥ गीतजुवतिमिलिउच्छव गए ॥ सुषदआरतीकलससजाए ॥ कुंकुमतिलकद्विजनिशुभकीनै ॥ दिव्यअवेधसुमुक्तादीनै ॥ ॥ प्रगटहोमद्विजमंत्रपढाए ॥ पुनिगौदानबहुततिनपाए ॥ इहिंविधिकृष्णगवनवनकीनै ॥ लरिकासंगसषासबलीनै ॥ गोधनवृंदवृंदकरिआगे ॥ पाछेग्वालप्रेमरसपागे ॥ किंकिनि हेमरूप्यमयकीनी ॥ बनीसुगाइनिकंठनवीनी ॥ घनरवबाजतघंटाघूंघर ॥ झमकझम कचरननिसुरझंझर ॥ शृंगनिषोलकनकमयसाजी ॥ वरनउचितकोउतारविराजी ॥ वि चरतचहुघांगोधनवृंदं ॥ ऐसेइसुंदरग्वालअनंदं ॥ तैसियकछनीपटमयकाछे ॥ ओपित सीसचंद्रिकाआछे ॥ लोईरंगरंगमयराजत ॥ तैसेइबंसमधुरधुनिबाजत ॥ धरिकरकरनि

ग्वालमिलिधावत ॥ गाइनिहेरीदैदैगावत ॥ मल्लत्राथकोउभिरतमहाबल ॥ दावविदाउ
करतमोरतहल ॥ वृषभलरतकहुंअतिबलबाढे ॥ गरजतकहूंतडूकतगाढे ॥ सरिताकच्छ
स्वच्छअतिसोहत ॥ मिलिषगजूथजूथमनमोहत ॥ सरसरविकासिसरोजसुहाए ॥ भ्रमत
समूहमधुपमनभाए ॥ बानीमधुरकोकिलाबोलत ॥ तंडवकरतमयूरकलोलत ॥ लतातरल
तरतरुलपटानी ॥ सबऋतुफूलतफलतसुहानी ॥ सीतसुगंधमंदचलिसुंदर ॥ त्रिविधस
मीरअलिंगिततरुतर ॥ इहिंविधिषेलतहसतसुबोलै ॥ करतजातवनग्वालकलोलै ॥
धावतदूरिजातजबगोधन ॥ हेरीदेतबुलावतमोहन ॥ ग्वालतरलतरचढिचढिगावत ॥
वसनभ्रमावतबंसिबजावत ॥ नामसुरभिकेलैलैनिर्मल ॥ बोलतबालगुपालमहाबल ॥
हेपीयरकाजरहितकारी ॥ मैनमजीठीप्रानपियारी ॥ हेगंगेगोदावरिगोरी ॥ हेचांवरिसोभा
चितचोरी ॥ हेहेधोरीधूमरिधन्या ॥ पुनिइत्यादिकअन्याअन्या ॥ याविधिलैगोधनइ
हिंअवसर ॥ सघनकुंजमहँआएसुंदर ॥ पथकेचलतमहाश्रमपाए ॥ इहांनिकुंजपुंज
महँआए ॥ फैलीचरतधेनुवनाफिरिफिरि ॥ घनतरुछायाआवतिघिरिघिरि ॥ मिलिमिलि
ग्वालबालकरिमंडल ॥ बैठेचहुघांजूथमहाबल ॥ सबनिवीचमधनाइकसोहत ॥ हितब
लभईकृष्णमनमोहत ॥ वृक्षनिछायातल्पबनाए ॥ वरनवरनहीपुहपबिछाए ॥ श्रीदामा
केगोदधरेसिर ॥ वनविश्रामकरयोसुंदरवर ॥ कान्हूसषाअंकपदकीनै ॥ देवदेवसोवतसुष
दीनै ॥ सषापलोटतचरनसभागे ॥ लक्षणचिन्हविलोकनलागे ॥ महाहरषउरनहिनस
माई ॥ परमअभीतमनहुंनिधिपाई ॥ करीतल्पबलदेवसकोमल ॥ पल्लवपुहपविकासि
तपरमल ॥ सबैसषाचहुंओरसुभाइन ॥ मिलिमिलिसयनकरेमनभाइन ॥ इहांकछुक
सज्याअनुरागे ॥ जागेसषाकृष्णबलजागे ॥ तहांउठ्योश्रीदामाआतुर ॥ ततछनचढ्यो
जाइऊंचेतर ॥ गाइनिषोजकरतअनुरागे ॥ लैतहांबंसिबजावनलागे ॥ हेरीदेगाइनिदि
सहेरत ॥ तहांसषनिनाऊंलैटेरत ॥ इहांतालवनपवनजआए ॥ सौरभलैफलपक्क
सुहाए ॥ श्रीदामासुतालवनसुंदर ॥ गंधद्वारकरिलष्योअगोचर ॥ उतरितबैश्रीदामा
आयो ॥ सबैतालवनमर्मसुनायो ॥ इहांतैनिकटतालवनहैइत ॥ उपजततहांअमृत
फलअद्भुत ॥ ॥ **श्रीदामाउवाच** ॥ ॥ जौबलदेवतालवनजइयै ॥ षुधालगीहै
तेफलषइयै ॥ ॥ **सषाउवाच** ॥ ॥ बहुरयौंएकसषातबबोल्यौ ॥ दारुनभयमान्यौ
चितडोल्यौ ॥ वहिवनमांझवसतहैआसुर ॥ धेनुकनामापापधुरंधर ॥ सकुलरहतहैति
हिवनसोइ ॥ जंतुविनासैषावतजोई ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ यहसुनिकृष्णवीरअनु
रागे ॥ लैकरवेत्रतिहींमगलागे ॥ यौंहीरमततालवनआए ॥ पकेमधुरवरवनफलपा
ए ॥ हाथनिधरिधरिवृक्षहलावत ॥ षितितेचुनिचुनिबनफलषावत ॥ बिहसिबिहसितरु
धुनतमहाबल ॥ व्हैरह्योशब्दमहाकोलाहल ॥यहसुनिधेनुकअघनिअघायौ ॥ अतिरिस
हियौजरतसौआयौ ॥ षरकोरूपकरयौतिहिषेचर ॥ आयोधेनुकनामाआसुर ॥ धसकत
धरनिचरनहतधमधम ॥ आकुलभएषरासुरआगम ॥ भयकरिव्योमविमानभगाए ॥
परीत्रासउरअमरपलाए ॥ याहीदिसबलहुतेजुआगे ॥ उभयवीरअतिरसअनुरागे ॥

आंकुरिपरीदुहूंद्दगएँसें ॥ जुगममतंग अगडतजिजैसें ॥ इहांषलनिकटषरासुरआयौ ॥ पापीदावयहैतवपायौ ॥ पिछलेचरनदुलातप्रहार्‍यौ ॥ पकरिलएपगअसुरपुकार्‍यौ ॥ महावीरबलगगनभ्रमायौ ॥ पटक्यौधरनिहिपंचतुपायौ ॥ मर्‍यौषरासुरमनमुरझांनें ॥ आएषरसमूहअकुलानें ॥ पकरिपकरिषरधरनिपछारे ॥ दसहूदिसाढेलसेडारे॥कुलधेनुकनिर्मूलितकीनौ ॥ दाऊबलग्वालनिसुषदीनौ ॥ लैलैकृष्णसुकंठलगाए ॥ पाएविजयविषानबजाए ॥ इतउतग्वालबालसबआए॥पर्‍योअसुरदेषतसुषपाए॥ विहसतहसतचलेवृंदावन ॥ ग्वालपृष्टिधरिआगेगोधन॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥सुरभीरजरंजितवर्णस्याम॥ करिसमतालज्जितहोतकाम॥ इहांमातजसोदासमुषआइ॥ शुभवसनवदनपौंछतसुभाइ ॥ बलरामस्याममज्जनबनाइ॥सबविविधवसनभूषनसजाइ॥इहांधरेथालभोजनसुआनि॥परुसातितहांमाताआपपानि ॥ तबकहतसषाधेनुकवृतंत॥ बलभद्रकर्‍योजिहिंअसुरअंत ॥ पुनिनंददानकीनेअपार ॥ करतारभएरक्षककुमार॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धेनुकआसुरचरनधरि। दुष्टहत्यौबलदेव ॥ घरघरभएउछाहघन॥ आएकुंवरअजेव॥ ॥कवित्त ॥ ॥ प्रथमदिवसब्रजराजपुत्रचलिधेनुचरावन ॥ ग्वालबालमिलिसषासंगभ्रातामनभावन ॥ इहांतालवनआइविविधविधभ्रमविस्तार्‍यौ ॥ पकरिपाइधरपटकिमहाआसुरषरमार्‍यौ ॥ कीनीसुकीर्तिनरहरसुकवि, अतिसुप्रेममनअनुसरीय॥ बलवीरकृष्णहठितालवन, क्रीडानिहकंटककरीय ॥ १ ॥ इतिश्रीअव०श्रीकृष्णा०दशमस्कं०बारहटनरहरदासविरचितेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वृंदावनकीसीमविच। कालिंदीकेकूल ॥ हैतहँदीर्घअगाधदह। सबसुषदानिसमूल ॥ १ ॥ तिहिंथलकरतअषंडतप । सौभरिनामऋषेस ॥ जपतपसंजमनियमजुत। वर्जितकामकलेस ॥ २ ॥ एकसमयषगपतिषुधित । इहिंदहनिकस्यौआइ ॥ पर्‍यौदृष्टिलीनौपकरि । इहांमीननिकौराइ ॥ ३ ॥ मुंचमुंचकहिमीनकौं । जोलगिसौभरिजानि ॥ गयोनिगलतोलौंगरुड । मच्छमहाभषमानि ॥ ४ ॥ वहैसफरपचिगोउदर । जठरानलमहँजाइ ॥ समयवितीतेसुरनिहूं । पैनहिंचलतउपाइ ॥ ५ ॥ ॥

सौभरीउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सौभरिमुनिदीनौमहाश्राप ॥ अतिदयासरनहितजानिआप ॥ इहिंठोरहतेकोउजीवआइ॥ सोतबैइहांमारिहैसुभाइ ॥ सौभरिइहरष्यादईसंत ॥ प्रतिदिसाएकजोजनप्रजंत ॥ यहभयौसुरक्षितदहअभीत ॥ सुषवसतजंतुजलघामसीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सर्पकुलीअरुगरुडसौं। जातिवैरजगजानि ॥ बाढतदिनदिनक्रोधवस ॥ महाउपद्रवमानि ॥ ६ ॥ मिलिअहिरमणकदीपमहँ। जदपिवसेसबजाइ ॥ कठिनमहाभयगरुडको ॥ सोनहिहियैसमाइ ॥ ७ ॥ जितेकपायैगरुडजहां ॥ तितेहतेतिहिकाल॥ उरगबलीजेयेअबल॥ बाचैवृद्धनबाल ॥ ८ ॥ मारैबहुतअकालमिलि ॥ तहांथोरेकलुषात ॥ नागनिकेघरघरनिषिल ॥ विषमभइयहवात ॥ कर्‍योतबैमिलिनागकुल। पुनिहितमंत्रप्रयोग ॥ संधिकरहुअबगरुडसौं। तौजीजैसुषजोग ॥ १० ॥ वैनतेयपहँविप्रवर। अहिनिपठायोएक॥ बारबारदुर्बलवचन । कीनीप्रणातिअनेक॥ ११ ॥ ॥ सर्पोक्तदूतवचन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ शस्त्रधारअरुमांसप्रगट

समताक्योंपावे ॥ दुसहमहातमदीपनिषिलछनमांझनसावै ॥ जदपिमत्तगजराजासघिंसावैं रनसज्जे ॥ गिरैकरनिवनगर्भजपैकेहरिगलगज्जे ॥ हमभक्षभूततुमभोकता, कैसैंसरभरकी जियै ॥ करिदयागरुडअहिकुलनिकौं, देवअभयअबदीजियै ॥ २ ॥ सर्पएकप्रतिमासहेत अहारजुएहै ॥ नवैकुलीमिलिनागसबनिहमहींसमझैहै ॥ विहितवचनबंधानदुसहअ हिगनजबदीनौ सोप्रमानमानीषगेसअंगीकृतकीनौ ॥ ताहीक्रमतरुवरदीपतट, एकएक अहिआइहैं ॥ विषमुषसबरमणकदीपवसि, इहिविधिवंसबचाईहैं ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ यहकरिनागदूतफिरिआयौ ॥ पुनिनवकुलीसुनिर्भयपायौ ॥ एकएकप्रतिमासजुआवै ॥ षगपतितहांपनगसोइषावै ॥ नवकुलमहँइककालीनाग ॥ भयनहिमानैदेइनभाग ॥ जाकेशतफनद्वैशतजीह ॥ अतिविषमहाबलीअनबीह ॥ अ पनौभागनाहिंपुंहचावै ॥ पुनिषगेसकेभागहिषावै ॥ याकीबारीषगपतिआयौ ॥ पैअपनौ बलिअंसनपायौ ॥ तिहिछनगरुडक्रोधाकियतैसो ॥ जगतप्रलयकारकहैजैसो ॥ जबनाग नियहकारनजान्यो ॥ पंषिराजसौमर्मप्रमान्यो ॥ ॥ सर्पोवाच ॥ ॥ हैषगराजनदोषह मारो ॥ यहकालीकोचरितकुचारो ॥ षेलसुघरजानीकोषेलै ॥ पैषगधारकंठधरिपेलै ॥ प्रभु हमसौंकछुदुषजनिपावौ ॥ सर्पधर्मवांकौसमझावौ ॥ विषधरसबयहभेदबतायौ ॥ पुनिकाली अपराधीपायौ ॥ इहांगरुडकालीकैआयौ ॥ शतफनमांडिदुष्टसमुहायौ ॥ द्वैसतलोचनताके दारुन ॥ सोवरषतमनुअनलसकारन ॥ लहलहाजीव्हापुनिविषज्वाला ॥ क्रमद्वैशत अतिदंतकराला ॥ विषमजुद्धभौतारषविषधर ॥ चकितभएभवभूतचराचर ॥ वाम पंषहिममयविस्तार्यौ ॥ मुषपरगरुडभुजंगममार्यौ ॥ भ्रमितभयौतबकालीभाग्यो ॥ लषेसंगषगराजनलग्यौ ॥ अहिकालीवृंदावनआयौ ॥ पैसोदहनिर्भयथलपायौ ॥ मन निःसंकवस्यौफनमाली ॥ कहियतसोतबतेदहकाली ॥ विनुसंकातहांरहैमहाविष ॥ चढैगर लजलदेषतहीचष ॥ याकेजोइनिकसैंषगऊपर ॥ अतिविषचढैगिरैसोइआतुर ॥ जलकीछींट लगैजबजाके ॥ ततछनदग्धहोततनताके ॥ जिहिंजलकीमहिमायहजानी ॥ पानकियैकाक हिवोप्रानी ॥ महादुष्टविषमयफनमाली ॥ कुटुंबसहितरहैतहांकाली ॥ सौभरिश्रापजुसंका पावै ॥ यादहगरुडनतातैंआवै ॥ जमुनादहमैंकालीजबतैं ॥ तारषत्रासआनिरह्योतबतैं ॥ जोजनजोजनचहुधांजेते ॥ तिहिंविषजरेचराचरतेते ॥ द्रुमकदंबइकतहांनडाढ्यौ ॥ विम लतरलपल्लवफलबाढ्यौ ॥ ताकदंबकोसुनहुवृतंता ॥ आगैकिहूंकलपकेअंता ॥ कठिन सुरासुरक्रीडाकीनी ॥ निकमैंउपजीबुद्धिनवीनी ॥ भुजाभुजानलगीजबभारी ॥ चित्तमां झयहबातविचारी ॥ कठिनमथानीपयनिधिकीजै ॥ लाभरतनचौदहतबलीजै ॥ क्रममं थानजथाविधिकीनौ ॥ निकासिसुधाघटप्रथमनवीनौ ॥ दिव्यकुंभसोगरुडहिदयौ ॥ भय तजिजातगगनमगभयौ ॥ इहांनिकस्योवृंदावनआई ॥ श्रममगताकौंभयौसुभाई ॥ या कदंबपरबैठ्योआनी ॥ महासुषदजमुनातटमानी ॥ अमृतप्रभावभयौद्रुमयाकौ ॥ तरल गरलझललगीनताकौ ॥ आसपासतरुजरेअनेका ॥ यहैफलितफूलितरह्योएका ॥ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ धरिअग्रदिवसइकजूथधैन ॥ चलिग्वालबालवनिचित्तचैन ॥ वनपं

थसमातनधेनुवृंद ॥ इहांचलीडगरिजितिततिअनंद ॥ पाछैनवीचकहुंनीरपाइ ॥ याही
दहभावीजोगआइ ॥ निर्दोषकरनयहदहनिदान ॥ प्रभुइच्छाकछुऐसीप्रमान ॥ बहुभए
तृषातुरधेनुबाल ॥ तिनपियोयहैजलताततकाल ॥ विषचढ्योसुरभिगोपालवृंद ॥ दृढपरे
सबनिकहकालफंद ॥ करिभोजनपुनिजसुदाकुमार ॥ विनदाऊगवनैवनविहार ॥ तरल
तातरलकुसमितितमाल ॥ मिलिमदनमत्तभ्रमिभ्रमरमाल ॥ देषतवनसोभाकृष्णदेव ॥
जमुनादहआएतिहिअजेव ॥ कालीदहकेतटग्रसेकाल ॥ बहुपरेविलोकेधेनबाल ॥ करि
सुधादृष्टिचिंतएकाम ॥ सबउठेकहतघनस्यामस्याम ॥ ॥ ग्वालवाक्यं ॥ ॥ जलपि
येसबनिहमलषाजानि ॥ अबकृष्णजिवाएतुमहिआनी ॥ याजलमहँहैंकोऊअरिष्ट ॥ आ
गैसुनिजान्यौहमअनिष्ट ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ सुनिनंदनंदबोलेसकाज ॥ यहनीरक
रौंनिर्दोषआज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुभकिंकिनिमानिगनमयसमेटि ॥ पटपीतबस
नकटितटलपेटि ॥ उहिकदँबासिषरपरिचढिउलाह ॥ अविलोकिनीरतहांअतिअथाह ॥
पुनिलईझंपपौरुषप्रमानि ॥ जलजंतुवज्रआघातजानि ॥ शतधनुषनीरचहुदिससुभाइ ॥
पसर्‍यौअगाधअवकासपाइ ॥ अवगाहसलिलगजमत्तओप ॥ कैधौंमंदराचलिकृष्णको
प ॥ कोलाहलसुनिचहुघांकराल ॥ कालीसुजग्यौमनुप्रलयकाल ॥ रसनासचालज्वाला
जुनैन ॥ फुंकारशब्दमुषगरलफैन ॥ अरसातअंगमोरतअभीत ॥ उफनातरोसआयौ
अनीत ॥ इहांकृष्णबालअविलोकिएक ॥ अहिबढ्योगरलअरुबलअनेक ॥ लीनौलपे
टितननंदलाल ॥ करिकोपमहाकालीकराल ॥ श्रीषंडवृक्षज्यौंपनगसंग ॥ आवरितकृ
ष्णप्रतिअंगअंग ॥ ॥ ग्वालवाक्यं ॥ ॥ गृहगएभागिकोउग्वालबाल ॥ कहिकृष्ण
नागलीलाकराल ॥ हाहंतशब्दतबघोषहोइ ॥ कहाभयोकछूजानैनकोइ ॥ सबगोपनंद
आएसत्रास ॥ पावैनकृष्णकरुणाप्रकास ॥ जसुदामिलिरोहनिजुवतिजाल ॥ विलपात
करतआईविहाल ॥ बलभद्रआइतहांमहावीर ॥ तबरहेचकितव्हैसरिततीर ॥ आवरि
तसर्पतहांकृष्णआनि ॥ जलऊपरनिकसेसमयजानि ॥ यहदेषिनंदउपज्यौअचैन ॥ नि
कसैनबोलसूझैननैन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जसुदादेष्यौकृष्णजब । अहिलपटानेअंग ॥
पुनिचाहतजलमहँपरन । उपज्योसोकअभंग ॥ १ ॥ देष्यौजातनयहदुसह । सुतहम
एकैंसाथ ॥ दौरिदौरिझांपतिदुषित । हठिबलपकरतहाथ ॥ २ ॥ जिततितझांपतिव्रज
जुबति । तहांगोपगहिलेत ॥ विलपतिरोदतिअतिविकल ॥ हाहामोहनहेत ॥ ३ ॥ सु
रभीतांडतिविषमसुर । बाछीबछराबाल ॥ हाहाकबवनघनाहिमहि । लैचलिहैनंदलाल
॥ ४ ॥ वृंदाबनकेसबविकल । हैंजडजीवजितेक ॥ मिलिमिलिझांपतनीरमहँ ॥ एकनि
पकरतएक ॥ ५ ॥ देषेमोहनजबदुषित । एव्रजजीवअनंत ॥ पूरनलीलाआपनी । कर
तभएश्रीकंत ॥ ६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अहिकृष्णभयौसमहरअनंत ॥ दुहुंओरदाव
दावनिदुरंत ॥ निग्रह्योदेहअपनौनिहारि ॥ महिमाअमेयफूलेमुरारि ॥ टूटनतनलाग्यौ
पनगतास ॥ सोभयोसिथिलआवैनसास ॥ डार्‍यौउछारितबकृष्णदूर ॥ पटक्योलैतटसौ
रोषपूर ॥ इहिसमयभयोकालीअचेत ॥ मूर्छागइऊव्यौबलसमेत ॥ करिफनउभारफुंका

रकीन ॥ महिमाविलोकिभयोमनमलीन ॥ चढिगएकृष्णफनचालमाहि ॥ तहांमर्दनलागेसीसताहि ॥ अहिकमलउठतजोइजोइअमान ॥ निर्ततताऊपरबलनिधान ॥ प्रतिफनफनऊपरिनंदपूत ॥ इहांरच्योमहानाटकअभूत ॥ मिलिकरेजांजरेचरनमारि ॥ अहिसकतनहींकोउफनउभारि ॥ फनफटनलगेमुषझरतफैन ॥ नहिंसूझतमुद्रितहोतनैन ॥ मनिगिरतफननितेविषममार ॥ तहांलेतमानपदतलप्रहार ॥ अहिभएविकलजबअंगअंग ॥ भयउपज्योजान्योदेहभंग ॥ पतिकेजबनिकसनलगेप्रान ॥ मिलिआईनागनिदीनमान ॥ भयकंपदेहभूषनविभाति ॥ मनमहासोकनहिउरसमाति ॥ सूकंतअधरचढिऊर्ध्वस्वास ॥ विपरीतकालजान्योविनास ॥ वालिकाबालविललातवानि ॥ अषिलेसअग्रलैधरैआनि ॥ ॥ नागपत्नीवाक्यं ॥ ॥ कहित्राहित्राहिकीनीपुकार ॥ करियैसहायजसुदाकुमार ॥ दुरबुद्धिदुष्टकहँदंडदीन ॥ करताअनंततुमउचितकीन ॥ दुष्टकौंदेइराजानदंड ॥ अवनीअनर्थउपजेअषंड ॥ व्रजतजैनीतिअनुसरैपाप ॥ अवनीसकरैतिहिंजतनआप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विषधरेबचनसुनिसुनिविषाद ॥ प्रभुदयौइहांनिर्भयप्रसाद ॥ उतरेफनमालातैअजेव ॥ दंडहूंदयोसामर्थ्यदेव ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णकह्योहसिनागकहँ । रेपामरषलजंत ॥ ऐसेदुष्टनिकौंइहां । उचितनवासअनंत ॥ १८ ॥ ॥ कालीयउवाच ॥ ॥ तबविन्हलकालीतहां । बोल्योसमयविचारि ॥ अबतारषकेत्रासतैं । मोहिबचाउमुरारि ॥ १९ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ इहिंव्रजमंडलमैंविहित ॥ वृंदावनममवास ॥ पावनप्रगटपुरानप्रति । जपनसाधनितजास ॥ २० ॥ तातेजायअन्यत्रतूं । वसिहैसठसाविकार ॥ वृंदावनमेरौविमल । हैयहनित्यविहार ॥ २१ ॥ तामसजोनिदुजीहतूं । वयरअकाजविशेषि ॥ मरैडरस्यौतोउरक्तमुष । दंतनलोहूदेषि ॥ २२ ॥ शिरतेरेमेरेसदृश । हैपदचिन्हपुनीत ॥ तातैंतूंषगराजते । इहिंभवभयौअभीत ॥ २३ ॥ अबतूरमणकदीपअहि । वसिहैसकुलविसाल ॥ प्रभुकीआज्ञापाइपुनि । तहांगयोततकाल ॥ २४ ॥ कालीदमनजुकृष्णकी । कहिहैंलीलाकोइ ॥ ततौसंतभवसर्पतैं । हितजुतनिर्भयहोइ ॥ २५ ॥ क्रीडानंदकीसोरकी । कविनरहरजसकीन ॥ भनैसुनैताकहँभगति । बाढैनित्यनवीन ॥ २६ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातजसोदाकहँमिले । इहांमनमोहनआइ ॥ उरलाएआनंदअति । प्रानमृतकमनुपाइ ॥ १ ॥ सबैनिहारतहेतसौं । एककृष्णकीओर ॥ सुधापियावतनैनसुष । जैसेचंद्रचकोर ॥ २ ॥ मनहुकृष्णदूजैजनम । आएव्रजअवतार ॥ पाईनिधिरंकनिप्रगट । सुलभभएसुषसार ॥ ३ ॥ बडेउपद्रवतैंबच्यो । मोहननंदकुमार ॥ वेदप्रणीतजुधर्मविधि ॥ पुनिसोइभएअपार ॥ ४ ॥ धेनधुरंधरवसनघन । मनिगनरतनअमोल ॥ कोऊकछुवांछाकरत । तेइतेइलहतसतोल ॥ ५ ॥ करिकरिन्योछावरिकनक । दानजथाविधिदेत ॥ गोपीगोपगुपालगन । लाभधर्मसुषलेत ॥ ६ ॥ इहिंविधिकरतउछाहअति । भयोअस्तगतभान॥तहांनभपसर्योविषमतम।मिलिघनवनअप्रमान

॥ ७ ॥ चलिनसकैतिहिसमयचित । पंथअगमनिसिपाइ ॥ बैठिरहेजहँतहँविहित । सबहीसहजसुभाइ ॥ ८ ॥ भयौहर्षश्रमदिवसभरि । व्यापिनषुधाविराम ॥ सोइरहेतहां तहांसुषहि । करिवनतलपसकाम ॥ ९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुनिअर्धनिसाकेसमय पाइ ॥ अनजानउपद्रवबन्यौआइ ॥ चहुंओरअसुरमायाप्रचार ॥ विस्तर्‌यौअनलदुस्स हविकार ॥ व्रजभएविकलजडजीवजंत ॥ दवदाहमनहुंपसर्‌यौदिगंत ॥ अदभूतअग निलागीअकाल ॥ कृतघोषदुसहज्वालाकराल ॥ मिलिअनिलअनलचढिगगनअंत ॥ जहांतहांपुकारेजीवजंत ॥ ॥ जनवाक्यं ॥ ॥ हाकृष्णकृष्णयहवानिहोइ ॥ कहुंमात तातत्रातानकोइ ॥ कहित्राहित्राहिकूकतकराल ॥ प्रभुकृष्णराषिलीजैकृपाल ॥ कछुहम हिंनाहिभयमरनकोइ ॥ हाहाविजोगतवचरनहोइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रभुउठे इहांदगमीजिपानि ॥ जगरक्षककलपाअंतजानि ॥ इहांएकशक्तिप्रेरीअनंत ॥ दुस्सा धिअग्निपीनीदुरंत तहांजरेलतातरुत्रिणतमाल ॥ द्रगद्रष्टिसुधासींचेदयाल ॥ तरुत रलपत्रमंजरसमूल ॥ फलभारनमितबहुरंगफूल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ टर्‌यौअमंगलका लतहां । गावतमंगलगीत ॥ पुरवासीसबप्रातही । आएघरनिअभीत ॥ १० ॥ गो दोहनव्यापारग्रह । करनलगेसुषकाज ॥ जथाजथाक्रमघोषजन । महरनंदकेराज ॥ ११ ॥ महिमाकृष्णअमानुषी । दैवीशक्तिदुरंत ॥ व्रजमहँजोकोऊविघन । उपजनपाव तअंत ॥ १२ ॥ यहलीलाहरिअनलकी । कविनरहरकहैकोइ ॥ पापअनलकेपुंजमहँ । साधनपरिहैसोइ ॥ १३ ॥ कालिंदीनिर्दोषकीय । निग्रहकालीनाग ॥ कृष्णकृपातैंघो षके । भएभवभूतसभाग ॥ १४ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधा नुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ वनघनसुषदवसंतविहाई ॥ इहांक्रमजुतग्रीषम ऋतुआई ॥ भरिछूटेवल्लीद्रुमफलभर ॥ झरेपत्रकाननभएझंषर ॥ चारिप्रभूतिछांडिगुननि श्चय ॥ मिलिसबभईएकतेजोमय ॥ पृथ्वीअकासपवनअरुपानी ॥ महाप्रकृतितजिअ नलसमानी ॥ झंझामारुतकेसीझपटैं ॥ लुवांवहतअतितातीलपटैं ॥ सरवरलघुसरिता जलसूकैं ॥ क्रमभवभूततृषातुरकूकैं ॥ सूकिसरोजलतासंगसरसर ॥ जहाँतहाँदुषितदसा भएजलचर ॥ सफरमरेजलघटैंसुषदसर ॥ दुरिदुरिरहतपंकमहँदादुर ॥ उरगमकरकम ठीअकुलानैं ॥ जलविनुप्रलयकालसेजानैं ॥ सबैजलाशयकर्दमसूकत ॥ कहिकहिसघन सिषंडीकूकत ॥ सलिलभावधरऊसरकेसंग ॥ मृगतृष्णाभ्रमिमरतजूथमृग ॥ संगसषा लीनैंवहुसोहन ॥ मिलिवनधेनुचरावतमोहन ॥ तहांविलासतरनितनयातट ॥ वनभांडी रसमीपमहावट ॥ मायाचरितनिसाचरमारन ॥ करतभएव्रजविघ्ननिवारन ॥ तबमिलि आंषिमिचनियाषेलत ॥ झपटतदुरतवीचगहिझेलत ॥ चाढिचाढिसाषावृक्षचलावत ॥ हठिहठिकुसमितलताहलावत ॥ सषतमल्लजुधकोऊषेलत ॥ प्रबलअंसअंसनिधरपेलत ॥ वनिगजराजमत्तकोउवानक ॥ आनिअगडचढिभिरतअचानक ॥ काहकृत्रिमवृषभब नावत ॥ मोहनहँसिहँसिसषारमावत ॥ दुहुघांग्वालचमूदरसावत ॥ चतुरवेलिफलविस

दचलावत ॥ तेतेछलकरिकरिसबटारत ॥ मांझअधरगहिलैफिरिमारत ॥ वानरव्हैकोउबालविहारत ॥ तरतरसाषझांपिबुंकातर ॥ कबहुकमोरमुकटधरिमाथै ॥ सबनर्ततमिलिमोहनसाथै ॥ कबहुकग्वालसप्तसुरगावत ॥ विविधमधुरधुनिबैनबजावत ॥ कबांहुबधितरुझूलाझूलत ॥ फिरिफिरिहसततालदैफूलत ॥इत्यादिकलीलाअधिकारी ॥ हेतअसुरवधरचीविहारी ॥ असुरप्रलंबबालव्हैआयौ ॥ पुनिमिलिषेलतकाहुनपायौ ॥ जगवंचकजनहिंसकजान्यौ ॥ पैवहबालमुकुंदपिछान्यौ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥दोहा ॥ ॥ स्यामकह्यौबलरामसौं । दाऊसुनहुनिदान ॥ अबतोषेलोषेलयह ॥ चित्तलाइचोगान ॥ १ ॥ एकओरदोऊभए । अरुमोहनइकओर ॥ अर्धग्वालइतअर्धउत । नाइकनंदकिसोर ॥ २ ॥ आपदिसालीनौअसुर । कृष्णप्रलंबकुभाव ॥ रमनलगेइहांगोदरस ॥ देतदाउपरदाउ ॥३॥ पनकीनौदुहुंओरप्रभु । हारजीतजबहोइ ॥ एकएककौंकंधधरि । वटपहुंचावैसोइ ॥ ४ ॥ निहचैऐसोनेमकरि । षेलनलागेष्याल ॥ भारीकोलाहलभयो । गोपबालगोपाल ॥ ५॥ लैगोदाऊदाबलगि । दैदोटाबलदेव ॥ हुईजेरजीत्यौहरषि । अहिअवतारअजेव ॥६॥कांधेलैलैकृष्णके॥बलकेबलीजुबाल॥ पहुंचावतवटलौंप्रगट । तहांहसतदैताल ॥ ७॥ आसुरकंधप्रलंबइहां। ऊठ्यौबलपहैआइ॥अपनौलीनौदावअब । सोहसिचढेसुभाइ ॥८॥ कंधकियेबलदेवकौ । असुरअवधितजिआइ ॥ इहांसुन्यवनआपनो । दीरघदेहदिषाइ ॥ ९ ॥ अंजनतनकारौअसुर । दारुनदंतकुदाल ॥ विवरनासदृगकूपबनि । विकटवदनविकराल ॥ १० ॥ कपिलेकचभ्रूकुटीकुटिल । अरुवर्षतदृगआगि ॥ तरकतिजिव्हातडिकसी । वारंवारवजागि ॥ ११ ॥ पहिचान्यौयहतौप्रलंब । बलजद्दपिवयबाल ॥ मारयोमुष्टामुंडमहँ । कृतशतषंडकपाल ॥ १२ ॥ गाढोकरिकंठाग्रहन । निग्रहस्वासनिदान ॥ पटक्यौलैषलसिलपरै । पिंडगएतजिप्रान ॥ १३ ॥ वज्राहतमानहुंविवस । पर्वतपर्यौप्रचंड ॥ महाविषमभूवचक्रमहँ । भौआघातअषंड ॥ १४ ॥ आतुरआएकृष्णइहँ । सुषदसषासबसंग ॥ तनअवलोक्यौअसुरतहाँ । अचिरजहोतअभंग ॥ १५ ॥ अतिहितदाऊलाइउर । वारंवारविशेष ॥ नरहरप्रभुलीलानिगम । सोनजानिसुरसेष ॥१६॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेप्रलंबासुरवधोनामअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ छ ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वनवनकरतविहारव्रज । रामकृष्णघनस्याम ॥ गोधनवृंदगुपालघन । अतिहितजुतअभिराम ॥ १ ॥ प्रातहिंगोदोहनप्रगट । करिकरिग्वालसकाज ॥ षोलिदएजिततिततषरिक । निकसेसुरभिसमाज ॥ २ ॥ अर्गलषुलिछूटीअटक । धेनचलींसबधाई ॥ तबैहरितत्रिणगंधतें । इहांमुंजबनआई ॥ ३ ॥ तरलसकोमलघासतहां । बढिबढिरहेविसाल ॥ मुंजासरचलिगगनमग । मिलिमिलिलतातमाल ॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ संचारनहिनरविकरप्रकास ॥ अंधारमध्यवनआसपास ॥ निर्धारयहैपशुकुलनिदान ॥ तृणतरलजुपावतगंधग्यान ॥ मिलिघसेसुमुजारण्यमांझ ॥ सूझैनतहांकछुदिवससांझ ॥ बहुधसेसंगसबगोपबाल ॥ तृणसघनअरुझिमुंजातमाल ॥

पावतनहींगोधनमनसपीर ॥ धनगएकृपणज्यौंभएअधीर ॥ पदहतत्रिणतूटेचिन्हपाइ ॥ सुरभीनिसंगलीनौसुभाइ ॥ पावैनकहूंवनवारपार ॥ करिधेनुनामलैलैपुकार ॥ कहूंलहै नहीजबगऊकोइ ॥ हाकृष्णकृष्णअबकहाहोइ ॥ देषेनिरउद्यमसषादीन ॥ करुणानिधान तबदयाकीन ॥ उंचेद्रुमऊपरचढेआप ॥ पूरनप्रभावपौरुषप्रताप ॥ विधिपूर्वजथाबंसीब जाइ ॥ लैलैजुनामसुरभीबुलाइ ॥ पयश्रवतथननिअतिहितप्रकास ॥ सबचलींहर्षजुतसा वकाश ॥ हंभारकरतआईअनंद ॥ बंसीरवगोचरधेनवृंद ॥ इहांमोहनद्रुमतेउतरिआनि ॥ पयपानकरतदोनाप्रमानि ॥ ऐसीकछुइच्छभइअनंत ॥ दावानललाग्योवनदुरंत ॥ फिरिगईअग्निचहुंओरफेलि ॥ गहनवनकहूंलाभैनगैलि ॥ तरुवृंदजरतवल्लीतमाल ॥ मि लिअनिलअनलवढिज्वालमाल ॥ वनवांसजरतपटकतबिसाल ॥ चटकततृणमुंजासरत नाल ॥ चढिधूमगगनअंधारचीन ॥ दिनभएदुषितगउबालदीन ॥ प्रतिग्वालग्वालकीनी पुकार ॥ अबकृष्णदेवतुमहीअधार ॥ अषिलेसुरगोधनजरतएहु ॥ रक्षकतुमतुमहींराषि लेहु ॥ घनस्यामसमयइहिंतुमहिंतात ॥ जरिदावानलहमअगतिजात ॥ विनसतअका लगोपालवृंद ॥ निर्भयप्रभुकरियैनंदनंद ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ धरिचित्तधीरतु मग्वालधैन ॥ निर्भीतहोहुअबमूंदिनैन ॥ द्दगरहेमूंदिसबदुषदुरंत ॥ इहांअगनिपानकी नौअनंत ॥ प्रभुकीनौदावाअनलपान ॥ निस्सेषगगनवाजेनिसान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मोहनमुंजारण्यमहँ । पीनौवन्हिविशेष ॥ देष्यौबालकषोलिद्दग । इहानकछुअवशेष ॥ ५ ॥ तैसेईवनतरलतर । मिलिमंजरफलफूल ॥ कृष्णकृपाअदभूतकछु । कूजतषगअनु कूल ॥ ६ ॥ दावानललाग्यौदुसह । जरतग्वालगउजान ॥ कविनरहरकारनकरन । प्र भुइच्छाजुप्रमान ॥ ७॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारह टनरहरदासविरचितेश्रीकृष्णदावानलपानोनामएकोनाविंशतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याहीक्रमक्रीडाकरत । वृंदाविपिनविहार ॥ पावसऋतुआग मप्रगट । सुषदाइकसंसार ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ आषाढजलदअकास ॥ प्रति रंगरंगप्रकास ॥ संघट्टघननभघोर ॥ अरुघटाचढिचहुंओर ॥ दिसिमत्तसघनसदाप ॥ चढिरंगसुरपतिचाप ॥ बगपंतिउज्जलवान ॥ प्रतिघटामध्यप्रमान ॥ चहुंओरवीजचमं क ॥ नहिदुरतनभहिनिसंक ॥ सबरंगासिषरसिलाउ ॥ प्रतिमाअनेकप्रभाउ ॥ मिलिज लदपवनमरोर ॥ अतिगरजधुनिचहुंओर ॥ सरसरितदादुरमोर ॥ झिल्लीरवमोरझिंगोर ॥ रजिअरुनबूडनिरंग ॥ अविलोकिबढतअनंग ॥ अतिश्रवतउजलप्रकास ॥ पृथ्वीसपू रिप्रकास ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ त्रिणगुल्मलताअंकुरिततास ॥ वसुधासुनीलअंबरवि लास ॥ पानीनिवानपृथ्वीप्रसंग ॥ आभूषनमानहुअंगअंग ॥ महिभयौसघनदंपतिमि लाप ॥ रतिबढीविविधिगतविरहताप ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ महिवियोगसहिअष्टमासग निजलधरआगम ॥ रषिसषेदयासितअंकुरसाहिसीततापसम ॥ प्रियआगमपतिव्रतास कलश्रृंगारसुसज्जीय ॥ मिलिदंपतिरतिमानिअषिलआनंदउपज्जीय ॥ सुनतज्यौंसंगनर हरसुकवि, मासचारिरसमानियौ ॥ निसदिवसप्रियाप्रियनेहनव, पूरनप्रेमप्रमानियौ ॥

॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वरषाबढितरुबल्लीविशेष ॥ अतिसघनकुंजउपमाअसेष ॥ सो भाबहुपल्लवतरलसाष ॥ भवसजितनीडपंषीसभास ॥ पर्वतनिलतातरुगहरपुंज ॥ गिरि गुफागहरमृगराजगुंज ॥ वनजंतुविविधअनेकवास ॥ सुषवसतवंसवढिसावकास ॥ ऋ तुकालत्रियापसुपंषिरंग ॥ अतिसयप्रसंगउद्भवअनंग ॥ जलवरषिगिरनिमिलिजलद जाल ॥ षलकेदरीनिचलिविपुलषाल ॥ गिरिगुहाचलीसारितागँभीर ॥ निस्सेषितडा बरभरेनीर ॥ सिषरनिसिषंडिकूजतसुभाइ ॥ अनेकजलदमिलिधसतआइ ॥ धरवर षिसघनषंडैनधार ॥ झिल्लीरवजिततितझनत्कार ॥ जलजातविकसिभ्रमिमधुपजाल ॥ गुंजारविहितवानीविसाल ॥ मिलिमीननिकरलघुदिग्घमान ॥ प्रतिमाअनेकविहरत प्रमान ॥ कमठीजुमकरतंतीकुजंत ॥ आकारभासजलचरअनंत ॥ औषधीअन्नउत पतिअसेष ॥ कुलधर्मकृषीवर्ततविशेष ॥ भवभूतवृद्धिअन्नेकभांति ॥ जगषांनिचारि अन्नेकजाति ॥ वससरितानीरसमुद्रवृद्धि ॥ सबप्रानीपावतकर्मसिद्धि ॥ शशिसूरजस तमारगसमोह ॥ आच्छादितबादरात्रिणअरोह ॥ मिलिसघननीरफुट्टीयम्रजाद ॥ व र्जितप्रयाननृपवयरबाद ॥ दलचलितनहिनचतुरंगदेस ॥ निरउद्यमऋतुविलसतनरेस ॥ गनिमंदवृद्धिदयकुचनिगाव ॥ सरस्थूलअंगअपनेसुभाव ॥ मिलिपियौकिरनिजलअष्ट मास ॥ पुनिउगलतिरविमानहुप्रकास ॥ वर्षानिशिसंकुलतमविशेष ॥ आवरितजलद घननभअसेष ॥ पैकरतएकचातकपुकार ॥ अतिभईजदपिवर्षाअपार ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वर्षाजथाविलासविविधकीनौविहारवन ॥ स्यामराममिलिसषासंगपृथ्वीव्रजपावन ॥ वृंदावनगोधनविशेषचहुंओरचराए ॥ हितजुतजमुनाजलविहारआनंदअमाए ॥ कृत फलेजसोदानंदके, भावभक्तिसुतहितभईय ॥ श्रीकृष्णदेवनरहरसुकवि, यहवर्षाऋतुवित्त ईय ॥ २ ॥ ॥ इतिवर्षावर्णनं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुषहिभयौआगमशरद । क्रीडत कृष्णकुमार ॥ पदअंकितपावनपृथी । वृंदारण्यविहार ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांअतिसुषदशरदऋतुआई ॥ उज्जलनभसोभाअधिकाई ॥ निर्भयचातकतृषानसाए ॥ प्रमुदितस्वातिबुंदजलपाए ॥ पुंजपयोदविचित्रविहाए ॥ सीतसुगंधपवनसमुहाए ॥ कन्या रासआगमनदिनकृत ॥ पितरप्रतोषहव्यकव्याहित ॥ देवीभगतिनिसानवनवदिन ॥ पूजा दशमीविजयसहितपन ॥ होतप्रयाननरेसविजयहित ॥ कारनसंपतिसकलविलोकित ॥ मा लादीपबिराजितमंदिर ॥ घनउच्छवजनहरषितघरघर ॥ जाग्यौसीतभएनिर्मलजल ॥ प्रति दिनघटतबढतनिसिपलपल ॥ पंकजुमुक्तिपृथ्विसपेषी ॥ सनमारगउघरेसुविशेषी ॥ सुरभी षीरश्रवतिअतिसुंदर ॥ परमविचित्रवरनसोभापर ॥ निर्मलनीरगिरनिचलनिर्झर ॥ कुंडभ रेजिततितअतिसुषकर ॥ सालिषेत्रमर्जादसवारी ॥ कृषीआसपूजतिहितकारी ॥ प्रगट सकलउद्यमफलपाए ॥ दिसिदिसअन्नषेत्रदरसाए ॥ इहांहंसअवनीतलआए ॥ सूकेक र्दमनीरसुहाए ॥ पुहपवतीत्रियलताप्रभूता ॥ संततिसफलप्रसूतिपुनीता ॥ पूरनकलाश शांकप्रकासे ॥ भवउडुजोतिवंतअतिभासे ॥ सरनिसरनिकुमुदनिवनसोहै ॥ मिलिनि सिजोतिशरदमनमोहै ॥ दिनकरउदयप्रकासकमलदल ॥ करतमधुपनिकसतकोलाहल ॥

पावतनहींगोधनमनसपीर ॥ धनगएकृपणज्यौंभएअधीर ॥ पदहतात्रिणतूटेचिन्हपाइ ॥ सुरभीनिसंगलीनौसुभाइ ॥ पावैनकहूंवनवारपार ॥ करिधेनुनामलैलैपुकार ॥ कहूंलहै नहीजबगऊकोइ ॥ हाकृष्णकृष्णअबकहाहोइ ॥ देषेनिरउद्यमसषादीन ॥ करुणानिधान तबदयाकीन ॥ उंचेद्रुमऊपरचढेआप ॥ पूरनप्रभावपौरुषप्रताप ॥ विधिपूर्वजथाबंसीब जाइ ॥ लैलैजुनामसुरभीबुलाइ ॥ पयश्रवतथननिअतिहितप्रकास ॥ सबचलींहर्षजुतसा वकाश ॥ हंभारकरतआईंअनंद ॥ बंसीरवगोचरधेनवृंद ॥ इहांमोहनद्रुमतेउतरिआनि ॥ पयपानकरतदोनाप्रमानि ॥ ऐसीकछुइच्छभइअनंत ॥ दावानललाग्योवनदुरंत ॥ फिरिगईअग्निचहुंओरफेलि ॥ गहनवनकहूंलाभैनगैलि ॥ तरुवृंदजरतवल्लीतमाल ॥ मि लिअनिलअनलवढिज्वालमाल ॥ वनवांसजरतपटकताबिसाल ॥ चटकततृणमुंजासरत नाल ॥ चढिधूमगगनअंधारचीन ॥ दिनभएदुषितगउबालदीन ॥ प्रतिग्वालग्वालकीनी पुकार ॥ अबकृष्णदेवतुमहीअधार ॥ अषिलेसुरगोधनजरतएहु ॥ रक्षकतुमतुमहींराषि लेहु ॥ घनस्यामसमयइहिंतुमहिंतात ॥ जरिदावानलहमअगतिजात ॥ विनसतअका लगोपालवृंद ॥ निर्भयप्रभुकरियेनंदनंद ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ धरिचित्तधीरतु मग्वालधैन ॥ निर्भीतहोहुअबमूंदिनैन ॥ दृगरहेमूंदिसबदुषदुरंत ॥ इहांअगनिपानकी नौअनंत ॥ प्रभुकीनौदावाअनलपान ॥ निस्सेषगगनवाजेनिसान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मोहनमुंजारण्यमहँ । पीनौवन्हिविशेष ॥ देष्यौबालकषोलिदृग । इहानकछुअवशेष ॥ ५ ॥ तैसेईवनतरलतर । मिलिमंजरफलफूल ॥ कृष्णकृपाअदभूतकछु । कूजतषगअनु कूल ॥ ६ ॥ दावानललाग्योदुसह । जरतग्वालगउजान ॥ कविनरहरकारनकरन । प्र भुइच्छाजुप्रमान ॥ ७ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणवारह टनरहरदासविरचितेश्रीकृष्णदावानलपानोनामएकोनविंशतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याहीक्रमक्रीडाकरत । वृंदाविपिनविहार ॥ पावसऋतुआग मप्रगट । सुषदाइकसंसार ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ आषाढजलदअकास ॥ प्रति रंगरंगप्रकास ॥ संघट्टघननभघोर ॥ अरुघटाचढिचहुंओर ॥ दिसिमत्तसघनसदाप ॥ चढिरंगसुरपतिचाप ॥ बगपंतिउज्जलवान ॥ प्रतिघटामध्यप्रमान ॥ चहुंओरवीजचमं क ॥ नहिंदुरतनभहिनिसंक ॥ सबरंगसिषरसिलाउ ॥ प्रतिमाअनेकप्रभाउ ॥ मिलिज लदपवनमरोर ॥ अतिगरजधुनिचहुंओर ॥ सरसरितदादुरमोर ॥ झिल्लीरवमोरझिंगोर ॥ रजिअरुनबूडनिरंग ॥ अविलोकिबढतअनंग ॥ अतिश्रवतउजलअकास ॥ पृथ्वीसपू रिप्रकास ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ त्रिणगुल्मलताअंकुरिततास ॥ वसुधासुनीलअंबरवि लास ॥ पानीनिवानपृथ्वीप्रसंग ॥ आभूषनमानहुअंगअंग ॥ महिभयौसघनदंपतिमि लाप ॥ रतिबढीविविधिगतविरहताप ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ महिवियोगसहिअष्टमासग निजलधरआगम ॥ रषिसषदग्रासितअंकुरसाहिसीतततापसम ॥ प्रियआगमपतिव्रतास कलशृंगारसुसज्जीय ॥ मिलिदंपतिरतिमानिअषिलआनंदउपज्जीय ॥ सुनतज्यौंसंगनर हरसुकवि, मासचारिरसमानियौ ॥ निसदिवसाप्रियाप्रियनेहनव, पूरनप्रेमप्रमानियौ ॥

॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वरषाबढितरुबल्लीविशेष ॥ अतिसघनकुंजउपमाअसेष ॥ सो भावहुपल्लवतरलसाष ॥ भवसजितनीडपंषीसभास ॥ पर्वतानिलतातरुगहरपुंज ॥ गिरि गुफागहरमृगराजगुंज ॥ वनजंतुविविधअन्नेकवास ॥ सुषवसतवंसवढिसावकास ॥ ऋ तुकालत्रियापसुपंषिरंग ॥ अतिसयप्रसंगउद्भवअनंग ॥ जलचरषिगिरनिमिलिजलद जाल ॥ षलकेदरीनिचलिविपुलषाल ॥ गिरिगुहाचलीसारितागँभीर ॥ निस्सेषितडा बरभरेनीर ॥ सिषरनिसिषंडिकूजतसुभाइ ॥ अन्नेकजलदमिलिवसतआइ ॥ धरवर षिसघनषंडैनधार ॥ झिल्लीरवजितततिझनत्कार ॥ जलजातविकसिभ्रमिमधुपजाल ॥ गुंजारविहितवानीविसाल ॥ मिलिमीननिकरलघुदिग्घमान ॥ प्रतिमाअनेकविहरत प्रमान ॥ कमठीजुमकरतंतीकुजंत ॥ आकारभासजलचरअनंत ॥ ओषधीअन्नउत पतिअसेष ॥ कुलधर्मकृषीवर्ततविशेष ॥ भवभूतवृद्धिअन्नेकभांति ॥ जगषांनिचारि अन्नेकजाति ॥ वससरितानीरसमुद्रवृद्धि ॥ सवप्रानीपावतकर्मसिद्धि ॥ शशिसूरजस तमारगसमोह ॥ आच्छादितबादरत्रिणअरोह ॥ मिलिसघननीरफुट्टीयम्रजाद ॥ व र्जितप्रयाननृपवयरबाद ॥ दलचलितनहिनचतुरंगदेस ॥ निरउद्यमऋतुविलसतनरेस ॥ गनिमंदवृद्धिदयकुचनिगाव ॥ सरस्थूलअंगअपनेसुभाव ॥ मिलिपियौकिरनिजलअष्ट मास ॥ पुनिउगलतिरविमानहुप्रकास ॥ वर्षानिशिसंकुलतमविशेष ॥ आवरितजलद घननभअसेष ॥ पैकरतएकचातकपुकार ॥ अतिभईजदपिवर्षाअपार ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वर्षाजथाविलासविविधकीनौविहारवन ॥ स्यामराममिलिसषासंगपृथ्वीव्रजपावन ॥ वृंदावनगोधनविशेषचहुंओरचराए ॥ हितजुतजमुनाजलविहारआनंदअमाए ॥ कृत फलेजसोदानंदके, भावभक्तिसुतहितभईय ॥ श्रीकृष्णदेवनरहरसुकवि, यहवर्षाऋतुवित्त ईय ॥ २ ॥ ॥ इतिवर्षावर्णनं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुषहिभयौआगमशरद । क्रीडत कृष्णकुमार ॥ पदअंकितपावनपृथी । वृंदारण्यविहार ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांअतिसुषदशरदऋतुआई ॥ उज्जलनभसोभाअधिकाई ॥ निर्भयचातकतृषानसाए ॥ प्रमुदितस्वातिबुंदजलपाए ॥ पुंजपयोदविचित्रविहाए ॥ सीतसुगंधपवनसमुहाए ॥ कन्या रासआगमनदिनकृत ॥ पितरप्रतोषहव्यकव्याहित ॥ देवीभगतिनिसानवनवदिन ॥पूजा दशमीविजयसहितपन ॥ होतप्रयाननरेसविजयहित ॥ कारनसंपतिसकलविलोकित॥मा लादीपबिराजितमंदिर॥घनउच्छवजनहरषितघरघर॥जाग्यौसीतभएनिर्मलजल ॥ प्रति दिनघटतबढतनिसिपलपल॥पंकजुमुक्तिपृथ्विसपेषी ॥ सनमारगउघरेसुविशेषी॥सुरभी षीरश्रवतिअतिसुंदर ॥ परमविचित्रवरनसोभापर ॥ निर्मलनीरगिरनिचलनिर्झर ॥कुंडभ रेजिततितअतिसुषकर ॥ सालिषेत्रमर्जादसवारी ॥ कृषीआसपूजतिहितकारी ॥ प्रगट सकलउद्यमफलपाए ॥ दिसिदिसअन्नषेत्रदरसाए ॥ इहांहंसअवनीतलआए ॥ सूकेक र्दमनीरसुहाए ॥ पुहपवतीत्रियलताप्रभूता ॥ संततिसफलप्रसूतिपुनीता ॥ पूरनकलाश शांकप्रकासे ॥ भवउडुजोतिवंतअतिभासे ॥ सरनिसरनिकुमुदनिवनसोहै ॥ मिलिनि सिजोतिशरदमनमोहै ॥ दिनकरउदयप्रकासकमलदल ॥ करतमधुपनिकसततकोलाहल ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इत्यादिकशोभाशरद । वनवनकृष्णविलास ॥ संपतिजथाअनेकसुष । क
विनरहरकविदास ॥ २ ॥ इतिवर्षाशरदवर्णनं ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदश
मस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकसमयक्रीडाउचित ॥ कृष्णगमनवनकीन ॥ महाजू
थसुरभीनिमिलि । पुनिव्रजबालप्रवीन ॥ १ ॥ वेणुबजाईविमलवन । सुंदरस्यामसुजान
॥ थिरचरषगमृगसुनिथकित । सुधाश्रवनपुटपान ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ जथासुन
तमृगमृगीजूथरसविवसवेनुरव ॥ विकलभईव्रजवधूभवनभुल्लिसुकाजभव ॥ कृष्णच
रितचिंतवनविविधअभिलाषबढावति ॥ प्रेमसमुद्रहिपरीप्रगटकहुंथाहनपावति ॥ धरि
ध्यानअतुलछविउरधरीय, जथाजोगजोगेसवर ॥ भजिकीटभृंगतनमयभई, ज्ञानमदन
उपदेसगुर ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ धरिचित्तअद्भुतध्यान ॥ प्रतिमासुरूपप्रमान
वनिविहितनटवरवेष ॥ सवअंगअंगविशेष ॥ रजिमुकुटपीछमयूर ॥ कचकुटिलस्याम
किसोर ॥ जटिकनकरतनसजोप ॥ प्रतिश्रवनकुंडलओप ॥ कृतरुचिरजुगलकपोल ॥
लसिवक्रअलकसलोल ॥ त्रयरेषभृकुटीभाव ॥ भ्रुवचापवक्रचढाव ॥ शुभनासस्वाससु
गंध ॥ मुषअधरअरुणसमंध ॥ रदवज्रकनसमराजि ॥ विधिवचनअमृताविराजि ॥ र
चिचिबुककंठत्रिरेष ॥ सोइरूपसीमअसेष ॥ वैजंतिमालविसाल ॥ मदमत्तचालमराल
मुषचंद्रबिंबसमान ॥ पुनिनेत्रकमलप्रमान ॥ लसिअधरअरुनप्रवाल ॥ रवबेनुरुचिरर
साल ॥ शुभवांसुरीधुनिसंग ॥ सुचिनैनदरसतसंग ॥ श्रुतनेत्रवानसुजान ॥ प्रानीसु
धन्यप्रमान ॥ वहवांसपुन्यप्रसंस ॥ भइवांसुरीजिन्हिवंस ॥ उठिअरुनपल्लवअंग ॥ रो
मांचवृक्षसुरंग ॥ कुलग्वालमंडलकीन ॥ वनिमध्यस्यामप्रवीन ॥ नदथकितनीरनिधा
न ॥ पुनिपवनगवनप्रमान ॥ पसुपक्षिउतपतिप्रेम ॥ नितसुनतवेनुसनेम ॥ दोहा ॥
इत्यादिकरचनाअषिल । अरुसोभाप्रतिअंग ॥ करिकारिसुमिरनगोपिका । पूरन
प्रेमप्रसंग ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटन
रहरदासविरचितेगोपीस्यामछविवर्णनंनामएकविंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ श्री
कृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उपजीदसाअनगकी । रूपन
यनअनुराग ॥ कृतदेवीव्रतकन्यका । गोपसुताबडभाग ॥ १ ॥ पंकमयीप्रतिमाप्रगट
कात्यायनिकीकीन ॥ पूजाअर्चाभक्तिपन ॥ सेवानित्यनवीन ॥ २ ॥ सबमिलिअ
रुणोदयसमय । अर्कसुताजलन्हाइ ॥ क्रमजुतभक्षहविष्यकरि । हितव्रतकालविहाइ
॥ ३ ॥ हिमऋतुअगहनमासहव । व्रतकीनोव्रजबाल ॥ कृतदेवीकात्यायनी । वा
सुरनिसाविशाल ॥ ४ ॥ गोपकन्यावाक्यं ॥ ॥ व्रतसनानपूजासविधि । भगव
तिभएसुभाइ ॥ वंछितफलमाँगतविहित ॥ यहैमनोरथमाइ ॥ ५ ॥ जगजननीजो
गेश्वरी । हितजौभक्तिसनेहु ॥ कन्याजाच्यौजोरिकर । हमहिकृष्णवरदेहु ॥ ६ ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ पूरनभयौमासजबपावन ॥ भक्तिसनेममिलनमनभावन ॥ अरु
णउदयग्रहग्रहतैआई ॥ समवयकन्यामिलीसुहाई ॥ पूरनव्रतदिनमासप्रमान्यौ ॥ जन

मकृतारथअपन्यौजान्यौ ॥ गोपीचलीकृष्णगुनगावति॥ भुजधरिअंसअंसमनभाति ॥
हासविलासकरतिकौतूहल॥ जगपावनदरस्यौजमुनाजल ॥ वसनउतारितीरधरवामा ॥
करतिसनानविधानसकामा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महाजोगजोगेसवर । समनिहकामसु
भाव ॥ स्यामलष्योदैवीसकति । भामिनिअंतरभाव ॥ ७ ॥ घटघटव्यापकस्यामघन ।
आदिब्रह्मत्रिणअंत ॥ भूतभविष्यतवर्तमान । तिनकेकछुनदुरंत ॥ ८ ॥ ॥ छंदउधोर
॥ ॥ भामिनीअंतरभाव ॥ प्रभुजानिजोगप्रभाव ॥ इहांआयकृष्णअचीत ॥ वरदान
हेतविनीत ॥ भइमग्नजलमहँभाम ॥ क्रमकंठअवधिसकाम ॥ हठिबाललीलाहेत ॥ त
हांकृष्णजदुकुलकेत ॥ लैबसनतबनंदलाल ॥ सोचढेवृक्षविसाल ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥
॥ कृतकदंबआरोहकन्हाई ॥ चितवतकरतबचनचतुराई ॥ दूरिचढेद्रुमचीरदिषावत ॥
हसतआपबालानिहसावत ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पुनिबोलेश्रीकृष्णप्रवीना ॥
तनव्रतषेदभईतुमषीना ॥ एकएकभावैतुमआवहु ॥ जौसबआनिबसनलैजावहु ॥ देष
हुयाविधिअंबरदेहूं ॥ जथाजतनकैघरलैजैहूं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोसुनिबचनह
सीसबस्यामा ॥ विषमलग्योलज्जितभइवामा ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ बोलीकुलबल
लीयैबडाई ॥ काहेकरतअनीतिकन्हाई ॥ जानतिनंदमहरकोजायौ ॥ पोषिमहरिकुचपा
नपिवायौ ॥ जपैलडैतोसवव्रजजानै ॥ पैसबगोपजुज्ञातिप्रमानै ॥ कहाभयोगोधनअ
धिकानै ॥ सबैगोपकुलजातिसमानै ॥ कैहमजाइमहरिसौंकहिहैं ॥ स्यामउपाधिनऐसी
सहिहैं ॥ लछनएसीषेनंदलाला ॥ बहुतैंसहतिघोषकीबाला ॥ प्यारेकिहिंएनीतिपढाई ॥
महरिवहैहैजसुदामाई ॥ तनकमहींकेकाजैतादिन ॥ महाउलूषलबांधेमोहन ॥ कटिमहँ
गडीदावरीकर्कस ॥ पुनितुमरहेबंधेहिपरवस ॥ आंगनफिरेकढोरतऊषल ॥ अंतमहरि
हीषोलेआकुल ॥ देहिचीरहमतेरीदासी ॥ होतसाषिनिमहँअतिउपहासी ॥ स्यामहमहिं
अबसीतसंताई ॥ करिहैजोतूंकहैकन्हाई ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ तुमहिंकहतहम
दासीतेरी ॥ जानहुतौआज्ञायहमेरी ॥ एकएकभावैसबआवहु ॥ जानौत्यौंअंबरलेजावहु
॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ करतिपरसपरमंत्रसुकन्या ॥ धरिधरिरसनादसननिधन्या ॥
सुनहुसषीतुमसबहिसयानी ॥ इहिंठगतोऐसीअबठानी ॥ जिहिंतिहिंविधिकरअंबरली
जै ॥ कठिनपरैतबकहानकीजै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिसंपुटमदनालयकरिकारे ॥
वेपथतननिकसीसबबाहरि ॥ एसबजबैकदंवतरआई ॥ इततेउतरेकुंवरकन्हाई ॥ जोएसु
द्धभावत्रियजानी ॥ बोलेमनमोहनइहिंबानी ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ इहिंजलतौतु
मनग्नअन्हाई ॥ पयदेवनिसुअवज्ञापाई ॥ तुमहिभयोअपराधसुतातैं ॥ ऐसोजतनक
रहुअबयातैं ॥ मस्तकलाइजोरिकरहितमन ॥ वरुणदेवकौंकरियैवंदन ॥ तातैंयहअपरा
धजुटरिहै ॥ कैजलदेवकोपअतिकरिहै ॥ भयतैंत्रासितभईतेभामिनि ॥ करजोरेकृतवंदनका
मिनि ॥ सुद्धभावजानीकन्यासब ॥ तहांप्रसन्नभएमोहनतब ॥ उपज्यौतबैहांस्यरसऐसौ ॥
जानतकृष्णकन्यकाजैसो ॥ दीनैवसनशुद्धमनदेष्यौ ॥ पूरनप्रेमअभंगपरेष्यौ ॥ ॥
श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ - ॥ कारनव्रतव्रजकन्यका । हठिकीनौजिहिहेत ॥

सोफललहिहौऋतुसरद । तुममनवचनसमेत ॥ ९ ॥ सुकलनिसाराकासरद ॥ हमरचिहैं वनरास ॥ तबव्हेहैसबकीतहां । पूरनआसप्रकास ॥ १० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥वनितापूरनमासव्रत । पुनिवंछितवरपाइ ॥ सोव्हैतन्मयकृष्णसौं । अतिहर्षितगृहआइ ॥ ॥ ११ ॥ वासरधेनचराइवन । करेजथाक्रमकाज ॥ संध्याआएघोषसुष । रामकृष्णव्रजराज ॥ १२ ॥ समयजुवस्त्राहरनसुष । कीनौनंदकुमार ॥ कह्योसुपैनरहरसुकवि । आपसुमतिअनुसार ॥ १३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेण बारहटनरहरदासविरचितेगोपीवस्त्रहरेणानामद्वादशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मिलिसबसषाअपरदिनमोहन ॥ गएसघनवनगोधनगोहन ॥ कुजकुंजमिलिक्रीडाकीनी ॥ भावअनेकउचितरसभीनी ॥ चव्योयामादिनवच्छचरावत ॥ बनवनविहरतवेनुबजावत ॥ अषिलविहार अमितअकुलाए ॥ इहांअसोकविपिनमहँआए ॥ मंडलग्वालबालमनमोहत ॥ साग्रजकृष्णमध्यतिहिंसोहत ॥ ॥ सुदामाउवाच ॥ ॥ कह्योसुदामाकुंवरकन्हाई ॥ अजहुंविलोकतछाकनआई ॥ भएक्षुधारतहमतोभारी ॥ कछूमंगावहुचितहितकारी ॥ ॥ श्रीकृष्णाउवाच ॥ ॥ प्रभुसरितातटनिकटप्रमानैं ॥ जज्ञकरतऋषिवरतहांजानैं ॥ पुनिमोहनतहँसषापठाए ॥ भोजनलैआवहुमनभाए ॥ ॥सषावाक्यं॥ ॥ जाचन्याहमतौनहींजानीं ॥ प्रभुयहजाचकवृत्तिप्रमानी ॥ यहसुनिसषाकरतभएउत्तर ॥ देवहमहियहतोकृतदुस्तर ॥ जज्ञप्रसादनभिक्षाजानहु ॥ पैंयहअन्नपवित्रप्रमानहु ॥ कह्योकृष्णअबकारिजकीजे ॥ देषहुफेरिनउत्तरदीजे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनिसषायज्ञथलआए ॥ ऋषिकहंनियतचरनासिरनाए ॥ ॥ सषावाक्यं ॥ ॥ करजुगजोरिकह्योतिनकारन ॥ मुनिवरइहांबैठेहैमोहन ॥ द्विजअबकछूप्रसादजुदीजे ॥ कारनउचितविलंबनकीजे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ द्विजनिमौनव्रतलीनीदीक्षा ॥ सोनहींबोलेगुरुकीशिष्या ॥ इहांतेइग्वालबालफिरिआए ॥ सवैकृष्णकौंमर्मसुनाए ॥ पुनिवेमोहनफेरिपठाए ॥ कारनमषपतनीनिकह्नाए ॥ इहांसोऋषिपतानिनपहँआए ॥ कहेवचनजेकृष्णकहाए ॥ ॥ ग्वालउवाच ॥ ॥ माताभोजनकृष्णमंगायो ॥ सबग्वालनिवृत्तांतसुनायो ॥ ॥ ऋषिपतनीवाक्यं ॥ ॥ यहसुनिऋषिपतनीअनुरागी ॥ भवहमतेकोत्रियबडभागी ॥ जज्ञपुरुषनिगमागमगाए ॥ उनहमपहँसिद्धान्नमंगाए ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनित्रियभोजनविविधिप्रकारा ॥ पूरनकरेविसदपनवारा ॥ चारिप्रकारअहारसचिक्कन ॥ कीनेहुतेजज्ञकेकारन ॥ ग्रेहगेहतेत्रियगजगामिनि ॥ भोजनलैनिकसींमषभामिनि ॥ आनिकुटुंबकरेअवरोधन ॥ पुनिइनमान्यौनाहिंसहितपन ॥ इहांत्रियातेआईआतुर ॥ मुषछविनिरषतमदनमनोहर ॥ भोजनअग्रधरेमनभाए ॥ जज्ञपुरुषहितसहितजिवाए ॥ मोहनबालगोपालमुदितमन ॥ इहांलएसबहिनजलअचवन ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ अबतुमभईभगतिहितऊरन ॥ पुनिअभिलाषजुव्हैहेपूरन ॥ देवकृष्णइहांआज्ञादीनी ॥ परमतपोथलजाहुप्रवीनी ॥ येऋषिपतनीसबगृहआईं ॥ विविधफेरिमषसौंजवना

ई ॥ पतनीऔरएकगृहपैसी ॥ त्रासदईताकौंपातितैसी ॥ वहताजिदेहजोतिअकुलानी ॥
सोपैकृष्णहिमांझसमानी ॥ जोगजग्यजपतपव्रतसंजम ॥ देहत्यागितीरथआतमदम ॥
एसबविविधविभूतिबढावन ॥ एकैभावमुक्तिसंभावन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तिनऋषिपतनी
भगतितै । करेसफलमनकाज ॥ प्रभुनरहरपूरनपुरुष । रामकृष्णव्रजराज ॥ १ ॥ ॥
इतिश्रीअवतारचरित्रे श्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेत्रयो
विंशतितमोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सुरपतिहितप्रतिवर्षकरतमषगोपजथाक्रम ॥ पनप्रभावतहांअव
धिपाइसबभएसउद्यम ॥ सकलसारसंभारकरतघरघरहितकाजै ॥ विप्रवरनवैदिकविधा
नशुभमंगलसाजै ॥ प्रोहितप्रधानमंत्रीपुरुष, आपआपकारिजअभय ॥ सबकरतसि
द्धनरहरसुकवि, महरग्रेहआनंदमय ॥ १ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ अषिलदेषिउ
छाहकृष्णपूछ्योजुनंदकहँ ॥ कवनयज्ञकिहिंकाजहेतफलतत्वकहौतहँ ॥ सर्वमयीसर्वज्ञ
सर्वआतमसंभावन ॥ तदपिबाललीलाविचित्रकीयकृष्णजुपावन ॥ पितुकहोमोहिक
रिकैकृपा, धर्मपरायनधर्मधुर ॥ प्रतिग्रेहग्रेहमंगलप्रगट, प्रभुयहउद्यमहोतपुर ॥ २ ॥
॥ नंदउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अंगिरसनामइकमषअनूप ॥ रिधिदानिसुपैवरव्रह्मरू
प ॥ हमकरतइंद्रभगवानहेत ॥ दिनवंछितसोफलअषिलदेत ॥ इंद्रतुमजानहुजलदजा
ल ॥ वसअवधिमिलतहैनभविसाल ॥ पृथ्वीजुइहांऋतुवतीपाइ ॥ सुरराजमोदउपज
तसुभाइ ॥ मषभागपाइसंतोषमानि ॥ अतितुष्टमिलहिंजलजानआनि ॥ सुषश्रवतस
घनजलरेतश्राव ॥ आनंदउपजिदुहुघांअमाव ॥ रजबीर्यजोगदंपतिरसाल ॥ शुभका
लगर्भथितिहोइसुढाल ॥ औषधीअन्नतृणतरअपार ॥ भुवउद्भिजषानिअठारभार ॥ भ
वभूतलहततिहिंसुषअभंग ॥ संतोषपोषआनंदसंग ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पि
तुसुनहुकर्मवसअवधिपाइ ॥ अवतरतजीवकिहुंजोनिआइ ॥ कछुकालबाललीलाअका
म ॥ अज्ञानगमावतदिनअवाम ॥ पुनिअंगहोतजोवनप्रवेस ॥ बलसंगबढतविषया
विशेष ॥ चषश्रवनरसनिकरचरनचाइ ॥ सबहिनिकैंवर्ततमनसहाइ ॥ इंद्रीसजोग
मिलिमनअसाधि ॥ इहांकरतभएनानाउपाधि ॥ एभएकर्मकारकअभीत ॥ निसदिवस
करतनीतिहुअनीत ॥ शुभअशुभकर्मसाधतसुभाइ ॥ पुनिविलसततेइपरिपाकपाइ ॥
उतपत्तिभूतकर्महिउदोत ॥ हैसाधिकर्ममहलीनहोत ॥ दिनहोतकर्मकरिदिव्यदेह ॥ है
नासकर्मवसनिसंदेह ॥ सुषदुष्षलाभअरुहानिसंग ॥ एसबैकर्मकारनअंभ ॥ कर्मांअ
धीनकाजहुअकाज ॥ इहांइंद्रप्रयोजनकवनआज ॥ करताजोप्रेरककर्मकाल ॥ दुषहरत
देतसुषसोइदयाल ॥ अबपिताछांडिकल्पनाआन ॥ पुनिकरियैमतमेरौप्रमान ॥ विश्रामह
महिंवनषंडवास ॥ पसुजीवनिहैपर्वतसकास ॥ निर्झरसरडावरभरतनीर ॥ त्रिणवृद्धि
होततहांतीरतीर ॥ धनमहाहमारैयहैधेन ॥ सोजीयतबढतचरचारिसुषेन ॥ निहचैसब
छांडहुअवरनेम ॥ पूजहुगोवर्द्धनसहितप्रेम ॥ ऐश्वरीदेहमयजानियाहि ॥ तातैप्रसन्नअ
बकरहुताहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पूजायहवल्लभमुहिप्रमान ॥ निस्सेषकह्योतुमसौं

निदान ॥ नंदसौंकृष्णजोकहिनिदान ॥ पितुयहैमंत्रकीनौप्रमान ॥ संभारसारभरिसकट
साज ॥ कृतगोपगमनमिलिचलिसकाज ॥ इहांगोपसबैगिरिनिकटआइ ॥ विस्तारकरे
भोजनबनाइ ॥ करिसहसभोज्यद्विजतृप्तकीन ॥ वनिधेनजूथाचित्रितनवीन ॥ मंदिर
निसीसनिसिदीपमाल ॥ वाजित्रविविधउच्छववविसाल ॥ इहांआनिआनिभोजनअसे
ष ॥ बलिदीनीपर्वतकहिविशेष ॥ आवरितअद्रिभयोचहुंओर ॥ कछुरह्योनषालीकि
हूंकोर ॥ कीनोगोवर्द्धनअन्नकूट ॥ लैकृष्णषवायोसषनिलूट ॥ संसारतृप्तिभोअन्नसं
ग ॥ पर्वतहितपूजाशुभप्रसंग ॥ इहिंभांतिमहोछ्वबहुवअनंद ॥ मषभंगइंद्रभयोगर्व
मंद ॥ कृष्णामिलिगोपपरिक्रमणकीन ॥ मनभयोदेषिवासवमलीन ॥ सबपूजापूरन
करिसुभाइ ॥ इहांकृष्णगोपमिलिग्रेहआइ ॥ दोहा ॥ कर्‍यौबाधमषइंद्रको । नरहरप्रभू
निदान ॥ वासवकर्‍योविरोधवस । अतिबलक्रोधअमान ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृ
ष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासाविरचितेचतुर्विंशतितमोऽध्यायः॥ २४ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अबइंद्रकोपकीनोअपार ॥ पठएजलवादलप्रल
यकार ॥ सांवर्तकनामावनसचेत ॥ हठिप्रेरेघोषाविनासहेत ॥ घनवरषनलागेअतिसघो
र ॥ आटोपजलदमिलिओरओर ॥ यहइंद्रकर्‍यौप्रतिअमरईठ ॥ धनमदएछाकेगोपधी
ठ ॥ इनकैंइकउपज्योपुत्रआनि ॥ प्रतिमासुकृष्णमानुषप्रमानि ॥ आश्रयलहिताकौं
एअज्ञान ॥ मषभंगकर्‍योमेरोअमान ॥ बूडेसबएताकैंविसास ॥ निर्मूलसुकरिहूंघो
षनास ॥ वाचालबालकारौंविवान ॥ मनमैंसुगर्वअतिज्ञानवान ॥ जलबिंबकरहुतुम
सघनजाइ ॥ ऐरावतआरुहहमहुआइ ॥ घनश्रवतबुंदगजशुंडधार ॥ परिमानथंभदे
वलप्रकार ॥ पयपवनगगनसंघट्टपाइ ॥ भयकारसघनगर्जासुभाइ ॥ कृतघटास्यामन
भअंधकार ॥ करकाशिलवर्षाप्रलयकार ॥ वनिताडितलताविभ्रमविहार ॥ चहुंओरकरति
अतिचमत्कार ॥ भवभूतभएकंपितसभीत ॥ संपातधारिमिलिविषमसीत ॥ गोवृंदगोपगो
पिकाग्वाल ॥ कीनीपुकारलषिप्रलयकाल ॥ करित्राहित्राहिप्राणीपुकार ॥ अषिलेसकृष्णतु
महीअधार॥भवभूतसरनतुमहींसुभाइ॥ स्वामीत्रिलोककरियैसहाइ ॥ सोसुनतस्यामव्रज
केसहाइ॥इहांगिरगोवर्धननिकटआइ॥सोलीयउठाइपर्वतसमूल॥तिहिंकालबालछत्राकतू
ल ॥ क्रमवामपाणिपल्लवकनिष्ट ॥ प्रभुधर्‍योअग्रपर्वतप्रतिष्ट ॥ देवाधिदेवदीननिदयाल ॥
करिदयाकृष्णबोलेकृपाल ॥ मतसहोकष्टजलसीतमांह ॥ छनरहैजीवसबअद्रिछांह ॥
वर्षाविशेषसुरपतिविकार ॥ जैहैबिलाइएसबजंजार ॥ मतडरहुजंतुकोउत्रासमानि ॥
पर्वतहैदृढममअग्रपानि ॥ भवभूतसर्वमनभएअभीत ॥ पुनिआइछांहपर्वतपुनीत ॥
निद्रानछुधातृषव्यापिनाहिं ॥ मनरहेसर्वआनंदमांहि ॥ गोपिकागोपगोजूथग्वाल ॥
पसुपंषिकृषीसबवृत्तिपाल ॥ दिनसातभईवर्षाविशेष ॥ व्रजबच्यौअद्रिछायाअशेष ॥ व
यवर्षसातकृष्णहिंविलोकि ॥ रहिचकितइंद्रमनबुद्धिरोकि ॥ विथक्योकरिउद्यमव्रजवि
नास ॥ तबइंद्राषिसांनौपरीत्रास ॥ जबरहेवरषिसबजलदजाल ॥ व्रतभंगभयोसुर
पतिविहाल ॥ संकल्पभ्रष्टजहांभौसुरेस ॥ इहिंठोरनिवारेघनअसेस ॥ फटिजलद

भयौउज्जलअकास ॥ पुनिकिरनिमहादिनकरप्रकास ॥ हठिगोसुरेसबलभंगहोइ ॥ कृतउद्यमनाहिनफुर्योकोइ ॥ प्रभुदईतबैआज्ञाप्रमान ॥ निकसेजनबाहिरसबनिदान ॥ थितकर्योधराधरधरनिथान ॥ गोपालवेणुरवकीनगान ॥ रोहिनीजसोदानंदराइ ॥ इत्यादिकभेटेसकलआइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अतिसनेहकातरअषिल । व्रजनरनारिविचार ॥ स्यामहिदेतअसीससब । चिरजियनंदकुमार ॥ १ ॥ सुरभीकृतहंभारसुर । धरनिश्रवनपयधार ॥ कृष्णहिचितवतएकटक । उरआनंदअपार ॥ २ ॥ मुनिवरसिद्धप्रसिद्धमिलि । अरुचारनचितचाइ॥करजोरेअस्तुतिकरत । वारंवारवलाई ॥३॥ पुहपवरषिअतिहियहरषि । दुंदुभिविजयवजाइ ॥ कीनैवंदनपरिक्रमण । अमरवृंदइहांआइ ॥ ४ ॥ महरआदिसवगोपमिलि । शुभजुतकृष्णसहाइ ॥ अपनेअपनेघोषइहां। सबआएसुषपाइ ॥ ५ ॥ राष्यौव्रजगिरवरधर्यौ । मानहर्योमघवान ॥ प्रभुनरहरपूरनपुरुष । भएनरतनभगवान ॥ ६ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेपंचविंशतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सभासुभगमिलिइकसमय । बैठेगोपविनीत ॥ कृष्णचरित्रविशेषक्रम । प्रगटनलगेपुनीत ॥ १ ॥ ॥ गोपउवाच ॥ ॥ कहतभएसबनंदकहँ । विस्मयवातविष्यात ॥ कहांवयसइहकृष्णकी । पुनिव्रजकेउतपात ॥ २ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विहसतकहतभएव्रजवासी ॥ वासरदशकेबकीविनासी ॥ मासतृतियसकटासुरमार्यौ ॥ पतितसुवाएचरनप्रहार्यौ ॥ मांझवर्षत्रिकचक्रजुमारे ॥ अर्जुनजुगत्रयवृक्षउधारे ॥ वत्सासुरअघबकषरअद्भुत ॥ अरुप्रलंबकालीअहिअनहित ॥ महादुष्टसबइहिंक्रममारे ॥ इहांगोवर्धनगिरिउद्धारे ॥ कीनैसातवर्षमहँएकृत ॥ हैअवताकृष्णव्रजकेहित ॥ ॥ नंदउवाच ॥ ॥ तिनकहँनंददयौफिरिउत्तर ॥ यहैकह्यौहोगोहिगर्गगुर ॥ आगैतृजुगतीनिअवतारा ॥ स्वेतअरुनभएपीतसुढारा इहांचोथैजुगकृष्णजुआए ॥ विधियाहीमुहिगर्गबताए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कलिजुगकहीयेगेकृष्ण । वासुदेवइहिंनाम ॥ भवउद्धारनएभए । विहितवेदविश्राम ॥ वाहिनतैंजानैइनाहिं । मैंपरब्रह्मप्रमान ॥ चिरजीवौव्रजहितविदित । विलसहुप्रेमविधान ॥४॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अघनासनजगउद्धरन । कृष्णकथाहितकाज ॥ कविनरहरसुनिभजनकारि । साधलहैसुषसाज ॥५॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेषड्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुरराजसुरधेनुसंग । आएयाहीकाल ॥ अवलोकेएकांतइहां । मोहनमदनगुपाल ॥ १ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ करजोरेवंदनबहुकीनै ॥ इंद्रभयेइहिंअतिआधीनै ॥ तीनलोकप्रभुतामैंपाई ॥ यातैंभईगर्वअधिकाई ॥ तिहिंमदअंधभयोहूंतैसो ॥ जगकरताज्यान्यौनहिजैसो ॥ मायावसईश्वरतामानैं ॥ कारनक्रोधलोभअधिकानै ॥ जाकहँदुष्टकर्मतुमजानत ॥ प्रभुतहँदीक्षादंडप्रमानत ॥ यातैंपंथचलतसुरआसुर ॥ तुमगोविंदगुरुहूंकेगुर ॥ जेषलईश्वरमानतआतम ॥ ताहितइच्छारू

पधरततुम ॥ मैंअपराधकर्योवैभवपद ॥ प्रभुक्षमाकरिदेहुअभयपद ॥ यहमतिनाथ मोहिफिरनावै ॥ प्रभूदीनयहवंछितपावै ॥ गोकुलनाथचरनअनुरागी ॥ तेइभयभूतभ येबडभागी ॥ मेरोजड़्ज्ञानिवार्योमोहन ॥ मोकहँउपज्योक्रोधमहामन ॥ प्रलयमेघमैंप वनपठाए ॥ याव्रजनासकरैकहँपाए ॥ हठितेउबरषिबरषिघनहारे ॥ मैहतउद्यपभयौ मुरारे ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ सोसुनिहसबोलेजगस्वामी ॥ मदकरिहोतजुउ तपथगामी ॥ संपतिभ्रष्टकरौहूंतिहिंसठ ॥ हैनिहचैमेरोऐसोहठ ॥ अबसुरराजजाहुग्र हअपनै ॥ पुनिऐसीनविचारहुसुपनै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इंद्रलोकवसिइंद्रअब ॥ कृत जुइंद्रअधिकार ॥ करियेरक्षासृष्टिकी । सबविलसहुसुषसार ॥ २ ॥ ॥ छंदद्विअक्ष री ॥ ॥ कामधेनुउवाच ॥ ॥ कामधेनुबोलीधीरजकरि ॥ होतुमसगुनब्रह्मनिर्गुनह रि ॥ जगतपिताजगदीसजगतगुर ॥ वासुदेवव्रजनाथविसंभर ॥ इंद्रकर्योहौंउद्यम ऐसो ॥ जनगोबीजरहैनहिजैसो ॥ व्रजगोधनजौप्रभुनवचावत ॥ तौइनकौंकहूंनामन पावत ॥ निर्भयभईधेनुनंदनंदन ॥ व्रजवसिहैसुषसौजगवंदन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुरपतिसुरसुरभीसहित । सबैविगतसंदेह ॥ प्रभुनरहरगावत प्रसिद्ध । गएआपनैग्रेह ॥ ३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारेदशमस्कंधानु सारेणबारहटनरहरदासविरचितेसप्तविंशतितमोऽध्यायः ॥ २७ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ एकसमैएकादशी । निराहारकियनंद ॥ कालिंदीअस्नानकृत । आएसहितआनंद ॥१॥ असुरकालसंध्यासकल । वेदलोकविवहार ॥ सलिलप्रवेसजुइहिं समय । सोनउचितसंसार ॥ २ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ इहांवरुणकेदूतजुआए ॥ पुनितिन नंदनीरमहँपाए ॥ ग्रहेनंदतिहिंदूतनगाढे ॥ करषिजुगलकरजलतैंकाढे ॥ पलमहँवरुणलो कपहुंचाए ॥ पुनिसेवकइहांनंदनपाए ॥ सेवकआरतवचनसुनाए ॥ इहांकृष्णपहँआतुरआ ए ॥ विरहविलापकरैव्रजवासी ॥ अहोकृष्णव्रजहितअविनासी ॥ कारनपूछिकृष्णकरुनाक र ॥ वरुणलोकआएविश्वंभर ॥ सनमुषआनिवरुणसनमानै ॥ पूजाकीनीब्रह्मप्रमानै ॥ वरु णउवाच ॥ सभयदीनतावरुणसुनाई ॥ प्रभुयहधन्यदेहमैंपाई ॥ भयौकृतारथदरसनदे वा ॥ सदादेहुपदपंकजसेवा ॥ प्रभुमैंमर्मनप्रथमापिछान्यौ ॥ इहांनंदअनजानैंआन्यौ ॥ यहअपराधछमहुअषिलेश्वर ॥ गोविंददीनदयालजगतगुर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिव्हैसंगनंदपहुंचाए ॥ इहांलैकृष्णघोषमहँआए ॥ ॥ नंदउवाच ॥ ॥ गिरिधारी ब्राह्मण्यगुपाला ॥ परमातमपूरनप्रतिपाला ॥ सकलगोपकहँनंदसुनायौ ॥ लोकपालइ हिंबालनवायौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गोपसकलगोविंदगुनगावत ॥ प्रभुपौरुषकहि कहिसुषपावत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातछिडायौवरुणतें । इहांभएआनंद ॥ हरषिलगा एमातहिय । कृष्णकुंवरसुषकंद ॥ ३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कं धानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेअष्टाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ अथपंचाध्यायी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ शरदकालनिशिसुकल विमलफुल्लीयसरोजवन ॥ विविधवर्णसौरभाविशेषकुसामितभएकानन ॥ एकाकीउद्यानइ

हांमनमोहनआए ॥ नंदनंदआनंदकंदतबबंसिबजाए ॥ सुरवेणुचंगज्यौंदोरिसंग, अगमगगनतैंउत्तरीय ॥ वसप्रेमनेमविव्हलविकल, सकलचलींव्रजसुंदरीय ॥ १ ॥ ॥ गोपांगनागति ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कोउमंजनअंजनअनकीनी ॥ अरुकोउग्रहव्यवहारअधीनी ॥ कोउपितुमातभतीजेभाई ॥ अधभोजनदीनेउठिधाई ॥ इहांकोउधेनुदुहावनआवति ॥ धरियपात्रधरनीउठिधावति ॥ छाडेपयकिहूंचुल्हचढाए ॥ तेअनजतनगएउफनाए ॥ कोउअर्धाआभूषनकीने ॥ कोउदूधहिजावनअनदीने ॥ कोउकुचपानबालअनकीने ॥ दीपकग्रहचौकाअनदीने ॥ इत्यादिकसुश्रूषाआरज ॥ कौनगनेंछांडेग्रहकारज ॥ इहिंगतिप्रेममगनवनआईं ॥ अतिआतुरमनमथअकुलाईं ॥ विहितकुटंबमातपितवरजी ॥ तउनरहीजोपैपतितरजी ॥ इहांइकत्रियग्रहमैंअवरोधी ॥ विकटपाटजटिकंतविरोधी ॥ करिहाहारवविनतीकीनी ॥ दुष्टगोपपतिजाननदीनी ॥ प्रेमविवसभइजाननपाई ॥ इहिंत्रियप्राणतजेअकुलाई ॥ करिसोइध्यानधारनाकामिनि ॥ गईकृष्णमहँमिलिगजगामिनि ॥ ॥ अथशरददशावर्णन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ गन्यौप्रथमनेत्रानुरागचितसंगविलग्गीय ॥ प्रेमविवससंकल्पभावतिहिंनिद्राभग्गीय ॥ तनसुषिनविषयानिवृत्तितहांत्रषानसावे ॥ मिलिअभंगउन्मादइहांभ्रममूर्छाआवे ॥ पावैंजुप्रानपंचत्वपैं, यहअभूतगतिअंगकी ॥ सुरसिद्धकहतनरहरसुकवि, एदशदशाअनंगकी ॥ २ ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मिलीप्रथमजोरोकीमंदिर ॥ यहकछुप्रेमभावअपरंपर ॥ आगैचलीसुपाछैआई ॥ आतुरजद्दपिमनअकुलाई ॥ इहांमदनमोहनअविलोके ॥ रहींएकटकदगपलरोके ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ भलैंजुतुमआईव्रजभामिनि ॥ कारनकहौआगमनकामिनि ॥ व्रजहैंकुशलग्वालसबगोधन ॥ अबइहिंसमयभयौक्यौंआवन ॥ कठिननिसाउद्यानभयंकर ॥ निकसैकालव्यालइहिंनिसचर ॥ जेत्रियचतुरबडेकुलजाई ॥ भ्रमननिसावनकवनभलाई ॥ तुमहिकुटंबसुषोजततातें ॥ अनपाएउपजतदुषयातें ॥ दुर्लभवनसोभानिसिदेषी ॥ वेगिजाहुअबभवनविशेषी ॥ वेदविहितऋषिवरयहवानी ॥ वनितापतिदेवतावषानी ॥ पतिसेवाहितसौंकरिप्यारी ॥ नियतलहैसदगतिसोनारी ॥ जडजोगीषलजरठजुवारी ॥ वामनवंसभ्रष्टविभचारी ॥ त्रिगुनविरूपविरागविसेषी ॥ निंदकदईवदुष्टद्विजदोषी ॥ दयाहीनदुर्मददुर्वादी ॥ वैसकविसनदरिद्रविवादी ॥ कलहीकुटिलक्रूरक्रमकातर ॥ पापश्रापहतपतितकुपातर ॥ अंधअलसअंगहीनअभागी ॥ आतममतअनिषिधसुषत्यागी ॥ कृतघातककृतचौरकुकर्मी ॥ धूतधृष्टसठआदिअधर्मी ॥ नारितथापितजैपतिनांहीं ॥ महाकुलक्षनएजिनमांही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परमधरमपतिव्रत्तकौ । पतिसेवाफलपाइ ॥ पतनीपावतशुद्धपद । साषीवेदसहाइ ॥ १ ॥ ॥ गोपांगनावाक्यं ॥ ॥ हाहाहाव्रजनाथहरि । उचितवचननहिएहु ॥ तातैंअसरनसरनतुम । देवनउत्तरदेहु ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उरकंपितसूकतअधर । ढरतनयनजलधार ॥ गदगदसुरगोपांगना । बाढेस्वासविकार ॥ ३ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ पदपल्लवनषभूलिषत । बोलीसहितविवेक ॥ तुममातितुमपतितुमहिगति । अंतरभावजुएक ॥ ॥ छंदप

पधरततुम ॥ मैंअपराधकस्योंवैभवपद ॥ प्रभुक्षमाकरिदेहुअभयपद ॥ यहमतिनाथ मोहिफिरनावे ॥ प्रभूदीनयहवंछितपावे ॥ गोकुलनाथचरनअनुरागी ॥ तेइभयभूतभ येवडभागी ॥ मेरोजज्ञानिवास्योमोहन ॥ मोकहंउपज्योक्रोधमहामन ॥ प्रलयमेघमेंप वनपठाए ॥ याव्रजनासकरेंकहँपाए ॥ हठितेउबरपिबरपिघनहारे ॥ मैहतउद्यपभयौं मुरारे ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ सोसुनिहसबोलेजगस्वामी ॥ मदकरिहोतजुउ तपथगामी ॥ संपतिभ्रष्टकरोंहूंतिहिसठ ॥ हेंनिहचेंमेरोऐसोहठ ॥ अबसुरराजजाहुग्र हअपने ॥ पुनिऐसीनविचारहुसुपने ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इंद्रलोकवसिइंद्रअब ॥ कृत जुइंद्रअधिकार ॥ करियेरक्षासृष्टिकी । सबविलसहुसुपसार ॥ २ ॥ ॥ छंदद्विअक्ष री ॥ ॥ कामधेनुउवाच ॥ ॥ कामधेनुबोलीधीरजकरि ॥ होतुमसगुनब्रह्मनिर्गुनह रि ॥ जगतपिताजगदीसजगतगुर ॥ वासुदेवव्रजनाथविसंभर ॥ इंद्रकस्योंहोउद्यम ऐसो ॥ जनगोबीजरहेनहिजेसो ॥ व्रजगोधनजोप्रभुनबचावत ॥ तौइनकोकहूंनामन पावत ॥ निर्भयभईधेनुनंदनंदन ॥ व्रजवसिहेसुषसौजगवंदन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुरपतिसुरसुरभीसहित । सबेविगतसंदेह ॥ प्रभुनरहरगावत प्रसिद्ध । गएआपनेंग्रेह ॥ ३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारदशमस्कंधानु सारेणवारहटनरहरदासविरचितेसप्तविंशतितमोऽध्यायः ॥ २७ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

कविरुवाच ॥ दोहा ॥ एकसमेएकादशी । निराहारकियनंद ॥ कालिंदीअस्नानकृत । आएसहितआनंद ॥१॥ असुरकालसंध्यासकल । वेदलोकविवहार ॥ सलिलप्रवेसजुइहि समय । सोनउचितसंसार ॥ २ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ इहांवरुणकेदूतजुआए ॥ पुनितिन नंदनरिमहँपाए ॥ ग्रहेनंदतिहिदूतनगाढे ॥ करषिजुगलकरजलतेंकाढे ॥ पलमहँवरुणलो कपहुंचाए ॥ पुनिसेवकइहांनंदनपाए ॥ सेवकआरतवचनसुनाए ॥ इहांकृष्णपहँआतुरआ ए ॥ विरहविलापकरेंव्रजवासी ॥ अहोकृष्णव्रजहितअविनासी ॥ कारनपूछिकृष्णकरुनाक र ॥ वरुणलोकआएविश्वंभर ॥ सनमुपआनिवरुणसनमानें ॥ पूजाकीनीब्रह्मप्रमानें ॥ वरु णउवाच ॥ सभयदीनतावरुणसुनाई ॥ प्रभुयहधन्यदेहमैंपाई ॥ भयोकृतारथदरसनदे वा ॥ सदादेहुपदपंकजसेवा ॥ प्रभुमेमर्मनप्रथमापिछान्यौ ॥ इहांनंदअनजानेंआन्यौ ॥ यहअपराधछमहुअपिलेश्वर ॥ गोविंददीनदयालजगतगुर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिलैसंगनंदपहुंचाए ॥ इहांलैकृष्णघोषमहँआए ॥ ॥ नंदउवाच ॥ ॥ गिरिधारी ब्राह्मण्यगुपाला ॥ परमातमपूरनप्रतिपाला ॥ सकलगोपकहँनंदसुनायौ ॥ लोकपालइ हिंबालनवायौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ गोपसकलगोविंदगुनगावत ॥ प्रभुपौरुषकहि कहिसुषपावत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातछिडायौवरुणतें । इहांभएआनंद ॥ हरषिलगा एमातहिय । कृष्णकुंवरसुषकंद ॥ ३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कं धानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेअष्टाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ॥ अथपंचाध्यायी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ शरदकालनिशिसुकल विमलफुल्लीयसरोजवन ॥ विविधवर्णसौरभविशेषकुसमितभएकानन ॥ एकाकीउद्यानइ

हांमनमोहनआए ॥ नंदनंदआनंदकंदतबबंसिबजाए ॥ सुरवेणुचंगज्यौंदोरिसंग, अ गमगगनतैंउत्तरीय ॥ वसप्रेमनेमविव्हलविकल, सकलचलींव्रजसुंदरीय ॥ १ ॥ ॥ गोपांगनागति ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कोउमंजनअंजनअनकीनी ॥ अरुकोउग्रह व्यवहारअधीनी ॥ कोउपितुमातभतीजेभाई ॥ अधभोजनदीनैउठिधाई ॥ इहांकोउधेनुदुहावनआवति ॥ धरियपात्रधरनीउठिधावति ॥ छाडेपयकिंहूंचुल्हचढाए ॥ तेअनजतनगएउफनाए ॥ कोउअर्धाआभूषनकीने ॥ कोउदूधहिजावनअनदीने ॥ कोउकुचपानबालअनकीने ॥ दीपकग्रहचौकाअनदीने ॥ इत्यादिकसुश्रूषाआरज ॥ कौनगनैछांडे ग्रहकारज ॥ इहिंगतिप्रेममगनवनआई ॥ अतिआतुरमनमथअकुलाई ॥ विहितकुटंब मातपितवरजी ॥ तउनरहीजोपैपतितरजी ॥ इहांइकत्रियग्रहमैंअवरोधी ॥ विकटपाटजटिकंतविरोधी ॥ करिहाहारवविनतीकीनी ॥ दुष्टगोपपतिजाननदीनी ॥ प्रेमविवसभइजाननपाई ॥ इहिंत्रियप्राणतजेअकुलाई ॥ करिसोइध्यानधारनाकामिनि ॥ गईकृष्णमहँमिलिगजगामिनि ॥ ॥ अथशरददशावर्णन ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ गन्यौप्रथमनेत्रानुरागचितसंगविलग्गीय ॥ प्रेमविवससंकल्पभावतिहिंनिद्राभग्गीय ॥ तनसुषिनविषयानिवृत्तितहांत्रषानसावे ॥ मिलिअभंगउन्मादइहांभ्रममूर्छाआवे ॥ पावेजुप्रानपंचत्वपैं, यहअभूतगतिअंगकी ॥ सुरसिद्धकहतनरहरसुकवि, एदशदशाअनंगकी ॥ २ ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मिलीप्रथमजोरोकीमंदिर ॥ यहकछुप्रेमभावअपरंपर ॥ आगेचलीसुपाछैआई ॥ आतुरजदपिमनअकुलाई ॥ इहांमदनमोहनअविलोके ॥ रहींएकटकटगपलरोके ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ भलैजुतुमआईव्रजभामिनि ॥ कारनकहोआगमनकामिनि ॥ व्रजहैकुशलग्वालसबगोधन ॥ अबइहिंसमयभयोक्योंआवन ॥ कठिननिसाउद्यानभयंकर ॥ निकसैकालव्यालइहिंनिसचर ॥ जेत्रियचतुरबडेकुलजाई ॥ भ्रमननिसावनकवनभलाई ॥ तुमहिकुटंबसुषोजततातें ॥ अनपाएउपजतदुषयातें ॥ दुर्लभवनसोभानिसिदेषी ॥ वेगिजाहुअबभवनविशेषी ॥ वेदविहितऋषिवरयहवानी ॥ वनितापतिदेवतावषानी ॥ पतिसेवाहितसौंकरिप्यारी ॥ नियतलहैसदगतिसोनारी ॥ जडजोगीषलजरठजुवारी ॥ वामनवंसभ्रष्टविभचारी ॥ विगुनविरूपविरागविसेषी ॥ निंदकदईवदुष्टद्विजदोषी ॥ दयाहीनदुर्मददुर्वादी ॥ वैसकविसनदरिद्रविवादी ॥ कलहीकुटिलक्रूरक्रमकातर ॥ पापश्रापहतपतितकुपातर ॥ अंधअलसअंगहीनअभागी ॥ आतममतअनिषिधसुषत्यागी ॥ कृतघातककृतचौरकुकर्मी ॥ धूतधृष्टसठआदिअधर्मी ॥ नारितथापितजैपतिनांहीं ॥ महाकुलक्षनएजिनमांही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परमधरमपतिव्रत्तकौ । पतिसेवाफलपाइ ॥ पतनीपावतशुद्धपद । साषीवेदसहाइ ॥ १ ॥ ॥ गोपांगनावाक्यं ॥ ॥ हाहाहाव्रजनाथहरि । उचितवचननहिएहु ॥ तातैअसरनसरनतुम । देवनउत्तरदेहु ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ उरकंपितसूकतअधर । ढरतनयनजलधार ॥ गदगदसुरगोपांगना । बाढेस्वासविकार ॥ ३ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ पदपल्लवनषभूलिषत । बोलीसहितविवेक ॥ तुममतितुमपतितुमहिगति । अंतरभावजुएक ॥ ॥ छंदप

धरी ॥ ॥ एभईमअतुममांझआइ ॥ सुतकंतग्रेहछांडेसुभाइ ॥ जगदीसकहोअबकहां जाहिं ॥ निरधारचरनकहुंचलतनाहिं ॥ उपज्योंजुतापउरमदनआइ ॥ शुभदृष्टिसींचि वुझवहुसुभाइ ॥ नातरएविरहाअग्नितूल ॥ मिलिदहदग्धव्हेंहेंसमूल ॥ मनजोगध्यान धरिमूलमंत्र ॥ सबतुमहिमांझमिलिहैंमुतंत्र ॥ तवरमाउपासतपदपुनीत ॥ हमसेवतहैव नवासिविनीत ॥ पदरजतवतुलसीभइसप्रेम ॥ निहचेहमपाईसोसनेम ॥ करिकृपाहम हिंप्रभुप्रणतिपाल ॥ दासिकाभावकरियेदयाल ॥ ऐसीकोत्रियात्रिलोकआहि ॥ तवमुर लीरवमनअमितनाहि ॥ सवअंगअंगसुंदरसरूप ॥ रतिरंगरमतमनमथनरूप ॥ ॥ क विरुवाच ॥ ॥ इहांदीनवचनसुनिकेदयाल ॥ करुणानिधानप्रभुभएकृपाल ॥ वनिता विलासकरिमहावीर ॥ तहांआएदिनमणिसुतातीर ॥ रतिकरतविविधरसरीतिरंग ॥ अ विलोकहास्यकरपरसअंग ॥ विधिविधिविलासवनिताविहार ॥ करितृप्तसकलजसुमति कुमार ॥ गोपिकारीझिइहांवेणुगान ॥ गरविष्टभईअतिरतिगुमान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इनकेमदमोचनअरथ । नरतनछदमनिधान ॥ हितजुततवेंअदृष्टव्हे । हरिभएअंतर्ध्या न ॥ ४ ॥ नरहरप्रभुकेतवनिपुन । इच्छाअगमअपार ॥ विलपतिछांडीव्रजवधु ॥ ऐसे चरितउदार ॥ ५ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबार हटनरहरदासविरचितेएकोनत्रिंशतितमोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गर्वविगतगोपांगना । धरिउरमोहनध्यान ॥ क रतभईलीलाजुकृष्ण । जथासमयजियजान ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ गतिहास्यभा षनगान ॥ अवलोकतांडवतान ॥ मिलिपरसपरभुजमेलि ॥ करिकृष्णतादृशकेली ॥ भजिमदनमोहनभाव ॥ सोप्रीयाप्रीयसुभाव ॥ अतिप्रेमविव्हलअंग ॥ यहसमयपाइ अनंग ॥ सबभईपोजतस्याम ॥ बनवढतविरहाविराम ॥ सोसकलव्यापकस्याम ॥ अ नभिन्नभिन्नअकाम ॥ भवभूतअंतरभाव ॥ सबमांझवसतसुभाव ॥ विरहनीवाक्यं ॥ यहजानिपूछनआइ ॥ हेवृच्छघनवनराइ ॥ सोकहूंदेषेस्याम ॥ विललाततजिगएवाम ॥ हेतुलसिकाप्रीयतोहि ॥ ममलैगएमनमोहि ॥ हेपृथ्वीपुन्यप्रवीन ॥ क्रमतीनवामनकी न ॥ रदअग्रधरिवाराह ॥ उद्धारिसलिलअथाह ॥ वेइकृष्णप्रगटेआइ ॥ वसुमतीदेहु बताइ ॥ हेमत्तचित्तमयोर ॥ कहुंलसेनंदकिसोर ॥ भवभूतेरसतभाइ ॥ व्रजस्यामदेहुब ताइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तेसकलकृष्णचरित्र ॥ व्रजवधूकरतिविचित्र ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ अषिलेसविश्वव्यापकअनंत ॥ तहँलह्योगोपिकाहृदयतंत ॥ वनओटानिक टतबआनिवीर ॥ इकप्रेमविवसजानीअधीर ॥ बालिकासुपैलीनीबुलाइ ॥ लैगएकृष्ण तिहिंसंगलगाइ ॥ सोलियैफिरतइच्छाअनूप ॥ वनवनविहाररतिकामरूप ॥ यौंफिरत श्रमितभइबालएह ॥ दिनतुच्छमहासुकमारदेह ॥ सोचलिनसकतिअतिश्रमितसंग ॥ आपुनउठाइलीनीउछंग ॥ अनेककुसुमइहांवीनिआनि ॥ प्रियगूंथिप्रियाकुंवरीसुपानि भुजमेलिपरसपरअंसभाइ ॥ सोइचलेपंथदंपतिसुभाइ ॥ आधीननिहारतबदनआप ॥ विश्वेसविषममनमथवियाप ॥ गोपिकाकह्योतिहिंअतिगुमान ॥ आधीनभएमोहिछांडि

आन ॥ कृष्णयहलष्योत्रियगर्वकीन ॥ प्रभुगएछांडितातूप्रवीन ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ छरिअवरगोपिउदास ॥ प्रभुदईछांडिप्रकास ॥इहांभ्रमतितेत्रियआइ॥ पतिचरनपद्धति पाइ॥वज्रादिचिन्हविशेष ॥ इहादेषिअतुलअसेष ॥ एचलीतिहिंअनुसार ॥ पुनिचरनचा रिप्रचार ॥ द्वैकृष्णकेपददेषि ॥ अरुउभयत्रीयअवरेषि ॥ पदजुवतिजानिप्रमान ॥ उरबढी सूलअमान ॥ ॥ सर्ववनितावाक्यं ॥ ॥ बडभागयहकोउवाम ॥ संगलीयेजातजुस्याम ॥ निस्सेषहमअपमानि ॥ पैत्रियाएकप्रमानि॥यहतजीगोपीएक ॥ वनभ्रमतिसोइसविवेक ॥ वनितासुकरतिविलाप ॥ यहएकवनजनआप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विलपतिढूंढतिसघन वन । वनिताविव्हलवानि ॥ यासौंविरहविषादअति । इहांमिलींसबआनि ॥ २ ॥ गाव तिगुनगोविंदके । त्रियगईजमुनातीर ॥ इहांनिहारतिआगमन । अंतरविरहअधीर ॥३॥ यहइच्छाअषिलेसकी । लीलाअगमअगाध ॥ कविनरहरतैसीकही । सुनीजथामुष साध ॥ ४ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदास विरचितेत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ भामिनिआसाभंग, सोधिसोधिभइवनसकल ॥ उपज्यौतापअनंग, विरहविथाबाढीविषम ॥ १ ॥ ॥ गोपांगनावाक्यं ॥ ॥ छंदउ धोर ॥ ॥ प्रियवदनकमलप्रकास ॥ अलिनयनसौरभआस ॥ रदछदनछुधासुरूप ॥ हृयदेहुलेहुअनूप ॥ सुभवचनअमृतस्वाद ॥ प्रभुकरहुश्रवनप्रसाद ॥ तवदृष्टिभेदतरंग ॥ इषुलगेमनहुअनंग ॥ भ्रुवभंगभृकुटीभाव ॥ दुस्साध्यवसकृतदाव ॥ करजानुलंबितला ल ॥ कुचपरसकरहुकृपाल ॥ तनसगुनस्यामसरूप ॥ आलिंगकरहुअनूप ॥ प्रभुचरन पंकजप्रेम ॥ मिलिसुरभिसंगसनेम ॥ वनिसीसकालीव्याल ॥ कृतचरनअंककृपाल ॥ सोइचरनममकुचसंग ॥ प्रभुकरहुपरसप्रसंग ॥ आलापहास्यअनेक ॥ वनिदृष्टिभेदवि वेक ॥ रसरहासिविविधविलास ॥ अन्नेकपूरेआस ॥ तेइभएफिरिविपरीत ॥ भ्रमउपजि मनभयेभीत ॥ सोइविरहअंतरसाल ॥ प्रभुहरहुमिलिजुकृपाल ॥ दवगरलजलभयदेषि ॥ व्रजलयौराषिविशेषि ॥ अबहमहिंमारतहाथ ॥ विनुसत्रुकतव्रजनाथ ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहिंविधिकरतिविलापअति । ऊरधस्वासउसास ॥ कविनर हरप्रभुदरसकी । अतिबाढीउरआस ॥ २ ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ करिअपमानकुटं बकौ । वनआईनिसिवास ॥ कपटीतुमविनुअवरको । अबलातजैअकाम ॥ ३ ॥ महा सघनउद्यानमहँ । विलपतिछाँडीबाल ॥ कहियतवेदपुरानकरि । नातिनिपुननंदलाल ॥ ४ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविर चितेएकात्रिंशतितमोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करतमनोरथमिलनको । वनिताविरहविराम ॥ चितचिततज्यौचातकी । स्वातिबुंदघनस्याम ॥ १ ॥ प्रगटेइच्छाआपनी । इहींसमयअ षिलेस ॥ गोपीमंडलमध्यगत । सुंदरस्यामसुवेस ॥ २ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ उठि सकलसनमुषआइ ॥ मनुपरमनिधिप्रियपाइ ॥ कोउधरतिकरिकरधाइ ॥ कोउमिलतमृ

दुमुसकाइ ॥ तहांलेतकोउतांबूल ॥ बहुतर्करसमयबोल ॥ सुभकृष्णचरनसरोज ॥ आलिंगकरतउरोज ॥ भ्रुवभंगभृकुटीभेद ॥ अरुद्दगकटाक्षअपेद ॥ कोउधरतिउरप्रियध्यान ॥ द्रगमूंदिप्रेमनिदान ॥ भयविरहटरिउरभाम ॥ कृतउदितअँगअँगकाम ॥ व्रजगोपवनितावृंद ॥ निसिजोन्हमिलिनंदनंद ॥ इहांरविसुतातटआइ ॥ सबभांतिसुपदसुभाइ ॥ वनकुमुदफूलिसुवास ॥ वहित्रिविधपवनविलास ॥ मधुमत्तमधुकरमाल ॥ रसशब्दभ्रमितरसाल ॥ वनितानिउत्तरवास ॥ प्रभुलएप्रेमप्रकास ॥ तेइवसनपीठबनाइ ॥ सुपबैठिस्यामसुभाइ ॥ जोगिंद्रउरजगजेव ॥ जेवसतदेवनिदेव ॥ सोइमध्यराजतस्याम ॥ भुवसभावनिव्रजभाम ॥ तेइकृष्णजमुनातीर ॥ विचिगोपिमंडलवीर ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ तहांवचनकहिव्रजवाल ॥ वसरोपतर्कविसाल ॥ हितशब्दअमरपहास ॥ पुनिद्दष्टिवक्रप्रकास ॥ प्रभुकहोनीतिप्रकार ॥ वसकपटछाँडिविकार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कोऊभजतेकहँभजे । कोउभजतेनभजंत ॥ भजतेअनभजतेअभज । कोहेसोधौकंत ॥ ३ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ हंसिबोलेयहसुनतहरि । नागरिसुनहुनिदान ॥ तत्वजुपूछौमोहितुम । पैसोइकहूंप्रमान ॥ ४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ भजतेकहँजोपैभजेभाइ ॥ कृतवहैआपस्वारथकहाइ ॥ सुरभीज्यौंभोजनपाइसूध ॥ देहैतदनंतरततौदूध ॥ भजतेनभजेकोउकिहूंभाई ॥ क्रमउदासीनसोपैकहाइ ॥ नहिंभजतजुपैभजअभजमान ॥ निर्धारचारितिनकेनिदान ॥ सुनियेजुमनस्वीप्रथमसोइ ॥ हितपूरनकामसुद्दितीयहोइ ॥ कृतघनसोतीजोपैकहाइ ॥ सठवज्रहृदयचोथोसुभाइ ॥ इनचहुंमाझहूंनाहिअभीत ॥ गोपीयहजानहुगूढगीत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पतिव्रत्तनिपुनियहसमयपाइ ॥ सबहँसीपरसपरत्रियसुभाइ ॥ जगदीसगोपिकाममंजानि ॥ प्रभुतत्वबतावतचक्रपानि ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पूरनदरिद्रजौनिधिहिपाइ ॥ जगबढैगर्वसबभूलिजाइ ॥ निधिनासहोइजबवहनिदान ॥ पुनिअटकैताहीमांझप्रान ॥ तातेतबकीनोपरित्याग ॥ सोसमझिलेहुगोपीसभाग ॥ ममहेतलागितुमकुलमजाद ॥ मनवचनकर्मकरिअप्रमाद ॥ हितछांडितजीवननिठुरहोइ ॥ करिवौविषादताकोनकोइ ॥ द्दढलोकवेदसंकलद्दुरंत ॥ तुमतोरिमिलीमोकहँतुरंत ॥ प्रत्योपकारताकेप्रमान ॥ मोपैनहोतयहसत्यमान ॥ सोअबैतिहारेहीसंतोष ॥ मैंव्हैहूंअनरिणदोषमोष ॥ इहिंठोरजतननहींकछुआन ॥ यहपरमप्रियेमानहुप्रमान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनिइत्यादिकस्यामके । वनितावचनविनोद ॥ उमगेप्रेमसमुद्रउर । पूरनपरमप्रमोद ॥ ५ ॥ इतिश्रीअतवारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेद्वात्रिंशततमोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतआरंभजुरासकौ । सजिमोहनधनस्याम ॥ शरदनिसाराकाशशी । उदितभयौअभिराम ॥ १ ॥ हैनिकुंजमंडलतहां । विभ्रमलतावितान ॥ सीतलमंदसुगंधसुष । पवनचलतहितप्रान ॥ २ ॥ रंगभूमिराजतरुचिर । पावनविविधप्रकार ॥ भामिनिमिलिनिर्ततभए । मोहननंदकुमार ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अप्रियमध्यस्यामसुंदरसुरूप ॥ अरुदुहुंओरवनिताअनूप ॥ इकएककान्हगोपिकाएक ॥ अ

वलंबकरनिकरछविअनेक ॥ रसबाढ्यौहोतविलासरास ॥ अमरनिविमानछायोअकास ॥ सुररासभेदगतितालसंग ॥ अन्नेककलासंगीतअंग ॥ भरकुचनितंबकटिषीनभाइ ॥ जनुभ्रमणसंगमतटूटिजाइ ॥ नूपुरकटिमेषलवलयनाद ॥ संमिलिनभदुंदुभितुमुलसाद ॥ मनिनीलकनकमनिकानिमाल ॥ वनिमनहुरासमंडलविसाल ॥ श्रमस्वेदवुंदमुषहासमंद ॥ अरुउडतवातबासनअनंद ॥ चमकतकपोलकुंडलसचाल ॥ मिलिचंचलहारावलीमाल ॥ उडिअंचरउघरउरजओट ॥ जनुदरसदेतजुगशंभुजोट ॥ मिलिस्यामजलदमनुतडितमाल ॥ षनमच्यौरासमंडलसुष्याल ॥ नारायनजोकमलानिदान ॥ वसकृष्णगोपिकाप्रेमवान ॥ सुरत्रीयाकुसुमवरषतसहास ॥ पुनिबजेगगनदुंदुभिप्रकास ॥ गंधर्वमिलिकिन्नरकरतगान ॥ अपछरातानरसआनआन ॥ अवलोकिरासमंडलअनूप ॥ शशिभयोमोहव्यापतसरूप ॥ गतिपंगभएग्रहगननिसंग ॥ नहिंचलितथकितरहिरथनहंग ॥ निसिबढीयहैकारननिदान ॥ पुनिभईअयनपूरनप्रमान ॥ रचिकृष्णदेहतेतेस्वरूप ॥ अवलोकितितीगोपीअनूप ॥ एकहीवारसबहिनअनंद ॥ मिलिदएमदनमोहनमुकंद ॥ हैंएकजदापिनिसनिराकार ॥ आकाररचेतदपिअपार ॥ अषिलेसआपइच्छाअभंग ॥ एकतेस्रजतअन्नेकअंग ॥ श्रमस्वेदबुंदक्रीडासुसंग ॥ आपुनहरिपौंछततरुनिअंग ॥ इहांपेलिसहितरमनीउदार ॥ विश्वेसआइजमुनाविहार ॥ जलमांझधसेलैजुवतिजूथ ॥ वारनजुमत्तकरिनीवरूथ ॥ अवगाहकेलिजलतटनिअंत ॥ करिआएउपवनरमाकंत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्रजकन्यालैमासव्रत । सरिताकरेसनान ॥ संपूरनभयौमार्गशिर । वर दीनोभगवान ॥ ४ ॥ शरदनिसाराकासमय । विभ्रमरासविलास ॥ वाकोफलपूरनइहां । पायोप्रेमप्रकास ॥ ५ ॥ हितगोपीवस्त्राहरन । कृष्णप्रथमजोकीन ॥ अबताकोअभिलाषइहां । देवकृपाकरिदीन ॥ ६ ॥ ॥ परिक्षतोवाच ॥ ॥ इहांपूछौशुकदेवसौंरहसिपरीक्षतराइ ॥ हैनारायणधर्महित । संततवेदसहाइ ॥ ७ ॥ तेइनारायनअवतरे । अबैकृष्णअवतार ॥ कुलजादववसुदेवके । भूमिहरनअघभार ॥ ८ ॥ अवलोकनपरत्रीयउमग । परसनवसनसप्रीति ॥ साधनकोअनुचित्तसदा । यहतौपरमअनीति ॥ ॥ ९ ॥ मुरलीसुरमहँमोहनी ॥ पढिपढिमंत्रप्रयोग ॥ अर्धनिसावनघनअवल । सोनधर्मसंजोग ॥ १० ॥ कहीयतजोगेश्वरकृष्ण । तेजोमयजगतात । ऐसीकैसैंआचरी । वेदविरोधकबात ॥ ११ ॥ मनहिविचारिविचारिमम । असंभावनाएह ॥ तुमकरिमिटिहैजीवतैं । दुषदाइकसंदेह ॥ १२ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ नृपकह्यौनीतिनिदान ॥ यहसाधुमतसज्ञान ॥ पूंछ्योजुराजप्रवीन ॥ द्विजव्यासउत्तरदीन ॥ एजोतिमयजगदीस ॥ अरुकरनकारनईस ॥ एइसृजतपालतसंत ॥ एइनासहेतअनंत ॥ इनआदिमध्यनअंत ॥ मतयहैवेदमहंत ॥ इनकौंनपुन्यनपाप ॥ अनवद्यअनगुनआप ॥ छंदपधरी ॥ अग्निजौसर्वभक्षीअमेव ॥ दाहकतउसुरमुषप्रगटदेव ॥ विवहारवेदविद्याविवेक ॥ अग्निबिनुकर्मनहिहोतएक ॥ आचमनकस्योजोपैअसेष ॥ व्याप्योनशिवहितउविषविसेष ॥ जेस्वयंजोतिपरपुरुषजान ॥ पैकर्मदोषतिनहिनप्रमान ॥ कछुकरैअदैव

तकर्मकोइ॥हठहेततासतोनासहोइ॥हेमलीवुरीजोग्रहेहाथ॥नियततउक्रृष्णत्रैलोकनाथ॥
अपवित्रतानअग्निहिअकाल ॥ तिहंलोकतदपिवंदितत्रिकाल ॥ आचरेहलाहलकोउ
अज्ञान॥निःशल्यनासपावेनिदान॥श्रीकृष्णमहाजोगेश्वरेश॥यहफलमदनजीत्योअसे
स॥आगेन्योविधिवासवअमान॥नरदेहकृष्णकीनोनिदान॥योकरीअतुललीलाअनंत॥
सजिमनुजदेहउद्धारसत ॥ गोपिकागईसबग्रेहग्रेह ॥ निहचेमनवंछितसहितनेह ॥
यहअजितदेवमायाअमान ॥ जान्योनमर्मकाहूसुजान ॥ निर्गमनआगमनगोपनारि ॥
समझ्योनकिहूमनबुद्धिसारि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतव्रजलीलाकृष्णकी। अद्भुतचरितअ
नंत॥ श्रद्धाजुतगावेसुनै। सुपपावैभवसंत ॥ १३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥
॥ वनवजाइनिसिबंसिकृष्णइच्छायहकीनी ॥ अपिलचित्तआकर्पिनारिव्रजबोलिजुली
नी ॥ विभ्रमहासविलासरासरससुपदरचायौ ॥ भवछमासनिसिभईइहांअद्भुतउपजा
यौ॥ क्रीडाविलोकिश्रीकृष्णकी, आनंदेथिरचरअमर ॥ शुभदानयहेनरहरसुकवि, पावै
मुक्तिप्रसादपर ॥ ॥इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारेदशमस्कंधानुसारणबारहट
नरहरदासविरचितेत्रयस्त्रिंशतितमोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सकुटुंबनंदअपनेसुभाइ ॥ इकदिवसअंबिकाजात्र
आइ ॥ सरस्वतीसरितकरिसनान ॥ विधिजुक्तकरेपूजाविधान ॥ दिवसेसअस्तगतभ
यौदेषि ॥ वसिरहेगोपतिहिठांविशेषि ॥ उपवासदानतीरथअनंद ॥ निसिकस्योसयनति
हिंठौरनंद॥ इहांमहाएकअजगरअसंत॥भूपोअतिआयौतहाँभ्रमंत॥नंदकहँग्रसनलाग्यो
निसंक ॥ इहांवनैआनविधिलिपितअंक ॥ पुनिनंदपुकारेकष्टपाइ ॥ हाकृष्णकृष्णकरियै
सहाइ ॥ इहसुनतगोपआएअपार ॥ पन्नगहिकस्योउलमुकप्रहार॥ इहांकृष्णआइत्रैलो
कईस ॥ सौहयौलातअहिफव्योसीस ॥ प्रभुचरनछुवतसबगएपाप ॥ अपनौपदपूरन
लह्योआप ॥ सौछांडितहांअजगरशरीर ॥ धारिदिव्यदेहठाढोसधीर ॥ ॥ श्रीकृष्ण
उवाच ॥ ॥ इहांपूछिकृष्णहोकौनआप ॥ पुनिलह्योसापतनकवनपाप ॥ ॥ विद्या
धरउवाच ॥ ॥ विद्याधरमौहूंमहावीर ॥ सुदर्शननामराजासधीर ॥ मोकहँजोपूंछ्यो
तुममुरारि॥ वृत्तांतसबैसुनियैविचारि ॥ देष्यौमैंसुंदरआपदेह ॥ सुभरूपवेसबाढ्यौस
नेह ॥ तपसाधतमुनिसरस्वतीतीर ॥ समरजितभएजर्जरसरीर ॥ इकदिनहूंनिकस्योत
हांआइ ॥ सुभरथारूढअपनेसुभाइ ॥ तनदुर्बलतापसदेषितास ॥ हठिकस्योतहांमैंप्र
गटहास ॥ ॥ऋषिउवाच॥ ॥ ऋषिकह्योअंगिरातवरिसाइ॥ कृतदुष्टहोइतूंसर्पकाइ ॥
॥ विद्याधरउवाच॥ततकालहीमैंजोनितास॥दुषभुगतेअवलोंजुनदुरास॥अबभएउद
यमभकर्मआनि॥ पदसीसहन्योमुहिचक्रपानि॥दुखछुटेआजमोहिदुष्टदेह॥अपनौपदपा
यौप्रगटएह॥ कविरुवाच ॥ प्रभुकरेचरनवंदनप्रमान ॥ शुभदेहपाइआयौसुथान ॥ अ
विलोकिकृष्णदैवतअनंत ॥ सबहरषेव्रजजनसाधसंत॥ करिसफलदेविजात्रासकाम॥ धी
रजसौंआएनंदधाम ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ इकदिवसजुतबलदेव ॥ वनआइकृष्णअजे
व ॥ वनिसंगबहुव्रजवाल ॥ कृतउदैशशितिहिंकाल ॥ वनफूलिविविधविसाल ॥ मनमु

दितअमितअलिमाल ॥ सुभकुंजकुंजसजोग ॥ पुनिवढतप्रेमप्रयोग ॥ इहांकृष्णवेणुउदा
र ॥ वजिसप्तसुरइकवार ॥ सुनिगोपिकारसरंग ॥ अतिभईविवसअनंग ॥ जोषिसतभूष
नजोट ॥ अंगउडतअंचरओट ॥ भइप्रेमविह्वलभाइ ॥ सोजानिपरिनसुभाइ ॥ इहिंस
मयआसुरएक ॥ कृतदुष्टकीनैटेक ॥ भरिबाथलैचल्योभाम ॥ निजसंषचूडसनाम ॥ कि
यत्रियनित्राहिपुकार ॥ हाकृष्णदेवउदार ॥ भयेशब्दसुनिजदुभूप ॥ उठिलगेसंगअनू
प ॥ जबकृष्णपहुंचेजाइ ॥ पुनिचल्योअसुरपलाइ ॥ मुष्टिकामार्यौमूंड ॥ तिहिंलग्यो
धरणीतूंड ॥ पापिष्टछांडेप्रान ॥ महिपर्योपर्वतमान ॥ सुभहुतीमनितिहिंसीस ॥ सोइ
काढिलीजगदीस ॥ मनिकृष्णसोसनमानि ॥ अग्रजहिदीनीआनि ॥ ॥ इतिश्रीअवता
रचरित्रे श्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेसंषचूडवधोनामच
तुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ वीतीविविधविलासवन । सबनिशिस्यामास्याम ॥ वि
षमभयौमंदिरवसत । वासरविरहविराम ॥ १ ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ गोधनसंगआएव
नगुपाल ॥ बहुसषासंगव्रजगोपबाल ॥ ॥ **गोपीवाक्यं** ॥ ॥ वसविरहपरसपरकहत
वाम ॥ सुनसषीअवैइहिंरूपस्याम ॥ कीरवामबाहुऊपरकपोल ॥ धरिअधरवेणुअतित
नअडोल ॥ करपल्लवपूरितछिद्रकीन ॥ पुनिवंसवजावतिअतिप्रवीन ॥ सुरबधूजदपिभ
र्तारसंग ॥ अतिहोतसुनतवसमोहअंग ॥ तनषसतवसनसुधिनहिनतास ॥ वंसीधुनिसु
निभूलतविलास ॥ तहांकवनमात्रहममनुषदेह ॥ सुनिहोतवंसधुनिवससनेह ॥ वनजंतु
सुरभितजिवनविलास ॥ अहिरहेदंतत्रिणपत्रग्रास ॥ चहुंओरग्वालकरिधातचित्र ॥ बांसु
रीवेत्रकरधरिविचित्र ॥ धरिमोरपिच्छसिरगुच्छधारि ॥ सुभपुहपमालउरधरिसंवारि ॥
जलजंतुविहंगमविविधजानि ॥ इहरूपविलोकितानिकटआनि ॥ इत्यादिकृष्णकेचरितअं
ग ॥ सुधिकरिदिनवितयौप्रेमसंग ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सुरभीरजरंजित
सुभग । स्यामसुगोधनसंग ॥ संध्यामुषआवतसुग्रह । अद्भुतसोभाअंग ॥ २ ॥ गौषगौ
षगोपांगना । चढिचढिचितवतचाइ ॥ बिछुरीजैसैंकर्मवस । प्रेमसहितनिधिपाइ ॥ ३ ॥
इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचिते पंच
त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
॥ ॥ **अथगोपिकादिवसाविरह** ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **छंदपधरी** ॥ ॥ आसुरअ
रिष्टनामाअभीत ॥ कृतदुष्टकुटिलकपटीकुचीत ॥ इहांकृष्णमहामहिमाअसेष ॥ सोसहि
नसक्यौव्रजसुषविशेष ॥ धरिवृषभरूपआयोसधीर ॥ वपुदीर्घककुदिगिरश्रृंगवीर ॥ चष
अरुणकुटिललांगूलचाल ॥ किंचितसमूत्रप्रतिमाजुकाल ॥ आद्रितअद्भुतमुषरिकआइ ॥
भयकारगर्जकीनौसुभाइ ॥ भइगर्भश्रावसुरभीसत्रास ॥ त्रियगर्भगिरेसुनिसब्दतास ॥ षु
रपैठितहांव्रजजनपलाइ ॥ सोदेषिकृष्णनिकसेसुभाइ ॥ षितषनतषुरनिनभचढीषेह ॥
अविलोक्यौमोहनदुष्टएह ॥ **श्रीकृष्णउवाच** ॥ वसरोसकृष्णबोलेविजेत ॥ दुष्टनिहुं
दीक्षादंडदेत ॥ वृषभाधमजोतूंसमरवीर ॥ सठआउपचारतहूंसधीर ॥ **कविरुवाच** ॥

यहसुनतअसुरतडितासओप ॥ कृतपुच्छऊर्ध्वधायोसकोप ॥ धरिशृंगउभैमोहनसधीर ॥ वसुमतीपछाख्योमहावीर ॥ इहांलएशृंगदोऊउपारि ॥ मार्योसिरहीसिरसोमुरारि ॥ पापीवृषभासुरतजेप्रान ॥ मोहनग्रहआएविजयमान ॥ वृषभासुरकोदंप्योविनास ॥ पुनिआएनारदकंसपास ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ मुनिकह्योकंससोंमूलमंत्र ॥ तहांमिलेआनिसुरकाजतंत्र ॥ रिपकारितुमकन्याहतीराइ ॥ उहमहरिजसोदागर्भआइ ॥ रोहणीपुत्रवलदेवराज ॥ सोभयोनंदकोग्रहसकाज ॥ देवकीगर्भभयोकृष्णदेव ॥ भवसुपैनजान्योतुमाहिभेव ॥ हेछलकरिपठयोनंदग्रेह ॥ सोपोष्योजसुदाअतिसनेह ॥ जोहतीदेवकीसुताजानि ॥ उहमायाधरिगइइहांआनि ॥ अनसमझिबालहत्याअग्यान ॥ पुनिकरीसुपैतुमअप्रमान ॥ वसुदेवपुत्रहैमहावीर ॥ सोआहिनंदकेग्रहसधीर ॥ लिहचैसुकहावतनंदनंद ॥ वेतोहैजादवकुलअनंद ॥ वसुदेवनंदहैमित्रवीर ॥ सुतरापेलैव्रजमहसधीर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रिसभयोसुनतइहकंसराइ ॥ धरिषग्गदुष्टआयोसुधाइ ॥ वसुदेवमूंडकाटतचिताइ ॥ सोवरज्योनारदमुनिसुभाइ ॥ देवकीसहितकरिसहाद्रोह ॥ लैजरेबहुरिवसुदेवलोह ॥ स्वस्थानगएनारदसकाज ॥ करिसिद्धिइहांसबदेवकाज ॥ इकदैत्यनामकेसीअसाध ॥ विपरीतकर्मधरधर्मबाध ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ हैकृष्णनामसुतनंदग्रेह ॥ सोहतहुजाइतुमनिसंदेह ॥ पठयोसुकंसकेसीपचारि ॥ मिलआयमोहिसोबालमारि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांसाजिसभाबैठोसुभाइ ॥ रसरोसभर्योअतिकंसराइ ॥ ॥ इहांआइमित्रमंत्रीअशेष ॥ विधिजथाथानबेठेविशेष ॥ गजपालबोलिलीनोसज्ञान ॥ सनमानकर्योअतितिहिसमान ॥ चाणूरमल्लमुष्टिकसचेत ॥ सलतूसलमिलिपरिगहसमेत ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ इहांकह्योकंसतबवचनएह ॥ हैरामकृष्णदोउनंदग्रेह ॥ छलकरितहांराषेहैछिपाइ ॥ इहमोसोनारदकह्योआइ ॥ सोवासुदेवहैअसुरसाल ॥ करउनकैमेरौलिख्योकाल ॥ उनकेअबमारनकोउपाइ ॥ सोकरहुअबैमेरोसहाइ ॥ निर्भयइकमंदिरसुषनिधान ॥ थितकरहुइहांअबसप्तथान ॥ करिधनुषजज्ञसोकपटकाज ॥ सबआनिलोकमिलिहैसमाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सठफिर्योदिवसउरबढीशूल ॥ मारनशिसुआज्ञादइसमूल ॥ उठितबैग्रेहएकांतआइ ॥ अक्रूरइहांलीनोबुलाइ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ अक्रूरएकहितकाजआज ॥ सोकरियैमेरोबुद्धिसाज ॥ एजादवहैजेतेअनेक ॥ इनमहँहितकारकतुंहीएक ॥ कारनतुहिराषतबडकाज ॥ उहआनिबन्यौसंजोगआज ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हैद्वैसुतवसुदेवके । रामकृष्णइहनाम ॥ इहांज्योंत्योंकरिआनिये । वसतनंदकेधाम ॥ १ ॥ कारनकहिकरबरषको । सौनंदादिसमाज ॥ इहांसोहठिलैआइये । कपटधनुषमषकाज ॥ २ ॥ कितोकुबलयापीडकर । मारिहैनिश्चयमूढ ॥ कैमल्लनिकरिमारिबे । ग्रहदोउलागेगूढ ॥ ३ ॥ भोजदासारहआदिभव । जितेकजादवजानि ॥ करिसबहिनकोनासकुल । मैइहमंत्रप्रमानि ॥ ४ ॥ जराग्रसितमेरौजदपि । उग्रसेनपितुआहि ॥ कछुइच्छापुनिराजकी । तदपिघटीनहिताहि ॥ ५ ॥ एतोहानिबेहैअवसि । देवकअरुवसुदेव ॥ बाकीपुत्रीकैउरद । बाकोपुत्रअजेव ॥ ६ ॥ हठिएसबहीमारिहौं । वृष्णिआदिदै

वंस ॥ अनकंटककरिआपनौ । करौंराजतौकंस ॥ ७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सुसरौहै
मेरौजरासंध ॥ संबरनरकासुरप्रीतसंध ॥ अतिबलबाणासुरदुविदवीर ॥ एसंगसषामेरे
सधीर ॥ एकत्रकरौएसबैकाज ॥ सम्मूलउषारौंसुरसमाज ॥ दानपतिसुनहुयहनिसंदेह ॥
हैअभिप्रायममचित्तएह ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मीचबचावनकेमरम ।
अबतौइहैउपाइ ॥ इहांवचनअक्रूरइह । सुपैकह्योसमझाइ ॥ ८ ॥ परममनोरथआप
नै । प्रतिदिनाचिंतितप्रान ॥ सिद्धिअसिद्धिजुसुभअसुभ । दैवाधीननिदान ॥ ९ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ सुफलकसुतआएसदन । तहांथापियहमंत्र ॥ भवजैसीभवतव्यता ॥
तैसेमिलिहैतंत ॥ १० ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबार
हटनरहरदासविरचितेकंसकपटोद्यमषष्ठत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अपरदिवसकेसीअसुर । इहांवृंदावनआइ ॥ प्रातसमैं
रोक्यौप्रगट । सुरभीपंथसुभाइ ॥ १ ॥ कारनअश्वसुरूपकरि ॥ दीर्घभयानकदेह ॥ षिति
हिबिदारकअग्रषुर । षेमगचढीसुषेह ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तहांधुनितसटालांगू
लतास ॥ इहिंपवनजलदविषुरेअकास ॥ नवनीलजलदतनवरनतुंग ॥ मुषविवररोषच
षरत्तरंग ॥ इहिंसमयधेनसंगकृष्णआइ ॥ देष्यौसोइआसुरबयरदाइ ॥ अविलोकिकृ
ष्णयहनिकटआनि ॥ जुगलातचलाईवज्रजानि ॥ आकर्षिचरनलीनेअभंग ॥ अरुगग
नभ्रमायौअसुरअंग ॥ हठिदयौडारिहरिक्रुद्धहोइ ॥ सतधनुषमात्रहयपर्य्यौसोइ ॥ पुनि
उठ्यौअसुरकछुचेतपाइ ॥ धरकृष्णसमुषआयौसुधाइ ॥ कंदराकारमुषमुक्तकीन ॥ देष्यौ
सुकृष्णभुजमांझदीन ॥ करकरीवृद्धितिहिंमध्यकाइ ॥ सोफाट्यौकर्कटिज्यौंसुभाइ ॥ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ इहांमार्य्यौकेसीअसुर । पौरुषकृष्णप्रकास ॥ अतिहरषेनंदादिउर । दुं
दुभिवजेअकास ॥ ३ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ इहिंठौरनारदआइ ॥ सबचरितदेषिसु
भाइ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ करजोरिअस्तुतिकीन ॥ प्रभुपरमपुरुषप्रवीन ॥
भवभूतभावनभूप ॥ अद्भूतरूपअनूप ॥ तुमआदिमध्यजुएक ॥ अरुकरतरूपअ
नेक ॥ जोगेसतुमजगदीस ॥ अप्रमेयआतमईस ॥ तुमवासुदेवविनीत ॥ जदुदेवत्रयपु
रजीत ॥ तुमसर्वआतमसिद्ध ॥ प्रभुस्वयंजोतिप्रसिद्ध ॥ सतपुरुषमायासंग ॥ भवभूतअज
तअभंग ॥ सोइराषिकरतसंघार ॥ इच्छासुआपउदार ॥ इहदुष्टमार्य्यौआज ॥ कियकृष्णतु
मसुरकाज ॥ इहिंबीचपरिदिनएक ॥ अरुकरहुकाजअनेक ॥ क्रतदुष्टमारहुकंस ॥ निसचारिकारि
निर्वंस ॥ इहिंसकलविधिसमुझाइ ॥ अरुगएग्रहरिषिराइ ॥ कविरुवाच ॥ वनचर्य्यौगोधन
वृंद ॥ चलिसंगश्रीव्रजचंद ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ विविधप्रकारकरतक्रीडावन ॥ मिलि
सबग्वालबालसंगमोहन ॥ कृत्रिममेषजूथशिशुकीनै ॥ देवग्वालकोउरछिकदीनै ॥ ला
लबालकोंचोरलगाए ॥ भावअनेककरतमनभाए ॥ कछुपशुचोरिचलतलैतसकर ॥ पु
निकोउबालह्वोतरिष्यापर ॥ उपराजीक्रीडाकछुऐसी ॥ जुकछुकान्हमनआईजैसी ॥ मय
दैत्यकौपुत्रमहाबल ॥ षेचरव्योमासुरनामाषल ॥ तबतिहिंरूपअसुरआयौतहँ ॥ मि
लिगोआनिबालचोरनमहँ ॥ लैलैजाइमेषसिसुलंपट ॥ सोरोकेगिरकंदरसंकट ॥ सठह

रिलएकछूबालकसब ॥ तहांकृष्णदपेथेरितव ॥ प्रभुतबजोगध्यानपहिचान्यो ॥ जनाहि सकव्योमासुरजान्यो ॥ पुनिलेचल्योमेपसिसुपामर ॥ पहुंचेदौरिकृष्णत्रातापर ॥ पकरि कंठसोअसुरपछार्यो ॥ मपपमुज्योंमुष्टाहतमार्यो ॥ पदपद्धतिकंदरमुपपाई ॥ करिसि लकनकनधसेकन्हाई ॥ पुनितिहिंमांझग्वालसबपाए ॥ इहँनंदनंदतिनहिलेआए ॥ म हादुष्टव्योमासुरमार्यो ॥ अमरवृंदजयजयतिउचार्यो ॥ इहांबलदेवस्नेहग्रहआए ॥ सं ध्यागोधनसंगसुहाए ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबा रहटनरहरदासविरचितेव्योमासुरवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ आज्ञावसअक्रूर, चितहितवृंदावनचल्यो ॥ सदादानपतिसूर, नीतिधर्मपालकनिपुन ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभरथपरआरुह सानुकूल ॥ सांतरसभक्तिउपजीसमूल ॥ उरकृष्णदरसकीवढीआस ॥ वसप्रेमचित्तउप ज्योंविसास ॥ भवचिंतितमनसहगूढभेव ॥ दरसनमुहिदुर्लभकृष्णदेव ॥ अबभागउदि तममभयोआज ॥ क्रमतातेपूरणहोतकाज ॥ अविलोककृष्णकोमुषउदार ॥ पुनिव्हैहूंभ वसामुद्रपार ॥ ब्रह्मादिचरनवंदितविधान ॥ सेवतनितकमलासावधान ॥ मेरोसिरधरि हूंचरनमूल ॥ करधरिहोमोहनसानुकूल ॥ ममाफिरिप्रदक्षिणमृगनिमाल ॥ जैहैसबविल यअकर्मजाल ॥ अंबरीषआदिदेनृपतिओर ॥ थितराजतरेज्योंठौरठौर ॥ ॥ दोहा ॥ राच्योंसुंदरस्यामरंग । ऊधौचित्तअभंग ॥ जतनहुकारीऊनज्यौं । ग्रहैनदूजौरंग ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यौंकरतनंदकेंघोषआइ ॥ इहांसुफलकसुतसात्विकसुभाइ ॥ अवनीवि लोकिहरिचरनअंक ॥ रजलहीमनहुनिधिमहारंक ॥ लैलैरजलावतमुषललाट ॥ पैररज नुप्रेमसमुद्रपाट ॥ पाएगोदोहतप्रभुप्रवीन ॥ करिवंदनदंडप्रणामकीन ॥ अविलोकिकृ ष्णमूरतिउदार ॥ पावैनउदधिआनंदपार ॥ लीनोउठाइअरुकंठलाइ ॥ सुषरामकृष्णभे टेसुभाइ ॥ देषेजबमोहनबालदेह ॥ अक्रूरभयोसंदेहएह ॥ कहांदुष्टकंसउहमहाकाइ ॥ प्रभुबालकृष्णसमतानपाइ ॥ करकृष्णदिषायोचक्रअंक ॥ सबमिटेहृदयअंकूरसंक ॥ आ कर्षिकरहिकरग्रेहआनि ॥ पुनिधोइचरनआसनप्रमानि ॥ अतिहर्षमिलेतबनंदआइ ॥ सोकरनलगेबातेसुभाइ ॥ ॥ नंदउवाच ॥ ॥ तहांपूछिनंदकुसलाततातिहि ॥ उहिदुष्टनिक टक्योंरहतआहि ॥ किहिंभांतितुमहिराषतकुचीत ॥अघतेनडरतअंतरअनीत ॥ ॥ अ क्रूरउवाच ॥ ॥ अक्रूरकह्योफिरिवचनएह ॥ सुनियैजुनंदयहनिसंदेह ॥ अजपोषतजैं सेसूनआनि ॥ पुनिहततातिनाहिअपनैपानि ॥ हैकरतपापसोउदरहेत ॥ मानैनत्रास मनक्रमसमेत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कारणजीवनराजके । करहिअनर्थअनेक ॥ ऐसोकंस असाधयह । हैकलिजुगमहँएक ॥ २ ॥ सबभगिनीकेसुतसुता ॥ कीनैनासअकाज ॥ ऐसोमहाअधर्मयह । करतराजकेकाज ॥ ३ ॥ वसियतवाकेसेववस । पुनिमुषदेषतप्रात ॥ हमकहँजोपूछतमहर । कहांकहाकुसलात ॥ ४ ॥ भांतिभांतिभोजनभगति । कीनैनं दअनेक ॥ अतिसुषजुतअक्रूरइह । वसेनिसासविवेक ॥ ५ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रे श्रीकृ०द०बारहटनरहरदासविरचितेअक्रूरगोकुलआगमनंनामअष्टत्रिंशोऽध्यायः॥ ३८

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुफलकसुतसज्यासुषद । बिमलकर्यौविश्राम ॥ बैठेनिकटसनेहवस । संकर्षनघनस्याम ॥ १ ॥ मिलनमनोरथचित्तमहँ । कृतअक्रूरस काम ॥ मिलिकीनैसंजुतमहत । सबैसपूरनस्याम ॥ २ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पुनिपूच्छयौअक्रूरप्रति । वासुदेवयहबात॥प्रगटसुनावहुदानपति । कुलजादवकुशलात ॥ ॥ ३ ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ कहिवचनतबअक्रूर ॥ सुनियैवजदु कुलसूर ॥ जिहिवंसकंसकुरोग ॥ प्रभुबढतरहितप्रयोग ॥ तिहिवंसकीविख्यात ॥ कहापूछियैकुसलात ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पुनिकह्यौकृष्णसप्रीति ॥ अक्रूरसुन हुअनीति ॥ ममसातभ्रातामारि ॥ पैंबहनिसिलहिंपछारि ॥ ममहेतपुत्रनिमारि ॥ पुत्रि कासिलहिपछारि ॥ देवकीअरुवसुदेव ॥ जरिपगनिलोहअजेव ॥ दुषसहतदुस्सहदेह ॥ ग्रहिदएकारागेह ॥ सुभभयौआवनसाध ॥ तबदुसहव्रजदुषबाध ॥ आगमनकारनआ ज ॥ क्रमजथाकहौसकाज ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबैकह्योअक्रूरतहां । सु नियैसुंदरस्याम ॥ जातैंकंससजादवनि । बाढ्यौवैरविराम ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कं सग्रेहनारदसकामअवचिंतितआए ॥ करिपूजाएकांतविहितआसनबैठाए ॥ मुनिकी नौइहांगूढमंत्रसुरकाजसुधारण ॥ करनकंसनिरवंसनिषिलव्रजविघननिवारण ॥ देवकी गर्भतवजन्मदिन, कह्योमर्मऋषिकंसकहँ ॥ पापिष्टसुनतउरपरजर्यौ, मेल्योघृतजनुअ नलमहँ ॥ १ ॥ कारनतिहिंषलकंसविषमजदुवंसविरोध्यौ ॥ कोउकाढेहतिकोउकस बैंव्रजमंडलसोध्यौ ॥ जरिपाइनजंजीररोषराजालैरोके ॥ सबनिपरेउरसालसहतसोइ रहतससोके ॥ तबअंतकाजउद्यमअषिल, करतजथाकारनकुमति ॥ विधिलिषितअं कनरहरसुकवि, मिथ्याहोइनसाधुमति ॥ २ ॥ विषमधनुषमषव्याजतुमहिबोलेअति आतुर ॥ पाठहस्तिकुवलयापीडरहिद्वारनिरंतर ॥ महामुष्टिचाणूरमल्लरंगभूमिरहा ए ॥. अरुअरिष्टअन्नेकसकलजहाँतहांसजाए ॥ बलदेवगोपनंदादिसब, जथाभेट संगलीजियै ॥ करिहैतबरष्यादेवकुल, कृष्णगवनअबकीजियै ॥ ३ ॥ ॥ छंदद्वि अक्षरी ॥ ॥ यहसुनिकृष्णनंदपहँआए ॥ सबअक्रूरबचनसमुझाए ॥ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ विषमकंसकेमर्मबताए ॥ अपनैहितअक्रूरजुआए ॥ करियैगवनविलंबन कीजे ॥ जथाभेटआगेकारिलीजे ॥ इहांनंदव्रजगोपबुलाए ॥ सबैप्रयाणमंत्रसमुझाए ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ प्रातप्रयाणकरहुमथुराप्रति ॥ जथाजोग्यकरिकरिसबसाजति ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भईबातइहघोषअभाई ॥ कहियतचलिहैंकुँवरकन्हाई ॥ घेरु चल्यौसोइव्रजमहँघरघर ॥ परमदुसहत्रियसोचपरसपर ॥ ऐसीव्रजवनिताअकुलानी ॥ विषमदयासुनिजातवषानी ॥ मुषहिप्रलापउसासनिमोचति ॥ सोकमगनमनहीम नसोचति ॥ कंपहृदयविगलितकरकंकन ॥ नीरअषंडधारचलिलोचन ॥ इंद्रीविकल भईअकुलानी ॥ पैनपरसपरजातपिछानी ॥ तारुअधरशोषकंठकतन ॥ अरुमतिभं गभईगतिअनअन ॥ उपजीविषमदसाकछुऐसी ॥ जथासुकविकहिजातनतैसी ॥ क हिदुरवादविषादसुकामा ॥ विधिकहिदोषलगावतिवामा ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥

विश्वउपासतजगतविशेष्यो ॥ दारुणकर्मकारहमदेख्यो ॥ महाप्रेमजुतभूतमिलावत ॥ विनुअभिलाषभएविललावत ॥ कृष्णवदनछविमोहकराए ॥ अवएदुसहविरहउपजाए ॥ साधकर्मयहनाहिनरवामी ॥ जगतउपाजकअंतरजामी ॥ जगअक्रूरनामलहिजेसो ॥ क्रूरकर्मयहकरियतकैसो ॥ हेएमोहननेत्रहमारे ॥ सोनजाहुलेदइवसवारे ॥ हमविनुनय नअंधारीव्हैहैं ॥ जगदिनरातिभ्रमतकसजैहैं ॥ सपीपरसपरकाहिकहिसोचाति ॥ चषअ षंडजलधारामोचाति ॥ निगमलोककुलकानिनसाई ॥ करेइष्टहमकुंवरकन्हाइ ॥ पतिग तिनंदकुमारप्रवीनै ॥ दासीजथाप्रानतनदीनै ॥ तेहमविरहसिंधुक्यौंतरिहैं ॥ कृष्णगव नजोमथुराकरिहै ॥ कृष्णअनाथहमहिजोकरिहै ॥ तोहमअनमारेहीमरिहैं ॥ करिसुध रासविलासकन्हाई ॥ विपमदसाव्रजवधूविहाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ अरुणउदयअक्रूर· रामकृष्णवैठारिरथ ॥ सत्यवचनरनसूर, लैमथुरासनमुषचल्यौ ॥ १ ॥ जथासकटरथजोय, मिलिमिलिनंदादिकमहर ॥ सुभउपहारसमोय, गृहगृहतै कीनैगवन ॥ २ ॥ सवैसपाचालिसंग, ग्वालवालगोपालके ॥ पूरणभगतप्रसंग, मिलैकृ ष्णमहँनैनमन ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ व्रजवधूकरतठाढीविलाप ॥ उरहनतिक रनिकरघसतिआप ॥ ज्यौंसाहउदधिबूडैजिहाज ॥ निधिपोयकृपनजैसैनिकाज ॥ संग्रा मपराभवपायसूर ॥ मणिषोयपनगपरिसोकपूर ॥ इहिंसमयत्रियनिभइदसाएह ॥ दुष सिंधुमगनभइविसरिदेह ॥ अनदष्टिभयौरथध्वजअकास ॥ अवलाअचेतप्रानीअबास जसुदाअरुरोहनविरहजोन ॥ कवितासकहनसामर्थकोन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामकृष्ण इहिंहांकिरथ । अर्कसुतातटआइ ॥ वृक्षसमूहविलोकिवर । भएठाढेसतभाइ ॥ १ ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ वासुदेवआज्ञाविहित । नंदहिकरीनिहारि ॥ करियौउपवनमांझ कहुँ । विधिविश्रामविचारि ॥ २ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नित्यनेमकारणनियत । करि मज्जनअक्रूर ॥ ज्यौंअवगाहतमत्तगज । पैठिजमुनजलपूर ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ मनसोचवुढीलैनीरमांहिं ॥ निर्धारकहूंठहरातनांहिं ॥ कहांबालकएसुंदरकुमार ॥ प्र तिजुद्धमल्लतनबलअपार ॥ इहसाधकर्मनहिंधर्मअंग ॥ सिसुजातलियैहूंविवससंग ॥ सोचताचितलैलैउर्द्धसास ॥ विस्मैबढिपावतनहिंविसास ॥ दुषदसाजबैअक्रूरदेषि ॥ विश्वेसविरदअपनैविशेषि ॥ शुभरामकृष्णसुंदरसुरूप ॥ अविलोकसोइजलमहँअनूप ॥ अक्रूरदेषिपुनिरथहिओर ॥ कारुन्यसुपैरथपरकिसोर ॥ निर्द्धारदानपातिजलनिहारि तेइतहांमदनमूरतिमुरारि ॥ अविलोकितवैजलथलअनंत ॥ तनगौरस्यामउद्धारसंत ॥ सवसुभगपुरषलच्छनप्रमान ॥ स्यामघनवसनतडितासमान ॥ भुजचारिचारिआयुधसुचा ल ॥ वनिविमलकमललोचनविसाल ॥ बनमालविविधिउरमणिविकाश ॥ हिमनगमैभू षणमंदहास ॥ नागेशअंतथितजदुनरेश ॥ दानपतिदेषिमूरतिसुदेस ॥ सनकादिसिद्धप रिषदसमान ॥ जोस्तुतीकरतसबआनआन ॥ ब्रह्मादिरुद्रवसुनागदेव ॥ सबभएमुक्तसो इकरतसेव ॥ श्रीगिरातुष्टिमिलिपुष्टिसंग ॥ भवकीरतिक्रांतीविजयअभंग ॥ विद्यासुस क्तिमायाविशेष ॥ इत्यादिकरतसेवाअशेष ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांदेष्योअक्रूरइक ।

अद्भुतचरितअनंत ॥ भयौमहाविश्वासमन । सात्विकउपज्यौसंत ॥ १ ॥ कृष्णप्रभाव सुभावकुल । दैवीसक्तिदयाल ॥ सोचनइहिंसंभावना । सबैमिटेभ्रमसाल ॥ २ ॥ ॥इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेश्री कृष्णमथुराप्रतिगमननंनामएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अथअक्रूरस्तुती ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आदिपुरुषअव्ययअमर । नारायणनिजनाम ॥ तुमअनंतमहिमाअतुल । सांतरूपघनस्याम ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ प्रभुनाभि कुंडप्रमान ॥ नीरोजउपजिनिदान ॥ भएब्रह्मदेवविष्यात ॥ तिहिंअमलअंबुजजात ॥ कियब्रह्मजिंहिंसबलोक ॥ सोइवसतअपनैओक ॥ जलअनलअनिलअकास ॥ पृ थ्वीसुतत्वप्रकास ॥ मनमिलितइंद्रियमान ॥ पुनिअर्थदेवप्रमान ॥ तवअंगउतपति तास ॥ प्रभुमहातत्वप्रकास ॥ तवरूपअगमअनंत ॥ सुनिजानिविधिसुरसंत ॥ गु नतीनतेगोपाल ॥ तुमपरेपरमकृपाल ॥ तुमज्ञानरूपगोविंद ॥ अनवद्यनित्यअनं द ॥ कोउजपतजोगप्रकार ॥ कोउबेदपंथविचार ॥ कोउजपतज्ञानीज्ञान ॥ कोउविष्णुमं त्रविधान ॥ शिवमंत्रकोउसाधि ॥ आराधरहितउपाधि ॥ अन्नेकभावअनंत ॥ सबभजततु मकहँसंत ॥ तुमएकरूपअनेक ॥ विस्तारविविधविवेक ॥ ज्यौंसघनबादलसाज ॥ गिरगि रनिवर्षतिगाज ॥ तिहिंचलितसरितासोइ ॥ हठितटनिबाहिरहोइ ॥ सबसरितनीरसुभाइ॥ एमिलितजलनिधिआइ ॥ सबभजनमारगसंत ॥ यौंतुमहिंमिलतअनंत ॥ अन्नेकपथअषि लेस ॥ ज्यौंहोतपुरहिंप्रवेस ॥ शुभकर्मकरिकरिसंत ॥ सोतुमहिंअर्पतअंत ॥ छंदपधरी ॥ सतरजमिलितामसप्रकृतिसंग ॥ ऐश्वरीसगुणमायाअभंग ॥ पुनिब्रह्मआदिदैत्रिणप्रजं त ॥ एत्रिगुणमांझपोएअनंत ॥ साषीमनइंद्रियज्ञानसार ॥ नारायणतुमकहँनमस्कार ॥ गुनमांझअविद्यापरिगुपाल ॥ सुरमानवतिर्जगसहतसाल ॥ अपनैसोइविद्याबलअनं त ॥ सहिसुषदुषछूटतपरमसंत ॥ तवसगुनरूपव्यापकससार ॥ पुनिसुनियैप्रभुतिनके प्रकार ॥ मुषअनलचरनपृथ्वीप्रमान ॥ द्रगसूरचंद्रभासतनिदान ॥ अषिलेसुरनाभी थलअकास ॥ प्रभुश्रवणदेशआसाप्रकाश ॥ पावनजुस्वर्गमस्तकप्रमान ॥ इंद्रादिभुजा चवसुरअमान ॥ परमीसकूषतवअकूपार ॥ प्रभुप्राणपवनपृथ्वीप्रचार ॥ प्रतिलोकदेह कलिपतप्रमानि ॥ जलमध्यजथाजलजंतुजानि ॥ मसकाज्यौंउंबरफलनिमांहि ॥ सबलो कतथातवतनसमांहि ॥ तवजीवरूपअवतारएह ॥ व्हैदैवतकारनधरतदेह ॥ व्हैमीनप्र लयजलकृतविहार ॥ हैग्रीवरूपमिलिअसुरमार ॥ मंदराचलधरिपयनिधिसथाँन ॥ प्र भुकच्छपतनकीनौप्रमान ॥ वाराहरूपकीनौविनीत ॥ रदअग्रधरीपृथ्वीपुनीत ॥ अवता रउग्रनरसिंघआप ॥ प्रल्हादराषिदीनौप्रताप ॥ द्विजरामद्विजनिभुवचक्रदीन ॥ करिको पछत्रकुलछेदकीन ॥ इत्यादिकरेअवतारआन ॥ प्रभुरूपभयेजुगजुगप्रमान ॥ व्रजमां झभएतुमवासुदेव ॥ अबरामकृष्णअरिकरिअजेव ॥ अबदयारूपबोद्धावतार ॥ कल्की मलेच्छकुलनिधनकार ॥ तवमायाकरिमोहितमुरारि ॥ संसारभ्रमतिकर्मानुसारि ॥ छूट तनहिममतालहतछेह ॥ अरुपुत्रदारद्रव्यादिएह ॥ कामोद्यमकरिकरिकरतकाज ॥

हेतसबैतेइंद्रुपसमाज ॥ अज्ञानतिमिरआवरितआप ॥ पावननहिंसूझततवप्रताप ॥ मायाप्रपंचजवलुटैमोह ॥ अपिलेससरणतवलहैओह ॥ तवनमोनमोकरुणानिधान ॥ पुरुषेसज्ञानमूरतिप्रधान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सकतिअनंतअनादिसिध । अजितसुरासुर आप ॥ स्वामीहूंआयोसरण । प्रभुतवचरणप्रताप ॥ २ ॥ तुममोकहुंक्रमबंधतैं । राषिले हुव्रजराज ॥ कविनरहरविनतीकरत । आतुरपातितअकाज ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीअव० श्रीकृ०दशम०बारहटनरहरदासविरचितेअक्रूरस्तुतिवर्णनंनामचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४०॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुफलकसुतजलतैंनिकसि । वंदनकरेविशेष ॥ तव प्रतापमहिमाअतुल । सकिनवरनिसुरसेष ॥ १ ॥ जलमंहरूपदिपाइय्यो । हरिभएअंत र्ध्यान ॥ नाचतभावअनेकनट । प्रतिमाआदिप्रमान ॥ २ ॥ जलअकासअथवाअवनि । कछुदेष्योअक्रूर॥मनमहँहुतोजुमोहभ्रम । देवकय्योसोइदूर ॥ ३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ चित्तवेगतवरथहिचलायो ॥ इहांअक्रूरनिकटपुरआयो ॥ जबअवसेषपहरदिनजान्यो ॥ प्रभुअक्रूरमनमर्मपिछान्यो ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ सुफलकसुतअबग्रेहसिधारो ॥ सुपजुतमज्जनवसनसवारो ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ कह्योतहांअक्रूरजोरिकर ॥ राम कृष्णचलियैमेरेघर॥करुणानिधिपावनमुहिकीजे ॥ देवचरणममभस्तकदीजे ॥ करिचरणो दकपरसकन्हाई ॥ प्रभुसुरपितरपरमगतिपाई ॥ भएपुण्यजलपंदसंभावन ॥ पुनिसोइक रतलोकत्रयपावन ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ प्रभुतवबोलेकृपापरायन ॥ जदुकुलद्रो हीमारिदुष्टजन ॥ हितुटारिसंकटसुषदैहौं ॥ अतिहिततवमंदिरहूंऐहौं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांअक्रूरकंसपहँआयो ॥ सिद्धिभयोकारिजसमुझायो ॥ स्यामराममिलिग्वालबा लसंग ॥ अरुवनवेषविराजितअंगअंग ॥ सरितघाटपटरजकसकेलत ॥ मोटसवारिबां धिपुनिमेलत ॥ याहीसमयकृष्णइहांआए ॥ पटउज्जलबहुरंगजुपाए॥ धोबिततहांकंसको धूरित ॥ कृपापात्रग्रहधनकरिपूरित ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दिव्यवसनएहमकहँ दीजे ॥ लालचजपैमांगिकछुलीजे ॥ ॥ रजकउवाच ॥ ॥ राजगर्वनहिंसमैसंभाय्यो ॥ इहांरजककटुकबचनउच्चाय्यो ॥ हैकहूंऐसेवसननिहारे ॥ राजबापकैवनबसबारे ॥ उपजी राजद्रव्यकीइच्छा ॥ दईकवनतुहिऐसीदिक्षा ॥ इनवसननिलाइकतूंऐसो ॥ कारोकुटिल रूपहैकैसो ॥ अबजोराजपुरुषकोउऐहै ॥ जनपदमांझबांधिलैजैहै ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ क्रीडाकीनीकृष्णसकारन ॥ दुष्टरजकसिरषंड्योदारुण ॥ जथाजोग्यपटजैसेंपाए ॥ पैस बग्वालबालपहिराए ॥ धोबीभजेघांटलूट्योधुर ॥ परीपुकारदुसहमथुरापुकार ॥ नगर द्वारआएनंदनंदन ॥ निरषतसोभादुष्टनिकंदन ॥ परिषाकोटकांगुरेपूरण ॥ पौलिकपाटत रलबनितोरण ॥ महाअमूल्यकंसकेलाइक ॥ वसनबनाइचल्योलैवाइक ॥ दिव्यरूपतिहि वाइकदेषे ॥ वीरउभयछबिअतुलविशेषे ॥ पुनितिहिंवस्त्रजुगलपहिराए ॥ उभयमदनमा नहुबनिआए ॥ देवहस्तसूजीसिरदीनो ॥ कहिनिजभक्तिकृतारथकीनो ॥ सुंदरस्यामसषा संगसोहन ॥ मालीइहांविलोक्योमोहन ॥ पुहपसुगंधहारकरिपावन ॥ हैजुचल्योकंस हिपहिरावन ॥ मालीनामसुदामसोचिमन ॥ पूरनकर्मउदयभएपूरन ॥ हाररामकृष्णहि

पहिराए ॥ पुनितिहिंसबवंछितफलपाए ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेद शमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेरजकवधोनामएकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निरषतशोभानगरकी । स्यामचलेमषसाल ॥ प्रतिद्वा रैंद्वारैंप्रगट । मंडिततोरणमाल ॥ १ ॥ कनककलसध्वजदंडकरि । सोभितसौधसुदेस ॥ वंदनपाटकपाटचिर । बनिउत्तंगविसेस ॥ २ ॥ जालीमणिमयकाचजुत । प्रतिप्राकारप्र माण ॥ विधिजुतवातापनविमल । वारनदंतविधान ॥ ३ ॥ थंभप्रवालगवाषथिर । वि धिपरदावहुबान ॥ कहनसमर्थजुकवनकवि । वरणेनगरवषान ॥ ४ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ मिलिमिलिबरनचारिमनमोहन ॥ जथाभेटलैकरतनगरजन ॥ गौषगोषचढिचढि गजगामिनि ॥ मनमथरूपनिहारतभामिनि ॥ विथुरेपुहुपकमलकरवामा ॥ सुभमंगलगाव तमुषस्यामा ॥ कुबजानामत्रिवक्राकामनि ॥ भूपमलयअधिकारनभामनि ॥ प्रतिदिनघसि चंदनपहिरावति ॥ राजकाजकरिकंसरिझावति ॥ पात्रभर्योघसिचंदनपूरन ॥ गुंजततासस गंधमधुपगन ॥ कुबजाआवतराजद्वारकहँ ॥ ताहीसमयमिलेमोहनतहँ ॥ श्रीकृष्णउवा च ॥ कहांजातितूकौनकहांकी ॥ तोपैकहाकहोंविधिताकी ॥ कृष्णदेवपूछ्योइहकारन ॥ च लीजातआतुरकूबरतन ॥ कुबजावाक्यं ॥ देवनरेसकंसकीदासी ॥ सैरंध्रीवर्ततसुषवासी ॥ कंसकाजचंदनअतिहितकर ॥ मैंइहलियैंजातनृपमंदिर ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ जदुपतिकह्योहमहिजोदीजे ॥ जोकछुइच्छामांगिसुलीजे ॥ ॥ कुबजावाक्यं ॥ ॥ प्र भुयहतुमहीजोग्यपदारथ ॥ करिअंगीकृतमोहिकृतारथ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ चित अतिहितसमर्प्योचंदन ॥ वंछितकृपाकरीजगवंदन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पगसौंपग चांपेसुषपायो ॥ अरुकरपल्लवचिबुकउठायो ॥ सूधीकरीषैंचिसासुंदरि ॥ महिमाभईत्रिलो कमनोहरि ॥ कामविवसछबिगर्वितकामनि ॥ भावसहितपटपकर्योभामिनि ॥ ॥ कुब जावाक्यं ॥ ॥ कृष्णकृपायहमोपरकरियै ॥ धामपुनीतहोइपगधरियै ॥ ॥ श्रीकृष्णउ वाच ॥ ॥ वासुदेवहसिकह्योविचक्षन ॥ मुहिकछुकाजविग्रताहैमन ॥ काजसिद्धकरि जबैसकारन ॥ पुनितवकरौंमनोरथपूरन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ धनुषसालजबधसे चक्रधर ॥ हटक्योद्वारइहांपलआसुर ॥ असुरनिठेलिमध्यप्रभुआए ॥ सषाग्वालजनसंग सुहाए ॥ लीलाचापउठाइसुलीनो ॥ करचढायटंकारवकीनो ॥ तताछिनग्रहिकर्णावधि तान्यौ ॥ भयौअतिशब्दसरासनभान्यौ ॥ रह्योगगनभरिधनुषभंगरव ॥ दुष्टकंसउरप र्योदाहदव ॥ कंसकोपकरिअसुरहकारे ॥ मोहनधनुषषंडसोमारे ॥ धनुषतोरिआएगि रवरधर ॥ सुषदनंदआश्रमजहांसुंदर ॥ नंदचरणभेटेनंदनंदन ॥ कृष्णकृपानिधिदुष्ट निकंदन ॥ द्रव्यसुधाजसुमतिसंगदीनै ॥ कृष्णसबनिदैभोजनकीनै ॥ सुषसज्याविश्राम स्यामघन ॥ वसेनिसानंदादिकउपवन ॥ सोयौजदपिकंससज्यासुष ॥ नावैनिद्रादहैदु सहदुष ॥ दुरनिमित्तदेषैअतिदारुन ॥ तिहिंछनसीसनाहिंऊपरतन ॥ ससिनक्ष त्रप्रतिमादोइदोइसम ॥ वृक्षकनकमयदीसतविभ्रम ॥ श्रुतमूंदेनहोतअनहदसुर ॥ आ तमछांहसछिद्राआतुर ॥ दृष्टिआपनैचरणनदेषत ॥ इहांकछुनिसारहीअवसेषत ॥ पु

निकंसासुरनिद्राआई ॥ देषेसुपनमहादुषपाई ॥ परारूढप्रेतानिमिलिपेलत ॥ मालाज पाकुसुमउरमेलत ॥ कंसतइलतनमर्दनकीने ॥ भषतिलकरतपापउरभीने ॥ दुरनिमित्त दुषपनएदेषे ॥ बीतीरजनीप्रातविशेषे ॥ प्रातकर्मकरिपापसपूरन ॥ दीनौगोपबैठिअत दरसन ॥ इहांसुभटमंत्रीसबआए ॥ विहितजथाक्रममंचबताए ॥ इहांबुलायौमल्लअषा रो ॥ निर्भयकौतुकबैठिनिहारो ॥ महावीरजोधामँडलेसुर ॥ नगरनिवासीचतुरवरणनर ॥ विहितइहांरंगभूमिबनाई ॥ अतिबलमल्लमंडलीआई ॥ सप्तभूमिनिर्भयकंसासुर ॥ महादुष्टबैठोवनिमंदिर ॥ मुष्यमल्लचाणूरमहाबल ॥ मुष्टिककूटसंगसलतूसल ॥ उपा ध्यायनाइकगनआए ॥ सबमिलिकरतविलाससवाए ॥ नंदबुलायौसहितगोपगन ॥ ज थाजोग्यबैठारेव्रजजन ॥ बाजनलगेविविधसुरबाजे ॥ गहरमनहुँअंबरघनगाजे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सिद्धिभएउद्यमसकल । कंसभ्रम्यौसिरकाल ॥ आतुरपठएदासइहँ । लै आवहुनंदलाल ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरह रदासविरचितेरंगभूमिरचनंनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ ॥ करेजथाक्रमनित्यकृत । लोकवेदनंदलाल ॥ मल्लअषारके महा । वाजितबजेविसाल ॥ १ ॥ रामकृष्णबढिवीररस । विकसेनयनविसाल ॥ क्रोध हर्षभ्रूकुटीकुटिल । कर्य्योरूपपलकाल ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वाजित्रगहरजदुवंस वीर ॥ सुनिचलेसमरविजयीसधीर ॥ अनभंगइहांनृपद्वारआइ ॥ सबसंगग्वालमंडलि सुभाइ ॥ कुवलयापीडकुंजरसकोप ॥ आडौमगठाढौकालओप ॥ तहांकह्यौकृष्णगज अतहिटोरि ॥ रेरेकुजातिगजराजफेरि ॥ हठिरोक्यौमारगकवनहेत ॥ जमसादनिजैहैंग जसमेत ॥ कियकोपवचनसुनिकैकठोर ॥ इहांपेल्यौकुंजरकृष्णओर ॥ गहिलएतहांति हिंगजगुपाल ॥ करिक्रोधदसनचांपेकराल ॥ दुवदंतमध्यरहिवासुदेव ॥ अरुचरनमांझि निकसेअजेव ॥ निग्रह्योपूंछपैच्यौनिदान ॥ पचवीसधनुषकुंजरप्रमान ॥ मंडलाकारफे र्य्यौमतंग ॥ इहांभएसिथलसबअंगअंग ॥ गजछांडिदयौलीलागुपाल ॥ करिकोपबहुरि आयौकराल ॥ मार्य्यौमतंगमुष्टासमुंड ॥ तहांभयोविकलधरगयोतुंड ॥ सोउठ्यौजबैह स्तीसंभारि ॥ पेल्यौसुबहुरिगजभृतपचारि ॥ लीनैलपेटिगजसुंडिलाल ॥ संकोचिअंग निकसेसुढाल ॥ सोइसुंडादंडप्रचंडस्याम ॥ ग्रहिलयोविलोकतसकलग्याम ॥ विचिगग नभ्रमायौवारवार ॥ पटक्योसुभूमिमानहुप्रहार ॥ दुववीरउषारेदुरददंत ॥ अषिलेसब ढीसोभाअनंत ॥ संग्रामविजितआरूढसंग ॥ मार्य्यौतिनदंतनिसौंमतंग ॥ ॥ दोहा ॥ विहितबढीअतिवीरछवि । बनेवसनरतबुंद ॥ इहांकुबलयापीडइह । गजनिहत्यौगोविंद ॥ ३ ॥ अभिप्रायतिहिंमनजथा । तैसेदरसेताहि ॥ एकरूपअनेकअंग । अविलोकतजग आहि ॥ ४ ॥ छंदपधरी ॥ देषीप्रभुमल्लनिवज्रदेह ॥ सबगोपनिसज्जनजुतसनेह ॥ नरवंदि देषिनरवरनिदान ॥ वनिताविलोकिमनमथविधान ॥ मानतअसाधसाधनसमान । पिता मातपुत्रप्रतमाप्रमान ॥ दुषबढ्यौकंसमनमृत्युदेषि ॥ विदुषनिविराटरूपीविशेषि ॥ जोगी निजोगकौतत्वजानि ॥ पुनिजादवकुलदैवतप्रमाँनि ॥ दसरूपप्रगटदेवाधिदेव ॥ भवभूतवि

लोकेजथाभेव ॥ विश्वेसकस्योवारणाविनास ॥ तहांपस्योकंसउरमहात्रास ॥ करिदंतमहाभुज
कंधकीन ॥ पुनिरंगभूमिआएप्रवीन ॥ वनिसभाजथाक्रमलोकवंद ॥ अवलोकिकृष्णउपजे
अनंद ॥ लोकजनवाक्यं ॥ देवकीगर्भअष्टमदयाल ॥ कहियैसुकृष्णयहकंसकाल ॥ ब्रज
केअनेकइहिंविघ्नवारि ॥ महदुष्टगएसोइलएमारि ॥ हैपठयौछलकरिनंदग्रेह ॥ आठवौंदेव
कीगर्भएह ॥ बढिमहरथ्रेहइहगूढबाल ॥ निहचैयहकहीयतनंदलल ॥ विषकुचाआदिदुर्जनवि
नास ॥ वनकरेरासवनिताविलास ॥ बैठेजुसभापुरजनविष्यात ॥ तेकरतपरसपरकानवात ॥ क
विरुवाच ॥ वाजित्रवजेचहुघांविसाल ॥ चाणूरमल्लबोल्यौसचाल ॥ चाणूरमल्लउवाच ॥
सुनिरामकृष्णतुमकहँसुजान ॥ हमनिपुनमल्लविद्यानिधान ॥ करिकृपाबुलाएइहींकाज ॥
यहअवसरअद्भुतवन्यौआज ॥ रसरहैरिझावहुमहाराज ॥ उतपत्तिकीतौविपरीतआज ॥
॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ देवाधिदेवबोलेदयाल ॥ कहिउचितवचनजोइदेशकाल ॥
तुमसल्लभोजपतिकेविष्यात ॥ वनवासीतहांहमकितिकवात ॥ मल्लनिसौंसिसुनहिबलप्र
मान ॥ संग्रामबनैजोपैसमान ॥ असमानविलोकेजुद्धआप ॥ परिषदकौंकौतुकहोइपाप
॥ ॥ चाणूरमल्लउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दशहजारगजबलदुगम । हुतौदुरदजिहिं
मांहि ॥ सोतुममार्योषेलयौं । हौंतुमबालकनाहिं ॥ मुष्टिकसौंबलदेवमिलि । विधिहम
तुमहिंविरोध ॥ जानहुइहतौधर्मजुध । पौरुषनीतिप्रबोध ॥ इतिश्रीअ०श्रीकृ०दशमरकं०
बा०नरहरदासविरचितेकुवलयापीडवधोनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥ ॥ छ ॥
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अतिरोषमल्लचाणूरआइ ॥ कृतांतरूपअरुमहाकाइ ॥ कृष्णसौं
आनिजूझ्योसकोप ॥ उल्लंघिअगडमातंगओप ॥ बलबंडमुष्टिकामल्लबाथ ॥ सोजुरयौआ
निबलदेवसाथ ॥ आघातचरणमुष्टिनअनंत ॥ दारुणकोलाहलभोदिगंत ॥ प्रतिअंगअं
गप्राहारपूर ॥ सुरअसुरजुरतसंग्रामसूर ॥ मस्तकसौंमस्तकदुसहमार ॥ परिअंसअंस
उरउरप्रहार ॥ मुष्टिकामुष्टिउरुवानिमेल ॥ प्रतिमल्लबालभइठेलपेल ॥ घटघाउदाउअ
नेकघात ॥ विस्तारमल्लविद्याविष्यात ॥ कछुकालमल्लक्रीडाजुकीन ॥ पुनिकृष्णसमय
जान्यौप्रवीन ॥ इहांकंसनासघटिकाजुआइ ॥ सोकालआनिवर्त्योसुभाइ ॥ सिरहत्यौमु
ष्टितनछुटिसंधान ॥ पुनितजेमल्लचाणूरप्राण ॥ यहमहामल्लमार्योमुरारि ॥ आकासअ
मरजयजयउचारि ॥ मुष्टिकाआदिसबमल्लमारि ॥ निस्सेषसेषकीनेनिहारि ॥ रंगभूमि
सषामिलिकृष्णराम ॥ सोरचीमल्ललीलासकाम ॥ यहचरितदेषिजनबढीआस ॥ तिहिं
समयकंसउरपरीत्रास ॥ नीसाननिवारेबजतनाद ॥ सबदुष्टकंसकहिप्रगटसाद ॥ हठिदु
ष्टबालएकाढिदेहु ॥ लाभहुव्रजवासीलूटिलेहु ॥ बांधहुगहिनंदहिदुसहबंध ॥ कृतवयर
तोरिवसुदेवकंध ॥ अरुउग्रसेननृपहतहुआज ॥ सबआनिसुभटमंत्रीसमाज ॥ सुनिव
चनकंसकेश्रवनसाल ॥ चढिगएमंचमोहनसचाल ॥ अषिलेसउचकिचढिगौषआप ॥
परित्रासकंसघटभर्योपाप ॥ धरिषडगचर्मआसुरसधीर ॥ बढिअतुलकोपसोमहावीर ॥
सिरतैंकिरीटगिरिमुकटसंग ॥ इहांदईकृष्णथापढअंग ॥ गहिकंसकेसगाढेगुपाल ॥ सठ
गगनभ्रमायौअमरसाल ॥ थहरानोंमंदिरसप्तथान ॥ प्रभुडारिदयौपृथ्वीप्रमान ॥ दिय

झंपसंगतिहिवासुदेव ॥ उरबैठिस्वासरोकेअजेव ॥ पापिष्टकंसकेगएप्रान ॥ इहांभयोश
ब्दजयआसमान ॥ पुनिभईपुहपवर्षाप्रसिद्ध ॥ शिवब्रह्मकरतस्तुतिदेवसिद्ध ॥ वसवयर
कृष्णमूरतिविनीत ॥ उरकंसबसीनिसदिनअजीत ॥ देपीप्रतच्छिमूरतिदयाल ॥ कोउकर्म
उदैभौअंतकाल ॥ कंसकेअनुजआएसकाम ॥ निग्रोधकंकद्वैवीरनाम ॥ सोजुटेआनिदा
ऊसमान ॥ प्राहारपरिघतिनदएप्रान ॥ कर्मफलपाइजबकंसक्रूर ॥ सबमिलिआनिजदु
वंससूर ॥ पुनिकह्योकृष्णकारियेप्रमानि ॥ मृतकर्मकंसविधिवेदमानि ॥ कुलजादवकृतस
बउचितकीन ॥ पुनिपूछिजथाद्विजगुरप्रवीन ॥ रणविजयपाइबलदेवराम ॥ घरिधीरगए
अवरोधधाम ॥ मिलिबंधमोषकियपितामात ॥ विश्वेसभएपौरुषविष्यात ॥ पितमातकृ
ष्णदैवतप्रमानि ॥ जगकरनभरनअरुनाशजानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कस्योविनासजुकंस
को । मातपिताग्रहमोष ॥ मथुरामंडलमैंमहा । घरघरमंगलघोष ॥ ५ ॥ इतिश्रीअ०
श्रीकृ०दशमस्कं०बा०नरहरदासविरचितेकंसवधोनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥
॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मोहिविलोक्योमातपित । दैवतभावनिदान ॥
कृष्णलष्योतवचित्तकारि । पूरनज्ञानप्रमान ॥ १ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तहांदैवीमा
यादुगम । प्रेरीपरमकृपाल ॥ मातुपितातामहँमगन । तहांभएततकाल ॥ २ ॥ ॥ श्री
कृष्णउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हमहेतसहेतुमदुषदुरंत ॥ इहांपितामातुसोकहिअ
नंत ॥ बालककिसोरवयसुषाविष्यात ॥ तुमलह्योहमारोकछुनतात ॥ हमहुंसिसुमातापिता
हेत ॥ सुनजानिलाडसंपतिसमेत ॥ मैलह्योजन्मतवउदरपाइ ॥ पितुमाततबाहितैकष्टपाइ
॥ सुतजानिनहीपितमातसुष ॥ देषेसुकष्टमहँमहादुष ॥ चिंतायहउपजतदेहचेत ॥
हमऊरनव्हैहैकवनहेत ॥ सबभांतिजपैंहमसापराध ॥ सोक्षमाकरहुतुमपरमसाध ॥ ऐ
श्वरीदृष्टिउपज्योअभाव ॥ भएभजतमातुपितुमनुजभाव ॥ सुंदरविलोकिमुषछविसहास
॥ पितुमाताजंत्रितमोहपास ॥ ॥ अथउग्रसेनबंधमोचन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबमाता
महचरननैं । विषमसंकलावाढि ॥ उग्रसेनआन्योइहां । काराग्रहतैंकाढि ॥ ३ ॥ देस
कोसगजवाजिदल । वैभवराजविचारि ॥ उग्रसेनयहआपनें । सबसुषकरहुसंभारि ॥ ४ ॥
॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ कंसअपावनआपनौ । प्रगटकर्मफलपाइ ॥ मिलिअलोक
सोलोकमहँ । भयौविनाससुभाइ ॥ ५ ॥ देववेदनिंदकदुसट । पिताविरोधसपाप ॥ याते
ताकोसोकअब । उचितनकरिवोआप ॥ ६ ॥ ॥ छंदाद्विअक्षरी ॥ ॥ उग्रसेनफिरिव
चनउचार्यो ॥ विषमकाललषिसमयविचार्यो ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ मोहिनराज
शक्तिमनमोहन ॥ गलेगलानिअषिलइंद्रीगन ॥ तुमसर्वज्ञसर्वमयस्वामी ॥ जथालोक
त्रयअंतरजामी ॥ कहौसमर्थऔरप्रभुकोहै ॥ स्यामराजयहतुमकहँसोहै ॥ पोषनभरन
पुरुषतुमपूरन ॥ राजतिलकलीजैविजयीरन ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ तुमहीउग्रसे
नसबजानत ॥ पुरुषाकुलकोधर्मप्रमानत ॥ नृपतिजजातिजुनिश्चयकीनौ ॥ देशराजसो
पुरकहँदीनौ ॥ हमजदुवंसविहितनहिंहमकौं ॥ तातैराजउचितयहतुमकौं ॥ ऋतयहउ
ग्रसेनअबकीजे ॥ लोकप्रसिद्धराजपदलीजे ॥ औज्ञानृपजजातिअनुसरिहैं ॥ करहुराज

हमेसवाकीरैंहै ॥ राजाहमकरिहैंतबरष्या ॥ साधहुकारिजमानहुशिष्या ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जादवगएकंसभयजेते ॥ तहँसबकृष्णबुलाएतेते ॥ लोकवेदसबकेमतलीनें ॥ क्रमजुतउग्रसेननृपकीनें ॥ बांहपकरिआसनबैठारे ॥ स्यामआपकरतिलकसँवारे ॥ सेतछत्रचामरलैसाजे ॥ वाजेविविधसमंगलवाजे ॥ अपनीवृत्तिभूमिअधिकाई ॥ पुनिसबहीजादवकुलपाई ॥ महाधर्मवर्तेंभुवमंडल ॥ उग्रसेनराजाआषंडल ॥ बहुतमानदैंनंदबुलाए ॥ जथावचनकहिसुषउपजाए ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पुत्रभावहमकौंतुमपोषे ॥ सबविधिलाडलडाइसंतोषे ॥ हमनसमर्थसुपैकहिवेहित ॥ प्रेमनेमजोकीनोतुमपित ॥ पितानंदअबग्रेहपधारो ॥ तहींसकलव्रजकेदुषटारो ॥ इहांकरिकाजहमहूंपुनिऐहैं ॥ देवीजननिजनकहसुपदेहैं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दिव्यवसनभूषनसबदीनें ॥ करिमनुहारबिदातबकीनें ॥ वसुदेवकुलगुरुगर्गबुलायौ ॥ बहुतमानदैढिंगबैठायौ ॥ क्रमउपनैनआदिसबकीनें ॥ परमधर्मजेवंसप्रवीनें ॥ दैंगोदानद्रव्यबहुदीनें ॥ कुलगुरुपुरद्विजहरषितकीनें ॥ कृष्णजन्मसंकल्पजुकीनी ॥ सोवसुदेवलक्षगउदीनी ॥ ॥ अथसांदीपनीग्रहगमनं ॥ ॥ सबविद्यापूरनसांदीपन ॥ बसैंउजेनपुरीसोब्राह्मन ॥ उहांशिष्यदशादिशकेआवैं ॥ प्रगटसुवंछितविद्यापावैं ॥ आज्ञागर्गपाइइहांआए ॥ रामकृष्णसंगसषासुहाए ॥ करिवंदनगुरुपूजाकीनी ॥ द्विजसांदीपनआशिषदीनी ॥ ॐनमःसिद्धअनादिजुआषर ॥ संथादईपट्टिकासुंदर ॥ सबविद्यापारंगतस्वामी ॥ जथाजगतगुरुअंतरजामी ॥ तदपिलोकविवहारजुतत्पर ॥ टहलकरतगुरग्रेहनिरंतर ॥ पुनिगुरुविद्यासकलपढाए ॥ सेवाशिष्यपरमसुषपाए ॥ आतमविद्या१धनुषउपासन २॥ ब्रह्मज्ञान ३ पथन्यायप्रकासन ४॥ वेदधर्मविद्याविश्वेश्वर ५ राजनीतिसींषेराजेसर६॥राजनीतिसोइषटाविधानरस ॥ वेदप्रणीतविहितपौरुषवस॥उचितसंधि१ विग्रह २ अरुआश्रय ३॥ द्वैधाभाव ४ जान५आसन ६जय ॥ पाटीइकसंथाजोपाई ॥ लीनीपढिसुनिफेरिलिषाई ॥ इकदिनएककलाअभ्यासी ॥ वासरचौसठगुरुग्रहवासी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दोयमासअरुचारिदिन । द्विजग्रहरहेदयाल ॥ गुरुअवलोकीदेवगति । पूरनपुरुषकृपाल ॥ ७ ॥ गुरुपत्नीसौमंत्रगुरु ॥ ऐसोकह्योउपाइ ॥ अपनौपुत्रजुमृतकवह । जाचौइहपहँजाइ ॥८॥ ॥श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ प्रभुहमसौंपूरनकृपा। आपुनकरीअसेष ॥ दयौसुरासुरहूदुर्लभ । विद्यादानविशेष ॥ ९ ॥ सेवकजनकरिसमझिबे । हेतसहितमनमांहि ॥ द्विजमांगहुगुरुदक्षणा । हमसोइदैंग्रहजांहि ॥ १० ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पत्नीगुरुतबयहसमयपाइ ॥ सोकीनीजाचन्यासुभाइ ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ षितिसारसमुद्रप्रभासषेत ॥ हमआएतीरथजात्रहेत ॥ विधिलिषितहमारोपुत्रबाल ॥ कृतजोगमस्योतहांसोअकाल ॥ प्रभुइहैजुगुरुदक्षिणाप्रमानि ॥ अबरामकृष्णउहदेहुआनि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सोइकरिप्रणामप्रभुधर्मसेत ॥ क्षणअंतरआइप्रभासक्षेत्र ॥ उदधिसौंकोपकीनेंअनंत ॥ द्विजरूपउदधिआयौदुरंत ॥ ॥ समुद्रउवाच ॥ ॥ नीरनिधिइहांबोल्यौनिदान॥ प्रभुआज्ञाकीजैसोप्रमान॥

॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ ब्राह्मणकौतोमहँमरयौबाल ॥ करिसोधआनिसोइहींकाल ॥ समुद्रउवाच ॥ ॥ पंचजननामआसुरसपाप ॥ इहांसंपदेहउहवसतआप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनतउतरिरथतैंअनंत ॥ जलमांझिकूदपैठजयंत ॥ पंचजनतहांमारयौपछारि ॥ फेरयौजलअंतरउदरफारि ॥ पुनिअसुरउदरबालकनपाइ ॥ इहांकृष्णदेवजमलोकआइ ॥ जमराजकृष्णजगदीसजानि ॥ पूजाअनेकअर्चाप्रमानि ॥ ॥ जमउवाच ॥ ॥ आगमनहेतकहियेअजेव ॥ दीजैसोइआज्ञादेवदेव ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ ब्राह्मणसांदीपनिपुत्रबाल ॥ कीनौतिहिपेत्रप्रभासकाल ॥ उहआनिदेहुजमराजआज ॥ करियेनविलंबयहविप्रकाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रभुवचनधर्मराजाप्रवीन ॥ द्विजबालकतवहीआनिदीन ॥ इहांरामकृष्णउज्जीनआइ ॥ सुतदीनौसोगुरुकहँसुभाइ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पुनिवासुदेवयौकहिपुनीत ॥ विप्रकछुबहुरिमाँगहुविनीत ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ दक्षिणासुतदीनौवासुदेव ॥ अवतौतुमआनिरणभएअजेव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वेदउचितगुरुविप्रवर । आसिपदएअपार ॥ कह्यौजथाविधिग्रेहकौ । करियैगमनकुमार ॥ ११ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामकृष्णतबबैठिरथ । ग्रहआएगोविंद ॥ मातपिताअतिहेतमिलि । उपजेउरआनंद ॥ १२ ॥ इति श्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेउग्रसेनबंदिमोचनंकृष्णविद्याऽध्ययनंनामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नीतिधर्मविद्यानिपुन । वचनचतुरहितवंत ॥ उधौलयौबुलाइइहां । सषाआपनौसंत ॥ १ ॥ रामकृष्णउद्धवरहसि । बैठेकरतविचार ॥ कृष्णसंभारतप्रेमकरि । व्रजजनकौव्यवहार ॥ २ ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ हैअतिकातरममविरह । वैपितुमातुअधीर ॥ क्रमक्रमउद्धववचनकहि । विषमहरहुदुषवीर ॥ ३ ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ गोपवधूगोकुलगजगामिनि ॥ भ्रमतिनिकुंजकुंजप्रतिभामिनि ॥ रासविलासथलीअवलोकति ॥ रहतिउदासविषयमगरोकति ॥ मोकहँनैनप्रानअर्पेमन ॥ तजेसुगंधअसनभूषनतन ॥ ममहिततजेसकलसज्यासुष ॥ माननिहारसिंगारपानमुष ॥ विविधवसनग्रहकाजविसारे ॥ चितजेलोकधर्मविवहारे ॥ दसाबावरीसीभइडोलति ॥ विह्वलकान्हकान्हकहिबोलति ॥ जुवतीवृंदवृंदमिलिजैसी ॥ तलफतिमीनहीनजलतैसी ॥ गुरुजनवचनत्रसतिगजगामिनि ॥ ज्यौंमृगराजगाजमृगभामिनि ॥ जथाधर्महितमथुराजैहै ॥ इहांकरिकाजवेगिफिरिऐहै ॥ जबमेरौयहवचनसुन्यौजिहिं ॥ उनकेप्रानविसासरहतइहिं ॥ सभासमयविधिवचनसयानै ॥ जथाधर्मतेतुमसबजानै ॥ करहुप्रबोधजाइहितकारन ॥ महाज्ञानउपजैगोपीमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अपनेदएवसनआभूषन ॥ मुकुटकिरीटवेनुवंछितमन ॥ आरोहितअपनैरथऊपर ॥ उपगवसुतबहुतैकरिआदर ॥ भानुअस्तवेलामनभाए ॥ इहांउद्धववृंदावनआए ॥ उडिगोरजआच्छादितअंबर ॥ पैंनहिंजानिपरतअपनौपर ॥ दोहा ॥ उद्धवकरयौप्रवेसपुर । जनकाहूसुनजानि । महरनंदकेवगरमहँ । इहांछोड्यौरथआनि ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांसंध्यागोधन

कौंआवन ॥ सुनियतशब्दअनेकसुहावन ॥ मोहितकामदृपथमदमाते ॥ गर्जतमहारो
सरसराते ॥ मिलिनसमयगोवच्छसुषदसुर ॥ पुनिमिलिग्वालबालभापापुर ॥ दूधधार
बाजतगोदोहन ॥ मातहिंआनिदेतमनमोहन ॥ संध्याधर्मग्रेहप्रतिसाजत ॥ विविधझा
लरीघंटाबाजत ॥ सुनिसुनिघोषघोषकेसुंदर ॥ उद्धवअतिआनंदभएउर ॥ गोपवधूमोह
नगुनगावति ॥ घरिघरिदुग्धपात्रकरिधावति ॥ इहांनंदउद्धवपहँआए ॥ पकरिभुजाभी
तरपधराए ॥ क्रमजुतआदरपूजाकीनें ॥ दिव्यउचितलैआसनदीनें ॥ उद्धवजुक्तिअने
कजिंवाए ॥ बहुरयौंसुषसज्याबैठाए ॥ ॥ नंदवाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुसलबातवसु
देवकी । पुत्रनिसहितपुनीत ॥ उद्धवकोंपूंछीइहां। नंदमहरसविनीत ॥ ५ ॥ ॥ छंदहिअ
क्षरी ॥ ॥ कैसैनासकंसकोकीनों ॥ दुषटारयोजादवसुषदीनों ॥ गोकुलवसिगोपालगुसां
ई ॥ चितहितवंछितधेनचराई ॥ व्रजअरिष्टउपजेजेवनवन ॥ मारिविनासकरेतेइमोहन
॥ व्रजकेविघनअनेकविनासे ॥ प्रभूहमारेजतनप्रकासे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मातज
सोदाउपजिमोहमन ॥ पुनिइहांबोलीवचनप्रेमपन ॥ इहिंछनरामकृष्णसुधिआए ॥ छो
हमोहनैनानिजलछाए ॥ ढरिजुगकुचनिदूधकीधारा ॥ पूतपूततहांकरीपुकारा ॥ इतहिनंद
लोटतअकुलावत ॥ प्रेमथाहजसुमतिनहिंपावत ॥ मग्नभएदुषसागरमांही ॥ हैकछुरही
तिनहिंबुधिनांही ॥ ऊधौदसाविलोकीइनकी ॥ तहींभईगतितेसियतिनकी ॥ गएकालक
छुमूर्छाजागी ॥ भएसचेतनंदवडभागी ॥ उद्धवइहांवचनउच्चारयौ ॥ वेदस्मृतिकोधर्मवि
चारयौ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ जिनहरिसौंयहरतिउपजाई ॥ महरनंदकीधन्यकमाई ॥
देहधरेकौधर्मदिषावत ॥ विधियहवेदपुरानबतावत ॥ निश्चयकृष्णआदिनारायण ॥ प
रमपुरुषअरुभक्तिपरायन ॥ उनकेप्रियअप्रियअपनोंपर ॥ उत्तमअधमनाहिनैअंतर ॥
सबनिसमानसदावेस्वामी ॥ जथाचराचरअंतरजामी ॥ निर्गुनरूपउनहिजगजानै ॥ पैं
किहुकारनसगुनप्रमानें ॥ वेहैंवसतसबनिकैअंतर ॥ निकटप्रेमहितरहतनिरंतर ॥ जोउ
नसौंअतिरतिउपजावै ॥ प्रेमीभक्तपरमपदपावै ॥ अबवैसमयपायइहांऐहैं ॥ हेतसबनि
मिलिहैंसुषदेहैं ॥ करिहैवचनप्रमानकन्हाई ॥ मतदुषकरहुजसोदामाई ॥ देवमनुजतिर्य
गमयदेही ॥ हैसबव्यापकसर्वसनेही ॥ मानहुउनकेपितानमाता ॥ तिनकेकोऊहतकन
त्राता ॥ जन्मनकर्मकछूमतजानो ॥ पैनशुभाशुभभावप्रमानो ॥ देहनद्रस्यसुतासुतदारा
॥ प्रकृतिपुरुषबहुरूपप्रकारा ॥ संसृतिरष्याहेतसुभाइन ॥ निर्गुनसगुनहोतनारायन ॥
सतरजतमत्रयगुनमयस्वामी ॥ काहूबद्धनकामअकामी ॥ हैइनविनुसोपैकछुनाहीं ॥ वि
लपतहैभवभूतवृथाही ॥ एहैरमतआपनीइच्छा ॥ दुष्टनिदंडदेतहैंदिक्षा ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ बातकरतहीरयनविहानीं ॥ बोलेतमचरअपनीबानी ॥ ग्रहव्यापारकरतिभइगो
पी ॥ अतिसुंदरभूषनतनओपी ॥ मांडेसदनसदनमंथाना ॥ पाटनेतकररईप्रमाना ॥
भरिभरिआनिजथादधिभाजन ॥ उदहतिगोपीलैलैअनगन ॥ इहांमंथानकरतिअनुरा
गी ॥ लीलाकृष्णसुगावनलागी ॥ घुमरिरहेमंथानजथाघन ॥ तहांसोभितसुंदरिसुंदरत
न ॥ बनीकरनिवलयावलिवाजत ॥ नूपुरजुतकिंकिनिरवराजत ॥ देहीगौरअंचराडारे ॥

॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ ब्राह्मणकौतोमहँमरयौबाल ॥ करिसोधआनिसोइहींकाल ॥ ॥ समुद्रउवाच ॥ ॥ पंचजननामआसुरसपाप ॥ इहांसंपदेहउहवसतआप ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहसुनतउतरिरथतैंअनंत ॥ जलमांझिकूदपैठेजयंत ॥ पंचजनतहांमारयौपछारि ॥ फेरयौजलअंतरउदरफारि ॥ पुनिअसुरउदरबालकनपाइ ॥ इहांकृष्णदेवजमलोकआइ ॥ जमराजकृष्णजगदीसजानि ॥ पूजाअनेकअर्चाप्रमानि ॥ ॥ जमउवाच ॥ ॥ आगमनहेतकहियेअजेव ॥ दीजेसोइआज्ञादेवदेव ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ ब्राह्मणसांदीपनिपुत्रबाल ॥ कीनौतिहिपेत्रप्रभासकाल ॥ उहआनिदेहुजमराजआज ॥ करियेनविलंबयहविप्रकाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रभुवचनधर्मराजाप्रवीन ॥ द्विजबालकतबहीआनिदीन ॥ इहांरामकृष्णउज्जीनआइ ॥ सुतदीनोसोगुरुकहँसुभाइ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पुनिवासुदेवयौंकहिपुनीत ॥ विप्रकछुबहुरिमाँगहुविनीत ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ दक्षिणासुतदीनोवासुदेव ॥ अवतौतुमअनिरणभएअजेव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वेदउचितगुरुविप्रवर । आसिपदएअपार ॥ कह्योजथाविधिग्रेहकौं । करियैगमनकुमार ॥ ११ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामकृष्णतबबैठिरथ । ग्रहआएगोविंद ॥ मातपिताअतिहेतमिलि । उपजेउरआनंद ॥ १२ ॥ इति श्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेउग्रसेनबंदिमोचनंकृष्णविद्याऽध्ययनंनामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नीतिधर्मविद्यानिपुन । वचनचतुरहितवंत ॥ उधधौलयौवुलाइइहां । सषाआपनौसंत ॥ १ ॥ रामकृष्णउद्धवरहसि । बैठेकरतविचार ॥ कृष्णसंभारतप्रेमकरि । व्रजजनकौव्यवहार ॥ २ ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ हैअतिकातरममविरह । वैपितुमातुअधीर ॥ क्रमक्रमउद्धववचनकहि । विषमहरहुदुषवीर ॥ ३ ॥ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ गोपवधूगोकुलगजगामिनि ॥ भ्रमतिनिकुंजकुंजप्रतिभामिनि ॥ रासविलासथलीअवलोकति ॥ रहतिउदासविषयमगरोकति ॥ मोकहँनैनप्रानअपैंमन ॥ तजेसुगंधअसनभूषनतन ॥ ममहिततजेसकलसज्यासुष ॥ माननिहारसिंगारपानमुष ॥ विविधवसनग्रहकाजविसारे ॥ चितजेलोकधर्मविवहारे ॥ दसाबावरीसीभइडोलति ॥ विव्हलकान्हकान्हकहिबोलति ॥ जुवतीवृंदवृंदमिलिजैसी ॥ तलफतिमीनहीनजलतैसी ॥ गुरुजनवचनत्रसतिगजगामिनि ॥ ज्यौंमृगराजगाजमृगभामिनि ॥ जथाधर्महितमथुराजैहैं ॥ इहांकारिकाजवेगिफिरिऐहैं ॥ जबमेरौयहवचनसुन्यौजिहिं ॥ उनकेप्रानविसासरहतइहिं ॥ सभासमयविधिवचनसयानै ॥ जथाधर्मतेतुमसबजानै ॥ करहुप्रबोधजाइहितकारन ॥ महाज्ञानउपजेगोपीमन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अपनेदएवसनआभूषन ॥ मुकुटकिरीटवेनुवंछितमन ॥ आरोहितअपनेरथऊपर ॥ उपगवसुतबहुतैकरिआदर ॥ भानुअस्तवेलामनभाए॥ इहांउद्धववृंदावनआए॥ उडिगोरजआच्छादितअंबर॥ पैनहिंजानिपरतअपनौपर॥ दोहा ॥ उद्धवकरयौप्रवेसपुर । जनकाहूसुनजानि। महरनंदकेवगरमहँ । इहांछोड्यौरथआनि ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांसंध्यागोधन

कौंश्रावन ॥ सुनियतशब्दअनेकसुहावन ॥ मोहितकामवृषभमदमाते ॥ गर्जतमहारो
सरसराते ॥ मिलिनसमयगोवच्छसुषदसुर ॥ पुनिमिलिग्वालबालभाषापुर ॥ दूधधार
बाजतगोदोहन ॥ मातहिंश्रानिदेतमनमोहन ॥ संध्याधर्मग्रेहप्रतिसाजत ॥ विविधझा
लरीघंटाबाजत ॥ सुनिसुनिघोषघोषकेसुंदर ॥ उद्धवअतिश्रानंदभएउर ॥ गोपवधूमोह
नगुनगावति ॥ घरिघरिदुग्धपात्रकरिधावति ॥ इहांनंदउद्धवपहँश्राए ॥ पकरिभुजाभी
तरपधराए ॥ क्रमजुतश्रादरपूजाकीनें ॥ दिव्यउचितलैंश्रासनदीनें ॥ उद्धवजुक्तिअने
कजिंवाए ॥ बहुखौंसुषसज्याबैठाए ॥ ॥ नंदवाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुसलबातवसु
देवकी । पुत्रनिसहितपुनीत ॥ उद्धवकोंपूंछीइहां । नंदमहरसविनीत ॥ ५ ॥ ॥ छंदद्विअ
क्षरी ॥ ॥ कैसैनासकंसकौकीनों ॥ दुषटाखोजादवसुषदीनों ॥ गोकुलवसिगोपालगुसां
ई ॥ चितहितवंछितधेनचराई ॥ व्रजअरिष्टउपजेजेवनवन ॥ मारिविनासकरेतेइमोहन
॥ व्रजकेविघनअनेकविनासे ॥ प्रभूहमारेजतनप्रकासे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मातज
सोदाउपाजिमोहमन ॥ पुनिइहांबोलीवचनप्रेमपन ॥ इहिंछनरामकृष्णसुधिश्राए ॥ छो
हमोहनैननिजलछाए ॥ ढरिजुगकुचनिदूधकीधारा ॥ पूतपूततहांकरीपुकारा ॥ इतहिनंद
लोटतअकुलावत ॥ प्रेमथाहजसुमतिनाहिंपावत ॥ मग्नभएदुपसागरमांही ॥ हैकछुरही
तिनहिंबुधिनांही ॥ ऊधोंदसाविलोकीइनकी ॥ तहींभईगतितैंसियतिनकी ॥ गएकालक
छुमूर्छाजागी ॥ भएसचेतनंदवडभागी ॥ उद्धवइहांवचनउच्चाखौं ॥ वेदस्मृतिकोधर्मवि
चाखौ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ जिनहरिसौंयहरतिउपजाई ॥ महरनंदकीधन्यकमाई ॥
देहधरेकौधर्मदिषावत ॥ विधियहवेदपुरानबतावत ॥ निश्चयकृष्णश्रादिनारायण ॥ प
रमपुरुषअरुभक्तिपरायन ॥ उनकेंप्रियश्राप्रियअपनोंपर ॥ उत्तमअधमनाहिनैंअंतर ॥
सबनिसमानसदावेस्वामी ॥ जथाचराचरअंतरजामी ॥ निर्गुनरूपउनहिजगजानें ॥ पैं
किहुकारनसगुनप्रमानें ॥ वेहैंवसतसबनिकेंअंतर ॥ निकटप्रेमहितरहतनिरंतर ॥ जोउ
नसौंअतिरतिउपजावे ॥ प्रेमीभक्तपरमपदपावे ॥ अबवैसमयपायइहांऐहैं ॥ हेतसबनि
मिलिहैसुषदेहैं ॥ करिहैंबचनप्रमानकन्हाई ॥ मतदुषकरहुजसोदामाई ॥ देवमनुजतिर्य
गमयदेही ॥ हैंसबव्यापकसर्वसनेही ॥ मानहुउनकेंपितानमाता ॥ तिनकेंकोऊहतकन
त्राता ॥ जन्मनकर्मकछूमतजानों ॥ पैंनशुभाशुभभावप्रमानों ॥ देहनद्रस्यसुतासुतदारा
॥ प्रकृतिपुरुषबहुरूपप्रकारा ॥ संसृतिरष्याहेतसुभाइन ॥ निर्गुनसगुनहोतनारायन ॥
सतरजतमत्रयगुनमयस्वामी ॥ काहूबद्धनकामअकामी ॥ हैंइनविनुसोपैंकछुनाहीं ॥ वि
लपतहैंभवभूतवृथाही ॥ एहैंरमतश्रापनीइच्छा ॥ दुष्टनिदंडदेतहैंदिक्षा ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ बातकरतहीरयनविहानीं ॥ बोलेतमचरअपनीबानी ॥ ग्रहव्यापारकरतिभइगो
पी ॥ अतिसुंदरभूषनतनश्रोपी ॥ मांडेसदनसदनमंथाना ॥ पाटनेतकररईप्रमाना ॥
भरिभरिश्रानिजथादधिभाजन ॥ उदहतिगोपीलैलैअनगन ॥ इहांमंथानकरतिअनुरा
गी ॥ लीलाकृष्णसुगावनलागी ॥ घुमरिरहेमंथानजथाघन ॥ तहांसोभितसुंदरिसुंदरत
न ॥ बनीकरनिवलयावलिवाजत ॥ नूपुरजुतकिंकिनिरवराजत ॥ देहीगौरअंचराडारे ॥

उछरतहारजुउरनिउघारे ॥ सुनिउद्धवसोइघोपसुहाए ॥ प्रातहिउठेपरमसुपपाए ॥ मिलेग्वालगोवच्छमिलावति ॥ पयदुहिदुहिमंदिरपहुंचावति ॥ द्वारनंदठाढोरथदेष्यौ ॥ वनिताआगमकृष्णविशेष्यौ ॥ सोभितध्वजापताकासोई ॥ हितउपज्योमोहनरथहोई ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ इहांचलेमोहनकहिआवन ॥ सिद्धिकरेसोइवचनसुहावन ॥ दिव्यवसनजबउद्धवदेषे ॥ वनितामनअतिक्रोधविशेषे ॥ वचनसक्रोधगोपिकाबोलति ॥ छन्नवाकउद्धवउरछोलति ॥ यहअक्रूरफेरकतआयो ॥ काकोरथपुनिकवनपठायौ ॥ रामकृष्णलैजाइलगाए ॥ महाराजइहिंकंसमराए ॥ आयौदुष्टसबनिउरदाहत ॥ हेअबकहाकीयौधौंचाहत ॥ करिप्रभुनाशकृपाअबकरिहै ॥ हेममआमिपपिंडजुधरिहै ॥ सरिताकरिनितकृत्यसुभाए ॥ उद्धवइहांनंदकेआए ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशम० बारहटनरहरदासविरचितेउद्धवघोपआगमनंनामपट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वेआभूषनवसनत्रे । वैसीहीउनहारी ॥ अविलोकतगोपीअधिक । रहींविचारिविचारी ॥ १ ॥ आनिविलोकेनिकटइहँ । वनिताकर्यौविचार ॥ पत्रीवाहकदूतपै । हैयहकोउप्रतिहार ॥ २ ॥ पहिंचानेउद्धवप्रगट । सखाकृष्णकौसाध ॥ करिवंदनपूजाकरी । अवरसबैआराध ॥ ३ ॥ ग्रहग्रहतैंगोपांगना । आनिभईएकत्र ॥ अपनेंअपनेंभावइहां । बातेकहतिविचित्र ॥ ४ ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ कहीयतहोतुमकृष्णके । संगीसषासुजान ॥ उपदेसकआएइहां । गोकुलकेवलज्ञान ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जोगीजतीतपस्वीजोई ॥ अंबापितानविसरतओई । पूरनज्ञानजपैसिधिपावत ॥ तेउकुटुंबजातराअवत ॥ सुतहिमातपितुसत्यसनेही ॥ देषहुभवएदुर्लभदेही ॥ हमसौंस्वारथहेतसगाई ॥ सोतोकृष्णभलीसमझाई ॥ कुसुमलताजैसैंमिलिमधुकर ॥ पुनिरसलैसंबंधकेरेपर ॥ अरुगनिकामइत्रीयआराधै ॥ स्वारथद्रव्यतबहिलौसाधै ॥ हितविद्यालौंसिष्यजुहोई ॥ स्वारथभयेजाइउठिसोई ॥ बसतप्रजाजोलोंसुषवासी ॥ अरथविनाउठिजायउदासी ॥ जथाजज्ञआचारजजाई ॥ पूरनभएदच्छिनापाई ॥ पंषीज्यौंछायाफलपावै ॥ बसैंवृक्षसौंचित्तलगावै ॥ स्वारथघटैसुतोरिसगाई ॥ झंषरहोइतबहिउडिजाई ॥ जैसैंअतिथिचलैकरिभोजन ॥ तजैगृहीकोग्रेहततछन ॥ वनतृणहरिततबहिलौंबासी ॥ देषिदाहमृगजाइउदासी ॥ लंपटज्यौंपरात्रियचितलावै ॥ पूरणकारिजऊठिपलावै ॥ ऐसीगतिस्वारथआधीनी ॥ कृष्णप्रीतिगोपिनसौंकीनी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लोकलाजतजिभईविहाला ॥ बालचरितगावतिव्रजबाला ॥ याहीसमयभ्रमरइकआयौ ॥ काहूनारिचरननियरायौ ॥ तहांहँसीगोपीदेतारी ॥ उद्धवव्याजसुबातउचारी ॥ भ्रमरधूतमोहनकौभाई ॥ सदारहततूंनिकटसषाई ॥ मधुपकंठतवपुहपकिमाला ॥ निमितकिहूंदीनीनंदलाला ॥ माधवजबकुबजाहिमनावत ॥ पाइनलगतप्रेमउपजावत ॥ दासीकेइहिंचरननिदानें ॥ कोऊबारछीयेकोजानें ॥ कुबजाकौसौरभकुचकुंकुम ॥ हैयहलिप्तसुदेषतहैंहम ॥ तातेहमहिंछियौमतमधुकर ॥ उपजतषेददहतउरअंतर ॥ अबलाकरनप्रसन्नजुआए ॥ स्वारथहिततुमवचनसुनाए ॥ रहतिउहांकुबजापटरानी ॥ नित्यप्रसन्नकरहुतुमज्ञानी ॥

अचरिजमहाहमहिंयहआवै ॥ कमलाहरिकीप्रियाकहावै ॥ एतौपरमधूतहैऐसे ॥ करतिसुपैविश्वासजुकैसै ॥ हमअज्ञानअियासीनाहीं ॥ सदातजैनहिसंगसुभाहीं ॥ करिगुंजारकृष्णगुनगावत ॥ वारवारलैहमहिसुनावत ॥ सोकुबजाकहँजायसुनावहु ॥ प्यारेलगहुदानकछुपावहु ॥ त्रिभुवनविषैकवनसोतरुनी ॥ दुरलभइनहिविश्वकिहिवरनी ॥ विष्णुचरनरजरमाविसेषै ॥ तौहमकवनमात्रकिहिंलेषै ॥ करितुमदूतकर्मदुषपावत ॥ हमहिंकृष्णसोसंधिकरावत ॥ देषहुबलिसर्वसजोदीनौ ॥ निग्रहराजछीनकेलीनौ ॥ जद्यपिवैऐसेहीजानै ॥ नैनरूपमहँरहेनिदानै ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ उद्धवतबैबचनकहिऐसौ ॥ करियैविरहकुटिलकोकोसौ ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ वहुर्यौहसिब्रजवनिताबोली ॥ षरीगांठिउरअंतरषोली ॥ जुगतिहमनकछुऐसीजानी ॥ मुषउनकहीसुसाचीमानी ॥ तुमजुहमहिविश्वासबढावत ॥ मुषकहिमीठीवातमिलावत ॥ हमविनुकाउनकेत्रियनाही ॥ मधुपविचारकरहुमनमांहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उद्धवगोपिनकोइहां । देष्यौप्रेमनिदान ॥ रंगेनिरंतरस्यामरंग । पूरनप्रेमप्रमान ॥ ६ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ अबउद्धवबोलेइहां । छांड्यौज्ञानगुमान ॥ धन्यधन्यतुमधीरधर । धरतकृष्णकोध्यान ॥ ७ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ तातैंतीनलोकपूजिततुम ॥ कृष्णभक्तिकरिभईजथाक्रम ॥ जोगजग्यजपतपव्रतसंजम ॥ दानविधानदेहइंद्रीदम ॥ सबऋतुकष्टसहततपसाधत ॥ इत्यादिकजोगेसअराधत ॥ तिनहूंकहँजद्यपिदुर्लभजो ॥ तुमकहँगोपीसहजउपजिसो ॥ सुतपतिसज्जनगेहसभागी ॥ लोकलाजतजिकृष्णहिलागी ॥ उनसंदेहकह्यौहैऐसो ॥ तुमसौंसबैप्रकासौतैसो ॥ हमतुमकबहुविजोगसुनाहीं ॥ सोउरचषदेषतसतभांहीं ॥ पंचतत्वमयभूतप्रमानौ ॥ नियतमोहितवव्यापकजानौ ॥ बुधिमनइंद्रीतत्वविचारो ॥ हैइहसबैसरूपहमारो ॥ कारनपाइसर्वमहंव्यापक ॥ उनविनहेनाहिनकोऊइक ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ व्यापकसर्वसुउनहिबतावत ॥ प्रानीततौनाशक्यौपावत ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ प्रानीभूतविकारहिपावै ॥ हैवहरहितविकारकहावै ॥ हूंज्ञानातमसुद्धअगोचर ॥ निर्विकारनिरनासानिरंतर ॥ ग्रंथनितीनअवस्थागाई ॥ सुषुपतिजाग्रतिसुपनसुभाई ॥ मायागुनकेभेदवषानत ॥ जौंकहउनतैंभिन्नप्रमानत ॥ कहियततुरीयअवस्थाकोई ॥ सिद्धसरूपहमारोसोई ॥ महासरूपप्रानहैमेरो ॥ हेतविनासदेहकौंहेरो ॥ तादेहीकेषटगुनतैसे ॥ जातास्थितवर्द्धतहैजैसे ॥ वृद्धिरहितअपषीयतबषानै ॥ नासअवस्थाछठीनिदानै ॥ हूंआतमरूपीअविकारी ॥ नासहेतयहदेहनिहारी ॥ मारगतेपदसत्यजुमानै ॥ सोसबमोहीमांझसमानै ॥ अपगाजथागिरनितेआवति ॥ सबैसमुद्रहिमांझसमावति ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ सगुनसरूपसकलगुनसुंदर ॥ महरनंदकेकुंवरमनोहर ॥ चित्तचुरावतमाषनचोरत ॥ ढूंढिषातदधिभाजनढोरत ॥ तिनकौविरहदुसहअतिदुस्तर ॥ कैसेंअबलासहैसुमधुकर ॥ जेयहविरहकरैअंगीकृत ॥ तिनकहँजाहुदेहुकरिहिताचित ॥ हैतवदगतैंदूरिरहतहम ॥ ताकौयहहैनिमितसुनहूतुम ॥ दृष्टिअगोचरतवमनमांही ॥ हमतुमतहांविछोहानांही ॥ निकटरहैतबदूरिसनेही ॥ दूरितहांअंतरनहिदेही

॥ रासससमयगोपीपतिरोकी ॥ सोपहिलैहीमिलीअसोकी ॥ हमतैदूरिजपैतुमव्है हो ॥ जथाभृंगकीटीमिलिजैहो ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ उद्धवयहचर्चाअसुहाती ॥ छनकनिवारहुजारतिछाती ॥ हमतोभोगपात्ररसभोगहि ॥ जोगीनाहिंजुसाधैजोगहि ॥ अहितकंसजडमूलउषारे ॥ सबैआपनैकाजसंवारे ॥ स्यामरामकौकुसलसुनावहु ॥ बोधआपनौगांठिबंधावहु ॥ ॥ काचितगोपीवाक्यं ॥ ॥ ऊधोकृष्णकबहुंव्रजऐहैं ॥ षोजिषोजिमाषनदधिषैहैं ॥ हितवनधेनचरावहिमोहन । ग्रेहकरहिसंध्यागोदोहन ॥ कबहूकाहिहैकुंवरकन्हैया ॥ मोहिवहुतमापनदैमइया ॥ वनव्रजवधूनिकरनिसिनिर्मल ॥ करिहैरासविलासकुतूहल ॥ पुनिइकगोपीबोलिप्रवीनी ॥ किहिंजानीजैसीउनकीनी ॥ पकरिमल्लचाणूरपछारे ॥ मातुलकंसषेलहीमारे ॥ पुनपर्जागतवैभवपायो ॥ सवैमिल्यौजदुवंससहायो ॥ कन्यानृपतिव्याहवहुकारिहैं ॥ सुषअनेकतिनसंगअनुसरिहैं ॥ मिलिवसुदेवदेवकीमाता ॥ भक्तिविलासकरतदोउभ्राता ॥ वासुदेवभएजदुकुलवंदन ॥ निषिलवंसहितकंसनिकंदन ॥ अबकिहिकाजघोषमहँआवहिं ॥ काहेनंदकुमारकहावहिं ॥ श्रीउनकेअरधंगासुंदरि ॥ नगरजोषितावहुतैनागारि ॥ हमतौव्रजवनितावनवासी ॥ एकहिगोधनवृत्तिउपासी ॥ तिनकौंदुर्लभमिलिवौताकौ ॥ जथानाममधुसूदनजाकौ ॥ अवनैरास्यमहासुषमांनौ ॥ जथापिंगलागनिकाजानौ ॥ कामीवामीलह्यौनकोई ॥ पुनिगनिकासुषनिद्रासोई ॥ गनिकादत्तात्रयकीनीगुरु ॥ वाहीसमयज्ञानउपज्यौउरु ॥ इहांएकगोपीकहिऐसो ॥ जथाविलोकिकालगुनजैसौ ॥ जद्यपिकृष्णमहाजोगेश्वर ॥ ज्ञानविधानगुरुनिहूकेगुर ॥ तदपिरमानतजतसंगतिनकौ ॥ जानतजदपिमरमगुनजिनकौ ॥ तौहमकवनमात्रहैंमधुकर ॥ आसाछविदरसनछायौउर ॥ निषिलनिकुंजविविधसरितावन ॥ प्रभुपदअंकितभूमिजुपावन ॥ जहँाजहाँदृष्टिपरतएज्योंज्यों ॥ तिनकौंविरहसंतावतत्यौंत्यौं ॥ उनकेरूपचरितअनुरागी ॥ भइतनमयगोपीवडभागी ॥ अतिविरहातुरवचनउचारति ॥ स्यामसरूपअनूपसंभारति ॥ हाव्रजनाथदीनकेबंधव ॥ अबलापरीविरहदुषअर्णव ॥ स्यामआपनौविदसंभारौ ॥ अबलादैदरसनउद्धारौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ एकआनव्रजमैंवसिऊधौ ॥ सबहिनकौदेष्यौमनसूधौ ॥ प्रेमनेममनसामनपूरन ॥ कालविहावतगावतहरिगुन ॥ निश्चयपरमानंदनिरासा ॥ इनकीतदपिनछूटतआसा ॥ कृष्णमहायोगीयोगेश्वर ॥ उनकेमोहनमायाअंतर ॥ कृष्णविलासजहांजहांकीनै ॥ भामिनिसंगप्रेमरसभीनै ॥ नदीनिकुंजपुंजवननिर्भर ॥ सुषदायकगिरवरवापीसर ॥ चितहितसहिततिनहिजौंचाहत ॥ दुषदभएतेईफिरिदाहत ॥ गोपिनिकेगुनउद्धवगावत ॥ चरनरेनुलैभाललगावत ॥ गोपीजवैकृष्णगुनगावहि ॥ प्रेममग्नतन्मयतापावहिं ॥ ज्ञानवंतव्रयकरिगरुवाई ॥ सदास्यामकेमित्रसषाई ॥ जद्यपिबडेबडेकेजाए ॥ अरुगुरुज्ञानप्रबोधनआए ॥ गोपीप्रेमनेमअनुरागे ॥ आपुनउठिउनकैपाइलागे ॥ उद्धववाक्यं ॥ धन्यदेहइनगोपिनिधारी ॥ मनवचक्रमकरिभजतमुरारी ॥ जोगीजतीतपीसन्यासी ॥ आतसदमनविरागउपासी॥तेइयहभावजुबंछततातैं ॥ जगअगबंधनछूटतजातैं ॥ व्रतसं

जमतपसानबडाई ॥ ग्यातिनकर्मनिगमहूगाई ॥ कृष्णकृपासबकाजसुधारै ॥ अघअर्ण वबूडतउद्धारै ॥ गोपवधूपसुपालकमनमत ॥ दुष्टभावविभचारहिदूषित ॥ जिनकछुकृष्ण प्रभावअजानै ॥ मनवचनकर्मसुपतिगतिमानै ॥ ज्यौंअनजानिअमृतमुषजावै ॥ प्रानी तदपिअमरपदपावै ॥ गोपीकृपाप्रसादजुगायौ ॥ प्रभुकौश्रियानसुरत्रियपायौ ॥ उनके भाग्यजुमहिमाजोई ॥ कहनसमर्थनाहिकविकोई ॥ वनगोपिनसंगरासबनाए ॥ प्रेमभाव मनवंछितपाए ॥ अबतौइहैमनोरथमेरौ ॥ वृंदावनमैंहोइबसेरौ ॥ त्रिणद्रुमलतागुलमऔष धतहँ ॥ ममउतपत्तिहोइयाभुवमहँ ॥ पदरजइनगोपिनकीपावन ॥ मैंरैतनपरसैमनभावन कविरुवाच ॥ गोपिनसौंतहांआज्ञामांगी ॥ अबहूंभयौभुवनवडभागी ॥ मनबचउद्धवआ ज्ञामांगन ॥ आएनंदजसोदाआंगन ॥ गदगदकंठसोकगहराई ॥ काहूपैकछुकह्यौनजाई ॥ ढरतनैनअविरलजलधारा ॥ कृष्णकृष्णहाकृष्णपुकारा ॥ ऊधोरोवतजाइचढेरथ ॥ पु निद्रिगमूंदिचलेमथुरापथ ॥ भूलेज्ञानविकलतनभारी ॥ जानहुभाज्यौहारिजूवारी ॥ इ हांजोगउपदेष्टाआए ॥ गोपिनिकेसिषहोइसिधाए ॥ प्रेमसमुद्रहिताहनपायौ ॥ इहांउ द्धवमोहनपैंआयौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदजसोदामुषवचन । स्यामहिकहेसंदेस ॥ को टिकलपलगिराजकरि । निधिभुवभजहुनरेस ॥ १ ॥ वृत्तिहमारेचित्तकी । एकहिभावअ सेस ॥ जगजहँतहँथिरचरजनम । प्रभुमैंहोहुप्रवेस ॥ २ ॥ नारिनिउपदेसननिगुन । उद्धवगएजुआप ॥ आएगुनउपदेसलै । ऐसोप्रेमप्रताप ॥ ३ ॥ विहतजुनंदादिकवचन । सुनिसुनिउद्धवसाध ॥ मथुराआएमुग्धव्है । करिमोहनआराध ॥ ४ ॥ कीनेंबंदनकृ ष्णकौं । उरउपजेआनंद ॥ नैनअघातनरूपरस । मोहनमदनमुकुंद ॥५॥ नेमप्रेमगो पांगना । शुभपितुमातुसंदेस ॥ नरहरप्रभुहितसौंसुनैं । सोभुवचक्रनरेस ॥ ६ ॥ ॥ इ तिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणवारहटनरहरदास विरचितउद्धव गोपीसंवादभ्रमरगीतवर्णनंनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ समसर्वगसर्वोतमा । सर्वसुव्यापकसिद्ध ॥ कुबजाकौंअं तहकरन । पायौप्रेमप्रसिद्ध ॥ १ ॥ कारनकारजसिद्धिकारि । हमएैहैंतवग्रेह ॥ वंछितकु बजाकौंबचन । आगेदीनौएह ॥ २ ॥ सैरंध्रीकैतिहिसमय । आएसहितउछाह ॥ प्रभु ऐसीइच्छाप्रबल । हेतवचननिर्वाह ॥ ३० ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ वहहरषिसनमुषआ इ ॥ परिक्रमनकरिपरिपाइ ॥ संगसषीजूथसुजान ॥ पुनआनिग्रेहप्रमान ॥ अन्नेकरचौं जअनूप ॥ सुषजथासमयसरूप ॥ निजगंधवसननवीन ॥ करकुसमसज्याकीन ॥ तहां बैठकृष्णकृपाल ॥ दुषहरनदीनदयाल ॥ शुभपानमिलिघनसार ॥ अरुविविधद्रव्यअपा र ॥ शुभतनकचंदनसेव ॥ दीयजथावंछितदेव ॥ कामनापूरनकीन ॥ पुनिकह्यौकृष्णप्रवी न ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुबजामनवंछितकछु ॥ बहुर्‍यौंमांगिवि चारि ॥ करिहेंपूरनकरिकृपा । मुषहसिकह्यौमुरारि ॥ ४ ॥ ॥ कुबजावाक्यं ॥ कुबजा जाच्यौजोरिकर । तुमप्रभुवेदविनीत ॥ वासुदेवकछुकालवस । पुरयहकरहुपुनीत ॥ ५ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ यहयौंहीव्हैहैंअवसि । ऐसोवचनउचारि ॥ कृष्णदेवकारनकरन ।

॥ रासससमयगोपीपतिरोकी ॥ सोपहिलैहीमिलीअसोकी ॥ हमतेदूरिजपैतुमव्है हो ॥ जथाभृंगकीटीमिलिजैहो ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ उद्धवयहचर्चाअसुहाती ॥ छनकानिवारहुजारतिछाती ॥ हमतोभोगपात्ररसभोगहि ॥ जोगीनाहिंजुसाधैंजोगहि ॥ अहितकंसजडमूलउषारे ॥ सबैआपनेकाजसंवारे ॥ स्यामरामकौकुसलसुनावहु ॥ बोधआपनौगांठिबंधावहु ॥ ॥ काचितगोपीवाक्यं ॥ ॥ ऊधोकृष्णकबहुंव्रजऐहैं ॥ षोजिषोजिमाषनदधिषैहैं ॥ हितवनधेनचरावहिमोहन । ग्रेहकरहिसंध्यागोदोहन ॥ कबहूकाहिहैंकुंवरकन्हैया ॥ मोहिबहुतमाषनदैमइया ॥ वनव्रजवधूनिकरनिसिनिर्मल ॥ करिहैंरासविलासकुतूहल ॥ पुनिइकगोपीबोलिप्रवीनी ॥ किहिंजानीजैसीउनकीनी ॥ पकरिमल्लचाणूरपछारे ॥ मातुलकंसषेलहीमारे ॥ पुनपर्जागतवैभवपायौ ॥ सबैमिल्यौजदुवंससहायौ ॥ कन्यानृपतिव्याहबहुकारिहैं ॥ सुषअनेकतिनसंगअनुसरिहैं ॥ मिलिवसुदेवदेवकीमाता ॥ भक्तिविलासकरतदोउभ्राता ॥ वासुदेवभएजदुकुलवंदन ॥ निषिलबंसहितकंसनिकंदन ॥ अबकिहिकाजघोषमहँआवहिं ॥ काहेनंदकुमारकहावहिं ॥ श्रीउनकैअरधंगासुंदरि ॥ नगरजोषितावहुतैंनागरि ॥ हमतौव्रजवनितावनवासी ॥ एकहिगोधनवृत्तिउपासी ॥ तिनकौंदुर्लभमिलिवौताकौ ॥ जथानाममधुसूदनजाकौ ॥ अवनैरास्यमहासुषमांनौ ॥ जथापिंगलागनिकाजानौ ॥ कामीवामीलह्योनकोई ॥ पुनिगनिकासुषनिद्रासोई ॥ गनिकादत्तात्रयकीनीगुरु ॥ वाहीसमयज्ञानउपज्योउरु ॥ इहांएकगोपीकहिऐसो ॥ जथाविलोकिकालगुनजैसो ॥ जदपिकृष्णमहाजोगेश्वर ॥ ज्ञानविधानगुरुनिहूंकेगुर ॥ तदपिरमानतजतसंगातिनकौ ॥ जानतजदपिमरमगुनाजिनकौ ॥ तौहमकवनमात्रहैंमधुकर ॥ आसाछविदरसनछायौउर ॥ निषिलनिकुंजविविधसारितावन ॥ प्रभुपदअंकितभूमिजुपावन ॥ जहाँजहाँदृष्टिपरतएज्यौंज्यौं ॥ तिनकौंविरहसंतावतत्यौंत्यौं ॥ उनकेरूपचरितअनुरागी ॥ भइतनमयगोपीवडभागी ॥ अतिविरहातुरवचनउचारति ॥ स्यामसरूपअनूपसंभारति ॥ हाव्रजनाथदीनकेबंधव ॥ अबलापरीविरहदुषअर्णव ॥ स्यामआपनौविदसंभारौ ॥ अबलादैदरसनउद्धारौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ एकआनव्रजमैंवसिऊधौ ॥ सबहिनकौंदेष्यौमनसूधौ ॥ प्रेमनेममनसामनपूरन ॥ कालविहावतगावतहरिगुन ॥ निश्चयपरमानंदनिरासा ॥ इनकीतदपिनछूटतआसा ॥ कृष्णमहायोगीयोगेश्वर ॥ उनकेमोहनमायाअंतर ॥ कृष्णविलासजहांजहांकीनै ॥ भामिनिसंगप्रेमरसभीनै ॥ नदीनिकुंजपुंजवनानिर्भर ॥ सुषदायकगिरवरवापीसर ॥ चितहितसहिततिनहिजौंचाहत ॥ दुषदभएतेईफिरिदाहत ॥ गोपिनिकेगुनउद्धवगावत ॥ चरनरेनुलैभाललगावत ॥ गोपीजबैकृष्णगुनगावहिं ॥ प्रेममग्नतन्मयतापावहिं ॥ ज्ञानवंतबयकरिगरुवाई ॥ सदास्यामकेमित्रसषाई ॥ जदपिबडेबडेकेजाए ॥ अरुगुरुज्ञानप्रबोधनआए ॥ गोपीप्रेमनेमअनुरागे ॥ आपुनउठिउनकैपाइलागे ॥ उद्धववाक्यं ॥ धन्यदेहइनगोपिनिधारी ॥ मनवचक्रमकरिभजतमुरारी ॥ जोगीजतीतपीसन्यासी ॥ आतसदमनविरागउपासी॥तेइयहभावजुबंछततातैं ॥ जगअगबंधनछूटतजातैं ॥ व्रतसं

कविरुवाच ॥ गोपिनसौंतहांआज्ञामांगी ॥ अबहूंभयौभुवनबडभागी ॥ मनबचउद्धवआ
ज्ञामांगन ॥ आएनंदजसोदाआंगन ॥ गदगदकंठसोकगहराई ॥ काहूपैकछुकह्योनजाई
॥ ढरतनैनअविरलजलधारा ॥ कृष्णकृष्णहाकृष्णपुकारा ॥ ऊधोरोवतजाइचढेरथ ॥ पु
निद्रिगमूंदिचलेमथुरापथ ॥ भूलेज्ञानविकलतनभारी ॥ जानहुभाज्यौहारिजुवारी ॥ इ
हांजोगउपदेष्टाआए ॥ गोपिनिकेसिषहोइसिधाए ॥ प्रेमसमुद्रहिताहनपायो ॥ इहांउ
द्धवमोहनपैंआयौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदजसोदामुषवचन । स्यामहिकहेसंदेस ॥ को
टिकलपलगिराजकरि । निधिभुवभजहुनरेस ॥ १ ॥ वृत्तिहमारेचित्तकी । एकहिभावअ
सेस ॥ जगजहँतहँथिरचरजनम । प्रभुमैहोहुप्रवेस ॥ २ ॥ नारिनिउपदेसननिगुन ।
उद्धवगएजुआप ॥ आएगुनउपदेसलै । ऐसोप्रेमप्रताप ॥ ३ ॥ विहृतजुनंदादिकवचन
। सुनिसुनिउद्धवसाध ॥ मथुराआएमुग्धव्है । करिमोहनआराध ॥ ४ ॥ कीनैबंदनकृ
ष्णकौं । उरउपजेआनंद ॥ नैनअघातनरूपरस । मोहनमदनमुकुंद ॥५॥ नेमप्रेमगो
पांगना । शुभपितुमातुसंदेस ॥ नरहरप्रभुहितसौंसुनैं । सोभुवचक्रनरेस ॥ ६ ॥ ॥ इ
तिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणवारहटनरहरदास विरचितेउद्धव
गोपीसंवादभ्रमरगीतवर्णनंनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ समसर्वगसर्वातमा । सर्वसुव्यापकासिद्ध ॥ कुबजाकौंअं
तहकरन । पायोप्रेमप्रसिद्ध ॥ १ ॥ कारनकारजसिद्धिकारि । हमऐहैंतवग्रेह ॥ वंछितकु
बजाकौंबचन । आगेदीनौएह ॥ २ ॥ सैरंध्रीकैतिहिसमय । आएसहितउछाह ॥ प्रभु
ऐसीइच्छाप्रबल । हेतवचननिर्वाह ॥ ३० ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ वहहरषिसनमुषआ
इ ॥ परिक्रमनकरिपरिपाइ ॥ संगसषीजूथसुजान ॥ पुनआनिग्रेहप्रमान ॥ अन्नेकरचौं
जअनूप ॥ सुषजथासमयसरूप ॥ निजगंधवसननवीन ॥ करकुसमसज्याकीन ॥ तहां
बैठकृष्णकृपाल ॥ दुषहरनदीनदयाल ॥ शुभपानमिलिघनसार ॥ अरुविविधद्रव्यअपा
र ॥ शुभतनकचंदनसेव ॥ दीयजथावंछितदेव ॥ कामनापूरनकीन ॥ पुनिकह्यौकृष्णप्रवी
न ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुबजामनवंछितकछु ॥ बहुरयौंमांगिवि
चारि ॥ करिहैपूरनकरिकृपा । मुषहसिकह्योमुरारि ॥ ४ ॥ ॥ कुबजावाक्यं ॥ कुबजा
जाच्यौजोरिकर । तुमप्रभुवेदविनीत ॥ वासुदेवकछुकालवस । पुरयहकरहुपुनीत ॥ ५ ॥
॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ यहयोहीव्हैहैअवसि । ऐसोवचनउचारि ॥ कृष्णदेवकारनकरन ।

॥ राससमयगोपीपतिरोकी ॥ सोपहिलैहीमिलीअसोकी ॥ हमतैदूरिजपैतुमव्हैहो ॥ जथाभृंगकीटीमिलिजैहो ॥ ॥ **गोपीवाक्यं** ॥ ॥ उद्धवयहचर्चाअसुहाती ॥ छनकानिवारहुजारतिछाती ॥ हमतोभोगपात्ररसभोगहि ॥ जोगीनाहिजुसाधैजोगहि ॥ अहितकंसजडमूलउषारे ॥ सबैआपनैकाजसंवारे ॥ स्यामरामकौकुसलसुनावहु ॥ बोधआपनौगांठिबंधावहु ॥ ॥ **काचित्गोपीवाक्यं** ॥ ॥ ऊधोकृष्णकबहुंव्रजऐहैं ॥ षोजिषोजिमाषनदधिषैहैं ॥ हितवनधेनचरावहिमोहन । ग्रेहकरहिसंध्यागोदोहन ॥ कबहूकाहिहैकुंवरकन्हैया ॥ मोहिबहुतमाषनदैमइया ॥ वनव्रजवधूनिकरनिसिनिर्मल ॥ करिहैरासविलासकुतूहल ॥ पुनिइकगोपीबोलिप्रवीनी ॥ किहिंजानीजैसीउनकीनी ॥ पकरिमल्लचाणूरपछारे ॥ मातुलकंसषेलहीमारे ॥ पुनपर्जागतवैभवपायो ॥ सवैमिल्यौजदुवंससहायो ॥ कन्यानृपतिव्याहबहुकारिहैं ॥ सुषअनेकतिनसंगअनुसरिहैं ॥ मिलिवसुदेवदेवकीमाता ॥ भक्तिविलासकरतदोउभ्राता ॥ वासुदेवभएजदुकुलवंदन ॥ निषिलबंसहितकंसनिकंदन ॥ अबकिहिकाजघोषमहँआवहिं ॥ काहेनंदकुमारकहावहिं ॥ श्रीउनकेअरधंगासुंदरि ॥ नगरजोषितावहुतैनागारि ॥ हमतौव्रजवनितावनवासी ॥ एकहिगोधनवृत्तिउपासी ॥ तिनकौंदुर्लभमिलिवौताको ॥ जथानाममधुसूदनजाको ॥ अवनैरास्यमहासुषमांनो ॥ जथापिंगलागनिकाजानो ॥ कामीवामीलह्योनकोई ॥ पुनिगनिकासुषनिद्रासोई ॥ गनिकादत्तात्रयकीनीगुरु ॥ वाहीसमयज्ञानउपज्योउरु ॥ इहांएकगोपीकहिऐसो ॥ जथाविलोकिकालगुनजैसो ॥ जद्दपिकृष्णमहाजोगेश्वर ॥ ज्ञानविधानगुरुनिहूंकेगुर ॥ तदपिरमानतजतसंगतिनको ॥ जानतजदपिमरमगुनजिनको ॥ तौहमकवनमात्रहैंमधुकर ॥ आसाछविदरसनछायौउर ॥ निषिलनिकुंजविविधसरितावन ॥ प्रभुपदअंकितभूमिजुपावन ॥ जहाँजहाँदृष्टिपरतएज्योज्यों ॥ तिनकौंविरहसंतावतत्यौंत्यों ॥ उनकेरूपचरितअनुरागी ॥ भइतनमयगोपीबडभागी ॥ अतिविरहातुरवचनउचारति ॥ स्यामसरूपअनूपसंभारति ॥ हाव्रजनाथदीनकेबंधव ॥ अबलापरीविरहदुषअर्णव ॥ स्यामआपनौविदसंभारो ॥ अबलादैदरसनउद्धारो ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ एकआनव्रजमैंवसिऊधो ॥ सबहिनकौदेष्यौमनसूधो ॥ प्रेमनेममनसामनपूरन ॥ कालविहावतगावतहरिगुन ॥ निश्चयपरमानंदनिरासा ॥ इनकीतदपिनछूटतआसा ॥ कृष्णमहायोगीयोगेश्वर ॥ उनकेमोहनमायाअंतर ॥ कृष्णविलासजहांजहांकीनै ॥ भामिनिसंगप्रेमरसभीनै ॥ नदीनिकुंजपुंजवननिर्भर ॥ सुषदायकगिरवरवापीसर ॥ चितहितसहिततिनहिजौंचाहत ॥ दुषदभएतेईफिरिदाहत ॥ गोपिनिकेगुनउद्धवगावत ॥ चरनरेनुलैभाललगावत ॥ गोपीजवैकृष्णगुनगावहिं ॥ प्रेममग्नतन्मयतापावहिं ॥ ज्ञानवंतबयकरिगरुवाई ॥ सदास्यामकेमित्रसषाई ॥ जद्दपिबडेबडेकेजाए ॥ अरुगुरुज्ञानप्रबोधनआए ॥ गोपीप्रेमनेमअनुरागे ॥ आपुनउठिउनकैपाइलागे ॥ **उद्धववाक्यं** ॥ धन्यदेहइनगोपिनिधारी ॥ मनवचक्रमकरिभजतमुरारी ॥ जोगीजतीतपीसन्यासी ॥ आतसदमनाविरागउपासी॥तेइयहभावजुबंछतताते ॥ जगअगबंधनछूटतजातैं ॥ व्रतसं

जमतपसानबडाई ॥ ग्यातिनकर्मनिगमहूगाई ॥ कृष्णकृपासबकाजसुधारै ॥ अघअर्ण वबूडतउद्धारै ॥ गोपवधूपसुपालकमनमत ॥ दुष्टभावविभचारहिदूषित ॥ जिनकछुकृष्ण प्रभावअजानै ॥ मनवचनकर्मसुपतिगतिमानै ॥ ज्यौंअनजानिअमृतमुषजावे ॥ प्रानी तदपिअमरपदपावै ॥ गोपीकृपाप्रसादजुगायौ ॥ प्रभुकौश्रियानसुरत्रियपायौ ॥ उनके भाग्यजुमहिमाजोई ॥ कहनसमर्थनाहिकविकोई ॥ वनगोपिनसंगरासबनाए ॥ प्रेमभाव मनवंछितपाए ॥ अबतौइहैमनोरथमेरो ॥ वृंदावनमेंहोइबसेरो ॥ त्रिणद्रुमलतागुलमऔष धतहँ ॥ ममउतपत्तिहोइयाभुवमहँ ॥ पदरजइनगोपिनकीपावन ॥ मेरेतनपरसैमनभावन कविरुवाच ॥ गोपिनसौंतहांआज्ञामांगी ॥ अबहूंभयौभुवनबडभागी ॥ मनबचउद्धवआ ज्ञामांगन ॥ आएनंदजसोदाआंगन ॥ गदगदकंठसोकगहराई ॥ काहूपैकछुकह्योनजाई ॥ ढरतनैनअविरलजलधारा ॥ कृष्णकृष्णहाकृष्णपुकारा ॥ ऊधोरोवतजाइचढेरथ ॥ पु निद्रिगमूंदिचलेमथुरापथ ॥ भूलेज्ञानविकलतनभारी ॥ जानहुभाग्यौंहारिजुवारी ॥ इ हांजोगउपदेष्टाआए ॥ गोपिनिकेसिषहोइसिधाए ॥ प्रेमसमुद्रहिताहनपायौ ॥ इहांउ द्धवमोहनपैंआयौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदजसोदामुषवचन । स्यामहिकहेसंदेस ॥ को टिकलपलगिराजकरि । निधिभुवभजहुनरेस ॥ १ ॥ वृत्तिहमारेचित्तकी । एकहिभावअ सेस ॥ जगजहँतहँथिरचरजनम । प्रभुमैंहोहुप्रवेस ॥ २ ॥ नारिनिउपदेसननिगुन । उद्धवगएजुआप ॥ आएगुनउपदेसलै । ऐसोप्रेमप्रताप ॥ ३ ॥ विहतजुनंदादिकवचन । सुनिसुनिउद्धवसाध ॥ मथुराआएमुग्धव्है । करिमोहनआराध ॥ ४ ॥ कीनेवंदनकृ ष्णकौं । उरउपजेआनंद ॥ नैनअघातनरूपरस । मोहनमदनमुकुंद ॥५॥ नेमप्रेमगो पांगना । शुभपितुमातुसंदेस ॥ नरहरप्रभुहितसौंसुनैं । सोभुवचक्रनरेस ॥ ६ ॥ ॥ इ तिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणवारहटनरहरदास विरचितेउद्धव गोपीसंवादभ्रमरगीतवर्णनंनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ समसर्वगसर्वातमा । सर्वसुव्यापकासिद्ध ॥ कुबजाकौंअं तहकरन । पायौप्रेमप्रसिद्ध ॥ १ ॥ कारनकारजसिद्धिकारि । हमऐहैंतवग्रेह ॥ वंछितकु बजाकौंबचन । आगेदीनौएह ॥ २ ॥ सैरंध्रीकेतिहिसमय । आएसहितउछाह ॥ प्रभु ऐसीइच्छाप्रबल । हेतवचननिर्वाह ॥ ३० ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ वहहरषिसनमुषआ इ ॥ परिक्रमनकरिपरिपाइ ॥ संगसषीजूथसुजान ॥ पुनआनिग्रेहप्रमान ॥ अन्नेकरचौं जअनूप ॥ सुषजथासमयसरूप ॥ निजगंधवसननवीन ॥ करकुसमसज्याकीन ॥ तहां बैठकृष्णकृपाल ॥ दुषहरनदीनदयाल ॥ शुभपानमिलिघनसार ॥ अरुविविधद्रव्यअपा र ॥ शुभतनकचंदनसेव ॥ दीयजथावंछितदेव ॥ कामनापूरनकीन ॥ पुनिकह्योकृष्णप्रवी न ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुबजामनवंछितकछु ॥ बहुत्यौंमांगिवि चारि ॥ करिहैपूरनकरिकृपा । मुषहसिकह्योमुरारि ॥ ४ ॥ ॥ कुबजावाक्यं ॥ कुबजा जाच्यौजोरिकर । तुमप्रभुवेदविनीत ॥ वासुदेवकछुकालवस । पुरयहकरहुपुनीत ॥ ५ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ यहयौंहीव्हैहैअवसि । ऐसोवचनउचारि ॥ कृष्णदेवकारनकरन ।

प्रभुनिजग्रेहपधारि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहिदिवसप्रातवेलाअ
नंत ॥ सतकरनवचनसुखदैनसंत ॥ संगसंकर्षनउद्धवसनेह ॥ गोविंदआयअक्रूरगेह ॥
अक्रूरइहांसनमुषहिआनि ॥ पदवंदनकरिपूजाप्रमानि ॥ प्रभुइहांमध्यमंदिरपधारि ॥
धोएसुचरनजलसीसधारि ॥ वैठारिउचितआसनविनीत ॥ पुनिकरतभएचर्चापुनीत ॥
अक्रूरउवाच ॥ देवाधिदेवदीननिदयाल ॥ षितिभारउतारनषलषयाल ॥ मिलिसमरषे
तषलकंसमारि ॥ तुमजादवकुलकोकष्टटारि ॥ व्यवहारलोककीनौविशेष ॥ अबसुनियै
परमारथअसेष ॥ सतपुरुषप्राणव्यापकप्रसिद्ध ॥ सर्वातमस्वामीस्वयंसिद्ध ॥ अपनी
सक्तितैंअनतरूप ॥ थिरचरजुब्रह्मशिवजोअनूप ॥ त्रिगुणमयरचिततुमलोकतीन ॥
चवषानिचराचरचित्तचीन ॥ होतुमनदेवगुनबंधहाथ ॥ निर्लेपनिगुननिर्मोहनाथ ॥ पा
षंडपंथवेदहुपुरान ॥ हैउपजतजबबाधाअमान ॥ संसारहेततुमसगुनसिद्ध ॥ प्रभुधरत
देहपावनप्रसिद्ध ॥ हितभएआनिवसुदेवग्रेह ॥ अवतारभारभुवहरनएह ॥ मुहिकखौ
कृतारथवेदमीत ॥ पाउधारेममंदिरपुनीत ॥ तवसुहृदसेवमनक्रमसमेत ॥ तिनकौतु
मवंछितसर्वदेत ॥ ममकरतबाधमायाअमान ॥ करियेनिवर्तकरुनानिधान ॥ ॥ श्री
कृष्णउवाच ॥ ॥ प्रभुबोलेतुमपित्रीयप्रसिद्ध ॥ वंदनीयविहितअरुवंसवृद्ध ॥ हमहैं
तवबालकपरमहेत ॥ सोकरियैरष्याधरसमेत ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ वैराग्यप्रभुनतु
मकहँविशेष ॥ औदासभावतजियैअशेष ॥ मर्यादवंसरक्षकमहंत ॥ सुरतीर्थसेतुक्षम
साधसंत ॥ सुरतीरथफलआराधसेव ॥ तुमदरसमात्रफलदातदेव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
तातैंअबअक्रूरतुम । पुरमातंगपधारि ॥ हितूहमारेहैंतहां । लावहुसोधसंभारि ॥७॥ पंच
त्वपायोपंडुनृप । दैवाधीनदुरास ॥ ताकेत्रियसुतशोकजुत । नियतभएनैरास ॥ ८ ॥
सुषविलसतधृतराष्ट्रसब । पृथ्वीविभवप्रभाव ॥ पांडवअरुनिजपुत्रप्रति । नहिंसमदृष्टि
सुभाव ॥ ९ ॥ तिहिंकारनअक्रूरतुम । चलियेतहांतुरंत ॥ उनकोसुषदुषदेषिसब । व
र्णहुआनिवृतंत ॥ १० ॥ पाछैंसमझिविचारियै । करिहैंतिनकोकाज ॥ आनिभएएकत्र
उहां । सबैअसाधसमाज ॥ ११ ॥ आहिजुराजाअंधरो । पुत्रमदांधसपाप ॥ तावसव
र्ततहैंतहां । इंद्रियविकलतआप ॥ १२ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करीबिदाअक्रूरको । ग
जपुरकहँगोविंद ॥ संकर्षनऊधौसहित । आएग्रहआनंद ॥ १३ ॥ इतिश्रीअवतारच
रित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेअक्रूरहस्तिनापुरप्रेषनं
नामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ दोहा ॥ वारनपुरअक्रूरइह । आएसहितअनंद ॥ कारनआज्ञाकृष्णकी ।
गावतगुनगोविंद ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ अक्रूरइहांगजपुरहिआइ ॥ सबमिलेआनि
कौरवसुभाइ ॥ धृतराष्ट्रभीषमविदुरवृद्ध ॥ पुनिमिलेकर्णकुंतीप्रसिद्ध ॥ अरुबाल्हीकराजा
अभंग ॥ सुतसोमदत्तसौंमिल्यौसंग ॥ दुर्योधनगोतमभरद्वाज ॥ द्विजद्रोणसहितमिलिहि
तसमाज ॥ सुतपंडुमिलेपांचौसधीर ॥ वयअल्पतथासंग्रामवीर ॥ इत्यादिविप्रछत्रीयअने
क ॥ मिलिबालवृद्धविद्याविवेक ॥ सुभसभाआनिबैठेसुजान ॥ परसपरकुशलपूछीप्रमान ॥

सबचरितजथाअविलोकिसूर ॥ कछुमासरहेगजपुरअक्रूर ॥ पांडववलपोरुषवुद्धिप्रमान ॥ मतकौरवदेषेअसहमान ॥ प्रजहेतविनयप्रतिपालप्रीति ॥ निर्लोभनिरंतरधर्मनीति ॥ सो देषिलोकपांडवसनेह ॥ दुर्योधनदासतदष्टिदेह ॥ दुर्योधनदुष्टाचरनदेषि ॥ अक्रूरउपजि विस्मयविसेषि ॥ भाषताहिआदिकौरवकुभाव ॥ दिनदिनप्रतिसूचतदुष्टदाव ॥ इकदिवस विदुरएकांतआइ ॥ सभकारनअक्रूरहिसुनाइ ॥ ॥ कुंतीवाक्यं ॥ ॥ अपनीदसादु सहदुरंत ॥ इहांकुंतावरनीआदिअंत ॥ सुतबालकमेरेविनुसहाइ ॥ अरुवाससत्रुसों बन्योंआइ ॥ निस्वासउर्द्धजलधरतनैन ॥ बाढिहृदयकंपआवैनबैन ॥ मिलिम्रिगीज थावृकजूथमांझ ॥ सुषस्वासनपावतभोरसांझ ॥ हूंफूफीहौंपतिविनाहीन ॥ दुर्जोध नपरिभवसहितदीन ॥ अषिलेसकृष्णमायाअजेव ॥ हैंदीनबंधुदेवाधिदेव ॥ इनकी सुधिलैहैंकबहुआइ ॥ हैंसदास्यामवेईसहाइ ॥ जोगेसजगतभावनजयंत ॥ अषिलेसवि श्वपालकअनंत ॥ उनहीकोहमकौंशरनआहि ॥ कहिकृष्णविनाअबकहौंकाहि ॥ ॥ क विरुवाच ॥ ॥ अतिदुषितदेषिकुंताअधीन ॥ द्रढबोधकर्योविश्वासदीन ॥ अक्रूरवि दुरअतिसोचआप ॥ जलधारनयनमुषकृष्णजाप ॥ पांडवनिपिताकहिकहिप्रभाव ॥ भयोसबहिनकौंसात्विकस्वभाव ॥ धृतराष्ट्रपासअक्रूरधीर ॥ विचपरिषदबैठौआनिवीर ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ पुनिकहतभयोसुनियैनृपाल ॥ इहकठिणविचारहुकर्मका ल ॥ पंचत्वजबैनृपपंडुपाइ ॥ इहअवनिराजश्रीतुमहिआइ ॥ तातैनरेसतुमसहित नेम ॥ प्रभूपांडुवालपालहुसप्रेम ॥ समदष्टिविलोकहुसबनिसूर ॥ पुनिव्रढैवंसधनध र्मपूर ॥ निस्सेषअन्यथाधर्मनास ॥ विष्यातनरकइकवीसवास ॥ सवभ्रातपुत्रवर्तहु समान ॥ प्रतिपालकरहुरक्षाप्रमान ॥ अपनैपरजानिकदापिआप ॥ सहवाससदाति नसौंसताप ॥ यहजथादेहआपनोजानि ॥ पुनिताहूक्यौंविछुरनप्रमानि ॥ काकौकुटुं बसुतबंधुकौन ॥ एकाकीजामनमरनजौंन ॥ कर्माअकर्मभागीनकोइ ॥ सुषदुष्षअके लौभजैसोइ ॥ प्रभुपुत्रसुतोवित्तापहार ॥ पुनिकर्दमसौंकारियतप्रकार ॥ जलजंतुतथा जलसंगजानि ॥ प्रतिछनछनसोषतजलप्रमानि ॥ अधर्मेकरपोषतपुत्रआप ॥ सोइ तजैअंतउपजैसंताप ॥ चिरजीवीआपुनउनहिचाहि ॥ इकहाथअधर्मैरहैआहि ॥ प रजाकुटुंबपोषनप्रयोग ॥ सुपनैकीसंपतिसोसंजोग ॥ संसारपुरुषसोईसग्यान ॥ समभा वसबनिवर्तैसमान ॥ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ ॥ धृतराष्ट्रतहांबोल्यौसधीर ॥ वृत्तांतसु नहुअक्रूरवीर ॥ कल्याणवतीवाणीअक्रूर ॥ सुनित्रिपतिश्रवनमानैनसूर ॥ पैमरनसील ज्यौंसुधापाइ ॥ इहिभांतिनमनमेरौअघाइ ॥ समतानानियतममबलसुभाव ॥ भावीसौं वर्ततविषमभाव ॥ थिरचित्तनमनचंचलसुभाइ ॥ ज्यौंतडिततरकिघनमांझजाई ॥ सोकृ ष्णकरनकारनसमत्थ ॥ हैंदेवीमायाउनहिहत्थ ॥ प्रभुकीजोइच्छासोइप्रमान ॥ अविलो पननाहिसमर्थआन ॥ मायाप्रपंचउनकौंसमूल ॥ सुनजानिसुरासुरसहतसूल ॥ नारा यणउनकौनमस्कार ॥ जोवासुदेवव्रजभूविहार ॥ अबजानिनृपतिमनअभिप्राय ॥ अक्रूरफेरमधुपुरीआय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांधृतराष्ट्रआदिदै । कौरव

कुलकौकर्म ॥ समुझिजथाअक्रूरसब । मोहनसौंकहिमर्म ॥ २ ॥ ॥ इतिश्रीअवतार चरित्रेश्रीकृ०दश०वारहटनरहरिदासेनविरचितेएकोनपंचाशत्तमोअध्यायः ॥ ४९ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुत्रीमागधराजकी । अस्तिप्राप्तियहनाम ॥ सोपटरा नीकंसकी । विधिकृतविधवावाम ॥ १ ॥ क्रोधाधिकशोकाकुलित । जरासंधपहँजाइ ॥ कारनजोवधकंसको । सबैकह्योसमझाइ ॥ २ ॥ ॥ जरासंधउवाच ॥ ॥ पुत्रीदुषसु निकैपिता । सजिचतुरंगसधीर ॥ अवनीकरौंअजादवी । वचनप्रतिज्ञावीर ॥ ३ ॥ ॥ अक्षोहनीसंख्या ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ इक्कोद्विरदरथइक्कत्रयजुहयपंचपदातय ॥ प्रथमपत्तियहनामत्रिगुनकरिसेनासुषतय ॥ तासत्रिगुनगनिगुल्मात्रिगुणतिहिगणजु गनिज्जइ ॥ नियतत्रिगुनवाहिनीक्रमसुतिहिंप्रतनाकिज्जइ ॥ मानीसुत्रिगुणप्रतना चमू, अरुतिहित्रिगुनअनीकिनी ॥ सोदशगुनकरिनरहरसुकंकि, यहसंख्याअक्षोहनी ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ अक्षोहनितेईस ॥ सजिचल्यौमागधईस ॥ हयहीसगयमदगा जि ॥ वाजित्रवीरसुवाजि ॥ षेचढीषुरतषेह ॥ दिनभयौनिशिसंदेह ॥ चतुरंगसेन सचाल ॥ करिगमनमगकछुकाल ॥ अतिक्रोधमथुराआइ ॥ सबनगरघेरिसुभाइ ॥ तबरामस्यामसुतंत्र ॥ मिलिकरतविजयीमंत्र ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ रनषेतमाग धमारि ॥ यहसकलसेनउबारि ॥ कैमारिनचतुरंग ॥ इकबचैमागधअंग ॥ हतिज रासंधहिहाथ ॥ अरुमारिसेनअनाथ ॥ पनजुद्धतीनप्रकार ॥ इहांकरेवीरविचार ॥ मि लिहैजुलोहसुमारि ॥ रनदेहुअवरविडारि ॥ मगधेससेनमिलाई ॥ यहबहुरिलरिहैआइ ॥ यौंभूमिभारअमान ॥ निःसेसहोहिनिदान ॥ बहुदुष्टउपजैबाध ॥ यहभागिजाइअसा ध ॥ अबउचितयहैउपाइ ॥ निःसेषसेननसाइ ॥ इंहिहेतमैअवतार ॥ भूवलयोटारनभार ॥ पुनिइहैमंत्रप्रवीन ॥ कृतनियतउद्यमकी ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिसमयमगआकास ॥ प्रभुविजयहेतप्रकास ॥ सन्नाहआयुधसंग ॥ रथउभयआइअभंग ॥ इहांदैवइच्छाएह ॥ सो इसूतआइसंदेह ॥ साजिकवचआयुधसिद्ध ॥ प्रभुरामकृष्णप्रसिद्ध ॥ आरोहरथतिनआइ ॥ इहांविजयसंषबजाइ ॥ तबपरीअरिदलत्रास ॥ विपरीतविनविश्वास ॥ जरासंधउवाच ॥ म गधेसबोलिगुमान ॥ नहींबालजुद्धसमान ॥ तिहिंकृष्णछांडततोहि ॥ मनहोतलज्जामोहि ॥ म नरामजौउनमाद ॥ संग्रामलेहुसवाद ॥ ममसरनिविद्धसरीर ॥ वैकुंठजैहोवीर ॥ बलरामउवा च ॥ बलभद्रकहितबबोल ॥ तुममुषहिकहिनिजतोल ॥ जोसमरवीरसमर्थ ॥ कछुवकतनाहिअ कत्थ ॥ कहिवौसुमिथ्यामानि ॥ पुनिकीयोसाचप्रमानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांरामकृ ष्णसुआइ ॥ लीयशत्रुघेरिसुभाइ ॥ ज्यौंजलददिनकरजानि ॥ परिवेषमध्यप्रमानि ॥ कृतध नुषचक्राकार ॥ प्रभुमोषिवानअपार ॥ इहासुभटहयगजसीस ॥ महिपरेलूठतमहीस ॥ चलिसरितश्रोनीसंग ॥ तहांउठतरौद्रतरंग ॥ सोइसूरभटसुषकारि ॥ हियफटतनिलजनि हारि ॥ मगधेसकौदलमारि ॥ अवसेषदएविडारि ॥ रनजरासंधरिसाइ ॥ इहांकृष्ण

दंती १ रथी १ अश्वपती ३ पदाती ५ जुमलै १० कीपत्ती १ त्रिगुणित त्रिगुणित सेनामुष ३० गुल्म ९० गण २७० वाहिनी ८१० प्रतना २४३० चमू ७२९० अनीकिनी २१८७० सोदशगुणित अक्षोहिणी २१८७०० संख्या तन्मध्ये रथ २१८७० दंती २१८७० अश्वपती ६५६१० पदाती १०९३५०

सनमुषआइ ॥ दुहुंओरदाववदाउ ॥ घनघोषवज्जीयघाउ ॥ सरनिकरमारिसंग्राम॥
रथतोरितहांजदुराम॥ भौविरथमागधवीर ॥ सोईदेषिरासधीर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
जरासंधबलभद्रजब। बांधनलगेविचारि॥हसिकैनैनहिसैनतहां। नरहरप्रभूनिवारि॥४॥
॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ कृष्णछुडायोदीनकरि । मुषयौंकहिघनस्याम ॥ हैयासोंकर
नीहमहि । रनक्रीडाबलराम ॥ ५ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पश्यौंषिसानोमगधपति ।
सेनागर्वनसाइ ॥ चल्यौतपस्याकौतबै । इहांभालमिलिआइ ॥ ६ ॥ करिकरिनीतिप्रबो
धकछु। धरिकरआन्योधाम ॥ मिलिसंकल्पविकल्पमन। सोनलहतविश्राम ॥७॥कृष्णदे
वरनविजयकरि।ग्रहआएगोविंद॥करीसुरनिवर्षाकुसुम ।इंद्रभयौआनंद ॥८॥ ॥छंद
द्विअक्षरी ॥ ॥ याहीक्रममागधफिरिआयौ ॥ साजिसाजिचतुरंगसवायौ ॥ लैलैदलम
थुरापुनिलाग्यौ ॥ भयजुतवारसप्तदशभाग्यौ ॥ अष्टादशमजुद्धकौउद्यम ॥ करतभयौ
बहुरयौअमरषक्रम ॥ ॥ अथकालजवनप्रसंग ॥ ॥ इहिंविचकालजवनइकआसुर॥
पूछ्योनारदसौंअहमितिपर ॥ ॥ नारदकालजवनसंवाद ॥ ॥ तातेंमुनिवूझतहों
तोसौं ॥ मुहचढिकरैंदुंदजुधमोसौं ॥ वीरबतावहुकोउमहाबल॥ भुजाषुजातफिरतषोज
तषल ॥ मनअभिलाषजुपूजैमेरौ ॥ तातैंमुनिगुनमानौतेरौ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
निगमहेतबोलेइहांनारद ॥ वार्तानिवैरविरोधविसारद ॥ जदुवसुदेवदेवकीजायौ ॥ वासु
देवनामयहबतायौ ॥ कहीयतकृष्णवरनतनकारौ ॥ पीतवसनघनकचघुघरारौ ॥ ताकौ
अग्रजभ्रातगौरतन ॥ सबलच्छनसजुतसंकर्षन॥ अबहैपुरमथुरासोआए॥ धुरव्रजवसे
दूधकेधाए ॥ अतिबलदैतसुजूझउधारे ॥ महामल्लमुष्टिकसोमारे ॥ हैमथुरामैंनीके
हेरे ॥ तहांमनोरथफलिहैतेरे ॥ तुमसौजुद्धजोग्यवहजानौं ॥ अवरनकोऊमनहँआनौं ॥
॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रतिभटसुन्यौमहासुषपायौ ॥ उछवजुद्धअमितदलआयौ ॥ मि
लेमलेछकोटित्रयमुंडा ॥ प्रतिमापौरुषदेहप्रचंडा ॥ घनदलभयौमधुपुरीघेरा ॥ दसदि
सकरेदुष्टदलडेरा ॥ अतिबलकालजवनजबआयौ ॥ पुरवासिनितबअतिभयपायौ ॥
॥ लोकवाक्यं ॥ ॥ इहिंविचजरासंधजोंएहै ॥ पुनिजादवदुहुघांदुषपैहै ॥ ॥ श्रीकृ
ष्णउवाच ॥ ॥ कालजवनआयौअतिरिसक्रम ॥ अबहैजरासंधकोआगम ॥ कृष्णवि
चारतवैमिलिकीनौ ॥ नियतबन्यौयहकष्टनवीनौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ रामकृष्णमि
लिमंत्रविचार्यौ ॥ निर्भयठौरनिवासनिहार्यौ विसकर्माकोभ्रातविचक्षन ॥ सिलपीतुष्टा
नामसुलच्छन ॥ कृष्णजुताकहँआज्ञाकीनी ॥ निर्भयनगरीरचहुनवीनी ॥ विहितदुगम
सौठोरविचारहु ॥ सुंदरमंदिरकोटसँवारहु ॥ ओषामंडलतुष्टाआयौ ॥ पुन्यप्रभासषेत्रत
हांपायौ ॥ पुरीविचित्रद्वारकापावन ॥ सागरमाँझरचीसुहावन ॥ कृतपरिवेषसुकोटसकारन
॥ जिहिपरिकर्माद्वादशजोजन ॥ महाविचित्रसुषदशुभमंदिर ॥ कनकरतनमयसंजुतपारि
कर ॥दुर्गमकोटचारिदिसिद्वारा ॥ बज्रकपाटसूलविस्तारा ॥ कपिसीरषप्रतिजंत्रभयानक ॥
उपलअनलमयचलतअचानक ॥ वनउपवनअतिसुषदबनाए ॥ सलिलजंत्रतहांचलतसु
हाए ॥ मंदिरध्वजापताकामंडित ॥ तारहेममयकलसअषंडित ॥ जदुकुलजथादेवदेवालय

॥मंडितग्रहग्रहप्रतिमामणिमय॥ वर्णचारिव्यापारविहितबर॥ कारननिपुणअसेषकर्मकर ॥ अंतहपुरमंदिरसोभाअति॥ रुचिरजथापरिकरवंछितरति ॥ सभासुधर्मानामसुहाई प्रभुसुषकारनइंद्रपठाई ॥ सभामनुजतिहिंबैठेसोई ॥ हानिमृत्युताकहँनहिंहोई ॥ पारिजातकेवृक्षसपावन ॥ भोगजथावंछितमनभावन ॥ अद्भुतशामकर्णहयआए ॥ प्रभूभक्तिहितवरुणपठाए ॥ दिव्यकुवेरअष्टनिधिदीनी ॥ क्रमजुतभक्तिकृष्णकीकीनी ॥ ॥
॥ निधिनामसंख्या ॥ ॥ प्रथमपद्मअरुमहापद्मपुनि ॥ कूर्मरुउदुँकमच्छँनीलसुँनि ॥ शँखमुँकंदनामनिधिमानी ॥ पुनिएअष्टौऋषिनिप्रमानी ॥ जिहिदिगपालपदारथजोई ॥ आनिसमर्पैहितजुतसोई ॥ इहांप्रभुदेवीशक्तिदिषाई ॥ वीचनिमिषरचनासुबनाई ॥ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ देवसुजादवआदिदे। लैमथुराकेलोग ॥ तिहिंछनमहँद्वारावती । पठएजोगप्रयोग ॥ ९ ॥ तिनरष्यावलभद्रतहां। स्यामपठाएसंग ॥ कछुऐसीइच्छाजुकृष्ण। अद्भुतशक्तिअभंग ॥ १० ॥ कालजवनजान्यौनकछु। लष्यौनसोपुरलोक ॥ भयटार्यौनरहरप्रभू। कीनैसबैअसोक ॥ ११ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचितेद्वारकापुरीरचनंनामपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥
॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ कीनीयहमायाजुकृष्ण। कालजवनवधकाज ॥ आपरह्योपुरघेरिइहां। महामलेछसमाज॥ १॥ रचनाछनअंतररची। कह्योदुसहसौंदाउ॥ यहैऐसीइच्छा अतुल।पूरणदैवप्रभाउ॥ २॥ निसचरकेदलसौंनिकट।पुरतैंनिकसेप्रात॥कालजवनदेषेजुकृष्ण।जथापरांमुषजात॥३॥मुनिजुबतायौहोमरम।सुंदरस्यामसरूप॥वेईगुनलछनअसम।प्रगटवसनतनभूप॥ ४॥ कालजवननिर्धारकारि।पाएकृष्णप्रमान॥ विरथअसस्त्रविलोकिकैं। उपज्योहर्षअमान॥५॥ इहांअसुररथतैंउतारि।अरुअसस्त्रव्हैआप ॥ पाछैहीधायोप्रबल। पूरनगर्वप्रताप ॥ ६ ॥ ॥ कालजवनउवाच ॥ ॥ आपअसस्त्रअसस्त्रआरि। विरथहिविरथविधान ॥ अबतोपौरुषधर्मयह ॥ हैप्रतिजुद्धप्रमान ॥ ॥ अथकालजवनपूर्वोत्पत्तिप्रसंग ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ किहुंकालआसुरकोइ ॥ जबनेंद्रनामसजोइ ॥ कहुंजादवनिकेजाइ ॥ परन्यौसुकारनपाइ ॥ इहिकरेजदपिउपाइ ॥ पुनिकछुनसंततिपाइ ॥ गौससुरकेजबग्रेह ॥ सबमिलेराहितसनेह ॥ इकदिवसपरिषदआइ ॥ सोसजनैबाठिसुभाइ ॥ कछुतर्कसालैकीन ॥ हैतूंजुपौरुषहीन ॥ अतिभयौलजितआप ॥ तिहिंअसुरउरबाढिताप ॥ जबनेंद्रगोतजिग्रेह ॥ सबछांडिराजसनेह ॥ इहिंसघनबनआराधि ॥ शिवहेततपसासाधि ॥ भएरुद्रदेवदयाल ॥ पुनिदरसदीयप्रतिपाल ॥ ॥
रुद्रउवाच ॥ ॥ हरकह्योजिहिंमनहोइ ॥ सुभमांगिलैबरसोइ ॥ ॥ जवनउवाच ॥ जबनेंद्रजाच्यौजानि ॥ प्रभुदेहुपुत्रप्रमानि ॥ जिहिडरैजादवजाति ॥ रणहोइअजयअराति ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ शिवकह्योदयासमान ॥ तवहोइपुत्रप्रमान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ हठिसाधिआयौग्रेह ॥ सुषराजभजतसनेह ॥ जवनेंद्रसुतरणजीत ॥ भयोकालजवनअभीत ॥ वरपाइआसुरवीर ॥ सोइकरैराजसधीर ॥ यहजानिकृष्णअनंत ॥ तहांरच्यौमायातंत ॥ जदुवंसउतपतिजास ॥ पुनिभज्यौजातप्रकास ॥ ॥ अथकालज

वनदग्धप्रसंग ॥ ॥ कालजवनउवाच ॥ ॥ हठिदईनिसचरहांक ॥ कहिवचनदुःस
हकाक ॥ पुरुषत्वछांडिप्रमान ॥ नहिंबचैमीचानिदान ॥ इहांश्रचलएकउतंग ॥ सोईग
गनपरसितश्रृंग ॥ तिहिंदरीदुगमदुरंत ॥ मिलिश्रंधकारश्रनंत ॥ ॥ श्रथमुचकुंद
प्रसंग ॥ ॥ मुचकुंदतहांमहीश ॥ श्रतिश्रलसविवसश्रधीश ॥ इहिंगुफासोयौश्रानि ॥
एकांतथलउनमानि ॥ कलपांतवीतेकाल ॥ सुनभयौदेहसचाल ॥ त्रैकालज्ञातातंत ॥
इहांश्राइकृष्णश्रनंत ॥ पुनिकस्यौविवरप्रवेस ॥ तहांसुषुप्तपाइनरेस ॥ इहिंपीतबसन
उढाइ ॥ भएकृष्णश्रंतरभाइ ॥ पदचिन्हदेषिसपाप ॥ इहांधस्यौनिसचरश्राप ॥ पद
पीतवसनप्रमानि ॥ इहिंहत्यौलातश्रजानि ॥ श्रनश्रवधिजाग्यौश्राप ॥ मुचकुंदरोषश्र
माप ॥ द्रिगक्रोधश्रगनिदुरंत ॥ तिहिंजस्यौश्रसुरश्रसंत ॥ तनजवनमानहुतूल ॥ सो
भयौभस्मसमूल ॥ ॥ श्रथमुचकुंदउत्पत्तीसयनप्रसंग ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वि
ख्यातजन्मइक्ष्वाकुवंस ॥ जुवनासपितामहजगप्रसंस ॥ पितभयौमानधातापुनीत ॥ भु
वचक्रभज्यौजिहिंनृपश्रभीत ॥ सुतभयौनाममुचकुंदतास ॥ विधिजुक्तवेदवाचाविसास
भवभूतहेतमुचकुंदभूप ॥ जगजेठतपैधुरधरमरूप ॥ सुरश्रसुरश्रादिविग्रहसमाज ॥ की
यदेवासुररणविजयकाज ॥ इहांइंद्रश्राइभुवलोकश्राप ॥ मुचकुंदमिलेमनहितश्रमाप ॥
सुरराजनृपहिंजाच्यौसहाइ ॥ श्रवनीसमिलहुहममांझश्राइ॥ सुरसमरजुरेमुचकुंदसंग॥
भूवभयौपराजयश्रसुरभंग ॥ संग्रामविजैपायौसुरेस ॥ इहांवजेगगनदुंदुभिश्रसेस ॥
॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ सुरराजकह्यौतुमकीयसहाइ ॥ श्रवनीसश्रापसुरलोकश्राइ ॥ वीत्यौ
जुकालसमहरसधीर ॥ वसरोसनजान्यौतुमहिंवीर ॥ जनप्रीयापुत्रश्ररुबंधुजोइ ॥ भएका
लकलितनहिंरह्यौकोइ ॥ भौश्रमरहेतएतौश्रकाज ॥ श्रवनीसउचितवरलेहुश्राज ॥ सुष
छांडिराजसंपतिसमाज ॥ रष्याजुहमारीकरीराज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनिसुपैविर
तिउपजीनरेस ॥ इहांभयौसोकव्याकुलविसेष ॥ वैरागभयौश्रतिविरहवीर ॥ शोकाधि
कारसुधिगइसरीर ॥ ॥ मुचकुंदउवाच ॥ ॥ चिरकालजग्यौहूंविकलचेत ॥ हैनिद्रावा
धततासहेत ॥ श्रवहोतसयनइच्छाश्रपार ॥ वरमांगतहूंयहपैंविचार ॥ कहूंश्रानिजगा
वैमोहिकोइ ॥ हतदैवदृष्टिममभस्महोइ ॥ इहांभयौभस्मजवश्रसुरएह ॥ दीयदरसदीन
बंधूसनेह ॥ जोश्रादिरूपश्रपनौश्रनंत ॥ सोइनृपहिदिषायौजानिसंत ॥ ॥ मुचकुंद
उवाच ॥ ॥ इहांपूछिराजश्रपनौसुभाइ ॥ तुमकौनइहांकहिहेतश्राइ ॥ शशिसूरश्राग्नि
कैधौंसताप ॥ श्ररुश्राहिकोउदिगदेवश्राप ॥ विधिविष्णुरुद्रकैधौंविचार ॥ इहिंविवरन
सायौश्रंधकार ॥ श्रतितेजप्रकासतश्रंगश्रंग ॥ प्रभुकस्यौदयाकरिनिजप्रसंग ॥ पूछौक
दापिमोकहँकृपाल ॥ तुंकौनइहांभयौकितककाल ॥ इक्ष्वाकुवंशभयौजन्मश्रानि ॥ ममपि
तामानधाताप्रमानि ॥ मुचकुंदनाममोहिजगतमानि ॥ जुधजुस्योउचितसुरकाजजानि ॥
केउकल्पउजागरश्रलसश्राइ ॥ पुनिरह्यौसोइयहविवरपाइ ॥ श्रायौहोकालसंजोगकोइ ॥
इहांभयौभस्मममदृष्टिसोइ ॥ कोउदुष्टइहांश्रायौश्रकाज ॥ तिहिंमोहिजगायौमहाराज ॥
ममदृष्टिश्रनलसोइषलसमूल॥त्रिणहोतभस्मज्यौंपश्यौतूल॥ तुमदीनबंधुमोहिदरसदीन॥

॥ करिकृपाकृतारथजन्मकीन ॥ इहांजन्मकर्मगुनगोत्रआप ॥ प्रभुकह्योजथापूरनप्रताप ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ इहांकृष्णकह्योतबवचनएह ॥ सुनिराजकहतहूंनिसंदेह ॥ ममजन्मकर्मप्रतिमाअनंत ॥ एकहूजपैकछुहोइअंत ॥ कनरेणुबुंदघनगनैकोइ ॥ हितजन्मकर्मसंख्यानहोइ ॥ त्रयकालजन्मअरुकर्मकोइ ॥ सुरसिद्धिबुद्धिजानैनसोइ ॥ निहचैकछुकहिहौंवर्तमान ॥ पृथ्वीप्रसिद्धवेदहुपुरान ॥ भुवभईदूषितजबअसहभार ॥ कीयधेनुरूपविधिसंपुकार ॥ तबजाचन्याकीयकमलजात ॥ वरविष्णुअभयदीनोविष्यात ॥ इहिहेतलयोअवतारआनि ॥ जदुवंसजनमनरदेहजानि ॥ देवकीकूषउपज्योअजेव ॥ विष्यातनामहूंवासुदेव ॥ पूतनाआदिकंसाहिप्रजंत ॥ सबहतेदुष्टजेतेअसंत ॥ यहकालजबनसंजुतविकार ॥ तबदृष्टिजरयोअतिदुराचार ॥ करिदयातोहिमैंदरसदीन ॥ पुनिइच्छासोइमागहुप्रवीन ॥ ॥ मुचकुंदउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांपरपुरुषप्रभूजान्योइहिं ॥ तहांभगतिदुर्लभजाचीतिहिं ॥ तबअस्तुतिमुचकुंदउचारीय ॥ भयोहर्षअतिजोतिनिहारीय ॥ यहभवतबमायाकरिमोहित ॥ हैकुटंबसौकरतमहाहित ॥ जोसंपतिअपनीकरिजानत ॥ पुनितिहिंप्रानसमानप्रमानत ॥ पुरुषत्रियात्रियपुरुषहिधूतै ॥ पतिकौंछांडिबढावहिपूतै ॥ मनहितबसैग्रेहातिहिंमांही ॥ नारायणकहँचीन्हतिनाहीं ॥ जनममनुष्यदुलभलहिजाठर ॥ प्रभुतैंविमुषउपासतहैपर ॥ कामादिकसुषसूकरकूकर ॥ तेऊरहैंनिरंतरततपर ॥ भजनमनुष्यजनमसंभावन ॥ पैसोईसमझ्योनाहिंअपावन ॥ संपतिराजभज्योमैघरसुष ॥ मूढरह्योतबचरनपरामुष ॥ जनमगयोनिहफलअबजान्यो ॥ मैअपनोतनघतकप्रमान्यो ॥ संपतिग्रहबंधनबाँध्योसब ॥ हैसोइजियतकरतअपनोहठ ॥ कृमिविटभस्मदेहकेकारन ॥ संज्ञातीनअंतजोसज्जन ॥ पिंडदसाएवेदसमानै ॥ जीतमरतअज्ञाननजानै ॥ सबहैपरयोमोहग्रहसंकट ॥ मायावसनाचतजोंमरकट ॥ भाग्यउदयमेरेसंभावन॥प्रभुतवकृपाभईजबपावन॥प्रानीभाक्तिलहैमनवचपन॥विषमतबैछूटतभवबंधन॥राजदुषकौहेतनिरंजन॥बहुरयोंकौनपरैतिहिबंधन॥बंधनराजभजेबहुतेरे॥मोहनदरसभाग्यभएमेरे ॥ कृपासिंधुममरष्याकीजे ॥ देवचरणसेवादृढदीजे ॥ प्रभुतवबोलेकृपापरायन॥सगुनसरूपनिर्गुणनारायण॥ ॥श्रीकृष्णउवाच॥ ॥पैहौनृपतिभक्तितुमपूरन ॥ मेरोध्यानकरहुवाचामन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आषेटकक्रीडाअषिल। पसुवधकरेनृपाल ॥ अघनासनताकौंअबै । करहुभ्रमणकछुकाल ॥ देवालयतीरथदुगम । पुन्यषेत्रजौपाइ ॥ पूजामज्जनदानपन । व्हैहोसुधीसुभाइ ॥ क्रमजुतजोगअभ्यासकरि । तजिहोदेहपुनीत ॥ हममहँमिलिहौआनितहाँ । विश्वविष्यातविनीत ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेमुचकुंददृष्टिकालजवनवधोनामएकपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णहिवंदनपरिक्रमण । करिमुचकुंदअनेक ॥ तवनिकसेताविवरतै । इहांकलपवसिएक ॥ भूतविपर्जयदेषिभव । नरपसुद्रुमतेनाहि ॥ प्रतिमालघुथिरचरप्रगट । हुवविस्मयजियमांहि ॥ २ ॥ कलजुगआयोजानिके । धारि

मनमोहनध्यान ॥ चितहितउत्तरदिशिचले । लषिविपरीतविधान ॥ ३ ॥ आइबदरिका
श्रमइहां । नरनारायणथान ॥ करतभएतपध्यानक्रम । पर्वतसुषदप्रमान ॥ ४ ॥ तहां
गंधमादनजुगिरि । अद्भुतअगमउतंग ॥ तपसाहितबैठ्यौतबै । आसारहितअभंग ॥ ५ ॥
॥ इतिकालजवन० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कालजवनकौंदाहकारि । क्रोधदृष्टिमुचकुंद ॥ प्र
भुनरहरमथुरापुरी । आएजुतआनंद ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांकृष्णबलमथुरा
आए ॥ पुरअवरोधदेषिदुषपाए ॥ कालजवनदलघेराकीनै ॥ पुरतैंनिकसेकृष्णप्रवी
नै ॥ इहांबलदेवकृष्णरणआए ॥ निषिलजवनदलमारिनसाए ॥ निकरभारवाहकस
बलीनै ॥ कंसिसमसौंजसुआगैकीनै ॥ इहिंविचजरासंधषलआयौ ॥ सजिषोहनितेइसस
वायौ ॥ सत्रहवारजुभाज्यौसमहर ॥ अष्टादशमसुआयौआतुर ॥ इहांकृष्णतबमंत्र
उपायौ ॥ षलकहँमानुषभावदिषायौ ॥ आगेहोइभागेअषिलेसुर ॥ पूठलग्योयहछां
डिद्रव्यपुर ॥ धूरतरामकृष्णधरधावत ॥ अरुषलपीठिलग्यौहीआवत ॥ पर्वतएकजु
नामप्रवर्षन ॥ जथाउर्ध्वएकादशजोजन ॥ गोकुलेसआएतिहिंगिरिवर ॥ आपुनचढे
सिषरतिहिंऊपर ॥ आतुरजरासंधतहांआयौ ॥ पर्वतघेर्‍यौसेनपठायौ ॥ जवहरिया
पर्वतमैजान्यौ ॥ पुनिषलदारुनमंत्रप्रमान्यौ ॥ गिरवरतिहिंदवदाहलगायौ ॥ प्रभुति
हिंसमयदावसौपायौ ॥ गिरउतंगतैंझांपेगिरधर ॥ उतरेदूरसेनतैंअंतर ॥ जरासंध
सोमर्मनजान्यौ ॥ मोहनषेलकर्‍योमनमान्यौ ॥ इहांकृष्णद्वारावतिआए ॥ भएहर्षस
बहिनमनभाए ॥ जरासंधनिश्चयकरजानै ॥ पिसुनजरेदवदाहप्रमानै ॥ इहांविजयनी
सानवजाए ॥ अतिसुषजरासंधगृहआए ॥ ॥ अथबलदेवविवाह ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
राजारेवतदेसकौ । रैवतताकोनाम ॥ ताकीकन्यारेवती । भईसजज्ञाभाम ॥ ७ ॥ ॥
रैवतउवाच ॥ ॥ पूछ्यौब्रह्मासौंप्रगट । नृपरैवतसज्ञान ॥ काहिदेउममकन्यका । प्रभु
आज्ञासुप्रमान ॥ ८ ॥ ॥ विधिरुवाच ॥ ॥ सुनिबोल्यौविधिनृपतिसौं । सबभवभूत
समाज ॥ तुमदेषेतिनमहंतहां । रह्यौनकोऊराज ॥ ९ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ब्रह्मा
केपरिषदविहित । बैठेरैवतराइ ॥ काहूकारनतेतबै । कछुविधिघटीविहाइ ॥ १० ॥ ॥
विधिरुवाच ॥ ॥ रामकृष्णहैद्वारिका । दोऊसुतवसुदेव ॥ कारनअंसअनंतके । ए
अवतारअजेव ॥ ११ ॥ तिनमहँजेठौहैतहां । रूपअतुलबलराम ॥ ताकहँकन्यादेहुतु
म । करहुसिद्धियहकाम ॥१२॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबवहकन्यारेवती । गुनलच्छन
संजोग ॥ कर्‍योब्याहबलभद्रकौ । पूरनबेदप्रयोग ॥ १३ ॥ ॥ अथरुकमणीविवा
ह ॥ ॥ भूवविदर्भदछिनदिसा । पुरकुंदनसपुनीत ॥ करतराजनृपभीषमक । विद्याविभ
वविनीत ॥ १४ ॥ पुत्रपंचइकपुत्रिका । जुतलच्छनगुनलाज ॥ कुलसुधर्मक्रीडाकरत ।
संगसमानसमाज ॥ १५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कहिप्रथमबडौरुकमीकुमार ॥ पु
निरुकमबाहुसोभाअपार ॥ तिसरौरुकममालीसमृद्ध ॥ पुनिरुकमकसुचोथोप्रसिद्ध ॥ पां
चमोरुकमरथअतिअनूप ॥ रुकमनीपुत्रिकाश्रियारूप ॥ शुभलछनगुनमहिमासमान ॥
नितप्रीतिनिगमवाचानिदान ॥ गुनरूपसीलबुधिबलसुभाव ॥ प्रतिमाप्रसिद्धदैवतप्रभाव ॥

सुनिवासुदेवमहिमाअमान ॥ पैनियतवषानीजोपुरान ॥ रुकमनीउपजिओतानुरा
ग ॥ भइदरसकाजइच्छासभाग ॥ शिवशिवाहेतातिहिकरैसेव ॥ दीजैवरमोकहँकृष्णदे
व ॥ पुत्रीवरप्रापतिभईपेषि ॥ बढिपिताचित्तचिंताविशेषि ॥ भीषमकराजरुकमीकुमार ॥
कुलवृद्धिसबनिकीनौविचार ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ नृपकह्यौकृष्णकहँकरिनिदान ॥ दी
जैयहकन्यारतनदान ॥ वसुदेवपुत्रजइवंसवीर ॥ सबअंगसुद्धसुंदरसरीर ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ करितर्कबोलरुकमीकुमार ॥ वयवृद्धिहोतकछुबुधिविकार ॥ करितबैकृष्णनिं
दाकुमार ॥ बुद्धिभ्रष्टबाधकीयसोविचार ॥ पुनिकह्यौकुमरजोजगप्रसंस ॥ विष्यातवीरअ
रुचैद्यवंस ॥ तहांरुक्मिसबनिसोकह्योटेरि ॥ हमबहिनदेइसिसुपालहेरि ॥ ॥ कविरु
वाच ॥ ॥ अदिनलगिकुंवरकीनीउपाधि ॥ सिसुपालहिपठयौलगनसाधि ॥ यहसुनत
भयौअवरनिउछाह ॥ दुषबढ्यौरुकमणीचित्तदाह ॥ हाकृष्णकृष्णयहवानिहोइ ॥ कहुंन
हींप्राणअवलंबकोइ ॥ आपनीदसादुषलिष्योआप ॥ मुद्राकृतकागदहितअमाप ॥ यास
मयसाधुइकविप्रआइ ॥ पुनिताकेरुकमणिबंदपाइ ॥ ॥ रुकमणीवाक्यं ॥ ॥ द्विज
जाहुबेगिद्वारकादेश ॥ स्यामहियहकहिबोमुषसंदेस ॥ अरुदेहुपत्रिकाकरअनंत ॥
तामांझसबैममहृदयतंत ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तबसोयौकुंदनपुरद्विजात ॥ पुनिजा
ग्यौद्वारावतीप्रात ॥ द्विजआयौसोपैराजद्वार ॥ प्रभुअयकथ्यौलैप्रतीहार ॥ इहांवा
सुदेवएकांतआइ ॥ लीनौसुविप्रभीतरबुलाइ ॥ पुनिदयौपत्रतिहिकृष्णपानि ॥ मु
सकाइलयौमनहर्षमानि ॥ प्रभुपूछिआपहितचितप्रमान ॥ द्विजकहौजथाआगमनि
दान ॥ ॥ विप्रउवाच ॥ ॥ विश्वेसवांचिदेषहुविचार ॥ याचीठीमेंसबसमाचार ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ तहांकागदमुद्रादूरिकीन ॥ प्रभुप्रेमअंकदेषेप्रवीन ॥ भवउपजि
तहांसात्विकअभंग ॥ आनंदअश्रुरोमांचअंग ॥ बांच्यौनपरैगदगदसुबानि ॥ प्रभुद
यौपत्रतिहिविप्रपानि ॥ द्विजवांचतरुकमनिवचनदीन ॥ पत्रिकामांझजोलिषिप्रवी
न ॥ ॥ पत्रिका ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रवननिगुनलच्छनसुने । सोइउरवस्योस्व
रूप ॥ तातैमैंतनप्रानतव । अर्पनकरेअनूप ॥ १६ ॥ जोकहिहोकुलकन्यका । उचितनयह
आचार ॥ पतिहिवरैजोआपतै । पूछैविनपरिवार ॥ १७ ॥ कन्यावाक्यं ॥ केशवयाजुगक
कन्यका । ऐसीकोनअजान ॥ परमपुरुषक्योंपरहरे । अरुवरिहैनरआन ॥ १८ ॥ छंदपधरी
मैकरेनाथमनकरिनिदान ॥ मनहीकोकीनौकृतप्रमान ॥ मोहिवीरभागजानौविसेस ॥
नहिचैद्यजोगत्रिभुवननरेस ॥ बलिसिंघजथाजंबुकविडाल ॥ पावैनअंतकूटैकपाल ॥
मैंजन्मजन्मआगैसनेम ॥ प्रभुकरेजज्ञव्रतदानप्रेम ॥ अरुदेवविप्रगुरुजनअराध ॥
उद्धरेजलाशयसंगसाध ॥ इत्यादिकरेशुभकर्मओर ॥ ठिककालपत्रअरुपुन्यठोर ॥
दीजैफलताकौयहैदेव ॥ सर्वथाकरौप्रभुचरनसेव ॥ ममभ्रातारुकमीमदाअंध ॥ सि
सुपालसरिसमोहिकीयसमंध ॥ सोउपुनिऐहैसेनसाजि ॥ भिरितुमसौंजैहैसमरभाजि ॥
अंबिकादेविदेवलउतंग ॥ पुरवाहिरहैपूजाप्रसंग ॥ उद्वाहदिवसतहांप्रथमआइ ॥
शुभपूजाहौंकरिहौंसुभाइ ॥ हरिमोहिकरौराक्षसविवाह ॥ दुष्टनिकैपरिहैहृदयदाह ॥

कहिहौकदापिप्रभुनीतिकोइ ॥ हमपैंअनर्थएतौनहोइ ॥ शिशुपालरूपगुनज्ञातिशुद्ध ॥ पुनिचैद्यवंसपुहवीप्रसिद्ध ॥ थितचंदेरीतिहिंराज्यस्थान ॥ पुनिकवनदोषतामहँप्रमान ॥ प्रभुचरनरेनुवंछितप्रसिद्ध ॥ विधिरुद्रविबुधसनकादिसिद्ध ॥ अबयहेदानदीजैअभंग ॥ सबकालरहौंप्रभुचरनसंग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहजोपैनहिंहोइअब । सुनियैस्यामसुजान ॥ कारनजिहिंतिहिंकष्टकरि । प्रभुत्यागौंममप्रान ॥ १९ ॥ कहेबांचिद्विजपत्रिका । समाचारसमझाइ ॥ ऐसीगतिदेषीउहां । रुकमणिजादौराइ ॥ २० ॥ इहांजुकछुकारनउचित । करियैवेगकृपाल ॥ देवलग्नकेतीनदिन । पुनिआगमसिसुपाल ॥ २१ ॥ इतिश्री अ० श्रीकृ० दश० बारहटनरहरिदास० रुक्मिणीनियमोनामाद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्यामप्रियासंदेससुनि । पत्रीअंकसप्रेम ॥ उपजिउच्छाहविवाहउर । नरहरप्रभुकृतनेम ॥ १ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ द्विजवहिरुकमैयेदुष्ट । मनकीयदोषमलीन ॥ व्याहहमारेकौविघन । क्रमआछेपजुकीन ॥ २ ॥ महिपालनिकेमानमलि । कन्यालेउंसकाज ॥ जैसेमंगलदारुमथि । सेनासुभटसमाज ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जान्यौलग्ननजीकजब । सुंदरस्यामसुजान ॥ हितकरिदारुकसौंकह्यौ । प्रियरथसजहुप्रमान ॥ ४ ॥ मेघपुहपसुग्रीवमिलि । सेन्यवलाहकसंग ॥ क्रमचारयौंहयजुक्तकारि । आन्यौरथअनभंग ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गहिताहिद्विजकोकरगुपाल ॥ दिव्यरथआनिबैठेदयाल ॥ आनर्तदेसतैंचलिउदार ॥ आएविदर्भमहिमाअपार ॥ जोत्यौरजनीमुषरथजयंत ॥ इहांप्रातसमयआएअनंत ॥ उपवनकहूंउतरेआनिआप ॥ प्रभुदेवभक्तिपूरनप्रताप ॥ वसपुत्रनृपतिभीषमविशेष ॥ उच्छाहव्याहकीनैअसेष ॥ करदोराकाकनविधिजुकीन ॥ विवहारवंसपूजाप्रवीन ॥ निरसेषनगरसोभानिदान ॥ वाजेअनेकवाजित्रविधान ॥ सुरपूजाविप्रनिदानसाधि ॥ आपनैदैवदेवीअराधि ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नगरचंदेरीकोनृपति । सोदमघोषनरेस ॥ ताकौंहेसिसुपालसुत । दलबलपूरनदेस ॥ ६ ॥ जरासंधपौंड्रकजथा ॥ वीरसाल्वविख्यात । दंतवक्रनृपआदिदै ॥ । आएविदितवरात ॥ ७ ॥ कह्यौबधउवाआनिकरि । प्रभुआगमसिसुपाल ॥ आगेव्हैलीनैउमगि । कुंवररुकमिततकाल ॥ ८ ॥ जनवासौदीनौजथा ॥ मनवंछितमनुहारि ॥ हौनलगेमंगलहरष । सबैसंभारिसंभारि ॥ ९ ॥ संकरसनजबहीसुन्यौ ॥ कृष्णगमननिशिकीन ॥ सेन्याचतुरंगीसजे । पहुंचेप्रातप्रवीन ॥ १० ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ करतविकल्पनमनमहँकन्या ॥ धीरनरहतकहतयौंधन्या ॥ ॥ रुकमणीवाक्यं ॥ ॥ आयौविप्रनमोहनआए ॥ इहांकछुकारनदैवउपाए ॥ कबहूंझेरनएतौकीनौ ॥ दीनहिदरसनततछनदीनौ ॥ दीनजहांजहांदेषिदुषारे ॥ पूरनपुरुषतहांपाउधारे ॥ नेनमूंदधरिध्याननिरंतर ॥ हाजदुनाथस्यामघनसुंदर ॥ वामनेत्रभुजफुरकेवामा ॥ सोइविश्वासभयौउरस्यामा ॥ याहीसमयविप्रसोआयौ ॥ पहिलैजोरुकमणीपठायौ ॥ कंन्याद्विजकहँवंदनकीनैं ॥ लच्छनदेषिमानिशुभलीनैं ॥ पुनितिहिंविप्रबधाईपाई ॥ संपतिजोकछुचित्तसुहाई ॥ कोऊवाकैवंसकहावै ॥ अजहूंताहिदरिद्रनआवै ॥ रामकृष्णआ

एसुनिराजा ॥ कह्योविदर्भराइहितकाजा ॥ दीनबंधुजिहिंपुरवनदेषे ॥ वरकन्यासमजोग्यविशेषे ॥ सुपैपरसपरकहतसुभाए ॥ एनृपअवरव्रथाहैंआए ॥ अथरुकमणीअंबकादेवीपूजन ॥ ॥ पाइनिचलीअंबिकापूजन ॥ जथासषीसंगलीनैंगुरुजन ॥ सहजश्रृंगारगंधतनशोभा ॥ लीलादैवीपतिहितलोभा ॥ संगसैन्यचतुरंगनसाजे ॥ वीरचलेबहुवाजित्रवाजे ॥ कह्योप्रवेसदेविदेवालय ॥ सेवाफलवांछाउरअतिसय ॥ करिपूजाजाचन्याकीनी ॥ भामिनिहाथजोरिरसभीनी ॥ ॥ रुकमणीवाक्यं ॥ ॥ किंकरिजानिक्रपायहकीजे ॥ देवीमोहिकृष्णवरदीजे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ लएप्रसादतिलकफललीनै ॥ कन्यापरममहोछवकीनै ॥ इहांदेवालयबाहिरआई ॥ सोभासहजश्रृंगारसुहाई ॥ महामोहनीदेवीमाया ॥ कियविस्तारसुलच्छनकाया ॥ इहांवीररक्षकजोआने ॥ प्रतिमामनहुपषानप्रमाने ॥ भावीजोगमोहप्रापितभट ॥ सबैपरेमायाकेसंकट ॥ याहीसमयकृष्णतहांआए ॥ साधुसजनमनअधिकसुहाए ॥ प्रियकीप्रतिमादेषिप्रवीनी ॥ कन्यातनछविअर्पनकीनी ॥ महाहर्षकरकरषिमुरारी ॥ रुकमनिलैरथपरबैठारी ॥ मलेसबनिकेमदमनमोहन ॥ प्रभुलैचलेकन्यकापावन ॥ अपनींबिलधरिलेतअचानक ॥ ज्यौंमृगराजविडारतजंबुक ॥ इहांसिसुपालकूकसुनिआरत ॥ महागर्वकरिबोल्यौमदमत ॥ ॥ सिसुपालउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देषहुबालअहीरद्वै । मूढमहामतिमंद ॥ करिचोरीनृपकन्यका । दुष्टपरेजमफंद ॥ ११ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारेदशम०बारहटनरहरिदासविरचितेरुकमणिहरणोनामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५३ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ओचकपरीपुकारइहँ । घरघरघेरकुघाट ॥ आरंभ्यौकछुभयौकछु । ठयौदइवयहठाट ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सेनउभयव्हैसावधानसेनाहजुसज्जीय ॥ वीरचित्तविक्कसीयगहरसुरत्रंबकगज्जीय ॥ हयहेषारवगजनिगाजभटमारमारमुष ॥ परिकायरउरकंपसूरसुरलोकगमनसुष ॥ षेचढीषेहषुरहतअषिल, अर्कजोतितिहिंअंतरीय॥ सिसुपालसघनचतुरंगसजि, सूरसमरमुषसंचरीय ॥ १ ॥ सबलसैनसंक्रमीयधराषुरघातधमंकीय ॥ कोलकमठकसमसीयचराचरचित्तचमंकीय ॥ सेनसूरसमुहियवीरबुंकारववज्जीय ॥ हयगयनरहलमलीयग्रीधपलचारगरज्जीय ॥ रणभएधनुषटंकारवन, संषनादसज्जीयसघन ॥ माधवअभंगसिसुपालमिलि, भूमिभारटारिहैभुवन ॥ २ ॥ ॥ मारमारउच्चारमहासंग्रामसुमच्चीय ॥ कृतकुंडलकोदंडषंधलग्योगुनसंचीय ॥ सरछूटेहृदयसनतासआयासहिअंतर ॥ हयसंमिलिषुरषंहभयौतममहाभयंकर ॥ उतपन्नत्रासरुकमनिउरहँ,रोमउछ्लतहांकंपतन ॥ त्रीयलषीकृष्णकातरतबहि, मोहनसंभ्रमछाइमन ॥ ३ ॥ इहांबोलेअषिलेसभयनभद्रेसंभावन ॥ अंधकाररजउडतनियतएसमहरलछन ॥ करूंदुष्टतवकाजमानमर्दनरणमारौं ॥ प्रबलसेनासिसुपालवीरसमसषाविडारौं ॥ संकरषनमिलिजादवसकल, कठिनबाणवर्षाकरीय ॥ कुंडलकिरीटसंजुलमुकुट, पिसुनरथीसुरभुवपरीय ॥ ४ ॥ सजिसारँगसारंगपानिसमवैरसंभारीय ॥ समरबानसंधानकठिनमूकेभयकारीय ॥ पुनिहयगयनरपरीय । लोथिपरिलोथिजुलग्गीय ॥ परिकायरउरकंपभुवनाजियआसाभ

र्गीय ॥ पलचारप्रेतपाएत्रिपति, नारदकौतुकनचयौ ॥ सुरकाजसिद्धिनरहरसुकवि, भु
वनतीनजयजयभयौ ॥ ५ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जरासंधदैआदिजुआए ॥ सबै
नृपतिसिसुपालसहाए ॥ भाजेषेतछांडितेभुवपति ॥ उरहिनसाससमातत्रासअति ॥ भ
जतसेनसिसुपालहुंभाग्यो ॥ लह्योचंदेरीमारगलाग्यो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ समहरभाजेरा
जसब । आनिभएएकत्र ॥ विषमजथापारिबातवस । तरवरविछुरेपत्र ॥ २ ॥ देष्योजब
अतिहीदुचित । पौरुषहतसिसुपाल ॥ मागधताहिप्रबोधमिलि । करतभयौतिहिंकाल
॥ ३ ॥ मागधउवाच ॥ ॥ चइद्यनइहांचिंताउचित । पुनितुमपरमप्रवीन ॥ जथा
प्रानकहँजयअजय । निहचैदैवाधीन ॥ ४ ॥ काठमईज्योंपुत्तिका । नरवसनचतनिदान ॥
समझ्योयोंप्रानीसबै । प्रभुवसआहिप्रमान ॥ ५ ॥ सत्रहवारसंकेलिमैं । अप्योहणिते
ईस ॥ लैलैजादवसूंलरयौ । अजयदयौतउईस ॥ ६ ॥ आयौवारअठारहीं । सोपेदल
बलसाजि ॥ तबजादवमोसौंतहां । भयकरिनिकसेभाजि ॥ ७ ॥ अबतोकालविशेषयह ।
इतेनृपतिमिलिआइ ॥ लघुसेन्यासौंषेतलरि । प्रगटपराजयपाइ ॥ ८ ॥ कारणकालप्र
बोधकरि । समझायोसिसुपाल ॥ अपनेअपनेग्रेहइहां । पुनिसबगएनृपाल ॥ ९ ॥ इ
तिसिसुपालपराजय ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ करिकोपरुकमिकुमार ॥
वपुवीररसविस्तार ॥ सन्नाहकसितनसूर ॥ पुनिसकलआयुधपूर ॥ धरनगरसुनियहधा
ह ॥ बरिकुंवरिराक्षसव्याह ॥ पुनिप्रगटसुभटप्रवीन ॥ कहिमुषप्रतिज्ञाकीन ॥ ॥ रुक
मीउवाच ॥ सबमारियदुनअसेस ॥ पुनिकरोग्रेहप्रवेस ॥ इहांफेरिकन्याआनि ॥ पुनि
चैद्यव्याहप्रमानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अतिक्रोधरथआरोह ॥ संगसेनचढितनसो
ह ॥ ॥ रुकमीउवाच ॥ ॥ षलकृष्णकौहतिषेत ॥ समभ्रातसेनसमेत ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ रथहांकिरुकमकुमार ॥ अबनिकटआनिउदार ॥ इहांदुष्टकहिदुर्वाद ॥ वपु
रंजरोषविषाद ॥ इहांकृष्णसनमुषआनि ॥ पुनिसज्योचापप्रमानि ॥ रुकमीउवाच ॥
अबमांडिपगआभीर ॥ किहिवंसउपज्योवीर ॥ जेसंगनिसिवनजांहि ॥ हैगोपिकावेनां
हि ॥ सरनिकरविद्धसरीर ॥ नहिअवनिलुठतअहीर ॥ देकुंवरितोलौंछांडि ॥ ममसमुष
कैपगमांडि ॥ करिकपटजुद्धकराल ॥ कहूंविजयपाइअकाल ॥ अवतिहांधोषैआज ॥ क
रिसमरमरिनअकाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिकोपरुक्मकुमार ॥ सरतीनभुकीय
सार ॥ तहांकृष्णहातिरथतास ॥ कीयविसिषमारिविनास ॥ चववानवेधियवाजि ॥ सोइसु
तजुगसरसाजि ॥ दृढध्वजपताकादंड ॥ षलकरेत्रयसरषंड ॥ वहिचापसज्जियआनि ॥
पुनिछेदकृष्णप्रमानि ॥ जोइदुसहसजिकोदंड ॥ षिजिकृष्णकरतसषंड ॥ पुनिपरिघपट्टी
सपानि ॥ असिसूलजोपैआनि ॥ अरुसक्तितोमरआनि ॥ पुनिकठिनचर्मप्रमानि ॥ इ
त्यादिआयुधऔर ॥ सजिहतैकृष्णसुठौर ॥ इहांउतरिरथतैआप ॥ धरिषड्गकीनोधाप ॥
इहांरुकमिपरजरिअंग ॥ परिजथादीपपतंग ॥ पुनिषडगचरमप्रवीन ॥ क्रमकृष्णतिल
तिलकीन ॥ शिररुक्मिछेदतस्याम ॥ भयउपजिबोलीभाम ॥ जोगेसतुमजगदीस ॥ अ
प्रमेयअमरअधीस ॥ ॥ रुकमणीवाक्यं ॥ ॥ यहभ्रातमेरौआज ॥ नहिंमारिवोजदु

राज ॥ इहांचितैरुकमनिश्रोर ॥ कछुहसेकुवरकिसोर ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तहांरु
क्मिपाघउतारि ॥ दीयमोरबंधमुरारि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उरकंपतसूकतअधर । नहीं
आवतमुषबैन ॥ भयौविलोकतभ्रातकौ । चितरुकमनीअचैन ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥
मुषमूछअर्धअरुअर्धमुंड ॥ तिहिंमुंडकर्योविपरिततुंड ॥ सबगएसंगतजिसुभटसाथ ॥
इहांबांध्यौरुक्मीकरिअनाथ ॥ इहिंसमयइहांबलदेवआइ ॥ सोछेदिबंधदीनौछुडाइ ॥
॥ बलदेवउवाच ॥ संकर्षनकीनौसमाधान ॥ दुष्षसुष्षकर्मफलहैनिदान ॥ करियेनरुक
मिअबसोचकोइ ॥ होनीसोइच्छादैवहोइ ॥ ॥ रुक्मिनीप्रतिवाक्यं ॥ ॥ पुनि
कह्यौरुकमनीसौंप्रमान ॥ यहक्षत्रधर्मदुरगमनिदान ॥ संग्रामचढेमुहसमरसिद्ध ॥
पुनिहतैभ्रातभ्रातहिप्रसिद्ध ॥ त्रियभूमितेजअहंकारहेत ॥ षलजानिहतेसंग्रामषेत ॥
यहषत्रधरमदारुननिदान ॥ पुनिहमहिंदोषनाहिनप्रमान ॥ मनमोहकरैमानुषमली
न ॥ यहपैअनंतमायाअधीन ॥ भ्रातकेहेतपतिसौंकुभाव ॥ सोत्रियाधर्मनाहिनसुभाव
॥ उतपन्नसोकतवचित्तआनि ॥ व्हैहैंवज्ञानकारितासहानि ॥ प्रियबचनसुनैजदपिप्रबोध ॥
तऊकुंवररुकमनहिंछुटतक्रोध ॥ ॥ रुकमीउवाच ॥ ॥ वसरोषकुंवरबोल्यौविचारि ॥
हठगएप्रतिज्ञाभईहारि ॥ अरुदेहदसायहभईआज ॥ उरदहतइतेउपजेअकाज ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ रणजीतकृष्णजदुवंसराज ॥ सबकुसलसंगसेनासमाज ॥ रणषेतमांझरु
कमीकुमार ॥ इहांनगरवसायौअतिउदार ॥ भोजकटभयौतिहिंनगरनाम ॥ ध
नवृद्धिजथासुषधामधाम ॥ शुभवस्यौतहांरुकमीनरेस ॥ पुनिकर्यौनकुंदनपुरप्रवेस ॥
दोहा ॥ ॥ हठिकीनौरुकमनिहरण । जीतिसबैराजेस ॥ कृष्णपधारेद्वारिका ॥ सोशु
भसगुननरेस ॥ हितजुतकीनोव्याहतहां । जथावंसविबहार ॥ वनिग्रहग्रहद्वारावती । र
चनामंगलचार ॥ रुकमिनीहरजीतेंजुरन । पानिग्रहनसपुनीत ॥ मिलिसुषतीनौंलोकमँहँ
। गावतउच्छवगीत ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबार
हटनरहरिदासविरचितेरुकमनीहरनोनामचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अषिलेसईसकोअंसमदनइहिंनाममहाबल ॥ नि
यतपक्षकोउनाहिदुगमचतुरंगनाहिंदल ॥ विषमपुहपधनुवानमहामुर्वीमिलिमधुकर ॥
कृततथापित्रैलोकविजयचितविकलचराचर ॥ करिकपटआइतदभंगकहँ, सत्रुभावसाध्यौ
सभौ ॥ सोइकामदेवनरहरसुकवि, भवद्गमंगलभस्मभौ ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ का
मजर्यौहरक्रोधकरि । अंगीभयौअनंग ॥ कलपंतरवीतेकइक । भयेएकत्रसुअंग ॥ १ ॥
कृष्णदेवइच्छाकरी । मायादइवप्रमानि ॥ कारनजोतिमनोजकी । उरमँहँप्रगटीआनि
॥ २ ॥ भावीवसरुकमनिगरभ । उपज्यौअंसअनंग ॥ प्रद्युम्ननामसुपरमप्रिय । अतिसुं
दरअँगअंग ॥ ३ ॥ ऋतउच्छववसुदेवकुल । ग्रहग्रहमंगलगान ॥ जातकर्मकीनैजथा ।
दीनैविप्रनिदान ॥ ४ ॥ आदिविरोधजुसुरअसुर । संभरदैत्यसंभारि ॥ हर्यौबालदस
दिवसमहँ । दयौउदधिसोडारि ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वहबालगिल्यौकिहुंमच्छ
आनि ॥ परिमच्छसुपैजालहिप्रमानि ॥ कालंतरआगैंजर्योकाम ॥ वनितारतिनामा

तासवाम ॥ पुनिश्रागैतिहिंकेउजनमपाइ ॥ इहिंजनमत्रियाइकभईश्राइ ॥ निहचैसो
इमायावतीनाम ॥ ऋतनिपुनसोभोजनकारकाम ॥ संबरकैसोयेसूपकारि ॥ सत्रभांतिक
रैभोजनसँवारि ॥ वहमीनसमर्प्योकीरश्रानि ॥ पुनिसंबरदीनौदासपानि ॥ मिलित
हांविदार्योउदरमच्छ ॥ प्रद्युमनतहांनिकस्योप्रतच्छ ॥ जत्रमायावतीश्रपुत्रिजानि ॥ व
हिदयाजुक्तदीयबालश्रानि ॥ यहकरैबालरक्षाश्रनेक ॥ उहांश्रायौनारदसमयएक ॥ मु
निकीनौमायावतीमंत्र ॥ तहांसबैबताएगूढतंत्र ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ यहबालकहै
कामावतार ॥ रुकमनीगर्भउपज्योउदार ॥ प्रद्युमननामयहकृष्णपूत ॥ श्ररुश्रंगश्रंगसोभा
श्रभूत ॥ दैवतप्रभावयहसुनिनिदान ॥ पुनिभयौदेहपूरनप्रमान ॥ भामिनीचित्तभर्तारभाव ॥
यहसाधसमझिधर्महिसुभाव ॥ इकदिवसग्रेहबैठेश्रग्यात ॥ विधिजुक्तकरतिइहांसाधवात
॥ करिहावभावद्रगभेदकीन ॥ निर्धारउपजिमायानवीन ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ प्र
द्युमनकह्योकरिबुधिप्रचार ॥ कछुश्राजविलोकनिमहँविकार ॥ इहांनाहिनसमझ्योपरत
श्राज ॥ कछुकहीयैकारनजथाकाज ॥ ॥ मायवतीवाक्यं ॥ ॥ मायावतिउतरद
योमूल ॥ करतारभएमोहिसानुकूल ॥ लैश्रादिजनमतैंजथाजोग ॥ पुनिकहेसबैपूरबप्र
योग ॥ तूकृष्णपुत्ररुकमिनिकुमार ॥ श्रवतारसुमनमथकौउदार ॥ प्रभुमानहुमोकौंर
तिप्रमान ॥ ऋषिमोहिकह्योनारदनिदान ॥ यहसंबरतेरौशत्रुश्राहि ॥ तनभंगकरहु
श्रबवेगिताहि ॥ जनमांतरधारीदेहजानि ॥ श्रबभौसंजोगविधिलिषितश्रानि ॥ उ
रजननीतवपरजरतिऊक ॥ कुररीविहंगज्योंकरतिकूक ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिस
मयमायावतीपाइ ॥ प्रद्युमनकैंहँविद्याइकपढाइ ॥ करिमरैजदपिउपचारकोइ ॥ जिहि
हेतभूतमायानहोइ ॥ प्रद्युमनइहांअवकाशपाइ ॥ संबरसौंजाचर्योजुद्धजाइ ॥ निसचा
रिचरनहतमनहुनाग ॥ सोउठ्योगरजिश्राकाशलाग ॥ करकोपश्रसुरश्रायोकरूर ॥
सिरप्रद्युमनवाहीगदासूर ॥ निसचारगदावाजीनिघात ॥ सोभयौप्रद्युमनवज्रपात ॥ व
रवीरकुंवरपौरुषविशेष ॥ सोगदाभंगकीनीश्रसेस ॥ प्रद्युमनगदाकीनौप्रहारि ॥ चढिग
योगगनसंवरकुचारि ॥ गुह्यकपिशाचगंधर्वगान ॥ श्रौरगीराक्षसीश्रप्रमान ॥ इत्यादि
करिमायाश्रनेक ॥ इहिठौरकाजनहिंसर्योएक ॥ भौउद्यमहततबमानभंग ॥ भूवलोक
श्रसुरश्रायौश्रभंग ॥ करिषग्गकाटिप्रद्युमनकुंवार ॥ कृतसीसछेदसंबरकुचार ॥ सुरक
रिकुसुमवर्षाश्रकास ॥ पुनिबजेदेवदुंदुभिप्रकाश ॥ रतिइहांदेहश्रंतरितरूप ॥ श्ररुदे
वशक्तिकीयछविश्रनूप ॥ सोप्रद्युमननभमारगसुभाइ ॥ उत्तर्योश्रंतःपुरमांझश्राइ ॥ दु
वठाढेश्रांगनमांझदेषि ॥ भइराजरमनिविस्मयविशेषि ॥ समकृष्णदेषिप्रद्युमनसरूप ॥
श्ररुपीतबसनभूषनश्रनूप ॥ इहांरुकमनिश्रंतरसोकश्राप ॥ पुत्राहिसंभारिकीनौप्रलाप
॥ पुत्रभौनष्टतिहिंसुधिनपाइ ॥ सुतध्यानकर्योश्रपनैसुभाइ ॥ ॥ रुकमणीवाक्यं ॥
धरश्रवनलगेकुचदुग्धधार ॥ वैदर्भीकीनौतबविचार ॥ सारंगधरप्रतिमातनसरूप ॥ वै
सीहीचितवनिछविश्रनूप ॥ कहूंभयौनष्टसुतबालकाल ॥ सोसमरहोतममचित्तसाल ॥
वहजियतरह्योकिहुंकर्मजोग ॥ सोदैवश्रानिकीनौसंजोग ॥ श्ररुवामभुजाममफुरतश्रा

ज ॥ कछुसूचतिहैकल्पांतकाज ॥ सुतधस्योगर्भमेजोइसनेह ॥ हैवहैबालयहनिसंदेह ॥
तहांकल्पविकल्पनभयोचेत ॥ सुभसगुनहोतहितप्रीतिहेत ॥ दीनौतबदरसनवासुदेव ॥
अंतहपुरआएप्रभुअजेव ॥ हैआपविश्वव्यापकअनंत ॥ कछुतदपिनबोलतरमाकंत ॥
इहांनारदयाहीसमयआइ ॥ शुभदरसदयौअपनैसुभाइ ॥ नारदप्रसंगसबकहेनिदान ॥
प्रद्युमनहस्योसंबरप्रमान ॥ ज्योरतिहिदयौउपदेशजाइ ॥ सोवातइहांसबहिनसुनाइ ॥
॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ ग्रहअपनैनारदगयौ । सबवृत्तांतसुनाइ ॥ बालका
लकोंवीछुस्यौ ॥ इहांप्रद्युमनआइ ॥ ६ ॥ महाभागतहांरुकमनी । लयोपुत्रउरलाइ ॥
मातापुत्रसप्रेममिलि । सात्विकभएसुभाइ ॥ ७ ॥ कृतवसुदेवजुदेवकी । हितउच्छवशुभ
हेत ॥ कमलविलोक्योपौत्रकों । सुंदरवधूसमेत ॥ ८ ॥ रणमास्योसंबरअसुर । सबहर
षेसुरसंत ॥ नरहरप्रभुकेग्रेहतब । उच्छवभएअनंत ॥ ९ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रे
श्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेप्रद्युमनजनमशंबरदैत्यव
धनोनामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सतिभामाकोंव्याहसुष । पुनिजादवप्रतिपाल ॥
हितजांबवतिपाणिग्रह । करिहैंकृष्णकृपाल ॥ १ ॥ ॥ **छंदद्विअक्षरी** ॥ ॥ जादवना
मसत्राजितजाकों ॥ तरणिउपासकव्रतहैताकों ॥ सेवातिहिंमनवचक्रमकीनी ॥ दिनक
रताहिमहामणिदीनी ॥ मणिजुसिमंतकनामानिरमल ॥ ताकेतेजप्रकाशितभूतल ॥ व
हमणिलैसत्राजितआयौ ॥ इहिप्रभावसबहिनसिरनायौ ॥ देवतमहँराषीमणिसुंदर ॥
प्रातिदिनसेवैताहिभाक्तिपर ॥ सोनौअष्टभारमणिआवै ॥ पैसोइनितसत्राजितपावै ॥ ॥
॥ **अथभारमान** ॥ ॥ **कवित्त** ॥ ॥ चौरिव्रीहइकचिरमपंचगुंजापणपिष्षीय ॥ पण
सुच्यारइकधरणधरणचवकर्षविसिष्षीय ॥ कर्षचारिपलकहीयपलजुसततुलाप्रमानीय ॥
विंशतितुलमिलिविहितप्रगटयहभारप्रमानीय ॥ कर्णादिआदिराजाजुकलि, कनकदएति
नकीर्तिकह ॥ कहिगणितजथानरहरसुकवि,एकभारपरिमानयह ॥ ॥ **छंदद्विअक्षरी** ॥
रहैजहांयहमणिअधिकारी ॥ भूवतहांहोइअरिष्टनभारी ॥ दुरभषमरीसर्पभयदारुन ॥
आधिव्याधिनितअशुभनिवारन ॥ मनियहतहांनव्यापैमाया ॥ दैवजोगहैसबसुषदाया
॥ कृष्णाहिदर्निनिांहिसकारन ॥ यातैउपजतअशुभअकारन ॥ ॥ **वसुदेवउवाच** ॥ ॥
इहावसुदेवकहायोऐसौ ॥ जोजिहिंजोग्यपदारथजैसौ ॥ जौमणिउग्रसेनकौदीजे ॥ कारि
जनीतिधर्मयहकीजे ॥ मणिकेगर्ववचननहिमान्यौ ॥ जथाअसुभआगमनहिंजान्यौ ॥
सत्राजितकौअनुजसहोदर ॥ सुपैप्रसेननामअतिसुंदर ॥ निर्भयएकादिवसातिहिलीनी ॥
कंठबांधिमणिभूषनकीनी ॥ अश्वआरोहितहर्षउपायौ ॥ आषेटकहितबनघनआयौ ॥
पकरिकंधहयधरणिपछास्यौ ॥ मिलिमृगराजप्रसेनहिमास्यौ ॥ मारियाहिलैचल्यौसिघम
णि ॥ तहांकंठबांधीसोपैतिनि ॥ आइमिल्यौइहांरीछअचानक ॥ भईसिंघसौभेटभयानक॥

च्यार ४ चावलकी तथा दोय जवकी गुजा १ पाचगुजाकोपण तथा मासो १ च्यारपण तथा मासा च्यारको धरण तथा टाक १ च्यारटाक तथा धरणकोकर्ष १ च्यारकर्षकोपल १ शत १०० पलकी तुला १ वीसतुलाको भार १ ऐसा अष्टभारस्वर्ण स्यमंतकमणी नित्यदेतीरही ॥ सो कर्ष १ को व्यवहारी तोलो १ होताहै.

जांबवंतजोधाजरजीरन ॥ इहांसिंघसोइमारिलयोइन ॥ मनिलेपैठ्योमहाँविवरमहँ ॥
जांबवंतकौग्रेहहुतौजहँ ॥ जांबवंतसुतकैंहितजाई ॥ लैसोमणिपलनालटकाई ॥ इहांस
त्राजितदेवलआयौ ॥ पैमणिसहितप्रसेननपायौ ॥ असहमानयहभावधर्यौइनि ॥ मारि
प्रसेनकृष्णलीनीमनि ॥ नगरमांझयहबातप्रमानी ॥ जहँतहँवासुदेवसोजानी ॥ कृष्ण
विचारतबैयहकीनौ ॥ दुस्सहदोषझूठमोहिदीनौ ॥ गह्यौचित्तचिंताबढिगाढी ॥ कृष्णत
हांपदपद्धतिकाढी ॥ जादववृद्धसंगलीनैजन ॥ तहँजदुनाथजुआएततछन ॥ इहांप्रसे
नमृतकहयपाए ॥ सबहिनकेमनसंभ्रमछाए ॥ चरनचिन्हलैचलेसचेतन ॥ तहांसिंघ
सोमृतकलह्यौतन ॥ पुनिपदअंकरीछकेपाए ॥ अबसबविवरद्वारमिलिआए ॥ दुर्गमत
हांविलोक्यौकंदर ॥ तामहँषोजनिहारिनिरंतर ॥ गर्तप्रवेसकर्यौतिहिंगिरधर ॥ हठिजाद
वजनराषेबाहिर ॥ आपकृष्णतहांधसेअकेले ॥ षत्रषेलएैसोकछुषेले ॥ पलनासौंबांधीम
निपाई ॥ काढिलईसोकुंवरकन्हाई ॥ प्रतिमादेषतात्रियापुकारी ॥ भयौतहांहाहारवभारी
॥ इहिंछनजांबवंतइहांआयौ ॥ बढ्यौविरोधछोहमनछायौ ॥ जादौनाथप्रभावनजान्यौ ॥
यहकोउप्राकृतपुरषप्रमान्यौ ॥ दुहुंमिलिकर्यौजुद्धअतिदारुन ॥ घाउदाउतहांभएसिथि
लतन ॥ परिसेचानजथापलऊपर ॥ सप्तचौकवासरभयौसमहर ॥ कृष्णरीछमुष्टाहतकीनौ
॥ व्हैगयौशिथिलदेहबलहीनौ ॥ जांबवंतनारायनजाने ॥ प्रतिमापूरणपुरुषपिछाने ॥
॥ जांबवंतउवाच ॥ ॥ कृष्णदेवकरताकेकरता ॥ होतुममहाकालकेहरता ॥ रामहोइ
रावणरणमारे ॥ अबतुमकृष्णदेवअवतारे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दीनभयौपरिकर्मा
दीनै ॥ क्रममनबचनसुवंदनकीनै ॥ मानिदयालभएतबमोहन ॥ ताकौपानिपरसकीनौत
न ॥ भएविथागतघाउभयंकर ॥ कृष्णदेवपरसेजबनिजकर ॥ कृष्णहितहांविवाहीकन्या
॥ घरैसुछबिजांबुवंतीधन्या ॥ क्रमजुतसुताविदातबकीनी ॥ दिठयदाइजैमनिवहदीनी ॥
इतिजांबवतीविवाह ॥ द्वादशदिवसरहेमुषकंदर ॥ घनआलसबसगएऊठिघर ॥ ॥ दे
वकीवाक्यं ॥ ॥ इनहिंदेवकीपूछनआई ॥ कहोकहांहैकुंवरकन्हाई ॥ ॥ जादवउवा
च ॥ ॥ इनतबसमाचारकहिऐसे ॥ पैंहठिकृष्णविवरमहँपैसे ॥ स्यामकंदरामांझसिधा
ए ॥ अबलौंबाहिरफेरिनआए ॥ इहांसबेहाकृष्णउचारत ॥ तेइसत्राजितकँहँधिक्कारत
॥ अबवसुदेवदेवकीआतुर ॥ स्यामकुसलहितध्यावतहैसुर ॥ देवीनामचंद्रभागादिन ॥
पूजतताकँहँकियैभाक्तिपन ॥ एदेवीमोहनजबऐहैं ॥ हमएतौकछुतुमहिचढैहैं ॥ अष्टवी
सदिनउहांअतीते ॥ जुधक्रीडातबमोहनजीते ॥ इहकंदरबाहिरहरिआए ॥ पैतेईसं
गीतहांनपाए ॥ लछिमिअंसदुलहनिसंगलीनै ॥ कृष्णप्रवेसद्वारकाकीनै ॥ ॥ कविरुवा
च ॥ ॥ वहमनिलैमोहनघरआए ॥ बाजेमंगलकलसवंदाए ॥ उग्रसेनराजापहँआ
पन ॥ मनिसोलीनैआएमोहन ॥ बैठेजादवसभाबनाए ॥ इहैसहजसत्राजितआए ॥ कृ
ष्णदेवजोमनिकौकारण ॥ नृपजुतसबसौंकर्यौनिवेदन ॥ प्रगटसबनकरिकृष्णदयापर ॥
सत्राजितहिदईमनिसुंदर ॥ अपनौमिथ्याकलंकनसायौ ॥ प्रभुजदुनाथपरमजसपायौ ॥
सत्राजिततहांपर्यौषिसानौ ॥ अतिलज्जाउपजीअकुलानौ ॥ इहँआतुरअपनेघरआयौ

॥ पुनिसबसौंमिलिमंत्रउपायौ ॥ ॥ सत्राजितउवाच ॥ ॥ क्रमअपराधदूरतौकीजे ॥ जोयहकन्याकृष्णहिदीजे ॥ कविरुवाच ॥ ॥ भव्यसुरूपनामसतिभामा ॥ स्यामहिक रीसमर्पनस्यामा ॥ जथाविवाहवेदविधिसंजुत ॥ करेसबैमंगलजोकुलकृत ॥ कृष्णहि जथाभक्तिअतिकीनी ॥ दिव्यसुमनिसंगदाइजदीनी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सतिभामाकौंव्या हसुष । पूरणप्रेमप्रसंग ॥ नरहरप्रभुइच्छानियत । रह्योजथाररसरंग ॥ २ ॥ कृष्णवहैमनि हेतकरि । पूरणनीतिप्रमान ॥ ततछनदीनीफेरितब । सत्राजितहिसुजान ॥ ३ ॥ ॥ इति श्रीअवतारचरित्रे श्रीकृष्णावतारे दशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेजांबव तीसत्यभामाविवाहनोनामषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कीनौलाक्षाग्रहकपट । दुर्जोधनदुर्बोध ॥ कारनपांडवदा हक्रम । स्यामलह्योपुनिसोध ॥ १ ॥ घटघटव्यापकस्यामघन । त्रिकालज्ञकरतार ॥ इहांत दपिकरिहौउचित । विदितलोकविवहार ॥ २ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ इहांहस्तिनापुरप्रभु आए ॥ सबहिनिरामकृष्णसुषदाए ॥ भीषमद्रोणविदुरगंधारी ॥ मिलिइत्यादिकसब निमुरारी ॥ द्वारावतीकृष्णविनुदेषीय ॥ कृतवर्माअक्रूरदावकीय ॥ इहांपरसपरमंत्रउपायौ ॥ प्रगटिविरोधसमयजबपायौ ॥ ॥ कृतवर्माउवाच ॥ ॥ सतिभामापुत्रीसत्राजित ॥ हमहिदईहीमानिपरमहित ॥ दुहितासोकृष्णहिलैदीनी ॥ कछूहमारीसंकनकीनी ॥ वैर तासअबकलहवधारौ ॥ मनिहिंलेहुंसत्राजितमारौं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सतधन्वा इनप्रेरिपठायौ ॥ अर्धरैनसोछलकरिआयौ ॥ महानिसासत्राजितमार्यौ ॥ वीरधर्मनहिं चित्तविचार्यौ ॥ मनउपजीतहांबुद्धिमलीनी ॥ लोभहेतमनिषोजिजुलीनी ॥ राषितेलम हँपिताकलेवर ॥ अतिदुषसतिभामाभईआतुर ॥ इहांहस्तिनापुरसोआई ॥ सबैकृष्णसौं बातसुनाई ॥ रामकृष्णतबहीबैठेरथ ॥ पुनिसोइहांक्यौद्वारावतिपथ ॥ इहांजादवसतध न्वाआयौ ॥ आगमरामकृष्णअकुलायौ ॥ ॥ शतधन्वाउवाच ॥ ॥ कृतवर्मासौंभे दजुकीनौ ॥ अबहूंभयकरिभयोअधीनौ ॥ मैतबहितसत्राजितमार्यौ ॥ नियततिहारोवै रनिकार्यौ ॥ अबतौरामकृष्णदोउआए ॥ सकौंनरहिइहांविनासहाए ॥ ॥ कृतवर्मा उवाच ॥ ॥ कृतवर्माअक्रूरत्रासकरि ॥ हैनहिंजुद्धसमानहमहिंहरि ॥ जिनसौंजरासं धभिरिभाग्यौ ॥ लैअक्षोहिनिमथुरालाग्यौ ॥ जगकरताहरताहरिजानौ ॥ नहितिनसौ हमजुद्धप्रमानौ ॥ सातवरषकेबालकसुंदर ॥ राष्योलघुआंगुरिपरगिरवर ॥ छनककुद्द ष्टिजगतजिहिंछीजे ॥ तिनसौंकलहहौसनहिंकीजे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सतधन्वाव हमनिलैसुंदर ॥ अक्रूरहिदीनीव्हैआतुर ॥ भयकरितबसतधन्वाभाग्यौ ॥ ग्रेहनेहतजि मारगलाग्यौ ॥ जबजुतअश्वगयौसौजोजन ॥ तहांगिर्योजबशक्तिघटीतन ॥ इहांबल कृष्णद्वारकाआए ॥ पुनिसतधन्वासुनेपलाए ॥ लीलारामकृष्णसंगलागे ॥ परमविचित्र वैररसपागे ॥ दुष्टजबैमाधवरथदेष्यौ ॥ विकलछांडिहयगयौविशेष्यौ ॥ दिव्यसुरथबल देवहिदीनौ ॥ कृष्णउतरिरितिहिंपाछौकीनौ ॥ प्रभुपहुंचेयहसनमुषआयौ ॥ चक्रपानित बचक्रचलायौ ॥ सिरकाट्यौअरुवस्त्रसंभारे ॥ लहीनमनिविश्वेसविचारे ॥ ॥ श्रीकृष्ण

उवाच ॥ ॥ संकर्षनसौंकह्योकन्हाई ॥ पिसुनहत्योंमैंमनिनाहिपाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांबलभद्रकषाइबधाखो ॥ इनमनिलीसतधन्वामाखो ॥ कृष्णकह्योहमसोंछल कोई ॥ सतिभामाहिमनिदेहैसोई ॥ वाकेपितकीवहमनिआही ॥ तातेंअबसोदेहैताही ॥ इहांबलकह्योरोषजुतअंतर ॥ रणजयकियतुमकृष्णजाहुघर ॥ हमविदेहनृपसोंमिलिऐहैं ॥ हेप्रीतमतातेंकछुरैहैं ॥ इहांउतरिमिथिलापुरआए ॥ पुनिविदेहकोंमिलिसुषपाए ॥ संकर्षनतहांरहेसुभाए ॥ याहीथलदुर्जोधनआए ॥ तहांदुहनमिलिभईमित्राई ॥ सोमिलषेलतसंगसषाई ॥ गदाजुद्धविद्याजोगाई ॥ पैनृपजनकसुइनहिपढाई ॥ सीषेदुर्जोधनसंकर्षन ॥ जनकराजपहँविद्याआपुन ॥ सतधन्वाकोंमारिमहारन ॥ मिलेआनिसतिभामामोहन ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ तेरेपितकोंहत्योंनिहंता ॥ तातेंभामिनितजियेचिंता ॥ षोजकस्योषलमारिमूलषानि ॥ मैवहपाईनहींतहांमनि ॥ कृष्णहिसतिभामारिसकीनी ॥ मनितुमसहीअग्रजहिदीनी ॥ सतिभामावाक्यं ॥ नाथहमहिसोंकपटबनाए ॥ इहांतुमषालीहाथनिआए ॥ कृष्णस्वसुरकोमृतक्रतकीनों ॥ दाहकलेवरकोंलैदीनों ॥ ॥ कविरुवाच ॥ हत्योंजबैसतधन्वारणहारि ॥ कृतवर्माअक्रूरत्रासकरि ॥ भयतैंछांडिद्वारकाभाजे ॥ कासीगएजीयकेकाजे ॥ सोमनिपूजितप्रातहिआवे ॥ अष्टभारकंचननितआवे ॥ सबषरचैअक्रूरसुहायो ॥ तातैंनामदानपतिपायो ॥ जबअक्रूरउहांहैजान्यों ॥ पुनिसबहिनियहकपटप्रमान्यों ॥ जादवबातकरतयोंजनजन ॥ मनिदैकाढिदयोंवहमोहन ॥ इहांघनस्यामसोचकीयऐसो ॥ यहउपज्योंअपवादअनैसो ॥ मायाऐसीप्रेरीमोहन ॥ दुस्सहहोतअरिष्टजुदिनदिन ॥ दैवकसारीरकअतिदारुन ॥ उपजीकोउमानसिकअकारन ॥ उग्रसेनकीसभाएकदिन ॥ जादववृद्धसबैमिलिपुरजन ॥ उनहिकृष्णतबपूछयोऐसो ॥ अशुभहोतकारनयहकैसो ॥ ॥ वृद्धजनउवाच ॥ ॥ पुनितहांबोलेवृद्धपुरातन ॥ अनावृष्टिकासीभईअसहन ॥ प्रभुकासीनृपयहसुधिपाई ॥ जादवसुफलकलियोबुलाई ॥ पुत्रीअपनीपरमप्रीतिपन ॥ नामगांदिनीसर्वसुलछन ॥ सुफलककोंव्याहीसासुंदरि ॥ कछुककालतहांवसेहेतकरि ॥ घरघरआनंदवरषेअतिघन ॥ दुरभषगएअरिष्टदुसहदिन ॥ सुफलककौंसुतसाधसुभाई ॥ लीजैअबअक्रूरबुलाई ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिसबहिनमिलिदूतपठाए ॥ इहांअक्रूरद्वारकाआए ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वासुदेवबोलेविहसि ॥ अहोदानपतिआज ॥ सबकेतुमआवतसरे । कारिजटरेअकाज ॥ १ ॥ सतधन्वातुमकँहँसमझि । मनिदीनीकरिमोह ॥ सबकैतिहिकारनअसह । छनछनबाढतछोह ॥ २ ॥ अबअक्रूरसुमनिइहां । सबकेंदेषतदेह ॥ मिथ्याउपज्योहैजुपन । सोनासैसंदेह ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ महास्यमंमतकनाममनि । प्रतिरविजोतिप्रकास ॥ दीनीकाढिसुदानपति । सबनिभयोंविश्वास ॥ भूमिअर्थसंभावना । पैमनिहोइप्रमान ॥ कृष्णकह्योतिहिंठांप्रगट । नासअनर्थनिदान ॥ यहआष्यानजुहेतअति । पढैगुनैसुषपाइ ॥ ताकोंझूठकलंकतव । सौनिमूलैनसाइ ॥ कारनलीलाकृष्णकी । अद्भुतअगमअपार ॥ कहीजथानरहरसुकवि । अपनीबुधिअनुसार ॥ ॥ इतिश्रीअ० श्रीकृ० दशमस्कं० बारहट

नरहरिदासविरचितेजांबवतीसतिभामाविवाहोनामसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥छंदसोरठा॥ ॥इक्कसमयऋषिलेस, महाभक्तपांडवमिलन ॥ द्वाराव
तीनरेस, इंद्रप्रस्थआएअबे ॥ १ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ इहांपांडुसुतसनमुषआए॥ भेटे
प्रभुहिजथामनभाए ॥ जुजुधानादिकजादवजेते ॥ तहांमिलेजोधाहिततेते ॥ पुनिकुंती
केग्रेहपधारे॥ कीनैनमस्कारहितकारे ॥ पूंछीकुशलकृष्णसुषपाए॥ सबकुंतीवृत्तांतसुनाए॥
प्रभुजबहीअक्रूरपठायौ ॥ भयौकुशलतबतेमनभायौ ॥ तुमसमदृष्टिसबनिकेस्वामी ॥ ज
गजडजंगमअंतरजामी ॥ दुर्लभजोगिनिहूंजोदरसन ॥ पैतुमदयौप्रतक्षसुपावन ॥ हो
तपुराकृतउदयहमारे ॥ प्रभुइहिंग्रेहआपपाउधारे ॥ कृष्णकृपाऔरौअबकीजे ॥ दिनक
छुरहिजेदरसनदीजे ॥ बरषएककौरहनबिचार्यौ ॥ सबहिनकौअभिलाषसवार्यौ ॥ एक
समयगिरधारीअर्जुन ॥ प्रभुनिकसेबनक्रीडापावन ॥ मोहनरथहांकतमनमाने ॥ पार
थबैठेमध्यप्रमाने ॥ निजगांडीवधनुषकरलीने ॥ नियतकसेतूनीरनवीने ॥ नववनघन
आषेटविहारे ॥ महांजंतुदेषेसोइमारे ॥ मृगचित्रकवनमहिषमनोहर ॥ षड्गीससकमृगा
धिपसूकर ॥ जलनभचारगनेकोजेते ॥ तहांभएआषेटकतेते ॥ प्रबलदीर्घजेतेकछुपाए
॥ पुनितेराजापहँपहुंचाए ॥ इहांश्रमितसरितातटआए ॥ सुंदरवनघनदेषिसुहाए ॥
दिव्यतहांइककन्यादेषी ॥ विहिततपस्याकरताविशेषी ॥ पुनिअर्जुनकहँकृष्णपठायौ ॥
भेदलेहुयाकौमनभायौ ॥ ध्यानकरतिइंद्रीदमधन्या ॥ कौधौंयहकाकीहैकन्या ॥ अबअ
र्जुनयाकीढिगआए ॥ पूछतभेदसमयसुषपाए ॥ तहांअर्जुनपूछीगतिताकी ॥ कोतुमआ
हिकन्यकाकाकी ॥ इहांकहौसुरकवनअराधति ॥ सोकिहिंहेतइतौंहठसाधति ॥ पारथ
हौंसूरजकीपुत्री ॥ पुनकालिंदीनामपवित्री ॥ कृष्णचरनहिततपसाकीजत ॥ छनछनका
लसुदुर्लभछीजत ॥ कृष्णवरनकौनिश्चयकीनौ ॥ लोकप्रसिद्धयहैव्रतलीनौ ॥ इहांजमु
नतटवसातिसुइच्छा ॥ प्रभुदरसनकीकरतप्रतिच्छा ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांफिरि
पार्थकृष्णपहँआए ॥ सबकन्याकेमर्मसुनाए ॥ नियतकृष्णसोगरधरिलीनी ॥ कन्यारथ
आरोहितकीनी ॥ इंद्रप्रस्थताकहँलैआए ॥ धर्मसुवनकहँमर्मसुनाए ॥ विसकर्माकहँ
ब्यौतबतायौ ॥ वासुदेवइकनगरवसायौ ॥ कन्याराषीतहांसकारन ॥ अद्भुतइच्छादी
नउधारन ॥ ॥ अथषांडववनप्रसंग ॥ ॥ शक्रविपनइकभूतलसुंदर ॥ उदभिजषा
निअषिलतिहिंअंतर ॥ विहितनामताकौषांडववन ॥ पुनितहांसकलऔषधीपावन ॥
वन्हितहांदेष्यौषांडववन ॥ भएमनोरथताकहँभक्षन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रथमजु
गांतरसुनहुप्रकारा ॥ असुरहिरण्यकस्यपअवतारा ॥ दैत्यभयौआषंडलदारुन ॥ करी
सृष्टितिहिनईसकारन ॥ कर्मजुक्ततिहिंदिगपतिकीने ॥ निसचरराषेदिगनिनवीने ॥ म
यनामाइकदैत्यमहाबल ॥ विश्वकर्मपददीनौनिहचल ॥ षांडववनमहँवसैसुषेचर ॥ स
हितकुटंबभजैसुषसुंदर ॥ पुनिइकदिनखांडववनपावन ॥ जग्यौअनलसोलग्यौजरावन ॥
याहीसमयसघनामिलिआए ॥ बुंदमुशलजलअगनिवुझाए ॥ ज्वालानलउद्यमकियजेते
॥ तिहिंवनदाहफुरतनहींतेते ॥ करिकरिथक्यौमनोरथमंगल ॥ बल्यौनषांडवचलैनाहिबल

इंद्रप्रस्थतबहुतभुकआयौ ॥ पारथजाच्यौसमयजुपायौ ॥ धनुतूनीरपार्थतबधारे ॥ पुनि तिहिंवनरथबैठिपधारे ॥ महाविपनपनिकौमनमान्यौ ॥ जाचन्याहितसुपैनजान्यौ ॥ इ हाअर्जुनषांडववनआए ॥ सरपंजरवनसीसबनाए ॥ जितातितदुसहदवानलजाग्यौ ॥ ॥ लगीषुधाअतिजारनलाग्यौ ॥ व्हैगयौइंद्रतहांउद्यमहत ॥ सघननीरवरपेपनसंजुत ॥ दाहहोतवनमांझदुषारे ॥ पुनितहांमयकेपुत्रपुकारे ॥ आरतवचएसुनेजबअर्जुन ॥ जर तराषिलीनैआसुरजन ॥ वन्हिकह्योचहुंओरदाहवन ॥ मिटीषुधाअभिलापफलेमन ॥ भयौसंतुष्टअगनिमनभायौ ॥ विहतपार्थसौंहेतवढायौ ॥ अषयनिषंगदिव्यधनुदीनै ॥ निरभिदिकवचजुचर्मनवीनै ॥ सेकवाजिजुतरथअतिसुंदर ॥ पार्थहिदीनैअनलप्रेमपर ॥ इहांजबमयषांडववनआयौ ॥ पुनिपरिवारकुसलसौंपायौ ॥ भयौअर्जुनसौतुष्टसुआ सुर ॥ दिव्यसभादीनीतहांसुंदर ॥ भवजलथलतिहिंभक्तिद्वारभ्रम ॥ कारनबहुतविलोक तक्रमक्रम ॥ एसबलैअर्जुनग्रहआयौ ॥ भयौहर्षमाधवमनभायौ ॥ अर्जुनसभानृपहि अवधारी ॥ हैअद्भुतसोसबनिनिहारी ॥ कृष्णद्वारकाआएजयकारि ॥ संगलियैकालिंदी सुंदरि ॥ दिव्यलगनसुभविप्रनदीनौ ॥ कालिंदीसौंव्याहसुकीनौ ॥ कृतवसुदेवदेवकीकी नै ॥ नियतभएउच्छाहनवीनै ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकनगरअवंतीकोनरेंद्र ॥ विहि ततिहिनामविंदानुविंद ॥ तिहिबहिनमित्रविंदाविनीत ॥ पैभईसयानीसोपुनीत ॥ सबपू छिनृपतितिहिंकुलसंभार ॥ व्याहकोकृष्णसौकीयविचार ॥ विंदानविंदकोमहामीत ॥ आ गैहोदुर्जोधनअनीत ॥ संबंधकृष्णसौंतिहिंअसाध ॥ बातैबनाइषलकर्योबाध ॥ पुनिर च्यौस्वयंवरसमयपाइ ॥ अनेकभूपतहांमिलेआइ ॥ प्रभुकृष्णकर्योतिहिंपुरप्रवेस ॥ निः संकसभाबैठेनरेस ॥ वामासुविलोकितअषिलवीर ॥ धरिबांहकृष्णलैचलेधीर ॥ भूपनि कौकीनोमानभंग ॥ इहांकृष्णग्रेहआएअभंग ॥ शुभलगनपूछिमिलिकुलसमाज ॥ कृत वासुदेवतिहिंव्याहकाज ॥ इतिमित्रविंदाविवाह ॥ अवधेसनग्नजितताासनाम ॥ धनवि पुलसुविलसैधराधाम ॥ पुत्रीतिहिंसत्यानामपाइ ॥ सुंदरसुभलक्षणगुनसुभाइ ॥ नृपलयौ नग्नजितव्रतनिदान ॥ कोउसातवृषभनाथैसमान ॥ वसकरैंवृषभगहिएकवार ॥ सोवरै कुंवरिसत्यासुढार ॥ पनकर्योस्वयंवरजगप्रसिद्ध ॥ सबमिलेआनिनृपसमरसिद्ध ॥ हठिरहेसबैनृपमेलिहाथ ॥ नाहिनसमर्थकोउवृषभनाथ ॥ विधसुनीजबैयहवासुदेव ॥ इहांआइनगरकासीअजेव ॥ सुनिवासुदेवआगमनरेस ॥ विधिजुक्तकरीपूजाविसेस ॥ कृष्णाहिविलोकिसोनृपकुमारि ॥ वरवांछाकीनीचितविचारि ॥ नृपकह्योनगनजितयह निदान ॥ तुमपरमपुरुषवेदनिप्रमान ॥ पनकर्योप्रथममैयहप्रमान ॥ देषनकहछत्रीयब लनिदान ॥ गहिवृषभसातजोएकसंग ॥ एकहीवारनाथैअभंग ॥ कन्यायहताकैतातका ल ॥ वरमालकंठमेलैविसाल ॥ प्रभुबांधिपीतपटकटिपुनीत ॥ अषिलेसउठेअंतरअभीत ॥ धरिवृषभसाततनसातधारि ॥ मायाअनंतनाथेमुरारि ॥ कन्यावरमालाहर्षकीन ॥ पहिराइवासुदेवहिप्रवीन ॥ रसरीतिवेदविधिकासिराज ॥ करिसत्याकुंवरीव्याहकाज ॥ कासीनरेसदाइजौकीन ॥ दससहससवत्साधेनुदीन ॥ दीनीप्रवीनत्रयसहसदासि ॥

वनिवसनकनकभूषनविलासि ॥ नवसहसतरुणमदमत्तनाग ॥ बनितिनतेनवगनरथ विभाग ॥ वढिरथतेसतगुनहयविथार ॥ चलितिनतेसतगुनचरनचार ॥ वरणीवरराजि तरथारोह ॥ सबअंगअंगरतिमदनसोह ॥ निस्सेषषिसानेभएनरेस ॥ पुनिआनिपंथरो क्यौप्रवेस ॥ इहांभयौजुद्धतिनसौंअपार ॥ सबगएभाजिकोउभएसंघार ॥ समरकरिविजय जदुकुलनरेस॥पुनिकीनौद्वारावतिप्रवेस॥हितभएनगरघरघरउछाह॥दुर्योधनदुष्टउरपरेदा ह॥इतिसत्याविवाह॥दोहा॥केकैदेसनरेसकीपुत्रीपरमअनूप॥भद्रानामाभामिनी॥पूरनत नगुनरूप॥१॥ कन्यादीनीकृष्णकहँ। वांछितभयौविवाह॥क्रमजुतआएद्वारका। हुवघरघर उच्छाह॥इतिभद्राविवाह॥ मद्रदेसकौमहिपती। विद्याविभवविनीत॥ लक्षनपूरनलक्ष्मणा ।पुत्रीतासपुनीत॥ १ ॥ कर्‌यौस्वयंवरकन्यका। मद्रेसुरहितमानि॥ देसदेसकेनृपतिदल। इहांमिलेसबआनि ॥ एकाकीरथचढिइहां ॥ आएमद्रउदार ॥ हठिसबविचकन्याहरन। कीनौकृष्णकुमार ॥ ३ ॥ कन्याआनीद्वारका। इहांभएउच्छाह ॥ कृष्णालक्ष्मणासौंकर्‌यौ। विधिराक्षसींविवाह ॥ ४ ॥ अतिदुरंतमायाअतुल। जोनिगमागमजान ॥ अषिलसुरासु रहूअगम। नरहरप्रभूनिदान ॥ ५ ॥ ॥ अथअष्टपटरानीनाम ॥ ॥ रुकमनि जांबवतीरमनि। सतिभामासविशेष॥ कालिंदीवृंदाकुंवरि। सत्यासत्यअशेष ॥ ६ ॥ मिलि भद्राअरुलक्ष्मणा। लक्षणगुणजुतलाज॥ पटरानीआठोप्रगट। कृष्णदेवहितकाज॥७॥ इतिश्रीअ०श्री०दश०बारहटनरहरिदासविरचितेअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्रीडाथानकइंद्रकौ। मणिपर्वतइहिंनाम ॥ विविधजला शयसघनवन। सोभासुषविश्राम ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नरकासुरनामानिसा चार ॥ अतिसयअनीतिअरुबलअपार ॥ इंद्रसौंलर्‌यौइहिंठौरआनि ॥ पुनिअसुरविज यपाईप्रमानि ॥ हरिलीनेकुंडलछत्रहेत ॥ सुरपतिकेमणिपर्वतसमेत ॥ इहांभयौपराजय इंद्रआप ॥ सौंआयौद्वारावतिसदाप ॥ सतिभामाकैतिहिंसमयस्याम ॥ मिलदंपतिबैठेध र्मधाम ॥ तिहिंसमयइंद्रआयौसभीत ॥ प्रभुकर्‌यौजथाआदरसप्रीत ॥ वृत्तांतकह्यौवास वबनाइ ॥ जोप्रबलअसुरसौंअजयपाइ ॥ सुनिभएगरुडआरूढस्याम ॥ भामिनिसंगली नैसत्यभाम ॥ पुरअसुरप्रागजोतिषप्रसिद्ध ॥ घनस्यामआइतहांसमरसिद्ध ॥ ॥ अथ मुरदैत्ययुद्ध ॥ ॥ गिरअस्त्रसलिलमंगलसमूल ॥ करिपवनपासजोधानुकूल ॥ इहिंभां तिसप्तआवरणएह ॥ रिधिपुरीकोटदुर्गमअरेह ॥ रणकोटविदारणपैजरोप ॥ इहांकृष्णदे वआएसकोप ॥ गिरदुर्गगदाहनकृतगोविंद ॥ निस्सेषजंत्रवाननिनिकंद ॥ आवरनअन लजलबाणअंत ॥ जलकोटअनलसोष्योजयंत ॥ पुनिमरुतविदार्‌यौचक्रमारि ॥ दुर्गमन पासविसिषहिविदारि ॥ प्राकारगदाहनिचक्रपानि ॥ अषिलेसुरलागेनिकटआनि ॥ आ कासवानिअंतरअमान ॥ भरिरह्यौशब्दतररहभयान ॥ मुरनामदैत्यइकदुष्टमूल ॥ सिर पंचतासआयुधत्रिशूल ॥ निकर्‌यौसोजलतैंनिसाचार ॥ पुनिकर्‌यौसूलगरुडहिप्रहार ॥ मु षपंचकहैसोमारमार ॥ परिसब्दत्रासथिरचरअपार ॥ सिरचक्रछेदकीनैसधीर ॥ रनहत्यौ कृष्णसोमहावीर ॥ सुतबलीवयरापितकेसंभारि ॥ मुहचढेकृष्णतेलएमारि ॥ निसचरसे

नापतिपीठनाम ॥ सोजुद्धोमारिलीनौसंग्राम ॥ सेनासमूहचतुरंगसंग ॥ इहांनिकस्यौन
रकासुरअभंग ॥ विचसमहरदेषेकृष्णवीर ॥ सतघनीसक्तिवाहीसधीर ॥ जाजुल्यमिले
सबसेनजुद्ध ॥ करिसस्त्रअस्त्रप्राहारक्रुद्ध ॥ प्रभुबानचलाएजबप्रचंड ॥ षेचरहतिकीने
षंडषंड ॥ नरकासुरगजआरुहनिसंक ॥ कृष्णसौंजुद्धौपलआनिकंक ॥ कृष्णहित्रिसूल
वाह्योकराल ॥ सोविशिषमारिछेद्योविसाल ॥ वसुदेवकुंवरहतिचंद्रवान ॥ नरकासुरसि
रकाट्यौनिदान ॥ हुवनरकासुरघरहाइहाइ ॥ सुरवरषिपुहपदुंदुभिवजाइ ॥ ॥ दोहा ॥
नागसुरासुरयक्षनर । किन्नरगंधर्वकेरि ॥ कन्याआनीवलकरषि । घरमहँराषीघेरि ॥ १ ॥
सतऊपरसोरहसहस । एकहिएकअनूप ॥ पलपलवाढतगुनप्रतक्ष । प्रतिमालक्षणरूप
॥ २ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इंद्रादिअमररिषिमिलेआनि ॥ करिस्तुतीतहांजयजयतिवा
नि ॥ इंद्रसौंजुद्धौआगेअनीत ॥ जयपायौनरकासुरअजीत ॥ इंद्रकेजथाभूषनअसेष
॥ करिविजयछीनिलीनेविशेष ॥ पुनिआभूषनतेइंद्रपाइ ॥ वंछितभौजयदुंदुभिवजाइ ॥
॥ कविरुवाच ॥ उपज्यौजुभूमिकैगर्भआइ ॥ पुनिभौमासुरइहिंनामपाइ ॥ नरकासुर
ताकौदुतीयनाम ॥ किहुंकारनकेधौंकछुककाम ॥ इहिंहेतभूमिधरदेहआइ ॥ भयजुक्तकरी
विनतीसुभाइ ॥ नरकासुरसुतभगदंतनाम ॥ सौपृथ्वीमेल्यौसरनस्याम ॥ प्रभुचरनल
गायौभुवपुनीत ॥ भगदंतनामपौतोसभीत ॥ प्रभुसीसतासकरधरिप्रवीन ॥ तबदीनवं
धुतिहिअभयदीन ॥ अषिलेसतबैरनिवासआइ ॥ संपतिसुषदेषेतहांसुभाइ ॥ सतएक
सहसषोडससरूद ॥ अविलोकितहांकन्याअनूप ॥ सुरअसुरनागकन्यासुदेस ॥ वयल
छनगुनसोभाविसेस ॥ वलकरषिजुआनीअबलबाल ॥ चितप्रबलनजानीकालचाल ॥
विधिपानिग्रहनकन्याविचार ॥ सोकरतरह्योउद्यमकुचार ॥ कोऊकर्मउदितभौइहांकराल ॥
लैगयोवीचहीझपटिकाल ॥ अविलोकींदेवीछविअनंत ॥ कन्यानिनमान्यौकृष्णकंत ॥ सि
बिकाआरोहकरिकरिअसेष ॥ वनितासोपठईग्रहविशेष ॥ शुभचतुर्दइअरुसेतअंग ॥ म
दमत्तपठइचोसठिमतंग ॥ इहांकृष्णपधारेइंद्रलोक ॥ आभूषनइंद्रहिंदएओक ॥ कहूंना
रदआगैकिहूंकाल ॥ सुभपुहपपारिजातकविसाल ॥ द्विजपुहपसुकृष्णहिआनिदीन ॥
प्रभुरुकमनिग्रहवैठेप्रवीन ॥ नारदकहपठयोपूजिनाथ ॥ हितपुहपदयोरुकमनीहाथ ॥
सोदेषिसत्यभामासुजान ॥ मोहनसौंकीनौतबैमान ॥ कामिनीउभयअरुपुहपएक ॥ वि
श्वेसुरज्ञातारसाविवेक ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ माधवकहित्रियसौंवचनमानि ॥ या
कोतोहिदैहूंवृक्षआनि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नरदेहइंद्रपुरआइनाथा ॥ सुंदरिसतिभा
माहुतीसाथ ॥ द्रुमपारिजाततिहिंठौरदेषि ॥ वनितासुधिकीनौवरविसेषि ॥ सोवृक्षचले
लैहरिसधीर ॥ विहगेसपृष्ठधरिमहावीर ॥ कृतपंथरोधमिलिअमरक्रुद्ध ॥ जाजुलयकृ
ष्णसौंकस्योजुद्ध ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महासुरनिकेमानमलि । द्रुमआन्यौयदुदेव ॥ कृष्ण
सुरोप्यौहेतकरि । भामाधामसमेव ॥ ३ ॥ सुभमंगलमहुरतसुदिन ॥ अरुवैदिकआचार
॥ कृतवसुदेवजुदेवकी । जथावंसविवहार ॥ ४ ॥ क्रमतौरनचौरीकलस ॥ रचेविविधब
हुरंग ॥ कारनजेतीकन्यका । एतेथांभउतंग ॥ ५ ॥ कृष्णकुंवरदैवीसकति । यहअ

द्भूतअपार ॥ नरहरप्रभुसबकन्यका ॥ व्याहिएकहीवार ॥ ६ ॥ एकलगनछनएकदिन । इहांधरिदेहअनंत ॥ प्रभुनरहरऐसीप्रबल । भवइच्छाभगवंत ॥ सबहिनकेअभिलाष सुष । पूरनकरेप्रमान ॥ भावह्यावविलसतभए ॥ नरहरप्रभूनिदान ॥ ॥ इतिश्री अवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरदासविरचिते नरकासुर वधषोडशसहस्रकन्याविवाहवर्णननामएकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ एकसमयअषिलेस, वैदर्भीकेग्रेहवनि ॥ बैठेसेजविशेष, करतपरसपरहास्यक्रम ॥ १ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहांवासुदेवकहितर्कवात ॥ सोरुकमनिउरनाहिनसमात ॥ थितजासचंदेरीराजथान ॥ पुनिवैभवदिगपालनिप्रमान ॥ शुभलछनगुनतनवयस्वरूप ॥ अतुलितप्रतापप्रतिमाअनूप ॥ वरवीरधीरसोचैद्यवंस ॥ सिसुपालनृपतिपृथ्वीप्रसंस ॥ जान्योयहभ्रातादईजाहि ॥ तुमवस्योनहींकिहिंदोषताहि ॥ वहछांडिवस्योतुममोहिआनि ॥ जदुवंसकहाअधिकारजानि ॥ नृपतापदहमकहनाहिंनिदान ॥ पुरिषाजजातिकीनौंप्रमान ॥ पुनिजरासंधभयत्रासपाइ ॥ इहांवसेसिंधुकेसरणआइ ॥ राज्याभिषेकनहिराजथान ॥ भुवभ्रमतरहतअतिहीभयान ॥ जिनकेनहिंमारगजानिजांहि ॥ हमतौनलोकव्यवहारमांहि ॥ प्रतिमागुनवर्जितवयप्रमान ॥ निसप्रेहहमहिंजानौंनिदान ॥ व्यवहारमित्रतावयरवाद ॥ करियैसमानसौंतजिप्रमाद ॥ निस्कामनिगुनकौंभजेनारि ॥ पैंनहिनमनोरथचढैंपारि ॥ आचारउचितक्षत्रीनिएह ॥ सोतुमहूंजानतनिसंदेह ॥ दुष्टनिकौंदीक्षादंडदेहि ॥ हठचढैस्वयंवरजीतिलेंहि ॥ कारणातिहिमैंतवहरणकीन ॥ हैदुष्टकरेसबमानहीन ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ वल्लभमुषतैंसुनिअप्रीयवैन ॥ इहांउपज्योरुकमनिकहँअचैन ॥ अधवदनचरनभुवलिषतआप ॥ परिनीरनयनअंतरसताप ॥ चढिऊर्ध्वस्वाससुधिरहिनचीर ॥ उरकंपरोमउठिउठिअधीर ॥ इहांपायप्रियामनअभिप्राय ॥ अकुलाइकृष्णलीनीउठाय ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ कछुकहेवचनहमहास्यकाज ॥ अपराधक्षमासोकरहुआज ॥ इहउचितगृहाश्रमधर्मआहि ॥ जनकालाछेपनकरतजाहि ॥ ॥ रुकमणिवाक्यं ॥ ॥ पुनिजानिहास्यरुकमनिपुनीत ॥ विधिजुक्तवचनबोलीविनीत ॥ तुमअंतरव्यापकहोअनंत ॥ तिहिंजानतसबकेहृदयतंत ॥ विधिविष्णुरुद्रमहिमावषान ॥ सबकेतुमईश्वरहोसमान ॥ ऐसीअभागकोत्रियअज्ञान ॥ अषिलेसतुमहिंतजिवरैआन ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ व्रतधन्यातिहारोसुनहुवाम ॥ कीनौंजुकह्योपूरनसकाम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कीनौंभ्रातविरूपक्रम । मारिसेनहतमान ॥ तदपितुमहमसौंतहां । मननहिकस्योमलान ॥ ॥ २ ॥ कारनकरनसमर्थकीय । प्रेमकलहसुषपाइ ॥ प्रभुनरहरइच्छाप्रबल । सुरनिअगम्यसुभाइ ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेश्रीकृष्णरुकमिणीप्रतितर्कोनामषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥ ॥ छ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गनीआठपटरानिजु । वयगुनरूपवषान ॥ सोरसहसअरुएकसत । पुनिएवरीप्रमान ॥ १ ॥ एकएकत्रियकैउदर । दशदशपुत्रसुदेस ॥ इहिंक्र

मसंततिकौउदय ॥ जद्दपिहैजोगेस ॥ २ ॥ ग्रेहस्थितगजगामिनी । एतीजदपिअनूप
॥ मोहनकेजीतनमनहि । सोनसमर्थस्वरूप ॥ ३ ॥ ॥ अथरुकमणीपुत्र ॥ ॥ छंद
पधरी ॥ ॥ प्रद्युम्नवडौविद्याविनीत ॥ पुनिद्वितीयचारुदेस २ हिपुनीत ॥ हुवहेसुदे
ष्ण ३ अरुचारुदेह॥४ पंचमसुचारु ५ आकृतिअरेह ॥ हैचारुगुप्त ६ पुनिभद्रचारु॥७
तहांचारुचंद्र ८ सुविचारु ९ चारु॥१० इहक्रमजुरुकमिनीपुत्रएह ॥ दसजानहुकविज
ननिसंदेह ॥ ॥ जांबवतीपुत्र ॥ ॥ इकभयौसांब १ दूजौसुमित्र २॥पुरजित ३ पुनिस
ताजित ४ विधिविचित्र ॥ कहिविजय ५ सहस्राजित ६ चित्रकेतु ७॥ वसुमान ८ द्रविड
९क्रतुरणविजेत १० ॥ ॥ सत्यभामापुत्र ॥ ॥ भौप्रथमभानु १ दूजौसुभानु २॥सुर
भानु ३ प्रगटचोथोप्रभानु ४॥मानहुसुतपंचमभानुमानु ५ ॥ भानिषष्टम ६ इहिंक्रमचंद्र
भानु ॥ भवबृहद्भानु ७ अतिभानुभूप ८॥श्रीभानु ९ दसमप्रतिभानुरूप १०॥इहिंक्रमस
तिभामापुत्रआन ॥ पंडितकविजानतसब्बप्रमान ॥ ॥ सत्यानाग्नजितीपुत्र ॥ ॥ भ
यौभानु १ सुचंद्र २ सुशीलभूप ३॥ अरुवेगवान ४ चित्रगुप्त ५ अनूप ॥ वृष६ संकु ७
आम ८ वसु ९ कुंतिवीर १०॥ सुतनाग्निजितिकेदससधीर ॥ ॥ कालिंदीकेपुत्र ॥ श्रु
त १ प्रथमदुतीयकवि २ वृष ३ जुधीर ४॥पंचमसुवाहु ५ रणभद्रवीर ६॥मिलिसांति ७
दरस ८ अरुपूर्णमास ९॥ पुनिसोमकदस १०वौजगप्रकास ॥ ॥ लक्ष्मणाकेपुत्र ॥ ॥
पहिलोप्रघोष १ गानिगात्रवान ॥ २ बल ३ प्रबल ४ सिंघ ५ ऊर्धग ६ सुजान ॥ अरु
महासक्ति ७ सह ८ सक्तिमान ९॥अपराजित १०दसवौवलअमान ॥ सुतलक्ष्मणाकेए
तेसुजान ॥ प्रतिमास्वरूपविद्याप्रमान ॥ ॥ मित्रविंदाकेपुत्र ॥ ॥ वृक १ हर्ष २ अ
निल ३ मिलवंसवीर ॥ गृध्र ४ अन्नाद ५ वर्धनसधीर ६॥महाश ७ वन्हि ८ पुनिपाव
ननाम ९॥पुनिक्षुधीपुत्र १० मित्रासुनाम ॥ ८ ॥ भद्राकेपुत्र ॥ सुतभोसंग्रामजित १
बृहतसेन २ संग्रामसूर ३ प्रहरन ४ सुषेन ॥ अरिजित ५ सुभद्र ६ जय ७ धाम ८
आयु ॥ ९ अरुजानिदसमसत्यक १० सुभायु॥ सुतभद्राकेएतेसुलच्छि॥ प्रतिमाप्रभाव
पूरनप्रतच्छि ॥ उनसोरसहसमहँमुष्यएक ॥ रोहणीनामवनिताविवेक ॥ सबहिनकेदशद
शभएसुजान ॥ इहभांतिपुत्रसंततिप्रमान ॥ हूवएकलाखइकविसहजार ॥ क्रमजुक्तअसी
ऊपरकुमार ॥ प्रदुम्नकुंवररुकमनीपूत ॥ अनिरुद्धपुत्रताकेअभूत ॥ ॥ अथअनिरुद्ध
विवाह ॥ ॥ जाचन्याकीनीभ्रातजानि ॥ मनअपनेरुकमनिहितमानि ॥ रुकमीतबपु
त्रीसुभसरूप ॥ अनिरुद्धहिदीनीअतिअनूप ॥ सनबंधनिकटजद्दपिसमान ॥ पुनितथा
वचनकीनौप्रमान ॥ रनभूमिनगरकीनौरसाल ॥ वनिनामभोजकटअतिविशाल ॥ वि
धिजुक्तरोचनाकोविवाह ॥ आरंभ्यौरुकमीअतिउछाह ॥ विवहारवंसकीनैविसेस ॥ द्वार
कालगनपठयौसुदेस ॥ अनिरुधवरातसाजीअनूप ॥ भवमिलेसुजादवभूपभूप ॥ मिलि
रामकृष्णरुकमिनिसमेत ॥ वनिकुंवरप्रद्युम्नरनविजेत ॥ इहांजानजबहितोरनहिआइ ॥
सबभांतिकरीपूजासुभाइ ॥ हितजुक्तभयौकन्याविवाह ॥ अरुकरेवंसघरघरउछाह ॥ का
लिंगराजआयौप्रकास ॥ जुतसंपतिदेसकलिंगजास ॥ समदंतवक्रराजाअसाधि ॥ पुनि

करीवैरवसमिलिउपाधि ॥ मनकपटरुकमिसौंकस्यौमंत्र ॥ तिनसबैवताएमरमतंत्र ॥ दंत
वक्रउवाच ॥ यहकहियतसंकर्षनअनंत ॥ दुरविसनदूतयाकहदुरंत ॥ मिलिकरहुअक्षक्री
डाकुमार ॥ सबइनकेजीतैसौंजसार ॥ कविरुवाच ॥ बलदेवरुकमिछलबलविधान ॥मिलि
करतद्यूतलीलासमान॥सतद्रव्यदावकीनौसमंत॥पुनिसहसअयुतरूपकप्रजंत॥तहांरुकमी
जीत्यौडावतीन॥कालिंगराजहसितकंकीन ॥ करिसंकर्षनमनमहँकषाय ॥ लषकोटिदावकी
नैलज्याय ॥ जीत्यौसुडावबलभद्रजानि ॥ ठगरुकमीतबहीकपटठानि ॥ रुकमीउवाच
॥ इहांझूठबोलिकीनौउपाव ॥ देषौमेरोयहपस्यौदाव ॥ कविरुवाच ॥ पुनिकस्यौकोपमन
महंप्रवीन ॥ दसकोटिदावबलभद्रदीन ॥ पुनियहौदावबलदेवपाइ ॥ रुकमीसुकपटबहु
स्यौरचाइ ॥ ॥ रुकमीवाक्यं ॥ ॥ निहचैसुडावमेरौनिदान ॥ पक्षीनिसाषिदैकीयप्र
मान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जबसभामांझयहकपटजानि ॥ वसधर्मभईआकासवानि ॥
॥ आकासवाणीवाक्यं ॥ ॥ यहबोलतहैरुकमीअन्याव ॥ हैदेवसाषिबलभद्रदाव ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ नभवानितहांकीनौनिदान ॥ पैंकरैंनाहिंरुकमीप्रमान ॥ पुनिहसेस
बैमिलिकैकुपात्र ॥ मान्यौबलदेवहितुच्छमात्र ॥ कहितर्कवचनदुर्वादकीन ॥ मुषनीतिधर्म
मनमहँमलीन ॥ सिधिशस्त्रअस्त्रमिलिअक्षसंग ॥ एआहिराजविद्याअभंग ॥ तुमगाइच
रावहुवननिवास ॥ भवनाहिराजविद्याअभ्यास ॥ यहदुष्टवचनरुकमीउचारि ॥ रिसकरी
मूंडतबमुसलमारि ॥ बलभद्रविजयभएकरवषान ॥ पुनिकुंवररुक्मीतहांदएप्रान ॥ तेईदं
तवक्रकेतोरिदंत ॥ सोहस्यौहुतौजिनकरिअसंत ॥ अन्नेकदुष्टजेमिलेआइ ॥ पुनिगएसबै
तेनृपपलाइ ॥ रुकमनीकछुनबोलीरिसाइ ॥ पुनिप्रगटबंधुकोकपटपाइ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ कस्यौविजयमास्यौरुकमि । सहितबंधुदलसाज ॥ कृष्णपधारेद्वारका । रामसहितजदु
राज ॥ इतिश्रीअ०श्रीकृ०द०बा०नरहरिदासविरचितेश्रीकृष्णसंततिकथनंअनिरुद्ध
विवाहरुकमीकुमारवधोनामएकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वडोपुत्रबलिराजको । बाणासुतिहिनाम ॥ कुलदैत्यइक
सहसकर । सुरजीतेसंग्राम ॥ हरआगेनाचेहरषि । भुजाउठाइअभीत । बाजितबाजेसो
विविधि । अरुगावैहरगीत ॥ २ ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हरकह्यौत
हांसुप्रसन्नहोइ ॥ कहिमांगिअबैवरदानकोइ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ हरहोहुनगरमम
दंडधार ॥ प्रभुकरहुतहांरक्षाप्रचार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिकस्यौरुद्रसोईप्रमान ॥
निसदिवसकरतरक्षानिदान ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ हरसौंबाणासुरजोरिहाथ ॥ गर्वव
सकहीइकबहुरिगाथ ॥ हैनाथहाथमेरेहजार ॥ भवमोकहँतिनकौलगतभार ॥ जगमैंसम
र्थकोउमैनजानि ॥ अतिबलीजुरैमोसौंजुआनि ॥ दिग्गजसमेतदिगपालदेव ॥ भयभा
गिगएममजानिभेव ॥ कृतचूरनमैंपर्वतअनेक ॥ काहूंनहिकीनीनिकटेक ॥ जगदीश्वरता
तैंतुमहिजुद्ध ॥ प्रभुलरहुआनिमोसौंप्रसिद्ध ॥ भुजहैषुजातमुहिलगतभार ॥ अबकरहुदे
वआज्ञाउदार ॥ ॥ हरउवाच ॥ ॥ हरहसेतवैषलगर्वदेषि ॥ विश्वेसवचनबोलेविशेषि
॥ तवग्रेहधजागिरिअकस्मात ॥ तबजानियहैतूसत्यवात ॥ करियैप्रमानतवसिद्धिकाज ॥

उपज्यौजुधकर्ताकोउकश्राज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिकरैप्रतीक्षाधजापात ॥
वासुरनिसिवंछैयहैवात ॥ जबभयौकृष्णकोजन्मजानि ॥ पंरिश्रकस्मातगृहध्वजप्रमानि॥
बाणसुरकैंसुंदरसरूप ॥ इकऊषानामपुत्रीश्रनूप ॥ ॥ ऊषाप्रसंग ॥ ॥ निसश्रर्धसय
नसोवतानिचिंत ॥ श्रनिरुद्धस्वप्नदेष्यौश्रचिंत ॥ सुपसयनपुरुषदेष्योसरूप ॥ श्रतिल
छनगुनप्रतिमाश्रनूप ॥ उब्भरीयरोमउरकंपश्राइ ॥ भौस्वप्नदरससात्विकसुभाइ ॥ इ
हांजागिउठीदेष्योनश्रोर ॥ ठहरातनहीजियकिहीठौर ॥ दुषभयौकहतिचाहतदिगंत ॥
रेकहांगयौतूंश्रबहिकंत ॥ विवरणकपोलतनछीनवाम ॥ विरहातुरउरमनमथविराम ॥ कुं
भांडनाममंत्राधिकार ॥ प्रियबाणासुरकौचितप्रचार ॥ मंत्रीकीकन्याउषामित्र ॥ तिहिंना
मचित्रलेषाविचित्र ॥ सोरहैनिरंतरउषासंग ॥ उरउपजीचिंतादेषिश्रंग ॥ ॥ चित्रले
खाउवाच ॥ ॥ मुरझानीचंपकमनहुमाल ॥ हैउषादेहतववकनहाल ॥ श्रविलोकिदसा
इहिउषाश्रंग ॥ पूंछ्यौजुचित्रलेषाप्रसंग ॥ ॥ उषावाक्यं ॥ ॥ हूंनिसाश्रर्धसोवतिनि
संग ॥ प्रतिरंगपुहपसज्याप्रजंक ॥ वहसमयस्वप्नमैछबिश्रनेक ॥ श्रविलोक्योसुंदरपुरु
षएक ॥ क्रमजागिउठीसबदेषिकौन ॥ कितगयौनजानौंहुतौकौन ॥ श्राजानवाहुघनवरन
श्रंग ॥ श्रतिदीर्घनयनमनुछविश्रभंग ॥ वनमालकंठवनिउरविसाल ॥ भूवबालभृंगउत्तं
गमाल ॥ इहप्रतिमामैदेष्यौजुश्राहि ॥ तबतेमनढूंढतफिरताहि ॥ पाऊंकैताकौंकिहुंप्र
योग ॥ कैसमरदसादसमीसंजोग ॥ ॥ चित्रलेषावाक्यं ॥ ॥ इहांकह्योचित्रलेषाजु
एहु ॥ सषिछांडिश्रबैमनकौंसंदेहु ॥ हैपुरुषजमैत्रइलोकमांह ॥ वलछलकरिश्रानोंपक
रिबांह ॥ सषिकरिहौंतबश्रभिलाषसिद्ध ॥ पैंवचवमानिमेरोप्रसिद्ध ॥ ॥ कविरुवाच
॥ ॥ जगहुतेजितेजदुवंसजाति ॥ भवलिषेचित्रप्रतिमासुभाति ॥ नृपउग्रसेनवसुदेव
नाम ॥ सुभगौरदेहबलभद्रस्याम ॥ प्रद्युम्नसंगश्रनिरुद्धपूत ॥ इत्यादिवीरचित्रेश्रभूत ॥
एचित्रउषाकहँदएश्रानि ॥ पुनिकह्योसषीइनमहँपिछानि ॥ सबचित्रउषादेषेसुभाइ ॥
प्रद्युम्नचितयलज्यासुपाइ ॥ श्रनिरुद्धहिदेष्योजबैश्रानि ॥ पुनिऊषाउहैप्रतिमाप्रमानि॥
वसप्रेमचित्रलेषाविसेस ॥ पथगगनद्वारकाकियप्रवेस ॥ पुनिसेजसयनश्रनिरुद्धपाइ ॥
इहिजोगसक्तिश्रान्योउठाइ ॥ रतिगर्भप्रद्युम्नसुतश्रेरह ॥ श्रनिरुद्धनामसषिलेहुएह ॥
वसप्रेमकह्योगांधर्वव्याह ॥ इहांकरेउषामनहीउछाह ॥ रसरीतिउभयजोबनारूढ ॥ गृह
धर्मसुसेवाकरैगूढ ॥ करिरूपतासमोहितकुमार ॥ वीत्यौजुकालसोनहिविचार ॥ इकसम
यगौषतरहरश्रजान ॥ पुनिपरेपुहपतांबूलपान ॥ कंचुकिनसुपैदेष्यौकुवेस ॥ पुनिकीयप्र
मानतहांनरप्रवेस॥ ॥ कंचुकीवाक्यं ॥ ॥ प्रभुकुंवरिग्रेहनौतनप्रकार ॥ सबमरमकंच
कीकहिविचार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनिकन्यादूषनश्रसुरईस ॥ वससोचचित्ततहांधुन्यौ
सीस ॥ श्रकुलाइपुत्रिकाग्रेहश्राइ ॥ पुनितहांवसतश्रनिरुद्धपाइ ॥ सोकामपुत्रतादससरूप
॥ श्रविलोकिश्रलौकिकछविश्रनूप ॥ विसमोहकह्योतवचितविचार ॥ शुभथानइहांमारु
तसंचार ॥ ॥ बाणासुरउवाच ॥ पुनिकह्योभृतनिगाहिलेहुपाप ॥ यहसुनतउठ्यौश्र
निरुद्धश्राप ॥ लैपरिघप्रहारेसुभटसूर ॥ चितभंगभजेकोउभएचूर ॥श्रायौबाणासुरबलश्र

करीवैरवसमिलिउपाधि ॥ मनकपटरुकमिसौंकह्योमंत्र ॥ तिनसबैबताएमरमतंत्र ॥ दंत
वक्रउवाच ॥ यहकहियतसंकर्षनअनंत ॥ दुरविसनदूतयाकहदुरंत ॥ मिलिकरहुअक्षक्री
डाकुमार ॥ सबइनकेजीतैसौंजसार ॥ कविरुवाच ॥ बलदेवरुकमिछलवलविधान ॥ मिलि
करतद्यूतलीलासमान ॥ सतद्रव्यदावकीनौसमंत ॥ पुनिसहसअयुतरूपकप्रजंत ॥ तहांरुकमी
जीत्यौडावतीन ॥ कालिंगराजहसितर्ककीन ॥ करिसंकर्षनमनमहँकषाय ॥ लषकोटिदावकी
नैलज्याय ॥ जीत्यौसुडावबलभद्रजानि ॥ ठगरुकमीतबहीकपटठानि ॥ रुकमीउवाच
॥ इहांझूठबोलिकीनौउपाव ॥ देषौमेरोयहपरयौदाव ॥ कविरुवाच ॥ पुनिकह्योकोपमन
महंप्रवीन ॥ दसकोटिदावबलभद्रदीन ॥ पुनियहौदावबलदेवपाइ ॥ रुकमीसुकपटबहु
रचौरचाइ ॥ ॥ रुकमीवाक्यं ॥ ॥ निहचैसुडावमेरौनिदान ॥ पक्षीनिसापिदैकीयप्र
मान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जबसभामांझयहकपटजानि ॥ वसधर्मभईआकासवानि ॥
॥ आकासवाणीवाक्यं ॥ ॥ यहबोलतहैरुकमीअन्याव ॥ हैदेवसाषिबलभद्रदाव ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ नभवानितहांकीनौनिदान ॥ पैंकरैनाहिंरुकमीप्रमान ॥ पुनिहसेस
बैमिलिकैकुपात्र ॥ मान्यौबलदेवहितुच्छमात्र ॥ कहितर्कवचनदुर्वादकीन ॥ सुषनीतिधर्म
मनमहँमलीन ॥ सिधिशस्त्रअस्त्रमिलिअक्षसंग ॥ एआहिराजविद्याअभंग ॥ तुमगाइच
रावहुवननिवास ॥ भवनाहिराजविद्याअभ्यास ॥ यहदुष्टवचनरुकमीउचारि ॥ रिसकरी
मूंडतबमुसलमारि ॥ वलभद्रविजयभएकरवषान ॥ पुनिकुंवररुक्मीतहांदएप्रान ॥ तेईदं
तवक्रकेतोरिदंत ॥ सोहस्यौहुतौजिनकरिअसंत ॥ अन्नेकदुष्टजेमिलेआइ ॥ पुनिगएसबै
तेनृपपलाइ ॥ रुकमनीकछुनबोलीरिसाइ ॥ पुनिप्रगटबंधुकोकपटपाइ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ कह्यौविजयमारयौरुकमि । सहितबंधुदलसाज ॥ कृष्णपधारेद्वारका । रामसहितजदु
राज ॥ इतिश्रीअ०श्रीकृ०द०वा०नरहरिदासविरचितेश्रीकृष्णसंततिकथनंअनिरुद्ध
विवाहरुकमीकुमारवधोनामएकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वडोपुत्रबलिराजकौ । बाणासुतिहिंनाम ॥ कुलदैत्यइक
सहसकर । सुरजीतेसंग्राम ॥ हरआगैनाचेहरषि । भुजाउठाइअभीत । वाजितवाजेसो
विविधि । अरुगावैहरगीत ॥ २ ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हरकह्यौत
हांसुप्रसन्नहोइ ॥ कहिमांगिअबैवरदानकोइ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ हरहोहुनगरमम
दंडधार ॥ प्रभुकरहुतहांरक्षाप्रचार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिकह्यौरुद्रसोईप्रमान ॥
निसदिवसकरतरक्षानिदान ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ हरसौंबाणासुरजोरिहाथ ॥ गर्वव
सकहीइकबहुरिगाथ ॥ हैनाथहाथमेरेहजार ॥ भवमोकहँतिनकौलगतभार ॥ जगमैंसम
र्थकोउमैनजानि ॥ अतिबलीजुरैमोसौंजुआनि ॥ दिग्गजसमेतदिगपालदेव ॥ भयभा
गिगएममजानिभेव ॥ कृतचूरनमैंपर्वतअनेक ॥ काहूंनहिकीनीनैकटेक ॥ जगदीश्वरता
तैंतुमहिजुद्ध ॥ प्रभुलरहुआनिमोसौंप्रसिद्ध ॥ भुजहैंपुजातमुहिलगतभार ॥ अबकरहुदे
वआज्ञाउदार ॥ ॥ हरउवाच ॥ ॥ हरहसेतबैषलगर्वदेषि ॥ विश्वेसबचनबोलेविशेषि
॥ तवग्रेहधजागिरिअकस्मात ॥ तबजानियहैतूसत्यवात ॥ करियैप्रमानतबसिद्धिकाज ॥

उपज्यौजुधकर्ताकोउकअ्राज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिकरैंप्रतीक्षाधजापात ॥
वासुरनिसिवंछैयहैवात ॥ जबभयौकृष्णकोजन्मजानि ॥ परिअ्रकस्मातगृहध्वजप्रमानि॥
बाणसुरकैंसुंदरसरूप ॥ इकऊषानामपुत्रीअ्रनूप ॥ ॥ ऊषाप्रसंग ॥ ॥ निसअ्रर्धसय
नसोवतानिचिंत ॥ अ्रनिरुद्धस्वप्नदेष्यौअ्रचित ॥ सुपसयनपुरुषदेष्यौसरूप ॥ अ्रतिल
छनगुनप्रतिमाअ्रनूप ॥ उभरीयरोमउरकंपआइ ॥ भौस्वप्नदरससात्विकसुभाइ ॥ इ
हांजागिउठीदेष्यौनअ्रोर ॥ ठहरातनहीजियकिहीठौर ॥ दुषभयौकहतिचाहतदिगंत ॥
रेकहांगयौतूअ्रबहिकंत ॥ विवरणकपोलतनछीनवाम ॥ विरहातुरउरमनमथविराम ॥ कुं
भांडनाममंत्राधिकार ॥ प्रियबाणासुरकौचितप्रचार ॥ मंत्रीकीकन्याउषामित्र ॥ तिहिंना
मचित्रलेषाविचित्र ॥ सोरहैनिरंतरउषासंग ॥ उरउपजीचिंतादेषिअ्रंग ॥ ॥ चित्रले
खाउवाच ॥ ॥ मुरझानीचंपकमनहुमाल ॥ हैउषादेहतववकनहाल ॥ अ्रविलोकिदसा
इहिंउषाअ्रंग ॥ पूंछयौजुचित्रलेषाप्रसंग ॥ ॥ उषावाक्यं ॥ ॥ हूंनिसाअ्रर्धसोवतिनि
संग ॥ प्रतिरंगपुहपसज्याप्रजंक ॥ वहसमयस्वप्नमैंछविअ्रनेक ॥ अ्रविलोक्योसुंदरपुरु
षएक ॥ क्रमजागिउठीसबदेषिकौन ॥ कितगयौनजानौंहुतौकौन ॥ आजानबाहुघनवरन
अ्रंग ॥ अ्रतिदीर्घनयनमनुछविअ्रभंग ॥ वनमालकंठवनिउरविसाल ॥ भ्रूवबालभृंगउत्तं
गभाल ॥ इहप्रतिमामैंदेष्यौजुआहि ॥ तबतेमनढूंढतफिरताहि ॥ पाऊंकैताकौकिहुंप्र
योग ॥ कैसमरदसादसमीसंजोग ॥ ॥ चित्रलेषावाक्यं ॥ ॥ इहांकह्योचित्रलेषाजु
एहु ॥ सषिछांडिअ्रबैमनकौंसदेहु ॥ हैपुरुषजमैंत्रइलोकमांह ॥ बलछलकरिआनौंपक
रिबांह ॥ सषिकरिहौंतबअ्रभिलाषसिद्ध ॥ पैंवचवमानिभैरौप्रसिद्ध ॥ ॥ कविरुवाच
॥ ॥ जगहुतेजितजदुवंसजाति ॥ भवलिषेचित्रप्रतिमासुभाति ॥ नृपउग्रसेनवसुदेव
नाम ॥ सुभगौरदेहबलभद्रस्याम ॥ प्रद्युम्नसंगअ्रनिरुद्धपूत ॥ इत्यादिवीरचित्रेअ्रभूत ॥
एचित्रउषाकहँदएआनि ॥ पुनिकह्योसषीइनमहँपिछानि ॥ सबचित्रउषादेषसुभाइ ॥
प्रद्युम्नचितयलज्यासुपाइ ॥ अ्रनिरुद्धहिदेष्यौजबैआनि ॥ पुनिऊषाउहैप्रतिमाप्रमानि॥
वसप्रेमाचित्रलेषाविसेस ॥ पथगगनद्वारकाकियप्रवेस ॥ पुनिसेजसयनअ्रनिरुद्धपाइ ॥
इहिजोगसक्तिआन्यौउठाइ ॥ रतिगर्भप्रद्युम्नसुतअ्ररेह ॥ अ्रनिरुद्धनामसषिलेहुएह ॥
वसप्रेमकह्योगांधर्वव्याह ॥ इहांकरेउषामनहीउछाह ॥ रसरीतिउभयजोबनारूढ ॥ गृह
धर्मसुसेवाकरैगूढ ॥ करिरूपतासमोहितकुमार ॥ वीत्यौजुकालसोनहिविचार ॥ इकसम
यगौषतरहरअ्रजान ॥ पुनिपरेपुहपतांबूलपान ॥ कंचुकिनसुपैदेष्यौकुवेस ॥ पुनिकीयप्र
मानतहांनरप्रवेस॥ ॥ कंचुकीवाक्यं ॥ ॥ प्रभुकुंवरियेहनौतनप्रकार ॥ सबमरमकंच
कीकहिविचार॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥ सुनिकन्यादूषनअ्रसुरईस ॥ वससोचचित्ततहांधुन्यौ
सीस ॥ अ्रकुलाइपुत्रिकाग्रेहआइ॥ पुनितहांवसतअ्रनिरुद्धपाइ ॥ सोकामपुत्रतादससरूप
॥ अ्रविलोकिअ्रलौकिकछबिअ्रनूप ॥ विसमोहकह्यौतबचितविचार ॥ शुभथानइहांमारु
तसंचार ॥ ॥ बाणासुरउवाच ॥ पुनिकह्योभृतनिगहिलेहुपाप ॥ यहसुनतउठ्यौअ्र
निरुद्धआप ॥ लैपरिघप्रहारेसुभटसूर ॥ चितभंगभजेकोउभएचूर॥आयौबाणासुरबलअ्र

करीवैरवसमिलिउपाधि ॥ मनकपटरुकमिसौंकह्योमंत्र ॥ तिनसबैव्रताएमरमतंत्र ॥ दंत वक्रउवाच ॥ यहकहियतसंकर्षनअनंत ॥ दुरविसनदूतयाकहदुरंत ॥ मिलिकरहुअक्षकी डाकुमार ॥ सबइनकेजीतैसौंजसार ॥ कविरुवाच ॥ वलदेवरुकमिछलबलविधान ॥ मिलि करतद्यूतलीलासमान ॥ सतद्रव्यदावकीनौसमत ॥ पुनिसहसअयुतरूपकप्रजंत ॥ तहांरुकमी जीत्योडावतीन ॥ कालिंगराजहसितर्ककीन ॥ करिसंकर्पनमनमहँकषाय ॥ लषकोटिदावकी नैलज्याय ॥ जीत्यौसुडावबलभद्रजानि ॥ ठगरुकमीतबहीकपटठानि ॥ रुकमीउवाच ॥ इहांझूठबोलिकीनौउपाव ॥ देपौमेरोयहपरयोदाव ॥ कविरुवाच ॥ पुनिकह्योकोपमन महंप्रवीन ॥ दसकोटिदावबलभद्रदीन ॥ पुनियहौदावबलदेवपाइ ॥ रुकमीसुकपटबहु ख्यौरचाइ ॥ ॥ रुक्मीवाक्यं ॥ ॥ निहचैसुडावमेरोनिदान ॥ पक्षीनिसापिदेकीयप्र मान ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ जबसभामांझयहकपटजानि ॥ वसधर्मभईआकासवानि ॥ ॥ आकासवाणीवाक्यं ॥ ॥ यहबोलतहैरुकमीअन्याव ॥ हैदेवसापिवलभद्रदाव ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नभवानितहांकीनौनिदान ॥ पैंकरैनाहिंरुकमीप्रमान ॥ पुनिहसेस बैमिलिकैकुपात्र ॥ मान्यौबलदेवहितुच्छमात्र ॥ कहितर्कवचनदुर्वादकीन ॥ सुपनीतिधर्म मनमहँमलीन ॥ सिधिशस्त्रअस्त्रमिलिअक्षसंग ॥ एआहिराजविद्याअभंग ॥ तुमगाइच रावहुवननिवास ॥ भवनाहिराजविद्याअभ्यास ॥ यहदुष्टवचनरुकमीउचारि ॥ रिसकरी मूंडतबमुसलमारि ॥ बलभद्रविजयभएकरवषान ॥ पुनिकुंवररुक्मीतहांदएप्रान ॥ तेईदं तवक्रकेतोरिदंत ॥ सोहस्यौहुतौजिनकरिअसंत ॥ अनेकदुष्टजेमिलेआइ ॥ पुनिगएसबै तेनृपपलाइ ॥ रुकमनीकछुनबोलीरिसाइ ॥ पुनिप्रगटबंधुकोकपटपाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्योविजयमारयौरुकमि । सहितबंधुदलसाज ॥ कृष्णपधारेद्वारका । रामसहितजदु राज ॥ इतिश्रीअ०श्रीकृ०द०वा०नरहरिदासविरचितेश्रीकृष्णसंततिकथनंअनिरुद्ध विवाहरुकमीकुमारवधोनामएकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वडोपुत्रबलिराजकौ । वाणासुतिहिंनाम ॥ कुलदैत्यइक सहसकर । सुरजीतेसंग्राम ॥ हरआगैनाचेहरषि । भुजाउठाइअभीत । वाजितवाजेसो विविधि । अरुगावैहरगीत ॥ २ ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ हरकह्यौत हांसुप्रसन्नहोइ ॥ कहिमांगिअबैवरदानकोइ ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ हरहोहुनगरमम दंडधार ॥ प्रभुकरहुतहांरक्षाप्रचार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिकह्यौरुद्रसोईप्रमान ॥ निसदिवसकरतरक्षानिदान ॥ ॥ बाणउवाच ॥ ॥ हरसौंवाणासुरजोरिहाथ ॥ गर्वव सकहीइकबहुरिगाथ ॥ हैनाथहाथमेरेहजार ॥ भवमोकहँतिनकौलगतभार ॥ जगमैसम र्थकोउमैनजानि ॥ अतिबलीजुरैमोसौजुआनि ॥ दिग्गजसमेतादिगपालदेव ॥ भयभा गिगएममजानिभेव ॥ कृतचूरनमैपर्बतअनेक ॥ काहूंनहिकीनीनैकटेक ॥ जगदीश्वरता तैतुमहिजुद्ध ॥ प्रभुलरहुआनिमोसौंप्रसिद्ध ॥ भुजहैंषुजातमुहिलगतभार ॥ अबकरहुदे वआज्ञाउदार ॥ ॥ हरउवाच ॥ ॥ हरहसेतबैषलगर्वदेषि ॥ विश्वेसबचनबोलेविशेषि ॥ तवग्रेहधजागिरिअकस्मात ॥ तबजानियहैतूसत्यबात ॥ करियैप्रमानतबसिद्धिकाज ॥

उपज्यौजुधकर्ताकोउकआज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिकरैप्रतीक्षाधजापात ॥
वासुरनिसिवंछैयहैवात ॥ जबभयौकृष्णकौजन्मजानि ॥ परिअकस्मातगृहध्वजप्रमानि॥
बाणसुरकैंसुंदरसरूप ॥ इकऊषानामपुत्रीअनूप ॥ ॥ ऊपाप्रसंग ॥ ॥ निसअर्धसय
नसोवतानिचिंत ॥ अनिरुद्धस्वप्नदेष्यौअचिंत ॥ सुपसयनपुरुषदेष्यौसरूप ॥ अतिल
छनगुनप्रतिमाअनूप ॥ उबसरीयरोमउरकंपआइ ॥ भौस्वप्नदरससात्विकसुभाइ ॥ इ
हांजागिउठीदेष्यौनओर ॥ ठहरातनहीजियकिहीठौर ॥ दुषभयौकहतिचाहतदिगंत ॥
रेकहांगयौतूअवहिकंत ॥ विवरणकपोलतनछीनवाम ॥ विरहातुरउरमनमथविराम ॥ कुं
भांडनाममंत्राधिकार ॥ प्रियबाणासुरकौचितप्रचार ॥ मंत्रीकीकन्याउषामित्र ॥ तिहिंना
मचित्रलेषाविचित्र ॥ सोरहैनिरंतरउषासंग ॥ उरउपजीचिंतादेषिअंग ॥ ॥ चित्रले
खाउवाच ॥ ॥ मुरझानीचंपकमनहुमाल ॥ हैउषादेहतववकनहाल ॥ अविलोकिदसा
इहिंउषाअंग ॥ पूंछयौजुचित्रलेषाप्रसंग ॥ ॥ उषावाक्यं ॥ ॥ हूंनिसाअर्धसोवतिनि
संग ॥ प्रतिरंगपुहपसज्याप्रजंक ॥ वहसमयस्वप्नमैछबिअनेक ॥ अविलोक्यौसुंदरपुरु
षएक ॥ क्रमजागिउठीसबदेषिकौन ॥ कितगयौनजानौहुतौकौन ॥ आजानवाहुघनवरन
अंग ॥ अतिदीर्घनयनमनुछविअभंग ॥ वनमालकंठवनिउरविसाल ॥ भूवबालभृंगउत्तं
गभाल ॥ इहप्रतिमामैदेष्यौजुआहि ॥ तबतेमनढूंढतफिरताहि ॥ पाऊंकैताकौंकिहुंप्र
योग ॥ कैसमरदसादसमीसंजोग ॥ ॥ चित्रलेषावाक्यं ॥ ॥ इहांकह्यौचित्रलेषाजु
एहु ॥ सषिछांडिअबैमनकौसंदेहु ॥ हैपुरुषजमैत्रइलोकमांह ॥ बलछलकरिआनौपक
रिबांह ॥ सषिकरिहौंतबअभिलाषसिद्ध ॥ पैंवचवमानिमेरौप्रसिद्ध ॥ ॥ कविरुवाच
॥ ॥ जगहुतेजितेजदुवंसजाति ॥ भवलिषेचित्रप्रतिमासुभाति ॥ नृपउग्रसेनवसुदेव
नाम ॥ सुभगौरदेहबलभद्रस्याम ॥ प्रद्युम्नसंगअनिरुद्धपूत ॥ इत्यादिवीरचित्रेअभूत ॥
एचित्रउषाकहँदएआनि ॥ पुनिकह्यौसषीइनमहँपिछानि ॥ सबचित्रउषादेषसुभाइ ॥
प्रद्युम्नचितयलज्यासुपाइ ॥ अनिरुद्धहिदेष्यौजबैआनि ॥ पुनिऊषाउहैप्रतिमाप्रमानि॥
वसप्रेमचित्रलेषाविसेस ॥ पथगगनद्वारकाकियप्रवेस ॥ पुनिसेजसयनअनिरुद्धपाइ ॥
इहिजोगसक्तिआन्यौउठाइ ॥ रतिगर्भप्रद्युम्नसुतअरेह ॥ अनिरुद्धनामसषिलेहुएह ॥
वसप्रेमकह्यौगांधर्वव्याह ॥ इहांकरेउषामनहीउछाह ॥ रसरीतिउभयजोबनारूढ ॥ गृह
धर्मसुसेवाकरैगूढ ॥ करिरूपतासमोहितकुमार ॥ वीत्यौजुकालसोनहिविचार ॥ इकसम
यगौषतरहरअजान ॥ पुनिपरेपुहपतांबूलपान ॥ कंचुकिनसुपैदेष्यौकुवेस ॥ पुनिकीयप्र
मानतहांनरप्रवेस॥ ॥ कंचुकीवाक्यं ॥ ॥ प्रभुकुंवरिग्रेहनौतनप्रकार ॥ सबमरमकंच
कीकहिविचार ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सुनिकन्यादूषनअसुरईस ॥ वससोचचित्ततहांधुन्यौ
सीस ॥ अकुलाइपुत्रिकाग्रेहआइ ॥ पुनितहांवसतअनिरुद्धपाइ ॥ सोकामपुत्रताहसरूप
॥ अविलोकिअलौकिकछविअनूप ॥ विसमोहकह्यौतबचितविचार ॥ शुभथानइहांमारु
तसंचार ॥ ॥ बाणासुरउवाच ॥ पुनिकह्यौभृतनिगहिलेहुपाप ॥ यहसुनतउठ्यौअ
निरुद्धआप ॥ लैपरिघप्रहारेसुभटसूर ॥ चितभंगभजेकोउभएचूर॥आयौबाणासुरबलअ

मान ॥ तिहिंनागपाशबांध्यौनिदान ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिबंधनअनिरुद्धकौं । रोक्यौ
दुर्गमठौर ॥ उषाकरतअतिसोकउर । इहांउपायनऔर ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरि
त्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासाविरचितेअनिरुद्धअवरोधोनाम
द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अनिरुद्धहिषोजतअतुर । तहांचौमासवितीत ॥ कहू
नपायौसोधकछु । भएचित्तभयभीत ॥ १ ॥ आएमुनिनारदइहां । विद्याविनयविशेष॥
तत्कालज्ञतपसाअतुल । कीनोपुरहिप्रवेस ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ द्विजआनिदरसनदी
न ॥ प्रभुपूजिचरनप्रवीन ॥ इहांबैठिअकलअजेव ॥ द्विजसंगमिलिजदुदेव ॥ ॥ श्री
कृष्णउवाच ॥ ॥ अनिरुद्धगौअग्यात ॥ तिहिंसौधभौनहिंतात ॥ कहिऋषिहिकृष्ण
कुमार ॥ यहचित्तसोचअपार ॥ अबचारिमासविहाइ ॥ पुनिकहुंसोधनपाइ ॥ तुमते
नकछुअग्यात ॥ तुमतृकालज्ञविख्यात ॥ तिहिंकुँवरगवनतुरंत ॥ तहांकह्योऋषिवृतंत ॥
॥ नारदउवाच ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ श्रोणितपुरपत्तनइकसुंदर ॥ राजदैत्यकरैबा
णासुर ॥ बलिकौपुत्रअभीतमहाबल ॥ दुर्गमथानसंगआसुरदल ॥ रिसकरितिहिंअनि
रुद्धहिरोक्यौ ॥ विषमकर्मजबकुंवरविलोक्यौ ॥ हैअनिरुधसोणितपुरमांही ॥ नरकौत
हांप्रवेसजुनांही ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ देजुजुधानआदिसबजादव ॥ वरनवरनसाजे
रथअतिजब ॥ संगबलदेवस्यामघनसुंदर ॥ प्रदुमनसांबजथाजुधपरिकर ॥ चलीप्रबल
सेन्याचतुरंगनि ॥ षलषयालद्वादशअक्षौहिनि ॥ प्रातआनिघेस्योश्रोणितपुर ॥ बलदलसा
जिउठ्यौबाणांसुरर॥ निकस्यौकोटद्वारतैंनिसचर ॥ सजियाकीदिसआएशंकर ॥ वृषभ
चढेकरडमरुबजावत ॥ फाबतरोसत्रिशूलफिरावत ॥ रणप्रतिभटलोचनरोषारुन॥ ढुंदजु
द्धजूटतभएदारुन ॥ रुद्रकृष्णसौभयौमहारन ॥ मुहचाढिकार्तिकेयअरुप्रद्युमन ॥ सात्य
किजादवअरुबाणासुर ॥ सांबकुमारबाणसुतसमसर ॥ एकइतेबलदेवजुओपे ॥ कूपक
र्णकुंभांडसकोपे ॥ इहक्रमघोरजुद्धभौऐसौ ॥ जगतविरोधसुरासुरजैसौ ॥ इहांअभूतरु
द्रगनआए ॥ इनहिविलोकिअमरअकुलाए ॥ भूतपिशाचप्रथमगुह्यकगन ॥ कूषमांडवे
तालसकारन॥ राक्षसब्रह्मविनाइकरौरव ॥ जातुधानडाकिनिकरडोरव ॥ इत्यादिकसं
भूगनअद्भुत ॥ जथास्वरूपदुष्टअघसंजुत ॥ जुधसारंगधनुषहरिसाजे ॥ भवगनसहित
माररनभाजे ॥ संभूब्रह्मवानसमुहायौ ॥ विष्णुबाणसौंकृष्णवचायौ ॥ भवजबमारुतबा
णसंभाख्यौ ॥ नियतकृष्णागिरिबाननिवार्‍यौ ॥ अग्निबानभूतेसचलायौ ॥ वारिबानकरि
कृष्णवचायौ ॥ रुद्रबानजबसंभुसमार्‍यौ ॥ विष्णुबानसौंकृष्णनिवार्‍यौ ॥ तहांजंभासाइ
कहरितान्यौ ॥ यातैंशंकरअतिअलसान्यौ ॥ निहत्यौप्रद्योमनदलनाइक ॥ स्वामिकार्ति
ककौतनसाइक ॥ घाइलभयौमयूरसहितघन ॥ तबसेनानीभाजिबच्यौतन ॥ कूपकर्णकुं
भांडसकारन ॥ बलमूसलहलहतेमेरेरन ॥ राक्षसमंत्रीउभयसंघारे ॥ भागेसंगीसोनसं
भारे ॥ सात्यकजादवअरुबाणासुर ॥ प्रतिभटभिरतजुहुतेपरसपर ॥ जुगमंत्रीजूझेरन
जान्यौ ॥ इहांबाणासुरअतिअकुलान्यौ ॥ सात्यकिमुहछांड्यौबाणासुर ॥ इहांकृष्णमुह

चढ्यौसुआसुर ॥ तहांसतपंचवानसरसज्जीय ॥ गहरशब्दआसुरगलगज्जीय ॥ इहांकृ
ष्णइकबानचलायौ ॥ वहसबधनुषकाटिफिरिआयौ ॥ सरदूजौमोष्यौवसुदेवसुत ॥ सार
थिरथवेध्यौहयसंजुत ॥ समहरविरथभयौबाणासुर ॥ इहांरनिवासकूकपरिआतुर ॥ मा
यानिपुनबानकीमाता ॥ विद्याअसुरविकेकविष्याता ॥ इहांरनभूमिनग्नसिरआइ ॥ प्रभु
अवलोकीलज्जापाई ॥ भएपरामुषकृष्णभयंकर ॥ इहिविचिबाणलह्योकछुअंतर ॥ पुनि
अवकासअसुरजबपायौ ॥ इहांभाजिग्रहभीतरआयौ ॥ इहांउष्णजुररुद्रउपाई ॥ चतु
र्वाहुज्वरसीतचलाई ॥ जुरहीजुरहठिविग्रहठान्यौ ॥ माहेस्वरीपराभवमान्यौ ॥ आनिस
रनहरिग्रह्योजुआतुर ॥ जथाप्रकारकरेवंदनजुर ॥ कृपानिधानसरनहितकीनो ॥ देवअ
भयभवजुरकौंदीनौं ॥ आज्ञाकृष्णदईतबऐसी ॥ तपजुरसीसमानिलइतेसी ॥ यहप्रसं
गजोसुनैसुनावै ॥ पैसोइपुरुषनभयज्वरपावै ॥ अबबानासुरबहुरयौआयौ ॥ साजिसुर
थरनरोषसवायौ ॥ इहांजोइसजैनिसाचरआयुध ॥ जथाचक्रहतकटैभुजाजुध ॥ स्याम
चतुर्भुजकियबानासुर ॥सहसभुजाछेदीतिंहिंसमहर ॥ काटनलगेजबवेउकर ॥ सेवकहि
तआएतबशंकर ॥ कृष्णहिजबभवप्रणपतिकीनें ॥ देवअभयआसुरकहँदीनें ॥ ॥श्रीकृ
ष्णउवाच ॥ ॥ आगेहौंप्रहलादउधारयौ ॥ मैंताकेहितयाहिनमारयौ ॥ अतिहीगर्वव
ढ्योआसुरउर ॥ कारनतिहिंकाटेयाकेकर ॥ विग्रहइनतुमसौंजुवधारयौ ॥ तातैंभुजहाति
भारउतारयौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भारतराषेचारिभुज । निसचरसहस
नसाइ ॥ दीनबंधुदुष्टनिदमन । सबदिनसंभुसहाइ ॥ १ ॥ दंडअनुग्रहगमअगम । सब
विधिस्यामसमर्थ ॥ काटेहाथजुबानके । फिरदीनेंसिरहथ्थ ॥ कन्यासंगअनिरुधकुँवर ।
आनिदयौअसुरेस ॥ पौत्रवधूलीनेंप्रगट ॥ प्रभुकियग्रेहप्रवेस ॥ प्रातसमैउठियहपरव ।
वांचैसुनैविशाल ॥ कहुंनपराजयहोइकछु । कृष्णकृपासबकाल ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरि
त्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचिते अनिरुद्धबंदिमोचनंबा
णासुरजुद्धवर्णनंनामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णदेवकेहैकुँवर । अरुजादवसुतआन ॥ करतजथाक्रम
रीतिकुल । वनआषेटविधान ॥ १ ॥ भ्रमतभ्रमतअतिश्रमभयौ ॥ महासघनवनमाँह ॥ आ
निभयेएकत्रइहां । हैठाढेद्रुमछांह ॥ २ ॥ षोजतजिततिततजलअषिल । पीडितभएजु
प्यास ॥ इहांदेष्यौअतिकायइक । कूपमांझककलास ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥
इहांसुनतमात्रसबबालआइ ॥ ककलासविलोक्योमहाकाइ ॥ इहांकह्योप्रद्युम्नवचनए
हु ॥ हठिसरठकूपतैकाढिलेहु ॥ वसदयाबालउद्यमाविचारि ॥ दृढरज्जुकूपकेमध्यडारि
॥ तनबांधिसरटकैरज्जुतानि ॥ नहिनिकस्यौसबहिनहारिमानि ॥ इहांबालछांडितिहग्रे
हआइ ॥ सोमर्मकह्योकृष्णहिसुनाइ ॥ यहसुनतकृष्णआएअजेव ॥ दीनकेबंधुदे
वाधिदेव ॥ पुनिकाढनकौंउद्यमप्रमानि ॥ प्रभुगह्यौसरटसोवामपानि ॥ इहांछुवतमात्र
कृकलासएह ॥ तनलपटिभयोसोदिव्यदेह ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ पहिलौसुरूपपायौप्रमा
नि ॥ प्रभुआगेठाढोजोरिपानि ॥हसिकृष्णदेवपूछयौजुताहि ॥ यहदेहकहातमकौनआहि॥

सरटउवाच ॥ सुनियेममपूरवनामस्याम ॥ इक्ष्वकुवंशनृगराजनाम ॥ तुमआतमरूप सबकेअनंत ॥ तुमतेनकछुहैदुख्योतंत ॥ कहिहौंतथापिकारनकृपाल ॥ तुमदयासिंधुदीन निदयाल ॥ मिलिसघनवुंदनक्षत्रमेन ॥ रजकणिकाजेतेभूमिरेन ॥ दीनीमैंएतीधेनुदान ॥ सुंदरसवत्सपरिकरसमान ॥ इकसमयदईमैंद्विजहिगाइ ॥ सोचल्यौहांकिलैग्रहसुभा इ ॥ इहांपंथजातकोउविप्रआन ॥ पुनिकरीधेनुअपनीप्रमान ॥ द्विजमेरीमेरीकरैदोइ ॥ करिसांतानिवर्तैनहींकोइ ॥ गाढसौंविप्रदोउलयैगाइ ॥ वेझगरतमेरैद्वारआइ ॥ गहिला यौविप्रजुवींचिगाइ ॥ सोकारनमैंपूछ्यौसुभाइ ॥ तिहिविप्रकह्योपूरबव्रतंत ॥ मुहिदईगा इतुमपुन्यवंत ॥ ग्रहलीयैगयौहूंइहैगाइ ॥ पुनिछूटितबैआईपलाइ ॥ यहपहचानीमैंसुपै आज ॥ धरिलायोहूंराजाधिराज ॥ गहिदीजैमोकूंइहैगाइ ॥ मैंप्रथमकालहैदानपाइ ॥ ॥ नृगउवाच ॥ अनजानियहैहमदईआज ॥ अपराधछमहुममहैअकाज ॥ द्विजदेवधेन यहछांडिदेहु ॥हठतजहुलक्षइकअवरलेहु॥वसक्रोधपरेहठदोउविप्र॥ छिटकाइगाइउठिग एछिप्र ॥ मिलिरहीसुरभिकेजूथमांहि ॥ निहचैमैंसोईलषीनाहि ॥धर्मगतिआहिप्रभुवग्ग धार ॥सोकरेनृपतिछनछनसंभार ॥ पुनिकर्मजोगभावीप्रमान ॥ प्रभुअवधिपाइमैंतजे प्रान॥लैगएदूतमोहिदेतमार॥ दुषसहितगयोजमराजद्वार ॥ धर्मउवाच॥ हितवचनध र्मकहिप्रसनहोइ ॥ दुषसुषहैप्रानीसहतदोइ ॥ पुन्यहैदीर्घअरुअल्पपाप ॥ इनमहकहा भजिहोप्रथमआप ॥ निर्धारकरयौंमैयहनिदान ॥ पहिलैहुंभजिहौंअघप्रमान ॥ उहांक र्मजोगउतपन्नएह ॥ देवतवल्ह्योकृकलासदेह ॥ मैरह्योअवधिलौंकूपमांझ ॥ सुषजान्यौ नाहिनभोरसांझ ॥ कोउउदितभएमपकर्मकाज ॥ अषिलेसकरयौउद्धारआज ॥ ॥ श्री कृष्णउवाच ॥ ॥ अवपापअंतपायौप्रमान ॥ सुरलोकधर्मविलसहुसुजान ॥ अषिलेस कह्योजववचनएह ॥ सुरपतिविमानलायोसनेह ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ करिवंदनप्रभु कहनमस्कार ॥ आरुहविमानकीनौंउदार ॥ सबहिनसुनाइयौंकह्योस्याम ॥ ब्रह्मस्वमहा दुर्जरविराम ॥ अग्यातभजैजोब्रह्मअंस ॥ निरयगततीनपुरुषानिसंस ॥ कारिबलजोभुके अंसकोइ ॥ हुवहोनहारदसपतनहोइ ॥ सबमानिलेहुधर्मोपदेस ॥ ब्रह्मस्वसदावर्जित विसेस॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सोसबहिनदेष्योसुन्यौ । यहनृगकोआष्यान ॥ कर्मधर्मउप देसकिय । नरहरप्रभूनिदान ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानु सारेणबारहटनरहरदासविरचितेनृगआख्यानंनामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वरनगौरभूषनवसन । संकर्षनतनसोह ॥ कारनगोकुल नंदकै । आएरथआरोह ॥ १ ॥ मिलिहितनंदादिकमहर । इहांजुक्रमजुतआइ ॥ जथा नयनआनंदजल । भएरोमांचसुभाइ ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहबैठेमंदिरसुषद आनि ॥ पुनिकुसलपरसपरकहिप्रमानि ॥ गोपिकाआइसबग्रेहग्रेह ॥ हसिपूछतभईमनकौ संदेह ॥ ॥ गोपिकावाक्यं ॥ ॥ पुरवनितावल्लभचरितवाम ॥ सुधिकरतहमारीकब हुंस्याम ॥ पतिपुत्रतजेकुलग्रेहकाज ॥ जिहिदेतलोकविधिवेदलाज ॥ सोगयौहमारोछां डिसंग ॥ भवजथाकंचुकीविषभुजंग ॥ हमकौजोकालव्यतीहोइ ॥ सोजानतआतमसाषि

सोइ ॥ यहांनीतिवचनकहिकहिअनंत ॥ समझाइगोपिकापरमसंत ॥ मिलिउभैचैत्रवैशा षमास ॥ बलदेवकरेव्रजमहँविलास ॥ जेकंजकलीसीविकसित्राम ॥ नहिंमोहनजिनकोसु न्यौनाम ॥ इहांप्रगटभईगोपीअनूप ॥ व्रजमांझसुलछनगुनस्वरूप ॥ बलदेवकरततिन सौंविलास ॥ रसरीतिविविधविधहासरास ॥ इहांदईवरुणआज्ञाअसेष ॥ वारुणीझरतत रुतरविसेष ॥ पवनचढिगंधतहँकियप्रचार ॥ बलदेवकरतजिहिंवनविहार ॥ बलभद्रआ इतहांगंधग्यान ॥ पुनिकरतगोपिकासहितपान ॥ बनिश्रवनएककुंडलविसाल ॥ मिलिगं धपुहपवैजंतिमाल ॥ गोपिकासहितकरिरासगान ॥ श्रमभयौतहांदंपतिसमान ॥ प्रस्वे दबुंदतनभौप्रकास ॥ वारुणीविवसलोचनविलास ॥ इच्छाजलक्रीडाभईआइ ॥ बलदेव तहांजमुनाबुलाइ ॥ सरितानहिंमान्यौवचनसोइ ॥ हठकस्यौअनादरगर्वहोइ ॥ उत्तरतब जमुनादियअजान ॥ मदमत्तवचननाहिनप्रमान ॥ सोलग्योवचनबलहृदयसूल ॥ सत धारकरूंजमुनासमूल ॥ बलदेवकोपकीनौकराल ॥ हलअग्रभेदिआनीविहाल ॥ सोदेहधा रिकंपितसरीर ॥ यहिआनिचरनलागीअधीर ॥ ॥ जमुनावाक्यं ॥ ॥ वसुदेवसुवन शेषावतार ॥ तुममहाबाहुवर्जितविकार ॥ ब्रहमंडधस्यौफनअग्रवीर ॥ सुनमैंप्रभावजान्यौं सधीर ॥ अपराधक्षमाकरियेअनंत ॥ समभावसदातुमसबनिसंत ॥ नरहरप्रभुयादिनते नवीन ॥ कालिंदीकर्षननामकीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्रीडावारिविहारकरि । प्रमदासहि तप्रमानि ॥ सुंदरआभूषनवसन । इहांकमलादयेआनि ॥ १ ॥ भईवितीतविभावरी । वनव नकरतविलास ॥ नरहरप्रभुलीलानिरषि । सुरगनभएसहास ॥ २ ॥ ॥ इतिश्रीअव तारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेबलदेवक्रीडाका लिंदीभेदनोनामपंचषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ६५ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देषकरूषअसंषदल । कासीपुरीसकाम ॥ राजकरैतहांविजय रन । नृपपौंड्रकइहनाम ॥ १ ॥ दिनपलट्यौप्रगट्यौअदिन । अरुभइबुद्धिअभूत ॥ पुनितिहिं द्वारावतिपुरी । दुष्टपठाएदूत ॥ २ ॥ चक्रादिकआयुधचिहन । धरिहरिकेअनधोष ॥ कासी राजअज्ञानकरि । क्षयकारकतनरोष ॥ ३ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कासिराजजोवचनकहा यौ ॥ वहसुनिदूतद्वारकाआयौ ॥ उग्रसेनकीपरिषदउत्तम ॥ कृष्णदेवजदुमिलेजथाक्रम ॥ चर्चाधर्मप्रसंगचलाए ॥ याहीसमयदूततेआए ॥ कासीराजकेवचनसकारन ॥ तहांकृष्ण सौंकहेदूततिन ॥ पौंड्रकउवाच ॥ नारायणकेचिन्हजुनिर्मल ॥ बालबुद्धितुमधरतकौनबल ॥ जैसैबहुमिलिबालसमाजा ॥ रमतकरतकाहूकोराजा ॥ जथाचिन्हराजाकेजानत ॥ ताकहँ करिमनवचनप्रमानत ॥ अवधिपाइतेसिसुग्रहआए ॥ वृथाभएनृपचिन्हबनाए ॥ यौंही तुमनृपतासअभ्यासत ॥ पुनिनारायणभावप्रकासत ॥ यहसबछांडिचरनममआवहु ॥ पूर नकितौकर्मफलपावहु ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ताकहँकृष्णदयौहंसिउत्तर ॥ पैतवकंकगृध्रमं त्रीपर ॥ बलउनकेषलचढिचढिबोलत ॥ लघुकीटीज्यौंनभकहँतोलत ॥ षलतिहिकुलसहेत फूटेचष ॥ भयोचहतहैस्वानस्यालभष ॥ साजौदलबलसुपैसहावत ॥ येहमतुमपाछैहीआ वत ॥ कविरुवाच ॥ यहसुनिदूतस्वामिपहँआए ॥ सबैकृष्णकेवचनसुनाए ॥ वासुदेवसब

सैनवनायौ ॥ अतिसक्रोधकासीपुरआयौ ॥ पौंड्रककौअतिबलसेनापति ॥ मित्रसुदर्शनना ममहामति ॥ वहआयौलैत्रयअक्षोहणि ॥ हुवद्वैसेनएकत्रवंकहनि॥ कासिराजजेचिन्हयथा क्रम ॥ करिकरिकपटबनायेकृत्रम ॥ संषचक्रअरुगदापद्मसन ॥ तहांसारंगपीतवसनतन ॥ मणिभृगुलताकंठवनमाला ॥ बन्योगरुडतहांध्वजाविसाला ॥ कृत्रिमचिन्हविलोकेका न्हर ॥ वेषअनेककरतज्यौंनटवर ॥ कृष्णहँसेतिहिंदेषअचानक ॥ वृथाचिन्हअरुझूठोवा नक ॥ धरिधरिषलआयुधसबधाए ॥ सुपेअवाहतभिरतसवाए ॥ हनिहनिअस्त्रशस्त्रस बहारे ॥ मोहनरनतैंटरतनटारे ॥ यहाँकरूषराजमुहआयो ॥ पुनिमाधवआतिहीसुषपायौ ॥ कासिराजकेहयरथकाटे ॥ पुनिहतिबाणध्वजाउतपाटे ॥ समहरविरथभयोकासेसुर ॥ स्या मचक्रधारयोछेद्योसिर ॥ मस्तकसोवाननिसोमारयौ ॥ दुषदाइकअंतहपुरडारयौ ॥ पटरा नीपतिसिरपहिचान्यौ ॥ प्रलयकालसौकालप्रमान्यौ ॥ कर्योनासकासेसुरकंदल ॥ मित्र सुदर्शनसहितमहाबल ॥ धरिहरिचिन्हसुमूरतिध्याई ॥ पौंड्रकगतिसारूपसुपाई ॥ य हांकृष्णद्वारावतिआए ॥ विजयसुघरघरबजेवधाए ॥ कासिराजकौपुत्रक्रियाकर ॥ नाम सुदक्षणभयोनरेस्वर ॥ पर्यागतसंपतितिहिंपाए ॥ भूमिछत्रचामरमनभाए ॥ पायराज तिहिंवयरप्रकासे ॥ अतिकरक्रोधजुरुद्रउपासे ॥ करीउग्रतपसाहितसंकर ॥ पुनिभएशं भुदयालदयापर ॥ मांगिजुपैइच्छामनमानी ॥ बोलेरुद्रदयाइहिवानी ॥ ॥ सुदक्षण उवाच ॥ ॥ भएप्रसन्नजपैभूतेसुर ॥ विश्वविदितमांगतहौंयहवर ॥ प्रभुतुमतीनका लगतिपावौ ॥ पिताहतकवधजतनबतावौ ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ शिवकहिहोमज थाविधिसाधौ ॥ करिअतिभक्तिअग्निआराधौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ नृपतिहिंअग्नि होत्रव्रतलीनै ॥ कर्योहोमद्विजहोताकीनै ॥ अग्निकुंडतैंनिकस्योऐसो ॥ जगदाहकप्रल यानलजैसो ॥ तप्ततामृतनसिषातीनितस ॥ भृकुटित्रिरेषविसेसरोषवस ॥ मस्तकधुन तमूछदाटीमुष ॥ राजितदंतकुदालकालरुष ॥ चावतअधरनिरसानिसचाला ॥ क्रूरदसा अतिरूपकराला ॥ तेजवंतअतिधरनिकँपावत ॥ जिह्यांचितवतदिसाजरावत ॥ इन द्वारावतिओरचलायौ ॥ अतिरिसरूपजरावतआयौ ॥ तप्तपवनआगमभयोताकौ ॥ जिहिंतनलगतछुटैसतताकौ ॥ त्राहित्राहिपुरलोकपुकारे ॥ मृगज्यौंत्रसतदवानलमारे ॥ हाहाशब्दसुन्योमनमोहन ॥ अभयदयोभएषगआरोहन ॥ कृष्णविलोक्योअनलकरा ला ॥ जितिततिभईगगनगतज्वाला ॥ प्रभुतहांकारनअगनिपिछानी ॥ मनरौद्रीकृत्याइह जानी ॥ कृष्णसुदर्शनचक्रचलायो ॥ धरिआगैतिहिअनलधकायो ॥ इहांफेरिकासीपुरआ न्यौ ॥ जारयौनगरसुरासुरजान्यौ ॥ दाहिपुरीसोचक्रसुदर्शन ॥ प्रभुपहँआयोकरिपूरनपन ॥ यहप्रसंगजोसुनैसुनावै ॥ पापनसैसुपुन्यफलपावै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नासकर्योकासेस नृप । दुगमपुरीकृतदाह ॥ पाइविजयनरहरप्रभू । अमरनिभएउछाह ॥ १ ॥ इतिश्रीअ० श्रीकृष्णा०द०बा०नरहरिदासविरचितेपौंड्रकराजवधोनामषट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपिमंत्रीसुग्रीवकौ । नामद्विविदबलवान ॥ सोनरकासु रकौसषा । भ्रातमंयदभयान ॥ १ ॥ षलनरकासुरकौअनषि । प्रीतमवयरप्रमानि ॥

द्विविददुष्टद्वारावती । करैउपद्रवआनि ॥ २ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ जहाँतहाँग्रामनगर
लैजारै ॥ दीर्घसिलाऊपरिगहिडारै ॥ सागरपैठिउछालतजलश्रम ॥ महादुष्टबोरैऋषि
आश्रम ॥ वैश्वानरजलमेलबुझावै ॥ आश्रमआनिअनीतिउठावै ॥ लैकुलवधूनिदूषण
लावै ॥ जहांतहांकपिग्रहलेजावै ॥ पुनिरैवतनामाइकपर्वत ॥ पूरणवनमहंसोभापावत
इहपर्वतबलभद्रजुआए ॥ संगव्रजवनितालियेसुहाए ॥ बलकोजानिअकेलोवानर ॥ ति
हिंपर्वतआयौअतिआतुर ॥ सुपेप्रमत्ततहांसंकरषन ॥ गानकरतमिलिमिलिगोपीगन ॥
निकटचढ्यौतरसाषनबीनै ॥ कपितहांसब्दकिलकिलाकीनै ॥ सब्दअचानकसुनिसंकर्षन
॥ पुनिअतिक्रोधचलायौपाहन ॥ वानरकूदिसुउपलबचायो ॥ आनिवारुनीकलसनसा
यौ ॥ नारिवसनआकर्ष्यौवानर ॥ यहांव्रजवनिताकूकीआतुर ॥ संकरषनहलमुसलसं
भारे ॥ इहांकपिपादपसालिउपारे ॥ चंचलकपितरुसालचलाए ॥ वीचिमुसलहनिसेष
बचाए ॥ कठिनप्रहारपरसपरकीनै ॥ भटदोउमहावीररसभीनै ॥ वानरजोइजोइवृक्षचला
वै ॥ नियतमारिबलदेवनसावै ॥ जबनिर्वृक्षभयौवनजान्यौ ॥ द्वंद्वजुद्धकपितहांप्रमान्यौ
पुनिकपिबलउरमुष्टिप्रहार्‍यौ ॥ कपिहलकर्षिमुसलसिरमार्‍यौ ॥ प्रानगएभयोदेहपरायौ ॥
यहांषलमर्‍यौसबनिसुषपायो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वानरमार्‍यौरनद्विविद । करेसुरनिज
यकार ॥ रामपधारेद्वारका । निषिलसाधानिस्तार ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीअवताचरित्रेश्री
कृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचिते द्विविदवानरवधोनामसप्तष
ष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दुर्योधनकीकन्यका । सुभलक्षणगुणसंग ॥ भांमानिवरप्रा
पतिभई । रच्यौस्वयंवररंग ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ लछिमनानामपुत्रीसुलच्छ ॥
पुनितासस्वयंवरभौप्रतच्छ ॥ मिलिदेसदेसकेनृपकुमार ॥ अतिरूपलक्षणगुणतनउदार
पुनिबैठिजथामंचनिप्रमान ॥ निर्घोषबहुलवाजेनिसान ॥ इहांसांबकृष्णकोपुत्रआइ
॥ सोजथाथानबैठ्योसुभाइ ॥ पुत्रिकाइहांवरमालपानि ॥ अविलोकेराजकुमारआनि
॥ करकरषिसांबकन्याकुमारि ॥ लेचल्यौसबनिकौमानमारि ॥ इहांकर्‍यौकौरवनिमंत्र
एहु ॥ हठिबालहतोमतिबांधिलेहु ॥ मानहुएजादवकितिकमांत ॥ वसगर्वविचारत
दिग्घवात ॥ इहांकर्णसल्यअरुयग्यकेत ॥ मिलिपहुंचेभूरीश्रवसमेत ॥ इनसांबवका
र्‍योसमरआइ ॥ सोफिर्‍योधनुषसाइकसजाइ ॥ रथसारथिवेधेहयसंभारि ॥ रणकरे
विरथसबबाणमारि ॥ करिकोपसांबइनविरथकीन ॥ पुनिछेदधनुषरथरणप्रवीण ॥ चहुं
ओरआनिएसुभटचारि ॥ गहलयौसांबकौगर्वगारि ॥ कौरवनिसांबकहंमेटिकानि ॥
अवरोक्यौमंदिरगूढआनि ॥ इहांनारदद्वारावतीआइ ॥ सोयहप्रसंगकृष्णहिसुनाइ ॥
विधिसुनीजबैयहवासुदेव ॥ अतिकोपेकौरवसौंअजेव ॥ बलदेवलष्यौविग्रहविरुद्ध ॥ जा
दवअरुकौरवउपजिजुद्ध ॥ हस्तिनापुरगयेतबसांतिहेत ॥ संकर्षननिजआयुधसमेत ॥
पुनिआगैदियउद्धवपठायौ ॥ तिहिंसंकर्षनआगमसुनायौ ॥ पूजाकरिअर्चाबहुप्रकार ॥
सबबैठेकौरवमिलिसुढार ॥ बलदेवउवाच ॥ ॥ बलदेवकहतछत्रीविधान ॥ नृपउग्रसेन

यहकहिनिदान ॥ तुमकौनधर्मयहयुद्धकीन ॥ नरचारित्रबालइकपकरिलीन ॥ करिकोपक हतकौरवकुवैन ॥ निश्चैविरोधआरक्तनैन ॥ ॥ कौरवउवाच ॥ ॥ नहिंजानिकालगति एअज्ञान ॥ पुनिचढनलगेसिरपरउपान ॥ हमकीनौराजापंडुव्याह ॥ इनकेतबघरघरभ एउछाह ॥ सोगनतनाहिसगपनसनेह ॥ अबहमसौंसमताकरतएह ॥ अहिपानदुग्धवि षहोइअनंत ॥ त्यौंतजैनाहिंषलताअसंत ॥ जोकरतहमारोदियोराज ॥ एआएहमसौंल रनआज ॥ ॥ बलदेवउवाच ॥ ॥ बलदेवकह्यौहंसिइहांबोल ॥ मुषकरतआपनौंआ पमोल ॥ दुःसीलदसाइनकोदुरंत ॥ अबहूंनहिउपजैसांतिअंत ॥ अतिगर्वदृष्टिछाई अग्यान ॥ पुनिआहिदंडइनकौंप्रधान ॥ अषिलेसकृष्णअवतारएह ॥ एदुष्टगनततिहि मनुजदेह ॥ रजचरणउपासतब्रह्मरुद्र ॥ सोकृष्णदेवकरुणासमुद्र ॥ यौंकहततिनहिंकौ रवअधीस ॥ ममदत्तराजलहिभएमहीस ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निःसेसकहेदुर्वादना म ॥ धृतराष्ट्रगयौउठिआपधाम ॥ ऐश्वर्यपाइभएमहाअंध ॥ सोमानतनहिंकछुहैसंबंध ॥ चितरोषइहांसमयौविचारि ॥ धरनिधरकहिहलमुसलधारि ॥ निहकौरवकरिपृथ्वीनिदा न ॥ पुनिजैहौंद्वारावतिप्रमान ॥ षलबोरिगंगजलमारिषेत ॥ सबकौरवहाथिनापुरसमेत ॥ दक्षणदिसचांप्यौहलदुरंत ॥ उतराधऔरऐंच्योअनंत ॥ इकओरलयौजबपुरउठाइ ॥ हुवग्रेहग्रेहतवहाइहाइ ॥ जबलग्यौनगरजलमांझजान ॥ सतछुटेसबनिकेबलसमान ॥ करिसांबअग्रसोनृपकुमारि ॥ बलदेवसरनआएविचारि ॥ करजोरिसुजोधनप्रनतिकीन मुषभयेश्वेतअतिमनमलीन ॥ यहप्रभुप्रभावजान्यौनअंत ॥ अपराधक्षमाकरियेअनंत ॥ ॥ पुनिपरयौसुजोधनआनिपाइ ॥ इहांदयौअभयलीनौउठाइ ॥ हतमानभएअरुकंपही य ॥ दुर्जोधनइहांदाइजेदीय ॥ षटसहसदुरदअरुरथअषंड ॥ पुनिवाजिअयुतद्वादसप्र चंड ॥ दियएकसहसदासीअनूप ॥ रसरीतिनिपुनशृंगाररूप ॥ संगपुत्रवधूजयजसस हेत ॥ आएषलजीतिप्रभासषेत ॥ चेष्टाजथाकौरवकुचाल ॥ सबकहीजादवनिसौंसुढा ल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हठिकौरवकुलगर्वहति । विजयपाइबलदेव ॥ सांबहिलैदलबलस हित । आएग्रेहअजेव ॥ अद्यावधिउत्तरदिसा । पुरहैधस्यौअपार ॥ दक्षिणदिसऊंचो दुगम । सबदेषतसंसार ॥ २ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारेदशमस्कं धानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेसांबदुर्योधनकन्याविवाहबलदेवविजयोनामअष्टष ष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नरकासुरकोनासकरि । पुरघरधनअपनाइ ॥ सोरहस हसअरुएकसौ । आनीतरुनिछुडाइ ॥ १ ॥ कह्यौसबनकोकरग्रहन । एकहिलग्नअनंत ॥ यहदैवीइच्छाअतुल । सबविस्मितसुरसंत ॥ २ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कृष्णएकअ रुअगणितकामिनि ॥ भोगविलासजुवंछितभामिनि ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ महाजो गजोगेस्वरमोहन ॥ पुनिक्यौंहोतमनोरथपूरन ॥ यहांनारदमनसंभ्रमछायौ ॥ एकसमै द्वारावतिआयौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पथआकासआयेअंतहपुर ॥ स्यामसरूपहद यधरिसुंदर ॥ प्रभुइहांहुतेहासविलासपर ॥ मोहनवैदर्भीकेमंदिर ॥ दयानिधानविलोके

नारद ॥ ब्रह्मपुत्रअरुबुद्धिविसारद ॥ अषिलेसुरउठिसनमुषआए ॥ लैअतिप्रीतिसुकंठ
लगाए ॥ चरनप्रच्छालिविप्रचरणोदक ॥ माधवलैधारेतेमस्तक ॥ पूजाकरीजथासुषपा
ए ॥ बहुरयोंमुनिआसनबैठाए ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ माधवतबपूछयौअतिहित
मन ॥ कहियैमुनिआगमकौकारन ॥ जथादेवऋषिआज्ञादीजे ॥ काजमनोरथपूरनकी
जे ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तुमअवतारपुरुषअषिलेसुर ॥ षलषयकारसहाइसाधुसु
र ॥ हौंआयोप्रभुकेदरसनहित ॥ चाहतजोब्रह्मादिकहिताचित ॥ दयानिधानदानयहदी
जे ॥ कृष्णचरनथितिममउरकीजे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिनारदयहांअतिसुषपाए
॥ आज्ञामांगिअवरगृहआए ॥ नियततहांतेइकृष्णनिहारे ॥ क्रीडाअक्षकरतहितकारे ॥
उद्धवसहितसुसनमुषआए ॥ विधिजुतपूजाकरिबैठाए ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ प्र
भुपूछयौमुनिकबपगधारे ॥ हुएपुराकृतउदितहमारे ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ विप्रविलो
किउठ्यौयहवानक ॥ अवरत्रियागृहगयोअचानक ॥ रह्योनिहारिचकितपलरोके ॥ बाल
षिलावतकृष्णविलोके ॥ यहअवलोकिअपरगृहआए ॥ पुनिमोहनतहांमज्जतपाए ॥
अवरनारिगृहआएआतुर ॥ अग्निहोत्रसाधतअषिलेसुर ॥ इत्यादिकदेषीलीलायह ॥
गृहव्यापारकरतप्रभुगृहगृह ॥ मोहनमहिलामंदिरमंदिर ॥ आदिअंतअविलोकेईश्वर॥
ग्रेहग्रेहमाधवगुनगावत ॥ प्रेमतृपतभएआनंदपावत ॥ सुंदरिसुंदरिग्रेहासिधाए ॥
याहीक्रमनारदफिरिआए ॥ रुकमनिकेमंदिरअवरेषी ॥ दिव्यवहैइकमूरतिदेषी ॥ देषिकृ
ष्णहसिबोलेनारद ॥ विसरेतनअतिबुद्धिविसारद ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ जगतईस
मैनिश्चयजानी ॥ प्रभुतवमायाप्रबलप्रमानी ॥ जामहँभूलिरहेजोगेसुर ॥ चारिपंचमुष
अषिलचराचर ॥ महाविलोकीदैवीमाया ॥ निहचैजिहिंसुरअसुरनचाया ॥ ध्यानसरूप
कृष्णउरधारे ॥ पुनिनारदनिजग्रेहपधारे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृतचरित्रयहकृष्णके । अ
विलोकेअद्भुत ॥ मायाजिनकीमोहनी ॥ धूततजगअवधूत ॥ १ ॥ इतिश्रीअवताराच
रित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेनारदषोडससहस्त्रगृह
कृष्णस्वरूपदर्शनंनामएकोनसप्ततितमोऽध्याय ॥ ६९ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नृपदूतनिकोआगमन । पुनिऋषिराजप्रबोध ॥ अषिले
सुरसुनिहैंइहां । सबैपंडुसुतसोध ॥ १ ॥ ॥ छंदउधोर ॥ ॥ इकदिवसकृष्णदयाल ॥
उठिकुंवरप्रातहिकाल ॥ नित्यकृत्यहितजुतकीन ॥ द्विजदानसुरभीदीन ॥ धरिवसनआ
युधधारि ॥ पुनिसभामध्यपधारि ॥ इहिसमयसात्यकिआइ ॥ प्रभुदरसउद्धवपाइ ॥ अ
नेकजादवअंस ॥ वनिजथाक्षत्रियवंस ॥ मिलिसूतमागधसंग ॥ प्रभुहोइकीर्तिप्रसंग ॥
॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकइहांअपूरबदूतआइ ॥ सोलयोतबैभीतरबुलाइ ॥ ॥ श्रीकृष्णउ
वाच ॥ ॥ कहिपठएहोतुमकवनकाज ॥ अनसंकनिवेदौसुपैआज ॥ दूतहियौपूंछतकृ
ष्णदेव ॥ भवकहेजथाआगमनभेव ॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ इकदेसमगधधनवृद्धिधा
म ॥ तहांनगरवसतगिरिवज्रनाम ॥ उहांजरासंधराजाअजेव ॥ हैदुष्टमहादेवाधिदेव ॥
जगकेतिहिंराजाजीतिजीति ॥ हैअयुतबंदिमेलेअनीति ॥ गिरिएकगुफादुर्गमगहीर ॥

तिहिंमांझसहतसोदुषसरीर ॥ पठयौउनमोकहँदेवपाइ ॥ अवअंतअवस्थानिकटआइ॥ उननृपतिकहायौवचनआप ॥ प्रभुसुनियेतुमपूरनप्रताप ॥ तुमअप्रमेयआतमअनंत ॥ सरणागतनिर्भयदानसंत ॥ तुमदीनबंधुदेवाधिदेव ॥ अषिलेसअषिलमायाअजेव ॥ निग्रहनदुष्टदानवनिदान ॥ पुनिकरतदीनरक्षाप्रमान ॥ अवतारलह्यौइहिंहेतएह ॥ देवाधिदेवधरिमनुजदेह ॥ प्रभुकरैजुआज्ञाअप्रमान ॥ जगप्रबलसुरासुरकोउनजान ॥ तुमदीनबंधुदेवाधिदेव ॥ यहविरदतिहारोजगअजेव ॥ कोदीनअवरहमतेदुषार ॥ भगवंतकरतनाहिनसंभार ॥ अबअंतअवस्थानिकटआइ ॥ शरणागतहितकरियेसहाइ ॥ भजिलेहुकर्मफलआपभूप ॥ पाछैसुधिलैहुंजोइसरूप ॥ विश्वेश्वरकरिहोयहविचार ॥ पुनिकाहिकरहुदुषसिंधुपार ॥ यहअयुतहस्तिबलषलअसाधि ॥ अरुकरतदुष्टदिनदिनउपाधि ॥ करिप्रभूसौंसमताविजयकाम ॥ सप्तदसवारभाग्यौसंग्राम ॥ इहिजरासंधआगैअनंत ॥ किहुंकारननिकसेरमाकंत ॥ प्रभुएकवारइहिंविजयपाइ ॥ यातैंहैबाढ्यौगर्वआइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ समदूतहोतचर्चासुभाइ ॥ याविचमुनिनारदइहांआइ ॥ प्रभुकरेजथापूजाप्रकार ॥ अरुभएऋषिहिपूछतउदार ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ त्रयपुरतबगमनागमनसंत ॥ तुमतेअगम्यनहिंजगव्रतंत ॥ सुभकहोविवरिपांडवसमाज ॥ किहिभांतिरहतकाकरतकाज ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तुमतेनदुर्यौकछुहेदयाल ॥ करुनानिधानवेत्तात्रिकाल ॥ कहिहौंजथापिजोसुन्यौकाज ॥ धरिचित्तसुनहुराजाधिराज ॥ राजसूयज्ञतवहेतराज ॥ कृतउद्यमकुलपांडवसकाज ॥ उच्छाहहोतघरघरअपार ॥ विश्वेसइहैउनकेविचार ॥ भवआहिजितेभुवचक्रभूप ॥ संपन्नराजसंपतिसरूप ॥ सोजीतिजीतियहजरासंध ॥ बहुरयौदीयकाराग्रेहवंध॥ राजसूयज्ञनहिंविनाराज ॥ उनकौंहैएतीकठिनआज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातैंकरहुसहाइतुम । प्रभुतहांचलहुपुनीत ॥ सिद्धिहोहिसाधनसबै । तोउनकेमषमीत ॥ २ ॥ कहीअवस्थानृपनिकी । दूतनिसबैसंदेस ॥ ऋषिनारदउपदेसकरि । पुनिग्रहकर्योप्रवेस ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीअ०श्री०द०बा०नरहरिदासविरचितेजरासंधबंदिग्रहराजदूतश्रीकृष्णप्रतिआगमनोनामसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥ ॥ छ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥सुनिसुनिदूतसंदेससब । अरुनारदउपदेस ॥ मोहनजादववृद्धमिलि । वूझतमंत्रविसेस ॥ १ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ माधवअपनौअभिप्रायमन ॥ उद्धवसौंपूछ्यौतहांआपन ॥ मोहिगंतव्यआहिपांडवग्रह ॥ अरुनृपमोषनद्वितीयकाजयह॥ पहिलैकहांचलैसुप्रमानहु ॥ हौतुमवृद्धसबैविधिजानहु ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ पहिलैपांडवग्रेहपधारहु ॥ स्यामतहांसबकाजसुधारहु ॥ मागधवधव्हैहैनृपमोषन ॥ पुनिहोइराजसूयमषपूरन ॥ अयुतमतंगमहाबलओई ॥ साध्यनसतअक्षोहनिसोई ॥ प्रभुहैजरासंधकेयहपन ॥ जाच्यांभंगहोतनहिंजाचन ॥ गूढमर्मवाकोपुनिगाऊं ॥ सोपैदेवउतपत्तिसुनाऊं ॥ मगधदेसकौअधिपतिमान्यौ ॥ जरासंधकोपितजगजान्यौ ॥ पूरनताकेकुलबलसंपति ॥ सोनआसपूजतइकसंतति ॥ पुत्रनहोतमहादुषपावै ॥ उरदाहैसोकहतनआवै ॥ सोनृपरुद्रहेततपसाधै ॥ आतमदमनकरैआ

राधे ॥ महादेवतबसेवामानी ॥ भवदियदरसनसहितभवानी ॥ ॥ रुद्रउवाच ॥ ॥
पुनिबोलेहरदयाप्रमानै ॥ मांगहुनृपतिजुपैमनमानै ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ देवनसंतति
यहैमहादुष ॥ सबैग्रेहमेरेसंपतिसुष ॥ कविरुवाच ॥ ॥ ताहिएकफलदयोरुद्रतब ॥
यातैकाजसिद्धिव्हैहैअब ॥ यहांनृपतिफललेग्रहआयौ ॥ पटरानीदुवहैंफलपायौ ॥ ना
रिनिअर्धअर्धफललीनौं ॥ करिजुगभागसुभक्षनकीनौं ॥ तहांदुवनिकैभईगर्भस्थिति ॥
पूरनअवधिदैवगतिप्रापति ॥ दुगमषंडदुवमाताजाए ॥ पेषिसबनिमनअचिरजपाए ॥
कोऊजरानामइनकेकुल ॥ वनिताभईजोगमायाबल ॥ आनिफारदोऊअविलोकी ॥ इ
हकछुइच्छादइवअलोकी ॥ जराजवैकरपरसनकीनै ॥ निकटआनिद्वैषंडनवीनै ॥ सोमि
लिगएदेहअतिसुंदर ॥ नामभयोतिहिंजरासंधनर ॥ दशहजारहस्तीबलदुर्धर ॥ अपनै
दलइकवीरवृकोदर ॥ प्रभुसमताप्रातिजुद्धप्रमानहु ॥ जथाजोगदोऊएजानहु ॥ वीरभी
मद्विजवेषबनावहु ॥ वींचिताहितनसंधिबतावहु ॥ जाचैद्वंद्वजुद्धयहजावहु ॥ पुनिवहदे
हपरमसुषपावहु ॥ तुमप्रभुआपुनरहौनिकटतहां ॥ जथाकालकीसिद्धिहोइतहां ॥ अ
रुजेनृपतिबंदिहैंवाके ॥ तिनसुधकरिरोवतसिसुताके ॥ ग्रेहग्रेहत्रियतवगुनगावहिं ॥
अरुबालकनिअभयउपजावहिं ॥ ॥ स्त्रीणांवाक्यं ॥ ॥ मतरोवहुरेदुषकेमारे ॥ है
रक्षकघनस्यामहमारे ॥ दुष्टमारितबपिताछुडैहैं ॥ पुनिहमपुत्रपरमसुषपैहैं ॥ जहांज
हांसंकटपरिजाकौं ॥ तहँतहँहोतसहाइकताकौं ॥ कविरुवाच ॥ तबनारदहोमंत्रबता
यो॥ फिरिकरिसबहिनिवहैथपायो ॥ आज्ञाकरीप्रयानप्रष्णअब ॥ तहांसूतलैआयोरथत
ब॥अवरौजथाजोग्यरथआए ॥ राजलोकचढिचढिजुचलाए॥ उग्रसेनबलदेवपूछिअब ॥
॥ततछनरथआरोहिकृष्णतब॥ वाजितविविधअनेकजुवाजे ॥ सुभटजथाक्रमचढिचढिसा
जे॥ चतुरंगनियहांसेनचलाए ॥ पंथजथाविधिसोभापाए ॥ प्रभुआज्ञादेदूतपठाए॥एहम
तुमपाछैहीआए॥नभमारगआज्ञालहिनारद॥विबुधलोकगएबुद्धिविसारद॥दलअनंतदि
सदिससमुदाए॥सौबीरजमरुषंडसुहाए॥पुनिकुरुषेतदेषतजिपावन॥ यहांभयोपंचालहि
आवन॥ पुरपत्तनगिरनदसुषपाए ॥ इंद्रप्रस्थअतिसुषहीआए॥ पांडवसनमुषआइप्रीति
पर॥सबहिनमिलेजथाक्रमसुंदर॥वामाकुसमसौधचढिवरषत॥हितकरिकृष्णदरसमनहर
षत ॥ पुरवासीयहांदरसनपावत ॥ वनिताग्रहग्रहकलशवंदावत ॥ विविधभांतिगृहहाट
बनाए ॥ अविलोकितनृपमंदिरआए ॥ यहांद्रौपदीकुंताआई ॥ लेतलौनहरषितउरल
ई ॥ पुनिसबराजलोकअंतहपुर ॥ आनिमिलेअतिहर्षबढेउर ॥ पूजाकरीजथाविधिपाव
न ॥ भोजनपानसेजमनभावन ॥ नियतजथाक्रमडेरादीनै ॥ प्रगटबंधुसुतसुभटप्रवीनै
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकएककेअग्रइहां । आएदासअनेक ॥ तहांसबकोसेवाकरत । वि
धिविधिसहितविवेक ॥ १ ॥ अतिहितभयौसमाजइहां । अरुआनंददुहुंओर ॥ यथा
जोगवंदनकरे । सबमिलिराजकिसोर ॥ २ ॥ कुंतासुतकेहेतकरि । स्यामरहेकोउमास ॥
वनविहारजलकेलिविधि । वंछितचित्तविलास ॥ ३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअ
वतारेद०बारहटनरहरि०श्रीकृष्णइंद्रप्रस्थआगमनंनामएकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सभाविराजितधर्मसुत। भ्रातमंत्रिभटभूप ॥ तहां
आएत्रैलोकपति। अँगअँगकृष्णअनूप ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जुधिष्ठिरउवाच
देवाधिदेवहेवासुदेव ॥ अषिलेसअषिलमायाअजेव ॥ करजोरिजुधिष्टिरप्रणतिकीन ॥
प्रभुपरमपुरुषपूरणप्रवीण ॥ मषराजसूयकारणमहंत ॥ अबहमहिआहिइच्छाअनंत ॥
सोइसिद्धिहोतप्रभुकेसहाइ ॥ इहिंठौरऔरनाहिनउपाइ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥
यहमंत्रविचास्योभलोआप ॥ पुनिबढैकीर्तिप्रभुताप्रताप ॥ सुरसिद्धपितरभवभूतसंग ॥
यहकरतसबैइच्छाअभंग ॥ वसकरहुपृथ्वीभुववैविसेस ॥ संभारसारसुषक्रतअसेस ॥
उतपन्नअंसदिगदेवएह ॥ सोमहावीरधर्महिसनेह ॥ इतनौकछुदुष्करनहिनआज ॥ रण
वीरपठावहुअनुजराज ॥ भूवचक्रकरहिदिगविजयभूप ॥ साधिहैकाजजैसोसरूप ॥ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ मिलिसबनिकृष्णकोवचनमानि ॥ पुनिइहैमंत्रकीनोप्रमानि ॥ स
हदेवपठइदक्षणादिगंत ॥ पुनिनकुलवीरपच्छिमप्रजंत ॥ उत्तरदिसअर्जुनचलेआप ॥ पै
भीमपूर्वदिसबलअमाप ॥ चास्यौंदिसपठएवंधुचारि ॥ विष्यातवीरपौरुषविचारि ॥ वसु
मतीद्रव्यराजाविशेष ॥ इनचारिदिसाजीतेअसेस ॥ सोरह्योअजितइकजरासंध ॥ अ
तिबलीकपटजुतमदाअंध ॥ सोसुन्योंजबैपांडवनरेस ॥ स्यामसौंमंत्रकीनौसुदेस ॥ ॥
॥ जुधिष्ठिरउवाच ॥ ॥ जोकह्योप्रथमउद्धवप्रमान ॥ सोइकरहुअबैजदुपतिसुजान ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ यहांभीमसेनअर्जुनअजेव ॥ द्विजरूपकस्योप्रभुवासुदेव ॥ आति
थ्यकालएतहांआइ ॥ पुनिजरासंधएकांतपाइ ॥ ॥ भीमादिकउवाच ॥ ॥ वैदेसिक
हैंहमतीनिविप्र ॥ प्रभुदरसदूरतैआइछिप्र ॥ जाचन्याअर्थीविप्रजानि ॥ पुनिदेहुराजकुल
कृतप्रमानि ॥ कहुंकरैंजाचन्याभंगकोइ ॥ ठहैछत्रीअरुसामर्थ्यहोइ ॥ नर्कपदलहैसोइनिदा
न ॥ यहप्रगटवेदवाचाप्रमान ॥ कछुअदातव्यछत्रीनआज ॥ जाचैहमराजनपुत्रराज ॥
शिबिहरिश्चंद्रअरुबलिनरेस ॥ व्याधीकपोतदेषहुविसेस ॥ इत्यादिकजेराजाअनेक ॥
विष्यातसुजसवसुधाविवेक ॥ अध्रुवसरीरदलबलअषंड ॥ पुनिधर्महिध्रुवजानहुप्रचंड ॥
॥ जरासंधउवाच ॥ ॥ आकारवचनजाचकनएह ॥ सोभयौनृपतिमागधसँदेह ॥ क
रमूलसव्रणअरुनयनकोप ॥ अंगुष्ठप्रत्यंचाचिन्हओप ॥ प्रतिमानविप्रलक्षणप्रसिद्ध ॥ ए
क्षत्रीयहैकोउसमरसिद्ध ॥ अबतोएभिक्षुकभएआनि ॥ जाचन्याभंगनधर्मजानि ॥ बलि
राजछलेवामनविष्यात ॥ वित्थरीकीर्तित्रैलोकबात ॥ अबरोधकह्योगुरुहानिअंग ॥ भव
भूपनकीनौवचनभंग ॥ निर्धारकस्योमागधनरेस ॥ अभिलाषविप्रजाचहुअशेष ॥ भीं
मउवाच ॥ ॥ इहांकह्योवृकोदरवचवनएहु ॥ हितमानिद्वंद्वजुधहमहिदेहु ॥ ॥ श्रीकृ
ष्णउवाच ॥ ॥ इहकृष्णबीचबोलेअजेव ॥ यहभीमपार्थहूंवासुदेव ॥ करिहर्षजुआएजु
द्धकाज ॥ रणइच्छापूरहुमहाराज ॥ ॥ जरासंधउवाच ॥ ॥ मागधहसिबोल्योसुनहु
स्याम ॥ समतानमोहितोसोसंग्राम ॥ धनधामछांडिमथुपअधीर ॥ तूंषारसमुद्रकेवस्यौ
तीर ॥ वयतुल्यनअर्जुनषलविधान ॥ सोपैनजुद्धमोसौसमान ॥ प्रतिवीरसमरमैभीमपाइ ॥
यौंकहतमात्रदोउजुटेआइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ रणमनहुवज्रआघातवीर ॥ समघाउ

गदाजर्जरसरीर ॥ मिलिघावदावदोऊसमान ॥ भौमहाजुद्धभूतलभयान ॥ दारुणकी
यपांडवबहुतदाउ ॥ पैंमरैंनषलकाहूउपाउ ॥ मोहनसुधिकीनैमूलमंत्र ॥ तबकहेजुउद्धव
गूढतंत्र ॥ दूवकरनिकरषित्रिणवासुदेव ॥ अरुभीमश्रोरचितएअजेव ॥ त्रिणतहांफारि
डार्यौअनंत ॥ यहलषीसमस्याभीमअंत ॥ षलमर्मकह्योउद्धवसुषेन ॥ सोपैसुधिकीनो
भीमसेन ॥ मगधेसकंठगहिमानमारि ॥ पुनिभीमसेनसोधरपछारि ॥ पगएकचांपिपग
सौंप्रवीन ॥ करचरणदुतीयगहिसदढकीन ॥ षलफारिउभयतनकर्योषंड ॥ प्रतिमाजुसं
धिजानीप्रचंड ॥ अवलोकिजरादुवषंडआइ ॥ सोइबहुरिसांधिलीनैसुभाइ ॥ सोइजरासं
घसंग्रामसूर ॥ परसपरभिरतपौरुषसपूर ॥ पुनिदुसहफारिडार्योसकोप ॥ अर्धकृतकाठ
करपत्रओष ॥ दुवषंडभीमरणआजिरडारि ॥ पुनिघसेधरनिमूंधेपछारि ॥ इहांजराकर्यो
करपरसआइ ॥ पैमिलेनाहिंकीनैउपाइ ॥ धरपरेषंडमरिजरासंध ॥ सवछुटेदेहदेहीसमं
ध ॥ अषिलेसुरअर्जुनमिलेआइ ॥ लियभीमसेनकौंकंठलाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दुर्गमस
त्ताईसदिन । समहरभिर्योसमान ॥ मगधराजकरभीमके । प्रतिजुधदीनेप्रान ॥ १ ॥ इ
हांमागधकोपुत्रइक । सुपैनामसहदेव ॥ गह्योसरनगोविंदकौ । मनछांड्योअहमेव ॥
॥ २ ॥ देसमगधकोराजदल । पृथ्वीछत्रप्रजंत ॥ कृष्णधर्योतिहिसीसकर । दीनैअभय
अनंत ॥ ३ ॥ जरासंधकेवधसुजस । पायौभीमप्रकास ॥ प्रभुनरहरकीनीकृपा । सुपैहुतो
निजदास ॥ ४ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटन
रहरिदासविरचितेजरासंधवधभीमविजयोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥ छ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहसवीसअरुआठसौ । निग्रहबंदिनरेस ॥ कठिनप
रेगिरकंदरा । सेवतदुषअशेष ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तनमलिनवसनउरछुधा
त्रास ॥ पुनिसहतमहापरिभवप्रकास ॥ रदछदनसोसदुर्बलसरीर ॥ उरकंपअषिलअंत
रअधीर ॥ भवमनहुभग्नपिंजरभयान ॥ निकसतअसेषपंषीनिदान ॥ सहिदुषजथानि
कसेनरेस ॥ कृतवंदनदरसनद्वारिकेस ॥ एबंदिमोषकीनैअनाथ ॥ निजदरसदिषायोवि
श्वनाथ ॥ भुजचारिचारिआयुधअभंग ॥ अंबुददललोचनस्यामअंग ॥ कुंडलकिरीटउ
रमणिविकास ॥ कटिसूत्रकनकवनिपीतवास ॥ अद्भुतसरूपदेष्योअनंत ॥ सोइवेदबता
वतपरमसंत ॥ दुसहकृतपरिभवगएदुष ॥ सबहिनकहउपजेअमितसुष ॥ ॥ रा
जोवाच ॥ ॥ करजोरिकहतकरुणाप्रकास ॥ तुमदीनबंधुहमदीनदास ॥ सरणागतर
क्षकसघनस्याम ॥ कृतमोषहमारोप्रभुअकाम ॥ हमभएराजमदअंधराज ॥ कछुलष्यो
नाहिकाजहुअकाज ॥ मोहनीमहामायामुरारि ॥ सोपरीवीचिप्रभुनहिसंभारि ॥ भएराज
भ्रष्टमदमानभंग ॥ अवगईसबैसुधिअंगअंग ॥ अषिलेसकरहुउपदेसएह ॥ जिहिहोइ
स्यामतवपदसनेह ॥ करिकृपाकृष्णसोअभयकीन ॥ देवाधिदेवदढभगतिदीन ॥ ॥ श्री
कृष्णउवाच ॥ ॥ निजभजहुमोहिन्हैसावधान ॥ पुनिकरहुलोकरक्षाप्रमान ॥ सुषदु
षलाभअरुहानिसंग ॥ इनकौंसमानदेषहुअभंग ॥ निहकामकरहुसबधरमनेम ॥ पुनि
मोहिअंतमिलिहोसप्रेम ॥ करिजथाजोगआदरअनंत ॥ तहांकह्योवचनइहरमाकंत ॥

हैधरमसुवनकेयज्ञधाम ॥ सबतहांआनिमिलियेसकाम ॥ करिकृपानृपतिसबविदाकीन ॥ ॥ देवाधिदेवतहांअभयदीन ॥ एराजाअपनेग्रेहआय ॥ सोभजतभएस्यामहिसुभाय ॥ सबभीमपार्थमिलिकृष्णसंग ॥ इहांइंद्रप्रस्थआएअभंग ॥ दियविजयसंषधुनिवासुदेव ॥ अतिहर्षभयोगृहगृहअमेव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णजुधिष्टिरकोंकरे । वंदनचरनविशेष ॥ जरासंधपौरुषजथा । सोसबकहेअसेष ॥ १ ॥ ॥ जुधिष्टिरउवाच ॥ ॥ कुंतीसुतकरजोरिकहि । राजावचनरसाल ॥ यहतुमहीकरिहोइहां । कारजसिद्धिकृपाल ॥२॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कर्योनृपनकोमोषक्रम । छिनमहंबंदिछुडाइ ॥ प्रभुनरहगऐसीप्रकृति । सदाअनाथसहाइ ॥ ३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशम०बारटनरहरिदासविरचितेविंशतिसहस्रराजावंदिमोचननंनामत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जरासंधकोवधजथा ॥ पुनिसुनकृष्णप्रभाव ॥ भूपधर्मसुतकेभयो । उरआनंदअमाव ॥ १ ॥ कह्योजुधिष्टिरजोरिकर । प्रगटसमयजबपाइ ॥ कह्योचहतहमजिग्यक्रम । सोप्रभुकरोसहाइ ॥ २ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ हरियहसुनतप्रसन्नव्है । आज्ञादीनीएह ॥ करियेयज्ञारंभक्रम । सबैछांडिसंदेह ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ द्वैपायनगौतमभरद्वाज ॥ कीनैवसिष्टअग्रेसकाज ॥ मिलितहांअसितअरुद्विजसुमंत ॥ मैत्रेयच्यवनअरुत्रितमहंत ॥ द्विजकवषकण्वमिलिवामदेव ॥ मुनिविश्वामित्रअतितपअजेव ॥ पुनिसुमंतपराशरगर्गपाइ ॥ अरुवामनक्रतुजुतपैलआइ ॥ द्विजवैसंपायनधौम्यदेव ॥ अरुपरसुरामतपबलअजेव ॥ कस्यपअथर्वआसुरिकृपाल ॥ द्विजवीतहोत्रमधुछंददयाल ॥ समअकृतव्रणअरुवीरसेन ॥ सोकीनेंऋषिऋत्विजसुषेन॥ द्विजद्रोणकृपाचारिजसकाज ॥ भीषमधृतराष्ट्रसुतसमाज ॥ पुनिविदुरसहितअन्नेकभूप ॥ सबमिलेआनिअपनेसरूप ॥ क्रतुजथाजोग्यव्यापारकाज ॥ रसरीतिरहतसबकरतराज॥ कनकहलजोतिभुवसोधकीन ॥ दिगदेवआदिव्यापारदीन ॥ ज्योंवरुणयज्ञआगेंविशेष ॥ इंद्रादिअमरआएअसेष ॥ गंधर्वसिद्धचारणसग्यान ॥ मुनिउरगयक्षराक्षसप्रमान ॥ सुरकन्याकिन्नररागसिद्ध ॥ संगीतनिपुननाटकप्रसिद्ध ॥ भवमिलेसकलभुवचक्रभूप ॥ अरुसहितराजरमणीअनूप॥विधिजथाजोग्यगुरुजनविचारि॥ सबहिनकहकारिजदियसंभारि ॥ अषिलेसकृपासबजुरीआनि ॥ पूर्णतापांडवागृहप्रमानि ॥ क्रतुहौनलग्योआरंभकाज ॥ सुरसिद्धविहितराजासमाज ॥ पुनिजथावेदविधिअवधिपाइ ॥ सुभयज्ञभयोपूरनसुभाइ ॥ ॥ युधिष्टिरउवाच ॥ ॥ मषअंतउचितपूजासनेम ॥ पृथ्वीसुरपूछ्योसहितप्रेम ॥ इहिजोगकहोधोकवनआज ॥ किहकरेप्रथमपूजासकाज ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ मुषचाहिरहेसबऋषिनरेस ॥ सोदयोनउत्तरकिहिंविशेष ॥ ॥ सहदेवउवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ आदिब्रह्मअषिलेसविश्वरूपीविश्वंभर ॥ सर्वदेवमषदेहधरयोतनमनुजकाज्ञधर ॥ कृष्णछांडिकारुण्यकरणकारणसमर्थकलि ॥ यहांजोग्यकोअवरमषजुपूजाकारियेमिलि ॥ तसमातकरहुअभिषेकतुम, वासुदेवकहँवेदविधि ॥ यहकह्योवचनसहदेवइहां, सबैकरीजिहिजिग्यसिधि ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ यहसबहिनकोमंत्रसुहायो ॥

परिषद्सुनतपरमसुषपायौ ॥ कृष्णदेवयहांपूजिसकारन ॥ मिलेजथाअभिलाषसकलमन ॥
चरणधोइजलसीसचढावत ॥ पूजाकरतपरमसुषपावत ॥विहितकृष्णअधिकारविलोक्यो ॥
सत्रुभयोसिसुपालससोक्यो ॥ उठिठाढौतहांभुजाउठाई ॥ महाक्रोधनहिंउरहिसमाई ॥ बो
ल्योदारुणवचनमहाबल ॥ सबनिसुनाइचैद्यत्रयचषषल ॥ जथादूरतनमायाजानी ॥ अति
दुर्वादकहैंअभिमानी ॥ ॥ सिसुपालउवाच ॥ ॥ जानिनजाइकालगतिजैसी ॥ अनुचित
करीवृद्धजनऐसी ॥ प्रगटछांडिऋषिभूपप्रवीने ॥ क्रमअभिषेकग्वालकहँकीने ॥ जाकहँकह
तनंदकौजायौ ॥ प्रगटअहीरवंसपदपायौ ॥ जथाजोग्यकृष्णहिमतजानहु ॥ निंदितकाकह
विष्यनिदानहु ॥ हैआश्रमवर्णहिकुलहीनौं ॥ कृतनिर्गुनकहँपूजितकीनौ ॥ भयोजजातिवं
ससमभूपति ॥उनहुनराजदयौइनकौअति ॥छांडिपवित्रभूमिकीनौछल ॥ षारसिंधुतटआइ
वस्योषल ॥ तातैंजोग्यनपूजाताकौ ॥ अबतौउचितकाढिवौयाकौ ॥कविरुवाच ॥ सठजब
सतदुर्वादसुनाए ॥ पूरणभएकृष्णदुषपाए ॥ वाकेवचनभयोनहिआदर ॥ जथास्यालकेव
चनमृगेसर ॥ निंदाकृष्णसुनेजोईनर ॥ हैसोसर्वधर्मतैंबाहिर ॥ सुभटपांडुसुतइहांसंभारे ॥
नैनसैनसोइकृष्णनिवारे ॥ आपचतुर्भुजचक्रचलायो ॥ वहसिसुपालमारिफिरिआयो ॥
काट्यौसीसभयौकोलाहल ॥ दुसहकालतिहिंभागगयौदल ॥ निकसीजोतिदेहतैंनिर्मल ॥
कर्यौप्रवेशकृष्णमहँअनकल ॥ कृष्णचिंतवनवैरभावकरि ॥ व्हैगयोतन्मयसुपैविषैहरि ॥
सांगभयोजबयज्ञसपूरन ॥ यहांभएअर्थीसबऊरण ॥ सबहीविधिसबकौंसंतोषे ॥ पूजादा
नमानद्विजपोषे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूपसबनकौंसुषभयौ । अरुघरघरउच्छाह ॥ देषिस
पूरनयज्ञदिन । दुर्योधनउरदाह ॥ कृष्णचरित्रअभूतक्रम । निग्रहमोषनरेस ॥ कठिन
जुद्धसिसुपालको । अरुवधभयोविसेस ॥ २ ॥ क्रीडारणजदुनाथकी । करिहितगावैकोइ ॥
कविनरहरतिहिंपापकी। अंतनबाधाहोइ ॥३ ॥ ॥इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेद०
बारहटनरहरिदासविरचितेराजसूयज्ञसिसुपालवधोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ॥७४॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर्यौप्रश्णसुकदेवसौं । यहांपरिक्षितराइ ॥ भूपसबनिकौं
सुषभयौ । मषपूरनतहँपाइ ॥ १ ॥ एकहिदुर्योधनउरहि । जथाघाइलगिलोन ॥ ज्वल
नविनाहीपरिजर्यो । यहधौंकारनकौन ॥ २ ॥ ॥ शुकउवाच ॥ ॥ तहांकह्योसुक
देवतब । पूरवजथाप्रकार ॥ अमरसिद्धनृपआगमन । विविधजग्यव्यापार ॥ ३ ॥ ॥ क
विरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कृतभीमयहांअन्नाधिकार ॥ पुनिपार्थसुजनसेवाप्र
कार ॥ दुर्जोधनअधिकारदीन ॥ पुनिकर्णदानकारिजप्रवीन ॥ संभारसाधनानकुलसाध
॥ सहदेवअषिलभूपनिअराध ॥ द्विजचरनसोचकहकृष्णदेव ॥ आपहीलह्योअधिकार
एव ॥ सुश्रूषानृपरमणीसुभाइ ॥ पांचालीयहअधिकारपाइ ॥ राजाविराटजुजुधानरूप ॥
भ्राताभिलिभूरिश्रवाभूप ॥ इत्यादिकजेराजाअपार ॥ कीयजथाजोग्यकर्माधिकार ॥
मषराजसूयपूरनप्रमान ॥ वनिजथाविविधमंगलविधान ॥ इहांबजेदेवदुंदुभिअकास ॥
पुनिकरीपुहपवर्षाप्रकास ॥ अबमज्जनकीयसुरसरीआइ ॥ भवभूपभूपरमणीसुभाई ॥ अ
भिलाषजुधिष्ठिरचिंतआनि ॥ भएकृष्णकृपापूरनप्रमानि ॥ रथबैठिइहांत्रियपुरुषराज ॥

मंगलजुतआएगृहसमाज ॥ ॥ अथमयदैत्यसभाप्रकासन ॥ ॥ मयदैत्यसभाअर्जुनिहिमूल ॥ सोइइहांबनाईसानुकूल ॥ विस्तारविविधपरिषदबनाइ ॥ इहांराजजुधिष्ठिरबैठिआइ ॥ सबभ्रातपुत्रमिलिसजनसंग ॥ यहांआनिजथाथितभएअभंग ॥ जालीगवाषमिलिजुवतिजाल ॥ गावततहांमंगलगुनगोपाल ॥ पुरलोकआनिबैठेअपार ॥ सुषसभाप्रगटदेषतसंसार ॥ विधिजुक्कवसनभूषनबनाइ ॥ चितमानिजथासौरभचढाइ ॥ यहांआयौदुर्जोधनअदेष ॥ संगवृद्धसजनभ्राताअशेष ॥ इहिंसभाजलस्थलभ्रमअपार ॥ दुर्गमनजथाप्राकारद्वार ॥ थलदेषिभयोभ्रमजलअथाग ॥ लीनैउठाइतहांवसनलाग ॥ जलगहरठौरथलविमलजानि ॥पुनिदएछांडितहांवसनपानि ॥ जलकुंडमांझबूड्योअजानि ॥ पुनिलग्योनिचोरनवसनपानि ॥ सोदेषिकृष्णतबकरीसैन ॥ निःसंकहस्योतहांभीमसेन ॥ लहिसमयहसेतबसकललोक ॥ अट्टाट्टहास्यकरिओकओक ॥ इहांभईसिषाहठषलहिआनि ॥ पटफिरयौनिचोरतआपपानि ॥ करितहांसीसनीचोकुचार ॥ अपनेगृहआयौदुषअपार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भारउतारहिभूमिकौ । कुलकौरवषयकार ॥ भारतकोसंघारभट । बयौबीजइहिंवार ॥ १ ॥ संपतिपांडवराजसुष । पूरणजग्यप्रताप ॥ सभादेषिकिह्हुकर्मबस । पर्यौषिसानोआप ॥ २ ॥ दारुनउपजेदोइदुष । दुर्योधनहिदुरंत ॥ भवतातैअमरषभयौ । तैसेईमिलितंत ॥ ३ ॥ अभिमन्युसुतशुकदेवसौं । कीनैप्रष्णप्रवीन ॥ याकेउचितविचारिइहां । द्विजवरउत्तरदीन ॥ ४ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहंटनरहरिदासविरचितेमयसभामध्येदुर्योधनषिसाहनोनामपंचसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्रमजुतपूरनजिग्यकरि । गृहआएगोविंद ॥ भूपजुधिष्ठिरकैभयौ । इहांपरमआनंद ॥ १ ॥ अबकीनौउच्छाहअति । कृष्णभक्तिकेकाज ॥ दूतपठाएद्वारका । बोल्यौसजनसमाज ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अषिलेसकृष्णबलभद्रआप ॥ प्रभुभक्तवत्सलपूरनप्रताप ॥ देशाधिकारप्रद्युम्नहिदीन ॥ करुणानिधानतबगमनकीन ॥ इहांइंद्रप्रस्थआएअनंत ॥ सबमिलेआनितहांसजनसंत ॥ दिनकरेकछुहदेवाधिदेव ॥ इहांकरतधर्मचर्चाअजेव ॥ जबइंद्रप्रस्थश्रीकृष्णजानि ॥ पैदुसहघातपूजीप्रमानि ॥ पनबांधिसाल्वषलसमयपाइ ॥ अबघेरीद्वारावतीआइ ॥ महिपतीसाल्वसिसुपालमित्र ॥ तिहिंदेषिव्याहरुकमनिचरित्र ॥ वहिसमयआइरनमदाअंध ॥ हतमानभयौसोजरासंध ॥ इहांसाल्वप्रतिज्ञाकरीएह ॥ सिसुपालसषावधसुनिसनेह ॥ रनमारिसबैएसुनतराज ॥ अवनीनिर्जादवकरौंआज ॥ पृथ्वीसप्रतिज्ञाकरिप्रचंड ॥ इहांरुद्रहेततपकियअखंड ॥ मुष्टिकामात्रआहारमूल ॥ कारिरहैरेणुकासानुकूल ॥ तपकरतवर्षदिनभौवितीत ॥ सबसहेघामजलविषमसीत ॥ भूतेसभएसुप्रसन्नभूप ॥ प्रभुदीनैदरसनदयारूप ॥ करजोरिसाल्वतहांप्रणतिकीन ॥ प्रभुजानतअंतरगतिप्रवीन ॥ मोहिदेहुरुद्रऐसौविमान ॥ मनतेजोसतगुनवेगमान ॥ सुरअसुरनागनरयक्षसंग ॥ गंधर्वनिराक्षसकरिअभंग ॥ सोजादवकौहोइहृदयसूल ॥ तासौंकोइवाहनकरिनतूल ॥ भवकियप्रमानन्रप

चित्तभेव ॥ दीयमयकोंआज्ञामहादेव ॥ मयदीनौकरितैसोविमान ॥ जलगगनगमनजहां चित्तजान ॥ इतिसाल्वसौभरथप्राप्ति ॥ धीरचित्तसाल्वपूरबविरोध ॥ करिआयौद्वारावती क्रोध ॥ घेर्यौसुनगरकरिदुसहघात ॥ विस्तरेसेनचहुंदिसिविष्यात ॥ सिलसर्पवृक्षवरषैअ साधि ॥ इत्यादिकरैदुःसहउपाधि ॥ हाहारवतहांपुरमांझहोइ ॥ सुतकृष्णप्रद्युमनेसुन्यौसोइ ॥ इहांसांबआइसात्यकिसधीर ॥ बनिअनुजसहितअंक्रूरवीर ॥ इत्यादिकजेजादवअभंग ॥ सबमिलेआनिप्रद्युम्नसंग ॥ सन्नहाबांधिआयुधसजाइ ॥ इहांरथारोहरणभूमिआइ ॥ करिसज्जधनुषटंकारकीन ॥ प्रद्युम्नबानसंधेप्रवीन ॥ साल्वसौंभयौजादवसंग्राम ॥ देवासुरज्योंआगेदुगाम ॥ इहांकरीसाल्वमायाप्रकास ॥ सरमारिप्रद्युमनकर्यौनास ॥ साल्वकोसेननाइकसधीर ॥ सरपंचपंचवेध्यौसरीर ॥ प्रद्युम्नकर्यौपौरुषअपार ॥ प्रतिसुभटवानदशदशप्रहार ॥ विसतरैसाल्वमायाविवेक ॥ एकतैरचैविग्रहअनेक ॥ आकाशविषैधरकबहुआइ ॥ वृष्टिपथकबहुंकबहूंदुराइ ॥ जलमध्यकबहुंगिरसिषरजानि ॥ उलमुकाचक्रज्यौंभ्रमतआनि ॥ यौंकरतसाल्वमायाअपार ॥ बढिविविधबानविषमुषविकार ॥ सात्वकोमुष्यमंत्रीद्युमंत ॥ सोजुर्यौप्रद्युम्नसोअसंत ॥ परसपरगदाकीनैप्रहार ॥ मिलिदाउमुषमारमार ॥ प्रद्युमनसीसमंत्रीप्रहार ॥ सोमूर्छागतभूल्यौसंभार ॥ यहांभयौप्रद्युम्नजबअचेत ॥ रथहिलेगयौतजिसूतषेत ॥ प्रद्युम्नजबैकछुचेतपाइ ॥ सारथिसौंबोल्यौअतिरिसाइ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ हैजीयतछुडायौषेतमोहि ॥ तातैंअसाथधिक्कारतोहि ॥ कुलजादवनाहिनभयोकोइ ॥ हठछांडिपरामुषसमरहोइ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आनेतुमहिअचेतअति । मतियहउपजीमोहि ॥ इहांनकरिवोसोचअब । ताकौंदोषनतोहि ॥ १ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबा० नरहरिदासविरचितेसाल्वद्वारावतीअवरोधप्रद्युम्नजुद्धोनामषट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥ ॥ ६७ ॥

कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहांप्रद्युम्नसूतसौं । ऐसैंकह्योरिसाइ ॥ जहांद्युमंतमंत्रीदुसह ॥ अबतहांमोपहुंचाइ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सोगयौतहांरथहांकिसूत ॥ इहांभयौमहांसमहरअभूत ॥ रणकुंवरचलाएबानचारि ॥ मंत्रीकेचार्यौअश्वमारि ॥ इकबानसारथीछेदिअंग ॥ उभयकरधनुषसायकअभंग ॥ मार्यौसंग्राममंत्रीद्युमंत ॥ इकवानकर्यौसिरछेदअंत ॥ प्रद्युम्नतबैरणविजयपाइ ॥ कहिसाधुसाधुसुरनरसुभाइ ॥ दिनरातिसत्तविशतदुरंत ॥ इहांभयौजुद्धहयसुभटअंत ॥ इहिसमयधर्मसुतग्रेहआप ॥ प्रभुहुतेकृष्णपूरनप्रताप ॥ दुर्निमित्तदेषिनिसमयनदेव ॥ यहांभयौचित्तविस्मयअमेव ॥ इहांभईविग्रताचितअचैन ॥ नृपआज्ञालीनीकमलनैन ॥ उठिचलेसैनसंजुतअनंत ॥ विष्यातवीरजुधजैतवंत ॥ अषिलेसुरद्वारावतीआइ ॥ संग्रामहोतदेष्यौसुभाइ ॥ बलभद्रनगररक्षाविधान ॥ धरिरहैसुआयुधसावधान ॥ इहांकृष्णआइसंग्रामओर ॥ जयहेतसाल्वसौंपरीजोर ॥ षलदेषिकृष्णकहँसमरषेत ॥ सूतकहँशक्तिवाहीसचेत ॥ रणविजयवानमोच्यौमुरारी ॥ मथिषंडकरीसोसक्तिमारि ॥ पुनिबानकृष्णवेध्यौप्रकास ॥ सौभरथभ्रमणलाग्यौअकास ॥ हठिसाल्वविसिषहनिकोपहोइ ॥ स्यामकेवामभुजलग्यौसोइ ॥ पुनि

गिखोभूमिसारंगचाप ॥ अषिलेसफेरिलैसज्योआप ॥ ॥ सालवउवाच ॥ ॥ इहांत्र मतगगनरथसहितआप ॥ दुर्वादसाल्वबोल्योसपाप ॥ पृथ्वीसमोहिसिसुपालप्रीति ॥ ताकीत्रियआनीइहिंअनीत ॥ नृपसभामांझहतिसोइनरेस ॥ विधिसुपैनाहिपौरुषविशेष ॥ अवतोहिपठैहौंतहांअंत ॥ इहांआवनहोइनफिरिअसंत ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ हसिकह्योकृष्णतबवचनएह ॥ रेदुष्टराषिआपनोदेह ॥ कृतअंधनदेषतअम्योकाल ॥ करिकोपसीसऊपरिकराल ॥ जेमहावीरभुवचक्रमांहि ॥ निहचैसुकरतकृतकहतनाहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांकृष्णगदाहतकखोएह ॥ दुष्टउरलगीभौविकलदेह ॥ पुनिदंडमात्रफिरिचेतपाइ ॥ सोरचतभयौमायासुभाइ ॥ षलकखोसाल्वतबदूतवेष ॥ वसकपटइहांआयोविशेष ॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ यहवचनकृष्णसौंकह्योआइ ॥ मोहिपठयौहूंदेवकीमाइ ॥ सुतकरहुसाल्वसौंसमाजिसांधि ॥ वसुदेवहिलैगोबलीवांधि ॥ पिसुनजथालैजातपाप ॥ इहिंभांतिपितातवग्रह्योआप ॥ मुक्तहुसंग्राममममवचनमानि ॥ अबपिताछुडाबहुवेगिआनि ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ यहसुनतभयोसंभ्रमअसेस ॥ विधिकपटदूतदिषियतविसेस ॥ बलभद्रवीरपुरमहविष्यात ॥ तहांअसंभावनाइहैबात ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहिंवीचिसाल्वरथउतरिआइ ॥ वसुदेवरूपबांध्यौबनाइ ॥ ईश्वरीदेहतूंजपैआप ॥ वधतहौंराषिआपनौबाप ॥ सिरकाटितहांकृत्रिमस्वरूप ॥ यहडारिदयौदलमहअनूप ॥ तिहिदेषिभएछिनइकसचिंत ॥ करिमनुजभावतहांरमाकंत ॥ धरिजोगध्यानकहिकृष्णधीर ॥ सोपैनसीसनाहिनसरीर ॥ देष्यौनिहारितबवासुदेव ॥ वहबैठोहैरथमहँअजेव ॥ माखोसुगदाकरिहरिविमान ॥ निःसेषतोरिडाखोनिदान ॥ जलमाझपखोरथसौभजाइ ॥ यहांसाल्वगदालैसमुषआइ ॥ दुवभुजाछेदिदुवबानदेह ॥ अरुचक्रसुदर्शनशिरअजेह ॥ दोहा ॥ माखोसाल्वसंग्राममिलि । माधवतोरिविमान ॥ सुरहरषेवरषेसुमन । दुंदुभिदएनिदान ॥ १ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेसाल्ववधोनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥७७॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ प्रथमहत्यौसिसुपाल, पौंड्रकराजासाल्वनृप ॥ कृततिहिंवयरकराल, दंतवक्रविदुरथदुवे ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ एदोउमहासेनसजिआए ॥ विग्रहवयरविरोधबढाए ॥ सोसुनिकृष्णदेवचढिसमहर ॥ परुषवचनतहांकहतपरसपर ॥ ॥ दंतवक्रउवाच ॥ ॥ दंतवक्रवोल्योउरआतिदुष ॥ मैममभित्रहतकदेष्यौमुष ॥ यहममगदावज्रआकारा ॥ ओडहुतुमकहियतअवतारा ॥ कविरुवाच ॥ दंतवक्त्रकीगदाजुदारुन ॥ कृष्णदेवकैलगीसकारन ॥ कौमोदकीगदावज्राकृति ॥ वहांकृष्णसोहन्योक्रोधअति ॥ हृदैप्रहारकखोमाधवरन ॥ छूटेप्रानशत्रुकेतिहिंछन ॥ माखोदंतवक्त्रअभिमानी ॥ स्याममांझवहजोतिसमानी ॥ दंतवक्त्रकोभ्रातविदूरथ ॥ सोपैवयरजानिमनसमरथ ॥ धरिअसिचर्मरोषकरिधायौ ॥ यहांकृष्णकेसन्मुषआयौ ॥ पुनिसोऊहरिचक्रप्रहाखौ ॥ महांसंग्रामविदूरथमाखौ ॥ दंतवक्त्रअरुदुसहविदूरथ ॥ रणसनमुषव्हैरहैमहारथ ॥ देवनिगगनदुंदुभीदीनी ॥ कीर्तिसिद्धचारणज

नकीनी ॥ आदिपूतनादुष्टजुएते ॥ तहँतहँनासकरेप्रभुतेते ॥ यहांअनंतदेवगृ
हआए ॥ वजेद्वारकानगरबधाए ॥ महकौरवपांडवजुद्धउद्यम ॥ भयोसबनिकेंचि
त्तबढ्यौभ्रम ॥ सुनिभारथउद्यमसंकर्षन ॥ महाविषादभयौमनहीमन ॥ यहदि
सिकृष्णसुजोधनवदिसि ॥ सोउठिचलेतीर्थजात्रामिसि ॥ महामित्रदुर्जोधनमान्यो ॥ इ
हिदिसिकृष्णभ्रातउरआन्यो ॥ तहांबलदेवनिकसिगएतातैं ॥ जुद्धदुसहसहिजातनजा
तैं ॥ उहांप्रभासप्रथमहीआए ॥ अरुपाछेसरसतीअन्हाए ॥ पृथोदकविंदूसरपावन ॥
त्रीतकूपअरुसुषदसुदर्शन ॥ विहितविशालब्रह्मतीरथविधि ॥ सरिताजमनगंगमंजनसि
धि ॥ इहांनैमिषारण्यजुआए ॥ पुण्यजतनसौनकादिपाए ॥ यहांद्विजऊठिसबनिदयोआ
दर ॥ व्यासशिष्यइकरोमहर्षवर ॥ पुनिसोहुतौपुराणव्रतीपर ॥ व्यासासनबैठ्योतहांद्वि
जवर ॥ यातेसौनउठ्योअकुलाई ॥ यहांबलदेवमहारिषआइ ॥ ॥ बलदेवउवाच ॥
॥ अरेद्विजाधमअहमितिआई ॥ इनतैंतोइकहाअधिकाई ॥ व्याससिष्यसीषेविद्यावर ॥
यातेगर्वबढ्यौतेरेउर ॥ सौनहिउचितविप्रकौरेसठ ॥ हेतनीतिछांडेमांडेहठ ॥ कियमैमनु
जदेहइहकारन ॥ पाषंडिनकोंदंडप्रचारन ॥ यहांसंकर्षनदर्भचलायो ॥ तिहप्रहारद्विजपं
चत्वपायो ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ द्विजइहहमव्यासासनदीनो ॥ वांचतनित्यपुराण
नवीनो ॥ याहिनउचितऊठिवौयातैं ॥ तवसुस्रुषाकरीनतातैं ॥ तुमअनर्थयहकीनोतैसो॥
इहांब्रह्मवधउपज्यौऐसो ॥ प्रायश्चित्तकरियैप्रभुपावन ॥ नियतब्रह्मवधपापनसावन ॥
॥ बलदेवउवाच ॥ ॥ सत्यवचनऋषितुमहिसुनाऊं ॥ जोगसकतिकरिविप्रजिवाऊं ॥
॥ ऋषिरुवाच ॥ इहांविचारकरहुप्रभुऐसो ॥ तबकुशअस्त्रसत्यहोइतैसो ॥ विप्रवचन
इहबेदवतावै ॥ पुत्रपिताकीसमतापावै ॥ उग्रश्रवाकौपुत्रजुवाकौ ॥ ताहिदयोव्याससनता
कौं ॥ ॥ बलदेवउवाच ॥ ॥ निहचैफेरिकह्योसंकर्षन ॥ मांगहुजोअभिलाषविप्रमन ॥
मनसंतापनिवेद्योमुनिवर ॥ इहांएकबल्वलहैआसुर ॥ इल्वलकोसुतमहाबलीअति ॥ पा
पीदानवबहुतदुष्टपति ॥ मूत्रपुरीषसुराअरुआमिष ॥ डारतयज्ञविगारिदेतदुष ॥ पूरनय
ज्ञहोननहिपावत ॥ सोदानवषलहमहिसंतावत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असुरकरहुनिर्मूलत्व
ह । सुरमुनि[illegible]सुसाल ॥ याकोप्रायश्चित्तइह । करियेरामकृपाल ॥ जितेकतीरथजानि
वे । भरतषंडमहँभूप ॥ क्रमजात्रातिनकीकरहु ॥ सोतुमपुन्यसरूप ॥ ॥ इतिश्री
अवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारे दशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचिते व्यासशि
ष्यरोमहर्षणपौराणिकवधनोनामअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७८ ॥ ॥ छ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कीयआरंभजुजग्यकौ । सौनकआदिऋषेस ॥ करनलगेतहां
दुष्टक्रम । आसुरआइअशेष ॥ १ ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ दीर्घसथूलदेहअतिदा
रुन ॥ कृष्णवर्णअरुकलहअकारन ॥ कपिलकेशअरुदंतकुदाला ॥ भृकुटीकुटिलकुरूपक
राला ॥ ऐसेजग्यसालषलआए ॥ पापीदेषेविप्रपलाए ॥ सुनिकोलाहलतवसंकर्षन ॥ जि
ग्यसालआएरक्षकजन ॥ कोपिमुसलहलसुमिरनकीनै ॥ आनिभयेतेवचनअधीनै ॥ इ
हांगगनचढिगयोसुआसुर ॥ उरपरित्रासभयौअतिआतुर ॥ इहांहलअग्रसुऐंचिउताऱ्यो ॥

मस्तकफट्यौमुसलकरिमाख्यौ ॥ दएप्रातदानवतिहिंदारुन ॥ रिषिजयजयतिउचारिम
महारन ॥ आज्ञामाँगिकौशिकिहिआए ॥ आगेसरयूसरितअन्हाए ॥ आइप्रयागपुलह
केआश्रम ॥ करिमज्जनगोमतिगलिकाक्रम ॥ प्रभूविपासाश्रोणगयापुनि ॥ सुभकृतमा
लाताम्रपर्णिसुनि ॥ अद्रिमलयकुंभजकेआश्रम ॥ दक्षिणअर्णवआइदुष्टदम ॥ कन्यादे
वीसरसनहितकर ॥ विहरेफलगूपंचसरोवर ॥ देवीकृतद्वैपायनदरसन ॥ सूर्यारकगोकर्ण
सनातन ॥ अयुतधेनुयहांभगतअधीनी ॥ देवयथाविधिविप्रनिदीनी ॥ अवतापीरुप
यौष्णीआवन ॥ निर्विंध्याविहरेदंडकवन ॥ रेवामहिषमतीमनुतीरथ ॥ फेरिप्रभासआइ
पश्चिमपथ ॥ भयौमहाभारथजूझेभट ॥ सोपैइहांसुन्यौरणसंकट ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥
विहरततीरथवर्षवितीत्यौ ॥ इहांमहाभारथसुअतीत्यौ ॥ रोषचढेइतभीमविजयरन ॥ द्वं
द्वजुद्धवहिघांदुर्जोधन ॥ अजहुंआपआपअकुलाए ॥ सौपैंजूझतद्विजनिसुनाए ॥ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ यहांबलदेवसोचकरिआपन ॥ चलेनेमकरितिनहिनिवारन ॥ इहांकुरषेत
हांकिरथआए ॥ पैदोउभिरतमहाभटपाए ॥ महाविरोधविजयवांछामन ॥ रोषचढेनहि
होतसांतरन ॥ ॥ बलदेवउवाच ॥ ॥ यहांबलदेववचनकहिऐसौ ॥ तुममहघाटिनही
कोऊतैसौ ॥ सिष्याबलदुर्योधनसाधत ॥ अरुतनबलअतिभीमअराधत ॥ कलहघट्यौ
तुममैनहिकोऊ ॥ हठतजिवीरनिवर्तनहोऊ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ महावैरहितवचन
नमान्यौ ॥ उरनरामकौआदरआन्यौ ॥ तहांबलदेवविचारीतैसी ॥ इनकीयहभावीहैऐसी ॥
यहांनैमिषारण्यजुआए ॥ स्त्रीसहितकरिपुन्यसुहाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिकैतीरथपरि
क्रमण । भरतषंडभूपाल ॥ तबआएबलदेवतहां ॥ द्वारावतीदयाल ॥ १ ॥ कर्मचरित
बलेदवकौ । करिहैसुमिरनकोइ ॥ कालतीनिमनवचनकारि । हरिसौंबल्लभहोइ ॥ ॥
इतिश्रीअवतारचरित्रे श्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेबल
देवतीर्थजात्राप्रसंगोनामएकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ यहांसुदामाविप्रइक । महादरिद्रीमूढ ॥ एककृपाकरिशुद्धवह ।
अरुहतभाग्यअगूढ ॥ १ ॥ इंद्रीअर्थविरागवह । मननिश्चयनिस्काम ॥ जथालाभसंतो
षजग । षीनवसनतनस्याम ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मुषसोषअधरअतितनमलीन ॥
दुषपरिभवभाजनवचनदीन ॥ जोकरैजुउद्यमअफलजाइ ॥ पैकहूंचित्तथिरतानपाइ ॥
पतिव्रतातासपतनीसप्रेम ॥ नितिकरैभगतिसेवासनेम ॥ ॥ पत्नीवाक्यं ॥ ॥ कहि
त्रियावचनतुमसुनहुकंत ॥ इकविपतिदूसरेअलसवंत ॥ श्रीकृष्णसषाजिनकैंसमर्थ ॥
अग्यानसहतइतिदुषअवर्थ ॥ सांदिपनकेतुमपढेसाथ ॥ एइवासुदेवअनाथनाथ ॥
इहांनिकटद्वारकावसतआप ॥ धरिचित्तधीरपतिकरहुधाप ॥ पुनिविप्रमंत्रकीनोप्रमानि ॥
उनकौकछुदीजैभेटआनि ॥ वस्त्रकेषंडबाँधेविचारि ॥ निहचैतहांतंदुलविप्रनारि ॥ ब्राह्म
णसोचांवरगांठिबांधि ॥ करलोटाषरियाधर्‌यौकांधि ॥ उठिचल्यौविप्रसोकरतआस ॥ व
सुदेवकुंवरकौंउरविसास ॥ यहांविप्रद्वारकानगरआइ ॥ सबपौरिलाँघिभीतरिसिधाइ ॥
अंतहपुररहेतबकृष्णआप ॥ पटरानीग्रहपूरनप्रताप ॥ अनिवारितआयौविप्रएह ॥ दुर्ब

लपटफाटेमलिनदेह ॥ दूषितदरिद्रीमुषवचनदीन ॥ पहिचान्यौप्रभुदेषतप्रवीन ॥ उठि कृष्णतहांसंमुहैंआइ ॥ लषिसषामिलेतिहिंकंठलाइ ॥ धरिपानिआनिकरुनानिधान ॥ पर्यंकदयौआसनप्रमान ॥ पटपीतझारिरजविप्रआइ ॥ भगवंतचरनधोएसुभाइ ॥ सो धरयौचरणजलआपसीस ॥ मनमुदितकरीसेवामहीस ॥ भुवबैठिआपत्रयभुवनभूप ॥ अरुकरतचरणमर्दनअनूप ॥ वेदर्भीढोरतविजनबात ॥ विधिजुक्तकरीपूजाविष्यात ॥ वहांआइराजरमणीजुऔर ॥ ठाढीहँसिपुछतठौरठौर ॥ ॥ पत्नीवाक्यं ॥ ॥ पाहुनौकौ नयहकिहिप्रसंग ॥ अवधूतछीनिपटमलिनअंग ॥ दारिद्ररूपयहषीनदेह ॥ सज्यावैठा रयौकरिसनेह ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ करिहेतसुदामाबालकाल ॥ सांदीपनिकीह मपढेसाल ॥ मेरेगुरभ्राताइहैमहंत ॥ इहिनामसुदामाविप्रसंत ॥ कुशलातकृष्णपूछत कृपाल ॥ बलवीरमिल्यौयहमित्रबाल ॥ अबभाग्यहमारेग्रेहआइ ॥ सुभदयौसाधुदरस नसुभाइ ॥ पढिविछुरेहमतेजबपुनीत ॥ तवव्याहभयौकिधौनाहिमीत ॥ दिषियतअ कामसेद्विजदयाल ॥ हैदसाकौनयहकौनहाल ॥ सुधिआवतहैवहिदिनसनेह ॥ गुरुप त्नीपठएकाजग्रेह ॥ इंधनकौहमतुमगएआप ॥ वनमांझविषमतहांसीतव्याप ॥ वहिस मयभईवर्षाअकाल ॥ जलपूरिमहामिलिजलदजाल ॥ कृतनिसागगनघनअंधकार ॥ सोपंथलहतनाहिनसंचार ॥ पुनिरहेक्षुधारतसमयपाइ ॥ वनमांझविषमरजनीविहाइ ॥ कहुषोजतषोजतप्रातकाल ॥ द्विजगुरुलहेहमकौदयाल ॥ ॥ गुरुरुवाच ॥ ॥ लीनेस प्रेमतवकंठलाइ ॥ हमहेतपुत्रतुमकष्टपाइ ॥ कृतसेवाहमअतितुमसकाज ॥ यातेतुमऊ रनभएआज ॥ विद्यामेंदीनीजोविशेष ॥ सोसकलहोहुतुमकौअसेस ॥ ॥ श्रीकृष्णउ वाच ॥ प्रभुहेतजुपैवनकष्टपाइ ॥ सोइभयौहमैस्वारथसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवआ एगुरुग्रेहतुम । सांदीपनकेसंग ॥ यहांगुरुपतनीलाइउर । उपजेसुषअँगअंग ॥ २ ॥ ॥ श्रीसुदामाउवाच ॥ ॥ कृष्णसहाइकदीनके । सोयहविरदसंभारि ॥ मोहिदरिद्रीकौ मिले । प्रभुसामुहेंपधारि ॥ ३ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ धरिकरलैउरधाइ, केसवमहिमाविर दकी ॥ वेदनसकैबताइ, सेषवषानतमुषसहस ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नरहरप्रभुगाव तनिगम । इहैरावरीरीति ॥ पतितउधारनपरपुरुष ॥ पूरनप्रेमप्रतीति ॥ ५ ॥ कहोपि छानैऔरको । प्रभुतुमविनागुपाल ॥ मोहिदरिद्रीमूढको । दीनानाथदयाल ॥ ६ ॥ इतिश्रीअवताचरित्रे श्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेसुदा माआगमनंनामअशीतितमोऽध्यायः ॥ ८० ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ७ ॥ ॥ कविउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कारनगुरुग्रहकीकथा । अपनीदसाअनंत ॥ कृष्णसु दामासौकह्यौ । भक्तिहेतभगवंत ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पाथेयमित्रपतनीप्रवीन ॥ हिजलावहुजोकछुहमहिदीन ॥ हमएकभावग्राहीअषेद ॥ भवभूरिअलपलगिनहिनभे द ॥ तुलसिकापत्रफलफूलतोइ ॥ हेतकरिलेतसुप्रसन्नहोइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ च किरह्यौविप्रतहांधरनिचाहि ॥ एचावलमुष्टीमात्रआहि ॥ इनकौकहादैहुंप्रभुहिआज ॥ लोकापवादअरुहोतलाज ॥ विश्वेसविश्वव्यापकविशेषि ॥ द्विजकोतहांअंतरभावदेषि ॥

अविलोकिगांठितंदुलअनंत ॥ करषोलिलएतहांरमाकंत ॥ मुष्टिभरिमेलेमुषमझारि ॥ पुनिमाधवदूजैकरपसारि ॥ सोहाथगह्योरुकमनिसुभाइ ॥ प्रभुअबतोइहिंद्विजसवहिपाइ ॥ भोजनमनवंछितद्विजहिदीन ॥ करित्रिपतितहांतिहिसमयकीन ॥ इहांप्रातसमय मोहनउदार ॥ कियविदाविप्रकारिनमस्कार ॥ जाच्योनसुदामाकछुजनाइ ॥ निःसेषकृष्णदारिद्रनसाइ ॥ इहांविप्रसुदामाग्रेहआइ ॥ पैंपर्णकुटीअपनीनपाइ ॥ थिततहांग्रेह भएसप्तथान ॥ अतिउच्चसर्वसंपतिसमान ॥ इहांफिरतदासदासीअनेक ॥ बनिवसन कनकभूषनविवेक ॥ निर्धारविप्रचहुघांनिहारि ॥ विस्मयपरिसोचतभौविचारि ॥ ॥ सुदामाउवाच ॥ ॥ पृथ्वीपतिकाहुग्रेहप्रमानि ॥ हौंइहांभूलिआयौअजानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ द्विजरह्योतहांठाढोदुचित ॥ कामिनिपहिचान्योआपकंत ॥ नगजटित कनकभूषननिदान ॥ पटवसनवरनसोभाप्रमान ॥ आवरितसंगसहचरिअनूप ॥ सौधतेंउतरिआईसरूप ॥ करिधूपदीपकलसादिकार ॥ चितमुदितमहामंगलाचार ॥ धरिभुजाकंतमंदिरपधारि ॥ नौछावरिकीनीविप्रनारि ॥ वाजित्रगीतउच्छववििशेषि ॥ द्विजयहां इंद्रकोविभौदेषि ॥ ॥ सुदामाउवाच ॥ ॥ सबसंपतिसुषमंदिरसुठौर ॥ एकृष्णविनाकोदेइऔर ॥ प्रभुपतिविभूतिछिनमांझपूरि ॥ दुर्भिष्यकरेज्योंइंद्रदूरि ॥ मुहिजन्मदरिद्रीदीनजानि ॥ गृहवाहरिकेसबकारिगलानि ॥ पहिचानिमोहिदैसमुषपाइ ॥ लेमिलेआपतहांकंठलाइ ॥ प्रभुकरीप्रीतिमोसौंप्रमानि ॥ जोगेससिद्धसोपैनजानि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांपाइइंद्रसंपतिअसेष ॥ विप्रसोभयोविलसतविशेष ॥ पंचत्वलह्योतिहिंअवधिपाइ ॥ वहविप्रकृष्णमहँमिल्योआइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विप्रसुदामाकीविपति ॥ प्रभुनरहरकीप्रीति ॥ कृपासिंधुजदुवंसकी । राजनीतिइहरीति ॥ २ ॥ कृपाचरित्रजुकृष्णको ॥ करिहैसुमिरनकोइ ॥ कर्मविषाददरिद्रको ॥ हेतनकबहुनहोइ ॥ ३ ॥ कविनरहरमनवचनक्रम । करियोभजनत्रिकाल ॥ कारनबंधनकर्मके । जथाछुटहिजमजाल ॥ ४ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेसुदामाचरित्रंनामएकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ परिक्षितउवाच ॥ दोहा ॥ कालजुसूरजग्रहनको । आगमवर्त्योआनि ॥ क्रमजात्राकुरुक्षेत्रकी । पुनिसबदेशप्रमानि ॥ १ ॥ कालंतरसुकव्यासकहँ ॥ रहसिपरिक्षितराइ ॥ कारनयहपूछीकथा । प्रेमसहितसुषपाइ ॥ २ ॥ व्रजगोपिनतेवीछुरे । वृंदावनबलवीर ॥ पुनिकाहूं अवसरकहूं ॥ बहुरिमिलेयदुवीर ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ उग्रसेनराजाचलिआपन ॥ संगवसुदेवकुंवरसंकर्षन ॥ कृष्णप्रद्युम्नसांबसकारन ॥ गदसुचंद्रसंगमिलिसुकसारन ॥ वनिताबालकुटुंबविराजे ॥ स्यंदनशिबिकावाहनसाजे ॥ इत्यादिकजादवसबआए ॥ देसनगरपुरजनसमुदाए ॥ अनिरुधकृतवर्माअधिकारी ॥ राषेनगरदेसरषवारी ॥ करिनिक्षत्रपृथ्विभृगुनंदन ॥ तिनकेरुधिरकरेतहांतर्पन ॥ श्रोणीदहतहांभरेसपूरन ॥ विजयजग्यकीनैतहांवनवन ॥ वहिपवित्रथलकृष्णजुआए ॥ उत्तमकुंडसुषेतअन्हाए ॥ द्विजनिसुरभिबहुदानजुदीनै ॥ क्रमजुतजहँतहँडेराकीनै ॥ मच्छउसीनरकोसलकेरे ॥ पुनिविदर्भकुर

देसजुप्रेरे ॥ शृंजयअरुकंबोजसुकेकय ॥ मद्रिकुंतकेरलध्वरहितमय ॥ भरतषंडकेजेतेभूपति ॥ इत्यादिकआएसेन्याअति ॥ घोषघोषकेगोपजूथघन ॥ महरनंदसंगआयहरषमन ॥ अवरसकलव्रजजनचलिआए ॥ सहितकुटंबनिसकटसजाए ॥ वहांकुरुषेतपर्वसिरआवन ॥ भएमहरडेरामनभावन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुटुंबहितुसबकृष्णकहँ । यहांमिलतहैआन ॥ सेवाहितसंबंधसुष । पूरनप्रीतिप्रमान ॥ १ ॥ कुंतायहांवसुदेवकों । सुषमिलिरहिनीसंत ॥ अषिलदसाजोआपनी । कहतभएएकंत ॥ २ ॥ ॥ कुंतीवाक्यं ॥ ॥ छंद द्विअक्षरी ॥ . ॥ महाअवस्थापरिहममांही ॥ निश्चयतुमसुधिलीन्हीनाहीं ॥ दैवहोइप्रतिकूलजुदुर्दिन ॥ अपनेकीसुधिलीजैआपुन ॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ ॥ इहांवसुदेवदयोफिरिउत्तर ॥ बडीवहिनतूंमातसमंसर ॥ तातैदोषहमहिनहिताकों ॥जथाकहूंअबकारनजाकों प्रानीभ्रमतदैवकोप्रेर्यों ॥ फिरैपुत्रिकाज्योंनटफेर्यों ॥ दुष्टकंसकेभयअतिदारुन ॥ तातेहमअमिजथावीतत्रिन ॥ अबयहांदैवजोगतेआए ॥ सजनमिलेसबकुटंबसुहाए ॥ अरुहमसहीविपतिजूऐसी ॥ तुमहूंसुनीहोइगीतैसी ॥ उग्रसेनदेआदिबंधुअब ॥ सहितात्रियानिमिलेकुंतासब ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ इहांकृष्णभेटनकहँआए ॥ सबकौरवसकुटुंबसुहाए ॥ भीषमद्रोणाचारिजरणभट ॥ धराअधीसनृपतिधृतराष्टर ॥ राणीपतिव्रतागांधारी ॥ पुत्रसबैसंगमिलनपधारी ॥ संजयविदुरकृपाचारिजसम ॥ कुंतिभोजभीषमकजथाक्रम ॥ नृपतिजहांवैराटनगनजित ॥ हैतहांधृष्टकेतमैथिलहित ॥ जुधामन्युदमघोषमद्रजहां ॥ हितजुतवाल्हीककेकयतहां ॥ संगसुसर्माभूपसुहाए ॥ इत्यादिककौरवमिलिआए ॥ मातादेवकीरामकृष्णसम ॥ कीनीअतिमनुहारजथाक्रम ॥ इहांनंदादिगोपगनआए ॥ संगगोपीसकुटुंबसुहाए ॥ मिलेसकलजादवमनमानै ॥ हेतप्रीतिकरअतिहरषानै ॥ इहांवसुदेवनंदमिलिआपुन॥अरुवैठेअतिहितएकासन॥ दुःषकंसवसुदेवहिदीनों ॥ कर्मकलेसनिवेदनकीनों ॥ कृष्णप्रवेशनंदगृहकारन ॥ चितप्रसंगसोलगेवितारन ॥ वैदेनसषादुहूनिसुधिआए ॥ छनतिहिंनयनप्रेमजलछाए ॥ याहीसमयकृष्णभयोआवन ॥ लैपितमातलगेउरलावन ॥ तनमनमृतकप्रानलहितैसै ॥ यहांउपजेसात्विकरसऐसै ॥ जथाहरषबढिकंठभरेजल ॥ बोलनसकतरहतकरिकरिबल ॥ तहांभयोदहुधांसुषतैसो ॥ जाइनकह्योविधाताजैसो ॥ रोहनिमातदेवकीरानी ॥ हेतजसोदामिलिहरषानी ॥ ॥ देवकीवाक्यं ॥ ॥ कहेदेवकीवचनसकारन ॥ महरिजसोदाधन्यहेतमन ॥ पयकुचपानप्याइएपोषे ॥ सोहमविनतुमअतिसंतोषे ॥ पुनिकीयरष्याजथानैनपल ॥ पानवसनसौगंधनिपलपल ॥ ॥ कविरुवाच ॥ यहांकृष्णउठिकैजबआए ॥ पुनिगोपिनएकांतसुपाए ॥ रूपमग्नआनंदजुरोवति ॥ जथाचकोरचंद्रमुषजोवति ॥ विछुरीनिधिपाईजनुवामा ॥ करतिविलोकनसनमुखकामा ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ प्रभुपूछतभएप्रेमपरायन ॥ निर्विकारजोगीनारायन ॥ सषाभावहमसौंजैसुंदरि ॥ कबहूमनआवतहैसुधिकरि ॥ कर्यौगमनमथुराकिहिकारन ॥ मोषनस्वजनदुष्टगनमारन ॥ तातैकृतघनमोहीजानति ॥ मायादैवीताहिनमानति ॥ प्रेममिलतविछुरतहैप्रानी ॥ पैयहइच्छादैवप्रमानी ॥ वातविधूनमि

लतपुनिविछुरत ॥ जलदतूलतृणरेणाजिततित ॥ वर्ततजोगविजोगकर्मवस ॥ पैभवभूत सहतहैंपरहस ॥ हूंसबमध्यसबनितेबाहिर ॥ आदिमध्यनितअंतनिरंतर ॥ करैध्यान मेरोंजोमनक्रम ॥ मुकतहोइसोमिलैमांझमम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अध्यातमउपदेसयह। करिगोपिनगोपाल ॥ हुतेतबैव्रजमांझहम । नंदग्रेहनंदलाल ॥१॥ वहैंसरूपअनूपउर। धरहुसदासुषधाम ॥ पुनिममजोतिहिजोतिमिलि । करिहोसुषनिहकाम ॥ २ ॥ हैंजुपरे भवकूपमहँ । जोगीजतीअजान ॥ कष्टसहैंबहुकालकरि । नाहिनलहतनिदान ॥ ३ ॥ ॥ ॥ गोपीवाक्यं ॥ ॥ हेप्रभुदीनानाथहरि । अंबुजचरनअनूप ॥ सुपेहमारेउरवसहि। सुंदरसदासरूप ॥ ४ ॥ व्रजलीलाहरिछबिविमल । पुनिगोपिनकौप्रेम ॥ नरहरमांगत भजनानित । यहैनिरंतरनेम ॥ ५ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णअवतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेकुरुक्षेत्रजात्राआगमनंनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ पांडवआएकृष्णपहँ । यथाभक्तहितजानि ॥ मनवांछितजिन कहँमिले । पूरनकृपाप्रमानि ॥ १ ॥ छंदपधरी ॥ इहांपांडुपुत्रसबमिलेआइ ॥ बैठेसु धर्मपरिषदबनाइ ॥ कुसलातकृष्णपूंछीकृपाल॥सुतधर्मदयौउत्तररसाल॥ तवचरनकम लपूरनप्रभाव ॥ सुनिवेदवचननिश्चैसुभाव॥पुनिसाधुमुषनिसुनियेपुरान ॥ विश्वासविहि तमानैप्रमान ॥ अषिलेशकुशलतिनकैअनंत ॥ नितमंगलयहवर्तैनिरंत ॥ भवभूतहेत भूवहरनभार॥तुमदेवभएमनुजावतार॥कौरवअरुपांडवजदुकलत्र ॥ एभईतहांसबहीए कत्र॥क्रमजुक्तराजरमणीअनेक॥विधिकहतवातपूछतविवेक॥ सोलहसहस्त्रशतएकसंग॥ पैआठपटरानीप्रसंग॥एकृष्णदेववनिताअनूप॥सुभलछिनजोबनगुनसरूप॥तहांद्रुपद सुतापूछ्योविष्यात॥विधिकह्योआपनीव्याहवात ॥ रुकमणीवाक्यं ॥ इकभ्रातरुकम ममदाअंध ॥ सिसुपालसरिसकीनौसमंध ॥सेन्याअनेकराजासहाइ॥इहांचैद्यराजसि सुपालआइ॥भुवपतीसबैकरिमानभंग ॥ गहिवासुदेवलाएअभंग ॥ अजजूथमध्यतैसिं घआइ॥जियमानैताकहँलेहिजाइ॥ इहभांतिमोहिआनीअनंत॥ दुष्टषलबहुतकेतोरिदंत ॥ जांबवतीउवाच ॥ अतिबलीपितामोहिजामवंत ॥ जर्जरितदेहजुद्धनिजयंत॥ है वसतरीछगिरिविवरमांहि ॥ नरअमरतहांकिहुगम्यनांहि ॥ दिनएकआइतहांकृष्णदे व ॥ इतजांबवंततहांभिरिअजेव ॥इकवीसअहोनिसलरेआनि॥प्रभुकोप्रभावनाहिनपि छानि ॥ इहांवासुदेवजान्योअनंत ॥ संगदईमोहितबव्याहसंत ॥ ॥ सत्यभामावाक्यं ॥ ॥ ममपिताबंधुवधकियविरोध ॥ सोसिंघहत्यौपावैनसोध ॥ मनसंजुततताकौव यरमानि ॥ वहिदयोकृष्णकरदोषआनि ॥ निरदोषकृष्णमनभौमलीन ॥ कृतमृगयात हांवनगमनकीन ॥ पुनिषोजजथाक्रममनिसुपाइ ॥ यहसत्राजितकहँदईआइ ॥ यहांद यौदोषनिरदोषअंत॥ दुवसाषवयरबाढ्योदुरंत ॥ इहांपितामोहिउरत्रासआनि ॥ पुनि दईव्याहिप्राणेशपानि ॥ ॥ कालिंदीवाक्यं॥ मैस्यामचरनकौसरनमानि ॥ अभिला षचित्ततपकर्योआनि ॥ प्रभुऐसोअंतरभावपाइ ॥ हितकर्योस्याममेरौसहाइ ॥ पुनिप ठैसषाअर्जुनप्रवीन ॥ करुणानिधानकरग्रहणकीन ॥ ॥ भद्रावाक्यं ॥ ॥ कृतव्याह

काजपितसानुकूल ॥ मोहिंहेतस्वयंवररच्यौमूल ॥ यहांदेशदेशकेभूपश्रानि ॥ पुनिजथा जोगबैठेप्रमानि ॥ इहवींचतबैश्रषिलेषश्राइ ॥ श्राकर्षिधरीरथपरउठाइ ॥ इहभांतिमो हिनिजग्रेहश्रानि ॥ प्रभुकह्यौव्याहराक्षसप्रमानि ॥ ॥ सत्यावाक्यं ॥ ॥ नग्नजितरा जममपितानाम ॥ कियनेमवृषभनाथनसकाम ॥ प्रभुकह्यौतहांसोव्रतप्रान ॥ विधिजु क्तब्याहमंगलविधान ॥ ॥ मित्रविंदावाक्यं ॥ ॥ ममपितालग्नदिनसुभपठाइ॥ श्र षिलेसविवाहीमोहिश्राइ ॥ ॥ लक्ष्मणावाक्यं ॥ ॥ व्रतविहितसेनलीयमच्छवेध ॥ सबश्राइनृपतिश्रतिबलसुमेध ॥ जद्यपिकियउद्यमनृपसमाज ॥ काहूनसक्यौझषवेधका ज ॥ जदुनाथइहांनिजमर्मजानि ॥ पुनिमच्छवेधकियबानतानि ॥ वरमालतहांलैकंठवा हि ॥ विश्वेसचलेमोकहँविवाहि ॥ राजानसबैमदगतरिसाइ ॥ इहांदुष्टनिरोक्यौपंथश्रा इ ॥ सारंगधनुषगुनवानसंध ॥ काटेसबहिनकेभुजाकंध ॥ पापिष्टदेषिसौंत्रासपाइ ॥ पु निगयेसेषकातरपलाइ ॥ संग्रामजीतितहांसत्रुसाल ॥ प्रभुमोहिग्रेहलाएकृपाल ॥ ॥ सेषस्त्रीवाक्यं ॥ ॥ नरकासुरनामाश्रसुरएक ॥ वहिजीतिजीतिराजाश्रनेक ॥ हमक न्याश्रानीहेरिहेरि ॥ घरमाझसुराषीघेरिघेरि ॥ पुनिसुन्यौतहांहमहरिप्रभाव ॥ सवहिनि लयौयहव्रतसुभाव ॥ श्रभिलाषहमारेचित्तएहु ॥ हेदेवहमहिवरकृष्णदेहु ॥ प्रभुसबहि नकौमनभावपाइ ॥ इहांनरकासुरवधकस्यौश्राइ ॥ एकन्यासबद्वारिकाश्रानि ॥ पुनिएक लग्नव्याहीप्रमानि ॥ श्रभिलाषभएपूरनश्रनेक ॥ यहइच्छाहैमनमांझएक ॥ विधिसौंय हजाचतवारवार ॥ भवभवहमपावहियहभर्तार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सबहिनकोसबभावसौं मनमोहनतनमांझ ॥ चितवतचंद्रचकोरलौं । संध्यादिवसरुसांझ ॥ १ ॥ कहीद्रौपदी सौंकथा । विधिजुतहँसिहँसिवाम ॥ उग्रभाग्यपाएइहां । हमवरसुंदरस्याम ॥ २ ॥ इ तिश्रीश्रवतारचरित्रे श्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेद्रौप दीप्रश्नरुकमणीश्रादिविवाहकथननंनामत्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पांचालीपूछ्योहसिसप्रेम ॥ निःसेषकह्योरुकमनिस नेम ॥ क्रमजथाव्याहश्रीकृष्णकीन ॥ पुनिकहेसकलवनिताप्रवीन ॥ कुरुषेतजितेमुनि पर्वकाज ॥ सोश्राइकृष्णदरसनसमाज ॥ द्वैपायननारदच्यवनदेषि ॥ श्ररुविश्वामित्रदे वलविसेषि ॥ द्विजसतानंदश्ररुभरद्वाज ॥ सुभपरसुरामगोतमसमाज ॥ गालववसिष्ठ भृगुऋषिसग्यान ॥ पुनिमिलिपुलस्तिकस्यपप्रमान ॥ पुनिश्रत्रिबृहस्पतितहांश्राइ ॥ श्ररुद्विजमृकंडसुतमिलेश्राइ ॥ एकत्रद्वितीयश्ररुतृतीयएव ॥ श्रंगिराश्रगस्तिद्विजवा मदेव ॥ श्ररुजाग्यवल्किइत्यादिश्राइ ॥ सबतेजसुव्रतपबलसुभाइ ॥ श्रविलोकिइनहि मिलिकृष्णराम ॥ पांडवजुतकीनौबहुप्रणाम ॥ द्विजवरकहँश्रर्घासनजुदीन ॥ प्रभुकह्यौ तहांमाधवप्रवीन ॥ इहांदयौदरसतुमदेवश्राज ॥ क्रमभएहमारेसफलकाज ॥ जलमयहै तीरथसकलजानि ॥ प्रतिमासुदेवपाथरप्रमानि ॥ सोफलतदृष्टचिरकालसेव ॥ द्विजदर समात्रहैसफलदेव ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ तुमईश्वरश्रगुनश्ररूपश्राप ॥ पुनिधरत रूपपूरनप्रताप ॥ श्ररुनीतिधर्मपालकश्रषंड ॥ दुष्टनिकौदैहोमहादंड ॥ श्रषिलेसश्रग

ममायाअपार ॥ कारुण्यरूपतवनमस्कार ॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ ॥ मिलिबैठिसभा
तवऋषिसमाज ॥ ऋतहोतधर्मचर्चासकाज ॥ बसुदेवइहांपूछयौविचार ॥ तुमत्रिकालज्ञ
वरजितविकार ॥ भवहोतकर्मकिहिंकर्मभंग ॥ प्रभुकहौप्रगटअवसहुप्रसंग ॥ ॥ नारद
उवाच ॥ ॥ सुनिबोल्यौतहांनारदऋषेस ॥ निर्धारवेदमतयहनरेस ॥ मुनिकह्यौतहां
नारदनिदान ॥ सिद्धांतसुनहुजदुवरसुजान ॥ जिग्यतैंकटतहैकर्मजाल ॥ विधिजुक्तहो
इपूरनविसाल ॥ धरिदेहपुत्रतबवासुदेव ॥ हैदिव्यरूपदेवाधिदेव ॥ उनह्योतअषिलईश्व
रअमंत ॥ तुमपूछतजौपैहमहितंत ॥ भगवंतहिजानतपुत्रभाव ॥ पुनिप्रबलदैवमायाप्र
भाव ॥ हैनिकटअनादरतासहोइ ॥ जलजथागंगतजिआनजोइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥
करिजिग्यजतनआरंभकीन ॥ पुनिमिलेसबैमुनिवरप्रवीन ॥ भगवंतहेतकरिमषसुभाइ ॥
जगदीसजजनकरिअसुभजाइ ॥ पुनिभयोजज्ञपूरनप्रमान ॥ निर्घोषबजेमंगलनिसान॥
॥ रामहृदआनिवसुदेवराइ ॥ समात्रियाकुटुंबअपनेसुभाइ ॥ मषअंतकरयौमज्जनमहीप ॥
सुभदानमानमुनिवरसमीप ॥ सबदेसदेसकेलोकसिद्ध ॥ अभिलाषभएपूरनप्रसिद्ध ॥
वसुदेवनंदामिलिकरतवात ॥ पृथ्वीप्रसिद्धमैत्रीपुनात ॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ ॥ प्रीत
मदुरंतयहमोहपास ॥ जोगेससिद्धपरिभ्रमतजास ॥ तवप्रीतिनऊरणभएभ्रात ॥ तिहिं
कारनअबविछुरयौनजात ॥ प्रथमहमकंसकेत्रासपाइ ॥ असमर्थभएसुनिमिलेआइ ॥
पुनिभएराजमदहमहिमित्र ॥ उनकेसुभावदुस्तरचरित्र ॥ प्रीतमचषअविरलजलप्रवाह
थकिरहेनपावतप्रेमथाह ॥ परसपरप्रीतिपूरनप्रमानि ॥ तहांरहेमासत्रयहेतमानि ॥ पु
निभएकामपूरनप्रमान ॥ मिलिदईविदाकरिदानमान ॥ इहांनंदादिकव्रजघोषआई ॥
सुमिरतसबप्रीतमहितसुभाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहांवर्षाऋतुआगमन । करिजात्राकुरु
क्षेत्र ॥ कीनौआवनद्वारका । जादवधर्मविजेत ॥ १ ॥ इतिश्रीअ०श्रीकृ०द०बारहटनर
हरिदासविरचितेवसुदेवजीकुरुक्षेत्रेजज्ञकरणंनामचतुराशीतितमोऽध्यायः ॥ ८४ ॥ ॥
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकदिवसद्वारावती । बनिबैठेवसुदेव ॥ तबसंकर्षनकृष्णतहां । आए
पुत्रअजेव ॥ १ ॥ देषिपितातबपुत्रदिसि । हुवसमरणक्रमहेत ॥ कृतप्रभावगुनकृष्णके ।
ऋषिनकहेकुरुषेत ॥ २ ॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ वसुदेवकह्यौतब
विमलवानि ॥ तुमपरमपुरुषवेदनिप्रमानि ॥ विश्वातमहौतुमवासुदेव ॥ भवरचतविना
सतआपभेव ॥ जेअर्कआदिदेजोतिवंत ॥ उनमाहिंतुमहिमासतअंत ॥ थिरउर्वीषम्या
गिरविथार ॥ क्रमनावर्णअरुबहुप्रकार ॥ भवभूतमहाइंद्रियसुभाव ॥ पुनितासदेवसोइप्र
भुप्रभाव ॥ सात्विकरजतामसगुनसरूप ॥ तबमायाकल्पितभुवनभूप॥ अरुसुक्षमगतिप्र
भुकीअनंत ॥ अज्ञाननजानतआदिअंत ॥ क्रमबंधभ्रमतभवभूतकोइ ॥ याहीतैंआवागम
नहोइ ॥ स्वारथहितभटकतसिंधुसाज ॥ ताहीतैंजन्मजुवृथाजात ॥ संपतिकुटुंबअरुतन
समेत ॥ हैममतामानकछुबुद्धिहेत ॥ सोयासबंधतिनकेसनेह ॥ छकिरह्यौनपावतकर्मछे
ह ॥ पौराणपुरुषनिर्गुनप्रसिद्ध ॥ सुतताहिनमैंरैस्वयंसिद्ध ॥ भुवभारविनासनहेतभूप ॥
रविचक्रधरयौतुममनुजरूप ॥ वरदानपुत्रमोहिदयौवीर ॥ सोइभौप्रमानसुंदरसरीर ॥

॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ सुनिकृष्णतहांबोलेसुभाइ ॥ पितुमहातत्वतुमइहैपाइ ॥ क
विरुवाच ॥ ॥ पुनिमातापितातबग्यानपाइ ॥ सुतआदिब्रह्मजानेसुभाइ ॥ इनदएविप्र
केपुत्रआनि ॥ जगदीसजथाजमलोकजानि ॥ हैअप्रमेयआतमअनंत ॥ हेस्याममहा
जोगेससंत ॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ ॥ आगैतुमगुरुकेपुत्रआनि ॥ पुनिदएदच्छिनागुरुप्र
मानि ॥ करिवैरभावममपुत्रकंस ॥ सोहतेबालवयइहिंनसंस ॥ मेरेसुतदीजेआनिमोहि
॥ तातैअबजाचतपुत्रतोहि ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ अषिलेसकृष्णतवसुनिउदार ॥ कृ
तसुतलगमनवसुदेवकुमार ॥ बलिराजप्रभुकौंतवपिछानि ॥ अतिभक्तिकरेदंडवतआनि
॥ पुनिदैत्यराजप्रभुपदपषारि ॥ सकुटुंबउदकसोइसीसधारि ॥ प्रभुकरिजथापूजाप्रवीन
॥ करजोरिदीनव्हैप्रणतिकीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बलिरुवाच ॥ ॥ नमोअनंतमहंतरू
प ॥ कृष्णब्रह्मनिजकाइ ॥ सांख्यजोगसाधकसगुन । सश्रितवेदसहाइ ॥ १ ॥ प्रतिमा
राजसतमप्रकृति ॥ प्राणीहतकप्रमानि ॥ प्रभुदरसनपावनप्रगट । ऐसेकोदियआनि ॥ २ ॥
आगमकारनजोउचित । कहियेकमलाकंत ॥ हितजुतसेवकजानिमुहि । आज्ञादेहुअनंत
॥ ३ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ मुनिअतुलिततेजमरीचिनाम ॥ वनि
तातिहिउर्णाधर्मवाम ॥ तिहिंपूर्वजन्मषटपुत्रपाइ ॥ सोबडेभएक्रमक्रमसुभाइ ॥ इकदिव
सपितातिनकेजुआप ॥ पुत्रीतनचितयौदृष्टिपाप ॥ पुत्रनिइहताकोमरमपाइ ॥ सोहसि
जुउठेअपनेसुभाइ ॥ दुसहसकोपतवश्रापदीन ॥ रिषिभौमरीचितहांमनमलीन ॥ पापि
ष्टजोनितुमअसुरपाइ ॥ जगजथाकर्मअनुसरहुजाइ ॥ एहिरणकसिपकैउदरआनि ॥ पु
निभएपुत्रक्रमजुतप्रमानि ॥ पुनिमरेजोगमायाप्रभाइ ॥ अवतरेदेवकीगर्भआइ ॥ तेक्र
मक्रममारेदुष्टकंस ॥ निरदईसिलापटकेनिसंस ॥ पुनितिनहिपुत्रअपनेप्रमानि ॥ उरव
ढतसोचदेवकिआनि ॥ तबलोकमांझहैवैसुतंत्र ॥ मोहिदेहुआनियहमूलमंत्र ॥ तिनिके
असुरजोनिकेनाम ॥ वहरहतकहांसोकहहुधाम ॥ इकनामस्मरउद्गीथआनि ॥ परिष्वं
गपतंगसुएप्रमानि ॥ छुद्रभुकघृणीएषट्सरूप ॥ यहांभएजोनिआसुरअनूप ॥ यहांदइ
तराजसोदएआनि ॥ मोहनतहांआनेमोदमानि ॥ बलराजकरेलैअग्रबाल ॥ देवकिहि
आनिदीनेदयाल ॥ इहांमिलेजबैषटपुत्रआनि ॥ माताकुचश्रावितमोहमानि ॥ प्रभुकौपु
नीततनपरसपाइ ॥ वैबालभएसदगातिहिआइ ॥ इतिश्रीअ० श्रीकृ० द० बारहटनरहरिदा
सविरचितेकंसहतदेवकीपुत्रआनयनोनामपंचाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥ ॥ छ ॥
॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुकहिपरिक्षितमानिसुष । विधियहपूछिविचार ॥
पार्थसुभद्रापाणिग्रह । कहियेजथाप्रकार ॥ १ ॥ एकसमयअर्जुनअभय । करितीरथव्रत
काज ॥ आएषेत्रप्रभासयहां । सबमिलिविप्रसमाज ॥ २ ॥ संकर्षनकीसोदरी । सुनी
सुभद्रानाम ॥ प्रतिमालक्षणरूपगुन । भईसजग्याभाम ॥ ३ ॥ दुर्योधनकहँदैनकौं । की
यबलभद्रविचार ॥ काहुनपूछतऔरकहँ । अपनीबुद्धिअनुसार ॥ ४ ॥ सोइहांअर्जुन
बातसुनि । उपज्यौचित्तअंदेस ॥ किहूंजतनयहकन्यका । पाऊंबुद्धिप्रवेश ॥ ५ ॥ कवि
रुवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ कर्यौरूपसन्यासुसकारन ॥ धरिउरकपटत्रिदंडी

धारण ॥ अर्जुनतबैंद्वारकाआयो ॥ वंचकवेषविरागबनायो ॥ पूजतयाहिसबैवासीपुर ॥ गहतज्ञानउपदेशजथागुर ॥ कर्योनिमंत्रणभोजनकारण ॥ महापुरुषबलदेवजानिमन ॥ यहबलदेवग्रेहजबआयो ॥ विहितमध्यआसनबैठायो ॥ इहींपरसपरकन्याअर्जुन ॥ अन्योअन्यभएअवलोकन ॥ तातैहैद्रगरागबढ्योतहां ॥ उपजीप्रथमअनंगदसाइहां ॥ इहांरहेसवंतइकअर्जुन ॥ ताकतछिद्रकष्टभोमनतन ॥ किहुंनिमित्तसोभद्रकुमारी ॥ पूजनदेवसुआपपधारि ॥ अतिहितरथआरोहचलीइहां ॥ तकतघातबनिअर्जुन कीतहां ॥ धरिगांडीवधनुषसरधायो ॥ अर्जुनपाछैलाग्योआयो ॥ समयपायपूज्यो जबस्वारथ ॥ रथतिहिंबैठ्योकूदिमहारथ ॥ कन्याहरणपार्थतहांकीनो ॥ निरषतसक लकुटुंबप्रवीनो ॥ सोवसुदेवकृष्णकेसंमत ॥ इंद्रप्रस्थलायोछलअद्भुत ॥ इहांबलभ द्रक्रोधबहुकीनै ॥ पुनिसोवरजेकृष्णप्रवीनै ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ कहहुभ्रात अबमारहिकोनै ॥ होतदैववसजोकछुहोनै ॥ दुहिताअंतसुकाहूदेहै ॥ लोकमांझअपलोक नलैहै ॥ संकर्षनसबविधिसमझाये ॥ योंकहिकृष्णसांतिउपजाये ॥ अर्जुनग्रेहसुभद्राआनी धर्मराजसुतजहांरजधानी ॥ दोहा ॥ ॥ हठिआनीकन्याजुहरि । अरुबहुभएउछाह ॥ अर्जुनसुभद्राकोइहां । वरीजुराक्षसव्याह ॥ १ ॥ ॥ इतिसुभद्राविवाह ॥ ॥ कविरुवा च ॥ ॥ मिथिलापुरबहुलासनृप । हैतहांवसतविदेह ॥ मनसावाचाकर्मना । संततकृष्ण सनेह ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ श्रुतदेवनामइकद्विजसग्यान ॥ सोवसतपुरीमिथिला प्रमान ॥ जगजथालाभसंतोषजानि ॥ इहकरतकालवंचनाआनि ॥ पुनिताकेकृष्णचरि त्रप्रेम ॥ नितकरैभजननिसदिनसनेम ॥ अभिलाषकृष्णदरसनअनंत ॥ सोभाइराजद्वि जकरतसंत ॥ प्रभुताकोअंतरभावपाइ ॥ अषिलेसइहांदियदरसआइ ॥ इहांनारदादिऋ षिवरअनंत ॥ मिलिकृष्णसंगसोचलिमहंत ॥ आनर्तधन्वकुरुदेशआइ ॥ कुरुजांगलकंक हिमच्छजाइ ॥ पंचालकुंतिमधुकयप्रवेश ॥ सुभकोसलकेकयलंघिदेश ॥ प्रभुउनकोअं तरभावपाइ ॥ अषिलेश्वरमथुरापुरीआइ ॥ बहुलासनृपतिश्रुतदेवविप्र ॥ प्रभुसनमुषआ एतहांछिप्र ॥ पूजाप्रभावकरिलगेपाइ ॥ सुतदुहूनिमंत्रणकियसुभाइ ॥ देवाधिदेवधरिउ भयदेह ॥ सबरिषिनिसंगसंजुतसनेह ॥ दुहुग्रेहकरेभोजनदयाल ॥ करुणानिधानएक हीकाल ॥ उनकरीतबैअस्तुतिअनेक ॥ आतमासाषितुमपुरुषएक ॥ दीननिकोमाधव दरसहेत ॥ हैकौनजाहिनहिचरनहेत ॥ सबभांतिकर्योतिनसमाधान ॥ धरिहाथसीस करुणानिधान ॥ अषिलेसद्वारकापुरीआइ ॥ सुषकरतभएदीननिसहाइ ॥ इतिश्रीअव तारचरित्रे श्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेअर्जुनसुभद्रा विवाहप्रसंगराजाबहुलाश्वश्रुतदेवविप्रमिलापप्रसंगोनामशडशीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर्योप्रश्नजुगजोरिकर । इहांपरिक्षितराइ ॥ ज थावेदउत्पतिजुग । सुकमुनिकह्योसुनाइ ॥ १ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्ष री ॥ ॥ मुनिनारदइकसमयसांतमन ॥ करतपृथ्वीपरअटनसकारन ॥ यहांनरनाराय णपहंआए ॥ भ्रमतबदरिकाश्रममनभाए ॥ भरतखंडकेसकलऋषेश्वर ॥ बैठेसभाविलोके

बुधिवर ॥ तिनमहँनरनारायणतैसे ॥ उडगनमनीनिसाकरऐसे ॥ जोतुमवातमोहिपू
छिजद ॥ नरनारायणप्रतिसोइनारद ॥ ॥ नरनारायणउवाच ॥ ॥ आगेकिहुंस
मयकालांतर ॥ मिलिजनलोकसभासबमुनिवर ॥ ब्रह्मज्ञानचर्चाविस्तारी ॥ भएब्रह्मरिषि
हर्षितभारी ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ सबनिकह्यौमिलिअहोसनंदन ॥ प्रभुतुमआहिवु
द्धिवयपूरन ॥ वेदनिकीउतपत्तिबतावहु ॥ स्वामीआदिअंतसमुझावहु ॥ ॥ सनंदन
उवाच ॥ ॥ पूरनपुरुषसमयइकपावन ॥ माधवकरीसयनइच्छामन ॥ महाप्रलयतब
भयौमहीतल ॥ जहांतहांथलपूरिरहेजल ॥ पुरुषअनादिसिद्धसप्रमानी ॥ सबैसृष्टिताउ
दरसमानी ॥ सोइरहेजलअंतरस्वामी ॥ जगतउपाजकअंतरजामी ॥ प्रभुपौढेतबअब
धिसपूरन ॥ इच्छाभईसृष्टिउपराज ॥ प्रथमस्वासजेनिकसेपावन ॥ वेदभएसोइधर्मव
तावन ॥ जगतईसप्रभुवेदनिजानै ॥ महअस्तुतिकीनीमनमानै ॥ जोतिसरूपवेदधुनि
जागे ॥ पुरुषप्रसिद्धभक्तिरसपागे ॥ ज्यौंबंदीजननृपहिजगावत ॥ बोलतवानैविरदवढा
वत॥ निर्गुनसगुनरूपनारायन ॥ पुनितिनवर्णनकरेसहितपन ॥ प्रभुकोवारपारनहिपायौ॥
नेतिनेतितहांवेदबतायौ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ निगममर्मयहसुनिकैनारद ॥ विदा
भएतबवुद्धिविसारद ॥ द्वैपायनकेआश्रमआए ॥ पुनिबैठेतहांआदरपाए ॥ नरनारायण
वचननिरंतर ॥ व्यासहिकहेजथाविधिविस्तर ॥ पिताप्रसंगइहेद्वैपायन ॥ पुत्रहिकृतउ
पदेशपरायन ॥ यहसुकपरमतत्वजोपायौ ॥ सुपैपरिक्षितनृपहिसुनायौ ॥ ॥ दोहा ॥
सुकहिपूछिअभिमन्युसुत । भूपनिगमकोभेद ॥ व्यासजथाविधिवर्णयौ । विहितजुकारन
वेद ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटनरह
रिदासविरचितेवेदउत्पत्तिस्तुतिर्नामसप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥ ॥ छ ॥ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ छंदसोरठा ॥ ॥ इहांपरिक्षितएहु, अरथजुपूछ्यौएकादिन ॥ सुक
मनममसंदेह, सोतुमहीमेटनसमर्थ ॥ १ ॥ पावतरिद्धिअपार, भवजेसंकरकेभगत ॥ नि
यतअधननिरधार, क्रमजुतपूजकविष्णुके ॥ २ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥
शिवशक्तिसगुणरूपीसंजोग ॥ गुणतेविकारहोइअप्रयोग ॥ हैविष्णुसदानिर्गुननिदान ॥
प्रभुभक्तपुरुषतेपरप्रमान ॥ इतिभजेसुनिरगुणताहिपाइ ॥ जननिरधननिर्गुनमांझ
जाइ ॥ नृपहुतौजुधिष्ठिरजगनरेस ॥ वरवीरपितामहँतवविसेस ॥ हयमेधभयौपूरनप्र
मान ॥ नृपपूछिइहैकृष्णाहिनिदान ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ षितिकरौंकृपाजासौंविवे
श ॥ सबहरौतासससंपतिअशेष ॥ जबवाकोसंपतिछांडिजाइ ॥ सबकुटुंबताहिछांडैसुभा
इ ॥ जोकरैसुउद्यमअफलजाइ ॥ वाकोतबउपजैविरतिआइ ॥ जोहोइकामनारहितजीव ॥
दुषसुषनिवर्तध्यावैदईव ॥ करिब्रह्मध्यानसोपैअकाम ॥ महिहोइमुक्तमिलिपरमधाम
॥ हठिअवरदेवकौभक्तिहोइ ॥ सठकबहुमुक्तिपावैनसोइ ॥ अवरसुरदेहसंपतिअनेक ॥
उनकैवसनाहिनमुक्तिएक ॥ मुक्तिकेदानिभगवानमानि ॥ पुनियहैवेदवाचाप्रमानि ॥ ॥
अथवृकासुरप्रसंग ॥ ॥ शिवदेववृकासुरवरसमाप ॥ वाहीकेसंकटपरेआप ॥ वृकना
मअसुरइकमहावीर ॥ सकुनीकोपुत्रसमहरसधीर ॥ ॥ वृकउवाच ॥ ॥ वहिपूंछयौना

रदऋषिहिआइ ॥ व्हैवेगिप्रसनसुरसोइबताइ ॥ विधिविष्णुरुद्रकिंवाविनीत ॥ पुनिसबहि नतुमजानतपुनीत ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ हैदुराराध्यविधिविष्णुदेव ॥ सोफलैनवा चिरकालसेव ॥ हरसेववेगहीप्रसन्नहोइ ॥ करिक्रोधजुदाहककेहेतकोइ ॥ वरपाइहोइप्राणी प्रमत्त ॥ तिहिंकेरैअनादरकुमतिरत्त ॥ वरइच्छाहैजोवेगवीर ॥ सिवहेतकरौतोतपसधी र ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ पुनिअसुरवचननारदप्रमान ॥ थितभयौजाइकेदारथान ॥ करिअग्निकुंडदीपितसकाम ॥ निजमांसजुहोमतरुद्रनाम ॥ व्हैप्रसन्नरुद्रतपउग्रहेत ॥ सोनिकसिअग्नितैतनसमेत ॥ करकरषिनिवानरअसुरकीन ॥ पुनिकह्योहोमपूरनप्रवीन ॥ रुद्रउवाच ॥ जिहिंहेतकरयौतैंविषयजीत ॥ वृकमांगहुवरसौविधिविनीत ॥ वृकोवा च ॥ किहुंसीसकरौंकरहेतकोइ ॥ असुरासुरनरसोइभस्महोइ ॥ कविरुवाच ॥ प्रभुरुद्रकह्यो सोईप्रमान ॥ वृकपायौवरवंछितविधान ॥ सोअसुरभावइहिंदुष्टसाधि ॥ पापिष्टकरिकार नउपाधि ॥ यहदेवजोगवरदानदीन ॥ मनभएरुद्रपाछैमलीन ॥ असुरयहदुर्मदघटीआव ॥ भयौदष्टिशिवापरकामभाव ॥ शिवसीसहाथमेलणसुभाइ ॥ आसुरमनचिंत्यौइहउपाइ ॥ भवलष्योअसुरकोचित्तभेद ॥ षिसिचलेभाजितहांअतिसषेद ॥ आतमकृतअपनोदो षआनि ॥ मनमांहिरुद्रतहांत्रासमानि ॥ भवभजेजातअंतरभयान ॥ यहअसुरपीठि ध्यावतअग्यान॥तबभ्रम्यौरुद्रजहांजहांसताप ॥ पथदष्टिजाइपहुंचैनपाप ॥ दुषभयौश्र मिततहांरुद्रदीन ॥ करुणानिधानकौध्यानकीन ॥ अंतरगतिव्यापकप्रभुअनंत ॥ कीय शिवारूपतहांरमाकंत ॥ अषिलेसुरठाढेमध्यआइ ॥ प्रष्टिगतभएशिवगएपलाइ ॥ करि मोहविवसयहचरितकीन ॥ प्रभुकपटरूपबोलेप्रवीन ॥ ॥ कपटीउवाच ॥ ॥ तौंकौ णभयौअतिश्रमितआज ॥ कहिकारनधावतहैसकाज ॥ ॥ वृकउवाच ॥ ॥ मानानि जोपूछतहेतमोहि ॥ तवहेतभ्रम्यौअबलहीतोहि ॥ ममग्रेहचलहुअबप्रीतिमानि ॥ करि अभयचित्तसबछांडिकानि ॥ ॥ शिवावाक्यं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शिवारूपकहिअसुर सौ । तौंषैवरिहौंतोहि ॥ करजुगऊरधनृत्यकरि । हँसैरिझावैमोहि ॥ १ ॥ स्वामीनितप्र तिहर्षसौं । भजिनाटकइहिभांति ॥ क्रमजुतमेरैचित्तकी । तबपूजतहीषांति ॥ २ ॥ सोआ सुरषलवचनसुनि । मायावसभयोमूढ ॥ कह्योसुमोहितरूपकरी । अंगीकारअगूढ ॥ ॥ ३ ॥ शिरऊपरकरआनिसो । नाच्यौअसुरअग्यान ॥ ताहीकेकृतकरितहां । भसमक ह्योभगवान ॥ ४ ॥ संकटटाह्योसंभुको । नासकह्योनिसचार ॥ हैनरहरप्रभुदीनहित । ऐसेकृष्णउदार ॥ ५ ॥ तातेंसंकरकौचरित । करिहितगावैकोइ ॥ जनमजनमताकोजथा । हेतनसंकटहोई ॥ ६ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेण बारहटनरहरिदासविरचितेवृकासुरवधोनामअष्टाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८८ ॥ ॥ छ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरस्वतिसरितातटसवै । मिलिरिषिराजसमाज ॥ जथा वेदविधिजपजजन ॥ करतब्रह्मकृतकाज ॥ १ ॥ ॥ ऋषिउवाच ॥ ॥ तर्ककरीइकस मयतहां । द्विजवरनिगमनिदान ॥ महापुरुषत्रयदेवमैं । पैकोकरोप्रमान ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तहांब्रह्मपुत्रभृगुतपप्रताप ॥ याकहँसुनिसबहिनकह्योआप ॥ भृगुकर

हुजाइनिर्णयअभीत ॥ तुमपरमपूज्यप्रतिमापुनीत ॥ ॥कविरुवाच ॥ ॥ विधिलोक गएभृगुजुतविचार ॥ कीनोंनपिताकौंनमस्कार ॥ अपराधजानसुतकोंअशेष ॥ विधि कह्यौनकछुआदरविशेष ॥ याहीक्रमतबकैलासआइ ॥ शिवउठेमिलनआएसुभाइ ॥ करउभयरुद्रतहांअयकीन ॥ पुनिभएपछाहैंभृगुप्रवीन ॥ संकरतहांरिसकरिधरित्रिसूल ॥ लषिकोपशिवागहिचरनमूल ॥ भृगुचलेभागितनमनसभीत ॥ पुनिविष्णुलोकआएपु नीत ॥ सुषसेजसयनकमलासमान ॥ निद्रावसहैकरुनानिधान ॥ अनिवारितइहांभृगु विप्रआनि ॥ जगदीसहनउरलातजानि ॥ अवचिंतउठेप्रतिमाउदार ॥ करजोरिकरेतहां नमस्कार ॥ पदविप्रपलोटतआपपानि विश्वेसबोलिमुषविमलबानि ॥ ॥ श्रीकृष्णाउ वाच ॥ ॥ मतविथाहोइतवचरनमूल ॥ तातैउरहैममवज्रतूल ॥ हैविप्रचरनपूजितवि शेष ॥ अघनासकज्यौंतीरथअशेष ॥ तवचरनचिन्हपावनप्रसिद्ध ॥ सबकालरहोममहृ दयसिद्ध ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रभुकरीजथापूजाप्रवीन ॥ देवाधिदेवद्विजविदादीन ॥ मुनिआइजहांऋषिवरसमाज ॥ कारनसबविनयौतहँसकाज ॥ सुनिकीयप्रमानयहरि षिसमाथ ॥ निर्धारविष्णुत्रैलोक्यनाथ ॥ इनतैंनबडोकोउअमरआन ॥ पैयहैनिगमआ गमप्रमान ॥ ॥इतिदेवपरीक्षा ॥ ॥दोहा ॥ ॥ विप्रएकद्वारावती । वसैंजुरहितविका र ॥ जथालाभसंतोषजुत । अषिलब्रह्मआचार ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इकपुत्रभ यौत्रियउदरआनी ॥ सोजातमात्रमरिगयोजानि ॥ द्विजगयोमृतकलेराजद्वार ॥ विलप तिअतिरोवतवारवार ॥ सोसभामध्यबोलतससोक ॥ लषिताहिदुषितसबसुनतलोक ॥ विप्रउवाच ॥ ॥ लोभीद्विजद्वेषीविषयलीन ॥ मूरषमहीपनिताचितमलीन ॥ ऋतऐसेक्ष त्रीअघकराल ॥ यहबालमरयौमेरौअकाल ॥ हिंसाबिहारकृतविकलकोइ ॥ यहभजिनरे सदुषपात्रहोइ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ द्विजछांडिमृतकगयोराजद्वार ॥ क्रमजुक्तपुत्रन वयहप्रकार ॥ इकसमयविप्रसोसभाआइ ॥ पुनिकरिविलापसबहनिसुभाइ ॥ उठिबो ल्योइहांअर्जुनअभंग ॥ प्रतिपालनीतिपौरुषप्रसंग ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ सबध नुषधरतक्षत्रीसुजान ॥ पुनिहोतनमषरष्याप्रमान ॥ तेउदरभरेषत्रीनआहि ॥ जनदु षसहतहैंरहतजाहि ॥ पुनिहोइपुत्रजोअवधिपाइ ॥ सोकहौमोहिकरिहूंसहाइ ॥ विप्रउ वाच ॥ ॥ यहसुनतविप्रबोल्योअधीर ॥ बलदेवकृष्णप्रद्युम्नवीर ॥ इनहूंनकह्योजोज तनआज ॥ जगतुमतैंसरिहैकहाकाज ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ हैरामकृष्णनाहिननि दान ॥ गांडीवधरनअर्जुनसग्यान ॥ यहहोइनजोरष्याअसेस ॥ पुनिकरिहूंतनमंगलप्र वेस ॥ ॥ विप्रउवाच ॥ ॥ इकत्रंबकतोषनमंत्रआहि ॥ हैसाधिमोहिहूंभजतताहि ॥ जीतिहूंमृत्युबलतासजानि ॥ अरुदेहूंतेरेपुत्रआनि ॥ लषिदशमपुत्रकोप्रसवकाल ॥ द्विजआनिकह्योअर्जुनदयाल ॥ सोसुनतमात्रअर्जुनसधीर ॥ सुचिभएजथामज्जन सरीर ॥ द्विजग्रेहआइअर्जुनदयाल ॥ संधानवानकियसत्रुसाल ॥ अधऊर्धसूति काग्रेहआनि ॥ पारस्वचहूंरक्षाप्रमानि ॥ करितहांसरापंजरकराल ॥ दैरक्षातहां ठाढेदयाल ॥ कालगतिप्रबलजानैनकोइ ॥ सुतजातमात्रमरिगयोसोइ ॥ द्विज

अर्जुननिंद्याकरीदेषि ॥ व्रतभयौयहांमिथ्याविशेषि ॥ यहांअर्जुनतबजमलोकआइ ॥
पैंतहांविप्रबालकनपाइ ॥ पुनिइंद्रअगनिनैरतिप्रमानि ॥ अरुअनलदेषिईसानआनि ॥
पुनिवरुणरसातलनभप्रजंत ॥ द्विजमृतकपुत्रषोजेदिगंत ॥ पैविप्रबालकहुंनहीपाइ ॥
यहांअर्जुनद्वारावतीआइ ॥ अविलोकिलोकलोकानिअसेस ॥ पुनिकरनलगेमंगलप्रवेश
॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ प्रभुकह्योकृष्णयहभेदपाइ ॥ सोचौनमरणकरिहूंसहाइ ॥
प्रभुलयौसंगअर्जुनप्रवीन ॥ इहांकृष्णरथहिआरोहकीन ॥ हठिद्वीपलोकनिरवधिनिहा
रि ॥ पर्वतगएलोकालोकपारि ॥ गोविंदआयपश्चिमदिगंत ॥ अंधारतहांदेष्यौअनंत
॥ भवभएअश्वगतिभंगजानि ॥ पावेनपंथअतितमप्रमानि ॥ जोगेसकृष्णयहदेषिजो
ग ॥ प्रभुनिजप्रभावाचिंत्यौप्रयोग ॥ प्रेख्योजुसुदर्शनचक्रपाणि ॥ इहिंकरयौअषिलतम
नासआनि ॥ पुनितहांचक्रकीनौप्रकास ॥ तबपंथतापनहिसह्योतास ॥ पुनिसलिलमां
झकीनौप्रवेश ॥ देष्यौइकमंदिरतिहिंप्रदेश ॥ सहसफनसेषजुतमनिसतेज ॥ जिहिम
णिकेऊपरसुषदसेज ॥ ईश्वरीजोतिप्रतिमाअनूप ॥ राजततिहिंऊपरअतुलरूप ॥ सप्र
सन्नवदनतनसघनस्याम ॥ कुंडलकिरीटमणिरतनदाम ॥ सुभलक्षणतनलोचनविसाल
मणिलसतउरसिवैजंतिमाल ॥ तनपीतबसनभुजअष्टतास ॥ प्रतिअंगअंगसोभाप्रका
स ॥ पारषदसकलठाढेपुनीत ॥ अणिमादिसिद्धिआयुधअभीत ॥ करिकृष्णपार्थजुतन
मस्कार ॥ अरुहाथजोरिठाढेउदार ॥ अषिलेसपुरुषहँसिकैअनंत ॥ तबपूछिकुसलआ
गमनतंत ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ एब्रह्मपुत्रमैंइहांआनि ॥ प्रभुदरसनतबकारणप्र
मानि ॥ हैंदेहधरयोहमधर्महेत ॥ मनुजावतारअमरनिसमेत ॥ भगवंतउतारयोभूमिभार
॥ अबआवतहैहमहूंउदार ॥ ॥ ईश्वरउवाच ॥ ॥ हेकृष्णआहितुमपूर्णकाम ॥ अषि
लेसरहितइच्छाअकाम ॥ तिहिंपुरुषपुरुषमाहिमाप्रमानि ॥ वैबालकदीनेइहांआनि ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ वैबालकआनेइहां । द्वारावतीदयाल ॥ करधरिदीनेविप्रकूं । प्रभुऐसेप्रति
पाल ॥ १ ॥ जरतअग्निराष्योअर्जुन । क्रमपरपूरनकीन ॥ दुष्टनिदातादंडके । देवस
हाइकदीन ॥ २ ॥ कर्मपराक्रमकृष्णके । कहनसमर्थनकोइ ॥ कहेजथानरहरसुकवि । संत
बताएसोइ ॥ ३ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेदशमस्कंधानुसारेणबारहटन
रहरिदासविरचितेद्विजपुत्रआनयनोनामएकोननवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥ ॥ छ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णजथाविधद्वारका । करतविलासअनेक ॥ वैभवता
हिविहारवन । विद्याविजयविवेक ॥ १ ॥ व्यासपरिक्षितसोविवरि । कहतदशमअधि
कार ॥ भवतारणभागौतको । सुनहुश्रवनपुटसार ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुरवस
तवर्णचारौपुनीत ॥ विधिजुक्तविभवविद्याविनीत ॥ चतुरंगचलतआज्ञाअधीन ॥ पुनि
सचिवधर्मप्रभुहितप्रवीन ॥ गजमत्तछरितुघूमतअगान ॥ प्रतिमाअनूपपर्वतप्रमान ॥
प्रतिषंडषंडसंभवपवंग ॥ अतितेजरंगआकृतिउतंग ॥ वाटिकाग्रेहउज्वलविसाल ॥ जल
केलिजलासयकमलजाल ॥ वनवनविचित्रमृगयाविहार ॥ आषेटभेटकोटिकअपार ॥ ज
लथलविहारषेचारजंत ॥ सिघादिद्विरदप्राणीअसंत ॥ वनितासमूहवंछितविहार ॥ प्रति

दिवसषेलनवनवप्रकार ॥ अनेकभांतिनाटकअनूप ॥ गंधर्वगानसुरत्रियसरूप ॥ गंधर्वनटीकिन्नरीगान ॥ दिनदिनहिरिझाइसुलहतदान ॥ दशषटसहससतइकसंग्यान ॥ पटरानीअष्टोत्तरप्रमान ॥ प्रतिमहिलादसदसपुत्रपाइ ॥ सबहिनकीसंष्याइहिसुभाइ ॥ इकलाषसहसइकसठिअनूप ॥ सुतअसीभएसुंदरसरूप ॥ १६१०८०पुनिमहारथीतिनमहँप्रमान ॥ अष्टादशबुद्धीबलअमान ॥ प्रद्युम्न, सांब, अनिरुद्ध, प्रसिद्ध ॥ मधु, दीप्तिमान, वृक, समरसिद्ध ॥ भएचित्रभानु, अरुबृहद्भानु, ॥ पुनिअरुन, भानु, पुष्कर, प्रमान ॥ श्रुतदेव, सुनंदन. देवनाह, ॥ वनिचित्रबाहु, अतिकवि, उछाह ॥ निश्चयविरूप, न्यग्रोध, नाम ॥ पैबडोप्रद्युम्नधर्मधाम ॥ अनिरुद्धभयौताकेअजीत ॥ भौवज्ञनाभसुततिहिंविनीत ॥ सोवज्ञनाभवज्रमांझवीर ॥ धरहेतकृष्णराष्यौसधीर ॥ प्रतिवाहभयौताकेप्रसिद्ध ॥ ताकेसुवाहभयोसमरसिद्ध ॥ सुतउपज्यौताकैंसांतसेन ॥ शतसेनभयौताकैंसुषेन ॥ याहीक्रमभौविस्तारवंश ॥ पृथ्वीप्रसिद्धजादवप्रसंस ॥ कुलतामहिनिर्धननहिनकोइ ॥ अलपायअधर्मीसठसुजोइ ॥ निर्बीजनिलजबलनिसंतान ॥ पुनिबढ्योवंसइहिंविधिप्रमान ॥ त्रयकोटिसहसमिलिआठआन ॥ सतअष्टइहीउपरिसुजान ॥ ३०००८८००पुनिआचारिजएतेप्रकास ॥ तहांपढैबालचटसालतास ॥ कहुकुंवरसिष्यसंष्यानकीन ॥ नितिपढतउठतविद्यानवीन ॥ यहसुनीबालसंष्याअखंड ॥ पायोनपारजादवप्रचंड ॥ विसचारकरणनिर्मूलकाज ॥ रविचक्रसुजाधवभएराज ॥ इहिंकारिजउपजेअमरआइ॥प्रतपैसबजादवसमयपाइ॥देवकीगर्भसंभूतदेव॥इहिंविश्वविदितहैवासुदेव ॥ अषिलेसइहांअवतरेआइ ॥ परपुरुषब्रह्मकोउहेतपाइ ॥ सबदुष्टअसुरकीनौंसंघार ॥ भगवानउतार्‍यौभूमिभार ॥ अवतरेधर्मकेहेतआइ ॥ चववरणनीतिमारगचलाइ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णचरित्रजुदशमको । कहैसुनैजनकोइ ॥ भवसागरदुस्तरभगत । हितपारंगतहोइ ॥ १ ॥ कह्योदशमनरहरसुकवि । जथाबुद्धिसंजोग ॥ प्रभुसौंजाच्यौपरमपद । पूरनभजनप्रयोग ॥ २ ॥ कृष्णदेवकारनकरन । क्रमपूरणमनकाम ॥ पुनिमाँगतनरहरिपतित । मैंपाऊंतवधाम ॥ ३ ॥ इतिश्रीअ०श्रीकृ०दशमस्कं०बा०नरहरिदासविरचितेश्रीकृष्णजीद्वारकामध्यरजधानीवसननामनवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ नियतआदिदेपूतना ॥ रामकृष्णव्रजराज ॥ कठिनअरिष्टनिवासक्रम । करेजथासुरकाज ॥ १ ॥ कुंतासुतकौद्वेषकरि । कर्मअनादरकीन ॥ हरिकीनैतेमानहत । निग्रहप्राननवीन ॥ २ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ विषमोदकलाक्षाग्रहविधान ॥ क्रमद्यूतकपटत्रियवस्त्रतान ॥ इत्यादिअवग्याकीयअशेष ॥ वधविविधवयरविग्रहविशेष ॥ विश्वेसकृष्णकीनौविचार ॥ भवधर्‍यौदेहभुवहरनभार ॥ मैंटार्‍यौजद्यपिअप्रमान ॥ निस्सेसभयौनाहिननिदान ॥ एछपनकोटिजादवअभंग ॥ सबवर्ततजोलौएकसंग ॥ सबभांतिइनहिमेरौसहाइ ॥ उपज्योननासकाहूउपाइ ॥ सोकरौअबैसाधनअशेष ॥ बाढैविरोधइनमहँविशेष ॥ दुःसाध्यवेणुवनहोतदाह ॥ उपजैआतमकृतदुष्टअथाह ॥ घसिआपआपमहँवंसघात ॥ ज्वालानलजरिजरिप्रलैजात ॥ द्विजआज

काजकरिहूंदुरंत ॥ एपैहैतबहीनासअंत ॥ ॥ परीक्षितउवाच ॥ ॥ इहांकह्योप
रीक्षितवचनएह ॥ सुनिसुनिकैउपजतहैसंदेह ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मभक्तदाताविहि
त । कुलगुरुसेवतकोइ ॥ तिनहअापसंभावना । हेतनकबहूहोइ ॥ ३ ॥ ब्रह्मक
र्मजुतवेदवित । अरुविद्याबलआप ॥ यहोअसंभावितइहां । सोपैदेतनश्राप ॥ ४ ॥
शुकउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुककह्योवचनतहांफेरिसंत ॥ अवतरेभूमिमानुष
अनंत ॥ प्रभुतहांचलाएधर्मपंथ ॥ संसारहिदेहैनीतिसंथ ॥ विस्तारकीर्तिजगविमलवा
नि ॥ पुनिजथावर्णआश्रमप्रमानि ॥ निजधामगमनइच्छानिदान ॥ प्रभुजथाअवधि
पूजीप्रमान ॥ यहकरीतहांलीलाउदार ॥ भवभूतहेतभुवटारिभार ॥ एदैवजोगारिषिरा
जआइ ॥ तपसिद्धिसमैअपनैसुभाइ ॥ दुर्वासाविश्वामित्रदेषि ॥ अरुअसितकण्वकश्य
पविशेषि ॥ अंगिराअगस्तिभृगुइहांआइ ॥ संगवामदेवनारदसुभाइ ॥ संगमिलिवसि
ष्ठद्विजअत्रिसिद्ध ॥ इत्यादिकआएवयसवृद्ध ॥ तपसिद्धसाधुवंदितसंसार ॥ द्विजआए
द्वारावतिउदार ॥ मिलिषेलतहैंजादवकुमार ॥ विप्रनिविलोकिअंतरविकार ॥ उपजीकु
बुद्धिभावीअधीन ॥ क्रमजोगतवैयहचरितकीन ॥ सुनहुतुमझूठभाषैनसिद्ध ॥ परसपर
कहतहसिहसिप्रसिद्ध ॥ अबकरहुसबैमिलिमंत्रएहु ॥ हितकिहूंप्रतिक्ष्याद्विजनिलेहु ॥
सुतकृष्णसांबनामासरूप ॥ पुनिबन्यौअंगअंगनिअनूप ॥ त्रियवेषबनायौतबैतास ॥
पटग्रंथिकरीलैअप्रकास ॥ गर्भथलबांधिसोग्रंथिगूढ ॥ मिलिचलेबालवसअदिनमूढ ॥
बनिबालकसबतहांत्रियावेष ॥ इनिरिषिनिवासआएअसेष ॥ करजोरिबालछलप्रणतिकी
न ॥ प्रभुत्रिकालज्ञतपसाप्रवीन ॥ इहिंबालगर्भथितिअवधिआइ ॥ सोकरतपुत्रवांछासु
भाइ ॥ वसलज्जाबोलतनहिनबाल ॥ करजोरिकहतस्वामीकृपाल ॥ याकेहैंगर्भस्थितिअ
भूत ॥ प्रभुव्हैहैपुत्रीकिधौंपूत ॥ रिषितवैजोगविद्यानुसार ॥ पायौसबइनकौछलप्रकार ॥
॥ दुर्वासाउवाच ॥ ॥ दुर्वासातहांबोल्योसदाप ॥ यातैंतुमपैहोनासआप ॥ याकेजुग
र्भउपजैअरिष्ट ॥ निःसेषकरैजदुवंसनष्ट ॥ सुनिबालइहैजबदुसहश्राप ॥ उरकंपबढीभ
एचकितआप ॥ वसत्रासतज्योजबत्रियावेष ॥ अयमयसोमूसलभयोअशेष ॥ वहगि
रयोमुसलउरतेअभूत ॥ पुनिपलविवेषजदुवंसपूत ॥ सबजादवसमनृपउग्रसेन ॥ सजि
धर्मसभाराजितसुषेन ॥ यहवीचतहांवैवालआय ॥ सबकह्योमुसलकारनसुनाय ॥ सुनि
दईतहांआज्ञानरेस ॥ इहिंमूसलेरेतिडारौअसेस ॥ पुनिकरीनृपतिआज्ञाप्रमान ॥ सोभ
योमुसलचूरनसमान ॥ वारिधिमहँडाख्योतिहींवेर ॥ उपज्योयहवातैंतहांएर ॥ वहरह्योमु
सलअवशेषआइ ॥ सोउदधिमांझडारयोसुभाइ ॥ जबगिल्यौसफरिवहभक्षजानि ॥ पु
निभयोउदरगतवहप्रमानि ॥ मेल्योजलजालामीनमार ॥ सकुटुंबमच्छबांध्योसुढार ॥
सोमीनउदरफारयोसुभाइ ॥ अबशेषलोहवहनिकरिआइ ॥ किहुंहेतरहैजहांतहांप्रकास ॥
निहचैनहिकृत्याहोइनास ॥ इहांजरानामइकवसैव्याध ॥ सबजंतुप्राणघातकअसाध ॥
सोमुसलषंडअवशेषसार ॥ करव्याधचढ्योकाहूप्रकार ॥ क्रमजुतवहैभल्लिकाकीन ॥ सोइ
दारणलैसरअग्रदीन ॥ सुनिकृष्णमुसलकारनसमूल ॥ भवतव्यहेतसोपरीभूल ॥ ॥

दोहा ॥ ॥ कर्तुंअकर्तुंजुअन्यथा । कारनसमर्थकृपाल ॥ तदपियहैइच्छाअतुल ॥ प्रभुनरहरप्रतिपाल ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेएकादशस्कंधानुसारेण बारहटनरहरिदासविरचितेयदुवंशआपोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्रमपूछ्योसुकदेवकौं । रहसिपरिक्षितराज ॥ करेविदाउद्धवजुकृष्ण । कहाकख्योमुनिकाज ॥ १ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ उतपातहोनलागेअकाल ॥ इहिंसमयगगनभूअंतराल ॥ अनिमित्तदेषितहांकृष्णआप ॥ पुनिकरतसोचअंतरअमाप ॥ इकदिवससुधर्मासभाआनि ॥ प्रभुबैठेसबजादवप्रमानि ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ क्रमदुष्टउपद्रवएकराल ॥ अनइष्टदृष्टिआवतअकाल ॥ द्विजवरजौदुःसहआपदीन ॥ पुनिआगमसूचतएप्रवीन ॥ इहिंठौडनरहिवोउचितआज ॥ करियेप्रयाणइहिंछिनसकाज ॥ एपठएसंषोद्धारआप ॥ त्रियबालवृद्धअंतरसंताप ॥ मिलकख्योमंत्रसबहिनप्रमान ॥ नहिजानतकोउभवतानिदान ॥ तहांआएकृष्णप्रभासषेत ॥ तातैंमिलिजादवकुलसमेत ॥ सुभथानथानपूजासनान ॥ गोदानआदिदयमहादान ॥ प्रभुपरमपुरुषमायाप्रवीन ॥ क्रतकारनइच्छाइहैकीन ॥ पुनिकरयौतहांवारुणीपान ॥ उतपत्तिअमंगलचरितआन ॥ इहिंठौडविरुद्धबाढ्योअसाधि ॥ उतपन्नहोतनवनवउपाधि ॥ दुवतहांप्रमत्तमतिभ्रष्टहोइ ॥ कलुगनतनाहिंसंबंधकोइ ॥ करिक्रोधजुद्धउपज्योकराल ॥ इहांभिरतमरतजोधाअकाल ॥ इहांअस्त्रशस्त्रतूटेअनंत ॥ अबसेषरहेनहिआइअंत ॥ उपज्योयहकृत्यावीर्यएर ॥ हुवपत्रदुधाराषडगहेर ॥ सोलेतसूरकरपत्रसोध ॥ करउभयअवाहतमहाक्रोध ॥ विविषंडहोतजिहिलगतवाऊ ॥ सोएरपत्रकृत्यासुभाउ ॥ प्रतिसुभटभिरतपौरुषसपूर ॥ तहांवीरबजावतविजयतूर ॥ प्रद्युम्नसांबमिलिजुद्धप्रमानि ॥ अक्रूरभोजबहुजुरेआनि ॥ अनिरुद्धसात्यकीआपआप ॥ दुवहोतजुद्धउरअतिसदाप ॥ जूटेसुभद्रसंग्रामजीत ॥ जुरिसतजितसमहरसहसजीत ॥ गदमिलेसुदारुणअंगअंग ॥ भिरितहांसुमित्रसुरथीअभंग ॥ याहीक्रमआहवभोअपार ॥ संष्यानसूरसमहरसंघार ॥ अन्योन्यभिरेइहिंक्रमअभीत ॥ जगजेठसुभटसंग्रामजीत ॥ भानेजामातुलबाढिभीर ॥ पितुपुत्रभिरेउरनाहिपीर ॥ आत्रिजसौंत्रिजसौंपित्रियभ्रातभ्रात ॥ मिलिग्यातिग्यातिसंबंधसात ॥ एग्यातिअर्हसौंदासआनि ॥ पुनिभोजवृष्णिअंधकप्रमानि ॥ सात्वतमधुअर्बुदमिलिसमान ॥ पुनिसूरसेनमाथुरसुजान ॥ अरुकुंतिविसर्जनकुकुरअंक ॥ तेभिरेसमरतीरथनिसंक ॥ इत्यादिगतिजादवअनेक ॥ कोजानैसंष्याएकएक ॥ आयुधछतीसटूटेअपार ॥ पुनिकरेमुष्टिलत्ताप्रहार ॥ इहांटूटेसबैआयुधअभंग ॥ तबकरतएरप्राहारअंग ॥ विष्णुहैकरतजदपिबचाव ॥ हैतदपिभिरतकरिवैरभाव ॥ पुनिरामकृष्णदोषीप्रमानि ॥ इनहूंसौंलागेभिरनआनि ॥ भगवंतउताख्योभूमिभार ॥ सबकोपिकख्योजादवसंघार ॥ निःसेषभयोजदुवंसनास ॥ भिरिसमरषेतपावनप्रभास ॥ बलदेवविरतिउपजीविशेष ॥ अविलोकिभासकुलकोअसेष ॥ यहांबैठेसागरतीरआइ ॥ वससोकजुदर्भासनबिछाइ ॥ क्रमजुक्तजोगअभ्यासकीन ॥ वैकुंठपधारेप्रभुप्रवीन ॥ बलदेवगमनअतिदुषवियाप ॥ यातैंभएसोकाकु

लितआप ॥ पुनितहांइकपीपलवृक्षपाइ ॥ अषिलेशकृष्णतिहिंछायआइ ॥ प्रभुधस्यौ चतुर्भुजदिव्यरूप ॥ यहांकमलनयनप्रतिमाअनूप ॥ मकराकृतकुंडलतुलसिमाल ॥ व निब्रह्मसूत्रकिंकिनिविसाल ॥ इत्यादिकभूषनअंगअंग ॥ अतिसोभालक्षनगुनअभंग ॥ सुतपीतवसनतनवर्णस्याम ॥ संषादिकआयुधकरसकाम ॥ वहजरानामतहांव्याधआ इ ॥ अहिफणाकारप्रभुचरणपाइ ॥ क्रमजानुउपरप्रभुचरनकीन ॥ पदमासनतहांबैठेप्रवी न ॥ नषजोतिहोतिमनुमणिसमान ॥ नरनारायणकरुणानिधान ॥ कृत्यावसेषभल्लीकरा ल ॥ कीयमनुहँवानसंधानकाल ॥ विश्वेसचरनसरहन्योव्याध ॥ ईश्वरीअतुलमायाअगा ध ॥ कछुकरतदिषावतकछूकाज ॥ धरिसगुणरूपराजाधिराज ॥ अविलोकिचरणचक्रा दिअंग ॥ यहांनिकटव्याधआयोनिसंक ॥ एदेषिचतुर्भुजरूपआप ॥ प्रतिमाअभूतपूर णप्रताप ॥ बसग्यानकह्योवहिजराव्याध ॥ प्रभुआहिमहाहूंसापराध ॥ अवदेहुनाथमोहि प्रानदंड ॥ अषिलेसधर्मपालकअषंड ॥ प्रभुदंडपात्रजुनदंडपाइ ॥ जनपुनिअनर्थकोउ करैजाइ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ इहठोरनक्रोधविरोधआज ॥ कारिदयाकृष्णबो लेसकाज ॥ यहइच्छासबमेरीअषंड ॥ दाताकौजाचककौनदंड ॥ आज्ञाहैमेरीव्याध एह ॥ दिविलोकजाहुतुमदिव्यदेह ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ प्रभुकृपादरसआज्ञाप्रताप ॥ वहचढिविमानगयौस्वर्गआप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहांदारुकरथतेउतारि । आगेठाढो आनि ॥ कीजैआज्ञामोहिकछु । माधवजोमनमानि ॥ १ ॥ पाइजथामनभावप्रभु । गौ वैकुंठविमान ॥ तहांयहैभवतव्यता । प्रभुइच्छापरवान ॥ २ ॥ कह्योकृष्णतिहिंसूतकहँ । अवैद्वारिकाजाइ ॥ इहांनरहिवोउचितयह ॥ सबनिकहौसमुझाइ ॥ ३ ॥ लौपैगौलहरीस वर । यहमरजादअभंग ॥ इंद्रप्रस्थजनजाहुअव । सबअर्जुनकेसंग ॥ ४ ॥ कीयदारुक यहपरिक्रमण । वंदिचरणबहुवार ॥ तबआयोद्वारावति । पुनिकहिसबैप्रकार ॥ ५ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रे श्रीकृष्णावतारेएकादशस्कंधानुसारेणबारहटनरहरहरिदासविरचि तेबलदेवप्रयाणदारुकसुतद्वारावतीआगमननामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ६९ ॥ परिक्षितउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहांपरिक्षितनृपतिअब ॥ व्यासहिपूछिविचार ॥ कृष्णगवनवैकुंठकहु । कीनोकवनप्रकार ॥ १ ॥ ॥ शुकउवाच ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ ब्रह्मादिकइंद्रादिकमुनिवर ॥ देवपितरगंधर्वप्रजेसर ॥ चारणसिद्धविविधविद्याधर ॥ रा क्षसयक्षमहोरगकिन्नर ॥ सुरकन्याद्विजराजसुहाए ॥ एसबदरसहेतमिलिआए ॥ सब केयहअभिलाषसुहावन ॥ प्रभुममलोककरहुअबपावन ॥ वरषैपुहपदुंदुभीवाजत ॥ सु रकन्यामिलिनाटकसाजत ॥ दृष्टिसुधासबहिनसुषदीने ॥ निसचैसोकाहूननिहारे ॥ प्रभु सहदेहवैकुंठपधारे ॥ पैयहगतिकाहूनहिपाई ॥ जलभेदिज्योंतडिताजाई ॥ सत्यधर्म धीरजधृतसंपति ॥ क्रमजुतसंगगएतहांकीरति ॥ ज्योंचपलागतिमनुजनजानत ॥ पु निसुरकृष्णगतिहूनपिछानत ॥ विधिकरजोरसबनिकीयवंदन ॥ करतभएअस्तुतिषलकं दन ॥ ॥ छंदत्रोटक ॥ ॥ जबभावनदेवकिगर्भभए ॥ निजरूपअनूपदिषाइनए ॥ क्रमताततहिमातप्रबोधकस्यौ ॥ वरसिद्धिभयोतुमहोजबस्यौ ॥ गतिगूढसुनंदकेग्रेहगए ॥

भगवंतअनंतजुवृद्धिभए ॥ जसुदापयपानजथाजननी ॥ क्रमसंजुतबालविहारकरे ॥ हठि
माषनदूधदहींजुहरे ॥ करअग्रधराधरधाइधर्यो ॥ हटिकैमघवानगुमानहर्यो ॥ ज्वाला
नलमुंजारन्यजरे ॥ कृत्यासुदवानलपानकरे ॥ मदमत्तमहाअहिमानमल्यो ॥ चलचित्त
भयौदहतैंसुचल्यौ ॥ सिसुपालदआदिनरेससबै ॥ जुरिआइस्वयंवरहेतजबै ॥ गुरुताति
नकीगतिपत्तिगई ॥ अवनीससुतातहँछीनिलई ॥ जुइआनिसुरासुरजुद्धजुरे ॥ हतप्रान
भएकिउमानमुरे ॥ जवनासुरजेभवलोकजयो ॥ भगवंतचरित्रतेभस्मभयो ॥ इच्छाकछु
चित्तयहैउपजी ॥ भुवपारसमुद्रकीजायभजी ॥ क्रमजुक्ततहांरजधानिकरी ॥ प्रभुद्वार
कानामविचित्रपुरी ॥ भुवभारजुकारकदुष्टभये ॥ जगदीसतहांवसिसर्वजए ॥ कन्याएक
त्रजुआनिकरी ॥ वनिताहतिभौमसबैजुवरी ॥ भगवंतअनंतसुमीनभये ॥ हतशंखम
हासुरवेदलये ॥ जबआदिवराहस्वरूदकर्यो ॥ हरिणाक्षहत्यौभुवगोलधर्यो ॥ करुणानि
धिकच्छपरूपकरे ॥ हितसिंधुमथ्यौतहांरत्नहरे ॥ कृतकारनरूपनृसिंघकियौ ॥ हरिणाकु
समारिविदारिहियौ ॥ भगवानजुवामनरूपभए ॥ बलिबांधिपतालतहांपठए ॥ भृगुवं
शबलिद्विजरामभयौ ॥ द्विजदीननिकौभुवचक्रदयौ ॥ भुवरामकेआश्रयआनिभज्यौ ॥
तिहिंहेतविभीषनसर्वतज्यौ ॥ भगवंतकृपातैसिद्धिभयौ ॥ दसकंधहत्यौगढलंकदयौ ॥
भगवंतअबैतेइकृष्णभए ॥ जगदुष्टतितेसबमारिजए ॥ अवतारजुन्हैहैबुद्धअबै ॥ तेध
र्मअहिंसापालतबै ॥ कलकीअबकारनरूपकरे ॥ हठिमारिमलेंच्छअसेषहरे ॥ करुणाम
यकृष्णचरित्रकहे ॥ हितकौनसमर्थसुरासुरहे ॥ रसभक्तिइहांब्रह्मादिकए ॥ गुनगावतस्या
मसुधामगए ॥ ॥ छंदद्विअक्षरी ॥ ॥ महिमनवाचकृष्णगुनगावै ॥ पैसोइसाधपरम
पदपावै ॥ दारुकसूतद्वारकाआयौ ॥ सबहिनिकृष्णकह्योसुसुनायौ ॥ उग्रसेनवसुदेवसु
नतउर ॥ दारुनदुषभयौअतिदुर्द्धर ॥ यहांप्रभासषेतसबआए ॥ स्यामजहांवैकुंठसि
धाए ॥ पुनिवसुदेवसुमृत्युप्रमानि ॥ रोहनिसहितदेवकीरानी ॥ प्रानसमानकृष्णनहिपा
ए ॥ सुपेंदेहतजिस्वर्गसिधाए ॥ इहांवसुदेवत्रियासबआई ॥ सोरसहससहगमनसिधा
ई ॥ जादवअमरअवतरेजेते ॥ तजितनलोकलोकगएतेते ॥ नियतपतिव्रतजोइजोइनारी
॥ सतीभईपतिलोकसिधारी ॥ मिलिबलदेवकृष्णकीवामा ॥ कीनौअग्निप्रवेशसकामा ॥
अर्जुनआदिसोकआधीने ॥ क्रमजुततहांमृत्युकृतकीने ॥ उदधिछांडिमर्जादाआयौ ॥ बो
रिनगरजलमांझबहायौ ॥ तहांभयौजलबिंबनिरंतर ॥ रह्यौकृष्णरुकमनिकौमंदिर ॥ जहां
निरंतरअंतरजामी ॥ सदाविराजतत्रिभुवनस्वामी ॥ अद्यावधिरजधानीओई ॥
साधसंतअविलोकितसोइ ॥ पुनिअवशेषइहांजोपाए ॥ बालवृद्धत्रियकर्मबचाए ॥ इंद्र
प्रस्थतेआनेअर्जुन ॥ जथाजुक्तसोतहांवसेजन ॥ इहांपुनिअर्जुनमथुराआए ॥ अविलो
कतपुरद्दगजलछाए ॥ कृष्णविनावहठौरविलोक्यौ ॥ रहतनप्रानकिहूंविधिरोक्यौ ॥ वज्रना
भसिरतिलकबनाए ॥ सीसछत्रधरिचमरचलाए ॥ क्रमअभिषेकजथाविधिकीनौ ॥ देस
राजपर्यागतदीनौ ॥ इहांफिरिइंद्रप्रस्थतबआयौ ॥ सबैअमंगलमर्मसुनायौ ॥ अंतर्गतवै
रागभयौअब ॥ जथामसानभएमंदिरजब ॥ स्यामविनालागतजगसूनौ ॥ देषिदेषिउपज

तदुषदूनौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहांयुधिष्टीरआदिदै । पांडवसकलपुनीत ॥ कर्यौपरिक्षितकौंतिलक । वैभवराजविनीत ॥ १ ॥ देसविभवपौत्रहिदयौ । सबैधर्मसमुझाइ ॥ मनचिंतापिछलीमिटी । आगेकरतउपाइ ॥ २ ॥ कियोप्रयाणप्रमाणकरि । हेमालयकेहेत ॥ सबैछांडिग्रहइंद्रसुष । तहँद्रोपदीसमेत ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कर्मजन्मकहिकृष्णके । श्रद्धाभक्तिसंजोग ॥ सुपनेहूंदेषेनसो । ग्रहअनिष्टअघरोग ॥ ४ ॥ कहेजथानरहरसुकवि । कृष्णचरितसुभकाज ॥ मनवचक्रमजाचतमुकति । द्योराजनकेराज ॥ ५॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कल्पकल्पशतकोटिकोटिप्रभुकृष्णपवारे ॥ सेषसहसमुषगनाधीससुनजाहिसंभारे ॥ घनधारारजरेनइनहुंपैसंष्याआवे ॥ कृष्णचरित्रविचित्रपारइनकोकोपावे ॥ भाषेजुव्याससुकभागवत, रहिहैंजोलौंचंद्ररवि ॥ कविदासदासआतमसकति, कहेजथानरहरसुकवि ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीअवतारचरित्रेश्रीकृष्णावतारेएकादशस्कंधानुसारेणबारहटनरहरिदासविरचितेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

॥ इति श्रीअवतारचरित्रे द्वाविंशतितम
कृष्णावतारचरित्रं समाप्तम् ॥

पंडित श्रीधर शिवलाल.
ज्ञानसागरछापखाना (मुंबई.)



॥ अथ त्रयोविंशतितम बुद्धावतार प्रारंभः ॥



कवित्त ॥ समयएकअसुरेसअसुरमिलिमंत्रउचारीय ॥ तबपूछयौगुरुशुक्रभयोसंदेहजु भारीय ॥ जबदेवासुरजुद्धहोतसुरभिरतनिरंतर ॥ त्रिषापिपासारहितरहतसनमुषसायुध कर ॥ कबहुनजातभोजनकरन, वस्तुभक्षनहीसँगवहत ॥ कविकहहुसुपैकारनकवन. हृष्टपुष्टसबदिनरहत ॥ १ ॥ ॥ शुक्रउवाच ॥ ॥ दियउत्तरतबशुक्रप्रष्णतुमकस्योबुद्धिपर ॥ अग्निहोत्रद्विजअवनिवस्तुहोमतप्रतिवासुर ॥ अरुअनेकभुवभूपहोममषकरतसुर निहित ॥ सुरमुषअनिलप्रसिद्धतहांमेलतपंचामृत ॥ हयमेधआदिकरियतहवन, गंधद्वारसुरसंग्रहत ॥ तिहिंबलप्रसिद्धसिद्धांतयह, सदातृप्तसुरगनरहत ॥ २ ॥ यहप्रसंग आसुरसमूहजबसुन्योशुक्रपहँ ॥ गुरुहिजानिसुप्रसन्नकह्योकरजोरितत्वतहँ ॥ सोइबज्ञसविशेषकृपाकरिहमहिकरावहु ॥ जबमषपूरनहोइतहांप्रभुदक्षनापावहु ॥ सुरकाढिदेहितबस्वर्गतें, होहिबाहुबलविज्जइय ॥ गुरुदेवतिहारेनिजकृपा, सबैमनोरथसिद्धइय ॥ ३॥ शुक्राचारजकीयप्रमानअसुरनिउछाहकीय ॥ सबैसिद्धसंभारसारउद्यमआरंभीय ॥ वेद अथर्वणसोधिसोधिलीयमंत्रअसुरगुर ॥ अतिदुःसहयहवाततबहिसुरलोकसुनीसुर ॥ उतपन्नचित्तचिंताअतुल, गएविबुधगुरग्रेहतब ॥ आरंभयज्ञअसुरनिकरे, अंतरथिरनहिहोतअब ॥ ४ ॥ सुनीब्रहस्पतिसबैअमरचिंताउतपन्नीय ॥ इंद्रादिकसुरसगुरूकठिनभयबुद्धिजुकिन्नीय ॥ सबमिलिगएससोकविश्वजितजहांविश्वंभर ॥ कारणआगमकहहुप्रगटप्रभुपूछिदयापर ॥ जगदीससरनपंजरविजय, जीयनकहूंठहरातजव ॥ करजोरिदुष्षकारनदुसह, लागेकहनसुरेसतब ॥ ५ ॥ सदाअसुरगुरुशुक्रमंत्रसंजीवनिसाधत ॥ अषिलजिवावतअसुरविविधसंग्रामजुबाधत ॥ प्रगटयज्ञबलपाइअजयजोव्हैहैआसु

र ॥ छुधापिपासारहितसुकोतिनजीतिसमरसुर ॥ जयधर्मसदाजानहुअमर, षलजैहैंनि जदोषषय ॥ सुरराजकरहुतुमस्वर्गसुष, अषिलईसदीनौअभय ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हरितबकह्योप्रसन्नव्है । प्रभुसुनिदेवपुकार ॥ करिहूंरक्षाबुद्धिकरि । व्हैबुद्धाअवतार ॥ १ ॥ अभयपाइइंद्रादितहां । सबैगएस्वस्थान ॥ दीनसहायकजि हिंविरद । दयोसुरनिवरदान ॥ २ ॥ सुद्धोदनिमातासती । जिनभएपिताअजेव ॥ ध रयोबौद्धअवतारतहां । हरिदेवनिकेदेव ॥ ३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ प्रभुकर्‍योबोद्धतव बुधिप्रकास ॥ श्रीपूज्यसूरिसंज्ञासहास ॥ सबतुंडमुंडलुंचितसरीर ॥ धरिरूपकर्‍योकच नासधीर ॥ कीनौसुकेसनिर्मूलकाज ॥ वपुवसनश्वेतसूक्षमविराज ॥ परठयोपट्टआसन प्रसिद्ध ॥ सुरसिष्यकोटितेतीससिद्ध ॥ कृतपात्रनालिकेरीअनेक ॥ करलीनेंओघाएक एक ॥ कीयएकपानआहारकाज ॥ वपुपुष्टनग्नमुद्राविराज ॥ ग्रंथितकरपल्लवपंचग्रास ॥ आहारउदकएकैअभ्यास ॥ पुनिआनिविराजितसूरपट्ट ॥ थितहोतशिष्यश्राविकाथ ट्ट ॥ पाषंडवेषपुस्तकप्रचार ॥ मषवादहोतचर्चाविचार ॥ नितकथायज्ञघातकनिदान धरिनयनमूंदिअरिहंतध्यान ॥ सबश्रावकपोसादिवससाधि ॥ मुषपट्टिरुद्धआरँभउपाधि ॥ सिरषोलिकेसलंबितससोह ॥ महिमासुजपालीसूत्रमोह ॥ श्रावकीआइसुंदरिसमाज ॥ वपुपट्टकूलविधिविधिविराज ॥ नगजटितहेमभूषनअनेक ॥ वहुमूल्यविविधवानकवि वेक ॥ अतिभक्तिसुचितवतिपूज्यओर ॥ चाहतसप्रेमज्यौंससिचकोर ॥ कृतजथावेस परिकरअनेक ॥ अरुभजतअहिंसाधर्मएक ॥ मतथपतपृथकपाषंडमान ॥ परचारग्रं थनूतनप्रमान ॥ मषविविधकरतषंडनमृजाद ॥ विपरीतवेषसूचकविवाद ॥ श्राविका संगअन्नेकसाध ॥ बोलतसुबोलजिहिंनिगमबाध ॥ शिवधर्मलोपकीनैसहास ॥ पाषंड धर्मपृथ्वीप्रकास ॥ सबषंडग्रंथवेदिकसुसार ॥ आधुनिकग्रंथकीनेंअपार ॥ इहबुद्धिअ सुरउद्यमअकाज ॥ सबरहेयज्ञआरंभसाज ॥ सोअसुरबोद्धमतग्रह्योसार ॥ सबचल्योए कमारगसंसार ॥ सुरसत्रुचित्तभएमोहसंग ॥ परहरेयज्ञकारणप्रसंग ॥ जगजीतिनिरायु धअसुरजानि ॥ इंद्रादिअमरटरिभयआनि ॥ यहअतुलदैवमायाअजीत ॥ अज्ञातअ षिलआसुरअनीत ॥ अवलोपिजग्यसाधनअनेक ॥ अनुसर्‍योअहिंसाधर्मएक ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अतुलबुद्धिबलईसरूपअद्भुतअवरेष्यौ ॥ प्रगटरू पपाषंडदेवहूंसुन्यौनदेष्यौ ॥ असुरमोहउपजाइनिगममषकीनैषंडन ॥ एकअहिंसाधर्म विदितसुरशोकविषंडन ॥ सुरसिद्धकरेजयजयसबद, कीर्तिसुकविनरहरिकरीय ॥ अषि लेसअमरकीनैंअभय, बौद्धधर्मजगवित्थरीय ॥ ॥ इतिश्रीबुद्धावतारचरित्रंबारहटनर हरिदासेनविरचितंसंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥



॥ अथ चतुर्विंशतितम कल्किअवतारप्रारंभः ॥



॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ईसअनंतभविष्यअब । कल्किनामकरतार ॥ ध
र्मविपर्ययहोइकलि । तबव्हैहैअवतार ॥ १ ॥ जबव्हैहैएचिन्हजग । कहतसुनिगमनि
दान ॥ तबजानहुनिर्धारतुम । प्रगटेकल्किप्रमाण ॥ २ ॥ ॥ छंदवेताल ॥ ॥ जवब्र
ह्मकरिहैवेदविक्रयअसुरसेवाअनुसरै ॥ गायत्रिमंत्रपढाययवननिद्रव्यलेलेघरभरै ॥ पुनि
सस्त्रधारकग्रामजारकस्नानसंध्यापरहरै ॥ विनुवेदभेदकुदानलैलैकर्मनिंदितकृषिकरै ॥ सो
इपात्रजोपैग्रामयाचकदानसबकेआचरै ॥ यवनादिकैग्रहबैठिनिर्भयवेदशाषाविस्तरै ॥
सूत्रमात्रसुविप्रताआचारभ्रष्टअनेक ॥ क्रियाकर्मसंतोषजुतअन्नेकमहकोउएक ॥ अनप
ढेलैलैघोरप्रतिग्रहअनतद्रव्यउपाइहैं ॥ दैव्याजकरिकरिएककेशतक्रोधवसविषषाइहैं ॥
क्षितिमांझप्रगटकहाइछत्रीयकर्मचोरकरावही ॥ पुनिपंथमारहिहताहिप्रानीधारिदशदिश
धावहि ॥ उपराजिअन्नअनीतिआश्रयकुटंबकेपोषनकरै ॥ जिहितिहिंप्रकारउपाजिअन्न
हिउदरवृत्तिहिअनुसरै ॥ प्रभुप्रकृतिसंततधनपरायणप्रजापीडनतत्परा ॥ जनदुष्टजातिज
मातिजहांतहांनिकटवर्तिनिरंतरा ॥ अनदोषबलअबलीनसौंकरिउदकभूमिउतारिहै ॥
तिहिअंसनिंदितआनिनितप्रतिआपमुषआहारिहै ॥ सोद्रव्यजानतपितासंपतिभाग्यव
सप्रापतिभयौ ॥ तिहिंगर्वकरतप्रसिद्धपौरुषदैवपर्यागतदयौ ॥ नृपनीचसौंमिलिमंत्रपूछ
हिवहैमतलैअनुसरै ॥ नीतधर्महिछांडिनिर्भयअघनअपजसतैडरै ॥ मंत्राधिकारसुपाइ
मंत्रीयनीतियहाविस्तारिहै ॥ साधुकौंकरिचोरतिहिंछवनिरपराधिनमारिहैं ॥ चौरकौंकरि
साहुसाचौआनिढिगवैठारिवे ॥ तिहिंपासलैबहुद्रव्यताकेसबैकाजसवारिवे ॥ आपनैहित
काजततपरस्वामिकेहितकोगनैं ॥ राजकाजविगारिनिर्भयकाजसारहिआपनैं ॥ प्रजाकी
नपुकारलगिहैमारिद्वारनिकारियैं ॥ कृषिअंसचाचौभागलैलैअषिलदेसउजारियैं ॥ सन्न

द्धसस्त्रअस्त्रधाराहिसूरसुभटकहाइहैं ॥ मरणकेभयसत्रुसौंमिलिस्वामिकाजनसाइहैं ॥ व
हुद्रव्यदेदेमंत्रवादिनिवीरविद्याविस्तरें ॥ करिविवसजिहिंतिहिंदाउस्वामिहिमंत्रकेबलव
सकरें ॥ प्रभुअंगरक्षकनिकटवर्तीयहअनर्थअभ्यासिहैं ॥ स्वामिकौरिपुमित्रकरिहैंविष
प्रयोगप्रकासिहैं ॥ षानपानविसासमुद्राकछुनअंतरजानिहैं ॥ विश्वासद्रोहीमहापापी
स्वामिघातसुठानिहैं ॥ कृषीकर्मअकर्मकरिकरिराजअंसचुरावही ॥ तिहिदोषजाहिसमू
लनष्टकुकर्मकेफलपावही ॥ पुनिवेचिदारापुत्रपुत्रीयआपसोधनषावही ॥ पुरवैठिमध्यअ
थाइऊपरकलिगृहगृहकहावही ॥ कलिकरतसुद्रसुविप्रकर्मनिसिषासूत्रहिधारही ॥ व्या
ख्यानकरतपुरानवाचतवेदअर्थविचारही ॥ संबंधिकौंदेवित्तअगणितजरठकन्याबहुवरें ॥
करिसूद्रजातिविरुद्धकर्महिब्रह्मविद्याव्यवहरें ॥ ब्रह्मचारिभ्रष्टव्रतअरुवानप्रस्थगृहाश्रमी
॥ सन्यासलैहेंनीचजातिसुसस्त्रधारकअक्षमी ॥ व्यौहारतत्परवौहरगतिरतद्रव्यलोलुपई
सता ॥ अरुरहतदासीगोप्यमठगतपाठविनुहीपंडिता ॥ मदजंत्रचूव्रतनिसादिनमंहअ
जावालकआनीये ॥ मठमांझलैकरअसुरमंत्रनिवधविधानबषानिये ॥ सोइहोतभोजन
चेटिकासंगसुरापानसुसाधही ॥ मुनिबहतसंगततननमुद्रायहसन्यासअराधही ॥ नषकां
षबालविसालजटधरअस्त्रशस्त्रअभ्यासही ॥ करिग्रेहउच्चअवासउज्जलविविधसुषनिविला
सही ॥ सौगंधतेलतंबोलविनुतेकालछेपननहिकरें ॥ आपआपविरोधईरषक्रोधदृष्टिनि
परिजरें ॥ जबचलतस्वामीतीर्थजात्राआनिग्रामनिऊतरें ॥ चतुरंगचहुंदिसिसतनिचेला
विविधवानकविस्तरें ॥ संन्नादद्दुंदुंभिभेरिरनसिंगानवाजितवाजही ॥ मातंगज्यौंमदमत्त
अनमिलग्रामग्रामनिगाजहीं ॥ तहांबैठिश्रेष्टासनहिस्वामीबीचसषिनिविराजही ॥ वनि
वेषजोगसंजोगसंजुतस्वांगअद्भुतसाजही ॥ चलकुटिलभ्रूकुटीअरुणलोचनचौंपअमल
चढाउ ॥ वजरंगकाजसुलोहकीवनिमिलितसिषिउमराउ ॥ सबकहतस्वामीधन्यसाधन
सधेएकसरीर ॥ व्यापारभोगविरागवैभववनतनृपतावीर ॥ जरतसौंअभिमानज्वालारो
मरोमनिरोष ॥ ग्रामतैलएदामगनिगनिभएसांतसंतोष ॥ सबकालभृकुटिविलाससंजुत
वस्तुमादकसेवही ॥ मिलिकरतजुद्धजमातितीरथएकएकनिजेवहि ॥ धरिधातपात्रसुगं
धसज्यावस्त्रपट्टसुधारिहैं ॥ चढिअश्वरथगजकरभसिबिकाविसदनगरविहारिहैं ॥ करिअ
लंकारअमूल्यनगमयश्रवनकरकंठनिधरें ॥ अन्नेकजातिजमातिजुतजितिआपथापीअनु
सरें ॥ संन्यासवर्जितवस्तुअविहितसुषहितेतेसोवही ॥ ऐश्वर्यजुतभएआपईश्वरद्विजन
मानतदेवही ॥ जतजोगसाधतबांधिआसनक्रियापशुपतिकीकरें ॥ चतुरंगलछिसकेल
चहुंदिससतनिचेलाविस्तरें ॥ अहिफेनभृंगिसुराजुआसिषकनकवीजचढाइहैं ॥ चषरत्त
मुद्राभस्ममेषलकलौसिद्धकहाइहैं ॥ कलिसाधुसंतमहंतकहिवेवसनसूछमवासिहैं ॥ पु
निबैठिअस्थलअमलअंतरप्रेमनेमप्रकासिहैं ॥ सतजूथनारिसिंगारसंजुतसेवहीनितसुंद
री ॥ करिहावभावकटाक्षकेवलभक्तिहितअतिरसभरी ॥ सबभांतिदेहिमहांतसिक्षाकामपा
ठपढावहीं ॥ गुरुदक्षिनातनमननिकीतहांप्रेमसंजुतपावहीं ॥ जनछांडिग्रेहकुटुंबअपनेव
सिविदेशविहाइहैं ॥ अरुवृद्धबालसुतातमातहिछांडिछेहदिषाइहैं ॥ निजबाहुबलउपरा

जिवित्तहिंसासुस्वसुरनिपोषिहैं ॥ रिसवाइपित्रीयपुत्रबांधवसाढुसालातोषिहैं ॥ त्रीयपंचव र्षोन्हैप्रसूताविविधवंसबढाइहैं ॥ तनुछोटबहुलअहारअतिशयवंचिषनषनषाइहैं ॥ दश दूनवर्षजुआयुन्हैहैचिरंजीवीजानिहैं ॥ निसदिवसमुसतग्रेहसंपतिकलहपतिसौंठानिहैं ॥ जोइहोयत्रियपतिअतिहिप्यारीअधिककामनसोइकरै ॥ बहुरहैमंत्रअराधततपरवस्त्रकोपु तलाकरै ॥ तिहिसंधिसंधिनिसूचिकादैजतनसौंसौंइलैधरैं ॥ पतिमरैकैतोहोइअपाहततबै रोवैदिनभरै ॥ रतिकरैपतितजिआपइछाअंगविक्रयकारनी ॥ थिरचित्तहैपतिव्रताथोरीबहु तसीव्यभिचारिनी ॥ पुनिलोकधर्ममजादछांडैउदरकेहितआपनै ॥ तिहिंकाजवृतअनेक आश्रयकर्मकुकरमकोगनै ॥ वाचालकहिवेमहापंडितकविसुजोमिथ्याकहै ॥ चतुरजोपरचि त्तवंचकउदरभरपौरुषवहै ॥ कचवृद्धिसोइलावण्यकहिवौसूरतामृगयासही ॥ कृषिकर्मथा ननिवातपोषरफोरिनीरनिकासही ॥ पशुकाजकाटतहरितपीपलमनहिसंकनमानिहैं ॥ सिद्धान्नविक्रयवैश्यकरिहैंबलीअबलनिमारिहैं ॥ पुनिवहैवैठिजुवीचपंचनिसुकरमूछसवा रिहैं ॥ परद्रव्यदाराद्रोहततपरजनअलोकनलाजिहैं ॥ विश्वासघातविशेषवंचकस्वजन मैत्रीसाजिहैं ॥ जगवंचन्हैहैंजतीजाठरव्रतीव्रतहिविसारिहै ॥ वैराग्यलैअनुरागविन्ह लविविधभोगविहारिहैं ॥ मठद्रव्यलैलैमुनिमहांतजुपुष्टतनकरिपोषिहैं ॥ हठठानिछीनि गृहस्थलैहैंरीतिकौंअतिरोषिहैं ॥ सुरअंसलैलैकरहिसंचयएअधर्मउपाइहैं ॥ तिहिंपापआ पकुटुंबसंजुतजगसमूलसुजाइहैं ॥ जवधेनुअजाप्रमानन्हैहैंभेषहीजनजानिये ॥ तृणमा त्रवृक्षनिवृद्धिन्हैहैंक्षनकमैत्रीमानिये ॥ नरनारिजिहिंजहांचित्तअटकैसोतहांरतिमानिहैं ॥ कुललाजवेदमजादतजिकैसोइमहाहठठानिहैं ॥ विष्णुपूजाविधानवेमुषजपनतीरथजानि यै ॥ व्रतषंडन्हैहैनियमवंछितपुन्यनहिपहिचानियै ॥ वनिनीचवैठतउच्चपदवीभेषमात्रज तीभए ॥ पाषंडकपटसुदंभप्रानीनित्यकरहिनएनए ॥ इत्यादिअकृतअनर्थअविहितवि विधलोकहिविस्तरैं ॥ क्षितिनाशन्हैहैंमेघवर्षापृथ्विजलबुंदनपरैं ॥ रविचक्रहोइदुर्भिक्षरौ रवक्षुधारोगप्रकाशिहैं ॥ तृषभूषपीडितलोकतिहिंदुषवसतनगरविवासिहैं ॥ बनगहनप र्वतजाइवसिवसिअरुअकाशनिहारिहैं ॥ फलफूलमूलसुत्वचापल्लवजथालब्धअहारिहैं ॥ वर्षासुविद्युतमानन्हैहैंतदपिआसनछूटिहै ॥ इहिंभांतिहाहाभूतन्हैहैभूषदुषभवभूतजे ॥ पृथ्वीसुपापाक्रांतपीडितभवतरहिजिहिंहरिभजे ॥ विपरीतिन्हैहैंधर्मकीविधिविगतकर्म वषानिये ॥ दिगविजितकालकरालदुःसहएचरितकलिजानिये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहिंवि धिकलिमहँधर्मसब । जबन्हैहैविपरीत ॥ तहांकल्किअवताहरहरि । प्रभुधरिहैसुपुनीत ॥ १ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ शुभथानसुसंभलनामग्राम ॥ तहांवसतविष्णुजसधर्मधाम ॥ द्विजतासग्रेहअवतरहिदेव ॥ अद्वयअनंतकल्कीअजेव ॥ कलिकालअंतसतजुगप्रवेश आरोहस्वेतवाजीसुरेस ॥ विस्तारधर्मपापनिविडार ॥ षितिषडगधारआसुरषयार ॥ सु भसत्यसीलजपतपसहास ॥ पूजासुनेमधर्महिप्रकास ॥ संतोषसोचव्रतदानसंग ॥ आ राधसाधसंगतिअभंग ॥ द्विजसुरभितुलसितीरथसुदेव ॥ सबभावसहजश्रद्धाससेव ॥ विज्ञानज्ञानतत्वौविभाग ॥ भएतृसदेवसहिजग्यभाग ॥ भजिब्रह्मब्रह्मविद्याविधान ॥ शु

भक्षत्रकर्मक्षत्रियसुजान ॥ नितवैश्यसूद्रनिजकर्मनेम ॥ पसुपालकृषीसेवासप्रेम ॥ सब समयधर्म्मवनितासुसाधि ॥ पतिव्रतासतीवर्जितउपाधि ॥ निजकर्मवर्णचवसावधान ॥ विद्याविवेकसंजुतविधान ॥ दृढभक्तिदयातपजोगदान ॥ संसारकपटवर्जितसमान ॥ पंचासकोटिपृथ्वीप्रदेस ॥ परिभ्रमणकल्किकरिहैप्रवेस ॥ सामूलदुष्टश्रासुरसंघारि ॥ सुरवृंदकरहिरक्षासंभारि ॥ परिभ्रमणदेवकल्कीप्रमानि ॥ इहिंहेतलैहिअवतारआनि ॥ आगैभविष्यअवतारएह ॥ शुभधर्मसेतुकलकीसदेह ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ धर्मधामसंभलसुग्रामविश्रामसुषदवर॥तहांविष्णुजसविष्यातप्रगटइकवसतधर्मपर॥तिहिंसुग्रेहअवतारअषिलभुवभारउतारन ॥ कलिप्रभावनिर्मूलअधनिगतिधर्मउधारन ॥ निकलंकनीतिकल्कीनिपुन, भुवनत्रयरषपालभानि ॥ कलिजुगवितीतनरहरसुकवि, महिभविष्यअवतारभानि ॥ अथचोवीसअवतारसंख्या ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विसदआदिवाराहभएसनकादिकस्वामी ॥ तथाजग्यअवतारनरजुनारायणनामी ॥ कपिलसुदत्तात्रेयऋषभध्रुवपृथुहयग्रीवा ॥ कूरमसफरनृसिंहद्विजजुवामनहरिदेवा ॥ हुवहंसमन्वंतरधन्वंतरिह, जामदग्निजगव्यासजय ॥ रघुनाथकृष्णअरुबौद्धप्रभु, भुवएतेअवतारभय ॥ १ ॥ विदिततीनअरुवीसभएअवतारअंगजीय ॥ सतत्रेताद्वापरसंजोगकारणसरूपकीय ॥ अरुकलिजुगकेअंतहेतअवतारसुव्हैहैं ॥ धर्मकर्ममषध्यानजबेनिर्मूलनसैहै ॥ भवतव्यपुण्यविस्तारभुव, हठिअशेषजबनेशहति ॥ अषिलेशश्वेतहयआरुहित, प्रभुकल्कीत्रैलोक्यपति ॥ २ ॥ इहिप्रकारअवतारभएभवतव्यअभयभुव ॥ चितानंदचोबीसहेतअद्भुतदेहहुव ॥ दुष्टदीनदमदयारूपरसरोषसुरजीय ॥ भईभूमिभरक्रांततवहिभुवभारसुभजीय ॥ द्विजवेदसहाइकधर्मदृढ, हितत्रिलोकवंदितहरे॥ सुभसाधसुषदआतमसकति, कविनरहरवरननकरे ॥ ३ ॥ सतरहसैतेतीसानियतसंवतउतरायन ॥ ऋतुग्रीषमआषाढमासपक्षकृष्णसुपावन ॥ बनिआठैतिथिभौमवारसिधिजोगसमंगल॥ पुहकररन्यप्रसिद्धमध्यपूजितभुवमंडल ॥ अवतारचरित्रचोईसए, विजयसुजसजगवित्थर्यौ ॥ कविदासदासनरहरसुकवि, कृतउधारअपनोकर्यौ ॥ ४ ॥ ॥ छंदझंपत ॥ ॥ अवतारगीताईश्वरी ॥ करिभगतिकविनरहरकरी ॥ महामुक्तिमारगमानिये ॥ सोपानस्वर्गसुजानिये ॥ यहसहितश्रद्धाउच्चरे ॥ पुनिसोनभवबंधनपरे ॥ समसाधजोवांचैसुनै ॥ अतिप्रेमनेमहिआपनै ॥ सोइसंतजोतिसमाइहै ॥ पैपुनर्जन्मनपाइहै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सोरसहसअरुआठसैं । इकसठऊपरआनि ॥ छंदअनुष्टुपकरिसकल । पूरनग्रंथप्रमानि ॥ १ ॥ मैंजोइसुन्योंपुरानमैं । कृतसोइवर्णनकीन ॥ श्रोतापाठकहेतसौं । पावैभक्तिप्रवीन ॥ २ ॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिअवतारचरित्रे भाषाबारहटनरहरिदासविरचितेमहामुक्तिमार्गेअवतारगीतासंपूर्णा ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शुभंभवतु ॥ ॥ ॥

इति अवतारगीता समाप्ता.